दास्तान अमीर हमज़ा भाषा ॥

जिसमें

आल्हा ऊदल कीसी शूरता वीरता विख्यात है यह प्रसिद्ध दास्तान ईरान के बादशाह नौशेरवां के समय की है

यद्यपि यह प्रसिद्ध क़िस्सा उर्दू भाषा में फ़ारसी से [illegible] हो इस प्रेस में बहुत बार छपकर संसार में प्रसिद्ध हुआ है

तथापि नागरी के रसिकों और क़िस्से के अभिलाषियों को ऐसी अपूर्व दास्तान से ज्ञान और लौकिक रीति में उपयोग के हेतु

[illegible] प्रस्तुत समय के आचार्य पण्डित [illegible] और पण्डित महेशदत्त जी ने सरल हिन्दी भाषा में रचना किया

छठवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी

सन् १९१३ ई०
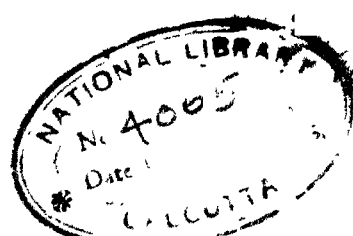
दास्तान अमीरहमज़ा भाषाकी भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का धन्यवाद है कि जिसने इस संसार में उपकारके लिये हज़ारों प्रकारकी उत्तम २ चीज़ें पैदा की हैं और उसीप्रकार अपूर्व २ बातें क़िस्सेजातकी किताबों में जिनको देखनेसे मनुष्य का मन प्रसन्न और अनेक प्रकार की चातुर्यता प्राप्त होती है रचनाकी हैं अगले समय में ऐसे बुद्धिमान् और विद्वान् मनुष्य हुए हैं जिन्हों ने अपने चित्तके उद्गार से नवीन २ उत्तम २ पुस्तक निर्माण कीं जिनसे इन दिनों के लोगों को प्रतिसमय लौकिक कार्य की प्रवीणता कुशलता विद्याकी वृद्धि प्राप्त होती है उसीतरह यह अमीरहमज़ा की दास्तान है यह ऐसा मनोहर उत्तम और मनोरम क़िस्सह है कि जिसके अवलोकन से बहुधा मनुष्य प्रसन्न होते हैं और इसके वृत्तान्त ऐसे उत्तम हैं कि ज्यों २ पढ़ते जाइये त्यों २ और पढ़ने को मन चाहता है इसमें अमीरहमज़ा नामी बड़े साहसी और शूरबीरका वर्णन है जिसने सम्पूर्ण संसार के लोगों और मुख्यकर बादशाह नौशेरवां और क़ाफ़के देवों और जिन्नों को पराजय किया इसमें ऐसी शूरता का वर्णन है जैसे पिछले राजाओं पृथ्वीराज, आल्हा ऊदल आदि ने बड़े २ बिजय के काम किये और भी बहुतसी पुस्तकें क़िस्सों की जैसे अलिफ़लैला अर्थात् सहस्त्ररजनी चरित्र, गुलबकावली, बाग़बहार आदि उल्था होकर छपीं जिससे हिन्दुस्तान भरके सम्पूर्ण मनुष्यों ने अलभ्य लाभ उठाया ॥

इस अमीरहमज़ाके क़िस्से को पढ़कर लोगों को अधिकतर इस बात की इच्छा हुई यदि यह पुस्तक देवनागरी भाषा में उल्था कीजावे तो बड़े उपकार की हो तथाच श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगणमण्डलीमण्डन पाण्डित्याद्यनेकगुणमण्डित गुणग्राहक गुणिजनसुखदायक श्रीयुत मुन्शीनवलकिशोरजी सी. आई. ई., बीरेश अवध समाचारसम्पादक जिनका यश सकल संसार में प्रसिद्ध है उन महाशय ने अपने मित्रवर्गों की सम्मति से नागरीरसिकों के उपकार के लिये सकलगुणालंकृत समय के आचार्य पण्डित कालीचरण जी महाराज से बोलचाल की सरल हिन्दीभाषा में प्रीतिपूर्वक उल्था कराकर निजयन्त्रालय में छपवाई ईश्वर ऐसे मुन्शीसाहब के पुत्र पौत्रादि को सम्पूर्ण सुख से परिपूर्ण करे मित्र प्रसन्न रहें इसके पढ़नेवालों को इस अपूर्व अलभ्य पुस्तक का फल हो और इससे लौकिककार्य में लाभ उठावें जिससे हमको हमेशा २ छपवाने का अवसर मिले ॥

दास्तान अमीरहमज़ा भाषा का सूचापत्र ।

दूसरा भाग ॥

वृत्तान्त	पृष्ठसे	पृष्ठतक
साहबकिरां (हमज़ा) के पीने के लिये देवों का अंगूर की शराब लाना ...	२४३	२४७
वृत्तान्त ख़्वाजे अमरू का	२४७	२५०
आना ख़्वाजे निहाल का मलका मेहरनिगार के लाने को मक्के की तरफ़ और उसका माराजाना अमरू के हाथ से	२५०	२६६
कारनफ़ीलगर्दन का अमरू के पकड़ने को आना और उसका माराजाना नक़ाबदार के हाथ से	२६६	२७६
बादशाह नौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार काबुली का और जहांगीर काबुली भाई ज़ोपीन शाहज़ादे जहांगीर का जाफ़रांमर्ज़े की सहायता को ...	२७६	२८४
अफ़रेत पिशाच का महरिस्तान में पहुँचकर पनाहलेना अपनी माता की मति से	२८४	२९१
माराजाना अफ़रेतशाह देवों का अमीर के हाथ से और शीश काटने से सैकड़ों देव बनकर अमीर से युद्ध करने को आना	२९१	२९२
आना ख़्वाजे हज़रत अलैहुस्सलाम का अमीर के पास और उनकी आज्ञानुसार जादू का तोड़ना और माराजाना अफ़रेत की मां का हज़रत के मन्त्र से और लूटना तेलिस्म का	२९२	२९८
पहुँचना ख़ुसरो हिन्दुस्तान मलिक लन्धौर पुत्र सादान का क़िले सबरसबूर पर	२९८	३०२
वृत्तान्त (साहबकिरां) हमज़ा का जिस समय परदेकाफ़ को गये थे ...	३०२	३०५
वृत्तान्त अमरू और हरमर जाफ़रांमर्ज़े का	३०५	३०९
आना नारंजीपोश देव का और अमरू को क़ैद से छुड़ाना	३०९	३१४
अमीर का आना परदेकाफ़ से दुनिया में	३१४	३३०

तीसरा भाग ॥

वृत्तान्त	पृष्ठसे	पृष्ठतक
हमज़ा का वृत्तान्त	३३०	३४०
वृत्तान्त ख़ुसरोहिन्द लन्धौरपुत्र सादानका क़िले सरन्द्वीप में पहुँचना और पराजय देना महलाब संगसार मलिक अहबूक और बहरामशाह ख़ाकानचीन को और चीन में आकर राजगद्दी पर बैठना	३४०	३४६
आना ख़्वाजे अमरू का क़िले क़याम से क़िले देवदों में साथ मलिकामेहरनिगार मुसल्मानी सेना के	३४६	३५८
आना आसमानपरी का सेनासमेत क़िले सब्ज़निगार को और नगर लूटकर पराजय करके पकड़लाना बादशाहअब्जकबा उसकी बेटी रैहानपरी समेत और क़ैदकरना कारागृह सुलेमानी में	३५८	३६६
लोप होना ज़हरमिश्री का केशर क़िलेसे और पहुँचना आसमानपरी के पास परदेकाफ़ पर	३६६	३८७
वृत्तान्त ख़्वाजे अमरू का	३८७	३९५
पहुँचना अमीर का देवसफ़ेदके स्थानपर और छोड़ाना ज़हरमिश्री का कारागार से	३९५	४००
वृत्तान्त अमरू अमीर अमीरी के पुत्र का	४००	४०७

चौथाभाग ॥

इति ॥

——※——

दास्तान अमीरहमज़ा भाषा ॥

दोहा ॥

* गौरी शेश गणेश को, बिनय करौं कर जोरि। गुरुचरणन शिरनाय कै, उल्था करौं बहोरि ॥
मुंशी नवलकिशोर की, आज्ञा पाय पवित्र। हमज़ाके इतिहास को, उल्थाकियो विचित्र ॥

इस इतिहास को लेखकलोग विचित्रचरित्र मधुर वृत्तान्त शुभ कल्पान्त प्राचीन आचारी अतिविचारी संसार के निमित्त सुचित्त हो यों वर्णन करते हैं कि ईरान बैकुण्ठसमान भूमि में मदायन देश का बादशाह सुख में प्रवाह जिसका नाम क़बादकामरां दीनदयाल सदा प्रजा के पालन में आरूढ़ और न्याय करने में अतिगूढ़ सुख आनन्द उस देश में जागता दुःख कष्ट और उपद्रव मृत्युस्थान में सोता था और उसके देश में दीन अरु यती उनक़ा के समान बेनिशान थे धनवान् पुण्य के कारण भिखारी व दीन मनुष्य को खोजने में अतितङ्ग बेरङ्ग थे परन्तु कोई उचित पद का पुण्य लेनेवाला न पाते थे और बलवान् दीन को नहीं सताते थे सिंह गाय एक घाट में पानी पीते थे तीतर अरु बाज़ एक साथ रहते थे छोटे बड़े एक दूसरे से प्रीति करते थे एक दूसरे पर कोई बोझ न धरता था निशिदिन केवाड़ द्वारपालों के नेत्र समान बेरक्षक खुले रहते थे चोर का कभी कोई नाम न लेता था और जो मनुष्य मार्ग में पड़ी हुई वस्तु पावे उसके मालिक को ढूंढ़कर देदेता था इससे भी अधिक न्याय उस देश में था और वह बलवान् बादशाह जिसका चित्त सिंह के समान और ऐसा पराक्रमी कि जिसके बलको देखकर रुस्तम वृद्ध स्त्रीके समान काँपता था और इस बादशाह तेजस्वी के चालीस मन्त्री ज्ञानवान् बुद्धिमान् और अतिलन्त्री थे और सातसौ वैद्य अफ़लातून जिनके आगे अरस्तू पाठशाला के लड़के समान थे सब ज्ञानी और समझदारी में अपने सामने दूसरे को नहीं रखते थे और सब विद्या पढ़ेहुए थे पदार्थ सारी और गणिताविचारी और रमल और ज्योतिष में अमलजाली तथा, रेखागणित और सातसौ पण्डित ज्ञानी सुशील उसकी न्यायशाला में वर्तमान थे और चार सहस्र पहलवान अतिबलवान् जो साम नरीमा और रुस्तम को अपना चेला गिनते थे और तीनसौ बादशाह उसके दरवाज़े पर दुन्दुभी

बजाते थे और सब हाथ जोड़कर कर देते थे और दशलाख सवार बड़े भकी और चालीसदस्ता सेवकों के सोनहले, रुपहले के जड़ाऊ भूषण, वस्त्र, हीरा, मोती से सजे हुए थे उस बादशाह की सभा नन्दन को डाहदेनेवाली फ़िरदोस को सुशोभित करनेवाली में रहते थे सेवाकरने में अतिचालाक जी निछावर करने में पाक सांस भरते थे और उसी नगर में एक वैद्य ख़्वाजेबख़्तनामी पैग़म्बरअली नबिया-अलेहउस्सलाम के द्वारपर टिका था वैद्यता और पदार्थ विद्या और रमल वा पण्डिताव में बड़ा चतुर आगे के बुद्धिमानों से अत्यन्त ज्ञानवान् था अलकश बादशाह के मन्त्री ने बहुधा उसकी चतुरता की परीक्षा ली थी और अपनी इच्छा पूर्ण उस से प्राप्त की थी और उसकी ओर से अपने हृदयमें इस भांति से प्रमाण किया था कि जो वह कहता था उसे सत्य मानलेता था और एकपल भी उससे अलग न रहता था थोड़े दिनके पीछे अलकश ने रमल की विद्यामें ऐसी चतुरता प्राप्त की कि ख़्वाजे का विद्यार्थी प्रसिद्ध हुआ और प्रकाश उसका दूर २ तक हुआ एकदिन उसने ख़्वाजे से कहा कि निशि के समय मेरा जो चित्त घबराया तो मैंने तुम्हारे निमित्त पाँसा फेंका उससे जानागया कि आपका ग्रह मन्द स्थानमें है कुछ दिन कष्टपाना तुम्हारे कर्म में है और चालीस दिनतक वह ग्रह उसीस्थान में रहेगा इसकारण इतने दिन आप घरसे बाहर कहीं न जाइयेगा और किसी का एतबार न कीजियेगा और मैं भी धीरज का पत्थर इतने दिनतक अपनी छातीपर धरेरहूंगा आपसे मिलाप न करूंगा ख़्वाजे ने अलकश के कहने के अनुसार अपने हृदय में विचार घर के केवाँर सँवारकर एक किनारे बैठरहा और अपने मित्र और स्नेहियों से मिलाप छोड़दिया और उसीकोने में बैठे २ जब उन्तालीस दिवस व्यतीत होगये उसके मन्ददिन दरिद्रता के शिरसे उतरगये चालीसवें दिन ख़्वाजे से बैठेहुए न रहागया बैठे २ उसमें घबराया और हाथ में अपना अस्त्र लेकर घरसे बाहर को चला और मन में विचारा कि चलकर अलकश राजमन्त्री से मिलाप करिये और उसके चित्त का सन्देह हरिये अपने शुभ समाचार उसे जनाइये और इससे उसे आनन्द प्राप्त कराइये और कोई हमारा मित्र दूसरा नगर में नहीं है मित्र और मिलापी सबमन से वहीहै दैवयोग से सुमार्ग छूटकर कुमार्ग में फँसगया और एक ऊजड़ स्थान के निकट हो नदीपर जा निकला उस समय सूर्य के किरणों से घबराकर एक पेड़के तले छायामें बैठरहा एकाएकी एकबड़ी दीवार उसकी दृष्टि में आई पर चहारदीवारी उसकी गिरगई थी जो उमङ्ग उसके मन में आई टहलते २ आगेकी राहली आगे चलकर देखा कि बहुधा घर उसमें गिरगये हैं दालान टूटेहुए पड़े हैं परन्तु दालान गिरने से टूटे नहीं हैं सब उसी के भीतर गड़े हैं और उस दालान में एक कोठरी का दरवाज़ा जो ईंटोंसे ढालागया था वह बचा हुआ है ख़्वाजेने ज्योंहीं ईंटों को हटाया तो उसमें एक छोटा दरवाज़ा देखने में आया वह तालेसे बन्द था ख़्वाजे ने चाहा कि इसको किसी भांति से खोलें और इसमें कुछ धन भी कहें इस मनोरथ

से उसमें हाथ लगाया ताला छूते ही गिरपड़ा ख़्वाजे ने उसके भीतर पांव रक्खा आकर देखा तो मालूम हुआ कि एक तहख़ाना उसमें है जिसमें अत्यन्त द्रव्य और हीरा मोती बड़े२ मोल के भरेहुए हैं और शद्दाद के इकट्ठा करायेहुए हैं ख़्वाजा डर के कारण उसमें सें कुछ ले न सका और उलटे पैरों वहां से फिरा और मन में बिचारा यह समाचार आनन्दकारक अलकशमन्त्री को सुनाने के हेतु गया अलकश ने जो ख़्वाजे को देखा अतिप्रसन्न हुआ उसे देखकर और मसनद पर बैठाकर हृदय का स्नेह खोलने के पीछे बोला कि आज चालीसवां दिन था आपने क्यों कष्ट सहा कल मैं आपके निकट उपस्थित होता ख़्वाजेने दो चार बातें करके उस द्रव्य की बाहुल्यता का बृत्तान्त कहा और सम्पत्ति अनपावनी का समाचार वर्णन किया और कहा कि अब मेरा गृह आनन्दमय प्रकाश हुआ जिससे इतनी द्रव्य दृष्टिपड़ी परन्तु यह सम्पत्ति बादशाह के देश में है मुझ दीन को कब पच सकती है इसके लेने को मेरा देह कांपता है इसकारण मैंने अपने चित्त में यह विचार कियाहै कि आप मन्त्री हैं और मुझदीन के अत्यन्त मित्र हैं इस बहुत धन का पता आपको दूं और जो मुझे हाथ उठाकर आप देवें उसे मैंभी लूं अलकश ने सातढेर द्रव्य के उसके मुँह से सुनकर कृतकृत्य होकर रोमावलि फूलकर अपने शरीर में न समाया और शीघ्र दो बाजी साज के एकपर ख़्वाजे दूसरे पर आप गाजके चढ़ा और ख़्वाजे केसाथ होकर उसी मार्ग में बढ़ा चलते २ उसीस्थान में उपस्थितहुआ और ऐसी सम्पत्ति देखकर घबरागया इस प्रकार का आनन्द प्राप्तहुआ कि जिसमें जी गर्वाने कि मेरे ईश्वर ने मुझे यह द्रव्य अलभ्य कृपा की है उसकी उदारता से मुझे मिली है परन्तु इस भेद को ख़्वाजे बख़्तजमाल जानताहै ऐसा न हो कि यह बृत्तान्त अपनी प्रतिष्ठा के निमित्त बादशाह से कहदे तो उससमय और का और होजावे सहजही सङ्कट में जान फँसे यह द्रव्य ईश्वरकी दीभी हाथ से जाय और बादशाह मुझे अत्यन्त कपटी जान बहुत कष्ट देके मन्त्री पदवी से दूर करदेवे और कुछ आश्चर्यभी नहीं है कि मेरा घरभी छीनलेवे और मुझे बन्दीस्थान में डालकर लड़के वालों समेत सब घरबार को धूर में मिलादे और मेरा नाशकरदे इससे अच्छा है कि ख़्वाजेको मारकर इसीस्थान में डालदूं और इस धन को अपनेवश करलूं जिससे इसका भेद न प्रसिद्ध हो यह जान कर अतिशीघ्र उसे पछाड़कर छातीपर चढ़बैठा और छूरी उसकी गर्दनपर मारी ख़्वाजे इस चरित्र को देखकर अतिआश्चर्य में होकर कहनेलगा कि ये अलकश! तुझे क्या होगया मैंने तेरे साथ मित्रता की है न कि शत्रुता इस यशका बदला यही है मैंने तेरे साथ क्या अपराध किया है! जिसके कारण मुझे ऐसा फल देताहै यह कह अत्यन्त रोया पीटा चिल्लाया और उससे अधीनता और दीनता की पर कुछभी दया उसके चित्त में न आई उस बृद्ध मनुष्य ने इसदुष्ट के हाथसे छूटना कठिन जानकर अपनी मृत्यु का होना अवश्यजाना और जीने से निराश होकर यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। वधिकमृतकमोहिंकरतहै, मकरअयशककनाश। मीति न मसु पुनि कोउकहै, जेहि तस होय विनाश॥

अलकश सुन मुझे तू अब मारता है और मुझको मारकर तू अपने ऊपर अपराध लेताहै परन्तु मैं दो बातें तुझे समझाता हूं इसको जो माने तो मैं तुझ से वर्णन करूं क्योंकि मेरा जीना केवल इस संसार में इतनाही था तेरे मारने स-मय यह खून अपने ऊपरलूं वह बोला कि तेरी मृत्यु निकट है उसे भी कहदे अब कटारी तेरा लोहू पीना चाहती है उसने कहा और मीरहसन की भांति से इस चौ-पाई को पढ़ा॥

चौपाई। मित्ररहा पर बैरी भयऊ। मग पूछेउ सोई ठग रहेऊ॥

परन्तु मेरे घर केवल आजही भर का अन्न खानेको था अब ठिकाना नहीं है इससे आपको उचित है कि कुछ खर्च मेरे घरमें कृपाकरके भेजदीजिये और दुखियों का निर्वाह करना दूसरी बात यह है कि मेरी स्त्री गर्भवती है उससे इतना कहदेना कि जो पुत्र हो उसका नाम बुजुरुचमेहर धरना और जो दुहिता हो तो जो तुझे स-मझपरे सो नाम धरलेना यह कहकर आंखें बन्दकरलीं और परमेश्वर का स्मरण करने लगा इतने ही बेरमें उसने उसको और उसके घोड़े को मारकर उसी कोठरी में गाड़ दिया॥

अलकश के हाथ से ख्वाजेका माराजाना॥

और उसके केवाड़ उसीप्रकार से मूँदकर नदीपर गया कटारी और अपने हाथ का लोहू धोया और उस चल सम्पत्ति के हेतु अपना धर्म खोया फिर तुरङ्ग पर चढ़ कर अपने धाम को पधारा चित्त अतिप्रसन्न हुआ दूसरे दिन सवार होकर सामान समेत फिर उसी स्थानपर गया और उसे देखभालकर अपने प्रधान दारोगा को आज्ञादी कि हमारे निमित्त एक फुलवारी यहां पर लगाई जावे और सामान भारी मोल के उस धाम रचना के निमित्त भेजेजावें उसकी आज्ञा पाकर दारोगा ने थवई और मजदूर और सङ्गतराश बोलाकर धाम बनानेमें आरूढ़ करदिया और थोड़ेकाल में चारदीवारी बागसमेत बनगई अलकश उसे देखकर अतिप्रसन्न हुआ उस फुल-वारी का नाम अन्यायीबाग रक्खा और ख्वाजे बख्तजमाल के घर में जाकर सँदेश ख्वाजे का वर्णन किया और अत्यन्त धीरजदिया और बहुतसा रुपया देकर कहा कि अपने खाने पहिरने में उठावो और जब आवश्यकता होगी तब तुम्हारी सहा-यता औरभी करूंगा तुमको कष्ट न होनेपावेगा ख्वाजे को मैंने व्यापार के निमित्त चीन की ओर भेजा है अतिशीघ्र वहांसे धन उत्पन्न करके आवेगा यह समझाकर अपने घर को गया और सत्य समाचार निज चित्त में रखा॥

कवित्त। जीनेके समय सब बीतिगये जनु बागु विपिन के मध्य बसी।
कटुआंच अनन्द अकारथ से बीती सबभांति बुरी व भली॥
कहिनाकछु वाको कियोहि नहीं मैंने अन्याय कि बीती चली।
उसकी ग्रीवा पर फेरि छुरी बीती मोपै सब आह खली॥

इतिहास बुज़ुरुचमेहर के उत्पन्न होने का और विदित होना वृत्तान्त पुस्तक का ॥

कहनेवाले आनन्दमय होकर इसभांति से प्रकाश करते हैं कि ईश्वर अपनी उदारता से वह सुदिन समीपलाया कि गर्भ के दिवस बीतने के पीछे शुक्रबार के दिन सुसायति में ख़्वाजे बख़्तजमाल का भाग्यवान् पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

सोरठा। रविसम प्रकट्यो आय, निज गृह तमहित दीपज्यों।
सभी परसपर आय, जुरे पतङ्ग के सरिस॥

प्रथम तो उसकी माता ख़्वाजे का स्मरण करके नाना बिलाप से अपनी बिकलाई पर शोकग्रसित हुई और नयननीर बरसाया उसके पीछे अपने पुत्र का मुख निरखके उसके प्रताप के प्रकाश से आप पतङ्ग के समान निछावर हुई और ईश्वर का धन्यवाद करके कहेहुए सन्देशा के अनुसार बुज़ुरुचमेहर नाम धरा वह अपनी माता के गोद में सेवा पानेलगा और परमेश्वरने सबप्रकारके कष्टों से उसकी रक्षा की मानो अपने निज हाथ से उसके शरीर की रचना की थी सुन्दरता संसार की उसको देखकर अतिलजाय घबराय छिपरही और उसके मस्तक के प्रकाश से प्रताप का चिह्न विदित होता था और चेहरे की चमक से उसके सुलक्षण प्रकट थे जब पांचवर्ष का हुआ उससमय उसकी माता गुरु के समीप विद्या पढ़ने के निमित्त लेगई और वह पण्डित ख़्वाजे का चेला था और उसके समीपी लड़के उसी के समीप पढ़ने को जाते थे उससे कहनेलगी कि तुमपर ख़्वाजे का अतिउपकार है इससे तुमभी इस लड़के को पढ़ादो क्योंकि यह उसका पुत्रहै तुम्हारा नाम होगा उसने शिर नेत्र से यह स्वीकार किया और उसके पढ़ाने में अतिचित्त लगाया ॥

चौपाई। जो जो बर्ष बीति जगजाई। अधिक भली उपजै अरुणाई ॥

उसका यह स्वभाव था कि दिनभर वह अपने गुरु के समीप पढ़ने लिखने में ध्यान लगाता और जब चारघड़ी दिन रहता उससमय अपने घरको जाता उसकी माता जो श्रम करके पाती उसे अनारसती सो खालेता था दैवयोग से एकदिवस कुछ खानेको नहीं मिला बुज़ुरुचमेहर ने अपनी माता से कहा कि अब तो क्षुधा के कारण आंतें व्याकुल हैं जो कोई वस्तु दीजिये उसे बेंचलाऊं खानेका उपाय करूं उसकी माता ने कहा कि अय बेटा। तुम्हारे पिता घरमें कुछ नहीं लाये और न छोड़ गये हैं जो तुमको बेंचने के निमित्तदूं और खाने पीने की आवश्यकता मिटाऊं किन्तु एक किताब तुम्हारे नाना की धरी है बहुत पुराचीन लिखी है बारम्बार तुम्हारे पिताने चाहाथा कि उसे बेंचकर अपने खर्च में लावें पर जब वह किताब लेने के निमित्त ताक के निकट जाते तो उसमें से एक भुजंग फुनकारें मारताहुआ निकलता था वह डरके कारण से हटआते थे देखो जो तुमको वह मिले तो लेजावो और उसे बेंचकर खालो केवल उसके सिवाय और तो कोई वस्तु घर में नहीं है जो तुम को दूं और उसे बेंचकर लाऊं माता के मुख से यह सुनकर किताब उठालाया और

वह सांप जो सदैव देखपड़ता था दृष्टि न आया और उसके चारपत्र पढ़कर प्रथम तो अतिरोया पीछे उसके एक स्थान देखकर अत्यन्त आनन्दमें हो हँसा और प्रसन्नता से मुख प्रसन्न होगया देखनेवालों ने जो उस समय वहां पर उपस्थित हुएथे यह समाचार देख अतिआश्चर्य किया ईश्वर यह किसकारण से प्रथम तो रोया तदनन्तर अतिहँसा इसका चरित्र नहीं जानाजाता है उसकी माताको सिड़ी होजाने को संदेहहुआ और सबसे कहनेलगी कि ईश्वर के निमित्त कृपा करके गुणी को बुलादो तो इसकी नस कटाकर रक्तनिंकलवाडालूं और किसीसे बोली कि यन्त्र लिखा दो कि इसके गले में बांधदूं क्योंकि मुझ दुखियाको केवल इसीका आसरा है कदापि यह बिक्षिप्तहुआ तो मुझ अनाथ का कहीं ठिकाना न लगेगा बुज़ुरुचमेहर अपनी माता को संकट में देखकर कहने लगा कि आप न घबरायें ईश्वर चाहेगा तो यह कष्ट व बिपत्ति के दिवस शीघ्र दूर होजावेंगे और इसके बदले में अतिआनन्द पावोगी अब भाग्य उदय होनेवाला है और सब मन्द व कष्टता का समय दूर होताहै ॥

दोहा। भोर दिवस है ईद का, वेगि वारुणी देइ। प्याला पी आनन्द हों, रवि जनि उदय करेइ ॥

चौपाई। देत उसे नहिं लागत देरी। जनि निराश हो होय निबेरी ॥
अतिउदार है कृपानिधाना। समझि देखु निजउर बिधि नाना ॥

मैं बिक्षिप्त नहीं हुआ रोने और हँसने का यह मनोरथ है कि इसकिताब के पढ़ने से सब बृत्तान्त अगला पिछला जाना जाता है इसकारण से मैंने जाना कि मेरे पिता को अलकश मन्त्री ने बे अपराध मारा है और उसकी लाश अबतक वहांपर पड़ीहुई है ऊपर पृथ्वी के धरीहुई और हँसा इस बातपर है कि मैंभी अपने बाप का बदला उससे लूंगा और यहां के बादशाह का मन्त्री हूंगा अब खाने पीने का क्लेश न होगा अपने चित्त में शोक न करो खाना बहुत है और दशको दीजिये यह कहकर एकदासी को अपने साथ लेकर एक बनिये की दूकान पर गया और उससे कहा कि इस लौंड़ी को इतनी जिन्स मैदा और कन्द और घृतआदि जो मांगाकरे दिन प्रति दियाकर और उसका मोल न मांगाकर उसने कहा कि अच्छा उसका मोल कबतक मिलेगा बेहिसाब किये कैसे बनेगा! बुज़ुरुचमेहर बोला कि मोल मुझसे मांगता है अपना कहा क्या भूलगया चांदनामी गँवारसे कई सहस्रमन गेहूं लेकर उसको विष देकर पुत्र समेत ग़ल्लाके कारण बेअपराध मारडाला है यह भेद राजसभा में विदित करूं तो तेरा क्या हाल हो और किस भांति तुम्हारा माल हो बनियां यह पता सुनकर चुपहोगया और पगड़ी उतारकर उसके चरणों पर रखदी घबराकर कहनेलगा कि मिर्ज़ाजी! यह दूकान आपकी है जिससमय जो इच्छा हुआकरे मँगवालियाकरो परन्तु यह चरित्र दूसरेसे न जनावो अपने मन में रखिये बुज़ुरुचमेहर वहां से लौंड़ीको साथलेकर चिकवाकी दूकानपर गया उससे कहा कि एकमन मांस उत्तम इस स्त्री को दिनप्रति दियाकर उसने कहा कि मोल का लेखा कब सलझावोगे रुपया किससमय दोगे बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि औ

तूने कोश गिलवानसे कई सहस्र मेढ़ेलेकर मोल मांगने के समय उसको मारकर अपनी दूकान की कोठरीमें गाड़दियाहै उस चिवारे का सहस्रों रुपये का धन सहजही मारलियाहै तू जानता नहीं है कि जो उसकी सन्तान को राजसभा में भेजदूं तुझे उस अपराध का रक्त दिखलादूं मांस की द्रव्य तुझे दिलादूं मोल मुझसे मांगता है ऐसा अयान बैठाहै यह समाचार सुनकर गाय की भांति कांपनेलगा और अति शीघ्र दौड़ के चरणोंपर गिरा और अतिनम्रता से गिड़गिड़ाकर कहनेलगा कि मांस तो क्या मेरी जान भी आपपर निछावरहै जितना सरकार की दासी आज्ञा करेगी उतना मांस करेली का दिनप्रति दूंगा और आंखें से उसके मोल का अक्षर जीभपर न लाऊंगा परन्तु मेरी जान व प्रतिष्ठा पर कृपादृष्टि किये रहियेगा फिर किसी से ऐसी बात न कहियेगा इसीभांति से सराफ़ को भी कुछ कुसमाचार सुनाकर घबरा दिया था और उससे पांच मोहर दिनवारी खर्च के निमित्त ठीककर लिया था आनन्दमय हो अपने घर में बैठकर समय का खोज करनेलगा मित्र स्नेही नये२ इकट्ठा होनेलगे सुख व आनन्द करने लगा॥

सोरठा। अशुभसगुन हैजात, जय उदारता प्रभु करैं। काहमूड़पछितात, भजनकरै अतिमगन है॥

अलकश के स्वर्ग समान अन्यायी नाम बाग़में बादशाह के जानेका इतिहास॥

वृक्ष बांधनेवाले बाग़ वृत्तान्त के और फुलवारी सुशोभित करनेवाले बाग़ विदित करना स्वच्छ काग़ज़ में इसप्रकार पेंड़ शब्दों के उचित खचित करते अर्थात् वर्णन करते हैं कि जब बाग़ अन्यायी बनकर तैयार होगया जैसे बैकुण्ठ की भांति सुशोभित व प्रफुल्लितहुआ उससमय अलकश अतिप्रसन्नता से फूलगया सन्देह दोनों स्थान का भूलगया अत्यन्त आनन्द से फूला न समाता तनसे बाहरहुआ जाता बादशाह के समीप जाकर अतिदीनता से प्रार्थना की कि इस सेवक ने आपके प्रताप से एक बाग़ बनाया है उसमें भांति २ के वृक्ष फलदार और फूल बूटे के लगाया है और दूर २ से भारी मोल के सुन्दर वृक्ष मँगाये हैं और अतितीव्र माली पेंड़बांधने के हेतु नियत हैं सहस्रों रुपया खर्च करके इसकाम के कारीगर मँगाये हैं प्रत्येक मनुष्य अपने २ काम में अतिचालाक हैं और बेल बूटे इसप्रकार से जमाये हैं कि जिनको देखकर विश्वकर्मा अपनी रचना से लज्जित होजावे परन्तु इस अनुचर की दृष्टि में समाता नहीं है पतिमार का रक्त दीख पड़ताहै जबतक आप तयार हो उसमें अपना चरण सुलक्षण नहीं धरते हैं॥

दोहा। चरैवृन्दावरेकेपरे, सकलबाग खिलिजाय। जहँ तनिकसा ठहरिये, सूख वृक्ष हरियाय॥

इस अधीन की विनय यह है कि कभी आप जगत्प्रताप उस ओर सैरके बहाने चरण लेजायँ तो इस अधीनको अत्यन्त बड़ाई प्राप्त हो आपके चरणों की कृपा से उस बाग़ में बसन्तऋतु आजाय हरेफूल व कली में नयारङ्ग प्रकाशित होजाय और आपकीकृपा से जो वे एकबार सैर कीजिये तो अनुचर को अत्यन्त आनन्दमिले और

आशारूप वृक्ष का फल पाये बादशाह ने उसकी विनती स्वीकार किया और उसके मनोरथ पूर्णकरनेको कहा अलकश ने प्रणामकरके नज़रदी और वहांसे आज्ञा लेकर बागमें आया सामग्री जिवनारकी करनेलगा अतिशीघ्र सब इकट्ठाकिया और भांति २ के खाने बननेलगे और विविधप्रकार की मेवा नावों में धरीगई बजाने-वालों को बजाने की आज्ञादीगई खेलौनेवाले खेलौना छोड़नेका समय देखनेलगे प्रकाश और चमत्कारी की सामग्री होनेलगी सहस्रों गिलास चढ़गये झाड़ फ़ानूस दीवारों पर सजनेलगे थोड़ेकाल के पीछे बादशाह तेजस्वी महाप्रतापी नीतिप्रकाशी न्यायविलासी सेवकों समेत अन्यार्याबाग़ में आया अलकश का मनोरथ पूरा हुआ और बादशाह के बैठनेके निमित्त अतिरुचिर गद्दी सजी उसपर फूल बूटे हीरा मोती के बनाये हुए थे और चारों कोनों पर चार मोर पन्ने के बनेहुए लगाये गये थे और सब प्रकार से सजेहुए थे हीरे के पत्ते और पन्नोंके फूल बनेहुए थे अतिरचना करके वह चौकी सुशोभित थी जब बादशाह की सवारी बाग़ के निकट पहुँची अलकश ने दो धावन और सवार बृत्तान्त जानने के निमित्त नियत कररक्खे थे उन्होंने बाद-शाह के आने का समाचार सुनाया सब जगह आनन्द छागया ॥

दोहा । बादशाह जब बागमें, आये प्रेम समेत । फूलप्रफुल्लित अतिभये, आनन्दित करहेत ॥

अलकश अपने लड़कों समेत और मित्रों को साथले अगवानी की राह पै उप-स्थितहुआ वह चौकी और चालीस हाथी जिनपर सुनहरी झूलें पड़ीहुईं और अम्बारी सोने रूपे हीरा मोती के गङ्गायमुनी काम पीठोंपर खिंचीहुईं और ज़ंजीरें सुनहली रुपहली गर्दन में पड़ी और दांतों पर चांदी मढ़ी फ़ीलवानों ने लहसुनियां की डंडियां हाथमें लिये बनारसी पगड़ियां चूड़ीदार शिरपर कवायें सोनहली पहनेहुए रुपहली कमरबन्द कमर में और कमख़ावकी मिर्जाइयां सजेहुए बनारसी पट्टी कमर में कसेहुए सोनहले फेंटे शिरपर लपेटेहुए बरछे और दण्डे जड़ेहुए हाथों में लियेहुए आसपास सम्पूर्ण सामान वायु समान चाल तुरंगों पर चढ़ेहुए घोड़ों को जमाते उड़ाते अपना गुण दिखाते पंक्तिबांधे चलेजाते थे दोसै घोड़े ताज़ी, इराक़ी, अरबी, विलायती, काठीवार, खची, जोकोसिया, भावराथली, तुरकी, तातारीआदि टेढ़ी कसके टाप वायुसमान बजाते चलेजाते थे परीके आकार देवस्वभाव आय लटकेहुए जीन सोनहले चढ़ेहुए अतरकी सुगन्धसे भरेहुए सोनहले चारजामा पड़ेहुए कलँग़ी, पट्टा, दुम्ची, आगे अगबन्द, हैकल, जड़ाऊ गजगायें सड़कें मुरछल लगेहुए लाल कलाबत्तूनके पीठोंपर उसपर पाखरें जवाहिरों से बनीहुईं पंचन सोनहले हाथों में जेरबन्द परमीले के बनेहुए बालातङ्ग जेरतङ्ग से खिंचेहुए कलाबत्तून की बागमें सहीसों के हाथमें प्रतिबाजी दो २ सहीस सोनहलेकड़े उनके हाथों में पड़े लाल बत्तियां तूलकी शिरपर बांधे गुजराती मुलुरू के जूटने पांवमें पहने मिर्जाइयां सजे भारी २ चौरियां गङ्गायमुनी डंडियों की जिन में मोतीगुहेहुए थे आगे पीछे दायें बायें

जीवों के वृत्तान्तको देखते रहते थे कई सहस्र ऊंट अरबी, बुग़दादी आदि जिनपै अड़ाऊ झूलें पड़ीहुईं कलंगियां सोनहली रुपहली मुखोंपर चढ़ीहुईं नाक में नकेलें रेशमी प्रति ऊंटके सजीहुईं सांड़िनीसवार अतिचालाकी से चलते थे सांड़िनी भी भागी गर्वमें पगी तनीजाती थी कभी अतिलाड़ व सनेहसे उसके सवार गोदी में शिर रखते थे अतिचालाक व गर्वनाक से पृथ्वीकी ओर ग्रीवा न झुकाती थी और कई सहस्र नाव रूपे व सोने व हीरा, लाल, पन्ना, नीलम, माणिक, लहसुनियां, पुखराज, गोमेद आदिसे भरीहुई और गहना जंड़ाऊ के अत्यन्त भरे और कई सहस्र नाव में भांति २ के अस्त्र तलवार, छुरी, कटारी, बांक व भुजयल, सिरोही, तमंचा, बन्दूक आदिसे चुनेहुए थे इसी प्रकार कपड़ों के थान सहस्र भांति कमख़ाब, मुसुरू, गुल्बदन, रूमाल, दुपट्टे, पटुके बनारसी, गुजराती, जामदानी, कामदानी, महमूदी, चन्देली, सबनम, चिकन, तारसिमार, ताराद्दाम, मलमल, नैनू, नैनसुख, तंजेब आदिके नावों में ढबसे लगेहुए वस्त्र विविध प्रकार के सुरमई दुशाला, रूमाल, पटके, गुलूबन्द, जामा, सदरी, लबादा, अचकन इत्यादि अतिचतुरता के साथ चांदी के पात्र और नावों में धरेहुए साथ लेके बाहर के आनन्द बाग़ में नज़र देके चौकी का पाया पकड़े साथ हुआ जब बादशाह बाग़ में आये देखा तो सत्यबाग़ उचित सैर आनन्ददाता है अच्छी भांति सजाहुआ है दरवाज़ा बाग़ का बहुत ऊंचा है बड़ी भारी चौखट बाजू चन्दन की बनी है उसपर चांदी पोलाद की खूंटी गड़ी हैं और मज़बूत हैं ॥

अन्यायी बाग़ में बादशाह का आना और बारादरी के तख़्त पर बैठकर अबकश को पारितोषिक देना और नाच होना ॥

अत्युत्तम दीवार संगमरमर की बनीहुई थी और उसके दरजों में जवाहिर से काम बनाहुआ था और स्थान २ प्रति दीवार में जवाहिर के वृक्ष बनेहुए थे डाली और पत्ते पन्ना से सजे थे और फूल व कली लहसुनियां आदिक पत्थरों से काम बना था और उन डालियों पर बुलबुल, तोता, मैना आदि पक्षी बनेहुए थे और उस के नीचे टट्टियां रचनाकृत रचीहुई थीं और मोतियों के गुच्छे के बदले अंगूर के गुच्छे लगेहुए थे और जो वृक्षों में फल लगेहुए थे उनपर रङ्ग बिरङ्गी थैली चढ़ी हुई थीं और रेशम व कलाबत्तून की डोरी से कसीहुई थीं और मोलमें एकसे एक बढ़ी हुई थी और फुलवारी के बांधने में और स्वच्छ करने में इस प्रकार की शोभा थी कि जिनपर दृष्टि का पांव फिसलता था और तमाशा देखनेवाले अतिआश्चर्य में होते थे कियारियों में सब भांति के फूल लगेहुए थे लाला, गुलाब, दाउदी, नाफ़रमानी, पिस्तई, मूगरा, गुलशब्बो, दुपहरिया, कुन्दी आदि सबप्रकार के फूल खिले हुए थे और किसी स्थान में मूलसरी के वृक्ष मनुष्य के बराबर छटेछटाये लगे थे और किसी फुलवारी के कोनोंपर सरसनोबर के वृक्ष शृङ्गारमय आकाशतक चले गये थे सुगन्धित वायु उनसे चल रही थी और फूलों की डाली अतिसनेह से एक दूसरी

कली का मुख चूमरहीं थीं औ मेवा लगेहुए वृक्ष अतिसुन्दरताई से झूमरहे थे बुल-बुल आदि पक्षी चहकिरहे थे और प्रत्येक कियारियों पर दरवाज़े महराबदार लगे हुए थे और उनके किनारों पर खम्भा रचित खचित थे और उनपर चांदी के पत्र चढ़ेमढ़े अतिशोभा देरहे थे और कहीं २ मुरैले नाचरहे थे और नवयौवना मालिनें सोनहले आभूषण सहित वस्त्र जड़ाऊ लहँगे पहिने उस पर चुनरी सुवर्ण के तारों की ओढ़े मांग निकाले हुए अंगुलियों में छल्ला छाप पहिने अनवट बिलुये चांदी के पहिने टीका बेंदी मस्तक में दियेहुए सब प्रकार का गहना पहनेहुए हाथों और अंगुलियों में मेहँदी की अरुणाई सजी सजाई हाथों में सोने के बेलचे लिये हुए रविश पर की घास काटरही थीं और सूखी लकड़ी टूटी फूटी को निकाल रही थीं कियारियों को अतिसुन्दरता से सुधाररही थीं देखनेवालों के चित्त आनन्दित करके हरेलेती थीं और उनकी नर्म २ कलाइयां चन्दन की डली को लज्जित करती थीं नान्हीं २ अंगुलियों में मेहँदी शोभा देरही थी और जिनकी छातियां अतिस्वच्छ औ कोमल थीं नींबू के समान कुच और गोरागोरा मुख अतिशोभा देता था और अंगुलियों में सोनहली मुँदरी पहनेहुए थीं प्रतिस्थान चमनों में पानी बहाती थीं और आपस में हँसी ठठोली दिल्लगी करती थीं और कोकिला समान मृदुबैन बोलरही थीं किसी रौशकी घास सूखी उखारकर दूसरे स्थान में लगातीं और कहींसे हरी कोमल दूब उखारके बेलचे से जमातीं और किसी कियारी में थाले लगातीं और टट्टियों पर अंगूर की बेल दौड़ानेलगीं और नलियां पानी बहनेके निमित्त चमनों में लगीं विविध भांति के बग हंस आदि चिड़ियां आनन्द कररहीथीं और जो बड़े २ वृक्ष थे उनपर रेशम की डोरियों से डालियां बँधी थीं और कहीं २ चबूतरे बिल्लौर व संगमरमर के बने थे और प्रतिचबूतरे के आगे हौज़ उनमें अतर व गुलाब व कस्तूरी आदि भरी हुई थी और मध्य में फ़ौवारे हीरेसे बनेहुए थे और चांदी सोने का ढेर उन फ़ौवारों के हौज़ों में लगेहुए थे और जब उन फ़ौवारों से हज़ारा छूटता तो सहस्रों भांति की क्रीड़ा देखाती थीं देखनेवालों की दृष्टि में आश्चर्य आता था चित्त प्रफुल्लित होजाता था और बाग़ के मध्य में एक ऐसा घर बनाथा कि जिसके समान संसार में कोई भी न बना होगा और उसके आस पास साइबान गङ्गायमुनी सोनहरा काम कियाहुआ था और दरवाज़ों में सोने रूपे से थैलियों की कलाबत्तून से गुँधी हुई पड़ी थीं और सोन-हले परदा अर्थात् झारी और हीरालाल की खिरकियों में डोरी लगीहुई थीं और चौखटपर सातलाख मोहरों का चबूतराथा और भीतर उस बँगले के एक चौकी ज-वाहिर से बनी थी बादशाह उस चबूतरेसे बँगले को सुशोभित करके वहां गये नज़रें दीगईं अलकश को प्रतिष्ठा का प्रातःकाल प्राप्त हुआ बाग़ अन्यायी की शोभा देखकर अपने बाग़ न्याय का पतिभार देखा और अतिशीघ्र मुख से बचन कहा कि सत्य है यह बाग़ अतिरमणीय है और सुस्वाद फल लगे हैं उसकी शोभा और प्रशंसा जो कानों से सुनते थे उसे आंखों से देखलिया कि अत्यन्त मनोहर और सुशोभित यह बाग़ है॥

चौपाई । जो प्रसिद्ध है सुर अमराई । ताते अति है सुन्दरताई ॥
रूपरमाली देखेउ जब आई । भौचक रहेउ हृदय अधिकाई ॥
सुरपुर की सुधि नहिं पुनि करई । नहिं बैकुण्ठ चित्त कछु धरई ॥
रविश रविश पर चमन सोहाई । खिले फूल तामें अधिकाई ॥
सेवति जूही कौन प्रकासा । कौनिउँ दिशि केतकी सुवासा ॥
नरगिस फूल आँख सम करई । सुमनविखिबुलबुलचितहरई ॥
पक्षी कतहुँ अनन्दित अहई । हँसतचकोरसुकचा अतिलहई ॥
मदव समेत सरो फुलवारी । घेरा कौन सनोबर भारी ॥
डाल सरोवर पेडुकी सोहै । कूकू शब्द करत मन मोहै ॥
वृक्षफलितफल विविधप्रकारा । नाशपाति. सैं सेव अनारा ॥
मेवा लगे मधुर तेहि माहीं । सो सब दधि समेत लै खाहीं ॥
रविश मध्य नाचत हैं मोरा । करत मधुरमण्डित प्रतिशोरा ॥

अलकश बादशाह की प्रशंसा सुनकर अतिकृतकृत्य होकर फूले न समाता था अतिआनन्द के कारण तनसे बाहर हुआ जाता था विनय करनेलगा कि यह सब आपही के प्रतापसे रचना बनी है और सेवक का क्या मक़दूर था ? जो ऐसा स्थान बनाता आपके आनेसे और अत्यन्त बड़प्पन इसे प्राप्त हुआ और ताबेदार की प्रतिष्ठा आकाशतक पहुँची और समानों में अतिप्रतिष्ठा मिली इसके पीछे बादशाह ने भोजनको अतिरुचि से खाया अलकश ने साज नाच व राग का मँगाया और नाचनेवाली वेश्या परी समान और बारमुखी अतिमनोहर नाचने गानेलगीं आनन्दरूपी बारुणी का प्याला भरनेलगीं मापक का घूमन देखकर प्याला आसमान का चक्कर में आया उस समय में कुछ औरही रङ्ग देखाया आतशबाज़ी के खिलौने छूटनेलगे देखनेवालों की दृष्टि सुखमें आनन्द पानेलगी संक्षिप्तहै कि २१ दिनतक निशिदिन बादशाह ने प्रसन्नता की बाईसवें दिन अलकशको पारितोषिक यमशैदी कृपा हुआ तत्पश्चात् वाहनशाही उपस्थित किये गये बादशाह उस पर आनन्दित सवार हुए राजस्थान में आये और न्याय नीति करनेलगे ॥

अलकश करके निरपराध बुजुरचमेहर का पकड़ना और उसका छूटना और स्वप्न परीक्षार्थ बादशाह करके गुणी एकत्र करना ॥

दोहा । एकदिवस गो सैरको, फुलवारीकी ओर । आयदीख यक फूलको, झराडालकर शोर ॥
कहा किया क्या तैंने है, जलता कौनेहेत । कहा कि मैं इस बाग में, हँसा था चैनसमेत ॥

मायाकृत माली रचना से संसाररूप फुलवारी में प्रतिसमय नया फल फुलाता है चतुरता की दृष्टि उसकी रचना देखकर संसार में अपना मनोरथ भूलजाती है जो हँसा यही कांटा शोक का उसके कलेजे में चुभा जिस डालीने दीनतासे गर्दन झुकाई शीघ्र मनोरथ का फल हाथ में लाई जिस टिहुनी ने अपनी सीवां से शिर उठाया उसे वृक्ष बांधनेवाले ने काटडाला ॥

सोरठा। करै विचार बिबेक, गिनागणित क्यों पाजियना। समभि धरै उर टेक, जो सर बुझातकबहै॥

देखिये उस बाग़में नयाफूल फूला और औरही रङ्गका गुच्छा चिटका बुज़ुरुच्च-मेहर का वृत्तान्त लेखकलोग अब यों वर्णन करते हैं कि बुज़ुरुच्चमेहर अतिधर्म में आरूढ़ चतुर और अतिगुणज्ञ था एक कोने में परमेश्वर का स्मरण करनेलगा एक दिन उसकी माता ने कहा कि अब मेरा चित्त साग खाने को चाहता है बेटा जो कष्ट सहकर माको साग लेआदेते तो मेरी नियति भरती बुज़ुरुच्चमेहर ने माका कहना स्वीकार किया और अन्यायीबाग़की ओर चला जब बाग़के दरवाज़ेपर पहुँचा तो बाग़का दरवाज़ा बन्द पाकर मालीको हांक दी आवाज़ सुनकर माली चलाआया ताला खोलने का मनोरथ किया ख़्वाजेने कहा कि ताले में हाथ न लगाना तूने जो कल सांप मारा था उसकी स्त्री ताले की भड़में तेरे डसने के निमित्त आई है अपने जोड़े का बदला लेने को बैठी है बाग़वान ने जो देखा तो सत्य एक नागिन ताले के भरमें बैठी है माली ने उसे मारकर दरवाज़ा खोला और चरणों पर गिर पड़ा और कहनेलगा कि आपने मेरी जान बचाई मुझे पहिलेही जतादिया नहीं तो मेरे मरने में क्या शेष रहाथा वृथा अनुचर का प्राण गया था यह कहकर बोला कि आपकी क्या आज्ञा होतीहै उसने उत्तर दिया कि मुझे थोड़ा साग चाहिये जो दाम होंगे दूंगा अपने घरका मार्ग लूंगा बाग़वानने कहा कि साग आपके निमित्त लाता हूं मोल उसका आप ऐसे परोपकारी से क्या लूंगा योंहीं दूंगा माली ज्यों साग लाने गया तो क्या देखताहै कि बकरी केसर में खाती है माली ने झुंझलाकर एक बेलचा उसके मारा वह तड़पकर मरगई बुज़ुरुच्चमेहरने कहा कि तुमने नाहक़ में यह तीन अपराध लिया उसने मुस्कराकर कहा कि साहबज़ादे! अच्छी भांति से एक जीव के तीन बतलाते हो यह क्या बात कहते हो बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि सुन बेसमझ! इस बकरी के पेटमें अमुक २ रङ्गके दो बच्चे हैं वहभी इसीके साथ मरगये इन दोनों में यह बातें होती थीं कि अलकश भी बैठा सुनरहा था उस ओर ध्यान लगाये था मालीको बुलाकर सब वृत्तान्त पूछा कि क्या बातें करते थे उसने सब समाचार सच्चा विचारके कहदिया अलकश ने बकरीका पेट फारकर देखा तो उसी रङ्गके दो बच्चे बकरीके पेट में देखे यह वृत्तान्त देखकर अतिआश्चर्य माना और बुज़ुरुच्च-मेहर को बुलाकर अपने समीप बैठालिया और पूछा कि तू कौन है और तेरे पिताका क्या नामहै और कहांहै बुज़ुरुच्चमेहरने कहा कि ख़्वाजेबख़्तजमालका पुत्र और हकीम का नवासा हूं तझीके अन्याय का सताया हूं मेरे बाप को किसी क्रूरने मारडाला है उससे बदला लेनेको फिरताहूं कोने में बैठना स्वीकार किया कुछ दिन और धीरज धरे बैठा ईश्वर का स्मरण करता हूं सदा अपने पिता के शोकमें हूं अलकशने कहा कि तूने अपने पिताके मारनेवाले का खोज पाया है बुज़ुरुच्चमेहर ने उत्तर दिया कि ईश्वर बड़ा अन्तर्यामी है उसके निकट सब सहज है कभी न कभी पता मिलही जायगा उस दुखिया बेअपराधी मारेहुए का सकल समाचार रङ्ग देखावेगा अलकशने कहा

के भला तू बता रात को मेरा क्या मनोरथ था बोला कि तूने गड़ाहुआ माल पाया है सहज ही हाथ आया है चाहता था कि अपनी स्त्री से कहै परन्तु नहीं कहा कुछ समझकर चुप होरहा यह बात सुनतेही अलकश के होश उड़गये और चित्त घबरा गया सन्देहमय होगया कुछ और का औरही ढङ्ग बनगया वेद के समान कांपने लगा चित्त में विचार किया कदापि यह भेद विदित होजाय माल जाय और सङ्कट ऊपर आवे यह लड़का अन्तर्गति जाननेवाला है ऐसे मनुष्य का चित्त और कलेजा खानेसे वह भी अन्तर्यामी होजाता है इसको मारना चाहिये और इसका कलेजा खाया चाहिये सब उपद्रव भी जातारहै और मुखसे कोई अक्षर भी न निकाल सकेगा शीघ्रही बख़्तियार हब्शी को बुलाकर कहा कि तू मेरा सेवक है इस समय चुपके से तू इस लड़के को मारकर इसके कलेजेका क़बाब बनाकर मुझको खिलादे इसके बदले में तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा उस सेवक ने बुज़ुरुचमेहर को एक अन्धी कोठरी में लेजाकर पछाड़ा चाहता था कि छुरी गलेपर फेरे तो अत्यन्त खिलखिला कर मेहर हँसा और कहा कि जिस आशापर यह पातक लेता है वह तेरी ईश्वर से झूठ होगी बल्कि यह प्रतिष्ठा भी तेरी भङ्ग होवेगी जो तू इस कार्य से बचारहेगा तो ईश्वर चाहेगा तू मुझसे अपनी मनोकामना पूर्ण करेगा उसने कहा कि भला मेरा क्या मनोरथ है ? जो तुम बतादोगे तो हम तुमको अभी छोड़देवेंगे बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि तूने अलकश की बेटी से प्रीति की है और उसे अलकश तुझे कधी नहीं देगा परन्तु मैं तेरा उससे निश्चय करके विवाह करादूंगा बल्कि तेरे विवाह की सामग्री भी मैं करदूंगा इस समय तू मुझे छोड़दे आजके दशवें दिन बादशाह एक स्वप्न देखकर भूल जायगा और अपने मन्त्रियों को वह स्वप्न सुनावेगा सब से उस का अभिप्राय पूछेगा सबकी परीक्षा लेगा जब कोई बता न सकेगा तो बादशाह क्रोधवान् होगा तिस समय वही तुझसे मुझे बुलावेगा ख़बरदार जबतक तीन तमाचे तुझको न मारे तबतक मुझे न बताना यह अक्षर अपनी जीभपर न लाना हब्शी ने कहा कि उसने तेरे कलेजे के क़बाब मांगे हैं जो मैं किसी जीव का कलेजा निकालकर क़बाब बना लेजाऊं तो वह हकीम है निश्चय करके जान लेवेगा और मुझे दण्ड करेगा बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि नगरके दरवाज़े पर एक बकरी का बच्चा पड़ा है उसको आदमी का दूध पिलाकर पाला है एक बुढ़िया बेंचती है मुझसे मोल लेकर उस बुढ़िया को देकर ला और उसे मारकर क़बाब उसके कलेजे को भूनकर उसे खिला शेष मांस अपने खाने के निमित्त रखले उससमय उसको भी ईश्वर का डर और अपने अभिप्राय की लालच लग आई बुज़ुरुचमेहर के कहने के अनुसार काम किया उसके मारने से हाथ उठाया अलकश क़बाब खाकर समझा कि मैं भी अन्तर्यामी होगया बाग़ में बैठे २ आनन्द में मग्न हुआ बुज़ुरुचमेहर जीता जागता अपने घर आया ॥

चौपाई। परा विपति में मैं बहुभाँती। बीतिगई आयों कुशलाती॥

अपनी मातासे सब समाचार वर्णन किया वह बिचारी आफ़त की मारा यह समाचार सुनकर अपनी दीनता गुनकर और पुत्रके मुख से यह वृत्तान्त जानकर अति रोई और फिर उसके वचन पर ईश्वर की प्रशंसा करने लगी और कहा कि बेटा! घरसे बाहर न निकला करो ईश्वर न करे कोई बला तुम पर पड़े तुम को बैरियों से हानि पहुँचे उसने उत्तर दिया कि आप यह बात अपने चित्त में न लावें और रंज न करें देखिये ईश्वर क्या करता है? वह अपनी रचना कैसी देखाता है? उसके दशवें दिन बादशाह एक स्वप्न देखकर भूलगया प्रात समय हकीमों और मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि मैंने रात्रि को एक स्वप्न देखा था सो भूल गया हूं किसी भाँति से याद नहीं आता है तुमको उचित हैं कि उस स्वप्न का वृत्तान्त वर्णन करो उसका बदला हमसे लो सबने विनती की कि जो स्वप्न जान पड़ता तो उसका अभिप्राय सुनाते अपनी बुद्धि के अनुसार कहते बादशाह ने कहा कि सिकन्दरके समय में जो हकीम थे बहुधा वह स्वप्न देखकर भूलजाता था परन्तु उस स्वप्न को वे लोग बतादेते थे जो मेरा स्वप्न बताकर उसका फल न कहोगे तो एक २ को मार डालूंगा क्योंकि मैंने इसी मनोरथ के कारण से सहस्रों प्रकारके काम तुम्हारे निकाले हैं और इसी निमित्त तुमलोगों को हमने नौकर रक्खा है जो न कहोगे तो तुमलोगों को मारकर तुम्हारे बालबच्चों को भी मारूंगा और घर तुम्हारा सब नष्ट करदूंगा चालीस दिन की अवधि देता हूं जो मेरा स्वप्न सच्ची भाँति न कहा तो देखना किस भाँति से मैं करूंगा अलकश पर सबसे बिशेष आज्ञा कीगई क्योंकि वह सब से अधिक अधिकार पर था जितने हकीम और बुद्धिमान् थे इस बात से अत्यन्त घबराकर और संदेहमय होकर परस्पर कहनेलगे कि बिना सुनेहुए स्वप्न का विचार किस भांति से करें जिससे इस बला से छूटजावें जब चालीस दिवस हुए अर्थात् बादशाह की कही अवधि व्यतीत होगई तब सबको बुलाकर पूछा कि स्वप्न का विचार किया कुछ पता लगाया और तो कोई न बोला परन्तु अलकश ने प्रार्थना की कि सेवक को रमल के द्वारा निश्चय हुआ है कि आपने स्वप्न में यह देखा था कि आकाशसे एक पक्षी ने आकर आपको आगके गड्ढे में डालदिया है यह देखकर आप डरसे अति चौंक पड़े और स्वप्न भूल गये बादशाहने क्रोधवान् होकर अतिआतुर कहा कि ऐ नीच! तू मुझे झूठ इस प्रकार के शब्द सुनाता है तूने मुझे भली प्रकार की वार्त्ता कही उसपर दावा हकीमी और रम्माली का करता है और अपनी बुद्धिमानी जताता है यह स्वप्न भला मैंने कब देखा था कि जो तूने वर्णन किया अच्छा मैंने दो दिवस की आज्ञा और दी है जो तैंने तीसरे रोज मुझे स्वप्न न बताया तो सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुझे नमरूद की भट्ठी में डालकर जला दूंगा औरों को अतिदुसह दुःख दूंगा किन्तु किसी को भी जीता न छोडूंगा अलकश यह सुन अतिघबराय शोक में मग्न होगया और इसी प्रकार से घर को गया वहां पहुंचकर

शीघ्र बख्तियार हब्शी को बुलाकर पूछनेलगा कि सच बता तैंने वह लड़का क्या किया जीता छोड़दिया या कि ज़मीनके तले छिपाकर गाड़ दिया? उसने कहा कि उसको मैंने तभी मारडाला था और उसके कलेजे का क़बाब बनाकर आपको खिला दिया अब मुझसे पूछा जाता है कि वह लड़का कहां है? अलकश ने कहा कि वह बड़ा बुद्धिमान् और अन्तर्यामी है वह तेरे हाथ से बचरहा होगा आज्ञाभङ्ग से मत डर मुझे बता मैं क़सम खाता हूं तुझसे कोई बात न कहूंगा बल्कि तुझे जागीर और अधिकार दूंगा तू उसे बतलादे कि जिसमें मेरी ज़ान बचे और मेरे साथ बहुत लोगों की जान और प्रतिष्ठा बचजावे उसने जो पहले कहा वही बात फिरभी कहा तब तो उसने बलसहित तीन तमाचे उसके मारे जिससे नाक फटकर लोहू निकलआया बख्तियार मुरझाकर ज़मीनपर गिरगया थोड़ी देरके पीछे चेतमें आया और कहने लगा सेवक को मत मारिये मैं उसको लिये आता हूं आपका कहा किये लाता हूं अलकश ने कहा कि हे नादान! पहले मैंने किस २ भांति से पूछा तूने न मानने के सिवाय स्वीकार न किया अब जब मार खाई यह बात जीभपर आई बख्तियार ने कहा कि उसने मुझसे मनाकरदिया था कि जबतक तीन तमाचे न खालेना तबतक मेरा पता किसी भांति से न देना अलकश ने उसको छाती से लगाया और कहा कि शीघ्र उसको बुला ला मैं तुझे अतिप्रसन्न करूंगा और अगणित रत्न दूंगा और बख्तियार ने बुज़ुरुचमेहर के दरवाज़े पर जाकर हांक दी बुज़ुरुचमेहर अतिशीघ्र घर से बाहर आया और समाचार पूछके उसके साथ अलकश के समीप गया अलकश बुज़ुरुचमेहर से शिष्टाचार सहित आगे आया और अगली बातों का उजर करनेलगा और कहा कि बादशाह एक स्वप्न देखकर भूलगया है और हम को नाहक सशोक कररक्खाहै कहताहै कि मेरा जो स्वप्न न बताओगे तो एक २ को मारूंगा सो आपके सिवाय ऐसा किस में बल है कि अन्तःकरण की बात बताये हमारी स्त्री और बच्चों के संकट से छुड़ाये जो इस समय कृपा करके आप उस स्वप्न को बतावें तो मानों हमारे सबकी ज़ान छुड़ावें बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि मैं यहां तो न बताऊंगा किन्तु आप प्रातसमय बादशाह से प्रार्थना करें कि मैं सरकार के हकीमों और बुद्धिमानों व मन्त्रियों की परीक्षा करता था कि यह भी कदाचित् अन्तःकरण की बात जानने का ज्ञान रखते हों सो जैसा यह लोग जानते हैं मुझपर क्या दीनदयालु परभी प्रकाशित होगया इनकी चतुरता विदित होगई और अनुचर का एक विद्यार्थी है जो उसे सरकार बुलाकर पूछें तो वह भी आपका स्वप्न बतला देगा सब ब्यौरा समेत सुना देगा जब बादशाह मुझे बोलावेगा मैं स्वप्नको वर्णन करके उस का अभिप्राय बिचारके कहदूंगा आपको प्रसन्न करादूंगा सैकड़ों मनुष्यों की जान बचालूंगा आपको बहुतसा अधिकार और भी मिलेगा॥

राजसभा से बुजुरुचमेहर करके बादशाह के स्वप्न का वर्णन और उसके पिता के बदले अलकशमन्त्री का वध वृत्तान्त वर्णन ॥

कुं० । गेहूं पै गेहूं जमै, यवसे यव ह्वैजाय । बदला अपना होइ जनि, नहिं पाछे पछिताय ॥
नहिं पाछे पछिताय, समयसम एक न जैहैं । पहिलेही पतझार, फेरि फलो लागिपैहैं ॥
ग्रन्थकार कहै सत्य, मानले मेरे बैना । दुख परने के बाद, चैन पैहैं भरि नैना ॥

इस संसार में बदला सबका मिलता है क्योंकि बहुधा लोग कहावत को कहते हैं कि कलियुग नहीं करयुग है इस हाथ से दे उस हाथ ले और बदला तो इसी संसार में मिलजाता है कदाचित् दैवयोग से रहजावे तो उसे अन्त में अवश्य मिलता है इसलिये मनुष्य को उचित है कि ईश्वर का ध्यान करे और क्षणभंगुर संसार की सम्पत्ति के लिये दुनिया में बदनामी न ले और परलोक को न बिगाड़े जैसे कि इस दुष्ट अलकश ने बुरे काम करके दुनिया और परलोक को बिगाड़ा है उसका वृत्तान्त लिखनेवाले ठीक २ यों लिखते हैं कि दूसरे दिन जो अलकश मन्त्री बादशाह की सेवा में प्राप्त हुआ और बुजुरुचमेहर का हाल प्रारम्भ किया तो बादशाह ने आज्ञा की कि उसको राजसभा में शीघ्र लाओ यह सुनकर एक चोपदारने बुजुरुचमेहर से जाकर कहा कि चलिये बादशाह ने आपको स्मरण किया है और बहुत शीघ्र बुलाया है उसने कहा कि मेरे वास्ते सरकारसे क्या सवारी लाये हो ? तो मैं उसपर सवार हो बादशाह की चौखट चूमकर सभामें उपस्थित होऊँ उसने कहा कि सवारी तो नहीं लाया उसी भांति से आया था क्योंकि सवारी के निमित्त सरकार से कुछ आज्ञा नहीं पाई थी मैं अब जाता हूं और सरकार के मन्त्रियों से विनय करके सवारी लाताहूं चोपदार ने जाकर बिनती की कि बेसवारी वह नहीं आसक्ता है वह मनुष्य बड़े मनुष्य का लड़का है आज्ञा हुई कि घोड़ा लेजावो उसे शीघ्र लाओ जब घोड़ा लेजाकर चोपदार आया तो बुजुरुचमेहर ने कहा कि घोड़ेकी उत्पत्ति वायुसे है और मैं मिट्टी से बनाहूं विदित है कि मिट्टी और वायु से परस्पर बिरोध अर्थात् एक दूसरे में मिल नहीं सक्ते हैं इस कारण से मैं तो घोड़े पर सवार होकर कभी न जाऊंगा मेरे लायक सवारी लाओ तो मैं उसपर सवार होकर चलूंगा बादशाह की सभा में चोपदार ने पहुँचकर उसके कहेके अनुसार समाचार वर्णन किये बादशाह ने उत्तर दिया कि सब सवारियां लेजाओ जिसपर उसका चित्त चाहै सवार हो आवे बादशाह की आज्ञानुसार सब प्रकार की सवारियां तय्यार कीगईं और शीघ्र बुजुरुचमेहर के घर पहुंचीं बुजुरुचमेहर ने कहा कि हाथीपर तो मैं न चढूंगा क्योंकि यह केवल सवारी बादशाह की है इस पर सवार होना बेअदबी है मियानेपर बीमार चढ़ते हैं मैं बीमार भी नहीं हूं और न मृतक जो चार के कांधे जाऊं जीतेजी अपने को मराहुआ बनाऊं प्रशंसा है उस ईश्वर की मैं अच्छीभांति नीरोग हूं न मांदा न सुस्त हूं और ऊंट किरिला स्वभाव है और मैं मनुष्य हूं इसपर सवार होनेकी ताक़त नहीं और मुझमें ऐसी कुछ लियाक़त नहीं खच्चर हरामजादा है और मैं हलालजादा हूं मेरी सवारी के योग्य नहीं बैल पर

बनिये और धोबी चढ़ते हैं मैं भले मनुष्य का लड़का हूं और मैं अपने बुरे भले से बचारहता हूं विचारके द्वारा काम करता हूं गधेपर वह चढ़े जो भारी अपराध करे मैं तो बेअपराध हूं बादशाह का छोटा प्रजा हूं इन सवारियों को फेर लेजाओ और मेरा कहा बादशाह को सुनाओ लाचार होकर जो सवारियां लोग लाये थे फेर लेगये और बुजुरुचमेहर की कहीहुई बात बादशाह से कही बादशाह ने कहा कि भला उससे पूछो तो क्या सवारी मांगता है? जो कहै वह भेजदीजावे उसका उपाय किया जावे नौकरों ने जाकर बादशाह की आज्ञा बुजुरुचमेहर को सुनाई उसने कहा कि जो बादशाह स्वीकार करें और स्वप्न सुनना अवश्य हो तो अलकश मन्त्री की पीठ पर ज़ीन कसवाकर भेजदें तो मैं अपने मन की सवारी पाकर उसपर सवार होकर सरकार में आऊं और स्वप्न को भलीभांति से वर्णन करूं दूसरे यह कि वह हकीमों का गधा है और उसपर सवार होना दोष नहीं मुझे उचित है सभा के लोगों को यह वृत्तान्त सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और कहनेलगे यह मनुष्य किस प्रकार का चित्त व मस्तक रखता है और किस प्रकार से साफ़ उत्तर देता है बादशाह की आज्ञा मानने में लोग अपने को बड़ा जानते हैं तो कोई मन्त्री के द्वारा आता तोभी उसका अहसान मानते हैं यहां तो बादशाह उसे आप बोलाते हैं वह किस २ भांति का उत्तर देता है या तो इस मनुष्य के मस्तक में कुछ उपद्रव है या कोई बड़ा मनुष्य है बादशाह यह सुनकर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहा कि अलकश की पीठ पर चारजामा खींचकर लेजाओ बुजुरुचमेहर को लेआओ आज्ञा की देरी थी अति शीघ्र अलकश की पीठपर ज़ीन बांधकर मुंहमें लगाम दीगई और बुजुरुचमेहर के समीप ले जाकर उसके मनोरथ को पूर्णकिया बुजुरुचमेहर अलकश की पीठ के ऊपर सवार होकर एड़ें मारमार कर कहा कि उस ईश्वर की प्रशंसा है कि आज मेरे पिता के बधिक को मेरे बश में किया ॥

बुजुरुचमेहर का अलकश की पीठपर सवार होना और देखनेवालों का उनके साथ जाना ॥

मार्ग के मध्य में जिसने देखा लड़का युवा बृद्ध हर एक उसके साथ हो लिया जब बादशाह के समीप आया बादशाह ने उसकी अतिप्रतिष्ठा की और अच्छा आसन दिया फिर पूछा कि अलकश ने तेरे साथ क्या अपराध किया है? जिस कारण से तूने उसके साथ इस प्रकार किया बुजुरुचमेहर ने कहा कि प्रथम तो इसने बड़ा कपट किया है और आपसा दयालु मालिक पाकर छल का मार्ग लिया है और चोरी भी इसने भारी की है इसको किंचिन्मात्र डर न आया कि जो मेरी चोरी बिदित होजायगी तो इसका अन्त क्या होगा? और कौन भांति से बादशाह मुझ पर क्रोध करेगा जीताहुआ पृथ्वी में गाड़ा जाऊंगा और कौन गति मेरी होगी यह चोरी कैसी आपकी देखादेखी दूसरी यह बात है कि यद्यपि इसने मेरे पिता से रमल की विद्या पढ़ी और उनका विद्यार्थी था और उन्होंने इसके साथ अति स्नेह किया और सब प्रकार से

ज्ञान व गुण व विद्या को दिखाया जो इसका बाधक होता तो इस प्रकार से कभी इसको न सिखाता और मेरा पिता इसकी ओर से अपना चित्त प्रसन्न और स्वच्छ और गुरु के समान सिखाने में रखता था और अपनी सन्तान से इस बुद्ध के साथ अधिक स्नेह रखता था और कोई समाचार भला बुरा इससे छिपा न रखता था और कोई वस्तु इससे बाहर नहीं रखता था सात ढेर द्रव्य के गाड़ेहुए सदाद के थे उसे मिले थे आपने नहीं लिया और मित्रता के कारण इसको बतादिया एक कौड़ी भी उसमें से न ली सकल द्रव्य इसे सौंप दिया इसने इस डरसे कि कदाचित् यह बात किसी से कहदे और होते २ आप पर भी विदित होजावे तो ये सातों ढेर मेरे हाथ से जाते रहैं और सहजही दूसरे को मिलजावें उस बे अपराध को मारकर उसी कोठरी में गाड़दिया कुछ भी ईश्वर और बड़े बूढ़ों का डर मन में न लाया और बे अपराध अपनी गर्दनपर अपराध लिया और अभी उसी स्थान में उसकी मिट्टी पड़ी है कङ्कड़ पत्थर के तले कुछ छुपी है यह नहीं जाना कि बे अपराध का अपराध पुकारता फिरेगा नये २ भांति के रङ्ग देखाकर संसार में जहां पानी न मिलेगा वहां मारेगा सो इस कारण से मैं दीनदयालु सर्वकृपालु से आशा रखताहूं कि मैं अपने न्याय को पहुँचूं जो आप मेरा न्याय अपने न्यायशाला में न करेंगे तो ईश्वर सर्व-व्यापी है वह न्याय आपसे मांगेगा जिस समय मैं उससे मांगूंगा उस समय आप भी पूछे जायँगे इस काम के निमित्त बदले के हेतु आप बुलाये जावेंगे तब उसके सामने क्या उत्तर दीजियेगा ? जब आपसे पूछेगा तब किस भांति से तरियेगा जब बादशाह ने यह समाचार पाया अत्यन्त क्रोधवश होकर अलकश मन्त्री की ओर देखा और कहा यह क्या कहता है ? इसके पिता ने तेरे साथ क्या अपराध किया था ? जिस पर तैंने उसे मारडाला और उसके लड़के को मुरहा और स्त्री को रांड़ कर डाला मेरा क्या तैंने ईश्वर का भी कुछ डर न किया यह न सोचा कि मैं इस समय नाहक़ अपराध करता हूं अन्त को यह पाप रङ्ग प्रकट करेगा मुझे अतिदण्ड दिलावेगा सच है उसने तेरे साथ ऐसीही बदी की थी कि जिसके बदले तूने उसको इस भांति का कष्ट दिया जो वह रमल की विद्या न पढ़ाता तो ॥

दोहा। बाणावली सिखाय दी, बिबिधभांति गुण आहि। अन्त निशाना कीन मोहिं, निज मनमें हर्षाहि ॥

निशाना मृत्यु के तीर का क्यों बनता जी वह सात ढेर द्रव्य के जो कि ईश्वर ने दी थी तुझे न दिखाता तो उसका भोग क्यों चढ़ता सच है ॥

सोरठा। बदकी बदी न जाय, नेकी जो बातें करै। ताकों बदी समाय, यह चरित्र है बचन को ॥

किन्तु देख तू इसका बदला कैसा पाता सीधा अभय रसातल को जाता है और इस समाचार को तैंने राजसभा में प्रकट न किया यहभी बड़ा अपराध किया और न्याय का पाप तूने अपने शिरपर लिया अलकश ने कहा कि सरकार यह झूंठ मुझे अपराध लगाता है और सहजही मुझे छिपे सकता है बुज़ुरचमेहर ने कहा कि यही तो

मैदान है हाथ कंगन को आरसी क्या है? कुछ मनुष्य मेरे साथ चलें मैं अपने दावाको ठीक करदूंगा इस भूंठे को दरवाज़ेतक पहुंचाऊंगा बादशाह आप नौकरों समेत उस स्थान की ओर जहां ख़्वाजेजमाल मराहुआ पड़ा था चला बुज़ुरुचमेहर के साथ हो लिया और आज्ञा की कि अलकश को भी बेड़ियां पहिनाकर पैदल के समान शीघ्र दौड़ालाओ इस चरित्र को देखकर सब नगर में हलचल पड़गया सब मनुष्य इस समाचार के देखने के निमित्त दौड़े कोई ईश्वर का क्रोध जानकर बचने का शब्द जीभपर लाया कोई मनुष्य यह कहता था कि ऐसे शीलवाले मनुष्य को इसने अपराध बिना मारा है सैकड़ों गालियां देनेलगे और भला बुरा कहनेलगे कोई कहता था बदी का फल बदी होता है बुरे कामका बदला कभी न कभी मिलता है कोई उस की बुरीदशा देखकर उसपर शोक करनेलगा था खुलासा यह है कि सकल नौकर व देखनेवालों सहित यत्नसमेत उसको बाग़ के दरवाज़े तक लाये जिस समय अन्याय बाग़ में पहुँचे बुज़ुरुचमेहर बादशाह को उस तहख़ानेमें लेगया और उसी स्थान का पता दिया देखा तो सत्य सात ढेर द्रव्य के उस तहख़ाने में भलीभाँति रक्खे हैं और एकओर मिट्टी ख़्वाजेजमालकी पड़ीहुई है परन्तु सूख गई है और मारा जाना बे दोष उसके शरीरपर विदित है और घोड़ाभी मृतक पड़ा है और खाल व हड्डी सब सूखगई हैं कांटेके समान होगया है बादशाह वह अधिक द्रव्य देखकर कृतकृत्य हुआ और आज्ञा की कि इसी समय इस द्रव्य को हमारे ख़ज़ाने में पहुंचावो कुशीलता से हमारे कोठों में भरदो उनकी आज्ञानुसार काम कियागया॥

चौपाई। सम्पति जहँ आति तहँ चलिजाही। यह वृत्तान्त विदित जगमाही॥

और बुज़ुरुचमेहर का कहा सत्य जाना और ख़्वाजेकी लाश निकालकर बहुत धूमधाम से साजकर क़बर में रखवादी और उस स्थान में एक मुक़बरा बनादिया इसके पीछे अलकश से बदला लेने और अपने पिता की क्रिया करने को चाहता था अर्थात् फ़ातिहाआदि अपने दीन के अनुसार करने के निमित्त चाहा इस कारण बादशाह ने समझ और जानकर उसे चालीस दिवसकी छुट्टी कृपा की और अपने कोष से सहस्रों रुपया देकर बिदाकिया बुज़ुरुचमेहर उन रुपयों को हाथियों पर लदवाकर घरमें लाया और कृपाशालिनी माता के सामने रखवादिये और तमाम वृत्तान्त वर्णन किया और चेहलम करनेके सोचमें रहा सब प्रकार के लोग जो बादशाह की न्यायशाला में काम करते थे नई सरकार को देखकर जमाहुए और मित्र तथा स्नेही व कुटुम्ब परिवार के लोग अधिक प्रताप होना सुनकर प्रीतिपूर्वक सब इकट्ठे हुए और खाने को सामग्री होनेलगी और प्रतिदिन खाना बँटनेलगा और अनेक ग्रामों में भी बांटने के निमित्त खाना भेजागया जब मित्रों और कुटुम्ब वालों में अच्छे प्रकार से शिष्टाचार करचुके उस समय भिक्षुक आदि प्रजा की बारी आई इसी प्रकार से चालीस दिवस तक बराबर पुण्य करतारहा चालीसी का

ओहार करचुका और सबभांतिके रसम निबाह दिये तिस पीछे बुजुरुच्चमेहर बादशाह के समीप गया मातमपुरसी की अर्थात् शोक करनेकी खिलअत पाई और अपनी न्यायशाला में रहनेके निमित्त बादशाह की आज्ञा हुई एक दिवस अवसर पाकर बिनय की कि जो प्रभु की आज्ञा हो तो उस स्वप्न को कहूँ आपके समीपसत्य ठहरूं कहा कि सबसे उत्तम जो मेरा स्वप्न सच बतावोगे तो बहुत कुछ पावोगे मेरा सन्देह दूर होजावेगा चित्त दुबिधारहित होगा बुजुरुच्चमेहर ने बिनय की कि आपने यह स्वप्न देखा था कि दस्तरख्वान बिछा है उसपर भांति २ के इकतालीस व्यञ्जन के पात्र खानेके रक्खे हैं आपने एक हलुआ के पात्रमें से कौर तोड़कर चाहा कि भोजन करें इससे एक कुत्ता काले रंग का आया और वह कौर आपके करसे छीन लिया और वहां से भागगया आप डरकर चौंकपड़े और इस स्वप्न को भूलगये बादशाह ने कहा कि मैं सौगन्द खाता हूं कि यही स्वप्न मैंने देखा था और सत्य है मेरा स्वप्न यही था हां अब इसको बिचारकर मेरे सामने बर्णन करो बुजुरुच्चमेहर ने कहा कि सेवक को अपने धाम में लेचलिये और सब स्त्रियों को जमा कीजिये उस समय इस स्वप्न का बिचार कहूँगा और सच २ समाचार सुनाऊँगा बादशाह बुजुरुच्चमेहर को साथ लेकर महल में गया और स्त्रियों को बोलाया सब बादशाह की आज्ञानुसार एक स्थान में आईं तदनन्तर एक युवती अतिनागर परम उजागर स्वरूप की आगर साज पहिने परीसमान प्रकाशमान मृगनयनी मृदुबयनी गजगामिनी सिंहकटिभामिनी लौंड़ियां साथ मेहँदी हाथ में आस पास टहलुई बीच में हुई नई चालढाल से उपस्थित हुई लौंड़ियों के साथ एक हब्शिन भी दृष्टि पड़ी बुजुरुच्चमेहरने उसका हाथ पकड़के विनय की कि यह वही कुत्ता काला है जिसने आपके हाथ से कौर छीनलिया था और वह कौर वह शाहजादी है जो आपसा बादशाह स्वरूपवान् पाकर फिर छोड़कर इस दुष्ट के साथ बिलास कररही है बादशाह आश्चर्य मानकर उसे देखा तो विदित हुआ कि सत्य वह स्त्री नहीं मर्द है स्त्री के बाना में शाहजादी के साथ रहा करता था रात दिन आनन्दसहित निडर विहार किया करता था बादशाह को इस वृत्तान्त के मालूम होने से अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ और सब द्वारपाल पकड़गये और खासकर इस द्वारपाल को अतिकष्ट दिया गया और बादशाह की आज्ञा से उसी समय हब्शी कुत्तों करके कटायागया और उस शाहजादी को प्रथम तो गधेपर चढ़ाकर सकल नगर में घुमाया तदनन्तर मीनार में रखकर चुनवादिया और बुजुरुच्चमेहर को बड़ाई की खिलअत कृपा की अलक्स को उसी समय बाहर भेजवाकर और सबको देखाकर एक स्थान में गड़वादिया परन्तु ऊपरका धड़ खुलारक्खा और तीरन्दाजों से निशाना लगवाया और अलक्स की धन सम्पत्ति स्त्री पुत्रों समेत बुजुरुच्चमेहरको देदी लाखों रुपये का धन कहां से कहां आया बुजुरुच्चमेहर नजर देकर वहांसे छुट्टी लेकर और अख्तियार सेवक को साथ ले अलकश मन्त्री के घरमें गया उसकी स्त्रीसे कहा कि मुझे इस धन सम्पत्ति से कुछ काम नहीं

है ऐसा धन लेकर कोई क्या करै? तुझीको मुबारक रहै परन्तु मैंने बख़्तियार से वचन किया था कि अपने बापका बदला लेनेके पीछे तेरा बिवाह अलकश की लड़की के साथ कराढूंगा और तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा सो तू अब मेरी ख़ातिर से इसके साथ अपनी दुहिता ब्याहदे और इसकी मनोकामना पूर्ण करदे और तुझे भी वचन देता हूं कि जों तेरी बेटी के पेटसे बख़्तियारका जो पुत्र उत्पन्न होगा तो उसे मैं पढ़ाऊंगा और जब वह चैतन्य होगा उस समय अलकश के अधिकार बादशाह से दिलादूंगा अलकश की स्त्रीने बिनय की कि मुझे आपके मनोरथ में कुछ उज़र नहीं है मैं आपकी दासी तुल्य हूं आप जिसपर प्रसन्न हों मैं उसपर राज़ी हूं वह आपकी दासी है जिस को इच्छा हो देदीजिये मैं अतिआनन्द पाऊंगी खुलासा यह है कि अलकश की स्त्री ने बुज़ुरुचमेहर की आज्ञानुसार अपनी बेटी का बिवाह बख़्तियार हब्शी से कर दिया बुज़ुरुचमेहर का कहना स्वीकार किया जिस समय बादशाह ने यह सुना तो बुज़ुरुचमेहर की बुद्धिमानी और शीलता और निर्लोभता देखकर आश्चर्य माना और फिर कई दिन पीछे जिस समय मन्त्री और बुद्धिमान् और हकीम व पहलवान आदि न्यायशाला में आये कहा कि बुज़ुरुचमेहर अपने घराने में बड़ा अच्छा मनुष्य है और भले अच्छे मनुष्य का पुत्र है और उसके समान हिम्मत में दूसरा नहीं है ख़्वाजे बख़्तजमाल का बेटा हकीम जामासका पौत्र है और विद्या में अपनासा दूसरा नहीं रखता है और धर्म कर्म में अतिचतुर है ऐसा मनुष्य कम देखने में आयाहै देखो अलकश कुकर्मी अधर्मी ने कैसी दुष्टता की जो मैंने सम्पत्ति उसको कृपा की थी उसने उसकी स्त्री और बेटी को देदी एक कौड़ीतक उसमें से उसने न ली व्याकरण व ज्योतिष रमल गणित इत्यादि सब प्रकार की विद्याओं में अतिनिपुण है इसको छोड़ उदार वो राजप्रबन्धमें चतुर पहलवानी सुशीलता और शुभस्वरूप में भी अति शोभित है और सत्य और मृदु बोलताहै इस भांति का मनुष्य देखने में नहीं आया है बल्कि ढूंढ़ने से ऐसा सर्वगुणी नहीं मिलसक्ता है और अन्तर्यामी भी है इसके पहले हमारे राज्य में जितने मन्त्री थे अबुध और राज्यप्रबन्ध में आलसी थे इस कारण से इसको मैं अपना मन्त्री बनाकर प्रधानता की ख़िलअत इसे दूंगा सभाके रहनेवालों ने बादशाह की बुद्धि की प्रशंसा की और कहा कि सत्य है इस गुण का क्या कोई दावा करसके आपकी बुद्धिमानी वर्णन करने से बयान नहीं होसक्ती है इस काम को जो आपने कहा है उसे कृपादृष्टि से शीघ्र करडालिये हम सबको भी यही आशा है कि बुज़ुरुचमेहर को अधिक अधिकार दियाजावे बादशाह ने उसी समय बुज़ुरुचमेहर को मन्त्री की ख़िलअत दी और दाहिनी ओर कुरसी पर बैठने को तख़्त के समीप आज्ञा दी फिर थोड़ी देरके पीछे कचहरी बरख़ास्त हुई बुज़ुरुचमेहर अति हर्ष से अपने घर में आया और पारितोषिक आदि बँटनेलगा उसकी माता देखकर ईश्वर को नमस्कार करके प्रशंसा करनेलगी बुज़ुरुचमेहर राज्यप्रबन्ध को [illegible] करने लगा ॥

बादशाह करके स्वरूपवती दिलाराम नाम स्त्री का निकालना और फिर उसके स्वीकार का वर्णन ॥

आकाश बाजीगर मनुष्यों को किस २ भांति से फिराता है और माया आकर्षणी कैसे रूप दिखाती है कभी फ़क़ीर को बादशाह और कभी बादशाह को फ़क़ीर कर देती है और जिन्हें सूखी रोटीतक नहीं मिलती वह सहस्रों मनुष्यों को भोजन देते हैं जो एक २ कौड़ी के कंगाल थे उनको धन सम्पत्ति अत्यन्त बढ़ाते हैं इस वृत्तान्त के अनुसार यह इतिहास एक यती का वर्णन करते हैं कि बादशाह को उस स्त्री चञ्चल चपल की चाल से सब स्त्रियों का विश्वास जातारहा दिलाराम के सिवा कि वह अतिस्वरूपवान् और गाने व बजाने आदि में अतिचतुर थी बादशाह के निकट कोई स्त्री आने न पाती थी और कदाचित् किसी स्त्री का सामना दैवयोग से हो गया तो बादशाह क्रोधवान् हो उसे अधिक दण्ड देता था एक दिन बादशाह आखेट को गया बाज, जुर्रे, बहरी, लगाड़झगड़, बेसरापहाड़ी, पाहबहरी, बाशासिकंरा, बाशातिर्मुनी आदि व शिकारी कुत्ते, चीते, स्याहगोश, करौल इत्यादि का समूह का समूह साथ बादशाह के चले राज्य के समीप एक पहाड़ आसमान के समान ऊंचा अतिरमणीक स्थान कहीं २ फूल लगेहुए और मनोहर भूमि देखने में आई किसी ओर अतिलम्बे सीधे वृक्ष शोभायमान थे किसी ओर बेली अधीन से शिर पृथ्वीपर रक्खेहुए और उसके खोह में एक आखेट की जगह अतिआनन्ददायक थी और भांति २ के फूलों की सुगन्ध छारही थी और वृक्ष अतिहरे लहलहा रहे थे और शिकार इस भांति से थे कि गिनने में न आसके काजकुंग, सुरख़ाब, मुर्ग़ाबी, सारस आदि अगणित इसको छोड़ एक ओर मैदान में मृग, चीतल, पाढ़े वा बारासिंगे, पसीन, घोड़ारोज, चिकारी भांति २ के पशु पक्षियों की अधिकता थी और कोसों तक घास लहसुनिया की भांति जमी थी और पानी की नहरें चारों ओर से बहती थीं कहीं नदी कहीं सोते कहीं सरोवर बहते थे एक ओर महानद लहरें आनन्दमयी ले-रहा था जिसका फाट व जल निर्मल और बहुत पवित्र था और उसीके किनारेपर हरे हरे धानों के खेत लहलहा रहे थे और कहीं २ फूल फूलरहे थे बादशाह यह समाचार देखकर नद के समीप उतरपड़ा दैवयोग से एक मनुष्य वृद्ध लकड़ियों का गट्ठा शिर पर धरेहुए बनकी ओरसे आताहुआ दृष्टि पड़ा अत्यन्त वृद्ध होगया था बोझ भरने से कांप रहा था मार्ग में अच्छी भांति से चला न जाता था बादशाह उसके ऊपर दयालु होकर कहनेलगा कि पूछो इस लकड़िहारे का क्या नाम है इसका घर कहां है पूछा गया तो जाना कि नाम इस दीन का क़वाद है कुसमय के हाथों से अतिदुःखित होरहा है बादशाह अपने नाम के मनुष्यको देखकर अतिआश्चर्य मानकर बुजुरचमेहर से पूछा कि देखो तो हमारे और इसके भाग्य में क्या भेद है? यद्यपि एकराशि होनेसे मैं तो सातों देशों का बादशाह हूं और यह भिखारी है बुजुरचमेहरने रीतिके अनुसार देखकर बिनय की कि आपकी और इसकी राशि तो एकही है और आप

भी एक हैं परन्तु आपके उत्पन्न होने के समय चन्द्र सूर्य और स्थान पर थे और इसके पैदा होने के अवसर वे दोनों मीन गृह में थे यह सुनकर दिलाराम स्त्री ने इस भांति से कहा कि मैं इसका प्रमाण नहीं मानती इन नक्षत्रों को कुछ नहीं जानती मुझे जान पड़ताहै कि इसकी स्त्री कुबुद्धि है और यह मनुष्य भोला है नहीं तो इस गति को न प्राप्त होता और इसका यह समाचार न होता तो इस कष्टमें अपनी अवस्था न खोता बादशाह तो स्त्रियों की ओर से शोकमय व अप्रसन्न रहताही था दिलाराम की यह बात अतिबुरी जानपड़ी इसके कहने से जानाजाता है कि हमारी सम्पत्ति इसी के हेतु करके है और सब धन व सामग्री इसीसे है क्रोधित हो बादशाह ने कहा कि इसका भूषण यहीं उतारके इसे लकड़िहारे को दो तुरन्त हमारी दृष्टि से इस निर्लज्ज को दूर करो आज्ञा होतेही वह लकड़िहारे को सौंपदीगई सहस्रों मनुष्यों के मध्य में अतिशोक में ग्रसित हुई दिलाराम ने ईश्वरकी कर्तव्य जानकर लकड़िहारेसे कहा कि मुझे अपने घरको लेचल भगवान् ने तुझपर दया की कि मुझसी स्त्री को तुझे दिलाया ईश्वर का धन्यबाद कर कि कष्टके दिन दूर हुए इसका शोच न करना कि मुझे रोटी देनी होगी कि इस अवस्था में और बिपत्ति शिरपर लेनीपड़ेगी मैं और हजारों को भोजन दूंगी तेरा नाम प्रसिद्ध करूंगी इन बचनों को सुनकर वह वृद्ध मनुष्य अत्यन्त प्रसन्न हुआ अपने साथ उसको घर लेचला जब घरके निकट गया तो उसकी स्त्री ने देखा कि बुड्ढा आज नया चरित्र लाया और यह एक नया फूल बन में फूला एक स्त्री अतिकोमल युवती स्वरूपवती लिये आता है क्या बुढ़ापा लगा है कि मुझपर इस अवस्था में दूसरी सौत लाया है यह बचन कहकर बड़े बलसे दो थप्पर मारे जिससे बूढ़ा भूमिपर गिरपड़ा लोटन कबूतर की भांति लोटने लगा दिलाराम ने उस स्त्री से यह कहा ॥

चौपाई। आप क्रोध किमि उसमें लीन्हा। तव पति पितासरिस मैं चीन्हा ॥
कछु अपने उर जनि घबराहू। नहिं पुनि शोच पोच पछिताहू ॥

ऐ बीबी! सुलक्षणी परी बिलक्षणी इस नाते से आप मेरी दयाशालिनी माता के समान हुईं अपने लड़कों में मुझे भी जानो मुझे अपने हाथ से रोटी उठाकर दीजिये मैं खाने पीने का दुःख न होने दूंगी बल्कि और आपकी सेवा करूंगी उस बुढ़िया को दिलाराम की बातों पर दया आई और अपने कहने पर लज्जित होकर कहा कि बीबी मैं राजी हूं सहित घरबार आपका है मुझे भी जो हाथ उठाकर देवोगी तुम्हारी सेवा किया करूंगी और यह उसका मामूल था कि दिनभर लकड़ियां सदा बीनकर संध्या समय बेंचकर बाजार से रोटियां मोल लेकर घर में आता और बारह तेरह लड़के लूले लँगड़े अपाहिज उसे लिपट जाते और रोटियां लेकर परस्पर बांटकर खाजाते थे परन्तु पेट सन्तुष्ट कभी न होता था भूखे रहते थे यह दीनता और कष्ट सहते थे एक दिन तो दिलाराम यह समाचार देखकर चुप होरही दूसरे दिन न रहागया उस लकड़िहारे से कहा कि बाबा जान आज

तुम लकड़ियां बेंचकर गेहूं मोल लाना बाज़ार की रोटियां किसी भांति से न लाना उसने कहा कि अच्छा बेटा आज ऐसाही करूंगा तुम्हें गेहूं लादूंगा उस दिन लकड़ियां बेंचकर वह गेहूं लाया दिलाराम के सामने वैसेही पहुँचाया दिलाराम ले जाकर पीस लाई और रोटी उसकी बनाकर सब को क्षुधाभर खिलाई वह सब उसका धन्यवाद करने लगे और उसके प्रताप से सब चैन करनेलगे जो दो दिवस के पैसे बचेहुए थे उसकी ऊन मँगाकर उसकी डोरियां बटकर उस बूढ़े को सौंपदीं कि इसे बाज़ार में लेजाओ उचित मोलपर बेंचलाना फिर इसी रीति का बर्त्ताव करतीरही कि कई दिवस के गेहूं इकट्ठा करके एक दिन उसकी ऊन बदलाई और उसकी डोरियां बटकर बाज़ार से बिकवा मँगवाई होते २ थोड़े दिवस में कुछ रुपया जमा करके खच्चर मोल लेकर उस वृद्ध को दिया कि इसपर लकड़ियां लादलाया करो इस बुढ़ापे में कष्ट न सहो लकड़ियां भी अधिक आवेंगी और तुम भी सुख पाओगे और जो बचेंगी वह घर में जलजायँगी निदान इसी भांतिसे दो वर्ष के समय में धीरे धीरे चार खच्चर और कई टहलुवे दिलाराम ने मोल लिये और उसके किराये से कुछ असबाब और मकानात भी मोल लिये उस वृद्ध के घर की सूरत बदलगई दरिद्र दूर हुआ भाग्य उदय हुई लड़के बाले अतिप्रसन्न और मियां की भी सूरत रङ्ग बदली देखकर अतिप्रसन्नता से आनन्दमय हुए और जब वर्षा की ऋतु आई दिलाराम ने कहा कि इस ऋतुभर टहलुओं को खच्चर समेत अपने साथ लेजाकर लकड़ियां बनसे बाज़ार में बेंचने को न लायाकरो वहीं पहाड़ की गुफ़ामें इकट्ठा कर आयाकरो जाड़े और वर्षा में अधिक मोल से बिकेंगी कुछ न कुछ लाभ प्राप्त होरहेगा उस वृद्ध मनुष्य ने वैसाही किया जिस भांति दिलाराम ने कहा जब वर्षा व्यतीत होनेलगी और जाड़े की ऋतु आई और लकड़ियों का खर्च स्नान आदिक में होने लगा ऋतुका रङ्ग बदल गया शरदी ने अपना आगमन जनाया बादशाह उसी पर्वत पर फिर आखेट खेलने को आया दैवयोग से दूसरे दिन रात्रि को ऐसी बर्फ़ पड़ी कि जिससे कोई बोल नहीं सक्ता था हाथ पांव बाहर नहीं होते थे आग व रुई के बिना किसी को चैन न था दांतपर दांत बाजरहे थे सब सेना बादशाही शीत के कारण ठिठुरकर मृतक के समान होगई बन में ऐसा दुःख पड़ा कि मनुष्य लकड़ी तापने को खोजने लगे अचानक लकड़ियों का ढेर जो पहाड़ में देखा तब जी में धैर्य आया कि जीने का सहारा हुआ फिर आग लगा कर तापने लगे जब इन्द्रियां चैतन्य हुईं तब प्रातःकाल बादशाह सेनासमेत आखेट खेलकर अपनी राजधानी को लौट आया, कबाद लकड़िहारा भी लकड़ी लेने को चला और अपनी रीति के अनुसार उसी स्थानपर पहुंचा लकड़ियां तो न पाईं परन्तु कोयलों का ढेर देखा तो कमर थांभकर बैठगया और धाड़ें मार २ कर रोने लगा आंसूसे मुख धोने लगा अब ईश्वर के चरित्र को देखिये कबाद के दिन फिरे भाग्य उदय हुई मिट्टी छूने से सोना होता है उन लकड़ियों का सम-

सार यों हुआ कि उस खाड़ी में एक सोने की खान थी जिस समय आग की गर्मी पड़ी वह पिघलकर एक स्थानपर इकट्ठी होगई क़वाद ने कोयला खोदना आरम्भ किया पत्थर भी जल गया था उस को भी कोयला जानकर खोदा तो उसके तले कई सिलें निकलीं बुड्ढे ने दिलाराम के निमित्त कई खच्चर कोयलों के लादे और दो एक सिलें भी साथ रखलीं जब घर में आया तो दिलाराम के निकट कोयले डालकर फूट २ कर रोया और सब कहानी कह सुनाई और कहा कोयलों को छोड़ कर पत्थरों की भी हज़ारों सिलें बन गई हैं ढेरकी ढेर पड़ी हैं दो एक सिलें भी इसी निमित्त उठा लाया हूं कि कदाचित् तुम्हें विश्वास न हो तो अपनी दृष्टि से देखलो मुझे झूठा न जानो मसाला पीसने के काम में आवेंगी और एक आध बेंच भी डालेंगे दिलाराम उस सिल को छुरीकी नोक से परीक्षा के निमित्त जो खुरचकर देखा तो सिल सुवर्ण की है उसी समय भगवान् का धन्यवाद किया और बोली ॥

चौ० । गरुअ सुमेरु रेणुसम ताही । राम कृपाकरि चितवैं जाही ॥

क़वाद से कहा कि शीघ्र जाओ और जितनी सिलें हैं खच्चरों पर लादलाओ बुड्ढा अतिशीघ्रता से सब सिलें लाद लाया फिर दिलाराम ने एक पत्र फ़ैसल सोनार के नाम लिखकर क़वाद के हाथ में दिया और एक खच्चरपर जितनी सिलें लदसकीं लदवा कर उसके साथ करके कहा कि बसरे में जाकर यह पत्र और यह सिलें जो खच्चरपर लादी हैं फ़ैसल सोनार को देना और मेरीतरफ़ से दण्डवत् करना जिस भांति से तुम मेरे पिता हो उसी भांति से वह मेरा भ्राता है उसने मुझपर बड़ी दया की थी उस से कहना कि मैं दिलाराम का वकील हूं तुम्हारे समीप भेजा है और प्रयोजन इस पत्र में लिखा है वह इन सिलों के सिक्के कराके तुम्हें देदेगा तुम लेआना ख़बरदार राह में कहीं किसी चोर बटपार डाकू के जाल में न आ जाना क़वाद तो पत्र और सिलें लेकर बसरे की ओर चला इधर दिलाराम ने बाक़ी सिलों को एक गड्ढा गहरा आँगन में खोदवाकर गड़वादीं और एक टहलुये को सुहेल सराफ़ के समीप जो मदायन नगर में रहता था भेजा और यह सँदेशा कहा कि कई बर्ष से मैं बादशाह के क्रोधमें आई हूं दुःख में समय व्यतीत करलेती हूं आकाश के चक्कर में फँसी हूं जो ईश्वर चाहेंगे तो अतिशीघ्र फिर उसी भांति हो जाऊंगी और बादशाह की चौखट पर शीघ्र पहुंच जाऊंगी उचित है कि तुम जल्दी मेरे निकट कारीगर, थवई, मजदूर, बढ़ई आदि साथ लेकर पहुंचो और कुछ ढील इधर के आने में न करना कि मुझे एक स्थान बादशाहों के समान तुम्हारे द्वारा बनवाना है जो तुम्हारे प्रबन्ध से बनजाय और मेरे प्रसन्न हो जाय तो तुम्हारा अधिक उपकार है और इस समय जो कुछ कि रुपया उसके बनने में लगेगा तुम अपने पास से खर्चकरना मजदूरों आदि की मजदूरी देदेना ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र तुम्हारा रुपया पटजायगा दाम २ मुझसे लेलना जोकि सुहेलको

दिलाराम का बड़ा विश्वास था इस संदेशा सुनने के साथ थवई, संगतराश आदि कारीगर चतुर प्रवीण व बुद्धिमान् लेकर दिलाराम के निकट आया और विनय की कि मैं आपका अनुचर हूं जो कुछ आज्ञा हो उसे करूं देने लेने की चर्चा क्या है जब ईश्वर आपको बड़े दर्जेपर पहुँचावे मुझे प्रसन्न कीजियेगा भूल न जाइयेगा यह प्रार्थना करके शुभ घड़ी में महल की नींव डाली सहस्रों कारीगर काम बनानेलगे इस बन में बस्ती की सूरत निकली थोड़े दिन में वह स्थान बनगया उस स्थान में ईश्वर की माया प्रकाश हुई जब वह मकान बनगया दिलाराम ने अपने और बादशाह के चित्र सब भीतों में खिंचवाये और भी अनेक चित्र मनोहर थवइयों से बनवाये और सामान राजों का सा उस मकान के निमित्त मँगाकर सजाया थोड़े समय में अतिबिचित्र सुडौल के साथ उस घर को अरजङ्ग बादशाह के धाम के समान बनवा दिया और दूत बरक़ंदाज़ और तिलंगे फ़राश सेवक ख़ासबरदार व चोबदार व कहार आदि नौकर रक्खे और सब गुणों के गुणागार और पहलवान, फकैत, पटयत, बकयत, तबनयत, चाबुकसवार, नेजाबाज़, तीरन्दाज़ दूर २ से बुलवाये इस समय में क़बाद भी अशर्फ़ियां बसेर से लेकर पहुंचा दिलाराम क़बाद को स्नान के निमित्त हौज़ में भेजा क़बाद की सत्तर पीढ़ी में भी किसी ने कभी नहीं ऐसा हम्माम देखा था सेवक स्नान के निमित्त कपड़े उतारने लगे क़बाद भयभीत होकर उसके चरणों पर गिरपड़ा कि मुझ से जो कुछ अपराध हुआ हो उसे क्षमा कीजिये मुझे नंगा करके इस खौलतेहुए पानी में न जलाइये सेवक उसको ऐसा देख बहुत हँसे और उसे धैर्य दिया और कहा कि जो तुम समझे हो वैसा न होने पावेगा तुम न डरो तुम्हें कष्ट न होगा नहाने के पीछे देह स्वच्छ और हलकी हो जाती है लुंगी जो बांधने को दी तो शिरसे बांधने लगा बड़ी कठिनता से क़बाद को स्नान करवाया और वस्त्र पहिनाये गये कि वैसे बादशाहों को छोड़ किसी को प्राप्त न हों और दिलाराम ने उससे कहा कि आज के दिन से क़बाद को सौदागर के सिवाय कोई लकड़िहारा कहेगा तो उसकी जीभ निकाली जायगी और बहुत कष्ट व दुःख उठावेगा और चार पांच दिन के पीछे उत्तम असबाब और नवीन वस्तु उसके साथ करके बुज़ुरुचमेहर की भेंट के निमित्त भेजा और ढंग सब भांति का जो मन्त्री और अमीरों का होता है लिखा पढ़ा दिया क़बाद मन्त्री के गृह में पहुँचा बुज़ुरुचमेहर को समाचार विदित हुआ और न्यायशाला में बोलवाकर सौदागर से मिलकर बूढ़े मनुष्य को देखकर अधिक शिष्टाचार किया और अतिप्रतिष्ठा करके भेंट और मनोरथ प्रकट करने के पीछे क़बाद ने दिलाराम की आज्ञानुसार बादशाह की भेंट का मनोरथ किया और उस के मिलाप की युक्ति चाही ख़्वाजे ने कहा कि अतिउत्तम आज मैं बादशाह से आप की चर्चा कर रक्खूंगा आप की प्रतिष्ठा के अनुसार बादशाह से वर्णन करूंगा कल शुभ दिन भी है और सावकाश भी मिलेगा प्रथम पहर में चले आइये बादशाह

से भेंट होजायगी क़वाद बिदा होकर अपने घरमें आया और जो कुछ बुज़ुरुचमेहर ने कहा था उसे कह सुनाया दिलाराम ने दूसरे दिन सुहेल से पूछा कि आज बादशाह किस भांति के वस्त्र धारण किये हैं और कैसे भूषण सजे हैं उसने जिस प्रकार से वर्णन किया दिलाराम ने उसी रीति से वस्त्र क़वाद सौदागर को पहिनाकर बादशाह की भेंट के निमित्त भेजा क़वाद प्रथम तो ख़्वाजे के समीप गया ख़्वाजा अपने बचन के अनुसार साथ लाया और महल की ओर चला और कचेहरी में ले जाकर साज के घर में ठहराया और आप बादशाह से बातें करने को चला और राजद्वार में जाकर जो कुछ प्रार्थना करनी थी सब भांति से सब समाचार वर्णन किया बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर का कहा स्वीकार किया जैकि यह आधीन लकड़ी काटने और बेंचने के सिवाय. बादशाह मित्र मन्त्री की संगति की प्रतिष्ठा क्या जानता था दिलाराम ने चलते समय कह दिया था कि जब बादशाह के समीप जाना पहले दाहिना पैर धरना और सात सलामें झुककर करना इसको तो वह भूल गया किन्तु बादशाह की सूरत देखकर दिलाराम की सीख याद आई आपने दोनों पांव मिलाकर एक बार कूदकर देखा तो वहां संगमरमर का बिछौना था पांव जो फिसला तो चूतड़ों के बल गिरपड़ा इस चाल से बादशाह मुसकराया सभा के लोग भी बादशाह का मुसकराना देखकर मन में हँसकर रह गये बादशाह ने उसकी भेंट स्वीकार की और ऐसी उसपर कृपा की कि एक डली मिश्री जो हाथ में थी उसे दी उसने लेकर सलाम किया और सलाम के साथ ही मुख में डाल लिया जितने लोग वहां थे सब पर साबित हुआ कि यह अविवेकी और मूर्ख है और बुज़ुरुचमेहर को इन दोनों चालों से उस पर सन्देह आया मन में उसकी ओर से ग्लानि हुई जिस समय दरबार उठगया क़वाद घर में आया और बादशाह की कृपा से मिश्री मिलना और सलाम करके खाजाना दिलाराम से वर्णन किया दिलाराम अपने चित्त में क़वाद के उस काम से अत्यन्त लज्जित हुई कहा कि तुम ने बिना बिचारे काम किया बादशाह की बस्तु दी हुई बादशाह के सामने नहीं खाते हैं बल्कि भेंट देकर सलाम करके शिरपर रखते हैं और अपने घर सौग़ात लाते हैं क़वाद ने पूछा कि फिर अब क्याकरें कि जिससे राजद्वार में मूर्ख न बनें दिलाराम ने कहा कि अब जो कुछ बादशाह कृपाकर देवें उसका शिरपर रख लेना और सलाम करना और कदाचित् अवसर भेंट का होवे तो भेंट देना वह इस बात की सुध मन में किये रहा दूसरे दिन न्यायशाला में गया उस समय बादशाह खासे पर था परन्तु क़वाद की हाजिरी को उसकी चाल देखकर कह रक्खा था दरबानियों ने विनय की और शीघ्र बोलाया क़वादको देखकर बादशाह कृपाकरके एक प्याला कोरमेका दिया क़वाद उसे लेकर सलाम किया और दिलाराम की शिक्षा याद करके उस पात्र को अपने शिरपर उलटलिया उसके शोरबे से कपड़े समेत दाढ़ी मूछ भी भरगई सब शरीर में लपटगया बादशाह ने अपने चित्त में कहा कि इसे कुछ

बुद्धि नहीं है जो चाल चलता है वह सब मूर्खता की विदित होती है फिर इस पर सौदागरी करता है ईश्वर की माया है उसदिन दिलाराम ने चलते समय कह दिया था कि ख़्वाजे से सम्मत करके बादशाह के न्योता के निमित्त प्रार्थना करना जो स्वीकार करें तो अधिक प्रतिष्ठा तुम्हारी होजावेगी सो क़बादने वैसाही किया दिलाराम के कहने के अनुसार उसने न्योता का नाम बादशाह के सामने लिया और यह दोहा दिलाराम का सिखाया हुआ पढ़ा ॥

दोहा। प्रभुता और प्रताप जग, नहीं राजते कोय। मुफ़्लिसवार की ओर प्रभु, कृपादृष्टि जब होय ॥

बुज़ुरुचमेहर को भी उसके ऊपर कृपा बहुत थी सिफ़ारिश की बादशाह भी उस का सीधा और भोलापन देखकर दया की दृष्टि की और उसका न्योता स्वीकार किया क़बाद कृतकृत्य होकर हँसता हुआ विदा हुआ और दिलाराम से आकर बादशाह का न्योता मान लेना वर्णन किया दिलाराम बादशाह के न्योता की सामग्री इकट्ठा करनेलगी ॥

जाना बादशाह का क़बाद लकड़िहारे के घरमें और दिलारामपर कृपादृष्टि करना और भोजन करना और वारुणी मद्य का पीना ॥

जब प्रातसमय सूर्य आसमान पर उदय हुआ तब बादशाह बुज़ुरुचमेहर और सब बड़े बड़े अधिकार वालों को साथ लेकर क़बाद के घरमें न्योता खाने को गये क़बाद ने अगवानी लेकर भेंट दी और कहा ॥

चौपाई। चरण रावरे कर जो आये। बस्या विपिन हर्षित लपटाये ॥

जब बादशाह उसके घर में गये बैठकों और मकान की दीवारों पर अपने और दिलाराम के चित्र परस्पर देखे तो दिलाराम को यादकर बहुत शोच किया और जिस स्थान को देखा बादशाही महल के समान पाया फिर बुज़ुरुचमेहर से कहा कि यह घर मानो मेरा है और उसी भांति सुशोभित है यह कहकर बारहदरी में मसनद जड़ाऊपर बैठगया तबले पर थाप पड़ने लगी नाचराग होनेलगा थोड़े काल के पीछे बावरची ने बिछौना बिछाके उसपर दस्तरख़्वान भोजन के निमित्त बिछाया और फिर भांति २ के षट्रस के व्यञ्जन अलग २ पात्रों में चुनकर रक्खे क़बाद ने दिलाराम की आज्ञानुसार दिलाराम के हाथ धोने के निमित्त बर्तन मँगाकर हाथ धुलाये और बाज़ २ व्यञ्जन अपने हाथ से चुनदिये बादशाह जिस समय भोजन करचुका दिलाराम ने वस्त्र आभूषण भांति २ के पहिनकर परदे की ओटसे अपनी मनोहर शोभा बादशाह को देखाने लगी और परदे से बादशाह का मन हरने लगी बादशाह ने ज्योंहीं उसकी झलक देखी क़बाद से पूछा कि यह स्त्री जो परदे के भीतर है तुम्हारी कौन है और इसका क्या नाम है यह युवती अति सुलक्षण और प्रवीण है सब भांति का प्रबन्ध इसी ने किया है क़बाद ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि सेवक की पुत्री है यह जो कुछ सम्पदा है इसी के लक्षण करके है और आपसे क्या परदा है? महल में जाइये इस सेवक की प्रतिष्ठा बढ़ाइये लौंडी

की भी इच्छा दर्शन करने को है तब बादशाह क़वाद की प्रार्थना के अनुसार महल में जो गया तो पहले दूरसे देखकर दिलाराम पर संदेह किया जब निकट पहुँचा तब उसने मोजरा किया कहा कौन है दिलाराम यहां कहां आई दिलाराम चरणों पर गिरपड़ी और जी खोलकर रोई बादशाह ने उसके शिर को उठाकर छाती से लगाया और कृपासहित बोले उसने प्रार्थना की कि यह वही क़वाद लकड़िहारा है कि जिसको मुझे दिया था आपके प्रताप से यहांतक धनी हो गया कि जिससे सकल देश का सौदागर हुआ कि आपने भी कृपासहित उसको प्रतिष्ठा दी बादशाह यह समाचार सुनकर अतिलज्जित हुआ और दिलाराम का हाथ पकड़ कर उस बारादरी में लाया जहां मसनद पड़ीहुई थी जाबैठा और दिलाराम के लक्षणों की प्रशंसा करने लगा और मसनद के निकट बैठा लिया और क़वाद को ख़िलअत कृपा करके ख़िताब मुल्कुल तिजारत अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी के सौदागरों के अधिपति की पदवी दी और अधिक उदारता से दिलाराम को चङ्ग बजाने की आज्ञा दी वह आज्ञानुसार चङ्ग बजानेलगी और इस भांति चङ्ग बजाया कि आकाश को भी चक्कर में लाई और फिर उसी प्रकार से समा बँधगया कि राजसमीपी सब विकल होगये जब दिलाराम चङ्ग बजाचुकी और बादशाह कृपासागर को अपना गुण दिखाचुकी तब भांड़, भगतिये, कथिक, कश्मीरी, कौवाल, ढाढ़ी, कलावत और वेश्याओं ने अपना तमाशा देखाया कुछकाल के पीछे क़वाद को ख़िलअत कृपाकर बादशाह ने सभा बरख़ास्त होने की आज्ञादी और दिलाराम समेत बादशाह मन्दिर में आया और जो स्त्रियों से घृणा होगई थी सो अब अति चाहने लगा थोड़े दिवस के पीछे मोहतरिमबानी जो बादशाह के चचा की कन्या थी उस के साथ अपना विवाह करलिया एक वर्ष के पीछे शाहज़ादी को पुत्र की आशा हुई जब ईश्वर की कृपा से समय गर्भ का व्यतीत होगया राजपुत्री को पुत्र होने की पीड़ा हुई बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर को बुलाया और कहा कि राजपुत्री को अति कष्ट है जिस समय पुत्र उत्पन्न होवे उसके भाग्य का वृत्तान्त लिखना चाहिये और जन्मपत्र बनाना उचित है फिर ख़्वाजे ने बालक उत्पन्न होने का समय जानने के निमित्त हिन्दी फिरङ्गी रूमी आदि घड़ियां और ग्रहों के चक्र मालूम करनेके हेतु रमल का तख़्ता अपने निकट रखके पांसा लेकर चैतन्य हो बैठा और पुत्र होने का मार्ग देखने लगा इतने में ईश्वर की कृपासे सूर्य के सरिस पुत्र शुभघड़ी शुभमुहूर्त में उत्पन्न हुआ और दाई के गोद में सुशोभित हुआ उस समय शुभसायत लिखकर पांसा तख़्तेपर फेंका और जन्मपत्र खींचकर सब प्रकार जो विधि मिलाई गई तो उस समय सूर्य और चांद को एक स्थान में पाया और शुक्र व बृहस्पति को परस्पर देखा ख़्वाजे की आंखें आनन्द से खुलगईं बादशाह को शुभ समाचार देकर विनय की और यह सोरठा पढ़ा ॥

सोरठा। पुत्र देहैं कल्यान, सुखनिधान संसार में। मित्रन हित गुण खान, बैरी क्षय वाते सबै ॥

सुतदेश नृपहोय, अस प्रताप याको सुनो। कहिं समान जग कोय, पुत्र कुश राजाविदित॥

यह लड़का सुभाग्य बहुधा देशों का नृपति होगा और बहुत न्याय करनेवाला होगा सत्तर वर्षतक प्रताप समेत राज्य करेगा परन्तु एक बुद्धिमान् की मूर्खता में बहुधा शोक ग्रसित रहेगा यह कह नाम धरनेका मनोरथ किया कि दो चालाकों ने बादशाह से बिनय की कि जो सर पानी का सूखगया था आज आपही आप बह-चला बुजुरुचमेहर सगुन अच्छा जानकर शाहज़ादे का नाम नौशेरवां रक्खा और बाजे इतिहासवालों ने लिखा है कि जिस समय वह उत्पन्न हुआ था उस समय बाद-शाह के हाथ में अरुण प्याला मदिरा का था बुजुरुचमेहर ने फ़ारसी बोली में वर्णन किया अर्थात् कहा कि आप प्याला शराब का पीजाइये बादशाह प्रसन्न होकर ख़्वाजे को पारितोषिक दिया और राजपुत्र का नाम नौशेरवां धरा बाजा बजानेवालों को बजाने की आज्ञा हुई और तोपख़ाना में सलामी छूटने के निमित्त कहागया तोपख़ाने में तोपोंपर बत्तियां पड़नेलगीं और तमाम घरमें नौबत झड़नेलगी तुरन्त मङ्गला-चरण का शब्द आसमान तक पहुँचा और सकल नगरमें छोटे से बड़े तक सबके यहां आनन्द बधाये होनेलगे आनन्द की सामग्री परस्पर करनेलगे नाचरङ्ग घर २ में होने लगे और आसमान ने उसके मङ्गल के हेतु सूर्य चांद को दफ़ बनाया शुक्र व बृहस्पति अतिप्रसन्नता से नाचका बहुरङ्ग जमाया कि सब आकाशमें घूमनेलगे और ख़ज़ाने लूटने लगे उसी क्षण दुःखीको धनवान् करदिया कङ्गालों को सब भांति से सम्पत्ति दी और सब प्रजा को एक बर्ष का कर छोड़दिया सकल मनुष्य सुख में भोग करने लगे ग्यारहवें दिन उसी समय बादशाह को धावन ने ख़बर दी कि अलकश की बेटी के पुत्र हुआ शाहज़ादे का सेवक भी उत्पन्न हुआ बादशाह ने ख़्वाजे से कहा कि अ-लकश के नाती को अभी मारडालना उचित है जो यह लड़का जीतारहा तो मुझे संदेह है कि अवसर पाकर तुमसे बैरियादांव करेगा अवश्य तुमसे अपने नाना का बदला लेगा सांप को मारना और उसके बच्चे को पालना काम ज्ञानवानों का नहीं है इसपर ध्यान धरना उचित है आगे तुमको अख़्तियार है इन कामों में तुम्हारी बुद्धि तीव्र है ख़्वाजे ने कहा कि अपराध बिना किसी को मारना धर्मशास्त्रके अनुसार उ-चित नहीं है ऐसे लड़के अबुधका मारना ठीक नहीं बादशाह ने कहा कि मेरे निकट यह क़िस्सा यहां सच है शत्रुको कष्टसे प्रथम बध करना लायक़ है नहीं तो इसका तन् बना रहेगा तो तुमको कष्ट अवश्य करेगा बुजुरुचमेहर उसके बचाने के निमित्त बा-दशाह की मति इस बाक्य की ओरसे फेरी और बादशाह से बिदा होकर अलकश के घरमें गया और बख़्तियारके लड़के का नाम बख़्तक रक्खा जब नौशेरवां चारबर्ष चार मासका हुआ बादशाह ने शिक्षा के हेतु बुजुरुचमेहर को सौंपा बुजुरुचमेहर ने सप्ताह के पीछे बख़्तक से बादशाह को भेंट दिलवाई और प्रार्थना करके जागीर अलकश की उस के नामपर लिखवाई नौशेरवांके पास उसे भी पढ़ानेलगा और अत्यन्त प्रसन्नता से उस की शिक्षा में श्रमकरनेलगा जोकि नौशेरवां बड़ा तीव्रबुद्धि था कई साल के समयमें सब

बिद्या, व्याकरण, बैद्यक, ज्योतिष, गणित, रमल, नम्रता, पण्डितात्र आदि में अतीवप्रवीण हुआ और सिपाहियाना में भी अतिचतुर हुआ सकल प्रकार का अभ्यास प्राप्त करके बड़ा गुणी हुआ दैवयोग से एक दिन चीन के बनिये उस नगर में आये बादशाह की सेवा में नवीन वस्तु सौग़ात लाकर दी तिस पीछे राजपुत्र को भी भेंटदेने के हेतु आज्ञा चाही बादशाह ने उनकी प्रार्थना के अनुसार आज्ञा की जिस समय सौदागरों ने राजपुत्र के सम्मुख भाँति २ की सौग़ात आगे धरी और कुछ वस्तु शोभायमान भेंट की रीति में दी तब नौशेरवां चीन के महाराज का बृत्तान्त पूछनेलगा बनियों ने उसका समाचार ब्योरा समेत बिनय किया और कहा कि चीनके बादशाह के एक कन्या है मेहरंगेज़नाम सूर्य चन्द्रमा के समान रूपवान् शोभासागर परम उजागर परी सदृश कामिनी है जिसकी सुन्दरताई सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध है एकसमूह उसकी शोभापर मोहित है हज़ारों राजपुत्र उस के स्नेह में पानी भरते हैं सैकड़ों बादशाह उस चन्द्रबदनी पर मरते हैं ॥

दोहा। देखे की गति को कहै, मृगनयनी के नैन। सुननेसे बहु मरत हैं, सत्य मानिये बैन ॥

मेहरंगेज़ की चर्चा सुनकर राजपुत्र का चित्त अतिमोहित हुआ और प्रीति की आग नौशेरवां की छाती में प्रकाशित हुई कलेजे में प्रीतिरूपी बाण पार होगया स्नेह में बँधगया होते २ बल व पराक्रम ने भी जवाब दिया और धैर्य ने भी अपना मार्ग लिया खाना पीना छूटगया केवल चुप साधे रहता हँसना बोलना ध्यान से उतर गया निशिदिन उसके निमित्त क्षीण होताजाता था और उसीकी बातें किया करता था सदा ध्यान लगाये रहता था और इन कवित्तों को पढ़ा करता था ॥

सवैया। याती वे दिन रात थे बावरे जामें बसन्त समाय रह्यो।
बाग़ अनूप की सैरसजी चित में लहराई तो धाय गयो ॥
प्रेमहि के बश के आन पङ्यो फुलवारी उतै लै जात भयो।
बायु सुगन्धितै फूलन को मम भेंटहि ते कर मांझ लयो ॥ १ ॥
मित्र सनेही लिये सब संङ्ग महाछबि रङ्ग में अङ्ग मग्यो।
कबहूं हँसना था परस्पर बीच कबहीं फूलोंकर खेल जग्यो ॥
कली के भांतिन चित्त थो तङ्ग सभी जग मध्य में शोक भग्यो।
मेरे चित्त को देखिके फूल सदा हैरांथा बड़ाई के ओर लग्यो ॥ २ ॥
निशि बासर सुक्ख में अङ्ग रह्यो जनु फूल प्रफुल्लित रङ्गलिये।
सब औसर चित्त में चित्त यही उरमांझ अनन्द उमङ्ग दिये ॥
कामिनि ते नहिं काम कछू नहिं शोच शरीर में खेऊ किये।
बायु न ताति लगी तन बीच में बीचकी रीति न बोल्यो हिये ॥ ३ ॥
मद्यपान सिवाय न आन कियो दिन रात सदा यह चानिलिये।
निशि बासर शोक नहीं तनको निज मित्र समेत सुचैन किये ॥
अरु केवल एक अनन्द रम्यो सब रञ्ज कलेश बिसारि दिये।
बसता था बसन्त समय सब भांति अनन्द अनन्त सम्हारे हिये ॥ ४ ॥
निज मित्र के हाथ में हाथ दिये अरु सुक्ख समेत रह्यो जग में।

याको समय असहाहि परो जहँ भूकम्प लगारी मन में ॥
कछु प्रीति में आन फँस्यो जो व्याप्यो है जिसकी रगरग में ।
अतिशीघ्र भयो पतिभार मनो ज़र्दी कियो रूप सभी जग में ॥ ५ ॥

कवित्त । विदाभयो सुख और दुख घेरिआयो मोहिं, कोयनउबारे मेरी गोद खाली देखके ।
विधि वश शोक तन कोक सभी सूखिगयो, कांटे केरे रूखभयो फूल डाली देखके ॥
नरगिसके समानहूं हैरान इस जहांन में, सोसन के भांति काति जीभ निज पेखके ।
आपतन क्षीन अरु दीनभो मलीन मुख, सरकीन सुधि बुधि भावत न रेखके ॥ ६ ॥

कुण्डलिया । डाली सूरति मोर की, पर बन्धन निज ग्रीव । गुलूबन्द घेरा कियो, दुःख पड़े की सींव ॥ दुःख पड़े की सींव, कठिनता अधिक समाई । रक्त असुवनकी नदी, चीखबहिताहू भाई ॥ चित आनन्द है मोर, शोक दुख जाहि डरायो । बल कछु रह्यो न मोहिं, ईश यह काह समायो ॥ नदी अगम के मध्य में, खड़ाहों शोक समेत । दृष्टि कनारा पड़त नहिं, कहुं न दूर सचेत ॥ कहुं न दूर सचेत, बहुर दुख अधिक सतावे । देखें अब यह चरित, कर्म कहकाह देखावे ॥ मित्र सनेही कोइ, काम नहिं मेरे आवे । बिना ईश के दुःख, कौन अब मोर मिटावे ॥ कहों कहा कासों कहों, कठिन बिपति अति मोहि । प्रीति रूप पातक विषम, निशिदिन जरना होहि ॥ निशिदिन जरना होहि, श्वास सँग ज्वाला निकलें । धीरज कितना धरों, अधिक उर में वे सिकलें ॥ ठीक यही है बात, विदित कीजै यह किस्से । अन्तरगति का हाल, सुफल पहुँचै पुनि जिस्से ॥

यद्यपि उसने बहुत छिपाया परन्तु जरदरङ्गत और मुँहके सूखने आहसरद के भरने और चित्त पर क्लेश के तीर चुभने से प्रतिदिन दुर्बलता हुई जब यह समाचार शाहज़ादे का होनेलगा दूतों ने वादशाह के समीप यह चरित्र पहुँचाया कि जाना नहीं जाता है कि हमारे लोगों के नष्ट कर्म से कौन उपाधि शाहज़ादे को व्यापी है खाना पीना सब छूटगया है न किसीसे कुछ कहते हैं और न किसी की सुनते हैं दर्पण के समान आश्चर्यवान् हैं यह समाचार सुनकर वादशाह ने पारे के सदृश दुःखित होकर बुजुरुचमेहर को बोलाया और यह वृत्तान्त कहा ख़्वाजे ने वादशाह को धीरज देकर शान्तकिया और आप नौशेरवां के पास गया और एकान्त में जाकरके कहा कि शुभ तो है आपका चित्त किस प्रकार का है ऐसा क्यों है ? सत्य बतादीजिये तो उसकी मैं औषध करूं आपके निमित्त दवा बनाऊं नौशेरवां ने कहा कि ख़्वाजह साहब आप मेरे पिता के मन्त्री दूसरे मेरे गुरू हैं आपको मैं बड़ा जानता हूं यद्यपि स्थान लाज का है इस छिपे भेद को विदित करना अच्छा नहीं है कि जो अपना समाचार प्रकट करूं और दुःख कहूं परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहता हूं कि मैं मलिका मेहरंगेज़ जो चीनके राजा की वेटी है उसका स्वरूप बिना देखे उसपर मोहित हूं और अच्छी भांति से जानलीजिये कि जबतक मेरा उससे विवाह न होगा तबतक मैं इसी शोक में रहूंगा और जीव भी जातारहै तो आश्चर्य नहीं ॥

दोहा । यह कहकर इक आहकी, मन में बँधी सनेह । बिरह अग्नि तनमें लगी, आन लगी सब देह ॥
बिरहवश्यमूर्च्छित भयो, सुधिबुधिकछु न ताहि । जिनके भीतर प्रीति है, मनबूड़े तेहि माँहि ॥

बुजुरुचमेहरने कहा कि शाहज़ादे इस भांति का खयाल तुमको करना उचित

नहीं तनमन को आनन्द से रक्खो यह कौन बड़ी बात है जिसके हेतु ऐसा ढङ्ग बनाया है इतना दुःख बैठे बैठाये उठाया है ईश्वर के हेतु यह शोक चित्त से दूर करो खानपान आनन्द समेत करो अभी आपकी क्या अवस्था है ? जो इस ओर मन लगाये हो आप स्वरूपवान् हैं आपके ऊपर वह साहित जी के निछावर होगी बादशाह के पास बिवाह के कारण पैग़ाम आवेंगे कुछकाल और धैर्य धरिये अपनी बुद्धि से काम न कीजिये यह बात क्या कठिन है ? जिसमें जो आपके जीवका भी सन्देह है आप चित्त स्थिर रखिये इस कार्य को मैं आप करूंगा और आपका मनोरथ पूर्णकरूंगा नौशेरवां को उसकी बातों से धैर्य आया और मेहरंगेज़ को राजपुत्री के मिलने की आशा हुई जल्दी वहां से उठकर स्नान किया और मित्रों समेत आकर वस्त्र बदल के भोजन किये बुज़ुरुच्चमेहर वहां से बादशाह के समीप गया और राजपुत्र के शोकमिटानेका समाचार सुनाया बादशाह ने कहा कि ख़्वाजह यह कार्य तुम्हारे बिना होना कठिन है तुम्हारे उपाय से हमको बिश्वास है कि होजायगा वह बादशाह भी बड़ा प्रतापी है और उसका देश भी बहुत है बिवाह का कार्य बहुत सूक्ष्म है कोई मनुष्य सुशील उसके निमित्त जावे ऐसे बड़े प्रबन्ध के हेतु मनुष्य बहुत तीव्र और उपायी चाहिये अन्तको यह बात ठीक ठहरी कि ख़्वाजह आप चीन की ओर जावे और बिवाह के निमित्त पहले अपने से ठहरावे इसपर मार्ग की सामग्री सब की गई बुज़ुरुच्चमेहर पचाससहस्र सवार पियादे अपने साथ लेकर चीन की ओर चला अब बख़्तक का बृत्तान्त सुनिये कि जब से सुध सम्हाली थी अपने नाना का चरित्र सुनकर प्रति दिन अपनी मातासे कहता था कि मैं जब बुज़ुरुच्चमेहर का मुख देखताहूँ तब मेरी आंखों में ख़ून उतर आता है नाना का समाचार याद करके चित्त भरआता है जबतक अपने नाना का बदला न लूंगा तबतक मैं बेचैन रहूंगा अवसर पाना मुख्य है कहां जायगा कभी न कभी जाल में आवेगा और सदैव बुज़ुरुच्चमेहर की बदी करके नौशेरवां के कान अपनी जान में भरा करता था और जो २ चित्त में आता था झूंठ सच्च अच्छा बुरा कहा करता था किन्तु नौशेरवां उसे लानत मलामत करके कहता था कि ख़्वाजह की भलाई की अपने साथ देख वह तेरे साथ क्या २ उपकार करता है और तू उसके और ऐसे २ काम करता है और उसको मिथ्या अपराध लगाता है अरे वह सब भांति से तेरा उपकारक है इस बात की चर्चा कभी न कर नहीं तो ईश्वर के निकट अपराधी होगा और इस संसार में भी लज्जित होगा ॥

जाना बुज़ुरुच्चमेहर का चीन की ओर सहित दबाव और प्रताप के और लाना मलका मेहरंगेज़ का और प्रतिबन्धन उन दोनों का ॥

बुद्धिमान् लोग इस इतिहास को आनन्दरूपी लेखनी से यों वर्णन करते हैं कि जब ख़्वाजह बुज़ुरुच्चमेहर बादशाह से आज्ञा लेकर बहुत ऋद्धि सिद्धि सहित मार्ग में चलता हुआ चीन की सीमा में पहुंचा फिर चीननगर में गया दूतों ने चीनके राजा को समाचार पहुंचाया कि सतदेश के बादशाह का मन्त्री उपायी ख़्वाजह बुज़ुरुच्चमेहर

आपके पास आया है बादशाह क़बाद कामराँ का कोई संदेशा लाया है यह सुनकर चीन के महाराज ने मन्त्रियों को ख़्वाजह की अगवानी को भेजा और जब अति समीप आया तब अपने बेटों को शाहख़ताब खुतने समेत आज्ञा की कि आगे बढ़कर अगवानी लेवें जब बुज़ुरुचमेहर दीवान ख़ास में आया तब अदबसमेत बादशाह को झुककर प्रणाम किया और अपने बादशाह की ओरसे राजमन्त्रियों के अनुसार शिष्टाचार निबाह के भाँति भाँति की वस्तु और सौग़ात जो अपने साथ लेगया था अपने बादशाह की ओर से चीन के बादशाह के समीप रक्खी और हीरा मोती आदि बहुत मोल के और घोड़ा हाथी और अस्त्र आदि सब प्रकार के पदार्थ बादशाह के निकट रखदिये ख़ाक़ान चीन के बादशाह ने ख़्वाजह का स्वभाव और नम्रता पसन्द की और उसकी मधुर बातों से अतिप्रसन्न हुआ और ख़्वाजह को प्रतिष्ठा का पारितोषिक दिया और धनसम्पत्ति अधिक दी लेखकों ने लिखा है कि प्रथम मिलाप में ख़्वाजह को ग्यारहबार ख़िलअत कृपा किये और उसकी अति प्रतिष्ठा और बड़ाई इससे अधिक बढ़ाई अर्थात् जो बात चीन का बादशाह मुख में लाता था उसका उत्तर अच्छी भाँति से पाता था और ख़िलअत अनुग्रह करता था जिस समय आने का कारण पूछा उसको बुज़ुरुचमेहर ने इसरीति से वर्णन किया और अभिप्राय यह विदित किया कि जिससे चीन के बादशाह ने मनसे राजपुत्री मेहरंगेज़ का विवाह नौशेरवाँ के साथ स्वीकार किया सिवाय मानलेने के कोई बात न बनपड़ी यह बड़ी बात न्यायशाला में अपने २ मुख से कही कि क्या शुभ समय और भाग्य उदय इस काम में हुई है जो मुझे नौशेरवाँ सदृश दामाद मिला है फिर उसीदिन आज्ञा की कि शीघ्र सामग्री मार्ग की कीजाय जिससे राजपुत्री समेत मदायन नगर को जावे आज्ञा पातेही थोड़ेही दिवस में मार्ग का सामान कियागया चीन के बादशाह ने कबाबाचीनी और कलाबाचीनी जो दोनों बादशाह के सुशील पुत्र थे राजपुत्री मेहरंगेज़ के साथ चालीस सहस्र सेना से बिदाकिये और कई पीढ़ी की जोड़ी हुई सम्पत्ति कई सौ लौंड़ियां व सेवक तुर्की व हब्शी ख़ताई खुतनी जहेज़ अर्थात् दायज में दिये कई महीने में बुज़ुरुचमेहर मेहरंगेज़ राजपुत्री समेत आनन्दित होताहुआ ईरान के निकट पहुंचा और उस स्थान में रात की रात बास किया प्रातःकाल में सेनापतियों ने अपनी २ सब सेना सवाँरी और चीन के राजपुत्र ने सब सामग्री दायज और विवाह की सब भाँति से की जब बादशाह और नगरबासियों को यह समाचार आनन्द का विदित हुआ तो सब ओर से प्रजा का मेला हुआ बादशाह नौशेरवाँ ने अगवानी की और बहुत सम्पत्ति राजपुत्री की डोलीपर निछावर करके फ़क़ीरों को धनवान् करदिया और ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर पर बड़ी कृपाकरके गले से लगाया और बहुतसे पारितोषिक अनुग्रहसमेत कृपा किये और शुभमुहूर्त में नौशेरवाँ का विवाह मेहरंगेज़ राजपुत्री के साथ हुआ बरात के पीछे एक वर्षतक आनन्द रहा॥

दोहा। परमानन्द मगनभव, धूम धामकर ब्याह। पुरबासी अति मुदित हो, सब मन अधिक उछाह॥

॥ [illegible] शोभा बरणि न जाय। राज प्रफुल्लित भई अति, अनु दिन प्रकटेउ आय ॥
॥ [illegible] भई, कवि को अगम देखाय। ताते यह चुप होरहा, मन सुखकर अधिकाय ॥

इसके पीछे बादशाह ने ख़्वाजह की सम्मति से नौशेरवां को गद्दी दी और एकान्त बैठ आप ईश्वर का स्मरण करनेलगा और विविध प्रकार की शिक्षा बादशाह ने बार २ नौशेरवां को दी कि बुजुरुचमेहर के सम्मत बिना कोई काम न करना और बख़्तक को प्रधान मन्त्री न करना नहीं तो बादशाहत नष्ट होजावेगी कहते हैं कि जब बादशाह ने नौशेरवां को गद्दी पर बैठाने के निमित्त ख़्वाजह से सलाह की थी तब ख़्वाजह ने कहा था कि चालीस दिनके पीछे शाहज़ादे को गद्दीपर बैठाइयेगा बादशाह ने स्वीकार किया और ख़्वाजे ने यह भी कहलिया था कि तबतक मुझ से कहदीजिये कि अपने अधीन रक्खूं या जो चाहूं सो करूं बादशाह ने इस निमित्त भी ख़्वाजह को अधिकार दिया उसीसमय बुजुरुचमेहर ने नौशेरवां को बेड़ी पहनाकर जेहलख़ाने में भेजदिया और इकतालीसवें दिन बँधुआई से छोड़ाकर अपनी सवारी के साथ दौड़ाता हुआ बादशाही महलतक लाया और तीन कोड़े इसज़ोर से मारे जिसमें नौशेरवां तिलमिला गया और ग्रीष्म का रेत उसमें नङ्गे पैर दौड़ाया उससे अति दुःखित होगया तदनन्तर खड्ग खींचकर नौशेरवां के हाथमें दी और शिर झुका के कहा कि इस बेअपराध का यही दण्ड है कि मेरा बध कीजिये और इसका बदला लीजिये नौशेरवां ख़्वाजह के गले से लपटगया और कहने लगा कि ख़्वाजह इसमें भी कुछ उपाय होगा नहीं तो आप मुझे इतना क्लेश न देते और मेरे कष्ट का आप शोच अपने ऊपर न लेते इसके पीछे जिस समय बादशाह ने शरीर त्यागन किया उस समय में दो वर्ष तक बख़्तक को मन्त्री का अधिकार मिला उस क्षुद्र मनुष्य ने नौशेरवां से किस २ भांति का अन्याय कराया जिससे नाना भांति के कष्ट प्रजा को पहुंचे जिससे उस समय में नौशेरवां बड़ा अन्यायी विदित हुआ और उसके इस अन्याय का प्रकाश दूर २ तक हुआ दैवयोग से एक ठग मार्ग लूटने के दोष से पकड़ आया जो महा अपराधी और दुष्ट और ठगों का राजा था जिसने बेअपराध हज़ारों मनुष्यों को फांसी दी और बहुतों के शीश राह चलतेहुए काटडाले थे और बहुतलोगों को ज़हर देकर मारडाला था नौशेरवां ने उसके मारने के हेतु बधिक को आज्ञा दी बधिक उसे बधस्थान को लेचला उस ने उस समय बिनय की कि बध तो मेरा होहीगा और सबका बदला पाऊंगा जो चालीस दिन का मुझे सावकाश मिले तो मेरा मनोरथ पूर्ण हो और मदिरा मांस और एक स्त्री कृपा हो तो मैं एक ऐसी विद्या जानता हूं और नयाणुए गुरु से सीखा है कि बादशाही सभा में कोई नहीं जानता होगा बल्कि कभी किसी ने न सुना होगा चालीस दिनके पीछे जिस बात की आज्ञा होगी उसे स्वीकार कर लूंगा नौशेरवां ने पूछा कि वह विद्या कौनसी है उससे कुछ लाभ भी होता है उस ने कहा कि मैं जितने जीव हैं सबकी बोली जानता हूं और इस विद्या को अच्छी

भांति जानता हूं पर चिड़ियों की बोली को बहुत उत्तम जानता हूं नौशेरवां ने उसकी बिनय स्वीकार की और बुज़ुरुच्चमेहर को सौंप दिया बुज़ुरुच्चमेहर ने उसके रहने को एक स्थान दिया उसकी इच्छा के अनुसार सामग्री भी भेज दी और पहिनाव और खाने पीने में अधिक प्रबन्ध किया उसने चालीस दिवस तक अच्छी भांति से चैन किया इकतालीसवें दिन बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि अब तो चालीस दिन गुज़र गये बोली जानने की बिधि मुझे पढ़ाइये और अपनी अवधि के अनुसार कहीहुई बात को पूरा कीजिये उसने कहा कि मैं सब विद्याओं में मूर्ख हूं मुझ से और विद्या से क्या काम है ? मैं तो कुबुद्धि हूं लेकिन ईश्वर अपने गधों को उत्तम भोजन खिलाता और अपनी रचना देखाता है यह उसका प्रताप है कि जिसने बध होने से मुझे बचाया और भांति २ के भोजन कराये जो आनन्द करना था सो इस उपाय से किया अब खड़ा हूं चाहे फांसी दीजिये या गर्दन मारिये जिस भांति चाहिये जीव लीजिये ख़्वाजह ने यह सुनकर हँस दिया और उसको ठगी और चोरी से सौगन्द लेकर छोड़ दिया एक दिन बादशाह शिकार करता हुआ किसी ओर चलागया और वख़्तक और बुज़ुरुच्चमेहर को छोड़ कर और कोई साथ न था एक स्थान पर देखा दो उल्लू एक वृक्षपर बैठे अपनी अपनी बोली बोल रहे थे नौशेरवां ने बुज़ुरुच्चमेहर से पूछा कि इनकी क्या बातें हैं किस निमित्त सलाह करते हैं बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि आपस में बातें अपने लड़कों के बिवाह के हेतु कररहे हैं घर बसने का उपाय करते हैं बेटेवाला बेटीवाले से कहता है कि जो तीनखण्ड पृथ्वी के सब उजाड़ अपनी बेटी के दायज में देना स्वीकार करे तो मैं अपने लड़के से तेरी लड़की का विवाह करूं नहीं तो मुझे स्वीकार नहीं और मैं दूसरे स्थान पर अपने लड़के की ससुराल करता हूं उसने कहा कि जो नौशेरवां की ज़िन्दगी है और ऐसा अन्याय प्रजापर करता रहेगा तो तीन खण्ड क्या उजड़े जितना देश नौशेरवां का है मैं सब दायज में दूंगा तेरे मनोरथ को पूर्ण करूंगा नौशेरवां ने कहा कि अब हमारे अन्याय का चर्चा जानवरों में होनेलगा इसका हुल्लड़ दूर २ तक हुआ यह सुनकर बहुत लज्जित हुआ और फूट २ कर रोया आतेही दीवान ख़ास में सांकर बँधवादी और नगर में डुग्गी पिटवादी कि जो कोई न्याय के वास्ते आवे ज़ंजीर को हलादेवे किसी के द्वारा कहना कुछ काम नहीं है चोबदारों की कुछ आवश्यकता नहीं है फिर ऐसेही रीति ठीक होगई जो न्याय के हेतु आया उसी के द्वारा अपना अभिप्राय विदित किया जिससे आजतक नौशेरवां का न्याय विदित है जो छोटे और बड़े हैं सब उसके नाम को जानते हैं उसका वर्णन कुछ अवश्य नहीं है कई वर्ष के पीछे बादशाह के मेहरंगेज़ राजपुत्री के उदर से दो पुत्र और एक लड़की उत्पन्न हुई उस में से एक का नाम तो हरमुज़ और दूसरे का नाम फ़रामुरज़ और बेटी का नाम मेहरनिगार रक्खा और उनकी सेवा होने लगी और उनको ख़्वाजह के निकट भेजा ख़्वाजह ने एक

का नाम लियाकश और दूसरे का नाम दरियादिल रक्खा और दोनों की सेवा में परिश्रम करनेलगा बख़्तक को भी ईश्वर ने एक पुत्र दिया उसने उस का नाम बख़्तियार रक्खा लिखनेवाला लिखता है कि एकरात को नौशेरवां ने स्वप्न में देखा कि पूर्व से काला काग आया और मेरे शिरसे छत्र उतारकर लेभागा फिर पश्चिम कीं ओर से एक बाज़ आया उसने उस काग को मारकर छत्र मेरे शिरपर रक्खा यह स्वप्न देखकर बादशाह जाग पड़ा और बुज़ुरुचमेहर से वर्णन करके बिचार पूछनेलगा बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि पूर्वकी ओर एक नगर खबीर है उस नगर में हुस्मामनाम एक बादशाहज़ादा है उसका पुत्र अलकमाख़ैबरी नाम उत्पन्न होगा आपसे और उससे लड़ाई होगी वह आनकर आप का छत्र छीन लेगा और आपको पराजित करेगा फिर पश्चिम की ओर एक नगर मक्का है वहांसे एक लड़का हमज़ानाम आवेगा वह उस निर्लज्ज को मारकर फिर छत्र और गद्दी आप को देवेगा और आपका बदला उससे लेगा वह यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और ख़्वाजह को पारितोषिक देकर मक्के की ओर भेजा कि इस काम की दया करो कि जो वह लड़का उत्पन्न हुआ हो तो हमारा लड़का प्रसिद्ध करके सब भांति से उस की सेवाकरो ख़्वाजह बुज़ुरुचमेहर बहुतसी सम्पत्ति और सामग्री लेकर मक्के की ओर चला और उस सुशील पुत्र को ढूंढ़नेलगा और प्रतिघर पता पूछनेलगा॥

बुज़ुरुचमेहर को मक्के की ओर जाना और अमीरहमज़ा का पता पूछना॥

बुद्धिमानों ने ज्ञान के प्रकाश से भांति २ के वृत्तान्त लिखकर इस मधुर इतिहास को यों वर्णन किया है कि जब ख़्वाजह मार्ग में चलते २ मक्का के निकट पहुंचा तब एक पत्र उस स्थान से अब्दुल्मतलब को जो वहां के मालिक थे इस समाचार का लिखा कि यह अधीन मक्के के दर्शन के निमित्त आया है और आप से मिलने की भी इच्छा रखता है आशा करता हूं कि आप अपने दर्शन से कृतकृत्य कीजिये और मेरी दीनता देखके दया की दृष्टि से देखिये ख़्वाजह अब्दुल्मतलब पत्र को पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए और मक्के के अच्छे २ मनुष्यों को साथ लेकर बुज़ुरुचमेहर की अगवानी के निमित्त आये और बड़ी प्रतिष्ठा से शिष्टाचार किया और अच्छे २ स्थान उनके रहने के लिये ख़ाली करवादिये पहले तो बुज़ुरुचमेहर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब के साथ २ काबे के दर्शन किये तदनन्तर नगर के मुखियों से जो बड़े २ अच्छे मनुष्य थे उनसे मिलाप किया और हरएक को रुपये और मोहरें देकर कहा कि ईरान के बादशाह ने कहा है कि मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं और तुमलोगों का उपकारक जानताहूं और सदा भलाई चाहता हूं यह कहकर डुग्गी पिटवा दी कि आजके दिनसे जिस के घरमें लड़का उत्पन्न होगा वह ईरान के बादशाह का नौकर होगा सो पैदा होने के साथही लड़के के मालिक हमारे पास लेआवें और उस लड़के को हमें देजावें हम बादशाह की ओर से उसकी सेवा के निमित्त मासिक नियत करदेंगे और उसका नाम भी हमीं रक्खेंगे और जो कि सेना बुज़ुरुचमेहर के साथ अधिक

थी इसलिये नगर के बाहर डेरा किया परन्तु सदा बुजुरुचमेहर ख्वाजह अब्दुल्मतलव के दर्शन के निमित्त आता और कभी २ ख्वाजह अब्दुल्मतलव भी बुजुरुचमेहर के समीप जाता एकदिन पन्द्रह बीसदिवस के पीछे ख्वाजह बुजुरुचमेहर ख्वाजह अब्दुल्मतलव के भेंटके निमित्त नियतसमय पर आया तो ख्वाजह अब्दुल्मतलव ने सलाम के अनन्तर कहा कि कल इस अधीन के पुत्र उत्पन्न हुआ है ईश्वर ने भाग्यवान् और प्रतापी पुत्र कृपाकिया है बुजुरुचमेहर ने उसी समय मँगाकर उस का मुँह देखा और पांसा फेंककर उसकी रीति विचारी जाना गया कि यह वही लड़का है जो सप्तद्वीप के बादशाहों से कर लेगा सम्पूर्ण संसार में अपना प्रताप फैलावेगा और जितने देश सब संसार में हैं पहाड़ समेत इसके वश्य रहेंगे और बड़े २ प्रतापी मनुष्य इसके आगे तुच्छ रहेंगे और दम्भियों की घटती और सदाचारियों की बढ़ती होगी न्याय की वृद्धि और अन्याय का नाश होगा बुजुरुचमेहर ने उसके मस्तक को चूमलिया और हमज़ा उसका नाम रक्खा और कृतकृत्य होकर ख्वाजह अब्दुल्मतलव को मङ्गलाचार दिया और परस्पर में आनन्द बधाये होनेलगे जितने मनुष्य वर्तमान थे सबने ख्वाजह बुजुरुचमेहर सहित काबा की ओर हाथ उठाकर धन्यवाद किया और हमज़ा के आनन्द रहनेका वर मांगा ईश्वर की प्रशंसा बारंबार की कईसौ सन्दूक मोहरों के हमज़ाके पालने के हेतु बुजुरुचमेहर ने ख्वाजह अब्दुल्मतलव को देकर और हीरा मोती और वस्त्र पहिनने के हेतु सौग़ात की रीति से दिये ख्वाजह अब्दुल्मतलव ने अरब की रीति के अनुसार शरबत बनवाकर चाहा कि सबको पिलावें और स्नेहियों और कुटुम्बवालों और पड़ोसियों को बटवावें बुजुरुचमेहर ने कहा कि अभी धैर्य करो और दो मनुष्यों को आलेनेदो कि उनके भी लड़के आपके लड़के के मित्र प्रेमी होंगे और उपकारी और सहायक होंगे बुजुरुचमेहर यह कहताही था कि बशीरनामी सेवक ख्वाजह अब्दुल्मतलव का अपने पुत्र को भी लाया और कहा कि सेवक के घरमें आपका सेवक उत्पन्न हुआ है बुजुरुचमेहर ने नाम उस लड़के का मुक़बिलवफ़ादार रक्खा और बशीर को एक तोड़ा मोहरों का मुक़बिल के पालने के हेतु दिया और कहा कि यह लड़का बाणविद्या में बड़ा पराक्रमी होगा फिर बशीर आज्ञा लेकर अपने घरकी ओर चला मार्ग के मध्य अमीजमीरी सारवान से भेंट हुई उसने बशीर से पूछा कि कहां से आता है और यह तोड़ा मोहरों का किसने दिया है उसने सब समाचार ब्योरा समेत वर्णन किया वो प्रसन्न होकर घरमें जाकर सब वृत्तान्त सुनाकर अपनी स्त्री से कहने लगा कि तू सदा कहा करती है कि मैं गर्भ से हूं सो जल्द पुत्र उत्पन्नकर कि जिससे रुपया और मोहरें हाथ लगें और आनन्दित होकर समय व्यतीतकरें उसने कहा कि तुझे कुछ चेतहै मुझे अभी केवल सातवां महीना आरम्भहै इतने दिनों में मुझे क्यों क्लेश हो मेरे शत्रुओं को पीड़ा होवे उसने कहा कि तू कामना अङ्गीकारकर कदाचित् पुत्र उत्पन्नहो जो आज और मैं लड़का हुआ तो मेरी इच्छा

पूर्ण होगी जो कोमहीना पीछे उत्पन्न होगा तो मुझे क्या लाभ होगा? वह क्रोधित होकर बोली कि तेरी बुद्धि जातीरही है पीरसे लड़का उत्पन्न कराता है बुद्धिहीन अन्यायी तू मुझे आंखें दिखाता है उसको जो क्रोध आया तो एकलात इस बल से उसको मारी कि गर्भस्थानमें में लगी कि जिससे वह बिचारी पीड़ा से लोटनेलगी बच्चा तो उसके पेट से निकलपड़ा और वह मरगई अमीर ने झटपट पुत्रको अंगरखा की आस्तीन में लपेटलिया बुजुरुचमेहर के निकट लेजाकर कहने लगा कि कृपानिधान इस दास के घरमें भी पुत्र उत्पन्न हुआहै और सुभाग्य ने यह दिन दिखाया है मालिक को दिखाने आया हूं इसका नाम भी आपके रोजनामचापर लिखवाने आया हूं ख्वाजे बुजुरुचमेहर ने उसे देखकर हँसदिया और ख्वाजे अब्दुलमतलब की ओर देखकर कहा कि यह पुत्र बादशाह अच्छा होगा और बड़ा चालाक चतुर फ़रेबी होगा बड़े२ बादशाह और महाबलिष्ठ इसका नाम और इसका चर्चा सुनकर कांपेंगे और सैकड़ों बल्कि सहस्रों को आप अकेले जीतलेगा और बड़ी सेना को केवल अकेले अपने बल से भगादेगा और बड़ा चालाक प्रवीण होगा यह दयाहीन और अन्यायी ईश्वर को भी न डरेगा अमीरहमजा का सहायक और मित्र होगा मित्रता में बड़ा उपकारी होगा यह कहकर जो बुजुरुचमेहर ने उसको गोदी में लेलिया तो वह चीखें मार२ कर रोनेलगा ख्वाजे बुजुरुचमेहर ने अपनी अंगुली उसके मुंहमें दे दी उसने अंगूठी ख्वाजे की अंगुली से उतार ली और फिर चुपरहा जिस समय ख्वाजे ने अंगूठी अपनी अंगुली में न देखी तो इधाकी जेबोंमें ढूंढ़ी जब न मिली तो चुप होरहा जिस समय सबने शरबत पिया ख्वाजेने एक बूँद शरबत का उसके मुंह में डालदिया मुंह जो खुला तो अंगूठी मुंहसे गिरपड़ी बुजुरुचमेहर अंगूठी को उठाकर और हँसकर ख्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि यह पहली इसकी चोरी है मुझी से प्रारम्भ किया है यह कहकर कहा कि मैंने इसका नाम अमररक्खा और दो सन्दूक मोहरों के अमीरको देकर कहा कि अच्छी भांति इसकी सेवा चित्त से करना और इसकी शिक्षा अच्छे प्रकार से करना उसने भी अशरफ़ियों के तोड़ेलिये और कहनेलगा कि इस की माता इसके उत्पन्न होतेही मरगई मैं इसको किस भांति से पालूंगा किस भांति इसकी सेवा करसकूंगा बुजुरुचमेहर ने ख्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि हमजा की भी मा मरगई है और इन दोनों लड़कों की भी महतारी नहीं है अब उचित है कि आप इन दोनों नेत्रों को अपने घर में रक्खें और आदियेबानों मादीकर्ब की माता जो इबराहीम ने हमजा के दूध पिलाने के निमित्त मुसल्मान करके भेजा है सो वह चली आती है आप अगवानी लेकर लेआवें और दहिनी ओर का स्तन हमजा को और बायां मुकबिल वफ़ादार और उमर अय्यारको पिलावें ख्वाजे अब्दुलमतलब बुजुरु-चमेहर की आज्ञानुसार आदियेबानों को लेआये और पहुनई की भांति शिष्टाचार करके शरबत पिलाया और हाथ पांव धुलवाये और तीनों लड़कों को उसके हाथ में दूध पिलाने के निमित्त उसको सौंपदिया जब छः दिवस अमीर के उत्पन्न होने के

व्यतीतहुए छठी का दिवस होचुका बुजुरुचमेहर ने ख़्वाजे अब्दुलमतलब से कहा कि प्रातःकाल अमीर का हिंडोला ड्योढ़ीपर रखवादीजियेगा और जो वह पलना उठा जावे तो उसके निमित्त कुछ शोच न कीजियेगा कि ईश्वर ने नाना प्रकार के पदार्थ अपनी रचना से उत्पन्न किये हैं और प्रत्येक वस्तु के रङ्गरूप भांति २ के दिखाये हैं एक स्थान है जिसमें परीजन अप्सरा आदिक रहते हैं उसका नाम क़ाफ़ पर्वत है उसके आसपास बहुत घर बनें हैं उन सब में जिन्न देव परी के समूह और ऊंट और हाथी घोड़सुहे आदिक रहते हैं और वहां का बादशाह शाहरुख़ का पुत्र शाहपाल नाम है जिसका बहुत सुन्दर चन्द्रमा समान मुख है उसका मन्त्री जो इस समय में न्याय करने में अद्वितीय है और बुद्धि व ज्ञान में उसके बराबर दूसरा नहीं मिलता है वह ईश्वर के स्मरण में ध्यानारूढ़ बैठा है सो हमज़ा का पलना अपने बादशाह के समीप मंगवावेगा और सातदिन के पीछे फिर आपके समीप भेजवादेगा इसमें अधिक लाभ होगा और विविधप्रकार के काम और मनोरथ उससे प्राप्तहोंगे यह कहकर ख़्वाजे अब्दुलमतलब से आज्ञा लेकर अपनी सेना में गया ख़्वाजे अब्दुलमतलब समय को देखता रहता था और उस घड़ी कहे हुए को ध्यान लगायेहुए बैठा था॥

अमीर हमज़ा को क़ाफ़पर्वत की ओर उड़ालेजाना॥

गुणों की प्रकाश करनेवाली लेखनी क़ाफ़पर्वत की ओर उठालेजाना यों वर्णन करती है और प्रवीणों को मधुर चरित्र यों सुनाती है कि एकदिन शाहरुख़का पुत्र शाहपाल क़ाफ़पर्वत के बादशाह की गद्दीपर सुशोभित था और पर्वत के आसपास के अठारह बादशाह उसके अधीन और कर देनेवाले न्यायशाला में उपस्थित रहते थे और इस भांति से बड़े २ लोग प्रतापवाले उसके निकट सदैव आतेथे इसीकाल में द्वारपाल ने आकर आनन्द समाचार विनयपूर्वक कहा कि आपकी पुत्री सुभाग्य पवित्र चन्द्र के समान मानों आसमान से आई है उत्पन्न हुई है बादशाह ने ख़्वाजे अब्दुलरहिमान से कि जो उसका मन्त्री बुद्धिमान् और सुलेमान बादशाह और सकल ज्ञानवानों का संगी था कहा कि इस लड़की का नाम रक्खो और उसके ग्रह विचारो कैसे हैं और भाग्य किसभांतिकी है ख़्वाजे अब्दुलरहिमानबादशाहकी आज्ञानुसार शाहज़ादी का नाम आसमानपरी रक्खा और रमल के द्वारा विचारकर बादशाह से यह शुभसमाचार वर्णन किया कि कृपासागर का कल्याण हो यह लड़की क़ाफ़ के अठारह परदे पर राज्य करेगी और बड़ी प्रतापिनी सुलक्षणी होगी परन्तु आज के अठारहें दिन जो २ देव बलवान् हैं वह आपकी अधीनता न अङ्गीकार करके फिर बैठेंगे और आप का डर कुछ भी न मानेंगे और गुलिस्तान इरम जरीं व सीमीं व काकुम इत्यादि छोड़ जितने नगर हैं सब आपसे छूटजायँगे किन्तु उस समयमें एक मनुष्य चतुर्थ भागवासी आयेगा वह इन सब को जीतकर पराजित करेगा नयेसिर से आपको सब देश देगा बादशाह यह बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि

देखो तो वह लड़का उत्पन्न हुआ है या नहीं वह किस देश का वासी है फिर दूसरे बार जो विचार किया और जानकर कहा कि अरबदेश में एक नगर मक्का है वहां के सरदार का वह लड़का है और आज छठा दिन है कि वह उत्पन्न हुआ है उसका नाम हमज़ा रक्खागया है और आज पलना उसका उसके पिता ने डेवढ़ी पर रक्खा है बादशाह ने कहा कि चार जिन्न जाकर उसका पलना उठालावें और उस सुख देने वाले को हमारे समीप लावें और आप आनन्द में मग्न हुआ और कोष का पाट खुला दिया और पुण्य करनेलगा बादशाह आनन्द ही में था कि इतनेही काल में परीपुत्रों ने हमज़ा का पलना लाकर रखदिया बादशाह ने इस सेवाके हेतु प्रति जिन्न को पारितोषिक दिया जितने न्यायशाला में थे उसका रूप देखकर चित्रलिखे से आश्चर्य में डूबगये उसको देखकर परीपुत्र लज्जित होगये बादशाह ने अमीर को उठाकर गोद में लिया और सुलेमानी अञ्जन मँगवाकर उसकी आंखों में लगाया और दूध पिलाने के हेतु बादशाह दाई उसकी सेवा को ढूंढ़नेलगा उसकी आज्ञानुसार शीघ्र सब उपस्थित हुईं और देवपरी के समूह बाघ सिंह का दूध सातदिनतक पिलाया ख़्वाजे अब्दुलरहिमान ने कहा कि रमल के द्वारा मालूम होता है कि इसी लड़के से आपकी लड़की का ब्याह होगा और परस्पर मनुष्य और जिन्नात से नातेदारी इसीके भाग्य से होगी बादशाह प्रसन्न होकर एक और पलना कि जिसके पाये मूंगे के और पट्टी लाल हीरा की सुवर्ण से जड़ी बनी थी और रेशम से बिनवाकर उसपर अमीर को लेटादिया और भांति भांति के रत्न उसमें रखवादिये और फिर उसीमें अमीर को सोलाकर जो जिन्न लाये थे उनसे कहा कि जहां से लाये थे वहीं रख आओ परन्तु विचारसमेत रखआना उसके घर का सब समाचार आकर मुझे बताना आज्ञा पातेही अमीर का हिंडोला जहां से लाये थे वहीं पहुँचाया और आनन्दित होकर सकल समाचार बादशाह को सुनाये ॥

बुजुरुचमेहर का मदायन की ओर जाना और वहां पहुँचकर आनन्द करना ॥

इतिहासलेखक इस समाचार को यों वर्णन करते हैं कि एक सप्ताह के पीछे ख़्वाजे बुजुरुचमेहर ने अब्दुल्मतलब से कहला भेजा कि सुधि तो लीजिये कि हिंडोला छतपर आया है कि नहीं वह खोया हुआ अपना पुत्र आपने पाया कि नहीं यह सुनकर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने आदमी जो कोठे पर देखने के हेतु भेजा तो वह हिंडोला देखकर भौचकगया और उसीकी ओर आश्चर्यवान् होकर टकटका बांधकर देखनेलगा ख़्वाजे को फिर समाचार जनाया कि अमीर एक दूसरे पलना को कि आसमान ने भी ऐसा कभी दृष्टि से न देखाहोगा लेकर आये हैं कि जिससे सब छत प्रकाशित होरही है सब कोठों में लाल लाली देरहे हैं ॥

दोहा। यूसुफ़ जो खो गयाथा, गुण न लीन जेहि देह। कुनआं में पुनि आवगे, पिता हेतु करि नेह ॥

ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने यह वृत्तान्त सुनतेही सब समाचार प्रतीत मान आनन्द सहित बुजुरुचमेहर से कहलाभेजा वह सुनतेही अपनी सेना से आया और अमीर

को देखकर आंखें प्रकाशित कीं और ख़्वाजे अब्दुल्मतलब से कहा कि मुझे बादशाह से आज्ञा लेकर आये बहुतकाल व्यतीत हुआ और मेरे लड़कोंवालों का ईश्वर जाने क्या समाचार हुआ होगा? अब बादशाह के देखनेको चित्त अकुलाता है अब मैं तो आपसे बिदा होता हूं आपके कल्याण को सदा चाहता हूं परन्तु आप अमीर और मुक़बिल और अमर की सेवा से न चूकें और अपने उपाय पढ़ने लिखने में भी श्रम करियेगा जब कभी मेरा पत्र आयाकरे उसका उत्तर शीघ्र कृपा हुआकरे अभिप्राय यत्न समेत लिखाकीजियेगा और अमीर को सप्तद्वीप का चतुर बादशाह विदित कीजियेगा अपने साथियों में इस बात की चर्चा कीजियेगा ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने सब स्वीकार किया और एक बिनयपत्र लिखकर ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को प्रशंसा के हेतु दिया बुज़ुरुचमेहर उस बिनयपत्र को लेकर मदायन देश की ओर चला कुछ काल के पीछे अपने स्थान में पहुँचा और बादशाह के दर्शन से कृतकृत्य होकर वह बिनयपत्र दिया और अब्दुल्मतलब की उत्तमता और साहस की बड़ी प्रशंसा की बादशाह उसे पढ़कर अति प्रसन्न हुआ और बुज़ुरुचमेहर को बड़ा पारितोषिक दिया उसके कई महीने के पीछे एक दिवस नौशेरवां कैकाऊस की गद्दीपर बैठा था सब सभा के लोग मन्त्री आदि सभा में बैठे थे और गानेवाले देशों के और बनिये सौदागर सब ओरों के आये थे सब नगरों के वृत्तान्त सभा में पढ़ेजाते थे कि चीन का वृत्तान्त बांचागया तो उसमें यह लिखा था कि चीन के महाराज के गुरु बहराम का पुत्र ख़ाक़ानुल्ला गद्दी पर बैठा है और यह बड़ा प्रतापी बादशाह हुआ है और अपने समान दूसरे को पराक्रमी व साहसी नहीं जानता है रुस्तम बनरीमा उसके आगे बुड्ढी स्त्री तुल्य है आखेट में जिस हाथी को थप्पड़ मारता है वह चिघड़के बैठजाता है और शेर बबर को कुत्ते के समान जानता है और सबलोग उसके बल को मानते हैं उसने देश भी बहुत से विजय करलिये हैं और चारसाल का कर जो उसके ऊपर है उसके देने की इच्छा नहीं है अपने बल पर यह घमण्ड किया है और यह सबसे कहता है कि हमको सप्तद्वीप का बादशाह करदेवे या तो अपने रुपये का नाम न लेवे नहीं तो मदायन को लूटकर उजाड़ दूंगा यह सुनकर बादशाह सन्देहमय होकर बुज़ुरुचमेहर से सलाह पूछी कि इसका कोई उपाय करना उचित है ख़्वाजे ने कहा कि इसका उपाय यही है कि अभी उसको ज़ोर अच्छीभांति नहीं प्राप्तहुआ है किसी नौकर को आज्ञा दीजिये कि उस दुष्टको बांध करके आपके समीप लावे या उस अविवेकी का शिर काटकर सरकार में लाकर धरे नहीं तो बलवान् होनेपर उसकी जड़ उखड़ना कठिन होगी चीन के देश में उसके शरीर से उपद्रव अधिक होंगे बादशाह ने कहा कि तुमको शक्ति है जिसे इस कार्य के योग्य जानो उस दुष्ट के पराजय के हेतु भेजदो बुज़ुरुचमेहर ने अस्फ़ज़री के पुत्र गुस्तहमको जो बड़ा शूरवीर और बुद्धिमान् और मल्लों के समूह का मालिक था बादशाह से पारितोषिक दिलाकर बारह हज़ार सवार पोढ़गर से चीनके बहराम पहलवान के पराजय के हेतु भेजा और भी बड़े २

मुखिया सेनापति युद्धप्रवीणों को साथ किया और कठिन आज्ञा दी कि कर लेने के सिवाय चारसाल की भेंट जुर्माना की भांति लेना और उसे पराजित करके अति कष्ट दे बांधलेना और बेड़ी पहिनाकर न्यायशाला में भेजना खबरदार इसमें सुस्ती कुछ भी न करना यह सुनकर गुस्तहम सलाम करके चीन की ओर चला ॥

अमर के लाल चुराने और पाठशालामें जाने का वृत्तान्त ॥

अब यहां अमीर और अमर के पाठशाला में पढ़ने जाने का वृत्तान्त यों वर्णन करते हैं कि आदियावानों को यह मालूम था कि एक स्तन का दूध अकेले अमीरहमज़ा को और दूसरी छाती का मुक़बिल व अमर को पिलाती थी और उन दोनों से अमीरहमज़ा पर कृपादृष्टि अधिक रखती थी परन्तु अमीर प्रतिदिन दुबला होता जाता था और अमर मोटा होता जाता था यद्यपि दो साझी मिलकर एक स्तन का दूध पीते थे सब आश्चर्यवान् थे कि इसका क्या कारण है ? कि यह और लड़कों से मोटा है और स्वरूपवान् है एक दिवस आदिया रात को सोती २ जो चौंक पड़ी देखती क्या है कि अमर ने अमीर और मुक़बिल को तो पलँग से नीचे ढकेल दिया है और आप दोनों स्तनों का दूध पीरहा है प्रातःसमय आदिया ने यह समाचार सब से वर्णन किया और कहा कि यह लड़का जब बड़ा होगा बड़ा नामी चोर होगा कि अभी से ऐसी चालें करता है बड़ा ढीठपन कररहा है उसके कुछ कालके पीछे जब पैरों चलनेलगा अमर ने अब यह बात अङ्गीकार की कि जब घर के सब लोग सोजाते तब आप घुटुओं चलकर जिस दालान में जाता स्त्रियों का छल्ला अँगूठी और जो कुछ गहना पाता उठाकर आदिया के पानदान या उसकी तकिया के तले रखदेता और आप सोजाता प्रातःकाल जब लोग अपना माल ढूँढ़ते तो आदियावानों की तकिया के नीचे या उसके पानदान में पाते तब अपना २ सबलोग उठा लेजाते आदिया बड़ा आश्चर्य करती और लज्जित होती किन्तु मुख से कोई शब्द न कहती एक दिवस अमीर के हिंडोले का लाल चुराकर अपने मुख में रखलिया और कुछ किसी को मालूम न हुआ और यह वृत्तान्त ख़्वाजे अब्दुल्मतलब को पहुँचा कि हिंडोला का एक लाल खोगया वह जवाहिर बहुमोल्य मकानही से बहगया दैवयोग से उस दिन ख़्वाजे की दृष्टि अमर के मुखपर पड़गई देखा कि एक ओर का गाल कुछ सूजाहै ख़्वाजे ने और भी आदिया और लौंड़ियों पर क्रोध किया और अमर को निकट बुलाकर देखने लगा कि यह फूला कैसा है गाल को जो दबाया उसके मुख से लाल निकल पड़ा ख़्वाजे ने कहा कि ईश्वर ख़ैर करे कि इस बाल्यावस्था का तो यह चरित्र है युवावस्था में देखिये यह क्या करेगा क्या २ यह ढहावेगा ग़रज़ कि अमर के हाथ से सब रोते थे और कभी लड़कपन के कामसे हँसते थे जब अमीरहमज़ा और मुक़बिल और अमर पांच साल के हुए ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने एक गुरु के निकट जो हाशम और नबीअम्मियांके लड़कों को पढ़ाता था उन तीनों को भी पढ़नेके हेतु पाठशाला की रीतिके अनुसार भेजा

पहले दिन श्रीगणेश करायागया उस समय के अनुसार आनन्दाचार कियागया जब दूसरे दिवस मौलवी अर्थात् गुरु सवक़ देनेलगा अमीर मुक़बिल ने उसके पढ़ाने की भांति पढ़ा परन्तु अमर से जब उसने कहा कि कहो अलिफ़ तब बोला सच बबरहक़ है अर्थात् व्यापक है पद के योग्य है कहा कि मैं कहता हूं अलिफ़ कह तब कहता है सच बबरहक़ है यह क्या बात है कैसा मूर्ख है अमर ने कहा कि जो आप कहते हैं उसका उत्तर मैं देता हूँ जो मैं समझा हूं वह आपके चरणों के नि-कट विनय करता हूं अर्थात् आप कहते हैं कि अलिफ़ मैं कहता हूं सच बर्वरहक़ है अर्थात् अलिफ़ सीधा है और इसका अङ्क एक है और ईश्वर भी केवल एक है जिसे फ़ारसी में वाहिदहूलाशरीक़ बोलते हैं वह भी अकेलाही है जो मैं इसे अशुद्ध और झूंठ बोलता हूं तो मुझे शासन दीजिये और मुझे क़ायल कीजिये और कई भांति समझाइये आप इसमें क्या कहते हैं? कि ईश्वर एक नहीं है कोई दूसरा भी उसका साथी है ग़रज़ कि सहस्रों उपाय से अलिफ़ बे पढ़ाई गई ज्यों त्यों दूसरी पाटी की बारी पहुँची जब अलिफ़ ख़ाली बे के तले एक नुक़्ता ते के ऊपर दो नुक़्ता से के ऊपर तीन शून्य अर्थात् बिन्दी गिनाकर पढ़ाने लगे तो और भी अमर का चित्त घबराया और ढिठाई करने पर उतारू हुआ पढ़ने की ओर चित्त कुछ न ल-गाता व्यङ्ग बचन बोलने लगता था गुरु ने क्रोध की दृष्टि से देखा परन्तु अपनाही कहना करता था लाचार होकर हमज़ा से कहनेलगा कि तुमको शक्तिहै इस गुरुसे पढ़ो और अपना अमोल समय गवांओ मैं तो नहीं पढ़ूंगा ऐसी विद्या पढ़ने से बाज़ रहा इस विद्या का पढ़ना छोड़ता हूं मैं क़ायदा अर्थात् रीति पढ़ने आयाहूं या हिसाब अर्थात् गणित समझने को किताब लाया हूं जो अलिफ़ ख़ाली है तो मुझे क्या या किसी के पास दो एक नुक़्ते अर्थात् शून्य हैं तो मुझे क्या पड़ी है? उन से क्या प्रयोजन है? संक्षेप यह है कि अमर इसी प्रकार की बातें कहा करता था मुल्ला एक दिन ख़्वाजे अब्दुलमतलब के निकट गया और अमर के ढीठपने का समाचार सब वर्णन किया और सब वृत्तान्त कहा कि नतो आप पढ़ता है और न हमज़ा को पढ़ने देता है जो हमज़ा को पढ़वाया चाहो तो उसे और किसीको सौंप दीजिये नहीं तो मैं ऐसा कष्ट अपने ऊपर न लूंगा उन दोनों लड़कोंको भी बोलवा लीजिये ख़्वाजे ने कहा कि अमीर को दूसरे स्थानपर पढ़ने के हेतु भेजें परन्तु अमीर ने स्वीकार न किया उसपर यह सुनकर रोदिया और कहनेलगा कि जहां अमर जायगा वहां मैं भी जाऊंगा नहींतो मैं एक अक्षरभी न पढ़ूंगा ख़्वाजा ला-चार होकर चुपहोरहा और फिर मुखसे कोई शब्दभी न कहा रीतिथी कि सब लड़कों के निमित्त उनके पालक अपनी शक्ति के अनुसार भोजन बनवाकर पाठशाला में भेजते थे एक दिवस का समाचार सुनिये कि रीति के अनुसार प्रतिगृहसे पाठशाला में भोजन आया था और उचित स्थानों में रक्खाहुआ था मध्याह्न के समय गुरुस-मेत सब नींदवश होकर सोगये परन्तु अमर जागता था जो कुछ चाहा उसमें से

लेकर खालिया और शेष पाठक की तकियाके तले छिपाकर रखदिया जब सब जागे खाना ढूंढ़ा परन्तु न पाया प्रत्येक बालक क्षुधा के कारण घबराये पाठक ने कहा कि अमर के सिवाय यह काम और किसी का नहीं है उसके आगे और किससे इस भांति का काम होगा अमर ने कहा कि वाह.२ स्वामी यह वही कहावत है कि नगर में ऊंट बदनाम आप प्रथम अच्छी भांति से ढुंढ़वालीजिये जिसपर अपराध ठीक हो वह दण्ड के योग्य होगा और वही अपराधी है पाठक ने कहा कि तूहीं ढूंढ़ अमर ने पहले नीति के अनुसार सब लड़कों का झाड़ालिया और आस पास देखनेलगा तिस पीछे पाठक के बस्त्र तकिया झाड़ी सब कपड़े उलटडाले सबने देखा कि पाठक की तकिया के तले से भोजन निकला चिल्लाकर कहनेलगा कि देखो तो साहबो ॥

चौपाई। जो काबे से अधरम होई। मुसलमान पुनि रहै न कोई ॥
जो गुरुकरै काज यहि भांती। चेला किमि न होय खल घाती ॥

पाठक की जो ऐसी नियत है तो मूर्खों के ऐसे वृत्तान्तपर क्या पश्चात्ताप है हमज़ा चलो उठो अपने पिता से कहो कि चोर पाठक के पास न पढ़ेंगे ऐसी विद्या पढ़ने से अपढ़ रहना उचित है हमको किसी प्रबीण सुकर्मी नीतिमान् गुरु के पास पढ़ाओ और किसी तीव्रबुद्धि के निकट बैठाओ पाठक ने यह बात सुन लज्जित हो कर दो तीन तमाचे अमर के मारे जब शासना न मानी तब कोड़े फटकारे अमीर ने अमर का अपराध क्षमाकरवाया और अधिक दण्ड न होने दिया दूसरे दिन मध्याह्न के समय जब पाठक और शिक्षक सोगये तब अमर ने पाठक का शमला किरमानी हलवाई के निकट गिरों धरके पांच रुपये की मिठाई लाकर पाठशाला में रखदी और आप सोरहा पाठक ने उठकर जब मिठाई अधिक देखी तब जी में प्रसन्न हुआ किन्तु साथही अमर की चालाकी के ओर ध्यान किया प्रत्येक से पूछा कि यह कैसी मिठाई है और कहां से आई है सबों ने कहा कि हम नहीं जानते हैं तब अमर को जगाकर पूछा तो आपने उत्तर दिया कि बाबाजी ने प्रसाद माना था सो यह मिठाई लेकर आये थे दो एक स्नेही साथ लाये थे आपको सोते से जगाना बेअदबी समझ चलते समय मुझसे कहगये थे कि जब पाठक सोकर उठें इसपर फ़ातिहा अर्थात् देवता का नाम लेकर बटवादेना और मेरा भाग तुम लेलेना गुरुने कहा कि किसके नामपर अर्पणकरूं अमर ने कहा कि बाबा शमला के नामपर पढ़ो पाठक ने कहा कि यह कैसा नाम है यह सुन अमर बोला कि फ़क़ीरों के ऐसेही नाम होते हैं ऐसे नामा से उनके गुरु उनको पुकारा करते हैं गुरु ने उसको शमला-र्पण करके ऊपर से अच्छी २ मिठाई निकालकर पहले आपही खाई शेष अमर ने सब लड़कों को बांटदी और आपभी खाई उन पेड़ों को जिन्हें पाठक ने खाये थे अमर ने कुछ जमालगोटा मिलादिया था थोड़ी देर के पीछे पाठक साहब के पेट में गड़गड़ाकर दर्द होना आरम्भ हुआ पाठक को दस्तपर दस्त होनेलगे पाख़ाना तक जाना कठिन हुआ हाथ पाँव थरथराने लगे पाठक ने अमर से पूछा कि अरे इस

मिठाई में क्या मिलाहुआ था कि जिसके खाने से मेरा हाल इस भांति का हुआ है अमर ने कहा कि जिस प्रकार से आपको सकल वर्णों में शेर ऐसी याद हैं कि प्रत्येक शब्द लाते हैं मैंभी लाम काफ़ मुँह से निकालूंगा कि मुझको भी यही अक्षर अच्छे याद होगये हैं मिठाई तो हम सब ने खाई है कि डकार तक भी नहीं आती है जो मिठाई के खाने से आप का समाचार ऐसा पतला हुआ तो हमलोगों को क्या हुआ है ? किन्तु ऐसा जो हो तो कदाचित्ही जैसा कहावत में है कि किसीको बैंगन बिजियाले और किसीको पाचक आपने मेरे जानेके आगे ऊपर २ किसी लड़के से मिठाई उड़वाई होगी या बेसम्हार मिठाई खाई होगी बाबा शमला ऐसे न थे कि कोई उनसे ख़राब काम होवे और उससे पेट में किसी भांति की बुराई न उत्पन्न हो सिवाय इसके आपने काहेको भूख के मारे बहुतसी खाली कि जिससे पचने में भी कठिनता अधिक जनाई अमर की ढिठाई अमीर ने जानकरके मट्ठा मँगवाया पाठक मोल्ला को पिलवाया और कहा कि मिठाई की उष्णता ने गर्मी विशेष की है आप दही को पान कीजिये और चित्त में किसी भांति की सन्देह न करिये ईश्वर २ करके पाठक का जी बचा उस बलाय से सावकाश मिला जब चार घड़ी दिन रहगया पाठक ने सब बालकों को छुट्टी दी सबने अपने २ घर की राह ली पाठक ने भी अपनी पगड़ी और फेंट सँवार देखें तो शमला नहीं मिलता खोगया लाचार होकरके फेंटा का दुपट्टा छोरकर मूड़ में बांधा और घर की राह ली जब हलवाई की दूकान के निकट पहुँचे तब हलवाई शमला लेकर दौड़ा और कहा कि आपको शमला अर्थात् पाटम्बर भेजकर मिठाई मँगाना क्या अवश्य था क्या मुझे लज्जित करना आपको था क्या पांच रुपया मेरे ऐसे थे कि जिससे आपका विश्वास न मानता दश पांच दिवस का धैर्य न होता दामों की कुछ ऐसी मुझे आवश्यकता न थी जब मासिक आपका आयाकरे भेजवादिया कीजिये यह दूकान आपकी है जब जिस प्रकार की मिठाई चाहिये मँगवालिया कीजियेगा पाठक ने यह बातें सुनकर कुछ बनावट की बातें कही और शमला लेकर अङ्गा की जेबमें से पांच रुपया निकालकर लाचार हो हलवाई के हाथ में धरे और चित्त में बिचार किया कि यह वही मिठाई है कि जिसको अमर ने आज अर्पण करवाई थी रात अच्छी भांति व्यतीत हो प्रातःकाल में हूं या अमर है कोड़ा है या उसकी पीठ है अब प्रातःसमय होतेही सब से प्रथम अमर शाला में आया और बिछौना झाड़के बिछाया और पाठक की मसनद तकिया लगाकर किताब खोलकर पढ़ने लगा पाठक ने आकर जो उसको शाला में पढ़ते हुए देखा चित्तमें बिचारा कि इसपर मेरा डर छागया है जिससे आज सब से प्रथम शाला में आया है आज इसको कुछ न कहना चाहिये भुलावा देना चाहिये पाठक ने सबको पढ़ाकर कहा कि मैं हम्माम में स्नान के हेतु जाता हूं बहुत शीघ्र वहां से आता हूं तुम सब बैठे २ पढ़ो अपना २ पढ़ाहुआ यादकरो और ख़िज़ाब बालों में लगाने को अमर के हाथ पहलेहीसे भेजदिया था पीछे आप जाने का मनोरथ किया अमर ने

मार्ग में समय पाकर तोलाभर हरताल मिला दिया और अच्छी भांति खिज़ाब में घोरदिया गुरुजी हम्माम में पहुँचकर खिज़ाब को दाढ़ी मूछों में अच्छी भांति लगा कर एक घड़ी के पीछे जब उष्ण पानी से धोया तो सब दाढ़ी मूछों के बाल गिरपड़े तब अत्यन्त लज्जित हुए और सबसे मुँह छिपाया रात्रि के समय एक कपड़ा मुँहपर डालकर ख्वाजे अब्दुल्मतलब के निकट जाकर विनय की और अपनी सूरत दिखाई और अच्छी भांति से मुँह पीटा और रोरो कर अति विलाप कर कहा कि अमर ने इस बुढ़ापे में मेरी यह गति की और इस वृद्ध अवस्था में मुझे किस प्रकार का कष्ट दिया है कि लाज के कारण किसी को मुँह नहीं दिखासक्ता किसी मित्र स्नेही के निकट नहीं जासक्ता और सब वृत्तान्त शमला और मिठाई आदि का बर्णन किया और जमालगोटा डाल देनेका सब समाचार कहा ख्वाजे ने उनको तो विनय करके बिदा किया और अमर को कष्ट देकर घरसे निकालदिया और अमीरसे कहा कि जो तुमने कभी अमर का नाम लिया तो हम तुमपर बहुत क्रोध करेंगे ऐसे अयोग्य कुमार्गी को अपने समीप न बैठने दियाकरो मूर्ख को अपने निकट कोई नहीं बैठाता है और अपने घर में बुलाता है ऐसेकी संगति में बदनामी प्राप्तहोती है बुरे के संग बुराई ही मिलती है अमीर अमर का बिछुरना कब चाहता था निशि दिन अमीर रोयाकरता और भूखा बैठा रहता यह समाचार जब ख्वाजे अब्दुल्मतलब पर बिदित हुआ लाचार होकर अमर को बुलवाकर उसका अपराध क्षमा किया और अमीर को सौंप दिया और एक चिट्ठी गुरु के नाम अपराध के क्षमा करने के हेतु दी पाठक ने उसका अपराध क्षमा किया और उसी प्रकार फिर भी अमर पाठशाला में पहुँचा एक दिवस किसी बिद्यार्थी के घर से कुछ भोजन आया गुरुजी ने अमर को देकर कहा कि इसको मेरे घर में देआइये और मार्ग में कुछ चालाकी न दिखाइयेगा जो मार्ग में खोलोगे तो इसमें मुर्ग़ का बच्चा है उड़जायगा फिर कठिनता से भी न मिलेगा अमर ने कहा कि मुझे खोलने से क्या काम है ? आपकी आज्ञानुसार घर में दिये आता हूं और उनसे उत्तर लाता हूं फिर उस भोजन को लेकर वहां से चला जब पाठक के घर के निकट गया तो एक स्थान स्वच्छ में उस भोजन को शिर से उतारकर खोला तो उस में मीठे चावल दृष्टि पड़े चित्त चलायमान हुआ भूखा तो थाही उसी स्थान पर बैठकर अच्छी भांति भोजन किया शेष कुत्तों को डाल दिया और खाली पात्र रख कर कसनी और भोजन का ढकना फाड़कर आगे बढ़ा पाठक के द्वार पर पहुँच कर गुरुआनी को हांक दी वह जब किवाड़ के निकट आई तब उनको देकर कहा कि पाठक ने इसके खोलने के निमित्त मना किया है कि खाना कुछ न बनाना और पड़ोसी भी जो दो एक मित्र स्नेही तुम्हारे हों उनको भी खाना बनाना मन करना और उनके यहां खाना भेजवाना वह बिचारी अमर का छल न जानती थी उसने खाना भी कुछ न बनाया और पड़ोसियों को भी जो दो स्त्रियां उसकी अति मित्र थीं भोजन बनाने को मना करवा भेजा दैवयोग से उस दिन जो गुरुजी पाठशाल

से उठे तो एक मित्र की मुलाक़ात को गये कि घड़ीभर मन बहलाकर कुछ कहते सुनते चलें उसने दोपहर रातगये तक पाठक को जाने न दिया यद्यपि खाना खाने का शिष्टाचार उसके मित्र ने किया परन्तु पाठक को मीठे चावलों का स्वाद मुँह में था कुछ न खाया जब बिदा होकर घर गये और स्त्री से पूछा कि आज क्या बनाया है तुमको आज बड़ा कष्ट हुआ मेरे आनेका ध्यान कियेरही उसने कहा कि आपने भोजन बनाने के हेतु मना कराभेजा था और तुम्हारी आज्ञानुसार पड़ोस की स्त्रियों को भी भोजन बनाने से मना करदिया था सो आज नाहक आधीराततक बाहर रहे पाहुनों से ऐसे बेसुधि रहे कि वह बिचारी भी अपने पुरुषोंसमेत भूखी बैठी हैं खाने का मार्ग देखरही हैं अब जो आपने भोजन भेजा था वह रक्खा है पहले तो उन बिचारियों को जिनको मैंने तुम्हारे कहनेके अनुसार न्योतरक्खा है भेजो फिर आप खान पान करें पाठक यह वाक्य सुनकर चित्तमें कहनेलगा कि ईश्वर अच्छा करे यह चाल अमर की है और यह बात भी ढिठाई से बाहर नहीं है उस पात्र को जो खोला तो उसमें भोजन न देखा और चित्त में कहा कि जांचेहुए को जांचना मूर्खता है तेरी बुद्धिपर क्या परदा पड़ाहै कि इस दुष्ट के हाथसे कई बेर फल पाचुका है फिर उसपर बिश्वास करता है फिर पाठक ने उस रात्रि को स्त्रीसमेत उपवास किया और यह हाल सुन कर जो और स्त्रियां थीं वेभी भूखी पड़ी रहीं भोर होतेही गुरु ने कुछ बनवाकर खा- लिया और शाला में जाकर अमर से पूछा कि कल जो भोजन भेजा था वह क्या हुआ अमर ने कहा कि खाने से तो कुछ भेद जाना नहीं लेकिन वह मुर्ग़ जो आपने भेजा था मध्यमार्ग में कसनी फाड़कर उड़गया और मैंने बहुत ढूंढ़ा परन्तु उसका पता न लगा पाठक ने कहा कि तैंने हमारे घर में भोजन बनाने को क्यों मना किया और क्यों निष्प्रयोजन घरवालों को दुःख दिया और हमने कब कहा था कि पड़ो- सियों को भी न्योता देना उनको भी मेरे साथ दुःख दिया अमर बोला कि यह मुझसे अपराध हुआ पाठक ने अमर को बांधकर अच्छी भांति दण्ड दिया अमीर ने उस का दोष क्षमा कराया और उस कष्ट से छोड़ाया और कहा कि इस दास से अब ऐसा अपराध न होगा परन्तु अमर पाठक का मनसे जीवघातक होगया और सदैव किसी न किसी बात में दुःख देता और अबूजेहल और अबीसुफ़ियां भी इसी शाला में पढ़ते थे दोपहर के समय जब सब लड़के सोरहे नींद में आसक्त हुए अमर ने अंगूठी अबूजेहल की अंगुली से उतार कर पाठक के घर में जाकर पाठक की ल- ड़की के पानदान में रख आया और लड़की के कान की बाली उतार कर अबूजे- हल के हाथ में डालदी और चुपका होकर लेटरहा चुपकी साध ली जब सब लड़के जागे मुँह धो २ कर पढ़नेलगे गुरु ने अबूजेहल के हाथ की अंगुली में अपनी पुत्री के कान की बाली जो देखी तो कुछ कान खड़ेहुए परन्तु कुछ कह न सके अबू- जेहल से पूछा कि यह बाली तूने क्योंकर पाई है अबूजेहल अपनी अंगुली को देखकर अति आश्चर्य माना और घबराकर कहने लगा कि मैं यह नहीं कहसक्ता

कि किसने यह वाली मेरे हाथ में पहिनाई है अमर बोला कि स्वामीजी मुझ से पूछिये मैं इस वृत्तान्त को अच्छी भांति जानता हूं यह भेद मुझे अच्छीतरह विदित है यद्यपि आपके सामने कहना उचित नहीं है पाठक ने कहा कि कहो अमर बोला कि दोपहर के समय जब आप और सब लड़के सोजाते हैं यह उठकर आपके घर जाया करता है और फिर उसी पाँव झटपट फिर आता है आज जब यह उठकर चला दैवयोग से उसी समय मेरी भी आंख खुलगई मैं भी उसके पीछे पाँव दबा कर चला जब वह आपके दरवाज़े पर पहुँचा इसने ज़ंजीर हिलाई आपकी पुत्री सुनकर दौड़ी आई प्रथम तो परस्पर वार्त्तालाप करते रहे और फिर कुछ आने जाने की बात ठहरी चलते समय इसने अपनी अंगूठी उसे दी और उसके कान की बाली आपने ली इसके पीछे यहाँ छिपाहुआ आकर सोगया मैं भी पीछे से आकर सोरहा यह सुनकर पाठक क्रोधित हुआ और अबूजेहलसे वाली लेकर इसभांति से उसे पीटा कि बेदम होगया और उसी समय अपने घर जाकर पुत्री को निकट बुलाया और उसका पानदान मँगाया देखा तो सचमुच उसमें अंगूठी रक्खी है और अच्छी भांति यत्नसमेत धरी है यह देखतेही उस बिचारी के बाल पकड़कर ऐसे थप्पड़ उसके फूल से गालों पर मारे कि जिससे वह घबड़ाकर अचेत होगई और मुँह उस का तांबासा लाल होगया माता उसकी गालियां देती हुई दौड़ी कि क्या तू विक्षिप्त होगया है तेरे मूंड़पर प्रेत बैठा है उस बिचारी को मारे डालता है उसका क्या दोष है ? यह कहकर एक दो हाथ अपने पति की पीठपर मारे वह अपनी पुत्री को छोड़ कर उसके लिपट गया और उसकी डाढ़ी उसके हाथ में और उसकी चोटी उसके हाथ में टोलाके मनुष्य यह गुल शोर झगड़ा सुनकर दौड़े और पाठक से कहने लगे कि तुमको स्त्री पर हाथ डालना यह पाठ किसने पढ़ाया था और किस गुरु ने विद्या की शिक्षा की थी जिस किताब में यह लिखा हो कि स्त्री को पुरुष मारे लिखा हुआ दिखादीजिये यह बात हमको भी समझादीजिये निदान लोगों ने बीच बराव करदिया और प्रत्येक को समझाकर यह कहनेलगे कि मनुष्य को उचित है कि स्त्रीपर हाथ न चलावे दैवयोग से उसके भोर शुक्र का दिन था लड़कों को छुट्टी दी गई थी प्रत्येक बालक खेल कूद में प्रवृत्त थे और सब बालक कमसिन अर्थात् थोड़ी ही अवस्था के थे अमर को नई सूझती थी एक बिसाती से जाकर कहा कि तुम्हारी स्त्री का समाचार बुरा है मुझे हाथ जोड़ २ कर लोगों ने भेजा है बिसाती यह बात सुनकर रोता पीटता घर को चला अमर थोड़ी दूर उसके साथ होकर अलग हो बैठा और उलटे पांवों और राह से दूकान पर आया और उसके चेले से कहा कि वह बड़ाबक्स जो सुइयों का है तुम्हारे गुरुने मांगा है कि उसको एक मनुष्य मोललेगा और दाम मुँह के मांगे देगा वह आप तो न आसके इस निमित्त मुझे भेजा है फिर आगे तुमको अख्तियार है वह यह समझकर कि यह लड़का अच्छा भलामानुष दीखपड़ता है छल यह नहीं जानता होगा बक्स सुइयों का देदिया अमर उसे लेकर

पाठशाला में पहुँचा और सूना पाकर पाठक के बिछौना में अच्छीभांति तकिया समेत में वह सुइयां चुभोईं और आप अपने घर चलाआया और जोकि उस दिवस पाठक से और उनकी स्त्री से मार पीट हुई थी इस कारण से भोजन कुछ न बनाथा और झगड़ा मचा था पाठक रिसाकर शाला में आया और बिछौना बिछाया कि आज यहीं सोरहूंगा फिरकर घर न जाऊंगा जैसेही बिछौना पर पांव रक्खा वह सुइयां तलुओं में गड़गईं तो आसक्त होकर उसपर लेटकर जब करोंटे लेने लगा तो देहभर में सुइयां गड़गईं और चलनी की भांति सम्पूर्ण शरीर में छेद होगये और उस दिवस विद्यार्थी भी न थे छुट्टी के कारण कोई लड़का न आया था अब उनके शरीर से सुइयां निकालनेंवाला कोई नहीं है जिस भांति शरीर में चुभी थीं उस रीति से छेदीरहीं शिर से पैरतक सब सूज गया और जहां २ सुइयां छिदगई थीं वहां २ से रुधिर की धारें छूटनेलगीं दूसरे दिवस शनैश्चर को जब लड़के आये तो देखा कि पाठक साहब मछली के समान तलफ़ते हैं और कराहते हैं बिछौने पर अचेत मुरझायेहुए पड़े हैं लड़के सुइयां निकालनेलगे और पाठक शूल के कारण चीखें मारनेलगे और कभी मन को पोढ़ा करके रुक जाते थे इतने में अमर भी सबसे पीछे उस दिन गया था पाठक को देखकर रो रो कर कहने लगा कि जिसने स्वामीजी के साथ यह किया है जो मैं उसे जानपाता तो इनसे उसकी बुरी गति करता और अपने गुरु का बदला लेता यह कहकर झटपट एक मियाना लाकर गुरुजी को सवार कराके जर्राह के घर लेचला जब उस बिसाती के घर के निकट मियाना पहुँचा वह अमर को पहिंचानकर दौड़ा और कहनेलगा कि ऐ लड़के तू बड़ा छली है और झूठ मूठ की बातें बनाकर अच्छी भांति तमाशा करना जानता है मुझे झूठ मूठ वाक्य सुनाकर कि तेरी स्त्री मरने के निकट है घर को भेजा और मेरे चेले से मेरा नाम लेकर कई सहस्र सुइयों का पूड़ा लेकर चलागया अब तू कहां जाता है अभी तेरी गति करता हूं और सुइयां अभी मैं तुझसे लेता हूं और इस छल का स्वाद तुझे दिखलाये देता हूं यह बात जब पाठक के कान में पड़ी उस समय कान खड़ेहुए और बिसाती की ओर मुँह करके पूछनेलगे कि यह कब सुइयां तेरी दूकान से लेगया था अमर ने कहा भेद खुल गया झट पट आंख बचाकर वहांसे चल दिया पाठशाला में आया अमीर और मुक़बिल से कहा कि लो ईश्वर मालिक है मेरा बास अब इस नगर में नहीं होसक्ता अमीर को भी अमर के बिना कब चैन था यह बात सुनकर पूछा भला तो है सब बता क्या समाचार है अमर ने कहा कि मेरी तो इन्द्रियां इस समय स्थिर नहीं हैं कि जो वृत्तान्त वर्णन करूं मार्ग में सब चरित सुनादूंगा तब अमीर ने कहा कि चल कहां चलता है तेरे बिना मेरा चित्त भी घबड़ाता है हम तेरे साथ हैं यद्यपि आपकी चालों को खूब जानते हैं अमीर व मुक़बिल और जिन २ बालकों को अमीर के साथ प्रीति होगई थी सब के सब अमर के साथ हुए और छिपे २ डरते कांपते

आगे पीछे दीखते हुए उसके साथ चले और अबुलकेश पर्वत की गुफा में लुक रहे और साथियों समेत उस स्थान में एकदिन और एक रात्रि वास किया जब कुछ काल बे अन्न जल व्यतीतहुआ अमीर ने कहा कि अबतो भूख के कारण चित्त घबड़ा रहा है और सब साथी दुःखित होरहे हैं अब पेट भरना किसी भांति चाहिये अमर ने कहा कि आप साथियों समेत यहाँ रहें सेवक भोजन लाता है देखिये तो किस भांति के व्यञ्जन आपको भोजन करातांहूं यह कहकर नगर की ओर चला और एक बधिक से दो हाथ आंत लेकर जेवदा नामी बुढ़िया के घरके पिछवाड़े पहुँचा उसकी मुर्गियां घूरे पर चरती थीं उन्हें पकड़नेलगा और ऐसा उपाय किया कि उस आंत के सिरे पर एक गांठि देकर फेंका जो मुर्गी उसे निगलगई दूसरे सिरे पर फूकने लगता था जब आंत फूल गई गले में गिरह पड़ी तो उसे पकड़कर छुरी से मारकर और पर नोचकर रुमाल से बांधी इसी उपाय से पन्द्रह सोलह मुर्गियां मारकर बांधलीं फिर बिचारा अब कुछ और उपाय किया चाहिये तो चार पांच पत्थर उस बृद्धा के घरमें फेंके और आप घात लगाकर आड़ में खड़ारहा वह बृद्धा हल्ला करती हुई घर से बाहर निकली और ऐसी वैसी दीखने लगी अमर तो घात लगायेही था दूसरी ओर से उसके घर में पहुँचकर कोठरी दीखने लगा वहां एक हांड़ी में मुर्गियों के अण्डे जो जमा थे लेकर अपनी राहली आगे बढ़कर एक क़-बाबी के पास क़बाब भुनवाये और अण्डे पकवाये और पांच रुपये की शीरमालें और निहारी लेकर उस पर क़बाब और अण्डे रखकर चादरा को उतार कर उस पात्र को अच्छी भांति बांधकर अपने मूँड़ पर रक्खा और क़बाबी से कहा कि अपना आदमी मेरे साथ करदे मेरे वह साथ चले कुछ देर न होगी इसी समय तुम्हारे आदमी के हाथ दाम भेजताहूं ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने मँगाये हैं उनके घर में भाइयों का न्योता है उसने जब ख्वाजे का नाम सुना शीघ्र अपना आदमी उस के साथ किया कुछ भी भय सौदा देने में न की फिर थोड़ी दूर जाकर उस आदमी से अमर ने कहा कि तुम आगे बढ़ो ख्वाजे के दीवानख़ाने में चलो मुझे दही आदि लेना है उसे लेआताहूं तुम्हें अभी मेहनत दिलाता हूं वह तो उस ओर गया और आप अबुलकेश पर्वतकी ओर चला जब अमीर के समीप पहुँचा भोजन देखकर सबों का चित्त प्रसन्न हुआ और भोजन को जो खोला तो उसमें भांति २ के खाने दृष्टि पड़े अमीर उसे देखकर अतिप्रसन्न हुआ अमर की चालाकियां तो अच्छी भांति जानताही था कहा कि प्रथम यह बताइये कि खाना किस उपाय से लाये अमर ने कहा कि प्रथम भोजन फिर वर्णन यह भोजन खालीजिये फिर बातें कीजिये अमीर ने साथियों समेत उसको भोजन किया अथ उस आदमी का वृ-त्तान्त सुनिये कि जिसको क़बाबी ने अमर के साथ रुपया लेनेको भेजा था ख्वाजा अब्दुल्मतलब के समीप गया और कहा कि मेरे गुरु ने सलाम कहा है और जो पांचरुपये की शीरमालें सरकार ने अमर की मारफ़त मँगाई हैं उनका मोल लेनेके

हेतु सेवक को भेजा है वहां पाठक तो पहलेही से बैठेहुए अमर का दुःख रोरहे थे यह सुनकर और चित्त घबराया इसी में एक बुढ़िया रोती पीटती हुई नालशी आई कि अमर मुझ दुखिया रांड़ को किसभांति छल देकर मुर्गियां और अण्डे ले गया है ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने क़बाबी के आदमी से पूछा कि अन्त को अमर किधर को गया है उसने कहा कि अबुलकेश पर्वत की ओर जाता था और चारों ओर को देखता भवचका सा था ख्वाजे अब्दुल्मतलब ने उसको पांच रुपये मँगा दिये और बुढ़िया को भी मुर्गियों के दाम मँगादिये और पाठक से कहा कि आप अबुलकेश पर्वततक कष्ट सहिये अपने विद्यार्थियों से अमर को पकड़वालाइये पाठक पर जो बेध चढ़ाथा विद्यार्थियों को साथ लेकर पर्वत का मार्ग लिया और अमर के बांधने का मनोरथ किया जब पर्वत के निकटपहुँचे अमर दूर से देखकर अच्छी भांति से ठट्ठामारकर हँसा और अमीरसे कहा कि गुरुजी हमें पकड़ने आते हैं विद्यार्थी भी कुछ साथ लाते हैं देखिये तो मैं कैसी उनकी गति बनाता हूं किस सूरत से घर भेजवाताहूं यह सुनकर गुरुजी ठिठुके और अपने स्थानपर खड़ेरहे किन्तु अबूजेहल और अबूसुफ़ियां आदि को अमर के पकड़ने की आज्ञा दी और आप कुछ दूर चलकर बताना आरम्भ किया जब अबूजेहल आदि निकट पहुँचे तो अमर ने पुकारकर कहा कि तुम लोगों की मृत्यु चढ़ी है जो बैठे बैठाये खोपड़ी कुचलाते हो गुरुजी तो बिक्षिप्त होगये हैं तुम्हें क्या कुत्ते ने काटा है भला चाहो तो फिरजाओ अच्छीभांति अपने बाप मा को मुँह दिखाओ अबूजेहल कब मानता था बल सम्हारकर आगे बढ़ा अमर ने कङ्कड़ उठाकर इस बलसे अबूजेहल के मुँहपर मारे कि सब मुँह उसका घायल होगया और मुँहभर में चलनी के समान छेद हो गये सब कङ्कड़ मुँह में घुसगये तब तो अबूजेहल रोताहुआ पीछे को हटा और लड़कों ने अबूजेहल का जब यह हाल देखा एक भी आगे न बढ़े पाठक ने यह विचार किया कि कदापि मेरा डर माने इस मनोरथ से उसके पकड़ने को आप चला जब निकट पहुँचा तो अमर ने एक पत्थर उठाकर ऐसा मारा कि पाठक का शिर फट गया और आगे चल न सके और रुधिर की धारें शिर से छूटने लगीं तब तो गुरुजी भी गणित बिचार के पीछे हटे और घर का मार्ग लिया शोणित से सब बदन डूब गया चलते २ अब्दुल्मतलब के निकट पहुँचे और अपना शिर और अबूजेहल का मुँह ख्वाजे को दिखाकर सब बृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि मैं अमर को नहीं पढ़ाऊंगा आपने अच्छी मित्रता मेरे साथ की ख्वाजा सब इतिहास सुनकर आप सवार होकर पहाड़ की ओर गया और जो पता पाठक ने बताया था उसी मार्ग पर चला अमर ने दूरसे देखकर कहा कि अमीर ख्वाजे आते हैं इनसे मेरा बस नहीं चलेगा मुझे पावेंगे तो नहीं जानता कि कैसा दण्ड देवेंगे मैं अपना मार्ग लेताहूं सेवकपन का पद निवाहे देताहूं अब आप जाने आपका काम आने ख्वाजे जब गुफ़ा में पहुँचे उसमें अमर को तो न पाया परन्तु अमीर को दिलासा देकर ऊंट

पर अपने साथ बैठाया और मनोरथ समेत धाम को पधारे और मुक़बिल को बालकों के समेत अपने सेवक के साथ किया जब घर में आये यद्यपि अमीर को धीरज और ढाढ़स देकर कहा कि भैया अब अमर का नाम मुँहपर न लाना और इसको अब कभी अपने घर न बुलवाना भले मनुष्य ऐसी संगति से विचार करते हैं ऐसे दुष्ट के साथ बैठने उठने से भागते हैं वह तुम्हें कुमार्गी और बदनाम करेगा तुम्हारे बाप दादे का नाम मिटादेगा अमीर को बे अमर के कब चैन और सन्तोष था आसक्त होकर रोनेलगा ख़्वाजे ने बहुत कुछ समझाया परन्तु उसका उत्तर न दिया चुप होरहा और सात दिवसतक खानपान कुछ भी न किया तब ख़्वाजे अब्दुलमतलब घबड़ाये कि हमज़ा का जी इसीपर जायगा लाचार होकर अमर के ढूंढ़ने को आदमी भेजवाये परन्तु अमीर से कहा कि अब तुम अमर का कहना न मानना उस अयोग्य की बातों को चित्तमें न लाना और जो चित्त व्याकुल होवे तो अपने बाग़ में सैर करना अपना मन बहलाना किन्तु दूसरे किसीके बाग़में न जाना हमारे कहे को ध्यानमें रखना ॥

दोहा। सैरहेतु चल बाग़ में, सुमन सुचितहैं देख। हैं पुकारती बुलबुलैं, चलु आनँद उर लेख ॥

एक दिन अमर ने अमीर को शिक्षादी कि आज चल के बाग़ की सैर कीजिये फुलवाड़ी का मार्ग लीजिये उसके कहने के अनुसार अमीर मुक़बिल और अमर को अपने साथ लेकर बाग़ में गये और अति आनन्दित हो बाग़ की सैर करनेलगे अमर उस बाग़ से निकलकर किसी दूसरे के बाग़ में गया और वहांसे अच्छे फल चख चखाकर आया और कहा कि कृपानिधान यहां से निकट एक बाग़ बहुत सुशोभित और रमणीयहै आपके बाग़ की बसन्तऋतु उसके आगे पतिझारहै अमीर ने पूछा कि कितनी दूरपर और किधरहै बोला कि इसी आपके बाग़ से अति समीप है अमीर मुक़बिल समेत अमर के साथ उसओर चले और चलते २ उस बाग़ में पहुँचे देखा तो वैसाही पाया भांति २ के फूल कियारियों में खिलेहैं और कुछ वृक्षों में फल खुरमें के लगेहुए हैं नहरें स्वरूपवान् बनी हैं और कियारियां प्रति वृक्ष के सामने प्यारी २ बनी हैं उस बाग़ की मेवा देखकर देखनेवाले के मुखमें लार भरि आई एक खुरमा जो उसमें का खाय तो स्वाद और मेवों का भूलिजाय और बाग़के मध्य में एक चबूतरा संगमरमर का ऐसा स्वच्छ बनाहै कि जिसपर आंखभी नहीं ठहरती है अमीर उस चबूतरे पर बैठके सैर करनेलगा अमर इधर उधर फिर फिर के मेवे तोड़ २ कर अपना पेट भरनेलगा कुछ देरके पीछे थोड़े खुरमे तोड़कर खाता हुआ अमीर के सामने आया अमीर ने कहा कि हमभी इन खुरमों का स्वाद चक्खें मुख को अच्छा करें बोला कि बैठो साहब किस २ परिश्रम से वृक्षपर चढ़के यह खुरमे लायाहूं अपने जीपर खेल आयाहूं सो आप न खाऊं इनको खिलादूं जो खाने का मन है तो हाथ और मुँह अपना है आप भी उस वृक्ष के तले जावें अपने हाथ से तोड़कर खावें अमीर ने जो वृक्ष के निकट जाकर चढ़ने को चाहा तब अमर

बोला कि स्वामी ऐसे कार्य के करने को सेवकहैं नाकि ऐसे मोटे मनुष्य का वृक्ष पर चढ़नेका काम है तुम्हारे समान मेरा शरीर होता तो वृक्ष को जड़ से उखाड़लेता अमीर को अमर के कहनेपर कुछ लज्जा आई और क्रोधित होके वृक्ष में एक धक्का मारा वृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़ा अमर ने कहा कि इस वृक्ष का उखेड़ना कुछ कठिन नहीं है मैं भी चाहता तो इस छोटे वृक्ष को गिरा देता अभी और आप को अपना पराक्रम दिखा देता यह वृक्ष कीड़ोंने खालिया था यह सुनकर अमीर को बड़ाभारी क्रोध हुआ तो एक और वृक्ष को जड़से उखाड़कर फेंक दिया अमर बोला कि यह भी वृक्ष घुनाथा हां किन्तु वह जो वृक्ष आपकी दृष्टि के सामने है वह पुष्ट है उसका उखाड़ना कठिन है अमीर को जो क्रोध आया तो उसको भी उखाड़डाला तब तो कहने लगा कि वाह साहब क्यों पराया बाग़ उजाड़े डालते हो अपने बल के समान किसी को नहीं समझते हो कुछ ईश्वर का भी डर है यह कहकर बाग़ के मालिक को समाचार पहुँचाया और माली को भी जना दिया कि इस समय ऐसे ज़ोर से आंधी आई थी कि तेरे बाग़के तीन वृक्ष जड़से उखड़गये पहले तो कुछ डालें टूटीं फिर एकही साथ एकझोंके में वृक्ष पृथ्वीपर गिरपड़े उसने कहा कि यहां तो इतनी भी वायु नहीं आई कि पत्तातक हिलता या एक फूलही या फल वृक्ष के नीचे हम को मिलता बाग़में ऐसी हवा कहां से आई कि वृक्षों को गिरागई अमरने कहा कि बाग़ में जाकर देखो सत्य असत्य अभी विदित हुआजाता है माली जब बाग़ में गया तो देखा कि सत्य है तीन वृक्ष उखड़े पड़े हैं जो सम्पूर्ण बाग़ में उत्तम थे देखकर रोने लगा कि मासिक उसका उसीपर था और उसीके फलोंसे अपना खाने पीने का सामान करता था अमीर को उसे देखकर दया आई धैर्य और ढाढ़सदिया और वृक्षोंके बदले तीन ऊंट दिये और शीघ्र अपने आदमी को भेजकर मँगवादिये माली अतिआनन्दित होगया मन से हज़ारों प्रकार के आशीर्वाद देनेलगा उसके मनोरथ के वृक्ष फिर से हरे हुए अमर ने उस मालीसे कहा कि तू लड़कों को फुसलाये लेता है भला तू जबतक मुझे न साझी करेगा तबतक मैं क्यों तुझको यह ऊंट लेनेदूंगा और बेचने दूंगा तेरे नाक में दम करूंगा उसने मारेडर के एक ऊंट अमर को दिया और दो ऊंट आप लेकर अपना मार्ग लिया॥

अमीर व अमर व मुक़बिल के बर पाने का इतिहास॥

अब बुद्धिमान् लोग इस वृत्तान्तका वर्णन यों करतेहैं कि एक दिन अमीर मुक़बिल व अमर समेत अपने बरोठे में बैठेहुए थे और जो मित्र स्नेही उनके थे सोभी वहां पर बैठे थे तो बहुत लोगों को एक ओर से जाते हुए देखा तो अमर से पूछा कि इनका समाचार तो लाओ कि ये कहां जाते हैं मुझको जल्दी आनकर पता दो अमरने उसकी आज्ञानुसार पूछकर वर्णनकिया कि कुछ सौदागर घोड़े लाये हैं उन के देखने को यह सब मनुष्य चलेजाते हैं और अच्छीतरह से बेधड़क देखआते हैं जो आपका भी चित्त हो तो चलके देखआइये अमीरने घोड़ों का नाम सुनकर उस

ओर जानेका मनोरथ किया और मित्रों समेत आनन्दसे मग्न हो टहलते हुए चले वहां जाकर देखा तो सचमुच बहुत अच्छे २ घोड़े हैं भांति २ के तुरकी, ताज़ी, अरबी, मुरादादी, हिन्दी केप आदि घोड़े प्रतिस्थान में बँधे हैं और वहां पर एक घोड़ा सांकरों से जकड़ाहुआ मुँह में छेंकादिया हुआ आंखों पर अँधेरियां पड़ीहुई पांवों में सांकरोंकी अगाड़ी पछाड़ी बँधीहुई एकशामियाने के तले बँधा है शेर की सदृश खड़ा है अमर ने उसके मालिक से जाकर मेल किया और पूंछा कि इस घोड़े को सांकरों से क्यों बांधा है ? इसने क्या अपराध किया है ? वह बोला यह घोड़ा बड़ादुष्ट है पांच दोष रखता है चढ़ना तो कैसा ? कोई इसके निकट भी नहीं जासक्ता है छोंकों में रखकर इसको दाना पानी दियाजाता है बड़ी कठिनता से दाना पानी खाता पीता है अमर बोला कि यह तो कहनेही की बात है कि कोई इसपर चढ़ नहीं सक्ता हौवा बना रक्खा है भला जो कोई इसपर चढ़े तो क्या हो और उसको क्या दोगे ? उसने कहा कि ऐसा तो मैं यहां किसी को नहीं देखता हूं इनलोगों में अच्छीतरह देख चुकाहूं जो कोई सवार हो और इसको दशपांच पैग फेरे तो यही घोड़ा बेदाम भेंट करूंगा अमर ने यह सुनकर अच्छी भांति से वचन ठीक करके हाथ मारलिया और कुछ सौदागरों को जो वहां उतरे थे इस बाज़ी लगाने का गवाहकिया और अमीर से आकर सब समाचार वर्णन किया और उस घोड़ेपर चढ़ने की रुचि दिलाई अमीर उस घोड़े के निकट गया और उसपर ज़ीन बँधवाई सांकर और अँधियारियां उसकी खुलवादीं और चौक में मँगाया जब चढ़ने का मनोरथ किया और अयालपर हाथ रक्खा घोड़ा छूतेही अपनी तीव्रता को दिखाने लगा तालियां बजानेलगा अमीर उसके निकट जाके एक फलांग मारके उसकी पीठपर जाबैठा वह टापैं मारने और कूदनेलगा अमीर ने एक घूंसा उसके शिरपर मारा घोड़ा बेचैन हो पसीने में डूबगया और बकरी की भांति कान करलिये मन समेत सब इन्द्रियां उसकी व्याकुल होगईं तब अमीर ने उसे प्रथम क़दम चलाया फिर पोई और सरपट दौड़ाया जब घोड़े को दौड़ते समय हवा लगी तो अतिबल करके दौड़ताहुआ चला अमीर ने यद्यपि बाग खींची परन्तु न थँभा पचास कोस तक बराबर दौड़ता चलागया अन्त को अमीर ने अपना लंगर देकर उसकी कमर तोड़ डाली और उसकी ढिठाई का स्वाद चखादिया घोड़ा तो गिरगया अमीर पैदल घरको फिरा कभी पैदल चलने का स्वभाव न था पांव में छाले पड़गये पैर उठाते हैं तो उठ नहीं सक्के निदान थक कर एक वृक्ष के तले बैठगये थोड़ी देर के पीछे क्या देखते हैं कि एक सवार भालर पहिनेहुए आताहै और एक घोड़ा चितकबला जड़ाऊ ज़ीनसे सजा कोतल साथ लाता है ॥

चौपाई । बाजि बड़ाई होत केहिभांती । जिसके साथ पवन नहिं जाती ॥
पुनि आकाश न आवत ऐसे । चलत वेग है यह हय जैसे ॥

जब वह सवार अमीर के निकट आया और रीत्यनुसार प्रणाम किया और

कहा कि हे हमज़ा ! यह घोड़ा इसहाक़नबी अलेहुस्सलाम की सवारी का है और इसका नाम सियाह क़ैतास है इसमें अनेक गुण हैं ईश्वर की आज्ञा से तेरे चढ़ने के निमित्त लायाहूं और ईश्वर की आज्ञानुसार तुझको मैं भेंट करताहूं कोई बलवान् तुझको वश न करसकेगा तेरा प्रताप सदैव प्रकाशित रहेगा और सब तेरे आधीन रहेंगे और सबके सब तेरी सेवा करेंगे यह जो पत्थर सामने ढेरसा लगा है इसको हटाकर पृथ्वी को खोद इसमें से एक सन्दूक़ नबियों के अस्त्रों का निकलेगा उसमें नाना प्रकार के अच्छे २ शस्त्र देखपड़ेंगे उसको अपने शरीर में बांधना समयपर उसके गुण देखना अमीर ने शीघ्र उस पत्थर को हटाया और बल इतना पाया कि जिसका भरोसा न था पृथ्वी के खोदने में बड़ाबल किया उसमें हज़रतहौदका बख़्तर दाऊदका दस्ताना यूसुफ़का मोज़ा सालेह के कमरबन्द और कटार रुस्तम की तलवार आदि उसमें से सबके शस्त्र निकालकर देखाभाला और उन हथियारों और बस्त्रों को पहिनकर ईश्वर का नाम लेके सियाह क़ैतास घोड़ेपर चढ़ा ॥

दोहा। आया तुरग पुनीत अब, तले जांघ सुकुमार। विदित भई अंगुश्तरी, नख शोभा सुखसार ॥

और झालर पहिनेहुए वह पुरुष दृष्टिसे जातारहा और लवमात्र की देरी में वह छिपगया लिखते हैं कि वह झालरवाले घूँघुट काढ़े हज़रत जब्रील थे जो उस समय में अमीर के सहायक थे फिर ईश्वर जाने अमीर तो मक्के की ओर चले अपने घर की ओर से पैर न हटाया अब अमर का समाचार सुनिये कि दश कोसतक अमीर के पीछे २ गिरता पड़ता चला आया और साथ न छोड़ा दौड़ने से पांव न फेरा जब तलुये पांवों के बबूरों के कांटे से ममाखी के छाते होगये तो चल न सका और एक वृक्ष के तले असाध्य होकर गिरपड़ा तब ईश्वर की रचना से जब्रील उसके निकट पहुँचे और उसको भरोसा दिया और पृथ्वी से उठाकर अपनी दया करके कहा कि ए अमर ! उठ मैं परमेश्वर की आज्ञा से तुझको बर देताहूं कि तुम से चलने में कोई आगे न जासकेगा यह कहकर अन्तर्धान होगये अमर ने उनके कहने की परीक्षा ली देखा तो सचमुच पवन से अधिक गवन करता है तब ईश्वर का धन्यबाद करके अमीर के ढूंढ़नेको चला और उसी ओर जिधर अमीर को छोड़ा था बढ़ा थोड़ी दूर गया था कि सामने से अमीर देख पड़े दोनों ओर से प्रेम समेत कुशलप्रश्न हुई और मार्ग की कठिनता को बखानके पीछे अमर हथियार और घोड़ा देखकर आश्चर्य करके अमीर से कहनेलगा कि वह घोड़ा सौदागर का क्या किया ? और सच बताओ कि किसको मारकर यह घोड़ा और शस्त्र आदि छीन लिया अमीर ने कहा कि पराई जान मारना तेरा काम है यह क्या ख़राब बात कहता है मैंने ईश्वर की आज्ञा से हज़रत जब्रील का बर दियाहुआ पाया है और यह शस्त्र और बस्त्र नबियों के पहिनेहूं और यह घोड़ा स्याहक़ैतास नाम असहाक़ की सवारी का है और नबियों के सम्पूर्ण शस्त्र ईश्वर ने मुझको कृपा किये हैं अमर बोला यह तो मैं अब जानों कि जब आपका घोड़ा मुझ से आगे निकलजावे और

मेरा पांव घोड़े से पछरजावे अमीर ने अपने चित्त में विचारा कि यह क्या बकता इसको क्या होगया है मनुष्य कहीं घोड़े के साथ दौड़सक्ता है और घोड़े से आगे निकलजाय क्या ठीक है ? कहा कि अच्छा आइये अमर ने कहा कि कुछ बाज़ी लगालीजिये और मेरा मन सन्तुष्ट करदीजिये अमीर ने कहा कि जो तेरी इच्छा हो वह हमसे बाज़ी लगाले अमर ने कहा कि जो मैं इस अश्व के आगे निकल जाऊं तो दश ऊँट आपसे लूं और जो घोड़ा मुझसे आगे निकलजावे तो मेरा पिता एक वर्षतक बेदाम तेरे बाप के ऊँटों का चरवाहा हो अमीर ने उसे अङ्गीकार किया और घोड़े की लगाम पकड़ी अमर भी साथ हुआ दश कोसतक गये अमर और घोड़े के पैर बराबर उठते थे दोनों वायु से शीघ्र चलेजाते थे अमीर अमर की दौड़ देखकर अतिआश्चर्य करनेलगा और उसकी तीव्र चाल से सन्देह किया अमर ने विनय की कि ऐ अमीर ! मैं भी हज़रत खिज़र से बर पायेहुएहूं अब कुछ ख़्वाजे अब्दुल्मतलब का वृत्तान्त सुनिये कि जब सौदागर का घोड़ा अमीर को लेकर भागा और अमर उसके पीछे व्याकुल होकर चला यह सब समाचार ख़्वाजे को पहुँचा वह सुनतेही अचेत होगया और अच्छे २ मक्के के मनुष्यों को साथ लेकर नगर से बाहर निकला कि सामने से अमीर अस्त्र पहिने सजे सजाये स्याह क़ैतास घोड़े पर चढ़ा प्रताप के समूह सहित और अमर उसका शिकारबन्द पकड़े चले आते हैं यह देखकर ख़्वाजे का शोक और सन्देह दूर हुआ और शरीर प्रफुल्लित होगया और ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा अमीर ख़्वाजे को देखकर घोड़े से उतर पड़ा और दण्डवत् करके चरणों पर मस्तक रक्खा ख़्वाजे ने अमीर को छाती से लगाया आंखों में आंसू भरलाया और प्रसन्न होकर अमीर को साथ लेकर घर आया और बहुत कुछ अमीर पर उतारके पुण्य दान किया और घोड़ा और शस्त्रों का समाचार पूछा अमीरने सब ब्योरा वर्णन किया ख़्वाजे सुनकर अतिआनन्दित हुए और ईश्वर का भजन करनेलगे अब मुक़बिल वफ़ादार का वृत्तान्त सुनिये कि उस सुकृती मनुष्य का क्या हाल हुआ कि वह दोनों बरदानी होगये उस समय यह अपने मन में सोचा कि तेरा समय इन दोनों बरदानियों में न कटेगा क्योंकि इन दोनों का चित्त बढ़ा हुआ है तेरा इनमें कब पार होगा इससे चलकर नौशेरवां की सेवा अङ्गीकार करें शायद ईश्वरकी कृपा से वहां किसी अधिकार पर नियत कियाजाऊं मेरी भी भाग्य उदय हो और वहां प्रत्येक की प्रतिष्ठा बराबर होती है यह चित्त में विचारकर मक्के से चला चार पांचही कोस गयाहोगा कि मार्ग में थककर एक वृक्ष के तले बैठरहा और चित्तमें सोचा कि इस जीने से मरना भला है न तो कुछ ख़र्च है न सवारी यह सोचकर उस वृक्ष पर चढ़गया और कमरबन्द का एक सिरा वृक्ष की डाली में बांधा और एक सिरा अपनी गर्दन में फांसी लगाकर डाला और लटककर हाथ पांव मारने लगा शरीर से जीव निकलने पर था कि इतने में शाह ख़िज़र शिकम दूसरे पंजतनने पहुँचकर हांक दी

तब मुक़बिल पृथ्वीपर गिरपड़ा हज़रत ने उसको उठा लिया और पांच तीर और एक कमठा देकर कहा कि हमने तुझे बाणावरी की विद्या दी और इसमें तेरे समान दूसरा कोई न होगा तब मुक़बिल ने विनंती की कि भला महाराज ! मुझसे जो कोई पूछेगा कि तू किसका बरदानी है तब उससे मैं क्या कहूंगा हज़रत ने कहा कि कहियो अब्दुल्लाउल्यातिब से वर पाया है मुक़बिल पांचों तीर और धनुष् लेकर अतिप्रसन्नता से मक्के की ओर चला अब यहां का हाल सुनिये कि जब अमीर व अमर ने मुक़बिल को न देखा तो घबराकर अमर मुक़बिल की तलाश को चला जैसेही नगर के बाहर गया तैसेही मुक़बिल देखपड़ा तो अति प्रसन्न होकर लिपट गया और हाथ में हाथ मिलाके अमीर के पास लेगया मुक़बिल ने अमीर के समीप जाकर तीर और धनुष् आदि दिखलाये और वरदान होनें का समाचार सुनाया यह सुनकर अमीर बहुत प्रसन्न हुआ और सब मिलकर आनन्द समेत रहने लगे ॥

कर लेना अमीर का और मुसल्मान करना यमन के बादशाह का ॥

अब लिखनेवाला यों बर्णन करता है कि जब सातवां बर्ष अमीर को लगा तो अमीर मुक़बिल और अमर समेत बाज़ार की ओर सैर करने के लिये गये तो देखा कि यमन महाराजा के सेनापति तहसील करने के लिये आगये हैं दूकान-दारों से कर लेते हैं जिसके पास कुछ देने को न था वह वादा करता है परन्तु वे लोग नहीं मानते मारपीट करते हैं अमीर ने अमर से कहा कि देखो यह गुल कहां होता है अमर ने कहा कि यमन के नौकर कर लेते हैं और मारपीट करते हैं अमीर को दया आई तो अमर से कहा कि इनको मना करदो कि तङ्ग न करें अमर वहां गया पर इसकी वहां कौन सुनता है फिर अमीर आप वहां गये और अमर से कहा कि दूकानदारों को मना करदो कि कोई किसी को कुछ न देवें और जो कुछ सिपाहियों ने तहसील किया है सो भी छीनलेवें यह आज्ञा पातेही मुक़-बिल और अमर उनको रोकने लगे उन्होंने लड़के समझकर कुछ न माना तब अमीर ने चार पांच सिपाहियों पर आप क्रोध करके किसीका हाथ तोड़ा और किसी का पांव और किसीका शिर फोड़ा तब वे लोग भागकर सुहेलयमनी के डेरे में गये और सब समाचार बर्णन किया कि एक लड़का हमज़ानामी ने पहले तो खज़ाना तहसीलने से रोका जब न माना तब दो लड़कों समेत हमको मार-कर भगा दिया और जो कुछ खज़ाना तहसील किया था वह सब हमारा छीन लिया यह कहरहे थे कि अमीर सियाहक़ैतास पर चढ़े दूर से दृष्टि पड़े और मुक़-बिल व अमर दायें बायें शिकारबन्द पकड़े हुए बराबर चले आते हैं जब निकट आये तब सुहेलयमनी डेरे में से निकल आया और अमीर की ओर देखकर कहने लगा कि ऐ लड़के ! तेरा घोड़ा और हथियार मुझे अच्छे मालूम हुए जाके शीघ्र आगे धर मैं तेरा अपराध क्षमा करूंगा नहीं तो अपने किये का फल पावेगा यह सुनकर अमीर बहुत खिलखिलाकर हँसा और कहने लगा कि जो तेरा जी

प्यारा हो तो पहले मुझे झुककर सलाम कर फिर पीछे बातें करना और मेरी सेवा अङ्गीकार कर नहीं तो पछितावेगा सुहेल ने कहा कि इस लड़के को क्या होगया है कि छोटे मुँह से बड़ी बात कहता है इसको घोड़े पर से उतारलो और सब हथियार छीनलो साथियों ने उसकी आज्ञानुसार अमीर को चारों ओर से घेर लिया और अमीर के मारने का मनोरथ किया अमीर ने किसीको तीरों से किसीको तलवार से किसीको घोड़े की टापों से रौंदवाकर मारडाला और मुक़्-बिल भी तीर मारनेलगा और जो दो तीन मनुष्य आगे पीछे हुए एकही तीर से पृथ्वी में सोरहे सुहेलने देखा कि कई हज़ार सेना मारीगई तब आप अमीरहमज़ा के सामने आया अमीर ने उसका कमरबन्द पकड़करके शिर से ऊंचा किया और घोड़ेपर से उठालिया इच्छा की कि मारे कि उसने रक्षा मांगी दीनता से जीव बचाया अमीर ने धीरे से पृथ्वी पर छोड़दिया सुहेलयमनी उसी समय सहस्र बीरों समेत मुसल्मान हुआ अमीर ने उसे छाती से लगाया और अपने बराबर बैठालिया और उसके ऊपर कृपा की सब योद्धा और सुहेलयमनी और अमर व मुक़्बिल सब अमीर के अधीन हुए और सेवकाई अङ्गीकार की और अमीर को सबों ने भेंट दी और सबों ने उसके सम्मुख नम्रता की अमीर ने मुसकराकर उन को अधिकार के अनुसार ख़िलअतें दीं और नगर में पहुँचकर पहले काबे के दर्शन किये फिर अब्दुल्मतलब के निकट आकर सुहेलयमनी का हाल वर्णन किया ख़्वाजे ने कहा यद्यपि मुझे इस बात के सुनने से अतिआनन्द हुआ कि ईश्वर ने मुझे ऐसा दिन तो दिखलाया पर नगर के लोग इस बात से डाह करेंगे और शाहयमन के इस समय चालीस हज़ार सवार और लाखों पियादे हैं और कई बादशाह उसके अधीन हैं ऐसा न हो कि तुम पर सेना साजके चढ़ आवे जिससे सब मक्के के लोग घबराजावें अमीर ने कहा कि आपका आशीर्वाद और ईश्वर की कृपा चाहिये वह इधर न आने पावेगा मैं खुद वहां जाकर उसे पराजित करूंगा अन्तको दो दिवस के पीछे अमीर मुक़्बिल और अमर हज़ार सवारों समेत यमन की ओर चला जब सबलोग भेजने के हेतु नगर के बाहर तक आये बिदा के समय किसी ने आशीर्वाद पढ़ा और किसीने यन्त्र बांधा ख़्वाजे ने भी गले लगाकर ईश्वर को सौंपदिया और कुछ उपदेश की बातें कहीं निदान अमीर अपने मनोरथ के मार्ग में पांव रक्खा दूसरी मंज़िल के मार्ग के बीच में सेना से अलग होकर अमीर अमर से बातें करते हुए चले जाते थे इतने काल में एक मनुष्य दश बारह वर्ष की अवस्था का यती कासा भेष बनाये हुए शोकग्रस्त बैठा है अमीर को उसके ऊपर दया आई और उसकी ओर घोड़ा बढ़ाया कि ऐसा जवान फ़क़ीर होजावे अमीर सलाम करके हाल पूछनेलगा उसने कुछ उत्तर न दिया तब अधिक सताया अमीर के आगे उसका कुछही न चला चित्त में विचारा कि बिना भेद कहे यह कभी न मानेगा और दिल का हाल इससे अवश्य कहना होगा॥

दोहा। देखा भाली क्यों करै, उस सवार की ओर। जाती रही शरीर से, धीरजह्न की डोर॥

अमीर के पूछने के आगे कुछ न चला तो एक हाय मारकर यह कहने लगा कि ऐ भाई! मुझे वह दुःख है जिसकी संसार में दवा नहीं है॥

सोरठा। जौन शूल है मोहिं, सुखबिहीन देखत जगत। नहिं अराम से होहिं, ईशा जो औषध करै॥

चौपाई। नेह मध्य कोइ होय न ईशा। श्वास जाय जावे तन खीशा॥
चिनग मोहनी रूप न व्यापै। खोट दाम यूसुफहि न लापै॥
नयन ज्योति नहिं रहै शरीरा। कभे धर्म सब चले अधीरा॥
नेह बताशा जग कर लयऊ। नष्ट होय पुनि पुनि मिटिगयऊ॥
सरवर मध्य कुन्द यक जाई। धेगवन्त तेहि खेह उड़ाई॥
नभ फटि परै होय अस सङ्का। गिरि पर परै चूर है अङ्गा॥
सदा शोक वश याते रहई। मीठा मथन करू पुनि सहई॥
तनकर भस्न बिरह कर छारा। जिमि पारा पावक बिच डारा॥
सुधा सींच पै जियै मरै ना। वारि जरै पुनि तेज हरै ना॥
ईश हाय जनि नेह बिकारा। दारुणदुखित पहुंचि जग जारा॥
रहै शोक बश सदा शरीरा। जो जग लीन्ह नेह कर बीरा॥
बहुधा स्वाज मध्य मिटि गयऊ। बहुतन खीश शीश जग लयऊ॥
अस कठोर जग और न दूजा। करै नाश नव लेवै पूजा॥
परे फरहाद कठिन यहिमाहीं। भयो नष्ट कछु बरणि न जाही॥
लुटे समूह लाख संसारा। भये बहुत जरिकै पनि छारा॥
नेह मेह आपर बरषाहीं। नयनन नदी बहै जगमाहीं॥
लाजहीन अतिदीन मलीना। शोक मध्य बूड़त है दीना॥
तनमन सुमन सरिस हो न्यारा। व्यापै अङ्ग मध्य अम धारा॥
बूड़ेउ ताहि खोज नहिं मिलेऊ। मोती सीप मध्य जनु पिलेऊ॥
सरिस पतङ्ग अङ्ग तपि गयऊ। क्षमा शरीर सकल गलि गयऊ॥
चालढाल जौने दीखै जग। नष्ट त्यागि पुनि गहै सुमतिनग॥
नागररूप चोप जनि करई। जेहि बस ज्ञान मान सब टरई॥
स्वप्न बीच अस चहै न कोई। बाकी चाल ढाल चहुँ होई॥
बिपति परै जो चित अस चहई। लाजहीन सुख नहिं जग लहई॥
भौंह देखि पुनि जग दुख होई। करै अमान होय अस कोई॥
नेह न करै मान मम बाता। डूबि जाय बरु नाशै गाता॥

अमीर ने कहा कि मृत्यु को छोड़ और तो ऐसा नहीं है कि जिसकी औषध न हो उसने अमीर की कृपा देखकर वर्णन किया॥

दोहा। मनमलीन तनक्षीन है, दुख कछु कहा न जाय। सनन लाजसमदाग है श्रम क्रम भ्रम अकुलाय॥

पश्चिमदेश में अति सुशोभित मेरे पितामह का स्थान है मैं इस जंगल के बीच सङ्कट में पड़ाहूं और सुल्तानबख़्त मेरा नाम है पश्चिम के महाराज का पुत्र यमन के महाराज़ की पुत्री से स्नेह लगाया है उसके स्नेह ने मुझे इस भेष में पहुँचाया है और मान प्रतिष्ठा का बिचार छुड़ाया है कुटुम्ब और मित्रों से अलग कराया है॥

दोहा। प्रीतिबाण जाके लगे, थिर न रहै यक ठौर। भ्रमत रहत संसार में, क्षण प्रति औरहि और॥

और उसकी बाज़ी पूरी मुझसे नहीं होसकी है इससे मैं बनमें निकल आया

और फ़क़ीरी अङ्गीकार की है अमीर ने कहा कि यह बात कुछ कठिन नहीं है वह कौनसी बात है कि जो उपाय करने से न होसके परन्तु मनुष्य को उचित है कि कभी किसी वस्तु या काम के करनेमें अधैर्य न हो और सदा चित्त को प्रसन्न रक्खे॥

दोहा। मानुष को यह चाहिये, धैर्यरज नहिं होय। कठिन नहीं कोइ वस्तु है, सहज न होवे सोय॥

ईश्वर की कृपा से धैर्यको ग्रहण कर और शोक सन्देह अधैर्य को परित्यागकर आप यहाँ से चलें मुझपर दया करें इस भेष को त्याग करके मेरे पास रहिये ईश्वर चाहेगा तो मैं शीघ्र इस कार्य को करूंगा आशारूपी मोती से शीघ्र दामन भरूंगा अमीर ने उस दिन उसी स्थान में डेरा किया और सुल्तानबख़्त मग़रबी को मुसल्मान किया और सेवकों को आज्ञा दी कि राजपुत्र के फ़क़ीरी वस्त्र उतारकर स्नान करने के पीछे अच्छी भांति से उत्तम २ वस्त्र पहिनाओ और तम्बू व अस्तबल अर्थात् घोड़सार आदि जो उचित जाना उसके निमित्त एकान्त बतलाया और सदैव उसके आदर के हेतु कृपादृष्टि रक्खी शाहज़ादा अमीर की दया से उन्हींके निकट आनन्द से रहनेलगा फिर कई मंज़िल के पीछे मार्ग के बीच में एक युवा अवस्था के मनुष्य को देखा कि शेर की खाल की टोपी और अङ्गा धारण किये बैठा है और एक बाघ उसके निकट बँधा है उसके निकट जाकर उससे पूछा कि ऐ जवान! तू कौन है? और नाम व निशान तेरा क्या है? और इस बाघको तूने क्यों बांधा है? वह बोला कि मैं ठग लुटेरा हूं इस कार्य में बड़ा प्रवीण हूं मेरा नाम तौक़बिनहैरा है यही मैदान मेरा घर है जो कोई इधर से निकलता है इस सिंहको उस पर छोड़ देता हूं जब यह उसे मारडालता है तब उसके पास की वस्तु सब लेलेता हूं और उसका मांस इसे खिलाता हूं और कपड़ा आदि बेंचकर मैं खाता हूं अमीर ने कहा बे अपराधियों के मारने से हाथ उठा नहीं तो अन्त में अतिकष्ट पाकर नरक में बास करेगा और एक दिन इसका फल पावेगा उसने कहा कि ऐ मनुष्य! मुझको तेरे रूपपर दया आती है ऐसी बातें क्यों कररहा है अपनी जान नहीं बचाता है और जो तुझे जान प्यारी होवे तो इसी में भलाई है कि अपना घोड़ा और हथियार मुझे दे नहीं तो अच्छा न होगा इसे देकर सीधा अपना मार्ग ले अमीर ने कहा कि यह क्या निर्बुद्धिता की बात कही क्या तेरी मृत्यु तो नहीं आई है? अपने सिंह को छोड़कर ईश्वर की रचना देखले उसने सुनतेही बाघ की डोरी पट्टी से खोलदी और अमीर की ओर सैन दी बाघ अमीर के सम्मुख हुआ और एक झपट अमीर के ऊपर की अमीर ने भाला से उठाकर उसी मनुष्य पर फेंकदिया उसने अमीर का बल देख अतिआश्चर्य किया और तलवार लेकर अमीर पर धावा किया अमीर ने भाला की डांड़ी से उसे गिरा दिया और घोड़े पर से उतरके उसकी गर्दन पकड़के उठालिया चाहते थे कि उसे गर्दन मिरोड़के देमारें इतने में उसने जीवदान मांगा अमीर ने उसे छोड़दिया उसने ठगी से शपथ किया अमीर ने उसे मुसल्मान किया और अपनी सेना का भाण्डारदार किया और अपनी कृपादृष्टि से

उसपर अतिदया की चलते २ जब यमन की राजधानी पांच कोस रहगई अमीर ने एक सुन्दर मनोहर स्थान देखकर आज्ञा की कि आज यहां वास करो कुछ दिन आराम करके सेना का प्रबन्ध हो उसकी आज्ञानुसार ऊँटों परसे तम्बू उतरने और प्रतिस्थान पर गड़नेलगे अब यमन के बादशाह का समाचार सुनिये कि जो सुहेल नाम यमनी के सेना के लोग भागकर यमन को गये थे उन्हों ने अमीर की लड़ाई और सुहेलयमनी के मुसल्मान होनेका समाचार बादशाह को सुनाया उसी समय शाहयमन ने नैमायनामी अपने पुत्र और दश सहस्र सवार क़िले में छोड़कर आप तीस सहस्र सवार से मक्के की ओर चला परन्तु वह और मार्ग से गया और अमीर की सेना दूसरे मार्ग होकर आई अमीर ने प्रथम एक पत्र नैमाय के नाम लिखकर भेजा और यह भी सन्देशा उसीके हाथ कहला भेजा कि मैं हुमायताजदार के साथ ब्याह किया चाहता हूं उसकी बाजी को मुझे बता मैं वह सब पूरी करूंगा और हुमायताजदार को अपने साथ लेजाऊंगा नैमाय ने यह समाचार अपनी बहिन को सुनाया उसने कहा कि अच्छा यह कहकर मैदान के बनाने की आज्ञा की और कहा कि प्रात समय चौगानबाज़ी में तले करके उसका शिर क़िले के कँगूरे पर चढ़ाऊंगी उसके बल और सिपाहगरी का समाचार बतादूंगी सब मर्दानगी भुला-दूंगी इस फिरजाने का स्वाद चखादूंगी यह सुनकर नैमाय ने उत्तर में लिखा कि बहुत अच्छा हमको आपका कहना सब भांति से स्वीकार है कल चौगानबाज़ी होगी प्रत्येक मनुष्य की बाणावरी देखी जायगी जो आप मैदान के चौकसे जीत जावेंगे तो हुमायताजदार को पावेंगे नहीं तो आपका शिर काटकर क़िले के कँगूरे पर चढ़ाया जावेगा दोनों ओर समर होगा अमीर चौगानबाज़ी सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और बड़े २ योधाओं का चित्त बढ़ानेलगा और राग नाच का सामान करानेलगा और आज्ञा दी कि सब सेना में तबला नगारा व राग रङ्ग होकर रात को जागरण करके व्यतीतकरें और ईश्वर के चरणों में ध्यानधरें जब सूर्य पूर्व स्थान में प्रकाशित हुआ और तम नष्ट होकर सूर्यका तेज झलका उस समय नैमाय सेना लेकर चौगान में निकला और इधरभी बलवान् अस्त्र साज कमर बांध सावधान हुए अमीर भी अस्त्र, खड्ग, भाला, धनुष्, बाण और चक्र आदि धारण करके सियाहक़ैतास पर सवार हुआ और हैरां के बेटे सम्हारातौक़ने भी झण्डा अमीरहमज़ा पर लगाया सुल्तानबख़्त मग़रबी भी दहिनी ओर अमीर के सजधज बनाके आया और बायें और सुहेलयमनी भी हथियार बांधके आया और अमर व मुक़बिल घोड़े के आगे धनुष्बाण धारणकर तलवार आदि बांध के घोड़े पर चढ़के नचाते खुँदाते चलेजाते सेना के लोगों का चित्त बढ़ाते आगे लहलहाते आनन्द में समाते सुख पाते बल खाते हुए बढ़े जातेथे और मुक़बिल वफ़ादार को उस दिन अमीर ने सेना के आगे किया और वही हज़ार सवारों का रिसाला जो सुहेलयमनी केसाथ मुसल्मान हुआ था मुक़बिल के साथ करदिया अमर ने इस उपायसे सेना का प्रबन्ध किया कि बराबर पंक्ति २

खड़ाकिया जिसे दूसरी ओर के लोग देखकर आश्चर्य करते पांच छः सहस्र सिपाही का अमीर की सेनापर औरों का गुमान हुआ दोनों ओर से जब पंक्ति बनचुकीं लड़ाई करने की जब बारी आई अमीर हुमायताजदार की इच्छा में नैमाय मंजर शाहके पुत्र के आगे खड़े थे और शेरबबर की भांति पुकारते हुए ईश्वर से बर मांगरहे थे कि एक जवान घूंघुट हरे वस्त्र को धारण कियेहुए शिर से पांव तक घोड़े समेत जड़ाऊ सजेहुए ढाल, तलवार, कटार, कमान, शरासन, भाला आदि अस्त्र कांधे पै सँभाले गेंद हाथ में लिये घोड़े को चलाते हुए चलते २ मैदान में आया और अमीर की ओर देखकर हांक दी कि हुमाय्यताजदार के चाहने वाला कौन है मेरे सामने आवे यही गेंद है यही मैदान है अपनी सीखी हुई विद्या दिखलावे अमीर हांक सुनतेही घोड़े को बिजली की भांति चमकाकर मैदान में आये कावा ईड़पर लगाये कभी उड़ाते कभी जमाते उस अच्छे चालाक घोड़े को लड़ाई में लाये और कहा कि बलवान् सावधान हो यही स्थान यही चौगान यही गेंद है उसकी चालाकी देखिये कि गेंद को मैदान में लाकर डालदिया और उस प्रवीण स्त्री ने घोड़े को जांघ से गुदगुदाकर गेंद को चौगान से लिया चाहती थी कि गेंद को लेजावे और अपनी चालाकी और तीव्रता दिखावे कि अमीर ने अमर के हाथ से चौगान लेकर घोड़े को आगे ठहराया और उसे बिल्ली के समान आसन से दबाया और चौगान को सँभालकर गेंदपर मारा और ईश्वरकृत बल की शोभा दिखलाई उस स्त्रीने देखा कि हाथ से बाज़ी जाती है और सब भाँति का गुण मिट्टी में मिलाजाता है तो झट पट घूँघुट उलटकर मुख का प्रकाश विदित किया उसका मुँह हमज़ाने आंखों से देखा और सब चौगान में प्रकाश छागया ॥

चौपाई। घूंघुट उलटदीन जेहिकाला। सूर्योदय जनु परम विशाला ॥
हमज़ा दृष्टि कीन जब वाहीं। अति आश्चर्य कीन्ह मनमाहीं ॥

अमीर उसे देख चित्रलिखे से होगये और ईश्वर की रचना देखकर अतिआश्चर्यवान् हुए कि हुमायताजदार ने फ़ुरसत पाकर घोड़े को झिझकारा बल्कि अपनी जान में गेंद लेजाने में कमी न की थी परन्तु अमीर ने चित्त को सँभालकर ईश्वर का ध्यान धर अपना मन सावधान किया और घोड़े को दौड़ाकर कहा कि हम तेरा छल समझगये यों हीं तू गेंदों को मैदान से लेजाती है और लोगों को जीतकर उनके शिर कँगूरों पर लटकाती है किसी से काम न पड़ा होगा देख मैं मैदान से गेंद को लेचला ईश्वर की कृपासे मैदान मेरे हाथ रहा यह कहकर गेंद को मैदान से लेगये यद्यपि हुमायताजदार ने अपनी चतुरता प्रकट की तब भी अमीर से कब बाज़ी पासकी थी अमीर गेंद को लेजाकर उसकी ओर देखकर कहनेलगा कि ऐ हुमायताजदार! अब क्या कहती है कुछ और भी होसिला बाक़ी है उसने कहा कि एकबार और इसकी परीक्षा किया चाहिये फिर लड़ाई का सामान करके अपना २ गुण दिखाया चाहिये अमीर उसके कहने के अनुसार गेंद को चौगान से फेंकदिया

और तेज़ी करके फिर भी बाज़ी जीतली हुमायताजदार ने कहा कि बाज़ी हाथ से गई सहस्त्रों में प्रतिष्ठा भङ्ग होगई चाहा कि घोड़े को एँड़ी लगाकर अपने भाई नैमायतक पहुँचें और मैदान छोड़कर अपनी सेना में जामिलें अमीर ने घोड़े को चलाकर हुमायताजदार का कमरबन्द पकड़के घोड़े से अलग किया और अमर की ओर गेंदसा फेंकदिया अमर ने कमरु से हाथ बांधकर अपनी सेना की ओर मुँह किया हुमाय ने अपनी सेना से कहा कि यारो! इसने ग़ज़ब किया अतिशीघ्र मैदान मारलिया किसीभांति यह जाने न पावे जिसमें इज़्ज़त रहजावे हुमायँताजदार को लिये सबको बेइज़्ज़त किये जाता है उस समय दशसहस्त्र सवार अस्त्र पहिनेंहुए खड़े थे सब के सब एकचित्त होकर अपना २ वार करना शुरू किया अमीर की सेना भी जिधर बढ़ी पंक्ति की पंक्ति साफ़ करदिया नैमाय की सेना काई की भांति सब फटगई समर का स्थान लाशों से पटगया॥

दोहा। आये थे सब गर्व करि, बोल बोलि अधिकाय। डालदिये हथियार सब, खोलि २ अकुलाय॥

ग़ाज़ी ने सब के हृदय में सँभारके बाण लगाये अच्छी भांति जिस सरदार के शिर पर तौल के तलवार लगाई वह ज़ीन तक उतर आई जिसके हुमायल का हाथ मारा शिर और गर्दन आधी छाती से अलग हुआ जिसकी कमर पर हाथ पड़ा साफ़ दो टुकड़े होगये उस समय यमन के महाराज के पुत्र नैमाय ने आनकर चाहा कि एक तलवार अमीर के शिरपर लगावें और दुष्टता का बल दिखावें कि अमीर ने उसके वार को ढालपर रोककर और उसके कमरबन्द में हाथ डालके ज़ीन से साफ़ उठालिया और बृद्धा चिड़िया की भाँति अमीरहमज़ा ने शाहज़ादे नैमायको दाब कर अमर के हवाले किया बाक़ी लोग जितने थे बहुधा अचेत होकर भागे और बहुत से तलवार के कौर होकर यमपुर में पहुँचे अमीर फ़ौज की लूट माफ़ कर, विजय प्राप्त करके अपनी सेना में पहुँचा जीतके बाजे बजाने लगे खुशी और आनन्द होने लगा जब रातको खुशी की सभा सजी गई अमीर ने नैमाय को बुलाया कहा कि कह अब क्या कहताहै चित्त में क्या इच्छा है उसने विनय की कि अगर कोई मेरे कुटुम्ब में होता तो उसकी क्या मजाल थी कि मेरी सेना का सामना करता और जान न खोता परन्तु ईश्वर जाने कि आप कैसे पराक्रमी मनुष्य हैं सब प्रकार से ईश्वरके बरदानिक हो क्या करूं? मुसल्मान होताहूं अमीर ने समझाकर अपनी छाती से लगाया और अपनी बराबर उसके निमित्त बिछौना बिछवाय और अतिशिष्टाचार किया फिर अमर मङ्गल गाने लगा जब सभा उठगई अमीर ने नैमाय और मलिका हुमायताजदार को कि उसने भी मुसल्मानी दीन अङ्गीकार किया था खिलअत उचित कृपा करके उनको रवाना किया और आप सोने के हेतु तम्बू में गया प्रातःकाल नैमाय ने अपनी सेना को बुलाके मुसल्मान होनेका न्योता किया सबोंने दीनता से शिर झुकादिया और सब मुसल्मान होतेगये जितने सेना में मुखिया थे सबके सब मुसल्मानी मत में आये और उनको लाकर अमीर की मुलाक़ात

करवाई और भेंट दिलाई अमीर ने प्रत्येक को पारितोषिक कृपा किया जब यह समाचार यमन के बादशाह मंज़रशाहको पहुँचे कि चौगानबाज़ीमें हमज़ा गेंदबाज़ी हुमायताजदार से लेगया और उसको प्रतिष्ठा के अनुसार बड़ाई की और नैमाय को लड़ाई में पकड़के सेना समेत मुसल्मान किया सुनतेही हृदय में अतिक्रोध आया और मक्केका मनोरथ छोड़के उलटा अपने देश को फिरा औ गद्दी में पहुँचतेही समर के हेतु दुन्दुभी बजवाई अमीर ने यह समाचार पाकर अपनी सेना में भी नगारा बजाने का हुक्म किया और सेना का प्रबन्ध करने लगे सूर्य की किरण फूटतेही दोनों ओर की सेना समरभूमि में युद्ध करनेलगी बलवान् शेर समान आसपास में घिर आये और बड़े २ भट योद्धा जान देने और लड़ने भिड़ने पर फेंट बांधी मंज़रशाह ने अपना घोड़ा मैदान में निकालकर हांक दी कि अमीर-हमज़ा सेनापति किसका नाम है और कहां है देखूं तो उसकी सूरत कैसी है ? किसभांति का मनुष्य है मेरे सम्मुख आकर अपना बल प्रताप दिखावे ॥

दोहा। जो कोई फ़ौलाद में, निज पञ्जा करदेइ। सो दुखिया यहि बांह सों, अति कलेश करिलेइ ॥

कभी किसी के साथ नहीं पड़ा किसी युद्ध करनेवाले से सामना नहीं हुआ अब अपनी जान देना चाहता है यह सुनतेही उसके सामने आया अमीर ने कहा कि यह क्या बक २ कररहाहै क्यों काल शिरपर चढ़ाहै ईश्वर चाहेगा तो एक बार में तेरा काम हुआ जाता है पलमात्र में तुझे मुसल्मान करताहूं प्रथम तू अपना गुण दिखा और चित्तकी हौस चित्तमें मत रख उसने भाला उठाया अमीरने घोड़े को दबाया औ उसके समीप गया और तेज़ी करके भाला उसका छीनलिया और डंडी तोड़कर पीछे फेंकदिया उसने खड्ग ईंची अमीर उसका वार बचागया और कमर में हाथ डालकर घोड़े पर से गिराकर तलवार छीनली और चाहते थे कि पृथ्वी पर पटकें कि उसने रक्षा मांगी अमीर ने धीरे से उसे ज़मीन पर छोड़दिया वहभी उसी समय मुसल्मान हुआ फिर उसको अपने तम्बू में लाकर अतिशिष्टाचार किया मंज़रशाह को और उसके स्नेहियों को जो सेनापति थे बड़े २ पारितोषिक दिये और उनके दर्जा बढ़ाये मंज़रशाह ने एकमासतक अमीर के शिष्टाचार से न्योता किया और सब प्रकार से ताबेदारी और अधीनता की और उसी दिन सामान ब्याह का अपने अधिकार के अनुसार करनेलगा और अमीर की आज्ञानुसार सुल्तानबख़्त मग़रबी के साथ हुमायताजदार का ब्याह करने को उद्यत हुआ सुल्तानबख़्त ने बिनय की कि हुमायताजदार मेरी स्त्री होचुकी किन्तु ईश्वर चाहेगा तो गाठिबन्धन उस दिन करूंगा जिस दिन आपका ब्याह होगा तबतक हुमायताजदार घर में रहे बाप के यहां कुछ दिन सैर करे अमीर ने रीति के अनुसार उसका मनोरथ पूर्ण किया और मङ्गलाचार के पीछे अमीर ने मंज़रशाह से कहा कि अब मैं यहां से कूच करूंगा और अपने घर की ओर जाऊंगा कि मेरी माता सशोक व सन्देहमय होगी मंज़रशाह ने बिनय की कि मैं भी आपके साथ चलताहूं काबे के दर्शन

करूंगा और वहां ख़्वाजे साहब के भी दर्श पर्श चाहताहूं यह कह देश का प्रबन्ध अपने मन्त्री पर छोड़ा तीस सहस्र सवार नैमायसमेत लेकर अमीर के साथ चला॥

हुश्शाम अलकाशख़ैबरी के पुत्र का बड़ा होना और मदायन देश में कर लेना॥

जब हुश्शाम बारहबर्ष का हुआ और होश सम्हाला और अतितेज व प्रताप से घर से बाहर पैर निकाला बाज़ार में हल्लागुल सुनकर पूछा कि यह हल्ला कैसा होता है? लोगों ने कहा कि तहसीलदार नौशेरवां की ओर से कर तहसील करते हैं जो मनुष्य शीघ्र कर देने में ढील करताहै उसको अतिकष्ट देते हैं हुश्शाम को बुरा मालूम हुआ तो कुछ लोगों को पकड़ाके नाक व कान काटकर शहर से बाहर किया और हुक्म दिया कि कोई एक कौड़ी किसीको न देवे जो कर नियत हुआ है वह हमारी सर्कार में भेजाजावे और सेना के इकट्ठा करने में अतिपरिश्रम करने लगा यहांतक कि थोड़ेही काल में एक बड़ीभारी सेना जमाकरली और मदायन की ओर कूच किया जब इतिहासलेखकों ने यह समाचार लिखा और बादशाह के कान तक पहुँचा कि हुश्शाम अति बल व प्रताप के साथ गर्व करके और बड़ी सेना साथ लेकर मदायन का मार्ग लियाहै हुश्शाम अलकश का पुत्र ख़ैबरी बलवान् हुआ बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर से सलाह चाही बुज़ुरुचमेहर ने सलाह दी जो हुज़ूर आप ही उसके साथ सामना करेंगे तो मेरे निकट यह बात अनुचित है क्योंकि जो इसपर बिजयभी हुई तो कुछ नाम न होगा और जो कदापि औरही सूरत हुई तो अच्छा न होगा बैरियों को बात करने का स्थान होजायगा कि सप्तद्वीप के बादशाह को एक छोटे मनुष्यने जीतलिया फिर प्रत्येक को आपसे सामना करनेका हौसिला होजायगा इससे मेरे निकट यही शुभ है कि उसके आनेके पहलेही हुज़ूर शिकार खेलनेको जावें और मदायन में किसी सेनापति को मुक़र्रर करदें जिस समय वह दुष्ट आवे उसको पराजय करे जिससे छोटे बड़े का हौसिला टूट जावे और अधीनता के सिवाय शिर न उठावे बादशाह को बुज़ुरुचमेहर की यह सलाह पसन्द हुई और उसके शुभ बिचार पर अतिप्रशंसा की आप आखेट की ओर गया और शिकार खेलना अङ्गीकार किया और अन्तरफ़ीलगोश जो मल्ल प्रसिद्ध था पचास हज़ार सवार से मदायन की रक्षा और हुश्शाम को दण्ड देने के हेतु मुक़र्रर किया आठ दश दिवस व्यतीत हुए थे कि हुश्शामख़ैबरी ने चालीस सहस्र सवार से आकर गढ़ी को घेरलिया और प्रजा को सतानेलगा अन्तरफ़ीलगोश ने भी गोली तीर तोप आदि से किसीको खांवातक न आने दिया एक दिवस अन्तरफ़ीलगोश ने यह चित्त में बिचारा कि हुश्शाम बहुत दिवस से नगर घेरे पड़ा है और मैं गढ़ी में बन्दहूं हुश्शाम ऐसा कहां का बीर है कि जिससे मैं दबूं नगर के बाहर निकल कर सामना करूं और पलमात्र में मारके पराजित करूं और संसार में नेक नाम और वीर कहलाऊंगा और बादशाह से जागीर और उहदा पाऊंगा॥

दोहा। रुस्तम नहिं संसार में, रहा न पुनि बहराम। एक रहेउ आकाशतर, बीरनको जग नाम॥

यह समझके पांच सहस्र मनुष्य सवार लेकर नगर से बाहर निकला हुश्शाम उसे देखकर ठट्ठा मारकर हँसा और बोला कि इसके शिरपर मृत्यु सवार है कि जो यह मेरे सम्मुख आया है गैंड़े को उसके सामने लाकर कहनेलगा कि क्या मनोरथ है क्यों अपनी और अपनी सेना का जी खोने के हेतु आया है वह बोला कि अरे खल! सदैव का पीढ़ी दरपीढ़ी का तू सेवक होकर तिसपर चढ़ आया है इस संसार असार में थोड़ीसी उमर पर दुष्टता अङ्गीकार की है तू यह नहीं जानता है कि सप्तद्वीप के बादशाह का एक छोटा टहलुआ तुझको दण्ड देसक्ता है और यह सब सामान क्षणमात्र में धूर में मिला देसक्ता है हुश्शाम ने कहा क्या विक्षिप्त हुआ है? इतना नहीं जानता है कि बादशाही के कामों में कौन किसका मालिक है? और कौन किसके अधीन होता है और प्रजा कहलाता है? जो मनुष्य तलवार मारे उसीके नाम से सिक्का चलता है मैं तलवार के बल से तेरे बादशाह से कर लूंगा और सब देश और कोषको बहुत शीघ्र अपने वशमें करलूंगा हुश्शाम का यह कहना था कि अन्तर ने तौलकर एक भाला उसकी छातीपर मारा भाले ने अपनी नोक पीठ से बाहर की हुश्शाम ने यद्यपि ऐसा घाव खाया परन्तु अन्तर को तलवार से दो टुकड़े किये और उसकी सेनापर जागिरा सेना बिना सेनापति की थी नगर की ओर भागी हुश्शाम सेनासमेत मदायन नगर में पहुँचा और सब नगर को नष्ट और बरबाद करदिया और सत्तर सहस्र मनुष्य मारे और नगर के नाकों पर अपने सिपाही नियत किये और बादशाहत का साज ताज और तख़्त समेत लेकर अपने डेरेपर लौट आया और रात आनन्द समेत व्यतीत की और सुबह को सरदार समेत ख़ैबर की ओर चला और कई दिन के पीछे एक दो राहें मिलीं कि जिसमें एक मार्ग काबे को जाता था और दूसरी ख़ैबर जाने की थी साथियों ने कहा यह लड़ाई दुनिया के नाम के लिये आप लड़ें और बिजय प्राप्त की एक लड़ाई पुण्य के हेतु भी चल कर ईश्वर के घर में कीजिये और मुसल्मानों के धर्मस्थान को मिटाइये हुश्शाम पर जो दुष्टता सवार हुई यह सलाह उनकी पसन्द आई और काबे की ओर चला यह वृत्तान्त मक्का में विदित हुआ कि हुश्शाम ख़ैबरी मदायन को जीत करके काबे के ख़राब करने के हेतु आता है और बहुतसी सेना साथ लिये है जिसने सुना वह बेत के समान कांपगया और डरके मारे अचेत होगया उसीदिन हमज़ा भी बिजय प्राप्त करके सेना समेत मक्के में पहुँचा और काबे का दर्शन करके अपने बाप को दण्डवत् की और चरणों पर गिरपड़ा ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने अमीर का शिर अपने चरणों परसे उठाया और अतिस्नेह से गले लगाया और साथियों का भी प्रतिष्ठा के अनुसार आदर किया शरबत के घड़े मँगवाये और ईश्वर का धन्यवाद किया और धाड़ मारकर रोनेलगा अमीर ने विनय की कि आज का दिन ख़ुशी का है ऐसे समयमें दुःख व शोक का क्या कारणहै? मैं अच्छी भांति से युद्ध जीत करके आयाहूं लोगों को जिसका भरोसा भी न था ईश्वर ने मुझपर

कृपा की और आप इस आनन्द को त्याग करके रंज करते हैं ख़्वाजे ने कहा कि ऐ पुत्र ! मेरे रोने का यह कारण है कि थोड़े कालमें बिपत्ति का सामना होनेवालाहै कि अलकश का पुत्र हुश्शाम ख़ैबरी मदार्यन को नष्ट करके काबे के गिराने को बड़ी भारी सेना लिये आता है नगर के अच्छे प्रतिष्ठित मनुष्य उसके कारण अति घबराते हैं कारण उसका यह है कि वह बड़ा दुष्ट है इस निमित्त मैं चाहताहूं कि तुम को किसी बहाने से हब्श की ओर भेजदूं अमीर ने कहा कि ऐ कृपानिधान ! मरनेसे पुकार क्याहै ? अवश्य है कि ईश्वर बड़ा बलवान् है उसकी कृपा और आपके आशीर्वाद से जो मेरी जीति होजावे क्या बुद्धि से दूर है मैं उसे यहांतक कब आने देताहूं आगे चलकर उसकी जान लेता हूं यह कहकर उसी समय बाप से बिदा होकर काबे के दर्शन को गया और बिजय की इच्छा से मन्त्र पढ़े और ईश्वर से सहायता चाही और सेना जोड़के हुश्शाम का मार्ग रोकने के हेतु चला और दुगुनी मंज़िलें चले जाते थे एक मंज़िल पर यह ठीक समाचार पाया हरकारे ने आकर बृत्तान्त बतलाया कि यहां से दो मंज़िल की दूरी पर उस दुष्ट की सेना पड़ी है कोसों तक भीड़ भाड़ लिये पड़ा है यह सुनते ही हमज़ा उस स्थान पर उतरा और सेना का प्रबन्ध करने लगा चारघड़ी रात व्यतीत हुई होगी कि कई हज़ार सवार अपनी सेना से चुने और उस समय दौड़ मारने का मनोरथ करके उस ओर को कूच करदिया और अतिशीघ्र हुश्शाम की सेना पर अमीरहमज़ा की सेना बज्र की भांति जा गिरी हुश्शाम की सेना में हलचल पड़ी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर हांक दी कि ऐ सोते हुए भाग्यवान् लोगो ! जागो कि ईश्वर के प्रलय ने तुम्हें घेर लिया बड़े २ दुष्टों का जी छुड़ादिया यमदूत तुम सब को लेने आये हुए हैं और प्रात होते २ दशसहस्र मनुष्य हुश्शाम की सेना के हुश्शाम अपने तम्बू में पड़ा सोता था मार २ यह शब्द उसके कान में पड़ा तो शीघ्र जाग उठा और अपने लोगों से पूछने लगा कि यह हल्ला कैसा है ? लोगों ने कहा कि कोई हमज़ानामी अरब का है उसने रात को दौड़ मारकर आलमगीर के समान मार पीटकर सेना को नष्ट करदिया है जो ऐसेही दो चार घड़ी तक रहेगा तो सेना में मनुष्य का चिह्न भी न रहेगा हुश्शाम झटपट गैंड़े पर चढ़कर सेना में आया वहां सब को अचेत और दुःखित और बहुतेरों को मारे हुए बहुतेरों को घायल पाया कि इतने में सूर्य उदय हुआ उस समय तीस सहस्र सवार हुश्शाम के साथ और दश सहस्र सवार अमीर के साथ थे और बनियें आदि अधिक थे हुश्शाम मैदान में गैंड़े को लाकर हमज़ा से बोला कि ऐ अरबी जवान ! यह घोड़ा और हथियार किससे तू मांग लाया है ? इतनी बिसातपर मुझसे सामना करने को आया है तुझे अपने जी का डर न आया नाहक़ मेरी सेना को सताया तेरी जवानी पर मुझे दया आती है इससे तेरे मारेजाने की आज्ञा नहीं दीजाती है यह हथियार और घोड़ा तू मुझे भेंट की भांति दे और हाथ जोड़कर अपना अपराध क्षमा

करावे तो अलबत्ता तेरा जी न मारूंगा तूने जो मेरी सेना पर रातको डाका मारा उसके बदलेसे तुझे छोड़दूंगा और जो मेरा कहा न मानेगा तो तुझे अपनी तलवार से बेमौत मारूंगा अमीर यह मूर्खता की बातें सुनकर क्रोध को न थाम सका और अत्यन्त क्रोधवान् होकर कहनेलगा कि अरे नीच ! तू नहीं जानता कि मैं कौनहूं ? और किस घरानेका हूं ? ख़्वाजे अब्दुल्मतलब का पुत्र और हाशम का पोताहूं और हमारी तलवार का समाचार क्या तेरे कानतक नहीं पहुँचा ? और मेरे बाहोंका बल तेरे कान में नहीं आया ? और अपने मुँहको नहीं रोकता अब अरे मूर्ख ! नरक-वासी सावधान हो क्या तेरी मृत्यु आई है किसलिये जीनेसे तेरा चित्त घबराया है हुश्शाम इस बात को सुनकर गर्वित हुआ और भाला जो उसके हाथ में था अमीर की छाती पर मारा अमीर ने उसका भाला अपने भालेपर रोका और दोनों ओर से भाले चलनेलगे जब सौ २ बार भाले चले और दोनों ओरसे किसीके घाव न लगा तब हुश्शाम लज्जित होकर भाला को हाथसे फेंकदिया और तलवार मियान से खींचली चाहता था कि अमीर के बराबर आकर तलवार मारे कि अमीर ने चा-लाकी करके तलवार उसके हाथसे छीनली और अपने साथियों के आगे फेंकदी और कहा कि तू अपना वार करचुका अब मेरी बारी आई अपने को सम्हाल और अपने घोड़े और हथियारों को देख भाल पीछे यह न कहना कि सावधान करके न मारा मेरी हौस न पूरी होनेपाई यद्यपि उसने ढाल को मुँहपर रक्खा परन्तु अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर जो तलवार उसके शिर में मारी तो ढाल के दो टुकड़े करके फ़ौलाद का झलरिया टोप काटकर शिरके दो टुकड़े करतेहुए छाती के बीचो-बीच होकर चूतड़ों के नीचे उतरके आधा २ काटगई बैरी के मित्रों के हवास ऐसी तलवार देखकर जातेरहे कि जो कभी न देखी थी ॥

चौपाई। काट बखान करै केहि भांती। शिर पर धरे जाय आराती ॥
आंख बैठका पर नहिं रहई। ढाल काटि नीचे तक बहई ॥
यह वह देखि करै द्वै फारा। शिरते पांव लेइ महि धारा ॥
असि तलवार और नहिं देखी। कीन्ह बिचार हृदय निज लेखी ॥

छन्द। है खड्ग दामिनि सरिस सुन्दर शोभ बर्णत नहिं बनै।
मानुष्य करते अस चले जस ईश निज करते हनै ॥
हुश्शाम को करि नर्कवासी मीर मृग नृप सोहई।
मनमथि महँ अस धस्यो जस अजय यश २ ओहई ॥

अमर ने एक पल में सबको मारकर लाशों से समरस्थान भरदिया बहुत भाग खड़ेहुए और बहुत मुसल्मान होगये अमीर ने नौशेरवां का तख़्त और छत्र लेकर सब लूट क्षमा की ओर इशारा को बन्दि से छोड़दिया और प्रत्येक को सवारी और खिलअत और मार्ग का ख़र्च देकर कहा कि तुमलोग घरको जाओ उसके पीछे एक बिनयपत्र नौशेरवां को लिखा कि मैंने ईश्वर की कृपा से इस नीचको मारा और हजारों मनुष्य जो उसकी बन्दिमें आपके थे उनको छोड़ादिया और उस दुष्ट का शिर

मुक़बिल के हाथ कृपानिधान के निकट भेजताहूं और कैखुसरो का ताज और तख़्त जो आज्ञा हो तो मैं लाकर हाज़िरहूं यह अर्ज़ी और हुश्शाम की ख़बर देकर रवाना किया और आप विजय प्राप्त करके मक्केकी ओर प्रसन्न होकर कूच किया कहते हैं अमीर इस डाका मारने के सिवाय और कभी रात को डाका नहीं मारा॥

नौशेरवां की सभा में मुक़बिल वफ़ादार के जाने का इतिहास॥

बुलबुलरूपी क़लम नया इतिहास सुनाता है स्वच्छ काग़ज़ के तख़्ता पर सुन्दर बाग़ बनाता है कि चालीस दिन के पीछे नौशेरवां आखेट स्थान से मदायन में आया और नगर को शोक और उजाड़ और तख़्त ताज का चिह्न न पाया बुज़ुरुच्चमेहर से नेत्रों में जल भरके कहनेलगा कि गर्दिश ने यह बुरा दिवस दिखाया यहांतक स्वप्न की विचार ठीक दिखलाई दी जो तुमने बताई थी किन्तु शेष यह दुःख हमारा कब दूर होवेगा और कब आनन्द मिलेगा. बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि ईश्वर चाहता है तो आज से कल तक वह भी विदित हुआ जाता है आपको अति-आनन्द प्राप्त होगा सासानियों ने जो मारनेसे बचे थे बख़्तक से कहा कि यह जो कुछ किया बुज़ुरुच्चमेहर ने किया जो बादशाह को मदायन से आखेट को न लेजाता तो हुश्शाम ऐसा बुरा दिन न दिखाता मुफ़्त में नातेदार और कुटुम्ब के लोग हमारे बे मौत मारे गये और बाक़ी रहे ते बन्दी में होगये सच है कि बुज़ुरुच्चमेहर ने अपने मत के डाहके कारण बरबाद किया बादशाह की सेवा में जाकर और विनय करके हमारा न्याय कराओ और हमारी ओरसे इतना करवाइये यह हल्ला होरहा था कि सवार नमदा पहिनेहुए चालाक गर्द गुबार में भराहुआ बादशाहके निकट हाज़िर हुआ और समाचार आनन्दमय बादशाह को सुनाया कि हुश्शाम ख़ैबरी ने जो मदायन को नष्ट करके सत्तरसहस्र स्त्री पुरुषों को बँधुआ करके लेगया था यहांसे ख़ैबर की ओर जाता था और अपने आगे गर्व के कारण किसी को न गांठता था हमज़ा ने आपके प्रताप से उसको मारडालाहै और उसका शिर अपने एक मित्र के हाथ कि जिसका नाम मुक़बिल वफ़ादार है हुज़ूरमें भेजा है और उसकी सेना को मारके वहां की प्रजा को उसकी बन्दि से छोड़ाकर सबको ख़िलअतें दी हैं यह शुभ वृत्तान्त सुनकर बादशाह उछल पड़ा और बुज़ुरुच्चमेहर को दौड़कर छाती से लगा लिया और कहा कि सब अधिकारी शीघ्र मुक़बिल वफ़ादार की अगवानी को जावें और प्रतिष्ठा समेत उस को लेआवें वैसेही बादशाह की आज्ञानुसार कियागया जो लोग बड़े २ अधिकार पर थे अपनी २ सामग्री दुरुस्त करके मुक़बिल की अगवानी के हेतु नगर से बाहर आये और प्रतिष्ठा समेत उसको अपने साथ लाये जिस समय मुक़बिल आया बादशाह के तख़्त को चूम लिया और अर्ज़ी अमीर की दी बादशाह इसभांति अमीर की प्रतिष्ठा की कि उनके विनयपत्र को मुक़बिल के हाथसे लेलिया पहले तो आपने पढ़ा फिर बुज़ुरुच्चमेहर को देकर कहा कि इसको बड़ी आवाज से पढ़ो और इसके मतलब से सब

को विदित करो और हमारी बादशाहत में इसका विदितपत्र लिख कर सब जगह भेजवादो जितने लोग थे उसको सुनकर अतिप्रसन्न हुए और बादशाह को इस बिजय का मङ्गलाचार देनेलगे बादशाह ने उस समय मुक़बिल को पारितोषिक देकर प्रसन्न किया और रुपये, मोहरें, जवाहिर आदि से उसको अतिप्रसन्न किया और आज्ञा की कि जबतक मुक़बिल वफ़ादार मदायन में रहे प्रतिदिन दरबार में बेधड़क आयाकरे लिखनेवाला लिखताहै कि जिसदिन मुक़बिल वफ़ादार ने बादशाह से भेंट की थी दैवयोग से उस दिन एक पेडुकी बादशाह के बाग़ में सरोकी डाली पर बैठी देखपड़ी और उसकी गर्दन में एक सांप परिधि समान गले में लपटाहुआ दृष्टि पड़ा धावन ने आकर समाचार बादशाह के सामने विदित किया बादशाह ने कहा कि जानपड़ा कि अपना न्याय कराने के हेतु आई है कोई धनुर्धारी ऐसा है कि जो इस पेडुकी को बचाकर सांप के फनमें बाणमारे किन्तु इसको किंचिन्मात्रतक कष्ट न मिले यह बात सुनकर सब चुपके होरहे परन्तु मुक़बिल अपने स्थान से उठ खड़ाहुआ और बादशाह के तख़्तका पाया चूमकर आज्ञा मांगनेलगा आज्ञा पाने के पीछे उधर को मुँह किया और भाला की नोक पर एक दर्पण खड़ाकरके एक मनुष्य के हाथ में दिया कि उसके मुँहके सामने रक्खे कुछ भी डर न करे और हाथ हलने न पावे सांप को जो अपनी सूरत दृष्टि पड़ी फनको उठाकर उस ओर देखनेलगा और जीभ निकालकर अपने प्रतिबिम्ब की ओर निगाह करनेलगा मुक़बिल ने फन देखकर तीर को फोंकमें लगाया और गोशा कमान का इंचकर उस सांप के फन पर मारा कि उस सांप के फन में लगा लगतेही उसने अपना प्राण त्यागदिया पेडुकी के परतक में भी कुछ दुःख न पहुँचा और तीर सांप के घुसगया वह सांप तो पृथ्वी पर गिरपड़ा मुक़बिल ने अपना तीर निकाल लिया और पेडुकी पर बजाती हुई अपने घोसले की ओर उड़गई आसक्त होकर दीखनेवाले वाह २ का शब्द सराहने के हेतु कहनेलगे बादशाह ने मुक़बिल के हाथ चूमलिये और पारितोषिक देकर अच्छीभांति से प्रसन्न किया और हमज़ा के बिनयपत्र का उत्तर लिखा और पारितोषिक समेत बख़्तक को दिया कि लिफ़ाफ़ा पर हमारी मोहर करके बहमनसर्गा और बहमनखर्रा को सौंपदो कि शीघ्र अमीर के निकट जावे और यह उत्तर और पारितोषिक अमीर के निकट यत्न समेत से पहुँचावे कहते हैं कि बादशाह ने अमीरहमज़ा को अपने परवाने में लिखा था कि ऐ सुभट, समयके बैरियों के नष्ट करने वाले! संसार से तूने अपनी सुशीलता से अपना धर्म अच्छा निर्वाह किया और मेरे बैरियोंसे जो अति गर्वित थे उनको पराजित करके नाम व निशान मिटा दिया जो आज रुस्तम जीता होता तो अधीनता का घेरा तेरे ओर से अपने गर्दन और कान में लटकाता और सोहराब इस फन्द पर तेरे बलके आगे शिर न उठाता बहमनसर्गा बहमनखर्रा को पारितोषिक समेत भेजा है तख़्त और छत्र और और असबाब बादशाही जो तूने उस नीच से फेर लिया है अतिशीघ्र रवाना करके यहीं

हाज़िर हो जिससे मेरी आंखें तुमको देखकर चैतन्य हों जबतक दुष्ट ने उस परवाने को तो नहीं भेजा दूसरा परवाना इस मज़मून का लिखा कि हे अरबज़ादे! इससे पहले मेरा मनोरथ था कि सब अरबवासियों को मारके हाशम के पुत्रों में से किसी को न रक्खूं परन्तु तुझसे वह काम हमारी इच्छाके अनुसार हुआ इस कारण हमने तेरा अपराध क्षमा किया और पारितोषिक बहमनसगां व बहमनखरां के हाथ भेजते हैं और वह परवाना बादशाह का नहीं भेजा लिखा है कि एक मनुष्य आदी नामी सदैव से उसी गढ़ी में रहा करता था हाशम अलकश के पुत्र ख़ैबरी का समाचार सुनकर घर को अपने ख़ाली किया और अठारह सहस्र सवार से पहाड़ में छिप कर बैठा कि जिस समय हुश्शाम इधर आनिकले मैं उसको पराजित करूं कि एक धावन ने उसको समाचार दिया कि हुश्शाम ख़ैबरी को हमज़ा ने मारा और उसका माल व असबाब लिये हुए मक्के का मनोरथ किया है कि जो उसके रहने का स्थान है आता है यह सुनकर वह बोला कि अच्छा हम भी अपना हिस्सा उससे लेंगे जिस समय गढ़ी रवाज़िल के निकट हमज़ा आन पहुँचा आदी ने अपनी सेना में से एक सरदार को दूत के हेतु चुनके यह सँदेशा देकर हमज़ा के निकट भेजा कि हुश्शाम मेरा शिकार था मैं बहुत दिन से उसकी घात में था उसको आपने शिकार किया मेरी इच्छा मनही में रही अब आप से यह विनय करता हूं जो कुछ उसके माल व असबाब में से आपके हाथ आया है आधा मुझ को देदीजिये और आधा आप लेकर शुभ से अपने घर की राह लीजिये नहीं तो आपका भी माल उसके साथ जायगा सिवाय डाह और अफ़सोस के और कुछ न हाथ आवेगा अमीर यह सँदेशा सुनकर बहुत हँसा और उसके ऊपर बहुत कृपा करके कहनेलगा कि हमारी ओर से दुआ देकर कहना कि जो सलाह उसे पसन्द हो तो शराबका प्याला हाज़िर है और जो युद्ध का सामान चाहता है तो यही गेंद यही मैदान है सब प्रकार से मुझे स्वीकार है जो उसकी इच्छा में हो उसको मैं भी करूं वह दूत हमज़ा के चालचलनपर सब प्रकार से प्रसन्न हुआ और आदी से जाकर प्रश्न का उत्तर कहा और निवेदन किया कि हमने अपनी सारी अवस्था भरमें ऐसा विवेकी और बुद्धिमान् और सुशील सरदार कोई मनुष्य नहीं देखा मालूम हुआ कि यह बड़ा प्रतापी है आश्चर्य नहीं है कि सतद्वीपमें अपनी दुन्दुभी बजावे और कुछ दिवस के पीछे सकल देशों की बादशाहत इसके अधीन होजावे यह उत्तर सुनकर आदी लड़ने पर उद्यत हुआ आदी दूसरे दिवस अठारह सहस्र सवार का समूह लेकर दुन्दुभी बजाता हुआ मैदान में आया अमीर भी अपनी सेना लेकर सामने आये और युद्ध करने पर उद्यत हुए आदी इस सजधज से आया कि सेनावालों का चित्त घबराया देखा तो इक्कीस फुटका लम्बा चौड़ा दोनों ओर बराबर है और अति विकटरूप बनाये हुए है और शिर पर झलरिया टोप और सात पगड़ियां बांधकर तिसपर शमला बांधे है और उसमें मूंड़ के बाल भी कुछ २

दीख पड़ते हैं और इक्कीस गज़ की उसके पेट की दौर है मनुष्य क्या देव है उस पर कमरबन्द फ़ौलादी बांधे जिरा बक्तर और दस्तानेराकी मोजे टिकौरी पहिने ढाल पीठपर तलवार कटार छूरी तरकश नीचे कमर के कमान पांच टांक की कांधे पर डाले लम्बा भाला हाथ में लिये हुए है अमर देखकर अमीर से कहने लगा आपको अपने बल का बहुत घमण्ड था आज मालूम होजावेगा ईश्वर भला करे दांतों पसीना आवेगा अमीर ने कहा कि मुझे बल देनेवाला उससे अधिक बली है बैरी जो बली है तो हमारा सहायक ईश्वर दयानिधान है देख तो क्या होता है ? अमीर ने परमेश्वर का स्मरण करके उसके शरीर से और देह से कुछ भी अन्देशा न किया और घोड़े को उसकी ओर चलाकर कनौटी से कनौटी को मिला दिया बराबर होता था कि एक औभड़ ढाल की ऐसी उसके घोड़े के मस्तक पर मारी कि कई क़दम उसका घोड़ा पीछे हटगया और अचेत होकर शिर झाड़ने लगा आदी ने जब यह बल हमज़ा का देखा कि बैरी अधिक बलवान् है और जवानी से मस्त है बोला कि ऐ जवान ! तुझमें भी जानपड़ा कि इस भांति का बल है और बड़ा साहसी है अब अपना नाम बता कि तुझसा वीर मेरे हाथ से न माराजावे अमीर ने कहा कि पहलवानों का नाम खड्ग और धनुषादि से विदित होता है उसी पर खुदा रहताहै तू सुनले कि मेरा नाम अबुलूअला है तेरे सामने तेरा बल देखने के हेतु आया हूं ला क्या अस्त्र रखता है देखूं तेरा वार कैसा होता है ? आदी गदा लेकर अमीर के शिर पर आया और बोला कि ऐ अबुलूअला ! इसकी चोट से तू न मरेगा यह कह कर अमीर के ऊपर अपनी इच्छा के अनुसार वह गदा मारी और अपना बल हौसिला दिखाया अमीर ने उसको बचा करके कहा कि हां अब दूसरा भी वार करले जिसमें तेरी हौस न रहे अब की चोट से बचूंगा तौ मैं भी एक वार करूंगा जो जीता रहा तो उसका स्वाद कभी न भूलेगा सदैव उस वार को याद करेगा आदी यह सुनकर क्रोधवान् हुआ और गदा को शिकारबन्द में लटकाया तलवार मियान से लेकर चाहा कि अमीर के शिर पर वार करके मारे अमीर ने उसका क़ब्ज़ा पकड़के दूसरा हाथ उसके कमरबन्द पर डालदिया वह भी अमीर से बल करनेलगा अमर ने निकट आकर कहा कि ऐ मल्लो ! तुम तो आपस में बैलों की सी लड़ाई कररहे हो घोड़ा बिचारे बेजीभ के हैं इनकी कमर क्यों तोड़ते हो जो बल देखना मंजूर है तो पृथ्वी पर उतरके लड़ो तब हमज़ा और आदी दोनों ने अमर की राय पसन्द की और घोड़ों पर की लड़ाई बन्द की घोड़ों से उतरे सामने मुक़ाबिला करने को खड़े हुए आदी ने कहा कि हथियार में तो हम तुम दोनों समान रहे हैं भाला व गदायुद्ध में भी हम तुम समान रहे अब पिछली लड़ाई में दोनों अपना २ बल देखावें जो हारे वह उसकी अधीनता अङ्गीकार करे अमीर ने कहा कि मैं सब प्रकार से हाज़िर हूं तेरी परीक्षा लेना चाहता हूं फिर आसन मारकर बैठगये आदी ने इतना बल किया कि रोम २ में पसीना

वह निकला किन्तु हमज़ा हल न सका और पृथ्वी न छोड़ी आदी बोला कि हमज़ा मुझे जितना बल था करचुका अपने बल की सीमा से गुज़र चुका अब तुमभी अपना बल दिखाओ उसका आसन मारके बैठना था कि हमज़ा ने पहलेही बल में उसका लङ्गर उठा लिया और कई बार चक्कर देकर पूछा कि अब तेरा क्या मनोरथ है? आदी ने कहा अधीनता और सेवकाई और मन से आपके ईश्वरकृत बल पर न्योछावर हूं अमीर ने धीरे से उसको पृथ्वी पर रखदिया आदी नम्र हो ईश्वर का स्मरण करके उसके दीन में आया अमीर का सेना समेत गढ़ी तङ्ग रवाजिल में लेजाकर अति आनन्द से शिष्टाचार बादशाहों के समान किया और अपने भाइयों को भी इनसे मिलाया अमीर ने प्रत्येक को गले से लगाया और बीरता का पारितोषिक कृपा किया जब अमीर ने उस आनन्द सभा से छुट्टी पाई तो कहा कि वह ईश्वर निगहबान है अब मैं अपने घर को जाता हूं अपने पिता के चरण के दर्शन करूंगा आदी ने कहा कि ऐ हमज़ा! ऐसा तो नहीं कि जो मुझे खाना न देसकेगा मुझे किसहेतु साथ नहीं लेते हो जो हज़ार मन अनाज मेरे निमित्त दोगे तो मैं उसमें अपना जी रखलूंगा दोपहर नहीं तो उसे एकही पहर भोजन करूंगा अमर बोला कि क्या खूब मनुष्य सबसे कम आदी खाता है भला ऐसी कम भूख में कौन खाना देने में मुँह मोड़ेगा इस बिचारे कम ख़ुराक का कौन चित्त तोड़ेगा? अमीर ने हँसकर आदी से कहा कि यह क्या बातहै? परमेश्वर रक्षक है मुझको और तुम को दोनों को वही खानेको देता है और सब चराचर की वही सुधि लेताहै जो तुम चलो तो मेरे शिर आंखों पर रहो फिर आदी अठारह हज़ार सवार लेकर अमीर के साथ २ आया और अमीर प्रसन्न होकर मक्केकी ओर चले॥

अमीर को मक्का की ओर जाना और नौशेरवां का परवाना पहुंचना॥

लिखनेवाले इस मधुर वृत्तान्त को यों बर्णन करते हैं कि जब अमीर मक्के में पहुँचा प्रथम काबे के दर्शन करके नमाज़ दोगाना पढ़ी और आदी से ठगी की क़सम करवाई फिर अपने पिता के चरण चूमने को चला ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने जब अमीर के आनेका समाचार सुना तो नगरबासियों से अमीर के लौटने का मङ्गलाचार करवाया और नगर के भले २ मनुष्य लेकर अमीर की अगवानी को चला और कुटुम्ब समेत सबलोग अमीर के लेनेको गये मार्ग के मध्य में पिता पुत्र का मिलाप हुआ अमीर ने चरण चूमे ख़्वाजे ने उठाकर अमीर को अपनी छाती से लगाया और रुपया व मोहरें फ़क़ीरों को लुटाईं वे लोग आशीर्बाद देने लगे कि ईश्वर विजयी सदैव तुमको विजय प्राप्त करे ख़्वाजे जब अमीर को घर में लाये और दीवानख़ाने में बैठे और नगरबासी भी सब आकर उपस्थित हुए अमीर से मंज़रशाह यमनी और नैमाय मंज़रशाह यमनी के पुत्र और सुहेल यमनी और सुल्तानबख़्त मग़रबीन् आशीर्वाद देकर तौक़बिनहेरों की नौकरी करवाई और प्रत्येक की प्रशंसा की ख़्वाजे अतिकृतकृत्य हुआ और सब पर कृपा की दृष्टि की और इसीभाँति से सब

का अधिकार बढ़ाकर पहुनई की एक दिन बातोंबात अमीर को मालूम हुआ कि आदी आदियाबानों का पुत्र है तब अमीर अतिप्रसन्न हुए कि दूध के कारण मेरा भाई है उसी दिन आदी को अपनी सेना का सेनापति और दीवानख़ाने और नक़्क़ारख़ाने और फ़र्राशख़ाने का दारोग़ा किया और अठारह प्रकार का पारितोषिक देकर अच्छी प्रदवीपर नियत किया अमर नें अमीर की आज्ञानुसार आदी से पूछा कि आपके खाने के हेतु जितनी सामग्री चाहना हो कहदीजिये कि बावरचीख़ाने का दारोग़ा प्रतिदिन आपके निकट भेजदिया करे या खाना बनवाकर आपके डेरे में भेजवादिया करे आदी ने कहा कि यह तो घर है मुझे खाना इतना चाहिये जिसमें जीव रहे अङ्गीकार यह है कि अमीर के दरवाज़े पर अच्छीभाँति सेवकाई निबाहूं अमर ने कहा कि प्रतिवस्तु का नाम और तादाद कहदीजिये तो दारोग़ा आपके बावरचीख़ाने में पहुँचा दिया करेगा गोल गोल कहना क्या ज़रूर है लाज न करना चाहिये आदी ने कहा कि अच्छा भाई दारोग़ा से कहदो कि प्रातसमय इक्कीस ऊंटका मांस खाता हूं और दोपहर को इक्कीस हिरन और इक्कीस दुम्बे के क़बाब अंगूरी मदिरा के इक्कीस शीशों के साथ चखताहूं और जितना मैंने प्रातःकाल से दोपहरतक बताया उतनाही सांझसमय बल्कि इक्कीस भैंसा अधिक बियारी करता हूं और इक्कीस मन आटे की रोटियों का दोनों पहर खाने के निमित्त ढेर होता है और इसपर मेरा पेट अच्छी भाँति से नहीं भरता है किन्तु इतने में मेरा जी रहसक्ता है अमीर ने कहा कि इस दूकान के दारोग़ा से कहदो भेजदिया करे कुछ भी इसमें कमी न कियाकरे उनके कहने के अनुसार उतना रातिब उसका ठीक हुआ और प्रतिदिन खाना जाया किया कई दिवस के पीछे अमीर ने सुना कि नौशेरवां के एलची आते हैं मेरे नाम परवाना व ख़िलअत लाते हैं फिर ख़्वाजे अब्दुल्मतलब और अमीरहमज़ा नगर के बासियों समेत उनको अगवानी लेनेके हेतु नगर के बाहर आये और अपने घरपर पहले उनको लाये जो शीशे के घर उनके हेतु सजरहे थे उसमें उनको उतारा और थोड़ी देर के पीछे अच्छे २ व्यञ्जन बनवाकर उनके निमित्त भेजे उन्होंने अमीरहमज़ा को परवाना और ख़िलअत दी अमीर उस परवाने को पढ़कर भौंह सिकोड़ी और अतिरञ्ज किया ख़्वाजे ने अमीर के रिस करने का कारण पूछकर कहा कि बाबा यह बादशाहहै कभी सलाम से त्योरीभौं चढ़ातेहैं और कभी गाली से प्रसन्न होकर ख़िलअत देते हैं अप्रसन्न होने का स्थान नहीं है दूसरे दिन जब रात बीती सूर्य ने अपना प्रकाश किया तब ख़्वाजे अब्दुल्मतलब ने नौशेरवां के लोगों की दावत की और सब नगरवासियों को भी उस न्योते में बुलाया खाने पीने के पीछे एलचियों ने ख़्वाजे के नाम का परवाना ख़्वाजे को दिया उसके पढ़ने से अमीर को अपनी ख़ैरख़्वाही और परिश्रमपर अतिडाह हुआ देखनेवालों को अति आश्चर्य हुआ कि इन लोगों का कैसा नाम है अर्थात् बहमनख़र्रा के नामपर ज़ेपर चोंकता था उसको ख़ेकी बिन्दी जानकर ख़र्रा पढ़ा

और तशदीद काफ़ सुकान अशुद्धता से उसको काफ़ फ़ारसी अर्थात् गा पढ़ी और वे दोनों इसी नाम से मक्के में प्रसिद्ध हुए अमर उस परवाने का समाचार सुनकर अमीर से भी अधिक अप्रसन्न हुआ जब खाने के हेतु दस्तरख़ान बिछा और सब जमाहुए दो ख़्वान कसनों से कसके उन दोनों के सामने लाया और बुरा भला कहने को तैयार हुआ किन्तु अमीर ने उनको मनाकिया और कहा कि न्योता यह आपका मेरी ओर से है और अच्छीभाँति से उसे रखवाया इसमें खुराक आपके योग्य है यह कहकर खानपोश उतारकर कसनों को खोलकर जिस काब में घास थी वह तो बहमनख़रां के सामने धरवाई और जिसमें आदमियों की हड्डियां थीं वह बहमनसगां के आगे लगाये और जितने लोग उस स्थान पर थे सन्देह में आकर अमर से कहनेलगे कि यह क्या चाल है यह कैसी बुरी बात करता है अमर बोला कि ख़र व सग अर्थात् गधा व कुत्तोंके निमित्त इसके सिवाय अच्छा भोजन क्या है यही पशुओं को मिला करता है जोकि इनकी पहुनई मुझपर भी उचित थी इसकारण से मैंने भी मुँह न छिपाया वे दोनों अमरपर दांत पीसकर रहगये और अनुचित बात जानकर कुछ कह न सके जब खाने से छुट्टी पाई सब का चित्त भरगया अमर ने दो नावें मँगवाईं उसमें उनकी ख़िलअतें थीं वह उनके सामने धरवाईं एकपर से ढकना उठाकर एक कपड़ा कुत्तों के डौलका निकाला और बहमनसगां के हाथ में दिया और दूसरे में से एक झूल निकालकर वहभी बहमनसगां को दी और फिर एक पाखर निकालकर बहमनख़रां को ओढ़ाया तबतो उन से न रहागया कटार निकालकर दोनों अमरपर दौड़े और उसके मारने पर मुस्तैद हुए तौक़बिनहैरां ने कटार दोनों के हाथों से छीनली और घूंसों से उनको मारा उसीदिन दोनों एलची शिरपर हाथ रखकर भागे किसीके होश ठिकाने न रहे अमीर ने एक अर्ज़ी बादशाह के दरबार में अपने सेवक के हाथ लिखी उसमें अभिप्राय यह था कि जो सेवा मुझसे आपके निमित्त बनपड़ी उसके बदले में हुज़ूरने अच्छी भाँति से प्रतिष्ठा इस अधीनकी की मैं ऐसेही परवाने और ख़िलअत के योग्य था आपसे मुझे आशा थी कि इसी अनुचर के नाम कृपापत्र आवेगा उसपर नाराज़ी का पत्र आपने भेजा और अर्ज़ी और परवाना ख़िलअत समेत एक सेवक के हाथ रवाना किया और कुछ विनय करना था सो उसकी ज़बानी कहला भेजा एलचियों ने बादशाहके पास आकर रो पीटके सब बुराई का समाचार बर्णन किया और झूंठ सच बहुत कुछ कहा नौशेरवां ने सुनकर बहुत क्रोध किया और बुज़ुरुचमेहरकी ओर देखकर कहा कि यह अर्बी अधिक गर्बी है उसके बड़े२ मनोरथ हैं एलचियों की बातों से जानाजाता है कि फ़िरार हुआ चाहता है बुज़ुरुचमेहर ने विनय की कि कृपानिधान! हमज़ा ऐसा शीलवान् गुणनिधान हौसिलामन्द हिम्मतवान् मनुष्य संसार में उत्पन्न नहीं हुआ है जो एलचियों की बातें सच हैं और उस में सन्देह और कोई बुराई नहीं हुई है सब प्रकार से मालूम होजायगा यह बातें

होहीरही थीं कि मुक़ाबिल अर्ज़ीवपरवाना व ख़िलअत जो बादशाह की ओर से गया था लेकर हाज़िर हुआ बादशाह अर्ज़ी का मज़मून और अपने परवाने का लिखा हुआ वृत्तान्त और वह ख़िलअत जो बादशाह अपने भंगी को न देता देखकर बख़्तक पर क्रोध करनेलगा कि हे मूर्ख, दुष्ट! यह क्या बात है? जो तूने की ऐसी मूर्खता और ढिठाईपर कमर बांधी और उसीसमय हज़ार तोड़ा मोहरें उसपर जुर्माना किया और कई दिनतक दरबार में आने न दिया और अमीर को उज़रनामा अपने हाथ से लिखा कि वह परवाना और ख़िलअत जो तुमको पहुँचा था वह बख़्तक ने दुष्टता से बदलकर भेजा था तुमको उचित यह है कि हमारी ओर से अपने दर्पणरूपी चित्त में मैल न बैठनेदेना और अपने चित्त का खेद दूर करदेना और इसी निमित्त परवाना ख़िलअत बुज़ुर्गउम्मेद बुज़ुरुचमेहर के पुत्र के हाथ भेजाजाता है कि जिससे बख़्तक को किसी भांति दुष्टता करने का समय न मिले कि तुमभी बुज़ुर्गउम्मेद के साथ मेल मिलाप करके शीघ्र दरबार में आओ और अपने हाथों तख़्त व छत्र लेकर गुज़रानो यह लिखकर परवाना व शाही ख़िलअत बुज़ुरुचमेहर को देकर कहा कि बुज़ुर्गउम्मेद के हाथ देना दूसरा कोई इस परवाने और ख़िलअत को न देखे ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर बादशाह से बिदा होकर जब घर में आया तो सुघड़ी देखके एक सर्प जादू का बनाया कि जब हवा उसके पेट में जाती तो तीन बार आवाज़ साहबकिरां की निकलती और बैरी व मित्र के कान में पहुँचती और उसकी सुगन्ध से सबका दिमाग़ सुगन्धमय होजाता उसकी महक के आगे और सुगन्धित वस्तु लज्जित होतीं और जब बैरियों के आगे देखपड़ता तो अमीर की सेना का डर उसके हृदय में छाजाता और इस वस्तु के साथ एक चौखट दानियाल पैग़म्बर की हमज़ा के हेतु भेजी और चारसौ चवालीस बोझ कपड़ा घोड़ोंपर रखकर अमर के निमित्त भेजा और बुज़ुर्गउम्मेद से कहा कि हमारी ओर से यह अमर को पहुँचा देना और बस्त्र पहिनने का उपाय बुज़ुर्गउम्मेद को सिखाकर कहा कि इसीभांति अपने हाथ से अमर को पहिना देना यह बातें समझाकर एक दस्ता सवारों का साथ करके रवाना किया और मार्ग का हाल सब समझादिया जब चारकोस मक्का रहगया ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद ने डेरा किया दैवयोग से उस दिन अमर उस ओर गया था बुज़ुर्गउम्मेद ने पहिंचाना हो न हो यही अमर है तो अपने निकट बुलाकर गलेसे लगाया और कहा कि हम तुम दोनों भाई हैं यहां उतरो पिता ने कुछ वस्तु तुम्हारे हेतु कृपा की है और बस्त्र व भूषण अच्छे २ भेजे हैं यह कपड़े उतारो जिसमें वे कपड़े पहिनावें और उसका उपाय तुम्हें बतावें अमर ने अपने बस्त्र उतारे बुज़ुर्गउम्मेद ने वे कपड़े अपने आदमियों को देदिये और एक घड़ीतक अमर को वैसाही रक्खा और कहा कि लालच से नङ्गे मत होना अब यही सजाव पहिनेरहो और ईश्वर पर राज़ी होकर निहङ्ग लाड़ले रहो तब तो अमर बहुत घबराया और धाड़ें मारकर रोने और हाथ जोड़ने लगा कि मेरे बस्त्र मुझको कृपा करो मुझे इतने मनुष्यों में नङ्गा मत रक्खो

में सदा तुमको आशीर्वाद देतारहूंगा मैंने आपकी ख़िलअतले हाथ उठाया अब अपने घर की राह लूंगा बुज़ुर्गउम्मेद ने हँसकर कहा कि ऐ बाबा! ऐसेही इस सृष्टि में बहुत लोगोंको तूभी नङ्गा व हैरान करेगा और बहुतों के कपड़े उतारलेगा इस निमित्त मैंने तुझे नङ्गा किया है कि जिससे आगे यह समय याद रहे अमर ने कहा कि मैं आपका चेला हुआ बुज़ुर्गउम्मेद ने गठरी तोशेख़ाने से मँगवाई पहले एक अम्मामा अमर को पहिनाया ज्योंहीं उसको पकड़कर ऊपर को ईंचा तो एक थैली सी अमर के लटकने लगी अमर ने कहा बाबाजान भी बड़े उदार हैं कि बालिश्तभरकी मियानी तम्बामें न दी बुज़ुर्गउम्मेद ने आफ़तबन्द निकाला अमर देखने लगा तो उसमें एक थैली मख़मल कीथी उसपर सातरङ्ग के गुलबूटे निकालकर भेजी है और उसकी डोरी में एक घुण्डी लाल की लगी है कि वह अमोल था बुज़ुर्गउम्मेद ने लिङ्गेन्द्रिय उसमें रखके लङ्गोट की भांति ईंचकर कहा कि इसको आफ़तबन्द कहते हैं आपके पुरुषों ने भी ऐसे कपड़े कभी सुने व देखे हैं और उसके लाभ बताते हैं कि इससे एक तो दौड़ने कूदने में अण्डापर चोट किसी प्रकार की नहीं आती है और दूसरे पानी में तैरने के समय इसके खोलने की कुछ आवश्यकता न होगी अमर बोला कि पिता कृपानिधान की मुझ पर बड़ी दया है कि जो मेरे निमित्त भी ख़िलअत भेजी और मेरी लिङ्गेन्द्रिय के हेतु भी भेजा बुज़ुर्गउम्मेद ने दो भांति के वस्त्र अमर को पहनाये एक हरीरका था और दूसरा कतांका और उनके सबके लाभ बताये और कहा कि जो एक नर्म है वह शरीर की स्वच्छता और आराम के हेतु है और दूसरा मध्यम वायु के लिये है और हरा अङ्गा सुनहला पहनाया और एक आधा छत्र जड़ाऊ कि जिस पर सुगन्धित करनेवाला एक तोता ज़मुर्रदका बनाथा कलँगी के तौर से शिर पर रख दिया और हिरन की खाल की सूर्यामुकुट सूर्य की उष्णता के हेतु माथे पर लगाया और एक फलाख़न कि जिसपर सात रङ्ग का रेशम लगा हुआ था और भांति २ का जड़ाऊ काम उस पर बना था और एक कमन्द जिसकी लच्छों से गांठें बँधीहुई थीं चमक में सूर्य से अधिक शोभित थीं और पांच कटार जिनके दस्ते जड़ाऊ और चवालिस घुंघुरू अमर के कमर में बांधे बारह स्थान. अट्ठाईस कोनेपर शब्द चौबीस श्वाबें और छः पाताबे दिये और डाढ़ीकी पट्टी बांधने की सब बातें बताई थैली और क़ारूरा लफ़ज़ कमर में रक्खा और मज़बूत कसा और कुछ वस्तु मदिरा में भिगोकर सुखाई हुई कि जब उसको पानी में भिगोदीजिये तो पानी मदिरा होजावे और एक हुक्का और एक अतरदान अच्छी भांति का बनाहुआ और ज़हरमोहरा की डबिया मोरकी सी पूंछ बनीहुई और बिजली की तरह अच्छी सजी हुई तलवार और धनुष् और लम्बी चौड़ी शिर से पांव तक चादर और जोड़ा जूते का अधिक नरम मोती उसपर जड़ेहुए इसी भांति से चारसौ चवालिस टुकड़े वस्तु के सजेहुए बुज़ुर्ग उम्मेद ने अमर को पहनाये और भांति २ के अस्त्र उसके शरीर पर सजे अमर बुज़ुर्गउम्मेद से विदा होकर उसी भांति से अमीर के पास गया और ब्यौरा समेत

सब समाचार कहा और विनय की कि नौशेरवां ने आप के विनयपत्र
उजुरनामा पारितोषिक सहित बुज़ुरुचमेहर के बेटे के हाथ उनव
उम्मेद नाम है और वह नगर से दो कोस की दूरपर टिकेहुए हैं
ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने भी एक जादू का सर्प और दानियाल का त
भेजा है और चारसौ चवालीस टुकड़े भांति २ के जो इस समय मे
लगायेहूं मुझको कृपा किये हैं और उनके साहबज़ादेने यह सब
पहिनाकर सबका स्वभाव बतलाया है अमीर यह समाचार सुनव
हुआ और स्नेहियों समेत साज बनाकर सवार होकर ख़्वाजे बुज़ुर्ग
वानी के हेतु नगर के बाहर पहुँचा बुज़ुर्गउम्मेद अच्छी भांति से . . . . . .
आया और नौशेरवां का उजुरनामा अमीर को दिया और ख़िलअत जो नौशेरवां
ने दी थी वह अमीर के आगे धरी अमीर शाही परवाना पढ़कर अतिआनन्दित
हुआ और ख़िलअत में से कोई २ कपड़े निकालकर उसी समय पहिन लिये
उसके पीछे अमीर को सर्प और दानियाल का तम्बू बुज़ुर्गउम्मेद ने निकालकर
दिया और कहा कि पिताने आपको आशीर्वाद कहा है और यह वस्तु आपके नि-
मित्त भेजी है और सच तो यह कि ये वस्तु आपही के योग्य है अमीर उससे अति
प्रसन्न हुए और वह सर्प तौक़बिनहैरां को और तम्बू आदी को सौंपदिया और
बुज़ुर्गउम्मेद को साथ ले सेना समेत नगर की ओर चला वहां पहुँचकर ख़्वाजे
अब्दुलमतलब और भले २ मनुष्यों से मिलाप करवाया और बहुत दिनोंतक एक
मङ्गलाचार के हेतु सभा शोभित रक्खी एकदिन बुज़ुर्गउम्मेद ने अमीर से कहा कि
बादशाह आपका मार्ग देखते होंगे और आपका चर्चा बारम्बार करते होंगे उचित
यह है कि अब आप मदायन की ओर पधारिये अमीर उसी समय काबे का दर्शन
करके ख़्वाजे अब्दुलमतलब से विदा होकर मंज़रशाह यमनी व नैमाय और सुहेल-
यमनी व सुल्तानबख़्त पश्चिमी और आदीकरब व तौक़बिनहैरां समेत तीससहस्र
महाभट व योधाओं से मदायन की ओर चले प्रतिदिन मार्ग में चलते सैर करते
चलेजाते थे कि इतने में एक स्थानपर दो मार्ग मिले अमीर ने ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद
से पूछा कि आप इसी ओर से आये थे आपको मालूम होगा कि यह राहें किधर
को गई हैं और कौन २ देशकी सीमा में मिली हैं बुज़ुर्गउम्मेद ने कहा कि दोनों
मार्ग मदायन के हैं एक मार्ग निडर है परन्तु दूर बहुत है छः महीने में इस मार्ग
से पहुँचते हैं और दूसरी राह में बहुत जल्द मदायन में पहुँचते हैं परन्तु पांच वर्ष
से यह मार्ग बन्द है कि इस मार्ग में भारी जङ्गल मिलता है और उसमें एक सिंह
आकर रहा है और आदमी की सुगन्ध पाकर विपिन से निकलकर एकही थप्पड़
में चाहे जैसा मनुष्य बलिष्ठ हो प्राण हरलेता है इस कारण इस मार्ग होकर कोई
नहीं जानेपाता है अमीर ने कहा कि वह दुष्ट ईश्वर की सृष्टि को दुःख देता है
मुझको उसे मारना उचित है यह कहकर अकेले आप तलवार लेकर अर्थात् ख़्वाजे

ेत उस मार्ग भयभीत से मदायन की ओर पधारे और सेना को
सरी मार्ग जो अभय थी उससे ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद के साथ भेजा
ड़ों की चाल चलेजाना यद्यपि मंज़रशाह आदि ने साथ चलने को
र ने न माना दूसरे दिन उस बियाबान में एक झाड़ के निकट
ी ठण्डी वायु देखकर घोड़े से उतरपड़े और एक तालाब देखा कि
र हरी २ दूब लगीहुई थी और कुछ वृक्ष इधर उधर छायादार लगे
क्षी बिबिध प्रकार की अच्छी २ बोलियां बोलते थे उसके किनारे
छाकर बैठगये और अमर घोड़े को चराने लगा और उस बिपिन
न फल आदि खानेलगे इतने में एक भारी खड़खड़ाहट पैदा हुई और जानवर के
आने की आहट मालूम हुई और एक सिंह उसमें से निकला अमर ने अपनी उमर
में कभी मिट्टी का भी सिंह न देखा था ज्योंहीं उसे देखा भयभीत होकर घोड़े को
छोड़कर एक बड़े बृक्षपर चढ़गया और अमीर को पुकारनेलगा कि ऐ हमज़ा ! एक
सिंह बड़ाही लम्बा चौड़ा झाड़ से निकला है और आपकी ओर चला आता है इससे
आप उस तालाबपर से भागकर मेरे पास चले आइये या भागकर शीघ्र किसी वृक्षपर
चढ़जाइये अमीर अमर की यह बात सुनकर बहुत हँसे और कहने लगे कि तू क्यों
अचेत हुआ जाता है कुछ दीवाना हुआ है मैं आप उसके मारने के हेतु इस मार्ग से
आयाहूं इसीकारण इतना मार्ग चलकर सेना से अलग हुआ हूं और तू मुझे उससे
डराकर भगाया चाहता है इस स्थानपर तू मुझे नामर्द बनाया चाहता है यह कह
कर सिंह की ओर देखनेलगा और उसकी ओर चला देखा कि सिंह बहुत भारी है
अतिडरावनी सूरत है पूंछ तक चालीस हाथ लम्बा होगा और गात से अधिक ऊंचा
है अमीर ने सिंह को ललकारा कि ऐ गीदड़ ! किधर जाता है मैं तेरा बैरी आन
पहुँचा हूं सिंह यह हांक सुनतेही अमीर के ऊपर गिरा कि अमीरने चोट बचाकर
उसकी वार बचाई और ऐसा शब्द किया कि सब बन गूंज उठा और सिंह के पिछले
पैर पकड़कर ऐसा झिटका मारा कि कमर की हड्डी टूटगई और दो पहर में वह
सिंह चिल्लाकर मरगया अमर ने अमीर के हाथों को चूमलिया और प्रातःकाल
उस सिंह की खाल को खींचके साफ़ किया और भीतर से भी अच्छी भांति साफ़
किया और उसमें भुस भराकर उस बनसे लकड़ियां तोड़लाया और नया तमाशा
करने को जी चाहा तो एक बैठका बनाया उसपर उस सिंह को इस भांति से बै-
ठाया कि जो कोई देखे उसको जीता देखपड़े और एक मनुष्य को पकड़के उसके
शिरपर रखवालिया और अमीर के साथ हुआ अमीर इस कारण से कि सेना
बहुत दिनों में मदायन पहुँचेगी जहां कहीं स्वच्छ स्थान पाते डेरा करते और
आखेट खेलने जाते इस कारण से अमीर और बुज़ुर्गउम्मेद साथही पहुँचे अमीर तो
अपनी सेना में गये और अमर ने एक टीकड़े के नुक्कड़ पर जो गढ़ी के तले की
दीवार के तले बना था उस भुस भरेहुए सिंह को बैठाया कि कुछ भी सजीव सिंह

से और उससे भेद नहीं था इसीभांति दूसरे दिवस जब दरवा
घसियारे उस टीकड़े की ओर घास छीलने के निमित्त जातेथे
से एककी दृष्टि उस सिंहपर जापड़ी तो चिल्लाकर अचेत होगय
गया उसके साथी इधर उधर देखनेलगे कि इसने क्या ऐसी व
चिल्लाकर अचेत हो पृथ्वी पर गिरपड़ा देखते २ सिंहपर दृष्टि प
नगर की ओर सिंह २ कहकर भागे किसी का चित्त ठिकाने :
ज़बानी जो यह समाचार विदित हुआ नगर में हलचल पड़ग
लम्बा चौड़ा सिंह टीले पर बैठा है थोड़ी देर में नगर की ओर आया चाहता है
हमारे साथ का एक मनुष्य वहां अचेत होकर गिरपड़ा है देखें वह घरतक आताहै या
उस सिंह का कौर होजाताहै सब नगरभर घबराया कोई अपना दरवाज़ा बन्द करने
लगा कोई बन्दूक़ बांधकर अपने कोठेपर जाबैठा और बाहर निकलना पैठना कठिन
हुआ नाकों पर प्रबन्ध होनेकी आज्ञा हुई नगर में यह चर्चा हुई कि देखा चाहिये
जो कदापि नगर की ओर फिरा तो सैकड़ों को मारडालेगा यह वृत्तान्त जब बाद-
शाह ने सुना तो नगर की गढ़ी की ओर जाकर मल्लोंसमेत और सेनापति साथ ले-
कर देखा तो सचमुच एक सिंह टीकड़े पर बैठा है जो कोई उसे देखताहै वह कांप
उठता है दैवयोग से मुक़बिल अपने तम्बू से कि जो नगर के बाहर पड़ा था बाद-
शाह की मुलाक़ात को जाता था जब टीले के निकट पहुँचा तब वह सिंह दिखाई
दिया तो तरकस से तीर निकालकर कमानकी नोक पर चढ़ा उसकी ओर चला और
सामने पहुँचकर ध्यान लगाके जो देखा तो सिंह में हलचल न पाई धोखे से सूरत
दृष्टि पड़ी तब सोचा कि ऐसी बाज़ीगरी अमरके सिवाय दूसरे को समझना कठिन
है यह उन्हीं का काम है मालूम होताहै कि अमीर सिंह को लगाड़ सुनकर बनकी
ओर से आये और सिंह दुष्ट से उस बन को साफ़कर आये हैं और सिंह को मारा
है लोगों को डरनेके लिये अमरने उसकी खालमें भुस भरकर एक तमाशा बनाया
है फिर बादशाह से जाकर अपनी बड़ाई वर्णन की बादशाह कोभी ज्ञान हुआ
और प्रसन्न होकर मुहरों के संदूक़चे मुक़बिल को कृपा किये और ख़िलअत और
भारी मोलके जवाहिर दिये और कहा देखो तो अमीर नगरसे किधर उतरे हैं शीघ्र
जाओ और हरकारे रवाना करो और पूछके हमको अतिशीघ्र समाचारदो मुक़बिल
बादशाह से बिदा होकर नगर के बाहर निकला दैवयोग से अमर अमीर की सेना
में पहुँच नगर की ओर आता था और बादशाह के पास अमीर के आनेका समा-
चार सुनाने जाताथा तो दूरसे देखा कि एक मनुष्योंका झुण्ड गढ़ीसे बाहर निकला
और उस बन की ओर जाता है अमर ने उसका पीछा किया और निकट जाकर
देखा कि मुक़बिल बफ़ादार हमारा पुराना मित्रहै मुक़बिल अमरको देखकर पूछने
लगा कि अमीर का तम्बू कहां पर खड़ाहै यह सुन अमर को बुरा मालूम हुआ
कि न तो मुझे सलाम की और न क्षेम कुशल पूछी और न घोड़े से उतरकर मिला

अमर मुक़बिल की ओर देखकर कहनेलगा कि हे दुष्ट ! तुझको अमर ने बादशाहकी सेवा में भेजा है या सैर करनेको मुक़बिल ने कहा कि मैंने सुनाहै कि थोड़ी देरहुई कि यहां अमीर आये हैं उनके मिलने को जाताहूं सैर कैसी बादशाह की सेवा से आता हूं अमर ने कहा तूने बहुत बुरा किया कि उनके मिलनेको चला मुक़बिल ने कहा कि क्या तू दीवाना होगया है कि मुझ से बराबरी करताहै अमर यह सुन झुँझुला कर बोला कि ऐ भाई ! तुझको भी यह हौसिला हुआ जो मुझसे भी ऐसी बातें करने लगा नौशेरवांने तीन सन्दूक़ मोहरोंके क्या दिये कि तू ख़्वाजा बनगया जिससे तेरा मन ठिकाने न रहा यह कहकर गोफन निकाला और अतिदमक चमक का एक पत्थर अपनी थैली से निकालकर गोफनपर रक्खा और घुमाकर मारा तो मुक़बिल के माथेपर लगने से रुधिर की धारें छुटने लगीं मुक़बिल उसी सूरत से अमीर के निकट चलाआया और रोने पीटने लगा अमीर यह समझकर कि क्या मदायन के लोगों ने इसे रक्तसे स्नान करायाहै इससे भौंहें सिकोड़ी फिर मुक़बिल ने अमर का गिला किया अमीर ने अमर को बुलाकर कहा कि यह कैसी चाल है आपस में ऐसी शत्रुता रखते हो अमर ने बिनती की कि यह वही कहावत है कि यह अपनेही मुख मियांमिट्ठू बनता है मुझसे भी सुन लीजिये अमीरने कहा कह क्या कहता है ? अमर ने कहा कि मनुष्य परदेश में दूसरे साथी का भरोसा रखता है और यह मुझको मिला तो न सलाम किया न मिला जो अच्छे मनुष्यों को चाहिये अब हम दोनों आपके सम्मुख समान हैं जैसी आज्ञा हो वह करें मैं तो उस के मिलने को खड़ाहुआ और यह गर्व समेत मुझ से घोड़े की बाग थामकर आप को पूछने लगा मैंने उससे कहा कि ऐ दुष्ट ! तुझको अमीर ने बादशाह के समीप सेवा करने के निमित्त भेजा है कि सैर करने को यह बहुत बुरा करता है कि सैर करता फिरता है तो यह मुझ से क्या कहता है कि तू मेरी बराबरी करता है आप इसका न्याय करें और इसको छोड़ आपके प्रतापही से यह दिन इसे ईश्वरने दिखलाया है कि बादशाह की दी हुई जड़ाऊ ख़िलअत पहिने है और तीन संदूक़ मोहरों के पाये हैं और कौनसी बात में यह मुझ से अधिक है यह क्या करे ? इसको अपनी धन सम्पत्ति का अभिमान है यह कहावत सच है किसीने कहाहै कि ईश्वर छोटे मनुष्य को धन प्रताप न देवे और किसी कमीने को बड़ा अधिकार न देवे अमीर ने अमर की बातें सुनकर मुक़बिल से कहा कि इस समाचार में तेरा अपराध है कि तुम दोनों को आपस में विरोध करना अनुचित है जाओ आपस में मिलाप करलो मुक़बिल तो मिलने पर राज़ी होगया परन्तु अमर ने इन्कार किया और कहा कि यह धन सम्पत्तिमान् और सेठ है और बड़े अधिकार पर है मैं बिचारा बेसामान और अधीन और दीन हूं मुझसे और इनसे समानकी कोई बात नहीं है और इनके आगे क्या हक़ीक़त है ? मुक़बिल ने देखा कि अमर तो मिलाप नहीं करता है तो एक संदूक़ मोहरों का अमरको दिया और कहा कि ले भाई ! अब तो मेरा अपराध

क्षमा करके अपना चित्त मेरी ओर से साफ़ कर अमर तो लोभ का सेवकही था मोहरें ले प्रसन्न होकर मिलगया दूसरे दिन ख़्वाजे बुज़ुर्गउम्मेद बादशाह के पासगया और अपने जाने और अमीर के आनेका समाचार वर्णन किया बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और विचार के अनुसार बुज़ुरुच्चमेहर सब अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेने का विचार किया बख़्तक ने सासानियों को बहँकाकर मना करने पर आरूढ़ किया कि सप्तद्वीपका बादशाह एक अर्बज़ादेकी अगवानी लेके और छोटे नौकर की इतनी प्रतिष्ठाकरे ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि हमज़ा बादशाह का पुत्र है उसने भी तुम्हारे साथ २ उपकार किया है कि तुमलोगों को लड़के वालों समेत एक भारी शत्रु से छोड़ालिया और उसपर ख़िलअतें आदि देकर बन्दि से छोड़दिया है मालूम हुआ कि तुमलोग अतिनिर्लज्ज हो और कुछ भी बुद्धि नहीं रखते हो बुज़ुरुच्चमेहर के समझाने से वह झगड़ा दूर हुआ और प्रत्येक मनुष्य अपने २ स्थानपर चुप होरहा फिर बादशाह चार हाथी के तख़्तपर सवार होकर अधिकारियों समेत सजधज बनाके अमीर उमराओं सहित अमीर की अगवानी को चले दो कोस सवारी गई होगी कि सामने से काली रेख प्रकट हुई जब वायु ने उस मैदान की रज उड़ाकर साफ़ किया तो बीस झण्डे तीस सहस्र सवारों के विदित हुए और उन सवारों के बीच में अमीर स्याह क़ैतासपर सवार देखपड़ा दायें बांह की ओर बादशाह बायें मल्ल दिखाई दिये और अस्त्र धारण किये हुए बस्त्र सजे शब्द करते बारह स्थान चौबीस लचक अट्ठाईस कोने का मुँह करते हुए विद्यार्थियों को साथ लिये ख़्वाजे अमर अय्यार भी चलेआते थे बादशाह ने दायें बायें आगे पीछे पियादह सवारों की सेना का तमाशा देखते हुए अमर को देखा कि पन्द्रह सोलह बर्ष का है और उसकी सुन्दरताई के आगे कोई संसार में नहीं है और सकलगुणनिधान अतिशीलवान् स्याह क़ैतासपर सवार है इस सजधज का मनुष्य आसमान ने भी संसार में न देखा होगा नौशेरवां की आंखें सब साथियों समेत अमीर पर पड़ीं अमीर बादशाह को देखकर घोड़े से कूद पड़ा और भेंट करने को आगे बढ़ा और झुकके सलाम किया और क़ैख़ुसरो का तख़्त जिसे हुरशाम लेगया था अपने शिरपर रख छत्र समेत बादशाह को भेंट दिया अमीर का तख़्त शिरपर लेजाने का कारण यह था कि जब क़ैख़ुसरोने तूरान बिजय करके ईरानपर क़ब्ज़ा किया था तो रुस्तम ज़ाल के पुत्र ने उस तख़्त को अपने शिरपर उठाकर तीस पग बादशाह के दर्शन को गयाथा इस कारणसे अमीर ने भी नौशेरवां की बड़ाई की कि तख़्त को शिर पर उठाकर चालीस पग गया और उसको फूलसा उठाकर इस वास्ते लेगया कि मैं रुस्तम से दशगुना अधिक बलिष्ठ हूं नौशेरवां इस चाल को देखकर अमीर से अतिप्रसन्न हुआ और अपने नौकरों में से एक को आज्ञा दी कि शीघ्र तख़्त अमीर के शिरपर से उतारले और आप तख़्त से उतरकर अमीर की ओर चला और अमीर को अतिकृपादृष्टि से देखने लगा अमीर भी दीनता से अति

शीघ्र आगे बढ़ा और बड़े प्रेम से चरणों पर गिरपड़ा नौशेरवां ने अमीर के दोनों हाथ पकड़कर गले से लगा लिया और उसी समय अपने दोनों पुत्रों हरमुज़ और फ़रामुर्ज़ को अमीर के मिलने को आज्ञा दी और सब सरदारों से मिलवाया और हरएक का अधिकार और नाम बताया॥

अमीर का मदायन नगर में जाना और रुस्तम की जगह पर बैठना और उससे अधिक बल और प्रताप दिखाना॥

लिखनेवाला इस वृत्तान्त को यों वर्णन करता है कि दूसरे दिन ख़्वाजे बुज़ुरुच-मेहर ने दरबार के भीतर अमर की बादशाह से नौकरी करवाई और उसके गुण और लक्षण की प्रशंसा बादशाह से की बादशाह ने अतिकृपा से अमर की ओर पांव फैलादिया कि चूम लेवे और हाथ को जंघापर रक्खा अमर ने बादशाह के पांव चूम कर हाथों को आंखों से लगाया और चालाकी से अंगुली से अँगूठी इस प्रकार से उतारली कि बादशाह को ख़बर भी न हुई और फिर और २ सरदारों से मिलने लगा जब ख़्वाजा गिराजउद्दीनबख़्त से मिलनेलगा तो चुपके से वह अँगूठी उस की जेब में डालदी उसी समय बादशाह घोड़ेपर सवार होकर लगाम पकड़कर मदायन की ओर चले अमर अपने साथियों समेत बादशाह के साथ रहा फलांग मारता हुआ चला अमर को इस चालसे मेहतरआतश जो नौशेरवांकी सभा में बड़ा चतुर और सरदारों में बड़ा था अमर की इस चाल से जलभुनकर क़बाब होगया पुकार कर अमर से कहनेलगा कि ऐ लड़के! गुरु गुड़ही रहा चेला शक्कर होगया यह स्थान तेरे चलने का नहीं है मेरे आगे तुझे चलना न चाहिये अपने क़ायदे से चल बादशाह के साथ तुझे चलना क्या काम है? अमर बोला कि प्रथम तो तुम बूढ़ेहो और मैं जवान और पराक्रमी दूसरे आगे तुम अकेले थे अब मैंभी आगया हूं आगे तुम को जाना अनुचित है अब लुट्टी लेकर एक किनारा पकड़के बैठिजाइये मेहतरआतश अमरकी ये बातें सुनकर आग होगया नर्म गर्म कहनेलगा बादशाह और अमीर ने दोनोंकी सुनी दोनोंकी ओर देखकर बादशाह ने आतश से पूछा क्या है आपस में क्या झगड़ा है? उसने वर्णनकिया सेवक पुराना चतुरों का सरदार है और सदा से आपने पालन किया है और यह लड़का मुझ को आपके साथ चलने नहीं देता नौशेरवां ने कहा कि अमर तू क्या कहता है? क्या तुझ को अपनी चतुरता का अभिमान है अमर ने प्रार्थना की कि कृपानिधान! चतुरता केवल बातों से मेल नहीं रखती वह गुण से समझी जाती है इस में बड़ा दौड़धूप का काम होता है जो आतश को इसकी परीक्षा करनी हो तो देर न करें मैदान पकड़े बादशाह ने कहा कि अमर यह बात तो तू ने बहुत अच्छी कही मैं प्रसन्न हुआ यहां से नगर का दरवाज़ा दो कोस है तुम दोनों एक २ तीर लेकर दौड़ो तुम में से जो प्रथम तीर दरवान को देआवे तो वह दूसरे पर बड़ाई लेजावे दोनों ने अङ्गीकार किया बादशाह की आज्ञानुसार एक २ तीर मिला दोनों हाथ पर हाथ मारकर

आगे थोड़ीदूर सवांरी से बढ़कर अमर पीछे रहा आतश आध कोस आगे बढ़ गया देखनेवालों ने कहा अमर ने नाहक अपनी प्रतिष्ठा खोई अन्त में मेहतर-आतश आगे निकलगया कि आतश नगर के निकट पहुँचा अमर ने यह समझकर कि देखनेवाले मुझपर हँसतेहोंगे उस वर को याद करके आतश के निकट फलांग मारकें पहरे के सिपाही को तीर देकें आतश के पीछे से दुलत्ती लगाई और गर्दन को ऐसा गांठा कि आतश चित्त गिरपड़ा और सब शीघ्रता की चाल भूलगया शिर में जो पत्थर की ठोकर लगी एक किर्च खोपड़ी की उंड़गई रुधिर बहचला अचेत होकर घबरा गया और पगड़ी उसकी उतारकर तीर द्वारपाल को देकर कहा कि मुझ को पहिंचान रख कि मेरा नाम अमर है मेरी चतुरंता सब्र कहीं प्रसिद्ध है और असत्य को अच्छीभांति समझलेता हूं ऐसा न हो कि कुछ ले देकर कहा कि प्रथम तीर आतश ने दिया है और अमर ने उसके पीछे दिया है बच्चा जो झूठ बोलोगे तो अपना किया पाओगे इससे सावधान होजाना लालच का काम न करना सच२ बादशाह से कहना द्वारपालक घबराया कि यह क्या हाल है ? अमर पीछे पांवों चलकर बादशाह के समीप जापहुंचा और सलाम कर मेहतरआतश की पगड़ी दिखलाई बादशाह उसकी चालाकीपर बहुत हँसे और आतश लाज के कारण बादशाह के पास न गया जब बादशाह की सवारी नगर के फाटकपर पहुँची कहा कि सेना साहबकिरां क़ातिल शादकाम स्थानपर उतरे और उसी स्थान पर सबके स्थान सवार और पियादे के स्थान बनें सबने पांति २ से डेरा किया और वह स्थान नदी के किनारे था किन्तु साहबकिरां बादशाह के साथ नगर में पहुँचा और वहां से क़िले में गया और साहबकिरां के देखने को सब नगरभर उमड़ा था छोटे बड़े स्थानों में खुशी थी कि साहबकिरां ने उन लोगों को बन्दि से छुड़ाकर सलूक किया था जो देखता था वह अमीर को आशीर्वाद देता था कि ईश्वर सदा इसको बनाये रक्खे और इसका तेज और प्रताप खुदा हराभरा रक्खे इसी भांति से साहबकिरां बादशाह के साथ दरबार की ड्योढ़ीपर आये बादशाह ने आज्ञा दी कि मुसल्मानी अमीरं तक की दाहिनी ओर बैठें और लोग अपने २ स्थानपर बैठें सबसे पहले अमर एक चौकी पर तकिया लगाकर बैठगया और मूछों पर ताव देनेलगा साहब-किरां से बादशाह ने कहा कि तुमको अख़्तियार है जहां चाहो वहां बैठो तुम्हारा घर है अमीर ने अपने चित्त में कहा कि ऐसी जगह पर बैठो कि कोई बराबरी का दावा न करसके क़हावत है कि बिल्ली को पहले दिन मारे जिससे तोता बचे बादशाह के तख़्त के निकट एक चन्दन की चौकी जड़ाऊ बिछी थी और वह बैठका रुस्तम का था सलाम करके उसी पर बैठगये जिस समय साहबकिरां ने ज़ीनपोश उठाकर पांव रक्खा सासानियों के कलेजे में गांसीसी लगगई चित्त में विचार किया कि आज का दिन तकरार का नहीं कलह समझलेंगे इस बैठने का प्रश्नोत्तर करेंगे बादशाह ने कई ढेर मोहरों के साहबकिरां के ऊपर नेवछावर किये अमीर ने भी

जो अच्छी २ वस्तु लाये थे बादशाह पर नेवछावर की बादशाह की आज्ञा से कन्द का शर्बत अमीर को दियागया पहले साहबक़िरां ने पिया फिर और २ सरदारों को दिलाया फिर बावरची भांति २ के खाने चुनकर लाया बादशाह ने साहबक़िरां समेत उसे खाया जब खाना खाचुके तब मदिरा चलनेलगी और मङ्गलाचार की सभा सजी मदिरा देनेवाले एक हाथ में मदिरा की बोतल लिये हुए और दूसरे हाथ में प्याला थांभे हुए उपस्थित हुए बादशाह ने अतिआनन्द में ख़्वाजे अमर से गाने के निमित्त आज्ञा दी अमर दाऊदीदुतारे को मिलाकर सबप्रकार के राग गानेलगा प्रत्येक छोटा बड़ा कान लगाके सुननेलगा वह राग गाये कि मियांसूरी फ़ीके होगये तांता भी-कान लगाकर सुननेलगा और सबओर से प्रशंसा का शब्द निकलता था मियां तानसेन मानों जी उठे उस समय नौशेरवां ने चाहा कि अँगूठी उतारकर देवें गाने का बदला लेवें देखा तो अंगूठी से अंगुली खाली है क्रोध करके कहा कि हमारी अंगूठी किसने ली है अभी हाथ से उड़ीजाती है कहीं गिर तो नहीं पड़ी है अमर ने कहा कि सिवाय इन लोगों के और तो कोई नहीं आया है जो वह इस अपराध में फँसे और इतने आदमियों से सुल्तान आलम की अंगूठी लेगया जो आज्ञा हो तो सेवक एक २ की तलाशी ले और आपके प्रताप से उसे निकाले और पुकार २ कर कहनेलगा कि यारो! जिसने अँगूठी पाईहो हुज़ूर में गुज़रानदेवे इनआम पावेगा नहीं तो उसको कष्ट मिलेगा इधर उधर ढूंढ़नेलगा और प्रत्येक कहता कि भलाहुआ कि हम दरबार से बाहर भी नहीं गये बादशाह ने अमर से कहा तो अमर ने शाह की आज्ञानुसार सब का झारा लिया नाम करने के हेतु सबकी जेब टटोली और कहा कि मुसल्मानों पर हमें कुछ संदेह नहीं है तुम हमारे लोगों का झारा लो इन्हीं लोगों में ढूंढ़ो जब अमर सब पहलवानों और सेनापतियों का झारा लेचुका बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर को आज्ञा दी कि अब तुम अपनी ओर के लोगों को देखो सब का झारा लो और अच्छी भांति से सब की कमर और कपड़े देखो और सब का झारा लिया जब बख़्तक की बारी आई उस की जेब में अंगूठी पाई और वह सब अमीर आश्चर्यवान् हुए और बख़्तक अतिलज्जित हुआ अमर ने बादशाह से हाथ जोड़कर कहा कि चालाकों को चोरी करते सुना था और मन्त्रियों का न सुना था न देखा था सो आज बख़्तक को देखा कि मन्त्री भी चोरी करते हैं जो दश बीस लाख की कोई बस्तु होती तो संदेह न था इस थोड़े पर नियत करना इन्हीं का काम है आपकी कृपा से इसके घर में बड़े २ मोल के रत्न होंगे उस पर भी यह नियत है किस प्रकार हो क्या सृष्टि में यह आतश का नाती है जो उसके भांति चाल पकड़ी है उस नमकहराम पापी ने सात ढेर शहाह के आपके पिता से चुराये थे इसने सप्तद्वीप के राजाकी अंगूठी चुराई तो क्या हुआ? यह तो अपने नाना से भी अधिक हुआ नौशेरवां ने बख़्तक को बुरा भला कहा और अमीर ने कहा कि चोर के हाथ काटना उचित है ऐसे मनुष्य के हाथ

काटना और दण्ड देना योग्य है बख़्तक ने अपने जी में कहां कि इस चालाक ने मेरे हाथ कटवाने की तदबीर की वहां की कसर मुझसे निकाली और बुज़ुरुचमेहर की सिफ़ारश से हाथ तो न काटेगये लज्जित होने से बचा परन्तु दरबार से निकाला गया और आज्ञा हुई कि बख़्तक को गर्दन पकड़कर दरबार से निकालदो और फिर कभी दरबार में न आनेपावे आज्ञा की देर थी कि उसी समय बख़्तक निकालागया अमीर ने थोड़ी देर के पीछे बादशाह से विनय की कि बख़्तक का अपराध कुछ नहीं यह चालाकी अमर की है बादशाह ने अमर की चालाकी देखकर आश्चर्य किया और बख़्तक को अमीर के कहने से दरबार में आनेदिया और वह अँगूठी अमर को कृपा की और उसकी चालाकी से प्रसन्न हुआ अमीर ने कहा कि तम्बू में जाकर आराम करो परन्तु प्रतिदिन स्नेहियों समेत दरबार में आयाकरो अमीर दरबार से बिदा होकर तिलशादकाम में पहुँचा और बादशाह महल में गये ॥

बहराम गिरदख़ाक़ान चीन के साथ बड़ी धूमधाम से मदायन नगर में गुस्तहम का आना॥

अब इस इतिहास को यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर तिलशाद में गये और दरबार के वस्त्र उतारे और शस्त्र खोलकर लेटने का मनोरथ किया कि बख़्तक का कामस्थानपत्र अमरके नाम इस मज़मून का पहुँचा कि पांच सौ रुपये नक़्द और पांचसौ का काग़ज़ तमस्सुक की भांति भेजा है कि यह रुपया आपकी भेंटका है अतिशीघ्र रुपया भेजके तमस्सुक फेर लियाजावेगा और कभी २ और भी कुछ आपकी भेंट में कियाजायगा आपसे यह प्रार्थना करताहूं कि अब ऐसा कभी दरबार में लज्जित न कीजियेगा जिसमें आपकी कृपासे मैं भी सासानियों में प्रतिष्ठितहूं अमर रुपया और तमस्सुक लेकर कृतकृत्य होगया और चित्त में कुछ विचार ईश्वर का धन्यबाद किया और कहा कि पहले पहल रुपये की सूरत तो देखी कि इतनी द्रव्य हाथ लगी ईश्वर ने घर बैठे इतनी द्रव्य कृपा करके भेजदी और उस पत्र के उत्तर में बहुतसा उज़रकिया और रुपयों की रसीद लिखभेजी दूसरेदिन अमीर साथियों समेत बादशाही दरबार में आये और फिर भी उसी चौकीपर बैठ गये और सासानी अमीर क्रोधितहो इस उपाय में हुए कि किसी भांति से अमीर-हमज़ा को बादशाह की दृष्टि में हलका करदेवें यह जो बढ़ २ कर बैठते हैं उसका फल इनको चखादेवें एक दिन अमीर ने विचारकर रीति के अनुसार उसी चौकी पर बैठना चाहा कि एक मनुष्य वस्त्र और अस्त्र सजेहुए दरबार में आया बादशाह से सलाम किया जब बैठ चुका तब अमीर की ओर तिरछी चितवन से देखकर बादशाह से प्रार्थना की कि मेरे पिता को आपने काबुलपर युद्धकरने के हेतु भेजा और उनके आसन पर एक अर्बज़ादे को बैठाया यह क्या प्रतिष्ठा और न्याय है और इसी जगह हमलोगों की प्रतिष्ठा और आबरू है वह थोड़ेही काल में विजय प्राप्त करके आताहोगा उस समय देखा चाहिये कि यह अर्ब किसभांति से इस चौकी पर बैठता है अमीर से यह बात सुनकर रहा न गया बादशाह से यह पूछा कि यह

कौन मनुष्य है और कहां का रहनेवाला है नौशेरवांने कहा यह गुस्तहम का पुत्र पोलाद है बहिराम मल्लखाकान चीनने शिर उठाया था मैंने इसके बाप को उसके पराजय करने के हेतु भेजा है सो वह उसकी पकड़ेहुए लिये आता है और जल्द पहुँचेगा यह चन्दन की चौकी जिसपर तुम बैठेहो उसीके बैठनेकी है यह स्थान उसीके बैठनेको कृपा हुआ है इस्से तुम्हारा बैठना अच्छा नहीं मालूम होता है कहता है कि यह चन्दन की चौकी मेरे बापके बैठने की है इनके बैठने को क्यों दी है ? अमीर ने कहा कि मैं भी यही चाहताहूं कि इसका बाप मुझसे बल करे जो जीते वह बैठे दूसरा उसकी अधींनताकरे पोलाद यह बात सुनकर क्रोधित हुआ और तिउरी चढ़ाकर बोला कि रे अर्ब ! मेरे बाप से पीछे बल करना पहले मुझसे बल करके पंजा मिलाले और अच्छी भांति बल करले अमीर ने कहा बहुत अच्छा पोलाद अमीर के समीप बैठा और अमीर से पंजा लड़ानेलगा अमीर उसका पंजा जीतगये और वह कुरसी से नीचे गिरपड़ा और लज्जित होगया अमीर पर खंजर खींच के दौड़ा अमीर ने उसका खंजर छीनलिया हुरमुज ने पोलाद से कहा कि ऐ पोलाद ! तेरा क्या मनोरथ है इधर आकर चुपका बैठ बहुत झगड़ा न कर नाहक में और दुःख पावेगा दरबार के मध्यमें बेइज़्ज़त करके निकाला जायगा वह नीचा शिर करके हुरमुज के समीप जा बैठा बादशाह ने अमीर से उजरकरके दरबार बर-ख़ास्त किया संक्षेप यह है कि प्रतिदिन अमीर दरबार में साथियों समेत आता था और जब दरबार उठजाता था अमीर तिलशाद कामस्थान पर जाकर बैठते थे दश बारह दिन के पीछे बादशाह को समाचार मिला कि गुस्तहम बहिराम मल्लखाकान चीन को चारसहस्र पहलवानों समेत बांधलाया है यहां से चारकोस के दूरपर ठह-राहै आपकी आज्ञा की राह देखता है जिस समय आज्ञा हो आकर उपस्थित हो आपके चरणों के दर्शन करे जो कि बख़्तक के उरमें अमीर की ओर से मैल भराही था सब प्रकार से उपाय बांधताथा कि अमीर की प्रतिष्ठा भंगकरै बादशाह उसकी अगवानी लेने को गया था और देशों २ इसका चर्चा था बख़्तक ने इसलागपर चाहा कि बादशाह को गुस्तहम की अगवानी को ले जावे और यह बात लोगों के चित्त में जमाई कि बादशाह जो अमीर की अगवानी को गये तो यह कुछ इनकी बड़ाई नहीं जो कोई शाही नौकर विजय प्राप्त करके आताहै उसकी अगवानी करते हैं ग़रज़ कि प्रार्थना करके बादशाह को गुस्तहम की अगवानी के हेतु लेगया और आपभी रकाबके साथ चला मार्ग के मध्य में बुज़ुरुचमेहरने बादशाह से प्रार्थना की कि अमीरहमज़ा का भी साथ चलना अवश्य है उसके चलने से आपकी सेना सुशोभित होती है बादशाहने उसीसमय अमीर को कहला भेजा कि हम गुस्तहम की अगवानी को जाते हैं तुम भी आओ और अपनी सेना और साथी साथ लाओ बादशाह एक कोसभर नगर से आगेगये होंगे कि देखा गुस्तहम अख्शजरीं का पुत्र गैंड़ेपर सवार मोछोंपर ताव देता झंडों की छाया के नीचे चलाआता है और चितवन

से ऐसा जानपड़ता है कि खाकांन मञ्चीन को बँधुआ करके लाने को छोड़ अपने समान दूसरा पराक्रमी नहीं जानता है उसको देखकर सासानीलोग चित्त में प्रसन्न हुए कि अब यह आगया है कि अमीर को नीचे करेगा चित्त के मंसूबे सब निकल जायँगे गुस्तहम ने घोड़े पर से उतरकर बादशाह के तख़्त का पाया चूमलिया। और अपनी बहादुरी और बहराम के पकड़नें और लड़ने भिड़ने का समाचार वर्णन किया बादशाह ने ईश्वर का धन्यवाद किया और गद्दी की ओर फिरा गुस्तहम ब-ख़्तक की सेना से पीछे रहगया और बादशाह के संग न गया फिरते समय मार्ग में अमीर मिले बादशाह ने अमीर से कहा कि आप भी गुस्तहम से मिलते आइये उस की बातें सुनकर थोड़ी देर जी बहलाइये अमीर ने कहा कि बहुत अच्छा मुझे आप की आज्ञा मानने में क्या इनकार है आपकी आज्ञा मेरे लिये अतिउत्तम है बख़्तक का वृत्तान्त सुनिये कि गुस्तहम से अमीर की चुग़ली करके कहा कि और तो और इस अर्बज़ादे को अपने बल का ऐसा अभिमान है कि वह आपकी बैठक पर बैठ-गया और पोलाद का पंजा भरीहुई सभा में लचाकर अतिलज्जित किया धन्य है कि आप आनपहुँचे शीघ्र चले आइये बग़लगीर होने के समय ऐसा दबाइयेगा कि थोड़ी सी हड्डियां उसकी नर्म होजावें कि जिसमें आपको समझेरहे और फिर आगे कभी आपके सामने अभिमान न करे ऐसी बातें जिसमें आगे न करे गुस्तहम ने कहा कि ऐसाही होगा इतने में अमीर की सवारी आन पहुँची गुस्तहम के डेरे में पहुँचे गुस्तहम अमीर को देखकर पैदल होकर अगवानी के हेतु आगे बढ़ा अमीर भी अपने घोड़े से उतरे दोनों बराबर सामने २ चले भेंट होनेके समय पहले गुस्तहम ने अमीर को अपने बलभर दबाया और स्नेहमय बातें कहनेलगा फिर अमीर ने भी प्रीति विदित करके उसको ऐसा दबाया कि गुस्तहम के नीचे से कई बार वायु निकलपड़ी लज्जित होकर अमीर के कान में कहा कि ऐ अमीर! तुम बड़े पराक्रमी हो इस बात को किसीके सामने न कहना मुझे कभी लज्जित न करना मेरी और आपकी यही प्रतिज्ञा रहेगी अमीर ने कहा कि ऐसाही होगा गुस्तहम और उसकी सेना भी उसके साथ चली और अमीर उसी स्थान में सैर करनेलगे और साथी भी साथही रहे कि एक ओर जो दृष्टि पड़ी देखा कि एक संदूक़ ज़ंजीरों से जकड़ाहुआ पीछे उसके चार सहस्र सवार साथ चले आते हैं पहरेवालों से पूछा कि इस संदूक़ में क्या है? वह बोले कि बहराम मञ्चख़ाकान बन्द है जो बड़ा पराक्रमी संसार में प्रसिद्ध है अमीर ने कहा कि बादशाहों और पहलवानों को कोई इस भांति से बन्द करता है? जो इन लोगों को इसभाँति से पकड़कर सताता है सन्दूक़ को पृथ्वीपर रखवाया और शीघ्र अपने नौकरों से खुलवाया देखा तो उसमें एक सुन्दर मनुष्य बन्द है और सांकरों से जकड़ा हुआ पड़ा है अमीर ने उसको संदूक़ से निकालकर बन्दि से छोड़ाया और अतर गुलाब उसके मुखपर छिड़का और शरबत सेब अनार के जो बहिंगीपर साथ थे उसके मुखपर छिड़काया जब उसको चेत हुआ अमीरने

पूछा कि ऐ बहादुर ! तू कौन है ? उसने कहा कि आपके घरपर पहुँचकर अपना ब्योरा कहूंगा अभी मुझमें इतना बल नहीं है कि आपसे बातें करूं मेरे मुख से बातें नहीं निकलती हैं अमीर ने एक घोड़ा मँगवाकर उसे सवारकिया और जितने बँधुये थे सबको छोड़दिया और अतिप्रतिष्ठा से अपने साथ लेचला और शीघ्र अपने डेरे में पहुँचे और बहरामखाकान चीन को अपने पलँगपर लेटाके सुगन्ध सुँघाने की आज्ञा दी और हरीरह बनवाके पिलाया और उसके साथियों के वास्ते अच्छा खाना बनवाके भलीभाँति से खिलाया जब खाकान मलकचीन के चित्त और हवास ठीक हुए तो अमीरसे कहा यद्यपि आपका समाचार आपसे पूछना अनुचित है परन्तु तुम्हारे चेहरा से रियासत और बड़प्पन और प्रताप साफ़ २ विदित है परन्तु यहां कोई दूसरा इसके योग्य नहीं कि आपका वृत्तान्त उससे पूछूं इस कारण आपही से प्रार्थना है कि आप अपना वृत्तान्त और नाम निशान बतलाइये कि मुझे जीवदान दिया नहीं तो कोई क्षण में मरजाता बहुतदिनों से मैं इस संदूक़ में बन्द था ईश्वर ने मुझे आपतक पहुँचाया वह दिन दिखाया मालूम होताहै कि कुछ दिन अभी मेरा जीना है अमीर ने कहा कि ऐ बहराम ! तुझपर गुस्तहम क्योंकर ग़ालिब आया और तू उसके वश में किसभाँति से हुआ ? उसने वर्णन किया कि संग्राम में मैंने उसे गिरादिया और अपने अधीन करलिया था और सेना को मारके उसको पकड़ा था चार वर्षतक यह मेरी अधीनता में रहा एकदिन मैं शिकार खेलता हुआ दूर निकल गया और सेना मेरी मुझसे दूर थी प्यासा जो हुआ तो इससे पानी मांगा इसने अवसर पाके बेहोशी मदिरा मिलाकर पानी मुझे पिलादिया जब मैं अचेत होगया अपने मित्र स्नेहियों को जो मेरीसेना में मिलेहुएथे बोलाया और मुझको पकड़के संदूक़ में बन्दकिया और विविधप्रकार का कष्ट दिया यह सुन अमीर ने उसको धैर्य और ढाढ़स बँधवाया बहराम ने प्रसन्नहोकर कहा कि ईश्वर धन्य है कि जिसका सप्तद्वीप में कोई बराबरी करनेवाला नहींहै उसकी रक्षा में प्राप्त हुआ और जब यह समाचार गुस्तहम को पहुँचा कि अमीर बहराम मलकखाकान चीन को बँधुओंसमेत अपनी सेना में लेगये उसको सिनासमेत बन्दि से छुड़ादिया और उसको पहुनई और शिष्टाचार से अति प्रसन्न किया यह सुन आग होगया और उसी समय बादशाह से जाकर ब्योरासमेत सब समाचार कहा बादशाह को भी अमीर की यह बात बहुत बुरी मालूम हुई अमीर को बुलाकर कहा कि ऐ अबुअला ! तुम जानते हो बहराम कासा कोई बैरी सप्तद्वीप में न होगा मेरा कुछ विचार न किया तुमने क्या समझके उसे छोड़ दिया ? अमीर ने कहा कि कृपानिधान ! आप सप्तद्वीप के बादशाह हो जो पंहलवानों और बहादुरों को इसी प्रकार से छल करके नीचे किया करेंगे तो लोग निडर होकर गाली देंगे इतिहासों में लिखा जायगा अब्दुल आबिद आदि बादशाहों की सभामें चर्चारहेगी कि नौशेरवां ऐसा नामर्द था कि उसके समय में पहलवान छल से बँधुआ होकर क़ैद रहते थे उसके नौकर और

अधिकारी पहलवान आदि छल करनेके हेतु आरूढ़ रहते थे और बहराम कैसा कौनसा पराक्रमी है कि मैदान के बीच में बिजय नहीं होसकती बादशाह ने कहा बहराम कहां है? उसे बुलवाओ दरबार में हाज़िर करो कि मैं उससे उसके पकड़े जाने का हाल पूछूं उसका वृत्तान्त मैं अपने कानों से सुनूं अमीर बहराम को अपने डेरे पर छोड़गये थे उसी क्षण उसे बुलाआ बादशाह ने उसकी ओर देखकर कहा कि गुस्तहम तुझे बहादुरी से पकड़ लाया या नामर्दी से अधीन और बन्द किया था बहराम ने प्रार्थना की कि आप यही देखलेवें कि मैंने चार महीने से लङ्घन किया है अन्न और पानी की सूरत नहीं देखी है उसपर सन्दूक़ में बन्द और सांकरों से जकड़ाहुआ बँधुआ आता था बाहर की हवा को तरसता था जो अमीर मुझे थोड़ी देर कटेहरे से न निकालते तो मैं मर चुका था इससे बिदित है कि अत्यन्त निर्बल हूं परन्तु इस अवसर में भी गुस्तहम मेरे सामने आवे तो उसके हाथ से तलवार न छीनलूं तो दण्ड के योग्य समझाजाऊं गुस्तहम सासानियों समेत उस समय दरबार में हाज़िर था बादशाह ने कहा कि यह क्या कहता है? गुस्तहम ने लज्जित होकर नीचे शिर कर लिया और कुछ भी उत्तर न दिया बादशाह ने फिर बहराम से पूछा कि अमीरहमज़ा से अपना बल करेगा वह बोला कि हाज़िर हूं पहलवानी का नाम करके मुख क्यों मोडूं अमीर ने कहा कि कृपानिधान! यह अभी अत्यन्त निर्बल है इसमें बल का चिह्न भी नहीं है जो चालीस दिनतक अच्छी भांति से खाना पावे तो फिर भी उसीभांति का होजावेगा उस समय इसका बल देखने के योग्य होगा और यह भी जानकर अपना बल मुझसे करेगा बादशाह को अमीर की यह बात बहुत पसन्द हुई अमीर और बहराम दोनों को पारितोषिक देकर बहुत कृपा की और आज्ञा दी कि ऐ हमज़ा! बहराम तुम्हारेही पास रहे उसकी सेवा और खाना तुम्हारेही अधीन हो चालीस दिन के पीछे तुम दोनों को कुश्ती लड़ाके दोनों का बल देखेंगे जब चालीस दिन व्यतीत होगये तब इकतालीसवें दिन अमीर बहराम समेत बादशाह के पास गया और प्रार्थना की कि बहराम से लड़ाइये भली भांति खापीकर तैयार हुआ है कुश्ती देख लीजिये बादशाह ने बहराम से पूछा कि तेरी क्या इच्छा है? वह बोला कि मैं हाज़िर हूं आपकी आज्ञा क्योंकर भङ्गकरूं बादशाह ने कहा कि अच्छी बात है हम भी तुमलोगों की लड़ाई देखेंगे अखाड़ा बनने के लिये आज्ञा दी वह शीघ्र बनायागया अमीर और बहराम बाघ के खाल की जांघिया और टोप पहिन लँगोट कस ताल ठोंक परस्पर बल करनेलगे दोनों ने गर्दनों में हाथ डाल कर एक टक्कड़ ऐसी मारी कि जो फोलादपर टक्कड़ पड़ती तो चूना होजाता किसीके मस्तक में कुछ न जानपड़ा फिर परस्पर में दोनों के दावँ पेंच चले परन्तु किसीका लङ्गड़ किसीसे न उखड़ा और चित्त होने की तो क्या चर्चा थी? अन्त में अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर बहराम को उठाकर शिर से ऊंचा किया बहराम ने कहा कि हे अमीर! मालूम हुआ कि तुझमें ईश्वरकृत बल है

संसार में तुझसा बली नहीं है आपके अधीन और सबप्रकार से मैं सेवकहूं मुझे पृथ्वी पर गिराके इतने मल्लों में लज्जित न कीजिये अमीर ने हलके से उसे पृथ्वीपर रखदिया चारों ओर से अमीर की प्रशंसा होने लगी बादशाह ने भी बड़ाई की अमीर ने कहा कि ऐ बहराम ! अब बादशाह की सेवा करना अपना मूलधर्म जानो और सदा अपना मालिक समझो उसने कहा कि मैं आपको छोड़ और किसीके पास नहीं रहूंगा बादशाह ने कहा कि तुम्हारे पास रहा तो मेरेही पास है और दो ख़िलअत मँगाकर अमीर और बहराम को दिये और अमीर बहराम को अपने डेरे में लाये और उनको अच्छी भांति आदर और व्यवहार से प्रसन्न किया और विविध प्रकार से शिष्टाचार करनेलगा और उसके रहने के लिये अलग स्थान बनवादिया अपनी सवारी में से चालीस घोड़े और बहुत से ऊंट आदि बहराम को दिये और चौथाई हिस्सा हुश्शाम की लूट का दिया और एक विनयपत्र में सब समाचार लिखकर अमर के साथ ख़्वाजे अब्दुल्मतलब के पास भेजा अब सासानियों का हाल सुनिये कि बख़्तक समेत सब गुस्तहम के निकट जाकर कहने लगे कि हमलोग हमज़ा के सामने प्रतिष्ठाहीन होगये हैं जो हमज़ा के निकालने के लिये कोई उपाय न करोगे तबतक हमलोगों को चैन न मिलेगा किसी भांतिसे जिन्दगी न होगी दिन २ बादशाह की कृपा उसपर होती है और हमलोगों की प्रतिष्ठा घटती जाती है गुस्तहम ने कहा कि बल में तो हमज़ा से कोई न जीत पावेगा परन्तु मैं दो चार दिवस में छल करके उसे मारूंगा उसका चिह्न भी मिटा दूंगा रात को तो यह सलाह हुई प्रातसमय गुस्तहम घोड़े पर सवार होकर अमीर के निकट गया और खुशामद करके आगे आया और अतिदीनता से अधीनी करनेलगा अमीर ने उसकी बहुत ख़ातिर की और दोनों सवार होकर बादशाह के दरबार में आये और मार्ग में बहुधा बातें मित्रता की करतेगये जब अमीर दरबार से उठकर आप तम्बूकी ओर आये गुस्तहम भी अमीर के साथ जाकर तम्बूतक पहुँचा आया प्रतिदिन दोनों पहर गुस्तहम अमीर के पास जाता और विविध प्रकार की खुशामदियां करता होते २ अमीर को भी गुस्तहम की ओर से कोई खटका चित्तमें न रहा एक दिन गुस्तहम ने अमीर से कहा कि आपकी जितनी कृपा मेरे ऊपर है सकल नगर में विदित है इस सूरत में मेरी सेवा करने और आपकी कृपा होनेका समाचार प्रकट करना अवश्य है इस हेतु से मेरी यह इच्छा है कि मेरे बाग़ में चलकर दो चार दिन आनन्दमङ्गल कीजिये और मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाइये अमीर जो निष्कपट और निश्छल थे उसका न्योता अङ्गीकार करलिया वहां पर यह रीति थी कि बादशाह सातदिन दरबार करते थे और सात दिन मकान में स्त्रियों के साथ विहार करते थे जब बादशाह का समय आन पहुँचा तब गुस्तहम ने अमीर से कहा कि इस सप्ताह में छुट्टी है आप मेरे बाग़ को चलें यह सप्ताह आप भी आनन्द समेत व्यतीत करें तो और लोगों में मेरी प्रतिष्ठा अधिक होगी अमीर

हराम मलिकख़ाकान चीन को साथ लेकर मुक़बिलआदि साथियों समेत गुस्तहम के बाग़ की ओर बड़े प्रताप से चला और आनन्दित होकर बाग़ के निकट पहुँचा गुस्तहम ने बाग़के भीतर अच्छे २ वस्त्रआदि अतलस व कमख़ाव के बिछाये थे और बारादरी में बिछौना बादशाहों कासा बिछवा रक्खा था अमीर उसके हौसिले को देख कर अतिप्रसन्न हुआ और अपने मित्रों से उसकी प्रशंसा करनेलगा गुस्तहम ने विविध प्रकार की मेवा अमीर के आगे धरी और मदिरावालों को बुलाया और मदिरा के प्याले चलनेलगे और प्रत्येक मनुष्य इस तमाशे को देखनेलगा और अमीर के आनेके पहले चारसौ पहलवान छिपाकर बैठा रक्खे थे और उनसे कहदिया था कि जब मैं तरऊपर तीन हांकें दूं तब तुम शीघ्र पहुँचकर अमीर और उसके साथियों को तलवार से मारडालना और बुजुरुचमेहर और बादशाह का कुछ डर न करना संक्षेप यह है कि जब गुस्तहम ने देखा कि आधीरात का समय आया और अमीर साथियों समेत ऐसे मद के वश हुआ कि काला और उजला नहीं पहिचान सका उसने अपनी सलाह के अनुसार तीन हांकें दीं और तीन तालियां बजाईं लोग गाड़े से निकले और गुस्तहम के साथ होकर अमीर के शीशपर आये गुस्तहम ने अमीर से आंखें भिड़ाकर कहा कि ओ अर्बज़ादे! तूने बहुत शिर उठाया था और अमीरों और अधिकारियों को अतितुच्छ समझता था देख अब तेरी मृत्यु निकट आन पहुँची यह कहकर अमीर के शिरपर जापहुँचा और एक तलवार से मारा बहराम यद्यपि नशे में चूर था परंतु अमीर पर जापड़ा और आपको ढाल बनगया वह तलवार गुस्तहम की अमीर पर तो न पड़ी बहराम की पीठ में लगी इस ओर से उस ओरतक खुलगया सब आंतें पेटसे बाहर निकलपड़ीं मुक़बिल ने चतुराई से मदिरा बहुत कम पान की थी थोड़ा २ पीता था और सभा का रङ्ग देखरहा था शीघ्र धनुष धारण करके बाण वर्षाने लगा और इतनेही कालमें सौ जवान पृथ्वी पर गिरादिये बाग़में लाशों के ढेर लगादिये गुस्तहम ने चित्तमें बिचारकिया कि हमज़ा का काम तो मैंने तमाम करदिया यहां रहना मुक़बिल के हाथसे मौत मांगना है अपने मित्रों समेत जो मुक़बिल के हाथसे बचे थे जीव लेकर भागकर किसीओर चलदिया जिस समय अमीर का मद दूर हुआ देखा तो सभाका ऐसा ढंग होगया है कि सब बारादरी रुधिरसे लालहोरही है बहराम एक ओर पेटफटा सिसकताहै और सौ जवान से अधिक मरेहुए पड़ेहैं मुक़बिल ने वह समाचार वर्णन किया कि उसने आपके साथ अच्छी भांति मित्रता निबाही जिससे आपको मारना चाहा और उसके छल का चर्चा सब कहीं छागया कि गुस्तहम ने बाग़में बुलाकर न्योता के बहाने से अमीर को मारडाला बादशाह सुनकर अति सशोक हुआ और शीघ्र हुरमुज़ ताजदार और बुज़ुरुचमेहर और बख़्तक को भेजा कि हमज़ा की ख़बर लो और उनकी शीघ्र दवा करो अलकमय सातूरदक को तीनसहस्र मनुष्यों से गुस्तहम के पकड़ने के हेतु भेजा और बहुतसा पारितोषिक देनेको कहा गुस्तहम यह सुनकर नगर से भागा और

शाहज़ादा हुरमुज़ और बुज़ुरुच्चमेहर बख़्तक समेत गुस्तहम के बाग़ की ओर ग
और बाग़ में पहुँचे अमीर को अच्छीभांति देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया औ
बहराम को घायल देखकर अत्यन्त शोच,किया अमीर ने ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर
कहा कि आप वैद्य हैं इसकी शीघ्र दवा कीजिये जो बहराम की जान न बचेगी त
मैं मक्केकी सौगन्द खाकर कहताहूं कि सासानी को जीता न छोड़ूंगा बुज़ुरुच्चमेह
बहराम का कठिन घाव देखकर बहुत घबराया दवा इलाज तो क्या यह सुनक
अचेत होगया इतने में अति प्रवीण ख़्वाजे अमर भी आये और आनन्दित होक
ख़्वाजे अब्दुल्मतलब का समाचार अमीर को तो सुनाया परन्तु बहराम का हाल
देखकर रोनेलगा और अमीर से कहनेलगा कि क्यों साहबकिरां! इसीभांति का स
लूक होताहै जिसपर उपकार करते हैं उसे इसी भांति का दण्ड देते हैं अमीर ने
कहा कि ऐ अमर! यह समय सिखाने का नहीं है बहराम के अच्छा करने का
उपाय किया चाहिये अमर ने ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि आप ईश्वर की कृपासे
बड़े हकीम हैं आपने क्या औषध विचार की है और मैंभी सोच रहाहूं ख़्वाजे ने
कहा कि इसके भारी घाव लगा है इसकी आंतें पेट में जावें और अपना स्थान पावें
तो टांके लगें और आंतों का पेटमें जाना कठिनहै और सब प्रकार से इसमें कठिनता
जान पड़ती है और दिलपर हाथ लगाने से शीघ्र मरजावेगा फिर कुछ न बन आ-
वेगा और यह हो नहींसक्ता है कि आंतों में हाथ न लगाया जावे और घाव सीनेका
कोई उपाय होजावे अमर बोला कि ऐ ख़्वाजे! यद्यपि आप मेरे गुरु हैं तदपि वैद्य
होना अति कठिन है और आजकल कोई मनुष्य इस गुणमें निपुणता नहीं रखता
है यह कहकर एक छुरा जेब से निकाल बहराम को दोनों पांवों से दबाकर हाथ
पेटकी ओर बढ़ाया ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर ने अमर से पूछा कि क्या मनोरथ है? अमर
ने कहा कि जितनी आंतें बाहर निकली हैं इनको हाथकी सफ़ाई से साफ़ करदूंगा
जिसमें घाव सियाजावे फिर मलहम लगाकर अच्छा करदूंगा ख़्वाजे ने यह सुनकर
आश्चर्य किया कि यह क्या कहताहै? इस बिचारे की जान लेने का मनोरथ किया
है बहराम ने अमरकी जो ये बातें सुनीं सन्नाटे में आया ज़िन्दगी से निराश हुआ
और अत्यन्त घबराया ठंढी सांस ज्यों उसने भरी कि सब आंतें पेट में अपने २
स्थान पर जापहुँचीं अमरने ख़्वाजे से कहा कि लीजिये अबतो आपका अभिप्राय
प्राप्त हुआ आप देखिये कुछ भी कठिनता न पड़ी टांके दीजिये घाव सीलीजिये
बुज़ुरुच्चमेहर ने अमर की बुद्धि की प्रशंसा की और देखनेवाले हँसते २ बेचैन होगये
ख़्वाजे ने बहराम का घाव सिया और शर्बत पिलाने की आज्ञा दी कि बेकार रुधिर
नष्ट होजावे और अमीर से कहा कि बहराम के हाथ पांव बँधवाइये कि हिल न
सके नहीं तो टांके टूटजावेंगे उस समय यह न बचेगा और मैं प्रति दिन दोनों
काल देखने को आयाकरूंगा और मन लगाकर इसकी दवा करूंगा यह कहकर
बुज़ुरुच्चमेहर और बख़्तक व हुरमुज़ताजदार अमीर से बिदा हुए और अपने घर

ो चले अमीर बहराम को प्यार करता था अपने मित्रों समेत वहीं रहा बुज़ुरुच-
हरने यह सब समाचार बादशाह से कहा बादशाह ने कहा कि ऐ ख़्वाजे ! यहां
ग़दाद से अच्छा कोई स्थान नहीं है और उस मकान से उत्तम नगर में और
ोई मुकान नहीं है मैं चाहताहूं कि हमज़ा को वहां कुछ दिन रक्खूं और अपनी
ामर्थ्यभर उसका आदर और शिष्टाचार भी करूं और कुछ बस्तु उसे देवें कि उसके
चित्त का शोच दूर हो ऐसा न हो कि हमज़ा समझे कि मेरी सलाह से यह काम
ुआ है और मुझे इतना दुःख दिया है और मैं ईश्वर की सौगन्द खाकर कहता
गुस्तहम के इस मनोरथ का हाल मुझे कुछ नहीं मालूम था और मैंने इस
ृत्तान्त को सुनतेही प्रतिस्थान उसके पकड़ने के हेतु मनुष्य भेजदिये हैं और सब
ोर परवाने और हरकारे भेजे हैं यह कहकर उसी समय अमीरपर पुण्य करने को
ामान भेजा अपने आने का मनोरथ भी किया दूसरे पहर बुज़ुरुचमेहर जो बह-
ाम के देखने के लिये गये अमीर से कहा कि बादशाह ने आज्ञा दी है कि मैंने
ः अधिकारी गुस्तहम के पकड़ने के लिये भेजे हैं और छिपेहुए परवाने और हर-
ारे भी रवाना किये हैं जिस समय वह दुष्ट आवेगा उसी सायत उसका पेट फाड़
र भुस भराजावेगा और मैं ईश्वर का अत्यन्त धन्यवाद करताहूं कि तुमको उस
ल के हाथ से किसी प्रकार का दुःख नहीं पहुँचा ईश्वर ने बड़ी कृपा की और यह
स्तु आपको दी है और कहा है कि हमारी ओर से बहराम का भी समाचार पूछना
ौर मुझसे दवा करने को बहुत ताकीद की है ऐसा उपाय करो जिसमें बहराम
ा घाव जल्दी अच्छा होजावे और कहा है कि अब मेरी यह इच्छा है कि इस
साहभर हमज़ा को लेकर बुग़दाद की सैर करूं और वहीं मित्र और उमराओं स-
त रहूं किन्तु वख़्तक और अमर न हों क्योंकि ये दोनों उपद्रवी हैं अमीर ने मान
लिया दूसरे दिन अमीर को बादशाह ने बुग़दाद में जाकर बुलवाया और अपने
सनद के निकट अमीर के लिये बैठका बनवाया साहबकिरां आदी और मुक़बिल
ो साथ लेगये बादशाह के पास पहुँचे बाग़ को देखा कि चार कोस का लम्बा चौड़ा
बहुत सुशोभित है और इस बाग़ की प्रशंसा इतिहास के बड़े होनेके कारण सं-
ेप वर्णन कीगई क्योंकि पहले इस बाग़ की तारीफ़ होचुकी है अमीर बादशाह के
ायें और हुरमुज़ताजदार के गोद में बैठे और मुक़बिल बुज़ुरुचमेहर की बाईं ओर
ठे और नाचनेवाले सजधज से आये और सभा सब प्रकार से शोभित हुई म-
ाचार होनेलगा पहले दिन बादशाह ने एक बारादरी में आनन्द किया जब दिन
तीत हुआ और सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा उदय हुआ उस समय मदिरा के
ाले चलने लगे बादशाह ने एक प्याला मदिरा का लेकर अपने हाथ से अमीर
ो कृपा किया अमीर सलाम करके उसको पीगये फिर तो और लोग घूम २ कर
ौर भर २ कर मदिरा देनेलगे यहांतक कि सबके सब नशे में मग्न होगये और
श्यादिक नृत्य करनेलगीं और इस प्रकार से गाया बजाया कि सबके सब चित्र

ोर ग
कैसे लिखे होगये अब आगे का समाचार सुनिये कि जब अमर अय्यार ने पा औ
दिन तक अमीर को न देखा घबड़ाकर मक़ान से बाहर निकला ढूंढ़ते और हर
करतेहुए बाग़ के निकट पहुँचा वहां देखा कि आदी सजे सजाये कुरसी प गी त
मदिरा पीरहा है और लोग सकल प्रकार की गज़कें उसके पास ले आते हैं मेह
प्रसन्न होकर खाता है और ऐसा प्रबन्ध है कि पक्षी भी बाग़ के दरवाज़े तक उनक
जा नहीं सक्ता है लोगों से पूछा कि यह बात क्या है ? अमीर तो बाग़ के भीतर होक
आदी क्यों बाहर बैठा है किसीने कहदिया कि बादशाह की आज्ञा है कि हाल
और बख़्तक बाग़ में न आनेपावें इस निमित्त अमीर ने आदी को दरवाज़े का स
ठाया है अमर आदी से सलाम करके कुरसी पर बैठगया आदी ने पूछा कि ोर ने
किस हेतु से आप आये हैं बोला कि दो दिनसे आपको न देखा था आंखों में े का
यारा छागया गिड़ता पड़ता तुम्हारे देखने को आयाहूं यद्यपि आप मुझको पा से
गये परन्तु मैं नहीं भूला आदी ने मदिरा और कबाब अमर के आगे खाने के ने
मित्त रखदिया अमर ने एक प्याला पिया और आदी से कहा कि आज मैंने पावें
लाल मोल लिया है देखो तो मैं ठग तो नहीं गया आदी अपने मनमें प्रसन्न हुआ
कि अमर मुझे जौहरी जानता है तब तो लाल परखवाने आया है ऐसा रत्न मे
देखने के हेतु लाया है आदी बोला कि ख़्वाजे ! तुमसे जौहरी कौन होगा तुमको कौन
ठग सक्ता है ? अमर ने जेब में हाथ डालकर मुट्ठी में रेत निकाली और आदी की
आंखों में झोंकदी आदी तो आंखें मलने लगा और लोग घबराकर आदी की ओ
देखने लगे और उसके मुँह और कपड़ों की राख झाड़ने लगे अमर कूदकर बा
में गया आदी ने झट आंखें धोकर पोंछीं और गर्द गुबार से साफ़ किया और स
लोगों से पूछा कि अमर कहां गया ? कोई न बता सका कि किधर को गया आदी
समझा कि मेरे डरसे भागगया बाग़ को अमर देखकर प्रफुल्लित होगया कि उम
भर ऐसा बाग़ देखा सुना न था सैर करता हुआ उस महल की ओर गया जह
बादशाह और अमीर बैठेहुए थे और उस महल के निकट एक सुन्दर नहर थी
उसी स्थान में एक वृक्ष लगाहुआ था उसके तले बैठकर दुतारा मिलाकर गानेलग
अमर का गाना मृतक को जिलाता था अमीर के कान में जो उसकी तान का शब्द
गया तो कहा कि हमने आदी को मनाकिया था कि अमर को बाग़ में न आने देन
फिर यह यहां क्योंकर आया जाओ आदी को तो बुलालाओ बादशाह ने अमीर
को क्रोधवान् देखकर कहा कि आदी को बुलाना कुछ काम नहीं है हमने अमर क
अपराध क्षमा किया अमर को बुलालाओ उसके बुलाने के हेतु चोबदार भेजा जो
अमर को बुलावे चोबदार अमीर के कहने से अमर के निकट गया और कहा कि
तुमको बादशाह बुलाते हैं उसने उत्तर दिया कि जिस सभा में बादशाह और अमीर
से लोग बैठे हैं वहां मुझ दुखिया का क्या काम है ? जो चालाकहूं और ऐसी सभा
जहां विविध प्रकार के राग और रङ्ग और मङ्गलाचार होरहा है वहां दीन दुखिय

का क्या काम है ? मैंने बुग़दादकी प्रशंसा सुनी थी इस निमित्त में भी आयाहूं और एक कोने में बैठाहूं और फूल का खिलना और बुलबुलों का बोलना सुनरहाहूं में जो जाऊं तो कदाचित् किसी का चित्त मुझ से अप्रसन्न होजावे तो मैं उसके हाथ से कष्ट सहूं इससे अच्छाई और भलाई केवल अलगही बैठने से होती है ॥

दोहा। यदि संसारमें स्वर्ग है, एकान्तहि के माहिं। संगति बुरी है नर्क ते, ताते कोहि विधि जाहिं॥

चोबदार लाचार होकर फिरआये और उसकी बातें बादशाह के सामने वर्णन कीं बादशाह सुनकर अत्यन्त हँसे और वहांके सबलोग हँसते २ लोटगये बादशाह अमीर का हाथ पकड़ेहुए महल से बाहर आये और फुलवारी की सैर करतेहुए उस ओर को चले कि जहां अमर बैठा गारहाथा अमर ने देखा कि बादशाह और अमीर सभासमेत इधर को आते हैं एक फ़लांग मारकर बादशाह के चरण छुये और आशीर्वाद देकर कहनेलगा कि मुझको आपसे यह आश न थी कि मुझे सभा में आने के हेतु मना करेंगे और हमज़ा को तो क्या कहूं? यह तो बड़े मित्रपालक व सुशील हैं कि अकेले मज़े उड़ाते हैं और थोड़े से समाचार पर जीवारों को भूलजाते हैं बादशाह हँसपड़े और अमर का हाथ पकड़कर महल में लेगये जब तख़्त पर बैठे अमर को मदिरा बांटने के हेतु आज्ञा दी अमर प्याला भर २ कर पिलानेलगा रात भर तो मदिरा पान में ब्यतीत किया जब सबेरा हुआ उस समय अमर नये २ सप्तबन्द को जोड़कर ऐसा बजाया और अतिमृदु बैन से गाया कि बादशाह और अमीर सभासमेत फूट २ कर रोनेलगे और रूमाल पर रूमाल अमर पर वर्षने लगे और बादशाह ने मोतियों से अमर का दामन भरादिया और बहुत कुछ पारितोषिक दिया और वह महल बहुत सुन्दर सुशोभित सजाहुआ था वहां अमीर को लेकर जाबैठे अब दो बातें बख़्तक की मैं वर्णन करके सुननेवालों को हँसाता हूं वह बुग़दाद में अमर के जाने की ख़बर सुनके अचेत होगया पेट पकड़के फिरने लगा कि यह क्या अन्धेर है कि अमर बुग़दाद में पहुँचा और मैं न जासका ईश्वर जाने अमर जब मुझे वहां देखेगा तब मेरे निमित्त क्या करेगा? यह सोचकर कुछ कमख़ाब आदि के थान नाव में रखकर घरसे बाहर निकला दरवाज़े पर पहुँचा आदी से मिलाप करके मित्रता विदित करनेलगा आदी ने पूछा कि आप किस हेतु आये हैं कहा कि आपके निमित्त कुछ पदार्थ भेंट लायाहूं इसे अङ्गीकार कीजिये और मुझे कृपा करके बाग़ के भीतर जाने दीजिये आपकी मुझ पर बड़ी दया होगी आदी ने यह सुनकर अत्यन्त क्रोध किया और जल भुनकर कहनेलगा कि बख़्तक क्यों अभाग्य दशा आई है मुझे तूने लालची बनाया कि लालच देखाकर बाग़ में जाऊं जो तुझे प्रतिष्ठासमेत घरजाना हो तो अच्छी बात नहीं तो अभी तुझे सिपाहियों से निकलवादूंगा बख़्तक मानहीन होकर घर फिर गया दिनभर तो रो धो काटा जब रात्रि हुई एक नमदा ओढ़कर और बग़ल में बकुचा अपने कपड़ों का चोरों की भांति छिपा बुग़दाद की ओर गया और दीवारके नीचे पहुँचा और गठरी तो बाग़ के

भीतर फेंकदी और आप नाबदान के मार्ग से घुसा अब ख़्वाजे अमर का हाल सुनिये कि उसे सजेहुए महल में बादशाह की आज्ञा से मदिरा देरहाथा कि पसुली फड़की और ढिठाई की आग हृदय में भड़की अर्थात् चित्त में यह विचार किया कि इस भांति से गुस्तहम ने भी अमीर का न्योता कियाथा ऐसा न हो कि वही सामान यहां भीहो और जगह चलकर हाल लेना चाहिये इधर उधर देखा तो कोई बहाना करके महल से निकला और रविशों पर फिरनेलगा और फुलवारी की सैर करता इधर उधर देखता हुआ दरवाज़े के निकट जापहुँचा आदी उसी समय किसी से कह रहाथा कि आज बख़्तक मुझे घूस देने को आयाथा मुझे भी अपने बाप के समान नमकहराम समझकर लालच से बाग़ में जाया चाहता था यह बात जब अमर ने सुनी चौंक उठा जिस समय बख़्तक इस मनोरथ से यहांतक आया था तो अवश्य किसी न किसी भांतिसे वह बाग़में आवेगा अब अच्छी भांति से झाड़ी आदि सब देखनेलगा और बाग़ में ढूंढ़ना आरम्भ किया एक दृष्टि उसकी गठरी पर जापड़ी दूरसे देखा कि गठरी दीवार के तले पड़ी है उसे जो खोला तो उसमें बख़्तक के कपड़े दीख पड़े उसका मनोरथ पूर्णहुआ अति कृतकृत्य होगया फूला न समाता था गठरी तो एक कोने में वृक्षों के पत्तों से छिपादी और आप ढूंढ़नेलगा कि इस बाग़ में किधर से आनेका रास्ता है यहां कब किसी का निबाह है जो ध्यान लगाकर नाबदान में देखा तो कोई मनुष्य शीश निकालकर इधर उधर देखरहा है और फिर शिर को खींच लेता है समझा कि यही बख़्तक है समझा कि यह वही निर्बुद्धि है ख़्वाजे अलफ़पोश जो बाग़वानों का मालिक था उसके पास जाकर कहा कि तू सुख नींदें लेरहा है वहां बाग़ में एक चोर नाबदान के मार्ग से घुसा चाहता है मैंने आहट पाकर तुझे ख़बर दी है अब तू जान और तेरा काम जाने वा और जो किसी प्रकार की ढील हुई तो तू है और बन्दीख़ाना है वह घबराकर कुछ माली साथ लेकर बेलचे समेत उठा और बाग़ की दीवार के नीचे लुकरहा ज्योंहीं बख़्तक नाबदान से बाहरनिकला मालियों ने लिपटकर पकड़लिया यद्यपि उसने बहुतसा कहा कि मैं बख़्तक हूं किसी ने न माना और एक वृक्ष की डाल में लटकाकर मार पीट करनेलगे अच्छी भांति से उसकी ख़बरली जब अच्छी भांति से हड्डियां बख़्तक की नर्म होचुकीं और पीठ और पसुलियां फूलचुकीं अमर ख़्वाजे अलफ़पोश से पुकार कर कहनेलगा कि ख़्वाजे अलफ़पोश क्या है? यह हल्ला गुल्ला कैसा होता है? उस ने कहा एक चोर पकड़ा है और उसे वृक्ष में बांधा है बख़्तक ने जो अमीर की आवाज़ सुनी अमर को पुकारा और दूसरी ज़बान में कहनेलगा कि ख़्वाजे अमर इन दुष्टों के हाथ से छुड़ा मैं उमरभर तुम्हारा उपकार मानूंगा किसी काम में तुम से मुहँ न फेरूंगा अमर ने ख़्वाजे अलफ़पोश के निकट आकर कहा और बख़्तक के छुड़ाने के लिये सिफ़ारश करनेलगा कि सच यह बख़्तक बादशाह का मन्त्री है ईश्वर ने इसे किस दुःख में फँसाया शीघ्र छुड़ादो जितने बाग़वान थे सब कहने

लगे कि ख़्वाजे साहब यह आप क्या कहते हैं ? बख़्तक की क्या कम्बख़्ती है कि इस प्रकार से नङ्गा होकर नावदान के बीच में होकर आवेगा वह बादशाह के निकट रहताहै आपको क्यों चोर बनावेगा यह ठीक जानो कि यह चोर है और यह बड़ा पराक्रम करके आया है बाग़ में आनेका मज़ा तो चक्खे और जो तुमने कहा उसेभी हमने माना कि यह बख़्तक है तौ भी इस समय नहीं छोड़ेंगे प्रातःकाल बाग़ से बाहर न जानेदेंगे बादशाह के सामने जैसा होगा वैसा होगा बख़्तक ने अमर से कहा कि मेरे बस्त्र देते तो मैं पहिनलेता अमरने कहा कि मैं तेरे बस्त्र नहीं जानता कि कहां हैं और जो इन लोगों ने लिये भी होंगे तो इनसे मेल भी नहीं है जो उन से दिलवादूं और तुझे पहिनादूं यह कहकर अमर बादशाह के समीप गया तमाम रात मदिरा बांटतारहा जब प्रातःकाल हुआ तब बादशाह से विनय की ॥

सोरठा। ऋतुबसन्त की आहि, बग्र महक सबही रह्यो। सुमन लिये क्या क्याहि, बुलबुल मृदु बोलत बचन॥

ठण्ढी बायु चलरही है और प्रातःकाल फूल फूलरहे हैं बादशाह के जी में आया कि अमीर का हाथ पकड़कर सभा समेत बाग़ की सैर करने के लिये चलें और अमर भी साथ होकर बादशाह को उसी ओर लाया जहां बख़्तक नङ्गा वृक्ष में बँधा हुआ था बख़्तक बादशाह को देखकर गुलमचानेलगा कि कृपानिधान! मालियों ने मेरा यह हाल किया और उधर से ख़्वाजे अलफ़पोश ने आकर विनय की कि रात को एक चोर नाबदान के मार्ग होकर बाग़ में आया था नौकरों ने उसे वृक्ष में बांधरक्खा था जब चार चोट की मार पड़ी तब कहताहै कि मैं बख़्तक बादशाह का मन्त्री हूं कुसमय के कारण यहां आनफँसाहूं बादशाह और अमीर ने जो ध्यान करके देखा तो सचमुच बख़्तक वृक्ष में बँधा हुआ देखपड़ा अमर ने बढ़कर कहा कि आज बाग़ में नया फूलफूला बख़्तक तो बड़ा समझदार और बुद्धिमान् है उस की कम्बख़्ती थी कि यहां आता और आपको आफ़त में फँसाता शायद कोई भूत उसके भेष में आपको दिल्लगी और तमाशा दिखारहा है और सन्देह नहीं है कि कुछ देर के पीछे उड़जावे फिर इस स्थान में किसी को देख न पड़े अमर यह कह रहा था और बादशाह सैर करतेहुए आगे बढ़े तो अमीर ने अपने मन में विचार किया कि देखने से जानाजाता है कि इसमें अमर का भी मेल है आपकी यहां भी बुद्धि बिशेष प्रकट है बख़्तक को देखकर बादशाह खिलखिलाकर हँसा और जितने हाज़िर थे सब हँसी में ऐसे बेचैनहुए कि हँसते २ गिरपड़े अमीर ने उसको खुलवाकर आफ़त से छुड़ादिया और उसकी देह देखी तो तमाम शरीर में घाव के सिवाय कुछ नज़र न आया शरीर से रुधिर बहरहा है चांद ऊंची होगई है बादशाह ने क्रोधवान् होकर कहा कि इसीतरह से इसे यहां से निकालदो अमीर ने उसका अपराध क्षमा करवाया और उसके बस्त्र अमर से तीनसौ रुपये को मोल लेकर पहिनाये और दिलासा दिया बादशाह ने बाग़ हस्तमुर्ग़ जो बग़दाद के बीच में नग के समान बनाहुआ था उसे देखनेकी इच्छा की और उस बाग़ में अमीर और

बुज़ुरुचमेहर और हुरमुज़ताजदार और मुक़बिलबख़्तक और सब सरदारों समेत गये और कहने और देखने में वह नाम के समान था उसकी बनावट स्वर्ग के समान थी और अमर ने अपनी किताब में बख़्तक का नाम सब से पहले लिखा था बादशाह के सामने मसख़रापन करनेलगा कि कृपानिधान! बख़्तक बिचारे की हड्डियों को मालियों ने बेलचों से मारकर अत्यन्त चूरकिया है और शिर में बाल नहीं रक्खे अच्छा साफ़ करदिया है और जहां २ फूला है वहां २ चमकरहा है जो उसको मोमियाई कृपा होती तो उस पर बड़ी दया कीजाती अब तो अपराध हुआ कि आप की आज्ञा भङ्ग की कि बाग़ में आया सो उसका फल मिला अब इससे ऐसा अपराध न होगा कभी आज्ञाभङ्ग यह न करेगा यह कहकर फिर बख़्तक की ओर शिर उठाया और उससे कहनेलगा कि हाथ जोड़कर प्रणकर कि फिर ऐसा अपराध न होगा अमर बख़्तक को मसख़रा सबजगह बनाता था बादशाह ने कहा कि आदी को तो बुलावो जब आदी आया बादशाह ने कहा क्यों आदी हमने तुमको धैर्यवान् जानके दरवाज़े का रक्षक किया तिस पर भी बख़्तक बाग़ के भीतर आगया यह सुन आदी ने यह प्रार्थना की कि कृपानिधान बख़्तक का क्या अपराध है? जो आपकी आज्ञा बिना बाग़ में पाँव धरे मेरे निकट आया था कि मुझसे भेंट लो और मुझे बाग़ में जानेदो मैंने उसको झिड़कदिया वह लज्जित होकर अपने घर चलागया बादशाह ने कहा कि देखो तो वह कौन है बख़्तक है या कोई और है आदी बख़्तक को देखकर क्रोधयुक्त हुआ और गर्दन पकड़कर बोला कि बाग़ से निकलकर देखियेगा कैसीगति बनाताहूं और किसभांति से आपके साथ सलूक करताहूं अमीर ने आदी को मनाकिया कि अब बख़्तक से मत बोलना बादशाह ने उसका अपराध क्षमा किया है अब तुम अपने स्थान पर जहां बैठे थे वहीं बैठो आदी तो बाग़ के दरवाज़े पर गया और सभामें प्याले चलने लगे मदिरा को लियेहुए लोग घूमने लगे इतने में सूर्य अस्त हुआ और चन्द्रमा ने अपना प्रकाश बिदित किया सेवक दीपक और फानूस ले २ कर प्रकाश करनेलगे और मङ्गलाचारी लोग आये गीतराग होनेलगे और बिबिध प्रकार से अमीर को प्रसन्न करते थे जो कि बादशाह सोये न थे उस दम बादशाह की आंख लगगई अमीर भी वस्त्र बदलने के हेतु उस महल से बाहर आये मित्रस्नेही भी उनके साथ सैर करतेहुए बाग़ के एक कोने में आये एक नहर वहां पर देखी जिसकी स्वच्छता के आगे दर्पण लज्जित होता था उसका पानी झँझरियों की राह से बाहर जाता था मुक़बिल से कहा कि हम स्नान करके वस्त्र बदलेंगे मुक़बिल ने अमीर की पोशाक उतारी और नई पोशाक बदलने के हेतु मँगवाई अमीर उस हम्माम में नहानेलगे एकाएकी मलका मेहरंगेज़ नौशेरवां की पुत्री जो महल के ऊपर झरोखों में बैठीहुई इधर उधर देख रही थी उसका रूप देखकर अचेत होगई॥

दोहा। रज सम को शुभरूप ने, तारा कीन्ह प्रकाश। पुनि खद्योत जो देखही, रबिसम होय हुलास॥

सक़लबाग सो जरउठा, रूप बिद्युवत जानि। फूलबृक्ष से जो गहै, सम चिनगारि निशानि॥

अमीर पर जो उसकी दृष्टि पड़ी स्नेहरूपी बाण उसके कलेजे के पार होगया स्नेहरूपी बाण खाकर चित्त में बिचार किया कि मुझको तो इसके रूप ने घायल किया बैठे बैठाये बिरहा का घाव और दाग़ स्नेह का दिया इसका सावधानी से जाना भलाई नहीं है गजरा गले से निकालकर अमीर की ओर फेंका वह अमीर के कांधे पर गिरा अमीर ने जो उधर देखा तो ईश्वर की रचना की शोभा दृष्टि पड़ी ढाढ़स न बांधसका॥

चौपाई। चन्द्रबदनि देखी त्यहि काला। परी ते अधिक सजी नवबाला॥
रूप स्वरूप कहैं केहि भांती। कोइ उपमा नहिं हृदय समाती॥

उसको देखकर पानी में गिरे मुक़बिल ने कूदकर अमीर को सम्हाला और गोद में लेकर पानी से बाहर निकाला अमीर ने ऐसी बिरह की आह खींची कि आनन्दरूपी खलिहान में आग लगगई बिरह की चिनगारियां चित्त में भड़कने लगीं और डाह के आंसू नेत्रों से टपकनेलगे॥

दोहा। बिरहआग अति है कठिन, उदधि होत भसमन्त। पाहन में जो लागई, पुनि त्यहि मिलै न अन्त॥

चौपाई। आवत याद दिवस जेहिकाला। थे जो रहित शोक अआला॥
रहा न आह लाह तन माहीं। श्वास कठिन व्याप्यो जग नाहीं॥
आंसू नदी सरिस नहिं बहई। मुख नहिं पियर कतहुँ रँगलहई॥
तन बिभूति ऊपर नहिं लायो। खाकी सरिस न रूप बनायो॥
काम न लीन कतहुं जगमाहीं। जो अपनेहि हेतु लेलाहीं॥
निशि दिन रहे अनन्द समेतू। कतहुं न देख्यो शोक निकेतू॥
जलबिन मीन चित्त नहिं भयऊ। सदा प्रफुल्लित बहुबिध रहाऊ॥
रोना सेकन जाग्रत जानेउ। भूतबश्य कतहुं न उर आनेउ॥
फुलहारी शरीर जग रह्यऊ। सदा प्रफुल्लित औ सुखभयऊ॥
डाह आंसु अरु शोक कलेशू। रहै कौन ताको उपदेशू॥
बाग़ जगत की बायु न व्यापी। चित में चिन्ता कतहुं न कापी॥
गुच्छा मनकर सदा हुलासू। भयो न फूल कतहुँ कुम्हिलासू॥
रोवत देखि कहौं कसरोना। शोक आँसु ते कस मुख धोना॥
चन्द्रबदन कर बिरह बियोगू। कस उर धरैं जगत के लोगू॥
मन चित धर्म बुद्धि अरु ज्ञानू। कस परिहरैं बिरहबश जानू॥
मृगनयनी के बश होय लोगू। सहैं अन्याय कठिन जगयोगू॥
बिरह बसत जग में कह अहई। बिरह कहत काको जग रहई॥
अब जो देखि यहै जिय जाना। कठिन बिरह नाना बिध माना॥
अतिहै अधम अगम बिरहागति। हो जो बश्य हरैं ताकी मति॥
बिरहा अति अकाम नरहेतू। टूटै ज्ञान धर्म जेंहि सेतू॥
पावक सम अहै बिरहनिकेतू। धर्म कर्म जरि ज्ञान समेतू॥
मारग जेंहि बताय जग कोई। होय बटपराधीन धन सोई॥
मित्रकरैं बैरी होय जाई। अस चरित्र जग अहै गुसांई॥

दोहा। नेहरूप पावक बिषय, लखो न कौनउ भाव। सो पावक उर आइकै, मम तन कीनो घाव॥

चौपाई। रोदन बारि बहै मुख धारा। सूझै नहिं जग पार अपारा॥
जरोजात तन संशय नाहीं। कठिन सो पावक या जग माहीं॥
जलगो इसी आग के माहीं। सत्यकहौं नहिं यहै बृथाहीं॥

अस प्रचण्ड जग में है नारी। लाखों गृह फूंके चिनगारी ॥
बिपिनमध्य फरहाद बसायो। शीरीं काज कठिन दुख पायो ॥
वामिक पुनि उजराबश भयऊ। सकलप्रकार दुसह दुस सह्यऊ ॥
सो पुनि कौन मोर अस हाला। डारेउ कठिन हृदय जञ्जाला ॥
नेह मांझ आनँद न हुलासू। नहिंसुख पुनि नहिं कछुकसुपासू॥
तरस रहा चित मोर सनेहू। जापर अहै न सुख कछु लेहू ॥
है जिहि बश बिन वहि-सुखनाहीं। बिरहवन्त के हृदय समाहीं ॥
जिवघातक ते परा है पाला। की जिवजाय कि मिलि है बाला ॥
जान बूझ के भयो वियोगी। बिरह कठिन ताकर भय रोगी ॥
सुमन सुचित है फूल को रूपा। देखो सदा सनेह अनूपा ॥
नहिं कुछ.चाह युवति मन माहीं। कुआं मध्य अब परो अथाहीं ॥
कुबरी केर फेर. बश भयऊ। अन्त पयोधि बिरह बिचगयऊ ॥
कृष्ण रात ते अधिक असूझा। भयो अस हाल जाय नहिंबूझा ॥
धाम बंदिखाना सम लागे। काम सफल देखत चित भागे ॥
कारण यह सुखनाशक केतू। और कछुक दूजो नहिं हेतू ॥
जुलफ के बदले बास कस्तूरी। थी किमि हीन भीन जो पूरी ॥
मृगनयनी चन्द्रवत प्रकाशी। ताहि देखि नीथार गुणाशी ॥
था केवल मोहिं बिपति बेसाहू। लीन्ह मोल कीन्हेउ उर दाहू ॥
खड्ग विचित्र धार ते मोहीं। मरन बदा सोई पुनि होहीं ॥
भौंह कटार फार उर दीन्हा। अगणित कष्टबास तन कीन्हा ॥
दुसह बियोग बिछोह कलेशू। रहै सहन सब भांति भदेशू ॥

दोहा। रहै बरावा उचित मोहिं, दृष्टि कटीली जान। नहिं कीन्हों फल पायऊं, रुधिर करत औपान ॥
मानुष के हित दृष्टि अस, बेगि कटा करिदेय। मनो कटारी बाढ़िया, शान धरेव अब टेय ॥
उचित रहै बातें मुझे, भागों तीर समान। दुख कछु मोहिं न ब्यापतो, जो करतेउँ परमान ॥
चन्द्रबदनिके नयन शुभ, और कपोल प्रकाश। कर्ता सरिस चित झाइंह, मानत अधिक हुलाश॥
मिसी जमी इनदशनपर, जो मरतै हम नाहिं। तमनिशिमेंसबनखतको, किमिदिखतेअकुलाहिं॥

सोरठा। चक्षुहीन की भांत, चाहरूप मुखपर गिरा। कूपमांझ धसिजात, अच्छा था जो बूड़तो ॥
तनपर थाकोवार, सकल सुःख अपनोदियो। बर्णों कौन प्रकार, जस दुख ब्याप्यो हृदय में ॥
हौं अमानजेहि भांति, अस जग कोउ दूबर नहीं। अहैं कठिन सब भांति, अस बलाय में हौं फँसा ॥
जेहिमें मरे बीमार, ईश कोय जनि फाँसिये। दूसर रोग हज़ार, पै यामें नहिं होइ कोइ ॥
दिन ब्यतीत जोहोय,निशि आवत धड़काहिया। नेह को नाम जगोय, जूड़ी आवत ताहि छुनि ॥

चौपाई। यहि बिधि नेह कीन्ह उर घायल। पावक सरिस बाग्र मोहिं थायल ॥
सुगँध फूल ब्रह्माण्ड नशावै। यहि बिधि नेह मांझ दुख पावै ॥
कतहूं रोदन कतहुँ मशाना। कंतहुँ बिलाप सरीलगि ठाना ॥

सवैया। भावे न धाम न काम हमैं नहिं बाग्र कि सैर को चित्त चलै।
नहिं नींद न भूख न प्यास कछू निशिबासर शोक हृदय में हलै ॥
असनेहके मेहमें भीजो शरीर करेर नहीं केहि भांति टलै।
कबि कोबिद लोग बिचार कहैं वह दृष्टि कटारी सदैव शलै ॥
कोइ मित्र सनेही नहीं जगमें चित ब्याकुलताको जो शान्त करै।
क्षणधाम औ जंगल मांझ क्षणै क्षण जाउँ नदी तट धाइ फिरै ॥
केहि भांति करों चित धीरज सों पुनि शोक कलेशहि कैसे हरै।
कबि लोग कहैं कोउ न्यायकरै फिरयाद कहो केहि भांति सरै ॥

दोहा। कुसमयका गिलाकरों, प्राप्त कछू नहिं होय। बैरी को बैरी कहै, यह भी उचित न सोय ॥
मान अमान माशूक को, आशिक ऊपर लेइ। वह गाली जो देइ त्यहि, त्यहि अशीष तू देइ ॥
रूप देश माशूक के, जबतक रहे बसेर। करु सलूक इहि भांति से, रहै यादि जेहिंढेर ॥

मुक़बिल ने अमीर को समझाया कि यह स्थान बियोग का नहीं है नये वस्त्र पहिनिये और सभामें चालिये उस समय अमीरने मुक़बिल की शिक्षा मानली और वस्त्र पहिनके उस महल में गये परन्तु चित्त में औरही विचार था और उधर मलका मेहरनिगार का हाल औरही था ॥

दोहा । गिरी छारखट बीचमें, ह्वै अचेत बहुभांति । जनु काहू के बश्यह्वै, बिकल परी अकुलाति ॥

दाइयां और लौड़ियों ने घेरलिया कोई कटोरा फ़क़ीरों को पिलाती कोई फूँक डालती कोई दुआ मांगती खाना, पीना, सोना सब बन्दहोगया कोई हाथ पाँव सोहलाती मलका को जब ब्योराहुआ अपने चित्त में विचार किया कि कहीं यह भेद प्रकट न होजाय यह नेह कोई दूसरा समाचार नं उत्पन्नकरे लौड़ियों से कहा कि चिन्ता करने का कुछ प्रयोजन नहीं है मुझे आपही आप मूर्च्छा आगई अब मैं अच्छी हूं हल्ला गुल्ला मतकरो चित्तमें न घबराओ फिर इधर उधर अमीर देखते थे कि दिन कहीं ब्यतीत होवे तो शान्ति होनेका उपाय कियाजावे फिर ज्यों त्यों कर के दिन काटा और पहर राततक धैर्य बांधे बैठारहा अन्त में ब्याकुल हुआ धैर्य न होसका बादशाह से प्रार्थना की आज छठी रात है पलक से पलक इस अधीन की नहीं लगी है जो आज्ञादीजिये तो आराम करलूं किसी किनारे बाग़ में जाकर सो रहूं बादशाह ने कहा कि जाइये अमीर मुक़बिलसमेत सभा से आये फिर झरोखे के तले पहुँचे कोई लगाव ऊपर जानेका न पाया परन्तु एक बृक्ष महल के निकट दृष्टि आया उसकी डाली कोठे की मुड़ेर से लगीहुई थी मुक़बिल को उस बृक्ष के तले खड़ाकरके आप बृक्षपर चढ़गये और सतमहला पर पहुँचे ॥

मलिका मेहरनिगार से प्रथम मिलाप ॥

चौपाई । नेह नयाकर नया सुभाऊ । औसर प्रति करै बिबिध बनाऊ ॥
कतहुं रुदन अरु कतहुं बिलापू । कतहुं रुधिरकर पान प्रतापू ॥
कतहुं घाव कर लोन करेरा । कतहुं पतङ्गा दीप गसेरा ॥
कतहुं गहत कतहुं गहिजाई । दोनों भांति है अधिक भलाई ॥

अब इस बृत्तान्त को इस भांति से बर्णन करते हैं सब प्रकार से सन्देह को हरते हैं बिलाप का बृत्तान्त काग़ज़ पर इस प्रकार से जमाते हैं कि अमीर ने डेवढ़ीके ऊपर जाकर देखा कि मलका मेहरनिगार युवतियों के मध्य में बैठीहै और बोतल मदिरा की भरीहुई सामने धरी है शीशे का प्याला हाथ में चमक रहाहै ॥

दोहा । मदिरा यत्न सचेततें, धरी है प्याला माहिं । शोभा बर्णत नहिंबनै, बांटत मद सुखपाहिं ॥

परन्तु मोतीरूपी आंसुओं की लड़ी गूंधरहीहै नेह की धार हृदय में लहर लेरही है और बिरह की पावक उर मांझ छारही है भारी श्वास मुँह से लेती है दिनको तो अमीर ने दूरसे देखा जब निकट से दृष्टि भिड़ाई तब और ही सूरत दृष्टि आई कि जिस के रूप का प्रकाश दृष्टान्त नहीं रखता है और पूर्णेन्दु उसके रूप को देखकर बलाय लेरहा है और उसकी ठोढ़ी को जो, हारूत मारूत देखते तो मरजाते और

स्तनों को जो नींबू देखता तो दांत खट्टे होजाते और उसके शरीर को जो सरो देखता तो अपने को देखकर लज्जित होजाता कपोलों ने लाल को दाग़ दिया आंखों ने मृगों को बिपिन में वास कराया और चोटी ने सम्बुल को लपेट दिया भौंहों ने कटार को मियान में करवाया सुआके भांति जिसकी नासिका इसी प्रकारसे सकल अङ्ग सजाहुआ था॥

दोहा। करै सूर्य जो दृष्टि वहि, सोंह होय जब चार। चकाचौंध ह्वै जाय पुनि, अस है रूप अगार॥

चौपाई। पूरनचन्द्र देख जों पावै। दाग़ खाय लज्जित ह्वै जावै॥
यूसुफ़ जो बिलोकतो रूपा। तो नहिं जात छोड़ पुनि कूपा॥
देखत रूप जुलेखा जोई। यूसुफ़ को न देखतो सोई॥
यहि बिधि अहै नासिका शोभा। सीधि लकीर देखि जग लोभा॥
लज्जित हो शुक निजउर देखी। रूप प्रकाश नासिका लेखी॥
करण जवाहिर खान लजाई। दर्पण रूप कपोल सोहाई॥
अधर अरुण बिम्बाफल रूपा। दाड़िमदशन सुहात अनूपा॥
मुख बरणौं केहिभांति प्रकाशू। देखत मन आनन्द हुलासू॥
अस बिबेक जेहि मांझ निकेतू। उपमा कोउ न मिले तेहि हेतू॥
अतिसुन्दर ठोढ़ीकर रूपा। मनो सरूप रुचिर है कूपा॥
चित घबराय देखि जो पावै। आपहि आप डूबि पुनि जावै॥
जो गिरिपड़ै निकरि नहिं पावै। यूसुफ़ जाय देखि रहजावै॥
ग्रीव सीव केहि भांति बताऊं। देखेहि बनहि याहि समझाऊं॥
करमें अरुण लगी है मेहँदी। सोहत बिबिध भांति की बेंदी॥
देखिरूप व्याकुल तन भयऊ। रहाते अधिक अधिक ह्वैगयऊ॥
मन नहिंरहा हाथमें मेरा। नेह कीन्ह जब आय बसेरा॥
शोक बिछोहधरौं कस धीरा। तन अतिबिकल अधिक उर पीरा॥
बिधना निजकर हाथ सँवारे। अङ्ग अङ्ग प्रतिगुण अधिकारे॥
अँगुली चमकदमक छबिभारी। देखत अचरज अति हितकारी॥
अस्तन छबि बरणि नहिं जाई। मनो अनार युगसुखित सुहाई॥
या बन अति रुचिकरत शिकारा। मारत लोगन बिबिध प्रकारा॥
बस्त्र हटे छाती से जबहीं। लाजवन्त सिमिटत है तबहीं॥
तनी ठनी यहि भांति बनाई। जनु नेहक बांधे सुख पाई॥
बस्त्र स्वरूप रूप असथानू। बरणौं कैस उदय ह्वै भानू॥
आगे लिखौं कवन मुख लाई। छबि बरणत बरणि नहिं जाई॥
परदे कर परदे में हालू। लाजहेतु नहिं करत बियालू॥
कनक खम्भ सम जंघ सोहाई। देखै नर जो सो बलि जाई॥
मखमल सरिस नरमगति जासू। छुवै जो होय शीघ्र बश तासू॥
फीली रुचिर बनी अति गोरी। उपमा मलिन करै जेहि जोरी॥
यहि प्रकार नखसहित सरूपा। रचना रची अनूप अनूपा॥
नख तारा सम करत प्रकाशू। मेहँदी तापर करत हुलासू॥
अञ्जन अँजे नयन युग सोहैं। देखत तासु सृष्टि इक मोहैं॥
छल बल किय शृङ्गार समेतू। चाल बिशाल मदन कर हेतू॥
कटि केहरि सम सोहत नारी। अति बलखात जात सुकुमारी॥
अस सुकुमारि बस्त्र जेहि भारू। चल न सकत शुभकिये शृँगारू॥

दोहा। नहिं सहिसकत भारकछु, अस सुकुमारि दुलारि। मेहँदी जेहि भारी लगै, आगेहि कहा बिचारि॥

अमीर उसके मनोहर स्वरूप को देखकर आपमें न रहे और भी चिनगारी चित्त में भड़की मलका मेहरनिगार को सब सहेलियां समझारही थीं अपनी २ बुद्धि से धैर्य देरही थीं कि इस शोक और रोनेसे नहीं मालूम कि कोई दूसरा बखेड़ा न उठे इससे ऐसी बिवश मत होजाओ और थोड़ा आपको सँभालो जिसके निमित्त तुमे ऐसा बिरह धारण कियेहो उसने भी तुमको देखा है उसको भी चैन कहां होगा वह तुम्हारे बिछोह में फिरता होगा कोई न कोई उपाय मिलनेका करेगा इस कारण से मलका का रोना पीटना दूर हुआ और फ़ितनाबानों ने जो मलका की दाई की बेटी थी मदिरा का प्याला मलका के हाथ में दिया कि इसको पियो॥

दोहा। करु मदिराको पान तू, शोक त्यागु सुकुमारि। वे दिन पहले नहिं रहे, ये कस रहैं दुखारि॥

मलका ने कहा कि हम थोड़ी देर पीछे पान करेंगी पहले तुम तो अपने २ मित्रों का नाम लेकर पियो थोड़ीसी मेरे हेतु भी रहनेदो सबसे पहले फ़ितनाबानों ने प्यालाभर उठाकर अमरअय्यार का नाम लेकर पिया यह सुनकर अमीर का चित्त घबराया कि अमर यहां क्योंकर आया यह शोचता था कि दूसरी प्रिया मुक़बिल वफ़ादार का नाम लेकर प्याला शराब का पीगई इसी भांति से सब सहेलियां अपने २ स्नेहीका नाम ले २ कर प्याला पीगई अमीर ने मनमें कहा कि इस भेद को हम नहीं जानते थे इतने में मलका ने भी प्याला मुँह से यह कहकर लगाया कि जिसने हुश्शाम अल्कम के पुत्र खैबरी को मारा है और कठिन बिपत्ति और क्लेश से तुमलोगों को छोड़ाया है उसकी यादकर पीती हूं अमीर सुनकर मनमें कृतकृत्य होगया पहरभरतक इन सब की सभा जारी रही और मदिरा पान करतीरहीं मलका जब प्याला उठावें तब पहले साहबकिरां का नाम लेवे तब उसे पीवे जब द्वोपहर से रात अधिक व्यतीत हुई वह सभा उठगई मलका भी छपरखट में जाकर लेटरही यद्यपि करोंटें लेती थी परन्तु चित्त उसका अमीर के पासथा नींद क्योंकर आती धाड़ें मारकर रोतीजाती अन्त में रोते २ थकगई साहबकिरां ने देखा कि मलका भी सोगई और सखियां अपने २ स्थानपर जाकर सोरहीं तो सीढ़ियों के मार्ग से महल के कोठेपरसे तले उतरा और दबेपांवों मलका के छपरखट के निकट गया देखा कि मलका सोरही है॥

चौपाई। नयन खुले सोवत सुकुमारी। ताहि बिलोकि भयो सुख भारी॥
बिरहा सोवत ताकर पाहू। उघरे सकल भाँतिकर डाहू॥

देरतक उसके चन्द्रवत् मुखारबिन्द का प्रकाश बिलोका किया और चित्तमें बिचार किया कि बड़े परिश्रम से तू यहांतक पहुँचा है अत्यन्त कष्ट सहा है तब तुझे यहांतक आने का अवसर मिला है मन की हौस तो अब किसी भांति से निकाल किसी हीला से साहबकिरां ने अपने दोनों हाथ सुमन तकियों पर धरे और चाहा कि उसके ओठों का चुम्मा लेवें और कपोलों को भी चूमें तो हाथ तकियों से फिसलगये और मलका की छाती से लगगये मलका चौंकपड़ी अमीर का तो ध्यान

न रहा आसक्त होकर चिल्लानी चोर २ कहने लगी चारोंओर से लौंडियां जागपड़ीं और हांक सुनकर दौड़ी आईं अमीर ने कहा कि मैं अल्कम के पुत्रका मारनेवाला तुम्हारे रूप का माराहुआहूं मलका अमीर को पहिंचानकर अपने गुल करनेपर अति लज्जित हुई और चेरियां विनती करनेलगीं और साहबकिरां को झटपट छपरखट के तले छिपादेया लौंडियों को यह कहकर बहलादिया कि मैंने एक ऐसा नष्ट स्वप्न देखा था कि उससे मैं डरागई इससे चीख़ मारउठी अच्छा तुमलोग जाकर सोरहो अपने २ स्थानपर जाओ वे तो नींद की मातीही थीं अपने २ स्थानपर जाकर सोरहीं साहबकिरां उनके जातेही छपरखट के तले से ऊपर आये और मलका मेहरनिगार के बराबर बैठे मलका ने दिनको तो दूरसे देखा था अब जो पाससे देखा और भी अचेत होगई साहबकिरां ने मुखसे मुख मिलाकर अपनी सुगन्ध जो सुँघाई तो थोड़ी देर के पीछे होशमें आई इतने में प्रातःकाल होगया साहबकिरां ने ओसके समान नेत्रों में जलभर के कहा कि ईश्वर जो निगहबान है अब मैं ठहर नहीं सक्ताहूं॥

चौपाई। देख्यो रूप प्रात जब भयऊ। घाव हृदय महँ अति करि गयऊ॥
तन मन सकल मोर हरिलीना। कठिन वियोग शोक तन कीना॥

भेद विदित होजाने का डर है बादशाह से सोने का बहाना करके आया था जो जीतारहूंगा तो फिर रात को आऊँगा तुम्हारे बिछोह में नाना प्रकार के क्लेश पाता हूं चित्त लगायेहूं॥

दोहा। वे धीरज कतहूं नहीं, कीन्ह मिलाप अनेक। सो अब भयों सनेहवश, रहा न कछू विवेक॥

किन्तु इस घायल की सुधि न भुलाना मेरे ऊपर कृपा कियेरहना चित्त में ध्यान रखना भूल न जाना मलका ने एक आह सर्द खींची और नेत्रों में जल भरकर बोली कि देखिये इतना दिन कैसे व्यतीत होगा? चित्तको धैर्य किस भाँति से होता है॥

चौपाई। ज्यों त्यों निशि बिछुरन कटिआई। दिन कस कटै ईश दुखदाई॥
विरह वियोग कठिन जआलू। विकल अधिक तन मन दुखसालू॥

यह कहकर कहा अच्छा ईश्वर को सौंपा॥

चौपाई। राउर निजस्वरूप लै जाऊ। कठिन अधिक तन मन पछिताऊ॥
बितिहै सो मोपर बितिजैहै। शोक बिछोह कठिन दुख पैहै॥

इसके पीछे अमीर बिदा हुए उसी भांति से कोठे पर से तले आये और मुक्रबिल को साथ लेकर सभा में पहुँचे बादशाहभी सेजसे उठकर बाहर निकलकर सभा के मध्य में सुशोभित हुए और सबलोगों ने दर्शन पाये जिस समय प्रातःकाल हुआ और सूर्यमुखी का फूल प्रफुल्लित हुआ बादशाह अमीर का हाथ पकड़े हुए चमनमें आये और सभा के लोग भी उसी स्थान में आये अमीर का मन विरह से स्थिर न था॥

चौपाई। अस मन भयो नेहवश मेरा। भावत उजड़ न मोहिं बसेरा॥
उजड़े जाउँ चित्त नहिं लागै। देखि बसेर विरह उर जागै॥

घड़ी २ उठ २ कर अमीर इधर उधर देखते थे अपनां चित्त मलका मेहर-निगार पर लगाये थे और बारम्बार उसके मकान की ओर दृष्टि करते थे॥

चौपाई। आदर अधिक नेहकर भारी। मित्र सकल भूले इकबारी॥
तनकी दशा कहाँ केहिभांती। अदब बिसारि दीन दुखथाती॥
धीरज धरत रहत मनमाहीं। अब कहँ चैन शोक मनमाहीं॥
रहत रहत बाढ़त उर शोचू। सब बिधि रहत हृदय संकोचू॥

बुजुरुचमेहर ने अमीर का हाल देखकर ताड़ा कि अमीर का चित्त किसीपर लगगयां तो अमर की ओर इशारा किया उसने कहा कि मैं आपसे प्रथम जान गया हूं इसका चित्त किसी न किसीसे लगगया चित्त की अधैर्यता देख बख़्तक ने भी अमीर का शोच देखकर बिचार लिया कि अमीर किसीको अपना मन दे आये हैं इस कारण वे धैर्य नहीं हैं बख़्तक ने बादशाह से प्रार्थना की कि लोग हर घड़ी सभा से उठ २ जाते हैं और फिर लौटआते हैं इससे सभा की शोभा जातीरहती है आज्ञा दीजिये कि जो कोई बिना आवश्यकता सभा से बाहर जायगा उसके ऊपर सौ रुपये जुरमाना कियेजावेंगे बादशाह ने इस बातको पसन्द करके अमीर से कहा कि जो कोई उठेगा उसपर सौ रुपये जुरमाना कियेजावेंगे अमीर ने कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है उसपर आप दोबार अकुला २ कर उठे और दोसौ रुपये जुरमाना दिये॥

दोहा। गाहक तेरी हाट में, टूटत अधिक बिहाल। जो रहै मारग तासु की, अतिशय कठिन कराल॥
तेरी सूरत देखिके, निजपद उठत न नेक। भीतसरिस ह्वैगयो मैं, है तिहारहित टेक॥

बुजुरुचमेहर ने अमर से कहा कि कुछ ऐसा उपाय कियाचाहिये कि जिससे बख़्तक सभा से उठजाय और इस समय में फिर न आनेपावे अमर ने कहा कि यह कितनी बड़ी बात है अभी तो यह एकही बात के कहने में जाताहै यह कहकर बाद-शाह से प्रार्थना की कि इस समय में अद्भुत लीला है जो आपकी आज्ञा हो तो मैं अपने हाथ से दो चार प्याला मदिरा के भरकर पिलाऊं बादशाह ने कहा कि इससे अच्छी क्या बात है ? हमैं भी यही मंजूर है अमर ने प्याला और बोतल को हाथ में लेकर देना शुरूअ किया जब तीन चार प्याले बारम्बार बादशाह को पिलाचुका तब हुरमुज़ ताजदार को एक प्याला पिलाकर अमीर को दिया तिसके पीछे ख़्वाजे बुजुरुचमेहर को एक प्याला पिलाया इसी भांति से घूमताहुआ बख़्तक के मुँह से प्याला लगाया कि उसका मस्तक ठनकउठा कि इस समय अवश्य कुछ कारण है अमर से कहनेलगा कि मैंने कल से मदिरा पीने की सौगन्द की है यह सुन अमर ने पुकारकर कहा कि यह अद्भुत बात है कि सब सभा के लोग और बादशाह ने मेरे हाथ से मदिरा पीना स्वीकार किया परन्तु बख़्तक मेरे हाथ से मदिरा पीना मंजूर नहीं करता यह नहीं जानता कि जो अबलास मेरे हाथसे पीजाता तो अनेक भांति से हजरतआदम के चरण छूता अभिमान से शिर न उठाता अमर की इस बात से बादशाह समेत सबलोग हँसपड़े और बख़्तक से कहनेलगे कि सब सृष्टि में अमर

के समान कोई मदिरा बांटनेवाला न होगा क्या तुमपर यह बात बिदित नहीं है ? आश्चर्य है कि तुम इन्कार करतेहो और पीने में तकरार करते हो लाचार होकर बख़्तकने अमर से प्याला लेकर पान किया और जो कि अमर ने उस प्याले में कच्चा जमालगोटा बहुत अच्छा ढूंढ़के मँगाकर मिलाया था एक घड़ी भी न बीती कि बख़्तक के पेट में मिड़ोड़ा होनेलगा बादशाह से प्रार्थना करके उठा कि सेवक आवश्यकता मिटाने को जाताहै अभी फिरा हुआ आताहै जब उससे निपटकर आया एक पल भी न गुज़रा था कि फिर पेटमें शूल होनेलगी लाचार होकर फिर उठचला अमर बोला कि अब कहां जाते हो अभी तो बाहर से चलेआते हो भलाई तो है अभी आप आये हैं फिरभी जाया चाहते हैं बख़्तकनेभी सौ रुपये जुरमाना देकर अपनी हाजत रफ़ा की दमभर न बैठेहुआ था कि फिरभी दिशा की आवश्यकता मालूम हुई परन्तु जुरमाने के डरसे साधेहुए बैठारहा जब बहुत आसक्त हुआ तब तो साध न सका पाख़ाने के मार्ग होकर बहकर पायजामे के तले पांयचों से निकलपड़ा अमर तो इसी ताक में था प्याले को हाथसे रखकर बादशाह से प्रार्थना की कि इससमय हुज़ूर को नशा है जो बाग़ की सैर कीजिये तो दूनी ख़ुशी प्राप्त हो बादशाह ने कहा कि अमर मेरीभी यही इच्छा है बादशाह अमीर का हाथ पकड़कर चमनकी ओर चला सभा के लोगभी सब उठखड़े हुए और बादशाह के साथ चले बख़्तक भी पाख़ाने की आवश्यकता से उठा लोगों ने देखा कि बख़्तक की कुरसी सब पाख़ानेसे भरीहुई है और उसके पायजामों की मोहरियों के मार्ग होकर मैला बहरहा है किरमानी क़ालीन भी तमाम भरगई है अमर ने बादशाह से इस बात की ख़बर की बादशाह का दिमाग़ पहलेही से बदबू में छागयाथा यह सुनकर और भी क्रोध किया और आदी को बुलवाकर आज्ञा दी कि इस मूर्ख अबिबेकी को जो हमारी संगति के योग्य नहीं है बाग़से बाहर निकालो आदी तो पहलेसे उसपर बिषखायेहुए था आज्ञापातेही बख़्तक की दाढ़ी पकड़के घसीटताहुआ बाहर लेगया ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने कहा यद्यपि तूने बख़्तक को उपाय के सहित निकाला लेकिन अमीर को दमपर दम बेक़रारी अधिक होतीजाती है ईश्वर जाने कि इसका क्या कारण है ? ऐसा न हो कि बादशाह कुछ मनमें जाने तो बद गुमान होवे फिर औरही सामान होवे हाथ बाँधकर बादशाह से प्रार्थनाकी कि हमज़ा हुज़ूर की क़दरदानी से बहुत यहसानमन्द हुआ तमाम उमर आपका यहसानमन्द रहेगा अब आप चलके बादशाहत की गद्दीपर बिराजिये ईश्वर की सृष्टि न्याय करने को आई है वह आशा देखरही है सब आपकी प्रजा आपका दर्शन चाहती है बादशाह को बुज़ुरुचमेहर का कहना बहुत पसन्द आया अमीर को शाही ख़िलअत देकर बिदा किया और आप न्यायशाला में आया ॥

मलकामेहरनिगार का अमीर के ऊपर अधीर होना और जाना अमीर के डेरेको अमीर की चाह में ॥

लिखनेवाला इस स्नेह के वृत्तान्त को इस प्रकार लिखता है कि साहबकिरां तिलशादकाम स्थानपर जाकर घड़ियां पल २ गिनाकिया और बिछोहका दिन रातके

मिलाप की आश से व्यतीत किया जिस समय सूर्य ने पश्चिमदिशा में बसेरा किया और चन्द्रमा आसमान पर प्रकाशित हुआ अमीर ने अपने रात के पहिरनें के वस्त्र मँगाये अतलस का जामा गले में पहनकर कमरबन्द सुनहला काले रङ्ग का कमर में बांधा शमला काला शिर पर लपेटकर तलवार और कटार कमर में बांधी सूफ़का पांताबा पांवोंमें चढ़ाया उसपर नमदी जूता पहिनकर कमन्द का घेरा शाने से लगाया और क़ाले रेशम का नक़ाब अपने मुँह पर डाला इस सजधज से मुक़बिल को साथ लेकर अपने ख़ीमे से निकले और मलका मेहरनिगार की ओर चले मार्ग में अमर छिपा हुआ खड़ा था फलांग मारकर बोला कि ख़बरदार हो चोरोंकी तरह कहां जाते हो क्यों मुझसे छिपातेहो तुम नहीं जानते हो कि मैं पहरा देताहूं अमीर ने कहा कि क्यों मेरा हर्ज करता है उसने कहा ऐ अमीर! जानपड़ा कि मैं नहीं जानताहूं और आपसे कुछ कपट रखताहूं तब तो मुझसे अपना भेद छिपाया मुझे अपने से फिरा और बदख़्वाह ठहराया अमीर ने कहा कि जो तू कोई ग़ैर होगा तो मेरा सगा मित्र और स्नेही कौन होगा किन्तु इस निमित्त मैंने तुझसे नहीं कहा कि तू मुझे शिक्षा देगा और मैं अपने वश में नहीं हूं मेरा मन क़ाबू नहीं है क्या करूं ले आ तूभी मेरे साथ चल अपने स्नेही के मार्ग में जाताहूं मन की घबराहट उसके मिलाप से मिटाताहूं अमर ने पूछा कि हुज़ूर वह कौन है और कैसी है आदमीज़ाद है या अप्सरा है जिसके हेतु तुमसा धीर और शान्त मनुष्य बेधीरज और बेक़रार हो अमीर ने कहा कि सुनना भला कि दीखना चलकर अपनी आंखों से देखो और विधिकृतरूप दृष्टि करलो अमीर अमर से ये बातें करते बग़दाद की ओर चलेजाते थे और अति स्नेह से पांव बेखटका बढ़ाते थे मलका मेहरनिगार का हाल सुनिये कि अमीर की चाहमें किस कष्ट से दिन काटा दिनभर शोक में गुज़रा छपरखट में मुँह लपेटे पड़ी रही न उठी न बैठी यह चौपाइयां पढ़ती रही॥

चौपाई। मांगत वह वर मित्र सनेहू। चरणाहट जगाय मोहि देहू॥
नरगिस सरिस विकल मनमारे। देखत हित चित नयन उघारे॥

न मुँहधोया न खानाखाया न पानी पिया न तकिया परसे शिर उठाया न कंघी चोटी की न पोशाक बदली तमाम दिन आंशुओं से मुँह धोया की और अमीर की चाह में रोया की खाने के बदले अपना कलेजा खाया की और पानी के बदले आंशुओं की नदी बहाया की जो किसीको आते देखा तो आंशू पीगई कंघी के बदले नर्म पंजे से बाल बिखड़ा दिये पोशाक के बदले चादरसे मुँह लपेटलिया जो अपने पास किसीको न देखा तो वहशियों की भांति से इधर उधर देखकर अशक्त हो आह सर्द खींचकर यह चौपाइयां पढ़नेलगी॥

चौपाई। रोदन हेत मस्त चित अहई। मनघट धार नयनजल बहई॥
अधर अरुण कोमल मन जासू। बिकल अधिक तापर बिश्वासू॥
दाड़िम दशन सोहात अनूपा। दीपक सरिस तपत तनकूपा॥
मैं तब छबिपर सर्बस दीन्हा। खान पान त्यागन कर दीन्हा॥

मद मदिरा बिसारि सब दयऊ। केवल सभा एक उर रहेऊ॥
मोह कठिन मन्त्री दृढ़ कीना। ज्ञान तमाम मोर हरिलीना॥
तन हमार यह देश भुवारा। नृपति काम तन भो रखवारा॥
बिरह बिपति दुख कष्ट अनेका। कुमति कुकर्म शोक जेहि टेका॥
सो यह कटक लीन निजसाथा। केवल मोहिं विचारि अनाथा॥
दया क्षमा सन्तोष विबेका। सब हरिलीन हँकारि अनेका॥
लाजहीन अति दीन मलीना। विरहवश्य तेहि मोहिं करदीना॥
कछु केहिभांति धरौं उरधीरा। ब्याकुल अति पिय मोर शरीरा॥
बेगि छुड़ाव तासुकर फन्दू। सुनो वचन पिय आनँद कन्दू॥

दोहा। बिरह आगि तनमें लगी, जरोजात सबगात। बेगि छुड़ाओ कृपानिधि, तन मन अतिअकुलात॥
जबसे मन हरगयो है, तबसे नहीं क़रार। शमासरिस मुख जासुको, भयो पतिंगावार॥
नेह वारुणी के लिये, नयनपात्र करदीन्ह। मापक सो वाको भयो, जेहि तन मन हरिलीन्ह॥
नेह बीच ऐसी फँसी, सर्बस दीन्ह गँवाय। रहै बसेरा उजड़ भा, ब्याकुल अहै सिवाय॥
देखूं जी कैसे बचै, जो घातक के साथ। यारी सो मैंने करी, अगम अधिक है गाथ॥
कहत सबै यारी विषय, चरणधरे जो कोय। स्वप्नेहुँमांझ न सुख मिलै, अधिक कठिन दुखहोय॥

लौंड़ियों ने मलका का हाल देखकर फ़ितनाबानो से कहा कि मालूम होता है कि मलका ने अपना मन कहीं गँवाया कि जिससे खान पान छोंड़दिया न दिनको चैन है न रातको आराम है इस भेद को बिदित करो और उनसे जाकर समाचार कहो कि वह कुछ उपाय और कोई तदबीर दुःखके दूर होने की निकालें नहीं तो यह नेह और उसका बिरह दूसरा फूल खिलाने चाहता है इसमें किसीकी लाज ढकी नहीं रहने पाती है यह गली २ के तिनके चुनवाता है लड़कों से पत्थर खिलवाता है होठों को सुखाता है आई मति भुलाता है दमपर दम क्लेश और रोदन करवाताहै ठण्ढी सांसें भरवाता है शिर से पांव तक पत्थरों से शिर फोड़वाता है कानों में ग़फ़लत की रुई भरवाता है शिक्षा सुनने नहीं देताहै संसार में यह रोग बड़ा कराल है इसके हेतु यह दोहे कहतीहूं इसको सुनो॥

दोहा। नेह केर पावक बिषय, फूंका जात शरीर। आंसू से यह कहति हूं, है सहाय करु धीर॥
अति करालगति नेहकी, क्षणप्रति बदलत रङ्ग। अस पावक यह कठिन है, फिर न रहत जेहि अङ्ग॥
यह जो सब संसार में, सम्पति अङ्ग बनाय। तौ पपील इक दीन हूं, नृपति होय हरषाय॥
सुँदर रूप औ नेह जो, नहिं होते संसार। भेद छिपा खुलता नहीं, यह दृढ़ कीन्ह बिचार॥
यहि जाके आराम का, मिलता नहीं निशान। स्वाद कछू नहिं पावते, तरुण वृद्ध सब जान॥
नेह आपनी रीति जो, दिखलावत नहिं सोइ। तौ पुनि यहि संसार में, रहता बस सब कोइ॥
है यामें अति कठिनता, ताते कहौं बिचार। नानाबिध दुख जाहि में, तन से जात करार॥
कशिशअधिकयहिमांझहै, खींचतबिबिधप्रकार। तन पाहनसम हो कठिन, मोम होत क्षण सार॥
अस संकट में प्राण हैं, धीरज मिलत न नेक। रूप नेह ये युगल पुनि, जाल लेन की टेक॥
बुद्धिमान जानत यहै, जो सर्बज्ञ निधान। नेहवास आशिक हृदय, जानो भाव न आन॥
नयन देखने के लिये, रूप सरूप निहार। कर्ण बोल के सुनन को, निज नेही के द्वार॥
हाथ बाल सुरझान हित, पांव चलन के काज। दिलबर के दरबार तक, और कछू नहिं साज॥
नेह जानते हम न थे, अति अन्याय निकेत। युवा बैस के मध्य में, जीव हमारो लेत॥
कब थी अस बृत्तान्त सों, मुझको खबर सुजान। कठिन हृदय के बीच में, भई फफोला खान॥
बड़ा जोड़ बांधत अहै, असबिचारिगतिमोरि। काह करों कासे कहों, अपनाचरितनिहोरि॥
लाख जगह तन मन सबै, उलझावै करि टूक। नये पेच के बीच में, देत नईसी लूक॥

नेह केर अस हाल है, सब के हिय में वास। अधिक रसायन सों अहै, याकी बास सुबास ॥
अस सर है संसार में, जान बचा केहि फेरि। शक्ति सभी मिटजात है, शूल दहैं उर घेरि ॥
मौतघाट के सरित में, याने दीन्हे उतार। जीते औ निज घाव सों, मारे अधिक अपार ॥

चौपाई। अस है नेह जक्त बरियारा। फूंक कीन्ह बहुतनको छारा ॥
तातें मानो कहा हमारा। समझो कठिन सकल संसारा ॥
तन गुण ज्ञान धर्म हरिलेई। शोक सदा तन मन कहदेई ॥
भूले पैग कतहुं जनि दीजै। इतना कहा मोर सब कीजै ॥

दोहा। यह सब कारण जानके, यहि मग कतहुँ न जाय। लाज ज्ञान गुण धर्म सब, बेगि नाश होजाय ॥

फ़ितनाबानो ने कहा कि मैं तो नहीं कहूंगी तुम अम्माजान से यह हाल बयान करो मेरे कहने से तुम्हारा कहना अधिक है देखो तो उसका क्या मनोरथ है ? अन्त को थोड़ी लौंड़ियों ने मेल करके दाया से कहा इस समाचार को सुन दाया घबरा कर मलका के निकट दौड़ी आई देखा तो सच मुच मलका का अद्भुत हाल है न खाने पीने का कुछ ख़्याल है मुँह लपेटेहुए छपरखट में पड़ी है चेहरे से वहशत टपकरही है दायाने चादर को मुँहसे उठाकर कहा कि बेटी ! भलाई तो है आपका मिज़ाज कैसा है ? छपरखट में पड़ेरहने का कारण क्या है ? मुझसे न छिपाओ अपने चित्त का क्लेश निडर होकर सुनाओ छोटेपनसे मैं तुम्हारी छिपे भेद की कुञ्जी जानतीरही हूं मलका ने कहा कि यद्यपि लाज आती है परन्तु बे तुमसे कहे भी काम नहीं चलता है कि मेरे कलेजे में आग लगने से तुम्हारा भी चित्त जलता है ऐसा अमीर का नेह रूपी तीर मेरे कलेजे से पार होगया है मिलापरूपी मलहम लाकर किसीभांति से यह घाव अच्छा करती तो इसमें भलाई है दाया बोली कि मलका यह स्थान ध्यान करनेका है कि कैसे २ शाहज़ादों का संदेशा आया और तुमने अङ्गीकार न किया और यह मनुष्य मुसल्मान दूसरी ज़ात और दूसरे दीन का है मेरे समीप तो उचित नहीं है कि तुम उसकी गोद में बैठो मलका ने कहा कि नेह के धर्म और ग़ैर के धर्म से क्या लगाव है ? उससे क्या सरोकार है ? यह तुम अच्छीभांति से समझलो कि साहबकिरां के मिलाप बिना जान मेरी नहीं बचेगी हमारे मनने धैर्यको परित्याग करदिया है यह कहकर एक अम्बरीचा गले से उतारकर दाया को दिया जो तीन सहस्त्ररुपये को मोल मँगायागया था और उससे कहा कि दाया ! बहुत कुछ साहबकिरां से और अपने पास से बहुत कुछ तुझे दिलादूंगी दाया लालच में ख़्वाजे अमरसे कुछ कम न थी अम्बरीचा देखतेही लार मुँह में भरआई जो २ मलकाने कहा सब मानलिया और यह भी शोची कि मलका को नसीहत क़बूल नहीं होगी तो अपना फ़ायदा क्यों छोड़ूं मलका से बोली कि जो यही मरज़ी है तो उठो हम्माम करके पोशाक बदल गहना पहिन अपनेको बनाओ जब यह रात गुज़रेगी तब रात के बस्त्र पहिनाकर तुमको साहबकिरां के पास लेजाऊंगी तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूंगी किन्तु धैर्यको त्याग न करो नहीं तो भेद खुलजायगा इसके ज़ाहिर में घाटा के सिवाय नफ़ा न पाओगी मलका को धैर्य हुआ उस समय उठकर हम्माम में स्नान किया और बस्त्र आभूषण धारण किया जब घड़ियाली

ने पहरयात का गजर बजाया दाया ने मलका को काले वस्त्र पहिनाये और आपभी मर्दानाभेष बनाया और कोठेपर जो बुर्ज था उससे कमन्द को लटका कर मलका को ले उतरी और तिलशादकाम का मार्ग लिया थोड़ी दूर अमीर का डेरा रहा था कि तीन मनुष्य काले वस्त्र धारण कियेहुए देखपड़े और उसी ओर जिधर से मलका आती थी आते दृष्टि पड़े मलका और दायां उनको देखकर आड़ में होगईं दोनों की दोनों आपको छिपाने लगीं अमीर कीभी निगाह इन दोनों स्याहपोशों पर जापड़ी और उनकी चाल देखके मुक़बिल से भारी आवाज़ से कहा कि मुक़-बिल! देखना ये दोनों स्याहपोश कौन हैं? कि जो इससमय में बाहर निकले हैं अपने घरवालों से छिपेहुए किस ओर जाते हैं मलका ने अमीर की आवाज़ पहिं-चानकर यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। जाके हित यों जान यह, निकलत है घबराय। या मारगसे कौन विधि, अनजाने निकलाय॥
जाके कारण बनगई, सिड़ी बावरी हाय। पूछत है अनजान को, यह दुखिया को आय॥

मुक़बिलने जो निकट आकर देखा कि चन्द्रबदनी मृगनयनी मलका मेहरनिगार है अमीर को वहींसे पुकारा और आसक्त होकर अलभ्य लाभ पाकर चिल्ला उठा कि आप यहां आकर पहिंचानें कि कौन है? और कहां का मनोरथ किया है किसके ढूंढ़ने के लिये घरसे पाँव निकाला है किस २ को यह इच्छा नहीं है कि तेरी ख़बर मिले हम नङ्गे पाँव तुम्हारे कारण फिरते हैं अमीरने जो आकर देखा तो मारे खुशीके उछलपड़ा और ऐसे कृतकृत्य हुए कि सातों द्वीप की बादशाहत भूलगये और मलका का हाथ पकड़कर अपने ख़ीमें की ओर चले फिर अमर ने आकर सलाम किया और शिर झुकाकर यह बात की कि हक़ीक़तमें यह तो आपने बड़ा एहसान किया हमलोगोंको इससमय मुखपर स्याही से बचाया हज़रत की कशिश और स्नेह आपको ईंचलाई इनके बदौलत हमको भी दर्शन होगये और मनोकामना पूर्णहुई लिखाभी है कि॥

चौपाई। जापर जाकर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू॥

मलका ने मुक़बिल से पूछा कि यह कौन है और क्या नाम है कहां रहता है मुक़-बिल ने कहा कि ख़्वाजे अमर अय्यार यही हैं इस समय में आपही की मक्कारी का चर्चा होरहा है मलका ने उसको देखकर आश्चर्य किया और वारम्बार उसकी सूरत देखती थी और यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। पूरब में रवि हैं उदय, क्यों नहिं होत प्रकाश। कौन अहै यहि धाम में, भौचक बिना हुलाश॥

अमीर जब अपने स्थानपर मलका मेहरनिगार को लेकर पहुँचे मलका को अ-पने गोद में बैठाया और मदिरा के प्याले को भर २ कर अपने हाथ से पिलाया और मलका एक प्याला और बोतल लेकर अमीर को पिलाने लगी और अमर बैठाहुआ गाया किया फिर अमीरने दाया को बहुतसा धन सम्पत्ति देकर प्रसन्न कर दिया और एक किश्ती जवाहिरात की कृपा की और बहुतसा पारितोषिक देने को कहा॥

चौपाई। निशिभरि रच्यो विविध विधि कीला। बरणि न जाय तासु की लीला ॥
कीन्हेउं बहुबिधि भोग बिलासा। पूजी हौस कीन्ह पुनि आसा ॥

प्रातःकाल होनेलगा अमीर अमर और मुक़बिल को साथ लेकर मलका को उस के महलतक पहुँचाआया और दूरसे मिलाप का वादा किया ॥

दोहा। सुख मिलाप का है भला, जो फिराक नहिं होय। बशा अधिक सुन्दर लगै, जाय खुमार जो धोय ॥

जिस समय मलका दायासमेत महल में पहुँची कोई २ ख़्वाजे सराय जो मकान के पहरुआ जागते थे दोनों स्याहपोशों को देखकर चोर २ कहकर ग़ुल मचाने लगे जब दिन हुआ कहीं चोर का नाम निशान भी न देखपड़ा नव्वाब नाज़िर ने मलका मेहरअङ्गेज़ से प्रार्थना की कि कौन किसके मन में बैठा है अच्छे के उरमें बुरा और बुरेके भीतर अच्छा सभी क़ौम में होताहै हाल यह है कोई सर्दार शाहज़ादी के आसपास पहरा देनेको नियत हो कि वह होशियारी से पहरा दियाकरे मलका ने यह बात पसन्द की और बादशाह को इस समाचार की इत्तिला दी बादशाह ने अन्तर-तेग़ज़ननामी पहलवानको चारहज़ार सवारों से पहरा देनेको नियत किया अब अमीर की सुनिये कि आधीरात तक मलका मेहरनिगार की आशा देखी जब मलका न पहुँची और अन्तरतेग़ज़न का नियत होना पहरेके हेतु सुना तो अतिकष्ट पाया ॥

दोहा। नरगिस केरे फूलसम, पलकैं मिलती नाहिं। ईश ढूढ़तो कौन को, कष्ट सहित मनमाहिं ॥

फिर अमीरने काले वस्त्र मांगे अमर अमीर का हाल देखकर रोनेलगा और हाथ बांधके पांवोंपर गिरपड़ा और कहा कि ईश्वर के हेतु आज से बाहर न निकलना चाहिये दिल को सम्हालना चाहिये सुनते हैं कि अन्तरतेग़ज़न को बादशाह ने पहरा देने के लिये नियत किया है और उसको निगहबानी की आज्ञा दी है कहीं अन्तरतेग़ज़न देख पाये और तुमको कुछ क्लेश पहुँचाये तो प्रतिष्ठा भङ्ग होजायगी जो कुछ आपने नाम व निशान पैदा किया है सब बरबाद जायगा और बैरियोंकी बन आवेगी बनीबात बिगड़जायगी यह सुन यातो अमीर रोते थे या बेअख़्तियार हँसपड़े और कहनेलगे कि अमर क्या दीवाना होगया है ? जो मुझे मरने से डराताहै तू नहीं जानता कि मैं हुरशाम अल्क़म के पुत्र का बधिक हूं उस दिन को ईश्वर की कृपा से कब डरताहूं इन बक़रियों से कब डरताहूं हां तुझको अपना जी प्यारा है तो तू मेरे साथ न चल घर से बाहर न निकल यह कहकर मुक़बिल को अपने साथ लिया और मलका मेहरनिगार के महल की ओर मनोरथ किया अमर से कब रहा जाता था पीछे २ अमीर के साथ लगाहुआ चलागया जब बुग़दाद के निकट पहुँचे तो देखा कि अन्तर का पहरा है और जागते रहो होशियार रहो कहता हुआ चला आता है और उसके साथ हरकारे भी बहुत चले आते हैं एक स्थानपर कुछ घने वृक्ष थे अमीर साथियों समेत उनमें छिपगये जब पहरा निकल गया तो महल के नीचे मुक़बिल को खड़ाकरके आप वृक्षपर चढ़गये और फिर भी कोठेपर अमर समेत पहुँचे तो देखा कि मलका वस्त्रों से सजीहुई बैठी है और अमीर की

राह देखरही है मदिरा की बोतलें और प्याले आगे धरे हुए हैं और काफ़ूर के शमा जलते हैं सब प्रकार से सभा लैस किये हुए हैं एक तरफ़ में तरारखूबां मुक़ाबिल की माशूक़ा और दूसरे में फ़ितनाबानों दाया की पुत्री अमर अय्यार की आश्ना सजी बैठी है सिवाय इन दोनोंके और जो लौंड़ियां मलका की सहेली और भेद जानने वाली थीं गानेका साज लिये हुए आज्ञा की राह देखरही हैं और मलका उसी मार्ग की ओर आंखें कियेहुए देखरही है और अति आनन्द से बैठी है ॥

दोहा। तीर धार के ओज का, उरमें गड़ा कराल। यहि कारण वह देखती, नयनन किये बिशाल॥

दाया ने कहा कि बला लूं आज साहबकिरांका आना कठिनहै चार सौ सवारों सहित अन्तर पहरा देरहाहै और सब ओर पुकारता है कि जागते रहो होशियार रहो यह सुनके मलका बोली कि ऐ दाया! जो साहबकिरां सच मुच मेरा मित्रहै तो यह क्या पहरा जो बादशाह की सब सेना पहरा देवे तोभी वह क्षणमात्र में आता है मेरा मन गवाही देरहाहै कि साहबकिरां थोड़ी देर में पहुँचताहै साहबकिरां मलका की बातें सुनकर मनमें अति प्रसन्न हुए और ऊपर से तले उतरे मलका ने दाया से कहा कि क्यों मैं न कहती थी देखो वह साहबकिरां आये वे यहां के आये कब उनको कल थी अन्त में अमीर वहांपर पहुँचे ॥

दोहा। मन निज आकर्षण समुझ, अस प्रचण्ड गति जान। आपहि आय सनेहबश, प्रीतम आय मकान॥
चौपाई। आये धाम प्रेम लखि मोरा। रचना ईश देखु कस जोरा॥
कतहुं नहीं कतहुं निरधामा। अहै बिलोकत जाकर नामा॥

मलका ने उठकर साहबकिरां का हाथ पकड़कर तख़्तपर बिठला लिया और दोनों ओर से प्रेमकी बातें होनेलगीं मदिरा के प्याले चलनेलगे मलका ने अपने हाथ से प्याले शराब के भर २ कर अमीर को पिलाना आरम्भ किया साहबकिरां मलका के गलेमें हाथ डालकर मदिरा पीनेलगे होंठसे होंठ और छाती से छाती मस्ती के जोश में मले फिर अमर गानेलगा तानें उड़ानेलगा उसके कामों से मलका का चित्त अतिप्रसन्न हुआ तो अमर की ओर देखकर कहा कि इन युवतियों में से कोई पसन्द है किसीकी तू भी इच्छा करताहै अमर बोला कि क्योंकर प्रार्थना करूं? वह आपकी बड़ी मुसाहब हैं सब महलवालियों पर ग़ालिब हैं मुझे काहेको अङ्गीकार करेंगी मेरे नामपर गालियां देंगी मलका ने सौगन्द देकर कहा कि इनमें से जो मंजूर हो उसके गोद में तू भी जाकर बैठ अमर कूदकर तरारखूबांकी बग़ल में जाबैठा और उसे स्नेहदृष्टि से देखनेलगा वह अमर को गालियां देनेलगी और तिरछी भौहें चढ़ाकर उठखड़ीहुई मलका ने कहा अमर! वह क्या कहती है क्या कुछ बुराभला कहती है अमर बोला कि सर्कार! क्या कहेगी लाड़ करती है और अपने चोंचले दिखाती है इनका मनही जानताहोगा कैसा अच्छा जानपड़ा होगा मलका हँसते २ लोट २ गई और कहनेलगी कि अमर! सच कहो उसकी कौनसी बात तुझे पसन्द आई कि इसके साथ स्नेह और मित्रता जमाई अमर बोला कि इसके

पास गहना बहुत सा है इसका मुझे लालच आया है इस बात पर फिर भी हँसपड़ी सब सभा लोटगई तरारखूबाँ अप्रसन्न होनेलगी मलका ने कहा कि वो तरारखूबाँ! तू भी कितनी बेमज़ा और नकचढ़ी है कितनी आख़िलखोरी और रूखी है अरे! अमर दूसरा अमीर है चालाकों का गुरू है इसकी माशूक़ा मुझसे दर्जे और अंशों में कम नहीं इससे अच्छा मनुष्य चातुरी में और नहीं है इसके पश्चात् अमीर ने मलका से क़ौल करार अपने दीन का ठीक किया और कुछ बातें सिखाई मलका ने मुसल्मानी धर्म अङ्गीकार किया और अमीर से कहा कि जबतक मैं जीती रहूंगी तबतक सेवकाई करूंगी आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगी अमीरने कहा कि जबतक मैं भी तुमसे ब्याह न करूंगा तबतक दूसरी स्त्रीको आंख उठाकर न देखूंगा दोनों से यह ठीक ठहरा और इसी क़ौल करार में प्रातःकाल का रङ्ग देखपड़ा अमीर मलका से विदा हुए और अमरसमेत उसी मार्ग से नीचे उतरे और तीनों आदमी अपने डेरे की ओर चले ॥

दोहा । भोर भयो बीती रयन, चन्द्रगयो तजि धाम । यदि मकारको मुख कलित, सजलगये जेहि नाम ॥

राह के बीच में अन्तर का पहरा मिला उनलोगों ने चोर २ कहकर अमीर का पीछा किया अमीर ने तलवार खींचकर दश बारह मनुष्य मारडाले और आप अच्छीभांति से अपने डेरेपर पहुँचे जब सूर्य निकले अन्तरने देखा कि सिवाय अपने ही आदमियों के और किसीकी लाश दृष्टि न पड़ी तो जाकर यह समाचार बादशाहसे कहा और तमाम इतिहास रात का सुनाया जो उस दिन साहबकिरां दरबार में गये बादशाह ने कहा तुमने कुछ और भी सुना है कि बड़ा अद्भुत समाचार है मैंने अन्तर को महल की निगहबानीके लिये नियत कियाथा कारण यह उसकाहै कि मैंने चोरों का गुल सुनकर यह प्रबन्ध किया था सो आज पिछली रात को दश बारह आदमी उसके साथ मारेगये और चोरों का पता न मिला यद्यपि आपको कष्ट तो होगा परन्तु महल की निगहबानी करते बहुत अच्छा था जिसमें चोर तो पकड़ मिलें तुम्हारे लोग अच्छा पहरा देते हैं अमीर ने कहा कि मैं आधीन हूं जो आज्ञा होगी उसे करूंगा लोगोंने सुनकर कहा कि बादशाह ने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया जो साहबकिरां को महल के पहरा देने को नियत किया जो कोई सासानी है तो अमीर का नाम सुनकर अभीसे उधर को पांव न धरेगा और जो अरबी अथवा तुर्कों में से है तौ भी मनोरथ न करेगा किन्तु बख़्तक ने अपने मनमें कहा कि यह वही कहावत हुई कि (सैयां भये कोतवाल अब डर काहेका) बादशाह ने बकरी की रखवारी भेड़िया के आधीन की क्या अच्छी बादशाह की बुद्धि है दरबार उठने के पीछे बादशाह से बिदा होकर अमीर प्रसन्न होकर अपने डेरे में आये और अच्छे २ सिपाही और ख़ासबरदार अपने सामने बुलवाये और मुक़बिल के साथ दो आदमी करके पहरा देनेको आज्ञा की और आप उसी रीतिसे पहरालगये अमरअली को भी साथ लेकर मलका के पास पहुँचे सारीरात मदिरा पीते और गाना अमरका

सुनते रहे जब भोर हुआ लूका पड़नेलगा अमीर मलका से बिदा होकर तिलशाद-कामपर गये अब तो किसीका डर न रहा तमाम रात खूब क्रीड़ा की और दरबार के समय दरबार में गये बादशाह से प्रार्थना की कि सेवकने आपकी आज्ञानुसार तमाम रात पहरा दिया परन्तु कोई चोर न देखा बादशाह ने कहा कि तुम्हारे डरसे कोई नहीं आया कि जो वहां का मनोरथ करेगा तो माराजायगा यह कहकर बाद-शाह ने अमीर को खिलअत दी और शाबाशी देकर बहुत प्रसन्न किया बख़्तक ने बादशाहसे प्रार्थना की कि आज कारनबन्द को कि सासानियोंमें प्रतिष्ठित अधिक है पहरा देने को आज्ञा कीजिये उसकी भी कारगुज़ारी और परिश्रम देख लीजिये बादशाहने उसका कहना अङ्गीकार किया और कारन को पहरा देनेके हेतु नियत किया फिर बख़्तक ने कारन से कहा कि ऐ पहलवान! तू तहिमूर्स देवबन्दके कुटुम्ब में से है बहुत सुशीलता और सावधानी से पहरा देना जो सामने आजाय पकड़-लेना ख़बरदार जो देवभी हो तो उससे मत डरना उसने कहा कि तू ख़ातिरजमा रख तेरी मर्ज़ी के अनुसार काम करूंगा और बादशाह के सामने भी प्रतिष्ठा प्राप्त करूंगा जब दरबार उठा अमीर तिलशादकामपर आये और मित्र स्नेही भी साथ थे कारनदेवबन्द तीन सौ पहलवान अपने दस्ते से चुनकर सायंकाल ही से पहरा देनेलगा मलका ने जो कारन के पहरा देने का समाचार पाया तो अति व्याकुल हुई दाया से कहा कि आज कारनदेवबन्द पहरा देनेपर नियत हुआ है अमीर अवश्य आने का मनोरथ करेंगे कोई ऐसा होता कि जो उनको मना करआता कि आज तुम आनेका मनोरथ न करना इस मार्ग में भूले से भी न आना दाया बोली कि अमीर ऐसे अयान नहीं हैं आज वह आप न आवेंगे उनको भी तो अपनी प्रतिष्ठा का ख़यालहै अब अमीर का हाल सुनिये कि जब दोपहर रात बीती काले वस्त्र मांगे अमर ने अपना शिर पीटा कि हमज़ा! जान नहीं पड़ता है कि तुम्हें क्या होगयाहै? एक रात भी धैर्य नहीं करसके अमीर ने कहा कि ऐ अमर! स्नेह और धैर्यसे क्या लाभ है? यहां तो नेह की आग भड़कती है मेरे जानेका रोकनेवाला कौन होता है? किसका कलेजा इतनाहै अमर बोला कि कारनदेवबन्द ऐसा पहलवान नहीं है कि समयपर बचाय जायगा और आपपर धावा न करेगा अमीर ने कहा कि जब मैं कारन से डरा तो किसीसे स्नेह और मित्रता करचुका यह कहकर काले वस्त्र धारण किये और मलका के कोठेका मार्ग लिया तम्बूके बाहर निकले मुक़बिल और अमर भी साथ हुए देखा कि थोड़े २ लोग मशालें जलाये हुए अलग २ पहरा देरहे हैं जब अमीर बाग़ में पहुँचे तो देखा कि कारन एक कुरसी पर बैठाहुआ है और अपने साथियों से ख़बरदार होशियार की ताकीद कररहाहै मुक़बिल ने अमीर से कहा कि आज्ञा दीजिये तो कमान कांधे से उतारके एक तीर ऐसा मारूं कि कारन कुरसी में मिलजाय जगह से न उठने पावे अमीर ने कहा कि मुझे किसीके मारने से क्या काम है? उसे बैठा रहने दो वह प्रबन्ध करता है जब मेरा मार्ग रोकेगा

तब उसे समझलूंगा उसी भांति आगे आऊंगा यह कहकर छपते छपाते उसकी दृष्टि से अपनेको बचातेहुए कोठे की दीवार के तले पहुँचे मुक़बिल को उसीभांति तले खड़ा करके कमन्द लगाकर अमर सहित कोठेपर चढ़गये और मलका को देख कर अति आनन्दित होगये और दौड़कर गले में लपटगये तमाम रात भोग बिलास करके आनन्द में व्यतीत की जब प्रातःकाल हुआ मलका से विदा होकर अपने स्थान का मनोरथ किया और वहां से चले पहले अमर उतरा जब बारी साहबकिरां के उतरने की आई कारन ने दौड़कर अमीरपर तलवार लगाई अमीर तो बचे परन्तु वह तलवार कमन्द पर पड़ी कमन्द के दो टुकड़े होगये यद्यपि साहबकिरां को मुक़-बिल ने रोंका परन्तु अमीर का बोझा मुक़बिल से कब सँभल सक्ता था साहबकिरां का शिर दीवार में टक्कर खाकर फूटगया और थोड़ासा रुधिर भी निकला उस समय मुक़बिल और अमर ने कई आदमी तीर और गोफन से मारे कारनने जो देखा कि हमज़ा है पीछा न किया परन्तु उस कमन्द को बादशाह के सामने लेगया उसमें हमज़ा का नाम खुदा हुआ था बादशाह देखकर अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और उसी समय बुज़ुरुच्चमेहर को बुलवाया और कहा कि ख़्वाजे हमज़ा ने यह क्या चाल हमारे साथ की यही भलेमानसी का काम बिदित किया मेरी प्रतिष्ठा और शिष्टा-चार का बदला दिया बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि यह कमन्द जाली है किसीने जाल-साज़ी की है हमज़ा ऐसा नहीं है कि जिससे ऐसी ख़राब चाल देखने में आवे और शीघ्र महल की ओर उसका मन किसी भांति से जावे कारन बोला कि हमज़ा का शिर भी दीवार में लगकर फूटगया है और कुछ रुधिर भी निकला है बुलाकर देख लीजिये बादशाह ने अमीर को बुलाया अब अमीर का हाल सुनिये कि जब तम्बू में पहुँचा और अपने भेददारों में ठहरे चित्त में बिचार किया कि अवश्य कारन मेरे घाव का समाचार बादशाह से कहेगा तो अत्यन्त हलकापन और अधिक बुराई होगी ईश्वर से वर मांगनेलगा कि मेरे भेद को अयानों से छपा मेरी प्रतिष्ठा को बैरियों से बचा इतना पराक्रम तुझी में है और यह बल मुझे तुझीने कृपा कियाहै मेरी नियत बुरी नहीं है कुछ हराम मैंने नहीं किया एक काफ़िर को मुसल्मान किया है मेरे शिरके घाव का चिह्न न रहे किसीपर मेरा भेद न खुले अमीर यह आशीर्बाद मांगरहे थे कि एकाएकी एक झपकी सी आगई तो देखा कि हज़रत इब्राहीम शिर पर हाथ फेरकर कहते हैं कि हमज़ा! उठ तेरे शिर का घाव अच्छा होगया किसीप्र-कार का चिह्न भी नहीं रहा अमीर की आंख खुलगई शिर को टटोलकर देखें तो घाव का चिह्न भी नहीं है ख़बर हुई कि बादशाह ने याद किया है जल्दी हाज़िर होने की आज्ञा दी है अमीर बादशाह के पास गया साथी मित्र स्नेही पहुँचे बादशाह ने साधारण जो अमीर का शिर देखा तो घाव क्या गुमड़ा भी शिरपर न मिला बाद-शाह ने बुज़ुरुच्चमेहर की बात सचमानी और कारन पर क्रोध किया कि हमज़ा पर तूने झूठ क्यों लगाया एक भले मनुष्य की आबरू की फ़िक्र क्यों की यह कह उसे

दरबार से निकलवादिया और अमीर को खिलअत कृपा की कुछ दिन के पीछे बहि-
राम ने भी आराम होनेका स्नान किया और बादशाह के पास फिर हाज़िर रहने
लगा एक दिन सरे दरबार बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि जब से खुसरो हिन्दुस्तान
देश का बासी लन्धौरसादानशाह का पुत्र गद्दीपर बैठाहै तबसे हिन्दुस्तान का कर
बादशाही खज़ाने में नहीं पहुँचताहै अत्यन्त बलिष्ठ है और बहुत हृष्ट पुष्ट बनाहै
और एकसहस्र सातसौ मन की तबरेज़ की उसकी गदाहै और हज़ारों पहलवानों
में एक पहलवान है और हाथी पर सवार होताहै अपना और गदा का चित्र बन-
वाकर खड़ा किया है किसीका घोड़ा उसके डरसे पास नहीं जाता और किसी
भांति का घोड़ा अरबी हो या तातारी या तुर्की या ईराकी उसके आगे पांव नहीं
बढ़ाता है बादशाह ने कहा कि इसका कुछ उपाय किया चाहिये जोकि बुज़ुरुचमेहर
बुद्धिमान् और संसारी गति देखेहुए था शीत और उष्ण समय सब जानेहुए था
अमीर के मस्तक से ताड़गया कि इनका चित्त महल में किसी पर लगगयाहै और
वहां मलका मेहरनिगार के सिवाय ऐसा कौन है ? जो ऐसा काम करे और चोरका
पता न लगे तो उससे भी मालूम हुआ कि इस चालका आदमी सिवाय अमीर के
और कहां है मन में शोचा कि इनको तरुणअवस्था का रङ्ग दीखपड़ा है और भला
बुरा कुछ समझता नहीं जो कोई बात देखने में आई और किसी दुष्ट ने खबर
लगाई तो मुफ़्त की बदनामी होगी और जोकि मैं सहायक हूं मेरे लिये भी बुराई
होगी इस कारण यह विचारके ऐसी सूरत निकाली कि इस लड़ाईपर सिवाय अ-
मीर के कोई मनोरथ न करेगा और कोई बीरा न लेगा कुछ दिन अमीर उधर जायें
कि इस नेहसे छूटजायें बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि अमीर से अच्छा और कोई
नहीं है जब सब अमीर दरबार में आये बादशाह सब के आगे कहनेलगा कि खुसरो
हिंदुस्तान देश का बासी लन्धौर सादानशाह के पुत्रको जो उसके अभिमान ने मेरी
आधीनतासे फेररक्खा है अपने मनमें समझता है कि संसारमें मेरे समान कोई बलिष्ठ
और पराक्रमी नहीं है इस जगके बीचमें मेरी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है देखिये
कि कौन उसके साथ लड़ने का बीरा लेता है ? कौन उस दुष्टको पराजय करता है ॥

लन्धौर की शिकायत में साई सादानशाह को बिनयपत्र भेजना और
उसके पराजय के हेतु अमीर का मनोरथ करना ॥

अब लेखनी इस इतिहास को इस भांतिसे वर्णन करती है कि अभी बादशाह
लन्धौरकी सरकशीका बयान दरबार में तमाम न हुआ था कि हरकारेने रक्षा करो २
यह शब्द बादशाह नौशेरवां के कानतक पहुँचाया बादशाह की आज्ञानुसार बख़्तक
दरबार से बाहर आया और सरंद्वीपके बादशाह के धावन के हाथसे बिनयपत्र ले
हुज़ूरके पास लाया और लिफ़ाफ़ा बन्द था सो खोलकर बिनयपत्र निकाला और दर-
बार के बीच में भारी आवाज़ से पढ़नेलगा कि आतशक दहनमरूद की सेवा प-
हुँचकर सप्तद्वीप के बादशाह की प्रकाशित बुद्धिपर प्रकाश हो कि मुझसे पहले

सादानशाह मेरा भाई गद्दीपर शोभित था एक दिन आखेट खेलने गया तो एक मृग के पीछे घोड़ा डाला सेनासे अलग होगया तीन दिनतक फिरतारहा और अत्यन्त प्यासा हुआ तो पानी को ढूंढ़ता हुआ एक तालाब पर पहुँचा देखा कि एक स्त्री बड़े क़द की तीन मशकें पानी की भरीहुई उठाया चाहती है और किसी ओर को ले जाया चाहती है सादानशाह ने उससे कहा कि मैं तीन दिन का प्यासा हूं थोड़ा पानी मुझे पिला मेरे कलेजे की गर्मी मिटा उसने उन मशकों का पानी नाडाला और ताज़ा पानी भरना आरम्भ किया सादानशाह ने इस बात से उसपर अत्यन्त क्रोध किया और अप्रसन्न होकर अपने मन में कहा कि पानी पीलूं तो जैसा इसने मेरे मांगने से पानी मशकों का बहादिया है वैसा मैंभी इसका रुधिर बहाऊंगा फिर उस स्त्रीने एक पात्र में भरकर पानी सादानशाह के आगे रक्खा जब वह पानी पीनेलगा तो एक दो चार घूंट पीने के पीछे हाथ पकड़ लिया और पूछने लगी कि तू कौन है और तेरा क्या नाम है तू किस देश में रहताहै और तेरा कहां स्थान है ? सादानशाह ने कहा कि अरी बदबख़्त ! पानी तो मुझे प्यासभर पीलेनेदे फिर तू पूछना परन्तु उसने न माना अपने पूछने से न फिरी न उसकी बात सुनी बादशाह सादानशाहने दो चार घूंट पिये जब प्यास बुझी तो तलवार निकालकर उसके मारने का मनोरथ किया वह स्त्री बोली ऐ मनुष्य ! मैंने तेरा क्या अपराध किया है ? कि तू मुझे मारता है सादानशाह ने कहा कि पहले मैं तुझसे कहचुका था कि तीन दिन का प्यासाहूं तूने तीन मशकें पानी की भरीहुई नादीं और मुझे ख़ाली करके देखाया और दुबारा पानी भरने में और देर करनेलगी इतनी देर मुझे और प्यासा रक्खा जब पानी दिया और जब मैं पीने लगा तो तूने सांस भरके पीने न दिया दो चार घूंटके पीछे मुझे छेड़ना आरम्भ किया कि तू कौन है और कहां से आया है कि ऐसा प्यास का सतायाहै यह सुन उस स्त्री ने हँसकर कहा कि नेकी बरबाद गुनह लाज़िम पहले तू अपना नाम व निशान बतला पीछे से इसका उत्तर दूंगी और तुझे ढाढ़स दूंगी सादानशाह ने कहा कि इस देश का मैं बादशाह हूं सादानशाह मेरा नाम है आखेट खेलने आया था मार्गको भूलगया हूं उसने कहा कि आपकी बुद्धिपर धिक्कार है जो बारहसहस्र द्वीपों का बादशाह होकर बुद्धिसे ख़ाली है समझ से तू कोसों दूर है सादानशाहने कहा कि इसपर कोई वृत्तांत भी है या केवल योंही मूढ़ बनारही है उसने कहा कि सुन जिस समय तूने मुझसे कहा कि मैं तीन दिनका प्यासा हूं दूरसे पानी ढूंढ़ता आया हूं मैंने उसी समय सुनतेही मशकों का पानी फेंका और दुबारा पानीभरकर दिया भी तो सांस भरकर पीने न दिया इस निमित्त से कि तू कई दिन का प्यासा था लोभ के मारे पानी बहुत पीजाता मैं शोची कि जो एकाएकी इसने पानी पिया और इसके कलेजे में पानी लगा तो सहजही में मरजायगा जो कोई देखलेगा तो इसके अजाब में मुझे पकड़ेगा जान छोड़ाना कठिन होजायगा आबरू पानी होजायगी सादानशाह यह बात सुनकर उसकी बुद्धिमानी पर दीवाना

होगया और उसके क़ायदे और होशियारी पर अचेत होगया और पूछा कि तू कहां रहती है तेरा कोई मालिक है या अकेली है उसने कहा कि सिवाय ईश्वर के मेरा कोई पालक नहीं है अपने हाथ पांव के श्रमसे खाती हूं ज़ाहिर में मेरा कोई खबरगीर नहीं है सादानशाह ने उसको नगर में लाकर उससे ब्याह किया कुछ दिनके पीछे वह स्त्री गर्भवती हुई और सादानशाह मरगया गद्दीपर मैं बैठा गर्भ के दिन बीतने के पीछे उस स्त्री के लड़का उत्पन्न हुआ उस लड़के का शरीर पांच गज़ का था कुछ दिनके पीछे वह स्त्रीभी मरगई मैंने नाम उसका लन्धौर रक्खा और उसके पालने में प्रवृत्त रहा और ऊंटिनि उसके दूध पिलाने के हेतु नियत की और दूध पिलानेवाली दाइयां व खिलानेवाली स्त्रियां उसके खिलाने को नौकर रक्खीं और जिस दिन लन्धौर उत्पन्न हुआ था उसी दिन मेरे यहां भी लड़का उत्पन्न हुआ उसका नाम मैंने जयपूर रक्खा और दोनों को पालने लगा जब दोनों पांच २ वर्ष के हुए तब एक दिन खेलानेवाली ने अदब सिखाने के हेतु एक तमाचा लन्धौर के मारा कि गला उसका सूजगया लन्धौर ने उस खेलानेवाली को उठाकर धरतीपर पटक दिया कि वह मरगई और जो लोग उसके देखनेवाले और निगहबान थे डरकर भागे और मेरे निकट आन पहुँचे मुझसे सब समाचार वर्णन किया मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को मस्त हाथी के नीचे डालदो और अभी घर से बाहर निकालदो मेरी आज्ञानुसार हाथी आया लन्धौर को उसके आगे डालदिया हाथी जो सूंड़से उठानेलगा कि लन्धौर ने एक झिटका ऐसा मारा कि सूंड़ उसकी जड़ से उखड़गई वह चीख़ मारकर भागा और फ़ीलख़ाने में जाकर एक खम्भा उखेड़कर सब हाथी मारडाले और तमाम नगर में हलचल पड़गया फिर मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को पकड़लाओ बंदीख़ानेमें बन्दकरो किसी औरने तो पराक्रम न किया किन्तु एक मन्त्री ने कहा कि यह मेरा काम है मैं लन्धौर को पकड़के आपके पास पहुँचाताहूं यह कहकर एक प्याला हलुवे का लन्धौर के आगे रखदिया जब वह हलुवा खाचुका तो उसको मार्ग पर लगाया और मेरे पास लाया लन्धौरने मुझको देखकर मन्त्री से पूछा कि यह कौन है और क्या नाम है उसने कहा कि ये आपके चचा साहब यहां के बादशाह हैं यह मुल्क इन्हीं का है लन्धौर बोला कि इससे प्रथम कौन बादशाह था मन्त्री ने प्रार्थना की कि आपका बाप था लन्धौर ने कहा कि तू गद्दीका कौन है ? मैं तो मालिक हूं और यह मनुष्य राज्य करे और मैं बेकार बैठारहूं मन्त्री ने प्रार्थना की कि यह बात सत्य है आप मालिक बादशाह हैं यह देश आपहीका है यह सुन कहनेलगा कि इसे गद्दीपर से उतारदो मैं गद्दीपर बैठूंगा आजही से राज्य करूंगा मन्त्री ने मुझसे कहा कि भलाई इसीमें है कि आप गद्दीपर से अलग हों और इसे बैठने दीजिये मैं गद्दीपर से उतरा और उसपर लन्धौर बैठा एक घड़ी के पीछे लन्धौर ने मन्त्री से खाना मांगा मन्त्री बेहोशी की दवा उसमें मिलाकर उसके सामने खाना लाया वह बोला कि शहपाल व जैपूर

को भी बुलालो कि वह भी हमारे साथ खावें खाने में मेरा साथ दें कदाचित् इसमें तुमने कुछ मिलादिया हो मेरी जान लेने का मनोरथ किया हो लाचार होकर मैंने जैपूर को बुलवाया उसने उसके साथ खाना खाया फिर तीनों थोड़ी देरके पीछे अचेत होगये एक घड़ी के पीछे मन्त्री ने मुझे और जैपूर को एक तेल सुँघाया और दोनों को फिर चेत में लाया मैंने आज्ञा दी कि लन्धौर को शिरसे पांवतक लोहे में जकड़दो और औरङ्ग व गोरङ्ग जो दोनों लखनौटी के शाहज़ादे हैं उनको सौंपदो मन्त्री ने मेरी आज्ञा पातेही वैसाही किया और उन दोनों शाहज़ादों को बुलवाया और बादशाह के हुक्म से ख़बर दी उन्होंने शीघ्रही उसे लेजाकर लखनौटी कुवाँ में डालदिया और उसका मुँह बन्द करदिया पच्चीस वर्षतक वह उसी कुयें में बन्द रहा और उमर व्यतीत किया जोकि लन्धौर की माता सीस पैग़म्बर के कुटुम्ब में से थी एकदिन औरङ्ग और गोरङ्ग की बहन ने स्वप्न में देखा कि आकाश से एक तख़्त पृथ्वीपर उतरा और उसपर हज़रत सीस पैग़म्बर बैठे हैं लन्धौर का तमाम वृत्तान्त और पराक्रम बताके कहते हैं कि मैंने तेरा लन्धौर का जोड़ा किया उससे तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा वह बड़ा प्रतापी होगा वह जो स्वप्न से चौंकी तो एक प्याला में खाना रखकर उस कुयेंपर पहुँची निगहबानों ने पूछा कि तू कौन है और क्या लाई है और इस समय कहां से आई है? उसने कहा कि लन्धौर के निमित्त खाना लाईहूं और एक प्रतिष्ठित प्रतापी का शुभ समाचार सुनाने आई हूं वह चुप रहे और कुछ न बोले वह कुयें में उतरगई और लन्धौर को खाना खिलाया और लोहे की बन्दि सोहन से काटकर अपना स्वप्न सुनाया और घर को चलीआई लन्धौरने जो बहुत दिनके पीछे सुख पाया सांकरों को अपने सिरहाने रखकर निर्भय पड़के सोरहा निगहबानों ने कहा कि लन्धौर की जीभ तालू में तो किसी दम न लगती थी आज क्या है? जो उसके चिल्लाने का शब्द कानतक नहीं पहुँचता है यह क्या माजरा है? एकने जाकर देखा कि लन्धौर चैन से पांव फैलाये अचेत सोरहा है और जिन सांकरों में जकड़ा हुआ था वह टूटीहुई सिरहाने पड़ी हैं वह आराम कररहाहै उसी समय निगहबानों में खलबल पड़ी शीघ्र औरङ्ग गोरङ्गको ख़बर दी दोनों शाहज़ादे दौड़े आये और बहुतसे पहलवान अपने साथ लाये देखा तो सचमुच लन्धौर छूटाहुआ पड़ा सोरहाहै इच्छा की कि इसे सोतेही फिर सांकरोंसे जकड़ देवें परन्तु लन्धौर ने जागकर दोनों शाहज़ादों को उठाकर देमारा और सब समाचार वर्णन किया कि तुम्हारी बहन आई थी मुझे खाना खिलागई है और मुझसे विवाह का क़ौल क़रार करगई है और सोहन से सांकरों को काटकर मुझे छुड़ागई है इस कारण मैंने तुम्हें जीदान दिया नहीं तो तुम दोनों की जान जाती फिर उसके स्वप्न का समाचार सब वर्णन किया दोनों शाहज़ादे इस समाचार को जानकर मन में प्रसन्न हुए और लन्धौर को उस अँधेरे कुयें से निकालकर तख़्तपर बैठाया और गद्दी पर बैठने की सब सामग्री इकट्ठा की लन्धौर ने अपने निमित्त एक गदा सातसौ

मन का बनवाया और उस गदा को हाथ में लेकर एक मस्त हाथी पर सवार हुआ और सरंद्वीप का मार्ग पूछनेलगा औरङ्ग गोरङ्ग ने हाथ बांधकर कहा कि कृपा-सागर कुछ दिन रहजाइये सेना जोड़के सरंद्वीप की राह लीजिये उसको यह बात अच्छी जानपड़ी और सेना बटोरने पर कमर बांधी जब एक फ़ौज अच्छी चुनीहुई बनगई तो बड़ी धूमधाम से सरंद्वीप की ओर कूच किया कुछ दिन के पीछे समुद्र के किनारे पर पहुँचा वहां से जहाज़ोंपर सवार होकर सरंद्वीप के फाटकपर पहुँचा हरकारों ने यह समाचार मुझे पहुँचाया मैंने जैपूर को दोलाख सवार की भीड़से उसके मुक़ाबिले को भेजा और कई सौ पहलवान उसके साथ किये दोनों ओर की सेना रीति समेत जमाई गई और जैपूर और लन्धौर का सामना हुआ जैपूरने देखा कि लन्धौर जब गदा मारता है तब दश २ बीस २ पहलवान पिसकर मरजाते हैं शरीर के फीहे २ अलग होजाते हैं तो भागकर गढ़ीमें पहुँचा और फाटक बन्द करलिया और क़िला पर से गोला लन्धौर की सेनापर बर्षाने लगा लन्धौर ने क़िला के दरवाज़ेपर पहुँचकर एक गदा फाटक में ऐसी मारी कि वह दरवाज़ा टुकड़े २ होगया और क़िलादार जो फाटक पर थे उन सबको मारडाला और दरवाज़े के टूटतेही मौत की हाट गरम की और क़िले में रुधिर की नदी बहाई मुझसे कुछ उपाय बन न आया फिर मैंने उस के सामने आकर जीदान मांगा लन्धौर ने कहा कि किस बातपर तू जीदान मांगता है किस मनोरथ पर मुझसे प्रार्थना करताहै मैंने कहा कि यह बादशाहत नौशेरवां जो सप्तद्वीपका बादशाह है उसके आधीन है जिसको वह आज्ञा देगा वह इस गद्दी पर बैठेगा आप कुछ दिन धैर्य धरें उत्तर मेरे विनयपत्र का आलेनेदें उसने उत्तर दिया कि जब तेरी फ़िरयादनामे का उत्तर आवे और वह कुछ तुझे लिखवा भेजवावे तबतक तू एक द्वीप में बैठ मैं तुझे और नौशेरवां को क्या समझता हूं क्या मैं तेरी तरह निर्बल हूं कि तेरी या उसकी आधीनता करूं अब मैं किसीसे नहीं डरता मैं लाचार होकर जान बचा नगर से बाहर निकला लन्धौर गद्दीपर बैठा जोकि मुझे आपको ख़बर करना उचित थी इस निमित्त हुज़ूर से प्रार्थना की आगे आप मालिकहैं जो लन्धौरको आप पराजय न करेंगे तो वह मुझे बहुत सतावेगा और अभी तो मेरे बाल बच्चे मरने से बचचुकेहैं मैं आपसे क्या २ बेअदबी और अनुचित बातें न कहूंगा बादशाह ने इस हालको सुनकर बुज़ुरुचमेहर को अलग लेजाकर सलाह पूछी कि उपाधि के दूर करने का क्या उपाय है? जो कोई उसकी बराबर न हुआ तो अत्यन्त छोटाई की बात होगी बुज़ुरुचमेहर ने प्रार्थना की कि पहले गुस्तहम को सरंद्वीप की ओर जानेकी आज्ञा दीजिये उसके पीछे दरबार के बीचमें यह कहिये कि जो कोई लन्धौर को पकड़लावेगा मेहरनिगारके साथ उसका ब्याह करूंगा और वह बहुतसा देश व माल पावेगा सासानियोंमें से तो ऐसा पराक्रमी दृष्टि नहीं आता है कि लन्धौर का शिर लाने की हामी भरे परन्तु हमज़ा नाम व निशान पर मरता है यक़ीन है कि वह अङ्गीकार करेगा और यह मंसूबा बहुत अच्छा है कि जो

हमज़ा मारागया तो आप बदनामी से बचेंगे और जो लन्धौर को जीतलिया तो हिन्दुस्तान का सब देश उसीके आधीन होजायगा बादशाह अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ और बुजुरुचमेहर की बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की और उसी समय गुस्त-हम को जो बहराम को घायल करके काबुल में भागकर बादशाह के डर से रहा था सांड़िनीसवार के हाथ उसको परवाना भेजा कि चालीस सहस्र सवार जो तेरे साथ हैं उन समेत सरंदीप पर जा लन्धौर का शिर काटकर हुज़ूर में हाज़िर ला तेरा अपराध क्षमा कियाजायगा और आगे तेरी ख़ातिरदारी कीजायगी और भारी इनाम भी पावेगा दूसरे दिन जब कि सब अमीर उमरावे दरबार में आये और अमीर भी आकर रुस्तम के स्थानपर बैठा बादशाह ने कहा कि ऐ पहलवानो! नामदार समय के बादशाह हिन्दुस्तान ने मेरे साथ वैर करनेपर कमर बांधी है और सर्कशी करने पर उतारू हुआ है जो कोई उसका शिर काटलावेगा मैं उसको अपना लड़का बनाऊंगा और मलका मेहरनिगार के साथ उसका ब्याह करूंगा यह सुन जितने पहलवान सासानी आदि थे किसीने दम न मारा अपने २ मन में विचारनेलगे कि प्रथम तो समुद्र से जीतेजाना कठिन काम है दूसरे ऐसे बलिष्ठ से सामना करके किसकी मजाल है कि घर आये जानबूझकर कौन अपनेको मृत्युवश करे यह बात बुद्धि से दूर है परन्तु साहबकिरां ने दङ्गल से उठकर बादशाह को सलाम किया॥

दोहा। उमर तुम्हारी अधिक हो, जबलग सूरज चन्द। हम तुमसों फल पावहीं, तुम दुखहतसुखकन्द॥

और प्रार्थना की कि इस आधीन को जो आज्ञा दीजिये तो खुसरो हिन्दुस्तान के बादशाह को जीता हुआ पकड़लावें मुझे केवल वहां पहुँचने की देर है आपके पासतक बेड़ी पहिनाकर लाऊं और जो मारागया तो आप परसे न्यवछावर हुआ यह सुन बादशाह ने तख़्तसे उठकर उसको गले लगाया और कहा कि ऐ अब्दुल्-अला इससे अधिक तुमसे मुझे आशा है॥

चौपाई। राज सछत्र सदा बहुभांती। रहै कृपाल तोर सुख थाती॥
प्रजा सुखी है विविध प्रकारा। अस प्रताप है नाथ तुम्हारा॥

बुरी दृष्टि दूर रहे बादशाह ने कहा कि जो साल अच्छा होता है वह वसन्त ही से दीख पड़ता है जो यह हिम्मत तुममें न होती तो इस अधिकारपर क्योंकर पहुँचते और क्यों जवांमर्दी का गुर्दा भरते फिर उसी दम अमीर को ख़िलअत कृपा की और तीस जहाज़ जिनपर हज़ार २ मनुष्य सवार हों बननेकी आज्ञा दी अमीर बिदा होकर अपने डेरे में आया और कूचका सामान करनेलगा और मन को धैर्य देनेलगा और सेना को आज्ञा दी कि तुमलोग आजही कूच करजाओ बसरे में जाकर हमारी राह देखो और अमर को बुलाकर कहा कि ऐ अमर! जो चलते २ एक बेर दृष्टि से मलका को देखलेते तो डाह न रहता अमर ने कहा कि एक पत्र बुजुरुचमेहर को लिखिये यह बात उनके उपाय से होसक्की है वह तुम्हारी भलाई के चाहनेवाले हैं और सहाय करते हैं अमीर ने अपने हाथ से एक रुक्का बुजुरुचमेहर को

लिखा अमर ने ख्वाजे के पास लेजाकर वह पत्र ख्वाजे को दिया ख्वाजे ने उस रुक्के को पढ़कर अमर को अपने साथ लिया और बादशाह से जाकर बयान किया कि यहां से हिंदुस्तानतक हमज़ा आपका दामाद ज़ाहिर होगा परन्तु यह कैसी दामादी कि शर्बत भी न पिलाया गया और हमज़ा आपकी आज्ञानुसार जी न्यवछावर करने को चला नौशेरवां ने हँसकर कहा कि क्या है हमज़ा को बुलवाओ पानीवाले से कहकर शर्बत बनवाओ ख्वाजेने बादशाह की आज्ञानुसार शीघ्र हमज़ा को बुलवाया और कन्द व गुलाब का शर्बत बनवाया अमीर शीघ्रही बादशाह के पास आये बादशाह ने अमीर को प्यार समेत अपने पास बैठाला और शर्बत मांगा ख्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर ने प्रार्थना की कि दामादी का शर्बत महल में पिलवाना उचित है और गिलौरियां पानकी भी वहीं खाना उचित है मर्दाने में इस बात का होना उचित नहीं है जनाब बेगमसाहबा के पीछे यह बात करना उचित नहीं नौशेरवां ने अङ्गीकार किया और ख्वाजेबुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि तुम हमज़ाको महल में ले जाओ और शर्बत आदि पिलवाओ मेहरनिगार की माता अपने हाथसे हमज़ा को शर्बत पिलावेंगी और समझादेना कि जितनी रस्में ब्याह की हैं सब कीजावें कि शर्बत पिलाने के पीछे हमज़ा का शिष्टाचार आदर व्यवहार करें और कहें कि मेहरनिगार तुम्हारी धरोहर है और हमारी इज़्ज़त तुम्हारी हा इज़्ज़त है चाहिये कि जल्दी बादशाह केबैरी को मारकर आओ या उस दुष्ट को जीता पकड़ लाओ और मेहरनिगार सेब्याह करो हमारे मनको आराम व चैन दो ख्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर अमीर से पहले घर में गये और बादशाह ने जो कुछ कहा था मलका मेहरअंगेज़से कहा बख़्तकने यह ख़बर सुनकर अपने मनमें शोचा कि जिस समय हमज़ा महल में गया उस समय अवश्य मेहरनिगार को यह देखेगा इससे तभी चल कि उसकी इच्छा मनहीं में रहे मलका का देखना जिसमें नसीब न हो झटपट ख़च्चरपर सवार होकर चला और दरवाज़ेपर पहुँचा अमीर बख़्तक को देखकर अमर से कहा कि इस समय यह उपाधि टाला चाहिये दोसौ रुपया तुझे दूंगा और बहुत राज़ी करूंगा अमर ने मक्कारी भाषा में अमीर से कहा कि आप मकान को जावें वहां आनन्द करें मैं इस खल को वहां तक न जाने दूंगा खड़े २ अभी समझलूंगा ज्योंही अमीर आगे बढ़े अमर बख़्तकके घोड़े की बाग पकड़ली और कहा कि ख्वाजे बख़्तक हम हिंदुस्तान को जाते हैं देखिये वहीं की मिट्टी है या अच्छीभांति से लौटआवें इससे जो आपने तमस्सुक पांचसौ रुपये का लिखदिया है सो अब कृपा करके रुपया दे दीजिये तो राहका ख़र्चही होजावे और आपके ऊपर से क़र्ज़ भी उतरजावे बख़्तक बोला कि तू भी बड़ा मूर्ख है तक़ाज़ा करने का यह कौन मौक़ा है मैं हमज़ा के साथ काम को जाताहूं तेरे मालिक का साथी हुआ हूं और तू मेरा मार्ग रोकता है कि मेरे रुपये देदो तू जा मेरे नाम से अदालत शाही में नालिश कर जो मुझपर रुपये निकलेंगे तो मैं दूंगा तू मुझे मार्ग में क्यों रोकता है अमरने कहा कि साहब! यह तो उस

से कहिये जो आपसे कमज़ोर हो जब मैं न लेसकूं तबतो अदालत में नालिश करूं ख़बरदार आगे पांव न धरियेगा पहले मेरे रुपये मँगवादीजिये फिर जहां मन में आवे जाइयेगा बख़्तक ने अप्रसन्न होकर अपने सेवकों से कहा कि अमर को हटा दो यह बात सुनकर अमर को बड़ा क्रोध हुआ और कूदकर ख़च्चरपर बख़्तक के पीछे जाबैठा और कटार निकालकर बख़्तककी पीठपर धरा और कहा कि दुष्ट! क्या मृत्यु आई है? तुझे अब वेमीच मारडालूं आंतें यहीं ढेर करदूं बख़्तक यह सुनकर कांपगया और हाथ जोड़ने लगा और बिनती करने लगा परन्तु अमर ने एक दस्ता उसके ऐसा मारा कि बख़्तक का शिर फूट गया रुधिर बहनेलगा बख़्तक उसी भांति से लोहू में डूबाहुआ बादशाह के सामने गया और पगड़ी देमारी कि सब सेवक का यह दर्जा हुआ कि छोटा मक्कार बाज़ार के बीच में मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग करे नौशेरवां को भी बुरा मालूम हुआ और अमर को बुलवाया जब अमर आया पूछा कि बख़्तक ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तूने उसके साथ ऐसा किया अमर ने प्रार्थना की कि कृपानिधान! आप न्यायी हैं न्याय करें जिसका अपराध हो उसे दण्ड दें या क्षमा करें इसका पांचसौ रुपये का तमस्सुक मोहरी सेवक के पास है यह मेरे रुपयों के देने को इन्कार करता है गुलाम ने इससे कहा कि अब मैं हिन्दुस्तान को जाता हूं जीता रहने के पीछे कब आना हो अपना तमस्सुक लीजिये मेरा रुपया दीजिये यह सुनकर यह क्रोधवन्त हुआ और अपने सेवकों से कहा कि इसको मार कर निकालदो हमारे सामने से दूर करो वे मुझे मारने को दौड़े और सैकड़ों बातें अनुचित कहीं हुज़ूर! इसका न्याय कीजिये कि मैं बाज़ार के बीच मार खाऊं और पियादों की दौर दबक उठाऊं इसका न्याय कीजिये कि किसका अपराध है? और किसने झगड़ा की जड़ डाली यह कहकर तमस्सुक भी जेब से निकालकर डाल दिया और न्याय मांगने लगा बादशाह ने बख़्तकसे कहा इस मुक़द्दमे में तेरा अपराध है सरासर तेरी ज़बरदस्तीही जान पड़ती है और न्याय के निमित्त हमारे पास दौड़ता है जा इस तमस्सुक के रुपये अमर को दे नहीं तो अदालत तुझे अपराधी ठहरावेगी जो रुपये न देगा तो बहुत से कष्ट पावेगा बख़्तक ने उसी दम ख़ज़ाञ्ची से सब रुपया लिया और अमर के हवाले किया और आप रोता अपने घर गया अमर मकान की ओर चला अमर तो इस बखेड़े में था अमीर और मुक़बिल महल में पहुँचे मलका मेहरअंगेज़ ने अमीर को बड़े आदर व्यवहार से बादशाहके बैठका पर बैठाया और मङ्गलाचार की सामग्री तुरन्तही मँगाई गई और आप मेहरनिगार को एक कोठरी में लेजाकर बैठी मङ्गलाचार करने की सभा जमी शर्बत पीने के शब्द बन्दीजन गानेलगे गुल शोर मचने लगा शर्बत लाने के हेतु मलका ने आज्ञा की अमर जो डेउढ़ी पर पहुँचा चाहा कि भीतर को जावे दरबानी तो पहिंचानता न था उसने लकड़ी उठाकर रोका कि तू कौन है? जो महल में चला जाता है वे पूछे हुए मकान में घुसता हुआ चलाजाताहै अमर दोनों आंखोंपर हाथ

रखकर लेटगया और गुल मचाकर कहने लगा कि दरबानी तेरा बुरा हो तूने मेरी आंखें फोड़डालीं यह हाल देखकर सिपाही जो दरवाज़े पर था घबरागया और उलटी खुशामद करने लगा मलका मेहरअंगेज़ ने गुल शोर सुनकर कहा कि देखो यह हल्ला कैसा होता है ? कौन दरवाज़े पर चिल्ला रहा है अमीर अमर का बोल सुनकर दौड़े अमीर के दौड़ने के साथही ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर भी दौड़े देखें तो अमर आंखें पकड़े हुए लोटरहाहै अमीर ने कहा कि अमर आंखें खोल मुँह से कुछ बोल जो तेरी आंखों में चोट आई हो तो ख़्वाजे तेरी दवा करें पर अमर आंखों को खोलता न था और हाय २ गई आंख २ के सिवाय कुछ बोलता न था अन्त को अमीर ने ज़बरदस्ती से उसकी आंख को उघारकर देखा तो आंखें साफ़ तारा सी चमकती हैं कुछ धक्का तो लगाही न था अमीर ने कहा कि अमर ! यह क्याथा कि जो हमको और ख़्वाजे को बेकाम बैठे विठाये उठाया और मलका साहबा को भी घबराया अमर कहने लगा कि आपके शिर की क़सम है इस दरबानी ने लकड़ी मेरे मारनेके हेतु उठाई थी जो लकड़ी मारता तो मेरी आंखों में लगती तो मेरी आंख फोड़ही डाली थी वह सुन अमीर और ख़्वाजे हँसपड़े और अमर को लेकर महल में गये मलका मेहरअंगेज़ने जो यह हाल सुना वह भी बे अख़्तियार हँसने लगी जब अमीर मसनदपर बैठे और बादशाहों की भांति शर्बत पिलाया गया और मङ्गलाचार की धूम मची और मलका मेहरनिगार की सहेलियों में दिल्लगी होनेलगी और मलका मेहरअंगेज़ की आज्ञानुसार प्रजा लोगों को इनआम दियागया मलका मेहरअंगेज़ ने कहा कि साहबकिरां मेहरनिगार आपकी धरोहर है और जिस समय तुम बिजय प्राप्त करके हिन्दुस्तान से फिरोगे उस समय तुम्हारे साथ ब्याह करूंगी आपका मनोरथ पूर्ण होजायगा अमर ने बुज़ुरुचमेहर की ओर देखकर कहा कि वाह २ साहब यह तो बहुत अच्छा न्याय आपने किया और बहुत अच्छी रीतिहै बिदित है कि हम तो बादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान में शिर बेचनेके निमित्त जावें और आप मेहरनिगार को एकदृष्टि भी न दिखायें जो ईश्वरने हमको जीता फेरा और मनोरथ समेत यहां तक पहुँचाया तो हम नहीं जानते हैं कि आप किसके साथ हमज़ा का ब्याह करदेंगे किसको इसके गले मढ़देंगे हमें क्या मालूम कि बादशाह की बेटी गोरी है या काली है दुबली है या मोटी है हम इस समय देख तो रक्खें जिसमें पीछे को ख़राबी में न पड़ें और हमें बादशाह के चरण की क़सम है कि जबतक हम मेहरनिगार को देख न लेंगे कभी पांव इस मकान से बाहर न धरेंगे यह सुन मेहरअङ्गेज़ने हँसकर अमर की बातोंपर कहा कि कहीं मर्दों का देखना उचित है यह रीति कहीं नहीं है कि लड़की को देखें हां स्त्रियां मँगनी ब्याह के हेतु आती हैं वही देख जाती हैं अमर ने प्रार्थना की कि हुज़ूर सत्य कहती हैं परन्तु मेरी यहां कौन माई मौसी बैठी है कि महल में आये और मलका साहबा को देख जावे आपही हमलोगों की बड़ी बूढ़ी हैं जो उचित होगा उसे करेंगी मलका ने कहा

भला यह तो अब तुम्हारी हमारी प्रतिष्ठा और आवरू एक हुई जब चाहो देखलो फिर कहा बहुत अच्छा ख़्वाजे तुम अमीर को पर्दे के भीतर लेजाओ और मेहरनिगार को दिखलाओ बुजुरुचमेहर उनको पर्दे के भीतर लेगया अमीर मलका मेहरअङ्गेज़ को देखकर सलाम किया और भेंट दी मलका अशीश देनेलगी मलका मेहरनिगार तले मूड़ कियेहुए अपनी माता की गोदमें बैठी थी लाजके कारण शिर ऊपर न उठाती थी अमीर उसे देखकर अत्यन्त कृतकृत्य होगये मारे खुशी के फूले न समाते थे मलका मेहरअङ्गेज़ ने जो अमीर को पास से देखा तो बड़े आनन्द से अङ्गीकार किया बुजुरुचमेहर ने मलका मेहरनिगार से कहा कि अमीर को जाना बहुत दूर है कुछ चिह्न अपना दीजिये कि सदा उसको अपने पास रक्खें आपकी याद में ध्यान लगाये रक्खें मेहरनिगार ने एक ज़मुर्रद की अँगूठी हाथसे निकालकर अमीर को दी अमीर ने भी अपने हाथ की अँगूठी उतारकर मेहरनिगार को देकर कहा कि हमारा भी चिह्न आपके पास रहे कि जिससे हमको आप न विसारें कभी २ याद करती रहें फिर अमर ने भी हाथ बांधकर मेहरअङ्गेज़ से प्रार्थना की कि जो अपराध क्षमा हो तो मैं भी कुछ प्रार्थना करूं उन्होंने कहा कि कह क्या कहता है ? तेरी क्या इच्छा है अमरने कहा जिस समय अमीर का ब्याह मलका मेहरनिगार से होगा तो सेवक का भी ब्याह मलका की दायाकी पुत्री से हो सो मुझे भी चिह्न दिलवा दीजिये शर्बत दाया साहबासे पिलवादीजिये यह सुन मेहरअङ्गेज़ ने कहा क्या अच्छा ? दाया ! कुछ सुननी है कि अमर क्या कहता है ? औरही मनोरथ इस का है दाया ने कहा कि ईश्वर मलका को सदा प्रफुल्लित रक्खे जिनकी बदौलत यह बातें सुनने में आईं मलका को छोड़कर यह कहां जायगी मलका की जो मर्ज़ी होगी वही यह भी करेगी यह सुन मेहरनिगार ने इशारे से कहा उसने अङ्गीकार करलिया फिर मलका मेहरअङ्गेज़ने फ़ितनाबानोंसे कहा कि कुछ तूभी अपना चिह्न अमर को दे उसने कई सौ रुपये का अतरदान दिया फिर मेहरअङ्गेज़ ने कहा कि फ़ितनाबानों ! तू भी कुछ अमर से ले वह बोला देता हूं यह कहकर जेबमें से एक खुरमा और दो अख़रोट निकालकर फ़ितनाबानों के हाथमें रखदिये और कहा कि इसको बहुत अच्छी भांति से रखना दीखनेवाले अमर के इस कामपर हँसते २ लोटगये फिर अमीर बिदा हुए और बादशाह की ओर चले ख़्वाजे बुजुरुचमेहर ने अमर से कहा कि बाबा, तू मुसल्मानों की सेना में जाकर ख़बर दे कि अमीर आते हैं तो कोई सन्देह और फ़िक्र न करे मैं अमीर को बिदा करवाने के हेतु बादशाह को बुलवाताहूं और इच्छा के अनुसार पारितोषिक दिलवाता हूं अमर तो उधर गया ख़्वाजे अमीर और मुक़बिल को अपने मकानपर बहलाकर बादशाहके पास पहुँचा और विनय की कि मलका मेहरअङ्गेज़ ने भी अतिप्रसन्नता से अमीर को दामादी से अङ्गीकार किया बादशाह ने अमीर को निकट बुलवाया और ख़िलअत दामादी की कृपा की इसके पीछे ख़्वाजे अमीर को मकान में लाकर बाज़ २ बातोंकी

शिक्षा दी और शर्बत पिलाया शर्बत पीतेही अमीर अचेत होगये तो ख़्वाजे ने अमीर की जांघ अस्तुरासे चीरकर शाहमोहरा उसमें रक्खा और टांके देकर मरहम दाऊदी उसमें मलदिया मुक़बिल ने पूछा कि हज़रत! यह कौन दवा है? कहा कि हिन्दुस्तानी एक मनुष्य अमीर को विष देगा आपके मारने का उपाय करेगा और उसकी दवा इसके सिवाय और संसार में उत्पन्न नहीं हुई है ख़बरदार जबतक तू अमीर के हाथसे मार न खालेना तबतक उसको न बताना यह कहकर किसी वस्तु का पानी अमीर के मुँह में टपकाया अमीर शीघ्र होशमें आये परन्तु इतनी देरमें घाव ऐसा भरगया था कि अमीर पर इस भेदका हाल न खुला इतने में अमर भी डेरेसे आन पहुँचा ख़्वाजेने अमीर को बिदा किया और रीति भांति करके समुद्र की ओर चले और बहुत से अमीर जो अमीरके स्नेही थे भेजने के हेतु चले और नगर के बाहर पहुँचाकर रुख़्सत मांगने लगे अमीर ने सबको ईश्वर को सौंपकर आप वहां से वेग कूच किया कुछ दिन बीते सेना समेत वहां बसरानगर में दाख़िल हुए और समुद्र के किनारे सेना समेत गये देखा कि तीस जहाज़ बादशाह की आज्ञानुसार बने खड़े हैं मेरे आनेका मार्ग वे लोग देखरहे हैं अमीर अपने तीस सहस्र सवारों से उन जहाज़ों पर सवार हुए और हिन्दुस्तान की ओर चलने को तैयार हुए अमर जहाज़ से उतरकर अमीर से कहने लगा कि मैं जिन्न और जादू और पानी से बहुत डरता हूं इसहेतु से हिन्दुस्तान की ओर नहीं जानेका मक्के में जाकर आपकी बिजय के हेतु ईश्वरसे वर मांगूगा अमीर ने देखा कि यह किसी भांति से मेरे साथ न जायगा उड़ानघातियां बतावेगा फिर अमीर ने कहा कि अच्छा अमर मैंभी नहीं चाहता कि तू कष्ट पावे परन्तु थोड़ी देर थमजा तो एक बिजयपत्र अपने पिता को लिखदूं अमर ने जाना कि सचमुच पत्र लिखदेंगे और मुझे यहींसे बिदा करेंगे तो जहाज़ पर सवार होकर अमीर के पास गया अमीर ने एक पत्र लिखकर अमर के हाथ में सौंपा और कहा कि ऐ भाई! आओ तो मिललें ईश्वर जाने अब कब मिलाप होगा? अमर की आंखों में जल भर आया और बहुत से आंसू टपके अमीर ने अमर को बग़ल में लेकर कहा कि यार! तुमने हमारी बड़ी २ मुसीबतों में साथ नहीं छोड़ा इस समय तुम्हारा बिछोह कब मन को भाता है॥

दोहा। जो कुछ लिखा लिलारमें, होना वही ज़रूर। अब तो नाव चलायदी, ईश करे भरपूर॥

केवट से कहा कि जहाज़ का लङ्गर उठा आज्ञा देने की देरी थी लङ्गर जहाज़ का उसी घड़ी उठगया जब किनारे से दूर निकल गया तो अमीर ने अमर को छोड़ दिया अमर हाथ पांव पटक २ कर जहाज़पर दौड़नेलगा और बड़बड़ाने लगा कि मैंने तो इस अर्बवाले के साथ प्रीति की रीति से मिलाप किया और यह मेरा बैरी जीवघातक होगया थोड़ी देर चलके एक टापू तीस गज़ का चौड़ा दृष्टि आया अमर उस टापू को देखकर मन में बिचारने लगा कि इसपर कूदकर घरतक पहुँच जाऊंगा परन्तु जिसको अमर ने टापू समझा था वह मछली थी धूप के खाने को

पानी पर उतरा आई थी अमर जो उसपर कूदा मछली अमर के कूदने की धमक से पानी में चलीगई तो अमर बूड़नेलगा और बहुत घबरागया यह वृत्तान्त देखकर साहबकिरां ने केवटों को ताकीद अर्थात् धमकी दी कि ख़बरदार अमर बूड़ने न पावे दूसरा गोता न खावे जो इसे निकाल लावेगा वह भारी पारितोषिक पावेगा केवटों नें सांकरें फेंककर अमर को जहाज़पर उठा लिया अमीरके सामने लाकर बैठादिया सच है कि जो मनुष्य दुःख में फँसता है वही आराम का हाल जानता है अब जो अमर समुद्र से निकाला गया तो भीगी मुर्गी की भांति जहाज़ के एक किनारे चुपका बैठा रहा कई दिनके पीछे एक टापू के किनारे पहुँचे जहाज़ों का लङ्गर पड़ा सब से पहले अमर कूदकर पृथ्वी पर आया और खिलखिलाकर फिरनेलगा दैवयोग से एक वृक्ष के तले एक आदमी कमर में चमड़े की पेटी बांधे बैठाहुआ अमर को देखकर मन में प्रसन्न हुआ कि मनोकामना पूर्ण हुई अमर से कहनेलगा कि ऐ मेरे भानजे ! तेरा मिलना भी दैवगति से हुआ इस स्थान में तेरा पहुँचना बड़ा आश्चर्य है मैंने तो जाना कि मैं मरा और द्रव्य भी गई परन्तु ईश्वर ने हक़दार को भेज दिया बड़ी दया मेरे ऊपर की अमर ने जो मालका नाम सुना तो चुप होरहा नहीं तो कहा चाहता था कि मैं तेरा भानजा काहेको हूं ? क्यों अजनबी आदमी से प्रीति बिदेश में करूं अमर ने उसका हाल पूछा उसने कहा कि तूने मुझे नहीं पहिचाना होगा कि मैं तुझे छोटा सा छोड़कर सरन्द्वीप को निकल गया था जिस समय मैं वहां बहुत सी सम्पत्ति पैदा करचुका तब चाहा कि अब घर को चलिये तो एका-एकी वायु बहुत ज़ोर से चली समुद्र में तूफ़ान आया और बड़ी २ लहरें उठनेलगीं जहाज़ यहां पर आनकर बूड़गया मैं एक सन्दूक़ हीरा मोती आदि जवाहिरात का लेकर कूदा और सूखे में आपड़ा परन्तु पैरों में ऐसी चोट आई कि पैर भर तक चलना कठिन होगया इस द्वीप में एक जर्राह रहता है लोग उसे बहुत अच्छा बताते हैं लोग दयाकर मुझे लेगये और कुछ खाना पीना भी मुझे देगये उसने अपने घरके निकट एक मकान किराये का भी लेदिया और केचुओं का तेल अपने घरसे लगाने को दिया पर आज मन ऊबने से यहां तक आया हूं परन्तु बड़ी देर से मकान पर जाने का मनोरथ है जा नहीं सक्ताहूं पीरके कारण हिचकिचाता हूं चलना कैसा ? खड़े होनेसे भी जी चुराता हूं जो तू मुझे पीठपर लादकर लेचले तो मुझपर दोहरा उपकार करे कि मैं घरतक बपीर पहुँच जाऊं और तुझे तेरी धरोहर भी सौंप दूं और मैं भी एक किनारे जहाज़ पर बैठलूं अमर ने जो सन्दूक़चों का नाम सुन कर समझा कि मेरी भाग्य उदय हुई बेगानों के आगे अपना जानपड़ताहूं सेंत की लक्ष्मी हाथ आती है आवतात्र कुछ भी न देखा झटपट उस लूले लँगड़े को अपनी पीठपर बैठा लिया उसका पीठ पर पहुँचना था कि उसने अमर की कमर में दोनों पांव लगाकर तस्मा अच्छी भांति करके लपेटा और घुटुओं से एँड़ियां लगा २ कर कहने लगा हां मेरे घोड़े अपना क़दम अच्छी भांति से बढ़ाकर दौड़ तो अपनी

दिखा अमर का सब शरीर जकड़ गया यद्यपि चाहा कि हाथ से उसके पांव को छुड़ावें जिसमें उपाधि से छूटें परन्तु उसने हाथ भी बांधलिये और अपने हाथ से अमर को धौलें मारने लगा और मुँहपर थप्पड़ पीठपर घूँसे लगाने लगा कि दौड़ता नहीं है सहलही में माल लिया चाहता है अमर सब चालाकी और मक्कारी भूल गया अत्यन्त अचेत होगया और लाचार होकर अमीर की ओर दौड़ा जहाज़ की ओर का मार्ग लिया कि अमीर मुझे इससे छुड़ावेंगे वहां जाकर देखा कि वहां भी अद्भुतलीला होरही है कि मित्र स्नेही समेत अमीर भी इसीमें फँसे हैं अमीर ने अमर को देखकर अय्यारी भाषा में कहा कि हम समझते थे तुम इस उपाधि में न फँसे होगे हमलोगों को इनसे छुड़ाओगे सो तुम भी इसीमें फँसे अमर यह हाल देखकर लाचार होकर अमीर के पास से निराश होकर फिरा परन्तु इसके उपाय में था कि वह तसमियां पांव कभी तो कहता था कि क़दम चल कभी हुक्म देता था कि कूद फिर उछल उसने सब अपने साथियों को देखा कि सब सवार हैं यह सब के सब कहने लगे कि तुम भी अपना २ घोड़ा दौड़ाओ और सर्पट पोइया दिखाओ और हम भी अपना घोड़ा दौड़ावें देखें किसका घोड़ा आगे निकल जाता है और कौन पीछे रहकर मार खाता है ? इसके पीछे इन्हें मारकर क़बाब लगाकर भून २ कर खाजावेंगे यह सुनकर सबके होश उड़गये ठण्ढी श्वासें भरनेलगे फिर वे अपने २ घोड़ों को एँड़ी मारना शुरू कीं और अपने २ घोड़ों की वागें लीं आदी का सबसे अधिक नाक में दम हुआ था कि मुटापे से क़दम २ पर ठोकरें खाता था यह दशा देख अमर ने यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। मानुषपर बीतत कबहुं, अतिदुख दण्ड उरोत। कबहुंक सुखमें रहत तन, मन अति हर्षित होत॥

और ऐसा दौड़ा कि कोई उसके आसपास तक न पहुँचा सबसे दो कोस आगे निकलगया यह देख वह दुष्ट अति प्रसन्न हुआ बोला कि मेरा घोड़ा सबसे अच्छा है वायु के समान जाता है अमर ने एक स्थानपर देखा कि कोसोंतक अंगूरके वृक्ष लगे हैं फल बहुत से लटकरहे हैं और दानों से रस टपकरहा है रस की नदी बहती है उसके समीप कद्दूकी बेल फैली है उसमें सैकड़ों कद्दू लटकते हैं दूरतक इसकी बेलें चलीगई हैं अपने मनमें अति प्रसन्न हुआ और कद्दू की बेल के पास जाकर अपने सवार से कहा कि बड़ासा कद्दू तोड़दे इसको पीकर और भी क़दम निकालूं और अपनी चुस्ती व चालाकी तुझे दिखादूं उस बुद्धिहीनने अमरके कहनेपर काम किया और तोड़कर अंगूर का पानी उसमें भरा और थोड़े बूंद अमर के मुँहमें चुआये और दोचार फल भी तोड़कर खिलाये अमर छलांगें फलांगें मारकर गानेलगा और उसको लेकर अति बल से दौड़नेलगा वह दुष्ट अति प्रसन्न होकर अमर से कहने लगा कि ऐ मेरे घोड़े! जबतक मैं जीऊंगा कभी तुझे रानसे अलग न करूंगा कि तू हँसता और जी बहलाता है और क़दम भी खूब जाताहै अमर ने कहा कि देखो यह पानी तुम न पीलेना मेरे निमित्त रहनेदेना वह अपने मनमें समझा कि मालूम

हुआ यह पानी बहुत अच्छी चीज़ है, तब तो यह पीनेको मना करता है और इस रसके नामसे इसके मुँहमें पानी भरताहै दो घूंट जो उसने पिये और उसको स्वाद मालूम हुआ तो कद्दू को मुँह में लगाकर सब पीगया अमर के दौड़नेसे जो जंगल की हवा उसको लगी सारी दुष्टता भूलगया और अचेत होकर अमर की पीठपर से गिरपड़ा अमर ने कटार निकालकर उसका पेट फाड़डाला और अमीरके पास जाकर कहनेलगा कि ऐ अमीर! तूने एक काफ़र की बेटी के हेतु इतने मुसल्मानोंका अपराध अपने ऊपर लिया और मुझको भी दण्ड दिया देखा चाहिये अन्तमें तेरा क्या हाल होता है? और इस मार्ग में क्या २ फल मिलता है? अमीर ने कहा कि यह तो विदितहै कि मैं अपराधी और अज्ञानहूं परन्तु तुम तो इतनी पुण्य कमाओ कि मुसल्मानों की जान बचाओ अमरने कहा कि मुझे क्या ग़र्ज़है? कि बेमतलब इतने पंगुलोंको मारूं अपाहिजों का अपराध अपने ऊपर लूं अमीर ने कहा कि इन का पाप हमारी गर्दन पर है और एक आदमी प्रति दोसौ अशर्फ़ी दूंगा और आप का उपकार मानूंगा अमर ने अङ्गीकार किया और प्रत्येकको गोफन से मारकर ढेर करदिया जब सबोंने उन लँगड़ों के हाथ से छुट्टी पाई तो सबों के शरीर में जान आई अमीर ने शीघ्र जहाज़ पर सवार होकर लङ्गर उठवाया जहाज़ को आगे बढ़ाया कि यह हिन्दुस्तान का द्वीप है ईश्वर जाने इसमें और कोई उपाधि का सामान होवे कि सब सेना दुःख में फँस जाय चल दिये दो महीने के पीछे एक द्वीप और मिला मल्लाहों ने अमीर से कहा कि जो आज्ञा दीजिये तो जहाज़ों पर पानी भरलेवें और कुछ अन्न भी खानेके हेतु जमा करलेवें अमीर ने कहा अच्छा तो है लोगोंके कपड़े भी मैले होगये हैं खड़ेघाट कपड़े धुलवा लेंगे फिर आगेका मनोरथ किया जायगा केवटों ने जहाज़ का लङ्गर किया और सब सूखे में उतरे अमर भी ठण्ढी हवा देखकर सैर करने को गया तो एक तालाब बहुत अच्छा दृष्टि पड़ा उसमें स्वच्छ मोती सा पानी लहराते देखा उसका भी जी लहराया कि स्नान कीजिये तो कपड़े उतारकर किनारे पर रखदिये और तालाब में गोता लगाया फिर जो शिर निकालकर देखा तो कपड़ों को घाटपर न पाया समझा कि अमीर ने चकमा देने के हेतु कपड़ा उठवा मँगाये होंगे किसीके हाथ चुरवाकर रखवाये होंगे हमज़ा! हमज़ा! कहकर अच्छी भांति से चिल्लानेलगा अमीर ने अमर की जो बोली पहिंचानी जाना कि किसी दुःखमें तो नहीं फँसा आसक्त होकर दौड़े और अमरसे कहनेलगे क्या हुआ भाई अमर! भलाई तो है? क्या फिर किसी उपाधिमें फँसा? अमर ने कहा कि यह दिल्लगी आपकी मुझे नहीं अच्छी लगती है नंगा मुझे तालाब में खड़ा कररक्खा है कपड़े मेरे दिलवादीजिये अमीर ने क़सम खाई कि मैं तेरे कपड़ों को नहीं जानता तब तो अमर घबड़ागया अपने मनमें कहने लगा कि जो अमीरने कपड़े नहीं उठवाये तो कहां गये और कोई दूसरा मुझसे दिल्लगी नहीं करेगा एकाएक जो अमर की दृष्टि ऊपर गई और वृक्षोंपर नज़र पड़ी तो देखा कि

वृक्षोंपर बन्दर बैठेहुए हैं कपड़ों को नोच खसोट रहे हैं किसीके हाथ में नीमताज़ है कोई अङ्गा खोलकर दीखता है कोई पायजामा लियेहुए है कोई कमरबन्द अपने हाथ में लपेट रहा है अमर ने और वस्त्र मँगवाकर पहने और पहले नीमताज़ को अपने हाथ से उछाला बन्दर का क़ायदा है कि जो देखता है वही आप भी करता है उसने भी अमर के नीमताज़ को उछाला परन्तु रोक न सका धरती पर गिर पड़ा अमर ने उठालिया इसी भांति से अमर ने अपना सब असबाब मांगलिया और वृक्षों में तेल मलकर आग लगादी जितने बन्दर थे सब जलकर मरगये अमीर ने शीघ्र सवार होकर जहाज़ों के लङ्गर उठवादिये जहाज़ आगे को बढ़े कई दिन के पीछे एक बादल का टुकड़ा आस्मान पर देखपड़ा फिर घरीभर में तमाम आकाश पर छागया बायुने ज़ोर किया तूफ़ान की सूरत उत्पन्न हुई दिनकी रात होगई हाथ पसारे न देख पड़ने लगा केवट सब घबरागये और बड़ी भारी भारी लहरें उठने लगीं जहाज़ों में ज़ोर २ से लगनेलगीं केवट लोग ज़िन्दगी से निराश होगये और आंसू बहानेलगे मनोरथरूपी किनारा तो न मिला मौतने आ घेरा फिर अमीर ने कहा कि अधैर्य न होना चाहिये ईश्वर की दयापर दृष्टि करना चाहिये ॥

दोहा। प्रथम दुखित जो होत हैं, सुख पावें ते अन्त। जो पहिले सुख लहत हैं, पुनि पीछे दुखवन्त ॥

अमर सबमें अधिक घबरागया और रोरो कर कहनेलगा कि ऐ केवट! सब मुसल्मानोंका बेड़ा तेरे हाथ है तू पार उतारेगा तो उतरेंगे कभी कहता था ऐ हज़रत अलियास! इस बेड़े को जो मँझधार में फँसाहै अगर किनारे लगादोगे और इस उपाधिसे बचाओगे तो यद्यपि इस समुद्रमें बल नहीं है परन्तु सवा दमड़ीकी खांड़की पुड़िया चढ़ाऊंगा और इसकी पुण्य तुमभी पाओगे इसके सिवाय तुम्हारे भाई हज़रत ख़िज़र तुमसे प्रसन्न होंगे कि मैं उन्हींका वरदानी हूं और इस आफ़त में फँसा हूं कभी अमीर से कहता था ऐ हमज़ा! यह सब तेरी करनी करतूत है मेरीभी मिट्टी तूने बेक़बर और बेकफ़न के ख़राब की जो कुछ किया सो तूने किया मैं इसी कारण समुद्र में पांव नहीं रखता था यद्यपि मैं तेरे स्नेह में बहुत फँसा था और तभी जानता था कि मैं पानी से पहले कोसों भागता था किनारे के भांति सदा अलग रहता था इतनी उमर हुई कभी हौज़ में भी न पांव धरा था नहाते समय शिर से कभी पानी नहीं डालता था तूने अपने बलसे मुझे लाकर समुद्र में डुबोया और समुद्र के बीच में मुझे दोनों जहान से खोया सुननेवाले यातो दुःख में थे या अमर की बातें सुनकर खिलखिलाकर हँसपड़े फिर ईश्वर २ करते तीन दिन के पीछे उजाला हुआ और सूर्य ने अपना प्रकाश किया लहरों की थप्पड़ें बन्द हुईं समुद्र का उलझना बन्द होगया अधिकारी लोग प्रसन्न होनेलगे और परस्पर कहनेलगे कि हम तो जीने से हाथ धोचुके थे ईश्वर ने बचाया कोई बोला कि डूबने में क्या कुछ बाक़ी रहाथा? परन्तु ईश्वर ने पार लगाया अमर ने कहा कि यारो! मेरे आशीर्वाद ने तुम सबको डूबने से बचाया और दुःख से निकाला क्या मैंने मानता नहीं मानी

है? हां कुछ देते जाओ कि मैं उन सब को अर्पण करूं हर एक ने कुछ २ दीनार अमर को दिये और बाज़ों ने देने का वादा किया अमर ने कहा चाचा अलियास जब सरन्द्वीप में पहुँचलूंगा तब शक्कर मोल लेकर चढ़ाऊंगा इस खारी समुद्र में शक्कर कहां से लाकर चढ़ाऊं लोग उसकी बातों पर हँसनेलगे और खुश हुए अभी मनका खेद न गयाथा कि इतनेमें समाचार मिला कि बहराम मलूगब्राक़ान चीन के जहाज़ों का पता नहीं लगता हज़ारों जहाज़ बेपते हैं किसी भांति से जहाज़ों का पता नहीं पाते दूरबीन भी लगाई परन्तु दृष्टि नहीं पड़ते अमीर सुनतेही शोकरूपी समुद्र में डूबगया रो २ कर कहने लगा कि बड़ाभारी पहलवान बूड़गया जिससे सेना की शोभा थी उसीका थलबेड़ा नहीं लगता लोग बोले कि ईश्वर न करे जहाज़ किसी ओर को तबाह होगये हैं किसी बन्दर में लगे होंगे ईश्वर उसको किसी द्वीप के किनारे लगादेगा वह ईश्वर बड़ा दयालु है फिर अपनी कृपा से मिला देगा अमर बोला कि हमज़ा! कुछ मानना मानो मैंने मानी थी उसीसे बच रहा और मेरेही पुण्य से तुभी बचगया अमीर ने कहा यह जगह हँसने की नहीं है समय को पहिंचान मेरी ओर से तूही मन्नत मान जिस समय बहराम की सूरत देखूंगा जो तू कहेगा सो मैं दूंगा अमर बोला कि बहुत अच्छा परन्तु जो पार उतरे और बहराम मिले तब कहा कि थोड़े से खर्च में काम निकाललो तो उस समय मैं क्या करूंगा? आपसे क्या भुनालूंगा? अपनी गिरह से मुझको करना पड़ेगा अमीर ने हंसकर कहा कि ऐसा न होगा जो तुम कहोगे वही देंगे॥

अमीर के जहाज़ों का सिकन्दरी तूफ़ान में फँसना और उससे निकलकर सरंद्वीप में पहुँचकर मादानशाह के पुत्र लन्धौर से कर लेना॥

बुद्धिमान् गुणवान् इस वृत्तान्त को लोगों को इसप्रकार से सुनाते हैं कि तूफ़ान बन्द होने के पीछे थोड़े दिन बराबर अच्छी बायु मिली किसी भांति से कुछ चित्त स्वस्थ हुआ केवट पाल उठाये चलेजाते थे एक दिन जहाज़ के देखनेवालों ने गुल मचाकर कहा कि यारो! बड़ाही तूफ़ान आता है इसके आगे जिसमें पड़े थे वह बहुत छोटा था देखें परमेश्वर किसे बचाता है और इसमें कठिनता अधिक है कि सिकंदरी यहां से बहुत निकट है ईश्वर बचावे कदाचित् जहाज़ इसमें पड़गये तो चक्कर खाकर डूबजावेंगे अमर के तो हाथ पांव ढीले पड़गये फूट २ कर रोने लगा और घंबरा २ कर जान अपनी खोने लगा कभी कहता था कि ऐ अलियास चचा! बचाना मैंने तो पहलेही से कहा है कि सरंद्वीप में पहुँचकर तुम्हारा प्रसाद चढ़ाऊंगा कभी चिल्लाता कि हज़रत ख़्वाजे ख़िज़र! मेरी सहायता अपने भाई से करवाओ ईश्वर से बर मांगा कि जो मानता मानी है वह सूखे में पहुँचकर करूंगा अमीर ने हल्ला गुल सुनकर कहा कि अब यह रोना पीटना कैसा है? हज़रत अलियास और ख़िज़र से क्यों फ़िरियाद होती है सक्कानियों ने कहा कि हज़रत तूफ़ान बहुत उठा है इससे ईश्वर ही बचावे तो बचेंगे नहीं तो बचना कठिन है यह बातें होरही थीं

कि तूफ़ान आपहुँचा और समुद्र में लहरें उठीं और जहाज़ बात की बात में सिकन्दर के घेरे में जापड़ा चक्कर में आकर घूमने लगा तब तो सब की बुद्धि घूमने लगी चित्त घबराया अमीर ने उस तूफ़ान में ध्यान करके जो देखा तो उस भँवर के बीच में एक खम्भा पत्थर का गड़ा है वह लम्बा चौड़ा है उसके सिरे पर एक तख़्ती सफ़ेद पत्थर की है और उसमें काले पत्थर के अक्षर छीले छिलाये बने हैं और वह अर्बीभाषा में लिखे हैं उसके पढ़ने से जानपड़ा कि यह लिखा था कि एक समय में साहबकिरां के जहाज़ इधर आवेंगे और वह सब इस घेरे में फँसेंगे साहबकिरां को उचित है कि आप इस खम्भे पर चढ़जावें उस दमामे को जो उसपर धरा है बजावें या अपने नायब को इसपर चढ़ावें कि उसके हाथ से यह दमामा बजाया जावे तो उसका जहाज़ निकल जायगा अमीर ने अमर से कहा कि लो भाई! हम तो इस शृङ्गपर जाते हैं और ईश्वर का नाम लेकर नक़ारा बजाते हैं जो केवल हमारे जी से हज़ारों की जान बचे तो क्या कठिन है ईश्वर के बन्दों की जान तो बचावें अमर ने कहा कि आपके नायब का भी तो नाम लिखा है सो मैं आपका नायब हूं इस शृङ्गपर जाकर नक़ारा बजाता हूं और अपने मन में शोचा कि इस शृङ्गपर चढ़कर मज़े से बैठरहूं समुद्र के भय से तो बचूंगा जब कोई जहाज़ इधर आवेगा तब सवार होकर किसी ओर की राह लूंगा बालबच्चे तो हैं नहीं अकेले किसी भांति से ज़िन्दगी निवाह लूंगा फिर सब सर्दारों की ओर देखकर कहा कि यारो! तुम लोगों का बलिबकरा होता हूं इस समय तो गांठ खोलते जाओ कदाचित् जो बचजाऊं तो अपनी मेहनत की मजदूरी तो पाऊं सबों ने एक के स्थानपर सौ और सौके स्थानपर लाख रुपये का तमस्सुक लिखकर अमर के हवाले किया अमर ने तमस्सुक लेकर यह सोरठा पढ़ा॥

सोरठा। यह समुद्र की धार, अगम अथाह असींव है। सोई लगावे पार, जासु नाम लैके धस्यो॥

और श्वास रोककर एक फलांग लगाई तो उस शृङ्गपर पहुँचकर श्वास टूटी तो समुद्र में गिरपड़ा और अमर तलेको चला तो क्या देखा कि एक निहंग मुँह खोले बैठाहै खुराक की ताक में है अमर घबरागया कि यह बला कहांसे आई जो उस उपाधि से बचे तो यहां जान गँवाई हवास सावधान करके उसके दांतों पर खड़े होकर फलांग जो मारी तो ऊपर जाखड़ाहुआ फिर उस खम्भे की चोटीपर जा पहुँचा अमर की यह तीव्रता देखकर सबों ने सराहा अमर ने जो देखा तो सचमुच एक नक़ारा रक्खा है और उस दमामे पर सिकन्दर का नाम लिखा हुआ है अमर ने ईश्वर का नाम लेकर उसपर चोब लगाई तो बड़ी भयानक आवाज़ आई उसके शब्दसे चौंसठ कोसतक समुद्र में लहरें पड़गईं अद्भुत भांति का शोर हुआ जितने जीव समुद्र में थे सब उतराआये और जो पक्षी उसपर रहतेथे सबके सब घबराये एकबारगी उड़े उनके परोंकी बायुसे जहाज़ चल निकले पर अमर उसी शृङ्गपर रह गया यद्यपि मन से उसकी यही इच्छा थी कि मैं इसपर रहजाऊं परन्तु अकेले से

घबरागया कुछ दिनके पीछे सरंद्वीपके टापू में जहाज़ों के लंगर पड़े और साहबकिरां सेनासमेत सूखेमें उतरे उधर अमर का यह हाल हुआ कि अकेले और घाम के ज़ोर से बेहोश होता और ईश्वर से हाथ जोड़कर दुआ मांगता था और रोता था कि एका-एक अमर के कानमें आवाज़ सलाम की आई तब तो अमर की तबियत और भी घब-राई भवचक्कासा होगया और इधर उधर देखकर आश्चर्य मानकर कहनेलगा कि यहां मेरे सिवाय आदमी कहां? कि जो मुझे जोहार करे और मेरी ख़बर ले किन्तु कदाचित् अजराईल अर्थात् यमराज आये होंगे मेरी जान लेनेका मनोरथ किया होगा अफ्-सोस क्या बुरे स्थानपर मौत आई कि कफ़न तक न मिला इतने में हज़रतख़िज़र आपहुँचे अमर ने देखा कि वस्त्र हरा पहिने एक मनुष्य खड़ाहै और चेहरे पर टोपी शोभितहै तब अदब समेत सलाम करके पूछा कि आपका नाम क्या है? और इस स्थानपर किसहेतु आयेहो? हज़रतख़िज़र ने कहा कि मैं ख़िज़र हूं और तुझे निका-लने आया हूं ईश्वर चाहता है तो अभी तुझे निकालकर बाहर करूंगा अमर उनके पांवोंपर गिरपड़ा जब उठा तब कहनेलगा कि ऐ हज़रत! मैं भूखा हूं आपकी कृपा चाहताहूं तब हज़रत ने एक रोटी का टुकड़ा दया करके दिया और कहा कि इसे खा मैं पानी भी पीनेको दूंगा और तुझे इस बलासे छुड़ाऊंगा अमर उसको देखकर जल-गया कि इस टुकड़ेसे मैं काहेको अघाऊंगा भूख की कठिनता से बड़बड़ानेलगा कि ऐ हज़रत! जो आप पैग़म्बर अर्थात् ईश्वर के दूत हैं यद्यपि आपकी बराबरी और अ-धिकारपर मैं नहीं पहुँचता हूं परन्तु मैं भी वली अल्लाह का सेवक जानकार हूं आप हमसे ऐसे समय में दिल्लगी करते हैं यहां हम अपनी जानको मरते हैं जब मनुष्य का पेट भरता है तब उसे दिल्लगी सूझती है नहीं तो उसे बात करना अच्छा नहीं मालूम होता है हज़रतख़िज़रने कहा कि दिल्लगी कैसी तैंने भूख की शिकायत की मैंने तुझे एक टुकड़ा रोटी का दिया और पानी पिलाने का भी वादा किया अमर बोला कि साहब! यह वही कहावत है कि (ऊंटके मुखको ज़ीरा) भला इस टुकड़ेमें मेरा क्या होताहै? एक अन्तड़ी भी तो न अघायगी आपने केवल प्रसाद कृपा किया है ख़िज़र ने कहा कि भलेमानुष! प्रथम नियत अच्छी करके खा देख तो इसे सब खा सक्ता है या अभी से अधैर्य होकर अनायास बकता है अमर ने वह टुकड़ा खाया पर वह उतनाही रहा किन्तु पेट भरगया और हज़रतख़िज़र ने सवा बालिश्तकी एक मशक निकाली और उसे पानी पिलाया और कहा कि तू तो पहलेही से अधैर्य होता था अब क्यों टुकड़ा बचरहा अमर ने जो देखा भूख की भूख जाती रही और प्यास बुझगई ईश्वर का धन्यबाद किया और कहा कि हज़रत! भूख प्यास आदमी के साथ रहती हैं आप तो चले जायँगे मैं फिर भूखा प्यासा मरूंगा तो किससे क-हूंगा जो यह टुकड़ा मुझे कृपा होजाय तो जीते ज़िन्दगी रोटियों की चाह न होती आपकी अत्यन्त प्रशंसा करता हज़रत ने अमर की प्रार्थना अङ्गीकार की और वह टुकड़ा अमर को देदिया और कहा कि ऐ अमर! यह वस्तु तुझे बड़े २ गाढ़े में

काम आवेगी और यह सिकन्दरी दमामा असबाब समेत हमज़ा को देदेना खबर-दार इसमें से कुछ न लेना अमर बोला कि हज़रत! मैं इस बोझ को किस भांति से लेजाऊंगा और इसका बोझ क्योंकर उठाऊंगा? हज़रतख़िज़र ने एक कमली देकर कहा कि इसमें लपेटले तुझे कुछ भी बोझ न जान पड़ेगा अमर ने अपने मन में कहा कि कमली भी अच्छी वस्तु है समय पर काम आवेगी और जाड़ेमें आराम देगी फिर सब सामान नक़्क़ारे समेत अपने शिरपर रक्खा और अपने पांव हज़रत के पांवों की पीठपर रक्खे फिर इस्मआज़म अर्थात् ईश्वर का नाम जो हज़रत ने बतायाथा पढ़ने लगा और आंखें बन्द करलीं तो बहुत ही शीघ्र कहीं से कहीं पहुँचा हज़रत ने कहा कि अमर! आंखें खोल ईश्वर की रचना देख कि दमकी दम में कहां से कहांतक पहुँचा है पहले किस कष्ट में फँसा था अब कहां खड़ा है अमर ने आंखें खोलीं आपको सूखे में पाया तो ईश्वर का धन्यवाद किया और कोहिस्तान की ओर चला और अमीर को ढूंढ़नेलगा अब साहबकिरां का हाल सुनिये कि जब बन्दर सरंद्वीप में पहुँचे और सेना समेत उतरे हज़रतख़िज़र और अलियास का प्रसाद जो माना था अच्छी भांति से चढ़ाया और कहा कि हमारा दो महीने तक यहां रहना होगा दुःख कष्टसे काम रहेगा और हम अमरका मातम करेंगे और उसके नाम से बहुत कुछ पुण्य करेंगे ज़ाहिर है कि मैं उसको अपनी जान के बराबर प्यारा जानता था और सब मित्रों से उसे अधिक जानता था उसने मेरे हेतु अपनी जान दी और सदा मुझसे अच्छी भांति प्रीति रखता था फिर जितने लोग वहां थे सब ने वस्त्र रँगाकर अमर का मातम किया रोने पीटने चिल्लानेलगे कुछ दिन के पीछे अमर ने उस बनमें एक मसजिद देखी कि बहुत अच्छी बनीहुई है जब निकट पहुँचा तब पांच आदमी नमाज़ पढ़ते दृष्टि पड़े अमर भी उनमें मिलगया जब नमाज़ पढ़चुके तब चार मनुष्य तो अपने २ घोड़ोंपर सवार होकर चले और एक आदमी पैदल चला अमर ने दया करके उससे हाल पूछा उसने कहा कि ऐ प्यारे भाई! हम पांचों शहीद हैं ईश्वर के मार्ग में जान दी है उसके बदले ईश्वर ने ये पदार्थ कृपा किये हैं चारों आदमी ये घोड़े समेत मारेगये थे इससे वे सवार हैं और मैं पैदल मारागया था इससे पैदल रहगया किन्तु तू मेहरबानी करे तो मैंभी घोड़ा पाजाऊं तेरे निमित्त दुआ करतारहूंगा अमर ने कहा कि मुझसे जो आपकी सेवा होसके वह करूं ऐसे लोगों की सेवा करना मैं बड़ी पुण्य जानताहूं वह बोला कि यहां से एक नगर थोड़ी दूरहै उस नगरके फलाने महल्लेमें मेरा घरहै और मेरे घरके आंगन में एक वृक्ष अमरूद का है उसके थाल में दोसहस्र अशर्फ़ियों अर्थात् मोहरों का लोटा मुख ढपा गड़ा है तू निकालकर तिहाई तो मेरे लड़के बालोंको दे और एक तिहाई तू ले और एक तिहाईका घोड़ा और उसका असबाब खरीदकर ईश्वरके मार्ग में मेरे नामपर किसीको देदे कि मुझे इस प्यादे पांव से छुट्टी मिले अमर उससे बिदा हुआ और उसके घर पर जाकर उसके कहेहुए को किया फिर आगे को चला

कई कोस गयाहोगा कि एक वृक्ष डालीदार मिला उसकी छाया में सुस्ताने के हेतु बैठगया एक क्षण पीछे एक वृद्ध मनुष्य को अपने दाहने खड़ा देखा तो पैर छूके पूछा कि आप कौन हैं ? उसने कहा मेरा नाम अलियास है तेरी धरोहर तुझे देने आया हूं यह जाल और कमली ले जाल में तो जितना बोझ बांधेगा सब हलका दिखाई देगा और कमली जब ओढ़लेगा तब तू सबको देखेगा और तुझे कोई न देखेगा यह कहकर चलेगये अमर कुछ दिनके पीछे साहबकिरां की सेना के निकट पहुँचा पहले मनमें प्रसन्न हुआ और ईश्वर की प्रशंसा की कि उसने सेना तो देखाई फिर देखा कि प्रत्येक मनुष्य काले वस्त्र धारण किये हैं कोई २ शोक करते २ अचेत होगया है अमर ने अपने मनमें कहा कि ईश्वर हमज़ा को अच्छा सुनवाये उसकी सूरत देखावे फिर एक मनुष्य अजनबी से पूछा कि यह कटक किसका है ? और सेना तमाम मातमी क्यों होरहीहै ? वह बोला कि यह सेना साहबकिरांकी है कुछ दिनों से यहीं पड़ी है अमर अय्यार नामी एक अमीर का भाई था अमीर उसका बहुत प्यार करते थे सो वह खारी समुद्र में एक शृङ्ग के ऊपर चढ़के मरगया उसके शोक में सबों ने काले वस्त्र पहिने हैं और अमीर ने आप बहुत दुःख किया है आज उसका चेहलम है फ़क़ीरों को खाना बटता है अमर ने अपने मनमें कहा कि अमीर की प्रीति की भी परीक्षा होगई फिर दिन तो उन्हीं फ़क़ीरों में जिन्हें खाना बटता था काटा रातको कमली ओढ़कर मादीकर्ब के तम्बू में घुसा देखा तो मादीकर्ब अचेत निर्भय सोता है तो उसकी छातीपर चढ़बैठा वह जागकर पूछने लगा कि तू कौनहै और कहां से आयाहै ? मुझसे वैर का क्या कारण है ? अमर बोला कि यमराज का दूतहूं आज अमर का जी बैकुण्ठ में भेजतेथे वहां जाना उसने अङ्गीकार न किया और यमराज से कहा कि मादीकर्ब मेरा बड़ा मित्र है विना उसके मैं बैकुण्ठ में न जाऊंगा ॥

दोहा। वह मैं नहीं सुजान सुत, इकले स्वर्गहि जाउं। मित्र सनेही साथ ले, तब बहु विधि गुण गाउं॥

यद्यपि उसे समझाया कि उसके आनेमें अभी बड़ी देर है अभी उसकी मियाद बहुत है परन्तु तब भी उसने न माना मुझे आज्ञा दी कि जाओ मादीकर्ब को भी लेआओ सो मैं तुझे मारने आया हूं मादीकर्ब ने कहा कि मैं उसका मित्र कभी नहीं हूं बल्कि उसका बैरी जीघातक रहाकरताहूं और उसकी मौत ईश्वर से मांगाकरता था बल्कि उससे हमसे कभी मेल भी न था अमर बोला कि तुम मुझको कुछ दो तो छोड़कर जाऊं और जो कुछ तुमने कहाहै वह यमराज से कहूं आदीने कहा कि वह सामने एक सन्दूक़ अशर्फ़ियोंका रक्खाहै आप लेलीजिये मेरी जान छोड़दीजिये अमर वहां से सन्दूक़ लेकर सुल्तानबख़्त के तम्बू में गया और वही बातें उससे भी कहीं उसने भी एक सन्दूक़ अशर्फ़ियों का दिया और अपनी जान बचाई संक्षेप यह कि उस रात को इसी भांति से तमाम सरदारों के पास गया और अशर्फ़ियां जमा कीं उसी झोली में भरलीं फिर अमर के आने के पीछे सबको डरके कारण से

जूड़ी ताप आई और किसीने डरके सबब से रातभर चैन न पाया अब प्रातःकाल हुआ पहले तो आदीने रातका हाल अमीर से कहा अमीरने जाना कि यह अच्छा स्वप्न नहीं है तो उसकी बातें सुनकर बहुत हँसे सुल्तानबख़्तने भी अपना समाचार वर्णन किया और २ लोगों ने आकर ऐसाही सब बयान किया अमीर ने कहा कि जल्द यहांसे तम्बू उखड़ाओ आगे सेना को बढ़ाओ यहां शैतान का बास रहता है नहीं तो क्या कारण है ? कि सबलोग स्वप्न एक से देखें ऐसा न हो कि लोग सिड़ी होजायँ दूसरे दिन अमर ने अमीर से यही बात की अमीर ने कहा बड़ी अद्भुत बात है कि शब्द आता है परन्तु आदमी नहीं देखपड़ता है अमीर ने हाथ से टटोला तो उसका शरीर हाथ में मालूम हुआ तो प्रेत समझकर एक हाथ से उसको पकड़ा दूसरे हाथ से चाहा कि घूंसा मारें तो अमर ने कहा कि ख़बरदार ओ अर्बवाले ! घूंसा न मारना मेरे चोट लगेगी और झटपट कमली उतारकर ऊपरसे फेंकदी अमीर ने बोली पहिंचानकर गलेसे लपटा लिया फिर अमर ने सब हाल वर्णन किया और सारी कहानी कह सुनाई और नक़्क़ारा आदि सिकन्दरी असबाब अमीर को दिया और वह टुकड़ा रोटी का और छोटी मशक का पानी बहुत सुगन्ध देता था और कमली और जाल अमीर को दिखाकर अपने पास रक्खा और कहा कि यह हज़रत ख़िज़र अलियास ने मुझे दियाहै इसमें और कोई साझी नहीं है अमीर ने प्रातःकाल होतेही वहांसे कूच किया और सरन्द्रीपके तले तम्बू खड़ाकिया चारों ओर यह समाचार विदित हुआ कि हमज़ा नामी बादशाह नौशेरवां का दामाद लन्धौरसे लड़नेके हेतु आया है सेना यद्यपि थोड़ी है परन्तु प्रति मनुष्य की बीरता की शाका रुस्तम आदिसे बढ़कर है और आप अमीर भी बड़े दमदावा का मनुष्यहै सरन्द्रीप गिरिपर मेले के समय अमीर पहुँचे थे और आसपास के लोग वहां जमा होतेजाते थे मेला होनेका कारण यह था कि हज़रत आदमको उन्हीं दिनों में ईश्वर के यहां से प्रतिष्ठा और मुक्ति उसी स्थानपर हुई थी और उस पहाड़पर उनके पांवका चिह्नभी बनाहुआथा हिन्दू और मुसल्मानों का पूज्यस्थान था दो २ चार २ महीने की राहसे लोग जमा होतेजाते थे और जो दिन ठीक होता उसमें दर्शन करते अमर ने अमीर से कहा कि आज्ञा कीजिये तो पहाड़ की सैर करआऊं और वहां जाकर कुछ ख़बर लाऊं अमीर ने आज्ञा दी अमर ने अपनी राह ली जो पहाड़ के तले आया तो एक वृद्ध मनुष्य को तप करते देखा उस वृद्ध ने जो अमर का नाम लेकर सलाम किया अमर ने दिवालपाव समझकर कटार पर हाथ किया और त्योरी चढ़ाई तो उस वृद्ध ने हँसकर कहा कि ऐ अमर ! मैं दीवालपाव नहीं हूं हज़रतनूह अलेहुस्सलामके कुटुम्बमें हूं तेरा बैरी नहीं हूं सालिम मेरा नाम है रात को मुझे ख़बर हुई थी इससे मैंने तुझे पहिंचाना नहीं तो मैं तुझको और तेरे नाम को क्या जानता ? यह कहकर एक गज़ दिया और कहा कि सामने जाकर इस गज़भर धरती खोद जो तेरी भाग्य में होगा वह मिलेगा किन्तु लालच को अपने हृदय में न

करना और जो कुछ मिलजाय लेलेना अमर ने उस गज़ को मापकर धरती जो खोदी तो एक दाना लाल का अति प्रकाशवान् निकला जब खोदते २ थकगया और कुछ न निकला तब तो लज्जित होकर सालिम के पास आया और वह लाल का दाना दिखाया सालिम ने कहा कि अब पहाड़ पर जाओ आदम के चरणों का दर्शन करआओ अमर ने कहा कि पहाड़पर जाने की राह तो किसी ओर दृष्टि नहीं आती है उसकी उँचाई पर चढ़तेहुए मेरी बुद्धि चकराती है किस भांति से जाऊँ सालिम ने कहा वह जो पतली पगडण्डी है उसपर सीधा चलाजा अपने मन में कुछ न घबरा अमर उसी राह से पहाड़पर गया परन्तु चलते २ थकगया फिर देखा कि एक हाता बहुत अच्छा बना है उस हातेके भीतर हरेरामयी है उसके आसपास बहुत साफ़ तड़ाग बहता है और हरजगह वृक्षों पर चिड़ियां लहलहाती हैं जब और आगे गया तो एक सफ़ेद पत्थरपर हज़रत आदम के चरण का चिह्न देखा तो आंखों की पलकसे उसे चूमलिया और वहां की भभूत को आंखों में लगालिया उस चरण के आसपास आदमी भर ढेर जवाहिरात का देखकर मन में लालच दुबारा आई शोचा कि आदम के चरण के दर्शन तो करचुका इस जवाहिरात को अब ले और बेग यहांसे सेना की राह ले यहां कौन देखने आता है ? तुझे जो बँधुआ करके लेजायगा फिर कमली बिछाकर सब जवाहिरात को उसमें समेटा और चला परन्तु जब दरवाज़े के पास गया तो दरवाज़ा आंखों से न देखपड़ा अमरने फिर उलटे पांवों आकर जहां जवाहिरात पड़े थे वहीं डाल दिये और दरवाज़े पर जो दृष्टि की तो उसी भांति से जैसाका तैसा दृष्टि पड़ा फाटक की चौखट आदि सब देखी अमर ने फिर बिचार किया कि पहले इस दरवाज़े पर कोई चिह्न बना आवें तब जवाहिरात यहां से लेजावें तो नीमताज अपना दरवाज़े की चौखट पर धरके जवाहिरात के ढेरों के पास खड़ा होकर दरवाज़े को ताका तो दरवाज़ा और ताज दिखाई दिया अमर ने फिर उस जवाहिरातको कमली में बांधकर राह ली जिस समय दरवाज़े के पास पहुँचा तब नीमताज और दरवाज़ा बेपता पाया जैसा किया वैसा फिर भी आगे आया मन में कहनेलगा कि दादा आदम भी बड़े प्रबन्धी थे उनका माल किसीको न पचेगा उन्हींके आगे रक्खा रहेगा फिर उसी भांति जैसे के तैसे जवाहिरात रखदिये तब ताज दरवाज़ेपर दृष्टि पड़ा अमर ने देखा कि नमाज़ का समय आया तो तालाब से वज़ू करके नमाज़ पढ़ी और धाड़ें मार २ कर रोनेलगा और उस जगह को पाक जानकर ईश्वर से बरदान मांगनेलगा कि एकाएक उस रोवा-धोई में अमर की आंख झपक गई तो देखा कई वृद्ध साहब करामाती मेरे शिरपर खड़े हैं जिनका चेहरा अति प्रकाशित है और मेरी ओर कृपादृष्टि से देखते हैं उन में से एक वृद्ध ने जो सबसे लम्बा था एक जामा देकर कहा कि इसे तू पहिन इस को बेबजामा कहते हैं इसके पहिनने से सब प्रकार की उपाधियों से बचारहेगा और किसी भांति का घाटा जिन्न प्रेत आदि से न पावेगा और इसमें जो जेब है उसमें

जो तमाम संसार की बस्तु डाल देगा सब समाजावेगी और इसके सिवाय जो बस्तु दरकार होगी वह इसमें से निकल आवेगी और इसपर हाथ धरके कहेगा कि दादा आदम ! मेरी सूरत ऐसी बनजाय शीघ्र उसी भांति की बनजावेगी यह इसकी करामात है और जिसकी बोली चाहेगा बोलेगा औ नाम मेरा आदम है अमर ने सलाम करके चरणोंपर शिर रक्खा दूसरे बृद्ध ने प्याला देकर कहा कि इस प्याले पर जो बड़ा नाम लिखा है उसको याद रखना तेरे बड़े काम आवेगा और इसमें तुझे लाभ बहुत होगा और मेरा नाम इसहाक़नबी है तीसरे ने अपना नाम दाऊद पैग़म्बर बताया और एक दुतारा देकर कहा कि जब तू इसको बजाकर गावेगा तो तेरी बराबरी में कोई गन्धर्व भी न आवेगा जो गानबिद्या भी जानता होगा तोभी तेरे गाने की चोट उसके हृदय में लगेगी चौथे ने साल्हेः पैग़म्बर अपना नाम बताकर अमर की पीठपर हाथ फेरा और कहा कि दौड़ में तेरे बराबर कोई न होगा और कोई घोड़ा भी तेरी बराबर न जावेगा और कभी न थकेगा हज़रत साल्हेः यह कहरहे थे कि एक तख़्त आस्मान से उतरा उसपर एक बृद्ध बैठेहुए थे उनकी सूरत देखकर अमर की आंखों में चकाचौंध छागया फिर चारों पैग़म्बरों ने उठके सलाम किया अमर ने उनसे पूछा कि ये कौन साहब हैं ? उन्हों ने कहा कि ये पैग़म्बर अन्त के समय के हैं मुहम्मद सल्लेअल्लाहुस्सलम इनका नाम है अमर ने हाथ बांधके बन्दना की और पहले से प्रार्थना करनेलगा या हज़रत ! सब पैग़म्बरों ने एक २ बस्तु कृपा की आपसे भी मांगताहूं कि जबतक मैं तीन बेर मौत न मांगूं तबतक यमराज मौत मेरी जान न निकाले मुहम्मद साहब ने कहा कि ऐसाही होगा इतने में अमर की आंख खुलगई देखा जो जो बस्तु पाई थीं वह सब पास धरी हैं अमर इस प्रसाद को लेकर सालिम के पास गया और सब कहानी ब्योरा समेत बर्णन की सालिम ने कहा कि अमर अब जाकर हमज़ा को भेजदे तो उस के भी जो भाग्य में बदा होगा सो मिलेगा अमर वहां से चला मार्ग में जेबपर हाथ रखकर कहनेलगा कि ऐ दादा आदम ! मैं बड़े क़दका होजाऊं मेरा क़द बहुत भारी आदमी से कई गुना बढ़जावे फिर देखा तो शीघ्र क़द बढ़गया फिर दर्पण में अपनी सूरत देखी तो अपनी सूरत से आप मन में डरा कि ऐसा न हो जो ऐसीही सूरत बनीरहे फिर उसीपर हाथ रखकर चाहा कि मेरी सूरत ज्योंकी त्यों होजावे फिर भी बहुत जल्द वैसीही सूरत होगई तब तो अमर प्रसन्न हुआ बग़लें बजानेलगा कि मैं जैसी सूरत चाहूंगा वैसीही बनजायगी फिर सूरत बदलके मुसल्मानों की सेना में पहुँचा और दुतारा बजाकर गानेलगा जिसने सुना अपना काम छोड़कर अमर के साथ हुआ लोगों ने यह ख़बर साहबकिरां को पहुँचाई कि एक हिन्दू आदमी इस सूरत का सेना में आया है दुतारा बजारहा है कि सुननेवालों का होश ठिकाने नहीं रहताहै साहबकिरां ने उसको अपने सामने बुलवाया देखा तो जाना कि अजब सूरत का आदमी है कि स्वप्न में भी ऐसी सूरत कभी न देखी होगी गाना बजाना जो

सुना तो कान खड़ेहुए अमीरने पूछा कि ऐ भाई ! तू कहां का रहनेवाला है ? तेरा नाम क्या है ? अमर बोला कि मुझे महमूद स्याहतन कहते हैं और रहनेवाला इसी जगह का हूं हिंदुस्तान का बादशाह मुझे अच्छीभांति से जानताहै और बहुतकुछ इनाम उससे पाताहूं परन्तु मुझे कोई हौसिलेभर नहीं देता है जिससे अघाजाऊं और किसी रईस के पास हाथ न फैलाऊं साहबकिरां ने कहा कि इसको हमारे ख़ज़ाने में लेजाओ जितना रुपया अशर्फ़ी जवाहिरात इससे उठसकें दिलवादो सुल्तान बख़्त अमर को अमीर के ख़ज़ाने में लेगया और इनआम के उठानेको कहा अमर ने जितने ख़ज़ाने में संदूक़ थे सब एक २ निकालकर धरे सुल्तानबख़्त बोला कि यह तो सैकड़ों गाड़ी का बोझ है तुझसे जितना उठसके उतना उठा और जितनी अमीरकी आज्ञा है उतना माल लेकर घर को जा इतना लालच क्यों करता है ? जा नाहक़ ख़ज़ाने के संदूक़ उठाता है अमर बोला हां हज़रत ! वही करताहूं नहीं तो क्या मेरे पास छकड़ा बहलें हैं जो उनपर लादके लेजाऊंगा या और लादनेवालों को कहींसे बुलालाऊंगा सुल्तानबख़्त यह समझा कि क्या यह विक्षिप्त होगया है चुप होरहा और भी लोग यह हाल देखते रहे सब के सब चुप खड़ेरहे अमर ने उन सब संदूक़ों को तले ऊपर रक्खा और उस जाल में खूब कसा और रस्सी से बांध कांधे पर रख पहाड़ की ओर जानेका मनोरथ किया देखनेवालों के होश उड़गये सुल्तान-बख़्त ने उसे रोंककर कहा कि थोड़ासा ठहरजा हम अपने हाकिम को इस बात की ख़बर करदेवें अमर संदूक़ों को कांधेपर से उतारकर बैठगया सुल्तानबख़्त ने जाकर अमीर से सब हाल कहा कि ऐ साहबकिरां ! वह तो मालूम नहीं होताहै कि जिन है या प्रेत था कोई जादूगर है या कोई आफ़त आसमान से उतर आई है उसने तमाम संदूक़ कांधेपर बांधके एक जाल में रक्खे और ऐसा हलका चल निकला कि उसके पांव तक न हिले इस आधीन ने उसे रोंका है कि हम इसकी ख़बर अपने मालिक को करलेवें तब तुझे बिदा करें साहबकिरां ने सुनतेही तजवीज़ किया कि यह बेशक अमर है कोई तमाशा सीखकर आयाहै यह उसीकी चालाकी है तो आप जाकर कहा कि क्यों भाई ! यह तो बहुत अच्छे तमाशे दिखाते हो पहले हमारे ही ऊपर हाथ साफ़ कररहेहो अमर ने हँसदिया अमीर ने उसे गले लगालिया फिर अमर ने सारा समाचार कहा और कहा कि आपको भी सालिम ने बुलाया है कुछ प्रसाद आपके हेतु भी रक्खाहै अमीर ने रातको आराम किया प्रातःकाल मित्र स्नेहियों समेत अमर को साथ लेकर पहाड़ की ओर चले और बाग़ व तालाब व नहरों की सैर करनेलगे फिर एक स्थान देखा कि धरती वहां की सफ़ेद चन्दन समान बनाई गई है और अत्यन्त सुन्दर बराबर चबूतरेसी बनीहुईहै और आनन्ददायक है कहीं नीची ऊंची नहीं है और उसके किनारे पर पत्थर की नाल और मोगदर और लेज़म व घदा आदि सब असबाब रक्खे हैं कुछ लोग उसके निगहबान खड़े हैं अमीर ने उनसे पूछा कि यह किसका अखाड़ाहै वे बोले कि हिन्दुस्तान के बादशाह

जिसका नाम लन्धौर है उसका अखाड़ा है उसकी कसरत करने की यही जगह है अमीर ने अमर से कहा कि मैं भी अपना बल अजमाऊं अमर ने कहा कि बहुत अच्छा फिर अमीर यहांपर जाकर सब मोगदर व बल्लम व लेजम को बहुत हलका उठालिया परन्तु गदा न उठी तो अमीर को अत्यन्त दुःख हुआ और कहनेलगा कि ऐ ईश्वर ! तूही प्रतिष्ठा व लाज रखनेवाला है जब उसकी गदा न उठी तब लड़ाई में कठिनता होगी फिर आगे चले और सालिम के निकट गये सालिम ने बगलगीर होकर वही गुर्ज़ अर्थात् गदा देकर कहा कि आप इसके प्रमाण उक्त स्थान की धरती खोदें जो कुछ आपका भाग होगा वह मिलेगा वह आप मेरे पास लावें अमीर ने सालिम के कहने से जो काम किया तो एक दाना हीरे का निकला अमीर ने सालिम को लेजाकर दिखलाया सालिम ने कहा कि यह माल आप का है इसको अपनी जेबमें रखिये और इस पहाड़पर दर्शन करने को जाइये आप का सहायक ईश्वर है जबतक उधरसे सहायता न होगी तबतक हिंदुस्तान के बादशाह से जीत न पाइयेगा अमीर ने पहाड़ पर चढ़के हज़रत आदम के चरण का दर्शन किया और उसी स्थान में तप करने और ध्यान धरनेलगे और रोरोकर आशीर्वाद मांगनेलगे यहांतक कि अमीर को झपकी सी आगई तो देखा कि एक तख्त आसमान परसे उतरा और उसी स्थान में स्थित हुआ उसपर कई वृद्ध अति प्रकाशवान् तेजस्वी बैठे हैं उनमेंसे एक वृद्ध बड़े क़द का आके उनसे अमीर का नाम ले सलामअलेक किया और आशीर्वाद देकर कहा कि हमज़ा ! यह बाज़ूबन्द ले अपनी भुजा पर बांध कभी तू किसीके साथ नहीं हारेगा और जो तेरे बैरीका शरीर हजार गज़ लम्बा होगा तो भी इसी बाज़ूबन्द के प्रताप से तेरी तलवार उस पर पड़ेगी तुझे कभी किसी भांति से उसके हाथ से कष्ट न पहुँचेगा परन्तु लड़ाई के नक़ारा पर कभी पहले चोब मत लगवाना उसके ऊपर कभी पहले वार न करना जबतक तेरे ऊपर तीन वार न करलेवे अपने अच्छे स्वभाव को कभी बुरा न करना जो जीदान मांगे उसको जीदान देना और जो तुझसे भागे उसका पीछा न करना कि तू इस संसार के क़ाफ़िरोंका मुख छीलेगा और मुसल्मानों का दीन बढ़ावेगा अभिमान कभी न करना दीनपर दया करना ॥

दोहा। अपनेको आधीन कर, कि मैंते छोट न कोय। सुन्दर है यह राज्यतं, जेहि मद कबहुं न होय॥

और देखना रण में कभी अनायास शब्द न करना तेरे शब्द की आवाज़ सोलह कोसतक जावेगी सुननेवालों का हृदय भयभीत होजावेगा यह सिखाके हज़रत आदम ने अमीर को गले लगालिया और सब पैग़म्बरों ने अमीर के ऊपर कृपादृष्टि की फिर खुशी के मारे अमीर की आंखें खुलगईं और नींद से जागा और उठकर स्वप्न की नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़के सालिम के पास आया और सब समाचार कहा सालिम ने अमीर को धन्यवाद किया और यह कहा कि मुझको केवल आप ही को देखना था आपको पता बताने का बोझ था सो ईश्वर सहायक है मैं अब

अपनी राह लेताहूं परन्तु इतना कहेदेता हूं कि इतना कष्ट अङ्गीकार कर लीजियेगा कि मुझे कफ़न और क़बर आप अपने हाथसे बनाइयेगा यह कहकर दुनियांसे हाथ खींचलिये और पांव फैला दिये ईश्वर का नाम लेकर बैकुण्ठ में पहुँचे अमीर भी इस क्षणभंगुर शरीर को देखकर आंसू बहानेलगा और उनको कफ़न और क़बर दोनों अपने हाथ से बनवाया और उसमें रखदिया और वहांसे उठकर लन्धौर के अखाड़े में आया वह जो एक सहस्र सातसौ मन की गदा थी तृणके समान उठा कर एक कोने से दूसरे कोने में रखदी और आनन्दित अपनी सेना में आया वहां पहुँचकर कई हज़ार रुपया फ़क़ीरों और भिक्षुकों को दिया निगहबानों ने यह समाचार लन्धौर को पहुँचाया लन्धौर यह समाचार सुनकर अपने अखाड़े में आया गदा दूसरे स्थानपर देखकर अति आश्चर्य किया कि और दूसरा भी कोई हमारी बराबरवाला आनपहुँचा और निगहबानों पर ताकीद की कि जिस मनुष्य ने मेरी गदा को एक कोनेसे दूसरे कोनेमें रक्खाहै और अपना बल अजमाया है जो वह फिर आवे तो मेरे पास उसको लेआना और बहुत शीघ्र मुझे ख़बर करना अब अमर का हाल सुनिये कि अमीर से सैरके बहाने बिदा हुआ और वहांसे लन्धौर की सभा की ओर चला एक ख़ुरासानी की सूरत बनकर हाथमें वही दुतारा लिये हिन्दुस्तान के बादशाह की चौखटपर जा खड़ाहुआ दरबानियों ने पूछा कि तू कौन है, तेरी जीविका क्या है और किस देश से आया है? बोला कि सातद्वीप के बादशाह के जामाता के साथ यहांतक पहुँचाहूं हिन्द के बादशाह की उपकारता और उदारता देखकर यहांतक आया हूं भाई! ज़रा मेरा समाचार बादशाह से कहदो और मुझे वहांतक लेचलो दरबानियों ने दारोग़ा को ख़बर दी दारोग़ा ने लन्धौर से प्रार्थना की हुक्म हुआ कि हाज़िर करो अमर उसकी आज्ञानुसार उनके दरबार में पहुँचा लन्धौर ने अमर को देखकर आश्चर्य किया कि इस सूरत का आदमी उसने कभी देखा न था अमर से पूछा कि तेरा नाम क्या है और कहां का बासी है? अमर आशीर्वाद देकर बोला कि मुझको बाबायजदबरद कहते हैं अर्थात् मारा और उठाया और कहा कि मेरे सब घरवाले ख़ुरासान में रहते हैं अमर से लन्धौर ने कहा कि तेरा नाम व तेरी बातें बड़ी अद्भुत हैं मालूम होताहै कि तू किसीको मारे आता है और उसका माल उठा लेजाता है अमर बोला कि सेवक तारको मिज़राब से मारता है और सुनने वालों और क़दरदानों के चित्तों को उठालेता है लन्धौर इस चुटकुले पर बहुत प्रसन्न हुआ और गाने का हुक्म दिया अमर सब लोगों से ऊपर जा बैठा और दुतारे को मिलानेलगा जितने गवैये, बजवैये थे अमर के ऊपर बैठने से कुनमुनाने और नाक भौंहें चढ़ानेलगे इसमें क्या ऐसा बढ़के गुण है? जो हमलोगों से ऊपर चढ़के बैठाहै इसकी तेरहाहै लन्धौर ने कहा प्रथम तो यह मुसल्मान है और एक शाहज़ादे तेजस्वी के साथ आया है और इसका फ़क़ीरी सामान है और इसका मनोरथ मुझे करना अवश्य है कि देश विदेश जायगा और सब जगह यहांका ज़िक्र आवेगा मैं

इसका मन जो तोड़ूं तो दूसरे देश का रहनेवाला है और जगह मेरी निन्दा करेगा और जो शिष्टाचार करूंगा तो इसे तमाम उमर याद रहेगा और दूसरे निकट से इसका गाना सुनना मुझे मंजूर है तुम्हारे क्रोध करनेका यह स्थान नहीं है और इन बातोंसे तुम्हें कुछ काम नहीं है उनको समझाकर अमर को शान की अमर गाने लगा जितने सुननेवाले थे सबके सब प्रसन्न होगये और कहनेलगे कि इसके गले में कहीं हड्डी है गला क्या बांसुरी है लोग तो अमर के गानेपर मस्त थे ही अचेत हो गये परन्तु अमर जमुर्रद के मोरोंपर जो चारों कोने तख़्त के जड़े थे दांत लगाये बैठाथा निगाहों से तकरहा था लन्धौर ने प्रसन्न होकर कहा कि ऐ बाबा यजदवरद ! मांग क्या मांगता है ? तेरी इच्छा किस वस्तुपर अधिक है अमर बोला कि आप की उमर अधिक हो हुज़ूरकी कृपासे नौशेरवां के जामाता ने बहुत कुछ दियाहै और संसार की आधीनता से कुछ प्रयोजन नहीं है फिर लन्धौर ने कहा कि तू इससमय मांग मेरा मन तुझे कुछ देना चाहताहै तुझसे अति प्रसन्न हुआ हूं अमर बोला कि आपकी कृपा से मुझे कुछ भी नहीं चाहिये सेवक रुपये पैसे का भूखा नहीं है परन्तु यह जी चाहता है कि जो आज्ञा हो तो इस समय मदिरा बांट एक प्याला वारुणी का पिलाऊं पहले जो बांटता था उसकी ओर इशारा किया उसने प्याला और बोतल अमर के हवाले किया अमर गुलाबी मदिरा जड़ाऊ प्याले में भर २ कर पिलाने लगा जब दो तीन बार पिलाचुका तो देखा कि लन्धौर की आंखों में ललाई दौड़ी हवास बदले एकदफ़ा हाथ बढ़ाकर उन मोरों में से एक उखाड़कर अपनी बगल में चुरालिया लन्धौर कनखियों को देखकर कहा कि यजदवरद यह क्या करता है मोर क्यों झोली में धरता है आंख मारके कहनेलगा कि चुपरह ऐसा न हो कि जिस में कोई सुनले या और कोई देखे लन्धौर इस बातपर बहुत हँसा कि यह तो अद्भुत मनुष्य है कि मेरा ही तो माल चुराता है और मुझीको उड़नघाइयां बताता है कि चुप रह ऐसा न हो कोई सुनले या कोई देखले बादशाह ने कहा कि सुन तो यजदवरद ! चीज़ तो मेरी है दूसरे के सुनने से क्या होगा ? मुझे चोरी किसकी है ? किन्तु जोकि तेरी इस चोरी ने भी इस समय नया स्वाद दिखाया इसके बदले ये मोरभी तुझे मैंने दिये अब तो प्रसन्न हुआ अमर ने सलाम करके उन मोरों को अपने जेब में रक्खा और कमली कथरी के लेने के उपाय में हुआ खुसरो की आंख बचा कर थोड़ीसी दारू बेहोशी की उस जेबसे निकाली और उस मदिरा में डालदी और उसमें से दो २ प्याला लन्धौर समेत सब सभा के लोगों को पिलादी एक क्षण न बीताथा कि सबकी आंखों में सरसों फूली सब अपने २ नशे में चूर होगये नशेकी तरङ्ग में सबने अपनेको तालाब समझकर भारी शब्द से कहा कि यारो ! तालाब बहुत बढ़ाहुआ है डुब्बी लगा २ कर किनारे निकलो झटपट तैर २ कर किनारे पहुँचो सबके पहले यहांतक लंधौर कूदा और मुँह के बल गिरा उसके पीछे सब सभा के लोग अपने २ स्थानसे उछले और तड़ाक पड़ाक अचेत होहोकर पृथ्वीपर गिरनेलगे

अमर ने अपना हाथ फैलाया जहां तक उसमें असबाब कि फ़र्शतक था उठा के उसी झूलमें भरी और अपनी राह ली बातकी बातमें अपने डेरे पर आनपहुँचा और लूट का माल लेकर गुप्त होगया दैवयोग से उससमय अमीर ने आज्ञादी कि देखो तो अमर कहां है कौन फ़िक्र करता है देरसे गया है देखो तो लश्करमें है या कहीं बाहर गया है बेग जाओ जिस काम में मिले उसे लेआओ लोग जो अमरके तम्बू में आये देखें तो अधिकता से भांति २ का असबाब फैलापड़ा है उसमें पहली दूसरी क़िस्म चुन रहा है उन्हों ने अमर से कहा कि चलिये साहबकिरां ने याद किया है इसी भांति से आपको लाने की आज्ञा दी है अमीर ने असबाब समेत बोलाया है बोला कि अच्छा भाई! असबाब संभाल लूं तो चलता हूं तुम्हारे साथही तम्बू से निकलता हूं वह बोला कुछ ख़बर है मैं सब असबाब समेत तुमको लेजाऊंगा नहीं तो साहबकिरां तुम पर ख़फ़ा होंगे अमर असबाब समेत अमीर के पास गया अमीरने समझा कि इसका कहीं वार लगगया हँसकर पूछा कि यह असबाब कैसा है? बोला कि हिन्द के बादशाहने मुझे इनाम दिया है साहबकिरां को धैर्य हुआ उस समय तो असबाब को हवालात में रक्खा प्रातःकाल आदी से कहा कि हिन्दुस्तान के बादशाह को हमारी ओर से सलाम कहना और यह असबाब और जो मैं उसके हेतु सौगात देताहूं देकर यह संदेशा कहना कि मालूम हुआ कि रात को अमर आपकी सभा में गया था उसका बयान यह है कि हिन्दुस्तान के बादशाह ने मुझे यह असबाब इनआम में दिया है परन्तु जोकि उसकी बात और काम का मुझको विश्वास नहीं है कि उससे बढ़के कोई संसार में छली और मक्कार नहीं है इस निमित्त से इस असबाब को मैंने भेजाहै और इस सौगात को जो बहुत थोड़ी है जो अङ्गीकार कीजिये तो मेरी बड़ीख़ुशी होगी इसका लेलेना आपको उचित है अमर ने जो कुछ बेअदबी की हो तो मुझे ख़बर करना कि मैं उसे दण्ड करूं आदी उस असबाब को छकड़ों पर भरवाकर बादशाह हिन्द के निकट गया वहां लन्धौर की सभा का यह हाल हुआ कि जब सूर्य का प्रकाश हुआ तब सब लोग होश में हो आये अपनी सभाको उजड़ी देखकर पूछने लगा कि यज़दवरद कहां? लोगों ने कहा कि हमको नहीं मालूम कि वह किधर को गया? फिर लन्धौरने अपने गले में एक चिट्ठी बँधी देखी खोलकर जो पढ़ी मालूम हुआ कि वह अमर था उसी समय स्नान करके पोशाक पहिन दरबार की तैयारी होनेलगी फ़र्शवालों ने न्यायशाला में फ़र्श बिछाया नये सिर से फिर कमरे सजे इतने में हरकारों ने ख़बर दी कि मादीकर्ब नामी नौशेरवां के जामाता का एलची आपके लिये बहुत वस्तु लाया है लन्धौर ने कई सरदार आदी की अगवानी लेनेके हेतु भेजे वह सब जाकर आदी को साथ लेकर दरबार में आये आदी ने मस्तक झुकाके सलाम किया साहबकिरां ने जो कुछ कहाथा सुनाया और वह असबाब जो अमर उठालेगया था वह और सौगात साहबकिरां की दीहुई बादशाह के आगे रखदी बादशाह आदी के विवेक

पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको अपने सरदारोंसे सबके ऊपर बैठाया लाहवकिर्श की सौगात भेजीहुई तो ले ली और कहा कि हमने अमर का अपराध क्षमा किया और हमारी ओर से अमीर को सलाम करके कहना कि अमर की ओरसे हमको कोई कष्ट नहीं पहुँचाहै बल्कि अमर की असली सूरत देखा चाहताहूं जो आप उस को असली सूरत में मेरे पास भेज देंगे तो मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा यह कहकर आदीको ख़िलअत देकर बिदा किया आदी ने जो कुछ देखा सुना था अमीर के आगे वर्णनकिया अमीरने कहा कि ऐ बाबा यज़दवरद ! तुमको बादशाह हिन्द ने असली सूरत से बोलाया है और असबाब तुम्हारे निमित्त लौटा दिया है अमर अत्यन्त खुश हुआ और असबाब अपने तम्बूमें रखकर लन्धौर की ओर चला मार्ग में अमरने देखा कि एक समूह सौदागरों का जाताहै और उनके पास बहुत अच्छे २ माल सौदागरी के हैं उनमें से एक के हाथमें एक छत्र लाखों रुपये का ऐसा है कि कभी किसी ने न देखा न सुना होगा अमर भी सौदागरों का भेष बनाकर उनके साथ होलिया जब वह समूह बादशाहकी चौखट तक पहुँचा दरबानों ने ख़बर की बादशाह ने उनका असबाब मांग भेजा लन्धौर ने जो छत्र देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ अपने दारोग़ा को बुलवाया और कहा जो मोल इस छत्र का हो इन सौदागरों को देदो और इनआम भी इसको दिलवा दो इनको प्रसन्न करके बिदा करो मैं अभी इस ताज को अपने शिरपर रक्खूंगा अमर ने सुनकर कहा कि पहले ताजकी क़ीमत हमको मिले तब बादशाह ताज अपने शिरपर धरें बादशाह ने यह बात सुन ताज दारोग़ा को देदिया और कहा इसका मोल सौदागरों को देकर हमारे पास लाओ मैं किसीकी वस्तु ज़बरदस्ती से नहीं लेताहूं मुक़ीम दारोग़ा ताज को सौदागरों से लेगया और मोल पूछनेलगा अमर ने उसके हाथ से लेकर कहा कि उजेले में देखकर इसका मोल मैं कहूंगा बादशाहों का दरबारहै यहां देखभालके लेन देन की बातें करूंगा मुक़ीम बोला कि बहुत अच्छा है मैं तुम्हारीही कही क़ीमत दूंगा अमर सभासे निकलकर आसमान की ओर देखकर कहनेलगा कि क्या बुरा बादल उठा है कुछ आंधी की अवाई है धुन्ध छारही है यह कहकर एक ओर चला और झटपट ताज लेकर भागा सौदागर और शाही नौकर आसमान के चारों ओर देखकर कहनेलगे कि ये भाई कहीं चिह्न भी बादल का है इतना झूंठ क्यों बोलता है ? फिरकर जो देखा तो जाना कि वह ताज लिये भागाजाताहै और बहुत दूर निकलगया है जल्द यह ख़बर बादशाह को पहुँची और सेना में बिदित हुई बादशाह आप एक हाथीपर बैठकर उसके पीछे हाथी दौड़ाताहुआ चला और अमर को जाकर रोका अमर एक झाड़ी की ओर भागा उधर राह न थी अमर खड़ा होकर इधर उधर देखनेलगा देखा तो एक झोपड़ा उसे सूझ पड़ा उसमें एक मनुष्य चक्की पीसरहा है झटपट उसके घर में जाकर उससे कहनेलगा कि तुझे कुछ मरने जीने की ख़बर है हिन्द के बादशाह ने एक स्वप्न देखा था हकीमों ने उसे विचार

कर कहा है कि जो किसी चक्कीवाले के शिर की खाल नक्कारे में मढ़कर बादशाह अपने हाथ से बजावे तो स्वप्न के दुःख से छूटजाय सो तेरे पकड़ने को दौड़ेआते हैं वह बिचारा सुनकर घबड़ागया कि मुफ़्त में जान गई घबराकर अमर से पूछने लगा कि मैं किस भांति से इन अन्यायियों के हाथसे बचूं और थोड़ी ज़िन्दगी के दिन टेर करूं अमर ने कहा कि अपनी धोती मुझे दे कि मैं पहिनकर चक्की पीसने लगूं तेरी जान बचनेका उपायकरूं तू इस हौज़ में बुड्डी लगाकर बैठ रह जो कोई आवेगा मैं उसको जवाब देलूंगा तेरे घर से हीला कर टालदूंगा उसने जाना कि मानो हमारा नया जन्म हुआ अतिशीघ्र धोती छोरके अमर को देदी अमर ने पोशाक अपनी उतारके चुरा ली और वह चक्कीवाला नङ्गा झटपट हौज़में कूदपड़ा और दबकर बैठरहा अमर ने उस धोती को बांधकर चक्की पीसना शुरूअ किया लन्धौर हाथी पर से उतरकर उस चक्कीवाले के घर में घुसा कि ऐसीही सूरत का आदमी अभी तेरे घरमें आया है सच बता वह कहां छिपा है अमर ने कहा कि हौज़ में बुड्डी लगाकर बैठाहै उससे देख रहाहै लन्धौर कपड़ा उतार कर हौज़ पर रखदिया और आप उस हौज़ में कूदा और अमर चक्की से उठकर लन्धौरके कपड़े उठाकर ले भागा ख़ज़ानची से जो मिलाप हुआ उसने कहा कि बादशाह ने यह चिह्न दियाहै कि दिखाकर बेग दोसौ रुपये ले आओ ख़ज़ानची ने दोसौ रुपये उस के हवाले किये अमर ने लेलिये फिर अपने डेरेकी ओर का मार्ग लिया और रुपये अपनी झोलीमें भर लिये अब वहां लन्धौर का हाल सुनिये कि उस चक्की के पीसने वाले को हौज़ से लन्धौर निकालने और ऊपर उछालनेलगा उसने हौज़के पत्थरों पर अपने शिर को देमारा और शिरको घायल कर फिर कहने लगा कि अब मेरे शिर की खाल ख़राब होगई और किसी काम की न रही किसी दूसरे चक्कीवाले को ढूंढ़कर उसके शिरकी खालका नक्कारा मढ़वाकर बादशाह को दे और अपनी इच्छा-पूर्वक इनआम ले कि बादशाह उसको बुलावे स्वप्न का दोष मिटावे लन्धौर ने आश्चर्य किया कि यह क्या बात है? जान पड़ता है यह बिक्षिप्त है जो ऐसी बे-मतलब की बातें करता है जब वह चक्की पीसनेवाला हौज़ के बाहर आया लन्धौर ने देखा कि यह वह मनुष्य नहीं है इसमें और उसमें बड़ा भेद है बाहर निकल के लोगों से पूछा कि इधर कोई आदमी गया है इस घर से कोई आदमी और भी निकलता है लोगों ने कहा कि और तो कोई नहीं निकलाहै परन्तु जिस मनुष्य को आपने अपने वस्त्र चिह्न देकर भेजा था और दोसौ रुपये देने को कहाथा सो ख़ज़ा-नचीसे रुपया लेकर इधर गयाहै नहीं मालूम है कि कहां रहताहै बादशाह समझ गया और उसकी चालाकी और मक्कारी पर प्रसन्न होगया पोशाक बदल कर अ-केला सीधा अमीर के डेरेकी ओर चला अमीर को हरकारोंने ख़बर दी कि लन्धौर हिन्द का बादशाह अकेला हाथीपर चढ़ा आता है और कोई मित्र स्नेही व अधि-कारी सिपाही साथ नहीं है साहबकिरां ने कहा कि आने दो और सब चुपके हो

रहो जब लन्धौर हाथी पर से उतरा और अमीर के तम्बू की ओर चला साहब-किरां तम्बू से उठकर अगवानी करके ले आये और जड़ाऊ चौकी पर उसे बैठारा और उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार उसको शिष्टाचार किया और रंगबरंग की सभा की लन्धौर अमीर का शिष्टाचार देखकर तन मन से प्रसन्न होगया और बड़ी प्रशंसा की और पूछा अमर कहां है उसको इस समय बुलवाइये परन्तु अपनी ही सूरत में उसे मँगाइये कि जल्द आवे मुझे उसके देखने की लालसा है मेरे निकट जब जाता है भेष बदल के जाता है और नया चुटुकुला कर आता है अमीर ने आज्ञा की कि बेग अमर को लाओ आज्ञा पातेही अमर आया और जो उसका रूप था उसी रूप से हाजिर हुआ लन्धौर को सलाम किया और अपनी चौकी पर बैठगया मदिरा बांटनेवाले सज धजके सभामें आये और प्यालोंमें मदिरा भरकर फेरनेलगे पहला प्याला साहबकिरां ने अपने हाथ से भरकर लन्धौर को पिलाया फिर आपने पान किया जब नशा जमी आंखों में अरुणाई आई लन्धौर ने अमर को गानेकी आज्ञा की अमर ने दुतारा मँगाकर मिलाया और ऐसी समय की रागिनी गाई कि सकल सभा मोहगई और लन्धौर ने मोतियों की माला गलेसे उतारकर अमर को देदिया और कहा कि वह ताज भी हमने तुमको दिया फिर साहबकिरां और लन्धौर से मित्रता की कुछ बातें गुप्तहुईं जब सूर्य अस्तहुआ हिन्दके बादशाहने बिदाके समय अमीर से कहा कि हमारी प्रार्थना आपके मन में कुछ ठनी या नहीं कहा कि आप स्नेहकी रीतिसे करते हैं मुझे अपनी मित्रता से अहसानमन्द बखानते हैं और मुझे सप्तद्वीप के बादशाह ने आपसे लड़ने को भेजा है यह स्थान बहुत लाचारी का है लन्धौर ने कहा कि इस मनोरथ को आप छोड़ दीजिये मिलाप में भलाई है या कि लड़ाई में नौशेरवां ने आपको मुझसे लड़ने नहीं भेजा है यह उसने आप से छल किया है वह आपका शत्रु है जब कोई उपाय न चला तब उसने आपसे यह उपाय कियाहै इस निमित्त में आपसे आश रखताहूं कि मुझे अपने साथ लेचलिये कि मैं उसको मारकर आपको गद्दीपर बैठादूंगा चैनसे राज्य कीजिये और अपनी प्रिया को बग़ल में लेकर रातदिन आनन्द कीजिये अमीर ने कहा कि मैंने तुम्हारे मारने का बीरा उठायाहै मैं किस भाँतिसे उसमें बुराईकरूं लन्धौर ने तलवार ईंचकर अमीर के आगे रखदी और शिर झुकाकर कहा कि जो यही मनोरथहै तो मेरे शिरको काट ली-जिये और बेश्रमके नौशेरवांके आगे रखदीजिये साहबकिरांने लन्धौरको गलेसे लगा लिया और उसके मर्दानगी की प्रशंसा की और उसका मन प्रसन्न किया और कहा कि यह काम बधिकों का है युद्ध की दुन्दुभी बजवाइये और रणभूमि में आइये उस स्थान में जो कुछ होगा वह होरहेगा लन्धौर बोला कि अच्छा ईश्वर मालिक है जो आपका यही मनोरथ है तो नक़ारा युद्ध के बजवाइये और सेना को ख़बर पहुँचा-इये अमीर ने कहा कि पहले आप अपने कटक में युद्ध का नक़ारा बजाने की आज्ञा दीजिये प्रथम आपही की ओर से सजधज कीजावे फिर मैं भी अपनी सेना सजकर

दुन्दुभी बजाने की आज्ञा दूंगा लन्धौर ने लाचार होकर अपने यहां आकर नक़ारा बजवाया साहबकिरां ने भी उसके धौंसेका शब्द सुनकर अपना सिकन्दरी नक़ारा बजाने की आज्ञा दी और कहा कि नक़ारा पर चोब पड़े हुक्म होतेही नक़ारेवाले ने नक़ारेपर चोब डाली उसके शब्द से सारी पृथ्वी डगमगाउठी जो लोग शूरवीर थे उनके मन बढ़गये कि कल तलवार बांधने को मिलेगी लड़ाई में अत्यन्त सुख पावेंगे किसी को मार किसीका उर बिदार लाशों से खाईभर आवेंगे यह बिचार स्नानकर पोशाक बदली पांन चबा २ कर परस्परमें बातें करनेलगे कि देखिये कल किसको बड़ाई प्राप्त होती है और सब बग़लगीर होकर मिलने लगे कि भाई आज फाग है सब लोग गले मिल लीजिये कल मौत अपना बेड़ा सवाँरेगी देखिये मिलने का समय दे या न दे अभी स्नेहसे आनन्द प्राप्त कीजिये देखिये कौन घायल होता है और कौन अपनी जान खोता है बाज़ों ने अपनी तलवार में डोरा डलवाया कि शत्रुकी गर्दन का डोरा न बचे बाज़ों ने तलवार का पट्टा चढ़वाया कि जिसमें शरीर की नस व पट्टा लगा न रहे कोई कहता है कि कल अपनी तलवार की चाल ढाल देखना है कोई बोला कि अस्फ़हान की तलवार का मुँह लाल दिखाता है कोई कहता ईश्वर हमारी प्रतिष्ठा रखनेवाला है दो सरदारों की लड़ाई में उसीका भरोसा है कोई कहता है कि हिन्दुस्तान की तलवार और हिन्दुओं का पराक्रम देखना है और अपने २ अस्त्रोंपर लोग बाढ़ धरानेलगे और हथियारों को देखने भालने लगे बरछी आदि सब सँवारने लगे किसी ने तलवार किसी ने कटार और कोई भाला कोई बल्लमपर शानें व बाढ़ धरवानेलगे जिसमें शत्रुपर लगातेही बेग प्राणहरे कोई अपने तीर और कमान दुरुस्त करनेलगे और जो नामर्द थे उनको नक़ारे का शब्द सुनतेही जूड़ी आई और मुँह सूख गये रो रो कर आशीर्वाद मांगनेलगे और प्रसाद मानने लगे कि जो बिना युद्ध के मिलाप होजावे तो आके मदारबाबा तुम्हारी छड़ियां चढ़ावेंगे कोई बोला कि मैं पीरजलीलों पर जाके बेमुचड़ी की कड़ाही करूंगा किसी ने कहा कि मैं पीर अलूले का मेला करूंगा इसी भांति से प्रत्येक नामर्द मानता था और अपने साईससे कहता था कि देखना भाई प्रातःकाल न होनेपावे तुम घोड़ेको कसना हम ठण्ढे २ तारों की छांह में सवार होकर अपने घर की राह लेवेंगे हम दश घण्टे सेनाके साथ युद्ध क्योंकरें? अमीर को तो मलिका से लव लगी है हम क्यों ऐसे स्थानमें मुफ़्त जानदें साईस ने कहा कि साहब सिपाही होकर ऐसी बात जीभपर लाते हो बर्षों से मुफ़्त में दरमहा खाते हो समयपर जान बचाओगे तो लोग क्या कहेंगे साथवालों को क्या मुँह दिखाओगे मर्दों का काम शत्रुको पीठ दिखाना नहीं इस समय बीरता दिखाने का काम है या घर चलेजाने का जो ऐसा करोगे तो साथ के जवान आपको लज्जित करेंगे सभा में बैठने से ठेना देंगे आपका जीना उनके हाथों से कठिन होजावेगा और अप्रतिष्ठा होगी यह चर्चा सब जगह बिदित होगई तो आपको चाकरी मिलना दुर्लभ

होजायगा और किसी रईसके पास आप की आबरू न रहेगी जो ऐसा हृदय रखते थे तो क्यों सिपाहगरी में नाम लिखवाया ऐसा समय क्यों अङ्गीकार करलिया यह आपको क्योंकर मालूम हुआ कि मैं माराही जाऊंगा जो आपके बैरीही मारेजावें देखिये घोड़े को जो दाना दियाजाता है जिसकी भाग्य में दो टुकड़े होना नहीं है वह चना समूचा चक्कीसे निकल आता है ईश्वर के हेतु दृढ़ता को न त्यागिये बढ़ २ के तलवार मारिये मर्दाना वार बैरियों पर कीजिये काम बनपड़े तो मालिक से पारितोषिक लीजिये आज एक घोड़ा है तो कल दो घोड़े होजावेंगे और आगे जो और काम बनपड़ेगा तो आपकी नौकरी और अधिकार बढ़जावेगा झुँझुलाकर साईस को गालियां देनेलगे और कहनेलगे कि अबे तेरा क्या जावेगा ? बट्टासा जी तो हमारा जायेगा तुझपर क्या कष्ट आवेगा तूभी तो चाहता है कि जो हम लड़ाई में युद्ध करें और वहां मारेजावें तू हमारा घोड़ा और वस्त्र लेकर सज धज बनाके सवारों में नाम लिखादे और मज़े से तनख़्वाह लेवे मुझसे कहता है कि इस उत्तम देहको काटाकरो अम्माजान और बड़ी भाभी साहबा को बहकाकर उनका गहना बेचवाया औ अपने परोसी से रुपया लेकर घोड़ा मोललेंगे और बख़्शीजी से मिल कर घोड़े के दाग़ करवाया हमको उपाधि में फँसाया यद्यपि हम कहते थे कि हम को लोहू देखकर जाफ़ आजाती है चिड़ियां शिरपर से उड़कर निकलती हैं तो डर के मारे जान सनसनाती और दम घबराता है कि कहीं गोली न लगे कि घोड़ा हथियार हाथ से जाय यह रणभूमि और लड़ाई भिड़ाई को हम कब जानते थे लड़कपन से तो हमको अम्माजान ने विविधप्रकार से लाड़ करके पाला है कभी सिपाहियों की संगति के निकट जानेकी इच्छा नहीं की सिवाय सितार व शतरञ्ज व गञ्जीफ़ा व नाचरङ्ग आदि के कुछ काम नहीं रहा अब सवारों में नाम लिखवाकर घर के बाहर निकला अभी ब्याह के दो चार वर्ष नहीं बीतेहैं जो सूरत औरही हुई तो वह बिचारी क्या कहेगी उठती जवानी किसके शिरपर रहेगी परिश्रम करके खाते बेल काढ़ते और नैचा बांधते शामको दो पैसे घर लाते माता और भाभी के पास बैठकर खुश होते रात को अपनी स्त्री के पास टांग फैलाकर चैन से नींद भरके सोते और शब्द तो कोई उस समय फेंकेगा जो हमको इस सेना में देखेंगे हमको अपना जी भारू नहीं है कि यहां से निकलकर फिर इस अभाग्य समूह सिपाहगरी में नौकरी करें या फिर इसमें नाम लिखवाने की इच्छा करें और जो तूने मुझे पुरचक दी उसे मैंने समझली तू किसी भांति से जान बचनेदे तू नहीं जानता कि जब कभी ऐसी वैसी लड़ाई हुई है तो हम भागके पछाड़ी रहे हैं किसी ने हमारी सूरत देखी नहीं हां एक बात है जो तू ख़ैरख़्वाही जानता है और नमकहलाली बतलाता है तो तू अपना अँगोछा लँगोटी हमको दे कल हम खारा खुरपा लेकर तेरे बदले घास छीललावेंगे शाम को घोड़े के आगे डालदेंगे और तुझे रोटी बनाकर खिलादेंगे तू हमारे कपड़े पहिनकर हथियार लगाके घोड़े

पर चढ़ और हमारे अवकी नौकरी करश्रा लड़ाई में मर्दोंका साथ देना ख़िलअत
और इनाम जो मिले उसे तुमहीं लेना संक्षेप यहहै अर्थात् कायर कूर सब अपना २
उपाय कर रहेथे और जो योधा बहादुर थे वे ईश्वर से वर मांगतेरहे कि ईश्वर!
कल इस रणभूमि में हमारी लाज रखना भलाई है और कायर रातही को भाग
निकले जब सूर्य के प्रकाश होने का डङ्का बजा इधर से साहबकिरां नमाज़ पढ़कर
योधों समेत और उधर से लन्धौर सेना लेकर रणभूमि में आया और सेना जमाई
और लड़ाई करनेपर उतारू हुए सफ़ाईवालों ने मैदान को झाड़ी वृक्ष आदि से
साफ़ किया और बेलदारों ने ऊंची नीची पृथ्वीं को बराबर किया और सक़ावालों
ने मशकों से धरती को छिड़क दिया सब प्रकारसे चौदह पंक्ति होके दोनों ओर की
सेना रणभूमि में खड़ी कीगई अभी किसी ओर से लड़ाई नहीं मांगी गई थी कि
सामनेसे बहुत काला एक बवण्डल उठा जब वायुने उस रेणुको स्वच्छ किया चा-
लीस झंडे देखपड़े सम्मुख के लोग सावधान हुए मालूम हुआ कि चालीस सहस्र
सवार की इस सेना में भीड़ है जिस समय वह कटक सामने आया साहबकिरां ने
देखा कि पहली लड़ी में गुस्तहम अस्कज़रींका पुत्र झंडा के तले खड़ा है सेना का
मार्ग देख रहा है अमीर ने अमर को दिखाया अमर अपने मनमें एक चुटकुला
शोचकर अपनी सेना से अलग होकर गुस्तहम के कटक की ओर चला और वहाँ
पहुँचकर अदब समेत गुस्तहम को सलाम की और अपना चुटकुला किया गुस्तहम
बोला कि कहो ख़्वाजे अमर! अच्छे तो रहे बहुत दिनों के पीछे देखपड़े अमर बोला
कि अच्छे क्या ख़ाक हैं न जीते हैं न मरते हैं ज़िन्दगी का दम भरते हैं इस अरब-
वालेकी नौकरी करके अपनी मिट्टी ख़राबकी मुफ़्तमें बला अपने शिरपर ली गुस्तहम
बोला कि भलाई तो है आजकल हमज़ा नौशेरवां की दामादी के आश में ऐसा
अभिमान करके घोड़ेपर सवार है कि किसी का आदर नहीं करताहै यह समझता
है कि संसार में न तो कोई मेरे समान मल्ल है न बलवान् न बुद्धिमान् है यातो
मुझे खुशामद करके दंगलपर बैठाताथा या अब कुरसी पर बैठने का भी मनोरथ
नहीं रखता है अब कुछभी मेरी वहां प्रतिष्ठा नहीं है मैंने जैसी भांति से परिश्रम
किया है वैसा जब कोई करेगा तब मालूम होगा और उसी समय मेरी ख़ैरख़्वाही
का मज़ा मालूम होगा अब मेरा भी यही मनोरथ है कि इसकी नौकरी छोड़दूं और
किसी ओर की राहलूं ईश्वर की सृष्टि तंग नहीं है और मेरा पैर लंग नहीं है
एक नहीं तो आधी कहीं मिलेहीगी इस उपाधि से मेरी जान तो बचेगी गुस्तहम
बोला यह क्या बात है तुम जहां रहोगे वहां तुम्हारे निमित्त सब कुछ है जो मुझ
को प्रतिष्ठा प्राप्तकराओ तो मैं तुमको जान समान मानरक्खूं और तुम्हारी सेवा
अच्छी भांति से करूं अमर बोला कि इसीहेतु मान मैं तुम्हारे निकट आया हूं परन्तु
एक काम कीजिये कि हमज़ा को लंधौर से लड़ने न दीजिये उचित यह है कि आप
सबसे पहले अपना घोड़ा कुदाकर लन्धौर से लड़ाई मांगें अमीर मुँह देखकर रह

जाय और उसकी सेना सबकी सब लज्जित होजावे लन्धौर को कुछभी बल नहीं मैंने उसकी गदा देखली एक लकड़ीपर लोहे का खोल चढ़वाया है मैं जानताहूं कि लन्धौर के समान संसार में कोई कायर और निर्बल नहीं है सो हमज़ा जो उसको मारलेगा तो नौशेरवां का दामाद बनेगा उसमें देखें क्या उधुम जोतेगा गुस्तहम ने कहा कि अच्छा हुआ जो तुम मेरे पास आये मैं लन्धौर को मारकर हमज़ा को भी मारताहूं और दोनों को तलवार के घाट उतारताहूं अब तुमसे छिपा क्या है जो कुछ हाल मेरा है सो यह है कि मैंने बहराम को मारकर जाबुल में बास किया था और वहां बहुत अच्छीभांति से गुज़र होती थी इतने में नौशेरवां का परवाना इस मज़मून का मेरे पास गयाथा कि बेग सरंद्वीपमें जाकर पहले लन्धौर का शिर काट-कर हमारे पास लाओ फिर हमज़ा को मारकर मेरे पास आओ कि मैं मेहरनिगार का ब्याह तेरे साथ करूंगा अन्त को अमर गुस्तहमको उभारकर रणभूमिमें लाया और आप भी गुस्तहम के घोड़े के साथ किसी के भेष में आया गुस्तहम ने अपने घोड़े को बढ़ाकर आवाज़ दी कि लन्धौर सादान का पुत्र कहां है यही गेंद यही मै-दान है मेरी तलवार का काट देखे मेरी मार अपने ऊपर ले लन्धौर ने अपने हाथी को रेलकर गुस्तहम से कहा कि क्या बेफ़ायदा बकता है अपना वार कर गुस्तहम ने तलवार ऐंचकर लन्धौर के शिर पर एक वार किया लन्धौर ने उसको गदापर रोंका तलवार ने दो दांत निकाल दिये लन्धौर ने गदा का एक वार उसपर लगाया गदा तो पूरी उसपर न पड़ने पाई पर गदाकी डांड़ी की झपट गुस्तहम की पसुलियों में लगी थोड़ी पसुलियां उसकी टूटगईं सब बहादुरी धूरि में मिलगई और वह औंधा मुँह होकर धरती पर गिरपड़ा और अचेत होगया साथके सवारों ने चालाकी करके गुस्तहम को उठालिया और जल्दी से फिरने का डङ्का बजादिया लन्धौर ने अमीर की ओर देखकर मुसकराकर कहा कि अब कल आपसे भी समझलेंगे आप भी तलवार का स्वाद देखेंगे अमीर ने कहा कि इस समय कौन मना करता है आज का काम कलको मत छोड़ो ईश्वर का नाम लेकर लड़ने पर कमर बांधो वह बोला कि आज यही भलाई है कि कलही पर यह युद्ध उठ रहे दोनों ओर से दुन्दुभी बजी फिरने का मनोरथ हुआ अमीर की सेना अमीर समेत अपने डेरे पर आई और लन्धौर अपने घरगया और गुस्तहम रातको भागकर पहाड़ में छिपरहा और मनमें यह विचार किया कि जो हमज़ा लन्धौर को मारकर फिरेगा तो अवश्य इधर से आवेगा उस समय गांड़ा से उठकर उसे मारलूंगा और उसकी सेनाको पराजय करूंगा यह न समझा कि हमज़ा बड़ा बली है हमारे मारने योग्य नहीं है॥

अमीरहमज़ा के साथ लन्धौर का युद्ध करना और लन्धौरका आधीन होना॥

अब लेखनी इस युद्ध के बृत्तान्त का काग़ज़ पर इस प्रकारसे बर्णनकरती है कि यह इतिहास युद्ध का हिन्दुस्तान के दो सिंहों की लड़ाई का बयान है कि गुस्तहम ने लन्धौर की गदासे पसुलियां तोड़वाकर रणभूमि से भागकर पहाड़ की खोह की

राह ली परन्तु साहबक़िरां रातभर अपनी प्रतिष्ठा रखने के हेतु आशीर्वाद मांगते रहे एक योधा दूसरे को ललकारता था कि कल परीक्षा का दिन है यह रणभूमि योधों के हेतु सोने की कसौटी है देखिये कौन तलवार की बाढ़ सहता है कौन अपना भेष बदलताहै किसका सिक्का पराक्रमके देशपर जारी होताहै किसकी प्रतिष्ठा का पल्ला भारी होताहै कल सब क़लई खुल जायगी यही चर्चा लन्धौर की सेना में मचा था जिससे परस्पर में लागडाट थी हांक मारता था कि कल बांकों की निकलियां देखेंगे देखिये कौन नदीरूपी पराक्रम में ग़ोता मारता है कौन तलवार की धारपर खड़ा रहकर उस नदी में ललकार कर तैरता है ? कौन शत्रुओं के साथ कुस्ती करके उनके शरीर की मौत का तूफ़ान देखाता है संक्षेप यह है कि रातभर यह गुलगपाड़ा दोनों ओरकी सेनाओं में इन्हीं बातों की परस्पर में चर्चा रही जब सूर्य ने प्रकाश किया साहबक़िरां ने वस्त्र व अस्त्र सजधज के स्याहक़ैतास घोड़ेपर सवार हुए नक़ीब और चोबदार विजय का आशीर्वाद ईश्वर से मांगनेलगे कमान तरकश एक कांधेपर रखकर दूसरे कांधेपर रक्खा ईश्वररचना की शोभा प्रकट हुई लौकहैरान का पुत्र झण्डा की छाया शिरपर किये हुए चला अमीर उसकी छाया तलेहुए अब दायें ओर मुक़बिलवफ़ादार और बायेंओर मुल्तानबख़्तक पराक्रम का किनारा चला और अमरअय्यार बारहसौ मक्कारों के बीच में वस्त्र अस्त्र पहिन कन्तूरा सोनहला और पांतावे पकरलाती को सजेसजाये गोफ़ना को कमर में बांधे तलवार कटार छूरी आदि हथियार बांधकर छः शब्द बारह स्थान चौबीसखाने अढ़ाई कोने नीचे में कहता हुआ छलांगें फलांगें मारताचला और तीस सहस्र सवार लोहे से सजेसजाये परोंका परा जमाये साथ अमीर के हुए उधर से हिन्दुस्तान का बादशाह लन्धौर सादान का पुत्र सात लाख सवार बड़े योधा खुमाची, संदली, बंगाली, करनाटकी, मरहटा, दक्खिनी, गुजराती, रांगड़ा, भील, सियारखोरा, काईन, भोजपुरी, बुन्देला, राजपूत, मन्दराजी, आसामी, बनाकी, भूटिया, फ़ौलाद लोहेको पहिने, बैसवाड़े के बैस, अवध देश के क्षत्री, ठाकुर, दिषित, पवांर, ब्राह्मण, सुकुल, तेवारी, दुबे, पांड़े, चौबे और बहुतेरे गवांर हथियार, छुरी, कटारी, सिरोही, तल्वार, पटा, बाना, शेरबचा, क़राबीन, पिस्तौल, बर्छी, सांग लगाये हुए बक्तरबर्क लेकर मस्तमतङ्ग पर सवार जब दोनों सेना पांति पांति जमाई गईं उनके बीचो बीच में यमदूतों ने अपना तम्बू खड़ा किया साहबक़िरां ने अपने घोड़े की लगाम ली और सिंहसमान लन्धौर के सोंह आकर कहा कि ऐ लन्धौर बादशाह ! मुझको तुमसे काम तुमको मुझसे काम है और लोगों के मारे जाने से क्या प्राप्तहोगा यह समझने का स्थान है जिस गुण में तुमको दावा हो वह तुम करो अपने मन की अभिलाष मिटालो लन्धौर ने कहा कि ऐ साहबक़िरां ! जो मैंने पहले तुमपर वार किया तो तुम्हारे मनकी अभिलाष मनहीं में रहजावेगी तुम्हारी मनोकामना न प्राप्तहोगी पहले वार तुम करो अपनी बाढ़ दिखाओ साहबक़िरां ने कहा कि मेरे गुरूने यह नहीं बताया है ॥

रणभूमि में युद्ध होना अमीर और लन्धौर से और तलवार मारना अमीर का लन्धौर के शिरपर और तलवारके घाव से लन्धौर के घोड़े की गरदन अलग हो कर धरतीपर गिरना और घोड़े का मरजाना॥

साहबकिरां ने कहा कि जबतक तीनवार तुम न कर लोगे तबतक मैं अपनी वार नहीं करूंगा अपना हाथ भी तुमपर न लगाऊंगा जोकि लन्धौर साहबकिरां पर नेह करताथा इस निमित्त गदापर हाथ न डालकर भाला साहबकिरां पर लगाया साहबकिरां ने उसके भाले की नोक अपने भाले पर रोंकी एक दूसरे से भाला की लड़ाई होनेलगी जब सौ २ नोंकें भाले की चलगईं और चोट किसीपर न आई और घोड़ा भी पसीना में डूबगया साहबकिरां ने उसके भाले को गांठकर एक डांड़ी ऐसी मारी कि भाला उसके हाथ से छूटकर दूर जागिरा और वायु के समान उड़गया यद्यपि भाला की अनी लन्धौर की छाती में पार होगई लाज में डूबकर अपने चेहरे को पीला करदिया परन्तु अपने को सँभालकर प्रशंसा करके बोला कि ऐ साहबकिरां! भाला लगाने का ढङ्ग केवल संसार में ईश्वर ने तुम्हीं को दिया है जो मैं योधा और मर्द हूंगा तो फिर आज से कभी भाले को हाथ में न लूंगा यह कह गदा लेकर बोला कि साहबकिरां! अब भी मिलाप का पट खोलो देखो युद्ध से सलाह अच्छी होती है नाहक़ तमाम उमर तुम्हारा शोक मेरे हृदय में रहेगा मुझे रञ्ज अपना न दो अमीर ने कहा कि यह समय लड़ने मरने का है सीख व स्नेह का नहीं है मैं पहलेही कहचुकाहूं कि अपनी बात से लाचार हूं नौशेरवां का अब तो आज्ञामानक हूं उसका हुक्म करनेवाला हूं लाओ देखूं तो तेरी गदाकी कैसी मार है लन्धौर लाचार होकर दोनों जङ्घा मिलाकर गदाको तोलकर दोहत्थड़ साहबकिरां के शिरपर मारी साहबकिरां ने ईश्वर का नाम लेकर गदा को ढालपर गांठा उसपर कुछ धमक भी न लगी यद्यपि अमीर के शरीर में पसीना निकल आया परन्तु हज़रत आदम के बाजूबन्द की तासीर से बाजू टेढ़ी न होनेपाई लन्धौरने अपने मनमें कहा कि गदा जिसपर लगी उसकी हड्डियां चकनाचूर होगईं परन्तु साहब के कुछ धमक भी न मालूम हुई त्यौरीपर मैल भी न आया दूसरी बार अत्यन्त बलके साथ गदा अमीरपर लगाई यद्यपि साहबकिरां ने सिकन्दर के समान उसको रोका परन्तु छठीका दूध याद आया लन्धौर ने तेहराई को फिर गदा झुंझलायके लगाई और इस बल से उस गदा को हनी कि जो कांसे के पहाड़पर पड़ती तो चर २ होजाता और जो साधारण गिरिपर मारता तो उसमें से पानी बह निकलता साहबकिरां ने उसको भी रोका परन्तु तुरङ्ग स्याहक़ैतास धरणी पर चारों पैर से चिप्त गिरपड़ा और अमीर गर्द के बगोले में पड़गये इस धमक से जो शरीर में गदापड़ी उससे गर्मी में अटगये लन्धौर के मुख से निकलगया कि आपके मुखका रङ्ग बदल गया कि वह मारा और तले गिरादिया बलवन्त को निर्बल किया परन्तु अफ़सोस है कि साहबकिरां की युवाअवस्था का मैंने इसी कारण से बार २ मना किया पर इनकी मीचने न मानने दिया यह कहकर अमीर के पास हाथी परसे उतरके गया

जांघें और हाथ मलकर कहा कि ऐ बादशाह, तेजस्वी! जो जीताहो तो बोल कि जिससे मेरी जान में जान आये और जो मरगया हो तो प्रलय के पीछे मेरा तेरा मिलाप रहे मुझे तेरा अतिशोक व्यापाहै साहबकिरां जो होश में आये ताज़ियाना दाऊदी स्याहक़ैतास के ऊपर चमकाया घोड़ा चारों सुम झाड़ कर उस स्थान से अलग जा खड़ा हुआ और स्वच्छ निकल आया अमीर ने कहा कि ऐ हिंदुस्तान के बादशाह! किसको मारा और किसको तले किया और कौन बलवन्त और किस को निर्बल किया मैं तो अभी जीताहूं एक वार और अपना लगाले अपने मन की हौस मिटाले अभी तो युद्ध का आरम्भ हुआ है ईश्वर जिसकी लाज रक्खे उसकी रहे इतना क्यों अधैर्य होताहै? किसी मर्द से कभी काम न पड़ा होगा॥

चौपाई। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े। परेउ न कबहुँ सुभट रण गाढ़े॥

लन्धौर ने अचम्भा माना और हाथी पर से उतरकर घोड़ेपर सवार हुआ और तलवार बर्धानी बाढ़दार खींचकर अमीर पर लगाई अमीर ने जड़ाऊ रेशम लल-रङ्ग में गुंथी हुई ढाल को आगे किया और उसकी तलवार कराल को उसपर गांठ लिया और कहा ऐ बादशाह, लन्धौर! मैंने तेरी पांच वार रोकीं अब दौर मेरा है मेरी वार का अवसर आया ख़बरदार हो यह न कहना कि धोखे में मुझे मारा और जानने न पाया यह कहकर रकाबसे रकाब मिलाकर तलवार ईंचकर अत्यन्त चा-लाकी व होशियारी से लन्धौर के शिरपर मारी बादशाह ने ढालपर रोंककर चाहा कि रद करे और अमीर के हाथ को गांठ ले परन्तु तलवार ढालके दो टुकड़े करके घोड़े की घींचके तले जा निकली घोड़े का शिर गिरपड़ा बादशाह हिन्द ने ज़ीन को ख़ाली किया और लज्जित होकर क्रोध में आया और तलवार खींच कर अमीर पर दौड़ा अमीर ने अपने मन में कहा कि ऐसा न हो कि स्याहक़ैतास घायल होजावे या अपनी जान इसके हाथ से खोवे तो बल मेरा आधा रहजावेगा और फिर ऐसा घोड़ा कहां मेरे हाथ आवेगा चालाकी करके घोड़े से अलग हुए और बल करके तलवार लन्धौर के हाथसे एकाएकी निकाल ली और छीनकर अपनी सेना में फेंक दी लन्धौर ने अमीर की गर्दन हाथसे बांधी अमीर ने उसकी कमर में अपना हाथ डालदिया दोनों ओर से ज़ोरावरी होनेलगी देखनेवालों का मुँह फिरगया जब दिन बीतगया और रात हुई तब दोनों ओर से मशालें बारी गईं रातभर बराबर जलाकीं तीन रात व तीन दिनतक लन्धौर और अमीर मल्लयुद्ध करते रहे परन्तु किसी का किसीसे लङ्गर न लगा चौथे दिन अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर लन्धौर को छाती तक उठालिया परन्तु शिरतक ऊंचा न करसका उस लङ्गर को जो बहुत भारी था रोंकेरहा उसको छोड़कर चाहा कि जांघ के ऊपर कटार मारें जान को शरीर से बा-हर करके मिट्टी में मिलावें लन्धौर ने अमीर का हाथ पकड़ लिया और हाथ जोड़ के कहा ऐ साहबकिरां! आपके सिवाय और किसीने इतनी शक्ति पाई है कि मेरा लङ्गर धरती से उखाड़े और मुझे पृथ्वी से उठा लेवे मैंने तन मन से आपकी

आधीनता अङ्गीकार की और आज से मैंने आपका साथ पकड़ा अमीर ने लन्धौर को गले लगालिया और उसी समय ईश्वर का धन्यवाद किया और कहा कि बादशाह! तुम मेरे बाहुबल हो मैं तुम्हें भाई की भांति जानूंगा और जान से अधिक प्यारा रक्खूंगा परन्तु मेरी यह इच्छाहै कि तुम मेरे साथ नौशेरवां के पास चलो मुझे उस से सच्चा करो लन्धौर ने कहा कि मैं आधीन हूं जहां आज्ञा हो वहां चलूं बिस्मिल्लः कहकर वहां चलिये आगे तम्बू भेजिये अब तो मैं बात हारचुका इस बात में बे उत्तर हूं लन्धौर ने उसी दम अपनी सेना के सरदार बुलवाकर अमीर की नौकरी करवाई और सबके ओहदों अर्थात् अधिकारों का हाल अमीर को बताया और आप अमीर के साथ होकर अमीर के तम्बूमें गया साहबकिरां ने बहुत कुछ रुपया पैसा लन्धौर के ऊपर न्यवछावर किया और सभा सज के मेहरनिगार के चित्र को देख-कर रोने लगा आंसुओं की नदी बहाने लगा लन्धौर ने देखकर मालूम किया कि अमीर को मेहरनिगार की सुधि हुई है अपने रूमाल से अमीर के आंसू पोंछकर समझानेलगा कि यह आंसू बहाना किस हेतु है ? अब बिछोह का समय बीत गया और मिलाप का अवसर शिर पर पहुँचा साहबकिरां ने मनमें धैर्य बांधकर अमर को गाने की आज्ञा दी अमर ने अदब समेत दो जांघों को बांधकर मिजराब की टोपी अँगुली में पहिनाई और छेड़ छाड़ की ठहरी और दुतारा बजाकर पहले सामा राग की दिखाई फिर अच्छे स्वरोंसे दाऊदी राग का गाना आरम्भ किया ऐसा गाया कि अमीर और लन्धौर और सभा में जो २ लोग बैठे थे सबके सब मोहित होगये और सबसे लन्धौर और अमीर का मन बहुत आनन्दित हुआ दोनों ने अमर को हीरा रत्न देकर मन भरदिया उसके पीछे लन्धौर ने खज़ाने की कुंजियां अमीर के आगे रखदीं और हिंदुस्तान की अच्छी २ वस्तु अमीर के आगे धरीं लन्धौर मुस-ल्मान होगया बुतपरस्ती को त्यागदिया दारोग़ा बावरचीख़ाने को बुलवाकर एक कमरे में भांति २ के खाने दस्तरख़्वान पर चुनवाये अमीर ने लन्धौर को साथ ले-कर खाना खाया लन्धौर ने खाना खाने के पीछे प्रार्थना की कि मैं अभी आपसे आश बड़ाई की रक्खेहूं बहुत दिनों से यह इच्छा मेरे मनमें है कि मेरे घर में आप अपने चरण पधारिये और लवण रोटी खा लीजिये और मेरे मनोरथ को पूर्ण कीजिये और यह दोहा कहा॥

दोहा। मम गृहके जो मध्य में, क्षणकमात्र पगजायं। मित्र तिहारे पैरने, गृह काबा होजाय॥

अमीर ने कहा कि मुझे तन मन से यह मंज़ूर है और हिन्दुस्तान का रवाना होना बहुत ज़रूर है इसके पीछे लन्धौर बिदा हुआ साहबकिरां अपने साथ और २ भी अधिकारियों को लेगया सभा आनन्ददायक सजी गई तबलेपर थाप पड़ने लगी अब लन्धौर और अमीर दोनों को उस जश्न में रहने दो थोड़ा समाचार गुस्तहम का वर्णनकरूं विदित हो कि गुस्तहम निर्बल मारखाने की निशानी जो लन्धौर से पसुड़ियां तुड़वाकर भागा मंज़िलों पीछे फिरके न देखा एक पहाड़ की

खोह में छिपकर बैठा और रात दिन साहबकिरां के मारने के उपाय में रहा हरकारों ने उसे समाचार पहुँचाया कि अमीर ने उसे तले किया और मुसल्मानों की सेना विजय प्राप्त की और आज कई दिन से लन्धौर के साथ बिलास कररहे हैं सिवाय मुक़बिल वफ़ादार के और कोई दूसरा अमीर की सेना में सरदार नहीं सब मित्र स्नेही अमीरही के साथ हैं गुस्तहम ने देखा कि अब इस समय में अवसर घात का मिला है पड़ाव मारा चाहिये इन लोगोंपर वार लगाया चाहिये कहीं मलिका मेहरनिगार की दो लौंड़ियां साथ लायाथा और साहबकिरांने भी उनको मेहरनिगार के पास देखाथा गुस्तहम ने विष हलाहल दो बोतलों में जो अंगूरी शराब से भरीहुई थीं चार मिसकाल अर्क़ मिलादिया जो एक बूंद भी उसका खारी समुद्र में गिरता तो उसके जीवधारी एकभी न बचते डाट शीशों में लगाकर मेहरनिगारकी जाली मोहर की और चेलियों की सूरत पथिकों की सी बनादी और स्नेहपत्र मेहरनिगार की ओर से लिखकर उनको देदिया और उनको मज़मून उस का अच्छी भांति से समझा दिया कि पहले मुक़बिल के पास जाकर हाल बर्णन करना कि मलिका मेहरनिगार ने हमको भेजाहै वह तुमको अमीर के पास लेजावेगा अमीर से बहुतसी बातें स्नेहमय मलिका मेहरनिगार की ओर से कहना फिर ये दोनों शीशे देदेना और यह पत्र भी देना और उसका मन अपने हाथ में लेना जो यह उपाय कर लाओगी तो तुमको मैं अपने महल में रक्खूंगा और अपनी स्त्रियों में मिलालूंगा वे दोनों मुरदारें मरदाना भेष बना के चलीं जब सेना के निकट आईं पहरावालों ने रोका बोलीं कि हम मलिका मेहरनिगार के पास से आतीहैं और उनका पत्र लिये तुम्हारे अमीरके पास जाती हैं वे लोग उनको साथ लेकर मुक़बिलके पासलाये मुक़बिल ने हाल जानकर सभा में जा अमीर के कानमें सबहाल बर्णनकिया कि दो लौंड़ियां मलिका मेहरनिगार की भेजी हुई आई हैं और दो शीशे अंगूरी के पत्र समेत लाई हैं आपके पास आनेकी आज्ञा चाहतीहैं अमीर को नशा था ही और भी आनन्द में लीन होगया और जल्द अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और बादशाह से कहा कि आप तबतक सभा में रहिये मुझे काम बहुत आवश्यक है उससे निपटकर अभी आताहूं और अमर से कहा कि तुम मेरे बदले तबतक बादशाह के पास हाज़िर रहो अमीर अपने तम्बू में आनकर एक किनारे बैठा और उनके आने के लिये आज्ञा दी उन दोनों टहलुइओं को बुलाकर हाल सुना पत्रके लिफ़ाफ़े पर जो मोहर मेहरनिगार की थी उसको चूमा और आंखों से लगाया और बारम्बार जांघपर रक्खा फिर उठाया संक्षेप यह कि पत्र को पढ़कर ऐसे फूले कि शरीर में न समासके बुराई भलाई समय की भूलगये एक शीशेकी मोहरको खोलकर उजेले में हलाया और मेहरनिगार का नाम लेकर मुँह में लगाकर पीगये उस मदिरा का गलेसे नीचे उतरना था कि अमीर बेहोश होगये मुँह से फेना जारी हुआ हाथ पांव मारनेलगे नेत्रों में जल भर आया॥

दोहा।। यह मरवे उस यार के, दुखित हृदय मँझधार। गर्दन में जो छिड़किये, होय नयन के पार॥

लौंड़ियों ने जाना कि अमीर का काम समाप्त होगया कोई दम के पाहुन हैं अब हमारा काम अच्छी भांति से बनगया किसी भांति से तम्बूकी मेखें उखाड़कर उन्हों ने राहली और खुश होकर गुस्तहम की ओर चलीं दैवयोग से बादशाह ने अमर से कहा कि अमीर के बिना सभा फीकी लगती है क्योंकि जिस सभा के बीच में पाहुन न हो उसका कुछ ढङ्ग नहीं है ख़्वाजे! जो अमीर को इस समय ले आओ तो चारसौ रुपये तुमको देकर अभी तुम्हारा झोरा भरदूंगा अमर ने रुपया का नाम जब सुना तब कब ठहरताहै शीघ्र वहांसे चलता हुआ तम्बू के दर्वाज़े पर मुक़बिल को देखा उससे पूछा कि अमीर क्या करते हैं मुक़बिल ने कहा दो लौंड़ियां मेहर-निगार की आईं हैं उनसे एक किनारे बातें कररहे हैं लौंड़ियों का नाम सुनतेही अमर का कलेजा धड़का मुरझागया बोला कि ईश्वर कुशल करे तम्बू में जाकर दीपक को बुझापाया झटपट बाती बारकर दीवा जलाया देखा कि अमीर के शरीर में सब फफोले पड़गये हैं नीलारङ्ग होगया है फेना मुँह से बहता है इस अचेती में हाथ पांव धुनरहे हैं बोतल चकनाचूर पड़ी है और दूसरी वैसेही धरी है जहांतक उसके बूंद धरती पर पड़े हैं वहां की धरती फटगई है इधर उधर देखा तो किसीको न पाया परन्तु तम्बूकी मेख एकओर की उखड़ी देखपड़ी जल्दी उसी ओरसे निकलकर लात लगाताहुआ उन लौंड़ियों के पीछे चला जाते २ उनके समीप पहुँचा और वे दोनों कहती जाती थीं कि क्या शुभ सायतपर चली थीं कि कुछ देर भी न लगी कि अमीर को मारकर चली आईं चलो गुस्तहम से वादा पूरा करादो और उससे पारितोषिक दिलवादो पीछे से अमर बोला ऐ दुष्टनियो! हम तुम्हारे यमदूत आपहुँचे भले घर बैना दिया यह कहकर कमर से कटार निकालकर दोनों को वहीं ठिकाने लगादिया और उसी स्थान से उलटे पांवों फिरा मुक़बिल को तम्बू में लेजाकर अमीर का हाल दिखाया और कहा कि यह तेरीही ग़फ़लत है अब बता क्या करें क्या दवाकरें मुक़बिल शिर पीटनेलगा अमर ने कहा कि चुप रहो ऐसा न हो कि हिन्दकी सेना इस समाचार को सुनकर फिर जाय और हमारी सेना उन लोगों से नाहक़ घिरजाय तू अमीर की निगहबानी कर और यहां से पांव बाहर न धर जब तक मैं न आऊं किसीको तम्बू में न आनेदेना और इस स्थान से हिलने का नाम न लेना लन्धौर से जाकर चुपके से कहा कि अमीर इस समय आ नहीं सके और आपको भी वहां बुला नहीं सके क्योंकि दो सर्दार नौशेरवां के पास से आये हैं और यह हुक्म लाये हैं कि जो तुमको मुझसे अपना वादा करना मंज़ूर है तो जल्द लन्धौरको बँधुआ करलेना किसीभांति से उसको छोड़ न देना सो अमीर ने आपसे कहाहै कि जो तुमको बँधुआ होना अङ्गीकारहो तो मेरा काम निकलता है तुम्हारा किसीभांति से बाल भी टेढ़ा न होगा बादशाह ने कहा कि बँधुआ होना तो कोई बात नहीं है अमीर जो मेरा शिर मांगे तो हाज़िर है इसमें मुझे क्या ढील है यह

तो बात मेरी खुशी का कारण है अमर ने कहा कि ऐसा न हो कि आपकी सेना बिगड़े और कुछ झगड़ा करे बादशाह ने कहा कि किसमें इतनी शक्ति है सरदारों को समझा दिया और अपने हाथ बँधवाकर मुसल्मानों की सेना में आया अमर एक किनारे बैठकर शिष्टाचार करनेलगा और एक प्याला चालाकी का पिलाकर लन्धौर को बेहोश करदिया फिर उसे सांकरों में बांधकर एक ऐसा सन्दूक़ जिस में वायुलगे रखकर बन्द करदिया और सेना का प्रबन्ध करके वहांसे मार्ग लिया राह के मध्य में दो सवार देखे यद्यपि उनसे छिपा परन्तु छिप न सका और उनके सामने आया तो वे अपने २ घोड़ेसे उतरकर अमर को बग़ल में लेकर मिले और मिज़ाज का हाल पूछने लगे अमर ने पूछा कि आप कौन हैं? वे बोले कि हम शहपाल हिन्द के बेटे हैं तुम्हारी तलाश में दूरसे आये हैं सबूर व साबिर हमारा नाम है बाप हमारा ऊपरदरा मुसल्मान है परन्तु अन्तःकरण में कुमार्गी और बेईमान है रात से अमीर को हलाहल पान करनेका हाल सुनकर गुस्तहम की सहायता को गयाहै और उस दुष्ट से मिलगया है इसकारण से आये हैं कि अमीर को लेजाकर अपने क़िले में रक्खें और अच्छी भांति से मन लगाकर दवा करें अमर ने खुश होकर कहा कि अन्धा चाहे दो आंखें अमीर को साथ लीजिये और ईश्वर को बीच में दीजिये कि कुछ छल न हो और कोई झगड़ा न खड़ा हो उन्होंने ईश्वर को बीच में दिया और कहा कि जो ऐसा हमको मंज़ूर होता तो क्यों इधर का मनोरथ करते अमर उनको लेकर तम्बूमें आया और एक तम्बू में अलग बैठाया जब आधीरातका डङ्का बजा अमीर को डोली में सवार करके साबिर और सबूर के क़िले में पहुँचाया और क़िले में अपना प्रबन्ध करके साबिर और सबूर से कहा कि अब अमीर के अच्छे होनेका उपाय क्या है वे बोले कि यहां से दशमंज़िल नारबन नामी एक द्वीप है उसमें हकीम अक़लीमून रहता है दुनियां में केवल वही इनकी दवा करने योग्य है अपने समय का धन्वन्तरि है एक चिट्ठी लिखेदेते हैं उनको बोलालाओ तो अमीर बेगही आराम होजावेगा अमर ने पहले अपने मनमें विचार किया कि जबतक हकीम आवेगा नहीं मालूम कि हमज़ा का क्या हाल होजायगा फिर शोचा कि जो वैद्य न आयेगा तो दवा कैसे होगी वायुके समान जाना चाहिये और साथ ही उसको लानाचाहिये यह अपने मनमें ठानकर चाहा कि जायें साबिर व सबूर ने उसके साथ दाराबनामी चालाक को राह बताने के हेतु साथ करादिया अमर बाहर क़िले के निकलकर वायु से कहा मामा वायु इस समय बड़ी आवश्यकता है मुझे अपने आगे जाने देना और मेरे आगे इसका पैर भी न बढ़ने देना दाराब पूरी मंज़िल भी न गयाथा कि फूलगया अमर से कहनेलगा कि कहीं सवारी मिलती तो आगेको चलना होता यह सुन अमर बोला कि अच्छा सुसतालो किसी वृक्ष के तले हवा खालो कि चलने का जिसमें बल हो थोड़ा चलेथे कि एक बाग़ मिला एक वृक्ष के तले दोनों बैठगये अमर ने चालाकी से मकर का खाना देकर कहा कि कुछ खालो

कि चलने का बल हो और मार्ग का हाल पूछने लगा वह कहनेलगा कि सीधे नाक की सूत चलेजाओ दाहिने बायें ओर न देखो उस द्वीप के निकट एक पगडण्डी दाहिने हाथकी ओर मिलेगी तुम उसी लकीरपर समुद्र के किनारेतक चलेजाना बीच में और भी उधर की राहें मिलेंगी पर और तरफ़ न जाना चारकोस के लगभग चौड़ा उस समुद्र का पाट है वहां नावपर सवार हो पार जाकर थोड़ी दूर जाओगे तो उस द्वीप के मकान दिखाई देवेंगे वहां जाके तुम आप बुद्धिमान् हो पता लगालोगे अमर ने देखा कि दाराब की आंखों में सरसों फूली अमर के आगे चौकड़ी भूली दाराब से कहा कि लो भाई ! जल्दी चलो दूर जाना है अपनी कमर कसो उसका उठना था कि उसी स्थानपर मिट्टीका थूहा बनकर गिरपड़ा अमर ने एक वृक्ष में उसे बांधदिया और आप चलताहुआ शाम न हुई थी कि समुद्र के किनारे पहुँचा नाव के आने में देर देखी दरिया में अलियासपर सवार होकर चला बात की बात में पार जाकर शाम के समय करामातद्वीप में पहुँचा हिन्दू की सूरत बनकर बाज़ार में गया एक आदमी से पूछा कि हकीम अक़्लीमून का मकान कहां है भाई ! हमको पता बतादो वह बोला कि इस बस्ती के मालिक वही हैं यह फाटक जो देखपड़ता है सो उन्हींका मकान है अमर ने दरवानसे जाकर कहा कि साबिर व सबूर के पास से आया हूं हकीम साहब के नाम का पत्र लायाहूं उनको ख़बर दो दरवानीने हकीम साहब से सब हाल कहा हकीमसाहबने कहा कि आनेदो ख़बरदार उसे कोई न रोके दरबानी ने अमरसे कहकर उसे हकीमसाहब के पास भेजा अमर ने निकट जाकर युक्तिसमेत सलाम किया और वह पत्र दिया हकीम ने अमरसे पत्र लेकर पढ़ा क्रोधित हो भौंहें समेटकर कहा क्या अच्छा मुझको लिखाहै कि जो शीघ्रआकर हमज़ा को अच्छा करदोगे तो तुम्हारी थैली हीरा रत्न से भरदेंगे बहुत ख़ुश होके तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे कहनेलगा कि क्या ख़ूब मुझे लालची जानलिया जो यह बात लिखी है जो यह बात न लिखते तो मैं जाता परन्तु अब न जाऊंगा कभी उधर का मनोरथ न करूंगा अमर बोला कि कृपानिधान ! उनसे अपराध हुआ जो ऐसे निर्लोभी बेपरवाही को यह बात लिखी क्षमा कीजिये और सवारी मँगवाइये हकीमजी बोले कि तू अपने से क्यों पैर बाहर धरता है तुझको इन बातों से क्या प्रयोजन है ? जब मैंने इनकार किया तब इनकारही जान इसमें विवाद से तुझे क्या लाभ होगा ? अमर ने कहा कि बातें बढ़ाने को जाने दीजिये संक्षेप यह कि आपके न जाने से एक ईश्वर का सेवक मराजाता है वहां जाकर अच्छा फल देखियेगा पुण्य लीजियेगा हकीमजी बोले कि जो हो मैं नहीं जाऊंगा अमर ने कहा कि भारी छोटा तो मैं नहीं जानता यह बात किस क़ानून में लिखी है कि हकीम बीमार का हाल सुनकर अपने स्थान से न टसके यह क्या भला है ? कि एक ईश्वर के सेवक के इलाज में कि जिसके हेतु सहस्रों आदमियों को लाभ पहुँचे उसपर ध्यान न करे हकीम अक़्लीमून बोला कि तू क़ाज़ी है या मुफ़्ती या तेरी मौत आई है क्यों

खोपड़ी खाई है जा अपनी राहले अमरने कहा कि आपका चलना मुख्य है किसी भांति से चलने की सूरत निकालना चाहिये ऐसी बात आप क्यों कहते हैं ? हकीम ने कहा कि क्या तू विक्षिप्त है ऐसा बुद्धिमान् होकर मुझसे बतकही कररहा है अपनी हैसियतभर बातें नहीं करता है अमर ने कहा कि हज़रत किसी भांति का सौदाई हो लड़कों को उसके पीछे ताली बजाना उचित है इतनी दूर से आताहूं मेरे पीछे तो किसी ने चुटकी भी न बजाई तुम्हारी तरह सौदाई हो तो उसके पीछे ताली बजाना लड़कों को उचित है आप मुझे विक्षिप्ती बनाते हैं यह बड़ा अन्याय है तबतो अक़लीमून ने अपने सेवकों को आज्ञादी कि इस बीमार बेअदब को बांधो और घूंसों से इसकी ढिठाई निकालो यह सुनकर जब अमर ने जाना कि हकीम न जायगा और मैं दण्ड पाऊंगा तो रोने चिल्लानेलगा और कहनेलगा कि ये बातें जो मैंने आपसे कही हैं मानो साबिर व सबूर के मुख से भाषी गईं भला है कि आप न जायें हां नाहक़ में कष्ट बे फ़ायदा न उठावें परन्तु साबिर व सबूर दोनों बड़े मसख़रे हैं जो मुझे काले कोशों दौड़ाया जो आज की रात अँधियारी है यहां से जा नहीं सक्ताहूं और कोई आगे नगर भी नहीं है न रातको कोई राही मिलसक्ता है आज्ञा हो तो इस सङ्कट में आप के द्वारे पररहूं प्रातःकाल अपना मार्ग लूं अक़लीमून ने अपने सेवक को आज्ञादी कि इसको बावरचीख़ाने में लेजाकर कुछ खिलवाकर सो रहने दो कल सबेरे यहां से रवानाकरो अमर ने अपने मन में बिचार किया कि हकीम अक़लीमून बड़ा नादान है बुद्धिमान् होकर लाभ हानि नहीं समझता है यही मूर्ख का चिह्न है इसका कुछ इलाज करना चाहिये कोई होश की दवा दिया चाहिये बावरचीख़ाने में जाकर बावरची से चिकनी २ बातें करनेलगा बावरची अमर की मधुर बातें सुनकर दूध खांड़ की भांति घुलगया अमर ने ख़मीर मिठाई के कई टुकड़े उस थैली से निकालकर उसे दिये कि थोड़ी इसकी भी चाशनी चखिये बहुत आपने रकाबदारी की और बहुतसी मिठाइयां बनाई होंगी बहुधा बुद्धिमानोंके साथ सङ्गति रही होगी बावरची ने उस की बातें सुनकर वह मिठाई अच्छी भांति से खाई और प्रसन्न होकर सब पेड़े खा लिये बोला कि सचमुच इसकी मिठाई होंठ बन्द करती है इस स्वाद की मिठाई कभी नहीं खाई अमर बोला होंठ क्या कोई दम में श्वास बन्द करेगी फिर और ही स्वाद देखावेगी अन्त को उसके मज़े में लाकर एक कोनेमें ले गया और बोला कि कुछ नमकीन का भी स्वाद चखिये बावरची ने कहा कि जब मिठाई में यह स्वाद नमकीन में इससे अधिक स्वाद देखावेगा अमर ने अपनी झोरी से एक टिकिया निकालकर दी उस मरभुक्खे ने उसको भी खालिया फिर तो झूमने लगा अमर ने अति चिल्लाके एक गाली उसे दी वह आगबबूला होगया एक चैला लेकर मारने को उठा पांव जो लड़खड़ाया दर्वाजे के चरणों तले आरहा अमरने बावरचीख़ाने में एक चूल्हे के पास गढ़ा खोदकर उसे गाड़दिया ऊपर से लकड़ियां जला

कर रखदीं और हांड़ी में पानी चढ़ादिया और आप उसकी सूरत बनकर हकीम के हेतु बियारी पकानेलगा कलोंचाकी रोटी में अपना दाना खर्चकिया और ऊपर से सौंफ़ लगादी और क़लिया व कुर्मा व पुलाव आदि में अपने झोरेसे घी निकाल कर डाला और सब सामान अपनीही झोरी से निकालकर डाला और सब प्रकार के भोजन बनाये प्रातःकाल होतेही हकीम साहब के दस्तरख़्वानपर सब वस्तु चुन दी और हकीमसाहब को खिलानेलगा हकीमसाहब ने जो वस्तु खाई उसमें प्रशंसा करते २ मुँह बन्द होगया अमर ने कहा कि कृपानिधान ! यह आपकी दवा कीगई और क़ानून से आंच दीगई है बन पड़ा हो तो सदा ऐसाही खाना खाया कीजिये तो दिमाग़ में बल अधिक हो जानबूझ के कामकरें और बीमारी को अच्छीभांति जान लिया करें कुछ छिपा न रहे हकीम साहब खानाखाकर बहुत खुशहुए थोड़ी देर के पीछे ज़ोर से डकारनेलगे और कहा कि तेरी बुद्धि बड़ी तीव्रहै हम और बातें भी तुझे खानापकाने की बतायेंगे अमर ने थोड़ीदूर पीछे हटकर कहा कि सृष्टि में हकीम साहब आप भी बलिष्ठ नुसख़ा हैं पढ़ लिखकर सब चौपट किया कितने बेहूदाहैं अक़लीमून झुंझुलाकर उठा और कहा ऐ निर्बुद्धी ! यह क्या बेहूदा दिमाग़ पकाता है यह क्या बेअदबी की बातें मुख में लाताहै अमर ने पीछे को फलांगमारी और हकीमसाहब फलांग के मारतेहीं अचेत होकर धम से मुँह के बल धरतीपर गिरपड़े अमर ने हकीम साहब को चादर अय्यारी अर्थात् चालाकी से लपेट कर झोरी में लेटाया थोड़ी सी बेहोशी की दवा देकर सारे विद्यार्थियों को खिलादी जब सब बेहोशहुए अमर ने कुतुबख़ाना व दवाईख़ाना और कुल घरके सामानको उसी झोरी में भरकर उसके ऊपर हकीमसाहबको लेटाकर एक परवाना राहदारी हकीम साहब के नाम से लिखकर उनके क़लमदान से मोहर निकाल कर परवाने पर करके प्रसन्नता से अपने स्थान की राहली उसका मज़मून यह था कि घाट के मांझी को उचित है कि शीघ्र बे तकरार इस मनुष्यको नदीके पार उतारदे और एक पैसा भी उतराई का न ले जो थोड़ी भी देर लगावेगा तो कठिन समुद्र में डुबाया जायगा थोड़ीदेर के पीछे अमर गठरी बांधेहुए नदीके किनारे जापहुँचा और घाट के मांझी को राहदारीका परवाना दिया घाटवाला शीघ्र उतारनेपर उद्यत हुआ पहलेही खेवे में अमर को पार उतारा अमर एक पहर के भीतर में वहां पहुँचा जहां दाराब को वृक्ष में बांध गया था दाराबको खोलकर कोई दवा दी उससे चेत हुआ दाराब जो सावधान हुआ नींदसे चौंका तो बोला कि बहुत सोये नहीं तो आधीराह उस द्वीपकी लपेटजाते नींद ने मंज़िल भी खोटी की अब चलिये द्वीप की राह लीजिये अमरने आदि से अन्ततक सब समाचार हकीम के लानेका वर्णनकिया दाराब के होश कहानी सुनकर उड़गये और गुरू कहकर अमरके चरणोंपर गिरपड़ा और अमरका चेलाहुआ अमरने दाराब से कहा कि तू हौले २ आ मैंतो लम्बी लेताहूं साबिर सबूर को यह सब समाचार बताता हूं हवाको जो पछिले पांवोंसे मारा तो दाराब की नज़रसे आलारहा थोड़ी

देरके पीछे क़िला के पास पहुँचा देखे तो अद्भुत चरित्र है गुस्तहम सेनालिये हुए क़िला के तले खड़ाहै और एकओर सेना हिन्द के बादशाह की खड़ीहै क़िलेके धुस्सों परसे गोली बरसती है गोलंदाज़ तोपों को महताबी देरहे हैं अमर घुसकर क़िले के बुर्ज के तले पहुँचा और कमन्द फेंककर बहुत जल्द क़िलेकी दीवार पर चढ़गया परन्तु तले से एक मनुष्य ने निशाना बांधकर उसकी गठरी में तीर लगाया वह तीर गठरी को तोड़कर गोली सोनहली पर बैठा अमर फलांग मारकर क़िले के भीतर गया और वह गठरी को साबिर सबूर के आगे रक्खी जिस उपाय से हकीम साहब को लायाथा सब बयान किया साबिर सबूर ने अमर की बुद्धि की बहुत प्रशंसा की अमर ने सब असबाब हकीम साहब के आसपास चुनकर चेत होने की दवा दी कि इतने में हकीम साहब की बेहोशी दूर हुई और उसी पियादे की सूरत बनकर कहा कि आपको साबिर सबूर ने बुलाया है और मुझे अति कष्ट में आपके पास भेजा है हकीम अक़्लीमून मुँह सिकोड़कर बोला कि यहां कोई है इस दीवाने को बाँधकर मेरे पास लाओ कि मैं फ़स्द खोल दूं बेफ़ायदा दिमाग़ खारहाहै इसका इलाज करूं अमर ने कहा कि कृपानिधान! मैं विक्षिप्त नहींहूं कि नश्तर दीजियेगा मैं दीवाना अपने कार्यका होशियारहूं क्यों दवा कीजियेगा हकीम साहब बोले कि सिड़ी के शिरपर क्या सींग लगेहोते हैं? जो तेरे नहीं हैं तेरे क्या सुरख़ाबका पर लगा है लाखबार कहा कि मैं नहीं जाऊंगा तू अपनी रटेजाताहै जब कोई न बोला हकीम साहब देखकर ख़ुश होगये भवचक्का होकर इधर उधर देखनेलगे कि सभी असबाब मेरे मतलब का मेरे पास धरा है परन्तु मेरा मकान नहीं है उस स्थान और आदमियों का कुछ चिह्न नहीं है इतने में साबिर सबूर ने आकर मुलाक़ात की हकीम साहब को शिष्टाचार आदरपूर्वक किया हकीम साहब अक़्लीमून ने पूछा कि मैं असबाब समेत यहां क्योंकर आया अमर बोला कि मर्ज़ नहीं है जो बे कहे हुए जानलीजियेगा किसी विक्षिप्त की अपनीहीं हड्डी से फ़स्द खोलदीजियेगा यह पियादा लाया है इतनी दूर चलकर यहां पहुँचाया है अक़्लीमून को जब मालूम हुआ कि अमर है उठकर गले से लगालिया कि ख़्वाजे जो मैं जानता कि तुम हो तो मैं बेतकरार चलाआता और कभी इनकार न करता अमर बोला कि अब भी आपके उपकार का बोझा मेरे ऊपर बहुतहै कि आपने मुझे देडाला परन्तु शीघ्र कोई ऐसा उपाय कीजिये कि अमीर के शरीरसे विष दूर होजाय और इनको आराम होजाय हकीम अक़्लीमून देखकर अफ़सोस करनेलगे और कहा कि इसका इलाज नौशेरवां के सिवाय दूसरी जगह कहीं धरतीपर नहीं है अमर ने कहा कि हज़रत यह ऐसी वस्तु क्याहै कि जो संसार में दूसरे स्थान में नहीं है अक़्लीमून ने कहा कि शाहमोहरा उस दवाका नाम है कयानियों के पीढ़ी दरपीढ़ी चलाआया है उसके बिना अमीर को आराम न होगी बिष नस २ में व्यापगया है अमर ने कहा कि कृपानिधान! यह वही मसल है कि जबतक इराक़से ज़हरमोहरा लायाजायगा तबतक सांप का काटा

मरजायगा इस आने और जानेतक हमज़ा काहेको बचेगा उस समय तक इसका दम अच्छा काहेको रहेगा अक़लीमून ने कहा कि अब तो अमीरका अच्छा होना कठिन है बहुत बड़ी बीमारी है अमर रोतापीटता शिरपर धूल उड़ाता क़िलेके दरवाज़े पर आया वहां मुक़बिल खड़ाहुआथा कहा कि ख़्वाजे कहो हकीम ने क्या इलाज ठीक की ? अमर ने कहा कि क्या कहूं कि इस श्रमसे तो हकीम को लाया और उस कमवख़्त को यहांतक पहुँचाया अब वह कहता है कि इसका इलाज शाहमोहरा के सिवाय संसार में नहीं है अब शाहमोहरा नौशेरवां के यहां के सिवाय और अत्तारख़ानों में कहीं नहीं निकलेगा और पृथ्वीपर उसका पता न लगेगा मुक़बिल सुनकर चुपहोरहा अमर दोचार क़दम आगेबढ़ा मुक़बिल ने पीछेसे पुकारके कहा कि ख़्वाजे जो मदायन जाओ तो नौशेरवां के फाटकपर एक बुढ़िया रहती है उससे मेरा सलाम कहदेना अमर ने खिसिया कर पलटके एक सोंटा मुक़बिल के शिरपर इस बलसे मारा कि मुक़बिल ख़ून में भीग गया चक्कर खाकर धरती पर गिर पड़ा उस समय मुक़बिल छोटे बोल से कहने लगा कि ख़्वाजे ख़फ़ा क्यों होतेहो शाहमोहरा यहीं मिलजायगा तब तो और भी अप्रसन्न होकर मुक़बिल को गाली देनेलगा कि तुझे मेरा रास्ता खोटा करने में क्या मिलेगा ? मुक़बिल ने कहा कि ख़्वाजे हमज़ा के शिर की क़सम है शाहमोहरा इसी स्थान में है मुझसे लीजिये कोई दम में हाथ आवेगा बुज़ुरुचमेहर ने मेरे सामने अमीर की जांघ में रखकर टांके लगा दिये हैं और उसका लाभ भी बता दिया है अमर ने मुक़बिल को छाती में लगा लिया और हमज़ा के पास पहुँचा अक़लीमून ने कहा कि ख़्वाजे अभी यहीं हो मैं जानता था कि मदायन पहुँचे होगे शाहमोहरा कहीं से ढूंढ़े लाते होगे अमर बोला कि हज़रत मैं गया भी और पता लगाकर ले भी आया अक़लीमून ने कहा कि तुम से कुछ दूर नहीं है लाओ जो लाये हो तो दो अमर ने कहा कि अमीर की जांघ में है अक़लीमून ने अमीर के शरीर को देखा तो सचमुच नीलकांच के समान होगया है परन्तु जिस स्थानपर शाहमोहरा है उतने शरीर का साधारण रङ्ग बना है विष कुछ अभी नहीं बेधा है अक़लीमून ने कहा यद्यपि अमीर का रङ्ग नीला है परन्तु शाहमोहरा जो अमीर की जांघ में न होता तो अबतक अमीर मरगये होते फिर कई सौ मन दूध मँगा के रक्खा और छूरा से अमीर की जांघ चीरकर शाहमोहरा निकाला और रेशम में बांधकर अमीर के कण्ठ से पेटमें उतारा और कुछ काल के पीछे उसे निकालकर दूधके कड़ाह में डाला उसीमें उसको ख़ूब ग़ोतादिया दूधका रङ्ग हरा जङ्गाल के समान होगया दूध का रङ्ग बदलने लगा उसी भांति से मोहरा को अमीर के पेट में पांच २ छः मिनट रखकर कईबार दूध में डाला जब दूध ने रङ्ग न बदला और रङ्गत बदन की बदलचली और अमीर को छींक आई अक़लीमून थोड़ी चादरें कतांकी अमीर को ओढ़ाईं और होश में लानेका उपाय किया और लोगोंसे कहा कि ख़बरदार कोई मनुष्य अमीर के सामने ज़हर खाने का हाल बयान न करे भूलेसे

भी इस हाल का नाम न लेवे दोघड़ी के पीछे इतना पसीना अमीर के शरीर से निकला कि सब बिछौना डूबगया दूसरे दिन जब अमीर को कुछ होश आया खाना मांगा अक़्लीमून ने तीतर का शुरुआ अमीर को पिलाया जब अच्छी भांति चेत हुआ और अमीर तकिया लगाकर बैठा पूछा कि लन्धौर बादशाह कहां है ? और सभा का औरही सामान है अमर ने झटपट लन्धौर को चेताके अमीर के पास पहुँचाया और राहके मध्य का सकल वृत्तान्त बयान करके तमाम समाचार कह सुनाया कि आप के फिरजाने के डरसे मुझसे यह अपराध हुआ है अमीर से इसका ज़िकर न कीजियेगा अब तो जो कुछ होनाथा सो होचुका जिस समय लन्धौर और बड़े २ सरदार अमीर के पास स्थितहुए प्रत्येक ने अमीर के ऊपर से बहुत कुछ न्यवछावर किया सब फ़क़ीरों को माल से भर दिया अमीर ने हकीम अक़्लीमून को देखकर कहा कि यह कौनहै और कहां से आया है ? या किसी के पासजाता है या सौदागर है जो माल बेचने के हेतु लाया है आदी के मुँह से बेसम्हार निकलगया वह जो लौंड़ियां शीशे शराब अंगूरीके लाई थीं वह आपका जानलेने को विष हलाहल भर के लाईथीं गुस्तहम की भेजी हुई थीं आपने जो एक शीशा शराब का पिया उसमें विष मिलाहुआ था तमाम बदन में बेध गया था साबिर व सबूर आपको जो शहपाल के बेटेहैं अपने क़िले में उठालाये और आपकी अत्यन्त निगहबानी करते रहे और हमलोगों से अतिकृपादृष्टि से पेश आये और अमर को भेजकर नार्बनद्वीप से हकीम को बुलवाया जिससे हुज़ूर का इलाज हुआ ईश्वरने आपको इस कराल बिष से बचाया और गुस्तहम क़िलेको घेरे पड़ाहै और बराबर लड़रहा है यह बात सुनतेही लन्धौर के तलुओं से आग लगी शिर में जाबुझी बोला कि अभी उस दुष्ट को रसातल में भेजताहूं अभी तो मैं उसका बधिक जीता बैठा हूं उस खल को थोड़ी ही बात में तो दफ़ा करता हूं अमीर ने मना किया कहा कि आप धीरज धरिये मैं समझ लूंगा इसमें खबर पहुँची कि शहपाल भी उसका सहायक है क़िलेपर चढ़ने का मनोरथ किया था साबिर नामी उसके बड़े लड़के ने मारकर स्वर्ग को भेज दिया गुस्तहम ने यह हाल सुनकर क़िलेपर धावा करने की आज्ञा दी है और आपने भी मनोरथ किया है थोड़ी देर में खंदक उतरके क़िले पर आयाचाहता है अमीर ने अमर से कहा कि तुम जाओ और गुस्तहम को मेरी ओरसे कह दो कि मैं नौशेरवां के कारण तरह देताहूं अभीतक चुपचाप बैठाहूं परन्तु तेरे हृदय में यह बात नहीं आती है अपनी दुष्टता को छोड़ता नहीं उसपर झगड़ा फ़िसाद कररहा है जा यहां से अपना मुँह काला कर नहीं तो अपना किया पावेगा अमर ने अमीर का सँदेशा गुस्तहम से जाकर कहा उस दुष्ट ने हँसकर उत्तर दिया कि ओ सर्बानबच्चे ! तू मुझ से झकर करताहै हमज़ा को मरेहुए बहुत दिनहुए और हमज़ा का चिह्न भी शेष नहीं रहाहै मृतकों को जिलाता है जिसकी ओर से संदेशा लाया है अमर ने झुंझु-लाकर कहा कि ओ दुष्ट ! तू साहबक़िरांके निमित्त ऐसी बातें मुख से कहताहै मौत

के दिन तेरे निकट आये हैं जो ऐसी बातें सटांय पटांय की उड़ारहाहै क्या करूं ? अमीरका हुक्म नहीं है नहीं तो गोफन से तेरे दांत तोड़कर तेरी हलक़ में डालदिये होते बढ़ २ के जो बातें करताहै और दावा कररहाहै सब हौसले तेरे निकाल दिये होते गुस्तहम बोला कि अच्छा हमज़ा जो जीताहै तो जाकर पूछआ कि मेरे किस भेद से आगाह है अमर जो तू यह उत्तर सही लाया तो भला नहीं तो तू ये बातें मुझसे करताहै कि उसका ख़ैरख़्वाह है अमर अमीर के समीप आया और जो गुस्तहम ने कहाथा सम्पूर्ण कह सुनाया और कहा कि ऐ साहबक़िरां ! आश्चर्य होता है कि तुम गुस्तहम ऐसे दुष्ट से कि जिसने तुम्हारे मारडालने में उपाय न छोड़ाथा उसके भेदको अभीतक आप छिपाये हैं और उस खल से जिसके पानी व मिट्टी में ख़मीर है भूलेहुए हो पहले उपाधि बहरामके शिर पर से टरी और अब विष दिलवाया ईश्वर बुज़ुरुचमेहर का भला करे कि उसने शाहमोहरा जांघ में रखदिया था नहीं तो जीनेकी कौन सूरत थी अमीर ने उसके पाद मारने का हाल कहकर अमर से कहा कि बस यही उसका भेद है तू जाकर उसे जतादे वह क्या करता है और उसे मंज़ूर क्या है ? अमर ने गुस्तहम से आकर कहा कि अमीर ने कहाहै कि ओ गूही ! भेंटके समय तूने तीन बार पाद मारा था जब हथियार लगेगा तब हग २ देगा गुस्तहम ने इस भेद के सुनतेही जाना कि हमज़ा अभी ज़िन्दा है देखिये अब क्या आफ़त आवे यहांसे चला जानाही उचित है उसी समय सिन्ध नदी की ओर भागा और वहां जाकर उस दुष्ट ने बड़ा फ़िसाद मचाया दो मृतकों के शिर मँगा कर नौशेरवां के पास भेजे और अपना बसीठी उन शिरों के साथ भेजा और विनय पत्र में यह लिखा कि लन्धौर ने मैदान में हमज़ा को मारा और मैंने आपके प्रताप से लन्धौर को मारडाला और उन दोनों के शिर आपके समीप भेजता हूं बड़ी २ लड़ाई बीच में हुई हैं और एकपत्र बख़्तक को ब्योरासमेत लिखा और उसमें यह दर्जकिया कि मैंने बादशाह के विनयपत्र में झूंठ इस निमित्त लिखाहै कि नौशेरवां मेहरनिगार की शादी किसीसे कर देवे और वह मृगनयनी अमीर के हाथ न लगे और नहीं तो सत्य यह है कि हमज़ा ने लन्धौर को जीतलिया और लन्धौर तन मन से उसका आधीन हुआ और अमीर के सामने गर्दन अपनी झुकादी मुझ से सिवाय हमज़ा को विष देने के कुछ न बनपड़ी और कोई उपाय न होसका सो हमज़ा बड़ा कड़ा जीव का निकला कि विष से भी उसका कुछ न बिगड़ा मैं लाचार होकर वहां से भाग कर सिन्ध में आया अपनी जान वहां से बचा लाया इस कारण से बारंबार लिखता हूं कि बादशाह को बहकाकर मेहरनिगार का विवाह किसी से करादेना और इस सलाह में और लोगों को भी मिला लेना कि जिससे हमज़ा सुनकर मरजाय शत्रुके मारने का डर है किसी भांति से जान गँवाये जिस समय वह विनयपत्र और शिर नौशेरवां के पास पहुँचे और देखकर नेत्रों में जल भरके बुज़ुरुचमेहर से कहा कि अफ़सोस हमज़ाकी जवानी में जानता

हूं कि हज़ार वर्ष आसमान घूमेगा तो भी ऐसा स्वरूपवान् उत्पन्न करके न दिखा-येगा बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि मैं कुछ कह नहीं सक्रा अन्दाज़ से तो हमज़ा अच्छा जान पड़ताहै परन्तु उसके शरीर को कष्ट हुआ है आगे ईश्वर जाने ॥

विजयप्राप्त करनेके पीछे मदायन की ओर लन्धौर समेत बड़े सज़धज से अमीर का चलना ॥

सज़धज से अब अमीर के मार्ग का समाचार वर्णन है कि अमीर को जब कुछ बल हुआ तब माशूक़ा की याद कर गह्वरगति होजाती भई और तबियत अति घबराती भई लन्धौर से कहा कि अब जी चाहताहै कि मदायन को चलें बादशाह ने कहा कि जैसी आपकी मर्ज़ी हो बहुतदिन राह चलते बीते बादशाह के मिलने का मनोरथ हो बिसमिल्लः मनोरथ चलनेका कीजिये पर हिन्दुस्तान में सिक्का अपना जारी करके किसीको अपना युवराज अपनी ओरसे छोड़े जाइये अमीर ने कहा कि ऐ बादशाह ! तुम्हारा देश तुमको फले मैं केवल तुम्हारे स्नेह का भूखाहूं बादशाह ने जयपुर में अपने भाई चचाज़ाद को अपना नायब किया और आप सिपाह स-मेत साहबकिरां के साथ हुआ आदी ग्रीमा लेकर पहले एक दिन आगे गया था उसने एक रमणीक स्थान देखकर नदी के किनारे तम्बू गाड़दिये अमीर भी सेना और लन्धौर समेत धूमधाम से चले और तम्बू में पहुँचे प्रातःकाल वहां से कूच किया और इसी भांति से प्रति दिन कूच मुक़ाम करते चले जाते थे यद्यपि अमीर के शरीर में केवल हाड़ व खालके कुछ न रहाथा परन्तु मेहरनिगार के नेहवश मं-ज़िलों मार्ग लपेटते चलेजाते थे अब बख़्तक का हाल सुनिये कि गुस्तहम का पत्र पढ़के उपाय करने में प्रवृत्त हुआ उसके मन में आया कि ख़्वाजेज़ादा जौपीन मुर्जवांके बंश जो कैकाऊस का है इसके कुटुम्ब में है मेहरनिगार के ब्याह के हेतु उभारा चाहिये और किसी भांति बेग उसे बुलवाना चाहिये झटपट एक पत्र इस मज़मून का औलाद मुर्जवांके पुत्रके नाम लिखा कि मलिका मेहरनिगार सातदेशों के बादशाह की पुत्री अब युवा हुई हमज़ा नामी अरबवाले ने उसकी इच्छा की थी बादशाह ने दूसरी क़ौम जानकर उसके साथ अङ्गीकार न किया और उसको हिन्दु-स्तान में लन्धौर के साथ लड़नेको भेजदिया और वह सुनते हैं कि लन्धौर के हाथ से मारागया सो मेरी इच्छा आपकी भलाई के हेतु है कि आप बहुत जल्द जिस भांति होसके यहां का मनोरथ करें और अति शीघ्र अपने आपको मदायन में पहुँ-चाइये मैं उपाय करके आपका ब्याह उसके साथ करादूं और नौशेरवां का पुत्र आपको बनादूं औलादमुर्जवां का पुत्र पत्र को देखकर अति आनन्दित होगया तीस सहस्र सवार लेकर जाबुल से चला थोड़े दिनके पीछे मदायन में पहुँचा बख़्तक ने खबर पाकर उसका प्रबन्ध करना आरम्भ किया गोशे में बादशाह से प्रार्थना की कि औलादमुर्जवां का पुत्र कैकाऊसी आपके मिलने के हेतु जाबुल से आया है अगवानी उसकी अवश्य चाहिये कि वह भी एक बड़े मनुष्य के घरानेका है थोड़े सरदारों को आज्ञा की कि अगवानी करके खिलशाद कामपर उसे उतारें और उस

की पहुनई में आरूढ़ रहें बादशाह की आज्ञानुसार उसकी प्रतिष्ठा कीगई दूसरे दिन बख़्तक ने उसकी नौकरी करवाई और ख़िलअत दिलवाई कई दिनके पीछे अपना समय पाके बादशाह से अलग प्रार्थना की कि हमज़ा तो मारागया मलिका मेहरनिगार के ब्याहका उपाय अवश्य करनाचाहिये क्योंकि अब अवस्था बड़ी कठिनता की आई और होशियार होचुकी है और गुस्तहम के साथ जो हुज़ूरने ठीक किया था सो वह बूढ़ा है और उमर से उतरगया है और विदित है कि जवान अवस्था की स्त्री का बैठना बूढ़े मर्द की गोद में बहुत अनुचित है किसी ऐसे युवा और प्रतिष्ठितपुरुष और अच्छेघराने का हो उसके साथ ब्याह करदेना उचित है और इस भले काम में जितनी शीघ्रता हो करदेनाचाहिये क्योंकि समय बेढब है नौशेरवां ने कहा कि तुम्हीं किसीको पसन्द करो इस काम की कोई सूरत निकालो बख़्तक ने प्रार्थना की कि मेरे समीप औलाद मुर्जवांसे कि कैकाऊसी है और सूरत और लियाक़त भी अच्छी मालूम होती है और तो इस से अच्छा कोई नहीं जानपड़ता है फिर आपकी जैसी सलाह हो और मलिकासाहबा की मर्ज़ी वह सब से अच्छीबात है बादशाह ने यह बात पसन्द की और मलिका मेहरअंगेज़ को इस समाचार से प्रकाशित किया जो कि उसदिन तक अमीर का मरना बादशाह के घरमें किसी को मालूम न था मलिका मेहरअंगेज़ को यह वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुख हुआ सब पर कड़ाई की कि कोई अमीर के मरने का समाचार मेहरनिगार को न बतावे और उसके सामने इसकी ज़िकर किसी भांति से न कीजावे परन्तु उसे ख़बर पहुँचादी मेहरनिगार ने अपने को ऐसा दुखित किया कि देखनेवाले हैरान होगये उसका यह हाल देखकर सब मुरझागये मलिका मेहरअंगेज़ ने आकर बहुत समझाया परन्तु उसने कुछ न माना मलिका मेहरअंगेज़ लाचारहुई बादशाहको ख़बर दी नौशेरवां ने बुज़ुरुचमेहर से कहा कि तुम जाओ मेहरनिगार को समझाकर औलाद मुर्जवां के बेटे के साथ ब्याह करनेपर राज़ी करो बुज़ुरुचमेहर महल में गये और मलिका मेहरनिगार को इलाहदा करके कहनेलगे कि मलिका अमीर की सब भांति से कुशल है और ईश्वर की कृपा से अच्छी भांति है यह लोगों ने झूठमूठ उड़ाके उसके वैरियों के निस्बत जो ख़बर उड़ाई है निहायत झूठ है केवल इस मनोरथ से कि अमीर का गुज़र इस राजधानी में न होने पावे यह उपाय किया है हां अमीर को गुस्तहम ने ज़हर दिलवाया था उससे तकलीफ़ बहुत पाई आप देख लीजियेगा आजके चालीसवें दिन अमीर से और आप से बख़ूबी मुलाक़ात होगी मेरेनिकट मुनासिब है कि नामचार औलाद मुर्जवां के पुत्र को अङ्गीकार कीजिये परन्तु यह बात ठहरालीजिये कि औलाद चालीसदिन जिसमें आपके सामने न आये और परदेके निकट तबतक पांव न धरे मेहरनिगार ने बुज़ुरुचमेहर के कहने से अङ्गीकार किया बुज़ुरुचमेहर ने बादशाह को शुभपूर्वक बात कहकर मेहरनिगार का सँदेशा दिया नौशेरवां ने दरबार के बीच जामातृआका पारितोषिक

देकर कहा कि चालीस दिवस के पीछे ब्याह किया जावेगा बख़्तक ने मुर्जवांके पुत्र से कहा कि यह मोहलत बुरी है और उसके आने का भी हाल सुनागया है क्योंकर कि हमज़ा जीता है जो इतने में आजायेगा तो सब उपाय नष्ट होजायगा आप एक काम करें कि कल उठने के समय बादशाह से प्रार्थना कीजिये कि सेवक की यह इच्छा है कि यह ब्याह जाबुल में जाकर करें वहां पहुँचते २ चालीस दिन भी बीत जायँगे और मेरे कुटुम्ब परिवार के लोग भी सब जमा होंगे और इस ब्याहसे आनन्द प्राप्त करेंगे और मैंभी आपकी बात पर पुष्टक देदूंगा और बादशाह को राज़ी करदूंगा औलाद इस बात से अति प्रसन्न हुआ खुशी के मारे चेहरा का रङ्ग लाल पड़ गया और मुलाक़ात के समय नौशेरवां से कहा और बख़्तक ने भी उसकी बात की सहायता की और अपनी ओरसे भी पुष्टक दी बादशाह ने अङ्गीकार किया और दाइज आदि देनेका प्रबन्ध किया बख़्तक से कहा कि मेहरनिगार की बिदा का प्रबन्ध तुम्हारे अधीन है इस काम से निपटके बेग बिदा करना अच्छाहै बख़्तक ने एकके स्थान सौ खर्च करके कई दिनमें मार्ग आदि का सामान तैयार करदियां बादशाह ने मेहरनिगार को बड़ी धूम धाम से बिदा किया और मंज़िलतक मलिका मेहरअंगेज़ समेत गये और आपभी अधिकारियों समेत साथ चले औलाद मलिका को लिये कूच करता हुआ मंज़िलों प्रसन्न चला जाता था किन्तु तम्बू मलिका के हुक्म से तीन कोस पर खड़ा किया जाताथा बारह सहस्र टहलुये हब्शी व तुरकीं मलिका के तम्बू के आसपास रहतेथे पक्षियों को यह शक्ति न थी कि उड़कर मलिका के तम्बू में जासकें जिस समय उन्तालीस दिन व्यतीत हुए वह समझी कि मिलाप के दिन शिरपर पहुँचे औलादने एक पहाड़ अतिरमणीक पर कि बायु वहां की चित्त को प्रसन्न करती थी वहांपर तम्बू खड़े करने को आयसु दिया और कहा कि कल्ह हमारा यहां मुक़ाम है मलिका का वादा पूरा होगा इसी मुक़ाम पर ब्याहका मङ्गलाचार करूंगा मेहरनिगार अपने मन में ठाने हुए थी कि जिस समय औलाद तम्बू में पांव रक्खे उसीसमय अपनी तीव्रता देखावें अपने को मारडालें॥

पकड़ाजाना औलाद मुर्जवांके पुत्र का और जाना बँधुवा होकर अमीर की आज्ञा से,
प्रतिष्ठा रहित होकर नौशेरवां के समीप॥

चौपाई। लागत देर क्षणक नहिं योही। करत सकल बिधि सुख बहु जोही॥
आशत्यागि कशक्र जनिदेई। सेवा मन लगाइ करि लेई॥

ईश्वर की रचना का तमाशा देखना है बिपिन में नया फूल खिला बुलबुलरूपी क़लम यों चहकता है ईश्वर की कृपा से साहबकिरां भी वहां आपहुँचे और उस पहाड़ के ऊपर तम्बू गड़वा दिया और कहा कि यहां की वायु से कुछ मन तन को बल प्राप्त होताहै और यहांके पास करने से मन भटकता है एक सप्ताह इसी ठौर पर मुक़ाम रहे और इसी ठौर कुछ दिन डेरा रहे सबोंने अङ्गीकार किया कि बहुत अच्छा है जो हुक्म आपका हकीम अक़्लीमून ने अमर से कहा कि यह चराई का

स्थान है कि तुम शिकार का सामान लेजाओ और एक हिरन का तुम शिकार कर लाओ उसके क़बाब की बास अमीर को सुँघाओ ईश्वर के अक़बाल से हमेशः अमीर को बल होगा पीछे उसके हम तुम साथ खावें अमरको आज्ञा होतेही कमन्द गोफन लेकर वहां से चला चराई के स्थान एक सुन्दर हिरन देखकर चौकड़ियों भागने लगा हिरनों ने करवटियां बदल कर चराई के स्थान से भागकर जङ्गल की राहली अमर भी एक हिरन के साथ फ़लांगें मारता हुआ उसके समीप पहुँचकर पहाड़ के निकट बांध हलका कमन्द का इस चालाकी से हिरन के सींगोंपर मारा कि वह कमन्द में फँसकर अपनी चौकड़ी भूलगया अमर ने उसके चारों पांव बांध कर एक पत्थर के तले राह से अलग दबादिया और आप पहाड़ के देखनेको जा बैठा देखे तो एक तम्बू ऊपर जो तना है उसकी शोभा बादशाही तम्बू के समान झलक रहीहै और दो आदमी सोने चांदी की चिलमें और आफ़ताबा लिये खड़े हैं किसीके हुक्म को देखते हैं अमर एक हाथ को झुलाता और पांवों से लँगड़ाता उनके पास जाकर खड़ा हुआ और अतिदीनता से उनसे पूछने लगा कि क्यों भाई! यह डेरा किसका है? आप कौन हैं? और आप के सिपुर्द कौन काम है? वह बोले कि यही डेरा मालिका मेहरनिगार काहै हम उसके सेवकहैं उसकी अधीनता और आज्ञा करलाने का हमारा काम है पहले हमज़ानामी एक मनुष्य अरबबासी से मलिका का ब्याह ठीक हुआ था सो वह लन्धौर के हाथ से मारा गया उसका मनोरथ पूर्ण न होने पाया कि वह विचारा मरगया यद्यपि मलिकाने अपने को अति दुःखित किया और बादशाह भी सशोक है परन्तु मौत से किसीका कुछ बल नहीं चलता बख्तक दुष्ट ने बादशाह को समझा बुझा के मलिका को औलाद मुर्जवां के पुत्र कैकाउसीको दिलवाय दिया है और वह ब्याह करने के हेतु अपने साथ जाबुल को मलिका को लिये जाता है मलिका साहबा ने बुजुरुचमेहर से सुना था कि आज के चालीसवें दिन तुम साहबकिरां को मार्ग में पाओगी उससे मिलाप करके आनन्द उठाओगी इस निमित्तसे चालीस दिवस का क़ौल क़रार कर लिया था कि जबतक दिन न बीतिलेवें तबतक वह तम्बू में न आने पायेगा सो आज चालीसवां दिन है जो शामतक साहबकिरां यहां पहुँचे तो मलिका जीवेगी नहीं जिस समय रात को औलाद तम्बू के निकटतक पहुँचेगा मलिका बिषकी पुड़ियां फांकजायगी जो हाथमें लिये बैठी है अफ़्सोस मलिका का है कि उसने अभी कुछ नहीं देखा है नाहक़ में जान देतीहै अमरने कहा कि बाबा! ईश्वर का स्मरणकरो आश्चर्य क्याहै? जो साहबकिरां आजही आपहुँचें सब भांति ईश्वर मलिका का मनोरथ पूर्ण करे फ़क़ीरका तुमसे इतना सवाल है कि मेरा एक हाथ और एक पांव सुन्नहोकर रहगया है वैद्यने बताया था कि जो सोने रूपे की चिलमची और आफ़ताबासे हाथ पांव धोवेगा तो तेरा हाथ पांव अच्छा होजावेगा मुझको तो कहां प्राप्त होता कि यह सेवक करता परन्तु जानपड़ा कि कुछ दिन अभी जीने के शेष हैं जो तुम ऐसे साहब मनुष्यों के

हाथ में चिलमची और आफ़ताबा, देखपड़ा अपने जीनेका कुछ सहारा हुआ थोड़ी देर के निमित्त जो कृपा कीजिये तो आपके सामने इस नदीसे पानी भरके हाथ पांव धोलूं नहीं तो फिर कहां ऐसा अवसर मिलेगा कौन ऐसी बहुमौल्य की बस्तु मुझे देगा उन दोनों मनुष्यों ने तर्स खाकर सलाह की कि एक फ़क़ीर का काम निकलता है और हमारा इसमें घाटा क्या है? कहीं इसे लेकर सेनासे भाग नहीं सक्ता अभी हमको लौटा देगा यह सोचकर चिलमची और आफ़ताबा अमर को देदिया अमर ने सलांम करके लेलिया और नहरसे पानी भरके हाथ पांव धोये और उनको अपने पास रक्खा उनलोगों ने कहा कि लाओ भाई! अब तुम्हारा काम निकलगया अब चिलमची आफ़ताबा हमको देदो अमर एक फ़र्लांग मारकर वहांसे बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धी नहीं हूं कि लेकर उलट पलट करूं और अपनी दवा तुमको देदूं हमने मान लिया कि जो मैं इस समय अच्छा हुआ और इस बीमारी ने फिर मेरे ऊपर आकर क्लेश दिया तो मैं तुमको कहां पाऊंगा और यह चिलमची आफ़ताबा किससे मांगता फिरूंगा यह कहकर औलाद के तम्बूकी ओर भागा उन दोनों ने पीछा किया अमर भला उनको कहां मिलताथा हवा होगया कहीं का कहीं पहुँचा औलाद के तम्बू में जा घुसा छलकी चादर बिछाकर पण्डितकी सूरत बनकर पांसा लेकर बैठा उन दोनों मनुष्यों ने उसके आस पास भीड़ देखकर अपने मनमें कहा कि इससे पण्डितजी का पांसा फेंकवाइये इसका ज्योतिष देखिये और चोर का ठिकाना लगवाइये पास जाकर खड़ेहुए और उसका हाल देखनेलगे कि जो कोई उससे पूछता है वह उसके मन का भेद वर्णन करता है यह बड़ी आश्चर्य की बात करता है यह भी जाकर बैठगये अपना समाचार उससे पूछनेलगे उसने कहा कि तुम्हारे कोई बरतन जाते रहे हैं और वह दोनों चांदी सोनेके हैं यह बात सुनकर अत्यन्त उसका बिश्वास माना और आपस में सलाह करनेलगे तिसके पीछे एक तो अमरके पास बैठा रहा और दूसरे ने मलिका के पास जाकर प्रार्थना कर भेजी कि सेवक कुछ प्रार्थना किया चाहता है और बहुत अवश्य काम है मलिका तो रातकी राह तकरही थी कि जब शाम हो मैं बिष हलाहल खाऊं इस जिन्दगी से छुट्टी पाऊं गुलाम की यह बात सुनकर शीघ्र उठ खड़ीहुई कि कदाचित् कोई खुशी की बात सुनावे उस प्यारे का समाचार बतावे पर्देसे लगकर पूछा कि क्या कहता है? कोई खबर अच्छी लाया है उसने प्रथम हाल चिलमची और आफ़ताबे का वर्णन किया उसके पीछे पण्डित का हाल बताया मलिका अत्यन्त बुद्धिमान् थी मनमें सोची कि इतनी शक्ति सिवाय अमर के किसीने नहीं पाई है कि मेरे डेरे के निकट इस चालाकी से बस्तु लेकर चलता होजाय और सहस्रों मनुष्यों की आंखमें धूल झोंककर चलदे और आश्चर्य नहीं है कि वहां पण्डित की भी सूरत बनाहो यह भी तमाशा किया शीघ्र आदमी पर आदमी भेजकर अमर को बुलवाया और एक किनारे में चिलमन के निकट उसे बैठाला और कहा कि ऐ पण्डित! मेरे मनका भी तो कुछ हाल कहो अमर ने कहा

कि साहब मैं बिना मुँह देखे कभी नहीं किसीका भी हाल कहताहूं और पर्देसे किसी का हाल कहना मैंने नहीं सीखा है मलिका ने विचार किया कि आखिर आज मरना है यह बूढ़ा मनुष्य मुझे देखेगा तो क्या होगा? किसपर मेरा भेद विदित होगा पर्दा उठादिया और अपनी सूरत दिखादी अमर ने पांसे मेहरनिगार के हाथ में देकर कहा कि आप पांसों को हाथ में लें और उन शकलों पर फेंकें मैं शकलों का हाल देखकर आपका मनोरथ कहदूंगा और बिचारके हाल बतादूंगा मलिका ने जो पांसे के चिह्न देखे तो पण्डित के पांसे न पाये औरही कुछ वाही तबाही पांसे दृष्टि पड़े क्योंकि मलिका तो इस गुणमें बुजुरुचमेहर की चेली थी किन्तु श्वास साधे रही कि देखें क्या करता है इसकी आज्ञा कैसी है पांसों को जो फेंका अमर ने सब आदि से नेह बताना आरम्भ किया और कहा कि आज आपको हमजा की खबर मिलेगी खुशी का समाचार सुनाई देगा मेहरनिगार ने अपनी बुद्धि से जाना कि यह अमर है यह वही छली रङ्ग कररहा है हाथ बढ़ाकर उसकी बनीहुई दाढ़ी को जो ऐंचा तो दाढ़ी अलग होगई अमर की सूरत दिखाई दी मलिका अधीर हो-कर गले से लिपटगई धाड़ें मारकर रोनेलगी और पूछनेलगी कि सच कह अमीर मेरा जीवनाधार कहां है? अमर ने कहा कि अमीर आज सवेरे से इसी पहाड़ के तले तम्बू गाड़ेहुए हैं ईश्वर की कृपा से अच्छे हैं परन्तु आपके शोक में ग्रसित हैं ऐसा सुनकर मलिका तो मनो फूले नहीं समाई चाहती थी कि अमीर का हाल पूछे और अपनी बीती कहे कि इतने में आदमी पर आदमी डेउढ़ी पर पहुँचे कि पण्डित को ब्याह की सायत देखने के हेतु औलाद ने बोलाया है सब सामग्री ब्याह की इकट्ठा है केवल इसी पण्डित का मार्ग तकरहा है अमर ने कहा कि अब आप बेफ़िक्र रहें चैनसे बैठें देखिये तो इस ब्याह के बदले कैसा औलाद को दुःखित करता हूं उन जातिउजागर के साथ क्या २ करता हूं? यह कहकर बिदा हुआ मलिका ने ख़िल-अत बिदा की दी और बहुत से रुपये कृपा किये अमर वहांसे लेकर चला और औ-लाद के पास पहुँचा देखा कि एक अग्निका पुञ्ज सजा सजाया जवाहिरकी चौकीपर बैठा है और ब्याहकी सामग्री उसके आस पास धरी है औलाद ने पहले पूछा कि म-लिका ने तुझे क्यों बुलाया था वह बोला कि एक मृतक की जिन्दगी पूछती थीं और बहुत अफ़सोस उसका करती थीं मैंने कहदिया कि वह मरगया और आपको औलाद मुर्जवां से बहुत फल मिलेगा पहले तो राज़ी न थीं परन्तु मेरे कहने सुननेसे राज़ी हुई हैं यह बात सुनतेही औलाद बहुत कृतकृत्य हुआ और मङ्गलाचार होनेलगे अमर को भारी मोल की ख़िलअत देकर पूछने लगा कि ब्याह कब करूं? उस चन्द्र-बदनी से कब मिलाप करूं? अमर ने कहा कि जितनी शीघ्रता इसमें होसके कीजिये औलाद इस बात से और भी खुश हुआ एक थैली मोहरों की और अमर को दी अमर उसको लेकर अशीस देनेलगा और कहनेलगा कि सेवक के चार लड़के हैं एकतो गदा अच्छी चलाना जानता है इस कर्तब में दूसरे को नहीं समझता है

और दूसरे ने पटेबाज़ी में अपना दूसरा नहीं रक्खा और तीसरे को ढोल खूब बजा आता है और चौथा सहनाई बहुत अच्छी बजाता है जो आप उनका तमाशा देखें तो बहुत प्रसन्न होवें औलाद बोला कि कल प्रातसमय तुम अपने सब कुटुम्ब को हमारे पास भेजदेना अलबत्ता यह तमाशा देखने योग्य है कि तेरा परिवार भी गुणी अपने गुण में होगा कि तू आपभी होशियार है अमर उससे विदा हुआ और पहाड़ के तले आकर अपने साधारण भेष में होकर हिरन को हकीम अक़लीमून के पास लाया उन्होंने मारके क़बाब की बू अमीर को सुँघाई उससे शरीर अमीर का बहुत प्रसन्न हुआ और अमर सीधा राही हुआ लन्धौर के पास गया राह में मुक़बिल से जो भेंट हुई उससे कहा कि तू आदी को लेकर लन्धौर के तम्बू में वेग आ बादशाह लन्धौर ने पूछा कि ख़्वाजे किधर आये क्यों इतना घवराये हो बोला कि आपही के पास आयाहूं कुछ हाल अपना कहूंगा आप जानते हैं कि साहबकिरां मलिका मेहरनिगार पर जान देते हैं और उसके निमित्त यह सब कष्ट अपने शिर पर लेते हैं अफ़्सोस है कि आपके होते मलिका को कोई दूसरा लेजाय और अमीर उसके नेहमें गरल खाय यह कहकर सब हाल बयान किया और कहा कि पहाड़ के तले उसका डेरा गड़ा है और वहां सामान व्याह का इकट्ठा है शामतक वारा न्यारा है लन्धौर इस वृत्तान्त को सुनतेही आगबबूला होगया गदा लेकर उठ खड़ाहुआ कि मैं अभी उसकी हड्डी पसुलियों का भी सुरमा करताहूं इसी समय उसका शिर फोड़ताहूं अबतो उसके रक्त का पियासा हूं अमर ने कहा कि ऐसा मनोरथ न कीजिये कदाचित् अमीर को नागवार हो उसको जीता पकड़ लीजिये लन्धौरने कहा फिर जो तुम्हारी सलाह हो मैं राज़ी हूं जैसा तुम्हारा मनोरथ हो वैसा करूं इतने में मुक़बिल भी आदी को लेकर आन पहुँचा अमर ने उससे सलाह की और अपना मनोरथ बर्णन किया उन्हों ने भी लन्धौर की बात मानी जब दिनहुआ सूर्य ने अपना प्रकाश फैलाया अमर ने बड़ा ढोल तो आदी के गलेमें डाला और सहनाई मुक़बिल को दी लन्धौर से कहा कि आप गदा सम्हारें और अपनी सूरत एक अच्छे छोकड़े की बनाकर पट्टा हिलाता हुआ औलाद की डेवढ़ीपर गया और औलाद ने सुना कि उस पण्डित के बेटे आये हैं अपने पास बुला भेजा और तमाशा करने के हेतु आज्ञा दी अमर ने ग्यारह पट्टे अपनी झोरी से निकालकर ऐसी पटेबाज़ी की कि औलाद ने सभा सहित आश्चर्य किया और प्रशंसा करने लगे कि हमने अपनी उमर में कभी ऐसी पटेबाज़ी नहीं देखी थी और ऐसा गुरू इस गुण का देखने में नहीं आया औलाद ने बहुत कुछ इनआम भी दिया मुक़बिलने सहनाई और आदी ने ढोल बजाकर सभा को प्रसन्न किया उनको भी इनआम दिया गया लन्धौर भी जो गदागरी करनेलगा उसकी वायु से लोग अखाड़ा और कुर्सी से धरतीपर गिरने लगे और सब ओर से एक हल्ला बस २ का होनेलगा अमर ने लन्धौर को इशारा किया कि यही समय है ईश्वर का नाम लेकर अपनी गदा की

चोट दिखाइये और इन सबको अपना वज्र दिखाइये लन्धौर ने हिलाते २ उस गदा को औलाद के तम्बू पर मारा औलाद दरबारियों समेत तम्बू में दबगया और सेना से युद्ध होने लगा लन्धौर गदा उठाकर ज़ोर से कहने लगा जो मनुष्य जानता हो सो जाने और जो न जानता हो वहभी जाने मैं लन्धौर हिन्दके बादशाह का पुत्रहूं उसका नाम सुनतेही बारह सहस्र सवार लन्धौर के जो गांढ़ा बांधे घात में बैठे थे तलवारें खींचकर शत्रु की सेना के शिरपर पहुँचे दश सहस्र सवार औलाद की सेना के मारेगये और पांच सहस्र घायल हुए और दश सहस्र बन्दि में फँसे और शेष पांच सहस्र जीव लेकर भागे अब आदी का चरित्र सुनिये कि युद्ध के समय विचार किया कि आज औलाद का मनोरथ ब्याह करने का था खाना अवश्य अच्छा २ बनाहोगा बावरचीख़ानेकी ओर चलकर खाना चाहिये यह सोच कर बावरचीख़ाने की ओर चला थोड़ीदूर गयाथा कि ख़ीमें के तले से एक मनुष्य को निकलते देखा ढोल उसपर रखकर उसे नीचे को दबाया तो ढोल का चमड़ा भार से फटगया और वह मनुष्य उसके भीतर समागया ॥

आना अमर व मुक़बिल व आदी व लन्धौर का बाज़ीगरों के भेष में औलाद के तम्बू के निकट और तमाशामें युद्ध करना और पकड़ना औलाद का ॥

अतिशीघ्र उसके मुखको कड़ा बन्द करके बावरचीख़ानेमें घुसा खाना तो बहुत थाही जो जो वस्तु जीमें आई निडर होकर खानेलगा हाथ अपना मुँह अपना भरने लगा अमर ने यद्यपि औलाद को तम्बू में ढूंढ़ा परन्तु उसका खोज न मिला लाशों में ढूंढ़ता हुआ बावरचीख़ाने की ओर जा निकला देखा कि आदी बड़े २ कौर खारहा है भांति २ के भोजन निकालकर अपने आगे रक्खा है अमर ने त्योरी चढ़ाकर कहा कि तू हमज़ा की सेना में प्रसिद्ध पहलवान कहलाता है और युद्ध के समय लुककर एक किनारे पेट पालन करता है यह समय पेट भरने का नहीं है अपनी प्रतिष्ठा का भी ध्यान न रक्खा आदी ने कहा कि मैंनेभी एक आदमी पकड़ा है मेरा खाना ठीक व उचित होगया अमर ने कहा कि हम भी उसकी सूरत देखें आदी बोला कि वह ढोल के भीतर बन्द है उठकर देखले मुझे खाना खानेदे अमर ने उसकी झलक देखकर कहा कि यह एक आदमी तो लाख आदमी के बराबरहै सचमुच सबसे तूने बड़ाअच्छा काम किया कि इसे जो अधीन करके फँसाया यह कहकर प्रसन्न हो आदीसे ढोल उठवाकर लन्धौर के निकट लेगया और कहा कि ऐ बादशाह ! मैंने एक बड़ा शिकार फँसाया है लन्धौर ने कहा कि वह शिकार मुझे दिखाओ ज्योंही आदीने ढोलका मुँह खोला औलाद ढोलसे निकालकर कटार लेकर लन्धौरपर दौड़ा लन्धौर ने कटार उसके हाथ से छीनकर उसको धरतीपर दे पटका अमरने कमन्दसे नख शिखसे उसे जकड़ा और यह शुभसमाचार मलिका को सुनाया मलिकाने ईश्वर का धन्यवाद करके अमरको इनआम दिया अमर वहां से अमीर के पास पहुँचा आदि से अन्ततक जो हुआ था वह अमीर को सुनाया अमीरने

अमरको गले से लगा लिया और लन्धौर से कहा कि सचमुच हमारी तुम्हारी एकही आबरू है तुम न रक्षा करो तो और कौन रक्षाकरे और ऐसे अवसरमें मित्रोंके सिवाय और कौन काम आवे और सहायक हो और साथ दे? सुल्तान बख़्तक पश्चिमी के साथ मलिकामेहरनिगार का भेजना ठीक हुआ और औलाद को भी बेड़ी पहिनाकर भेजने का मनोरथ किया नौशेरवां जैसा उचित जानेगा वैसा करेगा और एक बिनयपत्र बादशाह सरन्दीप को इस मज़मून का लिखा कि मैं आप की आज्ञानुसार सरन्दीप में गया और मार्ग में जैसा २ कष्ट पाया उसका वर्णन नहीं होसक्ता और मैंने लन्धौर को जीत लिया और ईश्वर ने सब भांति से प्रतिष्ठा रक्खी और उसको मैं अपने साथ लिये आता हूं आपके पास शीघ्र उसे पहुँचाता हूं और इस समय में मेरे मरने का समाचार शत्रुओं ने आपको पहुँचाया था उसको आप सत्य समझकर कुबुद्धियों की सलाह से आपने मलिका मेहरनिगार को औलाद के अधीन करदिया कुछ उस असत्य समाचार को आपने नहीं जांचा मार्ग के मध्य में मुझसे और औलाद से मिलाप हुआ उसको पकड़के आपके पास भेजा इसमें मेरी हीनताई बिदित हुई जो दण्ड आप उचित जानें इसे करें और जो लोग इस सलाह में थे उनको भी जानना चाहिये और मलिका को भी बिदाकिया अपनी धरोहर को आपके पास भेजा है ईश्वर चाहेगा तो शीघ्र उपस्थित होकर ब्याह करूंगा और अपने बैरियों को समझलूंगा इस बिनयपत्र को लिखकर सुल्तान बख़्तक पश्चिमी को दिया और गुस्तहम ने मुझे विष दिया था उससे जीव तो बचा परन्तु कष्ट अधिक हुआ और मलिका के साथियों को अलग २ ख़िलअत कृपाकी मेहरनिगार ने अमर को बुलाकर कहा कि मैंने मङ्गलाचार की सभा की तैयारी की थी अमीर ने मुझे अपने पासतक न बुलाया और मदायन को बिदा किया ऐसा क्या अपराध मुझसे हुआ है? कि मेरा मुँह देखने के योग्य नहीं रहा है अमर ने अमीर से आकर कहा कि मेहरनिगार सशोक बैठी है और इसभांति से कहती है अमीर ने कहा कि तुम देखतेहो कि मेरी सूरत विष खाने से कैसी होगई है इस कारण से मेरा जी नहीं चाहता है कि अपना मुँह मलिका को दिखाऊं अथवा मैं जाऊँ या उनको यहां बुलाऊं ईश्वर चाहेगा तो मदायन पहुँचतेही ज्योंकी त्यों देह होजायगी वहां फिर मिललेयँगे मलिका को अच्छी भांति से समझादो और मार्ग के बीच में तुम हमारे पास आओ और जितनी जल्दी होसके मुझे मिलो हकीम अक़लीमूनने कहा ख़्वाजे तुम मदायन जातेहो नोशदारू लेते आना परन्तु अमीर के नाम से किसीसे न मांगना नहीं कोई न देगा अमर अमीर से बिदा होकर मेहरनिगार के पास पहुँचा और उसे समझाकर चुपका किया और डोलीपर सवार करके मदायन का मार्ग लिया थोड़े दिनों के पीछे मलिका की सवारी मदायन में पहुँची नौशेरवां अगवानी करके लेगया सुल्तानबख़्तक पश्चिमी को ख़िलअत कृपाकी और अमीर की आरोग्यता सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ अब अमर का हाल सुनिये कि एक मर्वार

का भेष बनाकर एक कसाई की दूकानपर गया और दो घिसुआ पैसा जिसमें अक्षर का चिह्न भी न था लेकर गया और उसके आगे फेंक कर कहा कि ये दो पैसे ले और इसकी नोशदारू दे उसने कभी नामतक न सुना था वह बोला साहब! नोशदारू किस जीव का नाम है उसकी सूरत कैसी है? अमर यह सुनकर एक बनिये की दूकानपर गया और उसके आगे पैसे फेंककर नोशदारू मांगने लगा वह बोला साहब आटा, दाल, चावल, लोन, लकड़ी, घी, तेल, महुआ, कोदों, बाजरा आदि मेरे यहां है जो लीजिये तो लीजिये दूकान आपकी है नोशदारू तो मेरे पास नहीं है कि जो मैं तुमको दूं मैंने तो कभी इस वस्तु का नाम भी नहीं सुना किसी पंसारी से पूछिये कदाचित् उसकी दूकान पर निकले अमर पंसारी के समीप गया वह बोला कि केराने में नोशदारू किसी पदार्थ का नाम नहीं है हमने इस नामका केराना नहीं सुना देखो कुँजरे के पास हो अमर कुँजरे के पास आया उसने कहा कि साहब! गाजर, मूली, साग पात आदि चाहो तो मेरे पास हैं नोशदारू नाम तो किसी तरकारी का भी नहीं है आगे किसी की और दूकान देखो अन्तको होते २ अत्तार की दूकान पर गया और उससे नोशदारू का नाम पूछा उसने कहा नोशदारू हमने कहां पाई कभी देखने में भी नहीं आई परन्तु तू एक काम कर बादशाह की न्यायशाला की सांकर हिला हां बादशाह के दवाईखाने में मिलेगी अमर ने जाकर उस सांकर को खड़खड़ाया बादशाह ने बुलाकर उसका हाल दरियाफ़्त किया अमरने दो पैसे जेब से निकाले और नौशेरवां के आगे रखदिये कि साहब! उसकी नोशदारू चाहता हूं "मोरे बेटवा का सँपवा काटेसि हैं गौंआं का बैदवा कहेसि है कि मदायन से सवातोला नोशदारू ला दे है तो तेरा बेटवा छिनमा नीक होजैहै सो कसाई बनियां कुँजड़ा पंसारी से पूछत फिरेउँथा कोऊ नाहीं बतावत रहा आज एक मनई से बाट में जो भेंट भई वह महिंका कहेसि कि पादशाह के लगे मिलिहै सो मैं तुम्हारे पास हाज़िर भया हूं खामिन्द के चरनन ले पहुँच गया हूं यह टकौना लेउ और तीन मिसकाल नोशदरुआ मोहिंका देउ मोल तोल जोख में कम होइहै तो काम न निकसिहै मोरे दामौ जैहैं सो मैं पूरे तीन मिसकाल लेहौं नहीं तो दाम न देहौं" बादशाह सभा समेत उसकी बातें सुनकर बहुत हँसे और उसकी शकल देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि पैसे उठा ले हुज़ूर से नोश दारू तुझे कृपा होगी अमर बोला कि साहब! मैं ग़रीब मनई हौं बे क़ीमत कैसेउ नाहीं लेतिहौं तब पांवछोहों से मुफ़त २ नोशदरुआ कब लेहौं नाहक में आपका यहसान अपने मूड़ेपर धरों बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर से कहा कि इसको ख़ज़ाने में लेजाकर तीन मिसकाल नोशदारू देदो और किसी भांति से इसके देने में कमी न करना बुज़ुरुचमेहर अमर को साथ लेकर ख़ज़ाने में आया और संदूक़ को खोलकर एक जड़ाऊ डुका खोला और उसके ऊपर की डट्टी खोली उस में से तीन मिसकाल नोशदारू अमरको दी और तीन मिसकाल लेकर अपनी जेब

में रक्खी इस कारण से कि रमल के बिचार से गुस्तहम का ज़हर देना अमीर को जान पड़ा था यह अच्छीभांति मालूम था कि अमर नोशदारू मांगने को आवेगा अमर ने मार्ग में बुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि वाह हज़रत! बादशाह के नौकर होकर साहब चोरीभी करते हैं ऐसे इज़्ज़तदार मनई होकर कौड़ी दमड़ी पर नियत बहँकावत है नोशदरुआ जो चोराके टेंटमें रक्खी है सो मोंका देदो इसमें भलाई है नहीं तो बेइज़्ज़त होइहौ बुज़ुरुच्चमेहर ने रुसवाई के डरसे डरकर अमर को देदी मनमें बिचार किया कि यह गँवार आदमी है जो भेद विदित करे तो कुछ बात न बनेगी अब बख़्तक का हाल सुनिये उसको तो अमीर का विष खाना मालूम था अत्यन्त घबरा कर मनमें शोचा कि बुज़ुरुच्चमेहर ने अवश्य हमज़ा के हेतु नोशदारू छिपाकर रक्खी होगी अपनी असालत का मार्ग जानकर बादशाह से प्रार्थना की कि बुज़ुरुच्चमेहर को देखिये और नोशदारू को देखिये बादशाह भी उसके कहने में आगया जो आवश्यकता थी तो हुज़ूर से मांग क्यों न ली एक गँवारको हुज़ूर ने कृपा की क्या इनको न मिलती कठिन आज्ञादी बुज़ुरुच्चमेहरका भारा लियाजावे बादशाहकी आज्ञानुसार काम किया गया परन्तु कुछ भी न निकला उसी समय बुज़ुरुच्चमेहर को ख़िलअत दीगई और बख़्तकपर जुरमाना किया गया और बुज़ुरुच्चमेहरसे बहुत कुछ लल्लोपत्तोकी बातें कहीं उस समय बुज़ुरुच्चमेहर को मालूम हुआ गँवार जो नोशदारू लेगया है वह अमर था अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ कि अमर की बदौलत चोरी की ज़िल्लत से तो बचे अमर ने नगर से बाहर निकलकर अपना साधारण भेष बनाया और अमीर के ओर का मार्ग लिया यहां अमीर एक दिन निर्बलता के कारण बहुत रोये और अपने आपको भला बुरा कहने लगे कि इस जीने से मरना अच्छा है रात के समय उसी शोक में हज़रत इबराहीम साहब ने आकर अमीर को ढाढ़स दी अमीर ने प्रातःकाल उठकर स्मरण ध्यान परमेश्वर का किया और पलँग पर तकिया लगाके बैठे कि इतने में अमर पहुँचा अमर ने अमीर को न पहिंचाना और दूसरा कोई जानकर पूछने लगा कि आप कौन हैं और कहांसे आये हैं? आपको मालूम है कि हमज़ा कहा टिके हैं अमीर ने कहा कि मैं औलाद का भाई हूं बन्दि से छोड़ाने के हेतु आया हूं उसको तो न पाया परन्तु हमज़ा को संसार की बन्दि से छोड़ाया ज्योंहीं यह बात अमर ने सुनी झटपट कटार निकालकर दौड़ा अमीर ने ख़ंजर अमर से छीनकर गलेसे लगा लिया और कहा कि मैं हमज़ा हूं आपने नाहक़ में इतना क्रोध किया अमर ने नोशदारू हकीम अक़लीमून के आगे रखदी और उसके लाने का हाल कुछ भी न कहा वह अमीर को कई माशे रोज़ खिलाने लगे कि उससे कुछ अमीर को बल व मन ठिकाने हुआ अब थोड़ा हाल बहराममल्ल ख़ाकानचीन का सुनिये कि चार जहाज़ जो उसके पास तूफ़ान में अमीर से अलग होगये थे छः महीनेतक समुद्र में हलचल पड़ारहा सिन्धु के किनारे लङ्गर जहाज़ों का देकर अनाज आदि लेने की नियत हुई गल्ला के हेतु सूखे में उतरकर थोड़ी दूर गया देखा

कि एक बड़े वृक्षतले एक तख़्त पर कमान और हज़ार मोहरों का तोड़ा धरा है बह- राम ने लोगों से पूछा कि यह कमान और तोड़ा क्यों चौकीपर रक्खा है निगहबान बोले कि सरकश हिन्दी जो यहाँ का बादशाह है उसका भाई कोहबख़्त अत्यन्त बलिष्ठ है उसने परीक्षा के हेतु कमान मोहरों समेत रखवादी है और यही सूरत बल की परीक्षा लेने के हेतु रक्खी कि जो कोई इस कमान को चढ़ादेवे मोहरों का तोड़ा लेलेवे बहराम ने बिचार किया कि यह माल ईश्वर का दियाहै इसको न छोड़ना चाहिये चौकी के पास जाकर कमान का चिल्ला चढ़ाया और उसके गोशे को कान की लौरतक खींचकर रक्खा और तोड़ा उठाकर अपने आदमियों को दिया और मनोरथ चलने का किया निगहबानों ने यह हाल कोहबख़्त हिन्दीसे कहा कि एक सौदागर ने आपकी कमानपर चिल्ला चढ़ाया और तोड़ा मोहरों का अपने लोगों को सौंपा दैवयोग से एक मक्कार भी यह तमाशा देखता था कड़ी कमान के तीर के समान सरकश हिन्दी के निकट पहुँचा और यह सब हाल बयान किया सरकश हिन्दी ने आज्ञा की कि अभी जाओ और उसको हमारे पास लाओ आज्ञा पातेही लोग चिल्लाते हुए दौड़े कि सौदागर को कमान समेत इस नगर के हाकिम ने याद कियाहै और उसे देखना चाहता है बहराम मर्दों के समान सरकश हिन्दी के पास पहुँचा सरकशहिन्दी अत्यन्त शिष्टाचारसमेत आगे आया और उसके आदमी भी कमान लेकर पहुँचे और अधिकारी भी उपस्थित हुए सरकश हिन्दी ने बहराम से पूछा कि इस कमान को तुम्हीं ने चढ़ाई है बहराम ने कहा कि हां ईश्वर की कृपा से मैंने चढ़ाई है सरकश ने कहा कि एक बार मेरे आगे भी खींचिये अपना बल दिखाइये और देखनेवालों की भी यही इच्छा है बहराम ने कमान को लेकर इस बलसे ईंचा कि कमान टूटगई सरकश ने क़दरदानी की राहसे उसे बैठने की आज्ञा दी बहराम कुर्सी सोनहली पर जो सरकश के निकट पड़ीहुई थी बैठगया बहराम का बैठना हुआ कि इतने में कोहबख़्त शेरबबर के समान पहुँचा कमान को टूटा और बहराम को कुर्सीपर बैठा देखकर आपे में न रहा कटार खींचकर यह कहता हुआ दौड़ा कि एक तौ तूने मेरी कमान तोड़ी दूसरे हमारी कुर्सीपर बैठा तेरी यह प्रतिष्ठा कहां से हुई बहराम ने कोहबख़्त का हाथ मिरोड़कर कटार छीन लिया और कमर में हाथ डालकर चारोंशाने चित्त पृथ्वीपर गिरादिया और कहा कि अब क्या मनोरथ है ? इतनीही शान थी अथवा कुछ अधिक बल था सरकश ने बहराम से उज्र किया और कोहबख़्त का अपराध क्षमा करवाया और कहा कि तुमको अ- पने दीन की क़सम है कि तुम कौन हो और क्या नाम है और किस देशमें रहतेहो? बहराम ने कुल हाल अपना आदिसे अन्ततक कहा कि सरकश ने अमीर का नाम सुनकर एक आह सर्द भरी और कहा कि मुझको हमज़ा के देखने की बड़ी इच्छा थी परन्तु ईश्वर गुस्तहम का बुरा करे कि उसने ऐसे जवान प्रसिद्ध पहलवान को मारा और उसकी जवानी को धूल में मिलाया बहराम यह बात सुनतेही चिल्लाकर

अचेत होगया जब सुगन्ध सुँघाने से उसे चेत हुआ उसने पूछा कि यह समाचार ब्योरेवार कहिये इसको अच्छी भांति कौन जानता है किसने आपको यह हाल बताया है सरकश ने कहा कि गुस्तहम यहां आया था उसने यद्यपि मेरे मिलने की इच्छा की परन्तु मैंने उसे अपने यहां आने न दिया उसने यहां से लन्धौर और हमज़ा के शिर को एक मित्र के हाथ नौशेरवां के पास रवाना किया और यह फिर नहीं जान पड़ा कि आप कहां को गया परन्तु मुझको उसकी बात का विश्वास नहीं कि वहभी बड़ा झूठा मालूम होताहै इस निमित्त मैंने कई मनुष्य सरंद्वीप की ओर भेजेहैं कि ठीक २ हाल मालूमकरें और इस हाल से मुझे इत्तिला दें बहराम ने कहा कि आपने जो नाम गुस्तहम का लिया मुझे विश्वास हुआ कि उसकी दुष्टता को खूब जानताहूं निश्चय करके उस खल ने अमीर को छल से मारा होगा वह उसके मारने के उपाय में था अवश्य अवसर पाकर कुछ न कुछ छल किया होगा अब मैं यहां एक क्षण भी ठहर नहीं सक्ता मदायन को जाऊंगा और इसी चार सहस्र सवारों से नौशेरवां की सेनाको न मारडाला और नौशेरवां का गला कटार की नोक से न पार करूं तो संसार में किसीको मुँह न दिखाकर विष खाकर या कटार मारकर मर जाऊंगा जब सरकश ने देखा कि बहराम नहीं ठहरता शीघ्र छः महीने के निमित्त गल्ला जहाज़ोंपर भरवा दिया और बहराम को बिदा किया बहराम रोता पीटता जहाजपर सवार हुआ और जहाज़ों के लंगर उठवा दिये छः महीने के काल में जहाज बसरे में पहुँचे बहराम ने चार हज़ार सवारों समेत सूखे २ मदायन की ओर राह ली और सेना को आज्ञा दी कि जो गाँव नगर आदि मदायन के आधीन मिलें उनको लूट लो कोई स्थान बसाहुआ बचने न पावे सबको नष्ट करदो यह ख़बर नौशेरवां को पहुँची कि बहराम ने अमीर के मरनेका हाल सुनकर लड़ने भिड़ने पर कमर बांधी और तमाम गाँव नगर जो मार्ग में मिलते जाते हैं उनको उजाड़ता हुआ चला आता है नौशेरवां ने फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्र को भेजा कि तू जाकर बहराम को समझादे कि अमीर जीते हैं मरने का बतानेवाला बहुत झूंठा है शत्रुओं ने झूंठी ख़बर उड़ाई थी तुमको उचित है कि सीधे होकर और सत्य मानकर हुजूर में आओ और अमीर की ख़बर बद से किसी भांति शोक न करो फ़ोलाद गुस्तहम का पुत्र मार्ग के मध्यमें बहराम के सामने हाज़िर हुआ कि साहबकिरां जीता है पर वह कब मानता था फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्र को देखकर जलकर बोला कि ऐ दुष्ट ! तेरी बातें ये हैं और तेरा बाप यह कुछ कर बैठा है तेरी बात क्योंकर मानें जो कुछ वीरता रखता हो तो मैदान में आ तू भी क्या याद करेगा कि किसीसे काम पड़ा था फ़ोलाद गुस्तहम के पुत्र ने लाचार होकर सफ़ बांधी और मुक़ाबिला के समय उसने एक भाला बहराम की छाती पर मारा बहराम ने हाथ बढ़ाकर भाला उसका छीन लिया और वही भाला उसकी छातीपर हनककर मारा घोड़े को जो आंघोंसे दबाया फ़ोलाद अपने घोड़े से अलग होकर नटकी भांति भाला के साथ

उतरताहुआ चला आया बहराम ने देखा कि फ़ोलाद का काम तमाम होगया भालों को हाथ से फेंकदिया फ़ोलाद की सेनाने धावा किया बहराम ने उन्हीं चार सहस्र सवारों से सबको मारडाला कुल पांचसौ आदमी दशसहस्र सासानियों में बच रहे वे अपनी जान लेकर भागे और नौशेरवां से जाकर ब्योरा समेत सब हाल वर्णन किया नौशेरवां को अत्यन्त शोच हुआ कि क्या उपाय किया जावे कि इतने में बहराम चारसहस्र सवार लेकर क़िला के निकट पहुँचा यद्यपि लोगोंने कहा कि अमीर ईश्वर की कृपा से जीते हैं बादशाह से तू इस समय ढिठाई करताहै अमीर सुनकर तुझसे ख़फ़ा होंगे परन्तु उसको तो धैर्य न था समझा कि नौशेरवां अपनेको बचाता है लाचार होकर क़िलाकी फ़सीलों में से लड़ाई होनेलगी हथियार बजने लगे बहराम चालाकी करके क़िलेके तले पहुँचा नौशेरवां अत्यन्त शोकयुक्त था कि बहराम थोड़ी देरमें क़िले का दर्वाज़ा तोड़कर भीतर आवेगा मुफ़्त में सब मारे गये अभी तक बहराम ने क़िलेपर गदा न लगाई थी कि नौशेरवां की दुआ ईश्वर ने अंगीकार की अमीरके आगमन का धुरिहर दूरसे देखपड़ा और सवारों का पर्रा दिखाई दिया घिरेहुए क़िलेमें जो थे सब चिल्लाये कि साहबकिरां आये बहराम ने जो फिरकर देखा तो सचमुच अलम अज़दहा पैकरगर्द के ऊपर दिखाई दिया बहराम ने घोड़े को फिराकर दौड़ाया और अमीर की रकाब को चुम्मा दिया अमीर ने घोड़े से कूदकर बहरामको छाती से लगाया और लन्धौर से मिलाप जान पहिचानका करवाके कहा किमेरी बाहों का बल एक आप हैं और दूसरा यह है और अतिबलिष्ठ और सच्चा मित्र है अभी सवार न हुए थे कि एक सवार नौशेरवां का पहुँचा अदबसमेत आगे आया और सेवकाई की रीति करताहुआ नौशेरवां की ओर से बोला कि बादशाह सप्तद्वीप ने आपको आशीर्वाद के पीछे कहाहै कि इसी स्थानपर तुम आज डेरा करो कल मैं आप प्रातःकाल आपकी अगवानी के हेतु आऊंगा तुम्हें अपने साथ नगर में लाऊंगा साहबकिरां ने बादशाह की आज्ञानुसार उसी स्थान में तम्बू गाड़दिया और अपना सलाम बादशाह को कहलाभेजा जब सूर्य प्रकाशहुआ तब साहबकिरां लन्धौर और बहरामसमेत सवार हुए और बादशाह की चौखट चूमनेके हेतु चले उधर से नौशेरवां अधिकारियों समेत अमीर की अगवानी लेनेको चला राह के मध्यमें बादशाह का तख़्त देखकर अमीर घोड़ेपर से उतर पड़े और तख़्त के मचवा को चुम्मन किया नौशेरवां ने भी अपना तख़्त रखवाकर अमीर को छातीसे लगाया और सवार होकर मीठी२ बातें अमीरके प्रसन्न करनेके हेतु कहीं और नगरकी ओर चला और वहां जाकर कहा कि अमीरकी सेना अगलीभांति तिलशादकामपर उतरे जब कैख़ुसरोके तख़्तपर नौशेरवां और अमीर सभा न्यायशाला में पहुँचे बादशाह गद्दीशाहीपर बैठगया और अमीर उसीभांतिसे रुस्तमके दंगल पर बैठे नौशेरवांने बहुत कुछ अमीरपर से उतार कर पुण्य किया और सभा के उठने के समय अमीर को ख़िलअत कृपा की अमीर तो ख़िलअत लेकर तिलशादकामपर पहुँचे और वहां जाकर आनन्दमय सभा रचित

की और आनन्द बधाये होनेलगे बख़्तकबदबख़्त ने नौशेरवां से प्रार्थना की कि जब हमज़ा अकेला था तब तो एक २ की औसान उससे ख़ता होती थी सब का दम निकलता था अब तो लन्धौर और बहराम उसके दो मित्र हैं उससे कौन आंख भिलासक्ता है मुझको डर लगता है कि कहीं तख़्त न छीनले और आपको पराजित करे बादशाह बख़्तक की इस बात से अत्यन्त डरगया और कहनेलगा कि फिर इसका उपाय क्या है बख़्तक ने कहा कि एक २ की सफ़ाई करलीजिये कल जिस समय हमज़ा आपके पास आवे तो उससे कहिये कि मैंने लन्धौर का शिर तुमसे मांगा था यह नहीं कहा था कि उसको जीता लेआओ और मेरी आज्ञानुसार काम न करो नौशेरवां ने कहा कि इस बात के कहने को तुम्हीको अधिकार दिया है जिसभांति से उचित जानना उस भांति से हमज़ा से बातें करना उस समय तो बख़्तक ख़ुशी बख़ुशी अपने घर आया और अतिकठिनता से रात काटकर प्रातःकाल होतेही सभा में आया जब प्रातःकाल अमीर दरबार में आये अभी कोई बात न हुई थी कि बख़्तक ने कड़ाई से कहा कि ऐ अमीर! बादशाह यह फ़रमाते हैं कि मैंने लन्धौर का शिर तुमसे मांगा था न कि यह कहा था कि लन्धौर को मेरे शिर पर लाओ और एक उपाधि मेरे नगर में लगाओ कि यह कहना उसका अमीर को बुरा मालूम हुआ कहा कि मनोरथ अधीनता से है या मारने से शिर काटने को वह सेना समेत अधीन है बख़्तक ने कहा कि अधीनता से कुछ काम नहीं इसका अच्छा अंजाम नहीं है आज इसने चरणोंपर शिर रक्खा कल को फिर अभिमान कर फिर जाय तो उस समय क्या होगा? अमीर ने कहा कि मेरे जीतेजी उसको क्या शक्ति है जो आपसे फिर जाय अगर बादशाह की यही मरज़ी है तो उसका शिर हाज़िर है मुझे बादशाह की ख़ुशी सब भांति से मंज़ूर है बख़्तक बोला कि बादशाह को तो उसका शिरही दरकार है बादशाह कब उसकी सूरत देखसक्ता है और यह मैं क्योंकर कहूं कि लन्धौर आपके कहने से शिर देदेगा और देने में किसी भांति से इनकार न करेगा अमीर ने कहा कि यह क्या बात है जो आज्ञा उसे दूंगा तो शीघ्र शिर देने पर उपस्थित होजायगा और तलवार के तले शिर झुकादेगा बल्कि अपने हाथ से अपना शिर काटकर देदेगा बख़्तक बोला कि फिर देर क्या है लन्धौर को बुलाइये जो कहना हो सो कहिये साहबकिरां ने अमर को आज्ञा दी कि लन्धौर को बुलालाओ अमर लन्धौर के निकट आया और कहा कि चलिये बादशाह ने आपके मारे जाने को आज्ञा की है अमीर ने बादशाह की आज्ञानुसार आपका शिर काटने के हेतु बुलाया है लन्धौर यह सुनकर उठखड़ा हुआ और यह दोहा पढ़ा॥

दोहा। सजननेह मदमस्तहूं, सुधि नाहीं कछु मांहिं। इस मारग में जाय शिर, कछु चिन्ता नहिं होंहिं॥

मुझे साहबकिरां की ख़ुशी की चाहना है कि मुझे अब शिर शरीरपर भारी जानपड़ता है॥

चौपाई। एक लालसा यह मन माहीं। अब तू बेग बधिक के पाहीं॥

कांध पै अधिक बोझ शिर केरा। सघत नहीं पुनि होत अबेरा॥

और अब तू मेरे हाथ रूमाल से बांधदे और बादशाह की सभा की राह ले अमर लन्धौर की बातें सुनकर गले से लिपटगया और बीरता की बातें कहनेलगा कि ऐ बादशाह, लन्धौर! किसको इतना बल है कि तुमको बुरी दृष्टि से देखसके मेरे साथ आइये तुम्हारे शिर के साथ पहले तो हमज़ा का शिर है उसके पीछे ये जितने पहलवान हैं उनका और मेरा शिर है आप अच्छी भांति से हथियार बांध कर और हाथीपर सवार होकर चलिये बादशाह लन्धौर हथियार बांधकर हाथी पर सवार होकर और गदा कांधेपर धरकर बादशाह की सभा में उतर पड़ा अमर ने दरबार में जाकर अमीर को ख़बर दी कि लन्धौर हाज़िर है उसे सब प्रकार से अमीर की ख़ातिर मंज़ूर है यहां लन्धौर गदा को हवापर फेंकने लगा और हाथोंपर रोकनेलगा चारों ओर से शोर हुआ कि जो अभी गदा हाथ से छूटगई तो दश बीस मनुष्य बे अपराध मरजायँगे सैकड़ों की हड्डी टूटजायँगी बादशाह ने गुल सुनकर कहा कि भलाई तो है यह हल्ला गुल कहां होता है लोगों ने सब हाल बताया बादशाह चुप होरहा अमीर ने कहा कि लन्धौर को बुलालो अमर जाकर बुलालाया लन्धौर ने अमीर से प्रार्थना की कि क्या आज्ञा होती है? आपने क्यों याद किया है? अमीर ने कहा कि बादशाह आपका शिर चाहते हैं तुम्हारी ओर से बदगुमान होगये हैं लन्धौर ने कहा कि मैं आपका आज्ञाकारक हूं जो आपकी मरज़ी हो मैं हाज़िरहूं अमीर ने कहा कि अच्छा तुम हज़रत से बिदा हो और जिलोख़ानः के आंगन में शिर झुकाकर बैठो जिसको बादशाह की आज्ञा मिलेगी वह तुम्हारा शिर काटने के आवेगा लन्धौर उसी तरह प्रणाम करके जिलोख़ानःके आंगन में गया और गदा से तकिया लगाकर बैठा अमीर ने आदीको आज्ञा दी कि लन्धौर का शिर काटलाओ आदी ने लन्धौर से कहा लन्धौर ने शिर झुकादिया और यह दोहा कहनेलगा॥

दोहा। अलग शीश करु बेगि तू, चित न करहु भ्रमजाल। पूर्ण करूं इतिहास यह, नहिं कलेश बिकराल॥

और कहा कि धन्यवाद है उस ईश्वर का मेरा शिर अमीर की आज्ञा से काटा जाताहै मेरी आधीनता में बालभरेका भेद नहीं होताहै आदी लन्धौर की आधीनता देखकर अचेत होगया और यह कहकर लन्धौर की जांघोंपर जा बैठा और कहा कि कोई प्रथम हमारा शिर काटलेवेगा फिर लन्धौरका शिर काटेगा अमीरने इस माजरे को जांचकर बहरामको आज्ञा दी कि तुम जाकर लन्धौर का शिर अपने हाथ से काट लाओ वहभी लन्धौर की बातोंपर भूलगया दूसरी ओर जा बैठा कि हमारा शिर भी लन्धौरके शिर के साथहै साहबकिरांने बहराम की बातें सुनकर सुल्तानबख़्त पश्चिमी को भेजा वहभी लन्धौर के पास आनकर बैठगया और कहनेलगा कि अमीरने अच्छी खूंरेज़ी पर कमर बांधी है जो यही मरज़ी है तो हमारा भी शिर इनके साथ है जब ये बातें उन लोगों की बादशाह के कान में पड़ीं इतने में बख़्तक बोला कि जल्लाद बादशाही को क्यों नहीं आज्ञा होती है कि वह जिस २ के शीश को कहिये काट

लावे एक दम में क़िस्सा पूर्ण करों ...यार है जिसको चाहो भेजो बख़्तक ने उसी समय एक जल्लाद को आज्ञा दी वह लन्धौर के शिरपर पहुँचकर पुकारा कि किसकी ज़िन्दगी के दिन बीतगये हैं अमर ने देखा कि जल्लाद बाघकी खाल का अंगा पहिने कन्धबस्त्र लोहू से भरा हुआ कटि के ऊपर एक खड्ग खोंसेहुए एक तलवार हाथ में पकड़ेहुए लन्धौरकी ओर चला अमर भी उस जल्लाद अर्थात् बधिक की पीठपर पहुँचा कि इतने में एक भारी शब्द हुआ और होते २ यह आवाज़ बादशाह के मकानतक पहुँची देखें तो मलिका मेहरनिगार व मलिका मेहरअंगेज़ किसी ओर से झप्पानपर सवार आती हैं और महल की ओर जाती हैं मेहरअंगेज़ ने चिलमन से देखकर मेहरनिगार से पूछा कि यह क्या है कुछ गुलशोर कासा तौर है मेहरनिगार ने कहा कि यही लन्धौर है मलिका ने ख़्वाजेसरायों को आज्ञा दी कि जान तो आओ यह क्या बात है ? मकानपर इतना जमाव क्यों हुआ है ? और वहीं से सवारी धीरे २ चली ख़्वाजेसरायों से जानकर मलिका ने कहा कि मालूम होताहै कि बादशाह के शिर पर खून चढ़ाहै नाहक़ निरपराधियों के मारनेपर तैयार हुआ है जाओ लन्धौरको हमारे पास लेआओ ख़्वाजेसराय लन्धौरके लानेको गया जल्लाद रोकनेलगा मलिका ने सुनकर कहा कि इस जल्लाद के कान नाक काट कर सभासे निकालदो जल्लाद तो यह बात सुनकर चुप होरहा लन्धौर को उस उपाधि से छुड़ाकर मलिका के मकानपर लेगये मलिका ने लन्धौर को ख़िलअत देकर बिदा किया लन्धौर व बहराम व आदी व सुल्तानबख़्त प्रसन्न होकर तिलशादकाम को रवाना हुए और यह ख़बर ख़बरदारों ने बादशाह को पहुँचाई कि मलिका मेहरअंगेज़ने लन्धौर को बुलाकर ख़िलअत दी और बिदा किया और उसे जीदान दिया नौशेरवां ने कहा मलिका ने यह काम बेसमझे बूझे नहीं किया होगा कोई बात इसमें बिचारी होगी अन्त में भेद खुलेगा यह कहकर कचेहरी बरख़ास्त की और महल में पहुँचे ॥

बिदित होना मरना मलिका मेहरनिगार का सकरगारवालों मा बख़्तक की ज़बानी और यह हाल सुनकर अमीर की परेशानी और मारना अमरका सकरगार को और पर्दोंमें छिपाना उसी बदकार को ॥

समय का समाचार बड़ा अद्भुत है नये नये रङ्ग दिखलाताहै उसी पै यह इतिहास है लिखनेवाले का यह बयान है कि जब बादशाह घर में पहुँचे मलिकामेहरअंगेज़से पूछा कि तुमने क्या शोचके लन्धौरकी जान बचाई ? मलिका बोली पहले तौ लन्धौर आपका अपराधी नहीं है और यद्यपि उसे इतना बल है पर उसने कुछ सरकशी नहीं की अमीर के स्नेहसे लाचार है दूसरे लन्धौर भी एक देश का बादशाह है बादशाह बादशाहों को इसभांति से नहीं माराकरते हैं तीसरे जिस समय देश प्रदेश यह ख़बर बिदित होगी तुम्हारा बिश्वास जातारहेगा तमाम दुनिया आपको दोष देगी तुम्हारी बातपर कोई कान न धरेगा चौथे जब लन्धौर इसभांति

से माराजायगा हमज़ा सकल देश के दीपक लन्धौर के बदले बुझादेगा आप देखते नहीं हैं कि लन्धौर हमज़ा की आज्ञा से शिर देनेको तैयार हुआ नहीं तो आपकी तमाम बादशाहत में कौन पहलवान ऐसाहै जो लन्धौर का शिर लाकर आपको देता इस निमित्त मैंने खिलअत देकर उसे बिदा किया बादशाह मलिका की बुद्धिमानी देखकर बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु कहा कि अफ़सोस है कि हमज़ा के मारने का कोई उपाय नहीं निकलता है उस समय सकरगारबानों बख़्तक की माता वहां पर थी हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि जो मुझे आज्ञा होवे तो मैं एक उपाय करके हमज़ा को मारडालूं नौशेरवां ने कहा कि क्योंकर तब उसने कहा कि कल आप दरबार के बीचमें हमज़ा से कहें कि एक सप्ताह के पीछे तुम्हारा ब्याह कियाजावेगा तुम ब्याह की सामग्री करो और सरकार से भी नौकरों को तुम्हारी सहायता के हेतु कहा जायगा और लौंड़ी मेहरनिगार को छिपाकर तहख़ाने में बैठावेगी दो दिनके पीछे मेहरनिगार की बीमारी प्रसिद्ध करके उसके चौथेदिन जिस समय हमज़ा यह बात सुनेगा कि मेहरनिगार मरगई आप मरजायगा॥

दोहा। छल युवतिनकर कठिनहै, तन मन सब हरिलेइ। दो टुकड़ा मनके करे, दुख नानाबिधि देइ॥

यह सुनकर बादशाह को यह मंसूबा सकरगारबानों का पसंद आया दूसरे दिन दरबार में हमज़ा से ब्याहकी तैयारी करने की आज्ञा दी अमीर खुश २ बिदा होकर अपने स्थान में पहुँचे और ब्याह की तैयारी करने लगे और महल में सकरगारबानों ने मेहरनिगार को मङ्गलाचार देकर तहख़ाने में बिठलाया और कहा कि बन्नो इस तहख़ाने से एक सप्ताहतक बाहर न निकलना ब्याह में इसी तरह होता है और उसकी हमजोलियां जमा हुई दिल्लगी करने लगीं और इच्छा ब्याह के मिलाप की हुई और जो कुछ समझाना था समझाया मेहरनिगार हर्षित हो तहख़ाने में बैठी दो दिनके पीछे उस छलिन ने प्रसिद्ध किया कि मेहरनिगार बीमार है उसके चार दिन के पीछे मकान में सब रोने पीटने लगे कि मेहरनिगार मरगई अमीर उस की बीमारी ही सुनकर सहस्रों बीमारों के एक बीमार होगये थे मरने का जो समाचार सुना कटार पेट में मारनेलगे लन्धौर व बहराम ने पांवोंपर शिर रख दिया कटार अमीर के हाथसे लेलिया और धैर्य देकर बातें कहनेलगे कि आजतक कोई मृतक के साथ नहीं मुआ है मीच से कुछ बश नहीं है अमीर ने कहा कि माशूक़ मरना आशिक़ का जीना नेह के बिषय में अनुचितहै कुछ करो मैं अपनी जान दूंगा मुझे अब जीनेसे क्या काम है? अमर ने देखा कि अमीर अब किसी भांति से मानते नहीं हैं बोला कि भला आप सुनते हैं कि किसीने आपके मारने के निमित्त जो यह छल किया हो तो मेहरनिगार तो जीतीरहे और आप मरगये तो उसका कुछ घाटा न हो थोड़ा धैर्य धरिये मुझे ख़बर लेआने दीजिये अमीर को यह बात अमर की पसन्द आई और उनलोगों ने भी सुनकर अमर की बुद्धि को सराहा अमर शीघ्र चलकर मलिका की डेवढ़ीपर पहुँचा और अपने आनेकी मलिका मेहर अंगेज़ को

खबर की सकरग़ारवानों ने मलिका से कहा कि इस समय अमर को महल में बुलालेना बहुत उचित है कि वह यह रोना पीटना देखकर हमज़ा से कहेगा हमज़ा सुनकर बहुत शीघ्र आप मरेगा मलिका ने अमर को महल में बुलाया जब अमर महल में पहुँचा देखा तो सबके शरीर में काले वस्त्र शोक के चढ़े हैं छोटे बड़े सब उदास हैं परन्तु थोड़ी देर के पीछे सकरग़ारवानों ने और कुछ मलिकाके कान में कहा और उल्टे पांवों फिरगई अमर ने शोचा कि इसमें कुछ भेद है यह सनक बे काज नहीं है इसी दुष्टा का यह छल है शाम तो होगई तमाम महल में रोने पीटने के कारण अँधेरा पड़ा था अमर धीरे २ सकरग़ारवानों के पीछे २ चला इधर उधर देखकर एक बुढ़िया की सूरत बनगया जब वह अकेली पाई बाग़ में पहुँची आहट पाकर ठिठुकी बोली कि कौन आता है ? अमर ने धीमी आवाज़ से कहा कि मही हूं कोई दम में मलका के बदले यमदूत आपको लिये जाता है जबहीं सकरग़ारवानों ने आगे पांव धरा अमर ने कमन्द का हलक़ा उसके गरदन में डालकर पीछे को झिटका दिया अण्टाचित्त होकर धरतीपर गिरपड़ी अमर ने ऐसी गर्दन उसकी दबाई कि प्राण शरीर से बाहर निकल गये उसको सूखे पत्तों के ढेर में छिपा दिया और आप उसकी सूरत बनकर रौसपर खड़ारहा परन्तु हैरान था कि अब किधर को जाऊँ और मलिका का किससे पता लगाऊँ ? इतने में एक लौंडी मोमकी बत्ती लियेहुए फुलवारी की ओर से आकर बोली कि बुआ सकरग़ारवानों ! तुम्हें देर से मलका साहबा बुलारही हैं अमर ने उसके उत्तर में कुछ न कहा और उस छोकड़ी के साथ २ तहख़ाने में गया देखे तो मलिका मेहरनिगार शृङ्गार कियेहुए अति प्रफुल्लित मसनदपर दुलहन बनी बैठी है लौंड़ियों से दिल्लगी कररही है और मसनद के समीप बोतल और प्याला रक्खा है फ़ितनाबानों प्याला भर २ देती जाती है मलिका साहबकिरां का नाम लेलेकर पीती जाती हैं मेहरनिगारने कहा कि सकरग़ारवानों तुम आजकल मुझपर बड़ी कृपादृष्टि रखती हो पहले इतनी कृपा न करती थीं अमर बोला इस डर से कि कदाचित् आपको बदी का गुमान मेरी ओर से होवे कि बख़्तक की मा है उस दुष्ट की भांति से बैरियों पर अदावत रखती होगी परन्तु आपके प्रताप से आपके आशीर्वाद देने में तन मन से प्रकट रहकर अलग २ पैरों से पड़ी थी अब आप मुझे अपने भला करने के लिये समझिये देखिये कि शादी के सामान में कैसी दौड़ रही हूं एकदम मेरा पांव नहीं लगता मेहरनिगार ने कहा कि जो कुछ तुमने कहा वह सत्य है अब कहो कि बरात के आने में कितनी देर है वहां क्या सामान होरहा है ? अमर ने सबको अलग करके कहा कि कैसी बरात तुम्हारा तो महल में रोना धोना पड़ा है कि मेहरनिगार मरगई हमारी सेना में भी एक बुरी गति होगई है कि अमीर ने यह ख़बर सुनकर अपने को मारही डाला था परन्तु मुझे कुछ सूझगई कि मैंने अमीर से कहा कि थोड़ा धैर्य धरिये मैं जाकर हाल पूछआऊं वैसाही आपको सुनाऊं ऐसा न हो कि शत्रुओं ने आपके मारने के

हेतु यह हाल किया हो मैंने यहां आकर उस सांपिन को मारकर पत्तोंमें छिपादिया और उसकी सूरत बनकर आप तक पहुँचा लो अब बेग जाकर अमीर को तुम्हारी सलामती का हाल सुनाऊं जिसमें उनकी जान बचे होश व हवास ठिकाने हों दम में दम आवे यह बात सुनकर मेहरनिगार का मन प्रसन्न हुआ और अमर को बहुतसी मोहरें देकर बिदा किया परन्तु अमरने चलते समय एक रुक़ा मेहरनिगार के हाथ से अमीर के नाम लिखवा लिया जिससे अमीर को बिश्वास पड़े और जाकर यह रुक़ा अमीर के हाथ में दिया अमीर ने उसके पढ़ने से ज़िन्दगी दुबारा पाई और दशहज़ार मोहरें उस समय अमर को पारितोषिक में दीं अमर ने अमीर से कहा कि अब मेरा कहना मानिये तो मैं बहुत अच्छी भांति से इस भेद को विदित करूं हरामज़ादों को जिन्होंने फ़िसाद उठाया है अच्छी भांति से कष्ट दूं और निश्चय है कि तमाम उमर बादशाह भी इस बात से लज्जित रहे और फिर कभी भले मनुष्य के साथ ऐसा झूंठ न बोले अमीर ने कहा कि इससे अच्छा क्या है ? जो तू कहेगा सो मैं करूंगा और तेरे कहने को न छोडूंगा अमर ने कहा कि आप लन्धौर, बहराम, आदी और सुल्तानबख़्त आदि जितने सरदार हैं तिन समेत काले वस्त्र धारण करके बादशाह के पास जाओ और बादशाह से ताकीद कीजिये कि अब शीघ्र लाश निकलवाइये जिससे लोग ताना न करें कि बादशाह सप्तद्वीप की लड़की मरी हुई इतनी देरतक पड़ीरही अमीर ने यह मंसूबा अमर का बहुत पसन्द किया और बहराम आदि जिनको कहा था साथ लेकर बादशाह के पास गये और सब के सब सशोक हो अपने२ स्थानपर बैठे देखा तो बादशाह सब सासानियों और केयानियों समेत काले वस्त्र पहिनेहुए हैं और सब ओर से रोने पीटने का जोश है एक घड़ी के पीछे अमीर ने बादशाह से प्रार्थना की कि अब जो होना था सो तो हुआ अब बहुत देरतक घर में लाश रखने से क्या है ? आज्ञा दीजिये कि महलसे जनाज़ा निकालाजाय बाहर किसी स्थान पर रक्खाजाय बादशाहने मलिका मेहरअंगेज़ से कहला भेजा तो उत्तर आया कि दिनभर तो मेहरनिगार पहुनई में रहे और रात को लाश निकाली जावेगी अलग़रज़ वह दिन रोने पीटने में गुज़रा महल में कोहराम मचारहा जब सांझ हुई सैकड़ों ब्राह्मण शङ्ख व घुंघुरू बजानेलगे और अपने देवताओं के नाम लेनेलगे महल में सकरग़ारबानों की तलाश हुई तो लाश उसकी पत्तों में से निकली मेहरअंगेज़ ने उसी लाश को संदूक़ में रखकर महल से निकाला लाखों मशालें रोशन होगईं और सहस्रों मनुष्य उस लाश के साथ होलिये अमर ने देखा कि मनुष्य शङ्ख व घुंघुरू बजाते और अपने क़ौमों को गले में लगाते और पैर २ पर आतशबाज़ी छोड़ते जाते हैं अमर ने भी अपनी सूरत बदल घुंघुरू हाथ में ले प्रत्येक के गले से मिलना शुरूअ किया होते २ बख़्तक के पास पहुँचा एक छछूंदर जलाके बख़्तक के गले में डालदी और दबाया बख़्तक ने समझा कि यह काम सिवाय अमर के कौन करेगा ? अशक्त हो हाय ! जला हाय !! जला कहके

बोला कि अमर हमज़ा के वास्ते मुझको छोड़दे सब छाती और पेट जलाजाता है और सब शरीर में फफोले पड़े जाते हैं अमर ने कहा आपकी मा मरगई हैं जो सरों के समान दीपकवत् जल जायेगा तो नेकबख़्त कहलावेगा यह कहकर बख़्तक को छोड़दिया और आप आगे को बढ़ा और वह छछूंदर पेट व छाती बख़्तक की जलाकर गर्दन से निकलगई बख़्तक मार्ग में एक गढ़ा पानी का देखकर उसमें कूदपड़ा अपने शरीर का कुछ चेत न रहा जितने लोग जनाज़े के साथ या तो रोते थे या हँसपड़े और थोड़े मनुष्यों ने बख़्तक के शरीर की आग बुझाई परन्तु बख़्तक को ताब न आई अपने उस मृतक को तो मनुष्यों को सौंपा आप रोता पीटता अपने घर को फिरा जब नदी किनारे बख़्तक की मा को दबाकर फिरे बादशाहको दीवान-ख़ास में सशोक बैठे देखकर जो लोग हाज़िर थे वे भी फूट २ कर रोनेलगे अमर ने ज्यों ध्यान लगाकर देखा त्यों बादशाह के रूमाल में प्याज़ का एक गंठा है जब आंख से लगाते हैं तब आंसू बह आते हैं अमर ने निकट जाकर चुपकेसे कान में कहा कि तुझसा छली कपटी बादशाह देखने सुनने में नहीं आया है कोई ऐसा छल भले मनुष्यों के साथ करता है ? यह सुनकर बादशाह ने हँसदिया और कहा कि जिसने मक्र व छल किया था वह अपने फल को प्राप्त हुआ यद्यपि बादशाह ने यह बात तो कही परन्तु अपने मन में बहुत लज्जित हुआ और लाज के मारे पसीना शरीर से निकल आया अमीर ने कहा कि बख़्तक अपनी सज़ाको पहुँचा और जान नहीं पड़ता अमर बोला कि हुज़ूर ! यह जनाज़ा उसकी माका था अपनी माता कृपाशालिनी के शोक में है उसका किया उसके आगे आया इससे वह घर में जाकर शोक में बैठा है नौशेरवां ने अमीर से बहुत उज़र किया और कहा कि मैं कुछ भी नहीं इस छल को जानता था आप मुझपर गुमान न कीजिये यह मकारी जिसकी थी वह अपनी सज़ा को पहुँची अमीर ने कहा कि मैं सब प्रकार से आपके आधीन हूं यह कहिये कि अब ब्याह कब होगा ? बादशाह ने कहा कि चालीस दिवस केपीछे ब्याह किया जायगा आपका मनोरथ पूर्ण होजायगा अमीर तो बिदा होकर तिलशादकाम पर गये परन्तु अमर रुकरहा जब बादशाह ने दरबार बरख़ास्त किया अमर ने बुज़ुरुचमेहर को ठीक करके बादशाह से प्रार्थना अमीर की ओर से की कि अमीर को चालीस दिवस की देरी मंज़ूर नहीं है भले कार्य में ढील करना कुछ अच्छी बात नहीं है बादशाह ने कहा कि अभी सामान ब्याह व दाइज का तैयार नहीं है अमर बोला कि आप बादशाह हैं आज्ञा की देरी है असबाब के न होने में क्या ढील है ? बारे कहने सुनने के पीछे बुज़ुरुचमेहर ने बीस दिन का इक़रार कराया अमर इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हुआ अमर ने कहा कि कृपानिधान ! इस मज़मून का एक परवाना साहबकिरां के नाम लिखदीजिये कि वे उसको देखकर सामान आदि सब तैयार करें बादशाह ने एक परवाना इक़रारनामा की भांति लिख दिया अमर ने जो वह परवाना आनकर अमीर को दिया अमीर पढ़कर अमर की

बुद्धिमानी पर प्रसन्न हुए और गले से लगालिया और बहुतसी मुहरें अमर को दीं और आनन्द बधाये होने लगे अब बादशाह का हाल सुनिये कि महल में जाकर मेहरनिगार को गले से लगाया और बीस रोज़ का क़ौल जो अमीर से किया था कहा इसके पीछे अमर की हरकतें जो जनाज़े के साथ की थीं बर्णन कीं मलिका मेहरअंगेज़ व मेहरनिगार अमर की बातोंपर हँसते २ लोटगईं अब बख़्तक का हाल सुनिये कि उसने जो सुना बादशाह ने हमज़ा को इक़रारनामा लिखदिया है कि बीस दिवस के पीछे ब्याह करदूंगा और पांचदिन उसमें बीतभी गये पन्द्रह दिन ब्याह के शेष रहे हैं दोनों ओर ब्याह का सामान होरहा है नगर में इसका घर २ चरचा है यह सुन डाहकी चिनगारियों में फुँकगया यद्यपि उसके जलने के घाव अभी नहीं पूरे थे परन्तु फफोला तोड़ने के हेतु बादशाह के पास गया अलग करके कहा कि मैंने सुनाहै कि आपने हमज़ा को पत्र लिखदिया है कि बीस दिवस पीछे ब्याह करदूंगा और ब्याह की सामग्री होरही है नगर में इसीकी धूम मची है अफ़्सोस है कि आपको अपनी बात का कुछ ध्यान नहीं है सिवाय इसके मलिका का ब्याह हमज़ा के साथ करना उचित नहीं सब देशों में यह बात प्रसिद्ध होगई है कि बादशाह सप्तद्वीप को हमज़ा की जामातृता नामंज़ूर होगई है जिसने सुना उसने कहा कि सचमुच बादशाह दूसरी क़ौम को जो बिना देखे ईश्वर को पूजता है क्योंकर अपनी पुत्री देगा और आप ब्याह करने पर मुस्तैद हुए हैं यह सारा संसार क्या कहेगा ? नौशेरवां ने कहा कि मैं क्या करूं ? बहुत हैरान हूं कोई बातभी बन नहीं आती यह सुन बख़्तक ने कहा कि हुज़ूर ! हैरान न होवें मैंने एक बहुत अच्छा उपाय ठहराया और बहुत दूरकी बात शोची है नौशेरवां ने पूछा कि वह क्या तुमने शोचा है ? बख़्तक ने कहा कि कल जिस समय हाली मोहाली सभामें हाज़िर हों और हमज़ा भी उसी भांति से आवेगा मैं दो तीन आदमी नाक कान काटकर भेजूंगा वे न्यायशाला की ज़ंजीर हिलावेंगे हुज़ूर भी उसी भांति से उनका हाल पूछें वे लोग प्रार्थना करेंगे कि हम हुज़ूरके नौकर पुराने हैं सप्तद्वीप का ख़ज़ाना साल बसाल जमा करके हुज़ूर में भेजते थे इस साल में किसीने एक पैसातक नहीं दिया उसपर नाक कान काटकर दुखित किया और कहते हैं कि बादशाह सप्तद्वीप का कर देने के योग्य नहीं है वह अग्निपूजक होकर हमज़ा नामी मुसलमान को अपनी बेटी देगा और उसने अपने कुलकी रीति भांति छोड़दी अब बादशाह का जामाता आवेगा हमसे कर लेलेगा सेवकों ने इसपर विवाद किया उन्होंने सेवकों की यह सूरत बनाकर अपनी हद से निकाल दिया जिस समय ये बातें हमज़ा सुनेगा तो अवश्य लज्जित होकर आपसे बिदा मांगेगा नौशेरवां को यह सलाह बख़्तक नीच की बहुत अच्छी मालूम हुई उस दिन तो बख़्तक बिदा होकर अपने घर गया दूसरे दिन जब बादशाह तख़्तपर बैठे और हकीम व विद्यावान् व बुद्धिमान् सब अपने २ स्थानपर बैठे अमीर भी आकर अपने स्थानपर बैठे उसी समय किसीने न्याय-

शाला की ज़ंजीर हिलाई जब सांकर का शब्द नौशेरवांके कान में आया तो नौशे-रवां ने फ़िरयादियों को बुलवाकर देखा कि थोड़ेलोग नाक कान कटेहुए न्याय कराने के हेतु घबराये हुए अचेत आये हैं दरबार के सबलोग उनको देखनेलगे कि किसने ऐसी सूरत इनकी बनाई कि नाक कान जड़से उड़ादिये फ़िरियादियों ने जो कुछ वख़्तक ने सिखादिया था अच्छी भांति से वर्णन किया लाज के मारे अमीर के रोयें खड़े होगये क्रोध से बे अख़्तियार बोल उठे कि ईश्वर व कावाकी क़सम है कि जबतक उन खलों से कर न लेलूंगा तबतक ब्याह न करूंगा आदी को आज्ञा दी कि आज सतदेश की ओर डेरा रवाना हो नौशेरवां ने कहा कि ऐ अब्दुलअला! जो यही मर्ज़ी है तो पहले ब्याह से निपटलो पीछे उनको जाकर दण्ड दो अमीरने कहा कि मैंने क़सम खाई है कि जबतक उन खलों से कर न लेलूंगा तबतक ब्याह का मनोरथ न करूंगा इस बात में आप दख़ल न दें हँसी खुशी से बिदा करें बादशाह ने कहा कि जो यही मर्ज़ी है तो लन्धौर या बहराम को मलिका की निगहबानी के हेतु छोड़ जाओ अमीर इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और बहराम से कहा कि तुम बादशाह के पास रहो बादशाह ने अमीर को ख़िलअत देकर सात ख़त सातों देशों के बादशाहों के नाम लिखकर अमीर को देकर बिदा किया कि सब बादशाहों को भेजवा दीजियेगा और जहांतक होसके उनसे सलाह कीजियेगा और कारन देव-बन्द को बारह सहस्र सेना देकर अमीर के साथ किया कि जो कुछ अमीर कहें उसे करें किसी भांति से अमीर की आधीनता व सेवकाई से चूक न करें अमीर ने प्रार्थना की कि कारन के बदले और किसी सरदार को मेरे साथ कीजिये और इनको आप यहां रहने दीजिये क्योंकि ये सासानियों में सब से बड़े और आपके नातेदार हैं और इसके सिवाय कई बार मुझसे और इससे तकरार भी होचुकी है कदाचित् मार्ग में किसी भांति की कोई तकरार करे तो अच्छा न होगा मैंने जो छोड़ दिया तो मेरे साथियों से यह कभी न बचेगा कारन ने एक क़ौलपत्र आधीनता के हेतु इस मज़मूनका लिखा कि जो मैं कोई अपराध करूं तो अमीर को मेरे मारडालने का अख़्तियार है अमीर ने कहा कि दो अपराध तक मैं क्षमा करूंगा परन्तु तीसरे पर दण्ड दूंगा अमीर तो तिलशाद्रकामपर बिदा होकर पहुँचे बादशाह ने सातपत्र सातों बादशाहों के नाम लिखे और कारन के हवाले किये और मज़मून उन पत्रों में यह था कि हमज़ा को हमने समय जांचकर उधरको भेजा है कर क्या दख़ल तक न पावे इसका शिर काटकर हमारे पास भेजदेना और सात मिसकाल अर्थात् साढ़े इकतीसमासे बिष हलाहल कारन को देकर कहा कि जब अवसर पाना हमज़ा को खिलाना और ख़िलअत देकर बिदा किया कारन अमीर की सेना में आया अमीर ने दमामे पर कूचकी चोब लगवाई और रवाना हुए उस समय अमर ने अमीर से कहा कि आपने युद्ध करनेपर ध्यान लगाया है मेहरनिगार का नेह कहने सुनने का है अब आपको अख़्तियार है जहां जी चाहे वहांको जावें देश परदेश

फिरें और युद्ध में लड़ें सेना व पहलवानों को लड़ाकर तमाशा देखियेगा बन्दा
बहुत दिनों से आपके साथ खराब फिरता है और किन २ उपाधियों से बचा है
अब मक्के को जाता हूं वहीं आपके निमित्त दुआ करूंगा जो कोई पत्र अपने पिता
को देना हो दीजिये तो उनकी सेवामें पहुँचादूंगा अमीर ने एक पत्र लिख हवाले
किया और अमर मक्के की ओर रवाना हुआ ॥

इति प्रथमभागः समाप्तः ॥ १ ॥

दूसरा भाग ॥

अब लेखनी देश विदेश की बातों के हेतु पधारती है दूसरी मंज़िलरूप सादे
पत्रके लपेटनेपर मुस्तैद हुई अमीर के मार्ग का हाल ज़ीभपर लाती है नये २ इति-
हास सुनाती है कि जब अमीर सप्तद्वीप की ओर चलनेवाले हुए यहांतक कि सात
मंज़िलें जाचुके थे कि कारन ने एक दुराहापर घोड़ा खड़ाकिया अमीर ने पूछा कि
क्या कारण घोड़ा रोंकने का हुआ है ? कारन ने कहा कि यहां से सप्तद्वीप को दो
राहें गई हैं एक राह तो बहुत दूर है इसमें दो सड़कें बड़ी २ हैं मार्ग बहुत कठिन है जो
कूच करते चलेजाइयेगा तो कमसे कम महीनेभर के पीछे उस स्थानतक पहुँचियेगा
और दूसरा मार्ग समीप है कि आज से दशदिनतक चलना पड़ेगा और कष्ट किसी
भांति से न होगा परन्तु इस मार्ग में तीन दिनतक पानी नहीं मिलताहै प्यासका डर
है अमीर ने कहा कि तीन दिन के निमित्त पानी पखालों में भरवा लियाजावे अधिक
चलना क्या ज़रूर है सेना को इतना कष्ट क्यों दिया जावे सेनावालों ने तीन दिन
का पानी ऊँटोंपर लादलिया और उसी राह से जाने का मनोरथ किया जब तीन
दिन बीतगये और पानी का एक बूंद भी पखालों में न रहा चौथेदिन सेना प्यास
से बेताब होगई और अमीर की भी जीभ में प्यास के कारण कांटे पड़गये यद्यपि
आसपास ढूंढ़ा परन्तु कोई तड़ाग नदी आदि दृष्टि न पड़ा कारन से कहा कि तू
ने कहा था कि चौथे दिवस पानी मिलेगा वह पानी कहां है ? इस बात में भी कोई
मतलब ठीक नहीं है कहा ऐ साहब ! और किसी भांति का ख़्याल न कीजिये
मुझको बारह वर्ष का अर्सा हुआ कि मैं इस तरफ़ आयाथा विदित हुआ कि इस
समय नदी सोते बालूसे पटगये और कोई तालाब आदि बाक़ी न रहे परन्तु आप
के पीने लायक़ पानी मेरे छागल में भरा है आज्ञा दीजिये तो मैं ले आऊं अमीर
ने कहा बहुत अच्छा कारन जल में विष मिलाकर प्याला भर अमीर के पास लाया
अमीर ने प्याले को हाथ में लेकर मन में कहा कि पश्चात्ताप है कि मैं तृप्त होऊं
और खुसरो मेरा मित्र प्यासा रहे खुसरो को प्याला देकर कहा कि मैं अर्बी हूं तुमसे
ज़्यादा प्यास सहसक्ताहूं तुम्हारे देश में जल मिलता है तुम प्यास नहीं सहसक्ते
पीलो यह सुनकर खुसरो ने कहा कि यह मित्रता से अलग है कि मैं तो पानी से
प्यास दूर करूं आप प्यासे रहें ऐसा कह उस पानी को न पिया और आदी को जो

बहुत प्यासा था देदिया आदीने देखा कि थोड़ासा जल पीकर अधिक प्यास बढ़ाना है यह शोच उस पानी को न पिया मुक़ाबिल को देकर कहा यह जल तुम्हारी प्यास दूर करने के योग्य है तुम पियो यह सुन मुक़ाबिल ने कहा कि यह मित्रता से अनुचित है कि अमीर प्यासे रहें और हम पानी पीवें इसी तरह विष का पानी अलग रहा किसीने न पिया अन्त को सबोंने उस प्याले को अमीर के हाथ में देकर कहा कि आपके प्यासे रहनेपर हमको पानी पीना उचित नहीं है यद्यपि अमीर ने बहुत कुछ कहा पर किसीने न माना ॥

हज़रत ख़िजर अलेहुस्सलाम की आज्ञानुसार अमर का निषेध करना विष मिले जल के पीने से अमीर को और आकाशबाणी के सुनने से अमीर का उस जल को न पीना ॥

इतिहासरूपी समुद्र के ग़ोता लगानेवाले उत्तम २ वार्तारूपी मोतियों को निकालकर व अर्थरूपी सुन्दरता को सन्मुख यों प्रकट करते हैं कि अमर मक्केसे यात्रा करके आता था कि मार्ग में एक वृद्ध मनुष्य को देखकर इच्छा की कि इससे बातें करते चलें कि मार्ग सुखके साथ कटे और थोड़ी देर चित्त आनन्दमें रहे यद्यपि उसने बहुत शीघ्रता की परन्तु पहुँच न सका तब तंग होकर सौगन्दें देनेलगा कि हज़रत सलामत! आपको अपने दीन और धर्मकी सौगन्द है अगर आप आगे पैर उठावें उसका ठहराना था कि अमर ने जाकर देखा कि हज़रत ख़िजर हैं दण्डवत् करके हाल युद्ध करने का पूछा तब हज़रत ख़िज़रने कहा कि इस समय अमीर तृषावान् हैं और कारन ने जल में बिष मिलाकर अमीर को दिया है अबतक वह गिलास अमीर के हाथ में है जल्द जाकर अमीर के हाथ से गिलास पृथ्वीपर डालदे और यहींसे पुकारता चला जा कि ख़बरदार जल न पीना २ परमेश्वर तेरा शब्द अमीर के कानोंतक पहुँचावेगा और उस धर्मिष्ठी के जीव को पापी के हाथ से बचावेगा अमर बेहोश होकर दौड़ा और हरक़दमपर कहता हुआ चला कि ख़बरदार? न पीना २ मैं भी पहुँचा अमीर की यही इच्छा थी कि जल पीवें शब्द जल न पीने का उसके कानों में पड़ा गिलास को मुखके पाससे हटालिया और इधर उधर देखने लगा कि किसने मुझे जल पीने से निषेध किया है जब मना करनेवाला दृष्टि न पड़ा तब फिर जल पीने की इच्छा की परन्तु फिर वही शब्द सुनकर अचम्भित होकर चारों तरफ़ देखनेलगा कि कोई मना करताहै पर देख नहीं पड़ता कि किसका शब्द है तीसरी बार अमीरने फिर गिलास को मुखसे लगाया कि फिर वही शब्द सुनाई पड़ा तब अमीर गिलास को हटाकर बड़े सन्देह में हुआ कि यह क्या है? कि जब जल पीने की इच्छा करते हैं तभी मना करता है यह ईश्वर की रचना है और अनेक २ तरह के सन्देह कररहा था कि सामने से एक बवण्डल आया और उसमें से अमर निकला देखा कि गरद के समान उड़ता चलाआता है और कहता है कि जल न पीना जब अमीर के समीप गया तब उस गिलास को अमीर के हाथ से लेकर पृथ्वीपर पटकदिया और जहांतक उसकी छींटें पड़ीं पृथ्वी जलने

लगी यह हाल देखकर लोग बड़े संदेह में हुए उसमेंसे एक छींट अमीर के मुखपर पड़ी खाल और हड्डी काटती हुई पीठतक पहुँची अमर ने अति शीघ्रतासे शाह-मोहरा घिसकर लगादिया कि विषका असर जातारहा कारन ने जो देखा कि भेद खुलगया है तब शीघ्रता से अपनी सेना की ओर भागा और सेना को तो पहलेही से तैयार होनेकी आज्ञा दी थी शीघ्रही बारह हज़ार सवार अमीर के ऊपर आगिरे और एक बरछी लन्धौरको मारी उसने बरछी छीनकर जो एक डाट मारी तो कारन लोट पोटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और बाक़ी जो सवार थे उसे उठाकर बनकी तरफ़ हवाके समान लेभागे अमरने सेनाको उसी सोतेपर जो खिज़रने बताया था लेजा-कर जल पिलाया और खुदभी पिया अमीर ने अमर को गले से लगाया और कहा कि तूने आकाशरूपी शब्द सुनाकर खूब मेरे जीवकी रक्षा की नहीं तो मैं मरचुका था पर अब मार्ग ढूंढ़ना उचित है कि इस निर्जल देश से बाहर चलें तब अमर सेना सहित एक नगर में गया तो सब मनुष्य अमर को देखकर भागे तब उसने दौड़-कर एक मनुष्य को पकड़ा और भागने का कारण पूछा उसने कहा कि परसों एक सेना आई थी उसने हमलोगों को बहुतसा मारा और रुपया लिया और हरएक प्रकार का दुःख दिया है उसी कारण से जीव की रक्षा के लिये भागेजाते हैं अमर ने उनको धैर्य देकर कहा कि हमलोग वैसे नहीं हैं और किसीको दुःख नहीं देते हमारा स्वामी दयावान् और धर्मात्मा है तुमको उससे बड़ा लाभ होगा और बहुत प्रसन्न करेगा तुम हमारी ओर से निर्भय होकर सब मनुष्यों को हमारे समीप ले आओ तब उसने जाकर सब मनुष्यों को अमीर के समीप हाज़िर किया अमीर ने उनको बहुतसा धन दिया और उस पहले एक मनुष्यसे पूछा कि यह बन कहांतक है और मीठा जल कितनी दूरपर प्राप्त होगा और पहले नगर और नगरके अधिपति का क्या नाम है ? वह बोला कि बारह कोस तक यह बन है और इसके बाद एक मीठे जल की नदी है और वहां से एक दिन की राहपर इलज़ावेनाम नगर है और उसके स्वामी का नाम हाम है और उसीसे मिलाहुआ इलजलाकनाम नगरहै और उसके स्वामी साममहज़री और कामरू हैं और वे बड़े शूरवीर और युद्ध करने वाले हैं और प्रत्येक मनुष्य दशसहस्र सवारों का समूह रखता है आप कहेंगे तो मार्ग दिखाने को चलूंगा और आपकी आज्ञा बिना न फिरूंगा अमीरने सबसे अ-धिक द्रव्य उसको दिया और उसी तरफ़ चले जब बन नांघगये और नदीके किनारे पहुँचे नदी के जलका रङ्ग हरा देखकर उस मनुष्य से पूछनेलगे कि इस नदी का जल सदैव हरा रहता है या इन्हीं दिनोंमें ऐसा बहता है ? उसने कहा कि इस जल की सुन्दरता देखकर मोतीका भी पानी लज्जित होताथा सूर्य का कुण्ड इसकी स्व-च्छता के सम्मुख मलिन था लेकिन विदित होता है कि जैसे इसमें किसीने विष घोल दिया हो जो जल का स्वभाव और सूरत पलटगई है अब यह जल पीने के योग्य नहीं है मारक विषके तुल्य होगया है अमर ने अमीर से कहा कि यह काम

उसी पापी का है जिसने प्रथम आप को विष दिया है कहीं २ नये सोतों से सेना को जल प्राप्त हुआ और आवश्यकता के लिये पखालें और मशकों और चंगुलोंमें भरलिया दूसरे दिन ईश्वर २ करके इच्छित स्थानपर पहुँचे और इलाजालिवाके क़िले से समीप बास किया कारन का बृत्तान्त यह है कि विष की गांठें नदियों और सोतों में घोरता हुआ हाम के समीप पहुँचा और नौशेरवां का पत्र देकर कहा कि हमज़ानामी अरब का बादशाह ब्रह्मपूजक अपने इष्टमित्रों को साथ लिये आता है जो कर मांगे तो न देना और जिस प्रकार उचित हो उसको और उसके सहायक लन्धौर को मारडालो या बांधलो तो तुम्हारे राज्य का तीनसाल का कर माफ़ करके और २ भी बादशाही कृपा तुम्हारे ऊपर होगी॥

यही कहतेहुए साम और महज़्ज़रींको भी जाकर समझाया और वहांसे आगे को चला और सेना को आगे भेजदिया हामने जो देखा कि अमीर की सेना बहुत है दशसहस्र सेना से मैं इससे जय न प्राप्त करसकूंगा तब अपने दोनों भाइयों को लिखा कि सेनासहित तुम यहां आओ क्योंकि हमज़ा के साथ सेना बड़ी है अगर इसने मेरा क़िला लेलिया तो तुम्हारे क़िलों का लेना कुछ कठिन नहीं होगा इस देश में इसके समान दूसरा कोई नहीं है साम और महज़्ज़रीं व कमर ये लोग अपने भाई साम का ख़त देखकर सेनासहित क़िले में आये प्रत्येक सलाह करनेलगे साम ने कहा हमज़ा के साथ सेना अधिकहै इसे धोखा से मारना चाहिये महज़्ज़रीं व कमर बोले कि छलसे मारना नीचों का कामहै उचित है कि तीससहस्र सवार लेकर युद्ध करें बड़े भाई हाम ने कहा कि मैं तो इस बातको पसन्द नहीं करता उचित है कि सौगात लेकर हमज़ा के समीप चलकर मिलें जो वह प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो तो उसकी ताबेदारी कीजिये और कर दीजिये कदाचित् प्रत्येक के वार्तालाप में कुछ भेदहोगा तो पीछे जैसा उचित होगा करेंगे हमारे निकट यह बात उत्तम है और आश्चर्य नहीं कि हमज़ा बहुत प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो क्योंकि सहरयार वग़ैरह बड़े २ अमीर उसके साथहैं और वह भी शूरता और उदारता आदि में प्रसिद्ध है और शूरबीर लोग शूरबीरों की प्रतिष्ठा करते हैं इससे वह तुम्हारी प्रतिष्ठा करेगा और हमज़ाकी बीरता प्रसिद्ध है कि जब सात देशों के महाराजाधिराज से कुछ न होसका तो हमको पत्र लिखा कि किसी प्रकार से हमज़ा को मारडालना लेकिन यह वार्ता प्रसिद्ध है कि धोखे से मारना नीचों का काम है इसलिये यह बात हमको किसी प्रकार करना उचित नहीं है उन सबको हामकी सलाह पसन्द आई और युद्ध की इच्छा निवृत्त हुई दूसरेदिन सौगात लेकर अमीर के स्थान पर गये॥

सात देशों में से इलज़ाबिया व इलाजकिया के अधिपति हाम, महज़्ज़रीं, कमर और सामका अमीर के हाथसे मुसल्मान और आधीन होना व कर देना और सेवा करना हामआदिक का॥

शीघ्रगति लेखनी जो लिखने में अति शीघ्रहै वह अमीर के मंज़िलों और कूच

का वृत्तान्त यों लिखती है कि अमीर उन तीनों अधिपतियों से बड़ी कृपा करके सम्मुख हुआ और तीन दिनतक उनके लिये नाच और तमाशा कराता रहा और जब देखा कि ये लोग हमारे बश होगये हैं कहा कि बड़े सन्देह की बातहै कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर ईश्वर को नहीं पूजते और अग्नि और एक पत्थर की मूर्ति जो कि मनुष्य की बनाई है पूजतेहो और उसमें किसी प्रकार की शक्ति भी नहीं है यह सुनकर वे तीनों भाई साफ़ मन से कलमा पढ़कर मुसल्मान हुए और अमीर ने प्रत्येक को खिलअत देकर कहा कि अब तुमलोग हमारे भाई हुए अगर ख़ज़ाना तुम लोगों का ख़ाली हो तो मैं अपने पाससे दाख़िल ख़ज़ाने सरकारी में से करदूं और तुमसे कभी एक कौड़ीभी न मांगूंगा उन लोगों ने कहा कि आपकी कृपा से ख़ज़ाना अशरफ़ी और रुपयों से भराहै अगर आज्ञा हो तो पेशगी दाख़िलकरें हम लोग हरएक प्रकार से आपकी कृपा चाहते हैं अमीर ने आज्ञा दी कि पेशगी की कुछ आवश्यकता नहीं है माल वाजबी देना उचित है और दारोग़ा दीवानख़ाने और दारोग़ा ख़ज़ाने से दाख़िला लेना चाहिये तब उन तीनों भाइयों ने उस पत्र को जो कारन देगया था दिखाकर पढ़वाया अमीरने उसको पढ़कर प्रथम तो क्रोध किया परन्तु फिर शोचकर कि शायद जाली हो किसीप्रकार का सन्देह न किया और पूछने लगा कि अब जो देश मिलेगा उसका और उसके स्वामी का क्या नाम है और यहांसे कितनी दूर पर है और मार्ग में कौन २ शोभायमान स्थान हैं? हाम ने कहा कि यहां से पन्द्रह मंज़िल पर अलीना नगर है और उसके स्वामी का नाम अनीसशाह है जो महाशय और उच्च पदवीवाला है अमीर ने कहा कि ईश्वर मालिक है तुम सब अपने २ देश में राज्य करो और मैं जाता हूं और परमेश्वर की कृपासे विजय करके शीघ्रही आताहूं तब उन लोगों ने कहा कि हमलोग आपके सेवक हैं आपको माफ़ करने से भी करका रुपया हाज़िर करेंगे ख़ज़ानची को आज्ञा हो कि वह दाख़िल करके दाख़िला देवे और हमलोगों को हमराह में चलने की आज्ञा दीजिये अमीर ने बहुत उपदेश दिया पर किसी ने न माना अपने २ मन्त्रियों को राज्य में छोड़कर और कर का रुपया देकर साथ चले जिस समय कि स्थान अलीना दो कोस बाक़ी रहा अमीर घोड़े परसे उतरकर एक स्थानपर जो बड़ा शोभायमान था डेरा डाला जब अनीसशाह को ख़बर पहुँची तो वह अपनी सेना लेकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ परन्तु जब देखा कि विजय न पाऊँगा अपने घोड़े पर से कूदकर अमीर के चरणों पर गिरा और जीव की रक्षाके लिये मुसल्मान होकर कलमा पढ़ा तब अमीर उसको अपनी सेना में लेजाकर अनेक प्रकार के वार्तालाप करनेलगा और वह पापी मनुष्य अमीर के समीप कई दिनतक रहा एक दिन संयोग पाकर प्रार्थना की कि महाराज! सेवकने एकस्थान नहानेके लिये तैयार करवाया है बिनय करताहूं कि आप एकदिन उसमें चलकर स्नानकरें कि मार्ग का श्रम दूर होजावे पहले तो अमीर ने न माना परन्तु फिर उसकी प्रार्थना करनेसे गया तो उस

स्थान को ऐसा बनवाया था कि जो कोई देखताथा वे इच्छाभी स्नान करने की इच्छा करताथा और यत्न यह किया था कि लोहेके पायेपर छत रक्खीथी और उनमें जंजीरें डालीथीं कि चार आदमी चारोजंजीरों को छोड़देवें तो वह छत नहानेवाले के ऊपर गिरपड़े और वह दबकर मरजाय इसीप्रकार उसीदिन चार मनुष्य अतिबल-वान्को नियत करके आज्ञा दी थी कि जब हम तास दैमारें तो तुमलोग उसका शब्द सुनकर छोड़ कर भागजाना अमीर तो लन्धौर और मुक़बिल आदिक को साथ लेंकर स्नान करने को गया पर अमरू और आदीम ने अमीर की आज्ञा को न माना पर अमरू बृद्धमनुष्य का भेष धारण करके उसस्थान के पीछे गया तब उन चारों मनुष्यों ने कहा कि ऐ बुड्ढे! तू यहां से जल्द भागजा हम अभी तास का शब्द सुनकर जंजीर को छोड़देवेंगे नाहक़ तूभी दबकर मरजायगा और तेरा पाप हमलोगों के ऊपर होगा यह हाल सुनकर वह लौटा और उस स्थान के दर-वाज़े पर जाकर सब हाल अमीर से अपनी भाषा में कहा तब अमीर ने बाहर निकलकर जंजीर की कांटी चढ़ाकर सब अपना बस्त्र पहिना तब अनीसशाहने कहा कि इसके पीछे एकस्थानपर कुछ मेवा आदिक आप के लिये रक्खा है अमीर ने कहा कि तुम चलकर प्रत्येक के लिये भाग लगाकर रक्खो हम अपने साथियों समेत आते हैं खूब खावेंगे और खिलावेंगे अनीसशाह का उसमें जानाथा कि अमरू ने तासको दैमारा वे चारों मनुष्य जंजीर छोड़कर भागगये और वह छत अनीसशाह के ऊपर गिरपड़ी और वह आपही अपनी तदबीर से मारागया अमीर ने अमरू की बुद्धिमानी की बड़ी प्रशंसा की और उसके पुत्र को सेनासमेत मुसल्मान करके महज़्ज़री और क़मर को सौंपा और आज्ञा दी कि इसकी तालीम और रक्षा करो और जब अमीर ने सेनापतियों से सुना कि कारन एकपत्र बादशाह को देकर जिसमें यह लिखाथा कि अमीर और लन्धौर को किसी तरह से मारडालना देकर हलब की तरफ़ को गया है यह सुनकर बड़ा संदेह करके हलब की तरफ़ कूच किया अब और कारन का हाल यहहै कि वहांपर जाकर हदीसशाह को एक पत्र दिया और कई एक दिन के बाद कहा कि बादशाह ने मुझसे यह भी कहदिया है कि जो कोई हमज़ा और लन्धौर को मारेगा उसके उपकार से हम कभी उऋण न होंगे और यह एहसान उसका हमारे ऊपर रहेगा ऐसी २ बातें कुछ बादशाह की तरफ़ से और कुछ अपनी ओरसे कहीं और बहुत तरह से अमीर की बुराई की यह सब कहकर यूनान की तरफ़ जानेकी इच्छा की तब हदीसशाह ने कारन से कहा कि अभी तुम यूनानदेश को न जाओ हम तुम्हारे सामने हमज़ा को मैदान में मारेंगे कारन ने कहा कि यह कहने की बात है कि हमज़ा को मैदान में मारेंगे हमज़ा ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारी सेना से हारजाय और माराजाय हदीसशाह ने कहा कि अगर यह तदबीर अच्छी नहीं है तो हमने एक कुवाँ खोदवाया है उसमें अनेक २ प्रकार के हथियार हैं और जो कि बहुत तेज़ और नोकीले हैं वे खड़े हैं मैं हमज़ा को चौगान-

बाज़ी के खेलमें कुयें में मारूंगा कारन ने कहा कि यह यत्न अच्छा है और इससे वह मारा जायगा यह तदबीर करके जब सेना हमज़ा की हलब के समीप पहुँची उसी समय हदीसशाह भी सौगात आदिक और तीनसाल का पेशगी कर लेकर हाज़िर हुआ और कलमा पढ़कर मुसलमान हुआ अमीर ने उसको सबसे अधिक ख़िलअत दी चार पांच दिनतक नाचरङ्ग हुआ किया एकदिन हदीसशाह ने कहा कि मैंने आपकी शूरता की बड़ी प्रशंसा सुनी है चाहताहूं कि आप थोड़ी देरके लिये चलें और मुझे विद्या चौगानबाज़ी की सिखलावें अमीर ने कहा बहुत अच्छा सवेरे हदीसशाह ने अपने कोट में जाकर मनुष्यों से कहा कि ख़बरदार कुयेंपर इस तरह से घासजमाना कि किसी को कुयें और ख़न्दक़ का संदेह न होवे और जिस समय कि हमज़ा कुयेंमें गिरपड़े तुमलोग उसकी सेनापर चढ़ाई करके लूट पाट लेना और सबको मारडालना जब हदीसशाह अमीर को मैदान में लेगया तो एकतरफ़ हदीस की सेनाथी और एकतरफ़ अमीर की दोनों मैदान में गये और दोनोंतरफ़ के अफ़सरलोग तमाशा देखने के लिये गये हदीसशाह ने कहा कि आप चौगान लगाइये अमीर ने कहा कि हम तो कोई कार्य पहले नहीं करते और गुरू ने यह बात नहीं बताई है प्रथम तुम चौगान को (गुये) पर लगाओ पीछे मैं भी हाथमें लेकर जो कुछ जानताहूं तुमको दिखलाऊंगा तब उसने सलाम करके घोड़े को तेज़ किया और जब वह एक बाण की दूरीपर गया तो अमीरने भी चौगान (डंडा) लेकर अपने घोड़े को तेज़ किया हदीसशाह तो पीछे रहगया और अमीर आगे जिधर कुआं था बढ़गया और उसके जालपर नज़र न की स्याहकैतास नाम घोड़ा उसके समीप जाकर झुका अमीर ने कोड़ा उसके मारा तब उस घोड़े ने चाहा कि कूद जावें मगर पिछले पैर कुयें में जारहे तब अमीर उस पर से कूद कर अलग होगया और घोड़े की बाग थामकर आगे से झुकाकर बाहर निकालकर फिर सवार होते समय कारन को देखकर उसकी तरफ़ घोड़ा छोड़ा और वह पहाड़ की तरफ़ भगा अमीर भी उसके पीछे घोड़ा दौड़ाते हुए गया हदीसशाह ने जाना कि अमीर कुयें में गिरकर मरगया अपने बीस सहस्र सवार लेकर अमीर की सेनापर चढ़ाई की और बहुतसी सेना मुसल्मानों के हाथ से मारीगई और आपभी लन्धौर के हाथसे मारागया और सेना उस की भागी लन्धौर ने जब देखा कि अमीर नज़र नहीं आता घबड़ाकर अमरू से कहा कि उसका पता लगाना चाहिये अमरू स्याहकैतास नाम घोड़े के पैरों के पतेसे चला कारन एक साधु की कुटीपर जाकर उस स्थान से एक सेरवा लेकर और उसमें बिष मिलाकर उस साधुको दिया और कहा कि मेरे पीछे एक सवार आता है यह उसको देना और वह जो कुछदे लेलेना अगर उसने खाया तो सौ अशरफ़ी मैं तुम को देऊंगा और अगर कार्य मेरा पूर्ण होगया तो मैं बहुत खुश करूंगा यह कहके खुद पहाड़ की तरफ़ चलागया पीछेसे अमीर जो गया उसने वह सेरवा दिया अमीर ने उस सेरवे को लेकर पूछा कि मेरे आगे २ एक सवार आया है वह किस तरफ़ को

गया है उसने कहा कि सामने पहाड़ की दर में गया है उसतरफ़ राह निकलने की नहीं है और वहां शेर लागू है मनुष्य का वहां जाकर लौटना अति दुर्लभहै अमीर ने इच्छा की कि उस सेरवे को पियें उसी समय साधु ने कहा कि ऐ जवान! यद्यपि मुझे सौ अशरफ़ी इसके बदले में मिलेंगी पर तेरी सुन्दरता और स्वभाव देखकर लेने की इच्छा नहीं होती इस सेरवे में उस पहले सवार ने कुछ मिलाकर मुझे दिया था कि पीछे जो सवार आता है उसको देना अगर वह मरजायगा तो सौ अशरफ़ी मैं तुमको दूंगा तब अमीरने उस सेरवे को फेंकदिया और हज़ार अशरफ़ी के मोल का जवाहर देकर पहाड़ की तरफ़ घोड़े को दौड़ाया ज्योंहीं पहाड़पर पहुँचा कि एक बाघ उसके ऊपर आगिरा अमीर ने एक तेज़ तलवार जो मारी तो उसके एकके दो भाग होगये फिर अमीर पहाड़ के दरमें गया और देखा कि कारन एक दर में दब का पड़ा है चाहा कि ख़ंजर मारें वह मरजावे कि इतने में उसने कहा कि अगर मुझे न मारो तो तीन वस्तु मैं तुमको देताहूं अमीर ने कहा कि क्या देता है दे थोड़ी देर इसी से जान बचा उसने एक ख़ंजर निकालकर दिया और कहा कि यह देवबन्दी की कमरका है बड़े दुःख और यत्न से मिला है और एकबाज़ूबन्द हाथ से खोलकर दिया जिसमें बारह लाल थे और हरएक तीन २ करोड़ के थे यह दो वस्तु देकर बोला कि इस पहाड़में एक स्थानपर बहुत ख़ज़ाना है चलो वह भी बतलादूं तुम्हारी भाग का था मिला इतने में अमरू गया तब अमीर ने कारन के हाथ बांधकर अमरू को सौंपा कि देखो कहां ख़ज़ाना बतलाता है या कोई यत्न करता है अगर सही है तो उसको अपने हाथ में करो और अगर झूठ है तो इसको लेकर आओ अमरू ने कमन्द से उसके हाथ और कमर को बांधकर उसे बाहर लेकर चला तब कारन बल करने लगा कि रस्सी कमर से टूट जाय और मैं उसके हाथ से निकलजाऊं अमरू ने कहा कि क्यों बल करता है ख़ज़ाना बतलादे मैं तेरेलिये अमीर से कहकर छोड़वादूंगा कारन ने कहा कि ख़ज़ाने का नाम तो मैंने अपना जीव बचाने के लिये लिया है मगर तू मुझे छोड़दे तो दोलाख अशर्फ़ी मदायन में चलकर दूंगा अमरू ने कहा कि अब मैं जीतेजी कब तुझको छोड़ताहूं कि कोई बात शत्रुता की मुझसे और अमीर से उठा नहीं रक्खी है ऐसी क़ाबू पाकर मैं तुझको क्यों छोड़ूंगा? यह कहकर ख़ंजर कमर से निकालकर मारडाला और अमीर के समीप जाकर सब हाल कहा तब अमीर ने कहा कि तूने अच्छा कार्य किया कि रोज़ का झगड़ा मिटादिया॥

अमीर का यूनान की तरफ़ जाना और महदमरहीम के साथ ब्याह करना॥

पुस्तक निर्माण करनेवाले उत्तम अर्थ को लेखनरूपी भूषणसे सुशोभित करते हैं उत्तम वर्ण को नये २ प्रकार से अलंकृत करके यों वर्णन करते हैं कि जब शाहज़फ़र अमीर के शीशारूपी चित्त में प्रकाशित हुए तो अमीर ने क़िले में जाकर सात दिनतक वास किया और वहीं से पांचों देशों का कर और क़ारन पत्र आदिक

संयुक्त हाल कारन के या और २ जो उसने किया था लिखकर मुक़बिल के हाथ बादशाह नौशेरवां के समीप भेजकर आप यूनान की तरफ़ चलकर थोड़ेदिन के बाद उसके समीप पहुँचकर बासकिया फ़रेदूँशाह बादशाह यूनान को अख़बार के द्वारा पहलेही मालूम हुआथा इस बृत्तान्त के सुनतेही कर और अपने भाइयों को साथ लेकर चला और मार्ग में अमीर से भेंटआदिक देकर मिला और साफ़ मनसे कलमा पढ़कर भाइयों समेत मुसल्मान हुआ तब अमीर ने अति प्रसन्न होकर उसको और उसके भाइयों को ख़िलअत दी और कई दिनतक उसी जङ्गल में मङ्गल रहा फ़रेदूँशाह ने एक दिन संयोग पाकर अमीर से प्रार्थना की कि सेवक को तीन कार्य करने की अति आवश्यकता है और प्रत्येक का होना अति दुर्लभ है अगर आप इन कार्यों को करदेवें तो बड़ी ही कृपा होगी अमीर ने कहा वह कैसा कार्य है ? कहो उसने बिनय करके कहा कि प्रथम कार्य तो यह है कि थोड़े दिनों से एक अजगर यहां रहता है उस के कारण से मंज़िलों की आबादी वीरान होती जाती है और लाखों रुपये का नुक़सान होता है और दूसरा कार्य यह है कि कोट के समीप एक पहाड़ है उसपर डाकूसैयदों ने अपने रहने के लिये एक स्थान बनाया है और सालभर में एकबार लूटमार करते हैं कई सहस्र मनुष्य उनके हाथ से मरते हैं तीसरा कार्य इन दोनों के होनेपर कहूंगा तब अमीर ने कहा कि प्रथम हम अज़दहे को मारेंगे और फिर कोट में सोने के लिये स्थान बनावेंगे प्रातःकाल हमारे साथ चलकर अज़दहे का स्थान बतलाकर तुम लोग अलग खड़े होकर तमाशा देखना ख़ुसरो ने कहा कि आप सैयदोंपर क्या जावेंगे अगर आज्ञा हो तो खड़ी सवारी जाकर उसका शिर काटकर आपके समीप लाउं अमीर ने कहा कि प्रातःकाल हम अज़दहे को मारने जायँगे तो तुम उसके मारने को जाना और मार यमपुर को पहुँचाना अमीर तो फ़रेदूँशाह को साथ लेकर अज़दहे को मारने चला और ख़ुसरो हिन्द असफ़भाई फ़रेदूँशाह को साथ लेकर उस जङ्गी सैयदोंपर गया जब कि अज़दहे के समीप पहुँचे फ़रेदूँशाहने घोड़ेपर से उतरकर प्रार्थना की कि आप देखें कि कोई बृक्ष आदिक बेजले नहीं हैं और सब बन और पहाड़ आदिक जलकर राख होगये हैं और जब वह अज़दहा निद्रा से रहित होकर जागता है और सांस लेता है तब यहांतक उसकी लपक आती है इस समय वह सुख नींद सोरहा है नहीं तो मनुष्य तो क्या जन्तु आदिक का भी इस स्थानपर आना अति दुर्लभ है अमीर भी घोड़ेपर से उतरकर अमर को साथ लेकर अज़दहे के मारने के लिये आरूढ़ हुआ फ़रेदूँशाह भी साथ चला समीप जाकर देखा तो एक वस्तु काले रङ्ग की बिदितहुई पर अति निकट जाने से प्रत्यक्ष हुआ कि अज़दहा पड़ा है अमीर ने कहा कि निद्रा में मारना उचित नहीं है यह तो एक केवल कीड़ाहै अमीर ने उसको जगाया उसको देखकर अज़दहे ने अपना शरीर ताड़ के बृक्ष के समान करके फुफकारता हुआ अमीर के ऊपर चला उसकी लपक से जो बृक्ष कि

हरेथे सूखगये और बहुत से भस्म होकर कोयले होगये तब अमीर ने जो एक तीर मारा उसके दोनों नेत्र फूटगये और पृथ्वीपर गिरपड़ा तब फिर अमीरने जाकर एक तलवार ऐसी मारी कि एकके दो अज़दहे होगये और उस स्थान से उठ न सका तब फ़रेदूंशाह अति प्रसन्न होकर अमीर की परिक्रमा करके सलाम किया और अमीर जिस समय कि सवार होकर क़िले में पहुँचा था उसी समय लन्धौर भी शिर लेकर पहुँचा और ख़ज़ाना जो क़िले से लूटकर लाया था अमीर के समीप लेगया फ़रेदूं-शाहने यह सब रुपया और जवाहर लन्धौर को देकर नाचवरङ्ग करानेका आरम्भ किया और कई दिनतक खुशी रही अन्त को फ़रेदूंशाह ने प्रार्थना की कि दो कार्य तो आपकी कृपा से पूर्ण होगये और तीसरा यह है कि मेरी बेटी के साथ ब्याह की-जिये कि सब बलवान् मनुष्यों और आपके समीप मुझ सेवक की प्रशंसा रहे और सब शत्रु भी डरें तब अमीर ने कहा कि यह कार्य तो अतिही कठिन है यह तेरा विचार मिथ्या है क्योंकि मैं मलिकामेहरनिगार से प्रतिज्ञा करचुका हूं कि जबतक तेरे साथ ब्याह न कर लूंगा तबतक दूसरी स्त्री की तरफ़ दृष्टि न करूंगा यह सुन फ़रेदूंशाह अपनासा मुँह लेकर रहगया और अपने भाई असफ़ से एकान्त में कहा जो कदा-चित् मैं अपनी बेटी के ब्याह की वार्ता अमीर से न करता तो अतिउत्तम होता और क्यों सभामें इस प्रकार लज्जित होता और सर्वत्र यह वार्ता प्रसिद्ध होती कि अमीर ने फ़रेदूंशाह को अप्रतिष्ठित जानकर उसकी बेटी के साथ ब्याह न किया ऐसे जीवन से तो मृत्यु उत्तम है यह कहकर चाहा कि एक खंजर पेट में मारें और मरजायँ तब असफ़ ने उसका हाथ पकड़कर कहा कि ऐसे कार्यों का परिणाम वि-चारना उचित है और इसकी प्रतिज्ञा करता हूं कि अमीरके साथ महदमरहीम का ब्याह करदूंगा और अवश्य है कि आप का कार्य सिद्ध होगा और शत्रुओं को लज्जा प्राप्तहोगी अमरू को बुलाइये तब फ़रेदूंशाह ने अमरू को बुलाकर अपने समीप अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाया और पांचसहस्र अशर्फ़ी देकर कहा कि यह मेरी प्र-तिष्ठा तेरे हाथ है परमेश्वर के लिये मेरी लड़की का ब्याह अमीर के साथ कराके इस कठिनकार्य को सिद्ध करो तो दशसहस्र अशर्फ़ी और बाद ब्याह होनेके दूंगा कदाचित् ऐसा न होगा तो विष खाकर मरजाऊंगा अमरू ने उसको समझाकर कहा कि यह कुछ बड़ी बात नहीं है आजही ब्याह होजायगा आप सन्देह न कीजिये चुपचाप ब्याह का सामान कीजिये यह कहकर अशर्फ़ियों को लेकर अपने स्थान पर जाकर अमीर से एकान्तमें महदमरहीमकी सुन्दरता और स्वभाव की प्रशंसा की कि अमीर को उसके सम्मुख किया अमीर ने कहा कि हम फ़रेदूंशाहकी लड़की से ब्याह अभी करते पर मलिका को क्या जवाब दूंगा कि मैंने उस से प्रतिज्ञा की है जबतक तेरे साथ ब्याह न करूंगा तबतक दूसरी स्त्रीपर दृष्टि न करूंगा परीभी जो सम्मुख आवेगी उसको कुरूप जानूंगा अमरू ने कहा कि ऐ अमीर! कहीं जवान भी ऐसी बातों में सच्चा रहता है स्त्रियों से इससे अधिक भी करार करते हैं और

पूर्ण नहीं होते फिर वह मनुष्य जो देश और प्रजा का अधिपति हो उसकी प्रतिज्ञा ऐसी होती है आपने तमाशबीनों की वार्ता नहीं सुनी शेर (तुम नहीं और सही और नहीं और सही) आप खुशीसे ब्याह कीजिये और मलिकामेहरनिगार का वृत्तान्त वह जाने या मैं अगर वह आपसे कुछ कहे तो आप मेरा नाम लेलीजियेगा मैं उसको समझादूंगा तब अमीर ने अमरू के कहनेपर उसके साथ ब्याह करनेका क़रार किया परन्तु कहा कि मैं जबतक मलकामेहरनिगारके साथ ब्याह न करलूंगा तबतक उसके साथ न रहूंगा फ़रेदूंशाह ने इस बातको अति प्रसन्नता के साथ मान लिया और उसी दिन तिलक हुआ और ब्याह का सामान होनेलगा फ़रेदूंशाह ने अमरू को दशसहस्र अशर्फ़ी के सिवाय एक ख़िलअत जड़ाऊ की देकर कहा कि ऐ ख़्वाजः! मैं तेरी सेवा सदैव इसी प्रकार से किया करूंगा अमरू तो अति लुब्धही था फ़रेदूंशाह को भी दिलासा दिया और अमीर से इस प्रकार से उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की कि अमीर ने दूसरे दिनकी रात्रिको सर्वपूजन आदि करके महदमरहीम के साथ ब्याह करके पन्द्रह दिवसतक उसके साथ बास किया सोलहवें दिन महदमरहीम को उन्हीं बारह लालों में से जो कारन से प्राप्त हुए थे देकर महल से बाहर निकाला उसके दर्शन की इच्छा करनेवाले बहुत से मनुष्य इकट्ठा हुए और फ़रेदूंशाह से कर का रुपया लेकर साथ उन वस्तुओं के जो लन्धौर लूटकर लाया था सब लेकर नौशेरवांके समीप भेजकर अमरू कोभी साथ किया और अपने यात्रा की आज्ञा मिश्र की तरफ़ दी॥

जाना अमीर का मिश्र देश को और क़ैद होना बादशाह के हाथ दग़ा से॥

नगर के लेखकों के लिखने से प्रसिद्ध होता है कि जिस समय खुसरो अमरू के साथ मदायन के समीप पहुँचा तब बादशाह नौशेरवां ने सुनकर सरदारों को उसकी अगवानी के लिये भेजा और आने के समय बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर देरतक अमीर का वृत्तान्त पूछतारहा तब थोड़े काल के व्यतीत होनेपर सब करका रुपया व पत्र और सवगात आदिक नौशेरवां के समीप रखकर सर्व वृत्तान्त कारन व अनीसशाह और हदीसशाह आदिक की शत्रुता का बयान किया और अमीर की ओर से प्रार्थना की कि अमीर ने कहा है कि बादशाह की आज्ञा से बाहर मैं नहीं हूं और जो बादशाह आज्ञा देवें तो मैं अग्नि में भी कूदपरूं पर प्रतिष्ठा में भेद न होवे तब बादशाह ने करका रुपया ख़ज़ाने में भेजकर खुसरो और अमरू को ख़िलअत देकर आज्ञा दी कि तुम लोग बराबर हाज़िर रहाकरो और अपने २ स्थानपर बैठाकरो खुसरो तो अपने स्थानपर जाकर स्थित हुआ परन्तु अमरू उठकर सबसतानहरीम के दरवाज़े तक गया था कि तुरन्तही मलकामेहरनिगार ने सुनकर बुलाया और अमीर का वृत्तान्त पूछनेलगी अमरू ने अमीर का पत्र देकर सब वृत्तान्त जो कुछ उसके सामने हुआथा कहा कि मलका अमीर का चित्त आपही में लगाहै जो समय व्यतीत होता है वह आपही के याद में गुज़रता

है मलका बोली कि ऐ ख़्वाजे ! अब तो बिरह ऐसा सताताहै कि दिन व रात्रि अति कठिनता से ब्यतीत होती है ॥

चौपाई । तेरेध्यान माहिं दिन बीतै । रात्रि स्वप्न में तुहीं प्रतीतै ॥

दोहा । हमज़ा तेरे वियोग में, प्रान न होत पयान । हृदयसों बाहर जान को, औठन करते थान ॥

चौपाई । आवै मृत्यु तो मैं जीजाऊं । अमंयप्रददुख बिरह से पाऊं ॥

हे ईश्वर ! यातो साहबक़िरां को लेआओ या मृत्यु दे कि इस दुःखसे छूटूं अमर ने कहा कि ऐ मलका ! बहुत गई थोड़ी रही अब किसी प्रकार का संदेह करना अनुचित है जिस ईश्वर ने उनको इतनी आपत्तियों से बचाया है और तुमको एक पापी के हाथ से छोड़ाया है वही एकदिन यह भी करेगा कि तुम और अमीर अति प्रसन्नता के साथ संयुक्तहोगी अब केवल मिश्र का कर लेना शेष था वह भी ईश्वर की कृपा से अति शीघ्र पूर्ण होगया होगा और आश्चर्य नहीं है कि वह इस तरफ़ चले हों इसी प्रकार से मलका की दिलजमई करके बाहर निकलकर बहराम, ख़ाकान और मुक़बिल आदिक से मिलने को गया तब मुक़बिल और बहराम अति प्रसन्नता के साथ मिलकर नाच रङ्ग आदिक करवाने लगे इसके संपूर्ण होने पर अमरू ने खुसरो बहराम और मुक़बिल आदिक से कहा कि तुमलोग प्रत्येक दिन बादशाह की सभा में जाया करना परन्तु अपने कील कांटों से ख़बरदार रहना क्योंकि बादशाह की कृपा और शत्रुता का कुछ ठीक नहीं है उसका मन स्थिर नहीं रहता और बुज़ुरुचमेहर के समीप सदैव जाया करना क्योंकि वह अमीर का एक मित्र और शुभचिन्तक है और उसकी बातों पर ध्यान रखना यह सब उपदेश देकर कहा कि मैं तो अब मक्का को जाता हूं और अति शीघ्र अमीर की ख़बर लाताहूं सब बस्त्र जिस प्रकार से यात्री लोग पहिनते हैं धारण करके मक्के की तरफ़ चला ॥

अब और बृत्तान्त अमीर का यह सुनाता हूं कि जब अमीर मिश्रके समीप पहुँचा तो नीलनदी के निकट डेरा डालकर सर्व दिन बातों में बिताया और जब कि रात्रि हुई उस समय फ़र्राशों ने बिल्लौरी झाड़ और फ़रसी आदिक प्रत्येक स्थान पर रक्खी और झाड़ व फ़ानूस आदिक में मोम की बत्तियां लगवाकर प्रज्वलित करवाया और फिर जो नदी की तरफ़ चिराग़ उड़वा दिया तो उसके कारण करके और अधिक तमाशा होगया और उसकी परछाहीं जो जल में पड़ी तो एक दूसरी शमा बँधगई इसके पश्चात् अमीर शराब और मांस अपने साथियों समेत खाकर रात्रिभर नाच और गाना आदिक देखता और सुनतारहा जब कि यह बृत्तान्त मिश्र के बादशाह को प्रकट हुआ कि अमीरहमज़ा नौशेरवां बादशाह की ओरसे कर लेने को साथ अपनी सेना के आकर नीलनदी के निकट स्थित है उसी समय कारवां नामे सेनापति को बुलाकर सर्व बृत्तान्त कहकर सम्मति पूछने लगा कि हमज़ा आया है क्या करना उचित है ? सेनापति ने जो अति बुद्धिमान् था कहा कि उस की शूरता आदि का बृत्तान्त तो आपको अख़बार के द्वारा बिज्ञात होचुका है वह

अति बलवान् और युद्ध करनेवाला है ऐसे मनुष्य से युद्ध करने का यत्न करना अपने हाथ से अपना शिर काटना है इस कारण से मेरी बुद्धि में तो यही आता है कि आप चलकर अगवानी मिल सौग़ात आदिक देवें और उसकी प्रबलता और शीलता तो जगत् में प्रसिद्ध है जो आपका स्वभाव और प्रकृति अच्छे प्रकार से जानजायगा तो निश्चय है कि आपके ऊपर अति कृपा करेगा मिश्र के बादशाह ने अति क्रोधित होकर कहा कि तेरी सलाह उत्तम नहीं है जो मैंने विचारा है वही उत्तम होगी तब उसने विचारा कि यह इस समय मिश्र का स्वामी होनेके कारण यद्यपि यह बेसामान है परन्तु अपने को सहित सामान के जानता है इस समय जो परमेश्वर भी समझावें तो अपनी बुद्धि के सामने कुछ न मानेगा यह विचारकर चुप होरहा और कहा कि अवश्य यह माराजायगा॥

प्रातःकाल मिश्र का बादशाह तीनसाल का कर और सौग़ात आदिक लेकर अमीर के समीप जाकर मिला और सब उसके समीप रखकर प्रार्थना की कि आप ने नगर होते वन में क्यों बास किया है? कि हर प्रकार से दुःख प्राप्त होता है आप नगर में चलकर सेवक के स्थान में वास करें अमीर ने ख़िलअत देकर कहा कि मित्रोंका स्थान मित्रोंही के लिये है हमको किसी प्रकार का सन्देह तुम्हारे स्थान पर चलने का नहीं है यह कहकर उठ खड़ाहुआ और सेना को उसी स्थानपर छोड़कर साथ अफ़सरों के चला ज्योंहीं अमीर नगर में पहुँचा सब छोटे बड़े इसके देखने के लिये दौड़े और अमीर का रूप देखकर सबलोग आशीर्बाद देनेलगे॥

दोहा। ईश्वर रखहिं यहि जगत में, राखे संपाति युक्त। सफल दृष्टि नव भूति अरु, नववय अरु उद्युक्त॥

अन्त को अमीर यूनान में जाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठा और सरदारलोग कुरसियों पर बैठे तब मिश्र के बादशाह ने साकियों को शराब लेआने की आज्ञा दी और नाच रङ्ग की सभा करके शराब पिलाने का आरम्भ किया और आप टहलू के समान सब कार्य करता रहा और यदि अमीर बैठने को कहता तो हाथ जोड़कर बिनय करता कि आपकी टहल करना मुझे उचित है और बड़ी भाग्य थी कि आप आये अमीर उस की मीठी २ बातों से अति प्रसन्न होकर निस्संदेह होगये। रात्रि के समय उस पापी बादशाह ने अपने हाथ से बेहोश करनेवाली मदिरा साकियों को देकर आज्ञा दी कि अब जो मदिरा दीजावे वह इसी में से देना तब उन लोगों ने वही शराब गिलासों और सुराहियों में भर भरकर देना शुरू किया अमीर ने पहले ही गिलास पीनेपर पूछा कि क्या यह दूसरी मदिरा है बादशाह मिश्र ने हाथ जोड़कर कहाकि यह शराब आपही के निमित्त सेवक ने मँगवाई है और इससे उत्तम मदिरा दूसरी नहीं होती पर अमीर ने अपनी अवस्थाभर में दारू बदहोशी की नहीं पी उसकी बातों को सत्य जाना चार पांच गिलास पीने के पश्चात् अमीर के साथी झुक झुककर गिरनेलगे जब अमीरने उनका यह बृत्तान्त देखा तब उठने की इच्छा की तो खुद भी पृथ्वीपर गिरपड़ा बादशाह मिश्र ने अपने वज़ीर से कहा

कि देखो हमने यही बिचार कियाथा उसी समय आज्ञा दी अतिशीघ्र जल्लादों को बुलाओ कि हमज़ा का शिर साथ हमराहियों के काटकर शुतरसवार को दे कि वह अतिशीघ्र नौशेरवां बादशाह के समीप पहुँचावे तब फिर कारवां ने हाथ जोड़कर बिनय की कि सत्य है कि आपने ऐसे बलवान् शत्रु को यत्न से अति शीघ्र अपने आधीन करलिया है परन्तु मेरी बुद्धि में आता है कि अभी हमज़ा का मारना उचित नहीं है क्योंकि हमज़ा के ऐसे २ मित्र हैं कि हमज़ा के मारने का हाल सुनकर मिश्र की मिट्टीतक खोदकर उड़ादेंगे जिनमें से एक खुसरो जिसके साथ लाख सवार और बहुत से पैदल जो अपने जीवपर खेलते हैं और सब बड़े २ बली और शूरबीर हैं दूसरे बहरामशाह जिसके साथ कई लाख चीनी और खाकानी सवार और बहुत पैदल हैं और हरएक तलवार बहादुर हैं तीसरे मुक़बिल जिसके साथ कई सहस्र तीरन्दाज़ हैं चौथे अमरू जो सबसे बलवान् और शूरबीर है और ऊँटपर अकेला रहता है इन सब बातों से उचित है कि इन लोगों को क़ैद रखिये और बादशाह नौशेरवां को पत्र भेजिये जैसी वह आज्ञा देवे वैसा कीजियेगा जो बादशाह हमज़ा को मारने की आज्ञा देवे तो मारकर अपने हौसिले को मिटाइयेगा मिश्र के बादशाहने कहा कि यह बात अति उत्तम है और मैंने भी यही बिचारा है परन्तु केवल इतनीही बात का संदेह है कि जबतक दूत आवे जायगा जो इसीसमय में अमरू आगया और हमज़ा को छुड़ा लेगया तो सब परिश्रम बृथा जायगा और तब हमज़ा किसी प्रकार से हमको उठा न रक्खेगा और दुबारा फ़साद उत्पन्न होगा कारवांने कहा मैं पत्र का जवाब दो दिन में मँगा सक्ताहूं परन्तु जो बादशाह जवाब लिखने में बिलम्ब न करें और किसी प्रकार से मार्ग में आपत्ति न पड़े मेरे घर में एक जोड़ा मदायन के कबूतर का है आप पत्र लिख दीजिये मैं उसके गले में बांधकर प्रातःकाल यहां से छोड़ूंगा सन्ध्या को वहां पहुँचेगा जो बादशाह ने शीघ्रही जवाब लिखा तो दूसरे दिन यहां लेआवेगा बादशाहने उसकी बुद्धि की बड़ी प्रशंसा करके लुहारोंको बुलाकर आज्ञा दी कि हमज़ा सहित उसके साथियों के पैरों में बेड़ियां डालकर चाह यूसुफ़ में क़ैद करो और सरहङ्ग मिश्र के सरदार को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम साथ अपने सिपाहियों के इन क़ैदियोंकी खबरदारी में रहो और किसी से भेद और मेल की बातें न कहना नहीं तो अमरू आकर इनको छोड़ा लेजायगा और परिश्रम बृथा जायगा और लज्जा प्राप्त होगी और नगर में ढिंढोरा पिटवादिया कि जो कोई हमज़ा का नामलेगा वह बिना बादशाह की आज्ञा के मारडाला जावेगा नगरबासियों ने डरके मारे मुसल्मानों का नाम लेना छोड़ दिया इस प्रकार से प्रबन्ध करने के पश्चात् दूसरे दिन एकपत्र नौशेरवां के नाम लिखकर कबूतर के गले में बांध कर मदायन की तरफ़ उड़ादिया वह बायुके घोड़ेपर सवार होकर उसीतरफ़को गया॥

कबूतर का मदायन में पत्र लेकर पहुँचना और मुक़बिल आदिक के मारने का यत्न करना और अमरू का आजाना॥

आशिक़ों ने जिनकी बाक्य रचना में सुमधुरभाषी पक्षियों की ऐसी माधुर्य है

और इश्क़बाज़ लोग कि जिनके बिचारांश की उच्चता आकाशगामियों की ऐसी है बररारूपी पक्षी को पंक्तिरूपी पींजरे में बन्द करके तमाशा देखनेवालों को देखाते हैं और नई २ भांति के आशयों को यों वर्णन करते हैं कि कबूतर ने मिश्र से छूटकर जो सन्नाटा भरा तो शाम न होने पाई कि मदायन में पहुँचकर बादशाह नौशेरवां के कबूतरों की ठाटपर जाकर दम लिया कबूतरबाज़ ने नया कबूतर देखकर अपने कबूतरों को खोलकर जाल फैलाकर दाना फेंका और कटोरे का पानी उछाला जोकि वह कबूतर तमाम दिन का भूखा प्यासा था सबसे पहले जाल में जारहा कबूतरबाज़ ने दौड़कर उसको पकड़ा तो देखा कि एक पत्र उसके गले में बांधा है पत्रको खोलकर बख़्तक के समीप लेगया और कहा कि इस समय मैंने एक कबूतर पकड़ा है उसी के गले में यह पत्र बँधा था सो उसको मैं आपके समीप लायाहूं बख़्तक ने उस पत्रको जो कबूतर के परों से बँधा था पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बादशाह को दिया उस पत्र के पढ़ने से बादशाह भी प्रसन्न हुआ बख़्तक ने कहा अब अति शीघ्रही हमज़ा के मारने की आज्ञा लिखकर पत्र को दीजिये कि जो मेरे निकट एक कबूतर मिश्र का है उसके गले में पत्र बांधकर प्रातःकाल उड़ादूंगा निश्चय है कि सन्ध्यातक लिखनेवाले के पास पहुँच जायगा और इसमें किसी दूसरे की सम्मति न लीजिये नौशेरवां ने कहा ऐसे २ कार्यों में बुज़ुरुच्चमेहर की सम्मति लेना अवश्य है क्योंकि मुझको पिता की आज्ञा पालनी ज़रूर है तब वह बोला कि अति उत्तम है परन्तु बुज़ुरुच्चमेहर मुसल्मान है अपनी जाति का पक्ष अवश्य करेगा और हमज़ा ऐसे बलवान् का बारबार बश में आना कठिन है बादशाह ने उत्तर दिया कि इसी बात में बुज़ुरुच्चमेहर की भी परीक्षा होजायगी और बिचार भी प्रकट होजायगा यह कहकर बुज़ुरुच्चमेहर को बुलाकर पत्र दिया पत्र को देखते ही विक्षिप्त होकर अपने चित्त में कहा कि बड़े आश्चर्य की बात हुई परन्तु स्वस्थ होकर कहा कि परमेश्वर आपका कार्य सिद्ध करे कि आपभी अलग रहे और सब सन्देह मिट जायगा परन्तु अभी हमज़ा के मारने की आज्ञा देना उचित नहीं है कदाचित् यह वृत्तान्त लन्धौर बहराम व मुक़बिल तक प्रगट होगा तो वे मदायन के सम्पूर्ण जीवों का नाश करदेंगे और मिश्र की जो दशा करेंगे उसको परमेश्वर जाने प्रथम तो आप इन लोगों का यत्न कीजिये तत्पश्चात् हमज़ा के मारने की आज्ञा दीजिये बख़्तक बोला कि इन लोगों का मारना कुछ बड़ी बात नहीं है कल जिस समय वे लोग सभा में आवें उस समय उनको शराब बेहोशी की पिलाकर पकड़ लीजिये तत्पश्चात् मिश्र के बादशाह को हमज़ा के मारने के वास्ते आज्ञा लिख कर उसी कबूतर के गले में जो आप के पास है बाँधकर उड़ा दीजिये और जब हमज़ा का शिर आवे तब लन्धौर आदिको भी मारकर सदैव के लिये अपने देश से उपद्रव मिटादें नौशेरवां को यह सम्मति अति पसन्द आई और बख़्तक ने उसकी बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की जोकि बख़्तक बुज़ुरुच्चमेहर को अति ईश्वर का

भक्त जानता था न तो आप उस रात्रि को अपने स्थान को गया और बादशाह से कहकर बुज़ुरुच्चमेहरको भी न जानेदिया प्रातःकाल जब सभाहुई तो लन्धौर बहराम व मुक़बिल भी यथोचित् सभा में आके अपने २ स्थानपर बैठे बादशाह उस दिन अति प्रसन्नता से उनके सम्मुख होकर उनको बिष मिली मदिरा पिलानेलगा तब पोर्तुगालीय व फ़िरंगी बेहोश होकर गिरनेलगे और बुज़ुरुच्चमेहर ने आंखें छिपा कर लन्धौर आदिक को मदिरा पीने से बहुत निषेध किया परन्तु उन लोगों ने कुछ न समझा केवल मुक़बिल दो गिलास मदिरा पीकर शिर की पीड़ा का बहाना करके सभासे उठगया और गिरता पड़ता बुज़ुरुच्चमेहर के स्थानपर जाकर पड़ा और लन्धौर व बहराम मदिरा पीकर अचेत हो कुरसियों पर से गिपरड़े तब बादशाह ने अति शीघ्रता से पैरों में बेड़ियां गले में तौक़ कमर में ज़ंजीर आदि से बांध कारागार में भेजकर मिश्र के बादशाह को यह पत्र लिखा कि हमज़ा का शिर काट कर अति शीघ्रता से हमारे समीप भेजदो यह लिखकर बख़्तक को दिया कि प्रातः-काल कबूतर के गले में बांधकर उड़ादेना और इसभेद को किसी से न कहना यह आज्ञा देकर बादशाह दरबार से उठकर महल में गये और बुज़ुरुच्चमेहर ने अपने स्थानपर आकर देखा तो मुक़बिल दारू के नशासे मुरदेके समान पड़ा है उसको चैतन्य करके सब बृत्तान्त सुनाया तब मुक़बिल हाय २ करनेलगा तब बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि हाय २ करने से कुछ न होगा इसका उपाय करना चाहिये तुम हमारी ऊँटनीपर सवार होकर दौड़ो और मार्ग में किसी यत्न से कबूतर को मारडालो उसी के मारने से सब बात है यही उपाय हमारे निकट उचित है मुक़बिल उसी समय सवार होकर निकला बुज़ुरुच्चमेहर ने रमल से प्रश्न उठाया तो मालूम हुआ कि यह कार्य केवल अमरूही से पूर्ण होगा और बिना उसके कुछ न होगा तब बुज़ुरुच्च-मेहर बड़े संदेह में होकर बाहर खड़ा था उसके बड़े पुत्र ने कहा कि आप किस संदेह में हैं तब बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि तू कुरिया पहिनकर मुझको बतला कि किस संदेह में हूं तब उसने बतलाया कि आप किसी मनुष्य के आने के संदेह में हैं वह शाम तक आपके समीप अवश्य पहुंचेगा तब ख़ुद उसने शकल कुरिया की मिलाकर देखी और अति प्रसन्न होकर नौकर से कहा कि देख कौन मनुष्य दरवाज़े पर खड़ा है और उसकी सूरत शकल किस प्रकार की है उसने आकर कहा कि एक मनुष्य रंगीन पोशाक पहिने और सफ़ेद दाढ़ी का खड़ा है और यह कहता है कि ख़्वाजे को मेरा सलाम कहो और उसको यहां भेजदो यह सुनकर नंगे पैर दौड़कर अमरू को घरमें लाया और सब बृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि जो तूने कबूतर को मार्ग में न मारा तो अच्छा नहीं हमज़ा कल मारा जायगा यह सुनकर अमरू रोनेलगा और कहा कि ऐ ख़्वाजे! मैं किस प्रकार से सहस्त्रकोस एक दिन में जासक्राहूं? मेरे न कबूतर के समान बाल व पर हैं कि उड़कर चलाजाऊं तब बुज़ुरुच्चमेहर ने कहा कि ऐ अमरू! मैंने तेरी कुण्डली में देखा कि तीनबार तू

अपनी अवस्था में ऐसा दौड़ेगा कि न कोई दौड़ा है न दौड़ सकेगा प्रथम तो इस कबूतर के साथ सहस्रकोस एकदिन में जायगा दूसरे जब अमीर के शत्रु लोग चोब अक़ाबीन पर खींचेंगे तो ग्यारह सहस्रकोस बारह दिन में जाकर मुसल्मान सरदारों को जमा करेगा तीसरे हमज़ा के पुत्र के लिये सिकन्दर के बन में सात सहस्र कोस सातदिन में जायगा और किसी समय मार्ग में न थकेगा अमरू ने कहा कि ऐ ख़्वाजे! बड़े रञ्ज की बात सुनाई कि मुझे अवस्थाभर दौड़ते ही व्यतीत होगा ख़्वाजे ने कहा कि प्रसन्न होकि इस दौड़ धूप में इतनी द्रव्य प्राप्त होगी जो किसी बादशाह ने भी न देखी होगी इसके पश्चात् बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि अब देरी न कर मुक़बिल को भी मैंने सांड़िनीपर सवार कराकर भेजा है मार्ग में तुमको वह मिलेगा और निश्चय है कि अतिशीघ्र तुम उसके समीप पहुँचोगे अमरू ने बुज़ुरुच मेहर से बिदा होकर हिन्द और चीन के अफ़्सरों के समीप आकर कहा कि तुम लोगों को यहां वास करना उचित नहीं है तुमलोग जाकर वेशेफ़ैज में छावनी करो और ईश्वर की कृपा के आश्रित होकर देखो क्या २ रचना दिखाई पड़ती है यह कहकर कबूतर के मारने के लिये चला॥

जाना अमरू का मिश्र को कबूतर के पीछे और मारना उसका मिश्र के दरवाज़ेपर और छुड़ाना अमीर का कारागार से॥

लेखनीरूपी पक्षिणी काग़ज़रूपी विस्तृत मैदान में यों गूंजरही है कि जब सुबह का डंका बजा उसी समय अमरू उठकर बादशाह के कबूतरख़ाने के समीप जाकर खड़ाहुआ और जिस समय कि बख़्तक ने पत्र कबूतर के गले में बांधकर मिश्र के तरफ़ ठाटपर से उड़ाया उसी समय अमरू ने बख़्तक से कहा कि जो हमज़ा या उसके साथियों का एकबाल भी बिखरेगा तो तू तो क्या नौशेरवांतक मारेजायँगे और जो इसमें शरीक हैं उनके बालबच्चे भी न बचेंगे इस समय तो तेरे कबूतरके शिकार को जाताहूं देख तुझको क्या ख़राब दिन दिखलाता हूं और जिस समय बख़्तक ने कबूतर को मिश्र की तरफ़ उड़ाया उसी समय अमरू भी कबूतरके पीछे परमेश्वर २ कहता हुआ उड़ाचलाजाता था और जहां कहीं नदी नाले आदिक पड़ते थे कूदकर पार होजाता था और किसी रोधक वस्तु को कुछ न समझता था बहरी के सदृश कबूतर के पीछे चलाजाता था अब थोड़ा बृत्तान्त कृतज्ञ मुक़बिल का इस प्रकार वर्णन करताहूं कि जब वह साँड़िनीपर सवार होकर चला तो सत्रह कोसतक निश्चिन्त चलागया परन्तु एक नहर का जल मोती से भी अतिस्वच्छ देखकर साँड़िनी से उतरकर साँड़िनी को बनमें चरने के लिये छोड़दिया और आप कमर में जो रोटी बांधी थी उसको खोलकर खानेलगा संयोगसे जो उस बन में घियाबिषकी जड़ी बहुत जमीहुई थी ऊंटनी ने जो खाई शीघ्रही मरगई मुक़बिल अति बिकल होकर पैदर चला और कई कोसतक गया पांव कि उसके शिथिल होगये लाचार होकर एक बृक्ष के नीचे बैठकर रोते २ बिकल होगया इतने में अमरू जो कबूतर का

पीछा किये चलाजाता था मार्ग में मरीहुई साँड़िनी देखकर समझा कि यह वही साँड़िनी है जिसपर चढ़कर मुक़बिल आया था ज्योंहीं थोड़ीदूर आगे गया देखा कि पैर सूजने से मुक़बिल एक वृक्ष के नीचे बिकल पड़ा है अति शीघ्रता के साथ जल लेकर उसके मुखमें डाला तब मुक़बिल के नेत्र खुलगये और रोनेलगा अमरू ने कहा कि यह रोने का समय नहीं है शीघ्र मेरे कन्धेपर सवार हो किसीप्रकार इस कबूतर का शिकार कर मुक़बिल तीर को कमानपर चढ़ाकर अमरू के कन्धेपर सवारहुआ तब अमरू अति शीघ्रता के साथ उड़ताहुआ वहांसे चला कभी तो कबूतर मुझसे आगे और कभी मैं कबूतर से आगे होजाताथा अभीतक सूर्य न अस्तहुए थे कि कबूतर मिश्र के क़िले की दीवार के समीप पहुँचकर चाहताथा कि भीतर जाऊं कि मुक़बिल ने अपने सफल बाण से मारकर गिरादिया अमरू ने उसके गलेसे पत्र खोल कर पढ़ा और अमीर के दिखलाने के वास्ते पत्र को अपने जेब में रखलिया और कबूतर को मारकर उसका मांस मुक़बिल के खाने को दिया और मुक़बिल समेत जहां मुसल्मानोंकी सेना पड़ी थी जाकर पहुँचा तब सुल्तानबख़्त मग़रबी अमरू को देखकर रोने लगा अमरू ने उसके आंसू अपने रूमाल से पोंछकर कहा कि अब कुछ सन्देहकी बात नहीं है परमेश्वर चाहता है तो शीघ्र अमीर को छुड़ाकर लाता हूं और तुम सबको दिखाताहूं सो ईश्वर ने चाहा तो मैं अमीर को इस दुःख से छुड़ाकर मिश्र के मक्कार बादशाह को कैसे २ तमाशे दिखलाता हूं जोकि अमरू मार्ग का थका था रातभर बेहोश होकर पड़ारहा जिससमय अरुणोदय हुआ और सूर्य प्रकट हुए उसी समय अरबी का वेषधर मिश्र में जाकर देरतक फिरा लेकिन अमीर की कुछ चर्चा कहीं न सुनी सन्ध्यासमय देखाकि एक भिश्ती कन्धेपर मशक रक्खे प्यासों को पानी पिलारहा है मालूम हुआ कि यह मनुष्य बुद्धिमान् और वृद्ध है अमरू ने उससे जल मांगा उसने कटोराभर जल अमरू के पीनेको दिया अमरू ने कुछ जल पिया और कुछ फेंककर कटोरे को अपने झोले में रखकर भागा भिश्ती भी उसके पीछे यह कहताहुआ दौड़ा कि कहां का उठाईगीरहै जो मेरा कटोरा लिये भगाजाता है चौकसे निकल अमरू खड़ा होगया तब भिश्ती ने अमरू के हाथ से कटोरा छीन लिया और चौक की तरफ़ चला तब अमरू उसके दोनों हाथ पकड़ कर एकान्त में लेजाकर पूछने लगा कि ऐ भिश्ती ! मिश्रके बादशाह ने अमीरहमज़ा को कहां क़ैद कररक्खा है वह बेचारा किस आफ़त में फँसा है? तब उस भिश्ती ने अमरू के हाथ पकड़कर चिल्लाना आरम्भ किया कि दौड़ो २ मैंने अमरू को पकड़ाहै चारोंतरफ़ से लोग उसके पकड़ने को दौड़े अमरू ने अपने चित्त में बड़ा आश्चर्य किया कि इस भिश्ती ने मुझको कैसे पहिंचाना अति शीघ्रता से उसके हाथों को अपने दांतों से काटकर छुड़ाया और बलसे कूदकर एक ऊंचे स्थानपर चढ़कर कोठों २ कूदकर दूर निकल गया जब यह ख़बर सरहंग मिश्रतक पहुँची तब वह अपने शागिर्दों समेत चारोंतरफ़ ढूँढ़ने लगा जब पता न मिला तो अपने

शागिर्दोंको आज्ञा दी कि जो कोई नया मनुष्य मिले उसीको पकड़लाओ वही अमरू नामवर है आख़िर को अमरू ने चलते फिरते एक तरफ़ देखा कि एक तकिया लगी है उसपर एक अन्धा फ़क़ीर बैठा है अमरू एक खोटा पैसा देकर बैठगया वह आशीर्बाद देनेलगा तब अमरू जाकर उससे हमज़ा का हाल पूछनेलगा वह अमरू का दामन पकड़कर सरहंगमिश्र की दोहाई देनेलगा तब अमरू ने अपने चित्त में सन्देह करके बिचार किया कि इस अन्धे ने किसतरह से मुझे पहिंचाना वहां भी मनुष्य हरतरफ़ से जमा होगये और अमरू के पकड़ने की यत्न करनेलगे अमरू वहां से अपने दामन को काटकर भागगया इसी समय में जब रात्रि हुई और पहरा फिरने लगा तब अमरू मीरआशक़ के डरसे रात्रि भर एक कन्दरा में रहकर न कुछ भोजन किया न जल पिया सबेरा होतेही एक सौदागर का भेष धारण करके इधर उधर फिरते २ कोतवाली के समीप जा निकला उस समय सरहंगमिश्र पोशाक पहिने कुरसी पर बैठा हुआ अपने साथियों के साथ तमाशा देखरहा था अमरू भी मार्ग में खड़ा होकर तमाशा देखने लगा सरहंगमिश्र और अमरू की दृष्टि एक होगई समीप आकर पूछनेलगा कि आप कौन हैं और कहां से आते हैं आपका नाम क्या है और इस नगर में किस प्रकार से आये हैं? अमरू ने उत्तर दिया कि मैं सौदागरहूं चीन में मेरा स्थान है आपके नगर का नाम सुनकर आयाहूं नगर के दरवाज़ेपर उतराहूं नाम मेरा (ख़्वाजेतग़ुफ़ुस बिनमायूस बिन सरबोस बिनताक़, बिनतमतराक़ बाज़रगान है) सरहंग ने कहा कि मैंने आज के सिवाय और कभी ऐसा नाम नहीं सुनाहै अपने सिपाहियों में से दोको बुलाकर आज्ञा दी कि इसके साथ जाकर देखआओ कि कौन २ वस्तु इनकी दुकान पर है ख़्वाजे ने कहा कि यह मसल सही है सही दूर की ढोल सोहावनी होती है मैं अपने नगर में सुनता था कि मिश्र एक उत्तम स्थान है और वहां हरप्रकार के मनुष्यों का गुज़र है और माल व असबाब की रक्षा होती है परन्तु बड़े सन्देह की बात है कि राजा के मनुष्य सौदागरों की तलाशी लिया करते हैं और सौदागरों और यात्रियों को वे प्रतिष्ठित जानते हैं सरहंगमिश्रने कहा यह सत्य है इस नगर में हरप्रकार से रक्षा जीव वस्तु की होती है और मैं जो आपके साथ मनुष्य भेजताहूं तो इसकारण करके कि रात्रि को पहरेवाला आप के स्थान पर वास्ते रक्षा के भेजूंगा अमरू ने कहा कि जो यह है तो अति उत्तम है यह कहकर दोनोंको साथ लेकर चला॥

मित्रता करना अमरू का सरहंगमिश्र के शागिर्दों के साथ और बाज़ी लेजाना उनदोनों मक्कारों से॥

अख़बारनवीस और बहुतसे बुद्धिमान् लोग यों लिखते हैं कि जब अमरू उन दोनों मनुष्यों को साथ लेकर दोपहरतक इधर उधर स्थानों पर फिरा किया तब उनलोगों ने कहा कि यह बतलाइये कि आप किस स्थान पर स्थित हैं और इस प्रकार से आप क्यों सन्देह करतेहैं? अमरू ने कहा कि नाम उस दरवाज़े का अमनहै और मैं उसकी रास्ता भूलगया हूं ईश्वर जाने वह रास्ता कहां है दोनों मनुष्य बोले

कि आपने प्रथम ही क्यों न कहा कि आपको पहुँचाकर हमभी अपने स्थान पर ठंढे २ चलेजाते अब चलिये आपको उस स्थानपर पहुँचादेताहूं तब अमरू ने कहा कि अब दोपहर हुआ है अभीतक न कुछ भोजन कियाहै न जल पियाहै मारे क्षुधा के मरे जाते हैं उन लोगोंने कहा कि यहां से बहुत समीप बाज़ार है वहां चलकर भोजन लेकर खाइये और स्थान पर चलकर हमलोगों को विदा कीजिये अमरू ने कहा कि तीन मनुष्यों का भोजन कितने में होगा ? उन लोगों ने कहा कि एक रुपया से पूर्ण होजायगा तब अमरू ने कहा कि एक रुपये से क्या होगा पांच रुपये का अति उत्तम भोजन नानबाई की दूकान पर से लाओ तब उन मनुष्यों ने चित्तमें विचारा कि यह कोई बड़ा धनवान् मनुष्य है तब अमरू ने एक नानबाई की दूकान पर जाकर पांच रुपये का अति उत्तम भोजन उन लोगोंसे मँगवाया और उनके साथ बैठकर भोजन करनेलगा जब पूर्ण होगया तो उठकर टहलने लगा और कहा कि मैंतो सन्तुष्ट होगया तुमलोग अच्छे प्रकार से भोजन सब खालो और उनलोगों से कहनेलगा कि हमारे पास इससे उत्तम २ भोजन हैं चलकर तुमलोगों को झोलियां भर २ देवेंगे और हरप्रकार से तुमलोगों को प्रसन्न करेंगे तब वे दोनों मनुष्य अतिप्रसन्न हुए और अपने मनमें कहनेलगे कि गुरूने आज अच्छे धर्मात्मा के साथ भेजाहै और प्रातःकाल किसी अच्छे का मुख देखाहै अमरू उनके नेत्रों की तरफ़ देख २ कर टहलने लगा ज्योंही उनलोगों ने पलक बदली त्योंही कोठे परसे नीचे उतरकर चलदिया वह दोनों मनुष्य जब भोजनकरके नीचे आये लोगों से पूछने लगे कि वह मनुष्य जिसने हमसे भोजन मँगवाया है कहां गया तब उस नानबाई ने कहा कि क्या भोजन करके दाम देना कठिन मालूम होताहै मैं उसको क्या जानूं जिसके हाथ में खाना दिया है उसीसे रुपये लूंगा दूकानदार ने कहा कि मैं बे पांच रुपये दिये तुमलोगों को यहां से आगे न जानेदूंगा और जो अधिक बातें करोगे तो इतना मारूंगा कि जो खाया है वह सब भूल जाओगे वे दोनों बोले कि नानबाई होकर कैसी २ बातें कहताहै क्या मारखायेगा तब वह नानबाई बोला कि कबाब खा-चुकेहो केवल चाशनी बाक़ी है भोजन करते समय तो न बोले अब दाम देते समय दुःख मालूम होता है और इधर उधर टहलाते हो अब अच्छी बात इसी में है कि पांच रुपये हमारे देदो नहीं थोड़ी दममें मार २ के अचार निकालदूंगा और अम-चुर की ऐसी सूरत लेकर रहजाओगे हलुवा निकल आवेगा मामा की चपातियां नहीं हैं कि जब भूख लगी उठाकर घर में लेजाकर खालिया जब दूकानदार ने ऐसी ऐसी बातें कहीं तब वे दोनों अतिक्रोधवान् होकर उससे लपट गये और मारने लगे तब नानबाई ने दो चार मनुष्यों को लेकर अच्छी प्रकार से उनका हलुवा बनाया तब तो धीरा होकर प्रार्थना करने लगे कि जो कोई मेरा वृत्तान्त सर-हंगमिश्र तक पहुँचा देवे तो मेरे जीव की रक्षा हो किसी दयावान् ने सरहंगमिश्र से जाकर कहा कि तुम्हारे दो सिपाही और एक नानबाई से दाल रोटी बँटरही है

जो अति शीघ्रही न जाओगे तो मारे जूतों के उनका दम निकाल देगा सरहंग मिश्र ने उस स्थान पर आकर सब वृत्तान्त सुना और पांच रुपये नानबाई को देकर उन दोनों मनुष्यों को नौकरी से छुड़ादिया अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उस दिन भी फिर फिराकर रात्रि को एक भुजवे के भार में जाकर सोरहा और सुबह को साधु का बेष धारण करके दूकान २ शैर पढ़कर भीख मांगने लगा संयोग से सरहंगमिश्र अपने सिपाहियों के साथ उसी मार्ग से आ निकला अमरू को देख-कर पहिचाना कि अवश्य करकें यह वही यार अमरू है उसके समीप जाकर एक अशरफ़ी देकर उसके हाथ को पकड़कर लोगों को बुलाया कि दौड़ो यह अमरू है और जो अमरू चर व थैली यारी का अपने हाथों में पहिने रहता था जब सरहंग मिश्र ने अपने यारों को पुकारा तब वह हँसकर हाथ अपना खींचकर सरहंगमिश्र का ताज लेकर एक कोठे पर कूदगया और थोड़े ही समय में छतों २ जाकर हवा होगया तब सरहंगमिश्र पागलों की तरह अतिलज्जित होकर शिर खोलेहुए कोत-वाली पर आया और बिचारने लगा कि प्रतिष्ठा की प्रतिष्ठा गई व बादशाह की दृष्टि से अलग उठा और संसार में बदनाम ऊपर से हुआ लोगों से कहा कि जो कोई अमरू को लावेगा उसको मैं अतिप्रसन्न करके बादशाह से अपनी नायबियत की खिलअत दिलवाकर तरक्की का आश्रित कराऊंगा तब सब सिपाही अपनी २ पोशाक पहिनकर सब जगहों पर जाकर ढूंढ़ने लगे परन्तु अमरू कब मिलता था दिन के समय तो एक नाले में पड़ारहा रात्रि को दो घड़ी रात्रि बीतने पर एक साधु का बेष धारण करके एक नानबाई की दूकान पर गया उसने पूछा कि क्यों शाहसाहब कहां से आनाहुआ और आपका नाम क्या है ? अमरू बोला कि बाबा फ़क़ीरों के नाम से क्या काम है मैं तो तेरा मेहमान हूं इस नगर में फिररहा हूं मेहमान का नाम सुनतेही नानबाई दूकान पर से उतरा और उसको अपने साथ ले जाकर अतिप्रसन्नता के साथ क़बाब और शराब खिलाने लगा थोड़े समय के व्यतीत होनेपर फिर पूछा कि जो नाम व निशान बताने में आपको कुछ दुःख न हो तो बताइये क्योंकि दूसरे नगर के मनुष्य से नाम व निशान बताना उचित है तब अमरू ने कहा कि फ़क़ीर का पुत्रहूं और मदायन नगर की तरफ़ से आता हूं नान-बाई ने कहा कि तूने कभी यार अमरू को भी देखा है वह जीताहै या मरगया अमरू बोला कि चलते समय कई दिन उसके स्थानपर बासकर आयाहूं और कई दिनतक मेहमानी खाआयाहूं उस नानबाई ने कहा कि वह बड़ा नमकहराम है जो मैं उसको देखता तो अवश्य दण्ड देता अमरू बोला कि उसने तेरे साथ क्या बदी की है ? जो तेरा मन उससे बिगड़ा है नानबाई बोला कि मेरे साथ तो क्या करसक्ताहै परन्तु मेरा मन उससे यह बिगड़ाहै कि हमज़ा की सहायता से उसने धन प्रतिष्ठा आदि प्राप्तकिया है परन्तु उसकी खबर नहीं लेताहै कि आज इतने दिनों से वह बादशाह मिश्र की बन्दिमें है अमरू बोला कि जो अमरू आता तो क्या करता ?

यहां जिस नवीन मनुष्य को पाते हैं अमरू जानकर पकड़ लेजाते हैं वह नानबाई बोला कि जो वह हमारे पासतक आता तो उसको हम हमज़ातक पहुँचा देते तब अमरू बोला कि मैं ही अमरू हूं मुझे हमज़ा के समीप लेचल नानबाई बोला कि फ़क़ीर तुझे दोही गिलास में नशा होगया कि सिड़ी होकर बकनेलगा भला कहां तू और कहां अमरू और कहां मदायन और कहीं उसका आना? यदि मैंने उसकी सूरत नहीं देखी परन्तु लोगों से उसका वृत्तान्त सुना है तब अमरू ने कहा कि अब मैं वृद्ध होगयाहूं इस कारण से सब प्रकार के वस्त्र आदि का पहिरना छोड़ दिया है और नानबाई की दूकान २ से रोटी मांग २ कर भोजन करता हूं फिर अपने कपड़े आदि पहनकरके बोला कि देखो अब मैं अमरूहूं या नहीं नानबाई देख कर बोला कि हमज़ा को बादशाह मिश्र ने यूसुफ़ी नाम कारागार में रक्खा है चलो मैं तुमको दिखलादूं कि वह बेचारा कैसे दुःख में है यह कहकर नानबाई ने भी अपने वस्त्र पहन अमरू को साथ लेकर छिपता २ उसकी तरफ़ चला थोड़ेही दूर जाके देखा कि एक मनुष्य दूकानपर बैठा है नानबाई ने कहा कि तू कौनहै? जब वह न बोला तो तलवार लेकर दौड़ा पर उसने खड्ग छीनकर उस नानबाई को उठाकर देमारा तब अमरू भी खंजर निकाल कर उसपर दौड़ा जब समीप पहुँचा देखा कि मुक़बिल है तो गले से मिलाकर पूछने लगा कि तू यहां किस प्रकार से आया है? उसने उत्तर दिया कि मैंभी कई दिनों से इसी नगरमें हमज़ा के लिये फिर रहाहूं परन्तु पता नहीं मिलता है उस नानबाई ने जो मिलते हुए देखा तो कहा कि इसने तो हमको देमारा है और तुम मिलतेहो तब अमरू ने कहा कि यह मुक़बिल वफ़ादार है जो कि हमज़ा का बड़ा मित्र व शुभचिन्तक है और उसीकी तलाश में फिररहा है तब वह भी मिला और तीनों मनुष्य उस क़िले की तरफ़ चले और धीरा २ जाकर उसके समीप पहुँचे अमरूने एक कमन्द फेंकी परन्तु उसका सिरा मुखपर आ गिरा और दूसरी बार फिर जो फेंकी वह भी न लगी तब उस नानबाई ने फेंकी पर वह भी न लगी अन्त को मुक़बिल ने फेंकी तो उसकी कमन्द दीवार पर चपक गई और तीनों मनुष्य उस पर चढ़कर नीचे उतरे तो देखा कि एक मनुष्य पोशाक पहिने खड़ा है और किसी का आसरा देखरहा है जब अमरू उसके समीप गया तो उसने अमरू की तरफ़ हाथ बढ़ाया तब अमरू सन्देह में होकर कहने लगा कि जो यह मनुष्य लोगों को बुलावेगा तो मैं तो किसी यत्न से निकल जाऊंगा परन्तु ये दोनों मनुष्य फँस जायँगे इतने में उसने अमरू का हाथ पकड़कर चूमा और कहा कि मैं बादशाह मिश्र की बेटी हूं ज़हरमिश्री मेरा नाम है और इबराहीम अलेहुस्सलाम ने मुझे मुसल्मान करके मुक़बिल के साथ ब्याह करने की आज्ञा दी है और कहा है कि फ़लाने बुर्ज की ओर से अमरू और मुक़बिल फ़लाने समय आवेंगे तू उसी स्थानपर खड़ीरहना जब वे आवें तो अतिप्रतिष्ठा के साथ सन्मुख होकर उनकी मेहमानी करना इस कारण सायङ्काल

से खड़ीहुई तुम लोगों का आसरा देखरही थी यह कहकर पांचसहस्र का हार गले से उतारकर अमरू को दिया अमरू ने उसका मुख चूमा और उसको अपने पास रखलिया और मुक़ाबिल से कहा कि लीजिये शकुन अच्छा हुआ ईश्वर कार्य सिद्ध करेगा ज़हरमिश्री ने पांचसहस्र अशरफ़ी औरभी अमरू को देनेका इक़रार किया तब ज़हरमिश्री उन तीनों मनुष्यों को साथ लेकर क़िलेकी दीवार से नीचे उतरी और कारागार यूसुफ़ी जिसमें अमीर अपने साथियों समेत क़ैद था गई॥

छूटना अमीर का कारागार यूसुफ़ी से और बचना सरहङ्गमिश्र से॥

क़लम नवीन २ आशय अन्धकार अप्रकट कूपसे निकालकर अंगुलियों की सहायता से अपूर्व वृत्तान्त को साफ़ काग़ज़पर यों लिखती है कि जब वे चारों मनुष्य कारागार के समीप पहुँचे तो सामने से सरहङ्गमिश्र प्रकट होकर सलामवालेकम् कहकर कहा कि ऐ अमरू! इस समय मैं सोरहाथा कि इबराहीम अलेहुस्सलाम ने नरककुण्ड और बैकुण्ठ देखाकर मुसल्मान करके आज्ञा दी है कि अतिशीघ्रही जाकर उन चारों मनुष्यों के साथ होकर जो हमज़ा के छोड़ाने के लिये आये हैं शीघ्रही यत्न करके हमज़ा आदि को कारागार से छुड़ादे और उस कार्य को पूर्ण करके प्रतिष्ठा प्राप्तकर इतनेही में मेरी आंख निद्रा से खुलगई और उठकर दौड़ा आयाहूं अब तुम थोड़े समय ठहरो मैं यत्न करलूं तब तुमलोगों को ले चलूं तब अमरू ने अतिप्रसन्न होकर सरहङ्गमिश्र को गले से मिलाय और उन चारों मनुष्यों समेत एक स्थानपर छिपगया तब सरहङ्गमिश्र पहरेवाले को बेहोश करके अमरू को साथियों समेत उस कारागार पर लेगया तब अमरू ने उन पहरेवालों का शिर काट कर कुयें का मुख खोलकर उसमें कमन्द डालकर उतरा वहां जाकर देखा कि वे बिचारे बैठेहुये परमेश्वर का ध्यान कररहे हैं और अपनी मौत की घड़ी गिनरहे हैं जब अमरू की आहट पाई जाना कि बादशाह ने मारने के लिये जल्लाद को भेजा है अब जीने से हाथ धोवें इतने में अमरू ने जाकर पूछा कि ऐ मुसल्मानो! तुम में से आदी किस का नाम है? आदी ने डर से कहा ऐ! यह मुझे मारने आया है अमीर की तरफ़ देखकर कहा वह बैठा है तो सब क़ैदी आदी की बातपर हँसने लगे तब अमरू ने अपनी आवाज़ बदलकर कहा कि बादशाह ने तुझे छोड़ने की आज्ञा दी है तब आदी घबराकर बोला कि साहब आदी मेरा ही नाम है मैंने हँसी की थी अमरू बोला कि सत्य है मुझे तेराही पता दिया है कि वह लम्बाहै और हग २ कर क़ैदियों को दुःख देता है और कुयें को भी नष्ट करता है सो उसे निकालकर मारो और उसकी लाश को दूर फेंकदो यह बात सुनकर आदी का दम निकलने लगा और अतिलज्जित हुआ परन्तु अमीर ने निश्चय करके जाना कि यह अमरू है और उन्हीं की ऐसी २ बातें होरही हैं फिर अमीर ने ईश्वर का ध्यान किया तो ज़ंजीरें डोरेके समान टूटगईं और अमरू के डराने के लिये ज़ंजीरें लेकर दौड़े अमरू ने देखा कि जो ज़ंजीर लगेगी तो मरजाऊंगा बोल उठा कि मैं अमरू

तेरा शुभचिन्तक और पुराना सेवक हूं अमीर ने अमरू को गले से लगाकर सब साथियों को क़ैद से छुड़ाकर कुयें से बाहर निकाला तब अमरू ने अपना सब वृत्तान्त जो उस समयतक हुआ था कह सुनाया और ईश्वर की रचना पर बड़ा आश्चर्य करके ऊपर जो दृष्टि की तो देखा कि प्रातःकाल के तारे अमीर की भाग्य के समान चमक रहे हैं और प्रातःकाल होने के निकट है तब अमीर अमरू आदिके सहित बादशाहमिश्र की तरफ़ चले और जाकर तलाश किया परन्तु उसका कुछ पता न मिला अमीरके साथी उस के बाग़ में जाकर फल फूल तोड़कर खानेलगे आदीने जो अधिक मेवा खाया तो उसको दस्त की आवश्यकता हुई तो बादशाही मकान में जाकर दिशा फिरनेलगा संयोग से उस स्थान पर बादशाह छिपा हुआ बैठा था शिरसे पैरतक बिष्ठामें डूबगया जाना कि यहां भी जीव नहीं बचता तब आदी के फ़ोते पकड़कर लटकरहा आदी के जो दर्द हुआ तो वे पानी लिये वहां से उठकर भागा बादशाहमिश्र भी उस के साथ लटकाहुआ चलाआया आदीने चिल्लाकर कहा कि इस नगर की वायु बड़े आश्चर्य की है कि मनुष्य के पेट से मनुष्य गिरता है तब शाहबनी आदि दौड़े देखें तो शाहमिश्र आदी के बैज़ेको पकड़े हुए लटका है हँसते २ लोट २ कर गिरपड़े और बादशाहमिश्र को नहवाकर अमीर के समीप लेगये अमीरने कहा कि ऐ बादशाह ! जैसा तू ने किया वैसापाया अब मुसल्मान होकर कल्मा पढ़ने में देरी न कर और तेरे देशसे मुझे कुछ प्रयोजन नहींहै तू राज्यकर परन्तु मुसल्मान होना अवश्य पड़ेगा बादशाहमिश्र जो कि अपने सामने दूसरे को न डरता था कुछ और तौर बकने लगा और संयोग से अमीर के समीप खड़ा था उसने एक तलवार जो लगाई तो शिर धड़से अलग होगया तब अमीर ने ज़हरमिश्री को राजगद्दीपर बैठाकर उसका कारोबारी सरहङ्गमिश्र को बनाकर ख़िलअतदी और मुक़बिल को ज़हरमिश्री के साथ ब्याह करने की आज्ञादी मुक़बिल ने हाथ जोड़कर बिनयकी कि जबतक आप मलकामेहरनिगार के साथ ब्याह न करेंगे तबतक सेवकभी न करेगा इतने में दूतों ने ख़बरदी कि नगर में सबलोग मारेगये हैं और जो बचे हैं वे जंगी २ की दोहाई कररहे हैं अमीर ने उन लोगों को बसने की आज्ञा दी और सबका ख़ून माफ़ करके आप मित्रों के साथ बैठकर नाच व रङ्ग करानेलगे और मुबारकबादी के डंके बजने लगे और शब्द उसके आसमानतक पहुँचे पश्चात् इसके अमरूने ख़ुसरोहिन्द और बहराम के क़ैदहोनेका सब वृत्तान्त कहकर वह पत्र दिया अमीर उस पत्रको पढ़कर रोनेलगा और अफ़सरोंसे कहनेलगा कि देखो यारो ! मैंने नौशेरवांके लिये बड़े२ दुःख सहे हैं और जो कुछ उसने आज्ञा दी उसे पूर्ण किया परन्तु वह सदैव मेरे साथ शत्रुता करता चला आताहै अब मैं भी जो ईश्वर की कृपा होगी तो मदायन में पहुँचकर नगर को जलाकर उसकी बहू बेटियों को सईसों को दूंगा जो ऐसा न किया तो हमज़ा नाम मेरा न रखना और तुम सब गवाह रहना कि ईश्वर के समीप गुनहगार और

संसारमें बदनाम न हूं जितने सरदारलोग बैठेथे सब एकमुख होकर कहनेलगे कि सत्यहै कि नेकी का फल बदी मिलताहै तब अमीर ने वहांसे सवार होकर अपनी सेना में आकर कूच की आज्ञा दी तैयारी होनेलगी ज़हरमिश्रीने अमीर से जाकर प्रार्थना की कि दासीको मेहरनिगार के देखने की बड़ी इच्छा है और इसदेशमें गद्दीपर बैठने से उसकी टहलुई होना उत्तम जानतीहूं और उनकी टहलुई से मेरी प्रतिष्ठा है॥

दोहा। मेरे मन अभिलाष अस, करि अञ्जन निज नयन। तव पद रेणु हि सुभगप्रद, यश सुनियत है चैन॥

जो आज्ञा हो तो आपके साथ चलूं और जबतक ब्याह मलकासाहबा का आपके साथ न हो तबतक मलकासाहबा की सेवकाई में रहूं अमीर ने उसकी बिनय मान कर साथ चलने की आज्ञा दी और नगर का नायब कारवां को बनाकर ज़हरमिश्री को साथ लेकर मदायन की तरफ़ कूचकिया अब नौशेरवां का बृत्तान्त सुनिये कि एक दिन सभा में बैठाथा कि एकबारगी बोलउठा कि लन्धौर और बहराम को कारागार से निकालकर हमारे सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारो बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि अभी इनका मारना उचित नहीं है और आपको किसी का डर भी नहीं है कि इनलोगों को मार डालिये परन्तु मैंने रमल में बिचारा तो यह मालूम हुआ कि हमज़ा अभी ज़िन्दा है और आपपर आजकल सितारे सख़्तबख़्तका घर है और मेरे बिचार में तो जो आप नगर छोड़कर थोड़े काल के लिये बाहर चलेजावें तो अतिउत्तम होगा और जिससमय हमज़ा के मारने की ख़बर आवे उस समय इन दोनों को भी अपने सम्मुख धारपर चढ़ाकर मारियेगा तब नौशेरवां ने बख़्तक से पूछा कि तेरी क्या सलाह है? उसने भी कहा कि जो ख़्वाजे कहते हैं वही उत्तम है क्योंकि कबूतर छोड़ते समय अमरू कहआयाथा इस कारण करके मदायन को छोड़ना अतिउत्तम है और मिश्र के तरफ़ यात्रा कीजिये और रसद आदिके लिये उस तरफ़ को आज्ञा दीजिये और जो हमज़ा मारा न गया होगा तो आप उसको अपने सम्मुख मरवाइयेगा और वहांसे लौटकर लन्धौर और मुक़बिल को धारपर खिंचवाइयेगा नौशेरवां को यह बात बहुत पसन्द आई और हारवत और मारवत को चालीस सहस्र सवार के साथ नगर और क़ैदियों की रक्षा के वास्ते छोड़कर आप सेनासमेत मिश्रकी तरफ़ कूचकिया अब थोड़ा बृत्तान्त अमीर का और सुनिये कि क्रोधके कारण दो मंज़िल तीन मंज़िल कूचकरके अतिशीघ्रही मदायन में आकर पहुँचा और वह सेना जो पलेफेयज में छावनी किये पड़ीथी अमीर के आनेका हाल सुनकर सम्मुख हाज़िर हुई और सब बृत्तान्त वहांका कहकर प्रार्थना की कि नौशेरवां मारवत व हारवत को चालीस सहस्र सवार के साथ नगर और दोनों क़ैदियों की रक्षा के लिये स्थित करके आप नौशेरवां मिश्र की तरफ़ सेना सहित गया है और बख़्तक भी उसके साथ गया है अमीर ने चाहा कि मुझे तो अपने काम से काम है देखो थोड़ेही समय में नगर का क्या हाल करता हूं यह कहकर अमरू से कहा कि तुम जाकर हारवत और मारवत से कहो कि लन्धौर और बहराम को हमारे पास भेज देवें

बादशाह को हम जवाब दे लेवेंगे तुम पर किसी प्रकार से दण्ड न होने पावेगा उन दोनों ने उत्तर दिया कि हमज़ा कौन है ? जिसकी आज्ञा से शाही क़ैदियों को छोड़देवें अमरू ने आकर उसी प्रकार से अमीर से कहा तब अमीर ने आज्ञा दी कि युद्ध की तैयारी कीजावे जो खड़ी सवारी जाकर विजय न किया तो हमज़ा नाम न रखना यह कहकर सिकन्दरी डंकेपर चोब दिलवाया और उनको कहलाभेजा कि युद्ध का सामान करो हम आते हैं यह सुनकर नगर में बड़ा तह-लका पड़गया रात्रि तो अमीर ने दुःख व क्रोध में काटी प्रातःकाल होतेही अमीर ने क़िले बादशाही को जाकर चारों ओर से घेरलिया हारवत और मारवत ने जो देखा कि हमज़ा बड़े क्रोध से चढ़ाचला आता है और नगर को लूटपाट कर हमारा क़िला लेलेवेगा तो उन दोनों ने सलाह करके लन्धौर और बहराम को लाकर क़िले की दीवारपर बैठाकर पुकार दिया कि जो एक पैर भी आगे बढ़ागे तो हम इन दोनों का शिर काटकर खन्दक में फेंकदेवेंगे और मांस चील कव्वे खावेंगे पश्चात् जो होगा वह देखलेंगे अमीर ने विचार किया कि जो इन पापियों ने ऐसाही किया जैसा कहते हैं तो वृथा लन्धौर और बहराम की जान जायगी सेना को आज्ञा दी कि जबतक हम न कहें आगे कोई न बढ़ना अमीर ने अमरू से कहा कि मेरा पैर कभी पीछे नहीं हटा अब जो लन्धौर और बहराम के लिये लौटजायँ तो अतिलज्जा प्राप्त होगी ऐ ख़्वाजे! कोई ऐसी तदबीर कर कि लन्धौर और बहराम मारे न जावें और क़िला लूटजाय तो तुझे मैं लाख अशरफ़ी दूंगा ख़्वाजे ने कहा यह कितनी बड़ी बात है कि इन नीचोंने जो युक्ति विचारी है वह अतीव तुच्छ है खन्दक कूद कर हारवत व मारवत के निकट गये और कहा कि अमीर कहता है कि लन्धौर और बहराम को न मारो हम फिरे जाते हैं तुम्हारे नगर में किसीतरह का उत्पात न करेंगे और बहराम व खुसरो से चीनी हिन्दी बोली में कहा कि अमीर ने यह आज्ञा दी है कि तुम दोनों बड़े आलसी हो कि हाथ पर हाथ धरे बैठेहो आदी ने चाहयूसुफ़ी में अपने बन्दक़ैद से तार अनकबूत की तरह तोड़डाले और तुम ऐसे बलवान् होके तार ऐसी दो बेड़ियां और जंजीरें नहीं तोड़सक्के लन्धौर व बहराम को लज्जा आई और ईश्वर का नाम लेके जो बल किया तो सब बन्द रस्सी के समान टूटगये तब हारवत व मारवत लन्धौर व बहराम के मारने को तलवार खींच कर दौड़े उन्होंने खड्ग छीनकर ऐसे मूके लगाये कि वे मरगये और जितने मनुष्य उस क़िले की दीवार पर थे सबको मारडाला इसी समय अमरू भी कमन्द लगा कर उसके पास पहुँचा और बारह सहस्र हिन्दुस्तानी मनुष्य भी क़िले की दीवार पर चढ़गये और युद्ध होनेलगा अमरू ने क़िले का दरवाज़ा खोलदिया सब सेना घुसगई और बादशाही सेना को पराजय देकर सबके मारने की आज्ञा देकर लूट को माफ़ किया और आज्ञा दी कि जितने स्त्री पुरुष मिलें सबको पकड़कर क़ैद करो व सम्पूर्ण नगर को लूटो यह आज्ञा देकर अमीर व अमरू बादशाह के स्थान को

गये वहां मलकामेहरनिगार को ढूंढ़नेलगे जब उसका पता न लगा तो मेहरंगेज़ से पूछनेलगे तो उसने कहा कि बादशाहज़ादी मेहरनिगार को बादशाह अपने साथ लेगया है यह सुन अमीर ने उत्तर दिया कि इस बात को बुद्धि नहीं ग्रहण करती कि तुमको छोड़ मेहरनिगार को जङ्गल २ फिराये तब उसने कहा कि मुझे असत्य बोलने से क्या लाभ है सब स्थानमें ढूंढ़लीजिये यह सुन अमीर ने अमरू से कहा भाई! यह कार्य तुम्हारा है जो तुम उसको ढूंढ़लाओ तो बारह सहस्र अशरफ़ियां दूंगा तब अमरूने जाकर बादशाही स्थान व सम्पूर्ण बाटिकाओंमें ढूंढ़ा परन्तु उनक़ा के समान उसका कहीं पता न लगा अमरू अत्यन्त संदेह में खड़ा था कि संयोग वश बाटिका के मैदान में उसकी दृष्टिपड़ी तब अमरू ने चित्तमें विचारा कि ईश्वर करे मलकामेहरनिगार इसी कुयेंमें हो फिर उसके समीप जो गया तो देखा कि उस कुयें पर बड़ीभारी लोहे की शिला रक्खी है और चारोंतरफ़ से हवा जाने की सांस नहीं थी और वह शिला अमरू से न उठसकी तब उसने अमीर को बुलाकर कहा कि मलका मेहरनिगार इसी कुयेंमें है परन्तु यह शिला मुझसे नहीं उठसकती ईश्वर ने आपही को ऐसा बल दिया है तब अमीर उसको हटाकर कुयें में हलगया पहले तो कुयें में उतरते समय अँधियारे में कुछ दृष्टि न पड़ा परन्तु थोड़ेसमय के बाद एक दालान देखाईपड़ी उसकी तरफ़ जो गया तो देखा कि मलका शिर झुकाये बैठी है और रोरोकर आंसू नेत्रों से पोंछरही है जब मलका ने अमीर के पैरों की खटक से जो नेत्र उठाये तो अमीर को देखकर दौड़कर लपटगई और रोरोकर सब वृत्तान्त कहने लगी॥

चौपाई। मैं अस समझ करी नहिं प्रीती। प्रीति करी नहिं करो अनीती॥
प्रिय संगम महँ बीती वय यह। बिरह प्रवेश रहा न ज्ञान यह॥

हे हमज़ा! ईश्वर के लिये अब मुझे अपने साथ से जुदा न करना क्योंकि कामदेव के दुःख से रहा नहीं जाता॥

दोहा। प्रियबिरहानल दाह को, चिह्न जो भानु समान। ताके प्रकटन हेतुको, हृदय पूर्वदिश मान॥
प्रलयसमय के प्रातके, उदय करन जनु काज। प्रिय बिरहिनको फटतमो, सुभग गरेबां आज॥

अमीर ने अपने अँगरखेके परदेसे आंसू पोंछकर कहा कि हे मेरी प्यारी! अब तो हमको और तुमको ईश्वर ने मिलादिया है अब क्यों रोती हो अब चलो इस कमन्दपर चढ़कर कुयें से बाहर निकलो और इस अँधियारे से निकलकर उजेला देखो यह कहकर प्रथम तो मलका को बाहर निकाला तब और जो उस कुयें में थीं सब को बाहर निकालकर आप भी निकला और उसी समय सवार कराकर अपने स्थान पर लाया उससमय सब सरदारों ने भेंटआदि देकर आशीर्वाद दिया फिर मलका ने अमीर से बिनय की कि तुमको मुझसे काम था सो ईश्वर ने पूर्ण किया अब नगरबासियों को कारागार से छुड़ाकर जानेदो अमीरने आज्ञा दी कि सब क़ैदियों को छोड़कर लूटकामालफेरदो आतिशीमही उसकी आज्ञा के मुवाफ़िक़ किया गया अब थोड़ा सा वृत्तान्त आगे का सुनिये कि जिस समय अमीर ने नगर-

वासियों को बध करने की आज्ञा दी थी उस समय आदी अपने दरवाज़े पर खड़ा था कि इतने में एक बहुत स्वरूपवती स्त्री जवान दश बारह सहेलियों के साथ भागी चली जाती थी परन्तु अति कोमलता के कारण चल न सकतीथी थोड़ी २ दूर पर ठहरजाती थी आदी उसकी सुन्दरता और कोमलता पर लोभित होकर दौड़कर अपने स्थानपर पकड़कर लाया तो मालूम हुआ कि यह बख़्तक की बेटी है तो अति प्रसन्न होकर कहनेलगा कि अमीर ने बादशाह की बेटी पाई मैंने बख़्तक की बेटी पाई कि जिसका ब्याह अभी नहीं हुआ यह कहकर उसे अपने डेरे में लेगया और रात्रि को जब उसके साथ भोग करनेलगा तो वह क्लेशसे चिल्लाई आदी ने बिचारा कि जो इसका शब्द अमीरतक पहुँचेगा तो अतिलज्जा प्राप्त होगी यह बिचारकर उसके साथ भोग न किया परन्तु युवा स्त्री को देखकर काम से पीड़ित हुआ तो बाहर निकलकर सिकन्दरी चोब बजाने की आज्ञा दी और डेरे में आकर उस स्त्री के साथ भोग करनेलगा और उसकी कोमलता और आयु का कुछ बिचार न करके निर्मोहियोंके समान जो धरकर दबाया तो उसने पक्षी की तरह मुख खोलदिया और मरगई डङ्का सिकन्दरी का शब्द जो सेना के कानतक पहुँचा तो सब सेना और सवारों के रिसाले और खुसरोहिन्द व मुक़बिल और बहराम आदि जितने सरदार थे कमर बांध २ घोड़ोंपर सवार होकर आपहुँचे उस समय अमीर मलकामेहर-निगार को लिये मसनदपर बैठाथा और अमरू शराब पिलारहा था और कुछ गाता था कि इतने में जो सिकन्दरी डङ्के का शब्द उसके कानों में पड़ा तो घबराकर उठा और अमरू को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखो कि क्यों डङ्का सिकन्दरी बजा है और आपभी मसनद से उठकर पोशाक पहिनकर बाहर निकला और खड़ा होकर अमरू को देखनेलगा अमरू जो गया तो देखा कि खुसरोहिन्द मुक़बिल बहराम आदि साथ सब सरदार और सेनाके कमरबन्द होकर खड़ेहैं अमरू ने लन्धौर और बहराम से पूछा कि कारण तुमलोगों के तैयार होने का क्या है ? उनलोगों ने उत्तर दिया कि और तो हम कुछ नहीं जानते केवल सिकन्दरी तबलेका शब्द सुनकर तैयार हुए और अमीर की आज्ञा के आश्रित खड़े हैं और बृत्तान्त तुम जानते होगे और अवश्य है कि तुमने कुछ सलाह भी दीहोगी अमरू ने सन्देहमें होकर उसीमार्ग से डङ्के के समीप जाकर पूछा कि तुमलोगों को किसने डङ्का बजाने की आज्ञा दी है उनलोगों ने कहा कि आदी कहगया है तब अमरू आदीके डेरे में जो गया तो देखता है कि आदी ने एक युवा स्त्री को मारडाला है और उसको आगे रक्खे हुए शिरपर हाथ धरे बैठा है आदी से उसका बृत्तान्त पूछा तो उसने अपना सब बृ-त्तान्त कहा तब अमरूने अमीरके समीप आकर सब बृत्तान्त सुनाया अमीरने आदी को बुलानेकी आज्ञा दी और कहा कि आदी को भी हम उसी स्त्री के साथ गोर में गाड़ेंगे तब मेहरनिगार ने आदी की बड़ी सहायता की और अमरू ने भी प्रार्थना की कि आपने क़िला बिजय किया उसने एक गढ़ीही तोड़ी अमीर अपने महल से

निकलकर सेना में गया और सब वृत्तान्त कहकर हरएक पहलवानों से बिनय करके कमर खोलने की आज्ञा दी और आप महल में आकर आराम करनेलगा और सब सेना ने भी कमर खोली जब प्रातःकाल हुआ तो अमीर ने सात दिनतक नाच रङ्ग होनेकी आज्ञा दी सब सामान इकट्ठा हुआ और अभी कूच की आज्ञा न दीथी कि आदी एक पत्र जैपालहिन्दी का अमीर के समीप लेगया अमीर उस पत्रको पढ़कर बड़े सन्देह में हुआ और लन्धौर को दिया उसने पढ़ा तो लिखा था कि फ़ीरोज़ शाह ख़तानी साढ़ेतीन लाख सवार लेकर चढ़आयाहै कई बार युद्ध हुआ परन्तु उसके पास सेना बहुत है इस कारण विजय न हुई और सेवक क़िले सावरमें बन्द है जो अमीर या लन्धौर या खुसरोहिन्द न आवेंगे तो इसदेश में तुर्कियों का राज्य होजायगा और हमलोगोंको अतिक्लेश पहुँचेगा अमीर ने आज्ञा दी कि तुम जाकर उसको विजय करो तब लन्धौर ने रोनी सूरत बनाकर कहा कि मैं जानता था कि अपनी अवस्था आपही के क़दमों के नीचे काटूंगा परन्तु आप सेवक को अलग करने की इच्छा करते हैं अमीर ने कहा कि ईश्वर जानताहै मैं तुमको अलग करने की इच्छा नहीं रखता परन्तु जो इस समय न भेजूं तो सारा हिन्दुस्तान हाथसे निकल जायगा और जिस समय कि ईश्वर विजय का हाल सुनावेगा उसी समय में तुमको बुलालूंगा और जबतक तुम न आओगे में मलकामेहरनिगारके साथ व्याह न करूंगा यह कहकर चालीस सहस्र सवार समेत मुक़बिल को मेहरनिगार और ज़हरमिश्री को साथ करके मक्का की तरफ़ रवाना किया और बहुत रुपया और जिंस आदि मार्ग के सामान से परिपूर्ण किया और कहा कि हमभी खुसरोहिन्द को सवार कराकर आतेहैं जो ईश्वरने चाहा तो बहुत जल्द तुमलोगों से मिलतेहैं यह कहकर आदी को अपनी यात्रा बसरेकी ओर करनेकी आज्ञा दी और कहा कि ऐसी युक्ति करो कि अमरू और मुक़बिल मलकामेहरनिगार और ज़हरमिश्री को लेकर मक्के को जावें और अमीर लन्धौर और बहराम के साथ सेनासमेत हुए और मीर बहरको बुलाकर जहाज़ मँगवाया और खुसरोहिन्दको चढ़ाकर साथसे नाके जहाज़ खोलवादिया अमीरने प्रातःकाल होतेही बहरामसे कहा कि ऐ बहराम ! मैं तुझे और खुसरोहिन्द को अपने हाथ समझताहूं और तुमलोगों को जुदा करनेसे अतिदुःख होताहै परन्तु क्याकरूं ? जो हिन्दुस्तानके युद्धमें खुसरोको न भेजता तो क्या करता ? इसके सिवाय और कोई युक्ति नहींथी और जो तुमको भी खुसरोकी सहायताके लिये न भेजूं तो और कौनहै ? जिसे जाने की आज्ञा दूं क्योंकि फ़ीरोज़शाह अतिबलवान् है और उसके पास सेनाभी अधिक है इसकारण उचित है कि तुमभी चीनमें जाकर फ़ीरोज़शाहको विजय करके उसके देशको लूटमार करतेहुए साथलन्धौर और आदी के चलेआओ और जब इस कार्यको सिद्ध करोगे तो खुसरोके साथ तुमकोभी बुला लूंगा और जबतक तुम दोनों मेरे पास न पहुँचोगे तबतक मैं व्याह मेहरनिगार के साथ न करूंगा तब बहरामने प्रार्थना की कि मुझे आपकी आज्ञा माननी उचित है

परन्तु केवल आपके क़दमोंके छोड़नेसे दुःखप्राप्तहोताहै जो आपके क़दमोंकी कृपा है तो जानेमें कुछ संदेह नहीं है तब बहराम सेना के साथ उसी दिन जहाज़पर सवार होकरचला और अक्सर लोग कहतेहैं कि चीनमें एक शत्रु आयाथा उसके निवृत्त करनेके लिये अमीरने बहरामको चीनकी तरफ़ भेजाथा परन्तु यह अवश्य है कि अमीर ने बहरामको रुख़सतकरके सेनाके साथ मक्केकी तरफ़ कूच कियाहै और जब कि सात मंज़िल जाचुके थे साथ के सरदारों ने कहा कि यहां से दो कोसपर दाहिनी ओर एक बड़ी भारी नदी है और उसके निकट एक स्थान जिसका नाम (अलंगज़मुर्रद) है अतिउत्तम देखने के लायक़ है तब अमीर ने आंदी से कहा कि हमारा ख़ीमा उसी स्थान की तरफ़ लेचलकर खड़ाकरो आदी ने अतिशीघ्रही उसी तरफ़ चलने की आज्ञा दी और थोड़ेही समय में जाकर अमीर उस (अलंगज़मुर्रद) पर पहुँचे और रात्रि को अपने डेरेमें सोरहे परन्तु प्रातःकाल होतेही जो उठकर देखा तो अतिउत्तम स्थान मालूम हुआ कि एक तरफ़ जहां दृष्टि पड़ती थी तो फ़र्श हरा २ बिछाहुआ देखाई देता है और कोसों तक हरी रङ्गत लहरा रही है दूसरी तरफ़ हज़ारों गुल्लाला कैसा फूला हुआ नज़र आता है कि नेत्रों से देखने में अतिप्रसन्नता प्राप्त होती है और एकतरफ़ नदी से मिलाहुआ पहाड़ परशीकोह है जिसपर सैकड़ों तख़्ते गुलबहार के खिलेहुए हैं और अनेक प्रकार के वृक्ष और मेवे फले फूले खड़े हैं और बहुतसे हरिण, पाढ़ी, चीतल, बारहसिंगा, नीलगाय आदि घुट २ की छलांगें माररही हैं और हज़ारों प्रकार के पक्षी वृक्षों पर मेवा खा २ कर चहचहा रहे हैं और पहाड़ पर जो सोते भील आदिक हैं उनके किनारे पर भुण्ड के भुण्ड करकरे, मुरग़ाबी, सुरख़ाब, चकई, चकवा आदि अनेक प्रकार के पक्षी बैठेहुए हैं और पहाड़ के कोनों में तीतर बटेर आदिक फिरते हैं अमीर इस स्थान को देखकर अतिप्रसन्न हुआ और सर्वत्र दिन शिकार करतारहा सायङ्काल को डेरेपर आकर जो पक्षी आदिक लाया उसमें से कुछ अपने लिये रखकर शेष सरदारों और पहलवानों को भेजवादिया और रात्रिभर आराम के साथ सोया प्रातःकाल जब उठकर कुल्ला दतून से निश्चिन्त होकर वस्त्र पहिनकर बैठाथा और अभी कूच की आज्ञा न दी थी कि दो सरदारों ने आकर सलाम करके विनय किया कि ज़ोपीनकाऊस सत्रह सहस्र सवार लेकर आपसे युद्ध करने के लिये आता है और बहुतसी सेना बलवान् साथ लिये आता है और कारण उसके आनेका यह है कि नौशेरवां जो मिश्र की तरफ़ आपके मरवाने के लिये जाताथा उसने मार्ग में सुना कि हमज़ा ने मदायन में आकर नगर को लूटलिया और नगरवासियों को मारडाला है और हमारी सेना को विजयकरके मेहरनिगार को पकड़लेगया है यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां मदायन को लौटआया और जब अपने नगर को ख़राब देखा और मलकामेहरनिगार को न पाया तो अतिदुःखित होकर कहनेलगा कि यह सब बख़्तक ने ख़राब किया है कि नगर को लूटलिया और मलका को निकाल लेजाकर मेरी

आबरू मिटादी और संसार में लज्जा प्राप्तहुई और जो मैं बुज़ुरुचमेहर के कहनेपर करता तो आज काहेको यह गति होती इतने में बख़्तक ने अपने घर से आकर पगड़ी दे मारी कि मेरी माता को तो अमरू ने और बेटी को आदी ने मारडाला यह वृत्तान्त जो सातदेशवासी शाहंशाह को पहुँचेगा तो आपको क्या कहेंगे कि एक अरब के रहनेवाले को ऐसा मुँह लगाया कि उसने सब देशों को बरबाद कर दिया है और उसकी युक्ति नौशेरवाँ से न चलसकी नौशेरवाँ ने रोनी सूरत बना कर कहा कि जो कुछ तूने कहा वह मैंने किया परन्तु हमज़ा किसी युक्ति से वशमें नहीं आता है कि उसे मारूं और उसके साथियों का मांस चील कौवों को लुटाऊं बख़्तक ने कहा कि सिवाय गुस्तहम के और कोई ऐसा नहीं है जिसे हमज़ा के साथ युद्ध करने को भेजिये बादशाह ने पत्र लिखकर गुस्तहम को बुलवाया उसी दिन ख़बर पहुँची कि ज़ोपीनकाऊस सत्रह सहस्र सवार लेकर आपसे मिलने को आता है और यहां से दो कोसपर ठहरा है बादशाह ने उसी समय बख़्तक को और सरदारों के साथ उसकी पेशवाई के लिये भेजा बख़्तकने मार्ग में सर्व वृत्तान्त अमीर का बयान किया वह बोला कि तुम निश्चिन्त रहो जो खड़ी सवारी हमज़ा को न मारा तो मेरा ज़ोपीनकाऊस नाम न रखना इसके पश्चात् जब वह नौशेरवाँ के पास पहुँचा तब वह बहुत रोया और बादशाह को बहुत समझाया और कहा कि मैं इसी समय जाने की आज्ञा चाहताहूं यहां मुझे एकक्षणभर वर्ष के समान मालूम होता है जबतक हमज़ा का शिर और मलकामेहरनिगार को न लादिया तो संसार में मुख न दिखलाऊंगा तब बादशाह ने प्रसन्न होकर ख़िलअत दामादी देकर कहा कि तुम पहलवान और सेना के साथ जाकर हमज़ा का शिर लाओ तो मैं तेरा व्याह उसके साथ करदूंगा और अपना युवराज बनाऊंगा और अपने भी दो सरदार तीस हज़ार सवारों के साथ करके भेजता हूं अमीर ने हँसकर कहा कि आज इसी स्थानपर वास करो उसको आनेदो जबतक कहो कि पहलवान लोग अपना डण्ड पेलें और नाच रङ्ग जारीरहे यह आज्ञा देकर फिर अमीर अपने आरामगाह में चलेगये और उसका आसरा देखनेलगे सायङ्काल के समय एक गर्द उठी और सेना के समान देखपड़ी और जब गर्द बन्द हुई तब सत्रह अलम और कई हज़ार सवार परेट के परेट देखाईपड़े ज़ोपीन आकर सामने डेरा डाल कर युद्ध का सामान करने लगा रात को नामियान और तुवियान ने आकर अमीर से कहा कि ज़ोपीन की सेना में युद्ध का बाजा बजता है अमीरने कहा कि हमारी सेना में भी युद्ध का बाजा बजाओ और अतिशीघ्र लड़ाई का सामान जमा हो जावे आज्ञा देतेही कबावेचीनी और कलावंचीनी ने अठारह मनकी तबरेज़ीकी चोवें जो डङ्के सिकन्दरीपर देमारा तो उसके शब्द से ज़ोपीन की सेना में कितने ही मनुष्यों के कान के परदे फटगये और सब सेना डरगई परन्तु दोनोंतरफ़ रात्रि भर युद्ध का सामान हुआ किया और प्रातःकाल होतेही ज़ोपीन सत्रह हज़ार

सवार लेकर युद्ध के स्थान पर आया और इस तरफ़ से अमीर पांच लाख सवार अतिबलवान् लेकर चले जिस समय अरबी पहलवानों ने जाकर युद्ध का आरम्भ किया तो वे बेचारे डरनेलगे और भागने की इच्छा करनेलगे और बेलदारों ने मैदान को साफ़ किया और भिश्तियों ने मशकों से बातकी बात में हज़ारों बिगहे ज़मीनको सींचदिया नक़ीब और जारजियोंने ज़ोर से चिल्ला २ कर कहना शुरू किया कि जिसको युद्ध करने की इच्छा हो वह युद्ध के मैदान में निकलकर लड़े और प्रतिष्ठा प्राप्त करे कि आज बलवानोंकी परीक्षा है और यही युद्ध का मैदान है यह सुन कर सब के रोंयें खड़े होगये और एक दूसरे का मुख देखनेलगे और मृत्यु ने आकर अपना डेरा युद्ध के स्थानपर किया मानो मङ्गल ग्रह हरएक मनुष्य के मस्तक पर चमकनेलगा और हरएक मनुष्य का गला बन्द होगया और एक दूसरेपर ताना देने लगे और कहनेलगे कि आज नेकों की नेकी बदों की बदी प्रसिद्ध होजायगी और देखें किसका पैर शत्रु के ऊपर बढ़ता है और किसका पीछे पड़ता है ये बातें सेनाओं में होही रही थीं कि ज़ोपीनकाऊस ने घोड़े को मैदान में बढ़ाकर ललकारा कि ऐ ईश्वर के पूजको ! तुममें से जिसको मरने की इच्छा हो वह मेरे सम्मुख होकर लड़े अमीर से उसका हँसना सुनकर न रहागया स्याहक़ैतास घोड़े पर सवार होकर सेना से बाहर निकला और बाजेवालों की तरफ़ से ज़ोपीन के समीप जाकर इस प्रकार से कावा दिया कि उसका घोड़ा बीस क़दम पीछे चलागया ज़ोपीन यह हाल देखकर बेहदास होगया और अमीर से पूछा मालूम होता है कि हमज़ा तेराही नाम है तुहीं मुसल्मानी सेना का सरदार है अमीर ने कहा हां मैंहीं हूं और ईश्वरपूजकों की टहलुई करताहूं ज़ोपीन बोला कि ऐ हमज़ा ! किसलिये अपनी जान को दुःख में डालता है और तेरा चित्त कहां है उत्तम यही है कि मेहरनिगार को मेरे साथ करदे मैं जाकर उसके साथ ब्याह करूं और तू रूमाल से हाथ बांधकर मेरे साथ चल मैं बादशाह से तेरी सिफ़ारिश करके बचादूंगा अमीर ने कहा कि ऐ नामर्द ! तू क्या बकता है ? जो नशा बहादुरी का रखता हो तो अपना नशा उतारले और अपने हौसले को पूर्ण करले फिर मेरी वार रोंक यह सुनतेही ज़ोपीन ने एक बरछी अमीर की छाती में लगाई उसको उसने छीनकर तोड़डाली तब उसने झुंझलाकर गदा उठाई उसको भी अमीर ने रोंका कोई वार लगने न पाई तो अति लज्जित होकर कई वारें बराबर चलाई अमीर जब धूल में छिपगये तो ज़ोपीन कहनेलगा कि देखो हमने मारा पृथ्वी में हमज़ा धसगया और कहा कि जो कोई एक किरच हड्डी की निकालदे तो उसको पारितोषिक देकर सेना का सरदार बनाऊं अमीर ने जो यह वार्ता उसकी सुनी तो स्याहक़ैतास को लेकर उसके समीप आकर ललकारा कि ऐ पापी ! किसको तू ने मारा और ख़ाक में मिलाया है तेरा मारनेवाला मैं तेरे शिरपर खड़ाहूं देख अभी क्या तुझे देखाताहूं एक वार और चलाकर अपने हौसिले को मिटाले तब उसने एक गदा चलाई अमीर

ने उसको छीनकर जिसतरह बहरी कबूतर को झपटती है उसके गरदनपर खंजर रखकर कहनेलगा कि बताओ अब उस हँसने की मज़ा देखावें? अब भी कुछ हौसिला बाक़ी है? यह सुन ज़ोपीन गिड़गिड़ानेलगा और ईर्षा मन में रखकर मुसल्मान हुआ अमीर उसकी छातीपर से उतरकर अलग खड़ाहुआ॥

युद्ध करना ज़ोपीन का अमीर के साथ और दबाना अमीर का ज़ोपीन को और खंजर रखकर मुसल्मान होना॥

ज़ोपीन फिर उठकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उसको उठाया और अपनी सेना में लेआकर गले से मिलाया और सेना में बिजय का डङ्का बाजनेलगा और झण्डावालों ने परचम खोलदिये और ज़ोपीनकी सेना अतिलज्जित होकर लौटकर अपने डेरे में आई अमीर मुज़फ़्फ़र और मंसूर के साथ ज़ोपीनको लेकर अपनी सेना में पहुँचे मुबारकबादी के डङ्के बजनेलगे और बड़ी धूमधाम से नाच रङ्ग होनेलगा और उसी समय भोजन तैयार हुआ अमीर ने ज़ोपीन के हाथ मुँह धुलाकर अपने साथ भोजन करवाया और शराब पिलवाई तब उसने अमीर से कहा कि अब सेना में जानेकी मैं इच्छा करताहूं कि जाकर सब सेना को मुसल्मान करूं और कल सवेरे सब सरदारों को आपके समीप लाकर मुलाक़ात कराऊंगा अमीर ने कहा कि जाइये और सबको मुसल्मान कीजिये तब वह सेना में आया और मक्कर व जालकी युक्ति विचारने लगा॥

रात को लड़ाई करना ज़ोपीन का और ज़ख़्मी होकर न मिलना अमीर का॥

सुहृद मनुष्य का चित्त जिससे एकबार साफ़ हुआ तो साफ़ही रहता है व्यतीत बिरोधों का बिचार नहीं करता है यहां तो अमीर उसपर विश्वास करके उसके आने का आश्रित था उधर वह जाकर औरही युक्ति करनेलगा अपनी सेना से कहा कि मैं तो जीव की रक्षा के लिये मुसल्मान हुआ हूं और एक मुसल्मान को दम दे आया हूं तुमलोग तैयार हो उसपर हम रात्रि को लड़ाई करके मारेंगे हमारी बिजय होगी और उसकी पराजय होगी यह सुन उसकी सेना तैयार हुई जब आधी रात्रि हुई तब सत्रह हज़ार सवार लेकर अमीर की सेनापर धावा करने चला मार्ग में शेसयमन जो चार सहस्र सवार लिये पहरे पर घूमता था घोड़ों के पैर का शब्द सुनकर ललकारा कि कौन इस समय आता है? ख़बरदार आगे क़दम न बढ़ाना आकर समीप जो देखा तो मालूम हुआ कि ज़ोपीन सत्रह सहस्र सवार और बहुत से पैदल लियेहुए लड़ाई करने को चला आता है शद्दस से तलवार चली शद्दस उसके हाथ से मारा गया और ज़ोपीन मुसल्मानी सेनापर जागिरा और जो सेना अमीर की बेखटके सोरही थी जब सत्रह सहस्र सवार जागिरे तो उनकी खरक से जाग उठे परन्तु उसके आपहुँचने के कारण हथियार न लेसके जो जिसके पास था वही लेकर दौड़ा तलवार चलनेलगी और चारों तरफ़ शब्द होनेलगा अमीर भी सोते २ शब्द की खरखराहट सुनकर जाग उठा और पूछने लगा कि

क्या शोर गुल सुनाई देता है दूतों ने बिनय की ज़ोपीन धावा मारने आया है तो यह सुनकर अमीर स्याहक़ैतास के थानपर जाकर लगाम देकर बेज़ीन का सवार होकर आया उसी समय अनासानमलक नामक तलवार जो उसके हाथ में रुधिर से भरी थी उसके ऊपर चलाई अमीर ने वार ख़ाली देकर तलवार उसकी छीनकर उसे मारडाला दूसरे भाई ने कहा कि हमज़ा ने बड़े आश्चर्य की बात की जो मेरे भाई को बधकिया परन्तु मैं भी उसे मारूंगा अमीर ने कहा कि चिन्ता न कर तुझे भी उसीके पास भेजनेका उपाय कररहाहूं तब उसने अमीरके ऊपर हथियार चलाया परन्तु अमीर ने उसकी वारको रोंककर एक तलवार मारी कि उसके दो भाग होगये परन्तु ज़ोपीन ने अमीर के पीछे आकर एक तलवार उसके शिरपर सावधान होकर मारी तो चार अंगुल का घाव होगया फिर अमीर ने पीछे हटके मारा तो उसके भी उसी तरह घाव होगया और दो तीन तलवारें मारकर घोड़े से गिराया तब सेना के लोग भी उसको उठाकर बहुत जल्दी मदायन की ओर भागे ज़ोपीन जो सत्रह हज़ार सवार लेकर आया था उसमें से केवल दश हज़ार मनुष्य बचे और सब मारे गये और उस रात्रिके धावे के कारण मुसल्मानी सेना भी बहुत मारी गई अमीर के शिरसे भी बहुत रुधिर बहा कि अमीर बेहोश होगया घोड़े स्याहक़ैतास ने देखा कि सवार मेरा ज़ख़्मी है मैदान से निकलकर बनकी ओर चला आदी आदिक सेनापतियों ने अमीर को बहुत ढूंढ़ा पता न मिला तो शोक करनेलगे जितने सर-दार थे सब अपनी सेना समेत काला वस्त्र धारण करके बहुत शोक करनेलगे तीसरे दिन आदी सब सेना को साथ लेकर मक्के में पहुँचा और ख़्वाजे अब्दुलमतलब और अमरू से सब वृत्तान्त कहा यह हाल सुनकर मक्के के निवासी भी काला वस्त्र धारण करके बहुत शोक करनेलगे और चारों तरफ़ से रोने का शब्द सुनाई देने लगा ख़्वाजे अब्दुल्मतलब को सकता की ऐसी बीमारी होगई अमरू और मुक़बिल ने अपना गला काटडाला और मेहरनिगार ने मार मार कर अपने कपोलों को लाल करदिया और शिरके बालों को इस प्रकार के नोचडाला कि कंघी और चोटी की आवश्यकता न रही और रांड़ का स्वरूप धारण करलिया उस समय अमरू ने कुछ बिचारकर सबलोगों को चुप किया और कहा कि न डरो अमीर जिन्दा है क्योंकि जो अमीर को कुछ होता तो स्याहक़ैतास अवश्य अपनी सेना को ले भाग आता जो अबतक स्याहक़ैतास नहीं आया तो तुमलोग ईश्वर को जपो मैं अमीर को जाकर ढूंढ़ लाताहूं यह कहकर क़िले को बन्द करके हर एक स्थान पर सेना मुक़र्रर करके और मुक़बिल से कहा कि ख़बरदार कोई नवीन मनुष्य क़िले के समीप उतरने न पावे आप अमरू अमीर के ढूंढ़ने को चला और उसी मार्ग होकर अलंगज़मुर्रद के तरफ़ पोशाकयारी पहिने हुए जिस मैदान में युद्ध हुआ था रवाना हुआ ॥

आना अमीर के लेने को अबुलरहीमन जिनी वज़ीर शाहंशाह परदेकाफ़ का ॥

अख़बारनवीस और नक़्ल करनेवाले यों लिखते हैं कि जिस समय दीवान

रूस्याह ने शहपाल पुत्र शाहरुख़ शाहंशाह परदे काफ़ से शत्रुता करके नगर समीन, ज़रींन, वकम, काकुम, क़ैसर बिलौर, मीना का बन, कतर वयज़, क़ैसर गौहर, क़ैसर ज़मुर्रद, क़ैसर याकूब, छल सितून, बाग़ सदाबहार, बाग़संतुष्ट करनेवाली, बाग़ हस्त बहिस्त, क़ैसर मीना, बाग़ जिन्नात जिनको कि हज़रत सुलेमान ने बनवाया था छीनलिया और केवल बाग़ आराम उसके पास रहगया जिसमें कि अपने लड़के बालों को लेकर क़िले का दरवाज़ा बन्द करके बैठे थे एक दिन बादशाह को याद आया तो वज़ीर अब्दुलरहीमनजिनी को बुलाकर कहा कि वह लड़का हमज़ा नामी जिसको तुम मक्के से लाये थे और कहा था कि एक दिन ऐसा होगा कि सब दूतलोग आपका देश छीन लेवेंगे केवल बाग़ आराम आपके पास रहेगा उसी में बन्द होकर आप रहेंगे और यह लड़का आपको उन लोगों को मारकर आपका सब देश देवेगा तो अब वह लड़का कहां है उसको ढूंढ़ना चाहिये बिचारो तो वह आज कल कहां है और किस देश में उसका स्थान है तब उसने रमल से बिचारकर कहा कि आजकल वह एक बड़े युद्ध में था और उसके एक तलवार लगी है जो आप आज्ञा देवें तो वह आसक्ता है तब शाहंशाह ने कहा कि इससे उत्तम और क्या है ? उसी दम मलहम सुलेमानी मँगवाकर और अनेक २ प्रकारके मेवे देकर कहा कि अतिशीघ्रही जाकर इस मलहम को उसके शिरपर लगा देना और जब घाव अच्छा होजाय तो इन मेवों को खिलाकर अपने साथ लेकर हमारे समीप लाओ उसी समय अब्दुलरहमान तख़्तपर सवार होकर कई सौ जिन् साथ लेकर काफ़पर्वत से चला और थोड़ेही समय में जब उस स्थानपर पहुँचा तो चारों ओर दृष्टि करके देखने लगा तो देखा कि हमज़ा रुधिर में डूबाहुआ उस सब्ज़ेपर बेहोश पड़ा है उसी समय जाकर हमज़ा को तख़्तपर बैठाकर पहाड़ अबुलक़ैस के एक गढ़े में उठा लेगया और उसके घाव को धोकर पट्टी मलहम सुलेमानी उसपर रखकर मेवों की डालियां चारों तरफ़ लगादीं कि उसकी सुगन्ध से कुछ शिर में बल होजाय और जीव को आनन्द होजाय तीसरी पट्टी बदली थी कि अमीर ने नेत्रों को खोल दिया होश में आये तब उसने सलाम किया अमीर ने सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौन हैं ? और कहां से आये हैं और आपका नाम और पता क्या है ? और क्या आपही मुझे इस तख़्तपर उठालाये हैं ? उसने कहा कि मैं शहपाल का पुत्र शाहरुख़ शाहंशाह परदेकाफ़ का वज़ीर हूं मेरा नाम अब्दुलरहमान है और उसकी आज्ञा से यहां आया हूं जिसने आप को जब आप सात दिन के थे तब आपको पलँग समेत मँगवालियाथा और सातरोज़ अपने मकान पर रखके बहुत देव और भूत जिनका दूध पिलाया था कि जवानी में किसीसे आंख न झपे और सुरमा सुलेमानी आंखों में लगाके घोड़े पर लेटाके भेजवा दिया था और बहुत क़ीमती साज आपके साथ भेजा था इस समय जो आपका चर्चा आया तो मुझसे पूछा कि बिचार कर बतलाओ कि वह आजकल कहां है मैंने जो बिचारा

तो मालूम हुआ कि आप इस सब्ज़े पर तलवार के घाव से रुधिर में डूबे बेहोश पड़े हैं और अपने दोस्तों और सेना से अलग होगये हैं यह कह बादशाह ने मलहम सुलेमानी और मेवे की डालियां देकर आपके समीप भेजा है जो मैं यहां आया तो उसी प्रकार से पाया जिस तरह कि विचार से मालूम हुआ था सो उसी समय आपको उठाकर इस तख़्त पर रखकर इस स्थान में लाया हूं और मलहम सुलेमानी रखकर आपका घाव अच्छा किया अब केवल शरीर में बल आना बाक़ी रहा है सो इस मेवे को खाइये ईश्वर की कृपा से बल भी शरीर में अतिशीघ्र आजावेगा तब अमीर ने कहा तुमने मुझे किस तरहसे पहिंचाना उस ने विनय किया कि अपनी बुद्धि और आपके स्वरूपको देखकर अमीर उसकी बातों से अति प्रसन्न हुए और उसकी प्रशंसा करनेलगे तब अब्दुलरहमान ने और जो कईसौ जिन् साथ थे बुलाकर अमीर से भेंट कराई और कहा कि एक विनय मेरी भी है जो आपही के किये सिद्ध होगी ईश्वर जब आपको अच्छा करेगा तो कहूंगा अमीर ने कहा शिर और नेत्रोंसे आपका कहना करनेको वे आपके कहेहुए मुस्तैद हूं इसमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है अब थोड़ासा वृत्तान्त अमरू का यह है कि वह अमीर को ढूंढ़ता २ उस सब्ज़े में आनिकला तो देखा कि स्याहक़ैतास चररहा है और इधर उधर नेत्रों को उठाकर देखरहा है जब अमरू उसके पास गया और पकड़ने की इच्छा की तो प्रथम तो उसने अमरू को न पहिंचान कर बाघ के समान अमरू के ऊपर दौड़ा परन्तु जब अमरू ने चिल्लाकर चुचकारा तब वह अमरू का शब्द सुनकर खड़ा होगया और कान हिलाने लगा तब अमरू ने उसका मुख चूमकर पूछा कि तुम्हारा सवार कहां है मुझे वहां लेचलो तब वह हिनहिनाकर गढ़े के तरफ़ इशारे करनेलगा परन्तु अमरू ने न समझा और सर्वत्र ढूंढ़ढांढ़कर विचारा कि स्याहक़ैतास को अपने मकानपर लेचलो और लोगों के आंसू पोंछाओ फिर आकर अमीर को ढूंढ़ेंगे यह विचारकर स्याहक़ैतास को लाकर लोगों से कहा स्याहक़ैतास को मैं ढूंढ़लायाहूं अब अमीर को भी जाकर लाताहूं यह कहकर अमरू पहाड़ के नीचे चला और उस गुफा के समीप गया तो मनुष्यों की घुनघुनाहट मालूम हुई उस स्थानपर ठहरगया और थोड़े काल सुनकर उसके भीतर गया तो देखा कि अमीर एक तख़्तपर बैठा अनेक २ प्रकार के मेवे खारहाहै जाकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उसका शिर उठाकर छाती से लगाया और मलकामेहरनिगार की कुशल पूछनेलगा तब अमरू ने सब वृत्तान्त कहा और हाथ बांधकर अमीर के सम्मुख खड़ा हुआ अमरू की आंखों में सुरमा सुलेमानी न था इस कारण जिन्नात न दीखपड़े और जिन्नोंने जो उसको देखा तो उसके साथ हँसी करनेलगे एक जिन्ने अमरू के दोनों पांव पीछेसे खींचलिये वह मुंह भरा गिरपड़ा और अमरू के शिरसे एक जिन्ने ताज उतार लिया परन्तु अमरू को कुछ देखाई न देता था क्योंकि उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी न था अमीर ने जब पूछा कि

अमरू तुम नङ्गे शिर क्यों खड़े हो तब अमरू ने शिरपर हाथ फेरा तो ताज न पाया क्रोध करके भुलभुलाने लगा तब अमीर ने जिन्नों से ताज दिलवाकर उसके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी लगादिया तब वह भी सब जिन्नों को देखने लगा और कहा कि भाई शहपालका पुत्र शाहरुख़ ने अपने वज़ीर अब्दुलरहमान जिन्नी को किसी प्रयोजन के लिये मेरे समीप भेजा है और उसीने मेरा घाव अच्छा कियाहै और यह मेवा आदि भी ले आये हैं उन्हीं के साथ वे जिन्न हैं जो तुम्हारे साथ हँसी करतेहैं यह सब वृत्तान्त कहकर अब्दुलरहमान से मुलाक़ात करवाकर आज्ञा दी कि अब तुम मक्के में जाकर हमारे कुशल का हाल सब लोगोंसे कहो परन्तु [illegible] यहां रहने का हाल किसीसे न कहना अमरू तो मक्के की तरफ़ गया और अ[illegible] ने अब्दुल-रहमान से कहा कि जो कुछ तुम्हारे स्वामी ने आज्ञा दी है वह अब मुझसे कहो तब उसने कहा कि यह तो आपसे पहलेही मैं कहचुका हूं कि जब आप सात दिन के थे तो मैंने रमल से विचारकर बादशाह से कहा था कि मक्के में एक लड़का पैदा हुआ है वह आपको किसी समय में जब सब जिन्नलोग शत्रुता करके सब देश छीन लेंगे तो वह लड़का आकर सबको मारकर आपको फिरसे उन नगरों को देकर बसा-वेगा तब बादशाह ने मेरी मारफ़त आपको मक्केसे मँगवाया था और सातरोज़ के बाद फिर बहुत जवाहिर आदि साथ करके भेजवा दिया था और आपको देव जिन्न पक्षी आदिका दूध पिलवाया था कि जवानी में कोई बराबरी न करसके और आप के पिता जिनको आपके खोजाने का दुःख था मिटाया था सो वही दिन आपड़ा है इफ़रीत नाम जिन्नने नगर आदि सब छीन लिया है केवल बाग़ आराम शाहंशाह के बश में है उसीमें अपनी सेना और लड़के बालों के साथ दरवाज़ा क़िलेका बन्द करके पड़े हैं और उसको भी कहता है कि जल्द ख़ाली करो इसलिये मुझे आपके समीप भेजा है और कहा है कि मेरी दुआ कहकर कहना कि इस पापी से जो मेरे पिताके समय में एक प्यादा था और अब एक सवार होकर बहुत से लोगों को अपने साथ करके शतरञ्ज के फ़रज़ी के तौर से टेढ़े चलना अख़्तियार कियाहै और मुझे बड़ा दुःख देरहा है और मुझे एक स्थान में कि आरामगुलिस्तां उसका नाम है बन्द कररक्खा है और उसको भी लिया चाहता है मैं दहिनेबायें आगे पीछे कहीं हिल नहीं सक्ता जो वह लड़का मेरी सहायता न करेगा तो नक़्श उलैट जायगा बाज़ी मेरी मात होचुकी है शत्रु ने नक़्श मेरा बिगाड़ दियाहै और बिसात उलटने की इच्छा किये है और प्रसिद्ध है कि मैं हज़रत सुलेमान की सन्तान में से हूं और तुम हज़रत इब्राहीमकी औलाद हो इससे उचित है कि एक पैग़म्बर की औलाद के लोग दूसरेकी सहायता करें और अपनी क़ाबूभर उसके कार्य को पूर्ण करें अमीर ने कहा कि जो वह देव मुझसे माराजावे और नगर आदि छीनकर शाहंशाहको मिल जाय तो मैं चलनेको मुस्तैद हूं अब्दुलरहमान ने कहा कि मैं रमल से विचारचुका हूं और निश्चय है कि वह आपही के हाथसे माराजायगा और सब देश आपही का

है और आपही के हमलोग हैं और ईश्वर चाहेंगे तो आपही के हाथ से सब दुःख दूर होजायगा अमरू का हाल सुनिये कि अमीरके पाससे मक्केमें आकर सब लोगों से अमीर की कुशल का हाल कहकर कहा कि जो तुमलोग आजही हमको कुछ न देओगे तो फिर कब देओगे तब सबलोगों ने अपनी प्रसन्नता से जिसकी जो खुशी में आया वह दिया और हरएक मनुष्य ने अपने २ स्थानपर नाच रङ्ग करवाया फिर प्रातःकाल अमीर के समीप आया और सब हाल अपने जाने और प्रसन्नता का सुनाया तब अमीरने अमरूसे कहा कि भाई एकसफ़र थोड़ेदिनोंका और शेष रहाहै देखें ईश्वर उसमें क्या करताहै ? अमरूने कहा कि कैसाहै ? तब अमीरने जो कुछ अब्दुलरहमान से सुना था बयान किया अमरू ने कहा ऐ अमीर ! यह तू कैसा बिचार करता है कि ऐसा आराम और मलकामेहरनिगार को घर में बैठाकर बाहर जाने की इच्छा करता है यह बात उत्तम नहीं है अमीर ने कहा कि अब उनका एहसान मेरे ऊपर है कि उन्होंने आकर दवा की और मेरा शिर अच्छा करके मेवा खिला कर शरीर में बल का प्रवेश कराया है तब अब्दुलरहमान ने कहा कि आपको तीन दिन जाते और तीन दिन आते और एक दिन वहां पहुंचकर स्वस्थ होनेमें और एकदिन उसके मारने में और पीछे एकादिन बिजय की प्रसन्नता में सब नवदिन आपको लगेंगे अमीर ने कहा चाहे अठारह दिन लगें परन्तु हम चलेंगे ऐसे समय में आंख छिपाना और न जाना अनुचित है अब अमरू ने कहा कि आपकी खुशी है चाहे अठारह दिन रहो चाहे उन्नीस दिन मेहरनिगार को लीजिये आप जानिये आपका काम जाने में तो अपनी राह लेता हूं अमीर ने कहा बहुत अच्छा जाओ मेरा क़लमदान लेआओ तो मैं मेहरनिगार और सेना के सरदारों को पत्र लिखदूं कि जबतक मैं न आऊं सब तुम्हारी आज्ञा में रहें परन्तु ईश्वर के लिये बहुत आज्ञा बारबार न देते रहियेगा और सेनापति आदि अधिकारियों पर हुकूमत न रखियेगा अमरू रोता हुआ उस गुफ़ा से निकला और मक्के की तरफ़ चला जिस समय मक्के में पहुँचा ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलिब ने अमीर के परदे क़ाफ़पर जाने का हाल सुना तो अशक्त होकर अमरू से कहनेलगा कि किसी युक्ति से अमीर को जाने से मना करो और किसी युक्ति से यहां तक लाओ अमरू ने कहा कि मैंने बहुत समझाया परन्तु वह नहीं मानता अब जो आपके लिखने को मानजाय तो अति उत्तम है ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलिबने अमीर का क़लमदान मँगवाकर एक पत्र लिखकर अमरू को दिया अमरू वहां से सेना में आकर सेनापतियों को अमीर के जाने का हाल सुनाया वे लोग सुनकर रोने पीटनेलगे तब मेहरनिगार के समीप आकर अमीर के जाने का हाल कहा वह पृथ्वीपर गिरपड़ी और रोनेलगी अमरू ने कहा कि ऐ मलका ! रोने पीटने से कुछ न होगा इसमें कोई युक्ति करनी चाहिये जिसतरह से ख़्वाजे अब्दुल मुत्तलिब ने पत्र लिखा है उसी प्रकार से तुम भी लिखो उत्तर में आपही साफ़ खुलजायगा मलका ने एक पत्र लिखा और उसमें यह भी लिखदिया कि जो तुम

जाओगे तो फिर आकर मुझको ज़िन्दा न पाओगे नहीं तो मुझे भी साथ लेते चलो अमरू उस पत्र को भी उस पत्र के साथ रखकर चुपके अमीर का क़लमदान लेकर अमीर के समीप आकर क़लमदान को रख उन दोनों पत्रों को भी समीप रखदिया अमीर ने प्रथम एक पत्र अपने पिता के नाम लिखा और फिर एक पत्र सेनापतियों के नाम लिखा कि जिसको २ हमारी आज्ञा माननी है वह अमरू की आज्ञा में रहे और हम परदेकाफ़ को जाते हैं अतिशीघ्रही उसके कार्य को पूर्ण करके आते हैं और तीसरा पत्र मलकामेहरनिगार को लिखा कि मैं अठारह दिनके वास्ते जाता हूं और ईश्वर ने चाहा तो इससे अधिक न ठहरूंगा शाहंशाह परदेकाफ़ ने अपने सेनापति को मेरे इलाज के लिये भेजा है उसीने आकर मुझे अच्छा किया है इस कारण मुझे उसके कार्य के लिये जाना उचित है और मेरी आज्ञा जो तुम मानती हो तो अठारह दिनतक और सबर किये बैठी रहो और पुरुष स्त्रियों को युद्ध में नहीं लिये फिरते कि मैं तुझे साथ लेचलूं और हर स्थानपर तुम्हारा डेरा भी साथ रक्खूं हां जो केवल फिरने के लिये जाता तो लेजाने में सन्देह न था और जबतक मैं न आऊं अमरू को अपना शुभचिन्तक जानना इसमें बुराई कभी न होगी और इसी की आज्ञा पर रहना अमरू को पत्रों को देकर कहा कि इनको पहुँचाकर हमारी सला (हथियार) लादो परन्तु किसीको मालूम न हो अमरू अमीर के पास से नगर में आया परन्तु पत्र किसीको न दिया हथियार लेकर अमीर के पास पहुँचा अमीर अतिप्रसन्न हुआ चलने की तैयारी होनेलगी हथियार बदन पर लगाया॥

मारा जाना गुस्तहम का अमीर के हाथ से और टूटना उसकी सेना के साथ में॥

भाग में जो लिखा होता है वही होता है और जिस स्थान पर जिसकी मृत्यु होती है वह वहीं पहुँच जाता है गुस्तहम के युद्ध का बृत्तान्त यों है कि जिस समय अमीर मलकामेहरनिगार और सेना के बहादुरों के साथ मक्के की तरफ़ चले थे उसी समय नौशेरवां ने एक पत्र उसके बुलाने के लिये लिखकर भेजा था वह बेचारा दो मंज़िलें चलकर मदायन में पहुँचा नौशेरवां ने नगर के लूटने और मलका के लेजाने का बृत्तान्त कहकर कहा कि आज कईदिन हुए हैं कि ज़ोपीनकाऊस चालीस सहस्र सवार लेकर आया था उसको मैंने ऐय्याशान मलिक को तीस हज़ार सवार साथ करके हमज़ा को मारने और मेहरनिगार के लेआने को भेजा है परन्तु तुम भी जाकर उन दोनों सरदारों को साथ लेकर हमज़ा को मारो और मेहरनिगार को लेआओ गुस्तहम तीस सहस्र सवार लेकर मक्के की ओर चला जब समीप पहुँचा तो मालूम हुआ कि अमीर को ज़ोपीन ने तलवार मारी है उसका पता नहीं है कि मरगया या ज़िन्दा है पर ज़ोपीन और गुस्तहम से मार्ग में मुलाक़ात न हुई क्योंकि ज़ोपीनकाऊस अलग ज़मुर्रद की तरफ़ से गया था और गुस्तहम जङ्गल फ़ौज की तरफ़ से चला था और रास्ते में यह ख़बर सुनी कि थोड़े से मुसल्मान मक्के में बदहवास होकर पड़े हैं यह सब बृत्तान्त सुनकर गुस्तहम अतिप्रसन्न हुआ और

मक्के से तीन कोस पर डेरा डालकर डङ्का युद्ध का बजवाया और अभीतक अमीर परदेकाफ़ की तरफ़ रवाना न हुए थे कि तबला का शब्द उनके कानों में पहुँचा अमरू से कहा कि देखो तो भाई यह तबला कहां बजा क्या किसीकी सेना तो नहीं आती अमरू ने यह सुनकर बाहर निकलकर देखा तो एक सेना कई सहस्र सवारों की दिखाईपड़ी तब लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि गुस्तहम तीस हज़ार सवारों से लड़ने को आया है नौशेरवां ने अमीर के मारने और मलका मेहरनिगार के लेजाने के वास्ते भेजा है पहले तो अमरू नें क़िलेपर जाकर लोगोंको दीवालों और बुरजोंपर मुक़र्रर किया और तीरंदाज और वरक़ंदाज़ों को अपने स्थानपर मुक़र्रर किया तदनन्तर अमरू ने इच्छा की कि यह बृत्तान्त अमीर को सुनाऊं कि गुस्तहम तीस हज़ार सवार लेकर क़िलेपर आपहुँचा और लोगोंको धावा करनेकी आज्ञा दी उसी समय कई हज़ार सवारों से क़िलेपर धावा किया और भीतर जानेकी इच्छा की अमरू ने वह आतशबाज़ी मारी कि जितने आये थे वे सब जलगये शेष डरसे भागकर सेना में चलेगये तब गुस्तहम ने लौटनेका बाजा बजवाकर आज्ञा दी कि आज चलो कल एकदम में सबको पराजय करके नाश करदेंगे जब हमज़ा नहीं है तो इस छोटे से क़िले को लेना कौन बड़ी बात है और यह थोड़ीसी मुसल्मानी सेना कब हमसे बिजय पासक्ती है प्रातःकाल खड़ी सवारी चलकर सेना मुसल्मानी को मार मलका को लेकर चलेंगे अमरू ने जब उसके युद्ध से छुट्टी पाई तब जाकर अमीर से सब बृत्तान्त कहा अमीर ने आज्ञा दी कि तुम चलकर डङ्का युद्ध का बजवाओ और प्रातःकाल सेना लेकर मैदान में जमाओ मैं आकर ईश्वर चाहेंगे तो बिजय करूंगा और स्याहक़ैतास को मेरे पास भेजकर सेना को समझा देना कि अमीर भी आते हैं अब्दुलरहमान ने बिनय किया कि स्याहक़ैतास को न मँगवाइये अगर जल्द चलना है तो इसी तख़्तपर बैठकर चलिये अमीर ने उसकी प्रार्थना मानली स्याहक़ैतास के लाने को मना करदिया और अमरू से कहा अच्छा भाई तुम जाकर प्रातःकाल सेना को जमाकर हमारा आसरा देखते रहना ईश्वर चाहेगा तो आकर उसको यहां आनेका फल दिखलादेंगे अमरू ने क़िले में आकर हरएक को प्रसन्न किया और कहा कि प्रातःकाल तुमलोग अमीर को देखोगे हमने जाकर सब हाल गुस्तहम का कहा है तब अमीरने कहा कि तुम इसी समय चलकर युद्धका डङ्का बजवाओ लड़ाई की तैयारी करो प्रातःकाल मैदान में परेट जमाके हमारा इन्तिज़ार करना हम आकर गुस्तहम को दण्ड देंगे उसका अभिमान धूल में मिला देंगे बिजय करेंगे यह कहकर कबावचीनी और कलावचीनी तबला सिकन्दरी बजाने की आज्ञा देकर युद्ध का सामान करनेलगा यह हाल सुनकर लोग अतिप्रसन्न हुए हर स्थानों पर शब्बरात और शबईद होगई रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्ध का डङ्का बजाकिया और युद्ध का सामान हुआ प्रातःकाल अमरू एक ऊंटपर सवार होकर सेना को युद्धस्थल में लेजाकर श्रेणीबद्ध खड़ी करदिया उधर से गुस्तहम की भी

सेना आई जब गुस्तहम ने देखा तो मालूम हुआ कि अमीर नहीं है अमरू सब सामान कररहा है तब तो अतिप्रसन्न होकर सेना को बाहर करनेलगा इतने में अमीर का तख़्त देखपड़ा तब अमरू ने अपनी सेना से कहा कि देखो अमीरका तख़्त आता है सब उसी तरफ़ देखनेलगे और समीप आया तो देखा कि पलथी मारे सब हथियार धारण किये हुए बैठे हैं और मुखपर बीमारी का लक्षण कुछ नहीं मालूम होता देखकर सबलोग अपने २ घोड़े पर से उतरनेलगे तब बहुत से लोगोंका पैर रिकाब में फँसकर गिरने लगे तब गुस्तहम देखकर हँसने लगा और कुछ अपनी सेना के सरदारों से कहरहा था कि अमरू ने कहा कि तू क्या बकता है तेरे जीव का गाहक अमीर आपहुँचा वह इधर उधर देखने लगा इतने में अमीर का तख़्त आसमान पर से पृथ्वीपर आउतरा तब तो वे लोग दङ्ग होगये और कहनेलगे कि कहां का शैतान चरख़ा आ पहुँचा इसका तो हमने औरही कुछ हाल सुनाथा यह जीता कहां से आया इतने में अमीरने तख़्त परसे उतरकर ललकारा कि जो आया है तो सामने आ वह तो ईर्षा और ग़रूर से भरा था आतेही अमीर की छाती में एक बरछी मारी अमीर ने वही छीनकर उसको जो मारी तो उसका भेजा निकल आया और पृथ्वीपर गिरके मरगया जब गुस्तहम प्यादा हुआ तो एक तलवारका वार अमीर पर किया अमीर ने अपनी तलवार पर रोंका तो उसकी तलवार के दो टुकड़े होगये और केवल क़ब्ज़ा उसके हाथ में रहगया फिर जब अमीरने तलवार चलाई तो गुस्तहम ने अपना शिर झुकाया अमीर ने ऐसा मारा कि दो टुकड़े हो गया यह देखकर सेना जो उसकी दौड़कर आई तो अब्दुलरहमानने अपने चारसौ दूतों को जिनको साथ लाया था आज्ञा दी कि अब क्या देखते हो इनको मारो तब चारसौ दूत दो २ मनुष्यों को उठाकर आसमान पर उड़गये इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना गुस्तहमकी मारीगई और तीन सहस्र पहले दिन जब गुस्तहमने क़िले में आने की आज्ञा दी थी अमरू ने आतशबाज़ी से जमाकर मारडाला था सात सहस्र सेना जो तीस सहस्र सेना में से शेष रहगई थी उसने अपने प्राणके डर से गुस्तहम की लाश को लेकर मदायनकी राह ली तदनन्तर अमीर ने गुस्तहम के युद्ध से बिजय पाकर अब्दुलरहमान को साथ लेकर परदे काफ़की तरफ़ यात्रा की और अपनी सेना को उसी स्थानपर रहने की आज्ञा दी ॥

अमीर का परदेकाफ़को जाना और उनका अठारह वर्षके बाद लौटना ॥

इस वृत्तान्त के लिखनेवाला पत्ररूपी बनको इस तरह तै करता है कि सफ़र बहुत दूर दराज़ का पेश आने और गुस्तहम को साथ सेना के मारे जाने और अमीर का परदेकाफ़ के जाने का वृत्तान्त यों लिखता है कि जब अमीर परदेकाफ़की तरफ़ गये तो अमरू ने जो माल और असबाब गुस्तहम की सेना का लूटाथा उसको कुछ तो सेनाको बांटदिया और कुछ आप लेकर ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलिब के पास जाकर पत्र का उत्तर दिया और मेहरनिगार का मेहरनिगार को और सेना

सेनापतियों को देकर अमीर के परदेकाफ़ जानेकी खबर सब छोटे बड़ों को दिया तब ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलिब ने सन्तोष किया और अमीर के लौटआने की दुआ मांगने लगा और बिजय का हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ तदनन्तर सेना ने अमरू से कहा कि ऐ ख़्वाजे! हमलोग तो सदैव से तुमको दूसरा अमीरहमज़ा समझते हैं हमलोगों को हरप्रकार से आपकी सेवकाई और आज्ञा माननी उचित है जो आप अग्नि में कूदने को कहें तो कूद पड़ें यह सुनकर अमरू ने सब को छाती से लगाया और सबको प्रसन्न करके कहा कि यह क्या बात है? तुम सब अमीर के मित्र हो मुझको उचित है कि तुमलोगों के साथ भाई की तरह रहूं और जान देने को तैयार रहूं और सबलोग मिलकर मलकामेहरनिगार की रक्षा करें क्योंकि नौशेरवां ऐसा बादशाह उसके लेजाने की इच्छा रखता है और अब जो अमीर के परदेकाफ़ के जानेका हाल सुनेगा तो अवश्य करके कोई युक्ति मलका के लेजाने की करेगा तब सरदारों ने कहा कि और तो क्या जो नौशेरवां खुद एकदफ़ा मलकामेहरनिगार के लेने को आवेगा तो वह भी लज्जित होकर लौटजायगा अमरू ने कहा कि मुझे इससे अधिक तुमलोगों का भरोसा है और यही पहलवानों और बुद्धिमानों का काम है जो ऐसा न होता तो अमीर मलका को तुम्हारे भरोसे कब करजाते यह कहकर सेना को क़िले में लेजाकर क़िलेको अच्छी तरहसे बनवा कर ख़न्दक़ खोदवाके पनियासोत करवाया और पुलका तख़्ता उठवाकर उसी फाटकपर कारचोबी का एक डेरा खड़ा कराकर उसके चारोंतरफ़ कुरसियां पत्थर की बराबर से चुनवाकर बादशाही सामान से अधिक सामान करके मलकामेहरनिगार के समीप गया और बिजय का हाल सुनाया मेहरनिगार ने कहा कि ऐ ख़्वाजे! तुम को मैं पिता के समान जानती हूं और हरप्रकार से तुम्हारा कहना मानती हूं अमीर ने पत्र लिखा है कि अमरू की आज्ञा मानना और कोई कार्य बेसलाह उसके न करना ईश्वर उस सायत मुझे भी न रक्खे जिस सायत मैं तेरी आज्ञा से बाहर हूं ख़्वाजा यह सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐ मलका! जो कुछ मैं कहूंगा वह तेरे लिये उत्तम होगा और अमीर ने जो लिखा है वह इसलिये लिखाहै कि हम जाते हैं और स्त्रियों की बुद्धि मरदों की तरह नहीं होती है और स्त्रियों को युद्ध करना अच्छा नहीं मालूम होता और आपके पिता से शत्रुता है कि वह आपको ले जाया चाहता है और मैं तो आपका सेवकही हूं मेहरनिगारने कहा कि ऐ ख़्वाजे! यह कौनसी बात है मैं अमीर के आगे पीछे हर समय तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूं यह सुनकर अमरू अपने चित्तमें अतिप्रसन्न हुआ और छः मासकी जिंस भोजन के वास्ते लेकर क़िले में रक्खी और कहनेलगा कि अब छः मास चाहे सब देश की सेना आवे तो क़िला न छूटेगा ईश्वर की छाया में पनाह ली है वही हरप्रकार से रक्षा करेगा यह कहकर सरदारों और पहलवानों को हर स्थानों पर स्थित करके आप बादशाही कपड़े धारण करके शामियाने के नीचे बैठकर अमीर के आने के दिन गिननेलगा॥

वृत्तान्त अमीर का जो क़ाफ़ के मार्ग में हुआ॥

अमीर के आश्चर्यरूपी सफ़र का वृत्तान्त यों लिखते हैं कि जिस समय जिन्नों ने अमीर को तख़्तपर बैठाकर उड़ाया तो इस क़दर दूर ऊपर उड़ालेगये कि पहाड़ और क़िले आदि भी न दिखाई देते थे सायंकाल के समय एक बन में तख़्तको उतारा अमीर ने पूछा कि यह कौन स्थान है और इसका नाम क्या है? अब्दुलरह-मान ने कहा कि अभी यहांतक मनुष्यही का राज्य है और इस बादशाह का नाम रुस्तमपुत्र ज़ाल है और यह उसीका अखाड़ा है अमीर ने जब निमाज़ पढ़कर छुट्टी पाई तब उस शहर के तरफ़ देखने के लिये चलागया और दो एक जिन्न भी साथ गये उसमें एक गुम्बद दिखाई दिया उसके भीतर जो गये देखा कि एक सन्दूक़ बन्द किया हुआ छत में लटका है उसको अमीर ने उतारकर खोला तो देखा कि उसमें एक कमरबन्द और एक ख़ंजर और एक हलका कमान रक्खा हुआ है और पत्थर पर लिखा है कि यह असबाब रुस्तम का है और कोई इसको नहीं लेसक्ता है केवल वह मनुष्य जो साहबक़िरां और हमारे रुतबे का जाननेवाला होगा वही इसको उतारसकेगा अमीर ने उसको सहज में लिया और अतिप्रसन्न होकर अब्दुलरहमान के पास आया उसको वह असबाब और तख़्ती दिखाई उसने कहा कि आपको सफल हो यह सगुन अति उत्तम अकस्मात् से मिला है उस दिन उसी स्थानपर बास किया दूसरे दिन सबेरे चलकर एक मुक़ामपर आ उतरे तो देखा कि एक दीवार लोहे की बहुत पुरानी कोसोंतक खड़ी है और उसके दरवाज़े का कहीं पता नहीं मिलता है मनुष्य क्या जानवरों की भी वहांतक पहुँच नहीं थी आज्ञा दी कि दरवाज़ा तलाश कियाजावे जिन्नों ने ढूंढ़कर दरवाज़े का पता लगाया अमीर उसके भीतर गये तो देखा कि सब घास आदिक उपजी है और एक गुम्बद है उसमें एक साधु बैठा पूजा कररहा है उसने अमीर को देखकर नमस्कार किया और कहा कि ऐ अमीर! दो वर्ष से आपके आसरेमें बैठाहूं अमीर ने भी सलाम करके पूछा कि आपने मुझे किसतरह जाना और क्योंकर पहिंचाना कि साहबक़िरां है उस साधू ने कहा कि मैंने सुना था कि यह सरहद काफ़ का है यहां कोई मनुष्य न आवेगा केवल एक मनुष्य हमज़ा नामे है वह आवेगा सो ईश्वर की कृपासे मैंने आपको देखा और केवल इतनीही विनय है कि मेरे दिन पूरे होगये हैं मुझे स्नान कराकर गाड़ते जाइये मेरी मिट्टी ठिकाने लगाइये यह कहकर मन्त्र पढ़कर प्राण को त्याग करदिया यह देखकर अमीर को आश्चर्य हुआ उसकी आज्ञानुसा[र] उसकी मिट्टी स्वार्थ की और उससे छुट्टी पाके थोड़े कालके बाद भोजन करके तख़्तपर सवार हुए एक रात्रि दिन लिये चले गये दूसरे दिन तीसरे पहर एक ब[न] में उतरे अमीर ने अब्दुलरहमान से कहा कि अभी तो दिन अधिक है यहां उतर[ने] का क्या कारण है, अब्दुलरहमान ने कहा कि इस स्थानपर इसलिये उतर[े] हैं कि यहां से थोड़ी दूर पर एक राहदार नाम देव रहता है कि वह लोगों को [...]

इस मार्ग से आते हैं देखकर मारडालता है और जिसको नहीं देखता वह बचकर निकल जाता है इस कारण मैं यहां उतराहूं कि आधीरात्रि को निस्सन्देह निकल चलेंगे कि उससे बचकर चलेजायँगे अमीर ने कहा कि हमको उसके स्थानपर ले चलो कि हम भी उसे देखलेवें और जो बनपड़ेगा तो उसको मारकर लोगों को आराम देवेंगे अब्दुलरहमान ने कहा कि वह बड़ा बलवान् देव है वहां आप न जाइये अमीर ने कहा कि भला यह बताओ कि वह जिन् है या मार्ग का डाकू केवल बलवान् है अब्दुलरहमान ने कहा कि जिन् के आगे राहदार क्या चीज़ है यह उसके आगे तुच्छ है तब अमीर ने कहा कि जिन्को मारने के लिये तो तुम हमको लिये जातेहो और इसके मारने को मना करते हो तब अब्दुलरहमान ने माकूल होकर कहा कि एक बला इस राह में और भी है जिसके डर से कोई इस स्थानपर नहीं ठहरता अमीर ने कहा कि वह क्या है ? उसका क्या नाम है ? उस ने कहा एक व्याघ्र बड़ा लागन है अमीर व्याघ्र का नाम सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और उसी दम चला व्याघ्र मनुष्य की बास पाकर अपनी मांद से बाहर निकलकर चारों तरफ़ देखने लगा अमीर ने देखा तो साठ हाथ का लम्बा था अतिबलवान् हज़ार व्याघ्रों का एक व्याघ्र है अमीर ने उसको ललकारा तो वह गर्जता हुआ दौड़ा अमीर ने छिपकर एक तलवार ऐसी मारी कि साफ़ दो टुकड़े होगया और पृथ्वी पर गिरपड़ा जिन् अमीर के बलको देखकर दङ्ग होगये अब्दुलरहमान ने अमीर के क़ब्ज़े को चूमलिया और वहीं से सवार कराकर राहदार के स्थान की राह ली अमीर तमाम रात इस विचार से न सोये कि ऐसा न हो कि मेरी जान के डर से राह काटकर चलेजायँ और उसके स्थान पर न लेचलें इतने में प्रातःकाल होते उस के स्थानपर जा पहुँचे परन्तु जिन्नों के शरीर में फफोले पड़गये पैर फूलगये उस के डर से उसके स्थान के समीप तख़्त को रखकर सब जिन् इधर उधर छिपगये अमीर तख़्तपर से उतरकर राहदार की तलाश में चले राहदार का हाल सुनिये कि वह तीनसौ देवों के साथ उस स्थानपर रहताथा और सदैव हाल मँगवाया करता था कि शाहन्शाह परदेकाफ़ किस विचार में है उसी तरह से एक दिन एक देव ने आकर हाल दिया कि शाहन्शाह ने अब्दुलरहमानको मनुष्य के लानेके लिये दुनिया में भेजा है सुनाहै कि वह बड़ा बलवान् पहलवान और बहादुर है वह आकर काफ़ के देवों को मारकर फिर शाहन्शाह काफ़ को राज्य दिलवादेगा उसी दिन से वह राहदार घात में दिन रात बैठा रहता था संयोगसे उस समय भी बैठाहुआ देखरहा था कि अमीर को देखा तो जाना कि वह आदमी आया है और यह उस का साथी है उसी समय एक देव को आज्ञा दी कि जाकर उस मनुष्य को जीता मेरे पास लाओ देव जो अमीर के पास आया हाथ बढ़ाकर चाहा कि अमीर को उठाकर राहदार के समीप पहुँचावे अमीर ने उसका हाथ पकड़कर एक झिटका दिया तो वह घुटनों के बल बैठगया तब अमीर ने एक घूंसा उसके शिरपर ऐसा

मारा कि मग़ज़ उसकी गरदन में घुसगया और वह मरगया राहदार ने यह देख कर जाना कि निश्चय करके यह वही मनुष्य है जिसे अब्दुलरहमान लेगया था यह बिचारकर तीनसौ देवों समेत अमीर के ऊपर आया अमीर ने इस ज़ोरसे ईश्वर का नाम पुकारा कि सब बनका वन हिलगया जिन्नों का दम सा निकल गया राहदार अपने तीनसौ देव लेकर अलग खड़ाहुआ और एक तरफ़ जाकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ अमीर ने जो देखा कि एक बला लम्बी क़रीब तीनसौ गज़के थी और पचास २ हाथ के समान वृक्ष की दो डालियां ऐसी शिरपर हैं और बड़ा भारी मुख जिससे लार निकलरही है और नेत्र लाल होरहेहैं पलकें साही के कांटा की तरह खड़ी हैं नाक एक ताबूत के समान नेत्रों के नीचे ओठों के ऊपर रक्खी है कमर में शेरों की खाल कसीहुई है उसपर पूछ अपनी लपेटे ज़ंजीरें केवल सोने की अपने हाथ पैर गले में डालेहुए अमीर के सामने आकर कहने लगा वे (स्याह शिर दांत सफ़ेद) तूने मेरे देवको क्यों मारा मुझसे कुछ डरा नहीं अब तू किस तरह मुझसे बचकर जायगा यह कहकर एक तलवार अमीर के शिरपर चलाई अमीर ने उसको रोका एक ख़ंजर रुस्तम का ऐसे ज़ोर से उसके पहलू में मारा कि दूसरे पहलू की तरफ़ से वह ख़ंजर निकलगया उसने एकही वार में दांत निकाल दिये अमीर ने ख़ंजर निकालकर मियान में किया तलवार निकाल कर और जो तीनसौ देव खड़े थे उनपर दौड़े और जिसपर एक वार चलाई वह फिर न उठा अब्दुलरहमान ने जाकर जिन्नों से कहा कि अब तो राहदार मारागया और किसी का डर नहीं है अब चलकर अमीर की सहायता करनी चाहिये जितने जिन् थे देवों पर कूदपड़े और खूब जी खोलकर लड़े बहुतसे देव तो मारेगये थोड़े से बचकर भाग गये अमीर ने उनका पीछा न किया और उसी दम अब्दुलरहमान को लेकर उसके मकान पर गया तो वहां बहुतसा जवाहिर और अनेक २ प्रकार के असबाब देखकर अमरू को याद किया कि अफ़्सोस इस समय अमरू न हुआ और अब्दुलरहमान से कहा कि यह सब माल मलिक शहपाल का है उससे मुझे कुछ काम नहीं है इसको उठवाकर अपने शाह के समीप पहुँचाओ कि उसका चित्त अपने माल को देखकर प्रसन्न हो जितने जिन् थे अमीर की बहादुरी और हौसिले की बड़ी प्रशंसा की कि इस क़दर माल को अपने हाथ से खोता है राहदार का शिर चार जिन्नों से उठवाकर अमीर अपने तख़्तपर सवार होकर चले और जिस समय क़िले के समीप पहुँचे सुलासल जिन्नी चालीस सहस्र सवार लेकर अमीर की अगवानी के लिये आया और क़िले में जाकर शाहानी दावत का सामान अमीरको दिया दूसरे दिन अमीर सुलासल जिन्नी को भी साथ लेकर गुलिस्तान आराम की तरफ़ रवाना हुए लिखनेवाला लिखता है कि शहपाल अमीर के आने का हाल सुनकर फूलकी तरह फूलगया और आज्ञा दी कि सामान शाहन्शाही तैयार हो हम हमज़ाको अगवानी लेने के वास्ते जावेंगे अति शीघ्रही सामान शाही तैयार हुआ शाहन्शाह

काफ़ बड़े धूमधाम से अमीर की पेशवाई के लिये चले अमीर का हाल सुनिये कि दाहिने बायें तो अब्दुलरहमान और सुलासल के तख़्त थे और बीच में साहबकिरां बातें करते चले आते थे कि सामने से सैकड़ों तख़्त जिन् परियां नाचतीं और गातीं जिनको देखकर मनुष्य मोहित होजाय दिखाई पड़े तत्पश्चात् सैकड़ों तख़्तों पर हज़ारों परीज़ाद के मनुष्य जिनके कोमल शरीर और स्वभाव को देखकर प्रेत लगेहुए मनुष्यों के समान बेहोश होजाते और किसी के हाथों में गुलदस्ते शहपाल के गिरदागिरद दिखाई दिये देखनेवालों को बड़ा आश्चर्यहुआ बन सब खुशबूसे भरगया था अब्दुलरहमान और सुलासल जिन्नी ने दूरसे देखकर अमीर से कहा कि शाहनूशाह आपकी पेशवाई के लिये आते हैं क्या आज्ञा है जब तख़्त समीप पहुँचा तख़्त को पृथ्वीपर रखवाया और शहपाल ने भी परीज़ादों से कहा कि हमारा तख़्त साहबकिरां के समीप रक्खो साहबकिरांने तख़्तपर से उतरकर शहपाल को चूमा शाहनूशाहने भी खूब छाती से लगाया और मुख चूमकर कहा कि हमने आपको बड़ा दुःख दिया परन्तु यह प्रसिद्ध है कि बड़ेही मनुष्य बड़ों का काम करते हैं अमीर ने कहा यह कौन बड़ी बातहै जो मेरा प्राण जाता हो और आपका कार्य हो तो मैं देने को तैयारहूं और उसमें मेरी बड़ी प्रतिष्ठा होगी यह कहकर ग़ाहदार का शिर और सब माल जो उसका लेआया था शाहनूशाह के समीप रखदिया शाहनूशाह अमीर से बहुत प्रसन्न हुए और सब लोग अमीर के बल और बहादुरी पर आश्चर्य करनेलगे और अतिप्रशंसा आपस में करने लगे शाहनूशाह ने उसी स्थान पर अब्दुलरहमान को ख़िलअत देकर उसका ओहदा दूना करदिया फिर अपने साथ अमीर को तख़्तपर बैठाकर गुलिस्तान इरम में पहुँचे अमीर को बारगाह सुलेमानी में उतारकर एक जवाहिर लगेहुए तख़्तपर बैठाया और जवाहिर आदि लाकर अमीर के सामने रक्खा और परियों को जोड़े पोशाक पहिनाकर खड़ा करवाया और अमीर का स्वरूप और सुन्दरता को देखकर प्रशंसा करने लगे और शाहनूशाह का यह हाल था कि अमीर की तरफ़ देखने के सिवा और कुछ न करता था और अमीर शिर झुकाये हुए बैठा था शाहनूशाह ने जब अमीरको चुप देखा तो काफ़के अंगूर की शराब मँगवाने की आज्ञा देकर कहा कि जबतक शराब न आवे तबतक राक़िम परदे दुनिया का हाल लिखा सुनावे॥

नौशेरवां का अमीर के कोहकाफ़ की तरफ़ जाने का हाल सुनना और उसका सेना भेजना मक्के को॥

अख़बारनवीस लोग इस तरह बयान करते हैं कि नौशेरवां जोपीन और अब्बास का वृत्तान्त सुनकर अतिव्याकुल ही था कि इतने में गुस्तहमकी भी लाश आई और हमराहियों ने सर्व वृत्तान्त हमज़ा का उससे कहा कि जिससमय गुस्तहम ने अपनी सेना को लेजाकर युद्ध के लिये आरूढ़ किया उसी समय हमज़ा का तख़्त आसमान से आकर उतरा हमज़ा ने तो गुस्तहम को मारा और सवारों को

पृथ्वी से किसीने उठाकर आसमान पर लेजाकर वहीं से ताक २ के ऐसे निशाने मारे कि जो सेना पृथ्वी पर थी वह भी दब २ कर मरगई और इसी प्रकार से बीस सहस्र सेना मारीगई परन्तु उसके मारनेवाले दृष्टि न पड़े इस वृत्तान्त को सुनकर बुज़ुरुचमेहर को बुलाकर यह सब वृत्तान्त उससे पूछा उसने रमल से विचारकर सर्व वृत्तान्त परदेकाफ़ का बयान किया कि शहपाल शाहनूशाह परदेकाफ़ ने अमीर को अपनी सहायता के लिये बुलाया है और उन्हीं जिन्नों ने जो अमीर के बुलाने के लिये आये हैं गुस्तहम के सवारों को मारा है और हमज़ा जो अठारह दिन के लिये गया है परन्तु अठारह वर्षतक वहां रहेगा और काफ़ के जिन्नों को नाशकर पृथ्वीपर आवेगा और कोई जिन् उससे न जीतेगा यह वृत्तान्त सुनकर नौशेरवां अतिप्रसन्न हुआ कि अठारह वर्षतक कौन जीता और मरता है अवश्य करके हमज़ा किसी जिन् से मारा जावेगा इस समय में मुसल्मानों से अपना बदला लेना चाहिये यह विचार कर बीलम और क़ीलम को जो कि उसकी सेना के सरदारों में अतिबलवान् और बहादुर थे तीस सहस्र सवार देकर मक्के की तरफ़ भेजा और कहा कि इस समय हमज़ा काफ़ की तरफ़ गया है और मैदान ख़ाली है तुमलोग जाकर जिसतरह से उचित हो मक्के को वीरान करके मलकामेहरनिगार को मेरे सम्मुख लाओ तब दोनों सरदार बादशाह से बिदा होकर चले अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि जब अठारह दिन व्यतीत होगये और अमीर न आये तो बेहोश होकर रोते २ मलकामेहरनिगार के पास गया तो उसको भी बेताब देखा तब वह अमरू से कहनेलगी क्यों अमरू बाबा अमीर तो अभी तक न आये अब उन का स्नेह मुझे अतिव्याकुल कररहा है और नहीं मालूम कि उनपर क्या २ दुःख पड़ते होंगे और मुझे सिवाय बिष खाकर मरजाने के और कुछ नहीं सूझता और अब मैं मरीजाती हूं जिस स्थान पर तुम्हारी इच्छा हो वहां गाड़देना तब ख़्वाजे ने कहा ऐ मलका! तू यह क्या बिचार करती है कोई जुदाई में बिष खाकर मरजाता है और हर एक प्रकार से उसको समझाकर कहा कि अब मैं अमीर का वृत्तान्त पूछने के लिये मदायनको जाताहूं बुज़ुरुचमेहरसे बिचरवाकर जल्द आताहूं आप अपने मन में ऐसा बिचार न कीजिये मलका को समझाकर मुक़बिल के समीप आया और उससे कहा कि मैं तो बुज़ुरुचमेहर से अमीर का हाल बिचराने के लिये मदायन को जाताहूं और तुम अपने चालीस सहस्र तीरन्दाज़ों को लेकर मलका की रक्षा करना और क़िले के हरस्थानपर पहलवानों को स्थित करके रखना और आप अमरू भेष बदलकर फ़ैज़ जङ्गल की मार्ग से चला थोड़े दिन में पहुँचकर एक बनिये की सूरत बनाकर बुज़ुरुचमेहर के दरवाज़े पर जाकर खड़ा हुआ संयोग से उसी समय वे भी दरबार से आते थे अमरू को खड़ा देखकर पूछा तू कौन है? अमरू ने कहा कि आपकी जागीर का असामी हूं लोगों ने मुझे बड़ा दुःख दिया है इसलिये तुम्हारे पास फ़िर्याद ले आया हूं और जो आप न

सुनेंगे तो बादशाह के पास जाऊंगा बुज़ुरुचमेहर ने उसकी अरज़ी को नौकर से मँगवाकर जो देखा तो मालूम हुआ कि अमरू है बैठके में बुलवाकर गले से मिलाकर सब वृत्तान्त पूछा अमरू ने कहा क्या कहूं बड़ी आपदा में हूं कि हमज़ा अठारह दिन का वादा करके गया था उससे अधिक बीत गया परन्तु अभी तक न आया मालूम नहीं हुआ और मलकामेहरनिगार बिष खाने पर तैयारहै ख्वाजे ने कहा सत्य है कि अठारह दिन का वादा करके गया था परन्तु अठारह वर्ष के पश्चात् आवेगा और सब देवों का बध करेगा उसे किसी प्रकार से दुःख न होगा और इस समयके वृत्तान्त होने में तुमको भी बड़े २ बादशाही पहलवानों से युद्ध करना होगा परन्तु सब में तुम्हारीही विजय होगी आप अतिशीघ्रही मक्के में पहुँच कर अपने क़िले का सामान करो किसीसे डरना नहीं नौशेरवां ने बीलम और क़ीलम को तीस सहस्र सवार से तुम्हारे मारने और मलका के ले आने को भेजा है अमरू ने कहा कि जो हमज़ा की मित्रता में मेरा प्राण भी जायगा तो कुछ सन्देह नहीं है यह पहले से में विचार चुकाहूं जहांतक होसकेगा युद्ध करूंगा और बीलम और क़ीलम तो क्या जो जमशेद और खुरशेद फिर जी उठें और मेहरनिगार का नाम मुखसे लेवें तो फिरसे गाड़ेजावें और इसपर क़ाबू न पावें परन्तु आप एक पत्र मलकामेहरनिगार को लिखदेवें कि उनको तसल्ली हो और मेरे कहने पर रहें बुज़ुरुचमेहरने क़लमदान मँगवाकर एक पत्र जिसमें सब वृत्तान्त अमीर के अठारह वर्ष के बाद आने का और तसल्ली मलका को देने के लिये लिखकर अमरू को दिया वह उस पत्र को लेकर फ़ैज़ जङ्गल के मार्ग से मक्के में अतिशीघ्र मंज़िलें तै करके पहुँचा जब मलकामेहरनिगार ने उस पत्र को पढ़ा तो रोनेलगी और कहनेलगी कि किसतरह से अठारह वर्ष बीतेंगे अमरू ने हरप्रकार से मेहरनिगार को समझाया और कहा कि ये अठारहवर्ष अठारह दिन के समान बीतेंगे और साथ कुशल आनन्द के आते हैं तुम बैठकर ईश्वर का भजन करो और हमज़ा की कुशल के लिये वर मांगो अपने दिल को स्वस्थ कीजिये ईश्वर हमज़ा को एक दिन लाकर आपसे मिलावेगा अमरू ने मेहरनिगार के समझाने के पश्चात् सेना में आकर सब सेनापतियों और सिपाहियों से कहा कि अमीर अठारह वर्ष तक न आवेंगे बुज़ुरुचमेहर ने रमल से विचारकर मुझसे कहा है सो जिसको जानाहो वह अपने घर अभी से जाये और जिसको रहनाहो वह हमारे भाई के समान हमारे साथ रहे और मलका की रक्षा करे तब सब सेनापति और सिपाहियों ने कहा कि हमलोग जबतक प्राणरहेगा हमज़ा को छोड़ कहीं न जायँगे और अब आप हमज़ा के स्थानापन्न हैं आपकी आज्ञानुसार होकर रहेंगे और आपको छोड़कर कहां जावें? ये बातें अमरू सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और सबको छाती से लगाकर कहने लगा कि तुमलोग सब हमारे भाई हो जब हमज़ा आवेगा तुमलोगों के साथ अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होगा और हरएक

के ओहदे बढ़ावेगा यह कहकर सब पहलवानों को क़िले की दीवारों पर स्थित करके रक्षा करनेकी आज्ञा दी आप शामियाने पर आकर शाहाना पोशाक पहिन कर जड़ाऊ कुरसी पर बैठकर उन दोनों का आसरा देखनेलगा कि थोड़ेही समय पर क़िले के सामने एक गर्द उड़ती हुई मालूम हुई और थोड़ेही समय पर बहुत से वीर बलवान् शस्त्र धारण कियेहुए दिखाई दिये अमरू ने जाना कि बीलम और क़ीलम यही हैं उन बेवकूफ़ों ने आतेही सेना को क़िले के घेरने की आज्ञा दी कि मुसल्मानों को मारकर मलकामेहरनिगार को निकाल लेआओ कि उसके बदले में ख़िलअत और पारितोषिक प्राप्तकरके अतिशीघ्रही मलका को साथ लेकर मदायन में पहुँचें और जाकर बादशाह से अपना ओहदा बढ़वावें सवारों ने उसकी आज्ञा से घोड़ों को दौड़ाकर क़िले के समीप पहुँचाया जब क़िले की दीवार पर चढ़ आये तब अमरू ने ऐसी आतशबाज़ी की वृष्टि की कि जो आगे बढ़े थे उनको उस आग में जलादिया और जो पीछे थे उन्होंने मारे डरके आगे को पैर न दिया बीलम और क़ीलम ने जो देखा कि दिन व्यतीत होआया है और सेना भी घबड़ाई है डङ्का लौट आने का बजवाया और क़िले के समीप से हटकर डेरा लिया और अपनी रक्षा के लिये सेना को रौंद घूमने को आज्ञा दी अब अमरू का हाल सुनिये कि वह जिस समय से अमीर परदेकाफ़ को गये थे उसी समय से मलका के साथ भोजन करता था और उसको रोज़ समझाता था शामके समय भोजन करने के लिये और भोजन करने के पश्चात् दो पहरतक हाज़िर रहता और मलका के समझाने के पश्चात् उठकर सरहंगमिश्री को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम मंज़रशाह यमनी की बेटी हुमायूंताजदार को जाकर लेआओ और इस कार्य के पूर्ण करने में बड़ी युक्ति करो कि वह और ज़हरमिश्री दोनों मलका के समीप हरसमय मौजूद रहकर दिल बहलावें और हरसमय हँसी की बातें करती रहें यह कहकर अपने महल में जाकर चैन से सोरहा जब प्रातःकाल हुआ तो अपनी आवश्यक कृत्य से निवृत्त होकर सब को अपने कार्य के लिये आज्ञा दी और शामियाने के नीचे कुरसी पर शाहानापोशाक धारण करके बैठा और हरएक मनुष्य उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य करनेलगे इतने में बीलम और क़ीलम सिपाह लेकर क़िलेपर आपहुँचे और सेना को भीतर जानेकी आज्ञा दी तब अमरू ने पहले दिनकी तरह आतशबाज़ी पत्थर ईंट तीर आदिक क़िलेपर से मारने शुरूअकिये तो सेना बेहोश होकर लौटपड़ी बीलम और क़ीलम ने सेना को ललकारा और जो भागेजाते थे उनको पुकारा कि आगे क़दम बढ़ाकर पीछे न हटाना चाहिये भागना नामर्दों का काम है और बहादुर और दिलावरों का लड़ने में नाम है तब सेनाने फिरसे चढ़ाई की परन्तु आतशबाज़ी से आगे न बढ़सकी तब बीलम और क़ीलम ने जवांमरदी करके अपने घोड़ेको कुदाकर क़िले की दीवारपर पहुँचाया सेना ने देखा कि सरदार हमारी दीवारपर खड़े हैं लज्जित होकर आपस में सलाह करके घोड़ेको बढ़ाकर

अपने सरदारों के पास पहुँचे तब अमरू ने विचारा कि यह बात तो अच्छी न हुई कि शत्रु आपहुँचा तो अतिशीघ्रही एक गोला दीवार तेलका भराहुआ आग लगाकर तीन चक्कर देकर बीलम की छातीपर मारा वह छातीपर लगकर फूटगया तो तमाम बदन जलनेलगा तब हाथों से बुझानेलगे तो अंगुलियां भी बत्तीकी तरह जलनेलगीं और जो तेल की छीटें दाढ़ीपर पड़ीं तो रुई की तरह जलगई और जब मुखपर हाथ फेरा तो मोछें भी जलगई जब क़ीलम ने देखा कि बीलम जलता है उससे कुछ और न बनपड़ी आकर हाथ से बुझानेलगा तो उसका भी हाल वैसाही हुआ वह भी अतिक्लेश में पड़ा और दोनों भाई लोटन कबूतर की तरह लोटनेलगे सेना ने देखा कि सेनाके सरदार जले जाते हैं दौड़कर मिट्टी उड़ानेलगे इस युक्तिसे वह अग्नि बुझाई वे दोनों फ़ुरसत पाकर डेरेकी तरफ़ भागे और जाकर इलाज करनेलगे युद्ध का सामान भूलगये अमरू चैनसे फिर कुरसी शामियाने पर डालकर बैठा जब दो घड़ी दिन बाक़ी रहा अमरू को अपने भेष का बिचार आया कुरसी से उठकर भेष की पोशाक पहिनकर नौशेरवां के अय्यार की सूरत बनाकर बीलम और क़ीलम के डेरे में चलागया और बीलम और क़ीलम से मुलाक़ात करके प्रीतियुक्त बातें करनेलगा वे दोनों रोनेलगे कि देखो भाई अमरू ने हम लोगों का यह स्वरूप बनाया है उसके हाथ से हमलोगों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ आतिश बोला कि सुनो साहब अय्यार पर अय्यार जबरदस्त होता है न कि सिपाही अय्यार से बराबरी करे आप जानते हैं कि अमरू कैसा अय्यार है कि आज पृथ्वीपर अपनी बराबर दूसरे को नहीं जानता है इसी कारण से बादशाह ने मुझे तुम्हारी रक्षा को भेजा है परन्तु तुमलोगों ने शीघ्रता की है कि मुझे न आने दिया जल्दी करके अपना कार्य ख़राब किया अच्छा जो हुआ सो हुआ अब देखो अमरू को कैसा मैं बनाताहूं जो तुम्हारे साथ उसने ऐसा कियाहै उसका मज़ा उसे कैसा चखाता हूं तो वे दोनों दरद से आह करनेलगे आतिशने कहा कि इस समय दोचार प्याले अंगूर की शराब के पीजिये कि बलभी हो और दरद दूर होजावे उन दोनों ने कहा कि भला तुमसे बढ़कर कौन पिलानेवाला है जो यही उत्तम हो दो चार प्याले पीलेंगे अमरू तो यह चाहताही था अतिशीघ्रही गिलास और सुराही हाथ में लेकर दो २ गिलास विष मिलीहुई शराब सबको पिलाई तीसरे दौरे में दो २ चार २ प्याले पीकर लोटपोट होगये सारा होश और हवास खो बैठे अमरू ने बाहर आकर सब शागिर्दपेशों को शराब दी और उनकी भी युक्ति अच्छी तरह से की जब हरतरह से इतमीनान होचुका तो प्रथम तो सबके वस्त्र उतार लिये और जितना असबाब उस डेरे में था फ़रशतक उठाकर रखलिया और सब की एक तरफ़ की दाढ़ी बनाकर दूसरी तरफ़ घुंघुरू बांधा और गाल में एक तरफ़ चूने काजल के टीके देदिये और दूसरी तरफ़ काजल लगादिया तब उलटा करके खम्भे में बांधकर एक रुक्का लिखकर कि मैं अमरू था आज तो तुम लोगों का प्राण

छोड़े जाता हूं केवल दुःखही दियाहै उत्तम होगा कि तुम कूच करके चलेजाओ अपना कारख़ाना यहांसे हटा लेजाओ नहीं तो अबकी दफ़ा प्राणभी न छोड़ूंगा बीलम के गलेमें बांधकर अपना रास्ता लिया क़िले में आकर पोशाक उतारकर भोजन किया और आराम से सोरहा अपने कार्य से छुट्टी पाई जब प्रातःकाल हुआ सब सरदार बीलम और क़ीलम के सलाम को आये तो सब नंगे पांव थे उस हालत को देखकर कोई मुख से न बोलता था सब लज्जा के मारे चुप होरहे अन्त को सब का मुख हाथ धोलाकर अपने पास से कपड़ा मँगवाकर दिया और पत्र जो बीलम के गले में बांधा था खोलकर पढ़ा तो मालूम हुआ कि आतिश न था वह अमरू था बीलम और क़ीलम लज्जित होकर मुख बन्द करके मदायनकी तरफ़ कूचकरके भागे और उसी हाल से बादशाह के सामने आकर रोनेलगे॥

भेजना नौशेरवां का हरमर पुत्र अकवर अमरू के बध करनेको॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जब बीलम और क़ीलम घायल और लज्जित होकर मदायन को चले तब अमरू ने छःमहीनेके भोजनके लिये जिन्स मोल लेकर क़िले में रखवाली और युद्ध का सामान इकट्ठा करके बैठा बीलम का वृत्तान्त सुनिये कि वे दोनों गिरते पड़ते थोड़ेही दिनके पश्चात् मदायन में पहुंचे और नौशेरवां को अपनी सूरत ख़राब दिखलाकर अमरूकी शिकायत करनेलगे बादशाह उनका रूप देखकर हँसनेलगे और कहा कि अमरू अतिदुष्ट मनुष्य है देखो किस युक्ति से वह पकड़ा जाता है और हमारी सेना क्या युक्ति करती है? यह कहकर हरमर को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम मक्के को जाकर अमरू को मारो और मलका मेहरनिगार को हमारे सम्मुख लाओ और हरप्रकार से समझाया कि ऐसा युद्ध बादशाहों और शाहज़ादों के पुण्य और प्रताप से विजय पायाहै और सरदारों ने अपने नाम और निशान के लिये बड़ी २ आपदा उठाई हैं इस प्रकार से समझाकर चालीस सहस्र सवार और बहुत से पहलवान और बख़्तियार के पुत्र बख़्तक को भी साथ करके सब लोगों से जान देने का इक़रार कराकर भेजा जबतक ये लोग मक्के में पहुँचें तबतक थोड़ासा वृत्तान्त अमरू का सुनाताहूं कि एकदिन अमरू ने विचारा कि बहुत दिन हुए भेषका मज़ा नहीं उठाया लिबास शाहाना उतारकर बहुरूपी पोशाक पहिनकर मदायनकी तरफ़ चला बीस बाइस कोस गया था कि एक बवण्डल दिखाई पड़ा तो विचार किया कि इसमें अवश्य कोई सेना होगी तो एक भिश्ती का भेष धरकर एक मशक लेकर उसी ओर चला समीप पहुँचकर देखा कि हरमर ताज़ियेदार एक बड़ी भारी सेना साथ लिये चलाआता है जिसके धूमधाम से पृथ्वी कांप रही है परन्तु प्यास के मारे किसीके मुख से बात नहीं निकलती है सबका प्राण प्यास से निकलरहाहै जब उन लोगों ने भिश्ती को देखा तो ऐसे प्रसन्न हुए कि मानो ईश्वर मिले नेत्रों में तरावट आगई एक २ जलके लिये दौड़ने लगे तब एक सरदार ने कहा कि इसको पहले शाहज़ादे के पास लेचलो कि वह सब से

अधिक प्यासा है जब उसको हरमर के पास लेगये तो उसने पहिंचाना कि यह हरमर है और प्यास के कारण अतिव्याकुल होरहाहै अपना पराया किसीको पहिंचानता नहीं है और पृथ्वी पर पड़ाहुआ एंड़ी रगड़रहा है और मुख का रङ्ग बिगड़ गया है बहुतसे मनुष्य चद्दर ताने उसके मुख की छाया किये हैं और उसकी श्वास गिनरहे हैं अमरू ने थोड़ीसी बूंदें जलकी उसके मुखमें टपकाईं तो उसके होश और हवास ठिकाने हुए और नेत्रों को खोलदिया भिश्ती को पानी लिये देख कर अतिप्रसन्न हुआ और जल पीने का इशारा किया और थोड़े समय के पश्चात् हाथ में लेकर पिलाया फिरसे जिलाया जिस समय हरमरकी जान में जान आई तो उठकर बैठा और एक गिलास जल पीकर कहा कि ऐ भिश्ती! तूने इस समय में ईश्वर का काम किया है इसमें तुझे बड़ा यश होगा और यह जल तूने नहीं पिलाया मुझको मृत्यु से बचाया है अच्छा अब थोड़ा जल मेरे लिये रखदे शेष हमारी सेना को पिलादे कि वेभी जी जावें अमरू के पास ईश्वर की कृपा से चाहे जितने मनुष्य पियें परन्तु वह मशक भरीही रहती थी अमरू ने सब सेना को पिलाया और वह भरी की भरीही रही इस बातपर ईश्वर ने दया की जब सब सेना पानी पीचुकी हरमर ने कई सौ अशरफ़ी इनाम देकर आज्ञादी कि तुम हमारे साथ रहो और ऐसे मार्ग से मक्के को लेचलो कि राहमें जल मिले और हम मक्के को विजय करने जाते हैं जो बिजय होगया तो तुमको वहां का सरदार बनावेंगे अमरू एक ऐसे वन में लेगया कि जहां मंज़िलोंतक जल न मिलसक्राथा थोड़ीदूर जाकर हरमर से कहनेलगा हे हरमर! तू जो अमरू से युद्ध करने के लिये जाता है तो क्या विचार किये है उससे तू क्योंकर जीतेगा वह एक बड़ी बला है देखना तुझे कैसी आपत्ति में डालेगा हरमर बोला हे भिश्ती! अमरू एक सिपाही है देखना जो खड़ी सवारी उसे न मारलिया तो कुछ न किया भिश्ती यह सुनकर हँसा और कूदकर हरमर से कहने लगा हे हरमर! तू क्या जो तेरा पिता सात देशों का शाहन्शाह है अपनी सब सेना लेकर आवे तो मेरा कुछ नहीं करसक्ता है और तू नहीं जानता कि मैं हीं अमरू हूं और इस समय तेरी सेना में अकेलाहूं परन्तु कोई कुछ नहीं करसक्ता यह कहकर कूदकर हरमर के शिरका ताज लेकर चलदिया और उसको नङ्गे शिर करदिया तब बहुतसे सवार उसके पीछे दौड़े परन्तु किसी ने उस की गर्द तक भी न पाई सब व्याकुल होकर लौट आये और थोड़े से सवार जो बीलम और क़ीलम के साथ के टूटे फूटे आते थे उन्हों ने हरमर को अति व्याकुल देखकर उनको उस बन से निकालकर सीधी राह का पता बताया तो इस दुःख के पश्चात् चौथेदिन शामको मक्के में पहुँचे डेरा डालकर युद्ध का सामान करनेलगे सेना ने अपनी पंक्ति बराबर से रक्खी रात्रि को जिससमय सब सरदारलोग हरमर के पास आकर बैठे तो मुसल्मानों का चरचा होने लगा हरएक सरदार अपना २ विचार कहनेलगा बज़ाजिरहपोश ने हाथ जोड़कर बिनय किया कि हे महाराज!

अमरू क्या है ? और मुसल्मानी सेना क्या माल है ? आपका बड़ा प्रताप है एक दममें वे पायमाल होजायँगे जो आज्ञा हो तो इस बाण में जो मेरे हाथमें है क़िले का दरवाज़ा तोड़कर अपने सिपाहियों से सब मुसल्मानी सेना के साथ अमरूको मारकर मलकामेहरनिगार को निकाललाऊं और आपको अपनी बहादुरी और बलको देखाऊं हरमर बोला कि मैं जानताहूं तुम ऐसे जवांमर्द और बहादुर युद्ध में व्याघ्रके समान हो परन्तु मैं कहताहूं सांप मरै पर लाठी न टूटे यह ऊपर से आसान भीतर कठिन है इसको बुद्धिमानी के साथ से करो और अपनी काररवाई जगत् में प्रसिद्ध करो क्योंकि एक बहुरूपिये से युद्धकरना मेरे लिये अति लज्जा की बात है कि एकछोटे मनुष्य से बादशाही सामान से युद्ध करना अति लज्जाकी बात है बख़्तियारक इस बातपर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहज़ादों और बादशाहों को ऐसाही विचार करना चाहिये कि वे बड़े २ कार्य करते हैं उनसे और कौन अधिक बुद्धिमान् होसक्ता है और बोला कि जो आज्ञा हो तो सेवक उसको समझाकर प्रातःकाल आपके समीप लेआये और उसे अच्छे प्रकार से सब बृत्तान्त इसका समझादेवे हरमर ने कहा इससे क्या उत्तम है ? तू ख़ुद बुद्धिमान् और होशियार है इसी तरह से रात्रि तो इसी बिचार में काटी जब प्रातःकाल हुआ बख़्तियारक अपने ख़च्चरपर सवार होकर क़िले के ख़न्दक़पर गया देखा कि अमरू शाहानालिबास पहिनेहुए बड़ी धूमधाम से पत्थर की कुरसीपर शामियाने के नीचे बैठा है और उसके चारों तरफ़ सब सरदार और नगरवासी हाथ जोड़े खड़े हैं और हर एक मनुष्य उसकी आज्ञा का आश्रित है और मुक़ाबिल बारह सहस्र तीरंदाज़ सहित तरकश कमर में कमान कांधेपर लगाये पीछे तैयार खड़ाहुआहै बख़्तियारक ने जाकर सलाम किया और कहा कि ख़्वाजे! जोकि मैं तुझे अपना बड़ा जानताहूं इसलिये मैं तुझे समझाने आयाहूं जिसमें आपको हरप्रकार से उत्तम होगा वह यह है कि हमज़ा काफ़को गया है और उसका देवों के हाथसे बचआना असंभव है उसके कुशल में आने की कुछ आश नहीं है और तुम अच्छी तरहसे जानतेहो कि तमाम बादशाह और शाहज़ादे मेहरनिगार के नामपर लोभित हैं तो कौन है ? कि चढ़ाई न करेगा और इस बात से रहित होगा सो इस कारण अपनेको दुःख में डालना बुद्धिमानी नहीं और उत्तम है कि मेहरनिगार को शाहज़ादे हरमर को देओ और उससे मक्के की राजधानी लेओ अमरू बोला तू नहीं जानता कि जो नौशेरवां ख़ुद सब अपनी सेना लेकर आवे तो मलकामेहरनिगार को नहीं लेजासक्ता और तू मेरे सामने बातें बनाने आया है अठारह वर्ष तो बात कहतेमें बीत जायँगे कौन बड़ी बात है यह तेरी मीठी २ बातें मेरे चित्त में कब आती हैं और काफ़के देवों का क्या मजाल है कि वे अमीर को दुःख दें और उसपर ग़ालिब आवें मेरे सामने से हटजा नहीं तो तलवार से मारडालूंगा और तेरी बातों का मज़ा चखाऊंगा बख़्तियारक की शामत जो आई कहने लगा कि देखना तेरा यह बकबका कैसा

मिटाताहूं और कैसी आफ़त में डालताहूं जो तेरी नाक में नकेला न लगाया तो कुछ न किया अमरू ने उसकी ऐसी बातें सुनकर एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर मारा जो दोअंगुल उसके माथे में धँसगया तब अति शीघ्रही अपना खच्चर दौड़ा कर भागा कि ऐसा न हो फिर दूसरा भी मारे रुधिर में भराहुआ हरमर के समीप आया और उसको अपनी खराबदशा दिखाई और मलहम पट्टी करने के पश्चात् जब कुछ होश हुआ तो अपनी और अमरू की बातों का सब वृत्तान्त हरमर से कहा हरमर यह हाल अमरू का सुनकर क्रोधित हुआ और गालियां देने लगा॥

साहबकिरां (हमज़ा) के पीने के लिये देवों का अंगूर की शराब लाना॥

इस वृत्तान्त को इसतरह बयान करते हैं कि जिससमय परियों ने शराब अंगूर की हाज़िर की तो उसीसमय शहपाल ने एक गिलास शराब अपने हाथ से अमीर को पिलाया तो अमीर का चित्त अतिप्रसन्न हुआ उस गिलास को पीकर शहपाल के तख़्त को चूमा और बड़ीप्रशंसा करनेलगा तत्पश्चात् शराब अंगूर की पिलाने वालों के हाथ से खूब अच्छी तरह से पीकर अपने चित्त को आनन्दित किया नेत्रों में डोरे पड़गये और जिस समय नेत्र उठाकर देखा तो चारसौ परियां सजी हुई ऐसी दिखाई दीं कि होश हवास उनपर मोहित होकर सब भूलगये बुद्धि उनके देखने से दङ्ग होगई और हरप्रकार से सभा शराब और क़बाब की ऐसी बनाईथी कि जिससे वे पियेहुए मज़ा मिलता था और अक्सर स्थानों पर ऐसी पहलवानों की तसवीरें बनाई थीं कि मानो तसवीर हाथ में लिये युद्ध कररहे हैं और वृक्षोंपर पक्षी ऐसे २ बनाकर रक्खेथे कि देखनेवाले का चित्त अवश्य शिकार खेलने को चाहताथा और हज़रत सुलेमान की तसवीर सरदारों समेत बनाकर एक जड़ाऊ शामियाने के नीचे ऐसी सुन्दरता के साथ रक्खी थी कि मानो सब बैठे सभा में बातें कररहे हैं और प्रत्येक मनुष्य अपना २ कार्य कररहाहै और उन शामियानों में लाल वा ज़मुर्रद व याकूत वा इलमास के तकिये लगाकर जवाहिरों के खम्भों में बांधे थे और खम्भोंकी गांठोंपर सुवर्ण के गिलास बांधकर लटकायेथे और ऐसी सुन्दरता के साथ बनाया था कि देखने से चित्त अतिप्रसन्न होताथा और बराबर से भाड़ें लटकाई थीं और चारहज़ार चारसौ चालीस तख़्त और कुरसियां सोनहली जवाहिर से अलंकृत हुए क़ाफ़के प्रतिष्ठित लोगों के बैठने के लिये उस स्थान पर बिछीहुई थीं और सबके मध्य में एक तख़्त अतिउत्तम हज़रत सुलेमानके बैठने के लिये रक्खाथा उसीपर हज़रत सुलेमान बैठेथे और अब उसपर शहपालशाह बैठाहै और वह तख़्त सम्पूर्ण जादूका बना था और चारों कोनोंपर चार तख़्त ज़मुर्रद के रक्खे थे कि देखने से बड़ा आश्चर्य होता था कि किसी के मुख में सर्प लटकाया था कि वह कभी लीलता और कभी उगिलता था और पीठ पर फूलों के गुलदस्ते बनाकर रक्खे थे उसमें ऐसी सुगन्ध आती थी कि सूंघनेवालों का चित्त प्रसन्न होजाताथा और जब बादशाह उसपर पैर रखताथा तो वे बोलते और ऐसी

रागिनी छोड़ते थे कि सुनकर लोगों को आश्चर्य होताथा और फूलों में यह बड़ा आश्चर्यथा कि जिसप्रकार के फूलथे वैसीही सुगन्धभी आतीथी और कठरोंके सब डण्डोंपर कमल लगेथे और दोकमलों के बीच में एक दीपक गिलास अतिसुन्दरता के साथ रक्खाथा और हीरे के चार खम्भोंपर एक नमगीरा जिसमें सुराही और मोतियों की भाड़ें लटकाई हुईथीं और छतमें माणिक दीप्यमान लगेहुए खिंचाता था और तख़्त के चारों कोनोंपर अनेक प्रकार के पत्थर के गिलास थे उनपर भी जवाहिरात जड़ेहुए थे और हरएक में गुलाब केवड़ा रक्खाथा और हरएकमें पिच-कारियां लगीथीं कि उनसे लोगों का चित्त अतिप्रसन्न होताथा और ऐसे फूल फूले थे कि जिसके नाक में उनकी सुगन्ध पहुँचती थी वह हँसते २ लोटजाताथा और उस न्यायशाला के भीतर बारह सहस्र छःसौ सायबान और बारह सहस्र खम्भे और चारसहस्र डोरियां ऐसी सुन्दर उसके साथ लगीथीं कि देखने से अति आ-नन्द होताथा और जिस स्थानपर हज़रत सुलेमान की सवारी रहतीथी उसके आगे तीनकोस का घेराथा जिसमें नौबत बजती थी मानो बादल गरजताथा और उस न्यायशाला के पीछे एक स्थान ऐसा बनाथा कि जिसके देखने से चित्त अतिप्रसन्न होताथा और उसके सामने एक बाटिका अतिसुशोभित बनीथी कि वृक्षोंपर जवा-हिर के पक्षी बुलबुल, पिड़की, कोयल, तूती आदिक बैठेहुए अपनी बोली बोल रहे थे कि सुननेवालों का चित्त अतिप्रसन्न होताथा और नहरें जो बाटिका के समीप थीं उनपर बकुले, सुरख़ाब, टिटहरी, मछरंगे जवाहिरके बनायेहुए बराबर से रक्खे हुएथे और देखने से यही बिदित होताथा कि मानो पक्षी जानदार फिर रहेहैं और तीतर, बटेर, कबूतर आदिक न्यायशाला की दीवारोंपर बराबरसे फिररहेथे अमीर इन सब तमाशों को देखकर बड़े आनन्द में हुए और यह सुनिये कि एक शह-पाल की बेटी आसमानपरी नामे शहपाल के तख़्त के पीछे परदा डालेहुए अपने तख़्तपर बैठी थी उसने जो उस परदे की आड़से अमीर की सूरत देखी तो अति लोभित होकर उसके साथ ब्याह करने की इच्छा की तत्पश्चात् जब एक दिन और रात्रि व्यतीत हुई तो अब्दुलरहमान ने शहपाल से कहा कि मैं केवल नौ दिनको कहकर अमीर को लायाहूं इससे अधिक लगे तो मेरे शिरपर बदनामी है शहपाल ने अमीर से कहा कि साहबकिरां जैसा मैं इन देवों के हाथ से दुःख उठा रहाहूं ऐसा दुःख कभी नहीं पड़ा जो आप कृपा करके इन लोगों को मारकर मेरे दुःख को छोड़ायें तो सदैव का दुःख दूरहोजावे और आपकी सेवामें मैं सदैव प्रवृत्त रहूंगा अमीर ने कहा यह क्या बातहै ? जो ईश्वरकी कृपा होगी तो दमभर में एक२ का शिर काटकर आपका देश आपके आधीन न करदिया तो हमज़ा नाम न रक्खूंगा और मुझे किसी बस्तु की आवश्यकता नहीं है आप युद्ध का डङ्का बज-वाइये तो आपको ईश्वर की रचना का हाल देखाऊं शहपाल ने अतिप्रसन्न होकर अब्दुलरहमान को आज्ञादी कि वे चारों तलवारें जो सुलेमान के कमर की रक्खी

हुई हैं उनको उठालाओ और अमीर के सम्मुख रखदेओ जो इनके पसन्द हो वह लेलेवें अब्दुलरहमान ने लाकर हाज़िर किया शहपाल ने अमीर के सामने रखकर कहा कि जिसको आप पसन्द करें लेवें और हरएक का नाम बतलाया कि एकका नाम समसाम दूसरी कमकाम तीसरी अकरब चौथी ज़ुलहिजाम है अमीर ने अकरब सुलेमानी को लेकर अपनी कमर में लगाया तब सब जितने परीज़ाद खड़ेथे हँसकर शहपाल को मुबारकबादी देनेलगे अमीर ने यह हाल देखकर अब्दुलरहमान से पूछा कि यह क्या बात है? उसने कहा कि सुलेमान ने आज्ञादी थी कि जब देवोंको मारना तो इसी अकरब को लेकर मारना सो आपने भी उसीको लिया तो लोगों को खुशी हुई कि वे देव अब अवश्य करके मारेजायँगे आपने भी बे जानेही उसी तलवार को उठाया तब अब्दुलरहमान ने कहा कि एक बात और शेष रही है उसको भी तै करलीजिये अमीर ने कहा वह क्या है? उसने कहा कि चनार का वृक्ष है वह सर्वत्र परदेकाफ़ में प्रसिद्ध है कि जो कोई इस वृक्षको अकरब सुलेमानी से एकबार से काटेगा वही इन देवों को भी मारेगा अमीर ने उस वृक्ष के नीचे जाकर एक वार जो लगाया तो साबुन के तार की तरह से तलवार पार हो गई परन्तु वृक्ष गिरके पृथ्वीपर न आया तो अमीर ने विचार किया कि वृक्ष नहीं कटा अति संदेह में हुए अब्दुलरहमान ने अमीर को मुबारकबादी देकर कहा कि वृक्ष सब कटगया है इसको हिलाकर देख लीजिये अमीर ने एक धक्का जो मारा तो वृक्ष बड़ा शब्दकर पृथ्वीपर गिरपड़ा शहपाल ने अमीर के हाथों को चूमा और अतिप्रसन्न होकर स्थानपर लाये और कहने लगे कि निश्चय है कि तू हज़रत सुलेमान है और तेरे सिवाय और किसी की ताक़त नहीं है कि देवों का बध करे और ऐसे प्राण जानेके स्थानपर ऐसी बहादुरी और हौसिले से पैर रक्खे अमीर ने कहा कि जो ईश्वर ने आपकी कृपा से चाहा तो केवल देव तो क्या है सब देवों का शिर काटकर इस मैदान को पाटता हूं परन्तु अब आप अपनी सेना को आज्ञा देवें कि वह गुलिस्तानअरम से निकलकर बाहर मैदान में पड़े और युद्ध का डङ्का बजावे और अपने युद्ध करने की युक्ति हमको देखलावे शहपाल के आज्ञा देते ही सब सेना गुलिस्तानअरम से बाहर निकलकर डेरा डालकर पड़ी और शहपाल भी उन्हीं के साथ आया जब यह वृत्तान्त देव को पहुँचा कि शहपाल ने परदे दुनिया से एक मनुष्य अतिबहादुर और बलवान् हमलोगों के मारने के लिये बुलाया है वह आकर मैदान में पड़ा है और युद्ध का डङ्का बजवाता है देव ने जब यह हाल सुना एकबारगी क़हक़हा मारकर हँसनेलगा कि चलो इसी बहाने से वह नगर से निकला और कहां मनुष्य कहां देव कहीं वह बराबरी करसक्ता है यह कहकर अपनी सेना को तैयार कराकर युद्ध का डङ्का बजवाने की आज्ञा दी तब शहपाल शाह ने भी अपनी सेना में डङ्का युद्ध का बजवाया दोनों तरफ़ लड़ाई का सामान सब रात्रि को हुआ किया जब प्रातःकाल हुआ वह देव कई लाख देव साथ लेकर

निकला तो देखा कि कोई देव तो शेर की खाल कोई अजदहे की कोई हाथी की खालें गले में डाले हुए हैं और शिरपर फ़ौलादी खोल दिये हैं ज़ंजीर तोड़े फ़ौलादी कमर में बांधेहैं और गलोंमें खोपड़ियों के हार डाले बरछी तलवार चकमाक आदि शस्त्र धारण किये हुए युद्ध के लिये तैयार हैं परन्तु शहपाल को देखकर दङ्ग होगये कि एक तख़्तपर आप सवार और एक पर साहबकिरां को सवार करके देव की सेना की तरफ़ चला कि देव इस सामान को देखकर डरे और अपने जीवन से हिरास हुए देवों ने जो साहबकिरां को देखा तो बड़े आश्चर्यरूपी खेल करने लगे कि कोई तो मैदान में आकर चूतर पीटने की कला करता है कोई अपनी दाढ़ी पकड़कर बैठकें करता है कोई कूदकर आसमान की तरफ़ जाता है और वायु में उड़ता है और वहां से कला मारते हुए पृथ्वीपर आता है और कोई दांत निकालकर अमीर को दिखाता है यह सब देखकर अमीर हँसनेलगे कि देखो ये कैसे पागलपन का काम करते हैं इसके पश्चात् एक देव अहरमन अफ़रेत का पिता जो पांचसौ गज़ का लम्बा था मैदान में आकर ललकारा और ऐसा चिल्लाया कि तमाम परदेकाफ़ हिलगया और कहा कि वह कोचक सुलेमानी कहां है ? जो अपने को अति बलवान और बहादुर समझकर हमसे लड़ने को परदे दुनिया से आया है हमारे सामने आवे कि उसको मौत का मज़ा चखाऊं अमीर शहपाल से आज्ञा लेकर मैदान में निस्सन्देह होकर आये और एक बार ईश्वर का नाम इस ज़ोर से लिया कि सब लोग कांप गये अहरमन बोला कि तू इतने से रूपपर ऐसा चिल्लाता है कि हमको इस शब्द से डराता है अच्छा है शस्त्र को मार देख अमीर ने कहा कि मैं तो पहले कुछ कार्य नहीं करता और यही हमारे पुश्तहापुश्त चली आती है प्रथम तू वार चला पीछे हम चलावेंगे और अपनी बहादुरी तुझे दिखलावेंगे वह बोला कि तुझ पर जो मैं पहलीवार लाऊं तो सब देव आदि हँसेंगे और तू कब बचेगा कि फिर तू मुझपर वार चलावेगा अमीर ने कहा क्या जिस समय डील डौल की बांट होती तू वहां था और सिवाय इसके तू नहीं जानता है कि मैं तेरे मारने के लिये परदे दुनिया से आयाहूं और तेरे लिये मौत लायाहूं यह सुनकर हरमन ने एक तलवार अमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोककर अकरब सुलेमानी कमरसे निकाल कर कहा ओ नापाक ! ख़बरदार हो कि मैं भी वार चलाता हूं और नापाक रुधिर से अपनी तलवार को डुबोता हूं यह कहकर एक हाथ उसकी कमर पर ऐसा मारा कि दो टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब शहपाल ने ईश्वर का गुणानुवाद किया और परीज़ादों को बाजन बजाने की आज्ञा दी अफ़रेत ने एक आह करके कहा कि तूने बड़ा ग़ज़ब किया कि मेरे पिता को मारडाला देख तुझे भी कैसा दिखलाता हूं यह कहकर एक देव को जो हरमन से भी बलवान् था अमीर के सामने भेजा साहबकिरां ने उसको भी मारा यहां तक कि थोड़े समय में नौ देवों को जो अति बलवान् थे मारडाला तब तो अफ़रेत ने कांपकर डङ्का लौटजाने का बजवाया और

अपने पिता की लोथ उठाकर अपनी राह ली शहपाल जवाहिर और अशरफ़ी अमीर की नेवछावर में लुटाते हुए गुलिस्तान अरम में आये और अमीर की बहादुरी की बड़ी प्रशंसा करनेलगे ॥

वृत्तान्त ख्वाजे अमरू का ॥

अब थोड़ासा वृत्तान्त ख्वाजे अमरू का सुनिये कि जब बख़्तियारक अमरू के हाथसे घायल होकर हरमन के पास गया तो दज़ादजहपोश ने कहा कि जो आज्ञा हो तो तबलजङ्ग बजवाया जावे अभी चलकर अमरू को मारें कि फिर ऐसा कभी न करे हरमन ने कहा कि मुझे किसी को मारने की इच्छा नहीं है और युद्ध करने की कुछ आवश्यकता नहीं है केवल यह कियाजावे कि पहरा क़िले के चारों तरफ़ फिराकरे कि कोई वस्तु क़िलेमें न जानेपावे कि भूख और प्याससे दुःख उठावें और बन कटाकर रणगढ़ा और सीढ़ियां बनवाई जावें जब संयोग मिले क़िलेपर लगाकर चढ़चलें यह बात सबको पसन्द आई और सीढ़ी और रणगढ़े बननेलगे चार महीने के बाद तैयार हुए तब हरमन ने आज्ञा दी कि रणगढ़े क़िले के समीप गड़वादो और सीढ़ियां भी उस स्थानपर रखकर तबलजङ्ग बजवाओ कल हम क़िले पर चढ़ाई करके क़िलेवालों को अपनी तलवार से मारेंगे यह सब वृत्तान्त अमरू ने सुना कि हरमर ने रणगढ़ा क़िले के समीप रक्खा है और सीढ़ी भी बनवाई हैं सब तैयारी युद्ध की करचुका है कल सेना को लेकर हमारे क़िले पर चढ़ेगा तब अमरू ने आदीसे कहा तुमभी डङ्का सिकन्दरी बजवाओ मैं थोड़ीदेर सैर को जाताहूं अभी थोड़ीदेर में आऊंगा यह कहकर पोशाक शाही उतारकर बहुरूपियोंकी पोशाक पहिनकर एक सिपाही का भेष धारण करके रणगढ़े के पासगया तो देखा कि चारसौ सिपाही हथियार बांधे उसके चारों तरफ़ फिर रहे हैं जाकर कहा कि हरमर ने हमको भेजाहै कि जाकर देखआओ रणगढ़े के पास कौन २ सिपाही ग़ाफ़िल है और कौन होशियार है तुम सबके नाम लिखलाओ जो ग़ाफ़िल हैं उनको दण्ड मिलेगा और जो २ होशियार हैं उन लोगों को कुछ इनाम मिलेगा सबलोग अमरू के पैरोंपर गिरनेलगे कि आप जाकर कहदीजियेगा सब अपने २ कामपर होशियार हैं अमरू वहां से अपने क़िले में आया कईसौमन मिठाई दारू बेहोशी में मिलाकर बहुरूपियों कीसी सूरत बदलाकर उनके ऊपर रखाकर लेआया और कहा कि यह शरबत हरमर ने तुम लोगों के वास्ते भेजा है परन्तु मैं तुम्हारे सरदार को नहीं पहचानताहूं वही आकर सबको भाग लगादेवे एकने आकर कहा कि मैंही सरदार हूं हरएक का हाल जानताहूं और शातिर मेरा नाम है और यही मेरा काम है यह अँगूठी फ़ीरोज़ेकी निशानी देना आपका क्या नाम है और क्या कार्य आपकरतेहैं? अमरूने कहा कि मतहर अक़ीक़ मेरा नामहै और मैं दारोग़ाफ़रशख़ाने का दामाद हूं बहुत से लोग मेरी आज्ञा में हैं यह कहकर वह अँगूठी उसने लेली और शरबतके घड़े देदिये सरदारने वह सबको देदिया और आपभी खाया जितने

प्यादे थे सभोंने अच्छीतरह से ओठ चाट २ कर मिठाई खाई पहले तो बड़ामज़ा मिला परन्तु थोड़ेही समय में सब लोटगये अमरू ने जैसे हाल सुना जाकर सब का शिर खञ्जर से काटकर रणगढ़े और सीढ़ियों को बटोरकर अग्नि में भस्म करके अपने क़िले में आकर निस्सन्देह होकर सोरहा और रात्रिभर में जितनी सीढ़ियां और रणगढ़े थे सब जलकर राख होगये जब प्रातःकाल हुआ हरमर चार हाथी के तख़्तपर सरदारों और सेना के साथ इस बिचार से कि आज चलकर सीढ़ी लगाकर क़िले में सरदारों और सेनाको चढ़ाकर मुसल्मानी सेनाको मारकर मलका मेहरनिगार को निकाललावें थोड़ीदूर जैसे आगे बढ़ाथा कि दूतों ने आकर हाल दिया कि रणगढ़ा और सीढ़ियां जली पड़ी हैं और सब चौकीदारों के शिरकटेपड़े हैं यह सुनकर हरमर अतिक्रोधित हुआ और बख़्तियारक से कहनेलगा देखते हो अमरू ने चार महीनेकी मेहनत मेरी सब मिट्टी में मिलादी बख़्तियारक बोला कि आप अच्छीप्रकार से जानते हैं जैसा वह है कि उसकी युक्तिको कोई नहीं पहुँचता है अब सवार तो होहीचुके हो चलके क़िलेपर युद्धकरो शायद बिजय होजाय हरमरने क़िलेके समीप आकर दशसहस्र सवार क़िलेके चारोंतरफ़ घेरनेकी आज्ञादी अमरूने जो देखा कि बड़ी सेनाहै इससे हम युद्ध से बिजय न पावेंगे तो उसने भी चारों तरफ़ से तीर क़ारूरे कङ्कर पत्थर मारनेका आरम्भकिया और ऐसा आतशबाज़ी का मेह बरषाया कि उसकी सेना अग्नि से घबड़ागई और हज़ारों जलकर राख होगये और शेष पीछेको हटी तब हरमरने दज़ाज़िरहपोश से कहा कि तुम जो उस दिन कहते थे कि जो आज्ञा हो तो अभी जाकर इसी तीर से मुसल्मानों को मारकर मलका मेहरनिगारको निकाललेवें सो आज जाओ और मुसल्मानी सेनाको मारकर मलका को लेआओ तब उसने कहा कि आपने कब आज्ञा दी है और मैंने नहीं की तुरतही अपने चार सौ सवार लेकर क़िले की ख़न्दक़ पर जापहुँचा आप वह घोड़े को कुदाकर दरवाज़ेपर होरहा परन्तु शेष सवार अग्नि के कारण न जासके तब अमरू ने आतशबाज़ी उड़ाकर सिपाहियों को तो हटादिया परन्तु दज़ा ज़िरहपोश अपनी जवांमर्दी से दरवाज़े पर खड़ारहा और पैर पीछे को न हटाया बख़्तियारक ने कहा कि दज़ाज़िरहपोश बड़ा बहादुर और दिलेर हक़ीक़त में है उस ने जो कहा था सो किया परन्तु क्या करे वह अकेला उसकी सेना अमरू की आतशबाज़ी से आगे नहीं बढ़सक़ी है यह उन्होंने अच्छीबात नहीं की अब आप अपनी सेना को आज्ञा दें कि वह जाकर उसकी सहायता करे और इस समय मरनेसे न डरे नहीं तो वह माराजायगा और जो आपकी सेना सहायता करेगी तो अभी क़िला बिजय होजायगा हरमर ने अपनी सेना से कहा देखो वह कैसा अपनी बातपर अड़ा है तुमलोग जो सहायता करो तो अभी क़िला बिजय होजाय यह सुनकर जितने सरदार थे सबोंने घोड़ोंको दौड़ाकर ख़न्दक़पर पहुँचाया परन्तु उससे आगे न बढ़सके अमरू दीवार के ऊपर आकर दज़ासे कहनेलगा कि

हे बहादुर ! तू क़िला तो लेचुका और हमारी बिजय हुई अब मैं तुमसे बिनय करता हूं कि मुझे शाहज़ादे के पास लेचल और मेरा अपराध क्षमा करादे तो मैं तेरा बड़ा गुण मानूंगा और क़िला ख़ाली करके मेहरनिगार को तेरे साथ करदूंगा द-ज़ाहने उत्तर देने के लिये ढाल को मुख के आगे से हटाया और घोड़े को थोड़ासा बढ़ानाचाहा कि अमरू ने एक पत्थरका टुकड़ा नोकीला चरख़ी पर घुमाकर ऐसा मारा कि उसका प्राण निकलगया और मरकर ख़न्दक़ में गिरपड़ा तब जो उसके सिपाही खड़े थे उसकी लोथ लेकर हरमर के पास पहुँचे तब वह देखकर अति व्याकुल होगया कि बड़ा बहादुर सरदार मारागया और व्याकुल होकर बख़्ति-यारक से कहने लगा अब क्या करूं? कि अमरू से बिजय पाऊं बख़्तियारक ने कहा इस समय सेना व्याकुल होगई है लौट चलिये कल फिर कोई उपाय विचारकर विजय कीजियेगा तब हरमर ने डङ्का लौटने का बजाने की आज्ञादी सारी सेना ने रास्ता लिया और हरमर ने भी गिरते पड़ते अपने डेरे में आकर एक पत्र में सब बृत्तान्त लिखकर बादशाह नौशेरवां के पास भेजा जब वह पत्र बादशाह के पास पहुँचा पढ़कर बुज़ुरुचमेहर से कहनेलगा कि देखतेहो अमरू ने मेरे कैसे २ पहल-वानों को मारा है और मुझे ज़रा भी नहीं डरता बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि सत्य करके वह बड़ा दुष्ट है वह इस बात को कुछ नहीं विचारता है परन्तु आप शाह-ज़ादे को लिख भेजें कि तुम लड़ो भिड़ो नहीं किसीतरह से अमरू को पकड़लाओ यह बातचीत होहीरही थी कि सरदारों ने नौशेरवां के सामने आकर कहना शुरूअ किया कि देखिये बीलम और कीलम और दज़ाह पहलवानों को बधकरना और हरप्रकार से लज्जित करना उचित नहीं था अब जबतक हम इसका बदला न लेंगे और उसको दण्ड न देलेंगे तबतक हमको नींद न आवेगी बादशाह ने उन लोगों को समझाकर कहा कि देखो अख़ज़रफ़ीलगोश जो तुम लोगों का अतिबलवान् सरदार है उसे सत्तरसहस्र सवार के साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है और हरमर को लिख दिया है कि तुम घबराकर लौटने की इच्छा न करना और किसीतरह से न डरना हमने तेरी सहायता के लिये अख़ज़रफ़ीलगोश को भेजा है और उनको हरप्रकार से समझादिया है तत्पश्चात् नौशेरवां दरबार से उठकर रात्रि के समय महल में गया तो महरअंगेज़ ने बादशाह को व्याकुल देखकर पूछा कि आप क्यों व्याकुल हैं? तब बादशाह ने कहा कि तुम्हारी बेटी के कारण सदैव व्याकुल रहताहूं कि हरमर को हमने भेजा है उसे अमरू तीनबार पराजय करचुका और कैसे २ पहलवानों को उसने मारा है कि मेरा जीव जानता है महरअंगेज़ ने कहा कि बादशाह यह युक्ति उसके बध करने की उत्तम नहीं है ख़्वाजेनिहाल को सौगात लेकर जिसने मलका को पाला है भेजिये और एक पत्र उसको लिखिये कि बड़े रंज की बात है कि तुम्हारे माता पिता तुम्हारी प्रीति से मररहे हैं और कुछ नहीं सूझता कि एक दफ़ा हमलोगों को अपनी सूरत देखलाजाओ कि हमारी जान

बचे और अमरू के लिये कुछ रुपया भेजो कि वह लोभ में आकर क़िले में जाने देवे और जिस समय क़िले के भीतर पहुँचे कुछ दिन रहकर उससे मिलकर विष देवे और दरवाज़ा क़िले का खोलकर सेना को बुलाकर मुसल्मानों को मारडाले और मेहरनिगार को लेकर चलाआवे और हमको तुमको इस जुदाई के दुःख से छोड़ावे बादशाह ने इस बात को पसन्द किया और ख़्वाजेनिहाल को तोहफ़ा और नक़द रुपये देकर मक्के को रवाना किया॥

जाना ख़्वाजे निहाल का मलकामेहरनिगार के लाने को मक्के की तरफ़ और उसका माराजाना अमरू के हाथ से॥

लेखक लोग लिखते हैं कि जिस समय बादशाह ने ख़्वाजेनिहाल को मक्के की तरफ़ भेजा उसी समय एक पत्र लिखकर कि ऐ पुत्र हरमर! परसों मैंने अख़ज़र-फ़ीलगोश को सत्तर सहस्र सवार के साथ भेजा है और आज ख़्वाजेनिहाल को इस प्रकार से समझाकर भेजताहूं इस प्रकार से पत्र लिख एक सिपाही के हाथ हरमर के पास मक्के को भेजा और उसमें यह भी लिख दिया था कि किसी युक्ति से ख़्वाजेनिहाल को क़िले के भीतर पहुँचादेना और जब वह पहुँच जावे तो तुम अख़ज़रफ़ीलगोश को साथलेकर क़िला तोड़कर मलका को निकालकर चले आना अब ख़्वाजेनिहाल का वृत्तान्त सुनिये कि वह अख़ज़रफ़ीलगोश के एकदिन पीछे चला परन्तु अतिशीघ्र चलकर अख़ज़रफ़ीलगोश से जाकर मिला और उससे सब वृत्तान्त बयान किया और दोनों साथ मिलकर चले और तीन महीने के बाद मक्के में पहुँचकर हरमर से मुलाक़ात की और सब पत्र बादशाह को देकर ज़बानी भी सब बयान किया हरचन्द कि वह सब वृत्तान्त उस पत्र से जो सिपाही के हाथ बादशाह ने भेजा था सुनचुके थे परन्तु इन पत्रों को पढ़कर उन लोगों को ख़िलअत देकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर बहुत प्रसन्न किया और वे लोग जो मार्ग के थके थे शीघ्र उठकर अपने डेरे में आकर आराम करनेलगे यह वृत्तान्त अमरू के दूतों ने उस जगह पहुँचाया तब अमरू ने अपने दिल में विचार किया कि देखें कौन अबकी बार सरदार सेना का है धोबी की सूरत बनाकर हरमर की सेना में गया और जहां दो चार मनुष्य बातें करते थे वहां खड़ा होकर सुनने लगा यहांतक कि एक स्थानपर चार पांच सिपाही बातें करते थे कि अबकी दफ़ा नौशेरवां ने अख़-ज़रफ़ीलगोश को सत्तर सहस्र सेना के साथ हरमर की सहायता के लिये भेजा है निश्चय है कि अबकी क़िला बिजय होकर अमरू माराजावे एक ने कहा कि ख़्वाजे निहाल भी आये हैं दूसरे ने कहा कि वह युद्ध करने को नहीं आया परन्तु बाद-शाह ने उसे भेजा है कि तुम किसी तरह से क़िले में जाकर अमरू को मिलकर विष देकर मारडालो और मलका को निकाल लाओ तो तुमको बहुत इनाम और ख़िलअत दीजावेगी तब सब सिपाही कहने लगे कि यह युक्ति अमरू के मारे कब होनेपावेगी वह ऐसा असामी नहीं है कि किसी के जाल में आकर माराजावे और

मलाजरफ़ीलगोश चाहें कुछ युक्ति करें परन्तु ख़्वाजेनिहाल की युक्ति न होने पावेगी यह सुनकर अमरू आगे बढ़ा और धोबी का भेष बदलकर साईस का रूप धरकरके तोबड़ा हाथ में लेकर पुकारनेलगा कि भाई! ख़्वाजेनिहाल का डेरा बता दो घोड़े को दाना लेने आया था अब रात्रि को रास्ता नहीं पाता घोड़ा दाने के लिये टापता होगा कोई कृपा करके मुझे वहाँ पहुँचा देवे एक मनुष्य ने कहा चल भाई! तुझे ख़्वाजे का डेरा बतादूं उठकर थोड़ी दूर जाकर बतला दिया कि देख वह डेरा ख़्वाजेनिहाल का दिखाई देता है, जिसकी तलाश में तू व्याकुल था अमरू ने अपना असलीरूप धरके ख़्वाजेनिहाल के डेरे पर जाकर चोबदार से कहा कि ख़्वाजे को ख़बर दो कि अमरू तुम्हारी मुलाक़ात को आयाहै और एक पैग़ाम तुमको लेआया है ख़्वाजे यह सुनकर अतिव्याकुल होगया कि इस समय अमरू क्यों आया है परन्तु उठकर अमरू को लेआया और अपने बराबर मसनदपर बैठाकर कहा कि आपने बड़ी कृपा की है कि इस नीच मनुष्य के पास आये परन्तु जो आप आज न आते तो कल मैं आपकी मुलाक़ात को क़िले में आता और आपका सब सामान देखकर प्रसन्न होता क्योंकि ठिकाना ज़िंदगी का कुछ नहीं है मित्रों से मिलना उचित है अमरू ने रोनी सूरत बनाकर कहा कि क्या करूं? ख़्वाजे! मैं बड़े दुःख में पड़ाहूं कि प्राण जाया चाहता है ख़्वाजेनिहाल ने कहा क्या है? बतलाइये तो अमरू बोला कि कृपाकरके मेरा वृत्तान्त सुनिये और इसके दूर होनेकी कोई युक्ति बतलाइये वृत्तान्त यह है कि हमज़ा अठारह दिनका वादा करके परदेकाफ़ को गया है परन्तु उसको इतने दिन हुए मालूम नहीं होता कि वह मारागया या ज़िन्दा है और अब मलकामेहरनिगार अकेली व्याकुल रहती है अब मुझे कुछ नहीं सूझता उसे हरमर को सौंपदेता हूं तो डरता हूं कि मैंने बहुतसे लोगों को माराहै बादशाह काहेको जीता छोड़ेगा और जो बादशाह अपनी दयालुता से मेरा अपराध क्षमा भी करेगा तौभी बख़्तियारक और मल्तक के मारे काहे को मेरा प्राण बचेगा सो आज विचारकर आया था कि चलकर हरमर के पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमाकराके मलका को उनको सौंप देवें और हम जिधर सुभीता होगा उधर चलेजायँगे परन्तु सेना में आकर आपके आने का हाल सुना सो आपके समीप आया हूं सो अब आप मेहरनिगार को लीजिये मैं जिधर सुभीता होगा उधर जाऊंगा ख़्वाजेनिहाल यह बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और ख़्वाजे अमरू को छाती से लगाकर कहने लगा कि किसी का ज़ोर है कि हमारे तुम्हारे विषय में बादशाह से बुराई करे और बादशाह को तुम्हारे तरफ़ से नाराज़ करे और यह मैं ज़िम्मा करताहूं कि तुम्हारा अपराध क्षमाकराकर मक्के की गद्दी तुमको बादशाह से दिलवाऊंगा और मुझे इसपर सत्य समझना अमरू ने कहा आपसे मैं इससे अधिक भरोसा रखता हूं यह कहकर झोली से तरमे निकालकर दिये और कहा कि यह मक्के का परसाद है इसको आप खाइये

ख़्वाजेनिहाल की जो मौत आई तो बेसन्देह खागया और यह कहकर मैं मर जाता हूं और मलकामेहरनिगार को तुम्हारे पास लिये आता हूं बाहर आकर सब शागिर्दपेशा के लोगोंको मक्के का परसाद देकर उसी जाल में फँसाया ख़्वाजे निहाल अपने चित्त में कहनेलगा कि तेरा बड़ा प्रताप है कि घर बैठे सब कार्य सिद्ध होगया थोड़ी देरके बाद बाहर के सिपाही और डेरे में ख़्वाजेनिहाल बेहोश होगये अमरू ने जेब से छुरी निकाल कर सब सन्दूकचों को तोड़कर जो रुपया था अपनी जेब में रक्खा और छोटासा सन्दूक़ जो अच्छीतरह से बन्द था उसको जो खोला तो उसमें एक पत्र बादशाह की तरफ़ से मलका के नाम था उसको भी लेकर जेब में रक्खा और सब सन्दूक़ बन्द करके ताले लगादिये और ख़्वाजेनिहाल को एक गढ़ा खोदकर जीता उसी में गाड़दिया और आप उसी की सूरत बनकर उसके पलँग पर सोरहा और सब अपना कार्य पूर्ण करलिया हरमर का हाल सुनिये कि प्रातःकाल उठकर बख़्तियारक से कहा कि आज मैं अख़्ज़रफ़ीलगोश और ख़्वाजे निहाल की मेहमानी करने का विचार करता हूं उसने कहा कि इससे क्या उत्तम है यही आपको उचित है तब हरमर ने जशन की तैयारी की और मेहमानी का सामान इकट्ठा करने की आज्ञा दी और अख़्ज़रफ़ीलगोश और ख़्वाजेनिहाल को बुलवाया तो अख़्ज़रफ़ीलगोश साथ अपने सरदारों के गया और थोड़ी देरके बाद बनाहुआ ख़्वाजेनिहाल भी जाकर साथ अदब के शाहज़ादे के सामने सलाम करके खड़ाहुआ हरमर उसकी बातों से अतिप्रसन्न हुआ और ख़िलअत देकर बड़ी कृपा से कहा कि हे ख़्वाजेनिहाल! अदब तू अब करचुका अब आकर सभा में बैठो तब फिर उस बहुरूपिये ने कहा कि मेरा मुँह है कि आप के सामने बैठूं हरमर ने हाथ पकड़ खींचकर अपनी बराबर कुरसीपर बैठाला और कहा इस समय अदब को ताक़ के ऊपर रक्खो तब गाने बजानेवालों ने अपने २ नाचरङ्ग करने का आरम्भ किया और सभावालों को अपने शब्द और गतिसे लोभाने लगे और सबका मन उसी नाच रंग में लगारहा और जब रातहुई मशालचियों ने मोम की बत्तियां दोशाख़ों तिशाख़ों पंशाख़ों में चढ़ाकर रोशन किया तब हरमर ने एक गिलास शराब का अख़्ज़रफ़ीलगोश को अपने हाथ से उड़ेलकर दिया उसने भी एक गिलास हरमर को दिया उसदिन यह था कि जो एक मनुष्य दूसरे को पिलावे तो दूसरा भी उसको पिलावे इसीतरह से प्रत्येक दूसरे को पिलाने लगे जब पहर रात्रि बीती बनेहुए ख़्वाजेनिहाल ने विनय करके कहा सेवक इससमय सब लोगों को शराब पिलाया चाहता है यह सभा इस समय अति उत्तम है हरमर ने कहा आपही को मुबारक रहे तुम्हीं साक़ी बनकर सबको पिलाओ ख़्वाजेनिहाल असली ने गिलास और सुराही हाथ में लेकर प्रथम हरमर को एक गिलास पिलाया और अपनी युक्ति से उसे बेहोश किया तत्पश्चात् सभा में घुस कर सबको दीवार तक तो वही शराब पिलाता रहा तीसरी बार बेहोशी दारू मिलाकर सब

लोगों को बेहोश किया जब उसने देखा कि अब सभाभर बेहोश होगई है गिलास और सुराही लेकर बाहर निकला और सब शागिर्दपेशों को पिलाकर बेहोश किया तब डेरे में आकर सब असबाब शागिर्दपेशे की बोरी तक उठाकर अपने जेब में किया और अख़ज़रफ़ीलगोश की दाढ़ी मूछ मूंड़कर सात रङ्ग के टीके जिस तरफ़ की मुड़ी थी देकर दूसरी तरफ़ मूछ में घुंघुरू बांध दिया और गालों में स्याही बाल लगाकर एक खाल उढ़ादिया बख़्तक की मूछ दाढ़ी मूंड़कर सेंदुर की टिकुली देकर स्त्री का स्वरूप बनाकर दोनों पैर गले में बांधकर अख़ज़र-फ़ीलगोश को एक पलँगपर लेटाकर उसको भी उसीके गोद में लेटादिया और सब सरदारों की दाढ़ी मूछ मूंड़कर मुखमें कालिखा लगाकर सतूनों में बांधकर आप दरवाजे निहाल की सूरत बनाहुआ अपने कार्य से छुट्टी पाकर निःसन्देह होकर अपने क़िलेमें आकर बैठा अख़ज़रफ़ीलगोश का हाल सुनिये कि जब उसकी नींद से आँख खुली तो देखा कि एक स्त्री नंगी उसकी गोद में सोरही है और अपने हाल से बेख़बर है उसने बिचारा कि शायद हरमर ने कृपाकरके मेरा थका उतारने के लिये इसको भेजा है मैंने रातभर सोकर ऐसी अच्छी वस्तु को हाथ से खोदिया प्रातःकाल सबके सामने कहेगी कि अख़ज़र हिजड़ाहै जो स्त्रीकी चाह नहीं है अभी तो सबेरा नहीं हुआ इस मजे को चखना चाहिये ऐसा बिचार करके अख़ज़र ने जो धरकर दबाया तो बख़्तियारक ने एक ऐसी चीख़ मारी कि सब जो सोते थे जागकर उठे और अपना रूप देखकर अतिलज्जित हुए और जो दरबार के लोग खम्भों में बँधे थे वे तो न उठसके पर चोबदार आदि दौड़कर डेरे में आये तो देखा कि एक मर्द स्वरूपवान् स्त्री के ऊपर चढ़ा भोगकररहाहै और किसी तरह से डरता नहीं वे लोग उन दोनों को मारनेलगे कि यह शाहज़ादे का डेरा है तुमने ऐसा काम इस में क्यों किया? तुमको अवश्य दण्ड मिलेगा इस प्रकार से शागिर्दपेशे के लोग दौड़े तब बख़्तियारक प्राण बचा उठकर भागा और अख़ज़रसे मारपीट होनेलगी कई मनुष्य अख़ज़र के मुक्कों से मरगये जब उजालाहुआ लोगों ने देखा कि अख़-ज़र है और सरदारलोग डेरों के खम्भों से बांधे हुए उलटे लटके हैं तब उनलोगों ने जाकर सब लोगों को खोला परन्तु मारे लज्जा के कोई मुखसे न बोलता था तब उनके मकानों से कपड़े लाकर उनलोगोंको पहिनाये और उनके हाथ मुख धोये तब आदमी की सूरतहुई बख़्तियारकभी हाथ मुँह धोकर अख़ज़रके पास आकर कहनेलगा कियह सब अमरूके सिवाय और कोई नहीं करसक्ताहै अख़ज़रने क्रोध करके मुखपर हाथ फेरा कि अमरू है कि मैं हूं देखो तो मैं अब उसे कैसे सिखाताहूं जो उसने हम लोगों के साथ ऐसा काम कियाहै इतने में घुंघुरू बोला और मालूम हुआ कि मुँह पर एक तरफ़ मूछ दाढ़ी नहीं है और एक मूछ में घुँघुरू बंधाहै तो वह और क्रोध में हुआ तब बख़्तियारक ने कहा देखा चाहिये कि हमारी तुम्हारी तो यह गति है हरमन और ख़्वाजेबिख़ाल का क्या हाल है? और जो रात्रि को शराब पिलाता था

वह अमरू था यक़ीन है कि ख़्वाजेनिहाल को मारकर उसकी सूरत बनाकर अमरू आया था ढूंढ़ा तो न तो अपने डेरे में ख़्वाजेनिहालहै और न उसका कुछ असबाब है और हरमर को भी उठालेगया है यह बड़ा दाग़ हमको देगयाहै अख़्ज़र ने भुंझलाकर तबलजङ्ग बजाने की आज्ञा दी और कहा कि जो क़िले की ईंटसे ईंट न बजवाई और उसकी लोथ काटकर चील कौवोंको न खिलाई और मुसल्मानों को काटकर रुधिर की नदी न बहवाई तो अख़्ज़र मेरा नाम न रखना और मुझको एकदम बे इसके किये कल न आवेगी आख़िरकार दूसरेदिन सबेरे सत्तरसहस्र अपने और तीससहस्र हरमरके सवारों को लेकर क़िले को घेरलिया और सेना से प्राणतक देने का वादा लिया अमरू ने उससमय ज़म्बील से हरमर को निकालकर देखा तो बेहोश है तब दो तीन बूंद सिरके की शरबत के उसके मुख में डाले जब वह पेटमें पहुँचे तो नेत्रोंको खोलदिया देखा कि अमरू शाहाना लिबास पहिने बैठा है और उसके चारोंओर सरदार लोग और नगरबासी हाथ जोड़े खड़े हैं और मुक़बिल बारह सहस्र तीरन्दाज़ लैसकिये अपने पहरेपर खड़ा है और हर एक स्थानों पर पहलवानलोग मुरचोंपर खड़े हैं और बरक़न्दाज़ आदिक क़िलेकी दीवारों पर खड़े हैं और अपनेको गिरफ़्तार देखकर जीवका न भरोसा देखकर रोने लगा और डरसे व्याकुल होकर इधर उधर देखने लगा जब अमरू ने उसको व्याकुल देखा तो उसको समझाने लगा कि हे शाहज़ादे! तू न डर मैं तेरे साथ किसी तरह की बदी न करूंगा तुझे किसी तरह का दुःख न दूंगा परन्तु तीन प्रश्न मैं करता हूं उनमें से एकको भी तू मानेगा तो मेरे लिये उत्तम होगा उसने कहा वह क्याहै? बतलाओ तो मैं सुनकर उनका उत्तर दूंगा अमरू ने कहा प्रथम तो यह है कि तू मुसल्मान होकर मुसल्मानी सेना का सरदार बनकर रह हरमर ने कहा यह मुझ से न होगा कि पुराने धर्म को छोड़कर नया अख़्तियार करूं अमरू ने कहा कि तुम मुसल्मान होना उत्तम नहीं समझते कि इस संसार में भी अच्छी तरह से रह कर बाद मरनेकेभी क़बर में जाकर आराम से सोवैं दूसरा प्रश्न यह है कि तू जाकर बादशाह को समझादे कि जबतक अमीरहमज़ा परदेकाफ़ से न आवे तबतक वह मुझसे युद्ध करनेको किसीको न भेजे क्योंकि हमज़ा मलका मेहरनिगार को मुझे सौंप गया है मैं उसके आनेतक उसकी रक्षा करने में किसी प्रकार से कोताही न करूंगा जब वह आवेगा तब जैसा जी बादशाहका चाहेगा वैसा करेगा और जो न मानेगा तो नहीं मालूम कि क्या मुझसे बदख़्वाही होजावे कि बादशाह नाराज़ हों और इस समय तेरे साथ जो जी चाहे वह करूं किसीका डर नहीं है हरमरने कहा दूसरा सवाल तेरा होसक्ता है बादशाह मानलवे अमरू ने कहा मैं जानताहूं कि बादशाह इसको न मानेगा और जो बादशाह मानेभी तो बख़्तक और बख़्तियारक न माननेदेवेंगे और क्यों अपनी बदज़ाती से बाज़ आवेंगे इसलिये इसकोभी मैं छोड़ताहूं तीसरा सवाल मेरा यह है कि अब तुम मुझसे कभी युद्ध करने को न

लेना और जो करोगे तो फिर शिकायत न करना हरमर ने कहा कि मैं सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुमसे कभी युद्ध करने का नाम न लूंगा इतनी बातें होरहीथीं कि अख़्ज़रफ़ीलगोश सिपाही लेकर क़िलेके सामने आपहुँचा अमरू ने देखकर हरमर को क़िलेकी दीवारपर खड़ा कराकर अख़्ज़रसे कहा कि जो एक सिपाही भी क़दम आगे बढ़ावेगा तो मैं हरमर का शिर काटकर इस खन्दक़ में डालदूंगा पीछे जो चाहे वह होगा बख़्तियारक ने अख़्ज़रसे कहा कि जो वह करता है उसका कुछ आश्चर्य नहीं है जो हरमर को मारडाले इससे उत्तम है कि डङ्का लौट का बजवाकर फिर चलें नहीं तो हरमर के मारडालने का डर है तब वह डङ्का बजवाकर अपने डेरे की तरफ़ फिरगया अमरू ने एक ख़िलअत उसके योग्य पहिनाकर घोड़े पर सवार करा कर उसकी सेना में भेजदिया और आप अमरू ने मेहरनिगार के पास आकर सब हाल उससे कहा मेहरनिगार ने प्रसन्न होकर कहा कि ऐ बाबा ! मैं रातदिन तेरी विजय का वर मांगा करतीहूं कि मैं उनलोगों की अधिक सेना से डरतीहूं हरमर का हाल सुनिये कि सेना में जाकर अख़्ज़र और बख़्तियारक से कहा कि मैंने अमरू से वादा किया है और उसने मुझसे इस बात में सौगन्द लिया है कि आज से मैं तुमसे युद्ध करने की इच्छा न करूंगा और बादशाह को भी समझादूंगा कि जब तक हमज़ा न आवे तबतक आप अमरू से युद्ध न करें पस तूभी बख़्तियारक अपनी दग़ाबाज़ी छोड़दे उसने कहा मैं आपकी आज्ञामें हूं जैसी आज्ञा हो वहीमैं करूंगा और आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगा पर अख़्ज़र ने कहा कि हम तो क़िला तोड़ने और मुसल्मानों को मारकर मलका मेहरनिगार को लेजाने के वास्ते आये हैं जबतक कार्य पूर्ण न होगा तबतक न जायँगे हरमर को उसकी बातें पसन्द न आईं और उसका कहना न माना और बोला कि मैं अच्छी तरह से देखचुका हूं कि जिसका बदन बादी होता है मोटाई के कारण कोई काम बहादुरी और जवांमर्दी का नहीं होसक्ता है ऐसा मनुष्य जो काम करता है उसमें धोखा पाता है अख़्ज़र हरमर की यह बातें सुनकर बहुत नाराज़ हुआ और कहनेलगा कि शाहज़ादे बहादुरों की आवाज़ जिससे न सुनीजाय और दिलावरों की तलवारों की चमक जिससे शत्रु के नेत्रों में चकाचौंध लगे आपको दिखाई नहीं पड़ती इस कारण से आपके दिलमें यह बात नहीं समाती है और शाहज़ादों और बादशाहोंको सिपाही से नाराज़ होना उचित नहीं है हरमर ने उसकी बातों से नाराज़ होकर उसी समय डङ्का बजवाकर मदायनकी तरफ़ कूच किया परन्तु अख़्ज़र ने डङ्का युद्ध का बजवाया और बदज़ाती से बाज़ न आया अमरू तबलजङ्ग की आवाज़ सुनकर व्याकुल हुआ कि यह क्या बात है कि अभी हरमर मुझसे वादा करगया और जाकर फिर तबलजङ्ग बजवाया यह हाल क्या है अमरू क़िले से निकलकर जो हरमर की सेना की तरफ़ गया तो मालूम हुआ कि वह अपनी सेना समेत मदायन को कूच करगया परन्तु अख़्ज़र हरमर से बिगड़कर रहगया है उसने

यह तबलजंङ्ग बजवाया है और मुझसे युद्ध करेगा अपने सिपाहियों से वादा किया है कि कल या मरेंगे या क़िला विजय करेंगे अमरू ने यह हाल सुनकर दिन तो इधर उधर में बिताया रात्रि को एक सिपाही की सूरत बनाकर अख़्ज़रकी सेनामें गया तो देखा कि हरएक सरदार युद्ध का सामान कररहा है तब अमरू छिपता २ अख़्ज़र के डेरेके पास पहुँचा तो देखा कि कई मशाल दरवाज़ेपर रोशन हैं परन्तु सब चौकीदार बेहोश होकर सो रहे हैं एक तरफ़ से परदा उठाकर अन्दर डेरेके गया तो अख़्ज़र को सोता हुआ पाया और चिराग़ बराबर से जलरहे थे चिराग़ों को चद्दर से बुझादिया केवल एकही रोशन रक्खा बग़ल में बैठकर आठ बन्द जोड़ कर अबीर बेहोशी उसमें भरकर नेत्रोंसे लगाकर जो फूंका तो सब अबीर बेहोशी की उसके दिमाग़ में समागई एक बार चीख़ मारकर बेहोश होगया अमरू ने वहां से उठकर टहलुओं कोभी बेहोश किया और सब असबाब की गठरी बांधकर ज़म्बील को दिया और अख़्ज़र को गठरी बांधकर कन्धेपर उठाया और एक डेरे का खम्भा लेकर बाहर आया और उस खम्भे को सेना के चौराहे में गाड़कर अख़्ज़र का कान काटकर उसी में बांधकर और तमाम बदन उसका कालाकर सात रंग के टीके देकर लटका दिया और एक बीते भर की मेख़ पूंछ की तरह लगादी फ़रके स्थानपर एक ताव काग़ज़पर सातरङ्ग का कुछ लिखकर उस पर चपकाकर अपने क़िले की राह ली फिर कुछ उसकी शत्रुता और सेना का डर न किया क़िले के दरवाज़ेपर आकर देखा कि कुछ लोग शोर गुल कररहे हैं यह देखकर व्याकुल हुआ कि क्या मामिला है फिर ख़ंदक़ के पार कूदकर गया तब पहरेवाले ने पुकारा कौन है ? अमरू ने कहा मैं हूं अमरू ने पूछा कि ख़ंदक़ के उस पार भीड़ कैसी है पहरेवाला बोला कि सरहंगमिश्री सत्तरसहस्र तुमन और बहुतसी वस्तु तीनसौ सिपाहियों के साथ तुम्हारे पास सौग़ात लेकर आया है अमरू यह हाल सुनकर अति प्रसन्न हुआ और सरहंगमिश्री को बुलाकर मिला और सब माल असबाब लेकर क़िले में आकर दाख़िल हुआ इसकी मुलाक़ात और माल और असबाब के लेआने से अतिप्रसन्न हुआ प्रातःकाल होतेही सरहंगमिश्री को एक बड़ी ख़िलअत जिसमें ज़रबफ़्ती और ताज़ जड़ाऊ जिसमें दो मोती लगे थे देकर साथ उस असबाब के जहरामिश्री के पास भेजा और ज़हरामिश्री उन असबाबों को मलका मेहरनिगार के पास लेगई और हरएक चीज़ उसको पृथक् २ दिखलाई मेहरनिगार ने अमरू को बुलाकर सब असबाब उसको सौंपा और जो लिबास और ज़ेवर पहिने थी वह सब उतारकर जहरामिश्री को दिया अमरू ने अख़्ज़रफ़ीलगोश का हाल जो मलका से बयान किया तो मलका हँसकर बोली कि ईश्वर ने तुझे मुसल्मानी सेना का सरदार किया है और तुझपर चालीस वलियों का साया रहता है तुम्हारी सदैव विजय हुआ करेगी और कभी किसीसे अविजय न पाओगे तब अमरू इन बातों से प्रसन्न होकर मेहरनिगार को आशीर्वाद देनेलगा और मेहरनिगार से कहा

कि मैं चाहताहूं कि इस सत्तरसहस्र अशरफ़ी में से तीस सहस्र की जिन्स मोल ले कर क़िले में रखदूं कि सब लोगों के भोजन के लिये रहे और चालीस सहस्र देकर सरहंगमिश्री को बारह हज़ार हब्श के गुलामों के सामान युद्ध के लिये गोली बारूद आदिक मोल लेने को भेजूं उनसे बड़े २ काम निकलेंगे और उनको मैं सब तरह का फ़न सिखलाऊंगा फिर देखना कि इस सेना से बढ़जायँगे मेहरनिगार ने कहा बाबा! तुम्हारी राय बहुत अच्छी है तुमसे अधिक कौन बुद्धिमान् है अब थोड़ा सा वृत्तान्त अख़ज़रफ़ीलगोशका सुनिये कि वह तो सब रात्रि पूंछ लगाये बँधापड़ा रहा और वह सतून उसीतरह से खड़ारहा और सेना में युद्ध का बाजा बजाकिया प्रातःकाल होतेही सेना तैयार होकर डेवढ़ी पर प्राप्त हुई कि सम्मुख देखा तो चौराहे पर एक मनुष्य खम्भे में उलटा लटकाया है निकट जाकर देखा तो शिर से चरणतक कालिख लगी है और पीले श्वेत काले रक्त टीके दिये हैं एक आश्चर्यरूप मनुष्य बनाहुआ है और एक कान कटा है बहुत ध्यान करके देखा कि पहले कभी इसे देखा है परन्तु न पहिंचान सके पर एक काग़ज़ जो उसके शरीर में चिपका था उसमें लिखा था कि अख़ज़र! तू हरमर से बहस करके मुझे मारने और क़िला तोड़के मेहरनिगार को लेजाने के वास्ते रहगया है इस कारण यह दण्ड तुझे दिया है कि तेरा एक कान काट लिया और तेरी गुदा में पूंछ लगाकर ऐसा आश्चर्यरूपी मनुष्य बनाया है देख सावधान हो दुष्टता छोड़कर मेरे हाथ से अपने जीव की रक्षा कर नहीं तो मुझे सब मनुष्य मित्रघातक कहेंगे ऐसेही सबलोग मुझसे डरते हैं कदाचित् तू अपने ऐसे कामों को न छोड़ेगा तो इससे भी अधिक दण्ड पावेगा उस पत्रके जो उसके देह में चिपका था पढ़नेसे विदित हुआ कि यह अख़ज़रफ़ीलगोश है अति शीघ्रतासे उसे खोलकर ख़ीमे में लाये और उसके शरीर के सब दाग़ छुटाकर उसे कपड़े पहिनाये तब वह कहने लगा कि अब क्योंकर मदायन में जाकर लोगों को मुँह दिखलाऊंगा यह कहकर एक ख़ंजर अपने पेट में मारकर मरगया और सम्पूर्ण सत्तर हज़ार सेना अख़ज़र की लोथ उठाकर मदायन की तरफ़ चली गई जब यह हाल अमरू को पहुँचा कि अख़ज़र अपने हाथ से ख़ंजर मारकर मरगया और उसकी सेना लोथ लेकर मदायन को चलीगई तो अति प्रसन्न हुआ और उसी समय काबे में जाकर निमाज़ पढ़ी और क़िले का दरवाज़ा खोलकर यह वृत्तान्त मेहरनिगार से जाकर कहा उसने भी सुनकर अति प्रसन्न होकर अमरू की विजय की मुबारकबादी देनेलगी तब अमरू ने नगरवासियों को बुलाकर सबकी मेहमानदारी की और कहा कि आपलोग कृपा करके तीस हज़ार अशरफ़ी की जिन्स भोजन के लिये मँगवादेवें उन लोगों ने कहा ईश्वर आप की सदैव विजय कियाकरे जिन्स हम लोग अतिशीघ्रही मँगवा देवेंगे परन्तु हम लोगों को इतना डर है कि जिस समय नौशेरवां अख़ज़रफ़ीलगोश की लाश देखेगा नहीं मालूम कितनी सेना भेजेगा या ख़ुद चढ़ आवेगा उस समय हमलोगों को

सिवाय प्राण देने के और न सूझेगा उससे कौन युद्ध करेगा इस कारण से आप किसी दूसरे क़िले में जिन्स रखवाकर रहिये और हम लोगों का प्राण बचाइये कि सबलोग आपको आशीर्वाद देवें और छिपे २ सहायता भी जो होसकेगी करतेरहेंगे तब अमरू ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि इस प्रकार से नगरवासी कहते हैं उसने कहा कि जो कुछ ये बिचारे कहते हैं वह सत्य है उनको हरप्रकार से दुःख होगा अमरू ने बिचारा कि ख्वाजे की भी यही सलाह है कि इस नगर से दूसरे स्थानपर चलकर रहें कि मक्के के वासी नौशेरवां से छुट्टी पावें तब अमरू ने अपने सेनापतियों से वृत्तान्त कहकर पूछा कि कहां चलना चाहिये ? आदी ने कहा कि अभी तो चलकर क़िले तङ्ग में वास कीजिये फिर और कोई दूसरा क़िला देखकर लेलिया जावेगा अमरू ने उसी समय सेना को क़िले से बाहर किया और दोपहर रात्रि व्यतीत होनेपर मेहरनिगार को महाफ़े में बैठाकर क़िले से बाहर किया और सरदारों और नगरवासियों को उसके साथ करके रवाना किया और सब रात्रि वह सेना मलका की रक्षा करते हुए चलीगई प्रातःकाल होते सेनाको अमरूने एक स्थानपर उतार कर दाना पानी घोड़े बैलों के लिये और सेना के भोजन आदिक के लिये सामान बटोरा और उस बन में डेढ़ पहर दिन चढ़ेतक वह सेना ठहरी रही और मुक़बिल और सरदारों को मलका की रक्षा में करके आप एक साधू का रूप धरकर क़िले तङ्गकी तरफ़ चला और दोपहर होते क़िले के समीप जाकर पहुँचा परन्तु बालू धूप से जलरही थी उसी में धूपके कारण अतिब्याकुल होगया और प्यासके मारे इधर उधर घूमनेलगा परन्तु जाते २ एक स्थानपर दूरसे कुछ वृक्ष सायेदार दिखाई दिये तो अतिप्रसन्न होकर उनकी तरफ़ दौड़ा जाकर समीप देखा कि एक चरवाहा कमरी बिछाये उस स्थानपर बैठा है उसने इनको देखकर सलाम करके पूछा कि आप कहां से आते हैं और क्या प्रयोजन है ? अमरू ने उत्तर दिया कि माता पिता के पेट से आयाहूं आदमी का स्वरूप हूं उसने कहा कि वहाँ से तो सब आये हैं केवल आपही ने यह मर्तबा नहीं पाया है परन्तु बतलाइये तो कि आप कहां से आते हैं और कहां जाइयेगा ? साधू बनकर ऐसा दुःख क्यों उठाते हैं ? अमरू ने कहा बाबा! रूम से आताहूं मदायन को जाताहूं वहां पहुँच कर आराम पाऊंगा पर इस समय क्षुधा के मारे अतिब्याकुल हूं और प्राण निकलरहा है उसने थोड़ीसी बकरियों का दूध दुहकर कहा कि बाबा ! यही इस समय मेरे पास है और कुछ नहीं है अमरू बोला कि बाबा ! साधू हरदम ईश्वर के भजन से युक्त रहता है और ईश्वरही का दियाहुआ भोजन करता है केवल तेरी परीक्षा लेता था कि तू साधू मित्र है या नहीं ईश्वर तेरा भला करे और इसका बदला देवे थोड़े समय के पश्चात् उससे एव अज्ञान मनुष्यों की तरह पूछनेलगा कि भला इस क़िले में कौन रहता है और इस के अधिपति का क्या नाम है ? वह साधुओं को मानता है या नहीं चरवाहेने कहा कि हे बाबा ! आगे तो इसमें ईश्वरपूजकों का राज्य था परन्तु अबतो [illegible] नाम ए

मनुष्य जारी हुआ है तब से बादशाह ने सब स्थानोंपर अपने सरदार भेजे हैं उसी तरह यहां भी एक सरदार है जिसका नाम हमराजर्री है अमरू यह हाल सुनतेही व्याकुल होगया और कहनेलगा कि ईश्वरने बचाया कि मैं मलकाको यहां न लाया नहीं तो मुफ्त ही हाथ से जाती यह बिचारकर एक नय निकाली और उस चरवाहे के आगे रखदी चरवाहा उसको देखकर कहनेलगा कि शाहसाहब! मेरे पास भी एक नय थी परन्तु वह ऐसी उत्तम न थी और वह अब थोड़ेदिनों से गुम भी होगई है अमरू बोला कि कृपा करके बजाइये तो और यह अब मैं आपको अपनी निशानी दियेजाता हूं परन्तु आपका बजाना तो सुनें कि चित्त प्रसन्न होवे देखें किस प्रकार बजातेहो तब उस चरवाहे ने निःसन्देह होकर अपने मुख के समीप उस नय को लगाकर ज़ोर से फूँका तो सब ज़हर उसके मुख में चलागया और बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू ने उसी स्थानपर एक गढ़ा खोदकर उसको गाड़ दिया और आप उसकी सूरत बनाकर क़िले के दरवाज़े पर जाकर रोनेलगा और अपना ऐसा हाल बनाया कि सबको आश्चर्य मालूम हुआ और बहुतसे मनुष्य उसके समीप आकर जमा होगये और एक सिपाही ने जाकर हमरां से उसका हाल कहा वह उसे बहुत मानता था आज्ञा दी कि जल्द मेरे पास लाओ उसका हाल मुझे देखाओ कि उसको धैर्य दें कि वह अपनी बीमारी से छुट्टी पावे क़रीब शाम के सिपाही लोग उसे उठाकर लाये हमरां उसे देखकर रोनेलगा तब तो अमरू ने अपनी और ख़राब सूरत बनाई और पृथ्वी पर लोटनेलगा तब हमरां ने पूछा कि सत्य तू बता तुझे क्या बीमारी है ? उसने कहा क्या बताऊं सेवक अपनी बकरियां चरारहा था और बनकी ठण्ढी २ वायु की सुगन्ध लेरहा था कि तीसरे पहरे को एक सेना काबे की तरफ़ से आई और उसमें एक डोली थी जिसके चारों तरफ़ बहुत से सरदार लोग पहरेपर मुक़र्रर थे आकर मेरे पास कहने लगे कि हम मक्के से आते हैं और भूखे हैं तुम्हारी बकरियों को खायँगे जब हमने मना किया तो हमको बहुत पीटा कि थोड़ी देरतक बेहोश पड़ारहा और बोटी २ में दर्द होरही है हमरां ने पूछा कि फिर वे मनुष्य किधर गये बनेहुए चरवाहे ने कहा कि वे अमन की ओर गये हैं तब तो हमरां ने प्रसन्न होकर कहा कि अमरू या मक्के के वासियों ने नौशेरवां के डरसे अपने नगर से निकाल दिया होगा अब वह मेहरनिगार को लेकर क़िले अमन की तरफ़ जाता होगा यह विचार करके कि [illegible] को छीनकर बादशाह को देकर प्रतिष्ठा प्राप्त करें यह कहकर अपनी सेना को साथ लेकर दौड़धाया तब अमरू ने क़िले से निकलकर अपनी राह ली और सेना में जाकर सुल्तानबख़्त मग़रबी को हमरां की सूरत बनाकर सेना समेत क़िले में प्रवेश करके क़िलेवालों को मार करके अपना प्रबन्ध करके और पुराना तख़्ता उठाकर आराम से बैठा और बहुरूपियेपन में अपना नाम प्रसिद्ध किया अब हमरां का हाल सुनिये कि बीस बाईस कोस तक धावा किये चलागया

और कहीं पता न मिला तो लाचार होकर पलट कर अपने क़िले के समीप जो आया तो क़िलेपर से आतशबाज़ी और तीर आदिक छूटने लगे तो बहुत से सिपाही मारेगये हमरां बड़े आश्चर्य में होकर कहने लगा कि यह क्या बात हुई ? कि क़िलावाले हमारे शत्रु होगये तब क़िले के समीप से हटकर दूरबीन लगाकर देखा तो कोई अपना सिपाही न दिखाई पड़ा सब नवीन ही मनुष्य दिखाई पड़े पीछे को विदित हुआ कि कल जो चरवाहा हमारे पास आकर रोता था वह अमरू था उसने इस युक्ति से हमको निकालकर क़िले को लेलिया और अब अपना प्रबन्ध करके बैठा है तब सरदारों ने कहा कि अब आप धीरज धरके क़िलेको चारोंतरफ़ से घेरे पड़े रहिये और जिन्स कहीं से न जाने पावे जब जिन्स क़िले में नहीं होगी तो आपही क़िला छोड़कर भाग जावेगा क्योंकि कोई मनुष्य बिना भोजन के एक दिन भी नहीं रहसक्ता है तब हमरां ने कहा कि इतने दिनोंतक कौन आसरा देखेगा ? उत्तम यही है कि नौशेरवां के पास चलकर सब वृत्तान्त उससे कहें जैसी वह आज्ञा देवे वह फिर आकर करेंगे यह विचार करके मदायन की तरफ़ चला और थोड़े दिनों के पश्चात् जाकर पहुँचा तो उस समय बादशाह अपनी सभा में बैठा हुआ देशों का प्रबन्ध कररहाथा अब हरमर का हाल सुनिये कि वह सभा में जाकर बादशाह के पैरोंपर गिरपड़ा तो बादशाह ने उसको छाती से लगाकर सब वृत्तान्त पूछा तब उसने सब वृत्तान्त कहकर विनय किया कि मेरे निकट यही उत्तम है कि जबतक हमज़ा न आवें तबतक आप अब चुप रहिये बादशाह क्रोधित होकर कहने लगा कि तुम्ह ऐसा नपुंसक मैंभी बनूं तो चुप होकर बैठरहूं तब बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि ऐ महाराज ! यह नपुंसक नहीं है परन्तु अति बुद्धिमान् है और दो कार्यों के कारण पलट आये हैं एक यह कि एक सिपाही से युद्ध करके अपनी प्रतिष्ठा राजकुमार होकर क्यों खोवें दूसरे बहुत दिनों से गये थे आप के स्नेह के कारण चले आये हैं तब बादशाह ने बख़्तक की ओर सम्मुख होकर कहा कि बख़्तियारक जो गयाथा उसकी भी कोई युक्ति न चलसकी उसने भी अमरू के हाथ से धोखा उठाया तब हरमर ने कहा कि उसकी दाढ़ी मूछें पेशाबसे मूंड़कर स्त्री का स्वरूप बनाकर बेवस्त्र करके फ़ीलगोश की गोद में बांधकर लेटा दिया था उसने नशे की उतार में बेजाने हुए उसके साथ स्त्री जानकर भोग करने की इच्छा की थी बादशाह इसको सुनकर बहुत हँसे और अमरू की चालाकी पर बड़ा आश्चर्य किया तब बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि महाराज ! फ़ीलगोश ऐसा पहलवान आपकी सेना में कम होगा और वहां ठहरा है तो अवश्य अमरू को दण्ड देगा दूसरे सरदारों ने सुना कि बुज़ुरुचमेहर फ़ीलगोश की प्रशंसा करता है तब वे लोग भी मिलकर ख़्वाजे की प्रशंसा करनेलगे और बादशाह जब सभा से उठकर शबिस्तान हरम में हरमर समेत गया तो तीन दिनतक नाच रङ्ग करवाता रहा और चौथे दिन महल से न्यायशाला में आकर सब सरदारों के आने की आज्ञा दी कि थोड़े समय में सिली

ने अदालत की जंजीर को खटखटाया और दोहाई देने लगा बादशाह ने कहा कि देखो तो कौन है ? उसको यहां बुलालो आज्ञा पातेही सिपाहियों ने उनको लाकर हाज़िर किया तो देखा कि एक मुरदा उनके पास है और सब दुःखित हैं बादशाह ने पूछा कि क्या हुआ ? तो उन लोगों ने कहा कि यह अरबज़रफ़ीलगोश की लोथ है और इसीसे सेना ने काला वस्त्र धारण किया है तब बादशाह ने पूछा कि यह क्योंकर मारागया तब साथियों ने सब वृत्तान्त वर्णन किया तो बादशाह ने क्रोधित होकर कहा कि इस पापी ने बड़ा दुःख दिया है और अपने को बड़ा बहादुर समझता है अच्छा अब हमारा अगुवानी खेमा चले और सेना इकट्ठी की जावे हम आपही अब जाकर उसको मारेंगे तब नौलाख सेनासमेत अगुवानी का खेमा रवाना हुआ और बादशाहने कूच न किया था कि इतने में ख़बर आई कि ज़ोपीन काबुली फिर सेना लेकर आताहै तो थोड़े से सरदारों को आज्ञा दीगई कि अगुवानी लेकर हमारे समीप लावे कि हमभी उसको देखकर चित्तको प्रसन्न करें इतने में हामरा ज़र्री ने सम्मुख आकर सब वृत्तान्त क़िले से छूटने का सुनाया बुज़ुरुचमेहरने कहा कि विदित होता है कि मक्के के वासियों ने अमरू को निकाल दिया अब अमरू को पराजय करना कुछ बड़ी बात नहीं है जो जायगा वही विजय पावेगा बादशाह आप खुद अब अपने ऊपर दुःख न देवें बादशाहने बुज़ुरुचमेहर से कहा कि उत्तम है हमारा खेमा लौटा लियाजावे और सब सेना अपने २ स्थानपर जाकर आराम करे परन्तु तुम शाहज़ादों को लेकर जाओ और अमरू को परास्त करो उसने कहा मैं तो आपका सेवक हूं जानेको आरूढ़ हूं तब बादशाह ने बुज़ुरुचमेहरको चालीस सहस्र सेना देकर सब शाहज़ादों समेत अमरू के पराजय करने को और मेहरनिगार के ले आने के लिये ख़िलअत देकर भेजा जिस समय यह सेना क़िलेतङ्ग रवाहिल पर पहुँची तो ज़ोपीन ने देखा कि क़िले के दरवाज़े पर एक नमगीरा अतलस का जड़ाऊ खींचा है और सब बादशाही सामान उसमें रक्खा है और उसके नीचे अमरू एक जड़ाऊ कुरसी पर शाहाना पोशाक पहिने बैठा है और सब छोटे बड़े यथा उचित खड़े हैं और मुक़बिल भी बारह सहस्र तीरन्दाज़ लिये बराबरसे पीछे खड़ा है और सब सरदार लोग कुरसियों पर बैठे हैं और सब सिपाही बराबर से हथियार लियेहुए क़िलेकी दीवारोंपर युद्ध करनेको तैयार हैं शाहज़ादों ने बुज़ुरुचमेहर से पूछा कि कौनसी युक्ति करनी चाहिये ? कि यह हाथ आवे ख़्वाजेने कहा कि इस समय युद्ध करना उचित नहीं है क़िलेको चारों तरफ़ से घेरकर पड़े रहिये जब इनके पास जिन्स न रहेगी तो युद्ध करके क़िला लेलेना होगा तब शाहज़ादोंने बख़्तियारक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है ? उसने कहा कि जो ख़्वाजे कहते हैं वह अति उत्तम है परन्तु इतने दिनों तक कौन पड़ा रहेगा ? इससे यही उत्तम है कि क़िले पर धावा कियाजावे तब शाहज़ादों ने ज़ोपीन से धावा करने की आज्ञा दी ज़ोपीन ने सेनाको धावा करनेकी आज्ञा दी तबतक अमरू बैठा तमाशा देखाकिया जब सेना

शाहज़ादों की क़िलेपर पहुँचगई तब अमरूने ललकार कर कहा कि अब दौड़क
मारलेओ एकभी न जानेपावे तब अमरू की सेनाने आतशबाज़ी और तीर मारक
हज़ारहों सेना के मनुष्यों को मारडाला पीछे शाहज़ादों की सेना भागकर चलीआ
तब शाहज़ादों ने बख़्तियारकसे पूछा अब क्या करना उचित है? तब उसने कहा कि
अब डङ्का लौटका बजवाकर चलकर क़िलेको घेरकर पड़ेरहिये जब क़िले में जिन्स न
रहेगी तो कुत्तों की तरह बुलाकर सबको मारलेवेंगे तब शाहज़ादों ने डङ्का लौटक
बजवाकर सेनाके पलटने की आज्ञा दी और बख़्तियारक के कहनेपर पलटकर अपने
खेमोंमें आकर उतरे अमरूका हाल सुनिये कि जिस समय शाहज़ादों ने युद्ध करन
बन्दकरके क़िले को घेरलिया तो अमरू ने अपनी सेना के सरदारों को आज्ञा दी कि
इस क़िलेमें रहकर शत्रुसे बचना दुर्लभ है क्योंकि सेना शत्रु के पास अधिक है इस
से तुमलोग इस क़िले की रक्षा करो मैं दोतीन दिनमें दूसरा क़िला ढूंढ़कर आता हूं
तो तुमको भी लेचलूंगा यह कहकर भेष बदलकर क़िले से निकला जाते २ दूसरे
दिन क़िले शिकोह पर पहुँचा जो कि क़िले तङ्गरवाहिलसे सात कोस पश्चिम था
जाकर जो देखा तो क़िले में जानेका कहीं रास्ता न दिखाई पड़ा जाने की युक्ति
सोचरहा था कि इतने में एक घसियारा क़िले में से घास लिये निकला तो अतिशीघ्र
ही आप घसियारा बनकर उसके पास गया और पूछनेलगा कि तू घास बेचेगा
उसने कहा कि साहब मेरा काम क्या है? अमरूने पूछा कि तू इसी क़िले में रहता
है उसने कहा कि हां साहब! इसी क़िले में रहता हूं फिर अमरू ने पूछा कि इस
क़िले का स्वामी कौन है? और उसका स्वभाव कैसा है? उसने कहा कि दाराब
और सोहराब दो भाई हैं परन्तु बड़े नोक टोक के मनुष्य हैं अमरू घसियारे से
यह बातें कररहा था कि इतने में एक ओर से सोहराब की सवारी आ निकली
अमरू ने देखकर पूछा कि यह सवारी किसकी है? उसने कहा कि सोहराब मियां
यही हैं अमरू सोहराब का नाम सुनकर अति प्रसन्न होकर कहनेलगा कि तू यहीं
खड़ारह मैं अभी आता हूं यह कहकर एक वृक्षके ओट में जाकर अपना असली
रूप बनाकर सोहराब के पास जाकर अतिनम्रता के साथ सलाम करके खड़ाहुआ
और रोनेलगा तब सोहराब ने उसके स्वरूप को देखकर जाना कि कोई प्रतिष्ठित
मनुष्य है दुःख के मारे रोरहा है घोड़े को खड़ाकरके पूछा कि आप कौनहैं? अमरू
ने हाथ जोड़कर कहा कि आपने सुनाहोगा अमरू का नाम सो मैंहीं हूं आपके
समीप आया हूं कुछ प्रयोजन है मलिका मेहरनिगार ने मुझको आपके पास भेजा
है आज्ञा होवे तो आपसे कहूं सोहराब मेहरनिगार का नाम सुनकर अतिप्रसन्न
होकर सब लोगों को हटाकर कहनेलगा कि जो कुछ कहना हो अब कहो अमरूने
रूमाल से आंशू पोंछकर कहा कि आपने सुना होगा कि हमज़ानाम एक अरब के
रहनेवाले ने मेहरनिगार को तलवारके बलसे नौशेरवां के घर से निकालकर अपने
घरमें रक्खा था लेकिन हौसिला पूरा न होने पायाथा कि एक प्रयोजन ऐसा आ

कि अठारह दिन के लिये परदे काफ़ को मलका मेहरनिगार को मुझे सौंपकर गया था और मुझको आज्ञा देगया था कि जबतक मैं न आऊं मलका की रक्षा करने में कोताही न करना परन्तु अब कई वर्ष व्यतीत होगये और उसका कुछ पता नहीं मिला कि मारागया या जीता है सो अब मेहरनिगार ने मुझसे कहा है कि अब तुम मुझे किसी के पास करदेना नहीं तो कोई तुमसे छीनकर लेजायेगा मुझको भी लज्जा होगी और तुमको भी सो मैं उसकी तलाश में आया हूं और आपका स्वरूप हमज़ा के समान देखकर स्नेह से सेआई आगई है और पांच हज़ार अरबी मेरी तलाशमें फिर रहे हैं कि मुझको मारकर मेहरनिगार को छीनकर नौशेरवां के पास लेजावें सो जो आप मेरी रक्षा हमज़ा की तरह करें और यह इक़रार करें कि पीछे से तुमको पकड़कर नौशेरवां के पास न भेजेंगे तो मैं मलका को लाकर आपको सौंपकर आपकी आज्ञा में होकर रहूं सोहराब मेहरनिगार का नाम सुनतेही घोड़ेपर से उतरपड़ा और अमरू को छाती से लगाकर कहनेलगा कि नौशेरवां क्या माल है जो सारी दुनिया चढ़कर आये तौभी मुझसे मेहरनिगार को न पासकेगा और तुम को मैं हमज़ा से भी अधिक मानूंगा किसी प्रकार से दुःख न होनेपावेगा और यह क़िला सिकन्दर का बनवाया है ऐसा पुष्ट बना है कि कोई इसमें प्रवेश नहीं पासक्ता है चलो हम तुमको सब क़िला के स्थानों को देखादेवें यह कहकर अमरू को साथ लेकर क़िले में आया जब अमरू क़िले में पहुँचा तो ईश्वर का धन्यवाद करनेलगा और कहनेलगा कि अब ईश्वर के प्रतापसे क़िला मिलजावेगा और सोहराबको भी धोखा दूंगा क़िले के स्थानों को देखकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि ऐसा क़िला मैंने संसार में कहीं नहीं देखा है तब सोहराब ने अमरू को दीवानख़ाने में लेजाकर बैठाकर सब सामान उसके लिये इकट्ठा करके अपने भाई दाराबसे अमरू के आनेका हाल कहा और कहनेलगा कि मेरी बड़ी भाग्य है कि मेहरनिगार ऐसी स्वरूपवान् स्त्री और अमरू ऐसा सिपाही मिला दाराब उससे बुद्धिमान् था उसने सुनकर कहा कि विदित होता है कि तेरी भाग्य उलटगई है कि तू अमरू के जाल में आगया देखना अमरू तुमको कैसा धोखा देगा ? परन्तु सोहराब अमरू के दम में ऐसा आया था कि उसका समझाना उसके चित्त में न आया और अपने नेक बद पर दृष्टि न की और अमरू की बातों से सब सत्यही मालूम करके कहा आपभी बुलाकर पूछ लीजिये और उसके असत्य और सत्य को विचार लीजिये दाराब ने कहा कि अच्छा बुलवाओ हमभी देखलेवें सोहराबने अमरू को दाराब के सम्मुख बुलाया अमरू ने दाराबके समीप आकर नम्रता के साथ सलाम करके प्रशंसा करने लगा तो दाराब भी उसके दम में आगया और उठकर अमरू को गलेसे मिलाया अमरू ने जब देखा कि दाराब भी मेरे दम में आगया है उठकर सलाम किया और कहा कि अब आज्ञा होवे तो जाकर मलका मेहरनिगार को लेआऊं परन्तु द्वार- पालकों को आज्ञा दीजिये कि जिस समय मैं आऊं चाहे दिन हो या रात्रि मना न

करें तब दाराव ने द्वारपालकों को बुलाकर आज्ञा दी कि ख़बरदार जिस समय अमरू आवे बिना हमारी आज्ञा सेनासमेत आनेदेना और आजसे क़िलेका स्वामी अमरू है जो इसका कहना न मानेगा वह दण्ड पावेगा नौकरोंको क्या चारा पासवालों ने स्वीकार किया और एक दूसरे को आज्ञा सुनादिया तब सबोंने स्वीकार किया और बाहर निकलकर सोहराबने दाराबसे कहा कि हमभी अमरूके साथ जावेंगे नहीं तो कोई रास्ते में मलका को छीन लेवेगा हाथसे ऐसी उत्तम वस्तु निकलजा- वेगी दाराब ने कहा कि तुम्हारे जानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है अमरू बड़ा पक्की है वह किसी युक्तिसे लेआवेगा परन्तु उसने न माना पश्चात् जब अमरू के साथ चला और पांच कोस क़िला तङ्गरवाहिल बाक़ी रहा तवहीं सोहराबको ठहराकर कहा कि आप यहीं रहिये हम जाकर मलिकाको लेआते हैं उसको धोखा देकर क़िले में पहुँचा और सब वृत्तान्त सरदारों से कहकर बिचार करनेलगा किसी युक्ति से सोह- राब को मरवाडालना उचित है परन्तु कोई युक्ति बिचार में न आई पीछे को बिचार करके जासूसों की सूरत बनाकर हरमरकी सेना में कोतवाली चबूतरे से होकर जा निकला सिपाहियों ने जासूस समझकर पकड़लिया और उससे पूछने लगे कि तू कौन है? और कहां से आताहै? वह भायँ २ करनेलगा कुछ उत्तर न दिया तब कोतवालने जाकर बुज़ुरुचमेहर से कहा कि एक जासूस आयाहै सिपाहियों ने उस को गिरफ़्तार किया है परन्तु कुछ बोलता नहीं है बहिरों की तरह भायँ २ करता है और पूछने से कुछ उत्तर नहीं देता ख़्वाजे ने बुलवाकर अरबी फ़ारसी तुरकी कश्मीरी आदि भाषाओं में पूछा कि तू कौन है और किसने तुझको यहां भेजा है मुझे सत्य २ बता तो मैं तुझको पारितोषिक देऊंगा और अनेकप्रकार से प्रसन्न करके छोड़दूंगा जब कुछ न बोला तो पहलवान जो ख़्वाजे के समीप बैठे थे उन्होंने कहा कि सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता है मोम बे अग्नि पिघलता नहीं टिकठी में बंधवाकर मरवाइये तो अभी सब बतलादेगा ख़्वाजेने कहा नहीं जो यह बतलादेवे तो यही ख़िलअत जो हम बादशाह की दी हुई पहिने हैं उतारकर देदेवें और पांच तोड़े अशरफ़ी और देंगे यह कहकर उसको प्रसन्न किया और कहा कि अब तू सत्य २ हमसे कहदे मैं नौशेरवां के शिरकी सौगन्द खाकर कहताहूं कि तुझको छोड़दूंगा और अनेक प्रकार से तुझको प्रसन्न करूंगा यह कहकर ख़िलअत और अशरफ़ियां देखकर अमरू के मुँह में पानी भरआया तब उसने पश्चिमी भाषा में कहा कि मैं क़िले करगिस्तान के लेनेकी युक्ति में हूं कि वहां जाकर आराम पाऊं इसलिये सो- हराब को यहां लेआया हूं और मैं अमरू हूं भेष बदलकर आपसे कहने आया हूं कि आज वह आपकी सेनापर छापा डालेगा सो किसी युक्ति से उसको मार डालिये या पकड़ लीजिये कि मेरा कार्य सिद्ध होजावे ख़्वाजे ने अमरू को सहस्र अशरफ़ी और देकर जानेकी आज्ञा दी और हरमर से जाकर कहा कि आज एक भेदिया हमने पकड़ा था तो मैंने उसको लोभ देकर पूछा तो विदित हुआ कि

अमरू सोहराब को अपने जाल में फाँसकर लाया है सो आज वह हमारी सेनापर छापा मारेगा तब शाहज़ादों ने पूछा कि आपने कौनसी युक्ति बिचारी है उसने कहा कि सरदारों को बुलाकर आज्ञा दीजिये कि आज सबेरे खा पीलें और चार घड़ी रात्रि व्यतीत होनेसे जाकर पहाड़के निकट छिपकर बैठरहें जब छापा पड़े और लूटनेलगे तो निकलकर शत्रुको मारलेवें या सोहराब और अमरू को ज़िन्दा पकड़ लेवें तों अतिउत्तम है हरमर ने उसी सायत सरदारों को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम को जो कुछ ख़्वाजे आज्ञा देवें वही करो अब अमरू का बृत्तान्त सुनिये कि क़िले में जाकर अपनी सेना के सरदारों को आज्ञा दी कि सवारियां सायंकाल से तैयार होकर आवें और सब कमर बांधे तैयार रहें जब मैं आऊं उसी दम सबको लेकर चलूंगा सब युक्ति करने के पश्चात् सोहराब के समीप मुँह बनाकर गया तो उसने पूछा कि कुशल तो है क्यों दुःखी हो अमरू ने कहा कि क्या कहूं कुछ कह नहीं सकता कि क्या हाल है कि जब मैंने जाकर सब हाल आपका मलिका से कहा तो वह भी आपका हाल सुनकर अति मोहित हुई और ज्योंहीं मैंने इच्छा की थी कि मलिका को मियाने में सवार कराकर आपके समीप लेआऊं इतने में एक सिपाही ने आकर ख़बर दी कि एक सेना क़िले के बाहर पड़ी है परन्तु बिदित नहीं होता कि क्यों आई है और किसकी सेना है मैंने जाकर लोगों से पूछा तो बिदित हुआ कि बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर को मलिका के लिये भेजा है कि तुम जाकर समझाकर लेआओ सो उसी समय से मैं बड़े सन्देह में हूं कि ऐसा न हो कि मलिका उसके कहनेपर चलीजावे सो मेरे पास हज़ार सिपाही भी हों तो मैं उस को छापा मारकर हटादेता सोहराब ने कहा कि तुम सन्देह न करो मुझको चल कर उसकी सेना दिखादो तो मैं उसको हटादूंगा यह सुनकर अमरू प्रसन्न होकर और उसकी प्रशंसा करनेलगा कि बड़ी भाग्य मलिका की हुई कि आप ऐसा पुरुष मिला तब तो सोहराब और भी फूलगया और सेनाको साथ लेकर अमरूके साथ हुआ जब क़िले के समीप पहुँचे तो अमरू सोहराबको उसी स्थान पर ठहराकर हरमर की सेना में गया तो देखा कि सब ख़ेमे ख़ाली पड़े हैं वहां से पलटकर सोह-राब को बुलाकर हरमर की सेना के ख़ेमे दिखाकर आप चलागया सोहराब ने जो जाकर देखा तो सब असबाब पड़ा है और कोई ममुष्य नहीं दिखाईपड़ा तब उसने बिचारा कि मेरे डरसे सुनकर कहीं जाकर छिपे होंगे सब लूटलाटके चलने की इच्छा की थी कि हरमर की सेना ने आकर चारों तरफ़ से घेरकर बहुतों को मारकर सोहराब को थोड़े सरदारों समेत पकड़कर क़ैद किया अब अमरू का हाल सुनिये कि वहां से आकर मेहरनिगार को स्त्रियों समेत डोलियों में सवार करवाके सेना के साथ क़िले से निकालकर क़िले करगिस्तान की तरफ़ जो पश्चिम की ओर है चला मैंभी थोड़े समय में आता हूं यह कहकर सेना को तो भेजदिया और अपनी सूरत का एक पुतला बनाकर अपने स्थान पर खड़ाकर कई सौ पुतला

और बनाकर क़िले की दीवारों पर खड़े करके हाथों में तीर रखदिया दो कुत्ते एक स्थान पर बांधदिया कि एक दूसरे को देखकर भुकरता है और एक बधा क़िले के दरवाज़े पर बांधकर उसके ऊपर भूल डाल दिया और बहुत मुर्ग़ तावोंपर बराबर से बैठाकर आप क़िले के ख़न्दक़ का तख़्ता उठाकर वायु के समान कूदके पार चलागया और अपनी सेना की तरफ़ की राह ली कई कोस जाकर सेना से मिला और रात्रिही को सेना को भगाकर लेगया और दो घड़ी रात्रि बाक़ी थी कि क़िले करगिस्तान के दरवाज़े पर पहुँच कर सरदारों से कहा कि मैं जाके क़िले का दरवाज़ा खोलवाता हूं और तुमको यह युक्ति बतलाता हूं कि जिस समय क़िले का दरवाज़ा खुलजावे तुमलोग स्त्रियों को लेकर भीतर चले जाना और सबलोगों को एक तरफ़ से मारना केवल उन लोगों को छोड़कर जो मुसल्मान होजावें और किसी प्रकार से डर नहीं है सरदारों से यह कहकर आप क़िले पर आया और दरवान से कहा कि मैं अमरू आया हूं मलका मेहरनिगार दिल प्यारी सोहराब को साथ लेकर दरवाज़ा खोल देव वह तो पहलेही से जाने था क़िले का दरवाज़ा खोलदिया सब सवारियां साथ सेना के क़िले के भीतर चलीगईं तब अमरू अपनी इच्छापूर्वक कार्य करके मलका को एक स्थान में बैठाकर सरदारों का पहरा करके आप सेना लेकर क़िलेवालों को मारने लगा और केवल उन्हीं लोगों को छोड़कर जो मुसल्मान हुए दाराब ने यह हाल देखकर जाना कि अमरू आया क़िला हाथ से गया देखें सोहराब का क्या हाल हुआ? अमरू ने जब दाराब के मारने की इच्छा की तब उसने कहा ऐ ख़्वाजे ! मैं मुसल्मान होता हूं मुझे न मार मैंने कलमा पढ़ा अमरू ने उसको छाती से लगाया और कहा कि मुझे तेरे देश क़िले से कुछ प्रयोजन नहीं केवल जबतक हमज़ा परदेकाफ़ से न आयेगा तबतक मैं मलका की रक्षा के लिये इस तेरे क़िले में रहूंगा तत्पश्चात् मुझसे तेरे क़िले से कुछ वास्ता नहीं है तुम अपना क़िला लेना मुझसे तुमसे कुछ शत्रुता नहीं है तब दाराब उसी समय कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ और क़िलेवालों का बल हीन होकर क़िला अमरू के हाथ में आगया अब थोड़ा वृत्तान्त सोहराब का सुनिये कि वह हरमर की सेना में क़ैद होने से अमरू की चाल से बचरहा था बख़्तियारक और ज़ोपीन ने हरमर और बुज़ुरुचमेहर से कहा कि अब अमरू ने क़िले करगिस्तान में पहुँचकर उसको अपने आधीन करलिया होगा प्रातःकाल होतेही सिपाहियों को भेजा कि जाकर देखआओ कि क़िला तक ख़ाली है या उसमें कोई है सिपाहियों ने देखकर जा कहा कि आदमी बराबर क़िले की दीवारों पर फिर रहे हैं और सब प्रकार के पक्षी कबूतर मुर्ग़ आदि बोलरहे हैं और एक गदहा दरवाज़ेपर बांधा है कुछ आसार ख़ाली का नहीं पाया जाता क्योंकर कहें कि ख़ाली है बख़्तियारक ने हरमर से कहा यह झूठ है आप तबलजङ्ग बजवाकर देख लीजिये जो मैं कहता हूं वह सत्य है या झूठ हरमर ने बुज़ुरुचमेहर को

कैदियोंकी रक्षा के लिये छोड़कर आप तबलजङ्ग बजवाकर चला समीप पहुँचकर ज़ोपीन ने बख़्तियारक से कहा कि देख कहां क़िला ख़ाली है वहां सब सामान मौजूद है सब लोग क़िले पर खड़े हैं अमरू शस्त्र लिये खड़ा है और हरएक निशान गड़े हैं बख़्तियारक ने फिर देखकर कहा कि यह अमरू नहीं है यह अमरू ने पुतले बनाकर खड़े किये हैं वह देख वायु से हिल रहे हैं फलाखन के पत्थर की डोरियां एक दूसरे से लगरही हैं ज़ोपीन जो आगे बढ़ा संयोग से एक पत्थर का टुकड़ा उसके उसी घाव पर जहां अमरू ने मारा था फिर लगा तब तो उसे और निश्चय होगया कि ये पुतले नहीं परन्तु अमरू है जो पत्थर माररहा है उस स्थान से रुधिर में डूबाहुआ भागा बख़्तियारक ने कहा ऐ ज़ोपीन ! क्यों भगा जाता है और लोगों के सामने लज्जा उठाता है तुम ऐसे डरपोक मनुष्य कपकाबिस के कुल में उत्पन्न न होना चाहिये था कि उनकी बहादुरी का नाम डु-बाला है और मर्द होकर तुझे लज्जा न आई ज़ोपीन ने कहा कि यह भी आश्चर्य की बात है कि अमरू सामने से पत्थर माररहा है और तू कहता है कि अमरू नहीं है तो बताओ कि किसने यह पत्थर मारा है बख़्तियारक बोला यह भी एक संयोग की बात है कि वायुके बहनेसे पत्थर गिरके तेरे शिरपर पड़ा है और तेरा शिर टूट गया और जो अमरू होता तो अबतक ऐसे पत्थर बरसाता कि हमलोगों के दम फूलजाते और भागते न बनता और दीवारों पर से ऐसी आतशबाज़ी की वृष्टि करता कि लोग वे मारे मरजाते और भुजवे के भाड़की तरह चने के समान जल जाते जाकर दरवाज़ेको तोड़ मेरे कहनेपर यक़ीन जान पस लाचार होकर ज़ोपीन ख़न्दक़ के पार गया और दरवाज़े को तोड़कर हरमर जाफ़रांमरज को बख़्तियारक और और सरदारों को साथ लेकर क़िले के भीतर गया तो देखा कि दरवाज़ेपर एक गधा बांधा है और अन्दर ताख़ों पर बराबरसे कबूतर व मुरग़ावी चुने हैं और बोल-रही हैं और क़िलेपर बराबर से काग़ज़ के पुतले खड़े हैं ज़ोपीन ने जाके अमरू के पुतले के पेट में एक बरछी मारी तो उसमें से एक गीदड़ का बच्चा निकलकर भागा तो ज़ोपीन ने बख़्तियारक से कहा कि इस क़िले में तो बड़े २ तमाशे दिखाई देते हैं बख़्तियारक ने कहा कि यह अमरू का प्राण है कोई जाकर पकड़लावे यह सुन कर सबलोग हँसनेलगे और जबहीं याद आवे तभी हँसनेलगें तब पश्चात् हरमर ने सेना में जाकर बख़्तियारक से पूछा कि अब क्या करना उचित है यह तो बड़े आश्चर्य की बातें हुई कोई युक्ति करनी चाहिये उसने कहा कि अमरू का पीछा छोड़ना उचित नहीं है और सिवाय इसके अभी वह नये क़िले में गया है अभी अच्छे प्रकार से उसका सामान जुदा होगा हरमर ने कहा यही उत्तम है तब तो हरमर ने बुज़ुरुचमेहरको बुलाकर कहा कि ख़्वाजे तुम तो सोहराबको लेकर बादशाह के पास जाकर जो कुछ देखा बयान करो और मेरी पत्री देकर कुछ आज्ञा लेना बुज़ुरुचमेहर सोहराबको लेकर मदायन को रवाना हुआ और हरमर जाफ़रांमरज

ज़ोपीन और बख़्तियारक अस्सी सहस्र सेना लेकर क़िले गुरस्तानपर गये वहां जा कर क़िले को घेरा और रसद न जानेकी आज्ञा दी अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उसने छः महीने भोजन के लिये जिन्स मोल लेकर क़िले में रखवाली और क़िले को अच्छी तरह से बनवाकर बन्दकरके दरवाज़े पर एक शामियाना खड़ा करके उसीमें जड़ाऊ कुरसियां बराबर से रखवाकर बादशाह से भी अधिक लिबास पहिनकर बैठा कि इतने में हरमर जाफ़रांमरज़ सेना लेकर पहुँचे और बख़्तियारक की सलाह से क़िलेपर चढ़ाई की अमरू ने जो देखा कि सेना समीप आगई है अपनी सेनाको आज्ञा दी कि देखना जाने न पावे हरएक को इसी स्थान पर मारो इतनेमें हरमर की सेनापर तीर कारूरा पत्थर आतशबाज़ी का मेह बरसाने लगे कि हरएक मनुष्य प्यांस के मारे मरनेलगे कई सहस्र सवार मारेगये शेष के पैर आगे न उठसके पीछेही को हटनेलगे बख़्तियारक हरमर जफ़रमर्ज़ से कहने लगा कि यह युक्ति युद्ध करने की नहीं है जो इस प्रकार से युद्ध कीजियेगा तो सब सेना मारीजायगी और कभी बिजय न पाइयेगा तब तो दोनों शाहज़ादे नाराज़ हुए कि क्या बकता है तेरेही कहने से चढ़ाई की और तूही अब यह कहता है कि तू क़ाबिल दण्ड पाने के है वह बोला अच्छा बुराई क्या हुई यही न कि हज़ार सवार मरे आप उनके पालन करनेसे बचे और क़िलेवाले को मालूम हुआ कि शाहज़ादा बड़ी सेना साथ लेकर हमसे युद्ध करने को आया है और सीधे अपने वैकुण्ठ को चलेगये अब इस समय डङ्का लौट का बजवाकर चलकर किसी बराबर पृथ्वी पर डेरा लेकर घोड़ों को दाना और साथवालों को कुछ खाने पीने को दीजिये और जब क़िले में जिन्स न रहेगी और बाहर से भी न जानेपावेगी तो आपही क़िला ख़ाली करके चलेजायँगे शाहज़ादे ने डङ्का लौटका बजवाकर डेरा डालकर इसी आसरे में पड़ारहा बुज़ुरुचमेहर का वृत्तान्त सुनिये कि जिस दिन मदायन में पहुँचा उसी दिन सीधा सोहराब को साथ लिये बादशाह के दरबार में जाकर सलाम करके बैठा और सोहराबको सामने करके सब हाल ख़राबी का कहकर हरमर की बिनयपत्री दी पहले बादशाह ने सोहराब से कहा कि तू जो अपना प्राण बचाना चाहता है तो सच्च २ अपना हाल कह मैं तुझे दण्ड न दूंगा सोहराब ने अमरू के बहकाने और अपने क़ैद होने का सत्य २ हाल कहकर बिनय किया कि जो यह अपराध बादशाह! मेरा क्षमा करके प्राण को छोड़ दीजिये तो अब सदैव आपकी सेवा में रहूंगा बादशाह ने उसका अपराध क्षमा करके हरमर की बिनयपत्री को पढ़वाकर सुना तो उसमें लिखा था कि मुझे आपकी आज्ञा से चार बरस अमरू से युद्ध करते हुआ और एक दिनभी बिजय की सूरत नज़र न पड़ी इससे निश्चय है कि अमरू के युद्ध में हमलोगों को बिजय न मिलेगी और दिन रात्रिही डर रहता है कि कहीं अमरू सोते में मार न डाले या पलँग परसे उठाकर किसी और दुःखमें डाले इस कारण से आपका इस तरफ़ आना अवश्य है और आपके आने से अधिक सेना लेकर

उसके सहायक लोग भी न आवेंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि वह खुद आकर आपके पैरोंपर गिरे और अपना अपराध क्षमा करावे और इस तरह से वृथा सेना मारीजाती है और हमलोग भी हलाक होते हैं आगे आप मालिक हैं जिस तरह से आज्ञा दीजियेगा वैसा हमलोग करेंगे बादशाह ने पहले यह पत्र पढ़कर बख़्तक से पूछा कि तुम्हारी क्या सलाह है उनको बुलालेना अच्छा है या नहीं बुज़ुरुचमेहर से पूछा कि तुम क्या कहते हो? उसने कहा कि जो पहले मैं कहचुका हूं कि आपका अमरू से युद्ध करने के लिये जाना आपकी प्रतिष्ठा से बाहर है और जो शाहन्-शाह सुनेगा तो वहभी नाराज़ होगा कि एक सिपाही से युद्ध करने के लिये खुद बादशाह गया और सिवाय इसके हरएक मनुष्य आपका रोब न करेगा और जो संयोग से हरमर की तरह आपको भी उठालेगया तो जो उसने आपको जीता भी छोड़दिया तो बड़े लज्जा की बात होगी और जो मारडाला तो सातों देश अनाथ होजायँगे और जिस तरह का वह बद बला है वह तो आप जानतेही हैं इससे आप का जाना उचित नहीं है यह बातें सुनकर बादशाह कांप गया और आज्ञा दी कि बख़्तक को मेरे सम्मुख से गरदन पकड़कर निकालदेओ यह इसी तरह से सदैव मुझको बहकाकर ख़राब करता है और आपभी बदनामी लेता है बख़्तक को तो गरदन पकड़कर निकलवादिया और बुज़ुरुचमेहर की सलाह पर कारन फ़ीलगर-दन जो बड़ा बहादुर था और अकेला हज़ार सवारों से सामना करता था एकलाख सवार साथ करके आज्ञा दी कि तुम जाकर अमरू को साथ उसके सहायकों के जीते पकड़लाओ ॥

कारनफ़ीलगरदन का अमरू के पकड़नेको जाना और
उसका मार जाना नक़ीबदार के हाथ से ॥

लिखनेवाले लिखते हैं कि जब कारनफ़ीलगरदन हरमर की सेना में पहुँच कर उससे मिला उस समय उसको अति प्रसन्नता प्राप्त हुई तब रात्रि को दोनों सेना के सर्दारों को बुलाकर शराब पिलाना शुरू किया और ज्योंहीं एक गिलास शराब भरकर शाहज़ादे को दिया उसी समय कारन ने हरमर से कहा कि आप जो बहुत दिनों से इस स्थानपर पहाड़ के समान पड़े हैं परन्तु एक सिपाही को न मारसके न पकड़सके किसी तरह की क़ाबू उसपर तुम्हारी न चलसकी जो कोई सुनेगा वह क्या कहेगा? हरमर ने कहा कि अब तो तुमभी लाख सवार और पैदल साथ लेकर आये हो और तुमभी जैसे बहादुर और बलवान् हो यह भी जगत् में प्र-सिद्ध है जब तुम उसको मारलेना या पकड़लेना तब हम तुम्हारी प्रशंसा करेंगे और तुमभी ऐसी २ बातें कहना और अभी तो मार्गके थके थकाये आये हो थोड़े दिनतक आराम करलो तब हम तुम दोनों मिलकर देखेंगे तब कारन ने नाराज़ होकर कहा कि हम तो सिपाही हैं हमको क्या सुस्ताने का काम है केवल इतनी रात्रि व्यतीत होजाने दीजिये सबेरे सवार होकर आप दूरसे तमाशा देखिये हम लड़ी

सवारी क़िला खाली करालेते हैं या नहीं यह कहकर अपनी सेना में तबलजङ्ग बज-
वानेकी आज्ञा दी और आप युद्ध का सामान करनेलगा और तुरन्त नफीरी, कुनज,
नफरी, गावदुम, शेरदुम, कोसहरबी बजनेलगे तब सिपाहियों ने तबलजङ्गका शब्द
सुनकर जाकर अमरू से कहा उसने भी आज्ञा दी कि तबल सिकन्दरी बजे कि
इसका शब्द सुनकर कुछ उसके भी कान खड़े हों इसी तरह से सब रात्रि दोनों
सेनों में तबलजङ्ग बजाकिया और पहरे फिरा किये प्रातःकाल होते ही हरमर
और ज़ोपीन जो अमरू के हालसे आगाह थे क़िले से दूर अपनी सेना लेकर खड़े
हुए कि हमपर और हमारी सेना पर किसी तरह का दुःख न होवे और कारन अपनी
दिलेरी का फल पावे परन्तु कारनने अपनी सेनाके चार भाग करके घोड़े दौड़ाते हुए
आकर क़िलेको चारों तरफ़ से घेरलिया जब अमरू ने देखा कि बड़ी सेना क़िलेके
चारों तरफ़ आगई और बड़ी बहादुरी देखारही है तब सरदारों को बुलाकर आज्ञा
दी कि आज शत्रु बड़ी सेना लेकर आया है आज तुमलोगों का भी इम्तिहान है
देखें कौन जवांमर्दी और बहादुरी देखलाताहै उचितहै कि सिवाय क़दम आगे बढ़ने
के पीछे न हटनेपावे चाहे वहीं मरजावे यह आज्ञा पातेही उसी स्थानपर मुक़बिल
ने अपने बारह हज़ार तीरन्दाज़ों को तीर चढ़ाने की आज्ञा दी और लेकर आगे बढ़
कर तीर का छोड़ना शुरूअ किया तो एक एक चार २ पांच २ मनुष्यों को मारा एक
सायतभर में कई हज़ार सिपाही मारेगये और जो शेष रहगये थे वे उलटे पीछे को
भागे और फिर युद्धका नामतक भी न लिया दूसरे तरफ़ से पत्थर फेंकनेवालों ने
जो पत्थरके टुकड़े काटेहुए चरख़ियोंपर घुमा २ कर मारनेलगे तो एकबारगी दश २
लोट जानेलगे इसीतरह से कई हज़ार मारेगये और बाक़ी ब्याकुल होकर उलटे पैर
फिरे और तीसरी तरफ़से बरक़न्दाज़ोंने इसीप्रकारसे मारकर हटादिया और चौथी
तरफ़से आतशबाज़ों ने ऐसा आतशका मेह बरसाया कि कई हज़ार मारेगये और
शेष भागगये और इसीप्रकार से कारनकी कई सहस्र सेना मारीगई और घायल हुई
परन्तु तिसपरभी कारन फ़ीलगरदन ढालसे अपना मुँह बचाताहुआ क़िलेके दरवाज़े
पर आपहुँचा और प्राणका न भरोसा करके क़िले का दरवाज़ा तोड़नेलगा अमरू
यह हाल देखकर ब्याकुल होगया परन्तु थोड़े समय के पीछे सरदारों को बुलाकर
आज्ञा दी कि जाकर दरवाज़ेपर छिपे खड़ेरहो जिससमय वह दरवाज़ा तोड़कर हाथ
भीतर खोलनेको डाले उसी समय हथियार पकड़ खींचलो अच्छीतरह से मारो
कोई प्राण जानेको न डरे इसमें ईश्वर सहाय होंगे सबलोग एकचित्त होकर उससे
बर मांगो जो आकर सबके सहायक भेजें तो निस्सन्देह बिजय होगी नहीं तो केवल
मरने और मारने के और कोई उपाय नहीं है ज्योंहीं सबलोग एकचित्त होकर
ईश्वर का नाम लेनेलगे थे कि सामने से एक सेना आते देखाई पड़ी इतने में
अमरू ने सबसे कहा कि तुम्हारी मंशा पूरी हुई कि ईश्वरने सहायताके लिये भेजा
और नीचे झुकाकर कहनेलगा देख तेरे प्राण का गाहक आपहुँचा वह अभी तुझे

मारकर नरककुण्ड में पहुँचावेगा तब उसने शिर उठाकर देखा तो चालीस निशान दिखाई दिये उसको देखकर तो वह भी व्याकुल होगया इतने में एक नक़ाबदार अपने घोड़ेको कुदाकर ख़न्दक़पार आकर उसके सामने खड़ाहुआ तो सबलोग डरगये पूछा कारन फ़ीलगरदन और अमरू इस क़िले में कौन है और तू क़िले के दरवाज़े पर क्यों खड़ा है? कारन ने कहा इस क़िले में ज़ातका मुसल्मान मुजरिम बादशाह नौशेरवांका है और इनको न कुछ डर है न पाप है क़िले का दरवाज़ा तोड़कर मारा चाहताहूं अब आप बतलाइये कि कौन है और किसको डराताहै? नक़ाबदार बोला मैं मुसल्मान की सहायता के लिये यह सेना लेकर आयाहूं सो पहले हमसे युद्ध कर लेओ तब दरवाज़ा तोड़कर क़िले के भीतर जाना और जब हम मारेजायँ तो उनसे बदला लेना कारन ने कहा भला तू लड़का होकर मेरी तलवार की वार कब सम्हाल सकेगा तब नक़ाबदार ने झुंझलाकर कहा ऐ पापी! तू क्या बकता है? अभी ख़न्दक़पार आकर तुझे दिखलाऊंगा तब तो कारन लज्जित होकर कूदकर ख़न्दक़ पार खड़ा हुआ तब नक़ाबदार ने कहा ला अपनी वार चला अभी तो तेरे आने का मज़ा चखाता हूं तब तो कारन ने क्रोध करके एक बरछी उसके ऊपर चलाई बरछी को आड़कर एक तलवार अपनी कमरसे निकालकर उसके शिरपर चलाई कि नेत्रों में अँधियारी छागई तिसपर भी उसने एक तलवार चलाई परन्तु उसकी तलवार ने दम न लेने दिया शिरसे काटतीहुई घोड़े के तंग तक पहुँची कारन चार टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना ने यह हाल अपने सरदार का देखकर चारों तरफ़ से कारन को आकर घेरलिया नक़ाबदार की सेना ने भी तलवार मियान से निकाली तलवार चलनेलगी अमरू ने देखा कि नक़ाबदार के पास केवल चालीस हज़ार सेना है और हरमर के पास पौने दो लाख इससे अपनी सेनाको भी क़िले के बाहर निकालकर नक़ाबदार की सहायता के लिये भेजदिया तब उस दिन ऐसा युद्ध हुआ कि सत्तर हज़ार सेना हरमर की मारीगई और नक़ाबदार की सेना में किसी के एक हलका घाव भी न लगा और हरमर की सेना व्याकुल होकर भाग गई तब अमरू ने नक़ाबदार से पूछा कि आपका क्या नाम और निशान है? अपना हाल बतलाइये कि हमज़ा जिस समय परदे काफ़से आवेंगे तो आपका सब हाल उनसे कहेंगे कि इससमय क़िलेके तोड़ने और हमलोगोंके मारेजाने में कुछ सन्देह न था परन्तु आपने आकर हमलोगों का प्राण बचाया नक़ाबदार ने कहा जिस समय हमज़ा आवेंगे वह ख़ुद मेरा नाम और निशान जानलेंगे अभी बताना कुछ अवश्य नहीं हमको कुछ अपनी नामवरी की आवश्यकता नहीं है तुम प्रसन्नता के साथ क़िलेदारी करो और किसी प्रकार से अन्देशा न करो जिस समय प्रयोजन पड़ेगा उसी समय हमको ईश्वर तुम्हारी सहायता के लिये भेजेगा यह कहकर नक़ाबदार तो जिस तरफ़से आया था उसी तरफ़ यह कहकर चलागया और अमरू सब जिंस ख़ेमा और डेरामालिक लूटकर अपने क़िले में दाख़िल हुआ और ईश्वरकी कृपासे

उसको सबतरह से आराम प्राप्तहुआ अब थोड़ासा वृत्तान्त हरमरका सुनिये कि वह जो नक़ाबदार से विजय न पाकर भागा तो बारहकोस तक भागता चलागया और कहीं एकदम भी आराम न किया उस स्थानपर ठहरकर बख़्तियारक की सलाह से एक बिनयपत्र बादशाहको लिखा कि हमको इसप्रकार से दुःख पड़ा है कि न तो हमारे पास वस्त्र है न ख़ेमाआदिक रहनेको है तब नौशेरवां ने एक पहलवान् नामी के साथ डेरा और ख़ज़ाना बेटों के वास्ते रवाना किया और एक रुक़ा भी लिखकर दिया कि इसक़दर रुपया तुम्हारे पास भेजा है और थोड़े दिनके बाद बहुतसी सेना और ख़ज़ाना भी तुम्हारे पास भेजते हैं ख़बरदार अमरू का पीछा किसीतरह से न छोड़ना हरमर को बादशाह के पत्र के पढ़ने से धीरज हुआ चालीस सहस्र गिरेपड़े सिपाही बटोरकर फिर अमरू के क़िले के समीप आकर डेरा गाड़कर पड़े अब मुसल्मानी सेना का वृत्तान्त सुनिये कि जब क़िले में ग़ल्ला बाक़ी न रहा तो सब सेना ने मिलकर आदी अकरब से कहा कि ग़ल्ला तमाम होचुका है जो अब भोजन को न मिलेगा तो हमलोगों का भी काम तमाम होजायगा अब जो अन्न है वह चार दिन से अधिक न होगा फिर सबलोग भूखों मरेंगे इससे पहले चलकर अमरू से कहना चाहिये आदी ने कहा तुम सबलोग आओ तो हमभी साथ चलकर अमरू से कहें और जो मैं अकेला जाकर कहूंगा तो उसको विश्वास न आवेगा और जा- नेगा कि कुछ मेरा प्रयोजन है वृथा मुझसे नाराज़ होगा तब सब सेना आदी के समीप आई और वह भी साथ होकर अमरूके पास गये और सब वृत्तान्त बिनय करके कहा यातो ग़ल्ला मँगवाया जावे या क़िला खोल दीजिये कि हमलोग जाकर शत्रु की सेनापर धावा करके यातो मारें या मरजायँ अमरूने सेनासे कहा कि अभी जो चार दिन के वास्ते है उसको खाओ और ईश्वर का भजन करो मैंने खेत बोया है उसमें बहुत रुपया ख़र्च किया है थोड़े दिनमें उसमें बहुतसा ग़ल्ला पैदा होगा सेना जाकर अपने स्थानपर बैठी अमरूके कहने का विश्वास जाना अमरूने थोड़ी देर के बाद एक छल शोचकर बहुरूपिये वस्त्र पहिनकर उठा और एक तरफ़ की राह ली और सेना को होशियार करके एक पहाड़ के दर में गया और ज़ंबील पर हाथ रखकर करामात तलब किया तो उसका चालीस गज़ का क़द होगया और दो हाथ की दाढ़ी सफ़ेद बनगई तब अपनी खड़ाऊं पहिनकर हरमर की सेना की तरफ़ बकताहुआ चला और बग़ल में एक शेर की झोली डालली इसीतरह चारों तरफ़ देखतेहुए ज़ोपीन के ख़ेमे के समीप जा निकला तो अमरू का क़द और सूरत देख- कर बड़े आश्चर्य में होकर बहुत डरा क्योंकि उसने कभी ऐसा मनुष्य न देखा था कांपते २ पास आकर सलाम कर बड़ी आधीनताके साथ हाथ जोड़कर पूछनेलगा कि आप कहां से आते हैं और इस तरह किस प्रयोजनसे आये हैं? और सेनाकी तरफ़ को क्या आप बार २ देखते हैं? अमरू ने कहा तू कौन है कि पूछता है? तुझको पूछने से क्या प्रयोजन है और तेरा क्या नाम है? उसने कहा हुज़ूर की

सेना का सरदार और बादशाह नौशेरवांके दामाद का भानजा कनारकाबली करके प्रसिद्ध हूं और बादशाहकी बड़ी कृपा रहती है अमरू ने कहा मेरा नाम साद-ज़ुल्माती है और मैं सिकन्दर ज़ुल्माती बादशाह ज़ुल्मात का छोटा भाई हूं और इस तरफ़ एक बड़े प्रयोजन के लिये आया हूं कि जो हमज़ानामी मनुष्य शहपाल बादशाह परदेकाफ़ की सहायता को गया था वहां अफ़रेतनामे देव से युद्ध करके मारागया है उसीकी हड्डियां शहपाल ने हमारे भाई के पास एक चमड़े की थैली में रखकर भेजी थीं कि तुम्हारे राज से मनुष्यों का देश मिला है तुम इसको नौशे-रवां बादशाह के पास भेजदेना कि वह इसकी मिट्टी स्वार्थ करदेवे सो यह बहुत दिनों से रक्खी थीं कि कोई मनुष्य उस तरफ़ से आवे तो भेजदेवें परन्तु अबतक कोई मनुष्य इस तरफ़ का आनेवाला न मिला तो भाई ने हमसे कहा कि लेकर जाओ तुमको बड़ी पुण्य होगी इस कारण से मैं उसकी हड्डियां लेकर आया हूं और इधर उधर देखता हूं कि यही मदायन का क़िला है और हमज़ा की यही सेना है या नहीं इसी सन्देह में कई दिनों से व्याकुल इधर उधर घूमता हूं कनार इस हाल को सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि हज़रत यह नौशेरवां के दामाद और बेटोंकी सेना है चलिये आपको चलकर मुलाक़ात करादूं वह बोला इससे क्या उत्तम है अन्धा बस दो नेत्र चाहता है कनार ने उसको अतिप्रसन्नता के साथ ज़ोपीन के समीप ले आकर सब वृत्तान्त बयान किया ज़ोपीन उसको अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर जवाहर की कुरसीपर बैठालकर सब वृत्तान्त पूछनेलगा तब उसने जो कनारसे कहा था वही फिर बयान किया ज़ोपीनने उसपर बड़ी कृपा करके कहा कि वह थैली कहां है? मुझे दीजिये और मुझसे उसकी रसीद लीजिये मैं वह सब वृत्तान्त लिखकर वह थैली बादशाह के समीप अतिशीघ्रही भेजदूंगा अमरूने वह थैली अपनी झोली से निकालकर ज़ोपीन को दिया और उसने कहा कि आपने एक बड़ा भार मेरे शिरसे उतारा अब आप उसको बादशाहके पास भेजदीजिये मैं अब जाता हूं तब ज़ोपीन बहुत प्रकारसे कहनेलगा कि आप कुछ दिवस यहां बास कीजिये कि मार्गकी थकावट भी दूर होजाय और हमलोगों के ऊपर कृपा कीजिये परन्तु उसने न माना वहांसे चलकर अपना असली स्वरूप बनाकर क़िलेमें आया तब सरदारों ने फिर जिन्सके लिये कहा अमरू ने कहा कि बीज बो आया हूं दो तीन दिन में जाकर काटलाऊंगा तब तुमलोग अपने आराम से बसर करोगे ज़ोपीन का हाल सुनिये कि उस थैलीको ले जाकर हरमर जाफ़रांमर्ज को दिखलाकर सब वृत्तान्त बयान किया हरमर यह हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ परन्तु बख़्तियारक हँसकर बोला कि मुझे अमरू की चालाकी मालूम होती है कि उसके क़िले में ग़ल्ला नहीं रहा है इसीसे वह यह जाल तुमलोगों पर फेंकरहा है और जो हमज़ा मारा गया होता तो निश्चय है कि परीज़ादें आकर अमरू को ख़बर देते और यह तो चालीस हाथ का मनुष्य था परन्तु अमरू हज़ारगज़तक का रूप बना सकता है

ज़ोपीन ने कहा कि इसपर चारसौ बादशाह क़ाफ़ की मोहरें हैं क्योंकर तेरा कहना मानें बख़्तियारक ने उत्तर दिया कि मुझे तो सत्य नहीं मालूम होता और तुम जो चाहे वह कहो तब ज़ोपीन ने कहा अभी चुप रहो मैं क़िले से हाल मँगवाता हूं वहां जो मालूम होगा वही ठीक जानना उसी समय सिपाही को बुलाकर आज्ञा दी कि तुमलोग जाकर क़िले के चारों तरफ़ घूमकर देखो कि अमरू और उसके सरदार लोग किस हालत में हैं प्रसन्न हैं या हमज़ाके मरने के कारण सन्देह में हैं अमरू का हाल सुनिये कि उसने उसी दिन से नौबत का बजाना बन्द करदिया था और क़िले में सन्नाटा होरहा था. ज़ोपीन के सिपाही तीन दिन तक क़िले के चारों ओर फिरा किये न तो नौबत बाजते सुना न और कोई प्रसन्नताका कार्य होने पाया नहीं तो सदैव पांचबार नौबत बजती थी और हरएक मनुष्य प्रसन्न रहते थे यह सब हाल सिपाहियों ने आकर ज़ोपीन से कहा बख़्तियारक ने कहा जो यह हाल है तो अवश्य करके कुछ हुआ है यह सुनकर हरमर जाफ़रांमर्ज़ बख़्तियारक ज़ोपीन और सब सरदारोंको ईदकी तरह ख़ुशी होगई और सब दुःख दूर होगया अमरूने उसी दिन आधीरात्रिको सब सेनासे कहा कि तुमलोग ज़ोर से चिल्लाकररोओ कि हाय साहबक़िरां! हाय साहबक़िरां!! इसीतरह से सब सेना आधीरात्रि को चिल्लाकर कहनेलगे और हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक तो कान लगाये थे इन लोगों का रोना सुनकर अतिप्रसन्न हुए और डङ्का ख़ुशी का बजवानेलगे और सबलोगों को प्रसिद्ध हुआ कि अमीर मरगये उसी दिन अमरू रोते पीटते शिरपर राख डालेहुए ज़ोपीन के डेरेके समीप जाकर चोबदारों से कहा कि शाहज़ादे को ख़बर देओ कि अमरू आपकी मुलाक़ातको आया है चोबदारों ने जाकर ज़ोपीनसे कहा कि अमरू शिर पर ख़ाक डाले नंगेपैर आपकी मुलाक़ात को आया है ज़ोपीन ने कहा उसको हमारे पास लेआओ अमरू जाकर उसके पैरोंपर गिरपड़ा ज़ोपीन ने पूछा यह क्या हाल है कौनसा दुःख तुझपर पड़ा ? बतला तो अमरू ने रोकर कहा क्या कहूं ? अब मैं बेस्वामी का होगया और मेरा सब सामान आराम का खोगया पांच दिन हुए कि परीज़ादों ने आकर हाल कहदिया कि हमज़ा क़ाफ़ में अफ़रेत देवके हाथसे मारा गया चार दिनतक तो मैं छिपाये रहा परन्तु कल सबपर ज़ाहिर होगया उसी समय से सब छोटे बड़े दुःखसे दुःखी होरहे हैं और क़िले में हरएक प्रकार से तहलका पड़ा है इस कारण से अब मैं आपके समीप आया हूं कि मलका को तो आपको सौंपदूं और मैं जाकर किसी पहाड़पर शिर देमारकर मरजाऊं और शाहज़ादे के पास मैं मुख दिखलाने के लायक़ नहीं हूं कि उसके समीप जाऊं क्योंकि हमज़ा के साथ रहने से कोई ऐसी बुराई और बे अदबी नहीं है जो मुझसे न हुई होगी और अब हमज़ा ऐसा मित्र कहां पाऊंगा ? कि उसके पास जाकर रहूंगा इससे मरना उत्तम है ज़ोपीन ने अमरू को गले से लगाकर कहा ऐ अमरू! कहां तेरा ध्यान है ? मैं तुझे अपने गले का तावीज़ बनाकर रक्खूंगा किसी तरहसे तेरी सहायता करने से

उठा न रक्खूंगा अमरूने कहा मुझे इससे भी अधिक आपका भरोसा है कि आप बादशाही कुलके हैं परन्तु आपको बहँकाकर मुझसे नाराज़ करादेवें और अपनी कारगुज़ारी बख़्तक और बख़्तियारककी शत्रुता से डरता हूं कि ऐसा न हो कि दिखावें ज़ोपीन ने कहा वह क्या करसकता है ? जो कोई तुम्हारी तरफ़ बुरी दृष्टि से देखेगा उसको उसी समय में मारडालूंगा तुम जाओ और अतिशीघ्र ही मेहरनिगार को मेरे पास ले आओ अमरूने कहा कि मैं तो अभी जाकर लाता परन्तु सरदार सेनाके कहेंगे तुम तो मलका को देकर शाहज़ादे से अपने प्राण की रक्षा करालोगे और हमलोग हरप्रकार से दुःख उठावेंगे इस कारण वे लोग न लाने देवेंगे ज़ोपीन ने कहा तुम जाकर उन लोगों से कहो कि हम उनको हमज़ासे अधिक मानेंगे समझाकर हमारे पास लाओ अमरूने कहा वे लोग मेरे कहनेपर यक़ीन न करेंगे आप एकपत्र सरदारों के नाम लिखदीजिये कि हम लेजाकर उनलोगों को देकर साथ लेआवें ज़ोपीन ने कहा एक क्या दशपत्र कहिये लिखदेवें उसी समय क़लमदान मँगवाकर एक पत्र लिखाकर अमरू को दिया अमरू उस पत्रको लेकर अपने क़िले में आया और उस पत्रको सरदारों को दिखाकर कहा कि अब खेत पका है काटनेवाला चाहिये अब तो पहले चलकर मेहमानी खाओ फिर देख लियाजावेगा सब सरदार अमरू के साथ हुए केवल मुक़बिल चालीस सहस्र सवार लेकर क़िलेकी रक्षा को रहगया और सबलोगों की जवाबदिही अपने ऊपर की अब ज़ोपीनका हाल सुनिये कि उस ने जाकर हरमर जाफ़रांमर्ज़से यह सब वृत्तान्त कहा बख़्तियारक सुनकर बोला कि जो ऐसी बात हो तो बड़ी ईश्वर की कृपा है परन्तु जो अमरू सब सरदारों के साथ आवे तो अवश्य करके कोई न कोई दुःख हमलोगों पर डालेगा वह बड़ा जालिया और मक्कार है जो थोड़ीसी देरभी क़िले में सांस पावेगा तो बड़ा दुःख देगा यह कहकर ज़ोपीन को समझानेलगा कि ज़ोपीन वह चालाक फ़रेबी है उसके फ़रेब में तुम न आना और उसकी चालाकी से धोखा न खाना निश्चय करके जानो कि उसके क़िले में जिन्स नहीं रही इसी कारण वह अब अपनी युक्ति कररहा है कि आपको मिलाकर हमलोगों को दुःख देवे और अपना कार्य पूर्ण करलेवे ज़ोपीन ने क्रोधित होकर कहा कि ऐ बख़्तक ! तू चुपरह मैं जानूं कि अमरू जाने वह पहले से कहचुका है कि बख़्तियारक के मारे यह न होनेपावेगा बख़्तियारक ने कहा यह क्यों न वह कहे मेरा उसका एकही मन है अच्छा मैं कुछ न बोलूंगा तुम जानो और अमरू जाने उससे क्या कहे ? जो किसीका कहना नहीं मानता जब कुछ बुरा कार्य होते देखूंगा उसी समय यहां से चलाजाऊंगा ज़ोपीन ने डेरे में जाकर सामान मेहमानी का बटोरा और सिपाहियों को भेजा कि जाकर देखो अमरू मलकामेहर-निगार को लेकर आता है या नहीं सिपाहियों ने जाकर देखा अमरू चारसौ पह-लवान साथ लिये जिनको देखकर डर मालूम होताहै आताहै सिपाहियों ने आकर ज़ोपीन से कहा कि चारसौ पहलवान लिये आता है ज़ोपीन ने सुनकर शाहज़ादे

के पास जाकर कहा कि अमरू चारसौ पहलवान मेरी आज्ञा में करने के लिये लेकर आताहै मालूम होताहै कि सत्य है बख्तियारक तो सुनतेही सुन्न होगया कि देखें क्या होताहै अमरू का इतने मनुष्यों के साथ आना बेढब है इतने में अमरू साथ सरदारों के ज़ोपीन के डेरेके सम्मिप आ पहुँचा तब ज़ोपीन ने अगवानी लेकर सरदारों को अपने डेरेमें लेआकर बैठाला और अमरू की कुरसी अपने समीप बिछवाई और सब लोगों से बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ और थोड़े समय के पश्चात् साक़ियों को आज्ञा दी कि सबलोग शराब लेआकर सब सरदारों को पिलाओ इतने में आदी अकबर बोला कि ऐ शाहज़ादे! एक मसला है कि प्रथम भोजन उपरान्त वार्त्ता सो पहले भोजन कराइये पश्चात् शराब पिलाइये तब श-राब भी स्वाद देगी आज्ञा होतेही बावरची ने खाना सामने लाकर रक्खा और सबसे पहले आदी अकबर को दिया तब उसने कहा और रखदेव काबल ने क्रोध करके कहा कि केवल आपही को परसूं या और कोई है तब आदी ने कहा पहले मैं अपना पेट भरलूं तो और को देना काबल ने आदी के आगे ढेरका ढेर रखदिया यहांतक कि सब उसीके आगे रखदिया और आदी खानेलगा जब सब खागया तब उठकर खड़ा होगया ज़ोपीन बैठा देखरहा था बोला कि और कुछ मँगवाया जावे या नहीं आदी ने कहा अब तो खाचुका परन्तु मुझको साधू का शाप है कि कितनाही तू खायगा तेरा पेट न भरेगा और खाने से हाथ न उठावेगा ज़ोपीन ने और खाना आदी के आगे रखवाया आदी वह भी सब चखगया और पानीतक न पिया ज़ोपीन ने फिर पूछा कि और मँगवायाजावे या आप खाचुके आदी ने कहा जो कलिया रोटियां हों तो थोड़ासा और मँगवाइये ज़ोपीन ने कहा आप खूब खाइये मेरे यहां से भूखे न जाइये यह कहकर कई मनकी रोटी और क-लिया मँगवाई उसको भी आदी चखगया ज़ोपीन ने फिर चाहा कि पूछे इतने में बख्तियारक ने ज़ोपीन से कहा भला तू इसका पेट भरसकेगा और हरसर ने भी आंख मारी बख्तियारक कहने लगा कि अमरू ने यही तो युक्ति की है कि सब जिन्स चलकर खालेवें जब उसकी सेना भूखों मरनेलगी तो आपही भाग जायगी तब तो ज़ोपीनने कहा कि अभी तो खाना होरहा है कहिये तो जबतक बाज़ारसे कुछ मँगवादूं आदीने कहा मैं ऐसा मरभुक्खा भी नहीं हूं कि आपसे बा-ज़ारसे मँगवाऊं उठकर हाथ धोकर पलंग पर जाके लेटगया तब ज़ोपीन ने दूसरा खाना बनवाकर और बाक़ी लोगों को खिलवाया जब सब खापीचुके तब शराब मँगवाकर पिलवाने लगे और नाच रंगकी भी सभा गरम हुई और जब सब लोग प्रसन्न हुए ज़ोपीन ने कहा अब मलकामेहरनिगार के लेआने में क्या देरी है अमरू ने कहा सरदारलोग कहते हैं कि इसतरह से मलकामेहरनिगार को देना उचित नहीं है शाहज़ादा ब्याह का सब सामान करे क़िले में चलकर ब्याह करे तब ज़ो-पीनने कहा इसमें क्या देरी है अमरू ने कहा कुछ रुपया चाहिये क्योंकि इसमें

व रुपयेहीका काम होता है ज़ोपीन ने कहा सब मौजूद है जो आपका जी चाहे
ह लेजाइये और अपने दिलसे इसका सामान कीजिये तब अमरू तीनदिनतक
ाथ सरदारों के ज़ोपीन के मेहमान रहे और सहस्र रुपया अमरू को दिया और
ोड़ा २ रुपया सरदारों को भी दिया सब लेकर अपने क़िले में आये और क़िलेको
रच्छी तरह से बनवाकर छःमहीने के लिये जिन्स मोल लेकर फिर उसी सामान से
ठे ज़ोपीनका हाल सुनिये कि सातदिनतक उबटना लगवाया किया और मोटे होने
ि लिये अच्छे २ भोजन कियाकिये और हरप्रकारसे नाच और रङ्ग में मज़बूत रहे
ौर सब सेना को मेहमान रक्खा और अपना मन मलका के पाने को प्रसन्न रक्खा
ब सात दिन व्यतीत होगये और अमरू एकदिन भी ज़ोपीन के पास न आया
ब तो व्याकुल होगया बख़्तियारक ने ज़ोपीन से पूछा अब तो लगन चढ़चुकी
ब ब्याह करने को बरात कब लेजाइयेगा कि मलकामेहरनिगार को लाकर मज़े
ड़ाइये ज़ोपीन ने तब बहुत सी गालियां बख़्तियारक को दीं और सिपाहियों को
मरू के पास भेजा कि जाकर देख आओ अब क्या देरी है यहां तो सब सामान
टोरा है और सातदिन भी व्यतीत होगये हैं जब सिपाही वहां गये तो देखा कि
क़िला भी पहरे से चुना है और सब सरदारलोग भी अपने २ कामपर पहरा देरहे
हैं और अमरू उसी तरह से शामियाने के नीचे कुरसी जड़ाऊ पर शाहाना लिबास
हिने बैठा है सिपाहियों ने दूरसे जाकर सलाम किया और ज़ोपीन का सँदेशा कहा
तब अमरू ने जवाब दिया कि अब तो छःमहीने तक तुम्हारी और हरमर की सेना
क्या माल है जो जमशेद और अफ़रासिया भी क़बर से जीकर युद्ध करने को आवें
तो हमभी कुछ नहीं डरते हैं यह सुनकर सिपाही वहां से उलटे पैर फिरे और सब
हाल आकर ज़ोपीन से कहा तब तो ज़ोपीन अतिलज्जित होकर दांत चबानेलगा कि
इस चालाक ने मुझको बड़ा धोखा दिया और यहां से मदायनतक लज्जा हुई परन्तु
क्या करें चुप होरहा न तो उससे बदला लेसक्ता था न दण्ड देसक्ता था अब अमरू
का वृत्तान्त सुनिये कि क़िलेको बन्द कियेहुए दरवाज़ेपर बैठकर चारोंतरफ़ की
सैर कररहा था कि संयोग से एक बनकी ओर दृष्टि गई तो देखा कि बड़ाबन है
और वहां बहुत से जीव बास करते हैं दाराब से पूछा कि इस बन में व्याघ्र आ-
दिक बहुत होंगे उसने कहा केवल व्याघ्र कई सहस्र होंगे और इससे अधिक और
किसी बन में व्याघ्र नहीं हैं और पक्षी आदिक भी इस क़दर हैं जैसा कहीं न होंगे
अमरू को जो चालाकी सूझी तो सिपाहियों को बुलाकर आज्ञा दी कि इस बनसे
लकड़ी काटकर तीनों तरफ़ जमा करो और केवल एकतरफ़ से हरमर की सेनामें
जाने का रास्ता रहने दो और वृक्षों के ठूंठों में नफ़्ज़ रोग़न लगाकर अग्नि लगा
देओ कि सब लोग तमाशा देखें सिपाहियों ने उसकी आज्ञानुसार वैसाही किया
सब सिपाहियों ने दोपहर रात्रि गये जाकर उस बनमें तीन तरफ़ घेरकर ठूंठों में
रोग़न लगाकर अग्नि लगादी सब जानवर अग्नि से व्याकुल होकर एकस्थान पर

बढ़ुरकर हरमर की सेना की राह से भागे जो सामने मनुष्य पड़ा उसका शिकार किया इसी तरह से सैकड़ों मनुष्य मारेगये और सब व्याकुल होकर इधर उधर फिरने लगे और ज़िरा पहिनकर घोड़े कसनेलगे तो कोई किसीको पहिंचान न सका आपसमें युद्ध करनेलगे इस बिचार से कि अमरू आकर छापा मारेगा ऐसे सब रात्रि आपस में कुछ युद्ध करके और कुछ व्याघ्रों से मार खाकर बराबर होगये जब प्रातः काल हुआ हरमर ज़ोपीन बख़्तियारक साथ सरदारों के जो इस आफ़त से बचे थे लोथों को देखने के लिये गये तो देखा कि सब अपनी ही सेना कटी पड़ी है और कहीं जंगल के जानवर भी कटे पड़े हैं और दूसरी तरफ़ से एक भी नहीं है तो हरमर ज़ोपीन हरमर और सरदार लोग देखकर बड़े आश्चर्य में हुए कि क्या माजरा है बख़्तियारक ने कहा यह अमरू की एक छोटी सी चालाकी है कि उसने जङ्गल के तीन तरफ़ आग लगादी है और केवल इस तरफ़ को निकलनेका रास्ता रक्खा जब जानवर अग्नि की गरमी से भागे हैं वे इसी तरफ़ होकर आपकी सेनापर आगिरे हैं और उन्हीं से सब मारेगये हैं यह कहकर सिपाहियों को जो तलाश करने को भेजा तो सत्य पाया अमरू का हाल सुनिये कि उसने जो दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि हरमरकी सेना बड़े दुःखमें है तब उसके दिलमें यह बात समाई कि आज रात्रि को शत्रु की सेनापर छापा मारें आदी अकरब को बुलाकर कहा उसने कहा मैं आपका सेवक हूं जो आज्ञा होवे वही करूं अमरू ने सरदारों से सब हाल कहकर आदी से कहा कि तुम ज़ोर से चिल्लाकर लन्धौर २ पुकारना तब तो सब सरदारलोग अपने कील कांटे से होशियार होगये और जब आधीरात्रि बीती तब अमरू अपनी सेना को लेकर क़िले से बाहर आया और शत्रुपर छापा मारा आदी ने तलवार खींचकर पुकारना शुरूअ किया कि लन्धौरपुत्र साद्दान कहां है? हरमर ज़ोपीन आकर मेरी तलवार की चाशनी चक्खें अपना शिर मेरे पैरपर रक्खें तब तो बहुतसे लोग जो डरपोकने थे वे घोड़ों के आगे जो घासके गट्ठे रक्खे थे उसमें नेत्र दबाकर छिपगये और बहुतसे लोग खेमे में जा छिपे सब इधर उधर प्राण बचानेके लिये छिपगये हरमर ज़ोपीन भी जागकर बख़्तियारक से पूछनेलगे कि लन्धौर इससमय कहां से आया उसने कहा यह भी अमरू की चालाकी है और लन्धौर कहां है? हज़ारों सेना हरमर की मारीगई चारघड़ी रात्रि बाक़ी थी कि अमरू के सिपाहियों ने हाल दिया कि ऐ भाई! ज़ोपीन के जहांदार क़ाबुली और जहांगीर क़ाबुली बादशाह की आज्ञा से हरमर की सहायता के लिये बड़ी भारी सेना लेकर आते हैं कि सामने से देखिये कि गर्द के मारे दिखाई नहीं देते हैं अमरू ने नेत्र उठाकर देखा तो उसीतरह बहुत सी सेना आती हुई दृष्टि पड़ी तो देखते ही अमरूके भी छक्के छूटगये और कहनेलगा कि आज इस सेना से बचना अतिकठिन है भला मैं हमज़ाको क्या उत्तर दूंगा और इसमें उससे क्या कहूंगा? परन्तु अमरू बड़ा युक्ती और प्रतापी था जब कोई युक्ति न चलसकी तब

ईश्वर को स्मरण करनेलगा चालीसवार स्मरण करने के पश्चात् तीनसौ पहलवान आपहुँचे तो उसी समय डङ्का बजवाकर अमरूने पुकारा कि ओ पहलवानो! आज शत्रुकी सेना एकभी न बचे ऐसी बहादुरी से अड़कर युद्ध करना इसमें पहलवानों का नाम होता है और यह जो सामने गर्द दिखाई देती है यह सेना बहराम बादशाह ख़ाक़ान और चीन की मेरी सहायता के लिये आरही है शत्रुकी सेना यह वृत्तान्त सुनकर अतिव्याकुल होगई और कहनेलगी कि इससे प्राण बचाना दुर्लभ है यह विचार करके सब सेना भागी और किसीका पैर युद्ध में न अड़ा यह हाल देखकर बख़्तियारक डङ्का बजवाकर सेना से कहनेलगा कि थोड़े समय और ठहरो प्रातःकाल हुआ जाता है कौन जानता है जो यह सेना हमारीही सहायता को आती हो परन्तु किसीने उसकी बातों को न सुना सब भाग गई तब हुरमर ज़ोपीन बख़्तियारक भी उन्हींके पीछे फेरने को दौड़े तब अमरू ने जाकर अच्छी तरह से लूटकर अपने क़िले में आकर सब वृत्तान्त कहकर क़िले को फिरसे मरम्मत करवाकर सब सामान युद्धका करके सब सेना को आराम से बैठने की आज्ञा दी और आप भी लिबास शाही पहिनकर शामियाने के नीचे कुरसी डाल कर बैठा॥

बादशाह नौशेरवां की आज्ञानुसार आना जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली भाई ज़ोपीन शाहज़ादे जहांगीर का ज़ाफ़रांमर्ज़ की सहायता को॥

लेखकलोग लिखते हैं कि सब सेना व्याकुल हुई भागी चली जाती थी कि दूतों ने आकर ख़बर दी कि जिसको अमरू ने बहराम की सेना जानकर भरोसा किया था वह जहांदार और जहांगीर काबुलियों की सेना है जिसकी बराबरी करने वाला इस संसार में दूसरा नहीं है बादशाह ने शाहज़ादे की सहायता के लिये भेजी है अब ईश्वर की कृपा से विजय होगी इतने में जहांदार और जहांगीर काबुली भी आ पहुँचे ज़ोपीन से मिलकर शाहज़ादे के पास जाकर उनको बड़ा भरोसा दिया और कहने लगे कि इतनी देर आप न अड़ सके कि हम पहुँच कर शत्रु को पराजय देते बख़्तियारक ने कहा मैं बहुत समझाता और मना करता रहा था परन्तु किसीने मेरा कहना न माना मुझको भी लज्जित करवाया और सब असबाब भी लुटवाया और आपभी लज्जित हुए तब जहांगीर काबुली और जहांदार काबुलियों ने कहा अच्छा जो हुआ सो हुआ अब हम चलकर खड़ी सवारी क़िले को विजय करके सब मुसल्मानों को मारकर मलकामेहरनिगार को निकाल लाते हैं यह कहकर क़िले की तरफ़ फिरे और ज्योंहीं क़िले के समीप पहुँचे अमरू अग्नि की वृष्टि करनेलगा और आतशबाज़ी बाण आदिक चारों तरफ़ से मारनेलगा और आतशबाज़ी न बढ़सकी परन्तु जहांदार और जहांगीर ढालको मुख से लगाये हुए ख़न्दक़पार कूदगये और चाहते थे कि कमन्दें लगाकर दरवाज़ा तोड़कर क़िले के भीतर आवें कि इतनेमें नक़ाबदार साथ चालीस सहस्र सेना के आपहुँचा अपना घोड़ा कुदाकर ख़न्दक़पार होकर

ललकारा कि ऐ जवान ! पहले मुझसे युद्ध करले तो क़िले का दरवाज़ा तोड़ नहीं तो अभी वह गति बनाऊंगा कि सब भूल जायगा यह सुनकर वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर दोनों की तरफ़ तलवार लेकर दौड़े नक़ाबदार ने दोनों की तलवारें छीनकर उनकी कमर के पटके पकड़कर उठालिया परन्तु उनकी मृत्यु न थी पटके टूटगये और वे दोनों हाथ से छूटकर पृथ्वीपर गिरपड़े तब सेना ने उनको उठाकर भागना उत्तम जानकर भागी और नक़ाबदार भी साथ अपनी सेना के उन की सेनापर जागिरा और निश्चय थी कि सब सेना शत्रुकी मारीजावे कि बख़्तियारक ने लौटका डङ्का बजवाकर उस समय चलाजाना अच्छा जाना तब नक़ाबदार जिधर से आया था विजय करके चलागया शत्रुकी सेनाभी रोते पीटते अपने स्थान आकर उतरी और अमरू अपने विजय के डङ्के बजवानेलगा और सब लोगों ने मुबारकबादियां दीं दूसरे दिन भण्डारी ने आकर आदी से कहा कि अब क़िले में जिन्स भोजन को नहीं है तब आदीने आकर अमरूसे कहा अमरू ने कहा कि अब चलकर कोई दूसरे क़िलेमें रहना चाहिये दाराव ने कहा कि यहां से एक मंज़िलपर एक क़िला रश्कगुलिस्तां है और वह ऐसा बनाहुआ है कि जो बादशाह अपनी सेना लेकर आवे तो न विजय पासके और उसके स्वामी का नाम निसतान है तब अमरू ने सरदारों और सरहंगमिश्री से कहा कि तुम सबलोग क़िले की रक्षा करो मैं जाकर कोई युक्ति करूंगा और जिस दिन तुमको हम बुलावें उसी रात्रि को थोड़ेसे लंगूर बन्दर पकड़कर पीनसों पर बैठाकर हरमर की सेना की तरफ़से निकलना और मलकामेहरनिगार के साथ और स्त्रियों को पिछवारे के रास्ते से निकालकर अतिशीघ्रही लेकर चलेआना और इस बात को कोई जानने न पावे यह कहकर अमरू दो सिपाहियों को साथ लेकर क़िले निसतान की तरफ़ चला और किसी से अपने मन की बात न कही दोघड़ी दिन शेष रहे उस क़िले के समीप जापहुँचा देखा तो ऐसा बनाहुआ है कि ऐसा क़िला उसके समीप और कोई नहीं था चारोंतरफ़ फिरकर जो देखा तो सब दरवाज़े बन्दपाये और ख़न्दक़ पनियासोत किसीतरह से भीतर जानेकी रास्ता न पाया इसी सन्देह में दो घड़ी रात्रि बीततक इधर उधर घूमाकिया संयोग से पांच छः कुत्ते उस क़िले के भीतर से निकले और क्षुधा के मारे व्याकुल थे तब अमरू ने उन कुत्तों को अच्छेप्रकार से रोटी खिलाई जब वे अपने स्थानकी तरफ़ फिरे अमरू भी उन्हींके साथ चला और सुरङ्ग में घुस कर क़िले के भीतर गया तब उससमय केवल पहरेवाले जागतेथे और सब आरामसे सोरहे थे तब तो अमरू उनसे छिपकर एक वृक्ष जो दीवार के समीप था उस पर चढ़कर कोठेपर गया और सीढ़ीसे उतरकर बारादरी में गया तो देखा कि बादशाह नेसतान पलंगपर सोरहाहै और ख़िदमतगार भी फ़रशपर बेख़बर सन्नाटे माररहे हैं परन्तु बत्तियां मोमकी बराबर जलरही हैं चादर से सब बत्तियों को बुझादिया केवल एक बत्ती जलनेदिया और उसको पलँग के पास बैठाकर विष बेहोश

करनेवाला लेकर उसकी नाक में लगाकर फूंका तो वह चिल्लाकर बेहोश होगया उसको तो उस स्थान से उठवादिया और आप उसका भेष धारण करके उसी पलँगपर सोरहा और प्रातःकाल उठकर हाथ मुख धोकर जब गद्दीपर आकर बैठा तो सरदारों से कहा कि आज मलकामेहरनिगार नौशेरवांकी बेटी का पत्र मेरेनाम आया है कि वह मुझपर आशिक़ है इसलिये मैंने आज उसको बुलवाया है सो उसके आने में किसी तरह से रोक न करना सब दरवाज़ों को खोलकर हमारे पास लेआना कि हमारी मुलाक़ात करके प्रसन्नता उठावे तब बहुतों ने तो मानलिया और बहुतों ने कहा कि उसके साथ अमरू एक बड़ा मक्कार और जालिया है वह इसी तरह से क़िले को लेलेगा और आपको निकालदेगा तब अमरू ने सैकड़ों को क़ैद करलिया और दारोग़ा को अपने मक्कर से दरवाज़ा खोलकर मलका के आने की आज्ञा दी और अमरू जो दो सवारों को दरवाज़े के बाहर छोड़ आया था उनसे यह सब भेद बता आया था जब उन दोनों यारों ने दरवाज़े खोलने की ख़बर पाई तो मालूम किया कि अमरू क़िलेपर क़ाबिज़ होगया तब उन दोनों ने कहा कि बाद-शाह से कहो कि दो सिपाही मलकामेहरनिगार के पास से आप को कुछ पैग़ाम लेकर आये हैं अमरू ने हाल पाकर उनको अपने पास बुलाकर एकान्त में लेजा-कर यह सब वृत्तान्त कहकर उन दोनों सिपाहियों से कहा कि तुम जाकर सरहङ्ग मिश्री और सरदारों से कहो कि जिसतरह से हम बता आये थे उसीतरह से आज रात्रि को चलकर यहां आवें और किसी प्रकार से देरी न करें और अब मैं क़िले पर क़ाबिज़ हूं किसी तरहसे देर नहीं है यह सब समझाकर उन दोनों को भेजा तब वे दोनों आकर क़िले में पहुँचे और अमरू की आज्ञानुसार सरहङ्गमिश्री और सरदारों से सब वृत्तान्त कहा तब वे लोग तुरन्तही तैयारी करनेलगे और सब सन्देह दूर होगया रात्रि होतेही बहुत से पीनसों में व्याघ्र लंगूर के बच्चे बांधकर ज़ोपीन के डेरेकी राहसे सिपाही साथ करके रवाना किये और मलका मेहरनिगार को उसी तरफ़ से जिधरसे अमरू कहगया था लेकर सब सरदारों के साथ चले महाफ़ा के क़िले से निकलतेही एक सिपाही लेकर ज़ोपीन के पास दौड़कर ख़बर दी कि मलका मेहरनिगार को लियेजाते हैं यह हाल सुनकर ज़ोपीन बड़ी प्रसन्नता के साथ डेरेसे निकलकर दौड़ा और देखनेलगा एक व्याघ्रका बच्चा उसमें बँधा देखकर चिल्लाकर भागा परन्तु सिपाहियों को आज्ञा दी कि सब पीनसों को अच्छीतरह से देखलो तब सब सिपाही खोलकर देखनेलगे तो सब में व्याघ्र लंगूर आदिक बँधे पाये और चिल्लाकर भगे इतने में एक सिपाही ने आकर ख़बर दी कि क़िला ख़ाली मालूम होताहै यह हाल सुनतेही घोड़ा मँगाकर सवार हुआ और दौड़ाकर मेहरनिगार के महाफ़े तक पहुँचाया मेहरनिगार का हाल सुनिये कि वह मार्ग में जाकर महाफ़े से निकलकर मुखपर सेहरा डालकर घोड़ेपर सवार होकर चलीजाती थी कि ज़ोपीन उसके समीप जाकर घोड़ेपर से उतरकर मलका का घोड़ा पकड़कर कहा-

होगया और अपनी मुहब्बतकी बातें करनेलगा तब मलका ने हटादिया परन्तु उसने न माना तब दिक़ होकर एक तमञ्चा निकालकर मारा तो वह भगकर अलग खड़ा हुआ और एक तीर निकालकर फिर मारा तो वह भगा परन्तु वह भी लगा तब चिल्लाकर भगा इसी समय में सेनाभी पहुँचगई और मलका को साथ लेकर अति प्रसन्नता के साथ क़िले नेस्तानी में दाख़िल हुए अमरू को शत्रुओं से हरप्रकार से इतमीनान हुआ तब जिसने कि मुसल्मान होना क़बूल किया उसके तो प्राण छोड़ दिये नहीं तो सबको मारडाला इसीतरह थोड़े समय में सब क़िलेपर क़ब्ज़ा होगया तत्पश्चात् खुसरो नेस्तान को अपनी ज़म्बील से निकाल कर सब हाल दिखाया फिर कहा कि तुम मुसल्मान न होगे प्राण दोगे उसने बिचारा क़िला तो अब हाथसे जाचुका है अब सिवाय मुसल्मान होने के और कोई युक्ति नहीं है कि प्राण बचे तब कलमा पढ़कर मुसल्मान हुआ और अमरू ने अपने गले से मिलाया और कहा कि बाबा! तुम्हारा क़िला तुमको ईश्वर बनायेरक्खे मुझको तुम्हारे देश और क़िले से कुछ प्रयोजन नहीं है मैं तो थोड़ेदिन का मेहमान हूं तत्पश्चात् जहां ईश्वर लेजायगा वहां जाऊंगा अब तो हमारा आपका कुछ दिन का साथ है फिर कभी मुलाक़ात करूंगा यह कहकर क़िले को अच्छीतरह से चारोंतरफ़से बन्दकरके दरवाज़े पर शामियाना खड़ाकराकर जड़ाऊ कुरसियां बिछाकर बैठा और सब सन्देह दूरहोगया ज़ोपीन का हाल सुनिये कि वह घाव से ब्याकुल होकर घोड़े पर से पृथ्वीपर गिरपड़ा और उसका घोड़ा छोड़कर बनकी तरफ़ भागगया और अपने मालिक का साथ न दिया और हरमर जाफ़रांमर्ज़ भी क़िले के ख़ाली होने और ज़ोपीन के पीछा करने का हाल सुनकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली के साथ सेना समेत मुसल्मानी सेना का पीछा करने को गये तो मार्ग में ज़ोपीन को घायल पड़ा देखकर बड़े सन्देह में हुए और कहनेलगे कि देखो अमरू ने कैसा दुःख इसको दिया है आख़िरकार उसको उठाकर पीनस में बैठाकर लेगये कि उसकी दवा करके अच्छाकरें तब सिपाहियों से मालूम हुआ कि अमरू अपनी सेनासमेत क़िले नेस्तान में जाकर रहा है तब जाकर क़िले से दूर डेरा डालकर पड़े कि आतशबाज़ी वहांतक न पहुँचसके जब अमरू ने देखा कि बड़ीभारी सेना आकर पड़ी है तब उसके दिल में आया कि कुछ चालाकी करनी चाहिये तब जर्राह की सूरत बनकर किस्बत बग़ल में लेकर ज़ोपीन के ख़ेमेकी तरफ़ से जानिकला सिपाहियों ने उसको देखकर ज़ोपीन से जाकर ख़बर की कि एक जर्राह इधरसे जारहा है ज़ोपीन ने कहा कि अतिशीघ्र उसको हमारे पास लेआओ सिपाही लोग अमरू को बुलाकर ज़ोपीन के पास लेगये उसने अपना घाव दिखलाकर सब वृत्तान्त कहकर कहा ऐ जर्राह! जितनाही शीघ्र तू अच्छाकरेगा उतनाही अधिक मैं तुझे इनाम दूंगा और अच्छीतरह से प्रसन्न करूंगा अमरू ने कहा घाव तो शीघ्रही अच्छा होजायगा परन्तु दूसरे में बड़ी युक्ति है जो आप थोड़े समय के लिये दुःख उठावें

तो मैं पांच पहर में आपके घाव को अच्छा करदूं ज़ोपीन ने कहा इस दुःख से थोड़ी देरके लिये क्या करूंगा तब अमरू ने कहा जो आपकी ऐसीही इच्छा है तो आप अपने नौकरों को आज्ञा देदेवें कि पांच पहरतक हम कैसेही बुलावें और चिल्लावें परन्तु कोई मनुष्य समीप न आवे ज़ोपीन ने सबलोगों को अपने ख़ेमे से हटा दिया तब अमरू ने डेरेका परदा डालकर ज़ोपीन को उलटा टांग दिया और उस घावको छुरे से चीरकर बड़ा किया और उसमें हरताल और चूना बत्ती में लपेटकर भरकर ऊपर से हरताल और चूने का मलहम भरदिया तब तो ज़ोपीन क्लेश के मारे चिल्लाने लगा बाहर के लोगों ने जाना कि जर्राह अपने कार्य में होगा इस समय वहां जाना उचित नहीं है और पहले वे मनाकरचुके हैं आख़िरकार ज़ोपीन बेहोश होगया तब अमरू सब असबाब लेकर डेरे का परदा काटकर बाहर चला आया यह सब असबाब लेकर अपने क़िले में आकर बैठा जब पांच पहर व्यतीत होगये तो लोग ख़ेमे में गये देखें तो ज़ोपीन टँगा है और बेहोश होरहा है बड़े आश्चर्य में होकर जल्दी से छोड़कर घावों को धोकर काफ़ूर की बत्तियां उस में लगाकर नवीन मलहम बनानेलगे फिर दूसरे दिन जब ज़ोपीन को कुछ होश हुआ सब हाल बयान किया बख़्तियारक ने सुनकर कहा वह जर्राह न था अमरू था जो शाहज़ादे की ऐसी गति बनागया है इतने में ख़बर पहुँची कि हकीम मज़दकको बादशाह ने ख़ज़ाना और अच्छी बस्तु लेकर भेजा है सो आया चाहता है हरमर जाफ़रांमर्ज़ ने अतिप्रसन्न होकर जहांदार काबुली और जहांगीर काबुली को बहुतसे सरदारों के साथ अगवानी लेनेके लिये भेजा अमरू को जो यह ख़बर पहुँची तो उसने भी ज़ोपीन के सिपाहियों की सूरत बनाकर अपने मन में बिचारा कि चलकर इसको भी कुछ अपना मक्कर दिखलाकर लज्जित करूं पांच कोसतक गया होगा कि उसकी सवारी दिखलाई दी और इधर से ये दोनों भी पहुँचे तब तीनों मनुष्य उतरकर मिले और प्यारी २ बातें करतेहुए ख़ीमे की तरफ़ चले जब अमरू ने देखा कि सिवाय सवारियों के कुछ माल असबाब दृष्टि नहीं पड़ता निश्चय है कि माल असबाब पीछे आता होगा यह बिचार कर उसी स्थान पर ठहर गया और किसी से कुछ न कहा पहररात्रि बीते उठा और छकड़े ख़ज़ानों से लदेहुए पांचसौ सवारों के पहरे में आपहुँचे जिस समय वे लोग अमरू के समीप आये अमरू ने अतिप्रसन्न होकर एकसवार से पूछा कि तुम्हारा सरदार कौन है और उसका नाम क्या है ? उसने कहा वह जो काली पगड़ी बांधे चलाआता है वही हमलोगों का सरदार है अमरू ने उसके समीप जाकर सलाम करके कहा कि मुझे शाहज़ादे ने भेजा है मैं बड़ी देर से आपलोगों के आसरे में खड़ाहुआ हूं और कहा है कि ख़ज़ाना और असबाब आता है उसको रक्षा के साथ लेआना और जो रात्रि अधिक होजाय तो वहीं रहजाना सवेरे उठकर आना सबलोग बोले अच्छा तो है आज यहीं बास कीजिये सवेरे चलना होगा और किसीतरह से डर चोर आदिक

का नहीं है तब सरदार ने उसी स्थानपर बास करने की आज्ञा दी अमरू ने कहा मैं जाकर शाहज़ादे से ख़बर करूं सब लोगों ने कहा कि उत्तम है आप जाइये अमरू जङ्गल में अपने यारों को बैठाये था उनके पास आकर कहारों की सूरत बनाकर थोड़ासा भोजन जिसमें शराब बेहोशी मिलीहुई थी उनके ऊपर रखवाकर आप वैसेही बनकर उनके पास लेगया और उन लोगों से कहा कि शाहज़ादे ने यह भोजन तुमलोगों के वास्ते भेजा है इसको भोजन करो सरदार ने लेकर सब को दिया और आप भी भोजन किया और किसी तरह से सन्देह न किया और कोई उसके खाने से न बचा जब सब के सब उसके खाने के पश्चात् बेहोश हुए तब अमरू ने सब ख़ज़ाना और असबाब संदूक़ों में से निकाल कर ज़म्बील में रक्खा और कङ्कर पत्थर जानवरों की हड्डियां भरकर बन्दकरदी सब असबाब और ख़ज़ाना लेकर अपने क़िले में आराम से आकर बैठा प्रातःकाल जब वे लोग चैतन्य हुए और सब लेकर वहां से चले तो पहर दिन चढ़े शाहज़ादे की सेना में आकर पहुँचे तब हरमर जाफ़रांमर्ज़ ने सन्दूक़ों को मँगवाकर हकीम मज़दूक से कुंजी लेकर खोला तो उसमें ख़ज़ाने सौग़ात के बदले में कङ्कर पत्थर मरे जानवरों की हड्डियां भरी थीं देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ तब बख़्तियारक ने कहा कि अमरू सा चालाक भी संसार में न होगा यह चालाकी और मक्कर में ईश्वर की बराबरी करता है कि सेना की वह सूरत बनाई ज़ोपीन को ऐसा दुःख दिया हरमर ने पहरेवालों से पूछा कि तुम को कोई मनुष्य मार्ग में मिला था और कुछ बातचीत हुई थी उनलोगों ने कहा कि केवल वही सिपाही मिला था जिसको ज़ोपीन ने भेजा था और उसीसे हमलोग कहकर उस स्थानपर रहगये थे और दूसरे जो आपने कुछ खाने के लिये लेकर भेजा था उसके साथ कहार सब होशियार थे तब बख़्तियारक ने कहा जो पहले गया था वहभी और जो कहारों के ऊपर खाना रखवाकर गया था वह भी दोनों बार अमरू था उसी ने यह चालाकी की है और दण्ड देने के लायक़ था तब शाहज़ादों और सरदारों को बड़ा रंज हुआ परन्तु क्या करें कुछ वश नहीं आख़िरकार सब वृत्तान्त लिखकर बादशाह के पास अपनी बिनय पत्री को भेजा ॥

अफ़रेत पिशाच का सहरिस्तान में पहुँचकर पनाह लेना अपनी माता की मति से ॥

प्रथम उन वृत्तान्तों के सिवाय अब थोड़ासा वृत्तान्त अमीरहमज़ा का सुनाताहूं कि प्रथम बयान करचुके हैं कि अफ़रेत का पिता अमीर के हाथ से बध कियागया था और अतिलज्जित होकर उसके शोक में बैठकर रोदन किया था कि एक नदी उस के आंसू से बही थी उसके पश्चात् शहपालने सात दिनतक उसी की प्रसन्नता से नाचरङ्ग कराया था और इसतरह से उसने सामान किया था कि सब मनुष्य प्रसन्न होजाते थे आठ दिनके पश्चात् अमीर ने पूछा कि इन दिनों मालूम नहीं होता कि अफ़रेत किस विचार में है कि वह युद्ध करेगा या नहीं जो वह युद्धकरता

नहीं चाहता तो आपही डङ्का युद्ध का बजवाइये और उसको आप रोब दिखलाइये मैं केवल अठारह दिन का वादा करके आया था परन्तु मुझे इतना काल व्यतीत होगया नहीं मालूम क्या हाल होगा और वादे पर न पहुँचने से हरएक मनुष्य को बड़ा दुःख होगा दूसरे यह कि नौशेरवां बादशाह से शत्रुता है वह भी युद्ध करने के लिये आरूढ़ है तब शहपाल ने युद्ध का डङ्का बजवाने की आज्ञादी बाजेवालों ने आज्ञा पातेही बारह सौ जोड़ी सोने की और बारह सौ चांदी की निकालकर बजाने का आरम्भ किया परन्तु नगारा सुलेमानी था उसका शब्द तीन मंज़िल तक सुनाई देताथा और अफ़रेत तो नज़दीकही था उसने भी डङ्के का शब्द सुना तो अपने यारों को बुलाकर कहनेलगा कि देखो भाई! अभी पिता के कामकाज से छुट्टी न पाईथी कि वह फिर लड़नेको आरूढ़ हुआ और आपलोग निश्चय करके जानें कि वह मेरे मारने को आयाहै यह कहकर बहुत रोया और एक पिशाच को बुलाकर एक पत्र अपनी मांके बुलाने के लिये लिखा और कहा कि बहुत शीघ्र जाकर बुलाला वह दुष्टा कि जिसका नाम मलामूनाजादू था हाल सुनतेही वायु के समान उड़ी और तुरन्तही आकर उसके निकट पहुँची अफ़रेत उसके गलेमें लगकर रोया और अमीर का हाल सब उसको सुनाया उसने विचारकर कहा कि सत्य है वह सब पिशाचों के मारनेकेलिये आया है इसलिये उत्तमहै कि जादूका मकान जो मैंने बनवाया उसमें चलकर कुछदिन बासकर और जब वह मनुष्य परदे दुनिया को चलाजायगा तब शहपाल से समझलेना होगा अफ़रेत को अपनी माता की सलाह बहुत पसन्द आई और उसी समय अपनी माता के साथ तिलस्मात नहरिस्तानज़रीं की राह ली और इस भेद को किसीसे न बतलाया सब सेना उस की बहुत व्याकुल हुई इधर उधर ढूंढ़कर बहुतों ने तो अपने घरकी राहली और बहुतोंने आपस में यह सलाह की कि शहपाल हमलोगोंका पुराना स्वामी है चलकर उसीसे अपना अपराध क्षमाकराकर रहें जिस प्रकार से वह रक्खे उसी तरहसे रहें अब सिवाय इसके और कौन है जहां चलकर रहें किसी न किसी प्रकार से शहपाल को प्रसन्न रक्खें शहपाल और साहबकिरां तख़्तोंपर सेनासमेत सवार होकर युद्ध के लिये चले कि मार्गमें पिशाचों ने आकर ख़बर दी कि अफ़रेत तबलजङ्गका शब्द सुनकर साहबकिरां और बादशाह परदेकाफ़ के डर से भागगया और अपने पिता के मारेजाने से बड़े दुःखमें है और उसकी सेना थोड़ीसी तो आपके दरवाज़ेपर आकर खड़ी है और शेष इधर उधर चलीगई और जो सेना आपके दरवाज़ेपर खड़ी है वह आपसे अपराध क्षमाकराकर आपके समीप रहाचाहती है और हाथ बांधे शिर झुकाये दरवाज़े पर खड़ीहै बादशाह इसको सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और रुपये अशर्फ़ी लुटातेहुए क़िले गुलिस्तान में आया इस ख़बरसे कि अफ़रेतकी सेना बादशाह के आधीन होने आई है नगरबासियों ने भेंटदिया और बहुतसा ख़ज़ाना लुटाया और बड़े [illegible] हुआकिया जब सबसे छुट्टीपाई अमीरने शहपाल

से कहा कि अब मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये मेरा बड़ा हर्ज होताहै और दुनियाका हाल न मिलने से मुझे बड़ा दुःखहै शहपालशाह ने कहा कि ऐ साहबकिरां! आप का और मेरा यही इक़रार है कि आप अफ़रेत को मारकर तब दुनिया को जाइये और अफ़रेत अभी मारा नहीं गया जो आप बेमारे जायँगे तो फिर वह आपके जानेपर मुझे दुःख देगा तब फिर आपको बुलाना पड़ेगा इससे यही बात अच्छी है कि आप उसको मारकर तब दुनिया को जाइये अमीर ने शिर नीचे करलिया थोड़ी देरके बाद शहपालशाह से कहा कि आपका कहना हमको मानना हरप्रकार से उचित है परन्तु यहभी तो मालूम होकि वह कहां भागकर गयाहै? वहीं चलकर मारें शहपालशाह ने कहा कि उसका पता कसर बिल्लौर जानेसे मालूम होगा अमीर ने कहा वहां चलने में देरी क्याहै? मैं तो तैयार हूं शहपाल ने उसीदिन ख़ेमा आगे भेजा और दूसरे दिन अमीर को साथ लेकर उसी तरफ़को चले जब कसर बिल्लौर में पहुँचे वहां के बासियों ने शहपालशाह को भेंट आदिक देकर हरप्रकार से सेवा में संयुक्त रहे और कहा कि अफ़रेत अपनी माता जादूगरनी के साथ आकर तिलस्मातज़री में जो सहरिस्तान में उसने बनायाहै उसीमें छिपा है और उसमें सब कारख़ाना जादूका है केवल बायुका बनाहुआ है अमीर ने कहा मुझको जाने की आज्ञा दीजिये ईश्वर मालिक है देखलिया जायगा जाकर उसको उसकी मां समेत मारूं और जो वह वहां अकेला है मैंभी अकेला जाऊंगा और ईश्वर की कृपा से बिजय पाऊंगा बादशाह ने यह बातें सुनकर अब्दुलरहमान की तरफ़ देखा तब उसने कहा आप किसी तरह से सन्देह न कीजिये इनको ख़ुशी के साथ जाने की आज्ञा दीजिये मैं अच्छी तरहसे बिचार करचुकाहूं जातेही उसको मारकर बिजय पाऊंगा तब बादशाह ने चार परीज़ादों को जो उड़ने में अतिशीघ्र और बहुत तेज़ थे बुलाकर आज्ञा दी कि अमीर को तख़्तपर बैठाल के बहुत आराम के साथ लेजाकर वहां पहुँचाओ परीज़ादों ने उसी समय तख़्त उड़ाया और तीन दिन रात्रि उड़ाये चले गये जाकर एक बनमें उतारा अमीर ने पूछा यह कौन स्थान है? यहां क्यों उतारा है? उनलोगों ने कहा यह एक पहाड़ जहरमोहरा नामे है और यहां एकप्रकार के नवीन मनुष्य रहते हैं अमीरने पूछा कि तुम जानते होकि इस स्थानसे सहरिस्तान कितनी दूर है? उनलोगोंने कहा कि छःकोस यहां सेहै तब अमीरने कहा यहां क्यों उतरे? वहीं चलकर ठहरते उनलोगोंने कहा कि इस पहाड़ के नीचे से छःकोसतक सब जादूका कारख़ाना है जो हमलोग जायँ तो जलजायँगे और जो सामने देखाई पड़ताहै उसी में वह है तब अमीर उसरात्रिको उसी बनमें आराम से रहे जब सबेरा हुआ निमाज़ पढ़कर परीज़ादों को उसी स्थान पर छोड़कर उनलोगों से कहा कि किसीतरह से सन्देह न करना हमारी आवाज़ सुनते रहना हम जाते हैं परन्तु तुमलोगों को एक बात बतायेजाताहूं कि मैं तीन बार चिल्लाकर शब्द करूंगा एक जब युद्ध करने को चलूंगा, दूसरा उसके मारने पर, तीसरा बिजय का, जब

ीसरी बार न सुनना तो जानना कि मैं अफ़रेत के हाथ से मारागया शहपाल
ाह से मेरे मरने की ख़बर करना यह कहकर ज़र्रा पहिनकर अकरबसुलेमानी को
ाथमें लेकर आंसू रूमाल से पोछता हुआ पहाड़से नीचे उतरा परन्तु अँधियारे के
ारण आगे न बढ़सका इसी तरह से कई बार ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर
ाया गया परन्तु जब नीचे गया तो अँधियारा मालूम हुआ और ऊपर चढ़जावे
ो फिर रोशनी तब परीज़ादों ने पूछा कि क्या आपके दुनिया में युद्ध के पहले
सीप्रकार से कसरत करते हैं अमीर ने कहा मैं कसरत नहीं करताहूं परन्तु जब प-
ाड़ के नीचे जाताहूं तो अँधियारे के कारण आगे नहीं बढ़सका हूं लाचार होकर
ौटआताहूं और जब ऊपर जाताहूं तो फिर रोशनी दिखाई देती है इसी संदेह में
ड़ाहूं कि क्या ईश्वर की रचनाहै परीज़ादों ने कहा यह अफ़रेत की माता ने यहां
े अपने स्थानतक इसी तरह से जादू बनाये हैं यह सब उसी की करामात है जिसके
ेखने से आपको आश्चर्य मालूम होता है अमीर ने यह सुनकर कहा अच्छा
ईश्वर मालिक है मैं इसी अँधियारे में जाऊंगा यह कहकर पहाड़ के नीचे उतरा
और थोड़ी दूर गया था कि आकाशवाणी हुई कि ऐ अमीर! खड़ा होजा मुझ को
आने दे तब चल अमीर यह सुनकर खड़ा होगया कि इतने में सलासल परीज़ाद
ने एक तख़्त हाथ में लिये आकर सलाम करके कहा कि यह तख़्ती अब्दुलरहमान
ने दी है और कहा है कि बे इसके देखे कोई काम न करना नहीं तो बड़ा दुःख
उठाओगे यह सब कहकर सलासल तख़्ती देकर जिधर से आया उधरी को चला
गया अमीर ने उस तख़्ती को जो देखा ईश्वर के नाम के पीछे यह लिखा था कि
ऐ अमीर! ईश्वर ने तेरे ऊपर कृपा की है कि यह तख़्ती तुझे दी है अब तेरी
विजय होगी तू इसको पढ़ता चला जा तब अमीर ने उसको पढ़कर आकाश की ओर
मुख किया तो सब अँधेरा जातारहा और रोशनी प्रकट हुई तब अमीर को निश्चय
हुआ कि अब मेरी विजय होगी तब अमीर ने ईश्वर की रचना पर गुणानुवाद
किया और उस तख़्ती को हाथ में लेकर आगे चला जब क़िलेके दरवाज़ेपर पहुँचे
तब देखा कि एक अज़दहा मुख नीचे और पैर ऊपर किये पड़ा है उसको देखकर
बड़े संदेह में हुआ इतने में आकाशवाणी हुई कि ऐ अमीर! तू किसी तरह से
संदेह न कर अज़दहे के मुख में चला जा अमीर ने तख़्ती को निकालकर देखा तो
उसमें लिखा था कि निस्संदेह अज़दहे के मुख में कूद पड़ना वह अज़दहा नहीं है
केवल धोखे का अज़दहा है ज्योंहीं अमीर आंख को मूंदकर अज़दहे के मुख में
कूदा त्योंहीं शोर गुल होने लगा थोड़े समय के पीछे जब आंख को खोला तो न तो
अज़दहा निकला न कुछ भी देखाई दिया सिवाय एक बाग़ के जो अति शोभाय-
मान दिखाई दिया कि जिसमें हर प्रकार के फल फूल थे और मेवों के वृक्ष मेवों से
लदे थे और हर प्रकार के पक्षी बने हुए मीठी २ बाणी के शब्द बोलरहे थे उसी
बाग़ में अमीर एक [illegible] पर बैठ कर सैर करने लगे इतने में बाग़ की [illegible] ने

एक शब्द सुनाई दिया कि कोई ईश्वर का जन नहीं है कि मुझे इस क़ैदख़ाना से छुड़ाकर प्राण को बचावे अमीर यह शब्द सुनकर बारहदरी में गया देखा तो एक अतिस्वरूपवती युवा स्त्री तख़्त पर बैठी हैं हाथ और पैरों में लोहे की जंजीरें पड़ी हुई हैं और बड़े दुःख में बैठी है अमीर को उसको देखकर बड़ी दया मालूम हुई समीप जाकर उससे पूछा कि ऐ सुन्दरी ! तू कौन है और किसने तुझे यहां कारागार में डाला है ? उसने कहा प्रथम आप अपना नाम और निशान और किस उपाय से आप यहां आये हैं बतलाइये तो मैं अपना हाल बतलाऊं अमीर ने कहा मैं सहायक शहपाल बादशाह परदेकाफ़ का अमीर हमज़ा नामक ईश्वरपूजक अफ़रेत के बध करने को आयाहूं उसने कहा मैं सोसन परी सलीम काही की बेटी हूं अपने दुःख का हाल क्या कहूं कि अफ़रेत ने मेरे ऊपर अतिमोहित होकर मेरे पिता से मेरा ब्याह अपने साथ करने को कहा जब उसने न माना तब अफ़रेत ने मेरे पिता को सेना लेकर पराजित किया तब मैंने अपने पिता से कहा कि आप मेरा ब्याह उसके साथ करदें मैं धोखा देकर बांध लूंगी तो तुम पकड़कर शहपालशाह के समीप भेज देना वह शत्रु के क़ाबू में आने से तुम से बहुत प्रसन्न होगा और तुमको बहुतसा रुपया और देश देगा परन्तु मेरा मकर उसकी माता को प्रसिद्ध होगया उसने मुझे बांधकर यहां डाल दिया है तबसे मैं यहां पड़ी हूं इससे मरना उत्तम है अब जो आप मुझे इस कारागार से छुड़ादेवें तो मैं चलकर अफ़रेत का स्थान जहां वह रहता है दिखा दूं और अच्छी तरह से आपको बतलादूं अमीर ने उसको कारागार से छुड़ाकर मानो फिर से प्राणदान किया तब वह अमीर को साथ लेकर एक दूसरे बाग़ में आई और अफ़रेत का स्थान दिखलाया अमीर ने देखा तो बारहसौ पिशाच पहरेपर बराबर से खड़े हैं एकबारगी सोसनपरी अमीर के सामने पृथ्वी पर गिरकर इस्मसहरा पढ़कर आकाश पर वायुके समान उड़गई अमीर का गुन न माना और जब थोड़ी दूर ऊपर गई तो पिशाचों से पुकार कर कहने लगी कि क्या देखते हो अफ़रेत का मारनेवाला और जादू का बिगाड़नेवाला तुम्हारे सामने खड़ा है इसे किसी युक्ति से मारो तब अमीर उसके छुड़ाने से अति लज्जित हुए और उसकी बेवफ़ाई पर बड़ा आश्चर्य किया इतने में सब देव चारों तरफ़ से अमीर को मारने के लिये हथियार लेले दौड़े अमीर ने अक़रब सुलेमानी को मियान से निकाल कर जिस देवपर एकबार चलाई उसका शिर अलग हुआ परन्तु जितनी बूंदें रुधिर की गिरती थीं उतनेही नयेदेव बनजाते थे अमीरका हाथ मारते २ थकगया इतने में तख़्ती यादआई उसमें देखा तो लिखा था कि सोसन जादू को क़ैद से न छुड़ाना जो छुड़ाओगे तो बड़ा दुःख पाओगे और जो शायद ऐसा हो जाय और देव तुमसे लड़ने लगें तो इसको पढ़कर तीरसे मारकर सब दूर करदेना तब अमीर ने वैसाही किया सब थोड़ी देरमें दूर होगया जो शोरगुल होरहाथा सब बन्द होगया और एक नया शब्द सुनाई दिया कि सेना बाग़िये में [illegible] पहुँचा

बाद इसके अमीरने देखा तो न सोसन परी है न कोई देव है और बाग़की दीवारके पीछेसे क़ाफ़के लोगों का शब्द ऐसा सुनाई देता है अमीरने उस तरफ़ जाकर देखा तो एक नया बाग़ है उसमें एक स्त्री युवा अति स्वरूपवती और एक मनुष्य वृद्ध क़ाफ़की सूरतका बैठाहै और चारसौ देव उसके साथ सब क़ैद में पड़े हैं अमीरको उस स्त्रीने देखकर कहा ऐ जवान! तू मुझको इस क़ैदसे छुड़ादे बड़ा सवाब होगा अमीर उसे पहल की तरह जाना कि शायद यहभी वैसीही हो कि पीछे को मुझे दुःख देवे (और सत्य है कि दूधका जला माठा फूंक फूंक पिये) तलवार निकाल कर दौड़े कि इसको अवश्य मारिये यह न जाने पावे तब उस वृद्ध ने रोकर कहा हे अमीर! मारे हुए को क्या मारना है पहले मेरा हाल सुनलीजिये तब चाहे मारिये चाहे छोड़ दीजिये मेरा नाम जनीदशाह सब्ज़पोश है और शहपाल शाह का बड़ा भाई हूं और यह मेरी बेटी है रहियानपरी इसका नाम है और क़ाफ़ में मेरा स्थान है जब अफ़रेत ने शहपाल को पराजय किया था तो मुझ से कहा था कि अपनी बेटी का ब्याह मेरे साथ करो मैंने जब न माना तो मुझे पराजय करके मुझे मेरी बेटी और इन चारसौ देवों समेत पकड़कर यहां लाकर क़ैद किया है अब तुझे अख़्तियार है चाहे मार या जिला अमीर ने तख़्ती देखी तो उसका कहना सत्य पाया तब अमीर को दया आई और उनको क़ैद से छुड़ाकर जाने की आज्ञा दी और कहा कि शहपाल से मेरा सलाम कहने के पश्चात् कहना कि मुझे दुःख बड़ा पड़ा परन्तु अब बहुत जल्द अफ़रेत को मारकर आता हूं और कहना कि सब संदेह छोड़कर ईश्वर से मेरे विजय पाने का वर मांगे लिखा है कि जिस समय जनीद सब्ज़पोश को अमीर ने क़ैद से छुड़ाकर जानेकी आज्ञा दी उसके पश्चात् आगे को चले तो एक अतिशोभायमान स्थान दृष्टि पड़ा उसके सहन में जल भरा हुआ तालाब मालूम हुआ उसको देखकर बड़े संदेह में हुए फिर एक संदूक़ दिखाई दिया अमीर ने पैर आगे बढ़ाया कि देखें कि यह जल है पैर रखने से मालूम हुआ कि जल नहीं है परन्तु तख़्ती बिल्लौरी है और यह जल से भी अधिक साफ़ है अमीर ने चाहा कि इस संदूक़ को देखें कि इसमें क्या है? अवश्य है कि इसमें भी कुछ जादू का कारख़ाना होगा ज्योंहीं अमीर संदूक़ की तरफ़ झुके त्योंहीं एक देव जो उसमें लेटा था कूदकर अमीर के गले में लिपटगया और अपना बल दिखानेलगा अमीर ने एक हाथ से संदूक़ का किनारा पकड़ा दूसरे हाथ से लङ्गर जमाकर तख़्ती को देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ अमीर! ख़बरदार २ इस संदूक़ में न जाना इस दुःख से अपने प्राण को बचाना जो गया तो जीता न निकलेगा इस देव के शरीर में एक रसनवाल है वह रस्सी नहीं है एक अंजाल है उसमें एक तख़्ती बँधी है उसको सीने से तोड़कर फेंक देना तो उससे तेरा प्राण बचेगा और तेरा कार्य सिद्ध होगा तब अमीर ने एक तीर ईश्वर का नाम लेकर जो मारा तो उसमें से बड़ा तमाशा मालूम हुआ और सब

संदेह ईश्वर की कृपा से दूर होगया अमीर ने तख़्ती को ताक़समेत छाती से जुदा किया उसके टूटनेपर ईश्वर का धन्यवाद दिया और एक तीर संदूक़ में मारा तो उस देवने सीधे जहन्नुम की राह ली तीर के लगते ही एक बड़ा शोर गुल होनेलगा और वह संदूक़ जलनेलगा और ऐसा शोर और गुल हुआ कि उसका शब्द आकाशतक पहुँचा और सर्वत्र शब्द होनेलगा कि मनुष्य पिशाचों का मारनेवाला आपहुँचा इस शब्द के पश्चात् जो अमीर ने देखा तो न कहीं तख़्ती है न मकान केवल एक मैदान दिखाई पड़ता है और उसमें एक रुधिर का तालाब है और उस तालाब के बीच में एक चर्ख़ खड़ा है और उसमें से रुधिर होकर एक दरार में जाता है परन्तु उसका कुछ हाल नहीं मालूम होताहै उसे देखकर बड़े संदेह में हुए थोड़ी दूर और गये तो देखा कि एक बाग़ दिखाई पड़ा और उसके दरवाज़े पर एक लड़का खड़ापाया तब अमीरने कई बार उससे पूछा कि तू कौन है? अपना हाल बता परन्तु वह न बोला जब अमीर अन्दर चला तो उस लड़के ने पुकारकर कहा कि ऐ देव! ख़बरदार हो मारनेवाला देवोंका और बिगाड़नेवाला जादूका आपहुँचा तब अमीर ने फिरकर एक तलवार मारी वह दो टुकड़े होगया और ज्योंहीं अमीर थोड़ी दूर आगे गया त्योंहीं उसका शिर उड़कर अमीर के पैर में लगा तब वह फिर जीउठा तब अमीर ने बड़े संदेह में होकर तख़्ती में देखा तो उसमें लिखा था कि दरबान को कभी न मारना वह कभी न मरेगा उसपर तेरी वार न चलेगी परन्तु जो छाती में तीर मारोगे तो अलबत्ता माराजायगा और फिर न जियेगा और मुबारक हो कि अफ़रेत तक आपहुँचा अमीर ने जो उसको पढ़कर एक तीर उसकी छाती में मारा तो सर्वत्र अँधियारी छागई और चारोंतरफ़ से लूक और बाण गिरनेलगे और बड़ा शोर गुल होनेलगा तब अमीर तख़्ती को नेत्रों पर रखकर बैठगये कि नेत्रों को कुछ दुःख न पहुँचे इन सब आंधी आदिक के दूर होने के पश्चात् जो नेत्र खोलकर देखा तो कोसोंतक मैदान दृष्टि पड़ा और हर स्थान पर ऐसे २ शोभायमान फूल फूले हैं कि देखने से चित्तको बड़ा आनन्द प्राप्त होता है और उसमें बहुत से परीज़ादे गा बजारहे हैं और अनेक २ प्रकार के अपूर्व तमाशा कररहे हैं अमीर जो समीप उस स्थान के पहुँचे तो एक परी शराब और गिलास लेकर दौड़ी और कहनेलगी कि लो साहबकिराँ इसको पीकर मार्ग के श्रमसे रहित होकर थोड़ी समय हमलोगों के साथ बैठकर गाना बजाना सुनकर चित्त को प्रसन्न करो अमीर ने तख़्ती में देखकर शराब उसके हाथ से लेकर उसीके शिरपर छोड़दी जैसा तख़्ती में लिखा था वैसाही किया तब उसके बदन से लव निकलनेलगी और बड़ा शोर हुआ कि सिकन्दर तिलस्म ने असरार जादूगरनी को भी मारा और उसके साथियों को बड़ा दुःख दिया तत्पश्चात् अमीर ने जो देखा तो एक बड़ाभारी पहाड़ दिखाई पड़ा और उसके आगे एक टीला निराधार खड़ा है और उसके भीतर से नौबत के शब्द अतिप्रिय सुनाई दिये तब अमीर उसके भीतर गया तो अफ़रेत को

देखा बेख़बर सोरहा है और उसके श्वासा का शब्द अतिप्यारा मालूम होता है परन्तु देखने से अतिभयानक मालूम होता है अमीर ने अपने मन में विचारा कि सोतेको मारना एक नामर्दी है इसको उठाकर मारना चाहिये तब एक खंजर उसके पैर में मारा तो उसने पैर देमारा कि मच्छरों के मारे निद्रा नहीं आनेपाती नहीं मालूम इतने मच्छर कहां से आये तब तो अमीर बड़े सन्देह में हुए कि इस वार को तो यह मच्छर समझता है तो और क्या असर करेगा तब दो हाथोंसे उस पत्थर को दबाकर एकबार ईश्वर का नाम लेकर ऐसा चिल्लाया कि पहाड़ और जङ्गल हिलगये अफ़रेत ने भी उसके सुनने से जाना कि पृथ्वी या आकाश फट गया है उठकर जब खड़ाहुआ तो अमीर को सामने खड़ा देखकर व्याकुल होगया और कहने लगा कि मैं तो अब माराही जाऊंगा परन्तु तेरा भी प्राण न बचेगा और मैं तो वहां से भागकर यहां छिपा था तू ने यहां भी मेरा पीछा न छोड़ा तो अब तेरे युद्ध से क्या भागूं यह कहकर एक तलवार जिसमें पत्थर भी लगे थे लेकर अमीर के ऊपर चलाया अमीर ने उसकी वार को रोककर अकरबसुलेमानी को निकालकर मारा तो दो टुकड़े होगया और फिर हिल न सका परन्तु थोड़ासा प्राण बचा था॥

माराजाना अफ़रेत शाह देवों का अमीर के हाथ से और शीश काटने से सैकड़ों देव बनकर अमीर से युद्ध करने को आना॥

तब अफ़रेत ने कहा अब तो मैं मारागया हूं यह भी जो श्वास रहगई है इसको भी एक तलवार मारकर निकालदे अमीर ने उसके कहने पर एक तलवार और लगाई तो ज्योंहीं उसका धड़ जुदा हुआ त्योंहीं दो टुकड़े आकाश पर उड़कर दो देव बनकर अमीर के सामने आखड़ेहुए इसी प्रकार से दो पहर में हज़ारों देव उत्पन्न हुए तब अमीर इस आश्चर्य को देखकर बड़े संदेह में हुए और मारते २ हाथ भी थकगया इतने में दाहिने तरफ़ से शब्द ऐसा आया कि कोई सलाम कररहा है अमीर ने फिरकर देखा तो हज़रत अख़ज़र अलेहुस्सलाम हैं तब तो सलाम करके कहनेलगे कि मारते २ हाथ थकगया है परन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि जिसको मारता हूं एक का दो होकर युद्ध करने को आरूढ़ होता है और एक भी इनमें नहीं मरता है तब हज़रत अख़ज़र ने कहा कि तुम अपने हाथ से यह सब दुःख सहरहे हो कि यहां जादू है और हरएक कार्य बेतहृती में देखे हुए करते हो और जादू को नहीं डरते हो अब मैं एक बात बता दूं इसके अनुसार तुम करो तो अभी सब बला दूर होजावे कि यह मन्त्र जो मैं तुझे बताता हूं पढ़कर तीरसे उस देव के शिरपर जिसके माथे पर खाल चमकरही है मार तो सब बला अभी दूर होजाय तब अमीर ने उनकी आज्ञानुसार किया तब केवल वही अफ़रेत पड़ा हुआ दिखाई दिया और सर्वत्र मैदान पड़ा पाया परन्तु शिर अफ़रेत का उस स्थान पर न था हज़रत अख़-ज़र ने साहबक़िरां से पूछा कि तुम इन देवों के उत्पन्न होनेका कारण जानते हो अमीर ने कहा मैं क्या जानूं ईश्वर जाने या आप पैग़म्बर हैं जानें दूसरा कौन

जानसक्ता है उन्होंने कहा अफ़रेत की माता उसका शिर लिये इसी घर में बैठी है वह जादू से धनियें की पत्ती उसके रुधिर में डुबोकर आकाश में फेकती है उस से दो देव बनकर तुझसे युद्ध करने को आते हैं अब ग़ार में चलकर उसको भी मारकर नरककुण्ड में पहुँचाओ तब दोनों मनुष्य साथ होकर उस ग़ार में गये उस दुष्ट की माता जादूगरनी ने जो हज़रत अख़ज़र को अमीर के साथ देखा तो क्रोधित होकर बोली कि यह सब तूही कराहा है कि मेरे पुत्र को मरवाकर अपनी ईर्षा मिटाई परन्तु मैं तुझको भी ज़ीता न छोड़ूंगी यह कहकर जादू करनेलगी तब हज़रत अख़ज़र ने एक मन्त्र पढ़कर फूंका तो सीधी नरककुण्ड को सिधार गई॥

आना ख़्वाजे हज़रत अलेहुस्सलाम का अमीर के पास और उनकी आज्ञानुसार तोड़ना जादू का और माराजाना अफ़रेत की माता का हज़रत के मन्त्र से और लूटना तिलस्म का॥

तत्पश्चात् सब जादू दूर होगई और दोनों मनुष्यों के चित्त प्रसन्न होगये और हज़रत अमीर को बिजय की मुबारकबादी दी बल और हिम्मत की बड़ी प्रशंसा की और आज्ञा दी कि अफ़रेत के शिर का मुकुट उतार ले और ऐसेही तुझे एक और मिलेगा जब सफ़ेद देव तेरे हाथ से मारा जायगा तू इन दोनों को अपने ताज में लगाना इनसे बड़ाफल प्राप्त होगा और एक गिलास जिसमें साढ़े तीन मन शरबत अमाता था दिया कि यह तेरी सभा में काम आवेगा और इससे बड़े २ आश्चर्यरूपी तमाशा देखोगे तब अमीर ने कहा हज़रत इस समय में अतिक्षुधावन्त हूं कुछ भोजन को दीजिये कि खाकर भूख मिटाऊं हज़रत ने एक भोजन का पात्र निकालकर दिया अमीर ने उसमें से निकालकर खाया परन्तु वह पूराही रहा तब हज़रत ने एक बिलहरा पानका दिया कि पान खाकर चित्त को प्रसन्न करे और कहा कि इन दोनों वस्तुओं को अपने पास रक्खो कि जबतक काफ़ में रहो भूख प्यास से दुःख न उठाओ कि दूसरे से मांगो और जब ये दोनों बस्तु तुम्हारे पास से खोजायँ और ढूंढ़े न मिलें तो जानना कि अब थोड़ेदिनों के उपरान्त दुनिया को जायँगे और तुम काफ़से बहुत दिनों के पीछे जाओगे यह कहकर हज़रत तो चले गये और अमीर ने जो कई दिनों के बाद भोजन किया आलस्य आगई और उसी चट्टानपर जहां अफ़रेत सोता था जाकर लेटगये और थोड़ेही समय में सोगये इस कारण से तीसरी बार शब्द न किया तो परीज़ादों ने जो ज़हरमोहरा पर खड़े शब्द सुनने के आश्रित थे जब शब्द न सुना तो शहपाल के पास जाकर अमीर के मारेजाने की ख़बर दी और सब वृत्तान्त अमीर का शहपाल को सुनाया तब शहपाल अमीर के मारेजाने का हाल सुनकर रोनेलगा और अब्दुलरहमान से कहा कि मैंने इब्राहीम के पुत्र का पाप अपने ऊपर लिया कि उसको वहां जानेदिया तब अब्दुलरहमान ने बिचारकर कहा कि अमीर अफ़रेत और उसकी माता को मारचुके हैं थोड़ा सा कार्य और बाक़ी रहा है उसको भी पूरा करके अति शीघ्रही

ाते हैं और इसीसे तीसरी बार शब्द नहीं किया चलिये उनको लेआवें कि सब
ोग देखकर प्रसन्न हों और आप किसीतरह से संदेह न कीजिये यह सुनकर
ाहपाल ने बड़ी खुशी की और सफ़र का सामान करके सहरिस्तान को चला इस
सन्नता से परीज़ादों ने ऐसे सिंहासन से तख़्त को उड़ाया कि अतिशीघ्र जहां
मीर सोरहे थे आपहुँचे तो देखा कि साहबकिरां एक ग़ार में सोरहे हैं और
ुख पर धूप आगई है और धूप से स्वरूप बदल गया है आसमानपरी ने एक
र से छांह करली और दूसरे पर से बायु करनेलगी और हरप्रकार से सुख देने
गी अमीर को जो आराम मिला आंख को खोल दिया और दृष्टि उठाकर देखा
ो आसमानपरी एक पर से तो छांह किये है और दूसरे से बायु कर रही है तब
ो उठकर उसे गले से मिलाकर मुख को चूमा और हरप्रकार की प्रिय बातें करने
गा और उसपर अति मोहित होकर अपने गोदपर बैठालकर बहुत प्यार किया
ौर पूछा कि इस समय के तेरे यहां आने का क्या कारण है ? मुझे बड़ा आश्चर्य
ालूम हुआ कि तू यहां आई उसने कहा आपकी बिजय का हाल सुनकर अति
सन्न होकर दौड़ी आई हूं तब तो अमीर औरही अधिक प्रसन्न हुए उसने फिर
हा कि एक खुश ख़बरी भी लाई हूं कि शहपालशाह भी पीछे आते हैं और आप
 बिजय और शत्रुओं के बध करने से अति प्रसन्न होकर आते हैं यह सुनकर
मीर अतिप्रसन्न हुए थे कि उसी समय शहपाल की सवारी आपहुँची अमीर
ख़्त देखकर उठकर खड़ा होगया शहपाल भी तख़्त पर से उतरे और अमीर के
ाथ मुख को चूमकर तख़्तपर बैठालकर क़िले गुलिस्तान को लेआये और अपने
ब कार्य से रहित होकर नाचरङ्ग की सभा करके हरएक सरदार और नगरवा-
सियों ने अमीर की न्योछावर में बहुतसा रुपया अशरफ़ी पुण्य की और हरप्रकार
 खुशी करने लगे तब बादशाह ने अब्दुलरहमान से कहा कि तुम कहते थे कि
मज़ा आसमानपरी के साथ ब्याह करने के योग्य है सो अब क्या देरी है ? और
स समय से उत्तम समय न आवेगा कि सब सरदार और नगरवासी इस अपूर्व
स्तु के देखने को आये हैं और सब छोटे बड़े हमज़ा की प्रबलता से अतिप्रसन्न
 तो अब ब्याह करने में देर न करो तब तो अब्दुलरहमान ने उठकर ईश्वर का
न्यबाद किया और अमीर को अति नम्रता के साथ सलाम किया अमीर ने पूछा
ह क्या कारण है कि तुम ऐसे प्रसन्न हुए तब उसने कहा कि आप बादशाह के
ामाता हुए और हमलोगों के स्वामी अमीर ने कहा कि मैं ऐसी बात मुसाफ़िरत
 नहीं करता क्योंकि जो हम आसमानपरी के साथ ब्याह करेंगे तो दुनिया को न
ासकेंगे और इसी स्थान पर काम के लोभ से रहजायँगे और दूसरी बात यह है
 हम मलकामेहरनिगार नौशेरवां की बेटी से प्रतिज्ञा करचुके हैं कि जबतक
म्हारे साथ ब्याह न करलेंगे तबतक दूसरी स्त्री के साथ ब्याह न करेंगे इस कारण
 मैं अपनी प्रतिज्ञा से विपरीत नहीं करसक्ता तब अब्दुलरहमान ने कहा कि आप

ने वह प्रतिज्ञा परदे दुनिया में की थी यहां नहीं की इसमें किसी प्रकार से आपकी
प्रतिज्ञा से अनुचित नहीं होता और दुनिया में पहुँचाने का तो मेरा कार्य है मैं आ
को दुनिया में पहुँचादूंगा अमीर ने पूछा कबतक पहुँचाओगे तब फिर अब्दुलरह
मान ने कहा कि आप यह कुछ संदेह न कीजिये यह परदे काफ़ है जो हम कहते
मान लीजिये परन्तु हम यह कहसक्ते हैं कि एक बर्ष के पश्चात् आपको परदे दुनिय
में पहुँचा देवेंगे और सबलोगों को आपको दिखला दूंगा अमीर ने बिचारा कि बिन
इनकी सहायता हम दुनिया को जा नहीं सक्ते आख़िरकार मानलिया और शहपाल
शाह ब्याह की तैयारी करनेलगें और बादशाहों को नेवता भेजनेलगे थोड़े सम
के पश्चात् सब बादशाहलोग अपने २ नेवते लेकर गुलिस्तान अरम में आये और उ
ब्याह की सभा में मिलकर प्रसन्न हुए और अफ़रेतदेव और उसकी माता जादूगरन
के मारेजाने की ख़बर सब देवों को पहुँचगई थी उसी में देव समन्दर जिसके हज़ा
हाथ थे सुनकर अति क्रोधित होकर कहनेलगा कि देखो बादशाह शहपाल ने ए
मनुष्य परदेदुनिया से बुलवाकर अफ़रेत और उसकी माता जादूगरनी को मरवा
कर हमारी हज़ारों बर्ष की मेहनत जादू के कारख़ाने को तोड़वाकर बृथा कर
डाला और मुझसे कुछ न डरा और उसको गुलिस्तान अरम में लेआकर अपन
बेटी का ब्याह किया यह कहकर सफ़ेददेव को बुलाया और आज्ञा दी कि तुम चा
सौ देवों समेत अति शीघ्र जाकर बादशाह से कहो कि उस मनुष्य को हमारे पा
भेजदो कि उसको मारकर अफ़रेत का बदलालेवें और उसकी हड्डियों को काटक
देवों और कौवों को बांटदेवें यह सब बातें कहकर भेजा संयोग से उसी दिन ब्या
की तैयारी थी कि बादशाह सभा में सुलेमानी तख़्तपर बैठे थे और सब सेनाप
आदिक यथा उचित अपने २ स्थानपर बैठे थे और अमीर उस तख़्तपर जो हज़
रत सुलेमान ने अति उत्तम शोभायमान और बिचित्र अपने वज़ीर के लिये बन
वाया था बैठे थे और उसमें हज़ारों प्रकार के जवाहिर जड़ेथे और सब सरदारलो
अपने २ स्थानों पर यथा उचित बैठे थे और हरप्रकार के नाचरङ्ग के तमाशे हो
थे कि इतने में सफ़ेददेव चारसौ देवों समेत शस्त्र सब प्रकार के धारण कियेहु
निडर होकर बराबर चलाआया और बादशाह से सलाम करके कहनेलगा कि
बादशाह ! समन्दर सहस्त्रकर ने कहा है कि बादशाह ने देवों को एक मनुष्य पर
दुनिया से बुलाकर बड़ा दुःख दियाहै और अफ़रेत ऐसे सरदार को उसके माता पि
समेत मरवाडाला यह बात अच्छी नहीं की है परन्तु अब उचित है कि उस मनु
को हमारे पास भेजदो कि उसके बदले में उस मनुष्य की हड्डियां और बोटी
कटाकर देवों को बांटदेऊं अमीर यह बातें सुनकर अतिक्रोधित हुए और कहनेल
कि ऐ पापी ! क्या बकता है अधिक बोला तो तुझे भी दण्ड दूंगा और तेरी बा
का मज़ा चखादूंगा और उससे जाकर कहदे कि जो अफ़रेत से मुलाक़ात करनी
तो मेरे पास आवे उसे भी वहां भेजदूं सफ़ेददेव अमीर की बातें सुनकर क्रोधि

हुआ और कहा कि मालूम होताहै कि तुही है ये चारसौ देव तेरेही पकड़ने के लिये आये हैं तुझको मेरे सरदार ने बुलाया है यह कहकर अमीर की तरफ़ हाथ बढ़ाया कि अपना बल दिखावे अमीर ने ईश्वर को स्मरण करके उसका हाथ पकड़कर ऐसा झिटका दिया कि वह दोनों पैरों के बल बैठगया और कमर से ख़ंजर निकाल कर उसके पेट में ऐसा मारा कि एकबार आह करके प्राण को त्याग करदिया ईश्वर की कृपा से मनोरथ पूरा होगया तब तो सब देव व्याकुल होकर भागगये और सब जितने उस स्थान पर बैठे थे अमीर के बल को देखकर बड़े आश्चर्य में होकर प्रशंसा करनेलगे और बादशाह ने बहुतसा रुपया और अशरफ़ी कंगालों को अमीर की नेवछावर में लुटाया और सफ़ेददेव की लोथ को बनमें फुँकवादिया कि मरने के पश्चात् भी उसको इस प्रकार से लज्जित किया और उस दिन ब्याह होनेके कारण कई कोसोंतक रोशनी की और सड़कों पर आतशबाज़ी गाड़कर छोड़वाते थे और एक फुलवाड़ी फूलों की ऐसी चुनवाई कि जो कोई देखता था वही जानता था कि फूलों के वृक्ष लगे हैं और देखकर अतिप्रसन्न होताथा और जिस समय अमीर को ख़िलअत बादशाही पहनाई गई थी और बारगाह सुलेमानी से हरमसरायशाही की तरफ़ लेचले और सामान उत्तम इकट्ठा था और सरदार और नगरबासी क़ाफ़ के अमीर के चारों तरफ़ मिलेहुए चलेजाते थे और गाने बजानेवाले आगे गाते बजाते और परियां हाथोंपर नाचतीहुई चलीजाती थीं और गुब्बारे आकाश से छूटकर पृथ्वी पर गिरते तो यही मालूम होताथा कि सितारे टूट २ कर गिररहे हैं इसीप्रकार से अपूर्वतमाशे होतेथे परन्तु अब अधिक लिखने से बड़ा काल व्यतीत होताहै इस लिये संक्षेप में लिखा है इसी धूमधाम से दुलहा दुलहिन के स्थान पर पहुँचा और अब्दुलरहमान ने पहर रात्रि व्यतीत होने के पश्चात् ब्याह किया और दोनों से प्रतिज्ञा ली और दोनों का मनोरथ पूरा हुआ शहपालशाह ने आसमानपरी के दहेज में कई देश दिये और भी उत्तम २ वस्तु दीं और जिस समय अमीर महलमें गये तो सब कार्य से छुट्टी पाकर आसमानपरी को पलँगपर लेटालिया और उसके साथ भोग किया ईश्वर की कृपा से उसके उसी रात्रि को गर्भ रहगया देव और मनुष्य का स्वभाव मिलगया प्रातःकाल जब अमीर स्नान करके पोशाक पहिनकर सभा में जाकर बैठे तब उस दिन से और अधिक प्रतिष्ठा होनेलगी और हर प्रकार का सामान उनके लिये आनेलगा परन्तु अमीर रात्रि दिन गिना करते थे कि कब वर्ष समाप्त होगा कि हम जाकर दुनिया में सबसे मिलकर यहां की बातें कहेंगे और बहुतसी अपूर्व वस्तु यहां से लेजाकर देकर प्रसन्नता उठावेंगे॥

अब अमीर का वृत्तान्त छोड़कर थोड़ासा वृत्तान्त सेनापति खुसगे हिन्द मालिक लन्धौर पुत्रसादान का संक्षेपपूर्वक लिखते हैं कि जब लन्धौर अमीर से आज्ञा लेकर नौकापर सवार होकर चले उसके दूसरे दिन बहराम से भी मुलाक़ात हुई तो बातों से मालूम हुआ कि अमीर ने इसको भी हमारी सहायता के लिये भेजा है यह

सुनकर अतिप्रसन्न हुए और अमीर ने ईश्वर का धन्यबाद किया पांचवें दिन एक तूफ़ान आया उसके कारण तीन दिनतक नौका इधर उधर फिरा की चौथे दिन जाकर तीर लगी और लोगों का प्राण बचा परन्तु जिस नौकापर बहराम सवार था उसका पता न मिला तब तो लन्धौर बड़े संदेह में हुआ कि अमीर ने हमारी सहायता के लिये भेजा है उनसे क्या कहेंगे हमको बड़ी लज्जा प्राप्त होगी बहराम का हाल सुनिये कि नौका जो तूफ़ान से बहती २ टूटगई तो बहराम एक पटरेपर बैठे हुए बहकर तीर जालगे और पृथ्वीपर जाकर ईश्वर का धन्यबाद किया और एक तरफ़ को पैदल चला और कई दिनों से अन्न जल न पाया था तीनकोस जाके एक सौदागर का डेरा पड़ा था उसी के समीप जाकर एक वृक्ष के नीचे चुपचाप जाकर बैठा कि ऐसा न हो कि इसमें कोई मुलाक़ाती मिले कि इस मेरी बुरी हालत को देखकर लज्जित करे परन्तु संयोग से सरदार उस डेरे को घूमताहुआ बहराम के समीप आनिकला तो बहराम से पूछा कि तू कौन है और कहांसे किस कार्य के लिये आताहै कहांजायगा ? बहराम ने कहा सौदागर हूं मेरी नाव तूफ़ान में डूबगई है परन्तु मेरा प्राण बचगया कि एक पटरेपर बहकर किनारे लगाहूं और वहां से उतरकर यहां आया हूं अब देख जो ईश्वर देखावेगा वह और देखूंगा उसने कहा ऐ प्यारे ! पास द्रव्य अधिक है परन्तु पुत्र नहीं है इसीसे उदास रहताहूं अब तू मेरे साथ चल तुझे अपना पुत्र बनाऊं और सब द्रव्य और असबाब का स्वामी करूं और मेरे पास इतनी द्रव्य है जो किसी बादशाह के पास भी नहीं है तब बहराम उसके साथ गया उसने स्नान कराकर अच्छी पोशाक पहिनाकर सब द्रव्य और असबाब दिखलाया और अपने साथ लेकर वहां से कूच किया और सब माल असबाब का उसे मालिक किया बहराम ने सौदागर से पूछा कि किस तरफ़ जाओगे और किस नगर में बास अपना करोगे उसने कहा माण्डू देश में जो सरन्द्वीप के समीप है और राजधानी मलिकशवाँ की है वहीं चलकर मार्ग के श्रम से आराम लेंगे तब तो बहराम अतिप्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा होगी तो लन्धौर से अतिशीघ्रही मुलाक़ात होगी पस कई दिनों के बाद माण्डूनगर में पहुँचकर सराय में असबाब उतारकर उतरे और दूसरे दिन सौदागर ने बहराम को साथ लेकर स्नान किया और पोशाक बदलकर बाज़ार की सैर को गया तो वहां उस को एक तमाशा दिखाई दिया कि चौराहे में एक चौकुण्ठा चबूतरा है उसपर एक चौकीपर एक कमान और अशरफ़ियों के तोड़े रक्खे हैं बहराम ने पहरेवालों से पूछा कि यह कमान और तोड़े कैसे हैं ? इसका हाल मुझसे बतलाओ उन लोगों ने कहा कि ज़रीमनाम हमारे बादशाहका एक सेनापति बड़ा बुद्धिमान् और बलवान् है यह कमान उसका है और वह इसे खींच नहीं सका इसलिये तोड़े और कमान यहां रखवादिया है कि जो कोई इस कमान को खींच लेवे वह इन तोड़ों को लेजावे और जो जी चाहे वह करे बहराम ने पूछा कि कहो तो मैं इस कमान को खींचूं

और अपना बल दिखलाऊं उन पहरेवालों ने कहा भला तू बेचारा इसे क्या खींच सकेगा तुममें ऐसा बल कहां है बहराम ने कहा ऐ यारो! बल ईश्वरका दिया हुआ है इसमें अमीर और ग़रीब का कुछ भाग नहीं लगा है और न किसीके इच्छा से मिलता है यह तेरी बातें वृथा हैं बहराम से पहरेवालों से बात चीत होती थी कि नेकरायवज़ीर शईबशाह की सवारी बड़ी धूमधाम से आनिकली बहराम देख कर बड़े आश्चर्य में हुए दूतों ने जाके नेकराय से बहराम की तरफ़ सम्मुख होकर पूछा कि ऐ जवान! तू इस कमान को खींचेगा बहराम बोला (कि हाथ कङ्कन को आरसी क्या) परीक्षा लेकर देख लीजिये नेकराय ने कहा अच्छा खींचो हम भी देखें बहराम ने ईश्वर का नाम लेकर कमान को उठाकर क़ब्जे को अपने कमर में करलिया और कमान को उठाकर खूब बल दिखलाया लोगों ने उसके बल को देख कर बड़ी प्रशंसा की परन्तु ज़ग़ीम के नौकरों को अच्छा न मालूम हुआ आपस में बकने लगे और सिड़ियोंकी तरह हाहू करनेलगे बहराम ने क्रोधित होकर कईएक को मुक्कोंसे मारडाला तब नेकराय ने उनको वहांसे धमकाकर हटादिया और बहराम को लेकर अपने स्थानपर चला आया ज़ग़ीम ने जब यह सुना कि सौदागर कमान खींचकर अशरफ़ियोंके तोड़े भी उठालेगया और मेरे कई नौकरों को मारडाला है तिसपर नेकराय उसको अपने स्थानपर लेगये हैं और मेरा कुछ भी विचार न किया कि उसको अपने स्थानपर लेगया यह कहकर हथियार धारण करके बहराम के मारने के वास्ते चला और जब बहराम उसे दिखाई पड़ा तो अतिक्रोधित होकर उसे मारने को तलवार लेकर दौड़ा और यह कहनेलगा कि ऐ गजी बेचनेवाले! तुझेभी बल हुआ कि मेरा कमान खींचकर अशरफ़ी के तोड़े उठा लेगया और मेरे नौकरों को भी मारडाला अब ले तुझेभी मारकर बदला लेता हूं यह कहकर दौड़ा कि इसे मारकर बदला लूं कि बहराम ने तलवार उसके हाथ से छीनकर एक ऐसा घूंसा मारा कि वह मरगया यह ख़बर बादशाह को पहुँची उसने तुरन्त ही नेकराय समेत लेआनेकी आज्ञा दी जब बहराम सामने गया तो बादशाह शईब ने क्रोधित होकर बहराम से कहा कि तूने हमारे इतने बड़े नामी सरदार को क्यों मारडाला? बहरामने कहा आपने क्यों ऐसा निर्बल वज़ीर रक्खा है? कि एक घूंसे के मारने से मरगया बादशाह को बहराम की बातें बहुत पसन्द आईं और उसी समय ख़िल-अत वज़ारत की देकर ज़ग़ीम के स्थानपर बैठने की आज्ञा दी बहराम ने दो तीन बार उस कमान को बादशाह के सामने खींचकर सिपाहियों को आज्ञा दी कि इस कमान को उसी स्थानपर तोड़ों समेत लेजाकर रक्खो और जो कोई इसे उठावे उसे हमारे पास लेआओ बादशाह इन बातों को देखकर अतिप्रसन्न हुए और अपनी बेटी का ब्याह उसके साथ करदिया और ब्याह में बड़ी धूमधाम की और आधा देश अपना उसको देकर कहा कि दोपहरतक तुम तख़्तपर बैठकर हुकूमत किया करो और दोपहर भर हम हुकूमत राजसिंहासनपर बैठकर करेंगे अब थोड़ा सा

वृत्तान्त लन्धौर खुसरो हिन्दुस्तान का सुनिये कि जब लन्धौर बन्दर सरनूद्वीप में पहुँचा तो वहांपर नाव को लङ्गर डालकर आप सेनासमेत पृथ्वीपर उतरकर एक शोभायमान स्थान पर डेरा डालकर पड़े और कुछ दिन वहां रहकर सेनाको आरास्ता किया और जिस मनुष्य को जो लायक़ समझा वैसी आज्ञा देकर क़िले सबरसबूर की तरफ़ रवाना हुआ और वह हाल सबपर प्रसिद्ध है॥

पहुँचना खुसरो हिन्दुस्तान मलिक लन्धौरपुत्र सादान का क़िले सबरसबूर पर॥

लिखनेवाला लिखता है कि जैपूरशाह जिसको मलिक लन्धौर खुसरो हिन्दुस्तान राजगद्दी पर बैठालकर अमीर के साथ मदायन की तरफ़ चलेगये थे और उसको अपना स्थानापन्न बनाआये थे परन्तु बहुत दिनों से मलिक सारिज फ़ीरोज़ तुर्क और अहबूक खारजमी और महलील सगलियार इन सब लोगोंके मारे क़िला अपना बन्द कियेहुए बड़े दुःख में पड़े रहे आख़िर को सेना ने कहा क़िले में बन्द होकर कबतक दुःख उठावें बाहर निकलकर युद्ध करने को आरूढ़ होवें मरें या मारें दो में एक होगा इसमें बैठरहना मर्दानगी का काम नहीं है जैपूरशाह ने कहा कि जैसी तुमलोगों की खुशी हो हमको हरप्रकार से मंजूर है तब उसी समय शत्रु के पास एक दूत भेजा कि क़िलेसे हटकर पड़ो हमारा तुम्हारा युद्ध होगा तब तो उन लोगों ने अतिप्रसन्न होकर जैपूर की आज्ञानुसार किया और दोनों तरफ़ युद्ध का सामान होकर डङ्का युद्ध का बजनेलगा और प्रातःकाल को दोनोंतरफ़ की सेना युद्ध के खेतमें आकर युद्धको आरूढ़ हुई और प्रथम महलील सगलियार खेतपर आकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ और उधर से जैपूरशाह भी युद्ध के खेतमें घोड़ा बढ़ाकर खड़ेहुए परन्तु किसीकी वार न चलीथी कि एक बवण्डर सामने से ऐसा उठा कि सर्वत्र अँधियारा होगया और उसके दूर होनेके पश्चात् एक सेना सत्तर सहस्र की दिखाई दी कि जिसके देखने से सब लोग व्याकुल होगये आगे लन्धौर हाथी पर सवार सब शस्त्र धारण कियेहुए भयानक रूप बनाये बैठा था कि जिसके देखने से लोगों को बड़ा आश्चर्य होता था जब उस स्थानपर आ पहुँचा तो उतरकर महलील संगसार को ललकारा और ईश्वर का नाम लेकर बोला कि मैं तेरा प्राण का गाहक आ पहुँचा देख अभी मैं तुझको मारता हूं उसने यह सुनकर गुर्ज लन्धौर पर चलाया लन्धौर ने रोककर एक वार ऐसी मारी कि फिर उसने शिर न उठाया और फिर लोगों को ललकारा कि जिसको युद्ध करने की इच्छा हो वह आकर खड़ा होवे और अपनी बहादुरी दिखावे परन्तु यह हाल देखकर किसीने कुछ उत्तर न दिया और किसीका मन न हुआ कि इसके सम्मुख जाकर खड़े होवें तब लन्धौर ने एकबारगी हल्ला बोलदिया और सब सेना शत्रु की सेनापर जा गिरी बहुतसी सेना शत्रु की मारीगई और शेष सेना ने भागकर अपना प्राण बचाया और लन्धौर की सेना को बहुत ख़ज़ाना और माल मिला कि हरएक मालदार होगया और खुसरोहिन्द अतिप्रसन्नता के साथ क़िलेमें गया सब संदेह मन से दूर होगया और सभा

नाच रङ्ग की करवाई तब फिर मलिकसारिज और अहबूकख़्वारजामी दो पहलवानों को तीन लाख सेना लेकर युद्ध करने को आकर पड़ा एक पहलवान का नाम हिरा-सफ़ीलदन्दां था दूसरे का मङ्गल वफ़ीलज़ोर था और वे दोनों ऐसे थे कि हर एक मनुष्य देखकर डरताथा युद्ध का डङ्का बजवाकर युद्ध करनेको उपस्थित हुए लन्धौर ने भी डङ्के का शब्द सुनकर अपनी सेनामें भी डङ्का बजाने की आज्ञा देकर युद्धका सामान-इकट्ठा करनेलगे और प्रातःकाल होतेही दोनों तरफ़की सेना युद्धके खेत पर आकर खड़ीहुई तो हिरासफ़ीलज़ोर ने आगे बढ़कर ललकारा तब लन्धौर ने भी अपने हाथी आगे बढ़ाये और उसके सम्मुख आकर बहादुरी के साथ कहा कि ला अब वार चला देखूं कैसा बल तेरे है तब उसने एक तलवार जो चारसौ मन की थी निकालकर लन्धौर के शिरपर मारी खुसरो ने उस वार को बचाकर अपनी तलवार मियान से निकालकर ललकार कर कहा कि ख़बरदार हो नहीं तो पीछे से कहो कि धोखेसे मारा अब मैं तलवार चलाताहूं रोको ऐसा कहकर वार चलाई तब उसने ढालसे रोका और अपना सिपाहपना दिखलाया परन्तु वह ढाल काटतीहुई कलेजे के पास जा निकली और उसने फिर शिर न उठाया एकही वार में प्राण निकल गया उसके भाई ने जो देखा कि भाई हमारा मारागया उस समय अपने घोड़ेको दौड़ाकर लन्धौर के सामने आया और अतिदुःखित होकर कहा कि तू ने बड़ा ग़ज़ब किया जो मेरे भाई को मारडाला देख तेरा प्राण अब कब बचताहै तेरी हड्डियों को कैसा काटताहूं लन्धौर ने कहा कि संदेह न करो तुमको भी उसीके पास भेजते हैं कि तुम दोनों साथ जाकर रहो अब वार चला उसने एक तलवार खुसरो को खूब ज़ोर करके मारी खुसरो ने उसको रोककर वही रुधिर से भरीहुई तलवार कमर से निकालकर जो मारी तो दो टुकड़े होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और तलवार साफ़ अलग होगई अहबूक और सारिजने जो देखा कि दोनों पहलवान मारे गये सब सेना लेकर एकबारगी शत्रु की सेनापर आगिरे और उधरसे हिन्द की सेनामें धावा किया दोपहर बराबर तलवार चला की तब अहबूक और सारिज ने विचारा कि सेना मारीजाती है और शत्रु दबाये चलाआता है इस समय यहां ठहरना अनुचित है तब डङ्का लौटने का बजवाकर वहां से भागकर और अपनी पराजय से लज्जित होकर अपने स्थानपर चलेआये और मलिक लन्धौर भी विजय का डङ्का बजवाते हुए अतिप्रसन्नता के साथ क़िले में दाख़िल हुए और मलिक सारिज अति व्याकुल हुआ महल में जो गया तो उसकी स्त्री और बेटी ने कारण व्याकुलता का पूछा उस ने कहा कि लन्धौर के हाथ से प्राण नहीं बचा चाहता और किसी सरदार का दिल उससे युद्ध करनेको नहीं चाहता कि प्रथम बार तो उसने उस प्रकार से परास्त किया कि जिसकी प्रशंसा नहीं करसक्के ऐसी बहादुरी की कि हम चार बादशाह मिलकर युद्ध करनेको गये थे परन्तु विजय न पासके और बहुतसी सेना मारीगई और दूसरे युद्ध में कि मैंने तीन लाख सिपाही लेकर चढ़ाई की थी परन्तु लाख सेना

और दो पहलवान मारेगये कि उसके कारण से अब एक सिपाही भी युद्ध का नाम नहीं लेताहै तिसपर भी बिजय न मिली सो अब पेट मारकर मरजाने के सिवाय और कोई युक्ति नहीं सूझती है इन बातों के सुननेसे उसकी बेटी को बड़ा दुःख हुआ और कहनेलगी कि जो आज्ञा हो तो मैं लन्धौर को अपनी युक्ति से बाँध लाऊं और आप को अपनी युक्ति दिखलाऊं सारिज ने पूछा तू क्योंकर ऐसे काम को करलावेगी उस ने कहा आपसे इससे क्या वास्ता जो मेरा जी चाहेगा वह करूंगी परन्तु उसको पकड़ लाऊंगी उसने कहा कि इससे क्या उत्तम तू जा मुझे मंजूर है तूने मसला नहीं सुना कि (अन्धा केवल दो नेत्र चाहताहै) तब उसने एक खेमा जङ्गल के समीप खड़ा करवाया और अपने बदन को अच्छी तरह से साफ़ करके अनेक २ प्रकार के कपड़े और जेवर पहिनकर चारसौ सहेलियों समेत उस खेमे में जाकर परी की तरह बैठी और सब सहेलियों को गाने बजाने की आज्ञा दी और मलिक लन्धौर के दिल में यह बात आई कि शत्रु तो अब पराजय पाकर चलागया है जबतक वह फिर न आवे तबतक जङ्गल में चलकर शिकार में चित्त को बहलावें इस बिचार से क़िले से निकलकर जङ्गल की तरफ़ गया तो वहां जाकर देखा कि एक बड़ा भारी खेमा खड़ा है और उसमें स्त्रियां गारही हैं समीप जाकर पूछा कि यह किसका खेमा है लोगों ने कहा कि सारिज की बेटी चित्त प्रसन्न करनेके लिये आई है लन्धौर उसके देखने के लिये एक पत्थरपर जो उसी स्थानपर पड़ा था बैठगया और उसीकी तरफ़ देखनेलगा उसने परदे के आड़से लन्धौर की सूरत देखकर एक अति स्वरूपवान युवा स्त्री के हाथ एक गिलास में शराब उसके पीने के वास्ते भेजा तब लन्धौर ने पूछा कि उसने मुझे क्योंकर पहिंचाना उस स्त्रीने कहा कि जिस दिन से युद्धस्थल में देखा है उसी दिन से आपके ऊपर मोहित है यह सुनकर लन्धौर अतिप्रसन्न हुआ इतने में एक दूसरी लौंड़ी आई कि आपको मलका साहबा बुलाती हैं जल्द चलिये नहीं तो वे खुद आवेंगी तब तो लन्धौर अतिप्रसन्न होकर खेमेके भीतर गय तो वहां देखा कि एक स्त्री चौदहबर्ष की जवान अपना स्वरूप बनाये हुए तख़्त पर बैठी शराब पीरही है और चारसौ सहेली चारों तरफ़ जिस प्रकार से चन्द्रमा के चारों तरफ़ तारे चमकते हैं उसी प्रकार से वे चारसौ सहेलियां बैठी थीं और परिय नाच गारहीथीं और हर प्रकार की प्यारी २ बातें करती थीं लन्धौर यह हाल देख कर चारों तरफ़ देखनेलगा तब उसने उठकर लन्धौर को तख़्तपर अपनी बग़ल में बैठाललिया अर्थात् फँसाने का जाल बाँधा और कई गिलास शराब अपने हाथ से पिलाया और हरबार अपना लोभित होना उसको जताया तब लन्धौर ऐसा काम के वश होकर बेहोश होगया कि किसीका कुछ बिचार न किया और उसके गले में हाथ डालकर कहनेलगा कि ऐ प्राणप्यारी ! तू मेरे क़िलेमें चल वहां तुझको बड़ा सुख मिलेगा यहां क्यों दुःख उठारही है उसने कहा इस समय दिन है रात्रि को मैं चलूंगी और सब रात्रि आपके पास रहकर सुखको प्राप्तहूंगी लन्धौर ने मंजूर किय

और रात्रि को अपने पास बुलाया और हरचन्द वहां से दिल उठने को न चाहता था परन्तु लाचारी से उठकर अपने स्थान पर आया और अपने खेमे को सजाने की आज्ञा दी और आप रात्रि के आने की आश्रय में बैठा जब रात्रि हुई लिबास पहिनकर उस मक्कार के पास गया और काम से लोभित होकर व्याकुल होगया तब उसने दो गिलास शराब बेहोशी की पिलाकर बेहोश किया तब चाहा कि बाँधकर पिता के पास भेजें कि वह अपना बदला लेवे परन्तु उसकी मृत्यु न थी ईश्वर ने उसके मन को फेरदिया कि संदूक़ में बन्द करके खारी समुद्र में जो वहां से समीप था उस संदूक़ को डाल दिया और अपने पिता से जाकर कहा कि मैंने तुम्हारे शत्रु को मारकर नदी में फेंकवादिया और उससे तुम्हारा बदला लिया तब तो उसने अतिप्रसन्न होकर युद्ध का बाजा बजवाने की आज्ञा दी और युद्ध का सामान इकट्ठा किया और प्रातःकाल जब दोनों सेना युद्ध के खेत में आकर खड़ीहुई उस समय हिन्द की सेना ने लन्धौर को जो उस स्थान पर न देखा तो सब अति व्याकुल हुए और लड़ने से जी टूटगया और सारिज ने युद्धमें बिजय पाकर बहुत से मुसल्मानों को मारडाला और सेना से अपना बदला लिया और जैपूरशाह ने देखा कि सेना लन्धौर के न होनेसे व्याकुल होरही है कि विजय नहीं मिलसक्ती लौटने का डङ्का बजवाकर फिर अपने क़िले का दरवाज़ा जाकर बन्द करलिया और लन्धौर को ढूंढ़नेलगे लन्धौर का हाल सुनिये कि वह संदूक़ जलपर लहर के धक्के खाताहुआ इधर उधर बहता चलाजाता था संयोग से एक सौदागर की नाव जो सिन्ध से आती थी मल्लाहों ने उस संदूक़ को पकड़ लिया और बेखोले सौदागर के हाथ बेचडाला उस अहमक़ ने लेकर जो खोला तो उसमें एक मनुष्य बेहोश पाया उसको निकालकर पलँगपर लेटाकर चैतन्य किया तब लन्धौर ने आंख खोलकर देखा तो नाव में एक पलँगपर बहुत से कपड़े बदन में लपेटे पड़ा है और न तो वह खेमा है न वह स्त्री देखकर बड़े आश्चर्य में होकर उस मनुष्य से पूछा कि तू कौन है और यह कौन स्थान है और यहां मुझको इस नावपर कौन लेआया तब उसने कहा मैं सौदागर हूं सिन्ध से माल बेचने के लिये लेजाता हूं और आप संदूक़ में बहे चलेजाते थे मल्लाहोंने संदूक़ पकड़लिया हमने उनसे लेकर खोला तो आपको उसमें बेहोश पाया निकालकर पलँगपर लेटाकर चैतन्य किया इतना गुण मैंने आपके साथ किया है अब आप बतलाइये कि कौन हैं और किसने आपके साथ यह सलूक किया है ? लन्धौर ने अपना सब वृत्तान्त उससे कहा तब वह भी मुसल्मान अपने धर्म में पक्का था उसके पैरोंपर गिरपड़ा और कहा कि मैं आपको बहुत जल्द सरंद्वीप पहुँचादूंगा और आपको किसी प्रकार से दुःख न होनेपावेगा लन्धौर ने पूछा कि अब तुम कहां जाओगे और वहां से फिरकर कब आओगे सौदागर ने कहा मैं माण्डूदेश को जाऊंगा और वहां कुछ दिन रहूंगा इस प्रकार से कई दिनों के पीछे नौका माण्डू में जाकर पहुँची नाव को नदी में लङ्गर डाल

उतर कर सौदागर माण्डूनगर में जाकर ठहरा संयोग से एक दिन बाज़ार में खुसरो सैर के वास्ते गया तो उसी रास्ते से जहां वह कमान और अशरफ़ियों के तोड़े रक्खे थे और सिपाही पहरे पर थे जा निकला तो सिपाहियों से पूछा यह कमान किसका है और यहां क्यों रक्खा है? सिपाहियों ने कहा यह कमान बह-राम का है जो कोई इस कमान को खींचेगा वह इन तोड़ों को पावेगा और संसार में प्रसिद्ध होगा लन्धौर बहराम का नाम सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और पहरेवालों से कहा कि बहराम जिसका नाम है वह मेरा नौकर है बहुत दिनों से उसका पता नहीं मिला था आज उसका पता मिला यह कहकर कमान को उठाकर दो तीन बार घुमाकर अशरफ़ियों के तोड़ों को लेकर उसी स्थानपर कंगालों को लुटादिया पहरे वालों ने जाकर सब हाल बहराम से कहा बहराम ने यह सुनकर कि वह कहता है कि बहराम हमारा गुलाम है क्रोधित होकर कई सिपाहियों को भेजा कि जाकर उसको हमारे पास पकड़लाओ जब वे लोग थोड़ी दूर गये तो देखा कि वह आपही आता था तब तो लौटकर बहराम से कहा कि वह खुदही आरहा है आपका इक़-बाल उसको खींचे लाता है बहराम बैठके से निकलकर थोड़ीदूर आगे गया तो देखा कि लन्धौर चलाआता है दौड़कर उसके पैरोंपर गिरपड़ा और प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ खुसरो ने उसको छाती से लगाया और अतिप्रसन्नता के साथ उस की पेशानी को चूमलिया और दोनों खुशी से बेहोश होगये मलिकशईब यह सुन कर कचहरी से निकलकर उनके पास आया तो देखा कि दोनों बेहोश थे तब गुलाब आदिक छिड़क उनको होश में किया तब बहराम से सब हाल पूछा बहराम पहले तो अपना हाल छिपाये था परन्तु उस समय सब अपना और खुसरो का सत्य बयान किया और उस छिपेहुए भेद को खोलदिया शईबशाह ने जो खुसरो का नाम सुना तो उसके पैरों को चूमकर अतिप्रतिष्ठा के साथ अपने बैठके में ले आकर खुसरो को तख़्तपर बैठाला और आप एक कुरसीपर अलग बैठा और नाचरङ्ग का सामान इकट्ठा करके सात दिनतक करवाते रहे सात दिनके पश्चात् खुसरो बहराम और बहुतसी सेना को भी साथ लेकर सामान के साथ सरन्द्वीप की तरफ़ रवाना हुए॥

वृत्तान्त साहबकिरां (हमज़ा) का जिस समय में परदे काफ़ को गये थे॥

कि जब वर्ष पूरा हुआ तब आसमानपरी के एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका स्वरूप सूर्य के समान था उसे देखकर बादशाह और सब सरदारलोग अतिप्रसन्न हुए परन्तु अमीर उस कन्या के होनेसे अतिलज्जित हुए तब बादशाह ने खिलअत सुलेमानी देकर अमीर से कहा कि यह ईश्वर की रचना है इसमें मलाल की कुछ बात नहीं पुत्र या कन्या दोमें से एक ईश्वर देता है यह आपका विचार बुद्धि से विरुद्ध है तब अब्दुलरहमान ने कहा कि ऐ साहबकिरां! यह कन्या बड़ी प्रतापिनी होगी कि सब देव इसकी आज्ञा में रहेंगे और यह साहबकिरांकाफ़ कहलावेगी और बड़ा नाम होगा इन बातों के सुनने से अमीर का सब मलाल दूर होगया और चित्त

अतिप्रसन्न हुआ और बादशाह ने नातिन के होनेसे कई महीने तक नाच रङ्ग करवाया और कङ्गाल फ़क़ीर आदि को रुपया अशरफ़ी लुटाया और जब वह लड़की छः महीने की हुई तो एक दिन अमीर ने बादशाहसे कहा कि जो कुछ आपने अब तक कहा उसको मैंने किया अब कृपा करके मुझे परदे दुनिया को भेजकर अपने वादेको पूरा कीजिये तब बादशाह ने कहा ऐ साहबकिरां! आपकी आज्ञा से हम बाहर नहीं हैं और हर प्रकार से आपकी ख़ातिरदारी हमको उचित है और तुम्हारे रुख़्सत करने में कुछ इन्कार नहीं है परन्तु क़िले सई में जो काफ़ से उत्तर तरफ़ है और हमारा क़दीम क़िला है उसमें दो देव ख़रचाल और ख़रपाल नामे दशसहस्र देवों समेत रहते हैं और दोनों बहादुर हैं जो मेरी विनय मानिये और आपका चित्त चाहे तो उनको मारकर मेरा क़िला छोड़ाते जाइये नहीं जैसी आज्ञा आप देवें वैसा हमलोग करें हमलोग आपके सेवक हैं और किसी तरह से बाहर नहीं हैं अमीर ने कहा कि हम आपके सेवक और मित्र हैं आपका कहना हमको हरतरह से मानना उचित है लाइये सवारी मँगवाइये ईश्वर मालिक है वहांभी जाकर उन पापियोंको मारकर आवैं कि वह भी अपने ठिकाने लगें बादशाह ने तख़्त मँगवाकर सब सामान इकट्ठा करके दश सहस्र देवोंसमेत तख़्तपर सवार करवाकर सब देवोंको अमीरकी सेवा करनेकी आज्ञा देकर भेजा अमीर वहां से चलकर एक मैदान उत्तम देखकर जहां से पांच कोस वह क़िला बाक़ी था उतरपड़े और कहा कि यह मैदान युद्ध करने के योग्य है जब यह ख़बर ख़रचाल और ख़रपाल को पहुँची तब वे दोनों बीसस हस्र देवों की सेना लेकर युद्ध करने को आये अमीर ने जब सेना देखी तो उसमें दो देव सेना से हटकर खड़े थे जिनके रूप देखने से आश्चर्य मालूम होता था कि एकका कान तो गधे की तरह था और दूसरे का रूप ही गधे का था पीछेसे मालूम हुआ कि यही दोनों सेना के सरदार हैं इतने में ख़रचाल ने शस्त्र धारण करके खेत में आकर ललकारा कि वह अफ़रेत का मारनेवाला कहां है मेरे सम्मुख आवे अपनी बहादुरी दिखावे कि मैं उसे एकहीबार में मारकर काफ़ के देवों का बदला लूं तब अमीर ने उसके सम्मुख जाकर कहा कि तू अपनी बहादुरी दिखला तब तो वह हँसकर कहनेलगा कि तुम पर पहले मैं क्या बहादुरी दिखाऊं कि लोग देखकर हँसें और मुझे लज्जित करें अमीर ने कहा इसी छोटेरूप पर तो मैं अफ़रेत का और उस के माता पिताका मारनेवाला कहाता हूं और तू नहीं जानता कि मैं तेरे प्राण का गाहक हूं और इसी तलवार से तुम्हारा प्राण जायगा यही बात तेरी भाग्य में है तब तो उसने झुलझुलाकर एक तलवार अमीर के शिरपर मारी अमीर ने तलवार को रोककर एक अक़रबसुलेमानी की ऐसी वार मारी कि वह देव तलवार समेत चार भाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ख़रचाल अपने भाई को मरा देखकर तलवार लेकर अमीर के मारने को दौड़ा अमीर उसकी तलवार छीनकर कमरबन्द पकड़ कर देमारकर उसकी छाती पर खड़ा होगया और चाहा कि इसको भी मारकर

यमपुरी को पहुँचावें परन्तु उसने प्रार्थना की कि जो आप मेरे प्राण छोड़ देवें तो मैं सदैव आपकी आज्ञा में रहूंगा अमीर ने उसका प्राण छोड़कर कहा कि ऐ खरचाल ! तू मुझे परदे दुनिया में पहुँचा देगा या नहीं उसने कहा कि आपकी आज्ञा शिर आंखों से मंज़ूर है परन्तु आप थोड़ी समय के लिये क़िले समीन में चलकर आराम कीजिये फिर जहां आज्ञा दीजियेगा वहीं पहुँचादूंगा और जो आप कहियेगा वही करूंगा अमीर तब वहांसे चार देवों के द्वारा बादशाहके समीप बिजय पाने का हाल भेजकर आप शेष देवोंसमेत क़िलेसमीन को गये तो वहां देख कर अतिप्रसन्न हुए और एक बाग़ की नहर में जाकर स्नान किया और उसीमें तलवार का रुधिर धोया और फिर जाकर तख़्तपर बैठकर कुछ मेवे खाये और उस बाग़ के मेवों को देखकर अतिप्रसन्न हुए आलस्य जो आई तख़्तपर पैर फैलाकर बेख़बर होकर सोरहे ख़रपाल ने देखा कि अमीर इस समय बेख़बर सोरहा है अब मारना सलाह है यह विचारकर तलवार सुलेमानी अमीर के बग़ल से उठाकर मियान से निकालकर अमीर पर एक हाथ मारा परन्तु वह तलवार किनारे पर लगी जैसा एक मसला है (कि जिसको ईश्वर न मारे उसको कौन मारता और जिसे ईश्वर न जिलावे उसे कौन जिलासक्ता है) और अमीर ने उसी समय करवट ली तब ख़रपाल ने जाना कि अमीर उठते हैं तलवार मियान में करके अमीर के डर से भागा अमीर जब जागे तो देखा कि वहां न तो कोई देव है और अक़रब सुलेमानी भी नहीं दिखाई पड़ता और हाल बुरा मालूम होता है व्याकुल होकर देवों को बुलाकर पूछा कि ख़रपाल और ख़ुरदचाल कहां हैं बतलाया कि जङ्गल मीनामें हैं परन्तु वहां कोई जा नहीं सक्ता बहुतप्रकारसे अमीर ने देवों से कहा कि मुझको वहां पहुँचा देव परन्तु किसीने न माना और उस क़िले का पता न दिया आख़िरकार सब देवों को छोड़कर अकेले पैदल उसकी तरफ़ चले सातवें दिन वहां जाकर पहुँचे तो देखा कि एक पहाड़ बड़ा ऊंचा है जिसपर कोई चढ़ने की शक्ति नहीं रखता उसके पत्थरों का रङ्ग पुखराज की तरह लाल है सूर्यकी रङ्गत उसके सामने लज्जित होती है और हरियाली ऐसी शोभा देती है कि जिस तरह से किसी ने बराबर से जमादी है और देखने में चित्तको अति आनन्द होता है और उस पहाड़ के नीचे कोसोंतक मैदान है और उस मैदान में एक चबूतरा बिल्लौर का है और उसकी सफ़ाई जलसे भी अधिक है उसपर ख़रचाल बेख़बर बग़ल में अक़रब सुलेमानी रक्खेहुए सोरहा था गोया उसकी मौतकी निशानी रक्खीहुई है पहले तो जाकर अक़रबसुलेमानी को उठाकर हाथ में लिया तत्पश्चात् एकशब्द ऐसा किया कि पहाड़ आदिक हिलगये और ख़रचालभी जागकर मारे डरके कांपनेलगा और चाहा कि भागकर अपना प्राण अमीर के हाथ से बचावे त्योंहीं अमीर ने एक हाथ बढ़ाकर ऐसा मारा कि दोभाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और प्राण वायु की तरह उड़गया तब अमीर उसको मारकर तलवार की तकिया रखकर उसी चबूतरे

पर बैठ रहा और उधर जो देवों ने यह वृत्तान्त बादशाह से जाकर कहा तो बादशाह ने अतिब्याकुल होकर अब्दुलरहमान से कहा कि ऐसे समय में अमीर की सहायता करनी चाहिये तब वहां से कई देव तख़्तपर सवार होकर अमीर को ढूंढ़ते २ कई दिनोंके बाद उस स्थानपर पहुँचे तो देखा कि ख़रचाल की लोथ दोभाग होकर पड़ी है जाकर अमीर से सलाम किया और बादशाह का सन्देशा देकर हाथ पैर को चूमकर तख़्तपर बैठालकर गुलिस्तान अरम को ले आये बादशाह ने अति प्रसन्नता के साथ अपने गले में लगाकर अमीर से कहा कि अब छः महीने के बाद आपको अच्छी तरह से दुनिया को भिजवाईंगे अमीर महलसराय में गये और बादशाह के कहनेपर सबर करके दिन गिनने लगे ॥

वृत्तान्त अमरू और हरमर जाफ़रांपज़े का ॥

लेखक और बड़े २ बुद्धिमान् लोग उन लोगों का वृत्तान्त यों लिखते हैं कि जब क़िले निस्नान में भी जिन्स चुकगई अमरू बड़े संदेह में होकर कि अब किसी युक्ति से कहीं से भोजन की तदबीर करनी चाहिये ख़ुसरो नेस्तानी से पूछा कि कोई और भी क़िला है कि वहां चलकर इन लोगों के हाथ से बचकर अपने साथ वालों के बचाने की कोई युक्ति करूं उसने कहा कि यहां से पचासकोस पर एक रहतासगढ़ क़िला है और उसके दो स्वामी हैं एक का नाम तहमुरसशाह है और दूसरे का साबित है और वह क़िला ऐसा मज़बूत बना है कि उसमें कोई क़ाबू नहीं पा सक्ता है और वे दोनों सरदार भी बड़े बहादुर और लड़नेवाले हैं तब तो अमरू ने मुक़बिल से बुलाकर कहा कि तुम क़िले की रक्षा करना मैं क़िले रहतास के लेने की तदबीर में जाता हूं कोई युक्ति से उसको लेता हूं यह कहकर लिबास शाही उतारकर और बहुरूपियों की पोशाक पाहिनकर क़िले से निकलकर उसी तरफ़ की राह ली डेढ़ पहर में क़िले रहतास के समीप पहुँचकर कई बार क़िले के चारों तरफ़ फिरा परन्तु भीतर जानेकी कोई युक्ति न पाई तब वहां से हटकर एक टिकुरी पर बैठकर क़िले में जाने की तदबीर विचारनेलगा कि किस युक्ति से क़िले में जानेका रास्ता पाऊं इतने में एक घसियारा कमर में जाली खुरपा बांधे एक टट्टू पर सवार क़िले से बाहर आया तब अमरू साधका भेष धारण करके उसके पीछे २ चलागया और कुछ न बोला जब वह घसियारा दो कोस पर जाकर टट्टूपरसे उतरकर घास छीलने लगा तो अमरू ने पीछे से ईश्वर का नाम लिया तब उसने फिरकर सलाम किया और पूछा कि आप क्यों ऐसा दुःख उठाते हैं और कहांसे आते हैं अमरू ने कहा कि मुझको इसीमें आराम है तुझसे इसके पूछने से क्या प्रयोजन है हमको जहां ईश्वर आज्ञा देता है वहीं जाते हैं ईश्वर ने तेरे पास आनेकी आज्ञा दी है असरू तुझपर ईश्वर की बड़ी कृपा हुई है अब सब तरह से तुझे सुख प्राप्त होगा यह कहकर दो खुरमें झोली से निकालकर उसको दिये और कहा कि ईश्वर का नाम लेकर इसको खाजा इससे तुझे बड़ा सुख मिलेगा उस सादे मनुष्य ने उसको

खालिया दो घड़ी के बाद उस खुरमे ने बेहोश करदिया तब अमरू ने और दारू बेहोशी की उसको दी कि तीन चार दिनतक होश न आवे और घास के ढेर में छिपाकर आप उसी टट्टूपर सवार होकर जाली खुरपा कमर में बांधकर क़िलेकी तरफ़ चला और जब दरवाज़े के समीप पहुँचा तो थरथराकर कांपने लगा थके मांदे की तरह हांफनेलगा तब दरबान ने दरवाज़ा खोलदिया और उसको किसी तरह से न रोंका तब अमरू ने टट्टू की बाग ढीली करदी कि वह अपने घर की राह पहिंचानता होगा तब वह टट्टू घसियारों के महल्ले में जाकर एक झोपड़ी के पास खड़ाहुआ तब अमरू टट्टूपर से गिरपड़ा और कांपने लगा घसियारे की जोरू झोपड़ी से निकलकर पूछनेलगी कि मुनुवां के बाप! खैर तो है? तब अमरू ने कहा कि जूड़ी आई है तब उसने अमरू को उठाकर बोरिये पर लेटाकर हाथ पैर दाबना शुरू किया अमरू ने दिनको तो सोकर काटा रात्रिको पसावनं पीकर नवीनरूप धरा और आधीरात्रितक वहां रहकर और भेष धरकर पहरेवालों से छिपता २ क़ैसतह-मुरसशाह की दीवार के समीप पहुँचकर कमन्द लगाकर महल में दाख़िल हुआ इतने समय के दुःख और फ़रेब से अपना मनोरथ पूरा किया जाकर देखा कि तह-मुरसशाह दुशाला ओढ़े एक पलँग पर सोरहा है (सत्य है कि सोता और मुरदा बराबर होता है) और चिराग़ बराबर से जलरहे हैं अमरू ने केवल एक चिराग़ रहने दिया और सब बुझाकर उसके समीप जाकर दुशाले का आंचर जो उसके मुखपर से उठाया तब उसने अमरू का हाथ पकड़लिया अपना वदन न छूनेदिया अमरू जो अपने हाथों में सदैव भाले मचरव पहिने रहता था इसीलिये उसका दुःख सहता था हाथ खींचतेही भाला तहमुरसशाह के हाथ में रहगया अमरू हाथ छुड़ाकर दश क़दम पर जा खड़ाहुआ तब तहमुरसशाह ने कहा ऐ ख़्वाजे अमरू! तू मुझसे किसीप्रकार से संदेह न कर मेरे पास चलाआ कि अभी स्वप्न में हज़रत इबराहीम ने मुझको मुसल्मान करके तुम्हारे आने की ख़बर दी है और तुम्हीं अपने दिल में विचारो कि मैं क्योंकर जानता और कौन तुम को इस रूप से पहिं-चान सक्ता है वे बतलाये तुम्हारा नाम जान सक्ताहै तब अमरू उसके पास गया मिलकर उसने कहा जो आज्ञा हो वह मैं करूं कि आपकी कृपा मेरे ऊपर होवे तब अमरू ने सब अपना वृत्तान्त उससे कहा तब उसने कहा कि आप बेखबर मेहर-निगार को इस क़िले में लेआइये और किसी तरह से संदेह न कीजिये यह क़िला आपही का है सब रात्रि इसी प्रकार की बातों में काटदी और जब प्रातःकाल हुआ तब तहमुरसशाह ने अपने सरदारों से कहा कि आज मुझको हज़रत इबराहीम ने मुसल्मान किया और यह क़िला मैंने अमरू को दिया जिस समय उसकी सेना आवे कोई मना न करे हमारी आज्ञा से दरवाज़ा खोलदेवे तब अमरू अतिप्रसन्नता के साथ विदा होकर अपने क़िले में आया और सब हाल सरदारों से कहकर मलका आदिक को सवार कराकर सुरङ्ग की राह से निकलकर क़िले रहतास की तरफ़ चला

परन्तु तहमुरसशाह को मुसल्मान होनेकी ख़बर और अमरू के बुलाने का हाल साबितशाह ने जब सुना तो शमीम वज़ीर को बुलाकर सब बृत्तान्त पूछा तो उसने भी वही सब हाल बयान किया तब तो तहमुरसशाह को मुसल्मान होनेके कारण मार डाला और वज़ीर समेत दरवाज़ेपर सेना लेकर अमरू के आनेके आसरे में बैठा कि जब वह आवे तो मारकर मलका मेहरनिगार को छीनलेवें अमरू इस हालसे बेख़बर सवारीपर मलका आदिक को सेना समेत क़िले के दरवाज़े तक चलाआया जब अति समीप पहुँचगया तो आप अमरू आगे दरवाज़ा खोलने के लिये जो गया तो क़िले के दरवाज़े पर से बरछी तीर तलवार बाण आदिक मारनेलगे तब अमरू ने कहा मैं अमरू हूं तहमुरसशाह ने मुझे बुलाया है और मेरे साथ सुलह किया है शमीम ने पुकारकर कहा कि ऐ दग़ाबाज़ ! यहां भी मेरे साथ फ़रेब करने आया है तहमुरसशाह तो तेरे फ़रेब में आकर मारागया ख़बरदार जो आगे क़दम बढ़ावेगा तो तू जानेगा जो मेरा कहना न मानेगा तो तू भी माराजायगा अमरू बड़े संदेह में हुआ कि पहला क़िला भी हाथ से गया और यह भी हाथ न आया लाचार होकर पलटा और बिचारा कि जो हरमर जाफ़रांमर्ज़ अभी पीछा करे तो इतने दिनों की मेहनत वृथा जावे और शत्रु को प्रसन्नता प्राप्त हो लाचार पलटने के सिवाय और कुछ न बनपड़ा बीच में मेहरनिगार का खेमा खड़ा किया और सिपाहियों को सरदारों समेत उसके पहरेपर मुक़र्रर किया दूसरे दिन शमीम ने साबितशाह से कहा कि एक पत्र हरमर जाफ़रांमर्ज़ को लिखकर इस हाल को जनाइये कि वह भी आवे तो हम और वह दोनों मिलकर अमरू को मारकर मलकामेहरनिगार को छीन लेवें कि उसकी प्रशंसा होवे साबितशाह को उसकी बात पसन्द आई और एक पत्र हरमर के नाम लिखकर सय्यादनाम सरदार को दिया कि इसको लेजाकर हरमर से अतिशीघ्रही उत्तर लेआओ संयोग से वह सरदार तहमुरस का था तहमुरस ने लड़कपने से लेकर उसको पुत्र की भांति पाला था इस सबब से जिस समय से वह मारागया था लोहू के घूंट पीकर रहता था परन्तु साबितशाह के डरसे कुछ न कहता था वह पत्र लिये सीधा अमरू के पास चला आया उस पत्रको देकर सलाम किया अमरू ने पत्र को पढ़कर उसको गले से लगाया और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि डरो नहीं हम साबितशाह को मारकर तुमको इस क़िले का बादशाह बनावेंगे और सब देश तुम्हें देंगे अमरू ने हरमर जाफ़रांमर्ज़ की तरह से पत्र का जवाब लिखा कि आपने बड़ा कठिन कार्य सिद्ध किया इसके बदले में बादशाह नौशेरवां से हम आपको बहुत कुछ दिलावेंगे और आज हम कतारह काबुली को भेजते हैं कि यह रात्रिको क़िले की रक्षा करें क्योंकि अमरू बड़ा होशियार और फ़रेबी है उससे बचाले और थोड़े समय में मैं भी आता हूं इसप्रकार से लिखकर शाहज़ादों की जाली मोहर करके उस पत्र को सरदार को देकर आप कतारह काबुली का भेष धारण करके उसी के साथ क़िले में जाकर सलाम करके

साबितशाह के सामने बैठा और जब उस सरदार ने पत्र साबितशाह को दिया तो साबितशाह ने पूछा कि यह कौन है ? जो तुम्हारे साथ आया है और तू क्यों इसको लेआयाहै ? उसने कहा कि यह शाहज़ादों के सिपाहियों का सरदार है और शाहज़ादे काबुलका भानजा है और कतारह काबुली इसका नाम है और यह बड़ा बहादुर और लड़नेवाला है तब साबितशाह ने उसको अपने गले से लगाकर अपने समीप बैठाकर यथाउचित मेहमान्दारी की जब रात्रि हुई तो उसने साबितशाह से कहा कि शाहज़ादों ने मुझसे कहा है कि रात्रि को तुम आप क़िलेकी रक्षा करना सो अब मैं जाकर दरवाज़े पर बैठकर रात्रिभर रक्षा करूंगा और कल तो शाहज़ादे आप ही सेनासमेत आवेंगे यह कहकर सय्याद सरदार को अपने साथ लिया और जाकर दरवाज़े पर बैठा जब आधी रात्रि हुई तो सब पहरेवालों को मारकर अपनी सेना क़िले में लेआया और सबको मारना शुरूअ किया जो मुसल्मान हुआ उसका प्राण बचा शेष मारेगये शमीम और साबितशाह को मारकर उस क़िलेकी राजधानी सय्याद सरदार को दी और आप चारों तरफ़ से जिन्स मँगवाकर आराम के साथ क़िले के बुर्जों और दीवारों पर सिपाही रखकर साथ आराम के निःसंदेह होकर बैठा हरमर का हाल सुनिये कि जब सिपाहियों ने ख़बर दी कि क़िला खाली पड़ा है कोई सिपाही दरवाज़े पर भी नहीं देखाई देता नहीं मालूम आपही मरगये या क्या हुए अमरू सुरंग की राहसे क़िले रहतास की तरफ़ गया है तब शाहज़ादे क़िले में गये वहां किसीको न देखा तब वहां से पलटकर खेमे में आकर एक विनयपत्र बादशाह के नाम लिखा कि हमको आठवर्ष से अधिक हुआ कि अमरू के पीछे ख़राब हैं अब या तो आप ख़ुद आइये या किसी और को भेजिये कि अमरू को उसके साथियों समेत आकर मारें और मलका को लेजावें यह सब हाल लिखकर बादशाह के पास सासनी को लेकर भेजा और आप क़िले रहतास की तरफ़ चला कि चलकर अमरू से युद्ध करें वहां जाकर देखा तो ऐसा बनाथा कि पक्षीभी उड़कर नहीं जासक्ता और मनुष्य क्या है लाचार होकर चारों तरफ़ से क़िले को घेरकर उतरपड़े कि थोड़े दिन यहां रहकर अमरू का पता लेवें परन्तु अमरू के डरसे सेना के लोग दिनको बारी २ से सोते थे और रात्रि को सब जागते रहते थे और उस के छापा मारने से बहुत ख़बरदार रहते थे एक दिन हरमर बख़्तियारक सरदारों समेत शराब पीरहे थे क़तारह सरदार गश्त घूमता हुआ उसी तरफ़से आनिकला बख़्तियारक ने उससे कहा कि अमरू इसप्रकार से चालाकी करताहै तुमसे यह भी नहीं होसक्ता कि अमरू को पकड़करके बांधलाओ उसने कहा कि आज मैं अवश्य अमरू को बांधकर लाऊंगा जब रात्रि हुई तो क़िले के पास गया परन्तु कहीं जाने की राह न पाई आख़िरकार एक बुर्ज की तरफ़ गया तो वहां किसीका शब्द न सुना तो जाना कि पहरेवाले सोरहे हैं उसी तरफ़ कमन्द लगाकर ऊपर चढ़गया तो देखा कि सब पहरेवाले सोरहे हैं सबको मारकर नीचे उतर कर बरामदे में गया तो

अमरू का पलँग बिछाथा परन्तु उस समय अमरू मलकामेहरनिगार के साथ खाना खाने गया था आकर पलँग पर सोरहा और वह बहुरूपिया पलँग के पाये में लिपटा पड़ा था जब अमरू अच्छी तरह से सोगया तो निकलकर अमरू के पास आकर दारू बेहोशी देकर अमरू को बेहोश किया और एक गठरी में बांधकर उसी रास्ते से जिधर से आया था लेकर उतरा और हरमर के पास लेजाकर रख दिया और कहा कि देखो मैं आज चालाकी करके अमरूको बांध लेआया अब तो मुझे शाबाश दीजिये तब तो हरमर ज़ोपीन और बख़्तियारक को बड़ी ख़ुशी प्राप्त हुई और मारे ख़ुशी के कूदने लगे और उसको ख़िलअत देकर बड़ी प्रतिष्ठा और मान सम्मान से आदर किया और उसी सायत लुहार को बुलवाकर अमरू के पैरों में बेड़ियां और ज़ंजीर से बँधवाकर कारागार में डालदिया और प्रातःकाल तक कोई न सोया जब अमरू सवेरा होते होश में आया अपने को क़ैद में पाया देख कर कहने लगा राम राम कैसा बुरा स्वप्न देखता हूं हरमर ने सुनकर कहा ऐ पापी! यह स्वप्न नहीं है सत्य है तू जागता है यह तेरी मक्कारी का फल है हज़ारों मनुष्यों को तूने दुःख दिया है देख कैसा बदला पाता है अब तेरा प्राण कब बचता है अमरू ने कहा आप जानते नहीं कि मैं वली हूं मैं कब क़ैद में रहता हूं और कौन मुझे क़ैद करसक्ता है तू अपने वास्ते कांटे बोताहै आराम से बैठा नहीं रहाजाता अब जब मैं छूटूंगा तो एक को भी जीता न छोड़ूंगा हरमर ने कहा अब भी तुझे बचने और छूटने का भरोसा है कौन तुझे मेरे हाथ से छोड़ावेगा? अमरू ने कहा मैं ईश्वर के भरोसे हूं वही आकर मुझे छोड़ावेगा मैं तुमलोगों से किसी तरह नहीं डरता जो तेरे जी में आवे वह तू कर कुछ मेरे साथ नेकी न कर हरमर ने अमरू की ऐसी बातें सुनकर क्रोधित होकर जल्लादों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको अभी लेजाकर मारो और इसीके शिर का बोझा उतार देओ॥

आना नाज़ीपोश देवका और अमरू को क़ैदसे छुड़ाना॥

लिखनेवाला लिखता है कि जिस समय जल्लाद अमरू को मारने के लिये चबूतरे पर लेगया और तलवार मियान से निकालकर उसके समीप आया तब अमरू ने देखा कि अब कोई सूरत बचने की नहीं है तब मन में हज़रत ख़िजरका स्मरण किया और कहा कि इस समय जो मेरा प्राण बचाओ तो पांच कौड़ी की रेवड़ियां लेकर नदी के तीर जाकर चढ़ाऊंगा बख़्तियारक ने जो अमरू के ओंठ हिलते देखे तो हरमर से कहा कि आप जल्लाद को शीघ्रही आज्ञा दीजिये कि अतिशीघ्रही उस को मारे नहीं तो मन्त्र पढ़कर छूटकर भागजावेगा फिर हमलोगों को बड़ा दुःख देगा देखिये वह मन्त्र पढ़रहा है उसके मन्त्र में बड़ा गुण है फिर उसको किसीका दुःख न रहजायगा हरमर ने जल्लादों से दूसरी बार आज्ञा दी तब जल्लाद ने जाकर अमरू से पूछा कि जो कुछ खाना पीना हो खा पीले थोड़ी देर में तू माराजायगा मारनेवाला आता है अमरू ने कहा कि हम खाने के बदले दुःख और क्रोध खाचुके

अब कुछ खाने पीने की इच्छा नहीं है तुम अपना कार्य करो और कुछ बातें न करो जल्लाद तीसरी बार आज्ञा लेकर अमरू के मारने को आया अमरू तो शिर झुकाये बैठाथा उस समय कहा कि ऐ जल्लाद! तीक्ष्ण तलवार से मुझे मार कि एक ही बार में कटजावे कि मुझको दुःख न होवे तेरी तलवार की धार तो मुड़ी है तू क्या मुझे मारेगा जल्लाद अपनी तलवार देखनेलगा अमरू ने सांस पाकर हाथ पृथ्वी पर टेककर दोनों लात फैलाकर ऐसी दोलत्ती मारी कि लोटन कबूतर की तरह लोटगया और उसके दुःख से उठ न सका और चारों तरफ़ से शब्द होनेलगा कि मारा २ हरमरने जाना कि अमरू मारागया बख़्तियारक ने कहा नहीं साहब! अमरू ने जल्लाद को मारा है जल्लाद हारकर मारागया हरमर ने कहा कि बड़ा दुष्ट और चालाक है कि मरते २ एकको लेडाला देखो तो जल्लाद को कैसा बनाया है हरमर ने दूसरे जल्लाद को भेजा वह तलवार लेकर अमरू को मारने आया और तलवार मारने के लिये उठाई तब उस समय प्राणसे निराश होकर नेत्रों में आंशू निकल आये और मुख सफ़ेद होगया इतने में एक सिपाही हरमर के पास आया और सलाम करके कहा कि मैं ख़ामज़ीम सुलतान पुत्र जाल शमाम जादू बादशाह तुरक्स्तिान का सरदार हूं नौशेरवां ने हमको ख़बर देने को भेजा है कि बादशाह हमारे आपकी सहायता के लिये अतिशीघ्रही आते हैं तब तो हरमर बहुत प्रसन्न हुए और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की यह सब बातें कहकर उसने अमरू की तरफ़ देखकर पूछा कि वह कौन है जो तलवार के नीचे शिर झुकाये हुए अपने प्राण को देकर बैठा है हरमर ने कहा यही अमरू मक्कार है जिसका तुमने नाम सुना होगा इसने हमलोगों को बड़ा दुःख दिया है कल क़तारह सरदार चालाकी करके इसको बांधकर मेरे पास बहुत दिनों के दुःख उठाने के पश्चात् लेआया परन्तु इस समय भी जल्लाद का प्राण एक दोलत्ती मारकर लिया है अब दूसरे जल्लाद को भेजा है कि उसको मारे तब उस सरदार ने कहा उसके मारने में भी बड़ी युक्ति है कि न तो कोई हथियार इसके पास है न और कोई वस्तु परन्तु प्राण के देने का बल है इससे जो बनपड़ेगा वही करेगा परन्तु मैंने ऐसे मनुष्यों को मारा है कि हज़ारों मनुष्यों ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया है मुझे आज्ञा दीजावे तो एकहीबार में मारकर अपने बल और युक्ति का तमाशा आपको देखाऊं हरमर ने कहा बहुत अच्छा उस जल्लाद को अमरू के पास से बुलालिया और उसको मारने के लिये भेजा उस सरदार ने अमरू से कहा कि शिर झुका अमरू ने कहा कि शिर तो मैं झुकाये बैठा हूं तू समीप आकर मार उसने कहा क्या मैं भी उस जल्लाद की तरह पागल हूं कि तेरे पास जाकर प्राण दूं तू उसी तरह मुझेभी लातों से मारे तो मैं क्या करूंगा तब अमरू बड़े दुःख में हुआ कि यह अवश्य करके मारेगा यह बिचार करके प्राण से अति निराश होकर रोनेलगा तब उस सरदार ने यूनानी भाषा में कहा कि मैं मक़ाबदार की सेना का सरदार हूं तुझे छुड़ाने के लिये आया हूं दुःख न कर मैं अभी

मुझको छोड़ाकर लेचलता हूं पहले तो पैरोंको फैला कि तेरी बेड़ियां काटकर इस दुःख से छुड़ाऊं फिर तुझे गरदन पर बैठालकर यहां से निकाल लेचलूं और देख कैसी युक्ति से लेचलता हूं यह सुनकर अमरू के प्राण में प्राण आया मानो फिर से उत्पन्न हुआ अमरूने ईश्वर का धन्यवाद करके पैर को फैलादिया उस सरदार ने एक तलवार ऐसी मारी कि दोनों पैरों की बेड़ियां एक दफ़ा कटगईं और फिर अमरू को गरदन पर लेकर भागा इस शीघ्रता से भागा कि उसका चिह्न भी न विदित हुआ सेना में बड़ा शोर हुआ चारों तरफ़ से सवार और पैदल तलवार खींचकर दौड़े परन्तु उस सरदार ने खड्ग लेकर जिसको एक हाथ मारा फिर उसने शिर न उठाया और अमरू को इस तरह शत्रु की सेना से लेभागा कि उसकी गर्द भी न मालूम हुई जिस समय जङ्गल में आया अमरू को कन्धे से उतारकर कहा कि अब ईश्वर मालिक है तुम अपने क़िलेमें जाओ और मैं अपने घर जाताहूं और प्रणाम करता हूं अमरू ने कहा थोड़ी देर ठहरो मैंभी तुम्हारे साथ चलता हूं वह बोला कि मैं ऐसा निर्बुद्धि नहीं जो तुम्हारे पास एक क्षण भी ठहरूं अगर थोड़ी देरमें तू नक़ाबदारका पता पूछे तो मैं क्या बतलाऊंगा तुमसे अपना पीछा क्योंकर छुड़ाऊंगा यह कहकर जङ्गल की तरफ़ चलदिया और अमरू को वहीं से बिदा किया अमरू अपने क़िले में निस्संदेह पहुँचा देखे तो सब छोटे बड़े ईश्वर से प्रार्थना कररहे हैं कि हे ईश्वर! अमरू को कब दिखलावेगा इतने में जो सबकी दृष्टि अमरूपर पड़ी तो ईश्वर को धन्यबाद करके जो २ मानता मानी थी पूरी की मलकामेहरनिगार जो अमरू के पकड़जाने से अत्यन्त दुःखी थी इसके आने से इस तरह प्रसन्न हुई जिसतरह मुर्दा सजीव हो मानो यहां तो देश का राज्य पागई अमरू को निकट बुलाकर रोनेलगी और उसके ऊपर जवाहिर नेवछावर करके ग़रीबों को बांटे और एक सप्ताह तक ख़ुशीका नाच रङ्ग करवाया हरमर ने बख़्तियारक से पूछा कि वह कौन था? जो अमरू को लेगया और मुझको धोखा देगया बख़्तियारक ने कहा कि अमरू सत्य कहता था कि ईश्वर के भक्त मारे नहीं जासक्ते और किसीके बन्धन में भी नहीं आसक्ते उनकी सहायता ईश्वर आप करता है और प्रत्येक स्थानपर उनके रक्षक रहते हैं तब हरमर चुप होरहा क़िलेवालों का वृत्तान्त सुनिये जब उनके पास भोजनमात्र को भी न रहा तब आदीने सरदार के साथ होकर अमरू से कहा कि हमारे पास अब कुछ नहीं है तब अमरू ने कहा अब और कोई क़िला लेना चाहिये सय्याद ने कहा कि यहांसे सलासल हिसारनामे एक क़िला पांच मंज़िल पर अति उत्तम है और वहां के बादशाह का नाम सलासलशाह है वह बड़ा शूरबीर है अगर जी चाहे तो वहां जाकर रहिये अमरू ने कहा कि अच्छा मैं जाताहूं तुम इस क़िले में होशियार रहना मैं बिचार करके उसके लेनेकी कुछ युक्ति निकालता हूं यह कहकर पोशाक बादशाही उतारकर और पुराना पहिनकर क़िले से बाहर आया और ऐसी शीघ्रता से चला कि एक रात्रि दिन में सलासलहिसार में जापहुँचा देखा तो

क़िला बहुत उत्तम है और असबाब क़िले में इकट्ठा है तब बिचार करने लगा कि किस युक्ति से इस क़िले को पावें इतनेमें एक जवान चौदह पन्द्रह बर्ष का घोड़ेपर सवार शाहाना लिबास पहिने हुए हाथपर बाज़ लिये निकला और सौ सवार और पैदल और सरदार आदि सब साथ अच्छी २ बातें करते चलेजाते थे अमरू ने बुद्धि से बिचारा कि अवश्य यह यहां का शाहज़ादा है जब देखा कि सवारी दो कोस क़िले से बढ़गई अमरू ने साधू का भेष धारण किया और सुजनी की टोपी देकर चार पांच छड़ी हाथमें लेकर सवारी के पीछे लँगोट बांधकर चला और शाहज़ादेके सामने जाकर यों कहा कि आज ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि उनके भक्तों से मुलाक़ात हुई आज कुछ साधू को भी मिलजायगा शाहज़ादा साधूको देखकर अति प्रसन्न हुआ और घोड़े को रोंककर पूछनेलगा कि आप कहांसे आते हैं और कहां जाइयेगा ? साधू ने कहा न पृथ्वी से न आकाशसे एक नवीन दुनिया से साधू का भी कहीं स्थान होताहै आज यहां कल वहां जो कुछ ठिकाना हो तो बाबा ! आपको बताऊं शाहज़ादे ने कहा जो आपने अपने मुखारविन्द से कहा वह सब सत्य है परन्तु संसार में आकर कोई अवश्य स्थान होता है रात्रि को बासके लिये दो हाथ पृथ्वी अवश्य चाहिये बनेहुए शाह साहब बोले कि साधू तो सदैव बेनाम और निशान के होते हैं इन बेचारों को स्थान कहां प्राप्त होता है परन्तु नाम के लिये बुग़दाद में मेरी कुटी है तब शाहज़ादे ने पूछा आपका नाम क्या है ? उसने कहा कि मुझे लोग शादानीक़लन्दर कहते हैं परन्तु मैं सौदाई क़लन्दर हूं तब तो शाहज़ादा साधू की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ और कहा कि शाहसाहब ! आप चलकर कुछ दिन मेरे स्थानपर रहिये यह देश भी देखने के योग्य है साधू ने कहा बहुत अच्छा साधू को क्या जहां चित्त लगजावे वहीं रहजाता है तब पूछा कि बाबा ! तू ने तो मेरा नाम निशान पूछलिया अपना भी बतलाइये उसने कहा कि मेरा नाम महमन है सलासलशाह का पुत्र हूं उसीकी कृपा से यह सब है तब तो साधू ने कहा कि बाबा ! तू सैर और शिकार करआ मैं चल कर क़िलेके दरवाज़े पर बैठूंगा और तेरा आसरा करूंगा महमन तो उसी जगह से उस साधू को लेकर पलटा और क़िले में आकर अपने दीवानख़ाने में साधू का आसन लगवाया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि आप बैठिये मैं एक कार्य को जाता हूं अभी थोड़े समय में आता हूं आपको हुक़ा पानी की आवश्यकता हो तो मेरे नौकर आपके पास रहेंगे इनसे मांग लीजियेगा साधू ने कहा बहुत अच्छा आप जाइये परन्तु आने में अधिक काल न व्यतीत कीजियेगा और ऐसा कौनसा कार्य है कि साधू से भी नहीं बतलाने के योग्य है जो कुछ संदेह न हो तो बतलाइये कि मैं भी उसे जानूं महमन ने कहा कि मैं इससमय दोचार गिलास शराब के पीता हूं और आप जानते हैं कि अमल एक शत्रु है परन्तु आपके सम्मुख पीना अनुचित है इसलिये जाता हूं और अतिशीघ्रही पीकर आताहूं तब उस बनेहुए साधू ने कहा कि बाबा ! यही

मँगवाइये मैं भी दोचार गिलास लेऊँगा और अपने चित्त को प्रसन्न करूंगा और साधूके लिये तो दूध है कभी २ उसको पीलेते हैं तब उसने शराब मँगवाकर दो एक गिलास उस साधू को दिये और शेष उसने पिये साधू जो पीकर मज़े में आया तो अपने दुतारे को झोली से निकालकर गाने और बजाने लगा और सबको लोभाने लगा और प्रसिद्ध है कि अमरू का गाना मुरदे को जिला देता था सबलोग अतिप्रसन्न हुए और हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे संयोग से मन्सूर सरदार दो सिपाहियों समेत उसी रास्ते से आनिकला शाहज़ादे को सलाम करके पूछा कि ऐ साधु! कहां से आते हो और कौन हो और किस देशसे आये हो? बहमन ने सब हाल बयान किया तब पूछा कि इनका नाम क्या है और यहां क्यों ठहरे हैं बहमन ने कहा कि शयदानी कलन्दर इनका नाम है साधू हैं जहां जी चाहता है वहां रहते हैं मन्सूर दौड़कर उससे लपटगया और अपने सिपाहियों से कहा कि मुश्कें इसकी बांध लो और इसको अपने आधीन करके हमारे साथ ले चलो और उन सिपाहियों ने अपने स्वामी की आज्ञा मानकर उसको बांधलिया साधुजाली ने बह-मन से कहा क्यों बाबा साधुको घरमें टिकाकर ऐसेही मेहमानी की जाती है वाह बड़ी कृपा आपने की इसीका नाम इन्साफ़ है तब शाहज़ादे ने क्रोध करके मन्सूर से कहा कि इस साधु ने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इसको पकड़कर यह दुःख देरहा है मन्सूर ने कहा कि नहीं जानते यह वह साधू है कि जिसने सैकड़ों अमीरों को फ़क़ीर करदिया है आपने सुना होगा अमरू मक्कार यही है नौशेरवां बादशाह का नाक में दम है आख़िरकार बादशाह सलासल के पास ले जाकर कहा कि अमरू मक्कार हाज़िर है जो आज्ञा हो वह किया जावे सलासल ने कहा उसको मेरे पास लेआओ जब अमरू आया तो सलासल शाह ने कहा कि ऐ अमरू! मैं तेरे गाने की बड़ी प्रशंसा सुनताहूं बहुत दिनों से तेरा गाना सुनने की इच्छा रखता था आज तो सुना अमरू ने कहा कि मेरे हाथ तो बँधे हैं क्योंकर दुतारा बजाऊंगा बादशाह ने हाथ खुलवा दिये तब अमरू ने दुतारा बजाकर ऐसा गाया कि सब मोहित हो-गये तब बादशाह ने मन्सूर को आज्ञा दी कि इसको अपने पास रक्खो कुछ हाथ बांधने की ज़रूरत नहीं और इसको दुःख न देना कल जब हम इसको बुलावें तो लेआना मन्सूर ने अमरू को लेजाकर एक कोठरी में बन्द किया तब अमरू अपने चित्त में विचारने लगा कि हमारी तो यह गति है क़िले में सेना की नहीं मालूम क्या गति होगी इसी विचार में था कि आधी रात्रि को मन्सूर ने दरवाज़ा खोलकर अमरू को निकाला और उसके पैरोंपर गिरपड़ा कि क्षमा कीजियेगा मैं आपको पहचानता न था परन्तु जिस दिन से इबराहीम ने मुझे मुसल्मान किया है और आज्ञा दी है कि अमरू यहां आवेगा और तू उसके देखने से बड़ा सुख पावेगा इस लिये तू उसकी सहायता करना तभी से आपकी तलाश में रहता था और जो मैंने यह दुःख आपको दिया है केवल इसीलिये कि अच्छीतरह से जानलूं कि अमरू है

या और कोई तत्पश्चात् उसकी आज्ञानुसार करूं अब आपका सेवक हूं जैसी आज्ञा दीजिये वह करूं तब अमरू ने उसको छाती से लगाकर कहा कि किसी युक्ति से यह क़िला लेना चाहिये कि सेना मुसल्मानी यहां आकर थोड़े दिन आराम से रहे तब मनूसूर ने कहा कि उठिये अभी चलकर बादशाह को पकड़कर क़िले को अपने आधीन कर लीजिये अमरू मक्कारी लिबास पहिनकर मनूसूर के साथ होकर सला-सलशाह के सोने के स्थान पर गया और उसको बेहोश करके मनूसूर को सौंपा और आज्ञा दी कि ख़बरदार इसको अपने पास रख भागने न पावे यह सोनेका पक्षी है और आप उसका रूप धारणकरके छपरखटपर सोरहा मानों खुद बादशाह बनगया जब प्रातःकाल हुआ तब पहले महमन से कहा ऐ पुत्र! आज रात्रिको हज़रत इब्राहीम ने मुझको मुसल्मान किया है तू भी मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा परन्तु उसने न माना तब अमरू ने उसको शूली दिया तत्पश्चात् सलासलशाह को एकान्त में बुलाकर कहा कि तू मुसल्मान हो तेरे लिये अच्छा होगा तब वह बड़े आश्चर्य में हुआ कि मेरी सूरत का मनुष्य गद्दी पर बैठा है और मुझको बेधर्म करता है शायद मेरी राजधानी लेने की इच्छा रखता है अमरू से कहनेलगा कि तू कौन है? अपना वृत्तान्त बतला और मेरी गद्दी पर क्यों बैठाहै किसने तुझे यहां आनेदिया है अमरू ने कहा और तो मैं कुछ नहीं जानताहूं परन्तु अब तू मुसल्मान होकर अपना प्राण बचा तब तो वह बुरी बुरी बातें कहनेलगा तब अमरू ने उसको भी उसी समय शूली दी और मनूसूर को अपना नायब बनाकर गद्दीपर बैठाला और छोटे बड़ों से नज़रें दिलवाकर आज्ञा दी कि जो कोई मनूसूरशाह की आज्ञा में न रहेगा वह मारा जायगा तब सब मनूसूर के वश होगये और अमरू ने सब राजधानी मनूसूर को देकर आज्ञा दी कि तुम चारों तरफ़ से गल्ला मोल लेकर क़िले में इकट्ठा करो मैं जाकर मलका मेहरनिगार को सेना समेत लेकर आता हूं अमरू तो अपने क़िले की तरफ़ गया मनूसूर ने अमरू की आज्ञानुसार गल्ला मोल लेकर क़िले में रक्खा अमरू ने क़िले में आकर सब सरदारों से क़िले लेने की खुशख़बरी सुनकर मलका आदिक को सवारियों में सवार कराकर आधीरात्रि गये सब सेना समेत क़िलेसे निकलकर क़िले सलासल हिसार की राह ली पांच दिन की राह दो दिन रात्रि में जाकर पहुँचे और क़िले में दाख़िल होकर क़िले को बन्द करके आराम से बैठे तीसरे दिन हरमर के सिपाहियों ने हाल दिया कि अमरू मलका को सेना समेत क़िले सलासल हिसार में दाख़िल हुआ और इस क़िले को छोड़ दिया हरमर ने इस हाल को सुनकर बड़ा दुःख किया और मुन्शी को बुलाकर अपना सब हाल और अमरू का क़िले सलासल हिसार में जाने का लिखवाकर एक सिपाही के हाथ बादशाह नौशेरवां के पास भेजा और अतिशीघ्रही जाने की आज्ञा की॥

अमीर का आना परदेक़ाफ़ से दुनिया में॥

पहले इस क़दर बयान होचुका है कि अमीर ने ख़रपाल और ख़रच्याल के मारने

के पीछे बादशाह की विनय से लाचारी दरजे छः महीने और रहना क़बूल किया था एक दिन रात्रि को आसमानपरी के साथ महल में पलँग पर सोरहे थे स्वप्न में देखा कि मलका मेहरनिगार सूखकर कांटा होगई है और सब स्वरूप जाता रहा है और उसके आंशू से नदी बहरही है रोरोकर अमीर से कहती है कि क्यों साहब ! मैंने कौनसा अपराध किया था जो आप मुझे दुनिया में छोड़कर परदेक़ाफ़ पर जाकर परियों के साथ मज़ा उठाते हो अफ़्सोस कहां पृथ्वी कहां आसमान जो पर होते तो मैंभी उड़जाती और इस दुःख से आराम पाती अमीर उचककर जाग उठे और कहनेलगे देखो कहां परदेक़ाफ़ और कहां दुनिया और मैं मेहरनिगार यह कहकर ज़ोर से चिल्ला चिल्लाकर रोनेलगे और प्राण को देनेलगे आसमानपरी भी अमीर का रोना सुनकर चौंककर जाग उठी और अमीर से पूछने लगी कि क्या हुआ है ? जो इस तरह से रोतेहो और दुःख उठातेहो अमीर ने कहा मैं अपना हाल क्या कहूं ऐसा दिल चाहता है कि अपना गला काटकर प्राण को त्याग करदूं तब उसने कहा कुछ तो बतलाइये क्या दुःख आपको है ? अमीर ने कहा ऐ आसमानपरी ! ईश्वर के लिये अतिशीघ्र मुझे परदेदुनिया को भेजदे जिस सूरत से हो मुझे वहां पहुँचादे इस समय मैंने मेहरनिगार को अतिब्याकुल पाया है और मेरी जुदाई से उसे बड़ा दुःख है आसमानपरी ने पूछा कि मेहरनिगार कौन है उसका हाल तो मुझे बताओ अमीर ने कहा कि नौशेरवां बादशाह की बेटी और मेरी प्राणप्यारी है जो स्वरूप और नम्रता में संसार में एक है और मेरे ऊपर मोहित है तब तो आसमानपरी ने कहा यह बात है किसी और से भी आप फँसे हैं तब क्यों न जाना जाना पुकारिये और उसके लिये क्यों न प्राण दीजियेगा सुनो तो अमीर सत्य कहना क्या मेहरनिगार मुझसे भी अधिक स्वरूपवान् और सुन्दर है तुम मेरे होते उसकी इच्छा करतेहो और हरप्रकार से उसपर मोहित हो अमीर के मुख से निकलगया कि उसकी तो सहेलियां तुमसे अधिक स्वरूपवान् हैं और महासुन्दर हैं तब तो आसमानपरी क्रोधित होकर कहनेलगी क्या तू मुझे मेहरनिगार की सहेली से भी निकृष्ट जानता है भला तू यहां से जायगा तो जानूंगी अब तू किसी तरह से मुझसे छूटकर जाने पाता है तब अमीर ने कहा जो तू मुझे रोकेगी तो तुझको मारकर किसी न किसी तरह से मैं वहां जाऊंगा आसमानपरी ने कहा कि यह घमण्ड आप न कीजिये कि मैं इब्राहीम पैग़म्बर की औलाद हूं मैं भी हज़रत सुलैमान की औलाद में से हूं तुम से किसी प्रकार से कम नहीं हूं जब तुम मुझे मारनेकी इच्छा करोगे तो मैं भी तुमको मारूंगी अमीर को इस बात के सुनने से बड़ा क्रोध हुआ तलवार खींचकर आसमानपरी पर दौड़े वह भी तमंचा खींचकर अमीर के ऊपर आई और मारने को हाथ उठाया सहेलियों ने बीचबराव करके दोनों को हटा दिया यह हाल बादशाहको पहुँचा बादशाह व्याकुल होकर दौड़कर आये और अपनी बेटी पर क्रोधितहुए कि तू उसकी बराबरी करती है ईश्वर से भी

नहीं डरती है और न मेराही डर है सामने से दूर हो बेटी को डाटकर अमीर को अपने महल में लेगये और कहा कि आपको सवेरे दुनिया को भेजदूंगा जब प्रातःकाल हुआ बादशाह ने सब सामान मार्ग का देकर अमीर को तख़्तपर बैठालकर चार देव अतिशीघ्र उड़नेवालों को बुलाकर आज्ञा दी कि अतिशीघ्र अमीर को परदे दुनिया में लेजाकर पहुँचाओ यह हाल आसमानपरी को पहुँचा कि बादशाह ने अमीर को परदे दुनिया में जाने की आज्ञा दी है और सब सामान समेत यह अभी जाता है तब वह बेटी को गोद में लेकरआई देखा कि अमीर तख़्तपर सवार है रो रोकर कहनेलगी कि ऐ अमीर ! आपको मेरा मोह नहीं है तो इस बेटीका भी मोह नहीं लगता ईश्वर के लिये मेरा अपराध क्षमाकरो अब ऐसा कभी न होगा अमीरने कहा मैं तुमसे भी नाराज़ नहीं और बेटीसे भी मोहब्बत है. परन्तु मुझे दुनिया में जाना बहुत अवश्य है कि मैं केवल अठारह दिनका वादा करके आयाथा और यहां इतने वर्ष व्यतीत होगये और इसी कारण मैं किसीको साथ भी नहीं लेआया सब लोग बड़े सन्देह में होंगे कि अमीर मरगये या जीते हैं और फिर जब तुम बुलवाओगी तब आवेंगे और तुम तो आपही मेरे पास आसक्ती हो जब दिलचाहे तभी मेरे पास चलीआना और अपने साथ बेटीको भी लेतीआना यह कहकर सबको सलाम करके रवाना हुआ आसमानपरी मकान पर आकर रोने पीटने लगी संयोग से उसी समय सलासल परीज़ाद उसके पास आया और आसमानपरी को व्याकुल देखकर पूछने लगा कि क्यों तूने ऐसी सूरत बनाई है उसने रोकर कहा कि आज बादशाह ने हमज़ा को परदे दुनिया को भेजदिया है जो तुम जाकर देवोंसे धमकाकर कहदेओ कि अमीर को लेजाके बियाबानहैरत में छोड़देवें और दुनिया को न लेजावें तो मैं बहुत खुश हूंगी और जो मेरी आज्ञा न मानोगे तो खाना पीना छोड़दूंगी और जो हमज़ा तुम्हारे आनेका कारण पूछे तो कहना कि आप से विदा होने आयाहूं आपकी कृपा ने खींच लिया है सलासल ने वैसाही किया देवों को समझा दिया और देवों ने आपस में सलाह की कि जो आसमानपरी की आज्ञा न मानोगे तो परदेक़ाफ़ में रहना कठिन होगा और इसकी आज्ञा न मानने से लोग लज्जित करेंगे रात्रि होते बियाबानहैरत के पास तख़्त को उतारकर सबने आराम किया अमीर ने पूछा यहां क्यों तख़्त उतारा है देवोंने कहा कि भूखे प्यासे हैं कुछ खापीलें तो चलें अमीर ने कहा अच्छा तुम कुछ खापीलो और हमभी निमाज़ पढ़ लेवें कि ईश्वर के कामों से छुट्टी पावें अमीर हाथ मुँह धोकर निमाज़ पढ़कर तख़्तपर बैठकर देवों का आसरा देखने लगे कि आवें और तख़्त को उठाकर ले चलें परन्तु देवों का पता न मिला रात्रिभर बैठे देखा किये जब प्रातःकाल हुआ निमाज़ पढ़कर फिर बैठकर देवों का आसरा देखनेलगा जब पहर दिन आया तब अमीर ने विचारकिया निश्चय है कि आसमानपरी के डरसे मुझे यहां छोड़कर भाग गये अब नसीब में देखनाही चलना बदा है किसीप्रकार से दुनिया में पहुँचना

चाहिये जैसे एक मसला है कि (जैसी पड़े व्यवस्था वैसी सहे शरीर) यह कहकर वहांसे चले और उस बन से बाहर आये तो दोपहर के समय ऐसे मैदान में आये कि जहां न तो वृक्ष थे न जल मिल सक्ता था और मनुष्य तो क्या पक्षी आदि का उस समय जाना दुर्लभ था बालू से हर स्थानपर लौरें निकल रहीथीं और लूक इस प्रकार से चल रही थी कि उसका हाल लिखूं तो ज़बान और क़लम में फफोले पड़जावें और किताब के सफ़े जलजावें और सूर्य की तपन से वह मैदान जल रहाथा कि सब हथियार अमीर के ऐसे गरम होगयें थे कि छूने से हाथमें छाले पड़ते थे और नाम लेने से जीभ जलती थी अमीर ने सब हथियारों को फेंकदिया और उस भार से अपने को बचाया और प्यास इस प्रकार से लगी कि प्राण ओठों पर था और निकट था कि प्राण निकल जावें और बैकुण्ठ में जाकर बासकरें कि बालू का गढ़ा खोदकर उसीपर पेट रखकर लेटगया तो कुछ तरी पाकर चित्त ठिकाने हुआ जब वह भी गरम हुआ इच्छाकी कि और खोदकर बैठरहें कि फसफसाकर बैठगया और अमीर के हाथ पाँव उसी में दबगये निकल न सका संयोग से एक दिन बाद-शाह ने अब्दुलरहमान से पूछा कि विचारो तो अमीर परदेदुनियामें पहुँचकर सब लोगों से मिले होंगे और देखकर प्रसन्न हुए होंगे अब्दुलरहमानने बादशाहके सा-मने तख़्त रखकर बिचारा तो मालूम किया कि अमीर बालू में दबे पड़े हैं इसके सुनने से बड़े दुःख में हुआ और अफ़्सोस करके कहनेलगा कि हमज़ा की जवानी वृथा गई बादशाह से कहा कि अब कोई आपका इतबार न करेगा और काहे को आज्ञा मानेगा कि हमज़ा ऐसे मनुष्य को जिसने आप के शत्रुओं को मारकर फिर से बादशाह बनाया आपने बेसबब ऐसी बुराई की कि इस फल को प्राप्तहुआ बाद-शाह ने जिन देवों पर तख़्त रखवाकर भेजा था उनको बुलवाया और उनसे क्रोध करके पूछा कि तुम हमज़ा को कहां छोड़ आये उन्हों ने कहा कि आसमानपरीकी आज्ञा से बियाबान हैरतमें छोड़आये हैं और जो दुनियामें पहुँचाते तो शाहज़ादी की आज्ञा से सब जन बच्चों से मारेजाते या निकाल दियेजाते इस बात के सुननेसे बादशाह बड़े क्रोधमें हुए और आसमानपरी की तरफ़ देखकर कहा कि बड़ी दुष्टिन है उसने कहा कि मुझे हमज़ा का दुनिया में भेजना मंजूर नहीं है उसकी जुदाई में मुझसे दमभर भी नहीं रहाजाता है और मैं अभी आप जाकर हमज़ाको ढूंढ़लाती हूं बादशाह ने कहा तू अपना शिर ढूंढ़लावेगी तू कहां पावेगी यह कहकर बादशाह खुद जाने को तैयार हुए और सवार होकर बियाबान हैरत में जा पहुँचे देव जिन और परियों को आज्ञा दी कि उसमें ढूंढ़ो जिस स्थानपर वह फँसा है उसको वहांसे छुड़ाना चाहिये जो कोई ढूंढ़लावेगा उसको जवाहिर के पर दूंगा और उसका ओ-हदा बढ़ाऊंगा सब ढूंढ़ते २ हमज़ा के हथियार इधर उधर पड़ेपाये वह लेकर बाद-शाह को दिये बादशाह ने देखकर बड़ा शोच किया और फिर उनलोगों को ढूंढ़ने के लिये भेजा जिस समय सब लोग ढूंढ़कर हारगये और कहीं पता नहीं लगा तो

आसमानपरी रोनेलगी और मोतीसे आंशू बहानेलगी संयोगसे एक परीज़ाद उस कड़े के पास जानिकला जिसके नीचे अमीर दबेहुए पड़े थे और ईश्वर की कृपा से वायु से उस समय यहांकी बालू उड़कर और तरफ़ होगई थी मानो अमीर के निकलने की राह बनाईथी परीज़ादने अमीर को चमक की तरह देखलिया उस ढेरके तले दबे हैं तब उसने बालू को हटाकर देखा तो अमीर बेहोश आंखों को बन्द किये पड़े हैं और उठने की शक्ति नहीं है कि उठें तब उसने पुकारकर कहा कि ऐ बादशाह क़ाफ़ ! यह मुसाफिर यहां बालूमें दबापड़ाहै उसका शब्द जो शहपालने सुना तुरन्त ही नङ्गे पांव दौड़कर उस स्थानपर आया और अमीर को गढ़ेसे निकालकर हाथों हाथ ले जाकर अपने तख़्तपर लेटाया और सुगन्धित वस्तु अमीर के चारोंतरफ़ रखवाया और हरप्रकार की सुगन्ध सुंघाई थोड़ी देर के बाद होश में आया तो अमीर ने बड़ा आश्चर्य किया देखा कि तख़्तपर लेटाहूं और बादशाह मेरे सामने बैठा है और बहुत उदास है तुरंत करके उठा और बादशाह से कहा कि ऐ बादशाह ! मैंने आपके साथ कौन बुरा काम कियाथा जो आपने मुझे यह दण्ड दिया है शहपाल ने कहा ऐ साहबकिरां ! मुझको आपके प्राण और हज़रत सुलेमानकी सौगन्द है मैंने इसमें कुछ भी सहारा दिया हो आपके दुःख देने से क्या मिलेगा आपने तो बड़ी नेकियां मेरे साथ की हैं मैं आपका सेवक हूं यह सब आसमानपरी ने किया है यह उसीका पागलपन है कि आपको यह दुःख पहुँचा आसमानपरी दौड़कर अमीर के पैरोंपर गिरी और कईबार फिरकर परिक्रमाकिया और हाथ जोड़कर कहा कि सत्य है मुझसे बड़ा अपराध हुआ अबकी और मेरा अपराध क्षमा करो मुझसे अपना दिल साफ़ करो और सहरिस्तान ज़र्री में चलकर कुछदिन आराम करो क्योंकि आपको बड़ा दुःख पड़ा छःमहीने के पीछे आपको अवश्य परदे दुनिया को भेजदूंगी इस कहने को पूरा करूंगी अमीर ने कहा तेरे कहने का कुछ विश्वास नहीं है तू अपनी बात कभी नहीं रक्खेगी आसमानपरीने हज़रतसुलेमान अलेहुस्सलामकी सौगन्द खाई और छः महीनेके वास्ते सहरिस्तानज़र्री में लेआई शहपालकी सेना वहीं पड़ीरही अमीर का शरीर हृष्टपुष्ट हुआ और जब छः महीने व्यतीत होगये और जाने की रुख़्सत न पाई तो फिर एकदिन रात्रि को वैसाही स्वप्न में मेहरनिगार को देखा कि व्याकुल है और रोरोकर कहती है कि ऐ साहबकिरां ! अठारह दिन का आप वादा करके गये थे अब अठारह वर्ष व्यतीत होगये अब इससे अधिक मुझसे नहीं रहाजाता आप अति शीघ्रही आइये नहीं तो मुझ को जीता न पाइयेगा पीछेको पछिताइयेगा अमीर यह स्वप्न देखकर चौंके तो देखा न तो मेहरनिगार है न वह मकान है परदेक़ाफ़ में बैठाहूं और दूसरे के बशमें हूं रोकर ठंढीसांस भरनेलगा आसमानपरी की जो आंखें खुलीं तो देखा कि अमीर रो रहे हैं उठकर रूमाल से अमीर के आंशू पोंछनेलगी और पूछा कि क्या हुआ क्यों इस प्रकार से दुःखित हो अमीर ने कहा कुछ नहीं तब अच्छा है आसमानपरी ने

हरएक भांति से पूछा परन्तु अमीर ने कुछ जवाब न दिया एकबारगी चुप होरहा और प्रातःकाल तक रोया किया और वह रूमाल से आंशू पोंछा किया और जब बादशाह महल से आकर बैठके में बैठे तो अमीर ने जाकर सलाम करके कहा कि यह वादा भी आपका पूरा होगया अब तो सेवक को जानेकी आज्ञा दीजिये बादशाह ने उसी समय अमीर को तख़्तपर बैठाकर चार देवों को बुलाकर आज्ञा दी कि अमीर को परदे दुनिया में पहुँचाकर मोहरी रसीद अमीर की लेआओ और इनको अच्छीतरह से पहुँचाना तब वे तख़्त को लेकर उड़े और आसमान-परी ने फिर अपना हाल वैसाही किया और सलासल परीज़ाद को बुलाकर आज्ञा दी कि किसी युक्ति से जाकर देवों को मेरी आज्ञा सुनाओ कि वे अमीर को रास्ते में छोड़कर चले आवें इसी में उनके लिये अच्छा होगा कि तीन दिनतक अमीर उसी बन से इधर उधर घूमा करें नहीं तो मैं उन देवों को बाल बच्चों से मार डालूंगी सलासल उड़कर अमीर के पास पहुँचा और सलाम किया ज़ाहिरमें बहुत दुःखित हुआ अमीर ने पूछा कि तुम यहां क्यों आये हो तुम्हारा आना अच्छा नहीं हमारे पास न आओ अपना मुख हमको न दिखाओ उसने कहा मैं तो आप को बिदा करने के लिये आयाहूं अब ईश्वर जाने कब आपसे फिर मुलाक़ात होगी तब अमीर ने कहा अच्छा अब मुलाक़ात हो चुकी आप जाइये दुःख न उठाइये सलासल ने फिरती समय उन देवों को शाहज़ादी की आज्ञा सुनाई और उन देवों ने छोड़ने का इक़रार किया सब दिन देव उड़ेचलेगये जब सायंकाल हुआ तो एक स्थान पर तख़्त को उतारा शाहज़ादीकी आज्ञानुसार किया अमीर ने कहा कि इस बन में तख़्त को क्यों उतारा उन देवों ने कहा कि रात्रि अँधियारी है इस समय चलने के योग्य नहीं है और कुछ भोजन पान भी करेंगे इस रात्रि को आराम से सोइये दिनको फिर चलेंगे अमीर ने कहा कि आगे के देवों की तरह न करना कि तुम हमको छोड़कर चलेजाओ और हम ख़राब हों उन्होंने कहा नहीं साहब ऐसी नमकहरामी हमलोगों से न होगी अमीर चुप होरहे देवों ने तख़्त वहां रखदिया और आप शिकार के हीले से गुलिस्तान अरम की तरफ़ चलेगये और अमीर रात्रिभर तख़्तपर बैठे रहे सवेरे मालूम हुआ कि वे भी दग़ा देकर अपने देशको चले गये अमीर ने अपने दिलमें विचारा कि बादशाह क़ाफ़ मुझको इसी तरहसे घुमाया करेगा और परदे दुनिया में न जानेदेगा अब तू चल जो ईश्वर की कृपा होगी तो गिरता पड़ता दुनियामें पहुँच जायगा यह विचार कर वहांसे चला जब थकजावे तो थोड़ी समय वृक्ष के तले बैठकर सुस्ता लेवे और फिर उठकर चलता था और बाद-शाह क़ाफ़ की दग़ाबाज़ी और अपनी नेकी पर अफ़सोस करता था इसी प्रकार से दिन भर चलाकिये परन्तु रात्रि को फिर उसी स्थानपर पहुँच गये जहां देवोंने छोड़ा था अमीर बड़े संदेह में होकर आश्चर्य करनेलगे कि मैंने तमाम दिन क्लेश उठाया चलने से थकगया परन्तु जहां से सवेरे चला था वहीं शामको फिर पहुँचा यह बात

क्या है ? आख़िरकार लाचार होकर उस रात्रिको भी वहींरहे और दूसरे दिन दूसरी तरफ़ को चले परन्तु उस दिन भी वैसाही हुआ इसी तरह से तीन दिन तक ख़राब रहे चौथे दिन दोपहरतक चलकर थकगया और धूपने सताया एक ओर दो चार वृक्ष देखे चाहा कि जाकर उनके नीचे बैठकर आराम करें जाकर देखा तो एक संग-मरमर का आठ कोने का चबूतरा बना है और वायु भी ठंढी आती है जो दमभर वहां ठहरता है उसका चित्त प्रसन्न होजाता है अमीर उस चबूतरे पर तकिया लगा-कर जाकर बैठे कि थोड़ी समय के बाद बन में शोरगुल होनेलगा इतने में एक बड़े भयानक रूपका मनुष्य उस बन से तलवार लियेहुए निकला अ मीर से कहने लगा कि किस बवण्डल म तू उड़कर यहां आया है और के आया है अब तू भला मुझ से बचकर जाने पावेगा यह कहकर एक वार तल र की चलाई अमीरने भी अक़रब सुलेमानी उठाकर एक वार उसपर मारा परन्तु उसके न लगा तब वह देव भागा और थोड़ी समय के पश्चात् एक अजगर हाथ में लेकर आया और एकबारगी ललकारकर कहा कि ख़बरदार होजा मैं वार चलाता हूं यह कहकर अजगर उठाकर अमीर को मारा अमीर ने उसको भी एक तलवारसे मारकर दो भाग करादेये और उसकी कमरपर मारा परन्तु उसके यह वार भी न लगा और तलवार उसके बदन से ऐसी उछलती थी जैसे ख़लियान में मुगरी उछलती है तब वह देव फिर भागगया तीसरे बार फिर वह देव आया तो अमीर ने अपनी शक्ति भर तलवार उठाकर मारी परन्तु उसके कुछ न मालूम हुआ तब अमीर ने लाचार होकर ईश्वर का स्मरण किया इतने में हज़रतख़िजर एक तरफ़ से आकर प्राप्तहुए और उस देवको मारकर जिस तरफ़ से आये थे उसी तरफ़को चलेगये अमीर उस देवके मारेजाने से अति प्रसन्न होकर बैठे और सब संदेह दूर होकर नदी के तीर लहरें देखने लगे एकबारगी जो ठंढी वायुआई तो अमीर उसी चबूतरेपर सोगये उस आराम से सबदुःख भूलगये तब अमीर ने स्वप्न में देखा कि मेहरनिगार खड़ी रोरही है अमीर चिल्लाकर जागउठे आहमारके रोनेलगे तो देखा कि उसी बन में बैठे हैं तब नदी की लहरें देखकर अपने दिल में कहनेलगे कि देखें क्योंकर ईश्वर दुनिया में पहुँचाता है और मेहरनिगार को दिखाता है तत्पश्चात् अमीर ने अपने चित्त में बिचार किया कि अब किसी युक्ति से इस बन से निकलने की युक्ति करनी चाहिये यह बिचार कर बृक्षों की लकड़ियां तोड़कर एक ठाट बनाया और उसपर सवार होकर नदी में चला जब आधी दूरतक गया तो लहर से धक्का खाकर फिर किनारे पर लौट आया उसी प्रकार से लिखनेवाला लिखता है कि एक सप्ताह में ७२ बहत्तर बार वह ठाट छोड़ा और पलटआया तब अमीर ने नदी के तीर उतर और निमाज़ पढ़कर ईश्वर का स्मरण किया और बड़ी देर तक ध्यान करके ईश्वर से प्रार्थना की कि हे ईश्वर ! मुझको किसी प्रकार से इस बला से बचा संयोग से उसी समय अमीर को निद्रा आगई तो स्वप्न में देखा कि एक वृद्ध हरे वस्त्र पहिने

हुए आकर कहते हैं कि बेटे मैं नूह पैग़म्बर हूं और इस नदी में मेरा नेजा है इस लिये वह अपने ऊपरसे जाने नहीं देता जो वस्तु इसमें जाती है उसे रोकलेताहै तू आधी नदी में जाकर इस मन्त्रको पढ़ वह नेजा तुझको प्राप्तहोगा और इस मन्त्र से तू इस के पार उतर जायगा अमीर अतिप्रसन्नहुए और उसीसमय में हज़रत- नूह के पैरोंपर गिरे और जिससमय जागे तो दिल अतिप्रसन्न होगयाथा सुगन्धित स्थानपर सोने से उठकर उसी ठाटपर सवार होकर चले और उस मन्त्रको पढ़ने लगे जब आधी नदी में पहुँचे तो जल उठा मानो लहरें बढ़ीं तत्पश्चात् एक सं- न्दूक़ नीचे से निकलकर ठाट के समीप बहकर आया लहर ने उसको अति समीप करदिया अमीर ने सन्दूक़ को उठाकर निस्सन्देह रखकर खोला तो देखा कि एक नेजा लपेटा हुआ उसमें रक्खाहै फिर अमीर ने उसको अच्छीतरह से बिचार कर के देखकर सन्दूक़ में से निकालकर उसके बन्द काटकर सीधा किया तब तो बहुत बड़ा होगया अमीर अति प्रसन्न होकर उसी नेजे से खेतेहुए चले और जब क्षुधा लगती तो उसी कालीचेमें से जो हज़रत इब्राहीम देगयेथे निकालकर खातेथे और जब निमाज़का समय आवे तो तीरपर ठहरकर निमाज़ पढ़तेथे और फिर उसीपर सवार होकर चलते थे परन्तु न लेटते थे न सोते थे पर इसीभांति से बीसदिन ब- राबर चलेगये इक्कीसवें दिन एक अति शोभायमान बन में जाकर पृथ्वी पाई तब ठाट से उतरकर पैदल चले दो तीनकोस न गयेथे कि सात भेड़िये दिखाई पड़े जो कि अतिबलवान् और भयानक रूपके थे और उनमें से एक भेड़िया सफ़ेद रङ्गका और सबसे बड़ा था और पशमें उसकी पृथ्वीतक लटकीथीं लोग कहते हैं कि वे सातों भेड़िये सुलेमानी कहलाते थे और जो कुछ उस बनमें मिलता था वही खाते थे उन सातों भेड़ियों को हज़रत सुलेमान ने पालकर छोड़ा था और उसी बन में रहनेकी आज्ञा दी थी भेड़ियों ने जो अमीर को देखा तो चारोंतरफ़से दौड़कर अ- मीर को घेरलिया अमीर ने एक वृक्षकी आड़ में होकर अक़रब सुलेमानी मियान से खींचकर जो सामने आया उसको दो भाग करदिया इसी प्रकार से सातों को मारकर उनकी खाल खंजर से निकाल कर मृगछाला की तरह गले में डाललिया और अपने चित्त में बिचारा कि अब सफ़रक़ाफ़का है इसमें यह बड़ा गुण करेगा यह बिचार करके वहां से छालों को लेकर चले रात्रि को एक पहाड़ की खोह में लेटकर सोरहे जब प्रातःकाल हुआ उठकर निमाज़ पढ़ी और वहांसे चले गरमीके दिन थे दोपहर के समय सूर्य की तपन से ब्याकुल होकर छाया ढूंढ़नलगे संयोग से एकबाग़ की दीवार दिखाई पड़ी अमीर दौड़कर उसके पास पहुँचा परन्तु उसका दरवाज़ा बन्द पाया तब चारोंतरफ़ रास्ता उसमें जानेकी ढूंढ़ने लगे जब कहीं न पाया तो ताला खंजर से तोड़कर उसके अन्दर गये तो देखा कि बाग़ अति शो- भायमान है हरप्रकार के मेवे और फूल के वृक्ष लगेहुए हैं और दोचार स्थान भी रहने के लिये बने हैं और सब सजेहुए हैं अमीर एक स्थान में गया देखा कि सब

मरमर के तख़्तपर गद्दी लगी है और मसनद तकिया रक्खीहुई है अमीर उसपर जाकर बैठा मानो उनहीं के वास्ते बिछाथा ईश्वर ने उन्हीं को भेजाथा अमीर अपने मनमें कहरहेथे कि यह मकान हज़रतसुलेमान के बनायेहुए हैं जबसे वे यहां से चलेगये तबसे जिसका दिल चाहा वह इसमें आकर रहा इतनेमें बाहर से शब्द आया अमीर व्याकुल होकर बाहर आया कि देखूं कैसा शब्द होरहा है तो देखा कि एकदेव लोगों को सतारहा है जिसने मेरे बाग़ का दरवाज़ा खोलाहै उसे पाऊं तो जीता खाजाऊं अमीर ने ललकारकर कहा इधर आ तू नहीं जानता कि मैंने अफ़रेत और उसके माता पिता को मारकर सब देवों का नाश कर दिया है तू कब मेरेसामने आसक्ता है उसराद दोशिरनामे देवने कहा कि ऐ मनुष्य ! तू क़ाफ़ के बाग़ और देवों को बिगाड़कर मेरे बाग़ में आया है मैंने सुनाहै कि तूने हज़ारों देवों को मारकर यमपुरी को भेजा है अब देखे जो तू लाख पावँ भी रखता होगा तो इस स्थान से तेरा प्राण न बचेगा यह कहकर एक तलवार फ़ौलादी जो उसके हाथ में थी अमीर के शिरपर मारी अमीरने वह उसराद दोशिर के हाथसे छीनली और ऐसी दिलावरी और बल दिखाया कि वह अमीर के आगे से भागा और युद्ध करनेकी शक्ति न रही अमीर दौड़कर उसके पास पहुँचे तब उसने बिचारा कि यह मनुष्य बलवान् भी है दौड़ता भी अधिक है राह में एक कुआँथा उसी में कूदपड़ा और उस समय उसे कुछ न सूझा तब अमीर भी उस कूप की जगतपर बैठगये कि कभी तो इसमें से निकलेगा तीन पहरतक बैठेरहे तब तो उनका चित्त न लगा इतने में अलसाकर सोगये तो असरू ने स्वप्न में आकर कहा कि ऐ हमज़ा ! इस तरह जो तू उमर भर बैठा रहेगा तो वह न निकलेगा मैं एक उपाय बताता हूं कि यह जो तालाब है इसका जल काटकर कूप को भरदे तब वह व्याकुल होकर निकलकर भागेगा यह स्वप्न देखकर अमीर की आंखें खुलगईं खंजर से एक नाली खोदकर कूप को तालाब के जल से भरा तब वह घबरा कर निकला और चाहा कि अमीर के आगे से भागजावे कि प्राण बचें परन्तु अमीर ने दौड़कर एक तलवार ऐसी मारी कि कटकर दो टुकड़े होगया एक सायत न बीती थी कि एक देवज़ाद बुढ़िया रोतीहुई आई और अमीर से कहनेलगी कि तूने मेरे पुत्रको जिसकी उमर कुल तीन सौ वर्ष की थी और अभी दूध के दांत भी न उखड़े थे तूने मारडाला बड़ा ग़ज़ब किया तूने यह न बिचारा कि इसका और कोई वारिसहै अब तेरा प्राण भी मुझसे न बचकर जावेगा यह कहकर जादू करनेलगी अमीरने जो मन्त्र पढ़ा तो वह अपनी जादू भूलगई अमीर ने क़दम बढ़ाकर उसके भी दोभाग करके यमपुरी को भेजा और स्नान करके निमाज़ दोबार पढ़ी जो ईश्वर ने ऐसे पापियों के हाथ से उसका प्राण बचाया और दिल में बिचारा कि सफ़र बहुत दूर करै आज इसी स्थानपर ठहरकर आराम करें उस रात्रि को वहीं रहे प्रातःकाल वहां से चले तो चलते २ तेरहवें दिन अमीर के पांव में छाले पड़गये तब छालों

के दुःख से चल न सके एक वृक्ष के नीचे बैठगये और मन में विचार करनेलगे कि अभी दिल्ली दूर है और हम थकगये इतने में एक गरद सामने दिखाई दी जब वह गरद बन्द होगई तो देखा कि एकघोड़ा दौड़ा चलाआताहै और अमीरके समीप आकर खड़ा होगया तब अमीर ने यह विचारा कि यह सवारी ईश्वरने मेरे वास्ते भेजी है यह कहकर ईश्वर का धन्यवाद किया और उठकर ज्योंहीं घोड़ेपर सवारहुए त्योंहीं वह वायु के समान लेकर उड़गया कितनाही अमीर ने रोका परन्तु वह न रुका तीन दिन रात्रि बराबर.चलागया कहीं एक सायत दम न लिया चौथेदिन अमीर को एक बाग़ की दीवार दिखाई पड़ी तब तो कुछ अमीर का चित्त ठिकाने हुआ वह घोड़ा उसके अन्दर गया तो वहां वैसे बहुतसे घोड़े चररहे थे वह भी उन्हीं के साथ चरनेलगा अमीर इस हाल को देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ फिर जो देखा तो एक स्त्री चौदहबर्ष की अतिस्वरूपवान् घोड़ेपर सवार फिररही है और जवाहिर लगीहुई छड़ी हाथ में लिये घोड़ों को चरारही है और कभी हँसती है और कभी रोती है हरसमय एक नवीन भेष धारण करती है अमीर को देख कहने लगी कि क्या तू बहुत थका था जो इस घोड़े पर सवार होकर चलाआया उसने कहा कि मैं इस तरह से थका था कि उठभी नहीं सकता था इसको मैंने जाना कि ईश्वर ने मेरे ऊपर कृपा करके भेजा है तो सवार हुआ परन्तु यह घोड़ा मुझे ऐसा लेकर उड़ा कि यहां लाकर डाल दिया तब अमीर ने पूछा अब तुम तो बताओ कि तुम कौनहो और यह किसका बाग़ है उसने कहा कि यह सुलेमान का जादूघर है इसमें केवल जादूहै जिसके देखने से तुमको आश्चर्य मालूम होता है और आज तक यहां आकर कोई जीता नहीं बचकर गया जो आया वह मारागया इतना कहने पाईथी कि घोड़ा लेकर दूसरी तरफ़ चलागया और ग़ायब होगई कि फिर दिखाई न परी दहिनी तरफ़ फिरकर जो देखा हज़रत ख़िज़र खड़े हुए हैं तब तो सलाम किया हज़रत ख़िज़र ने भी सलाम का उत्तर दिया और कहा कि ऐ अमीर! जिस घोड़ेपर तुम सवार थे उसके गले में एक तख़्ती बँधी है उसको तुम खोलकर अपने पास रक्खो और उसी को देखकर सब काम करना ख़बरदार भूलना नहीं यह जादूघर है जब इसमें मनुष्य फँसजाता है तो कभी नहीं छूटकर जानेपाता हज़रत ख़िज़र यह कहकर चलेगये अमीर ने घोड़े के गले से तख़्ती खोलकर देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ मुसाफ़िर! ईश्वर ने बड़ी कृपा तुम्हारे ऊपर की कि यह जादू की तख़्ती तेरे हाथ आई तूने अपूर्व वस्तु पाई है यह स्त्री जो कभी हँसती और कभी रोती है जिससमय हँसने लगे उसी समय एकतीर मन्त्र पढ़कर मार देखना कैसी अपूर्व वस्तु दिखाई देती है अमीर ने जब वह हँसनेलगी तो मन्त्रपढ़ कर तीर ले मारा तीर तो निकलकर पार होगया और उसके शरीर से एक लौ निकलनेलगी और घोड़ों के अयाल और पूंछों में आग लगादी तो सब घूमकर गिरकर जलगये और सब नाश होगये केवल वही घोड़ा जिसपर अमीर सवार

होकर आये थे रहगया तब अमीर ने देखा तो न वह बाग़ है न घोड़े हैं चारों तरफ़ से शब्द सुनाई देताहै जिसके सुनने से बड़ा आश्चर्य मालूम होताहै और एक बन बड़ाभारी देखाई पड़ा जिसका कहीं वार संभार नहीं मिलता तब वह घोड़ा अमीर को लेकर निकला थोड़ी दूर आगे गया कि एक बाग़ की दीवार दिखाई पड़ी जोकि पहले से भी उत्तमथी अमीर जो उसके अन्दर गये तो देखकर अतिप्रसन्न हुए और इसप्रकार से मेवेआदिक के वृक्ष थे मानो बैकुण्ठ ही है और उसके मध्य में एक ऐसा वृक्ष जादूका मोटा था कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर रङ्ग २ के पक्षी बैठेहुए अपनी बोली बोलरहे थे और अपनी भाषा से लोगों को मोहितकर रहे थे और मध्य में एक पक्षी गले में हार डालेहुए बैठाथा जब उसने अमीर को देखा तो सब पक्षियों को लेकर पांचसौ गज़ ऊंचा उड़कर चारों तरफ़ से अमीरको घेरलिया और रोरोकर शब्द करने लगा कि मनुष्य क्या जो पत्थर हो उसको भी अवश्य दया आजाती थी अमीर उनका रोना सुनकर आप भी रोनेलगे और उन के दुःखपर बड़ा रंज किया परन्तु मसला है कि दूधका जला माठा फूंक २ पिये अपने चित्त में बिचारा कि शायद ये पक्षीभी जादू के हों और मुझको किसी दुःखमें डालें तख़्ती को निकाल देखा तो उसमें लिखाथा कि ख़बरदार २ इस वृक्ष के नीचे खड़ा न होना नहीं तो फँसजाओगे ये पक्षी जादू के बने हैं फिर यहां से कभी न छूटने पावेगा इस मन्त्र को पढ़कर तीर से जादू की हुमा को मारडालो अमीर ने मन्त्र पढ़कर तीर को कमान से लगाकर ज्योंहीं मारना चाहा त्योंहीं जादूकी हुमा वृक्ष से उड़कर जाया चाहती थी कि अमीर ने मन्त्र पढ़कर तीर मारा कि उसके सीने में लगा वह तड़पकर गिरपड़ी और उसके बदन से लपट निकली और वह बाग़ सब पक्षियों समेत जलगया तब तो सब सन्देह अमीर का दूर होगया और शोर गुल के पश्चात् अमीर एक दूसरे बाग़ में पहुँचे तो वहां भी अपूर्व तरह के तमाशे दिखाई दिये कि एक सेना सोने की बरछी लिये हुए खड़ीहै और उनका रूप देवों की तरह अपूर्व तरह का था अमीर को देखकर कहनेलगे कि ओ मनुष्य, देश घूमनेवाला ! तू यहां क्यों आया और कौन लेआया ? यह कहकर सब बरछी लेकर दौड़े अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी लगाई कि सब एकबारगी मारेगये प्रत्येक के दो २ भाग होगये परन्तु जो पृथ्वीपर गिरा तो एक के दो होगये पहले से दूने होकर अमीरपर दौड़े और चारोंतरफ़ से घेरलिया इसीप्रकार से दोपहर में देवों से बाग़ पूर्ण होगया तब तो अमीर बड़े सन्देह में हुए परन्तु ईश्वर की कृपासे किसी का वार अमीर के न लगताथा और एक बड़ाआश्चर्य यह मालूमहुआ कि हरएक अपना भेष बदल २ कर आवे कि शिर तो पेट में और दोनों हाथ दोसींगकी तरह ऊपर को उठे हैं पश्चात् अमीर के चित्तमें आया कि तख़्ती में देखें तो क्याहै जब देखा तो उसमें लिखाथा कि यह सेना तलवार से न मरेगी आोक सपेद के मस्तक में एक खाल लालहै वह जादूहै तीर के लगने से दूर होजायगी और तू इससे बच

कर चलाजायगा अमीर ने देखा तो उनमें एक गोल सफेद था और उसके मस्तक पर एक खाल लालरङ्ग की थी अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर एक तीर उस के खालपर मारा तो चारों तरफ़ से शोर गुल होनेलगा और आकाश से पत्थर गिरने लगे और बादल गरजने लगा थोड़ीसमय के पश्चात् वह सब फ़िसाद दूर होगया फिर देखा तो एक स्थान अपूर्व दिखाई दिया तब अमीर उसके भीतर गये तो एक बाग़ अतिशोभायमान दिखाईपड़ा और उसके मध्यमें एक हौज़ जल से भरा मिला और उसमें लहरें उछलरही हैं और उसके किनारे पर एक तख़्त बिछा है उसपर एकदेव तकियालगाये बैठाहुआहै और उसके आगे एक स्त्री बँधीहुई पड़ी है उसके ऊपर एक जिन ख़ञ्जर लिये बैठाहै और उसको बड़े ज़ोरसे दबायेहै वह स्त्री अमीर को देखकर बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर रोरो कहनेलगी कि ऐ जगत्के घूमनेवाले! मुझे इस के हाथसे बचा तबतो जिन ने उस स्त्री का शिर काटकर देवके गोद में फेंक दिया और उसने जल में डालदिया उस बेचारी को इसतरह से दुःख दिया इतने में वह शिर हौज़से निकलकर फिर उस स्त्री के धड़ में जुड़गया और वह स्त्री फिर वैसेही कहनेलगी जिन ने फिर शिर काटकर देव की गोदमें डालदिया देव ने उठकर हौज़ में डालदिया तब वह शिर फिर उड़कर उस स्त्री के धड़ में लगगया और वह स्त्री उसीतरह से फिर अमीर से रोरोकर कहनेलगी अमीर ने इसको देखकर बड़ा आश्चर्य किया और कहनेलगे कि बड़ा तमाशाहै तब तख़्ती को निकालकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि जिससमय वह जिन स्त्री का शिर काटकर देव की गोद में दे उसीसमय उस देवके गले में तीर मार इस मन्त्र से सब जादू दूर होजायगा अमीर ने वैसाही किया झट एक तीर उस देव के गले में मारा तो उसी समय एक बड़ा शोरगुल होनेलगा उसके पश्चात् अमीर ने देखा कि एक बन है जिसकी हद का कहीं पता नहीं है अमीर उसतरफ़ चले थोड़ी दूर गये तो एक क़िला स्याहपत्थर का दिखाई दिया और एक नवीन प्रकार से बनाहुआ है अमीर जब दरवाज़े पर गये तो दरवाज़ा क़िले का खुला पाया और कोई दरबान भी न था परन्तु बोलचाल मनुष्यों की सुनाई पड़ी तब अमीर क़िलेके अन्दर गये तो देखा कि बराबर से दूकान लगी हुई हैं और सब लोग बैठे हैं परन्तु न कोई हिलसक्ता है न बोलसक्ता है बहुत प्रकार से अमीर ने पुकारा परन्तु कोई भी न बोला तब बाज़ार की सैर करते हुए नगारख़ाने की तरफ़ गये तो वहांभी बहुतसे लोग बैठे पाये परन्तु वही हाल उनका भी था आगे जो गये तो स्थान बने हुए पाये और उसमें पहरेवाले चोबदार ख़िदमतगार आदि दरवाज़े पर बैठे हैं और सबको चुपचाप पाया जिससे अमीर ने पूछा कि यह क़िला किसका है? उसने जवाब न दिया और न कुछ बोला थोड़ीदूर आगे गये तो दीवान मिला उस में एक मकान जड़ाऊ बनाथा उसके भीतर जो गये तो देखा कि एक तख़्त जड़ाऊ बिछा है उसपर बादशाह लिबासशाही पहिने हुए बैठाथा और सबओर सरदारलोग बराबर से बैठे थे अमीर ने बादशाह के

समीप जाकर सलाम किया और जब जवाब न पाया और कोई न बोला तो अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि क्या तुम्हारे यहांकी यही चाल है कि जो कोई आवे उससे न बोलें और सलाम का जवाबभी न देवें यह कहकर अमीर बाहर चलेआये तो जिधर से गयेथे वह रास्ता ही भूलगये लाचार होकर फिर बादशाह के पास आये कि उससे रास्ता पूछा तो आकर बादशाह के हाथमें एक पत्र था उसको हाथ बढ़ाकर लेलिया बादशाह तबभी कुछ न बोले अमीरने उस पत्र को पढ़ा तो लिखा था कि ऐ मुसाफिर ! यह सुलेमानी की सभा की नक़ल है और वैसेही सब बना हुआ है जो लोग दरबार में हाजिर थे उनकी सूरतें बनीहुई हैं और जो जिस स्थान पर बैठता था उसीतरह से बैठा हुआ है और जो सूरतें तूने देखी हैं ये लोग इसी क़िलेमें रहतेथे इस कारण पुतलियां क्योंकर बोलसक्ती हैं अमीर इसमें बड़े संदेह में पड़ेथे कि हज़रत सुलेमान के तख़्त के बराबर एक और तख़्त दिखाई दिया उस पर एक युवा स्त्री चौदहवर्ष की सब ज़ेवर पहिनेहुए बैठी है और स्वरूप में परियों से हज़ारगुना स्वरूपवान् है और चार सौ सहेली उसके तख़्त के पीछे हाथ बांधे खड़ी हैं जिनके हाथों और गलों में सोने की ज़ंजीरें पड़ी थीं अमीर ने उसके बराबर आकर सलाम किया उसने सलाम का जवाब देकर कि ऐ प्यारे ! तू इसस्थान में क्योंकर आया ? कि कोई मनुष्य इस में नहीं आसक्ता है अमीर ने कहा मेरा वृत्तान्त अधिक है क्योंकर सुनाऊं जिसका पूरा बयान न हो सके वह क्या कहूं परन्तु तुम अपना हाल बताओ कि कौनहो और क्योंकर यहां आईहो ? उसने कहा ऐ प्यारे ! मैंभी हज़रत सुलेमान की जोरू हूं मेरा नाम शलीमशर्रा है मुझको जिस समय हज़रत सुलेमान ने इस दुनिया को छोड़ा और शहपाल ने सब देवों को अपने आधीन किया उसने परदेज़ुल्मात की राजधानी दी है और मैंने उनकी आज्ञानुसार किया परन्तु थोड़े दिनों के बाद जब अफ़रेतपुत्र अहरमन ने युद्ध किया और क़ाफ़ के देशों को शहपाल से छीन लिया और सब राजधानी लेलिया तब धीरे २ ज़ुल्मात पर भी दख़ल किया और संदेशा दिया कि तू मेरे साथ ब्याह कर नहीं तो तुझे भी मारडालूंगा तब मैंने बिचारा कि जब शहपालशाह इससे विजय न पासका तो मैं कब पाऊंगी ? क्योंकि उसके पास बड़ी सेना है और आप भी अतिबलवान् हैं वृथा अपनी हुरमत खोनाहै तब मैं बिचार करके वहां से भाग कर यहां आईहूं और इस जादू में अपने को क़ैद किया है इस बिचार से कि यहां वह न आसकेगा और इस स्थानपर केवल हज़रतसुलेमान की सूरत देखकर दिन काटतीहूं और दिनरात्रि ईश्वर का ध्यान किया करतीहूं और ये चारसौ मेरी सहेलियां हैं इनको मैं अपने साथ लेआई थी अब आप अपना हाल बताइये कि कौन हैं और कहांसे आये हैं और क्योंकर इसमें आयेहो ? अमीर ने कहा कि मैं सहायक बादशाहक़ाफ़ शहपालपुत्र इब्राहीम पैग़म्बरका हूं और हमज़ा मेरा नाम है और परेदुनिया में मैं रहताहूं शहपाल ने अपनी सहायता के लिये बुलाया था उनकी

ख़ातिर से मैं आया और सबदेवों अफ़रेत और उसके माता पिता समेत सेनाको मार कर सबदेश ईश्वरकी कृपा और अपने बलसे दिलाकर फिरसे बादशाह बनाकर सब जादूके कारख़ाने बिगाड़ करके आताहूं अब तुम ख़ुशीसे जाकर राजकरो और वहां की मलका बनो उसने कहा कि इसमें तो मैं अपनी इच्छा से आई थी परन्तु निकल नहीं सक्तीहूं क्योंकि जो यहां आता है वह निकल नहीं सक्ता है अमीर ने कहा कि मैं इसको तोड़कर निकालदूंगा इतनी पुण्य करूंगा परन्तु एक बात जो मेरी मानो उसने कहा क्या बातहै कहो जो करनेके योग्य होगी तो क्यों न मानूंगी पहले सुनलूं तो इक़रारकरूं अमीर ने कहा कि यहां से छुटनेके पश्चात् परदेदुनिया में मुझे पहुँचादे मेरा देश मुझे दिखादे उसने कहा कि शिर और आंखों पर मैं खुद ले चलकर पहुँचाआऊंगी इतना आपका कार्य अवश्य करूंगी अमीरने तख़्ती को निकालकर देखा तो उसमें कुछभी न लिखाथा तब तो बड़े आचर्य में हुए कि इसमें से निकलना अब दुर्लभ हुआ तब तो तख़्तीको रखकर हाथ मुख धोकर निमाज़ पढ़कर ईश्वर का ध्यान करनेलगे तब एक स्वप्न की तरह देखा कि हज़रत सुलेमान मेरा शिर छाती से लगाकर कहते हैं कि ऐ बेटे ! दुःखित न हो बदिल मलिक नामे तेरा पुत्र इस जादूघरको तोड़ेगा इसकी पराजय उसीके हाथसेहै और जो तुम निकलने की इच्छा करतेहो तो इस मन्त्र को पढ़तेहुए दरवाज़े की तरफ़ जाओ दरवाज़ा तुमको मिल जायगा और जब दरवाज़े के बाहर जाना तोभी इस मन्त्र को पढ़ते रहना और एक हरिन तेरे सामने से आकर भागेगा तुम भी उसी के पीछे मन्त्र पढ़तेहुए भागे चलेजाना और जब वह हरिन दिखाई न देवे तो जानना कि जादूसे ईश्वर ने निकालदिया अमीर ने जब ध्यान से नेत्रों को खोला तब सबहाल मलिका से कहकर ईश्वर का धन्यबाद करनेलगे और मलिकाने कहा कि जब हम यहां से निकलें तूभी मेरे पीछे दौड़ीचलीआ मेरी आज्ञा मान अमीर वही मन्त्र पढ़तेहुए दरवाज़े की तरफ़ गये देखा तो दरवाज़ा खुलाहुआ है और जब दरवाज़े से बाहर निकले तो देखा कि एक हरिन कूदता फांदता अमीर के आगे से अच्छी तरह से सजाहुआ निकलकर मैदान की तरफ़ भागा अमीर भी वही मन्त्र पढ़तेहुए उसी हरिन के पीछे २ दौड़ते हुए चलेगये और बिचारा कि यह वही हरिन है जिसका हाल स्वप्न में हज़रत सुलेमान ने मुझ से बयान कियाथा और यह मन्त्र सिखलाया था मलिका भी अपने सहेलियों समेत पीछे २ अमीर के दौड़ी इतने में क़िले में एक बड़ा शोरगुल होनेलगा कि क़ैदी भागेजाते हैं अब मिल नहीं सकेंगे परन्तु कौन सुनता है किसी ने फिरकर भी न देखा गिरते पड़ते उस क़ैद से सब बाहर आकर ईश्वरका धन्यबाद किया आगे जाकर दोपहाड़ मिले हरिन उसपहाड़ में जाकर अमीर के आगेसे गुप्त होगया और फिर उसको किसीने न देखा तब अमीर ने जाना कि ईश्वर की कृपासे जादू से बाहर आये उस पहाड़ से निकलकर दूसरे पहाड़पर उतरकर डेरा डाला और उस दौड़धूपके दुःखसे आराम लिया और

मलिका भी उसी स्थान पर ठहरी अमीर के साथ वह भी निस्सन्देह होगई और चारसौ परियों से सब सामान मँगवाकर अमीर की मेहमानी की और सब तरहसे अमीर की सेवाकी सातदिनतक उसीस्थान पर अमीर नाच रङ्ग देखाकिये और परियोंके कटाक्ष लोभानेके देखकर प्रसन्नहुए आठवें दिन मलिकाने अपनी सहेलियों से सलाह पूछी कि हमज़ा आसमानपरी के साथ ब्याहा है इस कारण कोई इसको दुनिया में नहीं पहुँचाताहै उसके डरसे इनको कोई नहीं लेजाता है और मैं हमज़ा से इक़रार करचुकीहूं कि तुमको दुनिया में पहुँचादूंगी पस तुम लोगोंकी इसमें क्या सलाह है कौनसी युक्ति करनी उचित है ? इन्होंने कहा कि यह समझलो कदाचित् आकाशपरी को मालूम होगा कि किसीने हमारे पतिको पृथ्वीपर पहुँचादियाहै तो वह तुमको जीता न छोड़ेगी वह अपने माता पितासे तो डरती नहीं तुम किस गणनामें हो तुम इसके वृत्तान्तको भलेप्रकार जानतीहो ऐसा करनेसे वह तुमको बहुत तङ्गकरेगी और बहुत दण्डदेगी इससे उत्तम यहहै कि इस मनुष्यको चारसौ परियोंके साथ इसी स्थानपर छोड़कर चलेजावें और आकाशपरीकी आज्ञाके विरुद्ध न करो यहसम्मति वहांके बुद्धिमानोंके पसन्द आई और इसने भी अपना बचाव इसीमें जाना अमीर को सोताछोड़कर कुछ परियोंको साथलेकर उड़के ज़ुल्मातको चलीगई और अमीर से प्रतिज्ञा तोड़दी प्रातःकाल जब अमीर सोके उठा तो देखा कि सलीसायराव का कहीं पता नहीं है बिचारकिया कि आसमानपरी के डरसे इसने भी मुझको पृथ्वीपर नहीं पहुँचाया अमीरने कहा कि जो ईश्वर कृपाकरेंगे तो दुनियामें पहुँचना कुछ कठिन नहीं है यह कहकर पहाड़ के नीचे २ ईश्वरका ध्यान करतेचले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर नव रात्रिदिन चलतारहा और जब भूखलगती तो ख़िज़रकेदिये हुए कलीचेको खाते और बलीहोकर फिर चलते तत्पश्चात् पृथ्वी या पहाड़ या नदी जहां कहीं कलीचा फेंकदेते फिर उन्हीं के पास आजाता और उसको खाकर फिर अपना काम करते दशवें दिन शमशादवृक्ष के नीचे पहुँचकर भेड़ियोंका चमड़ा बिछाकर सोरहे प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर जङ्गल से निकल मैदान की राह ली थोड़ी दूर जाकर क्या देखतेहैं कि पहाड़ के निकट से एक ज्वाला रह रहकर उठतीहै परन्तु उसका कुछ वृत्तान्त नहीं बिदित होता जब अमीर ने निकट जाकर देखा तो वह एक अपूर्व पहाड़ है वहांकी अपूर्व वस्तुओं को देखकर अत्यन्त विस्मित हुआ कि झिरनों से पानी झररहा है और मैदान में जो हरी घास है वह मानो मख़मल पर मोतियों की फ़रश सी सुशोभित होतीथी और वह मैदान बहुत हराभरा है और फलिया पहाड़ में सोने चांदीकी ईंटों और जवाहिरातसे बनीहुई एक चहार दीवारी है जिसके देखनेसे नेत्र प्रकाशित होते हैं और जगह २ उत्तम२ जानवर फिर रहे हैं और उस पहाड़के नीचे एकखोह ऐसीहै कि जिसकी गहराई अप्रमाण है उसके मुखपर एक देव बैठाहुआ अरने ऊंट और हाथी का क़बाब बना बनाकर खारहा है और जो धुआं निकलताथा वह सीधा आकाश को जाताथा और इस देवने अपने

लई ईश्वर करके काफ़ की राहमें प्रसिद्ध कियाथा और उस लोह और अलावों को अपना दोज़ख़ बनाये था और उसमें चारसौ देव रक्षा करते थे इसको देखकर अमीरने इच्छाकी कि जाकर पूछें कि यह क्या बातहै ? जो कुछ समझमें नहीं आती है देखने से आश्चर्य मालूम होता है संयोग से एक देव की दृष्टि अमीर पर पड़ी देखकर कहने लगा कि मेरे पास क़बाब नहीं था सो ईश्वर ने कृपा करके इस को मेरे पास भेजा है यह कहकर वहां से उठकर अमीर को चुपके से यह कहकर बुलाने लगा कि ओ मनुष्य ! धीरे २ चला आ नहीं तो कोई दूसरा देव तुझको देखकर खालेगा और तू मेरे हाथ से निकल जावेगा अमीर उसकी बातों पर हँसने पर हँसनेलगे अमीर का हँसना जो बुरा मालूम हुआ तो वह अमीर की तरफ़ दौड़ा कि पकड़कर खाजावें, अमीर ने अक़रब सुलेमानी मियान से निकालकर जो मारी तो वह दोभाग होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा उसको मरते देखकर सब देव अमीर के ऊपर हथियार ले २ कर दौड़े तब अमीर अक़रब सुलेमानी से सबदेवों को मारने लगे तो बहुत से तो मारेगये और थोड़े से डरकर भागगये उस स्थान से देवों का नाश करदिया जब अमीर ने देखा कि अब कोई देव यहां नहीं रहा है पहाड़पर जाकर स्वर्गपुरी को देखने लगा तो देखकर अतिप्रसन्न हुआ और उसमें एक ज़मुर्रदतख़्त अतिउत्तम बिछा है अमीर उसपर बैठगये और इच्छा की कि थोड़े समय इसपर बैठकर आराम करें फिर दिल में विचारा कि ऐसा न होवे कि हम सोजावें और वे देव जो भागकर गये हैं अपने स्वामी को बुलाकर लावें और मुझको दुःख देवें इससे सोना उत्तम नहीं यह बुद्धि नहीं है उनदेवों ने जाकर अपने स्वामी से कहा तो उसने पूछा कि अब वह कहां है ? देवों ने कहा कि स्वर्ग में निःसन्देह जाकर फिररहा है आरनातीस सुनकर आग होगया और कहनेलगा कि वह कहां से आया है और मेरे रक्षकों को मारडालाहै मैंभी चलकर उसीकी अच्छीगति बनाता हूं यह कहकर कईसहस्र देवों समेत वहां से उड़कर आपहुँचा और क़िले को घेर कर कहनेलगा कि जाकर तुम सब उसको पकड़लाओ देवोंने कहा कि हमलोगोंसे तो वह न पकड़ा जावेगा आप जो जावें तो पकड़ा जावेगा और आज आपकी भी बहादुरी देखेंगे यह सुनकर आरनातीस क्रोधित होकर अमीर के पास जाकर कहने लगा कि आ पापी ! तूने बड़ा ग़ज़ब किया कि हमारे रक्षकोंको मारडाला अब तूभी बचकर न जाने पावेगा तू मुझको न डरा यह कहकर हथियार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने कूदकर उसका हथियार छीनकर उसको पकड़कर पृथ्वीपर दे मारा तो उसने इच्छा की कि भाग जावें इतने में अमीर कूदकर उसकी छातीपर खड़े होगये और ख़ंजर निकालकर उसके मारनेकी इच्छाकी तो वह रोकर कहने लगा कि ऐ काफ़ की जादू तोड़नेवाले ! तू मेरा प्राण छोड़दे तो मैं बड़ी नेकी करूंगा अमीरने कहा जो तू मुसल्मान हो तो मैं छोड़दूं और अपना सबवृत्तान्त मुझ से कहकर मेरे आज्ञाधीन हो तब उसने मुसल्मान होकर कहा कि मैं सुलेमान के

समय में लैसदारों में बड़ा मोतबिर था और अनेक प्रकार से मुझपर कृपा करते थे जब उनका बैकुण्ठवास हुआ तो सबलोगोंने जहां पाया अपना अमल करलिया उसीप्रकार से मैंने भी इस क़िलेको लेकर अपने को यहां का स्वामी बनाया था अब आपने आकर मुसल्मान करके अपनी कृपासे मेरा प्राण छोड़दिया अब आप का सेवक हूं और जो आज्ञा दीजियेगा वही करूंगा यह कहकर मकान से बाहर आया और अपनी सेना से कहा कि मैं अब मुसल्मान हुआ तुममें से जिसको मुसल्मान होना होवे वह रहे नहीं अपने घरकी राह लेवे मैं उनसे नाराज़हूं क्योंकि मैं ईमान्दार हूं और तुम बेईमानहो बहुतों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया और बहुतों ने अपने घरकी राह ली और आरनातीस फिर अमीर के समीप आया और कहनेलगा कि जिन देवों ने मुसल्मान होना स्वीकार किया उनको तो मैंने अपने पास रहनेदिया और जिन्होंने स्वीकार नहीं किया उनको मैंने दूर किया अमीर ने सुनकर कहा कि बहुतअच्छा किया परन्तु बड़ी नेकी यह है कि मुझको दुनिया में पहुँचादे क्योंकि मैं बहुतदिनों से तुम्हारे देश में फिररहाहूं उसने कहा कि दुनिया में पहुँचना आपका दुर्लभ नहीं है परन्तु आसमानपरी के डर से आपको कोई पहुँचा नहीं सक्ता सब उससे डरते हैं परन्तु मैं आपके लिये उसकी आज्ञा से बिरुद्ध होकर दुनिया में पहुँचादूंगा जो आप मेरा कार्य पूर्ण करदेवें अमीर ने पूछा कि वह क्या है ? उसने कहा कि मैं जिस क़िले में रहताहूं अकीकनिगार उस क़िले का नाम है उसके समान संसार में और कोई क़िला नहीं है उसके समीप एक ज़मुर्रदहिसारनामे क़िला है उसका बादशाह लाहूतशाह अतिनीतिमान् है उसकी बेटी लानिसानामे है उसके ऊपर मैं मोहितहूं जो आप कृपा करके उसको मुझसे मिला देवें तो मैं आसमानपरी से बिरुद्ध होकर आपको दुनिया में पहुँचादूंगा अमीर ने कहा कि यह कौनसी बड़ी बात है तुम हमको वहांतक पहुँचादेओ आरनातीस ने कहा कि आइये मेरी पीठपर सवार होकर चलिये तब अमीर उसकी पीठपर सवार होकर चले ॥

दूसरा भाग सम्पूर्ण हुआ ॥

तीसराभाग

हमज़ा का बृत्तान्त ॥

बिदित होकि जब आरनातीसदेव अमीर को ज़मुर्रदहिसार की तरफ़ लेचला तो सायङ्काल के समय एक स्थानपर जाकर उतरा अमीर ने पूछा कि यहां क्यों उतरा उसने कहा कि अब रात्रि होगई है रात्रिभर यहांपर बासकरके प्रातःकाल उठकर आपको लेकर चलेंगे तब अमीर ने कहा कि यह तो अति उत्तम है परन्तु हज़रत ख़िज़र ने आज्ञा दी है कि परदेकाफ़के देवों का बिश्वास न करना सो हम तुमको

एक वृक्ष में बांधकर सोवेंगे उसने कहा कि मैं तो आपके साथ घाट न करूंगा परन्तु आपकी इच्छाहो तो मुझको बांधकर सोइये तब अमीर उसको एक वृक्ष में बांधकर आप चर्म बिछाकर सोरहे तब रात्रि को आरनातीस ने बिचार किया कि जिसके लिये हमने सब वस्तु छोड़कर इसका साथ किया सो यह मेरा बिश्वास भी नहीं करता तो और क्या करेगा इसप्रकार से बिचार करके वृक्षसमेत वहां से उड़कर भागा प्रातःकाल को जब अमीर जागे तो न कहीं वह देव है न वृक्ष देख-कर अतिब्याकुल हुए कि पहलेहीकासा फिर हुआ या वृक्ष में बांधने से क्रोधित होकर चलागया होगा पीछे निमाज़ पढ़कर एक ओर को चले और दोपहरको जब गरमी से ब्याकुल हुए तो एक स्थानपर थोड़े से वृक्ष देखकर उसकी तरफ़ जो गये तो चित्त अतिप्रसन्न हुआ चर्म बिछाकर लेटगये तो थोड़े समय के पश्चात् वन से एक देव अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि तू मुझ को नहीं डरा कि यहां पर बैठकर आराम करनेलगा अमीर ने कहा कि मैं यहां के देवों से नहीं डरता हूं तब उस ने एक पत्थर उठाकर अमीर के शिरपर देमारा अमीर ने उसको रोककर उस देव के दो भाग कर दिये और जब गरमी कम हुई तो वहां से उठकर चले तो थोड़ीही दूरपर जाकर देखा कि आरनातीस को चारसौ जिन मारते हुए लिये आते हैं अमीर को देखकर दोहाई देनेलगा अमीर ने जाकर उसको छुड़ाकर पूछा कि तू ने क्यों मुझ को वहां पर छोड़ दिया था ? उस ने कहा कि यह उसी के बदले में दण्ड मिला अब चलिये आपको लेचलूं तब अमीर फिर उसकी पीठपर सवार हो-कर चले और रात्रि को एक स्थान पर उतर कर एक वृक्ष में बांधकर सोरहे तो वह फिर वृक्ष समेत उड़कर चलागया प्रातःकाल को अमीर ने जो उसको न पाया तो अपने चित्त में विचारा कि देवों का स्वभाव ऐसाही होता है ये किसी के साथ नेकी नहीं करते हैं यह कहकर निमाज़ पढ़कर एक तरफ़ को चले और सात दिन तक बराबर चले गये आठवें दिन एक क़िले के समीप जाकर पहुँचे तो देखा कि बहुत से देव उस क़िले को घेरे हैं और दो देव कोठेपर बैठे ईश्वर २ कररहे हैं और एक देव क़िले का दरवाज़ा तोड़ रहा है अमीर ने जाकर उसको ललकारा कि ओ पापी ! प्रथम मुझ से लड़ले तो फिर जाकर तोड़ यह सुनकर अमीर के तरफ़ दौड़ा और कहने लगा कि तू तो हमारा भोजनहै तू क्या है ? जो लड़ेगा अमीरने कहा कि तू क्या बकताहै मैं ही अफ़रेत आदि देवों का नाशकर्ता हूं तब उस ने कहा कि तब हीं तेरी मृत्यु मेरे पास लेआई है आज तू बचकर न जाने पावेगा यह कहकर अमीर के मारने को दौड़ा अमीर ने रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि वह दो भाग हो-कर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसीप्रकार से थोड़ीही देर में सब देवों को मारकर भगादिया तब लाहूतशाह क़िले से निकलकर अमीर के पैरों पर गिरकर अपने क़िले में लेजाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हुआ अमीर ने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है ? उस ने कहा कि लाहूतशाह मेरा नाम है और इस क़िले का स्वामी हूं अमीर ने तब

उससे कहा कि मेरा एक प्रयोजन आप से है तब उसने कहा कि मैं जो आज्ञा हो करने को आरूढ़ हूं अमीर ने कहा कि तुम अपनी बेटी लानिसा का ब्याह आरनातीस के साथ करदेओ मैं उससे क़ौल हारगया हूं तब उसने ऊपरी मनसे कहा कि मुझे स्वीकार है परन्तु चित्त से अतिक्रोधित हो अमीर से अतिप्रसन्नता से कहने लगा कि उठकर चलकर गद्दीपर आसन कीजिये और तख़्त को एक कूप के ऊपर बिछवा दिया था अमीर उठकर जब गये और उस तख़्तपर बैठने लगे तो उलटे शिर कुयें में चलेगये तब उसने एक पत्थर ऊपर से रखवाकर दोसौ जिन्नों को रक्षा के लिये मुक़र्रर किया यह ख़बर लानिसा को पहुँची तो वह अतिक्रोधित होकर बादशाह के पास आकर कहने लगी कि तू बड़ा पापी है कि उसने तेरे साथ नेकी की है तू ने उस के बध करने की युक्ति की उसने कहा कि वह कहता है कि अपनी बेटी का ब्याह आरनातीस के साथ मेरी आज्ञानुसार करो इसी से मैंने उस को क़ैद किया है तब उस समय लानिसा चुप होरही कुछ उत्तर न दिया रात्रि को लिबास मरदाना पहिनकर हथियार बदन पर लगा के कूप के समीप अमीर के निकालने की युक्तिमें आई और पत्थर हटाकर कुयेंमें निस्सन्देह उतरकर गई अमीर ने देखा कि एक स्त्री चौदहवर्ष की मरदाना रूप धरेहुए मेरे शिरपर खड़ी है अमीर ने पूछा कि तू कौन है ? वह बोली कि लानिसा मेरा नाम है आपके छुड़ाने के लिये आई हूं आप कुछ सन्देह न करिये आपको छोड़ाने के लिये आई हूं अमीर ने ईश्वर का धन्यवाद दिया और कमन्द पकड़कर कुयें से बाहर आये और उसकी बड़ी प्रशंसा करनेलगे परन्तु पहरेवाले बहुत क्रोधित हुए तो लानिसा तलवार लेकर उन को मारनेलगी तो बहुत से तो मारेगये और बहुतेरे भागकर बादशाह लाहूतके पास गये और इस वृत्तान्त को जाकर बादशाह से बयान किया लाहूतशाह सुनकर सुन्न होगया और लानिसापर बहुत क्रोधित हुआ यहां अमीर लानिसा से रुख़सत होने लगे तब उसने कहा कि मैं आपकी लौंड़ी सेंतकी हूं अब आपको छोड़कर कहां रहूं ? जहां आप जाइयेगा साथ चलूंगी अब आपको न छोडूंगी अमीर ने बहुत प्रकार से उपदेश किया परन्तु उसने न माना अपने विचार में अमीर के साथ रहना उत्तम जाना तब अमीर के साथ चली और कई मंज़िल तक पैदल चली आख़िर को थक-गई चलने की शक्ति न रहगई तब तो अमीर बड़े सन्देहमें हुए और उसके साथ होने से बड़ा दुःख पानेलगे और मंज़िल को चार २ पांच २ दिनों में तै करने लगे कई दिनों के बाद एक पहाड़ बहुत साफ़ दिखाई पड़ा और उसकी तराई में सैकड़ों कोसतक हरियाली दिखाई पड़ी और उसके मध्य में एक नहर है कि जिसका जल मोती से भी अतिस्वच्छ है और चारों तरफ़ से ठंढी २ बायु आती है जिसके का-रण चित्त अतिप्रसन्न होता है तब तो वहां अमीर बैठकर उसके तीर पे सैर करने लगे कि इतने में एक हरिन सामने से आते हुए दिखाई पड़ा और सीधा अमीर के समीप निस्सन्देह चलाआया परन्तु जब अमीर पकड़ने लगे तब जङ्गल की तरफ़

भागा अमीर ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और लानिसा से कहा कि ले ईश्वर ने तेरी सवारी के लिये इसको भेजा है ईश्वर को तेरे दुःख से दया लगी पस जिस समय वहां से चलने लगे लानिसा को उसपर सवार कराकर नाथ में रस्सी लगाकर उसके हाथ में दिया दुःख से आराम हुआ, परन्तु थोड़ीदूर जाने पर हरिन लेकर जङ्गल की तरफ़ भागा उसने रोका परन्तु न रुका और एक सायत में हवा होगया और उसका कहीं पता न मिला अमीर बड़े दुःख को प्राप्त हुए और जिस तरफ़ को वह हरिन भागा उसी तरफ़ को अमीर भी चले परन्तु कहीं भी पता न मिला दोपहर के पश्चात् एक पहाड़ की तराई में पहुँचे तो एक बाग़ अतिशोभायमान देखा और उस में एक गुम्मज बना था जिस में कि बराबर से जवाहिर जड़े थे और चारों तरफ़ जड़ाऊ शामियाने गड़े थे अमीर जो उस के दरवाज़े पर गये तो दरवाज़ा भीतर से बन्द पाया और भीतर जाने की कोई रास्ता दिखाई न पड़ी इतने में भीतर से शब्द सुनाई पड़ा कि एक मनुष्य बिनयकरता है कि मुझे क़बूलकर दूसरा कहता है कि विष्ठा खाना अङ्गीकार है परन्तु तेरे साथ ब्याह करना अङ्गीकार नहीं है अमीर ने पुकारकर कहा कि अन्दर कौनहै दरवाज़ा खोलदे मैं तेरे पास आनेकी इच्छा करताहूं जब किसी ने न सुना तो अमीर ने एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़डाला और भीतर चलेगये तो देखा कि लानिसा तख़्तपर बैठी है और आरनातीस हाथ जोड़े सामने खड़ा है और प्रार्थना कररहा है आरनातीस ने जब अमीरको देखा तो अमीर के पैरोंपर गिरकर कहनेलगा कि देखिये साहब! मैं इस के पैरोंपर गिरपड़ा परन्तु यह मेरे साथ ब्याह नहीं करती आप इसको समझाइये कि मेरे साथ ब्याह करे तो आपकी सेवकाई से जीते जी मुँह न फेरूंगा और जहां आप कहियेगा वहां आपको पहुँचाऊंगा अमीर ने कहा कि तूने दोबार मुझे बनमें छोड़दिया है अब तेरी बातका कुछ बिश्वास नहीं है उसने कहा कि आप मुझे बांध कर सोरहे तो मैं भागगया अब मेरा अपराध क्षमा कीजिये अब सदैव आपके चरणों की सेवा में रहूंगा अमीर को उसके रोनेपर दया लगी लानिसा से कहा कि अब आरनातीस मुझे दुनियां में पहुँचानेका वादा करता है मेरे कहने से तुम इसके साथ ब्याह करलेओ यह तुम्हारे मोहमें मरता है लानिसा ने हाथ जोड़कर अमीरसे कहा कि यह तो देवहै आप जो मुझे गधेके साथ ब्याह करने को आज्ञा देवें तो मैं करलूं आपकी आज्ञासे मैं बिरुद्ध नहीं होसक्ती हूं परन्तु मैं भी इससे यह इक़रार करती हूं कि यह आपको दुनिया में अवश्य पहुँचादेवे फिर अपनी बेईमानी से दग़ा न देवे उसने हरप्रकार से सौगन्दें खाकर इक़रार किया अमीर ने ब्याह करने के पश्चात् लानिसा का हाथ आरनातीस के हाथ में पकड़ा दिया आरनातीस ने सलाम करके कहा कि अब आज्ञा हो तो इसको साथ लेजाकर क़िले निगार में ब्याह करूं और अपना हौसिला मिटाऊं किसी तरह से मेरा और उसका हौसिला बाक़ी न रहजावे क्योंकि जब मैं आपको दुनिया में पहुँचाकर फिर यहां आऊंगा तो आसमानपरी

अवश्य मुझे मारडालेगी और ऐसा नहीं कि जो वह न जाने इसकारण सब मनका हौसिला मिटाकर तीसरे दिन आपके पास आकर पहुँचूंगा और आपकी आज्ञा मानूंगा अमीर ने उसको जानेकी आज्ञा देकर कहा कि तीनदिनतक तुम्हारा आसरा देखेंगे और जो तीसरे दिन न आओगे तो अपने किये हुए का फल पाओगे और पीछे को पछिताओगे तब आरनातीस लानिसा को गरदन पर सवार करके क़िले निगार की तरफ़ गया आधी दूरगया था कि एक मैदान दिखाई पड़ा जहां तालाब और दो चार स्थान भी अपूर्व प्रकार के बनेथे वह स्थान उसे प्रसन्न आया उसी तालाब के तीर लानिसा को गरदन से उतारकर बैठादिया और उससे कहा कि तू इसी तालाब पर बैठीरह मैं जाकर कोई सवारी तेरे लिये लेआऊं पैदल लेचलना उचित नहीं है यह कहकर क़िले निगारकी तरफ़ चला और लानिसा को जो गरमी मालूम हुई तो कपड़े उतारकर तालाब में स्नान करने लगी कि गरमी मिटजावे मन को प्रसन्नता प्राप्तहोवे एक सायत न व्यतीत हुईथी कि एक घोड़ा अरने भैंसे की तरह मोटा आकर तालाब के किनारे खड़ाहुआ तब लानिसाने उस घोड़े को देखकर तालाब से निकलकर चाहा कि कपड़े पहिने कि वह लानिसा की तरफ़ दौड़ा और लानिसा डर से पत्थर पर गिरपड़ी तब तो उस घोड़ेने अच्छीतरह से उसके साथ भोग करके अपने दिलका हौसिला मिटाया ईश्वर की अपूर्व रचना से उसीदिन उसके गर्भ रहगया और पीछेसे उसके घोड़ा उत्पन्नहोगा और बड़ातेज़ होगा और उसका नाम अशक़र देवज़ाद रक्खा जायगा और वह बहुत दिनों तक अमीर की सवारी में रहेगा और जो उसे देखेगा वह उसकी बड़ी तारीफ़ करेगा पस जब वह देव अपने मनका हौसिला मिटाकर भोग करचुका तो पृथ्वीपर लोटकर अपना रूपधारण करलिया तब लानिसा ने कहा कि यह तूने क्याकिया क्या उसरूप के धारण करने में अधिक सुख मिला आरनातीस ने कहा कि ऐ लानिसा! कल नहीं मालूम क्या हो हमने आजही अपना हौसिला मिटालिया संसारमें एक सायतका कुछठिकाना नहीं है हर मनुष्य को प्रत्येक दिन एक कार्य लज्जाका करना पड़ता है अपने मन को तेरे साथ भोग करने से प्रसन्न किया यह कहकर उसको अपने कन्धेपर सवार करके चला और क़िले निगारमें लेजाकर नाच रङ्ग जैसा उचित था सामान करके करवानेलगा दिन को तो नाच रङ्ग में रहता रात्रि को लानिसा को बग़ल में लेकर सोता और उसके साथ भोग करता अब इसका वृत्तान्त छोड़कर थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन प्रातःकाल सुर्ख़ पोशाक पहिनकर नेत्रों में काजल देकर तख़्तपर मोहिनीरूप बनाकर बैठी और सब मुसाहिबों को बुलाया और सब के आने को लिये बड़ी ताकीद की आकर जिस ने उसका रूप देखा वहीं दङ्ग होगया और हरएक मुसाहब डरनेलगे कि कहीं हम लोगों पर मोहित न होजावे बैठे २ अब्दुलरहमान की तरफ़ सम्मुखहोकर कहने लगी कि हमने अमीर को बियाबान सरगरदां में छोड़वा दिया था देखो तो अब ज़िन्दा है या मरगया

और किस युक्ति में है अब्दुलरहमान ने हाथ बांधकर विनय किया कि मलिका साहबा रमल के विचार से तो यह मालूम होता है कि अमीर आजतक उसी में इधर उधर घूमरहे हैं परन्तु आरनातीस देव ने इक़रार किया था कि आप लानिसा से मेरा ब्याह करवादीजिये तो मैं आप को दुनियां में पहुँचा दूंगा सो अमीर ने लानिसा का ब्याह आरनातीस के साथ करवादिया है वह अब क़िले निगार में सुख से भोग कररहा है आज के दूसरे दिन अमीर को दुनिया में लेकर जावेगा जो उसने इक़रार किया है उसे पूरा करेगा आसमानपरी यह सुन क्रोध में जलने लगी और कहने लगी कि आरनातीस का भी यह मुँह हुआ कि मेरे पति को मुझ से अलग करने की शक्ति रखता है और मुझे नहीं डरता इसके बदले में उसे कैसा दण्ड देती हूं यह कहकर बड़े क्रोध से कई सहस्र देवोंको साथ लेकर तख़्तोंपर सवार होकर क़िले अक़ीक़ निगार की तरफ़ चली और क्रोधसे जलतीहुई वहां जाकर पहुँची तब दूतों ने ख़बर दी कि इस समय आरनातीस लानिसा को लियेहुए पलंग पर सोरहा है इसीसमय में उसको बांधकर देवों के बश कीजिये आसमानपरी ने जाकर दोनों की मुश्कें बांध लीं और गुलिस्तान अरममें लेआई और अपने दिलका संदेह दूरकिया और उनको लेआकर कारागार सुलेमानी में जहां कि जहान के क़ैदी आकर रक्खेजाते थे और कभी न छूटते थे उनको ख़ूब मार पीटकर उसी में बन्द किया और नगर में ढिंढोरा पिटवादिया कि जो कोई हमज़ा को बिना हमारी आज्ञा लेजाने की इच्छा करेगा उसको इसीप्रकार से दण्डमिलेगा बल्कि इससे भी अधिक अब अमीर का वृत्तान्त सुनिये कि जब तीन दिन व्यतीत होगये और आरनातीस न आया तो अमीर अपने दिल में कहने लगे कि कोई देव हमज़ा तुमको दुनिया में न पहुँचावेगा ये सब दुष्ट हैं और जो कोई वादा करता है वह अपना प्रयोजन करने के पश्चात् धोखा देकर चलाजाता है अब पहुँचावेगा तो ईश्वरही पहुँचावेगा नहीं तो कोई न पहुँचावेगा यह कहकर मेहरनिगार को शोचकर रोनेलगे कि इतने में एकतरफ़ से शब्द सलाम का सुनाई दिया अमीर ने फिर के जो देखा तो हज़रत ख़िज़र हैं उठकर खड़ेहुए और कहनेलगे कि हे ईश्वर! क्या मैं अब इसी में रहूंगा कबतक इस बन में दुःख उठाऊंगा कि जो कोई मुझे पहुँचाने का वादा करता है वह पूरा नहीं करता देखिये कि आरनातीस देव ने किस २ प्रकार से सौगन्दें खाईथीं परन्तु पूरा नहीं करता तब हज़रतने कहा कि यह सायत का फल है घबरा नहीं ईश्वर तुमको दुनिया में पहुँचादेगा और तुम सब से जाकर मिलोगे परन्तु थोड़े दिन और दुःख उठाओगे बहुत गई थोड़ी रही यह मसला सत्य है और आरनातीस देव का अपराध कुछ नहीं है वह अपने कहनेपर तैयार था और उसकी इच्छा थी कि आपको दुनिया में पहुँचावेवे परन्तु आसमानपरी ने अब्दुलरहमान से पूछकर उसको क़िले अक़ीक़निगार से पकड़कर दोनों को गुलिस्तान अरम में लेजाकर हथकड़ेकर सुलेमानी कारागार में डालदिया है इस बातपर आसमानपरी

ने उस बेचारे को बड़ादुःखदिया है यह कहकर हज़रत ख़िज़र जिधर से आये थे उधरी को चलेगये अमीर इस बात के सुनने से ऐसे व्याकुल हुए कि उनको मालूम भी न हुआ कि किधर गये अमीर वहां से आगे को चले सत्रह दिनतक बराबर चलेगये अठारहवें दिन एक पहाड़के नीचे पहुँचे तो उसकी चोटीपर एकमण्डप बिल्लौरी पत्थर का दिखाई पड़ा गिरते पड़ते वहांतकगये तो उसके ऊपर जो कलश रक्खा था वह इस प्रकार से चमकता था कि जो सूर्य आंख मिलावें तो चकचौंधी लगे तबतो अमीर ने अपने दिलमें बिचारा कि इसके समीप से जाकर देखें तब पहाड़पर चढ़गये तो एक बाग़ देखा जिसके चारोंतरफ़ दीवार उठी थी परन्तु दरवाज़ा उसका बाहर से बन्द था और कोई वहां दिखाई न पड़ता था अमीर निडर होकर उस ताले को तोड़कर भीतर चलेगये तो देखकर कहनेलगा कि जिस दिन से मैं काफ़में आया हूं अबतक ऐसा स्थान कहीं नहीं देखा और फिर जो कलश को दृष्टि करके देखा तो एक मोती का शबचिराग़ रक्खा है और उसपर एक लाल जड़ा है अमीर ने हाथ लपकाकर कलश से गौहर शबचिराग़को अपने से जो मिलाया तो एकरत्तीका भी फ़रक़ न पड़ा अमीर अतिप्रसन्न हुए कि यह भी सौगात काफ़की है संसार में काहेको ऐसे किसी बादशाह या शाहनशाह ने देखे होंगे किसी ने स्वप्न में भी न देखा होगा तत्पश्चात् मण्डप के भीतर जो गये तो देखा कि एक तख़्त जड़ाऊ बिछाहै और जिधरही नेत्र उठाकर देखा उधरी हरप्रकार की वस्तु अपने स्थानपर अपूर्व प्रकार की दिखाई दी तब इच्छा की कि उसपर थोड़ी समय ठहरकर आराम लेवें परन्तु फिर बिचारा कि ऐसा न हो कि कोई आकर कहे किसकी आज्ञा से तू इसके भीतर आया है इस कारण यहां ठहरना अनुचित है और इस स्थान से निकल चलना उचित है इस बिचार से मण्डप से निकलकर रविशपर रूमाल बिछाकर बैठगये और आतेही तकिया लगाली तब थोड़ेही समय के पश्चात् एक आंधी ऐसी आई कि मालूम होताथा कि सबबृक्ष गिरना चाहते हैं तत्पश्चात् एक सफ़ेददेव जो लम्बाई में पांचसौ गज़काथा क्रोधसे भराहुआ अमीर के सामने आकर पुकारा कि ओ चोर! कहां है? जिसने गौहर शबचिराग़ कलश में से निकाल के कुरूप करदियाहै और बड़ा शोरगुल करनेलगा अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर सामने आकर ललकारा कि ओ मोटेदेव! तू क्या बकता है किसको ढूंढ़ता है मुझको भी जानता है या नहीं? मैं देवोंका मारनेवाला और जादूका नाश करनेवाला हूं और जो न जानताहो तो सामनेआ बतलादूं मैं सहायक बादशाह काफ़ नाशकर्त्ता अफ़रेत और बधकर्त्ता अहिरमनहूं उसने कहा कि आज मालूम हुआ कि काफ़ के बाग़को आपही ने बरबाद किया है देख उसका बदला मैं अब तुझसे लेताहूं और जो हज़ार प्राण भी तेरेहोंगे एक भी मेरे सामने से लेकर न जानेपावेगा अमीर ने कहा कि बकता क्यों है जो मरेहुए देवों का मित्र है और उनके पास जानेकी इच्छा रखताहै तो आ तुझको भी उन्हींके समीप भेजदूं कि जाकर मिल मेरे सम्मुख आ और अपनी

बहादुरी दिखा तब उसने अपनी तलवार लेकर अमीर के शीशपर मारी जिसमें कि कई टुकड़े पत्थर के लगे थे और जाना कि इसी वारसे अमीर समाप्तहोजायँगे तब अमीर ने अकरब सुलेमानी से उसके दोभाग करदिये और कमरबन्द पकड़कर देव को पृथ्वी पर देमारा और छाती पर सवार होकर ख़ंजर रुस्तमी उसके गले पर रखदी तब तो वह देव रोनेलगा और कहा कि आप मेरा प्राण छोड़दीजिये तो सदैव आपकी आज्ञामें रहूंगा अमीर ने कहा कि जो मुसल्मान होजा तो मैं छोड़ दूं और तुझको न मारूं नहीं तो अभी इसी ख़ंजर से तेरा प्राण लेताहूं तब उस देव ने कहा कि इस पहाड़की तराई में मेरे शत्रु हैं जो तू उनको मारडाले तो मैं मुसल्मान होता हूं अमीर ने पूछा वे कौन हैं उनका तो हाल मुझ से बतला देव ने कहा कि इस पहाड़ के नीचे हज़रत सुलेमान की सैरगाह है वहा बैठकर चित्त को प्रसन्न करते थे अब उसी स्थानपर सात देव सुलेमानी रहते हैं और वे ऐसे बलवान् हैं कि सब लोग उनसे डरते हैं और उनकी सेवा करते हैं जो उनको मारिये तो मैं बड़ा गुण मानूंगा और आपकी आज्ञानुसार होकर रहूंगा अमीरने कहा कि तू मुझको वहां लेचल तब वह देव अमीर को पहाड़पर लेगया और उनका स्थान दिखादिया अमीर ने देखा कि कोसोंतक अपूर्व प्रकार का मैदान है और मध्यमें एक नहर दोसौ गज़ चौड़ी और लम्बाईका कुछ हद्द नहीं और उसका जल ऐसा स्वच्छहै कि जिस की प्रशंसा करनी शक्ति से बाहर है और हौज़के बीचमें एक बिल्लौरका चबूतरा पचास गज़का ऊंचा और पचासही गज़ लम्बा चौड़ा और उस में पुखराज के कड़े उसके चारोंओर लगे थे कड़ोंमें भी जवाहिर जड़ेथे और उसके मध्य में एकतख़्त सजाहुआ बिछाहै और सुन्दरता में अद्वितीय है अमीर कूदकर उसके ऊपर गये और चारोंतरफ़ देखकर सफ़ेद देवसे पूछा कि तुम्हारे शत्रु कहाहैं ? उसने कहा कि इसीमें हैं आप पुकारें वे बोलेंगे और आपके समीप आवेंगे अमीरने पुकारकर कहा कि ऐ नेस्तान? तुम कहां हो और क्या खातेहो ? तुम्हारी मुलाक़ात के लिये आया हूं आकर बाहर अपना रूप दिखलाओ वहांसे शब्द आया कि हमलोग ज़ाफ़रान अर्थात् केसर खाते हैं बैठो अभी हम आते हैं तत्पश्चात् सातों निस्तान आकर अमीर के सम्मुख बराबर से हथियार लेकर खड़ेहुए अमीरने जो देखा तो धड़ तो मनुष्य की तरह और दांत ऐसे नेजेसे तेज़ कि जो मक्खी बैठे तो दांत की नोक घुसजावे और दांतों की नोकें तलवार की धारसे भी अधिक तीक्ष्ण थीं तब अमीरने अक़रब सुलेमानी को हाथ में लिया और उनके बीच में जाकर सातों को मारडाला और तलवार ने उनके रुधिर से अपना पेटभरा तब अमीर ने सफ़ेददेवसे पूछा कि अब तो तुम्हारे शत्रुओंका नाश होगया अब तुमको कुछ संदेह नहीं रहगया तबतो वह देव मारे खुशीके चूतड़ पीट २ कर कूदनेलगा और अमीर से कहा कि तूने तो मेरे शत्रुओं को मारा परन्तु मैं तेरा शत्रु अभी मौजूद हूं और यह हमलोगों को उचित है कि भलाईके बदले में बुराईकरें उसके पापसे न डरें यह कहकर एक पत्थरका टुकड़ा

उठाकर अमीरके ऊपर फेंका अमीरने उसको रोकलिया और तलवार खींचकरदौड़ा परन्तु वह ऐसा भागा कि फिर उसका पता न मिला हरचन्द अमीरने बुलाया परन्तु वह न ठहरा और कहनेलगा कि ऐसा पागल नहींहूं कि तेरे समीप आकर अपना प्राण दूं जब कभी तुझे ग़ाफ़िल पाऊंगा उससमय तुझको मारडालूंगा यह कहकर आकाश को उड़गया अमीर ने दिलमें बिचारा कि अब यहां रहना अनुचितहै क्योंकि सफ़ेद देव अब मेरा शत्रु है नहीं मालूम कब आवे और मुझको मारडाले यह बिचार कर वहांसे चले लिखनेवाला लिखताहै कि अमीर सात दिन रात्रि बराबर सफ़ेद देवके डरसे चलेगये कहीं एक सायत सुस्तानेको भी नहीं ठहरे आठवें दिन एक नगर दिखाई पड़ा उसका भी अपूर्व बृत्तान्तहै कि वहां के मनुष्य केवल आधे धड़के थे जब दो मनुष्य खड़ेहों तो एक सम्पूर्ण मनुष्य बने और उनका नाम नीमतन था और वे सदैव इसीप्रकार से रहते थे और वहां के बादशाह का फ़तूह नीमतन नाम था परन्तु बड़ा प्रतापी और दयावान् था जिससमय उसने अमीर के आनेकी ख़बर सुनी उसीसमय आकर अगवानी मिलकर अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानी की और सब तरह से प्रसन्न किया तब अमीर ने उस बादशाह से कहा कि आप मुझको दुनिया में पहुँचा सक्ते हैं उसने कहा कि हम आधे मनुष्य हैं हम अपनी सरहद्द से बाहर किसी तरह से नहीं जासक्ते तब अमीर उससे आज्ञा लेकर आगे को चले लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने उस मैदान को दसदिन में बड़े श्रमसे तै किया ग्यारहवें दिन एक नदी के किनारे पर पहुँचे तो देखा कि वह नदी बढ़ी हुई है और वहां न कोई नाव है न और कोई वस्तु कि जिससे उतरकर पार जावें और नावका उसमें उतरना दुर्लभ था लाचारहोकर उसी स्थानपर नींद आगई और स्वप्न में रो रोकर मलिका को समझानेलगे और कहनेलगे कि अब हम दुनिया में न पहुँच सकेंगे सफ़ेददेव तो अपनी घात में लगाही था अमीर को सोतेही में पत्थर समेत उठाकर उड़गया दोकोस उंचाई पर गयाथा कि अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि सफ़ेददेव उड़ाये लिये जाता है अमीरने कहा हे देव! मैंने तेरे साथ नेकी की तू मेरे साथ बदी करताहै ईश्वरसे भी नहीं डरता उसने कहा कि मैंने तुझसे पहलेही कहदिया है कि हमलोग नेकी के बदले में बदी करते हैं यही हमलोगों का स्वभाव है और सदैव यही करतेरहे अब यह बताओ कि तुमको पहाड़पर फेंकूं या नदी में अमीरने बिचारा कि देवलोग उलटी मति करते हैं जो कहूंगा उसके बिरुद्ध करेगा अमीर ने कहा कि जो तू बदलालेता है तो मुझे पहाड़पर फेंकदे इसीप्रकार से अपना बदला ले सफ़ेददेवने कहा कि नहीं मैं तुझको नदी में फेंकूंगा कि तू डूबकर मरजाय फिर मेरे साथ दुष्टता न कर यह कहकर उसे पत्थर समेत नदी में फेंककर उड़गया तब हज़रतअलियास ख़िज़र ने ईश्वर की आज्ञा पाकर हाथोंहाथ अमीर को उठाकर नदी के पार रखदिया अमीर ने दोनों पैग़म्बरों को सलाम किया और रोकर कहा कि ऐ हज़रत! आसमानपरी

ने मुझको बड़ा दुःख दिया कि मुझको दुनिया में नहीं जानेदेती कि इस दुःख से छूटूं हज़रतख़िज़र ने कहा कि व्याकुल न हूजिये आबदाने के आधीन है जब आब दाना यहां से उठेगा तब तुम जाओगे और अपने जन्मस्थान में जाकर सुख पाओगे थोड़े दिन और दुःख पाओगे फिर तुम्हारे दिन अच्छे आवेंगे ईश्वरपर भरोसा करके बैठेरहो अब थोड़ासा वृत्तान्त शहपाल और आसमानपरी का सुनाता हूं कि एक दिन शहपाल दरबार में तख़्तपर बैठा था कि आसमानपरी सुर्ख़ पोशाक पहिने हुए दरबारमें आई और अपने तख़्तपर बैठकर अब्दुलरहमान से पूछनेलगी कि देखो तो आजकल अमीर कहां हैं ज़िन्दा हैं या मरगये और उस समय अठारह लाख सरदार दरबार में बैठे थे सब इस सज को देखकर कांपने लगे और मारे डरके हर देव ने अपना मुख ढांक लिया कि आज आसमानपरी सर्जी है और क्रोध में भरी है देखें कौन अपने प्राण से जाता है इतने में अब्दुलरहमान विचार कर रोनेलगे और शहपाल से कहा कि आपके साथ हमज़ा ने क्या बुराई की है? जो आप उसको यह दुःख देरहे हैं तब बादशाह ने व्याकुल होकर पूछा कि क्या हुआ कुशल तो है किस दुःख में अमीर पड़े हैं मुझसे अतिशीघ्रही बताओ कहा कि जहां दया न हो वहां कुशल कौन पूछता है? तुम बे परवाह हो तुमको उनकी क्या ख़बरहै सफ़ेददेव ने अमीर को अख़ज़र नदी में फेंकदिया है अब देखें जीते निकलते हैं या नहीं जो इस नदी में डालदिया जाताहै उसके जीनेका कुछ भरोसा नहीं रहता बादशाह यह हाल सुनकर व्याकुल होगये और आसमानपरी भी बाल अपने शिरके नोचकर रोने पीटनेलगी तब उसी समय बादशाह छोटे बड़ों समेत तख़्तोंपर सवार होकर नदी की तरफ़ चले एक सायत में उस नदीपर पहुँचे तो उस समय अमीर ख़्वाजे अख़ज़र और महतर अलियास के साथ निमाज़ पढ़चुके थे कि बादशाह आसमानपरी को साथ लिये पहुँचे अमीरने दाहिनी तरफ़ जो मुख किया तो शहपाल को खड़ापाया मुँह फेरकर बाईं तरफ़ किया तो आसमानपरी खड़ी थी तब अमीर ने उसकी तरफ़ से भी मुख फेरलिया दोनों की तरफ़ न देखा तब बादशाह और आसमानपरी हज़रत अख़ज़र के पैरों पर गिरपड़े और कहने लगे कि अब हम आपसे सौगन्द खाते हैं और यह इक़रार करते हैं कि छः महीने के पश्चात् अमीर को दुनिया में पहुँचा देवेंगे और जो न पहुँचावें तो आपके और ईश्वर के गुनहगार होवें और जिस प्रकार से ईश्वर चाहे दण्ड देवे अबकी बार मेरा अपराध क्षमा कराइये मेरे ऊपर कृपा कीजिये तब हज़रत ख़िज़र ने अमीर को समझाया कि जहां नौबर्ष व्यतीत हुए उसी प्रकार से छः महीने इनके कहनेपर और रहो और जो ईश्वर ने भाग में लिख दियाहै उसको सहो आसमानपरी और शहपाल सौगन्दें खाते हैं अबकी यह भी देखलो जो कोई इक़रार और सौगन्द करता है उसे मानना उचित है अमीर ने शिर झुकाकर कहा कि आप पैग़म्बर हैं आपकी आज्ञा मुझे मान्नी हर प्रकार से उचित है जो आप कहते हैं तो छःमहीने

और रहेंगे तब आसमानपरी और शहपालशाह दोनों अमीर के पैरोंपर गिरपड़े और अपने अपराधोंपर लज्जित हुए और क्षमा कराने को सौगन्द दी अमीर लाचार होकर हज़रत ख़िज़र और अलियास से आज्ञा लेकर शहपालशाह और आसमानपरी के साथ तख़्तपर बैठकर गुलिस्तान अरम की तरफ़ चलेगये॥

वृत्तान्त ख़ुसरो हिन्द लन्धौर पुत्र सादान का क़िले सरन्द्वीप में पहुँचना और पराजय देना महलील संगसार, मलिक अहवूक और बहराम बादशाह ख़ाकान चीनको और चीन में जाकर राजगद्दी पर बैठना॥

लिखनेवाला लिखता है कि महलील संगसार और मलिक अहवूक बहुत दिनों से क़िले सरनद्वीप को घेरे पड़े थे और कईवार क़िले से युद्ध किया एक दिन तबलजंग बजवाकर क़िलेपर धावा करनेकी आज्ञा दी तब सेना मुसल्मानी ईश्वर का नाम लेले रोनेलगी कि इतने में एकबारगी जङ्गलकी तरफ़ से गरद उठी और जब वह गरद बन्द होगई तो अलम और निशान आदिक दिखाई दिये और नवीन २ मनुष्य भी दिखाई पड़े तब क़िलेवालोंने दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि ख़ुसरोहिन्द अपनी सेनासमेत आते हैं और बहरामबादशाह ख़ाकानचीन घोड़ेपर सवार अपने देशकी तरफ़ चलागया और लन्धौर अपनी सेनासमेत इधरको आया तब तो क़िले में ख़ुशीके डङ्के बजनेलगे मलिक अहवूक और महलीलसंगसार डङ्के का शब्द सुनकर बड़े आश्चर्य में हुए कि ऐसे दुःखमें डङ्का ख़ुशी का बजवारहे हैं और हमारी सेना का और हमारा कुछ डर नहीं करते कि इतने में ख़ुसरो लन्धौर संगसारों की सेनापर आगिरा और मारनेलगा और जैपूर ने जो देखा कि ख़ुसरो हिन्द युद्धकर रहाहै क़िलेका दरवाज़ा खोलकर अपनी सेना भीतर लेजाकर मिला और उनके साथ हो युद्ध करनेलगा मलिक अहवूकने अपना हाथी बढ़ाकर ख़ुसरो के हाथी के बराबर लाकर खड़ा किया और एक तलवार ख़ुसरो पर मारी उसने रोकली परन्तु हाथीके लगी और वह घायल होगया तब ख़ुसरो कूदकर अलग खड़ा हुआ तब फिर अहवूक ने एकबार चलाई ख़ुसरो ने रोककर उसके हाथी की सूंड़ पकड़कर ऐसा दबाया कि वह चिल्लाया और रुधिर की नदी बहनेलगी और मलिक अहवूक हाथी से उतरकर ख़ुसरोके सम्मुख खड़ाहुआ तब ख़ुसरोने उसका कमर बन्द पकड़कर उठालिया और पृथ्वीपर देमारा तो उसकी छठी का दूध तक भी गिरपड़ा और पीछे दोनों टांग पकड़कर चीरकर फेंक दिया उसी समय में ऐसा बादल और बिजली चमकी कि मालूम हुआ पृथ्वी और आकाश फटगया और इसके बन्द होनेके पश्चात् आकाश से एक छोटासा बच्चा आया और ख़ुसरो को लेकर उड़गया यह देखकर संगसारों ने एकबारगी धावा करदिया तब सेना हिन्दने भागकर अपना क़िला बन्द करलिया और संगसार की सेनाने चारोंतरफ़से घेरकर डेरा डालदिया अब इस वृत्तान्त को छोड़कर थोड़ासा हाल मलिक लन्धौर का सुनाता हूं कि जो बच्चा लन्धौर को उठालेगया था वह राशदजिन्नी बादशाह भेजा

परदेक़ाफ़की बेटी थी उसने खुसरो का बल और बहादुरी देखी तो बिचारा कि इस को लेजाकर सफ़ेददेव को मरवाना चाहिये कि उसने रशदपरी पर मोहित होकर बिवाह करनेकी इच्छाकी थी जिस समय उसने क़बूल न किया और कहा न माना और उसके बदले में दो चार गालियां भी दीं उसको पकड़कर एक खोह में उसके स्थान के समीपथा क़ैदकिया और राशदहपरी के पकड़नेकी घातमें हुआ कि उसको भी पकड़कर अपने बशमें करके अपना हौसिला मिटावे राशदहपरी यह हाल सुन कर गुलिस्तानअरमकी तरफ़गई कि आसमानपरी से सलाहकरके इस सफ़ेददेवको मरवावें वहां जानेपर मालूमहुआ कि आसमानपरी किसी देशको गई है तब वहां से पलटकर दुनियाकी तरफ़ सैर करनेको चलीआई घूमते २ सरन्द्वीपमें लन्धौरका बलदेखकर उठालेगई और उसको अतिप्रसन्नता से अपनेबाग़ में उतारा और आप सजकर खुसरो के सामने आई तो लन्धौर देखते ही उसपर मोहित होगया और उसका रूप देखकर व्याकुल होगया और पूछा कि मुझे इस बाग़ में कौन लेआया और यह कौन देश है ? राशदहपरी ने कहा यह देश परियों का है और मैंहीं आप को लेआई हूं कि एक देवने मेरे पिता को क़ैद किया है और मेरे साथ व्याह करने की इच्छा करता है परन्तु मैं नहीं मानती हूं और हमारे बादशाह ने भी एकमनुष्य परदे दुनिया से बुलवाकर हज़ारों देवों का नाश करवाकर अपना देश फिर से अपने आधीन किया है और उसकी सहायता से अपने शत्रुओं से अच्छा बदला लिया है और अपनी बेटी से जोकि अतिस्वरूपवान् है उसके साथ व्याह कर दिया है सो मैं अपनी सहायता के लिये आपको लेआई हूं जो आप उस देव को मारकर मेरा दुःख छुड़ादीजिये तो मैं भी आपके साथ व्याह करके सदैव आपकी आज्ञानुसार करूं रशदपरी ने खुसरो को सफ़ेददेव के स्थानपर भेजवा दिया जिस समय खुसरो वहां पहुँचा तो पहरेवालों ने अपने सरदार से जिसका नाम सुक़राय ब्राह्मन था जाकर कहा कि एक मनुष्य आया और नहीं मालूम कि किस प्रकार से आया है सुक़रायब्राह्मन खुसरो को देखकर दौड़ा कि इसको पकड़कर सफ़ेददेव के पास लेजाऊं कि उसको देखाकर पारितोषिक लेऊं लन्धौर के पकड़ने को हाथ बढ़ाया तो उसने हाथ पकड़कर ऐसा देमारा कि उसका हाथ टूटकर अलग होगया तो इससे वह डरकर भागा और शेषदेव लन्धौर के ऊपर तलवार लेकर दौड़े बहुतों को लन्धौर ने तलवार से मारडाला और किसी की तलवार उसपर न लगी तब सब देव भागगये और लन्धौर राशदजिन्नी को लेकर क़ैसराफ़ैज़ में चला गया उस स्थानपर ले आने से राशदजिन्नी खुसरो से अतिप्रसन्न हुआ और कई दिनोंतक नाचरङ्ग करवाने की आज्ञादी खुसरो ने उसी नाचरङ्ग के समय ख़्वाजे अब्दुल-रहीम से कहा कि अपने बादशाह से कहो कि मैं उसकी बेटीपर मोहित हूं उसका व्याह मेरे साथ करदेवे और मुझ से जिस प्रकार से चाहे वैसा इक़रार करालेवे ख़्वाजे ने बादशाह से खुसरो का सन्देशा कहा तब बादशाह ने वज़ीर से कहा कि

तुम मेरी तरफ़ से खुसरो से कहो कि मुझे अपनी बेटी का ब्याह करने से बड़ी प्रसन्नता है परन्तु पहले सफ़ेददेव को मारकर क़िले के मरमर को उससे छीन कर मेरे आधीन कर देवें फिर मेरी बेटी के साथ ब्याह करके प्रसन्नता के साथ बासकरें लन्धौर ने अङ्गीकार किया और रात्रि को तो सोरहा प्रातःकाल उठकर सफ़ेददेव के मारने के लिये गया अब सफ़ेददेव का हाल सुनिये कि देवपलगसर ने जाकर सफ़ेददेव से कहा कि आज एक मनुष्य ने आकर तुम्हारे पहरेवालों को मारकर राशदजिन्नी को छुड़ाकर वायु के समान लेकर उड़गया और तुमको भी ढूंढ़ता था वह पापी सुनतेही आग होगया और कहनेलगा कि यह दूसरा मनुष्य कहां से आया एक मनुष्य जो आया था उसको तो मैंने अखज़र नदी में फेंक दिया था वह मर गया होगा घर में आकर देखा कि एक मनुष्य राशदपरी को गोद में लिये बोसे लेरहा है और हर प्रकार से प्यार कररहा है सफ़ेददेव यह हाल देखकर तलवार लेकर लन्धौर पर दौड़ा लन्धौर ने रोककर तलवार छीनली और एक घूंसा ऐसा मारा कि वह पृथ्वी पर लोटगया तब खुसरो ने उसकी मुसकें बांधकर अपने वश करलिया और उसका हौसिला तोड़दिया और सब देवों को मकान से निकालदिया और मकान अपने क़ब्ज़े में करलिया एक को भी वहां न रहने दिया तत्पश्चात् सफ़ेददेव को लाकर राशदजिन्नी के हवाले किया राशदजिन्नी ने खुसरो को गले से मिलाया और बहुतसी अशरफ़ी और रुपया न्यवछावर किया और सफ़ेददेव को एक खोह में जो दो पहाड़ों के मध्य में था क़ैद करके कई हज़ार देवों का उसपर पहरा किया और आज्ञा दी कि खूब खबरदारी से रखना यह भागने न पावे और ब्याह का सामान करके लन्धौर के साथ अपनी बेटी का ब्याह करदिया और कई दिनोंतक मेहमानदारी और नाचरङ्ग हुआकिया तत्पश्चात् लन्धौर ने देवोंको क़ैसर मरमर से निकाल दिया और उसको अपने क़ब्ज़े में करलिया और राशदपरी के साथ दिन रात्रि सुख करने लगे और उसीपर मोहित होगये एक दिन गरमी के दिनों में संगमरमर के चबूतरे पर वृक्षों की छाया में सोरहा था कि इतने में देव पलगसर ने जो सदैव घात लगाये रहता था संयोग पाकर सफ़ेददेव को खोह से निकाल कर कहा कि इस समय खुसरो निःसन्देह सोरहा है उसको पकड़ना उचित है सफ़ेददेव लन्धौर को अतिशीघ्रता से उठाकर अपने घर लेगया तौक़ और ज़ंजीर पहिनाकर कारागार में डालदिया इस उपाय से उसको क़ैद करलिया तत्पश्चात् राशदपरी के पकड़ने के लिये गया कि उसको भी पकड़ कर अपना बदला लेवें परन्तु वह इसी के डर से जादू अबलीचिमाल में जो सेहच समीदेव ने बनाया था जाकर छिपी सफ़ेददेव ने यह हाल सुनकर इच्छा की कि जाकर उसको भी पकड़ लावें और अपने आधीन करें परन्तु देव ने निषेध किया कि आप उसमें न जाइये क्योंकि उसमें जाकर कोई जीता नहीं निकला तब सफ़ेददेव सरदारों को साथ लेकर जादूको घेरकर पड़ारहा और उसका हाल देखाकिया और सुन २ कर डरनेलगा

अब थोड़ा सा हाल सङ्गसारों का बयान कर उनका वृत्तान्त तुम को सुनाते हैं कि जिस समय वह बच्चा लन्धौर को उठा लेगया और सेना ने क़िला बन्द कर लिया तब बहुत दिनों तक क़िलेवालों को बड़ा दुःख दिया जैपुर ने लाचार होकर महलील सङ्गसार से एक मास की छुट्टी मांगी और एक पत्र वहराम बादशाह ख़ाक़ानचीन को लिखा कि हम बड़े दुःख में हैं हमारी सहायता करनी आपको उचित है नहीं तो हमलोग बरबाद होते हैं वह पत्र देखतेही बादशाहचीन सेनासमेत सरन्द्वीपकी तरफ़ रवाना हुआ और जिससमय बङ्गाले में पहुँचा तो वहां दो भाई ज़ादख़ां और समन्दख़ां जो आतशबाज़ी की विद्या में पूर्ण थे बहराम से मुलाक़ात हुई तब कहा कि जो मुझे साथ चलने की आज्ञा होवे तो चलकर संगसारों को एकबारगी फूंकदेवें और ऐसा जलावें कि सब का नाशहोजावे मनुष्य तो क्या कोई स्थान न रहजावेगा ख़ाक़ान इस बातके सुनने से अतिप्रसन्नहुए और उनको ख़िलअत देकर अपने सेनामें करलिया और बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होते थे और इक़रार किया कि विजय होने के पश्चात् तुमलोगों के साथ अच्छेप्रकार से सम्मुख होंगे संगसारोंका वृत्तान्त सुनिये कि जब वादा पूरा होगया तो फिर मुसल्मानी सेना को दुःख देनेलगे तब मुसल्मानी सेना ईश्वरका स्मरण करके कहनेलगी कि हे ईश्वर! इन दुष्टोंके हाथों से हमलोगों का प्राणबचा अब तूही हमलोगोंका रक्षकहै इतनेमें शत्रुकी सेना न आईथी कि बहरामकी सेना आ पहुँची ईश्वरने उनकी सहायताके लिये भेजदिया और युद्ध होनेलगा तब जादख़ां और समन्दख़ां ने ऐसी आतशबाज़ी की वृष्टिकी कि संगसार अड़ न सके और बहुत से जलभुनकर राख होगये और जो बचे वे ऐसी शीघ्रता के साथभगे जिस प्रकार से बे नकेलका ऊंट भागे और आतशबाज़ी से ऐसा डरे कि जब कभी लूक टूटते देखते तो यही जानते कि आतशबाज़ी को बरसारहा है और डरके भागते इसी प्रकार से उनका हियाव छूटगया और सब भागगये और बहराम अतिप्रसन्नता के साथ क़िले सरन्द्वीप और क़िलेवालों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ परन्तु लन्धौर के न होने से बड़े संदेह में हुआ और चारों तरफ़ लन्धौर के ढूंढ़ने के लिये सिपाहियों को भेजा कि उसको ढूंढ़कर लेआवें कि बहराम उसके देखने से प्रसन्न होवे अब थोड़ा सा वृत्तान्त राशदपरीका सुनिये कि जब वह सफ़ेददेव के डर से जादू अबिलिचाल में गईथी तब उसके गर्भ था नौमहीने के पश्चात् एक पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसका नाम आरशिव परीज़ाद रक्खा और उसके उत्पन्न होनेका वृत्तान्त नाम समेत लिखकर जादूके बाहर फेंकदिया कि पिता मेरे पुत्र होनेका हाल जानलेवे संयोग से एक परीज़ाद ने उस पत्र को पाया और लेजाकर राशदजिन्नी को दिया राशदजिन्नी ने उस परीज़ाद से कहा कि इस पत्र को सरन्द्वीप में लेजा-कर जो आशिवो परीज़ादों में से बड़ा हो उसको देना अतिशीघ्रही इसपत्र को वहां पहुँचा परीज़ाद ने सरन्द्वीप में जाकर बहराम के गोद में डालदिया तब बह-राम ने पत्रको खोलकर चाहा कि उस पत्रको कोई पढ़कर सुनावे परन्तु वह जिन्नी-

भाषामें था उसको कोई न पढ़सका लाचार होकर उसपत्र को अपने पास रखलिया कि कभी तो कोई इसका पढ़नेवाला मिलेगा एक दिन खुल जावेगा अब आरशिव परीज़ादे का हाल सुनिये कि जब वह आठबर्षका हुआ तो अपनी माता से पूछनें लगा कि तुम दुःखी क्यों रहती हो तुम अपना हाल मुझसे कहो तब उसने सब हाल कहा और कहा कि ऐ पुत्र ! मैं अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये यहां आई हूं इस यत्नसे मैंने अपनेको निकालाथा परन्तु अब जीतेजी इससे निकलना बहुत कठिन है इस दुःखसे मैं अत्यन्त व्याकुल हूं और तेरा बापभी सफ़ेददेवके बन्धन में है कदाचित् वह छूटा होता तो किसी यत्नसे इस जादूगृह को तोड़कर हमको छुड़ाता आरशिव ने कहा कि इसजादू के छुड़ाने का यत्नभी किसी के पास होगा उसका पता लगाना चाहिये तब राशदा ने एक पत्र यन्त्र के ढूंढ़ने के लिये तीर में बांधकर जादूके बाहर अपने बापके नाम फेंकदिया तो राशदाजिन्नी के रक्षक जिन्नों ने उस पत्र को लेकर अपने स्वामी के पास पहुँचा दिया राशदजिन्नी ने अपने बलके अनुसार यन्त्र को तलाश किया जब कहीं पता न लगा तो एक ख़त राशदापरी के नाम लिखकर एक परी को दिया कि इसको उस जादूघर के भीतर जहां से इस को लाया था फेंक आ तथाच उसने इसकी आज्ञा का पालन किया कि उस ख़त को राशदा के पास पहुँचा दिया तब उसने पत्रको पढ़कर आरशिव से कहा कि तुम्हारे बापने लिखाहै कि मैंने यन्त्र को बहुत ढुंढ़वाया परन्तु कहीं पता न लगा वह यन्त्र इसी जादूघर के भीतर है शायद ढूंढ़ने से मिलजावे आरशिव अपने और माता के दुःख को देखकर रोनेलगा संयोग से उसी समय में सो गया तो स्वप्न में देखा कि एक वृद्ध मनुष्य कहता है कि तू क्यों दुःखित होताहै तेरे मकान के सामने जो मण्डप है उसी में एक देव बन्द है उसी के गले में एक तख़्ती याकूत की मोटे हरफ़ों में लिखी है तू उस पत्र के अनुसार कर जो कोई भयानक रूप भी दिखाई देवे तो न डरना वह देव अपने हाथ से देदेवेगा और आप चला जायगा और तेरी इच्छा पूर्ण होगी और ईश्वर की कृपा से इस जादू को तू तोड़ेगा आरशिव ने जागकर सब स्वप्न का हाल अपनी माता से कहा और मण्डप का दरवाज़ा जाकर खोला तो देखा कि एक देवहै और उसके गलेमें याकूत की एक तख़्ती बंधीहुई है और जो २ बातें स्वप्न में देखी थीं वही सब देखाई पड़ीं आरशिव ने तख़्ती को जो देखा तो उसमें लिखाथा कि ऐ जादू के नाशक ! इस मन्त्र को पढ़ तो यह देव तुझको तख़्ती देकर चलाजावे और इससे तेरा मनोरथ सिद्ध होगा परन्तु जिस समय वह फिरे तो तख़्ती उसके शिरपर मार तो वह मरजावेगा इससे तू छुट्टी पाजायगा परन्तु दो हाथी मस्त तेरे सामने लड़ते हुए आवेंगे और तुझको खूब डरावेंगे परन्तु तख़्ती को दोनों के बीच में डालदेना वे दोनों आपस में खूब लड़कर युद्ध करेंगे दांतों में से दोनों के अग्नि निकलेगी जलकर मरजावेंगे और तुझपर किसी प्रकार से क़ाबू न पावेंगे आरशिव पत्र के आज्ञानुसार करके बाहर निकला

तो देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है कि जिसके देखने से मनुष्य घबराजाता है और एक वृक्ष देवसार का था उसके पत्तोंपर ऐसी सुन्दरता थी कि जिसका बयान नहीं होसक्ता और उसपर हुटरगला बैठा है जो डीलडौल में हाथी के समान है इस रूप का पक्षी संसार में हमने दूसरा नहीं देखा और चोंच साग्वू के लट्ठे के बराबर है और थैली की ख़्वाजे अमरू की ज़ंबील समझना चाहिये आरशिवने पत्रको देख कर मन्त्र पढ़कर ऐसा तीर मारा कि तीर के लगतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा तो उसके गिरतेहीं एक बड़ा शोरगुल एकबारगी होनेलगा और ऐसी आंधी उठी कि रात्रि होगई दूसरा कौन देखसक्ता था और शब्द आता था कि इसका प्राण बचकर न जाने पावे जादूदेव को इसने मारडाला है देखें तुममें से कौन इसको मारता है तत्पश्चात् आरशिव आगे जो बढ़ा तो एक तालाब पाया उसमें संगमरमर की सीढ़ियां थीं और उसके ऊपर बहुतसी स्त्रियां युवा अतिस्वरूपवान् हाथों में शराब के गिलास सुराहियां लिये बराबर से खड़ी हैं आरशिव ने देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि इतने में हज़ारों स्त्रियां गिलास ले २ दौड़ीं और मोह मोहकर बातें करने लगीं तब तो आरशिव औरही संदेह में हुआ कि किसकी शराब लें और किसकी न लें इसी बिचार में था कि तख़्ती को देखनेलगा तो उसमें लिखा था कि ख़बर-दार किसी स्त्री को न छूना यह सब जादू है केवल उस स्त्री को जो घाटपर स्याह पोशाक पहिने बैठी है वही जादू की सरदारिनी है उसका सबहाजादू नाम है उस के हाथ से शराब का गिलास लेकर इस मन्त्र को पढ़कर शराब का गिलास उस के शिरपर मारकर देखो तो कैसा अपूर्व तमाशा दिखाई पड़ता है परन्तु इसका बिचार रखना कि शराब की छींट तेरे ऊपर न पड़ने पावे नहीं तो तेरा भी वही हाल होगा तब आरशिव ने जाकर प्याला उसके हाथ से लेकर उसी मन्त्र को पढ़ कर उसको मारकर आप पचास क़दम कूदकर अलग होरहा तो ज्योंही उसके मुखपर शराब पड़ी त्योंही उसके शरीर से लौवें निकलने लगीं और इधर उधर ऐसी घूमी जितनी स्त्रियां उस तालाब पर थीं सब जलने लगीं और रो पीटकर दो घड़ी में सब जल कर राख होगईं इस बात पर उसने ईश्वर का धन्यवाद किया और फिर तख़्ती को देखा तो उसमें लिखा था कि ऐ नाशकर्ता जादू ! अब तेरे सामने से बहुत से परीज़ादे गाते बजाते आवेंगे और उनके साथ एक बृद्ध मनुष्य होगा वह तेरे साथ सलाम करके मीठी २ वार्ता करेगा परन्तु ख़बरदार तू उससे कुछ न बोलना तख़्ती को आईने की तरह देखा करना इसे न भूलना तख़्ती को देखकर वे सब भाग जावेंगे और तेरा कार्य पूर्ण होजायगा आरशिव ने इसी प्रकार से जादू का नाश किया तब तो उसकी माता अतिप्रसन्न हुई और आरशिव को गले से लगाकर जादू से बाहर निकली तो सबलोग देखकर अतिप्रसन्न हुए और परीज़ादे जो साहबक़िरानी की तरफ़से पहरा देतेथे राशदपरी को देखकर बड़े आश्चर्य में हुए कि यह इस जादू से क्योंकर निकली और दौड़कर बादशाह को उसके आने की ख़बर

दी राशदजिन्नी ने उसीसमय तख़्त मँगवाकर और सवार होकर जाकर दोनों का बेटों को गले से लगाकर रुपया अशरफ़ी लुटाता हुआ अपने तख़्त पर सवार कराके कैसराबैज में लेआया और ईश्वर का धन्यवाद करके आरशिव ने अपने नाना से पूछा कि सफ़ेददेव ने मेरे पिता को किस स्थान में क़ैद कररक्खा है कृपा करके मुझे उस स्थान को दिखा दीजिये तब राशदजिन्नी ने आरशिव को अपने साथ ले जाकर सफ़ेददेव का स्थान दिखाकर सब बृत्तान्त सुनाया अब थोड़ासा बृत्तान्त लन्धौरपुत्र सादान का सुनिये कि उस दिन अपनी भाग्यपर बहुत रोया तो उसी समय में एक तरफ़ सलाम का शब्द सुनाई दिया तो उसने जवाब देकर देखा तो हज़रत ख़िजर खड़े हैं तब लन्धौर ने रोरोकर कहा कि ऐ हज़रत ! मैं कबतक इस दुःख में रहूंगा हज़रत ने कहा कि मैं ईश्वर की आज्ञा से तुझे छुड़ानेके लिये आया हूं यह कहकर सब बन्द खोलकर अन्तर्धान होगये तब मलिक लन्धौर ने खोह से निकलकर बाहर देखा तो राशदजिन्नी और राशदपरी तख़्तपर सवार खड़े हैं और लन्धौर की तरफ़ देखरहे हैं और राशदपरी के गोद में एक लड़का बैठा है लन्धौर जाकर राशदजिन्नी के पैरोंपर गिरा और राशदपरी से मिलकर पूछा कि यह पुत्र किसका है यह बृत्तान्त तो मुझसे बताओ राशदपरी ने सब हाल कहकर अपने पुत्रको खुसरो के पैरोंपर गिराया खुसरोने उसको प्यार किया और राशदजिन्नीको साथ लेकर कैसराबैज की तरफ़ चलागया ॥

आना ख़्वाजे अमरू का क़िले क़याम से क़िले देवदो में साथ मलिका मेहरनिगार मुसल्मानी सेना के ॥

लेखकलोग लिखते हैं एक वर्ष के पीछे सरदारों ने अमरू से कहा कि अब भोजन हमलोगों के लिये नहीं रहा है सबलोग क्षुधा से व्याकुल हैं ख़्वाजेने सय्याद से पूछा कि कोई और क़िला इसके समीपहै कि वहां जाकर अपनी सेनाको आराम देवें उसने कहा कि यहांसे दो मंज़िलपर एक क़िला जमशैद का बनवायाहुआ देवदोनाम है जो कि ऐसा पुष्ट बना है कि उसपर कोई क़ाबू नहीं पासक्ता और चार पहाड़ उसके चारोंतरफ़ हैं जिसमें जमशैद ने लोहेकी ज़ंजीरों से कलाबी बराबरसे बँधवा दिया और ऊपर से लोहे के तख़्तों से पटादिया है और चार हाथ की दूरीपर लोहे की दीवार बनवाकर बालू उसमें भरादिया और क़िला इस क़दर चौड़ा है कि उसमें खेती भी ऐसी होती है कि वहां के रहनेवाले भोजनके लिये मोल नहीं लेते और किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु दरवाज़ा उस क़िले में एकही है और वह भी ऐसा है कि केवल एक मनुष्य जासक्ताहै यह नहींहै कि दो मनुष्य बराबर साथ चलेजावें अमरू क़िले का बृत्तान्त सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और सरदारों को बुलाकर कहा कि तुम इसकी ख़बरदारी करो मैं दूसरे क़िले की तलाश में जाता हूं और तुमलोगों के सुख के लिये युक्ति करता हूं यह कहकर पोशाक शाही उतार कर लिबास मक्कारी पहिनकर क़िले के बाहर निकला और चलता

फांदता क़िले देवदो में पहुँचा तो क़िले को देखकर आश्चर्य करनेलगा और अपने दिल में कहने लगा कि मैंने ऐसा क़िला अबतक कहीं नहीं देखा यह कहकर दो तीन बार क़िले के चारों तरफ़ घूमा परन्तु कोई रास्ता भीतर जानेका न दिखाई दिया तब लाचार होकर एक टिकुरे पर बैठकर युक्ति सोचनेलगा कि किसी युक्ति से इसके भीतर जाना चाहिये इतने में एक सूराख़ से देखा कि एक मनुष्य कुयें में से जल भररहा है तब अमरू ने विचारा कि इससे और कोई युक्ति न मिलेगी उस मनुष्य से छिपकर कुयें में कूदपड़े और जाकर उसीके डोल में बैठगये जब वह मनुष्य डोल खींचने लगा तो उसे बहुत भारी मालूम हुआ तब उसने झांक कर देखा तो मालूम हुआ कि एक मनुष्य डोल में बैठा है उसने समझा कि यह जलमनुष्य है ईश्वर ने मेरे ऊपर कृपा करके इसको भेजा है अब मुझको बहुतसा ख़ज़ाना प्राप्त होगा यह विचार कर धीरे २ डोलको खींचनेलगा कि ऐसा न हो कि गिरपड़े जब डोल चरख़ी तक पहुँचा तो उसने पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया कि उसको डोलसे निकाललेवें इतने में अमरू कूदकर ऊपर आया और उसका हाथ पकड़कर जल में फेंकदिया तब वह दो एक बार डूब उतराकर मरगया और उसका भेष धारण करके पानी भरने लगा परन्तु जब मशक भरचुका तो बिचारने लगा कि नहीं मालूम कहां २ वह पानी भरता था मशक रखकर उसी कुयेंपर लेटगया और जब और भिश्ती जल भरनेको आये तो उनसे पूछनेलगा कि मियां फ़त्तू क्या हुआ अमरू ने कहा कि भाई! तप चढ़ाहुआहै कृपा करके मेरे घरमें कहदेना कि मुझे उठा लेचलें एक भिश्ती ने जाकर उसके घर में कहा कि फ़त्तू क़िले की दीवार पर तप में पड़ा काँपरहाहै दौड़कर उसे उठा लेआओ उसके लड़के बाले सुनतेही दौड़ कर उठा लेआये और सब उसका हाल देखकर दुःखित हुए परन्तु अमरू आराम से सोनेलगा आधीरात्रि को फ़त्तूकी स्त्री ने जगाकर कहा कि कुछ खाओगे थोड़ासा कुछ खालो अमरू ने कहा कि भूख नहीं है तब फिर उसने कहा कि गोलेथिया बनाई है थोड़ासा खालो अमरू ने कहा अच्छा तेरी ख़ुशी है तो ला थोड़ासा खिला दे उसने लाकर खिलाया और हाथ धुलाकर हुक़्क़ा भरदिया जब अमरू हुक़्क़ा पीने लगा कि इतने में बाहर से एक मनुष्य ने पुकारा कि मियां फ़त्तू जागतेहो या सोते हो यहां तो आओ तुमसे कुछ कहना है अतिशीघ्रही आओ तब तो अमरू बहुत डरा कि नहीं मालूम कौन है ईश्वरही इससे बचावे फ़त्तूने जोरूसे कहा कि पूछ तो इस समय रात्रि को क्या काम है और कौन है? उस स्त्रीने पूछा कि साहब आप कौन हैं और येतो बहुत बीमार हैं बाहर नहीं निकलसक्ते क्या आपका कुछ प्रयोजन है उसने कहा कि मैं बादशाह के सिपाहियों का सरदारहूं मुझे कुछ बात कहनी है अमरू मक्कार का नाम सुनकर बड़े संदेह में हुआ कि इसने तो आकर घेरलिया उस स्त्री से पूछा कि यह और कभी आयाथा तूने कभी इसको पहिले भी देखा था उसने कहा कभी नहीं तब तो अमरू के और भी होश उड़ गये कि

पहिले मक्कारहीसे मुलाक़ात हुई यह तो अच्छी बात न हुई तब लाचार होकर उठकर बाहर चला और कहनेलगा कि हे ईश्वर तूही रक्षक है यह कहकर बाहर निकला तब सरदार ने देखकर कहा कि शाहअय्यारां अलेकुमस्सलाम तब अमरू ने कहा कि साहब यह घर तो फ़त्तू भिश्ती का है शाह अय्यार का घर आगे होगा तब उसने कहा कि ऐ ख़्वाजे मुझसे क्यों छिपते हो मैंभी मुसल्मानहूं और आपसे मिलने को आया हूं दो महीने से आपके आने का आसरा देख रहा था यह कहकर अमरू के पैरों पर गिरपड़ा अमरू ने उठाकर छाती से लगाया और हरप्रकार की प्यारी २ बातें करनेलगा हमादेवदूई ने कहा कि चलिये बादशाहको पकड़ लीजिये जिस कार्यकेलिये आप यहां आये हैं उसको सिद्ध कीजिये फिर देखा जावेगा और जो कुछ होगा उसमें मैंभी हूं तब वे दोनों उसी अँधियारी रात्रि में पहरे वालों से छिपते छिपते बादशाह के स्थान में कमन्द लगाकर पहुँचे वहां जाकर देखा तो बादशाह अतलश के शामियाने के नीचे दुशाला ताने हुए पलँग पर सोरहे थे और सब ख़िदमतगार आदि भी बेख़बर सोरहे थे अमरूने एकाएक जाकर बादशाहके मुखपर से दुशाला उठाया बादशाह ने अमरूका हाथ पकड़ लिया तब अमरू झिझक कर अलग खड़ा हुआ और अमरू के हाथ का भाला बादशाह के हाथ में रह गया तब अमरू ने चाहा कि भागकर अपनी राह लें इतने में बादशाहने कहा कि ऐ ख़्वाजे मुझसे न भाग एक बात सुनले तो जा कि इब्राहीम ने इसी समय मुझे मुसल्मान करके तेरे आने की ख़बर दी और आज्ञा दी कि अमरूकी सहायता करो और नहीं तो हम क्योंकर तुमको पहिंचानते अमरू यह सुनकर खड़ा होगया बादशाह ने उठकर अमरू से मिलकर बैठाया और हरप्रकार की बातें करके कहा कि सबेरे तुम जाकर मलिकामेहरनिगार को सेनासमेत लाकर इसी क़िले में आरामसे रहो और यह क़िला आपही का है जो जमशेद भी उठकर आवें तो इसमें नहीं आसक्ते हैं अमरू उसी समय बादशाह से आज्ञा लेके अपने क़िले में आया और सब सरदारों से क़िले के पाने की ख़ुशख़बरी सुनाकर दिन भर तो आराम में बैठे रहे दोपहर रात्रि बीते मलिका को महाफ़े में सवार कराकर सेना समेत क़िले देवदो की तरफ़ रवाना किया और आप काग़ज़की मूरतें बनाकर क़िले में पहरे पर रखकर पीछे से गया दो दिनके पश्चात् क़िले देवदो में जाकर आराम से निस्संदेह हुए बादशाह ने पहलेही से सब को मुसल्मान करके द्वारपालकों को आज्ञा दी थी कि जिस समय अमरू आवे क़िले के दरवाज़ेको खोलकर आने देना जब अमरू आया तो दरवाज़ा खुला पाया और निःसंदेह सेनासमेत भीतर चलाआया और अपना प्रबन्ध क़िलेमें करके आराम से बैठा और सब अपने साथियों को आज्ञा दी कि जाके अपने आसन पर आराम करो अब हरमर की सेनाका वृत्तान्त सुनिये कि तीसरे दिन एक सिपाही ने जाकर हरमर से ख़बर दी कि क़िला ख़ाली मालूम होता है वह उसी समय सवार होकर क़िले में गया तो देखा कि नहीं [illegible] और कुचे कैंधे हैं और दीवारों पर

कस्साब की सूरतें खड़ी हैं बख़्तियारक से कहा कि और कोई क़िला इसके समीप है उसने कहा कि क़िला देवदो है उसी में अमरू गया है और वह क़िला बड़ा पुष्ट है पलटकर शाहज़ादों ने बादशाह नौशेरवां के नाम विनयपत्रिका लिखी कि अमरू इस क़िले से निकलकर क़िले देवदो में गया है और यह कार्य बे आपके आये न पूर्ण होगा और जो कोई कहे कि हम इसको विजय करलेवेंगे तो दुर्लभ है बे आपके यहां तक आये हमलोगों को बड़ा दुःख है और इससे प्राण बचने का कुछ भरोसा नहीं है यह लिखकर बादशाहके पास करगससानी के हाथ भेजा और आप सेना समेत चल करके क़िले देवदो की तरफ़ चला तीन दिन के पीछे पहुँचकर क़िले के पास डेरा गाड़कर पड़ा बादशाह नौशेरवां ने जब उस पत्र को पढ़ा तो आग की तरह जलकर कहने लगा कि देखो बड़ा दुष्ट है कि हमारे लड़कों को ऐसा दुःख देरहा है और हाथ नहीं आता है यह कहकर बख़्तियारक की तरफ़ सम्मुख होकर कहने लगा कि अब अवश्य उसको दण्ड देना चाहिये उसने कहा कि आप खुद चलकर उस पापी को जो वृथा इस प्रकार से शाहज़ादों को दुःख देरहा है चलके मारकर मलिका को पकड़ लेआइये और आपका चलना अनुचित नहीं है तब बादशाह ने बुज़ुरुचमेहर से पूछा कि आप क्या सलाह देते हैं उसने कहा कि जो पहले कहा था वही अब भी कहूंगा कि जो आप वहां गये और उसने अपनी दुष्टता से कोई ऐसा उपाय किया कि आपको उठा लेगया तो अति लज्जा हम लोगों को होगी आगे आपकी बुद्धि सब से बड़ी है जो आप आज्ञा दीजिये वही हमलोग करेंगे नौशेरवां को जो अमरू की दुष्टता याद आई तो कांपने लगे और बख़्तियारक से कहा कि तू बड़ा दुष्ट है सदैव मुझको धोखा दिया करता है और आप भी लज्जित होता है संयोग से उसी समय दूतों ने आकर बादशाह से कहा कि बेचीनकामरां जोपीन का भाई दो लाख सेना समेत आपसे मुलाक़ात करने को आताहै नौशेरवां यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और कई सरदारों को उसकी अगवानी के लिये भेजा कि जाकर उसे मेरे पास लेआओ जब उसने आकर तख़्त को चूमकर बादशाह को सलाम किया तब बादशाह ने अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर ख़िलअत देकर नाच रङ्ग करवाने की आज्ञा दी और उसकी मेहमानदारी यथाउचित की तत्पश्चात् उसने बादशाह से पूछा कि हुज़ूर आज कल जोपीन जहांदार जहांगीर कहां हैं उनका वृत्तान्त तो मुझसे बतलाइये नौशेरवां ने आह करके कहा कि क्या बताऊं वे तीनों भाई हरमर के साथमें अमरूपर आकर हमज़ा के पकड़ने की घात में हैं और नव बर्ष से वे लोग उसीके पीछे पड़े हैं परन्तु किसी के हाथ नहीं आता आज इस क़िले में तो कल दूसरे में इसी प्रकार से घूमा करताहै और सबको दुःख दिया करता है उसने कहा कि जो आज्ञा हो तो जिस क़िले में वह हो आपकी कृपा से ईंट से ईंट बजाकर अमरू को मलिकासमेत खड़ी ख्वारी पकड़ कर लेआऊं और ऐसा दुःख देऊं कि सब अपनी मक्कारी भूलजावे

बादशाह इसके सुनने से अतिही प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि तुम ऐसेही हो बादशाह ने खिलअत देकर जानेकी आज्ञा दी बीजनकामरां ने दोलाख सेनासमेत क़िले देवदो की तरफ़ कूच किया और थोड़े दिनों के पश्चात् क़िले देवदोके समीप पहुँचे तब हरमरने आने की खबर सुनकर जहांदार और जहांगीर को उसकी अगवानी के लिये भेजा कि उसका चित्त प्रसन्न होवे और जिस समय हरमर की सेना में आकर पहुँचे तो हरमर ने बड़ी तैयारी के साथ मेहमानदारी की और जो कुछ उसने कहा उसे किया बीजन ने ज़ोपीनसे सभा में बैठेहुए कहा कि क्यों ज़ोपीन तुम तो दावा करते हो कि हम बादशाह के दामाद हैं परन्तु एक सिपाही को न पकड़ सके ज़ोपीन ने कहा कि भाई साहब आप सत्य कहते हैं परन्तु आप उस सिपाही का हाल नहीं जानते हैं अब आप भी आये हैं जान जावेंगे कि वह केवल अकेला लाख सिपाहियों से युद्ध करता है और किसीसे कुछ बन नहीं पड़ती वह ऐसा सिपाही है बीजन ने कहा कि यह भी कहीं होसक्ता है कि वह अकेला लाख सवारों का सामना करे और विजय पावे अब मेरे नाम से तबलजङ्ग बज- वाया जावे और सब सेना युद्ध करने को तैयार होवे हरमर ने तबलजङ्ग बजवाने की आज्ञा दी और सबको युद्धपर आरूढ़ किया जब तबलजङ्ग का शब्द क़िले में सुनाईपड़ा उसी समय अमरू ने भी आज्ञा दी कि तबल सिकन्दरी पर चोब दीजावे इसी प्रकार से रात्रिभर दोनों सेनाओं में डङ्के बजाकिये सामान युद्ध का हुआ किया प्रातःकाल होतेही हरमरजाफ़रांमर्ज़ तख़्तपर सवार हुए सब सरदार अपनी २ सेना लेकर शाहज़ादों के साथ चले और युद्धके खेत में आकर पैर जमाया और बीजनकामरां भी अपनी दो लाख सेना लेकर एक तरफ़ से युद्ध करने को आरूढ़ हुआ और सेना में शोर गुल होनेलगा और हरमर की सेना अमरूका हाल जानती थी किसीने आगे क़दम न बढ़ाया कि ऐसा न हो कि अमरू अग्नि की वृष्टि करे परन्तु बीजनकामरां की सेना आगे को बढ़ी और क़िलेके समीप जाकर पहुँचगई तब तो क़िलेपर से अग्नि की वृष्टिहोने लगी और हरएक व्याकुल होकर भागे किसीका पैर न जमा बीजनने सेना का ढंग देखकर ज़ोपीन से कहा कि इस सेना से विजय न प्राप्त होगी येतो अग्निके डर से भागते हैं चलो हम तुम क़िलेका दरवाज़ा तोड़ कर क़िलेमें चलकर सबको मारें ज़ोपीनने कहा कि चलिये इसमें मुझे इनकार नहीं तबतो दोनों भाई अपने २ घोड़ों को कुदाकर ख़न्दक़ के पार किया और क़िले के दरवाज़े के समीप पहुँचगये और क़िलेमें आतशबाज़ी के धुयेंसे ऐसा अंधियारा होरहा कि किसीको अपना हाथभी न दिखाई देताथा जब क़िलेवालों ने हाथ रोंक लिया तो थोड़ीसमय के पश्चात् उजियाला हुआ तो देखा कि ज़ोपीन और बीजन दोनों भाई क़िले के पास खंदक़में घोड़ों पर सवार खड़े हैं और दरवाज़ा तोड़रहे हैं अमरू उनके मारने की युक्ति में था कि नक़ाबदार चालीस सहस्र सवार समेत आ पहुँचा और उन दोनोंके बराबर आकर कहा कि तुम कौन हो जो मुसल्मानी सेना

से युद्ध करने को आये हो क्यों अपने हाथसे अपना प्राण देते हो वे बोले कि तू कौन है जो हमारे और क़िले वाले के बीच में दख़ल देता है और हमारे शत्रु की सहायता करता है नक़ाबदार ने कहा कि मैं तुम्हारे प्राण का गाहक हूं और निश्चय करके जानो कि मैं तुम सबको यमपुरी में पहुँचाऊंगा नक़ाबदार की ऐसी बातें सुन कर दोनों भाई तलवार लेकर नक़ाबदार को मारने के लिये दौड़े उसने तलवार तो छीनली और दोनों का कमरबन्द पकड़कर अपने शिर के बराबर उठालिया और पूछने लगा कि अब पृथ्वी पर फेकूं या नदी में हरमर ने यह हाल देखकर सेना समेत दौड़कर धावा करादिया और नक़ाबदार के चालीस सहस्र सवारों ने भी तलवारें खींचलीं और खूब मरदूमी से युद्ध किया और अमरू भी क़िले से अपनी सेना लेकर मारनेलगा इस धावे में दोनों भाइयों के कमरबन्द टूटगये और घोड़ों के नीचे गिरकर भागगये और ऐसा युद्ध हुआ कि उसी दिन अस्सीसहस्र सेना हरमरकी मारीगई और बहुत से बलवान् सरदारभी काम आये और नक़ाबदार और अमरू की सेनाका एक सिपाही भी न मारागया और बहुतसा माल और रुपया मुसल्मानी सेनाके हाथ आया तब अमरू दौड़कर नक़ाबदार के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि आज तो आपने वह काम किया है जो रुस्तमसे भी न होसका होगा और ऐसी बहादुरी का तो नामभी किसीने न सुनाहोगा यह कहकर कहा कृपा करके आप अपना नाम बतला दीजिये और सेहरा उठाकर अपना स्वरूप दिखलाइये नक़ाबदार ने कहा कि ऐ अमरू आजतक कोई कार्य ऐसा मैंने नहीं किया है कि अपना नाम बतलाऊं और स्वरूप दिखाऊं जब अमीर कुशल से आवेंगे तो नामभी मेरा सुनलेना और स्वरूप भी देखलेना अब अपने क़िलेमें सब लोग आराम से बास कीजिये और मुझे हरसमय अपना सहायक और सेवक समझिये यह कहकर अमरू को तो क़िले में भेजदिया और आप जिधर से आया था उसी तरफ़ चलागया परन्तु किसीने न देखा कि वह कहां गया और अब हरमर जाफ़रांमर्ज़ने एक बिनयपत्रमें सब बृत्तान्त लिखकर बादशाह के समीप रवाना किया और उसमें यह लिखदिया कि अतिशीघ्र ख़ेमा और ख़ज़ाना भेजिये नहीं तो दिन को धूप और रात्रिको ओसमें रहने से बीमार होजावेंगे और ख़ज़ानेके आनेमें जो देरी होगी तो उपास करते २ मर जावेंगे और आपही विचार कीजिये कि जब अन्न न मिलेगा तो क्या खायँगे जब हरमर और जाफ़रांमर्ज़ का बिनयपत्र बादशाह के पास पहुँचा और बादशाह ने यह सब बृत्तान्त सुना तो बख़्तक से कहा कि तू जो सदैव कहा करता है कि आप जो चलें तो मैं अमरूको उसके सहायकों समेत पकड़ लूं सो तेरा पुत्र बख़्तियारक जो नौवर्ष से शाहज़ादोंके साथ है उस दुष्टने क्या बना लिया और तू क्या बनावेगा तूभी उसके हाथ से धोखा उठावेगा तेरे कहने से मैंने वृथा अपनेको बरबाद और लज्जित किया और शत्रुओंका हौसिला बढ़ाया ख़बरदार आजसे मेरे दरबार में आकर अपना स्वरूप मुझे न दिखलाना नहीं तो दण्ड पावेगा

बख़्तक रोंता पीटता अपने स्थानपर आया और एक पत्र अपने पुत्रके नाम लिखा कि ऐ दुष्ट ! तू नौबर्षसे शाहज़ादों के साथ है और आजतक तेरी कोई युक्ति न चली कि अमरू को मारता और इसी कार्य के लिये तू भेजागयाहै तूने सब बड़ोंका नाम धराया और मुझको दोनों लोक से खोया और तेरेही कारण बादशाह की सभासे मैं निकालागया मैंने इस काम में बड़ा दुःख उठाया उत्तम यही है कि तू इस कार्य को पूरा कर नहीं तो मैं आज से तुझे अपना लड़का न समझूंगा और तुझे अपने सम्मुख कदापि न आनेदूंगा परन्तु तेरा कुछ भरोसा नहीं है कि तू इस कार्य को पूरा करेगा मालूम होताहै कि तू मेरे वीर्यसे नहीं उत्पन्न हुआ मैं जानता हूं कि तू किसी साहूकार के वीर्य से उत्पन्न हुआ है बख़्तियारक पत्र को पढ़कर बड़े संदेहको प्राप्त हुआ कि ऐसी कौन युक्ति करें कि पिताके निकट प्रतिष्ठित हों दिनभरतो बड़े शोच विचार में रहा सन्ध्या को एक उत्तम यत्न शोच सिपाहाना वस्त्र पहिनकर क़िलेके चारोंओर कईबार फिरा परन्तु कार्य न सिद्ध होनेसे बड़ा पश्चात्ताप किया संयोग से अन्तरदेव दूई का बेटा अर्बाब एक बुर्जपर बैठा मदिरा पीरहा है और सब चौकीदार निश्चिन्त सोरहे हैं उसने बख़्तियारक की आहट पाकर ललकारा कौन है किस वास्ते यहां आया है उसने उत्तर दिया कि मैं बख़्तियारक हूं आप से कुछ प्रार्थना करने आया हूं उसने नशे की तरंग में निस्संदेह कमन्द के द्वारा क़िले पर चढ़ालिया उसने एक जाली ख़त देकर कहा कि यह ख़त नौशेरवां ने तुमको दिया है अर्बाब ने लिफ़ाफ़े पर नौशेरवां की मुहर देखकर निश्चय किया कि यह उसीका लिखा है उसमें लिखा था कि अगर तू इस क़िले को थोड़े दिन के लिये मेरे आदमियों के सुपुर्द करदे और अमरू को पकड़कर मेरे निकट भेजदे तो अग्नि देवता की सौगन्द खाकर कहता हूं कि यह क़िला भी तुझे देदूंगा और और भी तेरे साथ मित्रता करूंगा और तेरी प्रार्थना स्वीकार करके अपने संग रक्खूंगा अर्बाब ख़त के हाल से प्रसन्न हुआ और बादशाह को आशीर्वाद देनेलगा और बख़्तियारक से कहा कि अपनी भी साक्षी इसप्रकार दे जो कोई देखे इसपर विश्वास करे बख़्तियारक ने कहा मेरी साक्षी क्या चलिये शाहज़ादों की गवाही करवादूं निदान उसको बहकाकर शाहज़ादों के पास लेआया उनके सम्मुख कहा कि यह पत्र जो बादशाह ने भेजा है इसपर आपलोग भी अपनी २ मुहरें करदें शाहज़ादों ने जाना कि बख़्तियारक कोई होशियारी कररहा है कहा कि इसपर मोहर करके एक और दूसरा ख़त अपनी ओर से लिखे देते हैं और इसके सिवाय जो कुछ तुम कहोगे मंज़ूर करादेंगे अन्त को शाहज़ादों ने उसपर अपनी मुहर करदी और बहुतसी फ़रेब की इधर उधरकी बातें कीं तब ख़्वाजह अर्बाबने कहा कि आपके डेरेके भीतर एक सुरङ्ग का दरवाज़ा है और दूसरा दरवाज़ा मेरे मकानमें है इसको आप खुदवाइये उसको जाके मैं खुदवाता हूं कि इतनी रात्रि और सब दिनमें गरमी भी उसकी निकलजावे और बायु भी स्वच्छ आजावे आप कल रात्रि को सुरङ्गकी राहसे

आकर क़िले में बास कीजिये और मेहमानदारी भी खाइये और दोपहर रात्रि व्यतीत होनेपर मुसल्मानों को मारकर अमरू और मलिका को पकड़ लीजिये परन्तु पहलवान अच्छे २ साथ लेआइयेगा कि वे बहादुरी के साथ मारें तब शाहज़ादों ने ख़्वाजेअर्बाब को ख़िलअत देकर जानेकी आज्ञा दी और अपनी सेनाको इन कार्यों के लिये आज्ञा दी वह जिस प्रकार क़िले से आया था उसी प्रकार से चलागया और बेलदारों को बुलाकर सुरङ्ग का दरवाज़ा खोलने की आज्ञा दी तब बेलदारों ने प्रातःकाल होते २ सुरङ्ग का दरवाज़ा खोलदिया और आप शाहज़ादों की मेहमानदारीके लिये भोजन आदि तैयार कराने में संयुक्त हुआ और अपने सरदार को भी आज्ञा दी संयोग से दिलावर नाम उसकी बेटीने पूछा कि आज यह कैसी धूमधाम होरही है मुझको भी बतलाइये तब अर्बाब ने उसको अपनी बेटी जानकर सब बृत्तान्त रात्रि का उससे कहा और यह भी कह दिया ख़बरदार किसीसे यह बात न कहना परन्तु दिलावर ने इस विचार से कि बृथा इतने मुसल्मानों का पाप इस दुष्ट के शिरपर होगा एक पत्र अमरू के नाम लिखकर अपनी दाई को दिया कि तुम इस पत्र को अमरूके पास लेजाओ वह तुझे बहुत कुछ देगा परन्तु इस पत्र को कोई देखने न पावे उस दाई ने जाकर अमरू को पत्र देकर कुछ ज़बानी भी कहा तब अमरू ने दाई को बहुत कुछ इनाम दिया और दिलावर की बड़ी प्रशंसा करने लगा उसके जाने के पश्चात् आप तख़्त पर बैठा और सब सरदारों को दरबार में आने की आज्ञा दी जब सब आकर बैठे तो पहले आदीने सरदार से कहा कि आज एक स्थानपर नेवता है तुम सबको साथ ले जाकर बहुत अच्छी तरह से भोजन करवादूंगा परन्तु श्रम भी करना पड़ेगा और जो न कर सकेगा तो तेरे पेटसे एक २ दाना चीरकर निकाल लूंगा और बड़ा दण्ड दूंगा आदी ने कहा कि हम तो आपके सेवक हैं जो आज्ञा दीजियेगा वही करेंगे देखिये जब से अमीर गये हैं केवल इक्कीसमन आटा चावल दोनों जून में मिलता है और मैं एकही जून में चखजाता हूं तिसपर भी क्षुधा से तृप्ति नहीं होती परन्तु किसीसे आपके डर से कुछ कहता नहीं जबतक अमीर न आवेंगे तबतक इसी प्रकार से गुज़र करूंगा और आप मुझे पेटभर भोजन करा दीजिये तो देखिये कैसी जवांमरदी करताहूं कि आपभी देखकर प्रसन्न होजावें अमरू चार घड़ी दिन रहे से सरदारों समेत ख़्वाजे अर्बाबके स्थानकी तरफ़ चला जब ख़्वाजेने सुना कि अमरू की सवारी आती है तब तो अति व्याकुल होगया और कुछ बोल न सका इतनेमें अमरू की सवारी आपहुँची तब ख़्वाजे अर्बाब ने घर से निकलकर अमरू को सलाम किया और अनेक प्रकार की बातें करने लगा परन्तु दिलमें कांप रहा था कि अब मेरा प्राण न बचेगा अमरू ने पूछा कि मैंने सुना है कि आज आप मुसल्मानों की मेहमानदारी करेंगे हज़रत इब्राहीम की पूजा है तो निश्चय है कि हमलोगोंको भी आज अच्छा २ भोजन मिलेगा ख़्वाजे अर्बाब इसके सुनने से और भी डरा

परन्तु क्या करे सब सामान होही रहाथा इनकार कर नहीं सक्ता था लाचार होकर कहा कि आप तो वली हैं सब जानतेही हैं सत्य है मैं प्रातःकाल से भोजन की तैयारी कररहा था इसी कारण आपके पास नहीं आसका अब आपको कहला भेजता परन्तु बहुत अच्छा हुआ कि बेबुलाये आपही आये यह कहकर उसी स्थान में जिस में शाहज़ादों के लिये तख़्त बिछवाकर सजवाया था अमरू को तख़्तपर बैठाला और सब सरदारों के लिये कुरसी आदिक बैटने को दियाथा उचित सबको बैठाया तब अमरू ने भोजन मँगवाकर पहले आदीको अच्छी तरहसे खिलवाया तत्पश्चात् और सब सरदारों को खिलवाया तब सायंकाल के समय जब अंधियारा होगया सरदारों को आज्ञा दी कि ख़्वाजे अर्बाव की मुश्कें बांधलो उन लोगोंने आज्ञानुसार बांधलिया तब ख़्वाजे अर्बाव ने अमरू से कहा कि कौनसा अपराध मैंने ऐसा किया है कि जो आपने मेरी मुश्कें बँधवालीं अमरू ने कहा कि नेकीका बदला बदी परन्तु अपनी समझ में मैंने अच्छा किया है तब उसको तो एक कोठरी में बन्द करने की आज्ञा दी और आप सरदारों समेत सुरंगका दरवाज़ा ढूंढ़नेलगा और आदी से कहा कि वह समय आपहुँचा ऐसा न हो कि सुस्ती करो और कार्य सिद्ध न हो आदी ने कहा कि आप बतला दीजिये तो मैं अपने श्रम का तमाशा आपको दिखलाऊं अमरू ने ढूंढ़कर सुरंग के दरवाज़े पर बैठा दिया और आज्ञा दी कि जो कोई इसमेंसे शिर बाहर निकाले उसका गला पकड़कर दबाकर बाहर निकाललेना और शेष सरदार यहीं खड़े रहेंगे वेभी उसी प्रकार से गला दबाकर कारागारतक पहुँचावेंगे ख़बरदार कोई छूटकर जाने न पावे नहीं तो जैसा खाया है वैसेही बकरी की तरह पेट फाड़कर निकाला जावेगा आदी नानबाइयोंकी तरह पलथी मारकर सुरङ्ग के दरवाज़ेपर बैठगया कि जो कोई शिर निकाले उसे पकड़कर खींचलूं जैसी अमरू ने आज्ञा दी है वैसेही करूं अब थोड़ासा वृत्तान्त शाहज़ादों का सुनिये कि दो घड़ी दिनरहे दशसहस्र सवार और चारसौ पहलवान लेकर सुरङ्ग में धँसे जिस प्रकारसे कोई किसी के यहां बुलाने से मेहमानदारी खाने जाता है निःसंदेह होकर चले और अमरूकी चालाकी सब भूलगये जब समीप आये आदीने अमरू से कहा कि मनुष्यों का शब्द सुनाई देता है और कटक भी विदितहोता है अमरू ने कहा ख़बरदार कोई न छूटनेपावे इतने में एक मनुष्य ने सुरङ्ग के बाहर शिर निकाला आदी ने उसका गला पकड़कर ऊपर खींच लिया और दूसरे सरदार को सौंपदिया उसने उसी प्रकारसे कारागारतक पहुँचाया दूसरेने शिर निकाला उसकी भी वही गति हुई इसी प्रकार से चारसौ पहलवान एक सायत में आदी ने पकड़कर अपने सरदारों को सौंपा और वे उसी प्रकार से कारागार में लेगये और बेड़ियां डलवाकर सिपाहियों को पहरा देने की आज्ञा दी और सबको सुरङ्ग में आनेका फल दिया ज़ोपीन पीछे था उसने बिचारा कि कुछ कारण हुआ होगा नहीं तो चारसौ पहलवान अन्दर गयेहैं कोई तो आता इस बिचार से थोड़ा सा शिर सुरङ्गसे निकालकर देखनेलगा आदी ने उसका

शिर पकड़ा परन्तु उसने गरदन न निकाली थी इस कारण न पकड़सका और शिर भी हाथ से छूटगया तब ज़ोपीन ने अपने दिलमें कहा कि यह ज़ियाफ़त नहीं है अदावत है तब वह सुरङ्ग की दीवार से पैर अड़ाकर एक एक का नाम लेकर पुकार ने लगा कि भाई दौड़ो मेरा शिर पकड़कर कोई ऊपरको खींचताहै बीचनने दौड़कर ज़ोपीनके पैरों को पकड़कर इसज़ोर से खींचा कि उसका शिर आदी के हाथ से छूटगया परन्तु कान ज़ोपीनके आदी के हाथ में रहगये और वह छुटकर भागगया तब उसने सब मनुष्यों से इस भेद को कहा और सबको पलटने की आज्ञा दी आदी ने वे कान अमरू को दिये तब अमरू ने बिचारा कि अब सब जानगये हैं निश्चय है कि पलटजावेंगे तब तो सुरङ्ग में आतशबाज़ी लगवाकर फुंकवानेलगा दशसहस्र मनुष्य जो उसके भीतर धँसे थे सब जलकर रहगये केवल दोनों शाहज़ादे और थोड़े से सरदार बचकर भागगये प्रातःकाल अमरू ने चारसौ पहलवानों को ख़्वाजे अबीब समेत फांसीपर चढ़वाकर खिंचवालिया किसीको जीता न छोड़ा और सुरङ्ग का दरवाज़ा शीशे से बन्द करवाकर सब रास्ते बन्द करवादिये और हरमज़ और जाफ़रांमर्ज़ ने यह सब वृत्तान्त एक विनयपत्रिका में लिखकर साबद नमदपोश के हाथ बादशाह के पास भेजकर अपनी किताब में सब हाल लिखलिया॥ अब थोड़ासा वृत्तान्त अमीर का सुनिये कि आसमानपरी ने ख़्वाजे ख़िज़र और मेहतर उलियास के सम्मुख सौगन्दें खाई थीं कि छः महीने के पीछे मैं आपको परदे दुनिया को भेजदूंगी अब किसी प्रकार से उनकी बात वृथा न करूंगी जब छः मास व्यतीत हुए अमीर ने आसमानपरी से कहा कि अब तो छः महीने होगये हमको अब परदेदुनिया को भेजदो तब उसने कहा कि एक वर्ष और बास कीजिये तो मैं आपको पहुँचादूंगी इसके सुनने से अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि ऐ आसमान परी तुझे ईश्वर का भी कुछ डर है या नहीं कि तू ने दो पैग़म्बरों के सम्मुख वादा किया था कि आपको छः मास के पीछे दुनिया को भेजदूंगी और आज फिर कहती है कि एक वर्ष और बास कीजिये तिसपर भी तू कहती है कि मैं बड़ी सच्ची हूं आसमानपरी ने कहा कि जो मैं झूंठ बोलूंगी तो आपको क्या तब अमीर क्रोधित होकर बादशाह के पास गये और कहा कि ऐ शाहंशाह परदेकाफ़! मैंने कौनसी बुराई की है जो आप मुझे यह दुःख देरहे हैं कि मैं अठारह दिनका वादा करके आया था इतना काल व्यतीत होगया कि आजतक अपने बालबच्चों का कुछ हाल न पाया ईश्वर जाने कि वे किस दुःखमें पड़ेहोंगे कि नौशेरवां बादशाह मेरा शत्रु है वह भी अपनी घात पाकर दुःख देता होगा आप और आसमानपरी ने दो वलियोंके सम्मुख सौगन्दें खाई थीं कि छः मास के पीछे अवश्य आपको परदेदुनिया में भेजदेंगे वह वादा भी आपका पूरा होगया परन्तु अब आसमानपरी कहती है कि एक वर्ष और बास करो तो मैं तुमको भेजदूंगी सो वही आपसे पूछता हूं कि मेरा प्राण छोड़ियेगा या नहीं बादशाह ने अमीर को समझाया और उसी समय चार

देवों को बुलाकर अमीर को तख़्तपर सवार कराके उनको आज्ञा दी कि तुम लोग अमीर को अच्छी तरह से दुनिया में पहुँचाआओ और किसी प्रकार से दुःख न होने पावे यह हाल आसमानपरी को पहुँचा वह अपनी बेटी को भी लेकर अमीर के पास आई और कहनेलगी कि आपको अपनी बेटी की दया है कि इसने कुछ आप को दुःख नहीं दिया अमीर ने कहा कि जब तुम आना तब इसको भी साथ लेती आना और तुम्हारा आना जाना कुछ कठिन नहीं है जब जी चाहे तब चलीआना और जब मुझको बुलाओगी तो मैं भी आऊंगा इस समय मुझे जानेदे यह कहकर देवों से तख़्त उठवाकर चला आसमानपरी रोती हुई अपने स्थान पर गई और रुजबवान् परीज़ादे को बुलाकर कहा कि तू अमीर के पास बिदा करने के हीले से जाकर देवों से कहआ और मेरी आज्ञा सुना कि वे अमीर को दश्तअजायब में छोड़कर चले आवें नहीं तो बालबच्चों से मारे जायेंगे वह अति शीघ्रता के साथ उड़कर अमीर के पास जापहुँचा अमीर ने उसको देखकर जाना कि आसमानपरी ने देवों से कुछ कहने के लिये इसे भेजा है देवों से कहा कि तख़्त पलटाकर फिर शहपाल के पास चलो देवों ने कुछ संदेह किया तब तो अमीर ने तलवार मियान से निकाल लिया कि जो न पलटाओगे तो इसी तलवार से तुम सबको मारडालूंगा तब वे लाचार होकर अमीर को बादशाह के पास ले आये बादशाह ने अमीर को देखकर कहा कि कुशल तो है क्यों आप पलट आये अमीर ने कहा कि ऐ बादशाह! मुझे दुनिया में पहुँचाना है या फिर किसी दुःख में डालने को भेजते हैं बादशाह सौगन्द खाने लगा कि मैं अति प्रसन्न हूं कि आप दुनिया में जाकर अपने बाल-बच्चों के देखने से प्रसन्न होवें अमीर ने फिर कहा कि जो आपको मुझे भेजने की इच्छा है तो देवों से हज़रत सुलेमान की सौगन्द लेकर मुझे दुनिया में पहुँचाने के लिये भेजिये बादशाह ने जो देवों से सौगन्दें खाने को कहा तो देवों ने इनकार किया कि हमलोगों को आसमानपरी की आज्ञा नहीं है कि अमीर को दुनिया में पहुँचावें और उसकी आज्ञा के विरुद्ध हमलोग नहीं करसके हैं बादशाह ने आस-मानपरी से पूछा कि क्यों तू सदैव अमीर को दुःख देती है उसने कहा आपको क्या मेरा पुरुष है मैं नहीं जाने देती अमीर ने तख़्त पर से उतर कर एक शब्द ऐसे ज़ोर से किया कि परदेकाफ़ हिलगया और कहा ऐ आसमानपरी तू ने वलियों के सामने सौगन्दें खाई थीं और अब फिर मुझे धोखा देती है यह अच्छी बात नहीं है ईश्वर तुझे अवश्य दण्ड देगा यह कहकर रोतेहुए सिड़ियों की तरह जङ्गल की तरफ़ चले शहपालशाह ने आसमानपरी से कहा कि तूने मुझे परदे काफ़ में झूठा करदिया अब मेरी बात को कोई न मानेगा आसमानपरी ने कहा कि आपका लज्जित और झूठा होना मुझे क़बूल है परन्तु अमीर की जुदाई नहीं यह कहकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि अमीर नगर से बाहरगया है जो कोई उसे बास देगा या उसको देश में पहुँचाने की इच्छा करेगा तो उसको मैं दण्ड दूंगी अब अमीर का

हाल सुनिये कि गुलिस्तान अरम से निकलकर सात दिन जङ्गल में बराबर चलेगये आठवें दिन क्षुधा के कारण गिरकर बेहोश होगये दूसरे दिन होश में होकर उस कलीचे में से जो हज़रत ख़िज़रने दिया था निकालकर भोजनकरके मैदानकी तरफ़ देखनेलगे तो थोड़ी समय के पश्चात् देखा कि एकदेव अपूर्वरूप का चलाआता है जिसके डर से पृथ्वी कांप रही है अमीर के समीप आकर सलामकिया अमीर ने पूछा कि ऐ देव! यहां से दुनिया कितनी दूर है मुझे बता उसने कहा ऐ अमीर! जो मनुष्य पैदल जानेकी इच्छा करे तो पांचसौ बर्ष में पहुँचेगा और देव छः महीने में और देवपैकर चालीस दिन में और मुझ ऐसा देव सातदिन में लेजासक्ता है अमीर ने कहा जो तू मुझको मेरे घरपहुँचावे तो बड़ागुण मानूंगा उसने कहा कि जो मुझे फिर इस देश में न आनाहो तो अपने स्वामी की आज्ञा से बिरुद्धकरूं क्योंकि आसमानपरी ने ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचावेगा उसके वालवच्चोंतक न छोड़ूंगी अमीर ने उसको अपने समीप बुलाकर सब बृत्तान्त सुनाया देवने कहा कि मैं ऐसा पागल नहीं हूं कि जो आपके पास आऊं और आप मेरे ऊपर सवार हो बैठें और कहैं कि मुझे दुनिया की तरफ़ लेचल तो उस समय मैं क्या उत्तर आपको दूंगा परन्तु लाचार हूं यह कह सलाम करके उड़गया अमीर निराश होकर मन में कहनेलगे कि हमज़ा तुझको कोई दुनिया में न ले जायगा अब तू पैदल चल ईश्वर तुझको पहुँचादेवेगा यह कहकर जङ्गल की राह लेकर कभी हँसते कभी रोते चले पन्द्रहवें दिन एक क़िला दिखाई पड़ा जिसपर जिन्न शिरखोले ईश्वर का ध्यान कररहे हैं और एक देव क़िले को चारों तरफ़से घेरे है अमीर को क़िलेवालों पर दया आई उस देव को ललकार कर कहा कि ओ पापी! क़िलेवालों को क्या घेरे है ख़बरदार हो मैं तेरे प्राण का गाहक पहुँचगया उसने जो देखा तो जाना कि सहायक और नाशकर्त्ता जादू आ पहुँचा तलवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने आतेही अकरब सुलेमानी से उसके दो भाग करदिये और सेना में घुसकर मारनेलगा आधे से अधिक सेनाको मारा शेष भाग गई बादशाह क़िले से निकलकर अमीर से मिले और हाथ पकड़कर क़िले में जाकर तख़्तपर बैठाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुखहुए और कहा कि मैं वही जिन्नी सब्ज़क़बा शहपाल का भाई हूं कि जिसको आपने शतरंज सुलेमानी जादू से छोड़ाया था और मेरा प्राण बचा था यह कहकर क़िले सब्ज़निगार में लेजाकर सब छोटे बड़ों से मुलाक़ात करवाई और जो न जानते थे उनसे अमीर का सब बृत्तान्त बयान किया और नाच रङ्ग करवाकर अमीर की मेहमानदारी की अमीर ने कहा कि मुझे आपसे भी डर है क्योंकि आप भी तो शहपालशाह के भाई हैं जैसे वे हैं वैसेही आपभी होंगे उसने कहा कि आप क्या कहते हैं? मैं आपका सेवक हूं प्राण मेरा जो आपके काम आवे तो देदूं अमीर ने कहा कि ईश्वर आपको बनाये रक्खे मित्रों से ऐसे कार्य सिद्ध होते हैं यह कहकर कहा कि प्राण के बदले में केवल यही

कीजिये कि मुझे मेरे देश को पहुँचा दीजिये तो आपका जबतक जीऊंगा तबतक गुण मानूंगा बादशाह ने शोचकर ख़्वाजेरूफ़ को बुलाकर कहा कि तुम अमीर से कहो कि हमारी बेटी प्राणप्यारी जो तुम पर मोहित है उसके साथ बिवाह करो तो मैं आज के नवें दिन आपको परदे दुनिया को भेजदूं इसका मैं वादा करता हूं अमीर ने पहले तो न माना परन्तु पीछे को बादशाह से पहुँचाने का इक़रार करवा कर क़बूल किया तब बादशाह ने बड़ी धूमधाम से तैयारी करके दोनों का बिवाह किया और उसको अपना दामाद बनाया रात्रिको जब रैहानपरी और अमीर एक पलंगपर लेटे तो अमीर बीच में तलवार रखकर दूसरी ओर को मुख करके सोरहे और किसी तरह का काम न किया रैहान परी ने जाना कि अमीर के देश में पहले दिन ऐसाही होता होगा संयोग से उस दिन अमीर स्वप्न में मेहर-निगारको देख चौंककर जागउठा और जङ्गल की राह ली प्रातःकालको दादानपरी रैहानपरी की माता जो आई उसने देखा कि बेटी अकेली पलंगपर सोरही है जगा कर उससे पूछा कि अमीर कहां गये उसने कहा मैं नहीं जानती हूं रात्रिको तलवार बीच में रखकर सोयेथे फिर मैं नहीं जानती कि वे कहां गये मैं भी सोरहीथी उसने क्रोधित होकर बादशाह से जाकर सब हाल कहा तो वह भी क्रोधित हुआ और कहने लगा कि उसे यही करना था तो ब्याह क्यों किया कि मुझको काफ़भर में लज्जित किया कि अमीर सब्ज़क़बा की बेटी के साथ ब्याह करके एक दिन के पश्चात् छोड़कर चलेगये कुछ ऐब होगा नहीं कोई एक दिन की ब्याही दुलहिन छोड़ कर जाता है उसी समय देवों को बुलाकर आज्ञा दी कि तुमलोग जाकर अमीर को ढूंढ़कर लेआओ उनके लेआने में देर न करना अब थोड़ा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन सुर्ख़ पोशाक पहिनकर बादशाह के दरबार में गई और अब्दुलरहमान से पूछनेलगी कि देखो तो आजकल अमीर कहां हैं उसने रमल से बिचारकर और कुछ तो न कहा केवल यही कहा कि जङ्गल २ घूमकर दुःख उठा रहेहैं तुम्हारी कृपा से परन्तु वहभी समीप बैठीथी और रमल जानती थी देखकर कहनेलगी कि हे ईश्वर! जिन्नी सब्ज़क़बाने मेरा कुछ डर न माना और अपनी बेटी का ब्याह मेरे पति के साथ करके अपनी बेटी को मेरी सौत बनाया अच्छा इसका बदला मैं उसको जाकर देती हूं जो मैंने सबको मारकर उसके देश का नाश न करदिया तो आसमानपरी मेरा नाम न रखना यह कहकर सेना को साथ लेकर क़िले सब्ज़निगार की तरफ़ तख़्तपर सवार होकर चली॥

जाना आसमानपरी का सेनासमेत क़िले सब्ज़निगार को और नगर लूटकर पराजय करके पकड़लाना बादशाह सब्ज़क़बा उसकी बेटी रैहानपरी समेत और क़ैदकरना कारागृह सुलेमानी में॥

लिखनेवाला लिखता है कि जिस समय आसमानपरी क़िले सब्ज़निगार के समीप पहुँची तब सब्ज़क़बा कुछ सौगात लेकर उसकी अगवानी के लिये गया औ

बड़ी प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अपने क़िले में लेआया तब आसमानपरी ने क़िले में पहुँचकर अपने सरदारों को आज्ञा दी कि सब्ज़क़बा और रैहानपरी की मुश्कें बांधलो लोगों ने उसकी आज्ञा मानकर बांधलिया आसमानपरी नगर को लूटती हुई गुलिस्तान अरम में उन दोनों को लेकर पहुँची और कई दिनों तक हज़ार २ कोड़े दोनों के लगवाकर कारागार सुलेमानी में क़ैद किया यह हाल बादशाह शहपाल को पहुँचा कि आसमानपरी ने इस प्रकार से सब्ज़क़बा की हुरमत ली है तब तो बादशाह रोता हुआ दौड़ा और जाकर उसको छुड़ा लाया और उस समय आसमानपरी अपने स्थानपर चलीगई थी बादशाह ने उसको अनेक प्रकार से समझाया कि इसने आपको नहीं दण्ड दिया परन्तु मुझको दिया हरप्रकार से शहपाल ने समझाया परन्तु उसके दिल से क्रोध न मिटा क़िले के बाहर आकर पागल की तरह पुकार २ के कहनेलगा कि हे ईश्वर! जिस प्रकार से आसमानपरी ने मुझको वृथा दुःख दिया है ऐसाही मेरे बदले में तू उसको दे यह कहता हुआ रोते हुए अपने क़िले में आया ॥

अब आसमानपरी दुष्टा का हाल सुनिये कि काफ़ के सात देशों में एक रदशतिरनामें जो हज़रत सुलेमान के पैकरों में था और वह बड़ा बहादुर और लड़का था और हज़रत सुलेमान के जो सात नदियों का देश प्रसिद्ध है उसीमें जिस समय कि हज़रत सुलेमान ने प्राण त्याग किया उस समय से जाकर वहां रहने लगा और वहां दो क़िले बनवाये एक का नाम तो स्याहबूम रक्खा दूसरे का सफ़ेद बूम और कुछ जादू का भी कारख़ाना बनवाया सो अब उसको यह ख़बर पहुँची कि शहपालशाह ने दुनिया से एक मनुष्य बुलवा कर अफ़रेत देव को उसकी माता समेत और बहुत से देवों को मरवाकर जादूके कारख़ाने तोड़वाकर सब देश बसालिया है और गुलिस्तानकाफ़ को भी बरबाद करवादिया इसके सुनतेही आग हो गया और हज़रत सुलेमान का जाल जो किसी युक्ति से उसको मिलगया था लेकर क़िले स्याहबूम से उड़कर गुलिस्तान अरम में आकर सबको बांध लिया और अपने साथियों से उनको दुःख देने के लिये आज्ञा दी परन्तु केवल अब्दुलरहमान अपने स्थानपर चलागया था इस कारण से बचगया और जितने थे कोई उस बला से न बचा यह हाल अब्दुलरहमान को पहुँचा तब तो वह बड़े संदेह में हुआ और रमल से बिचारा तो बिदित हुआ कि अमीर क़िले के उत्तर दिशा पर हैं उसी तरफ़ तख़्तपर सवार होकर अमीर को ढूंढ़ने के लिये गया अमीर का हाल सुनिये कि वे जब क़िले सब्ज़निगार से निकले तो कई दिन जङ्गल घूमते २ एक पहाड़ की खोह में जो अब्दुलरहमान के स्थान के समीप था आकर बैठे थे कि इतने में अब्दुलरहमान को तख़्तपर सवार आतेहुए देखा और अब्दुलरहमान ने भी देखा तख़्त से उतरकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उठाकर छाती से लगाया और पूछनेलगा कि अब बादशाह ने तुमको क्यों जुदा किया है तब उसने सब वृत्तान्त

शहपालशाह आसमानपरी उकरेशा और सब सरदारों के क़िले सफ़ेदबूम में क़ैद होने का सुनाया तब अमीर ने कहा कि यह झूठ सौगन्द और मेरे दुःख देने का बदला शहपालशाह और आसमानपरी को ईश्वर ने दिया अब्दुलरहमान ने हाथ जोड़कर कहा कि आप सत्य कहते हैं यह उनको ईश्वर ने झूठ सौगन्द खाने का बदला दिया है परन्तु आसमानपरी आपकी स्त्री है इसमें आपही की बदनामी है और जो अपराध किया है वह आसमानपरी ने किया है परन्तु उसकी नेवछावर में सबको छोड़ाइये कि ये बेचारे इस दुःख से प्राण बचाकर आवें प्रथम तो अमीर ने इनकार किया परन्तु पीछे को अब्दुलरहमान की बिनय से कहा कि अच्छा वह क़िला कहां है और वहांतक मैं क्योंकर जासक्ताहूं कि उस क़िले पर जाकर छोड़ाउं अब्दुलरहमान ने कहा कि वह सात नदियों के पार है और वहां शाह सीमुर्ग़ के सिवाय और कोई पार नहीं जासक्ता वह ऐसा स्थान है अमीर ने पूछा कि वह कहां है अब्दुलरहमान ने कहा कि शाह सीमुर्ग़ के स्थानतक में आपको पहुँचा दूंगा और उसका पता भी आपको अच्छी तरह से बतलादूंगा इस प्रकार से अमीर को समझाकर प्रसन्न किया और अपने तख़्तपर सवार कराकर क़िले में लेगया और अनेक प्रकार से मेहमानदारी करके प्रसन्न किया अमीर ने उस क़िले को देखकर कहा कि एक बार और हम इस क़िले में आये थे और उन दिनों में यह क़िला लाऊसशाहलानिसा के पिता के पास था अब्दुलरहमान ने कहा कि सत्य है वह मेरा नायब था और बड़ा बुद्धिमान् था तत्पश्चात् अब्दुलरहमान ने अमीर को तख़्त पर सवार कराकर चार देवों को आज्ञा दी कि अति शीघ्रता के साथ अमीर को शाह सीमुर्ग़ के स्थानपर पहुँचाओ तब उन चारों देवों ने तख़्त उठाया और केवल जल ही में सात दिन रात्रि बराबर उड़ाकर आठवें दिन चार घड़ी दिन चढ़े नदी के पार ले जाकर तख़्त को उतारा और जो चलते २ थकगये थे आराम करनेलगे अमीर ने नदी को जो देखा तो उसकी लहरें आकाश तक ऊंची उठती हैं और मनुष्य तो क्या पक्षी भी देखकर व्याकुल होजाते हैं और नदी के तीर ऐसे बड़े २ वृक्ष थे कि जिनकी डालियां आकाशतक पहुँची थीं और उनकी छाया पांच योजनतक पहुँची थी और वृक्षों के ऊपर एक क़िला बनाथा और वह क़िला अच्छीतरह से सजा था अमीर ने उन जिन्नों से पूछा कि इस क़िले को किसने बनवाया है जो गुलिस्तान अरम से भी उत्तम है उन जिन्नों ने कहा कि यह क़िला नहीं है यह उसी सीमुर्ग़ का स्थान है अमीर इस बात के सुनने से बड़े संदेह में हुए तख़्त के लानेवाले जिन्न तो अपने स्थान को चलेगये और अमीर एक वृक्ष के नीचे बैठकर जङ्गल का तमाशा देखनेलगे कि थोड़ी समय के पश्चात् एक वृक्षपर शोरगुल होनेलगा अमीर उस वृक्ष के नीचे जाकर देखने लगे तो विदित हुआ कि सीमुर्ग़ के बच्चे शोरगुल कररहे हैं सीमुर्ग़ के बच्चों को जो देखा तो उनका धड़ हाथी के तुल्य है परन्तु सब इकट्ठे हो कर चिल्लारहे थे तब अमीर बड़े संदेह में हुआ कि किस वस्तु को यह देखकर डरते हैं

देखते २ जो देखा तो एक अजगर उसी वृक्षपर चढ़ाजाता था अमीर ने उसको तीर से मारकर बरछी की नोक से छेद २ उसके मांसको बच्चोंको खिलाया और उनका प्राण उस अजगर से बचाया उन बच्चोंका जो पेट भरगया तो जाकर सोगये क्षुधा से तृप्त होगये दो घड़ी के पश्चात् सीमुर्ग़ जोड़े समेत अपने बच्चों को भोजन लिये हुए आये तो उस समय बच्चोंको न देखा तो बिचारा कि आज बच्चों को कोई खा गया और सदैव जब वे आने की आहट पाते थे तो भोंभसे बाहर मुख निकालकर देखनेलगते थे अमीर को वृक्ष के नीचे सोते हुए देखकर दोनों आपस में कहनेलगे कि बिदित होता है कि यही मनुष्य हमारे बच्चों को खाजाता है और हमको दुःख देता है और आज भी यही खागया नहीं तो बोलते इसको मारडालना उचित है यह एक बच्चे ने सुना और व्याकुल होकर बाहर आकर अपनी भाषा में सब वृत्तान्त सीमुर्ग़ से कहा और उस अजगर के मारेजाने की उसे खबर दी तब तो सीमुर्ग़ अमीर से अतिप्रसन्न हुआ और अमीर के ऊपर जो धूप आगई थी एक परसे धूप की आड़ की और दूसरे से वायु करनेलगा अमीर को जो आराम मिला तो नेत्र खुलगये तो अमीर ने उनके मारने के लिये तीर और कमान लेकर सम्हला तब उसने कहा कि ऐ अमीर! अभी तो आपने मेरे बच्चों का प्राण बचाकर मेरे ऊपर अपना यह सलूक किया और अब आप मुझे मारने की इच्छा करते हैं अमीर ने पूछा कि तू कौन है और तूने मेरा नाम क्योंकर जाना? उसने कहा कि मैंने सुलेमान से सुनाथा कि एक मनुष्य परदे दुनिया से किसी समय में आवेगा वह अजगर को मारकर सीमुर्ग़ के बच्चों की रक्षा करेगा और आदिलकाफ़ उसका नाम होगा और सब देवों का नाश करेगा और जो कोई काफ़ में उससे युद्ध करेगा वही मारा जायगा तब पीछे लोग उसे जुलजुलालकाफ़ कहेंगे और उसकी बहादुरी से आश्चर्य करेंगे अमीर ये बातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ अमीर ने पूछा कि यह कौनसा स्थान है? उसने कहा कि इस स्थान का नाम क़ज़ाक़दर है और यह परदेकाफ़ की सरहद से बाहर है और यहां परियोंकी राजधानी नहीं है अमीर ने कहा कि मुझे तुझसे बड़ा कार्य है इसी कारण मैं तेरे पास ऐसा दुःख उठाकर आयाहूं उसने कहा कि मैं सेवक हूं जो आज्ञा दीजिये वही करूं और आपकी कृपा प्राप्त करूंगा अमीर ने कहा कि रदशतिर देवने शहपाल और आसमानपरी को सेनापतियों समेत लेजाकर क़िले सफ़ेदबूम में क़ैद किया है इस कारण से तू मुझको वहां लेकर पहुँचादे उसने कहा परदेकाफ़ के देव मेरे शत्रु होजायँगे परन्तु मैं आपको अवश्य वहां पहुँचा दूंगा इतना कार्य आपका मैं करूंगा परन्तु आप सात दिनके लिये भोजन और जल मेरी पीठपर रखलीजिये कि जिस समय भूख लगे तो एक घूंट जल और भोजन मेरे मुख में छोड़ दीजियेगा तब अमीर ने जंगल में जाकर सात नीलगाय का शिकार किया और उनकी खाल खींचकर मशक बनाई और उसमें मिष्टजल भरकरके नीलगाय समेत सीमुर्ग़ की पीठपर रखकर सफ़ेदबूम की तरफ़ चला तब सीमुर्ग़ ने

अमीर से कहा कि आप कोई लोहे का शस्त्र अपने पास न रखियेगा नहीं तो मार्ग में चुम्बक पहाड़ मिलता है वह लोहे के कारण हमको खींचलेगा अमीर ने कहा कि फिर मैं इनको क्या करूं ? उसने कहा कि यहीं छोड़चलिये और एक छोटासा शस्त्र जो मोजे में समासके रख लीजिये तब अमीर ने केवल तमंचा सोहराबका रखकर शेष सीमुर्ग़ को सौंप दिया उसने अपने परों में छिपालिया और अमीर को लेकर आकाश की तरफ़ उड़ा अमीर ने ऊपर से जो देखा तो पृथ्वी एक मुँदरी के तुल्य दिखाई पड़ी और सर्वत्र जलही जल दिखाई पड़ता था तब अमीरने सीमुर्ग़ से पूछा कि इस नदी का क्या नाम है ? उसने कहा सात नदियों में यह पहली नदी है और अभी छःशेष हैं और अतिशीघ्रता के साथ उसके तै करने में श्रम करताथा जब आधी नदी में पहुँचा तब उसको क्षुधा लगी अमीर से कहा कि ऐ अमीर ! अतिशीघ्रही मेरे मुख में भोजन छोड़ो मेरा ज़ोर घटा जाता है क्षुधा दबाये आती है तब अमीर ने एक नीलगाय और एक मशक मिष्ट जलकी उसके मुख में छोड़दी उसने खाकर एक दिन में उस नदी को पार किया दूसरे दिन दूसरी नदीपर पहुँचा अमीर ने सीमुर्ग़ से उसमें अँधियारा देखकर पूछा कि इसमें अँधियारा क्यों है ? उसने कहा कि यह नदी खाककी है और जब आधीनदी में पहुँचा तो फिर उसी प्रकार से भोजन मांगा अमीर ने वही एक नीलगाय और एक मशक जलकी उसके मुखमें छोड़दी और जिस समय उस नदी से पार गया उसी प्रकार से खाते हुए तीसरी और चौथी नदी को पार किया जोकि रुधिर और सीमाबके नाम से प्रसिद्ध थी इसी प्रकार से जब चुम्बकनदी पर पहुँचा तो वह सीमुर्ग़ को अपने तरफ़ खींचने लगा तब तो सीमुर्ग़ ने अमीर से कहा कि आप अतिशीघ्र उस तमंचे को जो आपके मोज़े में है फेंक दीजिये उसी के कारण चुम्बक मुझे खींचे जाताहै तब अमीरने लाचार होकर उस तमंचे को फेंकदिया और सीमुर्ग़ उससे पार होकर सातवीं नदी जो अग्निकी थी पहुँचा तब आधीनदी में जाकर अमीर से अन्न जल मांगा अमीरने वही नीलगाय और एक मशक जलकी उसके मुख में छोड़ी परन्तु अग्नि की लपक से हाथको अतिशीघ्रही हटालिया और वह सीमुर्ग़ के मुख में न गया नदी में गिरकर जलगया तत्पश्चात् उसने फिर मांगा तब अमीर ने कहा कि अभी तो मैं तुमको खिलाचुका अब मेरे पास कहां है अब तो सब समाप्त होगये तब उसने कहा कि मेरे पेट में तो नहीं गया और यही समय श्रम करने का है जो न खाऊंगा तो थोड़ेकाल में गिरपड़ूंगा अमीर ने देखा कि जो इसको नहीं कुछ खिलाते तो यह हमको लेकर अभी अग्नि की नदी में गिरपड़ेगा अपना कालिचा निकालकर उस के मुख में छोड़कर उसको क्षुधासे तृप्त किया तब वह उड़कर उस नदी से पृथ्वीपर पहुँचा और उतरकर ईश्वर का धन्यवाद किया और अमीर को अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई परन्तु शस्त्रों के फेंकदेने से दुःखित हुए कि इतने में दाहिने तरफ़ से हज़रत ख़िज़्र ने आकर सलाम करके सब शस्त्र जो सीमुर्ग़ के स्थानपर छोड़ आये थे और

उस तमंचे समेत जो कुम्बक नदी में फेंकदिया लाकर सामने रखदिया तब तो अमीर अतिप्रसन्न होकर हज़रत के पैरोंपर गिरपड़े और शस्त्रों को उठाकर धारण किया तब तो हज़रत उसी समय चलेगये और अमीर ने मैदान की तरफ़ जो देखा तो दो पहाड़ अपूर्वप्रकार के दिखाईदिये अमीर ने सीमुर्ग़ से पूछा कि ये पहाड़ कैसे दिखाई पड़ते हैं उसने कहा कि ये पहाड़ नहीं हैं ये वही दोनों क़िले हैं एक जो प्रातःकाल की तरह सफ़ेद बिदित होता है वह सफ़ेदबूम है और दूसरा जो रात्रि की तरह बिदित होता है वह स्याहबूम है तब अमीर ने सीमुर्ग़से कहा अब तुम जाओ ईश्वर मालिक है तब सीमुर्ग़ने तीन पर देकर कहा कि एक पर तो आप दुनिया में पहुँचके अपने घोड़े में लगाइयेगा और दूसरा अमरू. मक्कार को मेरी तरफ़ से दीजियेगा और तीसरा जो आपको मेरे बुलानेकी आवश्यकता पड़े तो इसको अग्नि में डालदीजियेगा तो मैं आपके पास आकर पहुँचजाऊंगा जो मैं कहताहूँ यही कीजियेगा यह कहकर सीमुर्ग़ तो अपने स्थान की तरफ़ उड़गया और अमीर उन क़िलों की तरफ़ चले थोड़ी दूर जानेपर एक व्याघ्र अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने अक़रब सुलेमानी से उसके दो टुकड़े करदिया और उसकी खाल इस बिचार से खींचकर गले में डालली कि दुनिया में पहुँचकर इसका लबादा बनावेंगे क्योंकि कहीं सुना था कि रुस्तम के गले में व्याघ्र की खाल थी उसको देखकर लोग डरते थे इसी प्रकार से जब अमीर क़िले स्याहबूम के दरवाज़ेपर पहुँचे तो वहां देखा तो न कोई रक्षक दिखाई पड़ता है न और कोई केवल चारसौ देव दरवाज़ेपर बैठे हैं कि कोई नवीन मनुष्य न आने पावे संयोग से उन देवों के सरदार ने अमीर को देखलिया और एकबारगी चिल्ला २ कर कहनेलगा कि बड़ा ग़ज़ब हुआ कि ज़ुलज़ुलालकाफ़ यहां भी पहुँचा हमलोगों का प्राण न छोड़ेगा यह कहकर एक तलवार लेकर अमीर के ऊपर ऐसी मारी कि पृथ्वी हिलगई परन्तु अमीर ने उसको रोंककर एक तलवार ऐसी मारी कि उसके दो भाग होगये देवों ने जब अपने सरदार को कुत्ते की मौतकी तरह मरते देखा तो सब अपना प्राण लेकर भागगये और उससमय रदशातिर शिकार खेलने को गयाथा उसी तरफ़ को सब भागे कि उसको जाकर ख़बर देवें और अमीर दरवाज़े पर खड़े होकर बिचारनेलगा कि यह नहीं बिदित होता कि शहपालशाह और आसमानपरी स्याहबूम में हैं या सफ़ेदबूम में इतने में आकाशवाणी हुई कि शहपालशाह और आसमानपरी सफ़ेदबूम में क़ैद हैं अमीर उस क़िले की तरफ़ चले जब दरवाज़े पर आये तो देखा कि उस क़िले में सौ बुर्ज हैं और बुर्जपर कोई देव तो व्याघ्रका शिर कोई घोड़े का कोई सांप आदिक का शिर किये हुए रक्षा कररहे हैं और दरवाज़े पर एक अजगर है जिसके मुख से ऐसी लौ निकलती है कि जङ्गल का जङ्गल जलजाता है और उसका मुख इतना बड़ा है कि उसी के कारण दरवाज़े का रास्ता बन्द है अमीर व्याकुल हुए कि इस के भीतर क्योंकर आवें इतने में आकाशवाणी हुई कि ऐ हमज़ा! इस जादू का

नाशकर्ता तू नहीं है तेरा एकपोता रुस्तम दूसरा उत्पन्न होगा वही इसका नाश करेगा तब अमीर अतिव्याकुल हुए कि अभी तो मैं खुदही लड़का हूं जब मेरे पुत्र होगा और उसके फिर पुत्र होगा तबतक ये बेचारे इस क़ैदही में पड़ेरहेंगे क्योंकर दुःख सहसकेंगे इतने में फिर आकाशवाणी हुई कि तू क़ैदियों को छोड़ासक्ता है परन्तु जादू का नाश नहीं करसक्ता है इस मन्त्र को पढ़कर अजगर के मुख में चला जा तू पार होजायगा अमीर ने जो उस मन्त्र को पढ़ा तो अजगर दरवाज़े पर से हटगया और अमीर दरवाज़े से होकर क़िले में गये तो वहां देखा कि एकबाग़ है उसी में शहपालशाह सरदारों समेत बैठे रोरहे हैं अमीर को देखकर लज्जित होकर शिर नीचे करलिया अमीर ने सबको क़ैद से छोड़ाकर आराम दिया और शहपाल-शाह से पूछा कि आसमानपरी कहां है ? उसने कहा कि सामने के बुर्ज़ में क़ैद हैं अमीर उसका दरवाज़ा तोड़कर भीतर गये तो देखा कि आसमानपरी नीचे को शिर ऊपर को पैर किये हुए लटकाई है और थोड़ासा प्राण रहगया है और उसकी बेटी अपनी माता के सम्मुख खड़ी रोरही है तब अमीर ने उसके भी क़ैद के बन्द काटदिये और सबको लाकर बादशाह के पास इकट्ठा किया तब तो आसमानपरी अतिलज्जित होकर अमीर के पैरों पर गिरपड़ी और कहनेलगी कि हे अमीर ! अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो अब छःमास व्यतीत होनेपर अवश्य आपको दु-निया को भेजदूंगी अमीर ने कुछ उत्तर न दिया और उसके कहने पर कुछ भरोसा न किया सबको साथ लेकर क़िले से बाहर निकला तो देखा कि रदशातिर कई स-हस्र देव साथ लियेहुए गर्जता चलाआता है कि जिसके डर से पृथ्वी हिलरही है अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि ऐ मनुष्य ! तूने सब क़ाफ़ के बाग़ों का नाश करदिया और यहां भी आकर मेरे क़ैदियों को छोड़ाये जाता है अब तेरा प्राण न बचेगा अब मेरे हाथ से क्योंकर बचकर जासक्ता है यह कहकर एक पत्थर उठाकर अमीर को मारा अमीर ने उसको रोककर ऐसा एक घूंसा मारा कि वह उसी स्थानपर रहगया तब उसके साथ के देवोंने लाश लेजाकर देवसमुन्द कि जिस के सहस्रकर थे दिया अमीर सबको साथ लेकर गुलिस्तान अरम को चलेआये और सब तरह आराम से रहनेलगे और जब छःमहीने व्यतीत होगये तो एक दिन फिर रात्रि को स्वप्न में मेहरनिगार को देखकर चौंकउठे और रोनेलगे आसमानपरी भी रोना सुनकर जागउठी और अमीर से पूछनेलगी कि क्या है कुशल तो है ? अमीर ने कहा कि अब तू मुझको दुनिया में भेजदे उसने कहा कि एक वर्ष और बास कीजिये अब की अवश्य भेजदूंगी अमीर यह सुनकर क्रोधित हुए और उठकर बादशाह के पास आये और सब अपना हाल कहा बादशाह ने उसी समय अमीर को तख़्तपर बैठाकर चार देवों को आज्ञा दी कि अमीर को लेजाकर परदे दुनिया में पहुँचाओ हमारी आज्ञा को पूर्ण करो अब अमीर तख़्तपर सवार होकर दुनिया की तरफ़ चले उसी समय आसमानपरी ने एक परीज़ादे से कहा कि तुम अमीर

के समीप अतिशीघ्रही जाकर देवों से कहआओ कि ख़बरदार अमीर को लेजाकर सैरगाह सुलेमानी में छोड़आओ और जो दुनिया में पहुँचाओगे तो दण्ड पाओगे जब मार्ग में अमीर के पास वह देव पहुँचा तो अमीर ने जाना कि इसको आसमानपरी ने देवों से कुछ कहने के लिये भेजा है तब अमीर भी तख़्त पलटाकर शहपालशाहके पास चलाआया और आसमानपरी की बुराई करनेलगा उस समय आसमानपरी भी वहीं थी बादशाह ने क्रोधित होकर कहा कि तू लज्जित तो नहीं होती और बारबार वही बात कियेजाती है आसमानपरी ने कहा कि आप मेरे बीच में पड़कर दुःख न दीजिये मैं आपके कहने से बसा बसाया घर उजाड़ूं ? अमीर यह सुनकर उठ खड़ेहुए और आसमानपरी को शाप देतेहुए जंगल की तरफ़ चलेगये और बहुत से लोग लिखते हैं कि अमीर ने उसीदिन से आसमानपरी को शाप देकर छोड़दियाथा और बहुतेरे नहीं मानते और लिखनेवाला लिखता है कि अमीर के जानेके पीछे शहपाल भी साधू बनकर पहाड़ में जाकर बैठे थे और आसमानपरी राजगद्दीपर बैठकर राज्यकाज करनेलगी और काफ़ के नगरभर में ढिंढोरा पिटवादियाथा कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचाने की इच्छा करेगा उसको मैं बड़ा दण्ड दूंगी तत्पश्चात् अब्दुलरहमान से पूछा कि देखो तो वह स्त्री जिसपर हमज़ा मोहित है अधिक स्वरूपवान् है उसने बिचार कर बतलाया कि वह स्त्री ऐसी स्वरूपवान् है कि उसकी सहेलियां भी आपसे कहीं स्वरूपवान् हैं और वह आज कल क़िले देवदो में है आसमानपरी ने उस क़िलेकी तसवीर खिंचवाकर कई एक देवों को देकर आज्ञा दी कि इस रूप के क़िले में जाकर जहां मेहरनिगार है उसको उठा लेआओ परीज़ादे आज्ञा पातेही क़िले की तसवीर लेकर दुनिया की तरफ़ रवाना हुए अब जबतक वे मेहरनिगार को आसमानपरी के समीप ले आवें तबतक थोड़ा वृत्तान्त मलिकलन्धौर पुत्र सादान का लिखताहूं विदित हो कि जब मलिकलन्धौर क़ैदसे छूटकर आया तब नाच रङ्ग होनेलगा उसी समय में एक देवने देव सफ़ेद के आने की ख़बर दी लन्धौर ने सभा से उठकर सफ़ेददेवके पास जाकर उसको मारडाला लिखनेवाला लिखता है कि उसी युद्ध में लन्धौर ने ऐसा शब्द किया था कि वह शब्द अमीर के कानतक पहुँचा था और सब पहाड़ आदिक कांप उठे थे और अमीर ने भी उसी समय देवशातिर के युद्ध में शब्द किया था जो लन्धौर के कानों तक पहुँचा था परन्तु दोनों व्याकुल थे लन्धौर कहता था कि यहां अमीर कहां ? और अमीर कहता था कि यहां लन्धौर कहां ? जब लन्धौर सफ़ेद देव को मारचुका तब बादशाह से कहा कि अब मुझे मेरे देशको भिजवादीजिये अब तो आपका वादा पूर्ण हुआ बादशाह ने उसी समय लन्धौर को एक तख़्तपर सवार कराकर आराशिव परीज़ाद समेत दुनिया की तरफ़ भेजदिया और देवों को दुनिया में पहुँचाने की आज्ञा दी बहराम ख़ाक़ान शाहचीन का हाल सुनिये कि संगसारों से विजय पाकर दिन रात्रि इसी बिचार में रहते थे कि लन्धौर को कौन

लेगया यह दाग़ हमलोगों को लगागया उसदिन भी यही बातचीत होरही थी कि बड़े आश्चर्य की बात है कि लन्धौर का अबतक पता न मिला उनको कहां ढूंढ़ें कि इतने में खुसरो हिन्द का तख़्त आकाश से आकर क़िले में उतरा बहराम दौड़कर लिपटगया और सब मनुष्य आकर लन्धौर के पैरोंपर गिरे और क़िले में खुशीका बाजा बजनेलगा और नगारे बादल के समान गर्जने लगे और नाच रङ्ग होनेलगा बहराम ने उसी समय में लन्धौर से कहा कि एक पत्र आकाश से कोई फेंक गया है परन्तु वह किसीसे पढ़ा नहीं जाता तब लन्धौर ने कहा कि लाओ देखें तो जो हमसे पढ़ाजावे तो पढ़ें बहराम ने पत्र मँगवाकर खुसरो को दिया परन्तु उससे भी न पढ़ागया तब आरशिब ने लेकर पढ़ा और कहा कि पत्र मेरी माता ने लिखकर जादू से तुम्हारे पास फेंकदिया था बहराम आरशिब को छाती से लगाकर अति प्रसन्न हुआ और जितने लोग उससमय बैठे थे बहुत प्रसन्न हुए और सब उसकी प्रशंसा करनेलगे और कहनेलगे कि मानों सरंद्वीप आज फिरसे बसाया गया॥

लोप होना ज़हरमिश्रीका क़ैसरक़िले से और पहुँचना आसमानपरी के पास परदेक़ाफ़पर॥

अब थोड़ा सा वृत्तान्त अतिदुःखी मलीन बिरहसंयुक्त मलिका मेहरनिगार हमज़ा की स्त्री का सुनिये कि दिन रात्रि अमीर की जुदाई से रोती पीटती थी और न कुछ खाती न पीती और मैले कुचैले छपरखट पर सोती थी और जब ज़हर-मिश्री या और कोई सहेली मुँह हाथ धोने को कहती थी तब रो २ कर धोती थी और जब कोई शृङ्गार करने को कहे तो उसके बदले में रोती थी और महाबिलाप करती थी सरदारों ने देखा कि ऐसा न हो कि इसी प्रकार से यह पागल होजावे उस के दिल बहलाने का उपाय करनेलगे और यही कहते थे कि ऐ मलिका! बहुत गई थोड़ी रही अब ईश्वर की कृपा से आकर तुम्हारे दुःखको छुड़ाते हैं पोशाक बदल कर भोजन करके चित्त को आनन्दित कीजिये जो आपने प्राण त्याग दिया तौ कौन बड़ी बात की अमीर आकर किसको देखेंगे और कौन अमीर को देखेगा? कृपा करके कोठे पर चलिये ठण्डी २ वायु से चित्त को प्रसन्न कीजिये ईश्वर के लिये हमलोगों को दुःख न दीजिये इस प्रकार से कह सुनकर कोठेपर लेगये और हरि-याली खेतों की दिखलानेलगे और इधर उधर की बातचीत करनेलगे कि मलिका का चित्त प्रसन्न होवे इतने में थोड़ा समय व्यतीत हुआ था कि एक आंधी आई और बादल गर्जनेलगा तत्पश्चात् एक बच्चा आकाश से उतरकर ज़हरमिश्री को जो म-लिका के सामने खड़ी थी उठालेगया कोई तो भागकर सीढ़ियों पर मुख के बल गिरपड़ा और कोई आंख मूंदकर पृथ्वीपर बैठगया सब व्याकुल होगये किसी को किसीकी ख़बर न रही जब सब आंधी पानी बन्द होगया और लोग चैतन्य हुए तो देखा कि ज़हरमिश्री नहीं है तबतो सब औरही दुःखित हुए अब थोड़ासा वृत्तान्त ज़हरमिश्री का सुनिये कि जब उसने देखा कि मैं तख़्तपर बैठीहूं और तख़्त आस-मानपर उड़ाजाता है और सर्वत्र वस्तु मुझको काली दिखाई पड़ती है तब उसने

देवों से पूछा कि तुम कौन हो और कहां मुझको लियेजातेहो ? उन लोगों ने कहा कि आसमानपरी हमज़ा की स्त्रीने हमलोगों को आज्ञा देकर भेजा है कि तुमलोग जाकर मलिकामेहरनिगार नौशेरवां की बेटी को हमारे पास लेआओ सो हमलोग तुमको उसकी आज्ञानुसार लियेजाते हैं तब तो ज़हरमिश्री ने विचारा कि विदित होताहै कि हमज़ा ने परदेकाफ़ में दूसरा ब्याह करलिया है सो उस स्त्रीने मलिका को मारने के लिये मँगवाया है परन्तु ये उसे पहिंचानते न थे मुझीको मेहरनिगार जानकर उठालाये हैं अच्छी बात हुई कि ईश्वर ने उसको बचादिया मैंहीं उस के बदले में मारी जाऊंगी इसी प्रकार से ज़हरमिश्री जब गुलिस्तान में पहुँची तो सुरमा सुलेमानी उसकी आंखों में आसमानपरी ने लगवादिया तब वह सब को देखने लगी जिस समय उसको आसमानपरी के सम्मुख लेगये तब आसमान परी उसके स्वरूपको देखकर व्याकुल होगई और कहनेलगी कि तब क्यों न हमज़ा इसकी जुदाई के दुःखसे व्याकुल हो और फिर ज़हरमिश्री की तरफ़ सम्मुख होकर पूछनेलगी कि मेहरनिगार नौशेरवां की बेटी तूही है ? जो सुन्दरता में प्रसिद्ध है और जवानोंको मोहित करलेती है ज़हरमिश्री ने अदब के साथ सलाम करके कहा कि नहीं मैं तो अब्दुलवज़ीर बादशाह मिश्री की बेटी और मक़बूल वफ़ादार पैकर हमज़ा की स्त्री हूं मैं कब मेहरनिगार की बराबरी करसक्ती हूं और मेरा नाम ज़हरमिश्री है और मुझ ऐसी चारसौ सहेलियां उसके साथमें हैं आसमानपरी ज़हरमिश्री की बातों से अति प्रसन्न हुई और पूछने लगी कि सत्य कहना ज़हरमिश्री तुझे हमज़ा के शिरकी सौगन्द है मैं स्वरूपवान् हूं या मेहरनिगार तेरे समीप दोनों में से कौन अधिक स्वरूपवान् है ज़हरमिश्री ने हाथ बांधकर कहा कि अपराध होता है नहीं तो आपकी सुन्दरता मेहरनिगार की सहेलियों की बराबर भी नहीं है कहां सूर्य कहां एक तारा आसमानपरी उसकी बातों पर अति क्रोधित हुई और जल्लादों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको लेजाकर फांसी दो यह बड़ी बेअदब सभा के योग्य नहीं है संयोग से करीशा जो उन दिनों में सातबर्षकी थी परन्तु सुन्दरता और बुद्धिमानी में प्रसिद्ध थी उस तरफ़ से आनिकली आदमियों का जमाव देख कर हाथ में तमंचा लिये ज़हरमिश्री के पास गई जल्लादों से पूछा कि यह कौन है और कौनसा अपराध किया है ? जो पहरा देते हो उन लोगों ने कहा कि हम कुछ नहीं जानते कि यह कौन है और कौनसा अपराध किया है परन्तु शहपरियों ने आज्ञा दी है करीशाने ज़हरमिश्री से पूछा कि तू कौन है ? उसने सब अपना वृत्तान्त ब्योरेवार सुनाया तब तो वह क्रोधित होकर झुंझुलागई और ज़हरमिश्री को साथ लेकर आसमानपरी के पास आई और उससे क्रोधित होकर पूछनेलगी कि इसने कौनसा अपराध किया है जो परदे दुनिया से इसको मँगवाकर बध कराती है विदित होता है कि जो मलिका मेहरनिगार आती तो उसको भी बध कराती न अमीर से डरती न ईश्वरसे वह भी एक प्रसिद्ध मनुष्य है और तुमसे लाखगुना प्रतिष्ठा और

बल आदिक में बढ़ा है और वह अमीर की प्रथम स्त्री है सब बातों में तुमसे उत्तम होगी क्या करूं ईश्वर से डरती हूं कि तू मेरी माता है नहीं तो एक तमंचा मारकर दो टुकड़े करदेती और कभी किसीसे न डरती आसमानपरी फ़रीशाको क्रोधित देखकर डरगई कुछ न बोली यहांतक कि फ़रीशा ने उसी सायत ज़हरमिश्री को तख़्तपर सवार कराकर उन्हीं देवों को जो लेआयेथे आज्ञा दी कि जहां से लेआये हो वहीं इसको लेजाकर पहुँचाओ मेरी आज्ञा मानो तब वे तख़्तको उठाकर रवाना हुए संयोग से उसी समय में देव समुन्द जो उसके मार्ग में पड़ता था अपने सरदारों समेत बैठाहुआ शराब पीरहा था उसकी दृष्टि तख़्तपर पड़ी तो अपने सिपाहियों से आज्ञा दी कि दौड़कर उस तख़्त को अतिशीघ्र हमारे समीप लेआओ कौन हैं इस को कहां लियेजाते हैं जब तख़्त को उसके समीप लेआये तब ज़हरमिश्री से पूछा कि तू कौन है और कहां जाती है और तेरा इतना बड़ा मक़दूर कि देवों से तख़्त उठवाती है तब उसने सब अपना वृत्तान्त कहा तब देवसमुंद ने परीज़ादों को तो मारडाला और ज़हरमिश्री को आज्ञा दी कि तू हमारे पुत्रका पलना झुलाया कर और उसको किसी प्रकारसे दुःख न होनेपावे लाचार होकर वह पलना झुलानेलगी और अपनी भाग्यपर रोनेलगी अब ख़्वाजे अमरू का हाल सुनिये कि जब शोर गुल होने लगा महल में गया तो विदित हुआ कि एक बच्चा आकाश से आया और ज़हर-मिश्री को उठालेगया क्रोधित होकर मलिका मेहरनिगार के पास गया और कहने लगा कि हज़ार बार मैंने आपको समझाया कि कोई कार्य बे मेरे पूछे न करना परन्तु तुम नहीं मानती हो जो तुमहीं को उठालेजाता तब तो हमारी बारह वर्षकी मेहनत वृथा जाती और लोगों से भी लज्जित होते यह कहकर तीन कोड़े मलिका की पीठमें ऐसे मारे कि वह बेताब होके पृथ्वीपर लोटनेलगी और अमरू से बहुत नाराज़ हुई और अपने चित्त में विचार करनेलगी कि जो हमज़ा से मित्रता न करती तो अमरू मुझे क्यों मारता कि इससे बड़े २ मेरे पिता के यहां पेकर हैं यह बिचार करके उस समय तो कुछ न बोली परन्तु आधीरात्रि को कमन्द लगाकर क़िले से बाहर उतरी और कुछ दूर अपने भाई के ख़ेमेकी तरफ़ गई परन्तु फिर अपने चित्त में बिचारा कि भाइयों के पास जाना उचित नहीं है एक घोड़ा हरमज का सजाहुआ बंधाथा और साईस सोरहा था मरदाना रूप धारण करके मुखपर सेहरा डालकर घोड़ेपर सवार होकर जङ्गल की तरफ़ चली और प्रातःकाल होते पचास कोस निकलगई अमरू का हाल सुनिये कि कोड़े मारकर महल में अपने स्थानपर चलेआये और विचारा कि सबेरे जाकर मलिकासे अपना अपराध क्षमा करवाकर उसे प्रसन्न करलेंगे परन्तु उसी रात्रि को अमीरने स्वप्न में कहा कि ऐ अमरू ! तूने मलिकाको ऐसा दुःख दिया कि तेरे कारण क्रोधित होकर जङ्गलकी तरफ़ चलीगई अमरू यह स्वप्न देखकर चौंक उठा और मलिकाके महलमें गया तो देखा कि पलँग ख़ाली बिछाहै और मलिका उसपर नहीं है तब तो इधर उधर ढूंढ़नेलगा

परन्तु कहीं पता न लगा तब तो अतिव्याकुल होकर क़िलेकी दीवारपर जो गया तो देखा कि एकतरफ़ को कमन्द लगी है तबतो अमरूको विदित हुआ कि मलिका इस तरफ़से उतरकर गई है परन्तु यह विदित न हुआ कि किधरको गई अमरूभी कमन्द से उतरकर नीचे गया और मलिका के पैरोंके चिह्न से हरमज़ के ख़ेमेतक गया और वहां जाकर देखा तो कुछ पता न लगा परन्तु एक सवार हाथ में बागडोर पकड़े सोरहा था तब अमरू ने जाना कि मलिका यहांतक आई और यहां से इसी घोड़े पर सवार होकर कहीं चलीगई तब अमरू ने उस साईस से जगाकर पूछा कि घोड़ा तेरा क्या हुआ तब वह उठकर इधर उधर ढूंढ़ने लगा परन्तु कहीं पता न लगा तब उसी घोड़े के सुम के चिह्न से चला कि इसको कहीं ढूंढ़ना चाहिये मेहरनिगार का वृत्तान्त सुनिये कि वह प्रातःकाल होते पचास कोस चलीगई एकाएक बादशाह एलयासतर सलातपूजक हाथ पर बाज लियेहुए आ निकला मलिका एक वृक्ष की आड़ में होगई परन्तु उसने देखलिया कि एक सवार सेहरा मुँहपर डाले आता है हमको देखकर वृक्ष के आड़ में होगया समीप जाकर पूछा कि ऐ मनुष्य! तू कौन है कहांसे आताहै और इस जङ्गल में किस प्रयोजन के लिये आया है और तेरा नाम क्याहै? मेहरनिगार ने कहा कि मुसाफ़िर हूं भाग्य से यहां भी आगया हूं बादशाह ने कहा कि हमारी नौकरी करेगा उसने कहा कि मुझे नौकरी करने की कुछ आवश्यकता नहीं है बादशाह ने बोली से विदित किया कि यह स्त्री है हाथ बढ़ाकर सेहरा मुख पर से हटाकर देखा तो वह ऐसी स्वरूपवान् स्त्री थी कि जो एकबार सूर्य भी दृष्टिसे देखने की इच्छा करे तो चकचौंधी लगे तब बादशाह ने उसी समय घोड़े पर से उतरकर एक महाफ़े में सवार कराया और अनेकप्रकार से फुसिलातेहुए अपने स्थान में लेजाकर एक अति स्वच्छ और विमल स्थान में उतारा और सब तरह आराम का सामान इकट्ठा करवाकर उसके चित्त को अतिप्रसन्न किया और जिस समय उसके समीप जाकर इच्छा की कि मेहरनिगार के शरीर को छुयें मेहर-निगार ने कहा कि ख़बरदार जो और किसी बात की इच्छा करेगा तो मुझसे बड़ा दुःख पावेगा तब बादशाह लाचार होकर चलाआया और अफ़्सोस करनेलगा कि ऐसी स्वरूपवान् परी हाथ भी लगी सो मेरे हाथसे जाया चाहती है संयोग से उसी दिन ख़्वाजानिहाल सौदागर जो पहले बादशाह नौशेरवां के पास नौकर था और उसने मलिका मेहरनिगार को गोदमें लेकर खिलाया था और उससे बड़ा लाभ हुआ था बादशाह के समीप सौगात लेकर आया उसने बादशाह को दुःखित देख-कर पूछा कि आप दुःखित क्यों हैं? बादशाह ने सब अपना वृत्तान्त कहा कि एक परी मुझे जङ्गल में मिली है परन्तु वह मुझसे राज़ी नहीं होती परन्तु मैं उसके मोह में फँसकर मरताहूं ख़्वाजे निहाल ने कहा कि जो मैं उसे देखूं तो एक मन्त्र पढ़कर आपसे राज़ी करादूं तब बादशाह ने प्रसन्न होकर उसी समय ख़्वाजे को अपने साथ लेजाकर उस स्थान को देखाकर कहा कि इसी स्थान में वह स्त्री है ख़्वाजे

निहालने दरवाज़ेके दरसे देखकर पहिंचान लिया कि मलिका मेहरनिगार है और एकबारगी नाम लेकर पुकारा तब मलिका ने भी पहिंचानकर दरवाज़ा खोलदिया और भीतर आनेकी आज्ञा दी ख़्वाजे भीतर मलिका के पास गया और सर्ववृत्तान्त विदित करके चुपके से मलिका से कहा कि अब आप दुःखित न हूजिये हम किसी युक्ति से आपको निकाल लेचलेंगे कि इस पापी के हाथ से आपका प्राण बचे मलिका को इस प्रकार से समझाकर आप बादशाह के समीप आया और उससे कहा कि आप अपने रक्षकों को आज्ञा देदीजिये कि मुझे रात्रि दिन इस स्त्री के पास जानेसे निषेध न करें आपकी कृपा से आज के तीसरे दिन आपसे राज़ी करादूंगा बादशाह ने अति प्रसन्न होकर ख़्वाजे निहाल को ख़िलअत देकर अतिप्रसन्न किया ख़्वाजे वहांसे आकर बाज़ार में आकर सौदागरों की दुकानोंमें घोड़े तलाश करने लगे पश्चात् दो घोड़े अतिशीघ्र दौड़नेवाले लेकर उस स्थान पर जिसमें मलिका रहती थी दरवाज़े पर लेगया और उसी रात्रि को एकपर मलिका को सवार कराया और एकपर आप सवार होकर नगर से बाहर निकलकर रात्रिभर चलागया प्रातःकाल बादशाह ने ख़्वाजेनिहाल को बुलवाया तो वह न मिला और उसी समय में सिपाहियों ने आकर ख़बर दी कि वह स्त्री जो आप लेआये थे वह आज नहीं दिखाई पड़ती मकान ख़ाली पड़ा है तब तो बादशाह ने बिचारा कि निश्चय करके ख़्वाजेनिहाल उसको लेभागा उसी समय सेना साथ लेकर उसके पीछे रवाना हुआ दोपहर होते मलिका ने गरद गुबार देखकर ख़्वाजे निहाल से कहा कि ऐ ख़्वाजे! बादशाह आ पहुँचा घोड़े को बढ़ा ख़्वाजा तो उसी गरद गुबार को देखता रहगया परन्तु मलिका जङ्गल में जाकर छिपगई कि इतने में बादशाह की सवारी ख़्वाजे निहाल के समीप आपहुँची ख़्वाजे निहाल जिस प्रकार से खड़ा था वैसेही हक्कावक्का होरहा तब बादशाह ने आकर ख़्वाजे को तो मारकर अपना बदला लिया और मलिका को इधर उधर ढूंढ़कर जब न पता लगा तो लाचार होकर पलटगया और मलिका दूसरे दिन तक बहुत दूर चलीगई परन्तु क्षुधा से अतिब्याकुल होगई जाते२ एक साधू की कुटी पर पहुँची तब तो चित्त ठिकाने हुआ उससे एक तरबूज़ मांगा उसने लाकर कई तरबूज़ दिये और जब मलिका ने सब खालिया और चित्त प्रसन्न हुआ तब उसने कहा कि ऐ प्यारी! जो तू मेरे पास रहे तो मैं तुझको अच्छी तरह से रक्खूंगा और जो तू मांगेगी वही दूंगा मेहरनिगार ब्याकुल हुई कि यह पागल क्या बकताहै इसको क्या सूझी है? उससे पूछा कि तेरे और कोई है उसने कहा कि मेरे दश बेटे ग्यारह बेटी और एक स्त्री है तब मेहरनिगारने कहा कि तेरी स्त्री है तो मैं तेरे पास क्योंकर रहसक्ती हूं? तब उसने कहा मैं स्त्री को छोड़दूंगा तब मेहरनिगार ने कहा कि अच्छा तुम जाकर उसे छोड़आओ मैं यहीं बैठीहूं जब वह अपनी स्त्री को छोड़नेके लिये अपने घरको गया इधर मेहरनिगार सरदे के दाम उसकी कुटीपर रख आप घोड़े पर सवार होकर चलीगई जब वह अपनी स्त्री को

छोड़कर आया और उस परीको न पाया तो चिल्ला चिल्लाकर कहनेलगा कि हाय परी २ तू मुझको छोड़कर चलीगई स्त्री उसकी ज़मींदार को लेकर आई कि उसको चलकर समझावे यहां आकर देखा कि वह हाय हाय करके एक स्त्री के लिये रोरहा है सब लोगों ने जाना कि इसपर कोई पिशाच या भूत चढ़ा है उसकी स्त्री और लड़कों से कहा कि इसकी औषध करो नहीं तो यह सिड़ी होजायगा मेहरनिगार जो वहां से चली तो उसको एक जङ्गल में रात्रि हुई उसमें बहुत से व्याघ्र लंगूर बन्दर आदिक थे जोकि मनुष्य को देखतेही चखजाते थे तब मलिका ने घोड़े को तो एक वृक्ष में बांधदिया और आप एक वृक्ष पर चढ़गई प्रातःकाल एक व्याघ्र आया और मेहरनिगार के घोड़े को मारकर उठा लेगया तब मेहरनिगार ने वृक्ष से उतरकर ज़ीन तो वृक्ष में बांधदी और आप पैदल चली और सायङ्काल को एक नगरी में पहुँची उससे बाहर निकलकर एक बड़ा भारी तालाब था उसके समीप एक वृक्ष था मलिका उसी वृक्ष पर चढ़कर रात्रि भर बैठीरही प्रातःकाल को उस नगरी के चौधरी ने अपनी टहलुई को तालाब से जल स्नान करने के लिये लेआने को भेजा तब उसने जलमें मेहरनिगार के स्वरूप की परछाहीं देखकर जाना कि मेरीही परछाहीं है घमण्ड से घड़ा लेकर पलटगई कि मैं ऐसी स्वरूपवान् होकर पानी भरूंगी जब चौधरी ने पूछा कि जल ले आई तब उसने कहा कि वाह साहब ! मैं आपके स्नान करने के लिये ऐसी स्वरूपवान् होकर तालाब से जल लेआऊंगी चौधरी ने फिर उसको धमकाकर भेजा कि अतिशीघ्रही जाकर जल लेआ मुझे स्नान करने के लिये विलम्ब होती है वह फिर तालाब पर गई मेहरनिगार की परछाहीं देखकर फिर लौट आई और पहलेही की तरह फिर कहनेलगी तीसरी बार फिर चौधरी ने धमकाकर भेजा और फिर पलट आई तब मेहरनिगार ने शोचा कि यहां से अब चलदेना उचित है नहीं तो अब की अवश्य कुछ फ़साद यह बरपा करेगी वृक्ष पर से उतरकर एक तरफ़ को राह ली और उसने फिर जाकर वही कहा तब चौधरी ने उसको एक आईना दिया कि इसमें तो अपना स्वरूप देख जब उसने आईने में देखा तो उसे काला स्वरूप दिखाई पड़ा तब चौधरी ने कहा कि इसी स्वरूप पर कहती है कि मैं स्वरूपवान् हूं उसने कहा कि तालाब में तो चलकर देखिये तब वहां से चौधरीजी और दो चार मनुष्य समेत उसके पीछे २ तालाब पर आये तब उसने अपना स्वरूप वैसाही देखा जैसा कि आईने में देखा था बेहयाई से यह कहती गई कि मैं इस प्रकार से स्वरूपवान् होकर ऐसा निकृष्ट कार्य करूंगी तब लोगों ने कहा कि इसको कहीं भूत लगगया है इसकी औषध करनी चाहिये और मेहरनिगार जो वृक्ष से उतर कर चली तो दूसरे दिन एक साधू की कुटी पर जा पहुँची और वह साधू चार सौ जमात का स्वामी था मलिका को देखकर पूछनेलगा कि तू कौन है ? मेहरनिगार ने कहा कि जुलाहे की बेटी हूं मेरे पिता ने वृद्धअवस्था में व्याह किया है सो मेरी

सौतेली माता ने मुझे निकालदिया है वह साधू बड़ा दयावन्त था मेहरनिगार का हाल सुनकर अति दुःखित हुआ और कहा कि मैंने तुझको अपनी बेटी बनाया तू साधुओं को भोजन का भाग लगाकर दिया कर और प्रसन्नता के साथ मेरे स्थान पर बास कर यह कहकर उसको अपने भण्डारे का स्वामी बनाया मेहरनिगार ईश्वर का धन्यबाद करके वहां रहनेलगी अब अमरू का बृत्तान्त सुनिये कि मेहरनिगार के ढूंढ़ने को जो चला तो कई दिनके बाद उस बादशाह के नगर में पहुँचा जो मलिका को जङ्गल से लेगया था वहांभी ढूंढ़ ढांढ़कर उस साधू के खेत में आया तो वहां हाय परी २ जो उसके मुख से सुना तो जाना कि यहां भी मलिका आई थी वहां से उस जङ्गल में पहुँचा जहां घोड़े को व्याघ्र ने मारडाला था और ज़ीन को बृक्ष में बांधकर मलिका चलीआई थी अमरू ने ज़ीन को उठाकर ज़ंबील में रक्खा वहां से चलकर उस चौधरी के नगर में आया और वहां से चलकर साधू की कुटी पर आया फिरते २ पीछे को अपने कार्य को सिद्ध किया दूर से जाकर देखा कि मेहरनिगार साधुओं को छांदा बांट रही है आपभी अमरू उनहीं के साथ जाकर बैठगया जब मेहरनिगार उसको भी छांदा देनेलगी तब अमरू ने रोकर कहा कि मैं साधू नहीं हूं मैं आपका पैकर अमरू हूं और अपने अपराध करने के कारण इतना दुःख उठाचुका देश २ की राख उड़ाता आता हूं कि इस जीने से मरना उत्तम है मलिका ने जो अमरू को देखा तो लिपटकर रोनेलगी साधू ने दौड़कर कहा कि बेटी! ऐसी क्यों रोती हो कुशल तो है उसने कहा कुछ नहीं मेरा पिता यही है तब तो साधू उसे समझाने लगा कि हे मनुष्य! पुत्री को कोई इस प्रकार से रखता है अमरू ने कहा क्या करूं इतना सामान कहां पाऊं कि इसका ब्याह करूं साधू ने पांचसौ रुपया देकर कहा कि अति शीघ्रही जाकर इसका ब्याह करदे कि इससे तू उऋण होजावे अमरू रुपये और मेहरनिगार को वहां से लेकर चला मार्ग में पहुँचकर रुपये को ज़ंबील में रखकर मेहरनिगार को बेहोश करके एक गठरी में बांध कर अपने शिरपर रखकर चला कि इसको क़िले में पहुँचाकर आराम से बैठें परन्तु शाहज़ादों ने भी सिपाहियों से ख़बर पाई थी कि रात्रि को मेहरनिगार क़िले से निकलकर हमारे ख़ेमेतक आकर मरदाना भेष धारण करके चौकी के घोड़े को ले सवार होकर चलीगई परन्तु यह नहीं बिदित होता कि किधर गई और अमरू भी उसके ढूंढ़ने के लिये गया है तब तो सब लोगों ने सलाह की कि इस पहाड़ के रास्ते के सिवा और कोई मार्ग इस दिशा को आनेके लिये नहीं है इसलिये चारसौ सेना उस पहाड़ में जाकर छिपरहें और बराबर से डाक दूतों की बैठादीजावे कि जिस समय अमरू मलिका को लेकर आवे मलिका को छीनलेवें और अमरू को मारडालें और जो जीता पकड़ ले आवे तो अतिही उत्तम होवे और हमलोगों को उसी समय ख़बर देवे तो हम भी सेना लेकर पहुँचें और सहायता देवें कि उनको खटका न होवे और जिन लोगों को साथ लेजानेके लिये सुना था उनको आज्ञा दी कि सदैव कमर

बांधे तैयार रहैं और घोड़ों की बदली हुआ करे तथाच अमरू जब गठरी बांधेहुए पहाड़के समीप पहुँचा तो उसी पहाड़से चारसौ सिपाहियों ने निकलकर चारों तरफ़ से घेरलिया और अमरू को दुःख देनेलगे तब अमरू ने भी तलवार निकाली कि इतने में शाहज़ादों ने जो अमरू के घेरे जानेकी ख़बर सुनी तो उसी समय सेनासमेत दौड़ धाये अमरू ने जब शाहज़ादों को सेनासमेत आते देखा तब तो व्याकुल हुआ कि एक तो मैं अकेला दूसरे बोझ लिये हूं इससे लाचार हूं यह कहकर ईश्वर २ करने लगा कि इतनेमें नक़ाबदार चालीस सहस्र सेनासमेत आपहुँचा और जहांदार और जहांगीरकाबुली और ज़ोपीन को मारकर हरमज़ व जाफ़रांमज़ की सेनाको व्याकुल करदिया और बहुत से मारेगये और बहुत से भागगये तब शाहज़ादे जहांदार और जहांगीर की लोथको लेकर रोते पीटते अपने स्थानपर चलेगये और नक़ाबदार अमरू को क़िलेतक पहुँचाकर अपने स्थान को जिधर से आया था उधरही चला गया अमरू क़िले में जाकर मलिका को महल में करके अपना अपराध क्षमा करवा कर आराम से बैठा अब इनका वृत्तान्त छोड़कर अमीर का हाल सुनाते हैं कि जब अमीर गुलिस्तान से निकले तो चालीस दिनतक बिक्षिप्त की भांति जङ्गल २ फिरा किये इकतालीसवें दिन सावधान होकर एक क़िले के निकट पहुँचे लेकिन क़िले का दरवाज़ा बन्द था और उसके चारों ओर देव घेरेहुए खड़े थे अमीर ने जाकर ऐसे ज़ोरसे शब्द किया कि क़िला हिलनेलगा और सुननेवाले बधिर होगये और जो सम्मुख खड़े थे भागगये और देवोंके सेनापति ने अमीर को देखकर पहिंचाना और सम्मुख आके कहनेलगा कि हे बलबुद्धिनिधान ! आप परदेकाफ़ के बाग़ों को उजाड़कर और देवों का नाश करके यहांभी आपहुँचे मैं तुमको अच्छे प्रकार जानताहूं परन्तु आज तुम मेरे वश में आये हो अब जीते न जाने पाओगे यह कहकर एक खड्ग अमीर के शिरपर मारा पर अमीर ने उसको रोककर एक तलवार ऐसी मारी कि उस देव का एक हाथ व शिर अर्द्धकटि तक कटिके पृथ्वीपर गिरपड़ा और शेष सेना उसको देख डरकर भागगई और उस क़िले में गावपात्रों की जाति के लोग रहते थे जिनके बादशाह का नाम तुलू था क़िले से बाहर निकलकर अमीर को बड़ी प्रतिष्ठा से सम्मुख होकर अपने स्थान में लेगया और बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की अमीर ने मेहमानदारी के पश्चात् उससे पूछा कि तू मुझको मेरे स्थानपर पहुँचासक्ता है उसने कहा कि पहुँचा क्यों नहीं सक्ता परन्तु आसमानपरी ने यह ढिंढोरा फिरवाया है कि जो कोई अमीर को दुनिया में पहुँचावेगा उसको मैं बड़ा दण्ड दूंगी लेकिन मेरी कन्या के साथ आप अपना व्याह करें तो यह भी स्वीकार है उसने कहा कि मुझे यहां के लोगों का कुछ बिश्वास नहीं है इसवास्ते मैं व्याह नहीं करूंगा तब बादशाह ने कहा अगर व्याह नहीं करते तो मेरे शत्रुरुख़पक्षी को मारकर मुझे आनन्दित कीजिये इन दोनों बातों में से एक पर भी आप आरूढ़ हों तो मैं आपको पृथ्वी पर पहुँचाकर आसमानपरी की बदनामी अपने ऊपर

लसक्ता हूं अमीर ने उत्तर दिया कि दूसरी बात मुझे मंजूर है चलके उसका स्थान मुझे दिखा तुलू ने अपने आदमियों को अमीर के साथ करके आज्ञा दी कि इनके साथ जाकर दूरसे रुख़ का स्थान दिखाओ अमीर ने जाकर एक सफ़ेद कूचा देखकर पूछा कि यह कूचा कैसा है ? उन लोगों ने कहा कि यह उसी पक्षी का अण्डा है जो तुलू बादशाह का शत्रु है और उसीके डरसे बादशाह व्याकुल रहता है बिदित हुआ कि इस समय वह कहीं चरने को गया है तब अमीर उसके अण्डे के समीप जाकर बैठरहे कि जब आवे तो पकड़ने की कोई युक्ति करें जब वह पक्षी आकर अपने अण्डेपर बैठा और उसके ऊपर पर फैला लिया तब अमीर ने अपने चित्त में बिचार किया कि यह बड़ा बलवान् है इसका बश में आना दुर्लभ है और निश्चय है कि यह दुनिया में भी जाता होगा इससे यही अच्छा है कि इसके पैर में लिपटकर ज़ोर से शब्द करें तब यह व्याकुल होकर दुनिया की तरफ़ उड़कर जावेगा इसीके साथ हमभी दुनिया में पहुँच जावेंगे यह बिचारकर अमीर उसके पैर में लिपटगये और वह बहुत ज़ोर से उड़ा परन्तु जब अख़ज़र समुद्र के मध्यमें पहुँचा तो अमीर के हाथ में इस ज़ोर से चोंच मारी कि अमीर का हाथ उसकी टांग से छूटगया और दुनिया के पहुँचने की इच्छा रहगई और अमीर का नीचे पहुँचना था कि ख़्वाजे अख़ज़र और ख़्वाजे अलियास ने ईश्वर की आज्ञा से हाथों हाथ लेकर पृथ्वी पर लेटादिया कि आराम पावे किसी प्रकार से दुःख न उठावे परन्तु अमीर उसके दुःख से बेहोश होगये अब थोड़ा सा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि एक दिन उसने अब्दुलरहमान से पूछा कि देखो तो अमीर दुनिया में पहुँचगये या हमारे देश में हैं अगर दुनिया में पहुँचे तो किस प्रकार से अब्दुलरह-मान ने रमल से बिचारकर कहा अमीर गावपावों के क़िले तक गया था तो देखा कि तुलूबादशाह को देवों ने चारों तरफ़ से घेरलिया था अमीर ने सबको मारकर हटादिया तब बादशाहतुलूने क़िले से बाहर निकलकर अमीर की बड़ी प्रशंसा की और हाथ पकड़कर अपने क़िले में लेजाकर कई दिनतक मेहमानदारी की तत्-पश्चात् एक दिन अमीर ने कहा कि तू मुझको दुनिया में पहुँचासक्ता है तब उसने आपकी आज्ञानुसार कर कहा कि मैं आसमानपरी की आज्ञा के बिरुद्ध नहीं करसक्ता हूं परन्तु जो आप मेरी बेटी के साथ ब्याह करें लेकिन अमीर ने स्वीकार न किया तब उसने फिर कहा कि जो आप मेरी बेटी के साथ ब्याह करना स्वीकार नहीं करते तो मेरा एक शत्रु रुख़नाम पक्षी है उसीको मारडालिये तो मैं आपको दुनिया में पहुँचादूंगा अमीरने दूसरी बात स्वीकार की और कहा कि तुम हमको उसका स्थान चलकर दिखलादेओ तथाच उसने अमीर को उसके स्थानतक पहुँचादिया परन्तु अमीर ने वहां जाकर बिचारा कि यह दुनिया की तरफ़ भी अवश्य जाता होगा इस से इसीके पैर को पकड़कर दुनिया की तरफ़ उड़कर चलेजावें जब वह आया तो अमीर ने उसका पैर पकड़कर ऐसे ज़ोर से शब्द किया कि वह व्याकुल होकर उड़ा

और जब समुद्र अखज़र में पहुँचा तो ऐसे ज़ोर से अमीर के हाथ में चोंच मारी कि उसका पैर अमीर के हाथसे छूटगया और अमीर समुद्र में गिरपड़े यह सुनकर आसमानपरी बहुत रोई और उसी समय करीशहको आज्ञा दी कि तू सेना लेकर गावपावों को जाकर मारडाल और तुलू बादशाह को पकड़ला और आप अखज़र समुद्र की तरफ़ चली परन्तु हज़रत अखज़र और अलियासके सामने लज्जित होकर अमीर के समीप गई जब अमीर सावधान हुए तो हज़रत अखज़र से आसमानपरी का बड़ा गिल्ला किया तब उन्होंने कहा कि अमीर बहुत गई थोड़ी रही अब न घबराइये अभी आसमानपरी आई थी परन्तु हमलोगों को देखकर लज्जित होकर पलट गई तब अमीर ने कहा कि आपलोग मुझको कृपा करके क़िले गावपाव में पहुँचादेओ उन्होंने अमीर की आज्ञानुसार वैसाही किया जब अमीर वहां गये तो देखा कि सब नगर वीरान पड़ा है एक पक्षी भी नहीं दिखाईपड़ता तब अमीर ने हज़रत से पूछा कि हज़रत! इस क़िले के सब मनुष्य कहां गये जो दिखाई नहीं पड़ते इसके देखने से तो चित्त व्याकुल होता है ख़्वाजे ख़िजर ने कहा कि यह सब दुःख जो तुम पर पड़ा है यह सब अब्दुलरहमान ने आसमानपरी से कहा है सो उसी ने करीशहको भेजकर इस नगर को फुंकवादिया और जितने मनुष्य मिले सबको ढूंढ़कर मरवा डाला है यह कहकर हज़रत ख़िजर तो वहीं से अन्तर्धान होगये और अमीर तीन दिनतक अकेले उस नगर में रहकर चौथे दिन एक जङ्गल की तरफ़ चले और सात दिन तक बराबर चलेगये आठवें दिन एक नगर के क़िले में पहुँचे समीप जाकर देखा तो विदित हुआ कि मदायन का क़िला है और उसी प्रकार से सब स्थान बने हुए हैं परन्तु मनुष्य कोई नहीं दिखाईदेता तब तो बड़े आश्चर्यमें हुए कि मनुष्य यहां से कहां चलेगये वहां से निकलकर मेहरनिगार के स्थानपर गये तो अपने हाथ के दोहे तक लिखेहुए दीवारोंपर देखे परन्तु कोई मनुष्य न दिखाई पड़ा वहां से चलकर जब बाग़ में आया तो देखा कि एक देव बड़ा भारी खड़ा है अमीर को देख हँसकर कहनेलगा कि ओ मनुष्य! मुझको इस क़िले में मनुष्यों के बसाने की इच्छा है और रात्रि दिन इसी बिचार में रहताहूं कि इस क़िले को मदायन एक क़िला जो दुनिया में है उसी तरह से बनवाया है और मनुष्यों से आबाद करूंगा और दो मनुष्य मैं दुनिया से लायाहूं परन्तु तू आपही आया इस कारण तुझको इस क़िले का बादशाह करूंगा और सब देश तुझको दूंगा अमीर ने पूछा कि यह कौन देश है उसने कहा कि काफ़ तब अमीर ने कहा कि तू मुझको भी जानता है कि मेरा नाम क्या है? उसने कहा कि मैंने केवल आजही तुझको देखा है किस तरह से पहँचानसक्ता हूं अमीर ने कहा कि ज़ुलज़ुलालकाफ़ मेराही नाम है और मेरा बल जगत् में प्रसिद्ध है तब उसने पूछा कि अफ़रेत और उसके माता पिता को तूही ने मारा है अमीर ने कहा कि अफ़रेत क्या सब देवों का नाश किया है तो उसने कहा कि तो तू इस क़िले का भी नाश करेगा इससे मैं तुझको मारकर काफ़

के देवों का बदला लेताहूं यह कहकर एक पत्थर लेकर अमीर के ऊपर देमारा तब अमीर ने उसको रोंककर एक हाथ ऐसा मारा कि वह समाप्त होगया वहां से चल कर एक दालान में गया तो वहां देखा कि दो लड़के अति स्वरूपवान् बैठे हैं अमीर ने पूछा कि तुम कौन हो उन्होंने कहा कि हम एक सौदागर के पुत्र हैं पिता हमारा मरगया है यह देव जिसका यह स्थान है हमको उठालेआया है और इस दुःख में डालदिया है अब आप बतलाइये कि आप कौन हैं ? अमीर ने कहा कि मेरा नाम हमज़ा है परन्तु लोग ज़ुलज़ुलालकाफ़कोचक सुलेमान कहते हैं और बलवीरता में प्रसिद्ध हूं दुनिया से आकर मैंने सब परदेकाफ़ के देवों का नाश करदिया है और इस देव को जो तुमको उठालाया है अभी मारकर आते हैं अब तुमलोग निःसंदेह रहो तुमको हम दुनिया में पहुँचा देवेंगे इतना तुम्हारा भी कार्य करेंगे तब तो वे लड़के अति प्रसन्न होकर अमीर के पैरों पर गिरपड़े अमीर ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? एकने कहा कि मेरा नाम ख़्वाजे आसोच है दूसरे ने कहा कि मेरा नाम ख़्वाजे बहलोल है अमीर ने कहा कि ईश्वर की कृपा से दुनिया में पहुँचकर एकको वज़ीर बनाऊंगा दूसरे को बख़्शी करूंगा उन्होंने कहा कि जब दुनिया में पहुँच जावेंगे तब वज़ीर और बख़्शी कहलावेंगे पहले तो हमलोगों का दुनिया में पहुँचना दुर्लभ है इसी दुःख में मरजावेंगे अमीर ने उनको समझाकर कहा कि ईश्वर की कृपा से अतिशीघ्रही तुमको लेकर दुनिया में चलेंगे इस दुःख से छोड़ावेंगे यह कहकर उनको साथ लेकर चला और क़िले से बाहर निकल एक वृक्ष के नीचे बैठकर उन लड़कों को भी भोजन दिया और आपभी खाया तब तो वे लड़के अतिप्रसन्न हुए और दो घड़ीतक बैठेरहे कि इतने में एक देव तलवार हाथ में लिये हुए अमीर के सम्मुख आकर कहनेलगा कि ऐ मनुष्य ! तू बड़ा दुष्ट है कि मेरे रक्षक को मारकर इन दोनों लड़कों को लेकर चलाजाता है और मुझको न डरा तू मेरा नाम नहीं जानता कि मुमारदेव है मुझसे अधिक बलवान् देव काफ़ में नहीं है अमीर ने पूछा कि यह क़िला मदायन के तुल्य तूने बनवाया है उसने कहा यह क्या जितने स्थान हज़रत सुलेमान के परदेकाफ़ में है वह सब मेरेही हाथ के बनवाये हुए हैं और ये कारख़ाने सब मैंने बनाये हैं अब तू बतला कि तेरा क्या नाम है और यहां क्यों आया ? अमीर ने कहा कि आसमानपरी जो परीज़ादों के बादशाह की बेटी है उसका मैं पति हूं और ज़ुलज़ुलालकोचक सुलेमान मेरा नाम है और मेरी प्रबलता और बहादुरी तुम्हारे जगत् में प्रसिद्ध है तब उसने कहा कि काफ़ के बाग़ों का आपही ने नाश किया है परन्तु आपकी मृत्यु हमारे हाथसे थी वही आपको खींच ले आई है यह कहकर एक तलवार अमीर के शिरपर मारी अमीर ने रोककर एक हाथ अक़रब सुलेमानी का ऐसा मारा कि उसके दो भाग होगये लड़कों ने जो अमीर की बहादुरी देखी तो प्रसन्न होकर कहनेलगे कि वाह साहब ! आप तो बड़े बलवान् हैं अब हमलोग आपहीके साथ रहेंगे जहां चलोगे वहीं चलेंगे और आपके

की आज्ञा में रहेंगे विदित होता है कि आप अपने नामों के प्रताप से ऐसे २ देवों को मारसक्के हैं नहीं तो मनुष्य को इतनी शक्ति कहां होसक्ती है कि देवों से जीतसके हम अपना भी यही नाम रक्खेंगे इसी प्रकार से बातें हँसने की करतेहुए लड़कों समेत चले वे लड़के भी अमीर से अतिप्रसन्न हुए तब अमीर ने उस व्याघ्र की खाल जिसको क़िले स्याहबूम में मारा था दो भाग करके दोनों को देकर एक का जहांदार क़लन्दर दूसरे का जहांगीर क़लन्दर नाम रखकर दोनों की प्रतिष्ठा समान रक्खी जब अर्ध भूगोल पर पहुँचे तो अमीर व्याघ्रछाला बिछाकर लेट गये और ठण्डी २ वायु में निद्रा आगई थोड़ी समय में सोगये तब वे लड़के एक नदीपर जो उसी वृक्ष के समीप थी जाकर स्नान करने और खेलनेलगे अचानक एक देव जङ्गल से निकला तो उन लड़कों ने कहा कि वह मन्त्र याद है चलो इस देव को मारें नदी से निकलकर ललकारकर कहा कि ओ देव ! कहां आता है अभी तेरा नाश करदेताहूं तू जीता न जानेपावेगा हम ईश्वर के सेवक हैं तुमलोगों को अच्छीतरह से जानते हैं यह कहतेहुए उसकी तरफ़ चले और जब देखा कि यह देव कुछ हमारी बातों को सुनकर डरता नहीं और बराबर चलाआता है तब तो डरगये और दौड़कर अमीर को जगादिया और सब हाल कहा अमीर ने देखा कि एक बड़ा भारी देव चलाआता है जब अमीर के समीप आया तब अमीर ने ईश्वर का नाम लेकर उसको देमारा और छातीपर चढ़कर एक खंजर मारकर दो टुकड़े करदिये और उसको उठाकर फेंकदिया और लड़कों से कहा कि ख़बरदार फिर कभी ऐसा साहस न करना नहीं तो वृथा तुम्हारा प्राण जायगा इन देवों के हाथ से किसी प्रकार से न बचोगे यह कहकर सब दिशाको चले पांचवें दिन नदी के तीर एक नाव माल से पूर्ण देखकर उसके समीप जाकर मल्लाहोंसे पूछा कि यह नाव किसकी है और कहां जायगी? उन्होंने कहा कि यह नाव समीद सौदागर की है दुनिया की तरफ़ जाती है अमीर ने कहा कि हम तीन मनुष्य भी दुनिया को चलेंगे नाव पर सवार करालो जो किराया मांगो वह हम देवें उनलोगोंने कहा कि आप लोगों को चढ़ाकर दुनिया में पहुँचाना यह मेरे अधीन नहीं हमारा स्वामी बैठा है उससे जाकर यह बातचीत कीजिये वह आपलोगों को नावपर सवार करालेवेगा तब अमीर ने आकर ख़्वाजेसमीद से वही बातें कहीं ख़्वाजे ने कहा कि किराया क्या है? आप मेरी बेटी के साथ ब्याह करलो हम आपको दुनिया में पहुँचादेवें और किसी प्रकार से दुःख आपको न होनेपावेगा अमीर ने कानोंपर हाथ रखकर कहा कि यह मुझसे न होगा तबतो सौदागर उसकी बातें सुन प्रसन्न हुआ और अमीर भी उठकर चलेआये परन्तु उन दोनों लड़कों ने सौदागरसे कहा कि जो तुम हमलोगों का भी ब्याह करदो तो हम अमीर का ब्याह तुम्हारी बेटी के साथ करवादें सौदागर ने कहा कि मुझे यह भी स्वीकार है तब लड़कों ने आकर अमीर से कहा कि आप ब्याह क्यों नहीं करते कि एक स्त्री भी पाते हो और सेंत में दुनिया

में पहुँचते हो वहां पहुँचकर कैसे २ मज़े पाओगे अमीर ने कहा कि हम ब्याह में करेंगे उन लड़कों ने कहा कि आपको ब्याह करना पड़ेगा अमीर ने कहा क्या तुम्हारी ज़ोरावरी से ब्याह करनापड़ेगा अमीर उनकी बातें सुनकर हँसनेलगे और कहा कि अच्छा जो तुमलोगों को दुःख न होवे तबतो वे लड़के अतिप्रसन्नता के साथ उस सौदागर के समीप दौड़े गये और उससे कहा कि आप सब सामान ब्याह का इकट्ठा कीजिये अमीर को आपकी बेटी के साथ ब्याह करना स्वीकार है तो सौदागर ने उसी समय सब सामान करके अमीर का ब्याह अपनी बेटी के साथ और उन दोनों लड़कों का ब्याह एक दूसरे की लड़कियों के साथ करदिया तीनों मनुष्य अपनी २ स्त्री के साथ रात्रिको सोये प्रातःकाल उठकर देखा तो आसमान-परी अमीर के बग़ल में सोरही है और वह सौदागर जो था वह अब्दुलरहमान है अमीर इसको देखकर बड़े आश्चर्य में हुए और पहले एक बेर अमीर ने आसमान-परी को तलाक़ देकर छोड़दिया था इस कारण अब्दुलरहमान ने फिरसे आसमान-परी का ब्याह अमीर के साथ करादिया तब आसमानपरी अमीर के पैरोंपर गिरकर रोनेलगी कि मेरा अपराध क्षमा करो और अब्दुलरहमान भी अमीर के पैरोंपर गिर पड़ा और कहनेलगा कि अबतक जो अपराध हुआ वह क्षमा कीजिये अब जो अप-राध हो तो दण्ड दीजियेगा और आसमानपरी कहनेलगी कि अब आपको अवश्य दुनिया को भेजदूंगी इसीप्रकार से प्रार्थना करके अमीर को लड़कों समेत गुलि-स्तानअरम में फिर लौटालेआये और छः महीनेतक आसमानपरी के साथ सुख उठाया तत्पश्चात् एक दिन अमीर ने आसमानपरी से कहा कि अब मुझको तू दु-निया में भेजदे यहां बड़ा दुःख होता है वहां जाकर अपने लड़के बालों को देखकर चित्त को प्रसन्न करूं आसमानपरी ने कहा कि ईश्वर की कृपा से कल प्रातःकाल आपको रुख़सत करूंगी और यह तो बतलाइये कि फिर कभी यहां आकर अपना स्वरूप मुझको दिखलाओगे या नहीं अमीर ने कहा कि हे मलिकाकाफ़! जिस प्र-कार से यहां से मेहरनिगार के देखने की इच्छा होती है उसी प्रकार से वहां से तुम्हारे देखने की इच्छा होगी आसमानपरी अमीर की बातोंसे अतिप्रसन्न हुई और प्रातःकाल तख़्तपर बैठाकर उन्हीं चारों देवों को जो सदैव अमीर को लेजाया करते थे बुलाकर पारितोषिक देकर आज्ञा दी कि अमीर को लेजाकर दुनिया में पहुँचा आओ और इनको किसी प्रकार से दुःख न होने पावे यह आज्ञा देकर सब उत्तम २ वस्तु तख़्त पर रखवाकर अमीर ने इच्छा की कि तख़्त पर सवार होकर चलें कि इतने में चारसौ देव और जिन जो शहपालशाह के पाले थे रोते पीटते आकाश से आकर उतरे आसमानपरी यह हाल देखकर व्याकुल होगई और पूछनेलगी कि कुशल तो है उन देवों ने कहा कि शहपालशाह का स्वर्गबास होगया हमलोग आप के पास चलेआये यह सुनकर आसमानपरी तख़्त परसे नीचे गिरपड़ी और सब काफ़के बासी स्याहपोश होगये और शोर गुल होनेलगा रोते २ सब बेहोश

होगये आसमानपरी ने हाथ जोड़कर अमीर से कहा कि जिसप्रकार से आप सत्रह वर्ष यहां रहे उसी तरह से चालीस दिन और रहिये जब मैं शहपालकी क्रियाकर्म से छुट्टी पाऊंगी तो आपको चालीस दिन के पश्चात् आकर बिदा करूंगी अमीर ने कहा कि अच्छा तुम जाओ मैं यहां रहूंगा जो तुम कहती हो वही करूंगा आसमान-परीने कहा कि ऐसा न हो कि तुम दुःखित होकर कहीं चलेजाओ और मुझको फिर दुःख उठानापड़े सलासलपरी को आपके पास छोड़ेजाती हूं जो चित्त न लगे तो इससे कुंजियां लेकर सुलेमान के अजायबख़ाने में जाकर चित्त बहलाना यह कहकर शहपालशाह की लोथ लेकर मेहरिस्ताननज़री की तरफ़ रवाना हुई वहां पहुँचकर सब छोटे बड़े जाकर इकट्ठा हुए और चालीस दिनतक मातमपुरसी करके काले वस्त्र पहिनेरहे अमीर का हाल सुनिये कि दो तीन दिन तो रहे चौथे दिन घबराकर बाहर जाने की इच्छा की तब सलासलपरी ने अमीर से कहा कि जबतक आसमान-परी न आवे तबतक आप अजायबख़ाने सुलेमानी में जाकर दिल बहलाइये यह कहकर एक कुंजी अमीरको दी और कहा कि आप अजायबख़ाने सुलेमानी में जाकर सैर कीजिये अमीर ताला खोलकर अन्दर गये तो अन्दर जातेही दरवाज़ा अँधियारे से बन्द होगया एक सायत के पश्चात् अँधियारा दूर होगया तो एक बड़ा भारी मैदान दिखाई पड़ा तब उस मैदान की तरफ़ जो गया तो एक तख़्त जड़ाऊ दिखाई पड़ा और उसपर एक गुलदस्ता आधा लाल और आधा सुर्ख़ रक्खा था अमीर ने उठाकर जो सूंघा तो बेहोश होगया और तख़्तपर गिरपड़ा स्वप्न में देखा कि एक बड़ाभारी क़िला है और उसमें बड़े २ स्थान बने हैं क़िले में जो गये तो देखा कि एक बन अतिउत्तम है और उसमें एक स्त्री युवा अतिस्वरूपवान् है लिबास पहिनेहुए तख़्तपर बैठी है अमीर उसको देखकर अति मोहित होगये तब उस ने चारसौ परियों को नाचने गाने की आज्ञा देकर हरएक प्रकार से अमीर के दिल को प्रसन्न किया इतने में उसके पिता की आमद हुई तब उसने अमीर से कहा कि अब मैं कहां जाकर छिपूं अमीर ने कहा कि क्यों डरती है जिस प्रकार से बैठी है उसी प्रकार से बैठीरह पिता तेरा आताहै तो आनेदे कुछ संदेह न कर इतने में पिता उसका आया और अपनी बेटी को अमीर के पास बैठेहुए देखकर अमीर के क़दमों पर गिरकर सलाम किया अमीर ने उसको छाती से लगाकर पूछा कि आपने मुझको क्योंकर पहिंचाना है उसने कहा कि मैंने बृद्धों से सुना था कि जल-जलालकाफ़ किसी समय में यहां आकर सुलेमानी अजायबख़ाने की सैर करेगा और बहुतसे देवों का नाश करेगा और मनुष्य को कहां शक्ति है कि यहां आवे और देवों का नाश करे अमीर उससे अतिप्रसन्न हुए और उसकी बेटी के साथ अपना ब्याह किया और सात वर्ष तक अमीर वहां रहे इसी में दो पुत्र भी हुए एक दिन अमीर अपनी स्त्री समेत उस नहर के तीरपर बैठे ठंढी २ हवा ले रहेथे कि उसने अमीर से कहा कि हे अमीर! इसमें मेरी हबेल गिरी है तुम जाकर निकाल

लेआओ तो बड़ी कृपा करो अमीर उसमें डुब्बी मारकर जो निकले तो वही कोठरी है और सलासलपरी सामने खड़ी है अमीर ने व्याकुल होकर कहा कि मैं फिर उसी कोठरी में जाऊंगा वहां मेरे दो पुत्र हैं उन्हीं में मेरा प्राण लगा है और सात वर्षतक वहां रहा न नहर में डुब्बी मारता न यहां आता सलासलपरी ने कहा कि किसके लड़के किसकी लड़कियां वह सुलेमानी अजायबात है और केवल एक पहर आपको गये हुआ चलिये सायंकाल हुआ अब भोजन कीजिये वह सब जादू थी उसमें ऐसी २ बातें दिखाई पड़ती हैं उन सबको अपने चित्तसे दूर करदीजिये कल दूसरी कोठरी में जाकर देखिये इस प्रकार से अमीर को समझाकर महलसराय में लेआई और भोजन कराकर चित्त को प्रसन्न किया प्रातःकाल उठकर अमीर अपने नित्यनियम से छुट्टी पाकर एक दूसरी कोठरी में गये थोड़ी दूर जाकर मैदान में एक तख़्त पड़ाहुआ देखा और उसपर एक मूर्ति रक्खी हुई थी उसको उठाकर देखनेलगे कि इतने में बेहोश होकर पृथ्वी पर गिरपड़े सुध बुध सब जाती रही उसी बेहोशी में देखा कि एक बाग़ है और उसमें बहुत सी स्त्रियां जमा हैं और वही स्त्री जिसकी तसवीर देखकर बेहोश होगये थे नाच रही है और स्त्रियां गा बजारही हैं और बहुतसी स्त्रियां एक तरफ़ जुदा खड़ी हैं अमीर को देखकर बरछी लेले दौड़ीं और अमीर भी अकरबसुलेमानी लेकर दौड़े तब वे सब व्याकुल होकर भागीं इतने में अमीर के नेत्र खुल गये तो न कहीं स्त्रियां न नाच न राग न वह बाग़ है सलासलपरी केवल सामने खड़ीहै अमीर उसे देखकर बड़े आश्चर्य में हुए और महलसराय की तरफ़ देखने लगे कि इतने में सलासलपरी भी उस कोठरी को बन्द करके सामने आकर खड़ीहुई अमीर ने भोजन मँगवाकर खाया और रात्रि को आराम से सोरहे तीसरे दिन तीसरी कोठरी की सैर को गये तो थोड़ी दूर जाकर राह भूलकर एक रेगिस्तान में जापड़े और सूर्य की गरमी से व्याकुल होगये और सात दिन तक उसी में हैरान रहे आठवें दिन नई तरह का एक देव दिखाईपड़ा जिसने अमीर को उड़ाकर कहसाके बराबर लेजाकर पृथ्वी पर छोड़दिया इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि न कहीं रेगिस्तान है न देव है वही स्थान और सलासलपरी सामने खड़ी है तब अमीर ने सलासलपरी से सब हाल कहा तब उसने कहा कि इन कोठरियों में इसी प्रकार की अपूर्व वस्तु विदित होती है कि मनुष्य देखकर व्याकुल होजाताहै परन्तु किसी प्रकार से दुःख नहीं पाता इसी प्रकार से अमीर ने उन्तालीस दिन में उन्तालीस कोठरियों की सैर करके अपूर्व २ वस्तु देखकर चित्त को प्रसन्न किया चालीसवें दिन अमीर ने सलासलपरी से कहा कि चालीसवीं कोठरी को भी खोल दे कि इसके भी तमाशे को देखकर चित्त को आनन्द करूं उसने कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है इसको मैं नहीं खोलसक्ती हूं कि यह ज़िन्दान सुलेमानी है अमीर ने धमकाया तब उसने फिर कहा कि इसकी कुंजी मेरे पास नहीं है परन्तु अमीर ने सहज़ोरी से उसके

हाथ से सब कुंजियों को छीनकर उसको खोलकर भीतर गये और सलासलपरी आसमानपरी के पास दौड़ीगई और कहा कि अमीर ने सहज़ोरी से हमसे कुंजी छीनकर चालीसवीं कोठी में गये हैं मेरा कहना नहीं माना रावी लिखताहै कि जिस समय अमीर चालीसवीं कोठरी में गये तो देखा कि हज़ारहों देव और परीज़ाद क़ैद हैं सबों ने आकर अमीर से सलाम करके कहा कि ज़ुलज़लालकाफ़ आप कृपा करके हमलोगों को इस कारागार से छुड़ाइये अमीर ने पूछा कि क्योंकर तुमलोगों ने हमको पहिंचाना कि हमीं ज़ुलज़लालकाफ़ हैं उन लोगों ने कहा कि इसमें बहुत से हज़रत सुलेमान के क़ैदी हैं और यहां का क़ैदी कभी नहीं जीता छूटता है परन्तु एक दिन हज़रत सुलेमान ने अपने मुखारविन्द से कहा था कि किसी समय में ज़ुलज़लालकाफ़ दुनिया से आकर हमारे क़ैदियों को छुड़ावेगा इस कारण हमलोगों ने जाना कि आपही हैं सो कृपा करके ईश्वर के लिये हमलोगों को इस कारागार से छुड़ाकर पुण्य लीजिये अमीर को उन सबपर दया आई तो एक तरफ़ से सब की बेड़ियां काट २ कर छोड़दिया तब हरएक अमीर के क़दमों पर गिर २ कर अपने २ स्थान को चलेगये उसके बाद अकस्मात् अमीर के कान में एक घोड़ेकी टाप का शब्द पहुँचा तो अमीर उस तरफ़ गये तब देखा कि एक बछेड़ा अतिशोभायमान चितकबरे रङ्ग का चररहा है अमीर को देखकर कूदने फांदनेलगा अमीर उसको देखकर अतिप्रसन्न हुए वह घोड़ा पीछेको कूदते २ अमीर को एक लात मार कर भगा तब अमीर बेताब होगये फिर क्रोधित होकर उसके पीछे दौड़े वह भागके एक मकान में घुसगया अमीर भी उसीके पीछे चलेगये परन्तु उस स्थान में अँधियारा था तिसपर भी शजरचिराग़ हाथ में लेकर चले थोड़ी दूर के जानेपर एक शब्द आया कि हे स्वामी ! अब बड़ा दुःख हुआ अब आकर हमको इससे छुड़ाओ तब अमीर जो उसकी तरफ़ गये तो देखा कि आरनातीस और लानिसा बैठे हुए रोरहे हैं अमीर ने कहा कि तुम ठहरेरहो अभी हम आकर तुमको क़ैद से छुड़ाते हैं इस बछेड़े ने हमको लात मारी है इसको मारकर अभी आते हैं तब लानिसा और आरनातीस ने कहा कि यह आपको जानता नहीं था यह मेरा पुत्र है आप इसका अपराध क्षमा करें तब तो अमीर संदेह में होकर कहनेलगे कि तुम देव और तुम्हारी स्त्री परी घोड़ा क्योंकर तुम्हारा पुत्र है इसका बृत्तान्त मुझको सुनाओ तब उन्होंने सब बृत्तान्त सुनाकर कहा कि इसका नाम हमने असकर रक्खा है फिर आरनातीस ने उसको बुलाकर अमीरके क़दमोंपर गिराकर अपराध क्षमा करवाया फिर अमीर ने उनको क़ैद से छुड़ाकर आज्ञा दी कि तुम यहीं बैठे रहो हम आगे सैर करके आते हैं यह कहकर आगे जो गये तो देखा कि एक मकान में दो परीज़ादे उलटे टँगे हैं अमीर उनको भी छोड़कर आगे जो बढ़े तो देखा कि रहियानपरी और कमरचेहरा जिसके साथ अमीर ने ब्याह किया था वह भी उसी स्थान में क़ैद हैं और दुःख के मारे व्याकुल हैं अमीर भी देखकर रोनेलगे तब उनको वहां

से छुड़ाकर लानिसा और आरनातीसको भी साथ लेकर कोठरीसे बाहर आये और उस रात्रि को आसमानपरी के बिस्तरे पर उन दोनों को साथ लेकर सोये ईश्वर की कृपा से दोनों उसी रात्रि को गर्भिणी होगई रावी लिखता है कि रहियानपरीसे जो पुत्र उत्पन्न होगा उसका नाम दुरदुरपोश होगा और कमरचेहरे के पुत्र का कमरज़ादा नाम रक्खाजावेगा और उसका बयान आगे लिखाजावेगा फिर अमीरने उन दोनों परीज़ादों को रुख़सत किया और वे अपने स्थान को गये अमीर ने आरनातीस से पूछा कि अब तो मुझे दुनिया में पहुँचादो उसने कहा कि हम तैयार हैं चलिये तब अमीर लड़कों को लेकर तख़्तपर बैठे और वे दोनों कंधेपर रखकर आकाश की तरफ़ उड़े और पहरदिन रहे जाकर एक नदी के तीर उतरे तो वहां अमीर ने एक स्थान अतिउत्तम बनाहुआ देखकर अतिप्रसन्न होकर उसमें जाकर बास किया फिर मालूम हुआ कि यह हज़रत सुलेमान का शीशमहल है और संसार में प्रसिद्ध है और इसमें रात्रि को दीपक की कुछ आवश्यकता नहीं पड़ती इसी भांति की बातचीत करते २ चार घड़ी रात्रि रहे सब लोग सोगये लेकिन असकर बनकी तरफ़ चरने को चलागया उसको वहां रहना न प्रसन्न किया अब थोड़ासा वृत्तान्त आसमानपरी का सुनिये कि जब आसमानपरी ने चालीस दिनके पश्चात् शहपाल शाह की क्रियाकर्म से छुट्टी पाकर सब छोटे बड़ोंको यथाउचित पारितोषिक और ख़िलअत दे रुख़सत करके गुलिस्तान अरम को आती थी मार्ग में सलासलपरी ने सलाम करके बिनय किया कि अमीर ने सुलेमानी कारागार में जाकर सब क़ैदियों को छोड़दिया और मेरा कहना नहीं माना तब आसमानपरी ने कहा कि अति उत्तम किया अब हज़रत सुलेमान की आज्ञानुसार होगया फिर उसने कहा कि आरनातीस और लानिसा को भी छोड़दिया तब भी आसमानपरी ने कहा कि अच्छा हुआ तब फिर सलासलपरी ने कहा कि रहियानपरी और कमरचेहरे को भी छोड़ दिया इसपर आसमानपरी ने कहा कि यह बुरा किया मेरे शत्रुओं को न छोड़ता तो अच्छा करता फिर पूछा कि क्या हुआ सलासलपरी ने कहा कि मेरे सामने तो इतनीही बातें हुई थीं और ईश्वर जाने क्या हुआ होगा? इतने में दूसरी परी ने आकर ख़बर दी कि आपके पलंगपर अमीर रहियानपरी और कमरचेहरे को साथ लेकर सोये और रात्रिको ख़ूब मज़ा उठाया और उनको रुख़सत करके आप लानिसा और आरनातीस से तख़्त उठवाकर दुनिया की तरफ़ गये यह सुनकर आसमानपरी क्रोध के मारे जलनेलगी और कहनेलगी कि मैंने तो ख़ुद इच्छा की थी कि अब अमीर को दुनिया में भेजदूं परन्तु उसने न माना और मेरी सेजपर मेरी सवतियों को लेकर सोया तो अब मैं भी उनको अच्छी तरह से दुःख दूंगी जैसा वे मुझे जलारहे हैं यह कहकर सेनासमेत तख़्तों पर सवार होकर अमीर के ढूंढ़ने को चली जाते २ जब शीशमहल में पहुँची तो विदित हुआ कि अमीर इसीमें हैं लानिसा और आरनातीस की जो मौत आई थी तो आसमानपरीने पहले उसी स्थान

में जहां वे दोनों सोते थे जाकर दोनोंको मारकर अपने हौसिले को पूरा किया वहां से उसी तरह रुधिर से तलवार भरेहुए अमीर के पास आकर इच्छा की कि अमीर को भी इसी तलवार से मारे परन्तु करशप ने तलवार छीनलिया और क्रोधित हो कर कहनेलगी कि तू मेरी माता है नहीं तो इस खंजर से तेरी आंतों का ढेर कर देती तेरा इतना बड़ा मुँह कि मेरे सामने मेरे पिता के शिरपर तलवार चलाये यह सुन आसमानपरी चुप होरही और एक पत्र लिखकर अमीर के पलंगपर रखके गुलिस्तान अरम को चलीआई और एक दिन भी वहां न ठहरी प्रातःकाल जब असकर जङ्गल से चरकर आया तो अपने माता पिता को मराहुआ देखकर रोनेलगा उनके दुःख में अपना प्राण देनेलगा इतने में अमीर भी जागउठे तो देखा कि लानिसा और आरनातीस के शिर कटेहुए अलग पड़े हैं तब बहुत प्रकार से असकर को समझाकर कहा कि ईश्वर की रचना अपूर्व है उसमें किसीका कुछ बश नहीं है ईश्वर की आज्ञा में किसीका चारा नहीं जो मुझको विदित होता कि किसने मारा है तो मैं अभी जाकर उसको मारता तेरे माता पिता का अवश्य बदला लेता अब तू अपना माता पिता मुझीको समझ मैं तुझको अपने पुत्र की तरह रक्खूंगा किसीप्रकार से दुःख न होनेपावेगा तिसपीछे देखा कि एक पत्र पलंगपर रक्खाहुआ है उसमें लिखाहै कि इसबार मैंने आपही इच्छा की थी कि तुमको दुनियाकी तरफ़ भेजदूं और अपनी बातको पूर्ण करूं परन्तु बिदित होताहै कि अभी आपका आब दाना काफ़ से नहीं उठा न उठेगा और इन आपके दोनों कामोंने मुझको बड़े दुःख दिये एक तो मेरे पलँगपर मेरी सवतोंको लेकर सोना दूसरे मुझसे छिपाकर दुनिया की तरफ़ जाना सो पहले के बदले में मैंने इच्छा की थी कि आपको भी आरनातीस और लानिसाकी तरह एकबारगी मारडालूं परन्तु आपकी पुत्री करीशह से मजबूर हुई कि आपके बदले में युद्ध करनेको आरूढ़ होकर मेरे हाथसे तलवार छीन कर मेरे साथ बहुत बुरी तरह से सम्मुख हुई और दूसरे के बदलेमें मैंने आरनातीस और लानिसा को मारकर अपना बदला किया और अब आपको देखती हूं कि दुनियाको क्योंकर जातेहो कौन पहुँचाता है अमीर पत्र को पढ़कर सुन्न होगये और सातदिवसतक वहीं लानिसा और आरनातीस के दुःखमें ठहररहे और आठवें दिन नेत्रों में आंसू भरकर कहनेलगे कि अब हम दुनियामें न जासकेंगे आसमानपरी के हाथ से बचकर जाना दुर्लभ है बिदित होताहै कि इसी काफ़ में पड़ारहूंगा और यहीं मेरी मृत्यु होगी असकरने सुनकर अमीर से कहा कि आप क्यों मलिन होते हैं मैं आपको दुनिया में पहुँचादूंगा आसमानपरी से न डरूंगा आप मेरी पीठपर सवार होकर चलिये अमीर ने कहा कि इन दोनों लड़कों को क्या करूं उसने कहा कि इनको भी अपने साथ सवार करलीजिये अमीर ने दो छीके बनाकर उन दोनों लड़कों को बैठाकर रकाब की तरह दोनों तरफ़ लटकाकर आप उसकी पीठपर सवार हुए असकर अमीर को लेकर दिन भर में हजार कोस लेजाता था और एक

सायत में एक मंज़िल ते करजाता था इसी प्रकारसे नदीके पार होगया जब पृथ्वीपर पहुँचा तो अतिशीघ्रता से दौड़ा चलागया पहर दिन रहे नूरपहाड़पर पहुँचा तब वहाँ अमीर लड़कों को लेकर उतरपड़े तो देखा कि उसी खोह में से हज़रत ख़िज़र और अलियास इन्हीं की तरफ़ चलेआते हैं अमीर दौड़कर उनके क़दमों पर गिरपड़े और अपना बृत्तान्त कहकर कहा कि ऐ हज़रत ! मैं आसमानपरी से बहुत दुःखित हूं यहां अब मेरा चित्त नहीं लगता उन्होंने कहा कि हे अमीर ! अब न घबराओ अबकी अवश्य दुनिया में जाकर अपने बाल बच्चों को देखकर चित्तको प्रसन्न करोगे चलो हमारी माता कि जिसका नाम बीबी आसफ़ाबासिफ़ है आपको विदा करनेको बुलाया है आपके ऊपर उन्होंने बड़ी कृपा की है तब अमीर दोनों लड़कों समेत पहाड़पर गये तो देखा कि पहाड़पर एक मण्डपहै और उसमें रोशनी आपही आती जाती है उसके भीतर जो गये तो देखा कि एक वृद्धा स्त्री हाथ में माला लियेहुए बैठीहै और ईश्वर का भजन कररही है अमीर उसको देखकर बड़े संदेह में हुए और नम्रता के साथ प्रणाम करके उसके समीप बैठे तब बीबी आसफ़ा ने शिर छाती से लगाकर कहा कि ऐ पुत्र ! मैं तेरे देखने की बड़ी इच्छा रखती थी बड़ी बात हुई कि तू मेरे पास आया और अपना सब हाल सुनाया अब ईश्वर की कृपासे अतिशीघ्रही दुनिया में पहुँचेगा यह कहकर एक सवागज़की कमन्द देकर कहा कि यह कमन्द मेरी तरफ़से अमरू को देकर कहदेना कि यह कमन्द मेरे हाथ की बनीहुई है इसको अच्छीतरह से अपने पास रखना इससे तुमको बड़ा सुख होगा और अनेकप्रकार के तमाशे यह दिखलावेगी जब इच्छा करेगा तो इससे देवोंको बांधलेगा यह हरप्रकारसे सहायक होगी और जब इसको मन्त्र पढ़कर फेंकेगा तो हज़ार रङ्ग की होजावेगी यह कहकर फिर कहा कि आज तुम हमारे यहाँ रहकर मेहमान्दारी खाओ अमीर ने अङ्गीकार किया प्रातःकाल जब अपने निमाज़ पढ़ने से छुट्टी पाई तो ख़्वाजाख़िज़र ने कहा कि ऐ अमीर ! इस घोड़े के पैरोंमें नाल अवश्य चाहिये नहीं तो यह काफ़ के जङ्गलों को तै न करसकेगा यह कहकर असकर के दोनों पर काटकर उसकी नाल लगाकर कीलें जड़दिया अमीर ने कहा कि ऐ हज़रत ! यह परकी नाल कबतक रहेगी इससे क्या पुष्टता होगी ख़्वाजे ने कहा कि यह आपकी ज़िन्दगी भर इसके पैरोंसे न छूटेगी और जब इसके चौथे पैरकी नाल गिरे तो जानना कि अब हमारी अवस्था समाप्त हुई अब अवश्य हमारी मृत्यु होगी और एक ज़ीन अमीर को देकर कहा कि यह ज़ीन इसके ऊपर कसो इसे सिकन्दर बादशाह ने सात देशों का कर लगाकर बनवाया था तब अमीर ने लेकर उस ज़ीन को असकर पर कसकर चलने को आरूढ़ हुए और हज़रत की कृपा पर बहुत ईश्वर का धन्यवाद किया अब थोड़ासा बृत्तान्त आसमानपरी का सुनाताहूं जिस समय आसमानपरी शीशमहल से गुलिस्तानअरम को पलटकर गई तो कई दिनों के बाद सुर्ख़ पोशाक पहिनकर तख़्त पर बैठकर अब्दुलरहमान से पूछा कि कुछ हमज़ाका

हाल बताओ कि कहां है और क्या कररहा है ? उसने रमल म विचारकर कहा कि अमीर जाते २ पहाड़नूरपर पहुँचे और वहांसे बीबी आसफ़ा की इच्छा है कि अमीर को दुनियापर भेजें यह सुनकर आसमानपरी क्रोध से लाल होगई और कहनेलगी कि वह मेरी सवत होकर मेरे पुरुष को विना मेरी आज्ञा दुनियाको भेजने की इच्छा रखतीहै यह कहकर तख्त मँगवाकर सवार होकर हवाकी तरहसे जाकर कोहनूरको घेरलिया और तलवार लेकर बीबी आसफ़ाके सम्मुख जाकर कहा कि क्यों बीबी ! तुझे कुछ मेरा डर नहीं है कि तूने विना मेरी आज्ञा मेरे पुरुषको दुनिया की तरफ़ भेजने की इच्छा की तुम नहीं जानती हो कि मैं बड़ी क्रोधवन्त हूं कि मैंने अपने बृद्धों को थोड़ीसी बातमें बे हुरमत करडालाहै और तुमको तो मैं कुछ समझतीही नहीं बीबी आसफ़ाने उसकी इस प्रकार की बातें सुनकर कहा कि तू पगली क्या बकती है ? मैं तुझे क्या जानती हूं ? तू कुछ मेरा करसक्तीहै जो तेरा शरीर भस्म होजावेगा जो तू ईश्वर से नहीं डरती है और मुझसे ऐसी २ बातें करती है बीबी आसफ़ा ने ज्योंहीं यह मुखसे कहा कि उसके शरीर से अग्निकी लपकें निकलनेलगीं और वह चिल्लानेलगी अब्दुलरहमान ने दौड़कर करशिया से कहा कि तू अतिशीघ्रही जाकर अमीर के पैरों पर गिरकर विनय कर कि वे आसमानपरी का अपराध बीबी आसफ़ा से कहकर क्षमा करावें नहीं तो थोड़ेही काल में आसमानपरी जलकर ख़ाक होजायगी तब वह जाकर अमीर के पैरोंपर गिरपड़ी और कहनेलगी कि बाबा जान ! ईश्वर के लिये माता का अपराध क्षमा करो और यह मेरा कहना करो अमीर ने जाकर आसफ़ा बीबी से उसका अपराध क्षमाकरने के लिये प्रार्थना की तब उसने अमीर के कहने से अपने वजू का पानी आसमानपरी के ऊपर छिड़का तब उसका प्राण जलने से बचा और ब्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी तब परियों ने उसको तख़्तपर लेटालिया और गुलिस्तान अरम को उठालाईं फिर बीबी ने उस दिन भी अमीर को न जानेदिया और प्रातःकाल होतेही हज़रतख़िज़र से कहा कि तुम जाकर हमज़ा को रुधिर की नदी से पार करआओ इतनी मेरी आज्ञा मानो फिर अमीर ने बीबी से प्रणाम करके लड़कों को छीकों में लटकाकर आप अशकरपर सवार होकर हज़रतख़िज़र के साथ रवाना हुए और चौदह पन्द्रह कोसतक चलेगये तब नदी दिखाई पड़ी कि उसका दूसरा किनारा किसीको न दिखाई पड़ता था और देखने से लोग ब्याकुल होजाते थे हज़रतख़िज़र ने अमीर से कहा कि रुधिर की नदी जो तुम सुनते थे वह यही है तुमलोग अपने नेत्रों को मूंदलो इस तरफ़ न देखो तब अमीर ने लड़कों समेत अपनी २ आंखों को बन्द करलिया हज़रतख़िज़र ने सात पैग जाकर कहा कि अब आंख खोलदो तब अमीर ने नेत्रों को खोलकर देखा तो विदित हुआ कि नदी से पार उतर आये और हज़रतख़िज़र नहीं हैं लिखनेवाला लिखता है कि अमीर चालीस दिन तक बराबर कूच करते चलेगये एकतालीसवें दिन [illegible]

पहुँचे तो देखा कि एक अपूर्वप्रकार की नदी है कि कोई दूसरा किनारा नहीं विदित होता और डरके मारे कोई वहां एक सायत नहीं ठहरता तब तो अमीर किनारे २ दशदिन तक चलेगये तब एक क़िला दिखाई पड़ा तो वहां ठहरकर उस क़िले को देखनेलगे विदित हुआ कि यह गवसा का क़िला है इतने में एक मनुष्य ने अमीर को देखकर पहिंचाना और जाकर अपने बादशाह से अमीर के आने की ख़बर की तब वह बादशाह जिसका समरात नाम था क़िले से बाहर निकल आया और अमीर के क़दमोंपर गिरकर अमीर को अपने क़िले में लेजाकर कई दिनों तक मेहमानदारी की तत्पश्चात् अमीर ने एक दिन उससे कहा कि तुम हमको इस नदी के पार उतारसक्नेहो ? उसने कहा कि हम क्यों नहीं उतारसक्ने परन्तु जो आप मेरी बेटी आरदाना के साथ ब्याह करें तो आपको मैं इस नदी से पार उतारदूं अमीर ने इन्कार किया परन्तु उन दोनों लड़कों ने समरातशाह से कहा कि तुम ब्याह का सामान करो हम अमीर को राज़ी करलेवेंगे बादशाहने अपने सरदारों को ब्याह के सामान इकट्ठा करने की आज्ञा दी और लड़कों ने अमीर को समझाकर उसके साथ ब्याह करवादिया और रात्रि को जब वह अमीर के साथ पलँगपर सोई तो उसने चाहा कि अमीर के गलेमें हाथ डालकर बोसा लेवें कि अमीर ने एक ऐसा घूंसा मारा कि उसके अगले दांत टूटगये तब वह रोतीहुई अपनी माता के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा तब बादशाह उन दोनों लड़कों को बुलाकर कहने लगा कि यह अमीर ने क्या किया कि वृथा मेरी बेटी का दांत तोड़डाला उन लड़कों ने कहा कि आप नहीं जानते हमारे देश में यही रस्म है कि पहली रात्रिको जब स्त्री पुरुष साथ सोते हैं तब दो दांत तोड़कर दूसरे दिन आधी नदी में जाकर उसके साथ भोग करते हैं कि सदैव यादगारी रहे तब उन देवोंने जाना कि सत्य होगा इनके देश में ऐसाही होता होगा उसी समय एक नाव मँगवाकर सब सामान रखवाकर अपनी लड़की को सवार करवाकर लड़कों से कहा कि तुम जाकर अमीर से कहो कि वेभी सवार होवें तब वे दोनों लड़के अति प्रसन्न होकर अमीर के पास आकर यह सब वृत्तान्त उनसे कहकर कहा कि चलिये नावपर सवार हूजिये अमीर लड़कों की बातें सुनकर हँसनेलगे और साथ जाकर सवार हुए जब नाव आधीनदी में पहुँची तब आरदाना ने अमीर के साथ सोनेकी इच्छा की तब अमीर ने उसके हाथ बांधकर नदी में डालदिया और वह नदी में डूबगई और मल्लाहों से कहा कि अतिशीघ्र ही नाव को पार करो नहीं तो तुम सबको मारडालूंगा मल्लाहों ने डर के मारे अति शीघ्रही चार पांच पालें मस्तूलपर उड़ाकर अमीर की आज्ञानुसार पार किया अमीर लड़कों समेत पृथ्वी पर उतरकर बाघ की खाल पर बैठकर कलिया ख़िजर का निकालकर दोनों लड़कों को भी दिया और आपभी खाके सावधान होकर वहां से आगेको चले जो क्षुधा लगी तो कहा कि आज तो कोई चटपटी चीज़ भोजन करने की इच्छा होती है इससे तो अब मन भरगया है यह कहतेही थे कि

सामने से एक हिरन निकला अमीर ने उसको मारकर कबाब बनाकर आप खाया और लड़कों को भी खिलाकर उसी स्थान पर रात्रि को सोरहे प्रातःकाल उठकर सवार होकर रवाना हुए॥

वृत्तान्त ख्वाजे अमरू का॥

लेखकलोग यों लिखते हैं कि जब अमरू को डेढ़ वर्ष क़िले देवदो में व्यतीत हुए तो एक दिन अन्तरदेवदूं बादशाह क़िलेसे पूछा कि यहांसे समीप और कोई क़िला है कि जहाँ चलकर थोड़े दिन आराम से रहें उसने कहा कि यहां से बीस कोसपर एक क़िला तलवाबहर नामे पहाड़पर है तीन तरफ़ उस क़िले के नदी है और केवल एक दिशा को मार्ग है और वह भी ऐसा छोटा है कि किसी प्रकारसे दो मनुष्य बराबर नहीं जासके हैं और सिवाय इसके जो एक मनुष्य ऊपर से पत्थर ठेलदेवे तो हज़ारों मनुष्य दबकर मरजावें और जो बादशाह नौशेरवां आपही जाकर उस क़िले को लिया चाहे तो केवल लज्जित होनेके और कुछ न पावे लज्जित होकर पलट आवे तब अमरू ने कहा कि उस क़िले का लेना कुछ दुर्लभ नहीं परन्तु यहांसे जाना दुर्लभ है और हम अकेले भी नहीं जासके हैं तब अन्तरदेवदूं ने कहा कि इस क़िले में एक सुरंग है उसीमें होकर निकलजाइये तब अमरू ने मलिका आदि को सवारियों पर सवार कराके सेना समेत उसी सुरंग से निकलकर क़िले तलवाबहर की राह लेकर सबको प्रसन्न किया और दूसरे दिन पहररात्रि व्यतीत हुए क़िले के समीप पहुँचा फिर अमरू क़िलेके भीतर चलागया परन्तु कोई युक्ति न करपाई कि क़िले में अपना बस पावे और विचारा कि युद्ध करने से भी हाथ न आवेगा तब तो लज्जित होकर कहनेलगा कि अमरू तूने बड़ी नादानी की कि बिना क़िले के लिये जो तू सब छोटे बड़ों को इस क़िले के समीप लेआया जो अभी हुरमज़ व जाफ़रांर्ज सेना लेकर आवे तो वृथा सबको मारकर मलिका को पकड़लेजावे इससे कोई युक्ति विचारना उचित है कि इस क़िलेको अपने अधीन करूं विचारते २ यह विचार में आया कि चारसौ पहलवानों को संदूकों में भरकर आप सौदागर बनकर क़िले के सामने ऊंटों में लादकर जाकर उतरे तब क़िलेवालों ने दीवार पर से पूछा कि तुम कौन हो कहां से आये हो और कौन वस्तु लेआये हो? अमरू ने कहा कि मैं सौदागर हूं नौशेरवां ने जुलमात की तरफ़ असबाब ख़रीदने को भेजा था वहीं से होकर आयाहूं और मेरे पास नवीन २ प्रकार की वस्तु हैं कि आजतक किसी ने न देखा है न देखेंगे यह सब हाल सिपाहियों ने जाकर बादशाह से कहा तब उसने नोमाननामी अपने वज़ीर को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखो कौन है और कहां से आता है और क्या २ वस्तु लाया है? उसने अमरू के ख़ेमे के पास आकर कहा कि जाकर अपने स्वामी से कहो कि बादशाह का वज़ीर आपकी भेंट को आया है और बादशाह ने तुमको बुलाया है तब अमरू ने सुनकर कहा कि कहदेव इस समय आराम में हैं आने की फ़ुरसत नहीं है वज़ीर बेचारा दो घड़ी तक खड़ारहा

पीछे को कहा कि अच्छा भाई कहदेना कि इससमय मैं जाता हूं फिर आकर मुला
क़ात करूंगा जो बादशाह कहेगा वह आकर करूंगा जब अमरू ने सुना कि अ
जाता है तब कहला भेजा कि कहदेव अब जाते हैं आप ठहरिये थोड़े समय वे
पीछे अमरू ने अपने ख़ेमे में बुलाकर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अप
पास बैठाया उसने देखा कि वृद्ध मनुष्य मसनद लगाये हुए अपने सरदारों सभे
बैठाहै और मोम की बत्ती जलरही है उसने जाकर सलाम किया परन्तु अमरू
पहलेही से उसका हाल जानलिया था सलाम का उत्तर देकर पूछा कि आप कौ
हैं और आपका नाम क्या है? हामान ने कहा मैं जमशेदशाह का वज़ीर हूं औ
हामान मेरा नाम है अमरू ने पूछा कि क्या तू रहिमानका बेटा है उसने कहा जं
हां! फिर पूछा कि वह कहां है? उसने कहा कि मेरे तो माता पिता दोनों क
बैकुण्ठवास होगया यह सुनकर अमरू रोनेलगा और हाय २ करके कहने
लगा जब भाई मरगये तो अब मैं जीकर क्या करूंगा यह कह ख़ंजर लेकर पे
मारनेको आरूढ़ हुआ तब उसने हाथ से ख़ंजर छीनकर पूछा आपका नाम क्या है
अमरू ने कहा कि ख़्वाजे शहपालपुत्र करबल मेरा नाम है और तेरा जन्म उन्हीं
दिनों में हुआथा जिससमयमें नौशेरवांने मुझको जुलमात को असबाब ख़रीदने
के लिये भेजा था और अब जो आया तो यह तूने सुनाई कि भाई का बैकुण्ठ
वास हुआ उसने कहा कि ईश्वर की महिमा अपूर्व है उसमें किसी की कुछ शक्ति
नहीं जो होना था वह होगया अब सब्र कीजिये इस दुःख को अपने शिरपर रखिये
और क़िले में चलकर आराम कीजिये तब अमरू ने सब असबाब आदमियों से
उठवाकर उसके साथ क़िले में चला राह में वज़ीर ने अमरू से पूछा कि कौन
उत्तम बस्तु आप लेआये हैं अमरू ने कहा कि सब वहां की उत्तम बस्तु हैं परन
दो स्त्रियां ऐसी स्वरूपवती लेआया हूं कि लोग देखतेही मोहित होजाते हैं हामा
ने कहा कि हमारा बादशाह भी आशिक़मिज़ाज है जो स्त्रियों को उसके समी
भेजदीजिये तो अति प्रसन्न होगा बहुत कुछ आपको देवेगा अमरू ने क़िले में ज
कर दोनों यार बच्चों को सौगात समेत डोलियों में बैठाकर हामान के पास भे
दिया तो वहां अतिप्रसन्नता के साथ अपने बादशाह के समीप लेगया बादशाह
देखकर अतिप्रसन्न हुआ और शराब मँगवाकर उन्हीं के हाथों से लेलेकर पीनेल
जब दो तीन गिलास पीचुका तब उन्हों ने दारूबेहोशी मिलाकर दी तब वह बेहो
होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा और इधर अमरू ने पहलवानों को संदूक़ से निकाल
पहले तो हामान को पकड़कर बांधलिया तत्पश्चात् सब क़िलेवालों को मारनेल
और जिसने अपने प्राणकी रक्षा चाही उसे मुसल्मान करके छोड़दिया और जब बा
शाह भी होश में आया तो उसने भी अपने प्राण की रक्षाके लिये मुसल्मान हो
अङ्गीकार किया तत्पश्चात् हामान ने भी देखा कि अब तो बादशाह भी मुसल्म
हुआ और जो मुसल्मान नहीं होते तो प्राण नहीं बचता लाचार होकर मुसल्मा

हुआ और प्रातःकाल होतेही अमरू ने क़िलेपर सब प्रकार से अपना प्रबन्ध करके अपनी आज्ञानुसार क़िले को सजाकर शामियाना खड़ा करके आप शाहानारूप धारण करके आराम के साथ बैठा अमरू के आनेके पश्चात् शाहज़ादों को ख़बर मिली कि अमरू क़िले देवदूं को छोड़कर तलवाबहर में जाकर सब क़िलेवालों को मुसल्मान करके अपना प्रबन्ध करके क़िलाबन्द है यह सब हाल बादशाह नौशेरवां को लिखकर भेजकर आप सेनासमेत जाके क़िले तलवाबहरके समीप ख़ेमा गाड़कर पड़ा अब थोड़ासा वृत्तान्त बादशाह नौशेरवां का लिखते हैं दरबार में बैठा था कि हरमर और जाफ़रांमर्ज़ की बिनयपत्री पहुँची और समाचार सुनकर कहनेलगा कि यारो! कोई युक्ति ऐसी करो कि अमरू पकड़ाजावे या माराजावे कि हम सबों को उस पापी से आराम मिले बख़्तक ने कहा कि आप तो मेरा कहना नहीं मानते बुज़ुरुचमेहर के कहने पर चलते हैं इसी कारण वह कार्य सिद्ध नहीं होता और वह मज़हब के विचार से आपको ख़राब कररहा है कि हमज़ा काफ़ में कब मरगया है परन्तु बुज़ुरुचमेहर के कहने से जीता है अच्छा आप मेरी और बुज़ुरुचमेहर की परीक्षा लीजिये देखिये कौन सत्यवक्ता है बादशाह ने कहा कि यह तुमने अच्छी बात कही उसी समय दोनों से रमल में बिचरवाकर कहा कि अपने २ बिचार को लिखकर सुनाओ संयोग से जिस समय वहां बिचाराजाता था उसी समय में अमीर को दोसौ कोस की उँचाई से रुखपक्षी ने अख़ज़र नदी में फेंकदिया था बख़्तक ने विचार में यही लिखा कि अमीर को एक पक्षी ने दोसौ कोस की उँचाई से एक नदी में फेंकदिया है वह उसी में मरगया होगा और बुज़ुरुचमेहर ने लिखा कि अमीर कुशल से थोड़े दिनों के पश्चात् आकर संसार में सब से मिलते हैं पहले बख़्तक का विचार सुनायागया तब बादशाह ने ख़्वाजे से पूछा तो उसने कहा कि सत्य है अमीर को रुखपक्षी ने अख़ज़र नदी में फेंकदिया परन्तु हज़रत ख़िज़र और अलियास ने हाथों हाथ उठाकर पृथ्वीपर रखदिया है जब ख़्वाजे का विचार सुनाया गया तो बादशाह ने बख़्तक की तरफ़ देखा उसने कहा कि हमज़ा है कहां जो दुनिया में आवेगा और आपही अपनी बुद्धि से विचार कीजिये कि दोसौ कोस से गिरकर मनुष्य का प्राण बचसक्ता है और काफ़ तो दूर है आप एक गाभिन गऊ मँगवावें हम दोनों आदमी विचार कर बतलावें कि किस रङ्ग का बच्चा उसके पेट में है फिर आप उसका पेट फड़वाकर देखें परन्तु उसमें यह शर्त है कि जो बुज़ुरुचमेहर का विचार सत्य होवे तो आप हमको उनके हवाले करदेवें जो उनका जी चाहे वह करें और जो हमारा सत्य होवे तो जो हमारा जी चाहे वह हम करें बादशाह ने ख़्वाजे से पूछा कि यह क्या कहता है उसने कहा कि अच्छा तो कहता है परीक्षा देने से कब मैं डरता हूं तब उसी समय एक गाभिन गऊ मँगवाई गई बख़्तक ने विचार कर कहा कि इसके बच्चे का स्याह रङ्ग और सफ़ेदहै बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि रङ्ग तो स्याह है परन्तु माथा भी काला ही है और चारों पैर

सफ़ेद हैं गाय का पेट फाड़कर बच्चा निकाला गया तो संयोग से झिल्ली उसके माथे पर आगई थी इससे माथा सफ़ेद विदित हुआ और सबलोग कहनेलगे कि बख़्तक बाज़ी जीता और बुज़ुरुचमेहर हारा अब वह इसको मारडालेगा तब बख़्तक ने बुज़ुरुचमेहर को अपने स्थानपर लेजाकर इच्छा की कि इसको मारडालें परन्तु उसकी स्त्री ने मना किया तब उसका प्राण बचा परन्तु उस पापी ने एक प्रकार की सलाई उसके नेत्रों में फेरकर अन्धा करादिया संयोग से उसी दिन सादजरी और आसादजरी तुकनौशेरवां की मुलाक़ातको आये उस गायके बच्चे को देखकर पूछा कि यह क्या है और यह किसका बच्चा है ? तब बादशाह ने सब वृत्तान्त उससे कहा तब सादजरी ने ख़ंजर की नोक से उसके मस्तक की झिल्ली छीलडाली तब सबों ने देखा कि मस्तक भी काला है सफ़ेदी का कहीं एक दाग़ भी नहीं है बुज़ुरुचमेहर का कहना सत्य है बादशाह ने उसी समय बख़्तक को बुलाकर कहा कि तू बाज़ी हारगया और बुज़ुरुचमेहर जीता अब उसको हमारे सम्मुख लेआओ उस ने कहा कि मैंनेतो अपनी बाज़ी जीती जानकर उसको अन्धा करदिया है बादशाह ने हाथ पटककर कहा कि हे पापी ! तूने बड़ा बुरा काम किया कि ऐसे मनुष्य को अन्धा करादिया तब उसको खम्भे में बँधवाकर इतने जूते लगवाये कि उसका शरीर घूमउठा उठने बैठने की शक्ति न रही और आप बादशाह सवार होकर बख़्तक के घरपर जाकर बुज़ुरुचमेहर को प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर कहा कि ख़्वाजे तुमने बाज़ी जीती थी परन्तु होनहार से धोखा पड़गया अब जो कहिये वह दण्ड बख़्तक को दूं ख़्वाजे ने कहा कि उसे दण्ड देने की कुछ आवश्यकता नहीं है मेरी भाग्य में जो लिखा था सो हुआ ईश्वर की होनहार में किसीका चारा नहीं हमज़ा जब आवेगा तो दो पत्ते वहां से लेते आवेगा उसीसे हमारे नेत्र फिर अच्छे होजावेंगे और मैं फिर उसी तरह से देखने लगूंगा अब मुझको आप आज्ञा देवें तो जबतक हमज़ा न आवे तबतक बसरा में जाकर रहूं और आपसे कहेजाता हूं कि सत्रह वर्षतक आपको सब प्रकार की बुराइयों से बचाया अब देखियेगा क्या होता है निश्चय करके जानिये कि आप अब अमरू के हाथ से बड़ा दुःख उठावेंगे और संसार में बदनाम होंगे और जिस दिन हमज़ा आवेगा तो सीधा आपही के पास चला आवेगा और एक घोड़ा उसी दिन धावा मारेगा और दूसरे दिन अमीर आप को पराजय करके बड़ा दुःख देवेगा इतना कहकर ख़्वाजा चलेगये और वहां से बसरा की ओर गया और बख़्तक जो जूतियों की मारसे बेहोश होगया था बादशाह ने उसको मकान से बाहर फेंकवादिया और जब उसको होश हुआ अपने स्थान को चलागया और बहुत दिनतक अपनी औषध करतारहा और जब अच्छा हुआ तो फिर दरबार में गया नौशेरवां ने कहा इसको सभा में आने की आज्ञा किसने दी हमारे सम्मुख यह क्यों आया ? जब सभासदलोग उसकी सई करने लगे तब बादशाह ने सभा में रहने की आज्ञा दी तब वह कुछ दिन तो चुपचाप रहा पश्चात्

फिर बादशाह को अमरू से लड़ने की सम्मति देनेलगा निदान धीरे २ बादशाह के भी चित्त में यह बात आई कि बख़्तक सत्य कहता है बिना मेरे गये यह कार्य सिद्ध न होगा इसी प्रकार अमरू सबको दुःख दिया करेगा यह बिचार कर एक लाख सवार और पैदल लेकर तलवाबहर के क़िलेकी ओर यात्रा की जब उसके निकट बादशाह पहुँचा तो हरमज़ व जाफ़रांमर्ज व ज़ोपीन आदिक राजकुमारों ने अगवानी मिलकर बादशाहको लेजाकर ख़ेमेमें उतारा और सब बहुत प्रसन्नहुए रात्रि को सभा में बादशाह ने कहा कि इतने दिनों से तुम सब यहां हो परन्तु एक मनुष्य को जीत न सके अब देखो मैं उसका और उसके साथियों का क्या २ हाल करता हूं तब सभासद लोग एकमुख होकर कहनेलगे कि आप और हममें बड़ा अन्तर है आपके सम्मुख हमारी क्या गणना है यह सुन रात्रिको तो बादशाह सोरहा प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म कर सेना को साथ ले युद्ध करने को आरूढ़ हुआ और आप अकेला जाकर क़िले के चारों ओर शिस्त लगाकर देखनेलगा तो उस समय अमरू शामियाने के नीचे जवाहिरकी कुरसीपर बैठा था और सब सरदारलोग बराबर से खड़े थे जिनके हथियारों में जवाहिर जड़े थे और मुरचोंपर हरएक मनुष्य अपने २ कार्यपर आरूढ़ थे अमरू ने तीर बादशाह की तरफ़ घुमाकर कहा कि हे अग्निपूजक ! तू या तो अभी भाग जा नहीं तो तेरी क्या गति करताहूं तेरी भी कैसी गति बनाता हूं और जो मैं अमरू कि तेरी छठी का दूध निकालकर तुझे इसका मज़ा चखाऊं बादशाह अमरू की बातें सुनकर कांपनेलगा और बख़्तक से कहा कि सुनता है अमरू क्या कहता है ? उसने कहा कि दूरसे जो चाहे वह कहे ज़बान उसकी उसके मुखमें है लेकिन कर कुछ नहीं सक्ता है वृथा बकरहा है सेनाको आज्ञा दीजिये कि युद्ध करने को आरूढ़ होवे और एकबारगी धावा करके क़िला अमरू से छीनलेवे तब बादशाह की आज्ञानुसार सेना बढ़ी और क़िलेतक जो पहुँची तब क़िलेपर से आतशबाजी छूटनेलगी और थोड़ेही कालमें हज़ारों पहलवान मारेगये और शेष युद्धके खेतसे भाग खड़ेहुए किसीने किसीका साथ न दिया तब लाचार होकर बादशाह भी सेनाके पीछे२ भागकर ख़ेमे में आकर लाचार होकर बैठे तो बख़्तक कहनेलगा कि कहीं इस प्रकार से भी क़िला हाथ आता है वृथा हज़ारों सिपाही भी मरवाये और लज्जित होकर पराजय पाई तब नौशेरवांने कहा कि ऐ पापी ! तूहीने तो कहा कि अब सेना को आज्ञा दीजिये कि क़िलेपर धावा करके इसी युक्ति से लेलेवें और तूही अब यह भी कहता है तब उसने कहा कि हां मैं भूलगया जो हुआ सो अच्छा हुआ अमरू को यह तो बिदित हुआ कि बादशाह बड़ी सेना लेकर मुझसे युद्ध करने को आये हैं हज़ार पहलवान मारेगये तो अच्छा हुआ बादशाह ने कहा कि तू बड़ा दुष्ट है कि एक बात पर स्थिर नहीं रहता है कभी कुछ कहता है कभी कुछ अब थोड़ासा अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि अपने क़िलेवालों से कहा कि तुमलोग ख़बरदारी से रहना हम बादशाह नौशेरवां को भी अपनी मक्कारी का मज़ा चखा आवें यह कहकर लिबास

शाहाना उतारकर मक्कारी की पोशाक पहिनकर एक नट का भेष धारण करके दो अपने शिष्योंको जो मक्कारी में बड़े बुद्धिमान् थे स्त्री का भेष धारण कराकर साथ ले क़िलेसे बाहर निकला और अपने गले में एक फूटा ढोल डालकर बजाता हुआ जाकर बादशाह नौशेरवां के खेमे के समीप एक कमरी तानकर आप ढोल बजाकर उन दोनों को नचाने गवाने लगा थोड़ेही समय में बहुत से मनुष्य आकर देखने लगे और उसी समय में ज़ोपीन और बेचीनसवार चले आतेथे भीड़ देखकर वेभी उसी तरफ़ गये जाकर देखा तो एक अपूर्व तमाशा होरहा है उन दोनों की आंखें जो इनसे मिलीं तो अपने करफ़नसे लोभाने लगा यहांतक कि दोनों भाई मोहित होगये एकने स्याहपोश को प्रसन्न किया दूसरे ने सब्ज़पोश को और दोनों आपस में सलाह करके बादशाह के समीप जाकर उनके गाने बजाने और सुन्दरताकी बड़ी प्रशंसा की तो बादशाह भी मोहित होगये और उनके बुलानेकी आज्ञा दी और जब वे आये तो अमरू ने ऐसा ढोल बजाया और यार बच्चों ने गाया कि जितने लोग थे सब मोहित होगये और नौशेरवां ने मोहित होकर उन्हींको शराब पिलाने की आज्ञा दी तब सबने उन्हीं के हाथ से गिलास में लेकर शराब पी तो थोड़ेही समय के पश्चात् सब लोग बेहोश होकर गिरनेलगे और इकबारगी सबलोग बोल उठे कि चलो यारो नदी में ग़ोता लगावें यह कहकर सब इकबारगी बेहोश होकर चुप होगये और अमरू ने बाहर आकर शागिर्दपेशों को भी बेहोश किया और खेमे में आकर सब असबाब उठाकर ज़म्बीलमें रखकर अपनी चालाकी करनेलगा कि नौशेरवां की दाढ़ी मोछ उस्तुरे से मूँड़कर हाथ पांवोंको तो नील से रंगा और मुख कालाकरके चून के टीके देदिये और बख़्तक व बख़्तियारक की दाढ़ी मूछ मूँड़कर सात सात बाल शिरपर रहनेदिये और बख़्तियारक के शिर में सेंदूर भरकर टांगें उसकी बख़्तक के कमर से बांधदीं और बख़्तियारक की गुदा में एकमेख ठोंककर फैंसी करदी और ज़ोपीन व बेचीनके साथभी यही मामिला किया और इसी प्रकार से सबलोगों की गति बनाई और शाहज़ादों को भी नङ्गा करके सात रङ्ग के टीके दिये और इसी प्रकार से जितने सरदार थे सबकी गति बनाई और पीछे को एक पत्र में लिखकर कि ऐ जवान! महीने २ दाढ़ी मोछका कर मेरे पास भेजादियाकर नहीं तो एक बाल भी न रहने पावेगा और इसी प्रकार से लज्जित हुआकरेगा और यहभी बिदित हो कि इस बार तो इस बिचारसे कि अमीरहमज़ा के आप ससुरे हैं प्राण छोड़कर केवल यह गति बनाई है लिखकर नौशेरवां के गले में बांधदिया और आप दोनों मक्कारों समेत अपने क़िलेमें चलाआया और जब प्रातःकाल हुआ तो सब सावधान हुए बख़्तकको जो मज़ा मिला तो स्त्री जानके धक्के देनेलगा और नेत्रों के बन्द रहने से कुछ मालूम न हुआ और बख़्तियारक को जो दुःख मालूम हुआ तो चिल्लाकर कहनेलगा कि पिताजी! यह क्या काम मेरे साथ कररहे हो लोग यह सुनकर चारों तरफ़से दौड़कर आये तो देखा कि आप बेटेमें यह मामिला

होरहा है तो सब एक दूसरे का रूप देखकर हँसने लगे और अपने रूप का कुछ विचार न रक्खा कि हमारा रूप कैसा है नौशेरवांने प्रातःकाल जो उठकर आईनेमें अपना स्वरूप देखा तो अतिलज्जित हुआ और इसी प्रकारसे सबका हाल देखकर बड़े आश्चर्यमें हुआ इतने में गले का पत्र देखकर पढ़ा तो विदित हुआ कि अमरू ने यह सबकी गति बनाई है तत्पश्चात् स्नान करके पोशाक बदलकर गद्दीपर बैठ कर बख़्तकको बुलवाकर सभामें उसकी मुश्कें बँधवाकर ऐसी जूतियां लगवाईं कि बेहोश होगया और जब सब सभासद्लोग सई करनेलगे तो बादशाहने उत्तर दिया कि इसके बारे में अब हम किसीकी सई न मानेंगे क्योंकि यह सब गति इसीने करवाई और इसीकी बातपर मैं यहां आया अफ़्सोस कि मैंने बुजुरुचमेहर की सलाहपर कार्य न किया जो उसकी बातपर स्थित रहता तो क्यों ऐसी गति सबलोगों की अमरू बनाता लोगोंके कहने से पीछे उसको कारागार में डालदिया और एक पत्र हामानके पास एक सिपाही के हाथ इस समाचार का लिखकर भेजा कि अमरू बड़ादुष्ट है इससे ख़बरदार रहना और अपने किसी सरदारको क़िला सौंपकर हमारे पास आप शीघ्रही चलेआओ और इसी समाचार का एकपत्र कारवां बादशाह शेर-शाह के समीप भेजा तो पहले सवार नमदपोश हामानशाहके पास पहुँचकर अति शीघ्रही उत्तर लेकर बादशाह के पास पहुँचा तो उसने लिखा था कि अमरू तो क्या देवभी हमारे क़िले में बस नहीं पासका और मैं भी अतिशीघ्रही आपके पास सेना सहित पहुँचताहूं आप किसी प्रकार से संदेह न कीजिये समावा जब पत्र शेरशाह के समीप लेकर पहुँचा तो उसने भी इसी प्रकार से उत्तर लिखकर उससे कहा कि एकबात मैं अपनी तुमसे कहताहूं परन्तु किसी से कहना नहीं और उ-सकी युक्ति करो उसने स्वीकार किया तब बादशाह ने कहा कि बहुत काल व्यतीत हुआ होगा कि मैंने मेहरनिगार की तसवीर देखी थी उसी समय से मैं मोहित होगयाहूं और सदैव उसके देखने की इच्छा रखता हूं जो तू किसी युक्ति से मेहर-निगार को मेरे समीप लादे तो मैं आधा राज्य दूंगा उसने कहा कि मैं केवल मुखके कहने से नहीं मानता आप ईश्वर को गवाह करके मुझे लिखदीजिये तो मैं जाऊं चाहे मरूं या जीऊं तब शेरशाह ने उसीसमय एक इक़रारनामा लिखकर उसको दिया और सब प्रकार से कहदिया तब समावा वहां से चलकर क़िले के पास जाकर भीतर जाने का उपाय ढूंढ़नेलगा तो पृथ्वी की मार्ग से तो जाने का रास्ता न पाया परन्तु एक नावपर सवार होकर पहाड़तक पहुँचा तो वहां से देखा कि सब सिपाही ख़बरदारी से रक्षा कररहे हैं जाते २ केवल एक बुर्ज में सन्नाटा मालूम हुआ तब उसने एक ढेला उसके ऊपर फेंका तो किसी ने उत्तर न दिया तब मालूम हुआ कि इसपर या तो कोई है नहीं या सब सोते होंगे कमन्द डालकर बुर्ज में गया और उसीकी सीढ़ियों से नीचे उतरा तो रात्रिभर तो एक कोने में बैठारहा और प्रातः-काल होते [illegible] ऊपर [illegible] के लिये स्थान ढूंढ़नेलगा पीछे को जब कहीं ठिकाना न

पाया तो स्नान के स्थानपर गया और एक कोने में बैठकर स्नान करनेलगा संयोग से उसी समय में बुलबुलख़लीफ़ा उसी स्थानपर पहुँचा जोकि मेहरनिगार का अतिशुभचिन्तक और दिलसे शत्रु था कि सदैव उसी स्थानपर जाकर अग्निपूजा करता था उस दिन भी स्नान करके पूजा करनेलगा कि इतने में समारानी ने सम्मुख आकर प्रणाम किया तब तो ख़लीफ़ा बुलबुल बहुत डरे कि जो यह सब मेरा हाल अमरू से कहदेवेगा तो अमरू मेरा प्राण न छोड़ेगा यह विचार करके उससे मित्रता करनेलगा तब समावाने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है और किस ओहदे पर यहां हो ? उसने कहा कि मैं मेहरनिगार का शुभचिन्तक हूं भाई ईश्वर के लिये मेरा हाल किसीसे न कहना उसने कहा कि आप संदेह न करें मैं यहां नहीं रहता हूं मैं तो बादशाह नौशेरवां के सिपाहियों का सरदार हूं और मेहरनिगार के लेजाने के लिये और बहुतसी उत्तम २ वस्तु लेआया हूं आप कृपा करके इस कार्य में सहायता करें तो सिद्ध होजावेगा और मुझको अतिप्रसन्नता प्राप्त होगी ख़लीफ़ा बुलबुल ने कहा कि मैं तो आपही सदैव इसी उपाय में रहता हूं कि किसी प्रकार से मेहरनिगार को नौशेरवां के पास पहुँचाऊं सो ईश्वर ने आपही को यहांतक भेज दिया आप मेरे साथ चलकर बावर्चीख़ाने में ठहरिये तब तो उसने प्रसन्नता से उसके साथ होकर बावर्चीख़ाने में जाकर भोजन में दारू बेहोशी मिलाई और जब वह भोजन सब लोगों ने खाया तो सब थोड़ेही समय के पश्चात् बेहोश होगये परन्तु अमरू ने उस दिन भोजन न किया और न महल में गया जब सब बेहोश होगये तब सादारी ने मेहरनिगार को एक गठरी में बांधकर अपने ऊपर लादकर ख़लीफ़ा बुलबुल समेत उसी बुर्ज से जिधर से आया था निकला और जब सादानी क़िले से निकलकर बन की तरफ़ चला तो ख़लीफ़ा ने पूछा कि बन में क्यों जाताहै वहां तेरा क्या प्रयोजन है उसने कहा कि शेरशाह ने मेहरनिगार को मांगा है सो मैं उनके पास लियेजाता हूं तब ख़लीफ़ा बुलबुल ने कहा कि यह तो अभी न होगा तूने कहा था कि मैं नौशेरवां के समीप लेजाऊंगा और अब दूसरे के पास लिये जाता है अब तो तेरी बातों पर मुझको क्रोध लगता है दोनों में युद्ध होनेलगा तब सादानी ने एक ख़ंजर ख़लीफ़ा को ऐसा मारा कि उसका प्राण निकलगया और सादानी मलिका को लेकर उसी तरफ़ चला अब थोड़ा सा हाल अमरू का सुनिये कि वहीं बेख़बर पड़ा सोरहा था कि सुपने में अमीर ने आकर कहा कि वाह तुम तो ख़ूब रक्षा करते हो बताओ मेहरनिगार कहां हैं ? तुमको नहीं विदित होता कि वह किस दुःख में पड़ी है इतना देखकर अमरू चौंककर उठा और मेहरनिगार के महल में जो गया तो देखा कि पलंग ख़ाली है इधर उधर ढूंढ़कर क़िले की दीवार पर गया तो विदित हुआ कि कोई कमन्द लगाकर निकाल लेगया तबतो अतिशीघ्रता के साथ मक्कारी पोशाक पहिनकर उसी कमन्द की राह से उतरकर क़दमपर क़दम रखतेहुए चला जब थोड़ी दूर गया तो देखा कि ख़लीफ़ा बुलबुल माराहुआ पड़ा है

तब तो जाना कि शत्रु से मलिका को छीनकर चलागया राह छोड़कर दूसरी ओर से आगे जाकर एक साधू का रूप धर करके एक घड़ा में दारू बेहोशी रखकर बैठा कि इतने में समावा मेहरनिगार को एक गठरी में बांधेहुए जाकर पहुँचा और अमरू से कहा कि बाबा प्यास बड़ी लगी है तब अमरू ने कहा कि घड़े में जल रक्खा है निकालकर पीलो जब वह घड़े के पास गया और उसने देखा तो बिदित हुआ कि इसमें दारू बेहोशी मिली है कूदकर अलग खड़ाहुआ और कहनेलगा कि तू मुझसे जाल करने चला है तेरी जाल. मुझसे न चलेगी यह कहकर अमरू के आगे से भागा अमरू ख़ंजर निकालकर उसके पीछे दौड़ा और एकबारगी कूदकर उसके आगे होरहा तब वह भी गठरी को पृथ्वी पर रखकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तब अमरू ने कमन्द कमर से निकालकर ललकारा कि देखते क्या हो दौड़ कर मारलो तब उसने जाना कि इसके सिपाही भी आपहुँचे पीछे फिरकर देखने लगा इतने में अमरू ने कमन्द उसके गले में डालकर खींचलिया और वह औंधे मुख पृथ्वीपर गिरपड़ा तो अमरू ने गठरी को तो कन्धेपर रखलिया और उसकी मुश्कें बांधकर अतिशीघ्रही चलकर क़िले में आकर पहुँचा तो समावा को तो कारागार में भेजदिया और मेहरनिगार को सावधान किया मलिका ने देखा कि मैं बँधी हूं अमरू से पूछा कि बाबा मुझे क्यों बांधा है तब अमरू ने सब हाल कहकर छोड़ दिया और बाहर आकर समावा को मरवाडाला नौशेरवां ने जब सुना तब उसने अमरू की बड़ी प्रशंसा की और चित्तसे अतिप्रसन्न हुआ और जब शेरशाह ने सुना तो सभा में कहने लगा कि अमरू बड़ा भाग्यवान् है उसे कोई बिजय न कर सकेगा तबहीं इतने दिनों से नौशेरवां से बराबर बिजय पाता चलाआता है और जो उससे युद्ध करने की इच्छा करता है वही लज्जित होकर पलट आता है और मेरा चित्त चाहता है कि अमरू से जाकर मुलाक़ात करूं इतने में पिरान नाम सेनापति ने कहा कि अमरू को मैं आज पकड़ूंगा मैं उसका बीड़ा उठाता हूं और देखियेगा कैसी सुन्दरता के साथ बिजय पाताहूं आप मेरे नाम से बादशाह नौशेरवां को लिख दीजिये कि मेरे नाम से तबलजंग बजवावे जाकर रूड़ी सवारी क़िले को लेलेताहूं या नहीं बादशाह ने उसीसमय एक बिनयपत्रिका में बादशाह नौशेरवां को लिखकर सब बृत्तान्त मग़रबी सिपाही के हाथ भेजा॥

पहुँचना अमीर का देवसमुन्द के स्थानपर और छोड़ाना ज़हरमिश्री का कारागार से॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर हिरन का क़बाब खाकर अख़ज़र नदी से जब चले तो दशवें दिन एक क़िलेकेसमीप पहुँचे तो ख़्वाजे आशोब से कहा कि तुम जाकर देखआओ कि इस क़िलेमें आबादी है या बीरान और स्वामी मुसल्मान है या काफ़िर ख़्वाजे आशोब तमंचा हाथ में लेकर क़िलेके भीतर जो गया तो देखा कि बराबरसे दूकानें लगी हैं और लोग फिररहे हैं ख़्वाजेने एक दूकानदार से पूछा कि इस क़िले का स्वामी कौन है और कैसाहै? उसने कुछ उत्तर न दिया दूसरीबार

फिर पूछा तौभी कुछ न बोला तब ख़्वाजे ने कहा कि क्या तू बहरा है या गूंगा तौ भी वह न बोला चौथी बार तमंचा लेकर उसको मारडाला तब तो सब दौड़े और ख़्वाजे को चारों ओर से घेरलिया तब ख़्वाजे आशोबने अमीर को पुकारा कि दौड़िये मेरी सहायता कीजिये अमीर उसका शब्द सुनकर क़िले में आये और उन लोगों से युद्ध करनेलगे करते २ क़िलेके दरवाज़ेतक पहुँचे लेकिन वे तीनों उसी भीड़में खोगये तब अमीर उस क़िलेके भीतर गये परन्तु युद्ध करनेवाले भीतर न गये बाहर से चिल्लाया किये अमीर जब क़िलेमें जाकर तख़्तपर बैठे तो एक ओर से शब्द आया कि अफ़्सोस हमारी तो यह गति हुई नहीं मालूम अमीर की क्या गति हुई होगी यह सुनकर अमीर जो उस तरफ़ गया तो देखा कि वे तीनों उसी में क़ैद हैं और एक मनुष्य और भी उन्हींके साथ शाहानी पोशाक पहिने क़ैद है अमीर ने पूछा कि तू कौन है उसने कहा कि मैं इसी क़िले का बादशाह हूं खलखाल देवने मुझे क़ैद करके क़िला छीनलिया है अमीर ने उसको क़ैद से छोड़ाकर तख़्तपर बैठाया और हरप्रकार से उसकी सहायता की जिन्नों ने जब अमीर को देखा कि हमारे बादशाह के साथ बड़ी नेकी कररहा है तब तो सब लुप होकर अमीर के क़दमों पर गिरने लगे और वह देव उस समय शिकार को बाहर गयाथा जब उस ने यह सब हाल सुना तो क्रोध के मारे जलने लगा और अमीर के सामने आकर ललकार कर मारने को दौड़ा अमीर ने उसकी वार रोककर एक हाथ अक़रबसुलेमानी का लगाकर दो भाग करादिये तब तो उसके साथी अमीर के बल को देखकर भागगये और बादशाह ने सात दिनतक नाच रङ्ग करवाया और हर प्रकार से अमीर को प्रसन्न किया आठवें दिन अमीर वहांसे चले तो इक्कीसदिनतक बराबर चलेगये तो एक चारदीवारी अपूर्व प्रकार की दिखाई पड़ी परन्तु दरवाज़े में ताला लगा था तब अमीर ने बलछी से तोड़डाला और उस के भीतर जो गये तो देखा कि एक बड़ा भारी सूनसान मैदान है और चारदीवारी संगमरमर की है उसके भीतर जो गये तो एक अतिउत्तम बाग़ दिखाई पड़ा कि जिसके देखने से बड़ा आनन्द हुआ और ऐसा बाग़ काफ़भर में कहीं न देखाथा तब अमीर तो एक वृक्ष के नीचे व्याघ्रचर्म बिछाकर बैठगये परन्तु लड़के इधर उधर घूमते २ एक बारहदरी में पहुँचे तो वहां देखा कि एक देव तीनसौ गज़का लम्बा सोरहाहै और एक स्त्री अतिस्वरूपवती पंखे की डोरी खींचरही है लड़कों को देखकर कहनेलगी कि ऐ लड़को ! तुम यहां कहां आये जल्द यहां से भागजाओ नहीं तो यह अभी जागेगा तो तुमलोगों को खाजावेगा क्षुधा के मारे रोते २ अभी सोगया है लड़कों ने कहा कि हम हैबत अल्लाह साहबक़िरां के साथ हैं हम इसको क्या इसके बापको भी नहीं डरते हैं ज़हरमिश्री ने अपने चित्त में बिचारा कि शायद जिसके कि ये लड़के हैं हैबत अल्लाह कहते हैं वही साहबक़िरां हों उन लड़कों से कहा कि तुमलोग जाकर उस मनुष्य से जो तुम्हारे साथ है कहदो कि ज़हरमिश्री यहां क़ैद है तब ख़्वाजे आशोब

और बहलोल ने अमीर से आकर कहा कि इस बाग़ में एक बारहदरी है उस में हमलोग जो गये तो देखा कि एक देव तीनसौ गज़ का लम्बा पड़ा सोरहाहै और एक स्त्री अतिस्वरूपवती पंखे की डोरी बैठी खींचरही है हमको देखकर बड़ी नम्रता और मुहब्बत से कहनेलगी कि तुम यहां से भागजाओ नहीं तो अभी यह जागेगा तो तुमको खायगा इसके दया न आवेगी तब एकने कहा कि हमारे मियां हैबतअल्लाह हैं हम इससे क्या इसके बापसेभी नहीं डरते तब उसस्त्रीने कहा कि तुम जाकर उस मनुष्य से जिसके साथ तुम हो कहदेना कि ज़हरमिश्री यहां क़ैद है अमीर ज़हरमिश्री का नाम सुनते ही व्याकुल होकर दौड़े कि ज़हरमिश्री का तो यह हाल हुआ मेहरनिगार की नहीं जानते कि क्या गति हुई होगी बारहदरी के भीतर जो गया तो देखा कि ज़हरमिश्री बैठी है उसको देखकर रोने लगी अमीर ने सब हाल पूछा तो उसने सब अपना हाल सुनाकर कहा अब इस देव की क़ैद में हूं जो दुःख पड़ता है उसका बयान मुझसे नहीं होसक्ता जो अमीर आते तो मेरा प्राण बचता नहीं तो मेरा प्राण न बचेगा जिस दिन इसका पिता क्षुधावान् होगा उसी दिन खालेगा इस दुःख में मैं आपही मरजाऊंगी अमीर ने कहा कि तुम साहबकिरां को पहिचानती हो उसने कहा कि क्यों नहीं पहिचानती मैं तो उनकी दासी ही हूं उन्होंने मेरी पालना की है तब अमीर ने मुखसे सेहरा हटादिया तो देखतेही ज़हरमिश्री रोकर अमीरके पैरों पर गिरपड़ी देवबच्चा रोने का शब्द सुनकर जागउठा तो देखा कि कई मनुष्य खड़े हैं क्षुधाके मारे भुलभुला कर अमीर को पकड़ने को दौड़ा कि लेकर खाजाऊं अमीर ने पकड़कर उसे बांस के समान चीरडाला और बाग़की क्यारीपर बैठकर ज़हरमिश्री से कहने लगा कि तूने मुझको नहीं पहिचाना उसने कहा कि तब आप जवान थे और अब आपकी डाढ़ी के बाल सफ़ेद होगये हैं फ़क़ीरी वेष विदित होता है दासी क्योंकर पहिचान सके अमीर उससे बातें करही रहे थे कि इतने में देव समुन्द सहस्रकर आंधी की तरह से उड़ता हुआ अमीर के शिरपर चला आपहुंचा और दरवाज़ा खुला देखकर क्रोधित तो हुआही था जब अपने पुत्रको भी मारा देखा तब तो जलकर अग्नि होगया और अमीर से कहने लगा कि ओ पापी, मनुष्य ! तू किस आंधी से यहां उड़कर आया तुझको यहां कौन लेआया ? अमीर ने कहा कि मैं तो किसी आंधी से उड़कर नहीं आया हूं अपनी खुशी से तेरे मारनेको आयाहूं यमपुरीसे नेवता लेआया हूं और मैं ही अफ़रेत और अहरमन आदि देवों का नाश करके तुझे मारने आया हूं और थोड़े समय में तुझको उन्हींके पास भेजताहूं यह सुनकर देव समुन्द ने सहस्रकरों से सहस्र पत्थर उठाकर अमीर के ऊपर दैमारे तो अमीर अक़रबसुलेमानी लेकर कूदकर उसके शिरपर जाकर एक तलवार ऐसी लगाई कि एक तरफ़ का अङ्ग पांचसौ करों समेत कटकर अलग होगया तब सब हाथों को बटोर कर भागा और थोड़े समय के पीछे सब करसंयुक्त होकर फिर आकर अमीर से युद्ध

करने को आरूढ़ हुआ तो अमीर ने फिर पांचसौ कर एक ओर के काट डाले इसी प्रकार से दो तीन बार अमीर ने उ[illegible]के कर काटे और वह फिर जोड़कर अमीर के पास आकर युद्ध करनेको आरूढ़ हो[illegible]ता तब बड़े आश्चर्य में होकर ईश्वर का ध्यान करनेलगे कि इतने में एक ओ[illegible] हज़रत ख़िजरने आकर सलाम किया तो अमीर ने उत्तर देकर कहा [illegible]रत! इस देव ने तो बड़ा दुःख दिया कि मैं मारडालता हूं फिर [illegible] आता है और युद्ध करने को आरूढ़ होताहै हज़रत ख़िज़र ने कहा कि इस बाग़ में एक चश्मा है कि ईश्वर ने उस में ऐसी शक्ति दी है कि जिस घावपर उसका जल पड़े वह भर आता है और किसी प्रकार से दुःख नहीं होता चलो हम तुमको दिखाकर उसका लोप करदेवें कि वह देव तुम्हारे हाथ से माराजावे कि फिर आकर दुःख तुमको न देवे अमीर हज़रत ख़िजर के साथ जो गये तो देखा कि उसका जल मोती से भी स्वच्छ है और देखनेसे सब जल लज्जित होतेहैं हज़रत ख़िजरने पैर रखकर उस तालाव का लोप करदिया और दो पत्ते एक वृक्ष के अति स्वच्छ तोड़कर दिये कि इसको ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को देना कि जो बख़्तक ने उसको अन्धा करदिया है इन पत्तों का अर्क नेत्रों में डाल लेवे तो फिर उसी तरह से देखने लगेगा अमीर ने उन पत्तों को रखकर कहा कि अब कृपा करके मुझे उसी स्थान पर पहुँचा दीजिये तब हज़रत अमीर को उसी बाग़ में पहुँचा दिया और वहीं से अन्तर्धान होगये अबकी बार जो देव समुन्द उस तालाव पर गया और उसका पता न पाया तो शिर पटक २ कर मरगया तब अमीर ने उस बाग़ की कोठरियों को खोलकर देखा तो उनमें अनेक २ प्रकार के जवाहिरात दिखाई पड़े उससे उनको बड़ा आनन्द हुआ लड़कों ने कहा कि थोड़ासा जवाहिर यहां से लेते चलना चाहिये वहां ये कहां मिलेंगे अमीरने हँसकर कहा कि जो तुम दुनिया में लेजाकर लोगों को देखाओगे तो अमरूनामे एक मेरा भाई है वह सब तुमसे छीनलेवेगा और एक भी न देगा इसी प्रकारसे दो दिन वहां रहे और तीसरे दिन लड़कों को छीके में लटकाकर ज़हरमिश्री की पीठपर सवार कराके आप सईसों की तरह चले ग्यारहवें दिन मुहीद नदी के निकट पहुँचे संदेह में थे कि किसप्रकार इसके पार उतरें इसी विचार में थे कि हज़रत ख़िजरने आकर पार उतारदिया दूसरे दिन उस लोहे की चारदीवारी के निकट पहुँचे कि जहां बड़े साहस और बीरतासे राहतदेवको मारा था उसका दरवाज़ा खुला देखकर जाना कि आज जुम्मा है क्योंकि उसका दरवाज़ा बृहस्पति के दिन के सिवाय और दिन नहीं खुलता तब सालिम की समाधिपर जाकर मतके अनुसार मन्त्र पढ़कर प्रसन्न किया और वहां से यात्रा करके कहनेलगे कि ईश्वर की दया से काफ़ की सीमा पूर्ण हुई श्रीकरुणानिधान ने आराम के दिन दिखाये यही विचार करते हुए पर्वत के नीचे २ प्रसन्न चित्त छाया में चलेजातेथे और मेवे तोड़ २ के लड़कों और ज़हरमिश्री को खिलाते थे संध्या को उसी पहाड़ के किनारे खड़े होकर रहनेकी जगह ढूंढते थे इसी अन्तर

मैं एक वृक्षसे सलाम का शब्द सुनाई दिया इधर उधर देखा तो किसी का पता न लगा सम्मुख देखा तो एक वृक्ष दृष्टि पड़ा उसमें मनुष्य की सूरत के फल लगे हैं और उसी वृक्ष से आवाज़ आती है और ईश्वर की रचना का तमाशा दिखाती है और अमीर ने इस ईश्वर की रचना पर धन्यबाद करके नमस्कार का जवाब दिया उसी वृक्ष से फिर आवाज़ आई कि मेरा नाम दाक है एक रात्रिको सिकन्दरशाह ने भी मेरी छायामें बास किया था इसी स्थान पर आप भी सुखपूर्वक बास कीजिये और यहांके तमाशे से अपने चित्त को आनन्द दीजिये इस बार्ता के पश्चात् उसी वृक्ष से एक उत्तम फल अमीर की गोद में गिरा अमीर ने उसको काटकर आप खाया और बाक़ी ज़हरमिश्री और दोनों लड़कों को दिया उस फलके खानेमें ऐसा स्वाद पाया कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता फिर उसी वृक्ष के नीचे हर्ष से बास किया और सम्पूर्ण रात्रि वह वृक्ष अमीर से बार्तालाप करतारहा अपनी मिष्टबाणी से अमीर को प्रसन्न करता रहा और कहा कि जिस स्थान में आप बैठे हैं इसी जगह सिकन्दर भी ठहरा था और मुझसे यह भी पूछा था कि मेरी मृत्यु कब होगी तब मैंने उसको यह उत्तर दिया कि जब लोहे की ज़मीन और सोने का आकाश होगा तब तुम इस संसार को छोड़ोगे उसके दो तीन दिनके पश्चात् हफ़्तगर्दिश सुलेमानी के जंगल में जो यहांसे थोड़ीही दूर है कि उसमें बृक्ष का नाम भी नहीं है पहुँचा तो वहां सूर्य की गरमी से अत्यन्त ब्याकुल होनेलगा तो उसके साथियों ने लोहे के ज़िरहें बिछाकर ढाल की छाया की लेकिन उसी समय में उसका बैकुण्ठबास होगया अमीरने पूछा कि हे बृक्ष! मुझको तो बतला कि मैं कब मरूंगा उस ने उत्तर दिया कि जब अशकरके किसी पैर में नाल न रहजाय तब तुम जानना कि अब मेरी अवस्था सम्पूर्ण होगई है अब कुछ दिन में बैकुण्ठबास होगा परन्तु अभी बहुत दिन शेष रहे हैं इसी प्रकार से रात्रि भर वह बृक्ष अमीर से बातें करता रहा और प्रातःकाल होतेही वहां से उठकर रवाना हुए और दोपहर के समय जब रेगिस्तान में पहुँचे तो वह सूर्य की तपिश से जलने लगा तब तो सब गरमी से ब्याकुल होनेलगे परन्तु अमीर के पास हज़रतख़िज़र की दीहुई मशक थी उसी में से आप भी जल पीते थे और लड़कों को भी पिलातेजाते और रात्रिको उसीमें पड़रहते थे इसी प्रकार से सातदिन कठिनता से काटे आठवें दिन एक नगर में पहुँचे वहां की अधिपति एक स्त्री अतिदयाल और सुशील शीरी नाम थी अमीर को अगवानी लेकर अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी की अमीर ने देखा कि स्त्रियों के सिवा यहां पुरुष का कहीं नाम नहीं है उस स्त्री से पूछा कि यह क्या कारण है कि यहां पुरुष कहीं नहीं दिखाई पड़ते उसने कहा कि इस नगर में स्त्रियों के सिवा पुरुष नहीं उत्पन्न होते अमीर ने पूछा कि फिर गर्भ क्योंकर रहता है उसने कहा कि इस नगर के बाहर एक वृक्ष है उसमें न फल लगता है न फूल तब जो स्त्री [illegible] होती है वो उसी वृक्ष में जाकर लिपट जाती है और थोड़े समय के

पश्चात् चीख मारकर गिरकर बेहोश होजाती है फिर होश में आकर चलीआती है तभी उसके गर्भ रहजाता है और लड़की ही उत्पन्न होती है अमीर ने स्त्रियों का स्वरूप और उनका यह हाल देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया लड़कों ने अमीर से कहा कि यहां की स्त्रियां अतिस्वरूपवती हैं इनको लेचलना चाहिये शीरीने कहा कि यहां की स्त्रियां कहीं जा नहीं सक्तीं और जो कोई लेजाता है तो एक चौकीदार ईश्वर ने यहां करदिया है वह फिर उठा ले आता है तब लड़कों ने कहा कि तू हमारे साथ करदे देखें कौन हमसें छीनले आता है आख़िरकार लाचार होकर पचास स्त्री उसने साथ करदीं जब वहां से चले और रात्रिको एक स्थानपर सोये तो वहां से पचीस स्त्रियों को कोई उठा लेगया जब प्रातःकाल देखा तो बड़े संदेह में हुए कि वृथा हम लेआये दूसरी रात्रि को जब सोनेलगे तो दोनों लड़कों ने सब स्त्रियों के कमर में रस्सी लगाकर अपने पैरों में बांधली तो रात्रि को सीमुर्ग़ की स्त्री जो वहां की रक्षक थी रात्रिको आई और सब स्त्रियों को लड़कों समेत उड़ाकर भागी कि इतने में अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि कोई सब स्त्रियों को उड़ाये लिये जाता है और नीचे लड़के भी लटके जाते हैं अमीर ने अपने दिल में विचारा कि शायद कोई देव है इस विचार से एक तीर ऐसा मारा कि सीमुर्ग़ की जोरू घायल होगई और स्त्रियों समेत उतरपड़ी और अमीर से आकर कहा कि ऐ साहबक़िरां ! मैंने आपका क्या अपराध किया था कि आपने मुझे तीर मारा और मेरे पुरुष ने जो आपके साथ नेकी की थी यह उसका बदलाहै मैं तो यहां इन्हीं स्त्रियों की रक्षा के लिये ईश्वर से आज्ञा पाकर रहती हूं कि कोई इन स्त्रियों को बाहर न लेजाने पावे अमीर सीमुर्ग़ की जोरू को देखकर अतिलज्जित हुआ और कहनेलगा कि मैं ने तुझको नहीं पहिंचाना था सौगन्द खाता हूं कि मैंने तुझको नहीं जाना ईश्वर के लिये अपने पुरुष से यह न कहना अबकी बार मेरा अपराध क्षमा करना क्योंकि उसने मेरे साथ बड़ी नेकी की है तब अमीरने ईश्वर का स्मरण करके उसके घाव को अच्छा करदिया तब वह स्त्रियों समेत अमीर की आज्ञा लेकर रवाना हुई ॥

वृत्तान्त अमरू अमीर ज़मींगी के पुत्र का ॥

नौशेरवां जो कैरवानपश्चिमी के लिखने से पीरान मग़रबी के नाम से तबलजंग बजवाकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ तो इतने में सामने से गर्द उठी और जब गर्द बन्द होगई तो दोसौ झण्डे दिखाई पड़े तो अमरू को विदित हुआ कि दो लाख सवारों की सेना आ रही है जब समीप क़िले के आ पहुँची तो विदित हुआ कि क़ैरवां मग़रबी अपने सेनापति पीरान मग़रबी को साथ लेकर अपनी सेना समेत आता है तब नौशेरवां ने ज़ोपीन और बेचन को अगवानी के लिये भेजा तो उसने आकर बादशाह के तख़्त पर बोसा देकर हर प्रकार से बादशाह को समझाया और पीरान मग़रबी को क़िले पर धावा करने की आज्ञा दी और कहा कि जिस तरह से होसके क़िले को अमरू से छीन लेना जिस समय पीरान मग़रबी

अपने दो लाख सवार लेकर क़िले की तरफ़ आरूढ़ हुआ तो अमरू अपनी सेना थोड़ी देखकर डरा और ईश्वर का ध्यान करने लगा तो इतने में जङ्गल की ओर गर्द उठी तो नक़ाबदार नारंजीपोश अपने चालीस सहस्र सवार लेकर आखड़ा हुआ तो अमरू अति आनन्द हुआ बख़्तियारक ने उसको देखकर नौशेरवां से कहा कि यही नक़ाबदार सदैव मुसल्मानी सेना की सहायता को आता है और इसीकी सहायता से मुसल्मानी सेना का विजय होता है इतने में नक़ाबदार ने पीरान मग़रबी के सामने आकर ऐसी डाट लगाई कि उसका घोड़ा पीछे को हटगया तब उसने क्रोध करके नक़ाबदार के शिरपर एक तलवार मारी नक़ाबदार ने घोड़े का आसन दबाकर तलवार कूदकर छीनली और एक हाथ से उसकी कमर पकड़कर ऊपर को उछाला और जब नीचे को आनेलगा तो एक तलवार ऐसी मारी कि दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो उसकी सेना ने नक़ाबदार को आकर घेर लिया और नौशेरवां की सेना ने भी सहायता की परन्तु नक़ाबदार अपने चालीस सहस्र सवारों से मारता हुआ जङ्गलकी तरफ़ चलागया और अमरू क़िले में विजय का डङ्का बजवाने लगा तब बादशाह नौशेरवां पराजय पाकर अपनी सेना समेत ख़ेमे में जाकर कैरवां मग़रबी को मातमपुरसी की ख़िलअत देकर हरप्रकार से समझाया इतने में उसी दिन मिस्कालशाह बादशाह क़िले तेग़ मग़रबी का नौशेरवां के समीप आया तो बादशाह से समझाकर कहा कि कल में इस क़िले को छीनलेता हूं और इन लोगोंसे अपना बदला लेता हूं परन्तु आज रात्रि को मेरी मेहमानदारी स्वीकार कीजिये तब बादशाह ने कहा कि अच्छा तब वह नौशेरवां के ख़ेमे के समीप ख़ेमा गाड़कर उतरा और मेहमानदारी की तैयारी करनेलगा और जिससमय अमरू ने सुना कि मिस्कालशाह नौशेरवां की मेहमानदारी के लिये उत्तम २ भोजन बनवा रहा है तो सब अपने सरदारोंको बुलवाकर कहा कि आज जो तुमलोग थोड़ा श्रम करो तो मैं तुमको चलकर उत्तम २ भोजन खिलाऊं मिस्कालशाह ने नौशेरवां की मेह-मानदारी के लिये भोजन बनवाया है रात्रि को क़िले से निकलकर लन्धौर और अमीर और बहराम का नाम लेकर उसकी सेनापर धावा करो तो सबने उसकी आज्ञा स्वीकार की तब अमरू ने सिपाहियों से कहा कि तुमलोग दिनभर में पांच सौ देव काग़ज़ के चारसौ गज़के लम्बे तैयार करो पहिये उनके पैर में लगाओ और जिससमय मेरे सफ़ेद मोहरे का शब्द तुम्हारे कानों में पहुँचे तो तुम उसी समय उनको लेकर आना तब सिपाहियों ने अमरू की आज्ञानुसार दिनभर में देवों को बनाया और जब रात्रि को नौशेरवां मिस्कालशाह की सेना में गया सं-योग से वह रात्रि शुक्लपक्ष की थी और चारोंतरफ़ रोशनी भी होरही थी बादशाह नाच देखनेलगे जब पहररात्रि व्यतीत हुई तो अमरू ने मुक़बिल को स्याहक़ैतास पर सवार कराके कहा कि अमीर का नाम लेना और आदी से कहा कि तू अपने को लन्धौर कहना और सुल्तान बख़्तक मग़रबी से कहा कि तू बहराम के नाम से

शोरगुल करना इसी प्रकार से सेना को समझाकर क़िले से बाहर निकला और मिस्कालशाह और नौशेरवां की सेनापर जागिरा तब मुक़बिल ने तो कहा कि मैं हमज़ा हूं और आदी ने कहा कि मैं लन्धौर पुत्र सादान हूं और सुल्तानबख़्त मग़रबी ने चिल्लाकर कहा कि मैं बादशाह ख़ाक़ान चीन का बहरामनामी हूं इसके पश्चात् तीनों सेना में तलवार चलने लगी तब अमरू ने विचारा कि यह तो युद्ध करने लगे परन्तु सेना मेरी थोड़ी है कहीं ऐसा न हो कि पराजय पाकर लज्जित होऊं सफ़ेदमोहरा बजाके शत्रु की सेना को ललकारा कि साहबकिरां आज्ञा देते हैं कि काफ़ के देवों को अति शीघ्रही दौड़ आकर शत्रुओं को खाजाओ सिपाही अमरू का शब्द सुनकर देवों को लेकर आये और उनके मुख से आतशबाज़ी छोड़नेलगे तो शत्रु की सेना ने जाना कि देवों की सेना अमीर के साथ आई है वह अब लोगों को पराजय देगी इस विचार से डरकर भाग खड़ेहुए हरचन्द बख़्तक ने कहा कि यह सब अमरू का जाल है परन्तु किसीने न सुना सब शिरपर पांव रखकर जो भागे तो बारह कोस तक चलेगये और कहीं एक सायत भी न ठहरे बादशाहों ने देखा कि जो हम बिना सेना के यहां रहे तो अवश्य शत्रु के हाथ से क़ैद होंगे वह भी अपनी सेना के पीछे भागे तब अमरू ने सब असबाब दोनों बादशाहों का उठाकर ज़म्बील में रक्खा मानों अपना असबाब है और सेना को पेट भरकर भोजन करवाया तब मुक़बिल से कहा कि तुम क़िले में जाकर स्त्रियों को सवार करके सब असबाब ऊंटोंपर लादकर अतिशीघ्रही आओ कोई बस्तु वहां रहने न पावे कि यहां से सब बस्तु लेकर क़िले तंजमग़रब को चलें तब वह आज्ञा पातेही जाकर सब माल स्त्रियों समेत क़िले से निकालकर बाहर आया वहां कोई बस्तु न रहनेपाई तब अमरू सेनासमेत क़िले तंजमग़रब की तरफ़ चला और जिस समय क़िलेपर पहुँचा तो मिस्कालशाह का जालीपत्र सेनापति को दिखलाकर क़िले में निस्संदेह जाकर बैठा तब काफ़िरों को मारनेलगा और जो मुसल्मान हुए उनका प्राण छोड़कर शेष को मारडाला और क़िले को अपने तौरपर करके दरवाज़े पर अतलस का शामियाना खड़ा करके कुरसी जड़ाऊ बिछाकर आराम से बैठा और क़िले का दरवाज़ा बन्द करलिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि उसने प्रातःकाल होतेही अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि तुम जाकर देखआओ कि काफ़के देवों की सेना कहां है यहां अमरू काग़ज़ के देवों को पहाड़ के नीचे बराबर से खड़ा करगया था सिपाहियों ने दूर से देखकर बादशाह से कहा कि देवों की सेना पहाड़ के नीचे खड़ी है बख़्तक ने कहा कि विष्ठा खाते हैं जो झूंठ बोलते हैं यह सब अमरू का जाल है इतने में सिपाहियों ने आकर ख़बर दी कि अमरू क़िले तंग मग़रिब में जाकर दाख़िल हुआ और सब सामान बादशाही भी उठाकर लेगया यह हाल सुनकर बादशाह अतिव्याकुल हुआ और पीछे को सेनासमेत आकर क़िले तंगमग़रिब को घेरकर पड़ा अब अमरू का हाल सुनिये कि अपने [illegible]

को इकट्ठा करके कहा कि अब हमज़ा को अठारह वर्ष से अधिक व्यतीत होगये और अबतक न आये सो अब हम सब को केवल आधी खूराक देवेंगे जिसकी खुशी हो वह रहे नहीं अपने घरकी राह लेवे तब सबों ने तो स्वीकार किया परन्तु आदी ने कहा कि मुझसे तो न रहाजायगा क्रोधित होकर वहां से निकला और बादशाह नौशेरवां से आकर प्रार्थना की कि आप मुझको नौकर रखलेवें उसने सब वृत्तान्त पूछकर रखलिया और आज्ञा दी कि तुम दरवाज़ेपर बैठेरहो कोई भीतर न आने पावे तब वह जाकर दरवाज़ेपर बैठा तो रात्रि को एक स्त्री आई उसके हाथ पकड़ कर ऐसे प्रकार से भोग किया कि वह मरगई तब वहां से डरकर नौशेरवां के घोड़े पर सवार होकर भागा और मार्ग में जाकर क्षुधा के मारे उसको भी मारकर खा-लिया तब फिर वहां से चलकर एक साधू की जमाअत में पहुँचा वहां से भी नि-काला गया तो जाकर नगर में भिक्षा मांगते एक नानबाई की दूकानपर पहुँचा उस ने दो रोटियां दीं आदी और मांगनेलगा तो उसने कहा कि मियां अच्छे तो बनेहो मेहनत करके नहीं खाते तब फिर आदी ने कहा कि तुमहीं नौकर रखलो उसने लकड़ी चीरनेपर रखलिया और कहा कि पेटभर तुमको भोजन दूंगा जब आदी उस की लकड़ी चीरचुका तो उसने उसे पांच रोटियां दीं तब आदी ने कहा कि इस प्रकार से मेरा पेट न भरेगा तुम उठकर अलग बैठो हम खालेवेंगे जब उसने स्वी-कार न किया तो उसकी गर्दन पकड़कर नीचे करदिया और सब रोटियां खालीं इसीतरह से कई नानबाई की रोटी खागया पीछे को इसकी खबर बादशाह को पहुँची तो प्रथम कोतवाल आया परन्तु उसके सिपाहियों के कहने से आदी ने न माना आखिर को बादशाह आपही आया और आदी से बुलाकर कहा कि जो तुम मुसल्मानों से युद्ध करना स्वीकार करो तो हम तुमको नौकर रखकर अपनी बेटी के साथ ब्याह करदेंगे और बड़ी प्रतिष्ठा से रक्खेंगे परन्तु हमारे यहां की यह रीति है कि जब स्त्री पुरुष में से एककी मृत्यु होजावे तो दोनों गाड़े जाते हैं आदी ने सब स्वीकार किया तब बादशाह ने ले जाकर अपनी बेटी के साथ ब्याह कर दिया तो जब रात्रि को आदी ने उसके साथ भोग किया तो वह मरगई प्रातःकाल बादशाह ने देखकर आदी से कहा कि स्त्री अब मरगई चलो अब तुम भी गाड़े जाओगे पीछे को जब सब लोगों ने स्त्री को गोरमें धरके आदी को भी उसीके साथ गाड़ने की युक्ति कररहे थे कि इतने में उसी समय अमीर परदेकाफ़ से आकर उसी नगर में उतरे उस स्थान पर भीड़ भाड़ देखकर ख्वाजे बहलोल से कहा कि देखो तो यह क्या होरहा है लड़कों ने जाकर जो देखा तो एक मनुष्य को जीता लोग गोर में गाड़ने को ठलते हैं और वह नहीं जाता आकर यही हाल अमीर से कहा तो अमीर भी गये तो देखा कि आदी है उससे पूछा कि तू कौन है और यह क्या होरहा है? उसने कहा कि मैं हमज़ा अरबी की सेनामें नौकर था सो वह अमरू को स्वामी सेनाका बनाकर परदेकाफ़ को चलागयाहै सो अठारहवर्षतक तो अमरू

आधा पेट भोजन दिया करता था वही खाकर रहता था अब उसने चौथाई पेट करदिया है तब वहां से चलकर भिक्षा भवन करता हुआ यहां पहुँचा यहां के बादशाह ने अपनी बेटी के साथ मेरा ब्याह करदिया सो वह मृत्यु से मरगई तो अब मुझको भी उसीके साथ गाड़ने की इच्छा करते हैं अमीर ने पूछा कि तू अमीर को पहिचानता है उसने कहा क्यों नहीं तब अमीर ने मुखपर से मुकुट हटादिया देखतेही आदी दौड़कर अमीर के क़दमोंपर गिरपड़ा अमीरने आदी को छाती से लगाकर कहा कि अब तू न डर कोई अब तुझको न पासकेगा यह कहकर एक बड़े ज़ोरसे शब्द किया तो बादशाह शबीदशाह ने सेना समेत आकर अमीर को घेर लिया अमीर ने सबको मारडाला पीछे को शबीदशाह के सेनापतियों ने मुसल्मान होकर अमीरके साथ सुलह करके अपने स्थानपर लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी करके अमीर को रुख़सत किया वहां से सब लोगों समेत चलकर दोपहर के समय एक नदी के निकट पर पहुँचकर उतरे आदी गरमी से जाकर नदी में कूद कर स्नान करनेलगा तो एक संदूक़ बहताहुआ निकला आदी ने संदूक़ को पकड़ कर खोला तो उसमें एक देव बन्द था उठकर आदी से लपटगया तो आदी चिल्ला कर अमीर को पुकारनेलगा अमीर ने जाकर देवको संदूक़ में बन्द करके आदीको सौंपदिया आदीने इस विचार से कि अमरू ने मुझको यह दुःख दिया है मैं भी उसको चलकर दुःख दूंगा संदूक़ को अपने पास रखलिया तब अमीर ने आदी से कहा कि तुम सबको साथ लेकर आओ मैं पहले से चलकर क़िले का हाल देखूं कि अमरू उसी क़िले में है या और कहीं गया और आदी से यह पहलेही विदित हो चुका है कि क़िले तंगमग़रिब में अमरू मेहरनिगार समेत है वहां से अशकर पर सवार होकर अमीर जब चले तो थोड़े ही समय में आकर क़िले के समीप पहुँचे तो देखा कि क़िला अति पुष्ट बना है किसी प्रकार भीतर जानेकी गली नहीं है तब उसी क़िले के निकट चर्म बिछाकर बैठगये और अशकर को बनमें चरने के लिये छोड़कर भेज दिया और आप फ़क़ीरों की तरह दीवाल के सहारे से बैठगये अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि उस दिन अठारह वर्ष पूर्ण होने पर भी अमीर के न आने से सबलोग अतिव्याकुल थे उससमय अमरू मलिका मेहरनिगार को समझाकर कोठेपर लेगया था संयोग से तीन पक्षी बराबर से उड़ते दिखाई पड़े मेहरनिगार ने अपने चित्त में यह विचार करके कि जो अमीर आज आते हों तो बीच के पक्षी के तीर लगे संयोग से उसीके लगा और वह पक्षी और तीर आकर अमीर के आगे गिरा अमीर ने तीरको उठाकर चूमकर रखलिया तब अमरू ने दूरसे देख कर कहा कि तू कौन है ? जो यहां आकर बैठा है और मलिका के तीर को क्यों उठाकर रखलिया ला तीर हमको दे अमीरने कहा कि मैं साधू हूं परदेकाफ़से आता हूं परदेकाफ़ का नाम सुनकर अमरू समीप आकर पूछने लगा कि तूने हमज़ा को भी देखा है अमीर ने कहा कि मैं उसीके पास से आताहूं और उसने मुझसे कहा

था कि जब मक्केकी तरफ़ जाना तो हमारे पितासे प्रणाम कहदेना और कुछ संदेशा मेहरनिगार से भी कहने को कहा है सो हम उसीके कान में कहेंगे तब अमरू ने अनेक प्रकार से अमीर को लोभ दिखलाकर कहा कि तू मुझे बतलादे तो बहुत कुछ दूंगा परन्तु अमीर ने सदैव यही उत्तर दिया कि हम उसी के कान में कहेंगे पीछेको लाचार होकर मलिका के पास जो गया तो वहां सब प्रकार से प्रसन्नता हो रही है मेहरनिगार ने कहा कि आज मैंने सगुन उठाकर देखा सो निश्चय है कि आज अमीर आवेंगे हमारा तीर दीवार के नीचे गिरा है तुम जाकर लेआओ अमरू ने कहा कि आज एक साधू आकर क़िले के नीचे बैठाहै उसीके पास तीर है और कहताहै कि मैं परदेकाफ़ से आताहूं हमज़ा ने कुछ संदेशा कहाहै वह भी मैं मेहरनिगारके कानमें कहूंगा सो अनेक प्रकारसे मैंने उसको लोभ देकर कहा परन्तु न वह तीर देता है न संदेशा कहता है और कहता है कि मैंने हमज़ा के प्रताप से हज़ारों रुपये अशरफ़ी मंगनों को बांटदिये हैं मुझको अब कुछ रुपये अशरफ़ी की आवश्यकता नहीं है ज्यों २ दिन व्यतीत होता जाता है त्यों २ अधिक दुःख होता है मेहरनिगार ने आज्ञा दी कि अतिशीघ्रही जाकर उसको लाओ अमरू ने फिर आकर कहा कि सहस्र अशरफ़ी मैं तुझको दूंगा बतादे अमीर ने कहा जो पहले मैंने कहाहै वही अब भी कहता हूं तब बहुतही लाचार होकर अमरू ने अमीर से कहा अच्छा आओ तब अमीर ने पक्षी तो अमरू को देदिया और तीर और चर्म अपने हाथमें लेकर चला जब क़िलेके भीतर गया तो अमरूने कहा कि मेहरनिगार इसी परदे के आड़में बैठी है अब जो कहना हो कहो अमीरने कहा कि मैं तो कान ही में कहूंगा जो सुनना हो तो आवे नहीं मैं जाताहूं लाचार होकर फितनाको लाकर अमीर के सम्मुख बैठाल दिया तब अमीर ने जो मुख खोलकर देखा तो कहा कि यह मेहरनिगार नहीं है यह तो फितना है अमीरने मुझे सबकी तसवीरें दिखाई हैं जो सुनना हो तो मेहरनिगार आवे नहीं मैं जाता हूं तब अमरू ने क्रोधित होकर मुक़बिल को बुलाकर आज्ञा दी कि जब यह क़िले से बाहर जानेलगे तो इसका शिर काटकर फेंकदो यह बड़ा दुष्ट है इतने में मेहरनिगार ने आकर संदेशा सुनने के लिये कान झुका दिया और अमीर ने चुपके से कहा कि मैं साधू नहीं हूं मैं हमज़ा हूं यह कहकर दोनों चिल्लाकर बेहोश होगये अमरूने जो विचार करके देखा तो पहिचाना कि हमज़ा है दौड़कर क़दमों पर गिरपड़ा और गुलाब आदि छिड़ककर दोनों को सावधान करके नाच रङ्ग किया और मंगनोंको रुपया पैसा अशरफ़ी लुटाने लगे यहांतक कि उस दिन अमरू ने भी दो पैसे पुण्य किया और नक़ारखाने में ज़ाहिर नौबत बजने की आज्ञा दी तत्पश्चात् अमीर महल से निकलकर बाहर आये और सब छोटे बड़ों से मिलकर यथाउचित सबको ख़िलअत देकर प्रसन्न करके महल में आकर मेहरनिगार के पास बैठे और मलिका भी स्नान करके पोशाक बदलकर बैठी लिखनेवाला लिखता है कि जब नौशेरवां के कान में

नौबत आदि बाजों के बाजने का शब्द पहुँचा तो उसने अपने सिपाहियोंको बुलाकर पूछा कि यह क्या होरहा है सिपाहियों ने कहा कि क़िले में नौबत बजरही है शब्द सुनाई पड़ता है सुनते हैं कि हमज़ा काफ़से ईश्वरकी कृपासे कुशलानन्द से आया बख़्तक ने कहा कि अमरूको फिर कोई जाल सूझा होगा तब बादशाह ने बुज़ुरुच-मेहर से पूछा कि आपके बिचार में क्या आता है उन्हों ने कहा कि हिसाब से तो विदित होता है कि हमज़ा आया होगा और इसी बिचार से मैंभी बसरे से आया हूं कि चलकर अमीरहमज़ा से मुलाक़ात करके काफ़ का सब वृत्तान्त उनसे सुनूं अब अशकर देवके पुत्र का हाल सुनिये कि जिससमय वह बनमें चरने को गया तो वहां नौशेरवां के घोड़े भी चररहे थे तो अशकर ने क्रोधित होकर बहुत से घोड़ों को टापों से मारडाला और शेष जो बचरहे वे सायंकाल को अपनी सेना की तरफ़ भागे तो अशकर भी उनके पीछे दौड़ा जो व्याकुल होकर गये तो तोड़ते फांदते अपने थानपर पहुँचे तब लोग अशकर के तरफ़ पकड़ने को दौड़े तो जोही उसके सामने आता था उसीको पकड़कर मारडाला इसीप्रकार से हज़ारहों काफ़िरों को अशकर ने मारा नौशेरवां की सेनाने जाना कि मुसल्मानों ने छापा मारा है आरूढ़ होकर अपनीही सेनाको शत्रु की सेना जानकर प्रातःकालतक युद्ध कियाकिये जब प्रातःकाल हुआ तो देखा कि सब आपही मरेहुये पड़े हैं शत्रुका कहीं नाम नहीं नौशेरवां अशकर को देखकर मोहित होगया और आज्ञा दी कि किसी युक्ति से इस घोड़े को पकड़ो तब जो उसके पकड़ने के लिये जाता तो वह घाव लेकर पलट आता किसीने क़ाबू न पाया अमीर ने अमरू से कहा कि रात्रि से अबतक नौशे-रवां की सेना में शोर गुल होरहा है जाकर देखो तो क्या कारण है क्यों शोर गुल होरहा है इतने में एक सिपाही ने आकर सब हाल अमीर से कहा तब अमीर ने अमरू से कहा कि वह घोड़ा मेरा है तुम जाकर उससे कहो कि ऐ पुत्र! आरनाइस बलानिसा तुझको साहबकिरां ने बुलाया है मैं तेरे बुलाने के लिये आया हूं तो वह उसी दम तुम्हारे साथ चला आवेगा तुम निस्संदेह होकर उसको यहां लेआना अमरू ने अमीर की आज्ञानुसार जाकर घोड़े से अमीर का संदेशा कहा तब वह अमरू के साथ हुआ तब अमीर क़िले से नीचे आकर अशकर को गले से लगाकर क़िले में लेआकर अमरू का सब हाल उसे सुनाकर कहा कि यही तुम्हारी सेवा किया करेगा किसी प्रकार से तुमको दुःख न होने पावेगा और अमरू को आज्ञा दी कि अशकर को सब घोड़ों के आगे बांधना और खाने पीने की ख़बरदारी रखना उसके दूसरे दिन आदी ज़हरमिश्री बहलोल व ख़्वाजे आशोब समेत आया ज़हरमिश्री को तो अमीर ने मेहरनिगार के पास महल में भिजवा दिया और आज्ञा दी कि सदैव मलिका के पास रहे और ख़्वाजे आशोब बहलोल को अपने साथ रहने की आज्ञा दी आदी ने चुपके से अमरू को बुलाकर कहा कि इस संदूक़ में बहुतसे जवाहिर हैं इसको तुम लेजाओ अपने पास रक्खो तब तो अमरू अति प्रसन्नता

साथ उस संदूक को लेकर एक कोठरी में जाकर ज्योंहीं संदूक खोला तो उसमें से एक देव निकला और अमरू के ऊपर मारनेको दौड़ा तब अमरू डरकर भागा और एक कोने में खड़ा होकर ज़हरमोहरा वजाने लगा जब अमीर ने ज़हरमोहरे का शब्द सुना तो उस समय में मेहरनिगार के साथ लेटा था सुनतेही उठकर दौड़ा कि अमरू पर क्या आफ़त आई कि वह सफ़ेद मोहरा बजारहा है मेहर-निगारको साथ लेकर सहनमें आकर खड़ाहुआ मुक़बिलभी ज़हरमिश्री के साथ लेटा था अमीर का आहट पाकर निकल आया तो वहभी अतिव्याकुल हुआ अमीर ने जो कान लगाकर सुना तो विदित हुआ कि फ़लानी कोठरी से ज़हरमोहरे का शब्द आरहा है अमीर उस कोठरी के तरफ़ जो गये तो दरवाज़ा भीतर से वन्द पाया एक लात मारकर दरवाज़ा तोड़ भीतर जो गये तो देखा कि वही देव जिसको अमीर ने क़ैदकरके आदी को दिया था तलवार लिये अमरू के मारने को आरूढ़ है और अमरू एक कोने में खड़ा ज़हरमोहरा बजारहा है जाकर उस देव को कमंद से बांध कर पृथ्वीपर गिरादिया और बाहर लाकर मेहरनिगारके सामने पकड़कर चीरडाला तब सबलोग अमीर के बलकी प्रशंसा करनेलगे और मलिका ने बहुतसी अशरफ़ी रुपया पुण्य किया और अमरू जो उसके डर से बेहोश होगया था जब लोगोंने गुलाब छिड़ककर सावधान किया तब आदी से अमरू ने कहा कि यह तूने मेरे साथ क्या किया कि मुझको इतना दुःख मिला अच्छा मैं भी इसका बदला लूंगा आदी ने हँसकर कहा कि ख्वाजे मैं तुम्हारे कहने से ज़िन्दा गोर में गाड़ागया था मैं कुछ उसका बदला लूं या नहीं फिर सुलह कराके अमीरने दोनों को मिलवादिया अमरू अति प्रसन्न हुआ और अमीर को आशीर्वाद देनेलगा अमीर ने कहा कि अमरू तू न डर आसमानपरी तेरे लिये बहुतसी बस्तु लावेगी॥

इति तीसरा भाग सम्पूर्णम्॥

चौथाभाग॥

साहबकिरां अर्थात् हमज़ा का वृत्तान्त॥

लेखकलोग अति तेज़ लेखनी से स्वच्छ काग़ज़ पर यों लिखते हैं कि जब नौ-शेरवां और बख़्तक आदिको अमीर का आना विदित हुआ तो बख़्तक ने बादशाह से कहा कि हमज़ा अठारह वर्षके पश्चात् परदेकाफ़ से आया परन्तु आपके समीप न आया तो इससे विदित होताहै कि बादशाह सप्तदेशी की बेटीको बलात्कार से लेने की इच्छा रखताहै ऐसे में तबलजङ्ग बजवाकर उससे युद्ध करने को आरूढ़ हूजिये कि वह थकामांदा है और आपकी सेना युद्ध करने को आरूढ़ है आसानीसे उसको मारकर मलिका को छीनलेवेंगे नौशेरवां भी उसके आब में आगया और तबलजङ्ग बजवानेकी आज्ञा देकर युद्ध पर आरूढ़ हुआ जब यह ख़बर अमीर को पहुँची तो

उसने भी तबलजङ्ग बजवाने की आज्ञा दी तब वह चीनी व क़लावचीनी ने अठारह मनकी चोब उठाकर तबल सिकन्दरीपर देमारा तो उसके शब्द से नौशेरवाँ के सिपाहियों के कानके परदे फटगये और रुधिर बहनेलगा और बहुत से सिपाही बहिरे होगये इसी प्रकार से रात्रिभर दोनों सेनाओं में युद्धका डङ्का बजाकिया और प्रातःकाल होतेही जो पहलवान कि सदैव युद्ध करने के लिये आरूढ़ होते थे अपना सब सामान करके शस्त्रआदिक लेकर घोड़ों को दोहरी तङ्ग से कसकर और सबसें मिलकर ईश्वर का ध्यान करने लगे और बहुत से मनुष्य ताना देनेलगे कि देखें कल किसका शिर घोड़े के नीचे आता है और किसकी तलवार बहादुरी दिखाती है और इसीके लिये सालों से बैठे खाते थे अब वह दिन आपहुँचा और जो लोग सदैव घरमें बैठे ढोल और सितार बजाया करते थे युद्ध के डङ्के का शब्द सुनकर व्याकुल होगये और अपने साईसों से कहा कि रात्रि को घोड़ों को कसकर तैयार रखना हम तो अपने घर की राह लेवेंगे हमसे तो यह न होगा कि वृथा प्राण देवें आजही से तैयारी होती है कल तो लाखों मारेजावेंगे साईसों ने कहा कि ऐसा क्या है जिसकी मृत्यु होती है वही माराजाता है और जो ऐसा चित्त है तो सिपाहियों में नौकरी क्यों की थी? वेश्या के पीछे तबला बजाया करते या घरमें बैठे मलारें गाते तब तो उसने झुलझुलाकर कहा कि ओ उल्लू तू बड़ा बुद्धिमान् है जो नसीहत कररहा है हमने अपनी खुशी से सिपाहियों में चेहरा नहीं लिखवाया है ईश्वर ईमानराय बेलवाले चीनी का नाश करे कि उसने ख़रची बटोरकर एक घोड़ा मोल लेकर मुझको इस बला में बख़्शी को सेंत में मरवाकर मेरा नाम सवारों में लिखवादिया है नहीं तो हम कब इस बला में पड़ते थे कि हम रुधिर देखने से व्याकुल होजाते हैं कि एक दिन पिता ने फ़स्त अपनी खुलवाई थी तो हम रुधिर देखकर पहर भरतक बेहोश पड़ेरहे और कहीं एक कांटा भी गड़जावे तो एकपैसे की भांग खिलाकर निकालतेथे नहीं तो ऐसे रोते कि निकटवासीलोग रात्रिभर न सोनेपाते और जबसे इस सेना में नौकर हुए हैं सदैव भागने में आगे और मारने में पीछे रहे हैं हमने कभी युद्ध नहीं किया तू अभी थोड़े दिनों का नौकर है तू हमारा हाल क्या जाने आज सुनते हैं कि बादशाह सतदेशी सबकी युद्ध में परीक्षा लेवेगा इस लिये हम पहलेही से अपना प्राण लेकर भागते हैं यही न कि पन्द्रहदिन की तनख़्वाह काट लेवेंगे या नौकरी से छुड़ा देवेंगे तो बलासे अपना दियासलाई बेंचकर खावेंगे युद्ध करने न जायँगे परन्तु नौशेरवाँ का चित्त उस दिन ऐसा बढ़ा था कि दो घड़ी रात्रि रहे मसाल बराबर से जलवाकर सब सरदारों और सेना समेत युद्धके खेत में आकर युद्ध करने को आरूढ़ हुआ अमीरने भी यह हाल सुनकर मुक़बिल से संदूक़ मँगवा कर जिरह पहिनकर सब शस्त्र धारण करके अशकर पर सवार होकर युद्ध करनेको आरूढ़ हुआ तो सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर अमीर के साथ नौशेरवाँ की सेनाके साथ युद्ध करने को आरूढ़ हुए और कई सहस्र [illegible] और

महताबियां अमीर के घोड़ेके आगे २ जलाये हुए और क़दम २ पर महताबी छुड़ाते थे और अमरू चारसौ सिपाहियों समेत अर्धमुकुट शिरपर रक्खे और सीमुर्गका पर ऊपरसे खोंसे अमीर के घोड़ेकी बाग पकड़ेहुए आगे २ चलाजाताथा और सरदारों ने इस प्रकार से अमीर को बीच में करलियाथा जिसतरह से अमीर मानो दूलह थे और सब सरदारलोग बराती विदित होते थे देखकर लोग अतिप्रसन्न होते थे इसी प्रकार से बड़ी धूमधाम से जाकर युद्ध के खेत में पहुँचे तो हरएक सरदारों ने अपनी सेनाको युद्ध करनेपर आरूढ़ किया तब मज़दूरोंने झाल झांखर काटा और बेलदारों ने फरुहे से पृथ्वी को बराबर किया तब भिश्तियों ने मशक लेकर पानी से पृथ्वी को स्वच्छ किया तो यमराज ने आकर खेत में डेरा किया तो हरएक के डरके मारे प्राण निकलनेलगे और मङ्गलग्रह हरएक के मस्तक पर चमकने लगा और झण्डे-बरदार बड़े ज़ोर से पुकारनेलगे कि जिसको आज बहादुरी दिखाना हो वह आकर युद्ध पर आरूढ़ होवे और मैदान में अपनी बहादुरी दिखावे दोनों सेना के सिपाही व्याकुल होगये मृत्यु का बाज़ार प्रचण्ड हुआ और सबने एकबारगी सन्नाटा मार लिया इतने में नौशेरवां की ओर से एक पहलवान सासानी कोहपैकर नाम अपनी सेना से घोड़ा कुदाकर निकला और बादशाह के तख़्त को बोसा देकर आज्ञा मांगी तब नौशेरवां ने अतिप्रसन्नता के साथ एक गिलास शराब देकर पीठ ठोंककर आज्ञा दी मानो वह गिलास आख़िरी था पीकर मैदान में आकर ललकार २ कर कहने लगा कि ऐ मुसल्मानो ! तुममें जिसको यमपुरी में मेरे हाथ से जाने की इच्छा होवे वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे साहबक़िरां ने मन्त्र पढ़कर अशकर को उसके घोड़े के बराबर लाकर एक डाट ऐसी मारी कि उसका घोड़ा डरकर पीछे हटगया और डरके मारे उसका रङ्ग बदलगया तो अमीरसे कहनेलगा कि हमज़ा ! तू ऐसा बुद्धिमान् और बहादुर होकर बादशाह से शत्रुता रखता है उचित है कि चलकर बादशाह के पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा करा अमीर ने कहा कि युद्ध करने आया है या सुलह कराने युद्ध करने के लिये आया हो तो सीधे युद्ध कर नहीं तो अपनी सेना की राह ले मैं ऐसा पागल नहीं हूं कि तेरी बातों में आऊं तब तो उस सिपाही ने बल्छी लेकर घोड़े को फेरा और अमीर ने भी बल्छी लेकर अशकर को चुचकारके उसके सम्मुख किया तो उसने एक बल्छी अमीर के ऊपर चलाई अमीर ने उसको रोंकलिया और दो २ हाथ चले थे कि अमीर ने घोड़े को फेरकर दाहिनी तरफ़ करके बल्छी मारने की इच्छा की परन्तु वह भी सिपाहगरी की विद्यामें निपुण था अपने घोड़ेको बाईंतरफ़ फेरकर अमीर के ऊपर एक बल्छी चलाई तो अमीर कूदकर अशकरकी काठी से पीछे होरहे और उसके वार को रोंक कर फिर ज़ीनपर आकर घोड़े को फेरकर जो मारा तो उसकी बल्छी टूटकर आधी पृथ्वीपर गिरपड़ी और आधी उसके हाथ में रहगई अमीर की इस फेर को देखकर मित्र वा शत्रु सबने प्रशंसा की अमरू ने जवाहिर लगेहुए उस नेज़े में देख दौड़

कर उठालिया और चूमकर अपने झोरे में रखकर कोहपैकरसे कहनेलगा कि वह टुकड़ा भी मुझको देदे तू क्या करेगा मेरे काम आवेगा उसने जवाहिर की लालच से कहा कि हे पापी! एक तो तूने लेलिया और दूसरा भी मांगता है अमरू ने कहा कि तू नहीं जानता कि गिरे पड़े का मैं स्वामी हूं तू खुशी से देदेगा तो अच्छाही है नहीं तो मैं छीनकर तुझको लज्जित करूंगा तब वह क्रोधित होकर कहने लगा कि देखेंगे किसतरह से तू लेता है यह कहकर उसी टुकड़े से चाहा कि अमरू को मारें इतने में अमरू ने ढेलवांसमें एक पत्थर रखकर घुमाकर उसके हाथमें इस ज़ोर से मारा कि उसका हाथ सुन्न होगया और वह टुकड़ा पृथ्वीपर गिरपड़ा अमरू ने दौड़ कर उसको उठालिया और अपने झोरे में रखकर कहनेलगा कि देख इस प्रकारसे अहमक़ों को धोखा देकर लेते हैं यह कहकर अपनी सेना में जाकर खड़ा हुआ तब उसने लज्जित होकर अमीर से कहा कि मैं तेरे साथ बलछी से बिजय न पासकूंगा इसमें तो धोखे की बात होजाती है अब हमारी तुम्हारी तलवार से युद्ध हो और इसमें अपनी २ बहादुरी दिखावें तब अमीर ने कहा कि इस से क्या उत्तम है यह तो मैं चाहताही था कि तेरी तलवार की भी बहादुरी देखूं इतने में उसने तलवार मियान से निकालकर चलाया तब अमीर ने उसको अपनी ढालपर रोंककर अपनी तलवार खींचकर ललकारा कि ख़बरदार हो अब मैं भी वार करताहूं यह न कहना कि मुझ को धोखा देकर मारा देख तलवार और वार इसको कहते हैं यह कहकर एक तल-वार उसके ऊपर चलाई हरचन्द उसने भी बहादुरीसे रोंका परन्तु वह ऐसी तलवार न थी कि वार ख़ाली जावे ढालको काटती हुई शिरसे घोड़े को काटकर पार होगई उसका पृथ्वीपर गिरना कि नौशेरवां ने एक आह मारकर सेना से कहा कि ख़बर-दार यह जाने न पावे जिस तरहसे बनपड़े मारडालो सेना आज्ञा पातेही टीड़ी के समान अमीर के ऊपर आगिरी तो मुसल्मानी सेना भी ढाल तलवार और बलछी और तीर आदिक लेकर ईश्वर का नाम लेकर टूटपड़ी और तलवार चलनेलगी तो एक सायत में चालीस सहस्र सवार नौशेरवां के मारेगये शेष भाग खड़ेहुए कोई मुसल्मानी सेना का सामना न करसका अमीर ने उसी दिन चारकोस का पीछा किया था और कभी किसी सेना का पीछा न किया था और पलटती समय बिजय का डङ्का बजवाते हुए बहुत से शत्रुओं के सिपाहियों को पकड़े हुए चले और उस दिन इतना माल और असबाब पाया कि सब लोग धनवान् होगये अमीर बिजय पाकर अपने सरदारों समेत पलटकर अपने क़िलेमें दाख़िल होकर नाच रङ्ग करवाने लगे तत्पश्चात् अमीर ने पूछा कि हमारे पीछे तुम पर क्या २ दुःख पड़ाहै तब अमरू ने सब वृत्तान्त अमीर से कहा इतने में ख़्वाजे आशोब और बहलोल से अमीर ने बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है तुम किस कार्य को पसन्द करते हो? उन्होंने कहा कि हमलोगों को सौदागरी करने की इच्छा है तब अमीरने कई सहस्र अशरफ़ी देकर राहदारी का परवाना लिखकर जाने की आज्ञा दी तत्पश्चात् अमीर

ने अमरू से पूछा कि हमारे पीछे कभी लन्धौर और बहराम भी आये थे या नहीं अमरू ने कहा कि मैंने कई पत्र उनको लिखा था परन्तु न उत्तरही लिखा न कभी मेरी सहायता के लिये आये परन्तु जब कोई शत्रु मुझपर सेना लेकर आता था तो एक नक़ाबदार नारंजीपोश आकर मेरी सहायता करता था और उससे हज़ारहों मनुष्य मारेजाते थे और अनेक प्रकारसे मैंने उससे पूछा कि तू कौन है? परन्तु सदैव उसने यही उत्तर दिया कि अभीतक हमसे कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ कि अपना मुखं किसीको दिखलावें और जब मैंने अधिक हठ किया तो उसने कहा कि जब ईश्वर हमज़ा को लावेगा तो मेरा हाल उससमयं तुमको बिदित होगा तब अमीर ने क्रोधित होकर आज्ञा दी कि आजसे जो कोई लन्धौर और बहरामका नाम लेगा उसकी ज़बान निकलवा डाली जावेगी और उसको अतिलज्जित करूंगा और जब अमीर के आनेकी ख़बर सब बादशाहोंको पहुँची तो सब सौगात लेकर अमीर के पास आकर हाज़िर हुए और अशरफ़ी रुपये नेवछावर करके मंगनोंको बांटदिया और जो न आसके उन्होंने रुपये अशरफ़ी सौगातसमेत भेजकर अमीर को अतिप्रसन्न किया लन्धौर और बहराम भी सुनकर अतिप्रसन्न हुए लन्धौर ने बहराम से कहा कि हमको तुमको बीस बाइस बर्ष रहते ब्यतीत होगये और अबतक इस देश के शत्रुओं से निर्भय न हुए और अमरू के ऊपर बड़े २ शत्रुओंने इस कालमें चढ़ाई की होगी परन्तु हम में से कोई उसकी सहायता को न गया इससे निश्चय है कि साहबकिरां सुनकर अतिक्रोधित हुए होंगे इससे उचितहै कि अब अमीर के क़दमों पर चलकर गिरें और अपना अपराध क्षमा कराकर प्रसन्नता प्राप्त करें नहीं तो लोग नमकहराम कहेंगे संसारमें लज्जित होंगे तब बहराम ने कहा कि यह तो अतिउत्तम है तुम आगे चलो मैं भी आताहूं और अमीरके चित्तको प्रसन्न करके आनन्द प्राप्त करता हूं यह कहकर बहराम तो चीनकी तरफ़ चलेगये और लन्धौर अपनी सेना को क़िलेपर स्थित करके अमीर के समीप जाकर हाज़िर हुआ तो अमीर ने बुला कर अतिलज्जित किया तब लन्धौर ने अनेकप्रकार से अपने वृत्तान्त को बर्णन करके अपना अपराध क्षमा कराके बहराम की भी सिफ़ारिश की पीछे को अमीर ने उसका अपराध क्षमाकरके अपने समीप बैठाकर सेनापति का उपनाम देकर अतिप्रसन्न किया अमरूसे पूछाकि कुछ बिदित हुआ कि नौशेरवां किस दिशा को गया है तब अमरू ने कहा कि पूर्वकी तरफ़ गया है वहां के अधिपति ने पांचलक्ष सेनासमेत एक सेनापति को नौशेरवां की सहायता के लिये भेजा है सो वह आकर आपके समीप पहुँचगया है थोड़ीसी सेना तमसा नदी के उस पार है और कुछ इस पार उतर आई है यह सुनकर अमीर ने भी आज्ञा दी कि हमारी सेना भी चलकर नदी के समीप युद्ध पर आरूढ़ होकर पड़े और नाच रङ्ग का सामान इकट्ठा कियाजावे यह आज्ञा पातेही सब सेनापति अपनी २ सेना लेकर युद्ध करने को आरूढ़ होकर अमीर के साथ होकर बड़ी धूमधाम से जाकर नदी के किनारे उतरे और नाच रङ्ग होने लगा

इतने में सिपाहियोंने आकर खबर दी कि मुक़बिल वफ़ादार हरमुज़ ताजदार और बख़्तक को बांधकर लिये आता है यह सुनकर अमीर अतिप्रसन्न हुए विदित हो कि जिस दिन युद्ध अतितीक्ष्ण हुआ था उसी दिन हरमुज़ ताजदार और बख़्तक क़िले को खाली जानकर पांचसहस्र सवारसमेत मलिकामेहरनिगार के लाने के लिये गये थे तो वहां मुक़बिल चालीससहस्र सवारसमेत क़िले में बैठा था उसने पांच सहस्र सवारों को मारकर उन दोनों के हाथों को बांधकर अमीर के समीप पहुँचाया तो अमीर अतिप्रसन्न हुए साहबकिरां ने हरमुज़ से कहा कि जो आप मुसल्मान होवें तो यह राज्य आपही के लियेहै प्रसन्नताके साथ मुसल्मान होकर गद्दीपर बैठ कर राजधानी कीजिये बख़्तक ने विचारा कि हरमुज़ तो बचभी जावेगा परन्तु मेरा प्राण न बचेगा इस विचार से हरमुज़ को स्वीकार करने की सम्मति दी जिससमय हरमुज़ और बख़्तक प्राणकी रक्षाके लिये ईर्षा चित्त में रखकर मुसल्मान हुए तब साहबकिरां ने हरमुज़ को राजगद्दी पर बैठाकर बख़्तक को सेनापति बनाकर अति प्रसन्न होकर प्रसन्नता के डङ्के बजवाने लगे और नाच रङ्ग की सभा बन्द हुई तीन दिवसके पश्चात् चारघड़ी दिन रहे अमीरअतिप्रसन्नताकेसाथ वनकी हरियाली देख रहे थे कि आकाश से तीन मोर आकर उसी वनमें उतरे अमीर ने देखकर मुक़-बिल वफ़ादार और अमरू यारको उनके देखनेके लिये भेजा परन्तु वे जातेही लोप होगये तो देखनेवाले इस हालको देखकर बड़े संदेह में हुए लिखनेवाला लिखता है कि वे मोर न थे परन्तु आसमानपरी थी जोकि परदेकाफ़ से सेना समेत आकर दो कोसकी दूरीपर उतरकर हरियाली देखकर चित्त प्रसन्न करने को मोरका भेष धारण करके आई थी उसीने अब्दुलरहमान आदि को अमीर के पता लेने को भेजा था थोड़े समय के बाद आकर अमीर ने प्रसन्न होकर अपने समीप कुरसीपर बैठालकर अतिप्रसन्न करके सर्व वृत्तान्त आसमानपरी के आने का पूछा और हरमुज़ ताजदार आदि सेनापतियों से आसमानपरीके आनेका सर्व वृत्तान्त कहकर अमरू से कहा अब प्रसन्न हो आसमानपरी तुम्हारेलिये बहुत सामान परदेकाफ़ से ले आई होगी अमरू यह हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और रात्रिभर नाच रङ्ग हुआ किया प्रातःकाल होतेही अमीर तैयार होकर आसमानपरी के पास जानेको आरूढ़ हुए सब सेना के सरदारोंसमेत अब्दुलरहमान ने पहलेही से सलासल परीज़ाद को आसमानपरीके पास भेजादिया था उसने जाकर आसमानपरी से कहा कि अमीर बड़ी धूमधाम से आपकी मुलाक़ात को आतेहैं तब उसने अतिप्रसन्न होकर अपने डेरे से क़िलेतक बाग़ आराम बनाकर रचदिया जिस समय अमीर बारगाह सुले-मानीपर पहुँचे तो सबको बाहर छोड़कर आप खेमेके भीतर गये तो आसमानपरी क़रीशा को साथ लेकर सरदारों समेत अमीर की अगवानी को उठकर आई और हँसकर अमीर से कहा कि आप तो मुझको छोड़कर चलेआये थे परन्तु मैं आपही आई और मेहरनिगार के ब्याह का सामान भी साथ लेआई हूं तब अमीर ने पूछा

कि क्या २ लाई हो ? हमको दिखलाओ आसमानपरी ने कहा कि बारगाह सुलेमानी नक्कारखाना सुलेमानी चार बाज़ार आदि और २ प्रकार के जवाहिर अमीर ने अतिप्रसन्न होकर करीशा को छाती से लगाकर आसमानपरी को भी प्यार करके सब सरदारों से कुशलआनन्द पूछकर अतिप्रसन्न किया तब आसमानपरी अति प्रसन्न हुई और एक कुरसीपर बैठकर बातें करनेलगे तब हमज़ा ने आसमानपरी से कहा कि अमरू जिसकी प्रशंसा हम आपसे कियाकरते थे वह भी आपके समीप आनेकी इच्छा रखता है आसमानपरी ने कहा कि अच्छा बुलवालेओ अमरू जब खेमे के अन्दर गया तो सिवा अमीर के और किसीको न देखा तो बड़े संदेह में हुआ कि ऐसा खेमाहै परन्तु सिवा अमीर के और कोई दिखाई नहीं पड़ता तब अमीर से पूछनेलगा कि कृपा करके मुझेभी मलिका का स्वरूप दिखलाइये कि जिसके स्नेह से आप अठारह वर्ष परदेकाफ़ में पड़े रहे तब अमीर ने कहा कि तू सलाम क्यों नहीं करता आसमानपरी तख़्तपर बैठी है अमरू ने कहा कि मुझको तो दिखाईही नहीं पड़ती क्या मैं कुरसियों और तख़्त को सलाम करूं ? मेरा ऐसा सलाम नहीं है तब आसमानपरी ने उसके दाहिने नेत्र में सुलेमानी सुरमा लगा दिया विदित हो कि दाहिने नेत्र में सुरमा लगाने से देव दिखाई पड़ते हैं और बायें नेत्र के लगाने से परी दिखाई पड़ती हैं अमरू की दाहिनी आंख में सुरमा सुलेमानी जो लगाया तो अमरू को देवों का स्वरूप दिखाई पड़ने लगा तब अमरू ने अमीरसे पूछा कि इसमें आपकी स्त्री कौन है ? कृपा करके दिखला दीजिये अमीर अमरू की बातोंपर हँसने लगा और मलिका भी हँसते हँसते तख़्तपर लोट गई और आज्ञा दी कि इसके बायें नेत्र में भी सुरमा लगादेओ अब इसको मेरा स्वरूप दिखादो तब बायें नेत्र में सुरमा लगादेनेसे परियों को देखनेलगा तो देखा कि एक तख़्तपर एक स्त्री अतिस्वरूपवती बैठी है और एक युवा लड़की अमीर के स्वरूप की उसकी गोद में है जिसके स्वरूप के देखने से लोग बड़े संदेह में होते थे चित्त में बिचार किया कि विदित होता है कि यह लड़की अमीर की है तख़्त के समीप जाकर मलिका को सलाम किया और साहबकिरांसे कहनेलगा कि हे अमीर ! आसमानपरी यही है जिसके लिये अठारह वर्षतक आप दुःख में पड़ेरहे मैं तो ऐसी स्त्री से जाज़रूरका लोटाभी न रखवाता न इसके छुये बर्तन में भोजन करता यह सुनकर मलिका अति दुःखित हुई तब अमीर ने जिन्नीभाषा में कहा कि तुम दुःखी न हो यह तो इसकी एक छोटीसी हँसी है अभी जो आप इसको कुछ देवें तो देखिये कि कैसी २ बातें आपको सुनाता है और मैंने काफ़ में इसका सब हाल पहलेही कहा था यह बड़ा दुष्ट है कि जिसकी बातों से लोग बड़े संदेह में होते हैं तब आसमानपरी ने आंसू पोंछकर एक सुनहली खिलअत और बहुतसा द्रव्य समेत अमरू को दिया उसने खिलअत को पहिनकर सलाम किया और चुटकी बजा बजाकर इस खेलको अपने मसखरापन से गानेलगा ॥

शेर ॥

क्या तेरे हुस्नकी तसवीर है अल्लाह। सूरहनूर की तफ़सीरहै अल्लाह ॥

और अमीर की तरफ़ देखकर कहने लगा कि ऐ साहबकिरां! मैं पहलेही से जानता था कि कोई अप्सरा आपको मिलगई है कि जिसको छोड़कर आप नहीं आसक्ते थे पहले मैं जानता था कि मेहरनिगारही केवल संसार में स्वरूपवती है परन्तु इस मलिका के सामने उसकी सुन्दरता कुछ नहीं है फिर क्यों न हो कहां मनुष्य और कहां परीज़ाद आसमानपरी अमरू की बातोंपर हँसनेलगी और बहुतसा जवाहिर और उत्तम २ वस्तु काफ़की अमरू को देकर निहाल करदिया तत्पश्चात् आसमानपरी ने अमीर के सेनाके सरदारों को बहुतसी उत्तम २ वस्तु देकर अति प्रसन्न किया और अमीर से कहा कि मेहरनिगार के ब्याहका सामान अति शीघ्रही इकट्ठा करो यद्यपि मैं परदेकाफ़ से सब सामान लेकर ब्याहके लिये आई हूं परन्तु इस देश की रीतिके सामान अवश्य होना उचित है और मेरी इच्छा है कि ब्याह विधिपूर्वक होवे मुझको हरप्रकार स्वीकार है तब तीन दिन बसके पश्चात् चौथे दिन अमीर अपनी सेना में आये चार दिन तक आसमानपरी से न छूटने पाये तब मेहरनिगार से जाकर सब हाल कहा उसने शिर झुकालिया और कुछ उत्तर न दिया तब अमीर ने बाहर आकर हरमुज़ ताजदार से सब हाल कहकर डङ्का ब्याह का बजनेकी आज्ञा देकर सामान इकट्ठा करवानेलगे और एक विनयपत्र इस समाचार का बादशाह नौशेरवां को लिखकर भेजा कि आप तो मेहरनिगार को मुझ को देचुकेथे परन्तु आजतक ऐसे उपद्रव रहे कि ब्याह करनेकी विधि न होसकी सो अबतक जो हुआ सो हुआ परन्तु अब मैं ब्याहका सामान करता हूं उचितहै कि आपभी आकर सेवकके स्थान को अपने पदों से पवित्र करें अमरू पत्र लेकर बादशाह के समीप गया जब बादशाह ने पत्र को पढ़ा तो अमरू से पूछा कि मैंने सुनाहै कि आसमानपरी परदेकाफ़ से मेहरनिगार के ब्याह के लिये सामान लेआई है उसने कहा कि सत्य है इतनेमें एक पत्रिका हरमुज़ और बख़्तक की पहुँची कि आप ब्याह करनेकी आज्ञा अवश्य देदीजियेगा कि आपकी बात भी रहजावे और अमीर भी प्रसन्न होजावेगा और जो आप न आज्ञा देवेंगे तो भी वह ब्याह करेगा और आपकी बात वृथा जावेगी तब बादशाह ने सब सरदारों को बुलाकर हरमुज़ की पत्रिका पढ़कर सुनाई तो सबने उसकी सम्मति को पसन्द किया नौशेरवां ने क़लमदान मँगवाकर अमीर की पत्रिका के उत्तर में ब्याह करने की आज्ञा दी परन्तु जानेसे इन्कार किया उस समय में अकसर सेनापतियों ने कहा कि हमने तो ऐसा ब्याह फ़क़ीरोंका भी नहीं देखा न कि अमीर का विदित होता है कि बड़े२ लोग अपने आपही ब्याह करलिया करते हैं तब बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि जो आप लोग जावेंगे तो अमीर प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर तमाशा दिखावेंगे दो चार दिन तमाशा देखकर चलेआइयेगा बहुत दिन तक वहां न वासकीजिये और नौशेरवांसे

कहा कि जो आप तमाशा देखनेकी इच्छा रखते हो तो अमरू को कुछ इनाम दीजिये कि वह आपको अपने स्थान में बैठालकर तमाशा दिखावेगा बादशाह ने इस को स्वीकार करके अमरू से कहा कि हम साधू का भेष धारण करके आवेंगे तब अमरू ने स्वीकार किया पीछे बादशाहने अमरू को ख़िलअत देकर बिदा किया और बुजुरुचमेहर भी अमरू के साथ होकर गया लिखनेवाला लिखता है कि अमीर अपने पत्र का उत्तर बिधिपूर्वक पाकर अतिप्रसन्न हुआ और हरएक मनुष्य को पत्र दिखलाकर बुजुरुचमेहरसे मिलकर उन दोनों पत्तों का रस जो हज़रत ख़िज़र ने दिये थे अपने हाथ से नेत्रों में टपकाकर नेत्रों को तारागण के समान रोशन करदिया तब बुजुरुचमेहर अमीर की अतिप्रशंसा करनेलगा और नौबत ब्याहकी बराबरसे बजने लगी और देव और परीज़ादों ने मलिका आसमानपरी की आज्ञा से बारगाह सुलेमानी को एक बड़े टीलेपर स्थित करके सब सामान ब्याह का इकट्ठा किया और अपने स्थानपर जवाहिरादिक चुनकर अति अपूर्व स्थान बनादिया और नक़ारख़ाने सुलेमानी में नौबत ब्याह की बजने लगी तब मलिका आसमानपरी ने मलिकामेहरनिगार को एकान्त में लेजाकर दुलहिन बनाकर सब ब्याहकी सामग्री बिधिपूर्वक मँगवाकर इकट्ठा किया तत्पश्चात् बरात के दिन अमीर ख़िलअत शाहाना पहिनकर अशकर देवज़ादे पर सवार हुए और सब सेनापति आदि साथ बराबरसे जवाहिर लुटातेहुए घोड़ेके चारों तरफ़ जुटकर चले और बारह सहस्र जिन्न पनशाखे और लालटेन आदि रोशन कियेहुए घोड़े के आगे चलेजाते थे और चालीस सहस्र जिन्न काफ़की आतशबाज़ी छुड़ाते हुए और बीस सहस्र तख़्त उड़नेवाले जिसपर परियां गाती बजाती थीं उड़े चलेजाते थे और ऊंटोंपर नौबत सुलेमानी बजती थी इसी प्रकार से ऐसी धूमधाम थी कि न किसीने कभी पहले देखी होगी न देखेगा और अमरू चार सहस्र चारसौ चवालिस मक्कार साथ लिये सुनहली पोशाक पहिने सवारी का प्रबन्ध करते चलेजाते थे और घोड़े इसप्रकार से कूदते जाते थे कि लोग देखकर अतिअचम्भित होते थे अशकर देवज़ादा उससमय इसप्रकार से कूदता फांदता चारों तरफ़ से चलता था कि कोई मुरछल हांकता है लोग देखकर बड़ी प्रशंसा करते थे पश्चात् को जब इस प्रकार से बरात बड़े धूमधाम से सुलेमानी बारगाह में पहुँची तो अमीर घोड़ेपर से उतर कर हुरमुज़ ताजदार के तख़्तपर बैठकर परियों का नाच देखनेलगा मलिका आसमानपरी और करीशा अपने मुसाहिबों समेत मेहरनिगार के समीप जाकर उसको ज़र और जवाहिर काफ़ के जिसको शाहनशाह काफ़ के सिवा और किसी ने न देखा था मेहरनिगार को पहिनाकर नेवछावर किया उस शोभा को देखकर आसमानपरी ने मेहरनिगार का हाथ चूमकर दुलहिन बनाकर बहुतसा जवाहिर नेवछावर करके बहुतसी जवाहिर की डालियां रखादिया उस समय की सुन्दरता को आसमानपरी देखकर अति मोहित होकर ब्याह के कारोबार में प्रवेशित हुई अब

नौशेरवां का वृत्तान्त सुनिये कि सात मनुष्यों समेत साधूका भेष धारण करके ब्याह का तमाशा देखने के लिये गया तब अमरू ने नौशेरवां को पहिँचानकर कहा कि आप चलकर सभा में बैठिये और तमाशा देखिये नौशेरवां ने मंजूर न किया अमरू ने कहा कि मैं आपको ऐसे स्थान पर बैठालूंगा कि आप सबको देखें और आपको कोई न देखसके इस बात को बादशाह ने मानलिया और अतिआनन्द के साथ बादशाह अमरू के साथ होकर बारगाह सुलेमानी में आया तो अमरू ने जवाहिर की कुरसियोंपर बड़ी प्रतिष्ठा के साथ बैठाया और साक़ी अर्थात् शराब पिलानेवालों को मदिरा बांटने की आज्ञा दी कि सबको अच्छीतरह से पिलाओ नौशेरवां चार घड़ी के पश्चात् उठ खड़ाहुआ और अमीर को आशीर्वाद देकर कहने लगा कि बाबा हम साधू हैं सैर करने को आये थे अब बिदा होते हैं कृपा करके प्रसन्नता के साथ विदा कीजिये तब अमीर ने अय्यारी भाषा में अमरू से कहा कि इनको चारताक के ऊपर लेजाकर बैठाओ और ऐसी युक्ति करो कि प्रसन्नता से बादशाह तमाशा देखें अमरू ने नौशेरवां को चारताक के ऊपर बैठालकर जो सामान कि उचित थे रखकर उनके चित्तको अतिप्रसन्न किया तत्पश्चात् चारघड़ी रात्रि रहे ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर ने अमीर का ब्याह मेहरनिगार के साथ मतानुसार करदिया प्रातःकाल होतेही महल में दुलहे की पुकार हुई तो अमीर जो महल के पहले दरवाज़े पर पहुँचे तो आसमानपरी ने दरवाज़ा बन्द करलिया और कहा कि दरवाज़ा उसी समय खुलेगा जिससमय मेहरनिगार की न्यवछावर देलेओगे तब अमीर ने मुक़बिल वफ़ादार के चालीस हज़ार सवार जरीकम समेत मेहरनिगार के बदले में दिया तब आसमानपरी ने दरवाज़ा खोला फिर दूसरा दरवाज़ा बन्दकिया इसी प्रकार से सात दरवाज़ोंपर सात बस्तु आसमानपरी ने मेहरनिगार के लिये लीं और अमीर ने निस्संदेह दीं तब आगे जाने पाये और अमीर मेहरनिगार को दुलहिन बनकर मसनदपर बैठे देख अतिप्रसन्न हुए ईश्वर का धन्यबाद देने लगे तत्पश्चात् मेहरनिगार का हाथ पकड़कर छपरखट पर लेगये और गोदमें बैठाकर स्नेह की बातें करनेलगे एक घड़ी के पीछे दोनों में हाथ पैयां होनेलगी तब अमीर ने दम दिलासा देकर अपनी इच्छा पूर्ण की और ईश्वर की कृपा से उसी रात्रि को गर्भ रहगया प्रातःकाल स्नान कर वस्त्र धारण करके बारगाह सुलेमानी में आकर बैठे और दिनभर आनन्दरूपी तमाशा देखतेरहे रात्रि को मलिका आसमानपरी के साथ भोग करने को गये और उसके दूसरे दिन मलिका रैहानपरी के साथ भोग किया तीसरे दिन समनसीमापरी के साथ भोग किया इसी प्रकार से हरदिन सब स्त्रियों के साथ भोग करने से आनन्द पातेरहे चालीसदिनतक नाच रङ्ग के सिवा और कुछ कार्य न हुआ एकदिन अमीर चारताक की सैर को सवार होकर अरदली समेत बाहर गये थे कि संयोगवश आकाश से एक देव रदशातिर का भाई जिसको अमीर ने मारा था आकर अमीर को अकेला देखकर मारने को दौड़ा अमीर ने वार

रोककर उसको पकड़कर दो भाग करके फेंकदिया इस बल को देखकर सबलोग बड़े आश्चर्य में हुए नौशेरवां बेहोश होकर बड़ी देरतक पड़ा रहा अमीर ने गुलाबआदि छिड़ककर चैतन्य किया अमीर के पास बिदा होने के लिये साधू का भेष धारण करके गया तब अमीर ने नौशेरवां से कहा कि अग्निका पूजन छोड़कर ईश्वरभक्त हो हम तुम्हारी बड़ी सेवा करेंगे तब बादशाह ने कहा कि हमारे यहां ऐसी बात नहीं है कि अपना धर्म छोड़कर दूसरे का धर्म स्वीकार करें पीछे को अमरूने बहुत सी सौगात बादशाह को सरदारों समेत देकर बिदा किया तब बादशाह ने अपनी सेना को इकट्ठा करके दूसरे दिन मदायन की यात्रा की तत्पश्चात् मलिका आसमानपरी ने भी सब सौगात काफ़की अमीर को देकर बिदा मांगी तब अमीर ने गले से मिलकर कहा कि जिसप्रकार कि हम तुमसे दुःखित थे वैसेही अब प्रसन्न हुए अब जिससमय तुम हमको बुलाओगी उसी समय जो किसी युद्ध में न होंगे तो चलेआवेंगे और तुम्हारा तो घरही है जब चित्त चाहे तभी चली आना और करीशा के मुखको चूमकर जो बस्तु उसके देने के योग्य थी देकर बिदा किया और रैहानपरी और समनसीमापरी भी अमीर से बिदा होकर मलिका के साथ हुईं साहबकिरां सब देश पूर्वी शाहतेग़मग़रबी को देकर उस देश का उसको स्वामी बनाया परन्तु वह अपना कारिन्दा देश में छोड़कर अमीर के साथ हुआ अमीर दूसरे दिन अगवानी ख़ेमा भेजकर मक्केकी तरफ़ रवाना हुआ और अमरू बिनहमज़ा नामे अपने पुत्रको जोकि मलिकानाहिद मरहीम के तनसे उत्पन्न हुआ था अपने स्थानापन्न करके सब कारोबार छोड़कर मेहरनिगारके साथ भोगबिलास करनेलगे एकदिन अमरू बिनहमज़ा सभामें बैठा शराब पीरहाथा अकस्मात् आदी अकरबने नेत्र उठाकर लन्धौर से कहा कि तुझको भी इतनी सामर्थ्य हुई कि मेरी कुरसीपर बैठनेलगा तब लन्धौर ने कहा कि तू चारही प्याले में घबड़ागया और मुझसे क्रोधित होकर बातें करता है और मेरी युक्ति से नहीं डरता है और मैं तो कुरसीपर अमीर की आज्ञा से बैठाहूं आदी ने फिर तड़ककर कहा कि नहीं अमीर ने तुझको मेरी कुरसी पर बैठने की आज्ञा नहीं दी है तू झूठ कहताहै तब लन्धौर ने कहा कि आदी तू दो तीन गिलास शराब पीने से पागल होगया इतना सुनतेही आदी ने उठकर एक घूंसा लन्धौर के शिरपर मारा तब लन्धौर ने हँसकर कहा कि आदी क्यों दुष्टपना करता है होश में आ भूल न जा अमरू के पुत्र हमज़ा ने इस बृत्तान्त को देखकर आदी को ललकारकर कहा क्यों दुष्टपना करताहै आदी ने नशे के कारण चिल्लाकर कहा तुमको इससे क्या प्रयोजन है मैं और लन्धौर समझलूंगा आप चुप रहिये यह सुनकर अमीरज़ादे ने उठकर एक घूंसा ऐसे ज़ोर से लगाया कि पृथ्वी में लोटगया तब आदी अपना शिर पीटकर कहने लगा कि जब अमीरज़ादा इस प्रकारसे बेहुरमती चाहेगा तब हम इस राजसभा में किसप्रकार रहिसकेंगे जो कि यह बात सबको [illegible] आई सब सभा में शोर करने लगे तब अमीर व्याकुल हो

कर बाहर चले आये और अतिदुःखी होकर अपने बेटे से कहने लगे कि खबरदार ऐसी बात कभी न करना वे दोनों आपस में समझलेते अमीरज़ादे ने क्रोधित हो कर कहा जो फिर कदाचित् आदी ऐसा काम करेगा तब फिर कान काटके नगर से निकलवादेऊंगा अमीर ने क्रोधित होकर कहा कि गाल न मार नहीं तो मैं मार डालूंगा अमीरज़ादे की भी युवाअवस्था थी पिता की बातोंपर क्रोधित होकर कहने लगा कि किसको सामर्थ्य है कि मुझे मारे तब तो अमीर अग्नि के समान जलउठे और अमरू का हाथ पकड़कर युद्ध के मैदान में बाप बेटे दोनों घोड़े पर सवार हो युद्ध करने को आरूढ़ हुए और सबलोग बाप बेटों का युद्ध देखनेलगे तब अमीरने अमरू को आगे बुलाया उसने इच्छा की कि चलकर युद्ध करें परन्तु उसका घोड़ा आगे न बढ़सका तब अमीर ने कहा कि हे नादान! घोड़े से अदब सीख तब तो वह घोड़े पर से उतरपड़ा और अमीर भी उतरपड़े कुश्ती लड़ने पर आरूढ़ हुए अमरू ने अमीर के कमरबन्द को पकड़कर यथाशक्ति घुमाया परन्तु अमीर का पैर न उठसका तब लाचारहोकर छोड़दिया परन्तु अमीर ने अमरू के कमर में हाथ डालकर शिरतक उठाकर धीरे से पृथ्वी पर रखदिया और उसके मुख का बोसा लिया तब अमरू ने भी अमीर के पैरों पर शिर झुकाकर अपना अपराध क्षमा कराया अमीर ने उसको छाती से लगाकर कहा कि हे पुत्र! इनहीं सरदारोंही से मेरा नाम है इनकी आज्ञा माननी उचितहै और इनको अनेक प्रकार से प्रसन्न रखना उचित है तब अमीरज़ादा शरमिन्दा होकर फिर सभा में बैठा लिखनेवाले लिखते हैं कि नवें मास अमीर और अमीरज़ादे के स्त्रियों के तनसे पुत्र उत्पन्न हुए इस हाल को सुनकर अमीर अतिप्रसन्न हुए पोते का नाम तो सादान रक्खा परन्तु पुत्र का नाम न रक्खा और अमरूसे कहा कि तुम नौशेरवांसे जाकर ख़बर देओ और उस से कहो कि नाम भी आपही रक्खें अमरू थोड़े दिनोंके पश्चात् सदायन में पहुँचा और नौशेरवां से सलाम करके कहा कि नाती को ईश्वर कृपा करके और अमीर ने बिनय करके कहा है कि आपही नाम भी रक्खें बादशाह इस बृत्तान्त को सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और अमरू को ख़िलअत देकर चालीस दिन का जलसा होने की आज्ञा दी और सामान सभा का सब इकट्ठा किया और उसका नाम क़बाद रक्खा गया और मेहरंगेज़बानू ने इस वृत्तान्त को सुनकर अमरू को अपने समीप बुला कर अमीर और मेहरनिगार की कुशल और अपने नाती के स्वरूप को पूछकर अमरू को ख़िलअत देकर बिदा किया तब अमरू ने अतिप्रसन्नता के साथ वहां से चलकर अमीरके समीप आकर सब वृत्तान्त आदिसे कहा जब सादान और क़बाद चार २ बर्षके हुए तो अमीर ने उनदोनों लड़कों को अमरू को सौंपकर आज्ञा दी कि इनदोनों को अच्छी तरह से अदब तमीज़ सिखाओ और जिससमय पांच बर्ष के हुए तो देखनेवाले देखकर कहते थे ऐसे सुन्दर और तमीज़दार लड़के कभी देखनेमें नहीं आये कि अभी से इनकी बहादुरी प्रसिद्ध होतीजातीहै प्रातःकाल और

सायंकाल को लेकर खिलाते थे लिखनेवाला लिखता है कि जिस समय ज़ोपीन ने क़बादके उत्पन्न होनेका बृत्तान्त सुना तो उसने नौशेरवांको एक बिनयपत्र लिखा कि हमज़ा ने जो अबतक आपकी गद्दी नहीं ली तो कोई पुत्र उसके न था अब जो आपकी पुत्री से पुत्र हुआ है तो अवश्य है कि हमज़ा आपकी गद्दी छीनकर अपने पुत्र को बैठावेगा इससे उचित है कि आप बहमन के समीप जाकर उसको साथ लेकर हमज़ा को परास्त करिये आगे आपकी बुद्धि प्रबल है जैसा उचित होवे सो कीजिये नौशेरवां ने ज़ोपीन के पत्र को पढ़कर कहा कि हमज़ा मुझसे ऐसा कभी न करेगा बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि सत्य है ऐसाही होगा परन्तु बख़्तक ने जाने की सम्मति दी पीछे को नौशेरवां ने युद्ध का सामान इकट्ठा करके बहमन के समीप जाने की यात्रा की जब वहां पहुँचे तो बहमन ने अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख हो कर सर्व बृत्तान्त नौशेरवां से पूछा तो उसने सब कहकर अन्त को कहा कि किसी युक्ति से अति शीघ्रही युद्ध का सामान इकट्ठा करके चलो तब बहमन ने स्वीकार करके अमीर को लिखा कि तू बहादुरी लोगों की देखता फिरताहै सो आकर मुझको भी अपनी बहादुरी दिखा अमीर पत्रको देखकर जलउठा और कहनेलगा कि अब तक तो यह इच्छा न थी परन्तु अब किसी प्रकार से न छोड़ूंगा तब अमीर ने शुभ सायत पूछकर क़बाद को गद्दी पर बैठाकर सब सेनापतियों और देशबासियों से नज़रें दिलवाकर बहुतसा जवाहिर अशरफ़ियां भिक्षुक आदि को देकर चालीस दिवसके नाच रङ्ग के सभा कराने के पश्चात् बहमन के तरफ़ यात्रा की और पहाड़ के समीप जाकर डेरा खड़ाकरके पड़े बहमन ने पहलेही से हूमान नाम अपने पुत्र को बहुत सी सेनासमेत पहाड़ की रक्षा करने के लिये भेजा था सो जब आदी अकरबने पहुँचकर इच्छा की कि पहाड़ पर चढ़जावें कि इतने में हूमान पहाड़ पर से पत्थर मारने लगा इस कारण आदी अकरब का पैर आगे न बढ़सका कि इतने में अमरू पुत्र हमज़ा मलिक लन्धौर सेनापति समेत आकर पहुँच गये और देखा कि पहाड़ पर से पत्थर गिररहे हैं और आदी चुपचाप नीचे खड़ा है तब वे तीनों मिलकर बड़ी बहादुरी से ढाल से रोकते हुए जाकर पहाड़ पर पहुँचे सहस्रों सेना को मारकर हूमान को उठाकर पृथ्वी पर देमारकर छाती पर ख़ंजर रखकर कहनेलगा कि अब मुसल्मान हो नहीं मारडालता हूं तब उसने कहा कि कृपा करके इससमय मुझको छोड़दीजिये जब मेरा पिता मुसल्मान होगा तो मैं भी हूंगा अमरू पुत्र हमज़ा ने उसको छोड़दिया तो उसने जाकर सब हाल बहमन से कहा बहमनने क्रोधित होकर कहा कि बिदित होता है कि तू मेरे बीर्य से नहीं है जो तलवार से डरता है और लज्जित होकर चुप नहीं रहता फिर आकर सम्मुख होकर मुख दिखाता है कि इतने में सामने से एक सेना की गर्द उड़ती हुई दिखाई पड़ी तत्पश्चात् बिदित हुआ कि साहबकिरां अपनी सेना लेकर आते हैं और सहस्रों झंडे दिखाई पड़े तब बहमन ने कहा कि हे बख़्तक! मैंने अमीर का नाम तो सुना है

परन्तु स्वरूप आजतक नहीं देखा सो तू किसीप्रकार से हमको दिखादे तब उसने कहा कि आप सवार होकर मार्ग में खड़े हूजिये मैं अमीर को दिखलादूंगा तब दोनों सवार होकर मार्ग में जाकर खड़ेहुए तो इतने में पहले झंडे के छापा में जिस म सर्प की मूर्ति बनी थी आदी अकरब अपनी सेना समेत आकर निकला तो बहमन ने पूछा कि हमज़ा यही है तब बख़्तक ने कहा कि नहीं यह तो अमीर की सेना का सेनापति है इसीप्रकार जितने सरदार निकले सबको बख़्तक ने बहमन से बतलाया सब सेनापतियों के पीछे अमरू की सवारी निकली तब बख़्तक ने कहा कि जो अमरू का नाम आपने सुनाहोगा वह यही है जिससे बादशाह सप्तदेशी भी डरते हैं तत्पश्चात् शाहज़ादा क़बाद का तख़्त सूर्य के सदृश पृथ्वी पर आकर निकला तो बख़्तक ने बहमन से कहा कि क़बाद पुत्र हमज़ा का यही है तत्पश्चात् अमीर अशकर देवज़ादे पर सवार बड़ी धूमधाम से आकर निकला तो बख़्तक ने बहमन से कहा कि अमीर यही है बहमन यह सुनकर बड़े संदेह में हुआ कि किसप्रकार से इसने इसी स्वरूप से परदेकाफ़ के बड़े २ देवों और बलवानों को मारा है तब बख़्तक ने कहा कि युद्धके समय आपही विदित होजावेगा तब उसने कहा कि आज तो वह थका मांदा आया है कल हम हैं या अमीर ऐसा लज्जित करूं कि वह भी जाने अमीर ने दूसरे दिन एक पत्र में सब वृत्तान्त लिखकर लिखा कि हम तुम्हारे बुलाने से आये हैं सो तुम अतिशीघ्रही नौशेरवां बख़्तक और ज़ोपीन को बांधकर हमारे पास भेजकर तुम भी कर लेकर हमारे समीप आकर हाज़िर होकर मुसल्मानी स्वीकार करके सेवकाई करो नहीं तो आकर दण्ड दूंगा परन्तु इस पत्र को अमरू के हाथ इस कारण से न भेजा कि वह जाकर बहमन को अतिलज्जित करेगा इस विचार से अपने पुत्र अमरू के साथ एक बुद्धिमान् पुरुष को पत्र लेकर भेजा वह जब पत्र लेकर थोड़ी दूर गया तो मार्ग में देखा कि एक मनुष्य अमीर की दोहाई देरहा है उससे पूछा तू कौन है ? तो उसने कहा कि आपके घोड़ों का रक्षक हूं सो घोड़ों को यहां चरारहा था बहमन के सिपाही घोड़ों को लिये जाते हैं अमरू ने पूछा कि कहां जाते हैं तब उसने बतलादिया तब वह घोड़ों के टाप के पते से दौड़ा समीप जाकर एक ऐसी डाट लगाई कि सब डरकर भागगये परन्तु केवल हूमान अमरू को अकेले देखकर खड़ा होकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ और जब अमरू समीप पहुँचा तो पूछनेलगा कि तू कौन है और कहां से आता है ? अमरू ने कहा कि हमज़ा का पुत्र और तेरे प्राण का गाहक हूं हूमान यह सुनकर तलवार लेकर अमरू के ऊपर दौड़ा अमरू ने रोंककर उसको पकड़कर पृथ्वीपर देमारा और ख़ंजर पेटपर रखकर कहनेलगा कि या तो मुसल्मान हो नहीं तो मार डालूंगा हूमान जंगी २ करके कहनेलगा कि हे अमीर के पुत्र ! इससमय तू मेरा प्राण छोड़दे जिस समय मेरा पिता मुसल्मान होगा उसी समय मैं भी धर्म स्वीकार करके आपकी सेवकाई में रहूंगा आपकी आज्ञा से विरुद्ध कभी न हूंगा तब अमरू

पुत्र हमज़ा उसकी छातीपर से उठकर खड़ा होगया उसने सलाम करके पूछा कि आप कहां को जाते हैं और कहां से आते हैं ? उसने कहा कि अमीर का संदेशा लेकर तेरे पिता के पास जाताहूं हूमान ने कहा कि इस समय के युद्ध को किसीसे प्रसिद्ध न करना तब उसने स्वीकार किया तब हूमान अपने पिता के पास चलागया और अमीरका पुत्र अपने घोड़ों के रक्षक को सौंपकर बहमन के पास चला गया तो उस समय बहमन अपनी सभा में नौशेरवां जोपीन बख़्तक बुजुरुच्चमेहर समेत बैठा हुआ था अमरू पुत्र हमज़ाने बुजुरुच्चमेहर से सलाम करके पत्रको फेंकदिया परन्तु उससे कुछ वार्त्ता न किया तब बहमन पत्र को फाड़कर क्रोधित हुआ तब अमीर का पुत्र अमरू क्रोधित होकर कहनेलगा कि अफ़सोस है कि पिता ने युद्ध करने को मनाकिया है नहीं तो पत्र की तरह से तुमको भी फाड़कर फेंकदेते तब तो बहमन ने क्रोधित होकर अपने पुत्रको आज्ञा दी कि इसको दण्ड देव वह तलवार लेकर अमीर के पुत्रपर दौड़ा उसने तलवार छीनकर ऐसा चरख़की तरह घुमाकर फेंका कि वह व्याकुल होगया इतने में छोटा भाई दौड़ा उसकी भी यही गति की तब तो बहमन ने प्रसन्न होकर कहा कि वाह शेरके शेरही होते हैं यह कहकर ख़िलअत देकर उसको बिदा किया अमरू ने अमीर के पास आकर सब वृत्तान्त कहा तब अमीर ने अतिप्रसन्न होकर बहुत सा जवाहिर लुटाकर प्रसन्न किया दूसरे दिन बहमन सेना लेकर युद्ध के खेत में आया और अमीर भी सेना लेकर गये तो अमरू पुत्र अमीर तख़्त को चूमकर घोड़े को बढ़ाकर युद्ध करने को आरूढ़ हुए और उधर से हूमान भी वादा लेकर आये अमरूने हूमान की कमर पकड़कर दो तीन बार घुमाकर पृथ्वी पर देमारा और मुश्कें बांधकर अमीर के पास लेगया अमीर ने अमरू अय्यार को सौंपदिया बहमनने अपने दूसरे पुत्रको भेजा तो उसकी भी यही गति हुई अन्त को डङ्का बजवाकर लौटगया और अमीर भी अतिप्रसन्नता के साथ डङ्का बजवाते हुए अपनी सेनासमेत डेरेपर चलेआये सब लोगों ने जीतकी भेंट दी और प्रातःकाल होते सभा में बैठकर बहमन के बेटोंको बुलाकर आज्ञा दी कि मुसल्मानीधर्म स्वीकार करके अग्नि का पूजन छोड़ देव लड़कोंने कहा कि हे अमीर ! जिससमय मेरा पिता मुसल्मान होगा उसीसमय हमलोग भी होंगे अभी कृपा करके क्षमा कीजिये तब अमीर ने उनको छोड़दिया तब उन लड़कों ने बहमन से सब वृत्तान्त वर्णन किया बहमनसे अमीर की बड़ी प्रशंसा की और दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों सेना मैदान में युद्ध पर आरूढ़ होकर आईं और एकतरफ़ से बहमन और दूसरी तरफ़ से हमज़ा का पुत्र अमरू सेनासे निकलकर युद्ध करनेलगे परन्तु सब दिन युद्ध होतारहा दोनों में से कोई न हटा सायङ्काल को दोनों अपनी सेना में चलेगये तब अमीर ने अपने पुत्र परसे बहुतसा रुपया अशरफ़ी न्योछावर करके पूछा कि बहमन कैसा पहलवान है उसने कहा कि आपके बाद वही एक पहलवानहै दूसरे दिन डङ्का बजवाकर दोनों सेना मैदान में आईं और बहमन और खन्धौर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुए तो

बहमन ने लन्धौर से पूछा कि तू कौन है? उसने कहा कि मेरा नाम लन्धौर है मैंने बड़े २ बहादुरों को मारा है इतना कहकर लन्धौरने ऐसा शब्द किया कि सेना डर से कांपगई तब तो बहमन ने कहा कि सत्य है जैसा हम नाम सुनते थे वैसाही तू है तब दोनों से शामतक युद्ध हुआ किया और कोई न हटसका सायङ्काल को डङ्का बजवाकर चलेगये तब अमीर ने पूछा कि कहो लन्धौर बहमन कैसा पहलवान है उसने कहा कि आपके पुत्रकी वाक्य सत्य है दूसरे दिन जब सेना मैदान में आई तो आदी अकरब बहमनके सम्मुख होकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ तो बहमन ने पूछा कि तू कौन है? आदी ने कहा कि मेरा आदीअकरब नाम है तब बहमन ने कहा कि तेरा पेट ख़ाली हो तो चलकर मेरे साथ भोजन कर पहलवान से युद्ध न होसकेगा तब आदी ने कहा कि हे बहमन! कहांहै तेरा चित्त क्या बकता है (दृष्टान्त) (जो दे गये हैं वह आपही प्रसिद्ध होजावेगा) देख अमीर कैसा दण्ड देता हूं जो तेरा प्राण बचगया तो अपने प्राणकी मेहमानी करलेना और बहुतसा दान करना इसके पश्चात् दोनों में गदा से युद्ध होनेलगा तब बहमन ने कमरबन्द पकड़कर आदीको उठालिया परन्तु आदीने घूंसे उसके शिरपर मारे कि उसने छोड़दिया और डङ्का बजाकर पलटगये दूसरे दिन बहमन छःभाई आदी के पकड़लेगया तब अमीर अतिदुःखित हुआ तो अमरू ने कहा कि जो आज्ञा हो तो मैं जाकर सबको छोड़ाआऊं तब अमीर ने कहा कि इससे क्या उत्तम है तब अमरू मक्कारी पोशाक पहिनकर बहमन की सभामें गया उस रात्रिको बहमन ने सबसे पूछा कि तुमलोगों की क्या सम्मति है? इन सरदारों को मारडालें या छोड़दें तब नाशेरवां ने कहा कि इनसब को मारडालो कि जिससे हमज़ा की सेना के सरदार कम होजावें और बख़्तक ने कहा कि इनको शूली देना उचित है इसी प्रकार से हरएक ने मारने की सम्मति दी पीछेको अपने बेटों से पूछा तो उन्होंने कहा कि इनको मारकर क़िलेकी दीवारपर लटकादो कि अमीरकी सेनाके लोग देखकर डरें तब बहमन ने कहा कि तुमलोगों को कहते लज्जा नहीं मालूम होती कि अमीरने तुमको छोड़दिया और तुम उसके सरदार के मारनेकी सम्मति देतेहो इतना कहकर सब सरदारों को बुलाकर छोड़कर अमीर के समीप भेजदिया तब अमरूने प्रसिद्ध होकर कहा कि वाह बहमन! पहलवानों को ऐसाही उचितहै और जो तू न छोड़ता तो मैं अवश्य छोड़ालेजाता और बख़्तक के सम्मुख होकर कहनेलगा कि तू मुझे नहीं डरा और अमीर के सरदारों के मारने की सम्मति देता था अब देखना मैं भी तेरी कैसी गति बनाता हूं तब तो बख़्तक हाथ जोड़कर कहनेलगा कि मैंने तो केवल बहमन के ख़ुश होने के लिये कहा था परन्तु चित्तसे मैं ऐसा नहीं चाहता था और अब जो बहमन ने किया है इससे मुझे अति आनन्द हुआ परन्तु अमरू ने कुछ उसका कहना न माना और चलते समय उसके शिर का मुकुट लेकर एक चपत शिर में मारकर चलागया और कहा कि ख़बरदार अपनी दाढ़ीका बाल भेजदेना नहीं तो मैं तुमको अति

लज्जित करूंगा और वृथा मुझे तेरे खेमेमें न आना पड़े ततपश्चात् अमीर के समीप आकर सब वृत्तान्त वर्णन किया तब अमीर ने कहा कि अच्छा वह मुसल्मान हो जावे क्योंकि वह बड़ा पहलवानहै प्रातःकाल दोनों सेना फिर मैदानमें आकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुईं तो बहमन ने अमीर से कहा कि हमज़ा! तू क्यों नहीं आकर युद्ध करता तब तो अमीर अशकर देवज़ादेपर सवार होकर बहमन के सम्मुख आ कर खड़ाहुआ तो बहमन ने कहा कि लाओ वार चलाओ तब अमीर ने कहा कि पहले हमलोगों का यह धर्म नहीं है कि किसी कार्य में शीघ्रता करें तब बहमन ने कहा कि युद्ध करना उचित नहीं है केवल लङ्गर उठाना उचित है जो हारे वह बलवान् की आधीनता में रहे तब बहमन ने अमीर का लङ्गर पकड़कर उठाया परन्तु हिल न सका तब अमीर ने पकड़कर सातबार घुमाकर पृथ्वीपर रखकर मुश्कें बहमन की बांधकर अमरू के हवाले करके डङ्का बजवाकर पलटगया और सेना में जाकर बहमन को बुलाकर जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर कहा कि तुम अब मुसल्मान होकर हमारी आज्ञा में होरहो उसने कहा कि मुझे सब आपकी आज्ञा माननी हरप्रकार से उचितहै परन्तु नौशेरवां और ज़ोपीन आदिका भी अपराध क्षमा कीजिये तब अमीर ने कहा कि जो वेलोग मुसल्मान होवें तो हम उनका अपराध क्षमा करते नहीं उनको अपने हाथ से हम वध करेंगे तब बहमन ने कहा कि जो आज्ञा होवे तो हम जाकर उन सब लोगों को समझाकर आपके समीप लाकर अपराध क्षमा करावें तब अमीर ने ख़िलअत देकर बहमनको बिदा करके उनके लाने को भेजा बहमन ने जाकर नौशेरवां ज़ोपीन और बख़्तक आदी से कहा कि अब तुमलोग मिलकर अमीर से मिलो अब जो हम न विजय हमज़ा से पासके तो निश्चय है कि कोई संसार में न जीत सकेगा इससे सबलोग चलकर उसके साथ मिलकर रहें तब सबलोग एकचित्त होकर अमीर के समीप आये अमीर ने यथा उचित सबको बैठालकर अति प्रसन्न किया और ख़ुशीका बाजा बजनेलगा इसके पश्चात् सात दिनतक नाच रङ्ग होनेकी आज्ञा दी ॥

अमीर का मक्केकी ओर जाना और पराजय देकर पकड़कर सादान अमरू हबशी का मुसल्मान करना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि सभाके पश्चात् अमरू और आदी अकरबने अमीर से कहा कि अब यहां जीव जन्तुओं को भोजनके लिये अतिदुःख होता है इससे और कहीं चलकर बास कीजिये अमीर ने स्वीकार करके कहा कि अतिउत्तम है काबिस हिसार की ओर अगवानी खेमा भेजाजावे उसी समयमें नौशेरवांने अमीर से कहा कि अब हमारी यह इच्छा होती है कि क़बाद को गद्दीपर बैठालकर हम ईश्वर का भजन एकान्त में बैठकर करें अमीर ने कहा कि हम इसमें कुछ नहीं उत्तर देसक्के जैसी आपकी इच्छा हो वही कीजिये तब नौशेरवां ने क़बाद को अपना स्थानापन्न करके बुज़ुरुचमेहर समेत मदायन की तरफ़ यात्रा की और अमीर

काबिस हिसार म जाकर दिनको तो शिकार करते थे और रात्रि को हरप्रकार की वस्तुओं से चित्तको प्रसन्न करतेरहे एकदिन एक दूतने आकर मक्केसे अमीर के पिता का एक पत्र दिया अमीरने पत्रको लेकर पढ़ा तो उसमें लिखाथा कि ऐ पुत्र ! जिस दिनसे तूने होश सम्हाला है तब से किसीने हमारे ऊपर चढ़ाई नहीं की थी परन्तु अब सादान अमरू हबशी ने हमारे नगर को भी लूटलिया है और मक्के को भी नाश करने की इच्छा रखताहै इससे उचित है कि अतिशीघ्रही आकर उसकी कोई युक्ति करो नहीं तो कोई मुसल्मान न बचेगा अमीर ने उस पत्र को सब सरदारों को दिखलाकर बहमन से कहा कि जबतक हम न आवें तबतक तुम हमारे स्थानापन्न होकर राजगद्दी करो और हमारे मित्रों को मित्र और पुत्रों को पुत्र जानकर रक्खो और मैं ईश्वर की कृपा होगी तो अतिशीघ्रही पराजय करके मक्के से आता हूं तब बहमनने हाथ बांधकर कहा कि मैं आपके स्थानापन्न होकर नहीं बैठसक्ता मेरा इतना बड़ा मुँह कि आपकी गद्दीपर बैठूं परन्तु अमीर ने समझाकर सब कारोबार उसके हवाले करके आप मक्के की ओर अमरू को साथ लेकर चले तो जब मक्केके समीप पहुँचे तो अमीर ने अमरू से पूछा कि अब क्या सामान किया चाहिये ? अमरूने कहा कि आप अशकर देवज़ादे को इसी बनमें चरने के लिये छोड़ दीजिये और पैदल मेरे साथ होकर चलिये अमीर ने अशकर देवज़ादेको जिन्नीभाषा में समझादिया कि तुम निस्संदेह होकर इसी बन में चरो जब हम शब्द करें तो सुनकर हमारे पास चलेआना और आप अमरू को साथ लेकर पैदल चले जिससमय सेना के समीप पहुँचे संयोग से अमरू से एक बाज़ीगर से मुलाक़ात होगई यहां तक कि दोनों साथ होकर सादानके समीप जाकर कलाबादी करके सादान को इस प्रकार से प्रसन्न किया कि उसने पारितोषिक देनेकी आज्ञा दी परन्तु अमरू ने न लिया और सम्मुख जाकर प्रार्थना की कि मुझको द्रव्य लेने की इच्छा नहीं परन्तु आप इतनी कृपा कीजिये कि मेरे चचा का एक किंकर है सो वह टहलुई छोड़कर पहलवान होगया रात्रि दिन मुझको दुःख दियाकरता है सो आप उसको डाट देवें तो मेरा दुःख छूटजावे सादान ने कहा कि अच्छा उसको बुलाओ तब अमरूने पुकारा कि फ़ोलाद पहलवान इधर आओ अमीर आये परन्तु जो सादान से दण्डवत् न की तो उसने क्रोधित होकर कहा कि क्योंरे किङ्कर ! तू अपने मालिक को क्यों दुःख देताहै? अमीर ने कहा कि मैं तो किङ्कर नहीं हूं तूही होगा तब अमरू ने सादान से कहा कि आप इसकी दुष्टता देखते हैं यह आपसे भी नहीं डरता तब तो सादान ने क्रोधित होकर एक पहलवान को अमीर के शिर काटने की आज्ञा दी परन्तु जब वह समीप आया तो अमीर ने ऐसा घूंसा मारा कि वह पृथ्वीपर बैठगया तब सादान ने दूसरे को भेजा उसका भी वही हाल किया इसी प्रकार से चालीस पहलवानों को मारा पीछे को सादान जब शस्त्र लेकर उठा तो अमीरने उठकर पृथ्वीपर देमारा और छातीपर सवार होकर कहा कि तू नहीं जानता कि हम अमीरहमज़ा

हैं तब तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि अब आप मेरा अपराध क्षमाकरें मैं केवल नौशेरवां के बुलाने से आयाथा अब कभी न आऊंगा तब अमीर ने कहा कि अब तो हम तुमको बेमुसल्मान किये न छोड़ेंगे लाचार होकर वह मुसल्मान हुआ तब अमीर ने उसके ऊपर से उतरकर गले लगाया और अमीर ने जो शब्द सादानके उठाती समयकिया तो उसको सुनकर मक्केके सबलोग आकर हाज़िरहुए तब अमीर ने जाकर अपने पिताका पैर छुआ उन्होंने छातीसे लगाया पीछे को सबलोग अमीर को साथ लेकर मक्के को आये तो अमीर ने सादान को ख़िलअत देकर सब मक्कावासियों को यथाउचित ख़िलअत देकर प्रसन्नकिया और अमरूभी अपने पिता के समीप जाकर स्थित होकर रहा लिखनेवाला लिखता है कि नाचरङ्ग होने के पश्चात् सादान ने अमीर से कहा कि जो आज्ञा हो तो जाकर अपने देश से बाल बच्चों को माल असबाब समेत लेकर आऊं तब अमीर ने अति प्रसन्नता से ख़िलअत देकर बिदा किया जब सादान मदायनके समीप पहुँचा तो उसने अपने चित्त में बिचारा कि नौशेरवां ने हमको बड़ा दुःख दियाहै अब इसको भी कुछ दण्डदेना उचित है दरवाज़ेपर जाकर द्वारपालकों से कहा कि बादशाह से ख़बर करो कि सादान अपने देश को जाताहै बिदाहोने आया है नौशेरवांने सुनकर बुलवालिया तब उसने जाकर दण्डवत् करके बादशाह से कहा कि आपने तो मेरी खूब इज़्ज़त ली इतना कहकर बादशाह का कमरबन्द पकड़कर उठालिया और कहनेलगा कि जो कोई मेरे समीप आवेगा तो मैं बादशाहको ऊपरसे छोड़कर मारडालूंगा सब राज्य तुम्हारा नष्ट होजावेगा इस डरसे कोई समीप न जासका और सादान ने बादशाह को अपने नगर में लेजाकर पैरों में जंजीरें डलवाकर चौराहे पर लटका दिया और एक ज्वार की रोटी और जल उसके भोजन के लिये देने लगा इस प्रकार से दुःख देनेलगा तो नौशेरवां ने एक दिन सादान से पूछा कि तूने क्यों मुझे ऐसे दुःखमें डाल रक्खा है मैंने तेरे साथ कौनसी बुराई की है कि तू ईश्वर से भी नहीं डरता सादान ने कहा कि जो तू मुझको बुलाकर मक्के के बरबाद करने के लिये न भेजता तो मेरी यह गति क्यों होती नौशेरवां ने कहा कि मैं इसे क्या जानूं बख़्तक ने बुलाकर भेजा होगा सादान ने कहा कि जो बख़्तक ने भेजा हो तो उसी को लाकर हमको देओ हम तुमको छोड़देवें उसीको इसमें क़ैद करूं बादशाह इस बात को सुनकर चुप होरहे अब थोड़ासा हाल अमीर का सुनिये कि थोड़े दिनके पश्चात् अपने पिता से बिदा होने की इच्छा की तब ख़्वाजे अब्दुलमुत्तलब ने कहा कि हे पुत्र! बहुत दिनों के पश्चात् जो देखा है इससे अभी चित्त नहीं चाहता कि जाने देवें एक बर्ष और रहो अमीरने स्वीकार किया यह बृत्तान्त जब बख़्तक को पहुँचा कि अमीर अभी एक बर्ष मक्के में अपने पिता के समीप रहेंगे बिचारा कि मैदान ख़ाली है किसी युक्ति से अमीर को लज्जित किया चाहिये इसप्रकार से बिचार कर नौशेरवां की ओर से एक जालीपत्र जोपीन और हुरमुज़ के नाम लिखकर एक दूत

के हाथ भेजा कि हमने सादानको भेजकर मक्केके मुसल्मानों का नाश करवाडाला और उसने हमज़ा और अमरू को भी लेजाकर अपने देशमें शूली दी है सो तुम हमज़ा की मुसल्मानी सेना को मारकर मेहरनिगार को बहमन को देदो संयोग से उस समय ज़ोपीन वनमें शिकार खेलने को जाता था मार्ग में दूतसे मुलाक़ात हुई उसने पत्र देकर सब हाल ज़बानी भी सुनाया जिस प्रकार से कि बख़्तक ने समझा दिया था ज़ोपीन पत्र को पढ़कर सीधा बहमन के समीप आकर उस पत्र को देकर सब वृत्तान्त सुनाया बहमन ने पत्र को पढ़कर ज़ोपीन से कहा कि यह तेरा फ़रेब है मैं तेरी बात कब मानताहूं पीछे को जब ज़ोपीन सौगन्दें खानेलगा तो बहमन को भी निश्चय हुआ कि ज़ोपीन सत्य कहता है और उस दूत को जब बुलाकर पूछा तो उसने भी उसी तरह से वर्णनकिया तब तो बहमन अतिदुःखित होकर कहनेलगा कि अच्छा जो हुआ सो हुआ उसके लड़कों को उसके स्थानपति करके इन्हीं की आज्ञानुसार करेंगे इतना कहकर दूत से पूछनेलगा कि सत्य बता क्या हुआ ? दूत ने सौगंदें खाकर कहा कि मैं सत्य कहता हूं मेरे सामने दोनों शूली पर चढ़ाकर मारेगये हैं तब बख़्तक ने बहमन से कहा कि हमज़ा की आज्ञा में होकर रहना तो उचित भी था परन्तु ऐसा पहलवान होकर छोकड़ों के अधीन होकर रहना उचित नहीं है तब उसने कहा कि आप भी बादशाह के दामाद हैं यह सुनकर बहमन का भी चित्त बहका और बख़्तक से भी कहने लगा कि जो तुम्हारी भी यही सम्मति है तो हम ने स्वीकार किया परन्तु क्योंकर यह होसकेगा तब बख़्तक ने कहा कि अभी इसबात को किसीसे न कहो मैं शीघ्रही इस कार्य को करूंगा ज़ोपीन ने कहा कि मैं आज सभा में जाकर शाहज़ादों से कहूंगा कि मेरे पिता का कार्य है जो आपलोग चलें तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा है बख़्तक ने कहा कि यह तो अच्छा यत्न है ज़ोपीन जब रात्रिको सभा में गया तो हुरमुज़ और क़बाद आदि शाहज़ादों से कहा कि आपलोग कृपा करके मेरी मेहमानी स्वीकार करें तो मेरी बड़ी प्रतिष्ठा होती है सबने स्वीकार किया और दूसरे दिन सब शाहज़ादे पहलवानों समेत गये और जब भोजन करनेके पश्चात् शराब पिलानेलगा तो ज़ोपीन ने क़बाद और शहरयार से प्रार्थना की कि आपलोग तो आये परन्तु मलिका जो आती तो मेरी अतिप्रतिष्ठा होती शाहज़ादों ने स्वीकार करके मलिका को भी सवारी भेजकर बुलवाया और जब मलिका आकर तख़्तपर बैठी तो इतनेमें किसी के मुखसे बात निकलगई कि अभी तो आकर तख़्तपर बैठी है परन्तु यह नहीं जानती कि कौनसी गति होगी यह बात मलिका के कानतक पहुँचगई तो उसी समय क़बाद को बुलाकर उससे कहा उसने अतिशीघ्रही बाहर से सवारी मँगाई और मलिका को सवार कराकर अपने क़िले में चला पीछे को जब बहमन और ज़ोपीन ने सुना कि मलिका आई और चलीगई तो हाथ मलकर कहनेलगे कि बड़े लज्जा की बात हुई कि हाथ में आकर निकलगई बख़्तक ने आकर जो बहमन और ज़ोपीन को दुःखी देखा तो

कहनेलगा कि दुःखित क्यों होतेहो कहां जायगी एकदिन तो हाथ आवेगी तब बह-
मन और बख्तक दोनों कहने लगे कि अफ़्सोस है कि हुरमुज़ गद्दीपर न बैठे और
क़बाद लड़की का पुत्रहोकर गद्दीपर बैठे अमीरहमज़ा ने बहमन से कहा कि तेरा क्या
नुक़सान है बहमन ने कहा कि सत्य मैं कहताहूं कि क़बाद गद्दीपर बैठाने के योग्य
नहीं है मलिकलन्धौर ने ऐसी बातें उसकी सुनीं तो क्रोधित होकर कहनेलगा कि
अफ़्सोस है कि अमीर ने तुझको अपनी कुरसीपर बैठाला नहीं तो तू ऐसी बातें क्यों
करता तबतो बहमनने क्रोधित होकर एकतलवार लन्धौर को मारी लन्धौर ने रोककर
एकगदा बहमनपर ऐसी लगाई कि बहमन बेहोश होगया और दोनों के सिपाहियों से
तलवार चलनेलगी बहुत से लोग दोनों तरफ़ के घायल हुए पीछेको बहमन के लोग
होकर भागगये संयोग से यह ख़बर नूरबानो बहमन की बहिन को जो अमरूपुत्र
हमज़ा पर मोहित थी पहुँची कि मुसल्मानों को काफ़िरोंने बड़ादुःख दियाहै और
शहरसे निकलकर इस प्रकार से बढ़ी कि बहुतसे पहाड़ी मारेगये और अरबी पह-
लवानों को साथ लेकर क़िले में आई और ख़न्दक को पनियासोत कराकर क़िलेके
दरवाज़े को बन्दकरके बैठरही और जब पहलवानों का धावा अच्छा हुआ तो क़िले
की दीवारोंपर चढ़कर मारनेलगे तो पहाड़ी क़िले से हटकर पड़े परन्तु फिर एक
दिन क़िलेपर चढ़ाई की तो क़बाद ने अपनी माता से कहा कि अब आज्ञा देओ तो
हम जाकर इन पापियों को मारकर भगादेवें मेहरनिगार ने कहा कि अभी तुम
लड़के हो युद्ध करने के योग्य नहीं परन्तु क़बादने न माना और कहा कि जो न
जाने देओगी तो हम पेट मारकर मरजावेंगे हमारे पिता तो हमसे भी छोटे थे
तभी से युद्ध करने के लिये जाते थे तब नूरबानो ने कहा कि आप जाने दीजिये मैं
साथ जाकर सहायता करूंगी लाचार होकर मेहरनिगार ने क़बाद को जाने की
आज्ञा दी क़बाद हथियार लेकर पहाड़ियों के सम्मुख जाकर ललकारा कि ऐ पापियो!
तुममें से जिसको मारने की इच्छा हो वह आकर सामने युद्धकरे मुझको अपनी
बहादुरी दिखावे बहमन क़बाद को देखकर अतिप्रसन्न हुआ कि अब हम क़बाद
को पकड़कर अपने पास रक्खेंगे तो अवश्य है कि मेहरनिगार अपने पुत्र के लिये
हमारे पास आवेगी यह विचारकर क़बाद के समीप गया और कहने लगा कि ला
वार चला क़बाद ने कहा कि मेरा पिता कोई कार्य पहले नहीं करता था सो वैसाही
मैं भी करता हूं पहले तू वार चला जो मैं तेरे वार से बचजाऊंगा तो मेरा तमाशा
देखना तब बहमन ने पहले वार मारी क़बाद ने ढालपर रोककर ऐसे ज़ोर से एक
तलवार मारी कि बहमन घायल होकर भागा और चार कोसतक क़बाद पीछाकिये
चलागया और जब देखा कि सेना उसको वायु के समान उड़ा लेगई तो लाचार
होकर पलटआया और अपनी माता के समीप जाकर सब वृत्तान्त वर्णन किया तब
मेहरनिगार ने बहुतसा रुपया अशरफ़ी अपने पुत्र पर से उतारकर कंगालों को
दिया कुछ काल व्यतीत होने के पश्चात् अमरूपुत्र हमज़ा और लन्धौर ने जाकर

मलिका के समीप कहा कि विदित होता है कि इसमें बहमन का अपराध कुछ
नहीं है परन्तु बख़्तक और ज़ोपीन ने उसको भी अपने साथ मिलालिया है तब
अमीर के पुत्र ने कहा कि फिर क्या करें? पहाड़ी लोग क़िले को घेरे हैं हमारे सब
पहलवान घायल हैं इससे हम डरते हैं क़बाद ने कहा कि क़िलेका दरवाज़ा खोल
कर बाहर चलकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हो इतनी आज्ञा देतेही युद्ध का डङ्का बजने
लगा सब सेना क़िले से निकलकर मैदान में खड़ीहुई तो उस समय बहमन ने
पुकारकर कहा कि हे अरबबासियो! तुमलोग क्यों वृथा प्राण देते हो? हमज़ा को
मरे बहुत दिन होगया अब उत्तम इसी में है कि मलिका को हमको देदो और
तुमलोग अपनी राह लो नहीं तो अबकी किसी का प्राण न बचेगा लन्धौर बह
मन की सब बातें सुनकर अमरू पुत्र हमज़ा से बिदा होकर उसके सामने आकर
खड़ाहुआ तो दोनों में गदा चलनेलगी और सायंकाल तक बराबर युद्ध करते र
शाम को दोनों सेना पलटकर अपने स्थानोंपर चलीगईं दूसरेदिन प्रातःकाल होतेही
दोनों सेना मैदान में जाकर खड़ीहुईं कि इतने में एकतरफ़ से गर्द उड़तीहुई दि
खाई पड़ी दोनों सेनाओं के दूतों ने जाकर देखा तो विदित हुआ कि फ़रहाद ज़ो
पीन की सहायता के लिये आता है अमीर के पुत्र ने सुनकर कहा कि हमारी ईश्व
सहायता करेगा और ज़ोपीन अगवानी मिलकर अपनी सेना में लेआया और स
वृत्तान्त उससे वर्णन किया इतने में फ़रहादपुत्र लन्धौर को अमीर के पुत्र की आज्ञा
लेकर फ़रहाद के साथ युद्ध करनेके लिये आकर खड़ाहुआ तो उसने पूछा कि
कौन है? फ़रहाद ने कहा कि हम पुत्र खुसरो मालिक लन्धौर पुत्र सादान बादशा
हिन्द के पुत्र हैं जिसको संसार जानता है उसने पूछा कि तेरा बाप कहां है? फ़रहा
ने कहा सेना में है फ़रहाद ने कहा कि विदित होता है कि उसने अपना प्राण बचाय
और तुझको मरने के लिये भेजा है तब फ़रहाद ने कहा कि ओ पापी! क्या बकत
है? उसका कोई सामना भी करसक्ता है ला तू वार चला तबतो उसने सातसौ म
की गदा उठाकर फ़रहाद के शिरपर देमारी फ़रहाद ने ढाल से रोककर कहा
दो वार अपनी और करले फिर मेरी वार रोकना फ़रहाद ने दोवार फिर उसी त
वार से किये परन्तु फ़रहाद ने उसी स्थान से रोककर कहा कि देख ख़बरदार
अब मैं भी वार चलाता हूं यह कहकर ऐसे ज़ोर से गदा चलाई कि अग्नि निक
आई तबतो बड़ी प्रशंसा करने लगा और उसीप्रकार से सायंकाल तक दोनों
युद्ध होतारहा और शाम को पलटकर अपने २ स्थानपर चलेगये अब इन दोनों
लड़ने दो थोड़ा सा हाल अमीर का सुनो कि एकदिन रात्रि को अमीर ने स्वप्न
देखा कि पहाड़ियों ने हमारी सेना पर छापा मारा है और बहुत से पहलवान घाय
हैं उठकर अमरू से स्वप्न का हाल सुनाया अमरू ने कहा कि आपका स्वप्न भूं
नहीं होता आप यहां रहिये मैं जाकर देखआऊं तब अमीर ने अमरू को समझा
अब फिर थोड़ासा वृत्तान्त युद्ध का सुनिये कि फ़रहाद और इस्तफ़्तानोश से यु

होरहा था कि अमरू आकर पहुँचा अमरू को देखकर मुसल्मानों में अति प्रसन्नताहुई और बहमन ने देखकर बख़्तक से पूछा कि तूने तो कहा था कि अमरू और हमज़ा मरगया अब यह कहांसे आया ? बख़्तक ने कहा कि मैं क्या जानूं ? मैंने नौशेरवां के लिखने से जाना था तबतो बहमन ने क्रोधित होकर बख़्तक को उठाकर ज़ोपीन के शिरपर देमारा परन्तु उन दोनों की मृत्यु न थी इससे बचगये बहमन इसपर अतिलज्जित हुआ अमरू सब हाल जानकर क़बाद आदि को समझाकर घायलों के घावोंपर नोशदारू रखकर रात्रि दिन चलकर अमीर के पास जाकर पहुँचा तो सब हाल अमीर सुनकर उसीसमय अपने पिता से आज्ञा लेकर बहुतसे लोगों को साथ लेकर अशकर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू को लेकर काविस के तरफ़ चले अब थोड़ा हाल युद्धस्थान का सुनिये कि दोनों सेना मैदान में खड़ी थीं कि सामने से गर्द दिखाईपड़ी दोनों सेनाके दूतोंने जाकर देखा तो बिदित हुआ कि सरकोबतुक नामे नौशेरवां की सहायता के लिये आता है और सेना अधिक साथ लाता है ज़ोपीन अगवानी मिलकर उसको अपनी सेना में लेआया तो उसने भी अपना ख़ेमा उन्हीं के साथ खड़ाकरके ज़ोपीन से पूछा कि भला हमज़ा को तो हम को देखादो उसने कहा कि हमज़ा तो नहीं है परन्तु उसके दोपुत्र लड़रहे हैं तबतो उस ने प्रसन्न होकर कहा कि आज तो सेना हमारी थकी है प्रातःकाल हम उनकी बहादुरी उनको दिखावेंगे इतने में फ़रहाद घोड़ा लेकर मैदान में निकलकर खड़ाहुआ और दूसरीतरफ़से सादानपोता हमज़ा का अपने पिता से आज्ञा लेकर आया तो उस को देखकर सब हँसनेलगे कि यह तो बच्चा है पहलवानों से यह क्या लड़ेगा सरकोब ने बहमन से पूछा कि यह किसका पुत्र है ? जो लड़ने को आयाहै उसने कहा कि यह हमज़ा का पोता है सरकोब ने कहा कि भला यह फ़रहाद से क्योंकर लड़ेगा ? बहमन ने कहा कि देखिये क्या होता है यह बातें होहीरही थीं कि इतने में उसने ललकारा कि ओ पापियो ! तुममें से जिसको मरनेकी इच्छा हो वह आकर मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखावे तब फ़रहाद ने घोड़ेको बढ़ाकर एकगदा मारकर कहा कि देखा वह मारा सादान ने पृथ्वी से उठकर कहा कि पापी ! क्यों झूठबकता है?किसको तूने मारा मैं तो तेरे प्राण का गाहक बैठाहूं यह कहकर एक तलवार ऐसी मारी कि फ़रहाद का एक हाथ कटकर गिरपड़ा और ज्योंही उसने भागने की इच्छा की दौड़कर दूसरा भी हाथ काटलिया और सिपाहियों ने दौड़कर शिर काटलिया इस प्रकार से उस को मारडाला तब अमीर की सेना में तो विजय का डङ्का बजनेलगा और काफ़िरों की सेना में ग़मी पड़गई और सबका हँसना बन्द होगया और सब बड़े संदेह में हुए कि छोटे से बच्चे ने ऐसे बड़े पहलवान को मारडाला और उसके एक छोटासा भी घाव न लगा सरकोबने बहमन से कहा कि बड़ी भाग्य है इसके माता पिताकी जिसके घर में ऐसा बहादुर पुत्र उत्पन्न हुआ क्यों न उसका पिता उसका भरोसा करे यह कहकर दोनों सेना अपने २ स्थानपर चलीगईं हुरमुज़ ने पहलवानों और

सरदारों को साथ लेकर भोजन किया तत्पश्चात् शराब और कबाब खाने पीनेलगे और जब शराब प्रमाण से अधिक होगई तो सरकोब ने बहमन को हुरमुज़ के बगल में बैठे देखकर कहा कि ओ पहाड़ी! तेरा इतना बड़ा मुँह कि मुझ से बढ़कर बैठा है बहमन ने कहा कि ऐ सरकोब! सिड़ी होगया है मुझसे निडर होकर ऐसी बातें क्रोधित होकर करता है सरकोब ने उठकर घूंसा मारा तब तो उसने मन में क्रोधित होकर सरकोब को उठाकर पृथ्वीपर देमारा परन्तु हुरमुज़ने दौड़कर दोनों को हटादिया और सभा समाप्त करके चलेगये फिर प्रातःकाल दोनों सेना आकर मैदान में खड़ीहुईं तो एक ओर से बनकी तरफ़ गर्द उड़ती दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो विदित हुआ कि हमज़ा बहुतसी सेना लेकर अमरू समेत आताहै इतना सुनकर मुसल्मानलोग अतिप्रसन्न हुए और प्रसन्नता के डङ्के बजानेलगे और हरएक सरदार और पहलवान जाकर अमीर के पैरोंपर गिरे और अमीर ने सबको छाती से लगाकर सबकी कुशल पूछी तत्पश्चात् अशकर देवज़ादे पर सवार होकर मैदान में आकर बहमनसे पुकारकर कहा कि ओ पहाड़ी! मैंने कौनसा दुःख तुझे दिया था? जिसके बदले में तूने यह किया है अब बहादुर हो तो आकर मेरे साथ मैदान में लड़ इतना सुनकर बहमन ने हुरमुज़ से कहा कि मैं तो हमज़ा के सामने मुँह न दिखाऊंगा तुम जो चाहो वह करो उसने कहा मैं क्या जानूं? बहुतक जाने पीछे सरकोब ने आकर अमीर के शिरपर गदा चलाई अमीर ने रोककर कहा कि दोवार और करले सरकोब ने दूसरी वार चलाई अमीर ने उसको भी रोकलिया तब तीसरीवार ऐसे ज़ोर से मारी कि गदा से लौ निकली कि जिसके धुयें से दोनों सेना में अँधियारी छागई और सरकोब ने चिल्लाकर कहा कि देखो मारलिया और कहने लगा कि यह तो मनुष्य था जो पहाड़ होता तो वह भी जलजाता इतने में अमीर ने सामने से निकलकर कहा कि क्या बकता है? किसको तूने मारा मैं तो तेरे प्राण का घातक जीताहूं और कहा कि देख वार इसको कहतेहैं कि जो बच भी जावे तौ भी छठीके दूधतक तो निकल आवेगा यह कहकर गदा जो उसके शिरपर मारी तो वह ज़ीन परसे घोड़े की पीठपर चलागया केवल घोड़ा मारागया तब सरकोब ने चाहा कि अमीर के घोड़े को भी मारे कि इतने में अमीर कूदकर उसके सामने खड़े हुए और दोनों से गदा और तलवार चला की परन्तु कोई न हारा तब अमीर ने कहा कि जो जिसका पैर उठालेवे वह दूसरेको अधीन करके रक्खे सरकोब स्वीकार करके अमीर का पैर उठाने लगा परन्तु न उठा तब अमीर ने उठालिया और सातबार घुमाकर अमरू के हवाले किया सायंकाल होनेके कारण दोनों सेना अपने २ स्थानों पर जाकर उतरीं मुसल्मानी सेनामें तो शराब और कबाब की सभा हुई और पहाड़ी अतिदुःखित होकर पड़े रहे तत्पश्चात् अमीरने सरकोब को बुलाकर अपने समीप बैठाकर पूछा कि देखो हमने किस प्रकारसे तुमको पराजित किया है सरकोब ने कहा कि आपका कोई सामना नहीं करसक्ता ईश्वरने आपको आप

को दिया है और आधा संसार में बांटा है अब कृपा करके मुझे मुसल्मान कीजिये तब अमीर ने कलमा पढ़कर उसको मुसल्मान किया और खिलअत देकर सोने की कुरसी पर बैठाकर तीन दिनतक नाचरङ्ग होनेकी आज्ञा दी तत्पश्चात् चौथे दिन डङ्का बजवाकर अपनी सेना को साथ लेकर चौदह परेट बांधकर खड़े हुए और पहाड़ी सेना भी आकर इस प्रकार से खड़ी हुई कि मानो सिकन्दर और दारा का सामना है तब अमीर ने ललकार कर बहमन से कहा कि बहमन! जो बहादुर है तो आकर सामना कर परन्तु बहमन न आया और हुरमुज़ से कहा कि अब सेना को एकबारगी लेकर धावा करदेव इतना सुनतेही सब सेना दौड़पड़ी और अमीर अकेला खड़ा होकर यहां तक लड़ा कि रुधिर की नदी बहने लगी तब बह-मन ने ज़ोपीन से कहा कि अमीर इस समय व्याकुल होगये हैं तुम किसी यत्न से अमरू को हटादो तो आसानी में हम अमीर को मारलेते हैं ज़ोपीनने सातसौ हाथी लेकर एक तरफ़ से जाकर अमीर के शिरपर एक तलवार ऐसी मारी कि चार अं-गुल का घाव होगया और चिल्लाकर कहने लगा कि देखो हमज़ा को मारलिया यह सुनकर अमीर की सेना अतिदुःखित हुई तब तो अमीर ने अशकर से जिन्नी भाषा में कहा कि हमको सेनासे बाहर निकालकर लेचलो तब लेकर भागा और जो कोई पास आता था आगे मुँह से काटता और पीछे लातों से मारता हुआ सेना से नि-कलकर जङ्गल की तरफ़ चला कई कोस निकलकर एक नदी के समीप पहुँचा तो जाकर जब जल पीनेलगा तो अमीर नदी में गिरपड़ा जल रुधिर से लाल होगया परन्तु अशकर ने दौड़कर अमीर को नदी से ऊपर निकाल लिया डूबने से बचा लिया संयोग से सेशीरनामे गड़रिया अपनी बकरियों को पानी पीने के लिये लाया था उसने देखा कि नदी का जल लाल होरहा है और एक मनुष्य घायल नदी के तीर पड़ा है और एक घोड़ा दांतों से ऊपर खींचता है गड़रिये को देखकर दया आई और यह भी अपने चित्त में बिचारा कि यह कहीं का बादशाह लड़ाई में घायल हुआहै घोड़ा लेकर भाग आयाहै मैं जो इसकी सेवा करूंगा तो ईश्वर चाहेगा तो कुछ प्राप्त होगा यह अपने चित्त में बिचारकर उसके समीप गया और अमीर को उठाकर अशकर की पीठपर रस्सी से बांधकर अपने स्थानपर लाया और अपनी माता से सब हाल कहकर अमीर की औषध करने लगा परन्तु अशकर बराबर अमीर के समीप रात्रि दिन खड़ारहता था और जब कभी वह बाहर लेजाने की इच्छा करता तो अशकर नेत्रों से डाट देता तब वह डरकर भागजाता इसीप्रकार से सात दिवस व्यतीत होने के पश्चात् अमीर के नेत्र खुलगये तो देखा कि अश-कर बेवफ़ादा और एक मनुष्य समीप खड़े हैं और हम चारपाई पर किसी के घर में लेटे हैं इतना देखकर उस मनुष्य से पूछा कि तू कौन है और यह किसका स्थान है? उसने कहा कि मैं गड़रिया हूं आप नदी के तीर पड़े थे इसी घोड़े पर सवार कराकर ले आयाहूं अब ईश्वर आपको अच्छा करे तो मेरे भी कुछ दिन

अच्छे होवें तब अमीर ने उससे कहा कि घोड़े की पीठ पर से ज़ीन उतार लो और उसको चरने के लिये छोड़ दो और जो तुमने मेरे साथ नेकी की है इसका फल मेरे अच्छे होनेपर मिलेगा और कहा कि एक बकरी अपने गल्ले में से ला मैं उसको हलाल करदूं तो तू उसकी क़बाब और शुरुआ बनाकर मुझको खिला इसी तरह से तीन दिनतक उसको मार २ खिलाया चौथे दिन उसने अपनी माता से पूछा कि इसी तरह से यह सब बकरियों को समाप्त करदेगा अब हलाल करने देवें तब उसने जाकर अमीर से पूछा कि तू कौन है ? अमीर ने कहा कि हमज़ा का चचेरा भाई हूं सादसामी मेरा नाम है तू मेरी सेवाकर मैं तेरी बड़ी सेवा करूंगा एक बकरी के बदले दश बकरी दूंगा और इसके सिवाय और बहुत कुछ दूंगा और अच्छे होने तक एक बकरी मारकर रोज़ खिलाया कर अमीर का नाम सुन कर वह स्त्री अति प्रसन्न हुई और कहने लगी कि मैं सब बकरियां तुमको खिला दूंगी यह कहकर रोज़ एक बकरी मारकर खिलाने लगी अब अमीर की सेना का हाल सुनिये कि जब अमरू ने अमीर को सेना में न देखा तो सब मुरदों में ढूंढ़कर सेना से बाहर निकलकर अति व्याकुल होकर ढूंढ़ता हुआ चला मार्ग में जो रुधिर शिरसे गिरता गया उसी के पते से नदी के तीरतक पहुँचा तो देखा कि जल नदी का लाल है तो जाना कि अशकर देवज़ादा यहांतक लेआया है वहां से ढूंढ़तेहुए अशकर देवज़ादे के समीप पहुँचा तब वह अमीर के पास लेगया अमरू जाकर अमीरके पैरोंपर गिरा और सब वृत्तान्त कहकर अमीर से कहा कि आप अब चलिये तब अमीर ने कहा कि तुम जाकर सबको यहां लेआओ तो हम चलेंगे उसीसमय सेना में आकर अमीर के कुशल का हाल सबसे कहकर सबको साथ लेकर अति शीघ्रही मलिका समेत अमीर के पास पहुँचा मेहरनिगार ने जब जाकर देखा कि अमीर का घाव बहुत बड़ा है तब तो लपटकर रोनेलगी और इसी प्रकार से सब पहलवान और सरदार आकर अमीर से मिले अमीर ने सबको छाती से लगाया तत्पश्चात् अमीर ने अपना सब हाल कहकर सब सरदारों और पहलवानों से कहा कि इस गड़रिये ने हमारी बड़ी सेवा की है जिससे जो होसके वह इसको दे तब सबलोगों ने इतना रुपया और माल असबाब दिया कि उसके घरमें न आसका और मलिका मेहरनिगार ने भी बहुतसा ज़र जवाहिर देकर उसको धनवान् कर दिया तब वहां से कूच करके फिर मैदान में आकर युद्ध करने पर आरूढ़ हुए अमीर ने आज्ञा दी कि अब इनको चारों ओर से घेरकर मारलो कोई बचकर जाने न पावे अमीर की आज्ञा पातेही सब सेना इसप्रकार से पहाड़ी सेनापर टूट पड़ी जिस तरह व्याघ्र बकरी के लिये दौड़ता है चारों तरफ़से घेरकर ऐसा मारा कि बहुत थोड़ेही बचकर जाने पाये और जो भागे उनको मंज़िलों तक खेदकर मारा एक तरफ़ से बहमन निकला संयोग से अमरूपुत्र हमज़ा उसी तरफ़ खड़ा था उसने पीछा किया जब थोड़ी दूर चलागया तो इस विचार से कि यह अकेला है पकड़कर

खड़ा होगया दोनों से लड़ाई हुई आख़िर को बहमन मारागया और शिर काटकर अपने पिता के समीप चलाआया और अपनी बहादुरी का हाल कहकर शिर अमीर के समीप रख दिया तब अमीर बहमन के शिर को देखकर कहने लगा कि ऐसे पहलवान और ऐसी २ वस्तु कहां मिलती हैं तत्पश्चात् जितने सरदार थे सबों ने लाकर पहाड़ी सेना के सरदारों के शिरों को अमीर के पैरोंपर रखदिया इसप्रकार से अमीर विजय पाकर डङ्का बजवातेहुए सेना को साथ लेकर अपने स्थानपर आये और जिस समय अमीर घायल होकर बहमन के हाथ से बनकी ओर जाते थे उसी समय में एक परी आईथी उसने जाकर परदेकाफ़ में आसमानपरी से यह सब हाल कहा आसमान परी अतिव्याकुल होकर उसी समय करीशा और अब्दुलरहमान को बुलाकर सब हाल कहकर बहुतसे परीज़ादों को साथ लेकर दुनियाके तरफ़ चली जब आकर पहुँचगई दो कोस के फ़ासले से अब्दुलरहमान को अमीर के हाल लेने को भेजा उसने आकर जो देखा तो अमीर बैठे हैं अमीर देखकर बड़े संदेह में हुए तो उसने सब हाल पूछकर आसमानपरी और करीशा के आने की ख़बरदी तब अमीर अतिप्रसन्नता के साथ सरदारों समेत आसमानपरी की अगवानी के लिये गये पहुँचकर आसमानपरी से मिलकर करीशा का मुख चूमकर अपने गोद में बैठाकर बहुत प्यार किया परियां अमीर की सवारी की शोभा देखकर सब भूलगईं और कहनेलगीं कि तब क्यों न अमीर परदेकाफ़ से दुनिया में आनेकी इच्छा करें और अमीर से प्रार्थना करने लगीं कि आपके सरदारों और सेनाकी शोभा तो देखी परन्तु मलिकामेहरनिगार के देखने की और इच्छा है तब अमीर ने कहा कि जिस प्रकारसे तुम्हारी इच्छा है उसीप्रकार से हमारे सरदारों की इच्छा तुम्हारे देखनेकी है सो तुम परदा हटाकर उनके नेत्रों में सुरमा सुलेमानी लगादेओ कि वे तुमको देखकर प्रसन्नहोवें परियों ने कहा कि ऐसा न हो कि मोहित होकर हमको दुःख देवें अमीर ने कहा नहीं किसका मुँह है कि तुमसे बोल सके तब परियों ने परदा हटाकर अपना मुख सरदारों को दिखलाया पहलवानों ने जो देखा तो हर एक व्याकुल होगया और जब होश में हुए तो अमीर को धन्यवाद देनेलगे कि आप की कृपा से हमने इनको भी देखा नहीं कहां देखते तत्पश्चात् अमीर सबको साथ लेकर मलिका मेहरनिगार के महल में आकर चित्त को प्रसन्नकिया तो पहले मेहरनिगार मलिकासे मिली तब करीशा को चूमकर लेकर गोद में बैठाल लिया तत्पश्चात् सब परियों से यथाउचित मिलकर प्रसन्न किया और तीन दिनरात तक मलिका सब सहेली और सरदारों समेत नाचरङ्ग देखती रही और सब कार्य बन्दरहा चौथेदिन जो सौगात आदि उत्तमबस्तु परदेकाफ़ से लेकर आई थी मेहरनिगार को देकर बिदाहुई मलिका आसमानपरी के जाने के पश्चात् अमीर ने अपने सरदारों से पूछा कि मालूम नहीं होता कि पहाड़ीलोग किसतरफ़ को गये हैं अमरू ने कहा कि सुना है कि कश्मीर की तरफ़ जाकर अफ़रलाम स्वामी कश्मीर से सहायता

मांगी है उसने उनको भरोसा दियाहै इसबात को सुनकर अमरूपुत्र हमज़ा ने कहा कि आज्ञा हो तो मैं जाकर उसका नाशकरडालूं एक को भी जीता न छोड़ूं अमीर ने कहा कि इससे उत्तम क्या है ? तब वह सात पहलवानों को उनकी सेना समेत लेकर कश्मीर की ओर चला अमरू आदी अकरब फ़रहाद पुत्र लन्धौर इसतफ़तानीस आदि सरदार साथ थे सबको लेकर जब कश्मीर के समीप पहुँचा तो पहाड़ी सेना डरकर क़िले में ज़ाकर बन्दकरके बैठरही तब मुसल्मानी सेना भी चारों तरफ़से क़िले को घेरकर उतर पड़ी और कई दिनोंतक घेरे पड़ीरही एक दिन रात्रि को व्याघ्र पहाड़ से निकलकर सेना में आया और बहुत से सिपाहियों को घायल करके चलागया यह हाल जब अमीर के पुत्र को पहुँचा तो वह हथियार लेकर उसके पीछे पहाड़तक पीछा किये चलागया परन्तु पहाड़पर जाकर व्याघ्र लोप होगया तब वह कई दिनों तक उसीकी तलाश में पड़ारहा परन्तु कहीं पता न मिला आखिर को पहाड़ से उतरकर जब अपनी सेना की तरफ़ चला तो मार्ग में एक अपूर्व नगर देखकर अतिप्रसन्न हुआ और लोगों से पूछा कि यह किसका नगर है? तब लोगों ने बतलाया कि इस नगर का नाम फ़रख़ार है यहां की स्वामिनी गुलचेहरानाम ज़ोपीन की बहिन है संयोग से उसी समय में वह झरोखे की राहसे अमरूके स्वरूप को देखकर मोहित होगई और एक ख्वाजे को भेजा कि जाकर उस मनुष्य को किसी प्रकार से मेरे पास लेआओ उसने जाकर अमरू से कहा कि मेरी स्त्री आपको बुलाती है तब अमरूने न माना दूसरी बार कहने सुनने से उसके साथ गया जब उस स्त्री के पास पहुँचा तो उसने अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठा कर अपने साथ भोजन कराकर शराब पिलाई तत्पश्चात् उसके साथ भोग करने की इच्छाकी तब अमरू ने कहा कि अभी मैं तेरे साथ भोग न करूंगा क्योंकि तेरी एक बहिन मेरे पास है हम अपने सरदारों से पूछ लेवें जैसा वे कहेंगे तब वैसा हम करेंगे इतना सुनकर उसने उस समय दूत भेजकर अमरू के सरदारों को बुलवा लिया और उनसे अपना प्रयोजन कहा उसी समय में एक मनुष्य उसी नगर में रहता था उसने जब सुना कि अमीर का पुत्र ज़ोपीन की बहिन के पास बैठा है अपने दो पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम जाकर उसको पकड़लाओ वे दोनों लट्ठ बांधकर अमरू के पास आये और अमरू के मारने के लिये लाठी चलाई उसने दोनों की लाठी छीनकर ऐसा घूंसा मारा कि वे दोनों बेहोश होकर थोड़ी देरतक पड़ेरहे फिर उठकर अपने पिता के पास आकर सब हाल सुनाया तब फ़रख़ारसरशम ने कहा कि मुझसे तो हमज़ा से प्रयोजन है इससे क्या करना है परन्तु हमज़ा का मैं कुछ कर न सकूंगा तत्पश्चात् दूसरेदिन सब सरदार अमरू के पास आये तब उस स्त्री गुलचेहरा ने सबकी मेहमानी करके अतिप्रसन्न किया तब अपना मोहित होना अमरूपर सब सरदारों से कहा आदी ने अमरू से कहा कि तुम क्यों इसको बेमौतके मारतेहो इसके मनोरथ को पूराकरो अमीरज़ादे ने कहा कि किस

तरह हम शास्त्र के विरुद्ध करसक्के हैं तब आदी ने कहा कि करना और न करना तो तुम्हारे अधीन है परन्तु मुझे इसके कहनेपर दया आती है इस कारण तुमसे कहते हैं जब रात्रिहुई तो दोनों नशे में भूलकर एकही पलँगपर सोगये तब गुलचेहरा ने काम के कारण अमरू से लपटकर भोग करने की इच्छा की अमरू ने जागकर उसको एक चपत मारकर हटादिया तब तो उसने अतिदुःखित होकर अपने चित्त से विचारकिया कि यह मेरी वहिनपर मोहित है और मुझसे भोग करने की इच्छा नहीं करता इससे इसको मारडालना उचितहै एक बारगी तलवार लेकर अमरू का शिर काटकर चिल्लानेलगी कि देखो यारो कोई बैरी अमीर के पुत्र को मारगया यारों ने जब जाकर देखा कि अमरू मरापड़ा है सब देखकर रोनेलगे तब आदी ने कहा कि यहां इसी पापिनी ने अपने इच्छापूर्वक न होने के कारण मारडालाहै इस बातको सवोंने स्वीकार करके उसे बांधकर जो पूछा तो उसने कहा कि नशे में मैंने मारडाला अब जो चाहो सो करो तब सब पहलवान बड़े सन्देह में हुए कि स्त्री को मारना उचित नहीं इसी समय में अमीर ने स्वप्न में देखा कि अमरू रुधिर में पड़ाहै उसी समय अमरू मक्कार को बुलाकर कश्मीर को भेजा जब अमरू कश्मीर में पहुँचा तो मालूमहुआ कि अमरू पुत्र हमज़ाफ़रख़ार नगरमें ज़ोपीनकी बहिन के महल में है तब वहां से चलकर उस महल में जब पहुँचा तो सरदारों ने उसके पैरोंपर गिरकर सब हाल सुनाया अमरू सुनकर रोता पीटता अमीर के पास आया और कहा कि आपका पुत्र फ़रख़ार ज़ोपीन के घरमें घायल पड़ाहै और आपको अति शीघ्रही बुलाया है मैं आपको लेने आया हूं अमीर उसी समय अशकर देवज़ादे पर सवार होकर अमरू समेत फ़रख़ार में जापहुँचे तब अमरू ने इस विचारसे कि एकबारगी जो अमीर को पुत्र का मरना विदित होजावेगा तो अतिदुःख होगा इन्हें कुछ खिलालेवें इस प्रकार से विचारकर अमीरसे कहा कि किसीबाग़ में चलकर कुछ भोजन करलेवें तो उसके स्थानपर चलें अमीर स्वीकार करके एक बाटिका में जाकर उतरे संयोग से उसमें बकरियां चरतीथीं एक बकरी को मारकर क़बाब बनाया रक्षक ने बाग़में धुवां देखा जब बाग़ में आया तो देखा कि दो मनुष्य एक बकरी मार कर क़बाब बनारहे हैं यह देखकर अतिव्याकुल होकर सरशवां से जो बकरियों और बाग़ का स्वामी था जाकर ख़बरदी फ़रख़ार सरशवां यह सुनतेही वहां से दौड़कर दोनों लड़कों समेत जब बाग़ में आया तो देखताहै कि दोनों क़बाब भून २ खारहे हैं और किसी को डरते नहीं अपने लड़कों से कहा कि जाकर इन दोनों को पकड़ लाओ वे उन दोनों को जाकर पहुँचते ही अमीर के ऊपर लट्ठ चलाया अमीरने बैठे ही लट्ठ छीनकर दोनों को पृथ्वीपर देमारा यह देखकर फ़रख़ार जलकर आग होगया तुरन्तही सातसौ मनकी गदा लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा और कहनेलगा कि विदित होताहै कि तुम दोनों की मृत्यु यहां लाई है तब तो यमराज की बकरी मारकर खाई है यह कहकर अमीर के ऊपर गदा मारी तब अमीर ने बैठेहुए गदा

पकड़कर खींचली कितनाही उसने ज़ोर किया परन्तु न छोड़ा तब उसने गदा छोड़कर अमीर की कमर से हाथ लगाया तब अमीरने उठाकर पृथ्वीपर देमारा फिर वह उठ न सका तब पूछा कि ऐ जवान! तेरा क्या नामहै ? अमीर ने कहा कि अब्दुलमुत्तलब का पुत्र हमज़ा लोग मुझे कहते हैं सबलोग मुझसे डरते हैं फ़रखार ने कहा कि हमज़ा के सिवाय और किसी को ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी पीठ लगादेवे तब अमीर ने उसको मुसल्मान किया और अनेक प्रकार से प्रसन्न करके अपने साथ रहने की आज्ञा दी तब उसने चाहा कि अमरू के मरने की ख़बर सुनाऊं पर अमरू मक्कार ने नेत्रों के द्वारा निषेध किया अमीर वहां से उठकर सब को साथ लेकर आगे चले जब नगर में पहुँचे यारों ने अमीर को देखकर शोरगुल मचाया तब अमीर ने पूछा कि कुशल तो है इस प्रकार से दुःखी क्यों हो तब यारों ने कहा कि अमीरज़ादा ज़ांपीन की बहिन के हाथसे मारागया तब अमीरने आज्ञा की उसको उसी की माता के पास लेजाओ और उस स्त्रीको भी साथ लेजाओ उस से कहना कि किसी ने तुम्हारे पुत्र को मारा है अमरू ने गुलचेहरा को बांधके मलिका के हवाले किया और कहा कि इसी ने आपके पुत्र को माराहै वह इसे सुनते ही पुत्र २ कहकर मरगई तब अमीर को दूना दुःखहुआ चालीस दिनतक पुत्र के मरने की ग़मी मानी और अमरू की लोथ गुलचेहरा समेत काबिसाहिसार में सादानके पास भेजदी उसने अपनी बहिन को अपने हाथसे मारा इसप्रकारसे बदला लिया तत्पश्चात् अमीरने कहा कि इस अशुभ स्थानको नाशकरके उजाड़ देना उचित है कि यहां मेरा पुत्र मारागया है यह कहकर गदासे दरवाज़ों को टुकड़े २ करडाला और क़िले में घुसकर सबको मारडाला हरमुज़ केवल चोरदरवाज़े से निकलकर चलागया और सब उसके साथी अमीर के हाथसे मारेगये और बहुतसे मुसल्मान हुए जब कश्मीरवासियों को मारनेलगे तब वहांके स्वामीने अमीरसे सहायता चाही अमीर ने उसको मुसल्मान करके छोड़दिया और आप कूचकरके काबिसहिसार को चलेआये ॥

मदायन में पहुँचकर हरमुज़ और नौशेरवां का पतालगाना और अमीरहमज़ा का नौशेरवां के छुड़ाने के लिये जाना ॥

लिखनेवाला लिखताहै कि जिससमय हरमुज़ क़िले कश्मीर से भागकर क़िले मदायन में गया तब उसको विदित हुआ कि नौशेरवां को शद्दाद पकड़कर लेगया है और बांधकर दण्ड देरहाहै बुज़ुरुचमेहर से जाकर छोड़ानेकी यत्न पूछी तो उसने कहा कि बिना हमज़ा के गये वह नहीं छूटसकेगा सो तुम जाकर अपनी माता से एकपत्र हमज़ा के पास भेजवादो वह जाकर छुड़ालेआवेगा तब उसने जाकर अपनी माता से एकपत्र इस समाचार का लिखवाके भेजा कि बड़े लज्जाकी बात है कि तुम्हारे होते बादशाह को दूसरा दुःखदेवे शद्दाद पकड़कर लेगया है तुम ख़बर नहीं लेते अमीर ने पत्रको पढ़कर कहा कि हरचन्द नौशेरवां मेरे साथ बदीकरता है

परन्तु मैं उसके साथ नेकीही करूंगा इसवार अवश्य छोड़ाऊंगा अमरूने मनाकिया और मुक़बिल को साथ लेकर हबशकी तरफ़ चला और वहां पहुँचकर एक बाग़ में उतरकर घोड़ेको चरने के लिये छोड़कर नौशेरवांके निकालने की युक्ति करनेलगा रात्रि को मुक़बिल से कहा कि यारबनकर शद्दाद की सभा में जाकर नौशेरवां को छुड़ालेआओ उसने कहा कि जैसी आपकी इच्छाहोवे तब अमीर ख़िज़रकी कमन्द लेकर शस्त्रधारण करके कमन्द के द्वारा दीवारपर चढ़कर शद्दाद के पास पहुँचे तो देखा कि शद्दाद सोरहा और उसके समीप नौशेरवां एक लोहेके पिंजड़े में बन्द है और बहुतसा मेवाआदि शद्दाद के पलँगके नीचे रक्खा है अमीर मेवा शराब पीकर पहरेवालों को मारकर नौशेरवां को पिंजड़े समेत उठाकर मुक़बिल के समीप लेआया और आतेसमय एक परचे में लिखा कि मैं आया और तेरे क़ैदी को छोड़ालेजाता हूं नौशेरवां को मुक़बिल के पास रखकर उससे कहा कि तुम इसकी रक्षाकरो मैं कोई घोड़ा ढूंढ़कर उनके लिये लेआताहूं अमीर तो घोड़ा ढूंढ़नेगये उधर शद्दादजगा तो देखे कि नौशेरवां पिंजड़े समेत नहीं और रक्षक सब मरे पड़ेहैं बड़े सन्देहमें था कि उस परचेपर दृष्टिपड़ी उसको पढ़कर क्रोधके मारे जलनेलगा और उसी समय चार सहस्र सवार साथ लेकर अमीर की खोज में चला फिरते २ बाग़ में जो गया तो देखा कि नौशेरवां का पिंजड़ा रक्खा है पूछा कि हमज़ा कहां है उसने कहा कि मैं नहीं जानता कि कहां गया परन्तु कहीं घोड़े की खोजमेंगयाहै शद्दाद नौशेरवां को क़ैद से छुड़ाकर अमीर की खोज में चला थोड़ीदूर जाकर देखा कि मुक़बिल घोड़ा लिये आताहै हमज़ा जानकर उसको पकड़कर बांधा तब उसने कहा कि मेरा नाम हमज़ा नहीं है मैं मुक़बिलहूं तब तो शद्दाद को निश्चय हुआ कि अमीर बालू में तृषाके मारे फँसकर कहीं मरगया होगा यह बिचारकरके नौशेरवां को साथ लेकर काबिसाहिसार को चला कि वहां चलकर अमीरके लड़कों को मारकर मेहर-निगार को छीनलेवे और ज़ोपीन और हरमुज़ को भी लिखा कि हमज़ा मरगया नौशेरवां को हम साथ लेकर आते हैं तुमभी आओ कि मुसल्मानी सेना को मार-कर मेहरनिगार को छीनलेवें वे सुनतेही सेनाको लेकर दौड़धाये और अमीर का यहां हाल हुआ जिसतरह शद्दाद के दिल में आयाथा अमरू ने रात्रि को स्वप्न में देखा कि अमीर बालू के मैदान में प्यास के मारे बेताब पड़े हैं यह हाल सब से कहकर वहां से अमीर की खोज में चले मार्ग में जब आये तो देखा कि शद्दाद अपनी सेनालिये मलिका के लेने के लियेजाता है और सुना कि अमीर बालू के मैदान में प्यास के मारे मरगये तबतो और भी व्याकुलहुआ अतिशीघ्रही जाकर पहुँचे सातदिनतक इधर उधर ढूंढ़ाकिये कहीं पता न मिला आठवेंदिन अमीर के हथियार मिले तबतो चित्त कुछ ठिकाने हुआ और ज़ोर से हमज़ा का नाम लेकर पुकारने लगे तो हमज़ा सुनता था परन्तु बोल न सक्राथा आख़िरकार अमीर के पास पहुँचा देखा बहुत रोया और अतिशीघ्रही एक गिलास मिष्ट पानी का भोरे

से निकालकर अमीर को पिलाया तब नेत्र खुलगये और कुछ होश आया एक गि-लास शरबत और पीकर हथियार लेकर होश में आये देखा कि मुक़बिल और अशकर बँधे हैं अशकरने देखतेही बन्द तोड़डाले अमीर अशकरपर सवार होकर और मुक़बिल को साथ लेकर नगर में जानेकी इच्छा की तब रक्षकों ने जाकर शद्दाद के पुत्र से ख़बर की वह सहस्र सवार लेकर अमीर के सामने युद्ध करने को आया तब अमीर ने कहा कि पापी एक बार तेरा पिता हारगया है अब तू क्यों दुष्टपना करता है परन्तु उसने न माना और तलवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ा अमीर ने छीनकर पृथ्वीपर देमारा तब वह मुसल्मान हुआ और तीन दिनतक अमीर की मेहमानी करके चौथेदिन बिदाकिया अब शद्दाद का हाल सुनिये कि इधर से यह पहुँचा और उधर से ज़ोपीन और हरमुज़ इसके लिखनेपर आकर नौशेरवाँ से मिलकर उन्हीं के साथ सेना समेत उतरे तब उसी दिन शद्दाद ने डङ्का युद्ध का बजवाकर उस घोड़ेपर जिसके पैर में एकसौ बीस मन की नाल बँधती थी सवार होकर शत्रुके सामने खड़ा होकर कहने लगा कि ऐ अरबबासियो ! मैं अमीर को मारकर नौशेरवां की आज्ञा से मेहरनिगार के लेने के लिये आया हूं मेरा नाम शद्दाद है इससे उत्तम है कि तुमलोग छोड़कर अपने घर की राह लेओ नहीं तो आकर हमसे लड़ो तब लन्धौर उसके सामने आया उसने एक गदा ऐसे ज़ोर से मारी कि लन्धौर डरकर भागजावे परन्तु लन्धौर ने रोककर एक हाथ ऐसा मारा कि उसका घोड़ा पृथ्वी में दलदल के समान धसगया शद्दाद घोड़ेपर से उतरकर पैदल होकर लड़नेलगा जब गदा से जीत न सका तब तलवार से लन्धौर को घायल कर दिया परन्तु लन्धौर घायल होने पर भी बराबर शामतक लड़ता रहा शामको शद्दाद डङ्का बजवाकर चलागया और दूसरे दिन फिर फ़रहाद पुत्र लन्धौर ने आकर सामना किया वह भी घायल हुआ इसीतरह से उस दिन कई पहलवान घायल हुए तब शद्दाद मारे ख़ुशी के फूलगया फ़रख़ार ने देखा कि शद्दाद को बड़ा घमण्ड होगया किसी को अपने सामने नहीं समझता अपने घोड़े को मैदान में लड़ने के लिये निकाला तब शद्दाद ने पूछा कि ऐ मनुष्य ! तू कौन है तेरा क्या नाम है फ़र-ख़ार बोला कि मेरा नाम फ़रख़ार ख़ार सरशवां है संसार में मेरा कोई सामना नहीं करसक्ता लाचार चला शद्दाद ने गदा से मारा उसने रोककर सात सौ मनकी गदा इस ज़ोरसे मारी कि दोनों सेना चौंक उठीं और सब बड़ी प्रशंसा करनेलगे और जो शद्दाद ख़ाली न देता तो हड्डियां भी न उसकी मिलतीं शामतक युद्ध हुआ किया परन्तु कोई जीत न सका तब दोनों सेना लौटगईं दूसरे दिन फिर उन दोनों का सामनाहुआ दो तीन दिन युद्ध होने पर एक दिन फ़रख़ार ने शद्दाद का एकहाथ काटलिया उसी दिन से युद्ध का होना बन्द होगया संयोग से एक सिपाही गईमनामे ने एकदिन नौशेरवां से कहा कि जो आज्ञा हो तो मैं जाकर सब अमीर के सिपाहियों का शिर काटलाऊं नौशेरवां ने कहा कि इससे क्या उत्तम है ? अ

दिन अर्धरात्रि को वह सिपाही अरबियों की सेनामें गया देखा कि दो सिपाही क़बाद के ख़ेमे के पास टहलरहे हैं उनसे नेत्र छिपाकर एक तरफ़ का परदा काट कर ख़ेमे में जाकर क़बाद का शिर काटकर. निकलकर चल दिया तब अमरू के सिपाहियों ने जो पहरा फिरते थे पकड़ा उसके हाथ में क़बाद का शिर देखकर सब चिल्लाने लगे सेना के सरदारों ने जब उस ख़ेमे में जाकर देखा तो क़बाद बे शिर का पलँगपर पड़ा है सब देखकर शिर पीट २ कर रोनेलगे मेहरनिगार ने सुनकर ऐसा दुःख उठाया कि और किसी माता ने पुत्रके लिये न किया होगा प्रातः काल गईम के टुकड़े २ किये गये नौशेरवां ने जब सुना कि क़बाद मारागया तो उसके भी बड़ा दुःख हुआ और चालीस दिनतक दोनों सेनाओं में ग़मी पड़ी रही चालीस दिन के पश्चात् दोनों सेना आकर मैदान में खड़ीहुई और उसदिन भी फ़रख़ार और शद्दाद का सामना था कि उसीसमय में बनकी तरफ़ से गरद दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो मालूम हुआ कि अमीर अमरू के साथ बड़े धूमधाम से आते हैं फ़रख़ार तो लड़ाई में से बहुत से सरदारों को साथ लेकर अमीर से अगवानी मिलने के लिये गया और शद्दाद अमीर का नाम सुनतेही सेनामें से भागगया अमीर ने सबसे मिलमिलाकर पूछा कि शद्दाद कहां है आज क्यों नहीं पुकारता फ़रख़ार ने कहा कि मैंतो मैदान में छोड़ आया हूं तब अमीर ने चारों तरफ़ देखा परन्तु कहीं दिखाई न पड़ा तो अमीर ने जाना कि वह भाग गया अश्करपर सवार होकर थोड़ी दूरगये जब पता न मिला तो जिन्नी भाषा में उससे कहा कि बेटे जल्द शद्दाद के पासपहुँचाओ अश्कर जो उड़ा तो थोड़ीही देर में पहुँचादिया उसने देखा कि हमज़ा आकर पहुँच गया अब किसीतरह से प्राण नहीं बचसकेगा नेत्रों में अँधियारी छागई चाहताथा कि भागकर निकल जावे कि इतने में अमीर ने कमन्द डालकर पकड़लिया कि इतने में लन्धौर भी आपहुँचा अमीर ने कमन्द उसके हाथ में देकर कहा कि खुसरो इसको खींच लन्धौर ने कमन्द पकड़के खींचा तो शद्दाद का प्राण निकलगया तब उसके अपूर्व घोड़े को लन्धौर को दिया उसने कहा कि यह घोड़ा आपही के योग्य है इतनेही में अमरू भी आपहुँचा उसने शद्दादका शिर काटकर एक बरछीपर टांगदिया तत्पश्चात् अमीर अपने मित्रों के साथ बातें करतेहुए धीरे२ इस बिचार से अपने स्थानकी तरफ़ चले कि ऐसा न हो कि कोई आकर फिर युद्ध करनेको आरूढ़हो उधर जो ज़ोपीन ने देखा कि क़िला ख़ाली है चलकर मेहरनिगार को लेआवें इस बिचार से मुसल्मानी सेना में गया और बहुत से द्वारपालकों को मारता हुआ मलिका मेहरनिगार के समीप पहुँचा तब मेहरनिगार ने उसको देखकर एक तीर उसके पेट में ऐसा मारा कि वह घायल होकर गिरपड़ा तब ज़ोपीन ने जाना कि मुझसे यह राज़ी नहीं है तब उठकर उसके शरीर में मारा कि वह बेहोश होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी फिर वह चाहता था कि दूसरी तलवार चलावे कि इतने में अमीर आपहुँचा तब जो ज़ोपीन ने भागने

की क़ाबू न पाई तब अमीर पर वार लगाई अमीरने रोककर भागते हुए एक तल-वार ऐसी मारी कि जोपीन दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा वहां से अमीर जब महल में आये तो देखा कि मलिका बेहोश पड़ीहै उसको देखकर बेताब होकर सेना में जाकर अमरू को ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर के बुलाने के लिये भेजा इधर मेहरनिगार का प्राण निकलगया तब अमीर एक आह मारकर बेहोश होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा थोड़ी समयपर जब होशहुआ तो बौरहे की तरह से कभी हँसते और रोते थे अमरू ख़्वाजे बुज़ुरुचमेहर को लेकर आया तो मलिका को मरी पाया और अमीर को दीवाना देखकर व्याकुल होगया और बुज़ुरुचमेहर से कहने लगा कि ऐ ख़्वाजे! किसीयुक्ति से अमीर को अच्छा करो ख़्वाजे ने कहा कि आज के इक्कीसवें दिन अमीर आपही अच्छे होजावेंगे तब अमीर तीन ताबूत बनवाकर सब सखासमेत मक्के की तरफ़ चले समीप पहुँचकर एक पवित्र स्थानपर उतरकर वहीं तीनों की क़बर खोदवाकर ताबूतों को रखकर उस रात्रि को वहीं पर ठहरे रहे लिखनेवाला लिखता है कि इक्कीस दिन के पश्चात् बाईसवीं रात्रि को अमीर ने स्वप्न में देखा कि हज़-रतख़िज़र आये हैं और एक गिलास शराब देकर कहनेलगे कि ओ हमज़ा! एक स्त्री के लिये तू क्यों ऐसा दुःख सहता है तू है तो बहुत ऐसी स्त्री मिलजावेंगी इतना देखकर नेत्र जो खुलगये तो घबराकर अमरू से पूछनेलगा कि सत्य बता अमरू मेरा क्या हाल था अमरू ने सब हाल अमीरसे कहा तब अमीरने अपने स्वप्न देखने का हाल सबसे कहा सब सुनकर अतिप्रसन्न हुए और कहनेलगे कि आप तो उनके पुत्रहैं सिवाय उनके और कौन आपको समझासक्राहै विना उनके समझाये और किसी का कहना भी आप नहीं मानतेहैं परन्तु अमीर ने न माना कहनेलगा कि कुछ हो परन्तु मैं मेहरनिगारसे वादा करचुकाहूं उसी की क़बर पर मरूंगा तुम सबलोग अपने २ घर की राहलो ईश्वर के लिये अब मुझे दुःख न दो अमरू ने अनेक प्रकार से समझाया परन्तु किसी का कहना न माना अमरू के पुत्र सादानको गद्दीपर बैठाकर मिश्रकी तरफ़ रवानाकिया तब अमरू ने कहा कि ऐ अमीर! मुझको तो अपने पास रहने दे मुझे क्यों अपने पास से जुदा करता है अमीर ने कहा कि मेरे पास मुक़बिल के सिवाय और किसी का काम नहीं है जब सब चलेगये तब अमरू ने कहा ऐ अमीर! मुझको तो अपने पास रहने दे मुझे अपने पाससे पृथक् न कर अमीर ने कहा कि मुक़बिल तो रहसक्ता है परन्तु और कोई मेरे पास नहीं रहसक्ता मुझे दूसरे मनुष्यकी कुछ आवश्यकता नहीं है आख़िरकार अमरू भी चला-गया तत्पश्चात् अमीरने शिर मुड़ाकर साधूका वेष धारण किया और एक लँगोट बांधकर मेहरनिगारकी क़ब्रपर रहनेलगे जब नींदआती तो उसी क़ब्रपर सोरहते॥

फ़ारूनपुत्र फ़रहादपक और कयात पुत्र गईम सिपाही का अमीर के पास पहुँचना और अमीर और मुक़बिल को बांधकर लेजाना॥

लेखकलोग मोतीरूपी काग़ज़पर अपनी तेज़ लेखनी से यों लिखते हैं कि मलिका

मेहरनिगार की क़ब्रपर अमीर के रहने की ख़बर देशभर में फैलगई तब हर एक शत्रु चारोंतरफ़ से अमीर के मारने की युक्ति में हुए जिसमें से क़ारूनपुत्र फ़र्हाद जो अपने सामने दूसरे को बलवान् न समझता था मनुष्य तो क्या देवों से भी नहीं डरताथा बहुतसी सेना साथ लेकर अमीर के मारने के लिये स्थान से निकल कर चला तो मार्ग में कयातपुत्र गईमसे जिसने क़वादको मारा था मुलाक़ात हुई तो उससे पूछा कि तू कहां जाताहै क्यों दुःख उठाताहै उसने कहा कि मेरे पिता को हमज़ा के सरदारों ने मारडाला था सो आजकल सुनाहै कि हमज़ा मेहरनिगार की क़ब्रपर है सो उसी के मारने के लिये जाते हैं तब क़ारून ने कहा कि मैंभी वहीं जाताहूं इससे उत्तम होगाकि हम तुम साथही चलें उसने स्वीकार किया तब दोनों सेना साथ होकर कई दिनों के बाद मक्के के समीप जाकर पहुँचकर एक स्थान पर उतरीं तब कयात ने क़ारून से कहा कि तुम यहींरहो मैं जाकर अमीर के पकड़ने की युक्तिकरूं जो तुमको इसी भीड़भाड़ से देखेगा तो वह भी ख़बरदार होजायगा तब क़ारून वहीं रहगया कयात साधु बनकर अमीर के पास गया अमीर को सलाम करके बैठगया अमीर ने पूछा कि तू कौन है? उसने कहा कि साधू हूं अब आपही के समीप रहकर दिनकाटूंगा अमीर ने कहा कि मेरी सेवा के लिये तो मुक़बिल है उसने कहाकि अब तो मैं कहीं जाता नहीं तब अमीर चुप होरहे थोड़ी देरमें जब मुक़बिल भोजन लेआया तब अमीर ने उसको भी साथ बैठाकर भोजन करवाया जब अमीर ने जल मांगा तो कयात ने उठकर दारू बेहोशी मिलाकर अमीर और मुक़बिल को पिलाकर दोनों को अपनी चालाकी से बेहोश करदिया और आप पेशाब के बहाने से वहां से उठकर चलाआया और क़ारून से कहा कि मैं दोनों को बेहोश करआया हूं अतिशीघ्र ही सवार होकर मेरे साथ चलिये तब क़ारून ने कयात के साथ होकर मेहरनिगारकी क़ब्रपर जाकर अमीरके मारने के लिये तलवार निकाली तो मुक़बिल देखकर क़ारून के मारने को दौड़ा परन्तु नशाके कारण पृथ्वीपर गिरपड़ा अमीर का भी यही हालहुआ आख़िर को दोनों को बांधकर क़ारून ने अपनी सेना में लाकर दोनों को चैतन्य करके क़ैद में करके पूछा कि ऐअरबबासियो! तुम्हारा इतना बड़ा मक़दूर कि मेरे बाप को तूने मारडाला और नौशेरवां का दामाद बनकर आपही बादशाह बनकर राज्य करताहै अब बता क्योंकर तेरा प्राण बचेगा अमीर ने कहा कि सत्य है जो मुझसे लड़ा और हारकर मुसल्मान होने से इन्कार किया है उसको मैंने माराहै परन्तु मेरा मरना ईश्वर के हाथ है तूतो मेरा कुछ नहीं करसक्ता विदित होता है कि तू बड़ा अज्ञान है इसपर क़ारून अति क्रोधित होकर अमीर को कोड़े मारने लगा अमीर ने कहा कि इतने कोड़े तू मुझ को मारता है तुझे कोई मारे तो क्या हो उसने कहा कि मुझको कौन मारसक्ताहै यह कहकर अमीर को नंगा करके कोड़ोंसे मारनेलगा और ऊंट की खाल खिंचवाकर नमक छिड़क के उसमें अमीर को लपेटकर एक बड़े ऊंचे खम्भे में

लटकादिया इसी प्रकार से सदैव सायंकाल को उसी खंभे में लटकादेता और सबेरे उतारकर कोड़े मारता इस प्रकार से अपने पुरुषों का बदला लेतारहा तत्पश्चात् नौशेरवां को इस हालकी खबरदी उसने सुनकर अपने हमराहियों से पूछा कि अमीर को मरवाडालें या छोड़ादेवें उन्होंने कहा कि अब तो मेहरनिगार भी नहीं है कि उसकी मुहब्बत हे अब मारही डालना उचित है आखिरकार नौशेरवां ने अपने सरदारों की बातें स्वीकार कीं और वहां जाकर अपने सामने अमीर को दण्ड दिलानेलगा संयोग से यह खबर अमरू को पहुँची तब अमरू सबको इकट्ठा बटोरकर नौशेरवां पर चढ़ाई करके गया कि जाकर नौशेरवां को विजयकरके अमीर को छोड़ालेआवें परन्तु वहां बहुत दिनोंतक रहे कोई ऐसी युक्ति न लगी कि जिसमें अमीर को छोड़ाते पीछे को क़िलेके अन्दर जाकर कपड़े की दूकान रखकर दूकानदारी करने लगा अमीर का हाल सुनिये कि उसी प्रकार से सदैव दण्डपाता था कि एकदिन क़ारून की बहिन फ़राज़बानों ने स्वप्न में देखा कि हज़रत ख़िजर ने आकर उसको मुसल्मान किया और कहा कि तुम अतिशीघ्रही जाकर अमीरको इस दुःख से छोड़ाकर अपने पास लाकर उसके साथ भोग करो तुम्हारे उससे पुत्र पैदा होगा वह यह सुननेही अमीर के पास दौड़आई और बहुतसा माल असबाब रक्षकों को देकर अमीर को छोड़ा लेजाकर अपने स्थान में रखकर भोगविलास करनेलगी अमीर के लोप होजाने की खबर क़ारून को पहुँची उसने अपने वज़ीर से पूछा कि रमल से बिचारो कि हमज़ा कहां गया है उसने बिचारकर बतलाया कि आपकी बहिन के पास है तब उसने एक मनुष्य उसके पास भेजा कि जाकर देखआओ कि हमज़ा वहां है या नहीं उसने जब फ़राज़बानों के स्थानपर जाकर पूछा तो वह जलकर आग होगई और कहनेलगी कि वज़ीर ऐसा प्रबल होगया कि मुझको झूठ मूठ चोरी लगाताहै क़ारून ने जब सुना कि यह झूठही कहताहै उसी समय वज़ीरको मारडाला और अमीर की खोज में लोगों को इधर उधर भेजा तब अमीर ने फ़रहाद से कहकर एक सहेली को अमरू की सूरत का सब पता बतलाकर भेजा कि तुम जाकर इस रूप का मनुष्य देखो तो लेआओ वह जब बाज़ार में गई तो अमरूको कपड़ा बेचते देखा उससे जाकर कहा कि हमारी बेगमसाहबा ने कुछ कपड़ा मांगा है सो लेचलो अमरू सुनतेही कपड़ों का गट्ठर बांधकर शिरपर रखकर उसके साथ होकर गया और कपड़ा खोल २ कर दिखलानेलगा अमीर अमरू का शब्द सुनकर बाहर निकल आया अमरू दौड़कर अमीर के पैरोंपर गिरा अमीरने उठाकर छाती से लगाकर सब हाल पूछा उसने कहा कि सेना सब तैयार है आपही का आसरा देखरही है तब अमीर ने कहा कि यहां से निकलने की भी कोई युक्ति है अमरू ने कहा कि हमारी दूकानपर चलकर बैठिये वहां से किसी प्रकार से निकल चलेंगे अमीर ने कहा नहीं वहां क्या करेंगे ? किसी लोहार की दूकानपर चलो कि वहां कोई शस्त्र भी मिलेगा तब दोनों एक लोहार की दूकानपर गये अमीर बैठगया [illegible]

जारहे थे कि इतने में बख्तक और क़ारून ने आकर कहा कि अब बतला हमसे क्योंकर बचकर जायगा यह कहकर क़ारून ने अमीर के ऊपर तलवार चलाई अमीर ने उसी हथौड़े से मारकर तलवार छीनकर क़ारून को पकड़कर अमरू को सौंपकर एक शब्द ऐसा किया कि जिससे नगरवासी व्याकुल होगये और अमीर की सेना सुनकर दौड़कर क़िले में दाखिलहुई उधर बख़्तक ने जब नौशेरवां से अमीर के छूटने का हाल कहा तो वह चोरदरवाज़े से भाग खड़ा हुआ सेना ने पहुँचकर लूटना मारना शुरूअ किया और उस दिन मुसल्मानी सेना के हाथ इतना माल असबाब लगा कि किसी को रखने की जगह नहीं मिली और बहुतों को जो मुसल्मान हुए उनको नहीं मारा तत्पश्चात् गद्दीपर बैठकर अमीर ने क़ारून को बुलाकर पूछा कि बता अब तेरी कौनसी गति कीजावे तब वह रोनेलगा आख़िर को अमीर ने कहा कि हम तेरा सब अपराध क्षमा करते हैं तू मुसल्मान होकर हमारे पास रह उसने उत्तरदिया कि यह तो मुझ से नहीं होगा इतना सुनतेही अमीर ने आदी अकरब को सौंपदिया उसने कुत्ते की मौत मारकर जलादिया और शिर को क़िले के दरवाज़े पर लटका दिया सब मनोरथ ईश्वर ने पूर्ण किया अब अमरू का वृत्तान्त सुनिये कि वहांसे भागा मदायन को चलाजाता था कि राह में दो पहलवान जिनका नाम सिरवरहना तपशी और दीवानतपशी था जो नौशेरवांही की सहायता के लिये आते थे मुलाक़ात हुई तो उनसे अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर सब वृत्तान्त कहा फिर उन दोनों ने हाथ जोड़कर कहा कि हमज़ा तो क्या जो सातों देशों के शत्रु आवें तो हम सबको मारडालेंगे बादशाह इसपर अतिप्रसन्न हुए और बड़ी भारी ख़िलअत देकर अपने साथ शराब पिलाकर उत्तम २ पदार्थ मँगवाकर अपने साथही भोजन करवानेलगे अब अमीर का हाल सुनिये कि फ़राज़बानों के साथ एक अच्छी सायत में व्याह करके चालीस दिनतक भोग बिलास में पड़ेरहे इकतालीसवें दिन सभा में बैठकर पूछा कि नौशेरवां का भी कुछ हाल किसी को मालूम है अमरू ने कहा कि दो शाहज़ादे तपशदेश के वासी बड़ी सेनालेकर मार्ग में नौशेरवां से आकर मिले हैं आपका आसरा देखते हैं अमीर ने यह सुनकर उसी समय आदीअकरबको आज्ञा दी कि यात्रा उस दिशा की करो और सेना को आज्ञा दी कि युद्ध करनेपर आरूढ़ होवे आदी ने उसी समय आकर अमीर की आज्ञानुसार प्रबन्ध किया दूसरे दिन अमीर वहां से चलकर तीसरे दिन जाकर उस सेना से थोड़ी दूर उतरपड़े और डङ्का बजवाकर चौदह पलटनें मैदान में बराबर से खड़ी कीं तब तपशवासियों ने भी अपनी पलटन जमाई और प्रथम सिरवरहना तपशी ने घोड़ेको मैदान में कुदाया उसके पीछे लन्धौर भी आकर मैदान में खड़ा हुआ तब उसने कहा कि ओ नपुंसक! नाम बतलावेगा या बेनाम मारा जायगा लन्धौर ने कहा कि ऐ पापी, जन्तु! मेरानाम लन्धौर पुत्र सादान है संसार में मेरी [illegible] प्रसिद्ध है [illegible] यह सुनकर उसने गदा चलाई लन्धौर ने उसको

रोककर सातसौ मनकी गदा ऐसे ज़ोरसे मारी कि जो पहाड़पर लगती तो टूटजाता परन्तु उसका एकबालभी न टेढ़ा हुआ इसी तरह से शामतक दोनों लड़ाकिये सायंकाल को डङ्का पलटने का बजवा दोनों सेना अपने स्थानपर गईं अमीर ने क़न्धौर से पूछा कि तुमने इस पहलवान को कैसा पाया ? उसने कहा कि यहां तो क्या परदेकाफ़ में देवोंको भी मैंने ऐसा नहीं देखा अमीर ने हँसकर कहा कि इसका बदन फ़ौलाद का है इसपर हथियार नहीं लगेगा दूसरे दिन सिरबरहना और आदी अकरब का सामना हुआ तो जब आदी गदा मारता तो वह शिरपर रोकलेता यहांतक कि आदी मारते २ थकगया परन्तु उसके एक घाव भी न लगा इतने में बन की तरफ़ से गरद देखाई पड़ी दूतों ने जाकर जब देखा तो विदित हुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये अलजोश बरबरी चालीस सहस्र सवार समेत आयाहै नौशेरवां ने कई बादशाहों को उसकी अगवानी के लिये भेजा जिस समय वह आया तो देखा कि नौगज़ का डीलहै देखने से डर मालूम होताहै नौशेरवां देखकर अति प्रसन्न हुआ और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर अमीर और अमरू का हाल उसको सुनाकर डङ्का पलटने का बजवाकर उसको अपने खेमे में लाकर अपूर्व प्रकार की शराब पिलाकर भोजन करवाया और नाचरङ्ग की सभा करवा के दूसरे दिन सिरबरहना तपशी ने मैदान में आकर ललकारा कि ओ हमज़ा ! तू क्यों प्राण बचाता है आकर सामनाकर पहलवानों को भेजकर दिन क्यों काटता है यह बातें होहीरही थीं कि बनकी तरफ़ से गरद दिखाई पड़ी और गरद मिटनेके बाद चालीस निशान नारंजीपोश दिखाईपड़े अमरू ने देखकर अमीर से कहा कि यह वही नक़ाबदार है जिसने मेरी कईबार सहायता की थी जब आप परदेकाफ़ को गयेथे इतने में नक़ाबदार ने आकर एक ओर अपनी सेना का परेट जमाया और शत्रु से पुकार कहा कि तुममें से जिसका जी चाहे वह पहले मुझ से लड़े तब मुसल्मानी सेना से लड़ने की इच्छाकरे तब अमीर ने कहा कि तुम जाकर नक़ाबदार से कहो कि वह हमको ललकार चुका है हमको जानेदेवे आप खड़े होकर तमाशा देखे और जाती समय हमसे बेमिले न जाना अमरू ने जाकर कहा तो उसने स्वीकार किया अमीर अशकर देवज़ादे पर सवार होकर आये और सिरबरहना से कहा कि तुम से युद्ध करना वृथा है तुम हमारी कमर पकड़कर उठाओ हम तुम्हारी जो उठालेवें वह दूसरे को आधीनकरके रक्खे उसने कहा कि बहुत अच्छा अमीर घोड़ेपर से उतरपड़े वह भी उतरा और अमीर का कमरबन्द उठाते २ उसके पैर पृथ्वी में धसगये परन्तु अमीर न हिले लाचार होकर छोड़दिया तब अमरू ने सेना से पुकारकर कहा कि यारो खबरदार होजाओ अमीर अभी ऐसा शब्द करेंगे कि हज़ारहों शत्रु मरजावेंगे अमरू की इस बात को सुनकर सब बड़े सन्देह में हुए कि यह क्या बकताहै ? हमज़ा शब्द चाहे करे कहीं पहलवान के शब्दसे लोग मरते हैं इतने में अमीर ने ऐसा शब्दकिया कि शत्रुकी सेनामें बहुतों के कान के परदे फटगये

आख़िरकार अमीर ने उसको उठाकर मुश्कें बांधकर अमरू के हवाले किया उसका दूसरा भाई यह हाल देखकर तलवार खींचकर दौड़ा अमीर ने यही गति उसकी भी की तब नौशेरवां ने दुःखित होकर डङ्का बजवाकर अपने स्थान की राहली तब अमीर भी सेनासमेत अपने खेमे में आकर बैठे और नक़ाबदार ने भी अपनी सेना को अमीर की सेना के समीप बास करने की आज्ञादी और आप सीधा अमीर के खेमे में जाकर दाखिलहुआ तो अमीर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर बहुतसी वस्तु परदेकाफ़ की दिखलाकर अमरू की सहायता का धन्यबाद देनेलगे तब उसने कहा कि अब अधिक लज्जित न कीजिये कि इतने दिन आपको परदेकाफ़ से आये हुए हुआ और मैं न आसका और आपने बड़े २ दुःख सहे अमीर ने उसकी बात चीत से अपने चित्त में बिचारा कि यह स्त्री है हाथ पकड़कर दूसरे खेमे में लेजाकर कहा कि अब काम ने बहुत दुःखदिया यह कहकर नक़ाब मुखपर से उतार लिया तो देखतेही बेहोश होकर गिरपड़ा अमरू की आंखों में भी चकचौंधी आगई परन्तु उसने सम्हलकर अमीर के मुखपर गुलाब आदिक छिड़ककर नक़ाबदार से कहा कि अपराध क्षमाकरके अमीर से मुख मिलाइये कि आपकी सुगन्ध से अमीर को होश होजावे नारंजीपोश ने जो बहुत दिनों से बिरह में मरती थी उसी समय अमीर के मुख से मुख मिलाकर उनके चित्तको आनन्द दिया अमीर ने नेत्र खोल दिये तब अमरू ने लाकर दो २ गिलास अति उत्तम शराब पिलाकर चैतन्य किया अमीर ने नारंजीपोश को बग़ल में बैठाकर सब हाल पूछा उसने कहा कि मेरा नारंजपरी नामहै बहुत दिनोंसे परदेकाफ़ को छोड़कर आपके बिरह में इधर उधर घूमती थी जिसदिन आप गुस्तहम से लड़तेथे मेरा तख़्त वायुपर उड़ता जाता था आपके सूर्यरूपी मुख को देखकर मैं बेहोश होगई थी तो मेरी वज़ीरज़ादी ने मुझको उत्तम स्थानपर ले जाकर चैतन्य किया था तब मैं फिर उसी स्थानपर आपके देखने के लिये आई थी और बहुत से लोग मेरे साथ थे अपने सेवकों को आपके ढूंढ़नेके लिये भेजा था तो मालूम हुआ कि आप अब्दुलरहमान के साथ परदेकाफ़ को चलेगये क्या कहूं ? कि जो इतने दिनों में मैंने दुःख सहे हैं परन्तु लाचार होकर रात्रिदिन आपके आनेके लिये ईश्वर से मनाती थी और जिससमय से मुझको बिदित हुआ कि आप अपनी स्त्री को अमरू को सौंपगयेहैं और नौशेरवां उसके लेजानेकी घातमें है उसीसमयसे मैंने परीज़ादों की डांक बैठाईथी कि जब कोई शत्रु आकर अमरूपर चढ़ाई करे तो हमको ख़बरकरो इसी प्रकार से जब कोई आताथा तो मैं चढ़दौड़ती थी और आपकी कृपासे बिजय पाती रही यह बातें सुनकर अमीर ने उसका मुख चूमलिया और उसी समय ब्याह करके सब रात्रि दोनों ने भोग बिलास करके एक ने दूसरे को आनन्द दिया प्रातःकाल होतेही अमीर ने उठकर स्नान किया और पोशाक पहिनकर सभा में बैठकर दोनों तपशियों से बुलवाकर पूछा कि हम ने किसतरह से तुमलोगों को पकड़ा उन्होंने कहा कि जिसप्रकार से पहलवान लोगों का धर्म है अब आप हमारे

स्वामी हुए और हम आपके सेवक तब अमीर ने दोनों को कलमा पढ़ाकर मुसलमान करके बड़ी भारी ख़िलअत देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर अतिप्रसन्न किया और अनेकप्रकार से उनको समझाकर आप महल में जाकर मलिका नारंजपरी के साथ भोगबिलास करनेलगे तत्पश्चात् एक दिन फिर शत्रु की सेना में डङ्का बजा अमीर ने शब्द सुनकर अपनी सेना में भी डङ्का बजने की आज्ञादी डङ्के का शब्द सुनतेही सब सेना हथियार बांधकर अमीर के पास आकर खड़ीहुई तब अमीर ने मैदान में जाकर शत्रु के सामने चौदह पलटनों का परेट बराबर से जमाया अलजोश शत्रुकी तरफ़ से खड़ाहुआ और अमीर की तरफ़ से सरकोब गया तो सामना होतेही अलजोश घोड़ेपर से कूदपड़ा और ऐसी दोलत्ती सरकोब के शिरपर मारी कि वह बेताब होकर गिरपड़ा और अलजोश फिर घोड़े की पीठपर होरहा फिर जब सरकोब उठा तो फिर यही गति की लोग देखकर हँसनेलगे और सरकोब बड़े आश्चर्य में हुआ कि कौनसी युक्ति इसके साथ करें कि इतने में बनकी तरफ़ से एक सेना दिखाई पड़ी दूतोंने जाकर देखा तो विदितहुआ कि नौशेरवां की सहायता के लिये चारभाई धमधाम से समूमादी,सिनादी, कबाद-आदी और मियादजरादी अलबुर्ज़ से आते हैं नौशेरवां ने कई सरदारों को उन की अगवानी के लिये भेजकर बुलवाया और अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर उनको बैठाकर सब कुशलक्षेम पूछरहे थे कि एकबारगी मुसल्मानी सेनामें चिल्लाहट मची कि एक गोरख़रने बन से आकर बहुतों को घायलकिया अमीर उसकी तरफ़ दौड़े आगे २ वह और पीछे २ अमीर अशकर देवज़ादे पर सवार शामलक पीछा किये जाकर दूसरे देश में पहुँचे तो वह लोप होगया अमीर लाचार होकर एक शिकार करके क़बाब बनवाकर खाकर उस रात्रि को वहीं एकवृक्ष के नीचे सोरहे प्रातःकाल होते फिर वह गोरख़र दिखाई पड़ा अमीर ने उठकर उसका पीछा किया वह भागते २ एक बाग़ में पहुँचा अमीर भी उसके पीछे २ बाग़ में गये और सर्वत्र बढ़कर भूख के मारे बेताब होकर बैठकर इधर उधर देखनेलगे तो एकतरफ़ बक-रियां दिखाई पड़ीं तो अमीर उसमें से एकबकरी को मार भूनकर खारहे थे कि इतने में कन्दज़ जिसकी बकरियां थीं सातसौ मनकी गदा लेकर अमीर के शिरपर गिरा अमीर ने उसको उठाकर तालाब में फेंकदिया तब तो वह बड़े सन्देह में हुआ कि यह कौन है जिसने मुझे उठाकर फेंकदिया तालाब से निकलकर अमीर के सामने आकर पूछनेलगा कि आप कौन हैं अमीर ने कहा कि हम सादान अमीरहमज़ा के भाई हैं वह हमज़ा का नाम सुनतेही अमीर के पैरोंपर गिरपड़ा और कहनेलगा कि अब मैं आपही के साथ रहूंगा आख़िरकार अमीर ने उसको मुसल्मान करके अपने साथ रहने की आज्ञा दी तब उसने कई दिनोंतक अमीर की मेहमानी की तत्प-श्चात् अमीर ने उससे पूछा कि यह कौन देश है ? उसने कहा कि कस्लेसाका यह देश है और इसकी एक बेटी ऐसी स्वरूपवान् है किसीके साथ वह ब्याह नहीं

कस्ती अमीर ने कहा कि अच्छा हमको उस नगर में लेचलो उसने कहा बहुत अच्छा चलिये मैं लेचलूंगा आख़िरकार अमीर वहां से उठकर चले जब थोड़ी दूर गये तो उसने कहा कि हे अमीर ! अब तो कुछ खा पी लीजिये तब चलिये अमीर उसी जगह उतरपड़े और दो बकरियों को भूनकर खाकर चले थोड़ीही दूर गये थे कि उसने कहा कि क्षुधा के मारे चला नहीं जाता तब तो अमीर हैरानहुए कि इस को यहां क्या खिलावें ? जाते जाते एक सौदागर उतरा था उसी के समीप जाकर उतरे तो अमीर ने जाकर उस सौदागर से कहा कि थोड़ासा भोजन दीजिये उस सौदागर ने कहा कि आकर खाइये सब आपही का है अमीर ने लेजाकर उसको बैठाकर खूब खिलवाया तब अमीर ने सौदागर से पूछा कि आप कहां से आते हैं और कहां जाइयेगा कारवां ने कहा कि हमलोगों की इच्छा तो खमनजाने की थी परन्तु सुना है कि फ़ोलाद वज़ीर क़ैसर का डकैती करता है इससे वहांजाते डरते हैं अमीर ने कहा कि जब हमलोग तुम्हारे साथ हैं तो तुमको कुछ डर नहीं है उन्हों ने पूछा कि आप कौन हैं अमीर ने कहा कि अमीरहमज़ा के भाई हैं गोरख़र हम को उठा लेआया है तब तो सौदागर अतिप्रसन्न हुआ कि तुम अब्दुलमुत्तलब के बेटे हो वह मेरा मित्र है तो तुम मेरे भी पुत्र हो आख़िरकार वे सौदागर अमीर के साथ होकर चले मार्ग में फ़ौलाद डाकू से मुलाक़ात हुई अमीर ने उसको मार डाला और वहां से सीधे आकर ख़ुरमना की सराय में उतरे तो चलते समय सौदागरों ने अमीर से कहा था कि आप हमको वहां पहुँचादीजिये तो पांचवां हिस्सा अपने माल का आपको देंगे सो पहुँचने पर लाकर अमीर के आगे रखदिया परन्तु अमीर ने न लिया और उसी सराय में रहकर दानपुण्य करने लगा यहांतक कि बहुत से फ़क़ीर धनवान् होगये यह ख़बर उस स्त्री को पहुँची तो उसने अपनी एक सहेली को भेजा कि जाकर देखआओ कि वह मनुष्य कैसा है ? उसने देखकर जाकर कहा कि यह तो वही मनुष्य मालूम होता है जिसकी तसवीर आपके पास है वही दानपुण्य कररहा है यह सुनकर वह मारे खुशी के फूलगई और पण्डितों ने पहलेही बिचारकर कहा था कि हमज़ा आपही इस नगर में आकर तेरे साथ ब्याह करेगा संयोग से नसाई नामे पुत्र शहफरग का बहुतसी सेना के साथ आकर नगर लूटने लगा अमीर ने शोरगुल सुनकर लोगों से पूछा कि यह क्यों चढ़कर आया है लोगों ने कहा कि बादशाह की बेटी एक है उसी के लिये आया है यह सुनकर अमीर ने अशक़र की पीठपर ज़ीन रक्खी और कन्दज़ को साथ लेकर फाटक पर पहुँचकर कोतवाल से कहा कि फाटक खोलदो कि हम बाहरजावें उसने न माना आख़िर को उसको मारकर फाटक तोड़डाला अमीर कन्दज़ पर नाराज़ हुए कि इस बिचारे को क्यों मारा ? यह ख़बर बादशाह को पहुँची उसने आकर अमीर से कहा कि तू क्यों ऐसी मेहनत उठाता है अमीर ने कहा कि कुछ मेहनत नहीं आप आकर तमाशा देखिये उसने कहा कि जो आप नहीं मानते तो

जो मेरी सेना है उसी को साथ लीजिये अमीर ने कहा कि सेना की कुछ आवश्यकता नहीं परन्तु जब शत्रु की सेना भागे तब लूटने के लिये सेना लेकर आना आखिरकार अमीर ने जाकर फ़िरंगियों की सेना चालीस पहलवानोंको मारकर भगा दी और चार कोसतक पीछा करके बहुतेरों को घायल किया बादशाह की लड़की को भी यह ख़बर मालूम हुई तब एक कोठेपर बैठकर बाल खोलकर ईश्वर से मनाने लगी कि यह दूसरे के लिये लड़ता है बचाओ और दूरबीन लगाकर अमीर की लड़ाई का तमाशा देखने लगी और बादशाह ने जब देखा कि दोनों मनुष्यों ने शत्रु को हल्ला करके भगादिया तब तो अतिप्रसन्न होकर अपने वज़ीरसे पूछनेलगे कि ये दोनों कौन हैं उसने कहा कि एक सौदागर सराय में टिका है ये दोनों भी उन्हीं के साथ हैं तब बादशाह ने उन सौदागरों को बुलाकर पूछा कि ये दोनों कौनहैं उन्होंने मार्ग का सब हाल कहकर कहा कि यह जो घोड़े पर सवार है यह तो अमीरहमज़ा का भाई है और शदसामी इसका नाम है दूसरा मनुष्य इन्हीं के साथ है और कुछ मैं नहीं जानता हूं बादशाह अफ़सोस करने लगे कि इतने दिनों से यह मेरे नगर में है और मुझको न मालूम हुआ नहीं तो इनकी मेहमानदारी करते और कहने लगा कि निश्चय करके यह हमज़ा है दूसरे में ऐसी शक्ति नहीं है अच्छा अब देखलिया जावेगा तत्पश्चात् जब अमीर ने फ़िरंगियों को मारकर हटादिया तब बादशाह ने अमीरकी आज्ञानुसार सेना समेत जाकर सब माल असबाब शत्रु का लूट लिया और अपनी सेना में कहा कि इसमें से कोई न छूना यह सब माल शदसामी का है रावेपलासपोशने भी बहुत सा रुपया पैसा साधू और मँगनों को लुटाया यहां तक दान किया कि कोई उस नगर में दुःखी न रहगया जिससमय अमीर शत्रु को पराजितकर नगर की तरफ़ फिरे तो फ़तहनोश अमीर को साथ लेकर क़िले में आकर अतिप्रसन्नता के साथ बैठे तब फ़तहनोश ने बड़ी धूमधाम से अमीर की मेहमानदारी करके अपने साथ शराब क़बाब खिलाया कन्दज़ जो नशे में आया तो पलेपना नामे एक पहलवान से लड़ने लगा अमीर ने डाटकर मनाकरदिया और कई दिनके बिलास के पश्चात् बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा जो रावपा मानती तो इसी के साथ ब्याह करदेते इससे उत्तम कोई न मिलेगा वज़ीर ने जब जाकर रावपासे पूछा तो उसने शिर झुका के कहा कि पिताजी की जैसी इच्छा हो मैं उनकी आज्ञा से बाहर नहीं हूं बादशाह ने यह सुनकर अमीर से अपनी दामादी स्वीकार करनेकी प्रार्थनाकी अमीर ने स्वीकार किया तब बादशाह एक शुभसायत पूछकर उसी दिन ब्याहका सामान इकट्ठा करनेलगा अमीर ने उस समय अपने चित्तमें बिचारा कि इस समय जो अमरू होता तो अति ही प्रसन्न होता अमरू का हाल सुनिये कि जिस दिन से अमीर गोरखर के पीछे निकलेथे उसी दिनसे अमरू भी बराबर पता लेता हुआ वहां से चला तहांतक कि एक दिन अमीर के ब्याह के पहले अमरूने बादशाहके फाटक पर पहुँचकर दरबानों

ने कहा कि बादशाह से जाकर कहो कि शदसामीनामे मेरा गुलाम भागकर आया है उसको अभी हमारे पास लाकर हाज़िर करें नहीं तो अच्छा न होगा दरबान ने जाकर बादशाह से उसका सन्देशा कहा अमीर सुनकर अतिव्याकुल हुए कि कौन है दरबान से पूछा कि उसका डीलडौल कैसा है? उसने कहा कि तेरहगज़ का तो लम्बा है और पांचगज़ की टोपी लालबनात की दिये है और उसपर दो पर लगे हैं वे वायु से हिलते हैं और व्याघ्र के चर्म की क़बा गले में है और बहुत से तीर और काग़ज़ की ढाल शिरपर रक्खे है और अठारह मनका मोटा हाथ में लियेहुए ऐसे डाट से अड़ा खड़ा है कि देखनेसे डर मालूम होताहै अमीर इस हाल को सुनकर बाहर निकल आये सब लोग सुनकर बड़े आश्चर्य में हुए अमरू अमीर को देखतेही दौड़कर पैरोंपर गिरपड़ा अमीर ने उठाकर छाती से लगाया और हाथ पकड़कर लेजाकर अपने समीप बैठाकर सब वृत्तान्त उनकी चालाकी का सुना बादशाह ने कहा कि यह तो बतलाइये कि ये कौनहैं अमीर ने कहा कि नौशेरवां का मसखरा है अमरू ने कहा कि साहब मसखरे तो बादशाह और अमीर होते हैं मुझ को यह कहां मयस्सर है यह सुनकर सब सभा के लोग हँसने लगे तत्पश्चात् ब्याह के समय अमीर ने अमरू से कहा कि जाकर तुम एक क़ाज़ी मुसल्मान को ब्याह कराने के लिये लेआओ अमरू वहां से उठकर बाहर आया और क़ाज़ी का वेष धारण करके एक बड़ा आसा हाथ में लेकर लङ्ग मारता हुआ जाकर बादशाह के सामने खड़ाहुआ लोगों ने उठकर बैठाया और सब लोग कहने लगे कि आजतक हमने तो ऐसा वृद्ध मनुष्य कभी नहीं देखा था न मालूम हज़रत कहां से आये हैं अति प्रसन्न करके व्याह कराने की आज्ञा दी अमरू ने इस प्रकार से पढ़ा कि लोग सुनकर घबरागये बादशाह ने ब्याह कराने के पश्चात् हज़ार अशरफ़ियां अमीर के आगे रखदीं तब अमरू ने कहा कि इसको मैं क्या करूंगा पांच हज़ार अशरफ़ी से कम में नहीं लेता कन्दज़ ने कहा कि क़ाज़ीसाहब जो आप न लें तो इनको मुझे दे दीजिये तब अमरू ने उनको उठाकर झोरे में रखलिया और कन्दज़ को एक आसा ऐसा मारा कि वह पृथ्वीपर गिरकर लोटने लगा और अमरू ने अपनी राह ली कन्दज़ कहने लगा कि अच्छा क़ाज़ीजी कहीं तो मिलोगे तो मैं समझूंगा बादशाह ने पूछा कि यह कहां से आया था अमीर ने कहा कि ईश्वर ने इसको भेज दिया था फिर कन्दज़ ने पूछा कि वह मसखरा कहांगया ऐसे क़ाज़ी को लाया जिसने बे अपराध मुझे मारा है कि अबतक मेरे शरीर में पीड़ाहै जो वह क़ाज़ी न मिलेगा तो उसीसे समझूंगा उसे बड़ा दुःखदूंगा इतने में अमरू फिर दरबार में आया और कन्दज़के शिरपर शिर रखकर ऐसा नाचा कि लोग देखकर हँस २ कर लोट २ गये बादशाह भी अमरू की चालाकी से अतिप्रसन्न हुए और अपने वज़ीर से कहने लगे कि ऐसा मनुष्य तो हमने कभी नहीं देखा यह हरबात में अति प्रचण्ड है तत्पश्चात् शराब पीकर सब बदमस्त होगये और कूद २ नाचने लगे सब

दुःख सुख भूलगया तब बादशाह ने बहुतसा इनआम अमरू को दिया और सबको यथाउचित प्रसन्न किया इसी प्रकार से सात दिन रात्रि नाच रङ्ग हुआ किया आठवें दिन अमीर ने अमरू से कहा कि तुम चलकर सेना को हमारा हाल सुनाओ हम कुछ दिन यहां की सैर करके आते हैं तब अमरू तो सेनाकी तरफ़ चला और अमीर महल में जाकर रावेपलासपोश के साथ भोग बिलास रात्रि दिन करनेलगे थोड़े दिनों के बाद एक सहेली ने आकर ख़बरदी कि मलिकाके अवधानहै अमीर सुनकर अतिप्रसन्न हुए और कहनेलगे कि अब जबतक लड़का न होगा तबतक हम भी यहीं रहेंगे रावपा ने कहा कि यही मेरीभी इच्छा है कि मैंने आप के बिरह में बहुतसा दुःख उठाया है अब तो कुछ दिन सुख दीजिये॥

अमीर का फ़तेहयार भाई फ़तेहनोश के देश में जाना और अज़दहे का मारना और अलमशेर रूमी का उत्पन्न होना॥

लेखकलोग लिखते हैं कि जब अमीर का व्याह रावपा के साथ हुआ तो एक फ़तेहनोश के भाई फ़तेहयार नामे ने जिसका देश वहां से मिला था इन्होंने इस बात को सुनकर कि फ़तेहनोश ने अपनी बेटी का व्याह एक मुसाफ़िरके साथ करादिया है अपने भाई को लिखा कि मैंने सुनाहै कि रावपा का व्याह किया है सो दामाद के देखने की मेरी भी इच्छा है कृपा करके भेजदीजिये फ़तेहनोश ने उस पत्र को अमीर के हाथ में देदिया अमीर ने पत्र पढ़कर कहा कि अच्छा हम जायँगे आख़िरकार दूसरे दिन अमीर गये जब समीप पहुँचे तो फ़तेहयार अगवानी मिलकर लेजाकर अपने स्थानपर अतिप्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होकर बातें कररहे थे कि एकबारगी शोर गुल सुनाईपड़ा अमीर ने पूछा कि यह शोर क्यों होता है? उसने कहा कि इस नगर के समीप एक अज़दहा है वह जब सांस लेताहै तो बहुतसे मनुष्य जीव जन्तु भस्म होजातेहैं उसी ने सांस लियाहै अमीरने कहा कि अफ़सोस है कि आजतक कभी इसका हाल फ़तेहनोशने मुझ से नहीं कहा नहीं तो अबतक कभी मारडालते अच्छा अब आप किसी को मेरे साथ करदीजिये कि वह दूर से उसके रहने का स्थान दिखादेवे फ़तेहयार ने कहा कि मैं आपही आपके साथ चलूंगा तब अमीर ने अशक़र को तैयार कराया और सवार होकर क़न्दज़ को साथ लेकर जाने के लिये आरूढ़ हुए और फ़तेहयार भी अपनी सेना साथ लेकर अमीर के साथ हुए कि हरएक अपने चित्त में आश्चर्य करता था कि यह मनुष्य अज़दहे को किस तरह मारेगा आख़िरकार अमीर ने उसको मारकर दो भाग करदिये तब उसके मुख से ऐसा धुआं निकला कि कोसोंतक अँधियारा होगया जब धुआं बन्द होगया तब अमीरने फ़तेहयारको लेजाकर दिखलाया वह देखकर अतिप्रसन्न हुआ और जितनेलोग थे देखकर अमीर की सब प्रशंसा करनेलगे तत्पश्चात् थोड़े दिन तक वहां बास करके नगरख़रशनामे में आये और इतने दिनों में गर्भ के दिन भी पूरेहुए और एक अच्छी सायत एक पुत्र पैदाहुआ तो अमीर ने उसका नाम अलम-

शेर रूमी रक्खा और फ़तेहनोश ने इतना पुण्य किया कि बहुत से लोग धनवान् होगये जिसने जो चाहा वह लिया जब अलमशेररूमी चालीस दिनका हुआ तब अमीर बादशाह और रावपापलासपोश से बिदाहुए जाती समय कहा कि जिस समय यह लड़का युवा हो तो इसको हमज़ा की सेना में भेजदेना तब फ़तेहनोश ने अमीर से सौगन्द देकर पूछा कि सत्यबताओ तुम्हारा नाम शादसामी है या हमज़ा अमीर ने कहा कि हमज़ा मैंहीहूं फ़तेहनोश अतिप्रसन्न हुआ और क़न्दज़ बग़ल बजा २ कर कहनेलगा कि मेरी बात तो रहगई कि आधीन हुआ तो केवल हमज़ा के हुआ दूसरा मुझसे न जीतसका रावपा ने भी सुनकर ईश्वर का धन्यबाद किया कि हमज़ा ऐसा पुरुष मिला जो संसार में प्रसिद्ध है तत्पश्चात् अमीर वहां से क़न्दज़ को साथ लेकर अपनी सेना में पहुँचे तो सब सरदारों ने दौड़कर सलामकिया अमीर ने सब को छाती से लगाकर सब हाल पूछकर क़न्दज़को अलजोश के साथ लड़नेको भेजा अलजोश ने सदैवकी तरह उसको भी लातों से मारा वह बड़े सन्देह में पड़ारहा कि किसतरह से इसको मारूं आख़िरकार शामतक दोनों से युद्ध हुआ दूसरे दिन उसने अमीर को ललकारा तो अमीर अशक़र देवज़ादे पर सवार होकर गये और अलजोश से वार चलाने को कहा उसने दोवार चलाकर तीसरीवार चाहा कि दोलत्ती मारे अमीरने उसके पैर पकड़कर घुमाकर देमारा और बांधकर अमरू के हवाले किया अमरू ने उससे कहा कि उठचल उसने कहा कि बल हो तो उठा लेचल अमरू ने दो तीन कोड़े मारे तबतो वह कूदता हुआ अमरू के आगे २ भागा लोग देखकर हँसनेलगे तत्पश्चात् अमीर डङ्काबजवा के चले आये रात्रि को अमीर ने अलजोश को बुलाकर पूछा कि अब क्या इच्छा है ? उसने कहा कि सेवक को क्या जैसी आज्ञा हो वही करूं जबतक प्राणहैं आपकी सेवकाई करूंगा तब अमीर ने उसको मुसल्मान करके अति प्रतिष्ठा से जड़ाऊ कुरसीपर बैठाकर सबसे अधिक प्रतिष्ठा दी तत्पश्चात् अमरू ने बाला गुलामी का उसके कान में डालकर नाचरङ्ग करानेकी तैयारी की लेखक लिखताहै कि अपनी सभा में महली ने आकर ख़बर दी कि नारंजपरी के पुत्र उत्पन्नहुआ अमीर ने सुनकर डङ्काबजाने की आज्ञा दी और सबको यथा उचित इनआम देकर एक मनकी सुवर्णकी हँसुली बनवाकर अमीरज़ादे के गले में पहिनाकर तौक़ज़री नाम रखकर रक्षाकरनेवाली को सौंपदिया और बहुतसे सिपाही उसकी रक्षाके लिये मुक़र्रर किये तत्पश्चात् आप सवार होकर मैदान में गये तो एक दिन सेनासे निकलकर अमीर को ललकारा तब इस्तफ़तेहनोश ने जाकर उसका सामना किया इतने में बनकी तरफ़ से एक सेना दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर ख़बर ली तो विदित हुआ कि शाहज़ादारूम दोनों सेनाओंसे युद्ध करने के लिये आता है इतने में आकर दोनों सेनाओंके बीच में परेट जमाकर शाहज़ादे नौशेरवां की सेनाकी तरफ़ घोड़ा लेजाकर ललकारा कि जिसको बहादुरीका घमण्ड हो वह आकर हमारे सामने दिखावे तब नौशेरवां की ओर से एकादी सामने

आकर गदा चलाने की इच्छाकी थी कि इतने में शाहज़ादेरूमने गदा छीनकर फेंकदी और एकादी को घोड़े समेत उठाकर पृथ्वीपर पटकदिया कि वह मरगया इसी प्रकार से थोड़ेही काल में बहुतसे नौशेरवां के सरदारों को मारकर सेनाका जी तोड़ दिया तब अमीर की सेनाके सरदारों को ललकारा तब फ़रहाद ने जाकर सामना किया तब उसने एक वार ऐसी मारी कि हाथी जिसपर फ़रहाद सवारथा गिरकर मरगया इसी प्रकार से कई पहलवानों के सामना करनेके पश्चात् शाहरूमने कहा कि हमज़ा क्यों नहीं आता आख़िरकार हमज़ा ने सामना करके कमर पकड़कर चाहताथा कि उठाकर पृथ्वीपर पटके कि इतने में आकाशवाणी हुई कि ख़बरदार हमज़ा! यह तेरा पुत्र है यह सुनकर अमीर ने धीरे से रखदिया तब वह उठकर अमीर के पैरपर गिरा अमीर ने उसको छाती से लगाया और हाथ पकड़कर सेना में लेआकर सब सरदारोंसे उसका अपराध क्षमा करवाया अमीर का पुत्र जानकर सबलोग अतिप्रसन्न हुए और सात दिनतक नाचरङ्ग हुआकिया आठवें दिन शत्रु की सेना मे डङ्के का शब्द सुनाई दिया अमीर ने भी डङ्का बजवाया और मैदानमें जाकर अपनी सेना का परे जमाकर खड़ेहुए तब नौशेरवां की सेना से एक पहलवान आदीनाम खड़ा होकर ललकारनेलगा रुस्तमपीलतन उसके सामने गया तो तीनिवार रोककर एक तलवार ऐसी लगाई कि उसका प्राण निकल गया लिखने वाला लिखता है कि उस समय रुस्तमपीलतन ने पचास पहलवानों को मारकर नौशेरवां की सेना में जाकर बहुतेर पहलवानों को मारकर सेना को भगा दिया अमीर ने देखा कि पुत्र अकेला है सेना लेकर दौड़कर उसी के साथ मारते २ चार कोसतक खेदकर छोड़दिया और लौटकर इतना माल व असबाब पाया कि उसको इतना कभी न मिलाथा जिसे कोई आपसे उठाकर न लेजासका तत्पश्चात् रुस्तम आकर अमीर के क़दमों पर गिरा अमीर ने उठाकर छाती से लगाकर बहुत सा रुपया अशरफ़ी पुण्य किया तत्पश्चात् नाचरङ्ग कराने की आज्ञा दी और सब कारोबार बन्दरहा नौशेरवां ने बख़्तकसे कहा कि बड़ी पराजय हुई अब कोई सामान युद्ध का नहीं रहा सेना सब व्याकुल है अब कौन यत्न करना उचित है बख़्तक ने कहा कि यहां से निकट ख़ावर नगर है वहां का स्वामी क़ैमाज़शाह ख़ावरी बड़ा बहादुर और स्वभाव का अति उत्तम है उसी के निकट चलकर शरण लीजिये ईश्वर चाहेंगे तो वह आपका नाम सुनकर अति प्रतिष्ठा के साथ सम्मुख होगा नौशेरवां उस नगर की तरफ़ चला और दूसरे दिन जाकर पहुँचा तो दूतोंने उसको जाकर ख़बरदी कि नौशेरवां सातदेशोंका बादशाह हमज़ासे हारकर आपके निकट सहायता के लिये आयाहै वह बड़े धूमधामसे सवार होकर नौशेरवां की अगवानी के लिये गया और अपने स्थानपर लाकर तख़्तपर बैठालकर सब हाल पूछनेके बाद उसको बड़ी आशादी कि जो हमज़ा यहां आवेगा तो अपने कियेहुएका फल पावेगा बख़्तकने कहा कि जो ऐसा न होता तो काहेको बादशाह आपके पास आते॥

अमीर का नौशेरवां का पीछा करके खावरनगर की तरफ़आना और क़ैमाज़ बादशाह खावर को मुसल्मान करना ॥

लिखनेवाला लिखता है जिस समय अमीर सभा से उठे तो अमरूसे पूछा कि कुछ मालूम नहीं होता कि नौशेरवां किस दिशाको गया अमरू ने कहा कि सुनाहै कि क़ैमाजशाह खावरी के पास जाकर शरणली है उसने शरण देकर वचन दिया है कि तुम यहां रहो अमीर जब आवेगा तो हम उसको आनेका फल दिखावेंगे अमीर ने हँसकर कहा कि हमारा खेमा खावर की तरफ़ रवाना हो उसकी आज्ञानुसार कियागया तब अमीर दूसरे दिन सेना समेत खावरकी तरफ़ चले जिस समय खावर के निकट पहुँचे क़ैमाजशाह को एकपत्र इस समाचार का लिखकर अमरू के हाथ भेजा कि नौशेरवां और बख़्तक दो हमारे शत्रु तुम्हारे पासहैं उनको बांधकर हमारे पास भेजदो नहीं तो हम आकर बड़ा दण्डदेंगे अमरू ने पत्र लेकर दरबानों से कहा कि बादशाह से अतिशीघ्रही हमारी ख़बरकरो दरबानों ने जाकर कहा तब बादशाह ने अमरूको सभा में बुलाकर पत्र मांगा अमरू ने कहा कि सेंतमेंत मैं इस पत्रको न दूंगा तुम नहीं जानते कि यह पत्र बड़ेनामी मनुष्यका है आख़िरकार क़ैमाज ने बहुतसी अशरफ़ियां देकर उस पत्र को लेकर चूमकर खोलकर पढ़कर नोचडाला और कहनेलगा कि जो हमज़ा लिखताकि नौशेरवां और बख़्तक को मेरे पास बांधकर भेजदो नहीं तो तुम्हारे तख़्त के पटरों से ताबूत बनावेंगे तो क्या हम उसके नौकर हैं या उससे डरते हैं अमरू ने कहा कि लाचार हैं कि अमीर ने मना किया है नहीं तो जिस तरह से तूने पत्र फारडाला है उसी तरह से हम तेरे पेटको फाड़ते क़ैमाज़ ने क्रोधित होकर अपने गुलामों से जो हाथ बांधकर खड़े थे आज्ञा दी कि इसको पकड़लो जब वे दौड़े तब अमरू भी ख़ंजर निकालकर बहुतों को मारकर बादशाह के शिरपर एक चपत मारकर मुकुट लेकर चलादिया बहुतों ने पीछा किया परन्तु अमरू को कौन पाता है आख़िरकार अमरू ने आकर अमीर से सब वृत्तान्त कहा दूसरे दिन क़ैमाज़शाह डङ्का बजाकर युद्ध करनेपर आरूढ़ हुआ अमीर ने भी अपनी सेनाको परेट जमाया तो सबसे पहले खुरशेद खावरी बहिन क़ैमाज़शाहकी ने जो अपने सामने किसी को न समझती थी मैदानमें खड़ीहोकर ललकारा तब अमीर की सेनामें से शेरमारनामी ने जाकर सामना किया तो उसने एकही बरछी मारकर घोड़े को घायल किया इसी तरह से थोड़े ही काल में बहुतसे पहलवानों को घायल किया आख़िरकार रुस्तमपीलतन से न रहागया उसने भी जाके सामना किया तब उसने एकवार शाहज़ादे पर भी चलाई रुस्तमने बरछी पकड़कर खींचलिया कितनाही उसने बलकिया लेकिन बरछी न छूटी और थोड़ी देर में घोड़ेपर से कूदकर उसको घोड़े से गिराकर चाहा कि बांध लेवें लेकिन जब मालूम हुआ कि स्त्री है तो गोद में उठाकर अमीर के पास लाकर डालदिया अमीर ने उससे पूछा कि तू कौन है क्यों लड़ने आई ? उसने कहा कि मैं क़ैमाज़की बहिनहूं खुरशेदखावरी मेरा नाम

है तब अमीर ने आज्ञादी कि इसको रुस्तम की माता के पास लेजाओ आखिर-कार खुरशैद खाबरी तो उधर भेजीगई इधर क़ैमाज़शाह के भाई से रुस्तमपीलतन का सामना हुआ तो रुस्तम ने उसको भी बांधा और पुकार कर कहा कि स्त्री को खड़ाकर तमाशा देखतेहो जो मर्द हो तो खुदआकर लड़ो तब नीमतनपिता क़ैमाज़-शाहखाबरी ने आकर सामना किया रुस्तम ने उसको भी एकहीबार में बांधलिया तत्पश्चात् हुमानखाबरी आया तो उसको आतेही बांधलिया इसी तरहसे थोड़ेकाल में बहुत से पहलवानों को बांधलिया आख़िरकार क़ैमाज़ डरकर पलटने का डङ्का बजवाकर भागगया तब अमीर भी अपनी सेना समेत अपने स्थानपर चलेआये रुस्तम ने आकर अमीर के क़दम छुये अमीर ने गले से लगाकर बहुतसा रुपया अशरफ़ी पुण्य करके रात्रि को सभा में बैठकर नीमतन और हुमान से बुलाकर पूछा कि तुम्हारी अब क्या इच्छा है ? उन्होंने कहा कि जबतक क़ैमाज़ मुसल्मान न होवे तबतक हमलोगों को मुआफ़ रखिये अमीर ने स्वीकार करके आदी के हवाले किया और आप नाचरंग देखने लगे उसी समय में खुरशैदखाबरी से पुछवाया कि तुझ को रुस्तम के साथ ब्याह करना स्वीकार है ? उसने उत्तर दिया कि मेरी भाग्य में यह कहां है कि ऐसा पुरुष मुझे मिले तब अमीर ने एक अच्छी सायत पूछकर दोनों का ब्याह करदिया तब रुस्तम सातदिन रात्रि बराबर महल में रहकर भोग बिलास करता रहा आठवें दिन डङ्के का शब्द सुनकर महल से बाहर आया और शस्त्र धारण करके अमीर के साथ होकर मैदान में जाकर सेना का परेट जमाकर खड़ा हुआ तब क़ैमाज़शाह ने घोड़े को मैदान में लाकर ललकारा कि ऐ शाहज़ादे ! तू लड़ना नहीं जानता आ मैं सिखलादूं यह सुनकर रुस्तम घोड़े को लेकर उसके सामने गया तब उसने आठसौ मनकी गदा उठाकर रुस्तम के ऊपर मारी तो रुस्तम ने तो ढाल से रोकलिया लेकिन घोड़ा घायल होगया तब शाहज़ादे ने घोड़े पर से कूदकर एक तलवार ऐसी लगाई कि उसके घोड़े के चारोंपैर कटकर गिर पड़े फिर दोनों दूसरे घोड़ों पर सवार होकर लड़ने लगे रुस्तम ने हज़ार मनकी गदा इस ज़ोर से बहमन के शिरपर मारी कि जो पहाड़ होता तो वह भी सुरमा होजाता लेकिन क़ैमाज़ का एक बाल भी न टेढ़ाहुआ हँसकर कहने लगा कि हमज़ा के पुत्र ! इसी बलपर मुझ से लड़ने आया है जा अपने पिता को भेजदे वह आकर मुझसे लड़े रुस्तम ने कहा कि तूने मेरा क्याकिया जो मेरे पिता को बुलाता है ऐसी बात मत बक आखिरकार शामतक दोनों लड़ाकिये देखनेवाले बड़े आश्चर्य में हुए शाम को क़ैमाज़ डङ्का बाज़गश्त बजवाकर चलागया दूसरेदिन फिर दोनों सेना आकर परेटपर खड़ीहुई उस दिन शामतक लन्धौर और क़ैमाज़ का सामना रहा आख़िरकार सायंकाल को दोनों सेना अपने २ स्थानोंपर गईं तब अमीर ने लन्धौर और रुस्तम से पूछा कि यह कैसा पहलवान है ? उन्हों ने कहा कि आप के बाद संसार में यही है दूसरे दिन दोनों सेना मैदान में आकर खड़ी हुई और कोई

सेना से न निकला था कि एक जवान चालीस गज़का लम्बा बनकी तरफ़ से आकर दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा हुआ और नौशेरवां की सेना के तरफ़ मुख करके ललकारा नौशेरवां ने एक आदी को उससे सामना करनेको भेजा उसने एक घूंसा ऐसा मारा कि उसकी हड्डियां चूर २ होगई उठने के योग्य न रहा तब दूसरे आदी ने आकर सामना किया उस का भी वही हाल किया तब तो सबका जी टूट गया कोई सामने न आसका थोड़ी देर रहकर मुसल्मानी सेना की ओर मुख करके ललकारा तो सरकोब ने पहले जाकर सामना किया फिर क़न्दज़ ने उन दोनों को उठा २ कर पृथ्वी पर छोड़कर कहा कि तुम जाओ दूसरे को भेजो जब ये दोनों हारकर आये तो अमीर ने क़न्दज़ से कहा कि यह तुम्हारा पुत्र हमको मालूम होता है क़न्दज़ ने कहा कि जो यह मेरा पुत्र होगा तौ मैं बेमारे न छोड़ूंगा तत्पश्चात् रुस्तम ने जाकर सामना किया उसने चाहा कि इसको भी उठाकर फेंके लेकिन रुस्तम ने भी उसकी कमर पकड़ी थोड़ी देरतक दोनों ज़ोर करतेरहे आख़िर रुस्तम ने एकबारगी उठाकर पृथ्वीपर धीरे से रखकर पूछा कि सत्यबता तू कौन है तेरा क्या नाम है? उसने कहा कि मेरा शबानतायफ़ी नाम है और क़न्दज़ सरशबान का पुत्र हूं तब शाहज़ादे ने उसको अपने साथ अमीर के पास लाकर अमीर के क़दमों पर गिराया अमीर ने उठाकर गले से लगाकर सब वृत्तान्त पूछकर अपने समीप बैठाकर सब सरदारों से बड़ा अधिकार दिया तत्पश्चात् सात दिवसतक सभा की और यथोचित लोगों को पारितोषिक दिया आठवें दिन फिर दोनों सेना आकर मैदान में खड़ी हुई तब शबानतायफ़ी क़ैमाज़शाह का सामना हुआ सब दिन लड़ाई हुआ की लेकिन जीत हार न सका सायंकाल को दोनों सेना अपने २ ख़ेमे में गईं दूसरे दिन प्रातःकाल मैदान में आकर क़ैमाज़ ने घोड़ा निकालकर ललकारा कि ऐ हमज़ा! जो लड़ने आया हो तो तू आकर सामना कर लड़के को भेजकर दिन क्यों काटता है तुझको लज्जा नहीं आती तेरी सेना पराजित होजाती है इतना सुनकर अमीर अशक़र पर सवार होकर मैदान में खड़े हुए तो दोनों हथियार लेकर लड़ाकिये परन्तु किसी की जीत हार न हुई आख़िरकार अमीर ने क़न्दज़ से कहा कि हे बादशाह! हमारी तुम्हारी हथियार की लड़ाई होचुकी अब पग उठाई हो जो हारे वह दूसरे की सेवा करे आख़िरकार दोनों की कमर पकरौवल हुई तो क़न्दज़शाह ने अमीर की कमर पकड़ कर उठाया लेकिन न उठासका तो हारकर छोड़ दिया तब अमीर ने कमर पकड़कर एकबारगी उठाकर पृथ्वी पर रखकर अमरू के हवाले किया और डङ्का ख़ुशी का बजवाते हुए ख़ेमे में आकर आज्ञादी कि ख़ाबरियों को लेआओ तो अमरू ने लाकर मौजूद किया तब अमीर ने क़ैमाज़शाह से कहा कि हम जीते तुम हारे अब हमारी सेवकाई करो उसने कहा कि मुसल्मान तो मैं नहीं हूंगा और सब करने को आरूढ़ हूं तब अमीर ने क्रोधित होकर आदी अकरब से आज्ञा दी कि इसको गदा

से मारडालो उसने लेजाकर मारने की आज्ञा दी परन्तु क़ैमाज़ के शरीर में कुछ दुःख भी न होता था यह देखकर अमीर कहने लगे कि बड़े अफ़सोस की बात है कि ऐसा पहलवान हाथ से निकला जाता है और मेरा कहना नहीं मानता आज्ञा दी कि इसको आदी के हवाले करो क़ैमाज़ ने कहा कबतक बांधरक्खोगे अमीर ने कहा ज़िन्दगी भर न छोड़ूंगा इतने में क़ैमाज़शाह ने अमरू से जलपीने को मांगा तब अमीर ने शरबत बनाकर मन्त्र पढ़कर फूंककर क़ैमाज़ को दिया उसने ज्योंही शरबत पिया त्योंही उसके चित्त में मुसल्मानी धर्म का स्मरण आ गया तब तो अमीर के पास आकर कहनेलगा कि अब मुझको सब स्वीकार है जो आपका चित्त चाहे वह कीजिये तब अमीर ने उसके भाई पुत्र पिता समेत मुसल्मान करके बड़ी भारी ख़िलअत देकर अपने समीप जड़ाऊ कुरसी पर बैठाकर बड़े धूम धाम की सभा नाचरङ्ग करवाई नौशेरवां ने बख़्तक से कहा कि अब तो यहां से भागना चाहिये नहीं थोड़ी देरमें बांधेजावेंगे बख़्तक ने कहा कि यहां से कयोमुर्स नगर अति निकट है वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है उसके डरसे क़ैमाज़ पहाड़ में भाग जाता था आख़िरकार नौशेरवां बख़्तक समेत जाकर वहां पहुँचकर सहायता मांगी तो अगवानी लेकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर सब आदर भाव करके सब हाल नौशेरवां का सुनकर कहा कि आप यहां चैन से वास कीजिये वह हमारा क्या कर सक्ता है नौशेरवां उसकी बातपर प्रसन्न हुए और उसके यहां रहकर आसरा देखने लगे अमीर का हाल सुनिये कि सभा में बैठे थे कि एकबारगी अमरू से पूछ उठे कि नौशेरवां किसके पास गया है अमरू ने कहा कि कयोमुर्स नेज़ेबाज़ी में अति प्रचण्ड है उसी ने रक्खा है और कहता है कि जो हमज़ा यहां आवे तो उस की मृत्यु आवे अमीर ने सुनकर हँसकर ख़ेमा अगवानी जाने की आज्ञा देकर दूसरे दिन कूच करके बड़ी धूमधाम से उसके नगर के समीप उतरकर कयोमुर्सशाह को अपने आने की ख़बर देकर अति प्रसन्नता से सभाबिलास करने लगे उधर कयोमुर्स युद्धपर आरूढ़ होकर मैदानमें खड़ा होकर डङ्का बजवाने लगा तब अमीर भी डङ्का बजवाकर युद्धकी तैयारी करके उसकी तरफ़ चला जब समीप पहुँचा तो कयोमुर्स बख़्तक के साथ देखने के लिये चलाआया तो जब अमीर की सेना निकली और बख़्तक कयोमुर्स से नाम लेकर बतलाने लगा तो अमीर की सेना का प्रमाण न करसका तब कयोमुर्स बख़्तकसे कहने लगा कि हमको यह नहीं मालूम था कि अमीर हमज़ाके साथ इतनी सिपाह और बड़े पहलवान हैं आख़िरकार दोनों से बड़ा युद्ध हुआ पहले तो कयोमुर्स ने अमीर के बहुत से पहलवानों को घायल किया लेकिन आख़िर को अमीरहमज़ा ने पछाड़कर बांधकर अमरू के हवाले करदिया नौशेरवां का हाल सुनिये कि जब उसने देखा कि कयोमुर्स अमीर के कारागार में गया तो उसने बख़्तक से कहा कि अब तो कयोमुर्स पकड़ा गया अब यहां से निकल चलने की कोई यत्न करनी चाहिये नहीं तो क़ैद होंगे बख़्तकने कहा कि यहां से थोड़ीदूर

पर गैलान नगर है वहां का स्वामी बड़ा बहादुर है कि उससे कोई हथियार चलाने में सामना नहीं करसक्ता कि उसकी प्रशंसा जीभ से नहीं होसक्ती और हमज़ा उसके सम्मुख तिनके के समान है सो वहीं चलकर वास कीजिये तब नौशेरवां ने दूसरे दिन यात्रा करके गैलान के समीप पहुँचकर उतरकर बादशाह गैलान को अमीर के दुःख देने का हाल लिखकर भेजा उसने पत्र को पढ़कर नौशेरवां को अगवानी मिलकर अपने स्थानपर बैठाकर अतिप्रसन्न किया और बचन दिया कि हमज़ा यहां न आने पावेगा तब तो नौशेरवां निस्संदेह होकर अमीर का आसरा देखनेलगा उधर अमीर ने कयोमुर्स से पूछा कि अब तुम्हारी क्या इच्छा है उसने कहा कि अब सेवकाई आपकी मुसल्मान होकर करने की इच्छा है अमीर ने उसी सायत मुसल्मान करके ख़िलअत देकर कुर्सीपर बैठाकर अपने साथ भोजन कराकर प्रसन्न किया तत्पश्चात् एक दिन कयोमुर्स ने हाथ बांधकर अमीर से कहा कि अब तो कृपा करके नगर में चलकर बासकरते तो अतिउत्तम होता अमीर ने स्वीकार किया और दूसरे दिन उसके महल में जाकर अतिप्रसन्नता से तख़्त पर बैठे और कयोमुर्स रूमाल लेकर मक्खियां हटाने लगा अनेकप्रकार से अमीर और सरदारों की सेवा करने लगा॥

अमीर का गैलाननगर की ओर जाना और वहां के अधिपति गुनजालशाह को मुसल्मान करके उसकी बेटी गैलीसवार के साथ ब्याह करना॥

लेखक लिखता है कि उस नगर के समीप तराई बहुत थी अमीर दिनको शिकार खेलते और रात्रिको सभाविलास में चैनकरते बहुत दिनोंके पश्चात् एक दिन अमरू से पूछा कि कुछ मालूम नहीं होता कि बख़्तक नौशेरवां को कहां लेगया? अमरू ने कहा कि सुना है कि नौशेरवांने नगर गैलान के स्वामी शाहगुनजाल के समीप जाकर सहायता मांगी है सो उसने अतिप्रतिष्ठा के साथ बासदेकर इक़रार किया है कि अमीर हमज़ा यहां किसी प्रकार से न आवेगा अमीर ने अपना ख़ेमा उसी दिन भेजकर दूसरे दिन सेनासमेत उसी ओर का पयान किया दूसरे दिन चलकर कई दिनों के पश्चात् उस नगर के समीप ख़ेमा गाड़कर उतरपड़े तब जासूसों ने शाहगुनजाल से अमीर के आने की ख़बर दी तो नौशेरवां ने उसी दिन डङ्का बजवाया और शाहगुनजाल आदीकी सेना लेकर मैदानमें परेट जमाकर खड़ाहुआ अमीर ने भी अपनी सेनाको उसकी बराबर लेजाकर खड़ाकिया परन्तु कोई अभी सेनासे निकला न था कि बनकी तरफ़से एक सवार आया और दोनों सेनाके मध्य में खड़ा होकर मुसल्मानी सेना के तरफ़ मुख करके ललकारने लगा उसको देखकर सब डरे आख़िर को अमीरके दो तीन पहलवान से सामना हुआ सबको उसने उठा २ कर पृथ्वीपर रखकर कहा कि तुम जाओ दूसरे को भेजो इतने में शाम हो गई तब वह जिधर से आये थे उसी तरफ़ को गये अमीर उसके हाल पूछने के लिये कि कौन है अमरू को साथ लेकर उसके पीछे चले जब थोड़ी दूर गये तो उसने

देखा कि दो सवार आते हैं देखकर खड़ी होगई और जब अमीर समीप पहुँचे तो वह एक बाग़ में चलीगई अमीर भी उसके पीछे बाग़ में गया वहां जाकर देखा कि बहुतसी स्त्रियां हैं और वह सवार जाकर एक कोने में घोड़े परसे उतरकर खड़ा है अमरू ने देखकर अमीर से कहा कि विदित होता है कि यह सवार स्त्री है कि इतने में उसकी भी दृष्टि अमीर पर पड़ी अपने ख्वाजेसराय को बुलाकर कहा कि जाकर पूछो कि ये दोनों सवार कहां से आते हैं किस प्रयोजन से आये हैं? उसने जाकर अमीर से पूछा कि आपका क्या नाम है और किस प्रयोजन से आये हैं? अमीर ने कहा कि हमज़ा मेरा नाम है और यह अमरू मेरा यार है इसकी चालाकी संसार में प्रसिद्ध है तब अमीर ने पूछा कि ऐ ख्वाजे! तू यह तो बता कि इस शाहज़ादी का क्या नाम है? वह बोली कि मेरी शाहज़ादी का गैलीसवार नाम है यह कहकर शाहज़ादी के पास जाकर ख़बर दी तब उसने जाकर लिबास मरदाना उतारा और स्त्री की पोशाक पहिनकर अमीर को अगवानी लेकर बारहदरी में लेजाकर मसनदपर बैठाकर अतिप्रसन्न करके अपने साथ भोजन करवाकर शराब मँगवाकर दोनों साथ बैठकर पीने लगे दो तीन गिलास पीने के पश्चात् शाहज़ादी नशे में कूदकर अमीर के गोद में बैठी सब लज्जा भूलगई तब अमीर ने उससे ब्याह करने की इच्छा की उसका चित्त तो पहलेही से चाहता था सुनतेही स्वीकार करलिया अमरू ने उसी समय मन्त्र पढ़कर उसके साथ ब्याह करादिया तत्पश्चात् दोनों छपरखटपर जाकर भोग विलास करनेलगे गुनजालशाह को यह ख़बर पहुँची वह सुनतेही जलकर आग होगया और चार सहस्र सवार लेकर अमीर के ऊपर दौड़ आया और चारों तरफ़ से बागको घेरलिया तब शाहज़ादी ने अमीर से कहा कि आज्ञा हो तो जाकर बादशाह का शिर काटलाऊं अमीर ने कहा लाख हो पिता के ऊपर हाथ न चलसकेगा लेकिन मैं जाकर उसको पकड़लाता हूं आख़िरकार अमीर बाहर आये दोनों से सामना हुआ तब अमीर ने गुनजालशाह को पराजय देकर मुसल्मान करलिया वह अपनी बेटी के पास आया और अपने मुसल्मान होने का कारण उससे कहा तब यह ख़बर देश में प्रसिद्ध होगई एक दिन रात्रि को अमीर गैलीसवार को बग़ल में लिये लिपटे सोरहे थे कि इतने में ज़रंगेज नौशेरवां की स्त्री जिसने अमीर को पहले भी लेजाकर ख़न्दक़ में तीन दिनतक बांध रक्खा था आकर अमीर के समीप पहुँचगई देखकर अपने चित्त में कहनेलगी कि इसने मुझे न स्वीकार किया और इसके साथ ब्याह करके भोग विलास कररहा है इससे दोनों को मारडालना उचित है यही विचार रही थी कि शाहज़ादी के नेत्र खुलगये और उठकर हथियार लेकर उसको खेदलिया वह थोड़ी दूर जाकर फिर कर खड़ी होगई और कहनेलगी कि वहां से हमज़ा के डरसे भागी थी तुझसे क्या डर है? यह कहकर एकतीर चलाया शाहज़ादी ने रोंककर एकतलवार ऐसी मारी कि वह दोभाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी अमीर ने पुकारकर कहा कि ऐ गैलीसवार!

तूने यह क्या किया? नौशेरवां जानेगा कि हमज़ा ने मारा है वृथा लज्जित होगा उसने कहा कि अबतो जो होना था सो हुआ तब अमीर गैलीसवार को साथ लेकर बाग़ में आकर आराम करने लगे और उधर प्रातःकाल नौशेरवां को ख़बर हुई कि ज़रंगेज़ की लोथ मैदान में पड़ी है तब सेवकों से लोथ उठवा मँगवाई और अफ़्सोस करके कहनेलगा कि विदित होता है कि यह हमज़ा के पास गई थी उसने इसको मारा है अफ़्सोस हम ऐसे होगये कि हमारी बग़लसे स्त्री उठकर दूसरे के पास जावे अब हम लोगों को क्योंकर मुख दिखावेंगे इससे तो हमको बड़ी लज्जा हुई अपने सरदारों से कहा कि हमने गद्दी बहुत दिन की अब इच्छा होती है कि देश पर्यटन करें सरदारों ने हाथ जोड़कर कहा कि जैसी आज्ञा हो हमलोग आपही की इच्छा चाहते हैं आख़िरकार नौशेरवां आधी रात्रि को हज़ार सरदारों को साथ लेकर बहुतसा माल असबाब लेकर बाहर निकलकर बनको चला और जो कोई पूछता तो अपने को सौदागर बतलाता अपना नाम किसी से न कहता था उनके जाने के पश्चात् प्रातःकाल सेना में शोरहुआ कि नौशेरवां लोप होगया बहुतेरे कहने लगे कि अमीर ने मारडाला और बहुतेरे कहते थे कि अमरू मक्कारी करके उठा लेगया होगा लेकिन बुज़ुरुचमेहर ने कहा कि अमीर मारडालते या अमरू उठालेजाता तो हज़ार जवान क्या होते बादशाह अपनी स्त्री ज़रंगेज़ की इस बात को देख लज्जित होकर कहीं चलेगये हैं पीछे को हुरमुज़ लोगों को बादशाह की खोज में भेजकर आप सबलोगों की सलाह से नौशेरवां की गद्दीपर बैठकर सब कारोबार करनेलगा नौशेरवां का हाल सुनिये कि अपने को सौदागर के नाम से प्रसिद्ध करताहुआ चलाजाता था जासूसों ने यह ख़बर बहराम नामे एक डाकू को पहुँचाई वह कई सहस्र डाकू लेकर नौशेरवां के समीप आकर सब माल लूटकर नौशेरवां समेत अपने स्थानपर लेकर चलागया वहां लेजाकर उससे पूछा कि तू सत्य बता कौन है नौशेरवां ने कहा मैं नौशेरवां क़बाद का पुत्रहूं लेकिन उसको यक़ीन न आया दो तीन बार पूछकर नौशेरवां को फ़क़ीर करके हटादिया तब नौशेरवां साधू बनकर वहां से चला और जो कोई पूछता था उससे अपना नाम बतलाता था लेकिन सुननेवाला झूठ जान हटा देता था जाते २ ख़तन नगरमें पहुँचा वहांभी जो पूछता था उससे अपना नाम बतलाता था आख़िर को यह ख़बर बादशाह को पहुँची कि एकसाधू आयाहै उससे जो कोई पूछताहै कि तू कौनहै वह कहता है कि मैं नौशेरवां बादशाह क़बाद का पुत्रहूं बादशाहने भी बुलवाकर पूछा तो नौशेरवां ने अपना नाम बतलाया तब उसने झूठा जानकर अपने नगर से निकलवादिया आख़िर को फिरते २ आतिशकुन्दान मरूदपर पहुँचा वहां का यह प्रबन्ध था कि जो कोई नवीन मनुष्य आता था वह तीनदिन तक भोजन पाता था चौथे दिन बिदा कर दिया जाता था और जो सदैव रहने की इच्छा करता था उसे प्रतिदिन बन से लकड़ी लानी पड़ती थीं तब भोजन मिलता था इसकारण तीन दिनतक नौशेरवां को

भोजनमिला चौथे दिन लकड़ी लानेकी आज्ञा हुई तब बादशाह लाचार होकर रोज़ लकड़ी लानेलगा और जब लकड़ी कम लाताथा तो आधी रोटी पाता था और जब अधिक लेआता तो एक इसी प्रकार से वहां रहकर दिन काटनेलगा अब थोड़ा सा वृत्तान्त नौशेरवां की सेना का सुनिये कि एकदिन हुरमुज़ ने बुज़ुरुच्चमेहर से कहा कि मैंने लोगोंसे बहुत ढुँढ़वाया लेकिन कहीं पता बादशाह का नहीं मिलता अब तो विचारिये कि कहां हैं ख़्वाजे ने कहा कि हम पहलेही से विचार चुके हैं कि बादशाह आतिशकुन्दान मरूद में बड़े दुःख में पड़े हैं जो शीघ्रही कोई न जायगा तो उनका प्राण न बचेगा शाहज़ादे ने कहा कि फिर आपही जाकर लेआइये तब ख़्वाजे ने कहा कि बेहमज़ा के गये बादशाह न आवेंगे सो तुम जाकर अपनी माता से कहो कि वे अमीर को पत्र लिखें तो निश्चय है कि हमज़ा जाकर बादशाह को लेआवेगा तब हुरमुज़ ने आकर अपनी माता से सब हाल कहा उसने उसीसमय अमीरको पत्र लिखा कि ऐ पुत्र! बादशाह बड़े दुःख में आतिशकुन्दान मरूद में पड़ा है सो वे तुम्हारे गये वह नहीं आसक्ता गोकि मेहरनिगार के मरने से सम्बन्ध टूटगया है और सदैव नौशेरवां बख़्तक ऐसे लोगों के कहनेसे तुमको दुःखही देतारहा लेकिन जो तुम लाओगे तो बड़ा नाम और पुण्यहोगा अमीर ने पत्र पढ़कर अमरू को ख़्वाजे बुज़ुरुच्चमेहर के पास भेजा कि पूछ आओ नौशेरवां कहांहै उसने जब जाकर ख़्वाजे से पूछा तो उन्होंने कहा कि बादशाह आतिशकुन्दान मरूद में बड़े दुःख में पड़ा है जो अतिशीघ्रही जाओगे तो मिलेगा नहीं तो मरने चाहता है॥

अमीर हमज़ा का आतिशकुन्दान मरूद की तरफ़ नौशेरवां के लाने को जाना और आनेपर नौशेरवां की दूसरी बेटी के साथ व्याह करना॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर साधु का वेष धारण करके आतिशकुन्दान मरूद की तरफ़ चले मार्ग में जब बहराम के स्थानके समीप आये तो मालूम हुआ कि इसी ने प्रथम नौशेरवां को लूटकर फ़क़ीर करदिया है उसके क़िले के समीप जाकर ऐसा शब्द किया कि वृक्ष पहाड़ सब हिलगये बहराम व्याकुल होकर क़िले से हज़ार जवान साथ लेकर बाहर आया तो उसने अमीर को देखा कि अकेला एक मनुष्य खड़ाहै दौड़कर एकबल्छी चलाई अमीर ने वही बल्छी छीनकर एक बल्छी ऐसी मारी कि वह घोड़पर से नीचे गिरपड़ा अमीर दौड़कर उसकी छाती पर चढ़बैठा और ख़ंजर निकालकर कहा कि या तो मुसल्मान हो नहीं तो इस से मारडालते हैं उसने कहा कि पहले आप अपना नाम बतलाइये फिर जो कहियेगा वही करूंगा अमीर ने कहा कि मेरा हमज़ा नाम है वह हमज़ा का नाम सुनतेही डर गया और कलमा पढ़कर मुसल्मान होकर कई दिन अमीरकी मेहमानी करके हज़ार अशर्फ़ी कमर में बांधकर साथ हुआ अमीर ढूँढ़ते २ कई दिनों के पश्चात् आतिशकुन्दानमरूद में जाकर पहुँचे तब साधुओंने भोजन लाकर अमीर को दिया अमीर और बहराम दोनों ने भोजन किया और बैठकर नौशेरवां की खोज में हुए

आखिरकार शाम को जब सब लकड़ी लेकर आये तो पीछेको नौशेरवां भी थोड़ी सी लकड़ी लेकर आया अमीर देखकर रोनेलगा आखिरकार अमीर कई दिनतक वहां रहे फिर अपने को और प्रसिद्ध करके बहुतसी सेना साथलेकर वहां से नौशे-रवां को साथ लेकर कूचकिया उसीदिन नौशेरवां ने अमीर से वादा किया जो तू हमज़ा को बांधकर मेरे पास लावेगा तो हम अपनी छोटी बेटी का ब्याह तेरे साथ कर देंगे अमीर ने कहा कि हम तुम अकेले सेनामें चलें देखें कोई पहचानताहै या नहीं तब वे दोनों जाकर सेना की बाज़ार में एक नानबाई की दूकान पर बैठकर रोटी मोल लेकर खाने लगे संयोग से मुक़बिल अशक़र देवज़ादे को पानी पिलाने के लिये जाता था अशक़र अमीर की सुगन्ध पाकर खड़ा होगया इतने में अमरू भी पहुँचा देखा कि अमीर और नौशेरवां एक नवीन मनुष्य के साथ भोजन कर रहा है अमरू ने सलाम करके कहा कि ऐ अमीर! अच्छी सायत आये तब नौशे-रवां ने उस समय अमीर को पहिंचाना और अपने चित्त में कहने लगा कि इतने दिनों से मैं अमीर के साथ रहा लेकिन मैंने इसको न पहिंचाना और सदैव हमज़ा की बुराई उससे की निश्चय है कि अमीर मुझसे नाराज़ होंगे यह विचारकर वहां से उठकर अपनी सेना में गया सरदार लोग देखकर अतिप्रसन्न होकर सब भेंट ले लेकर और तख़्तपर बैठाकर डङ्काबजने की आज्ञा दी अमीर भी अपनी सेनामें गये और सब सरदारों से मिलकर अपना सब हाल कहकर शादाद से कहा कि हमको बांधकर नौशेरवां के पास लेचलो अमरू ने सुनकर मनाकिया लेकिन अमीर ने न माना और शादाद से हाथ अपना बँधवाकर नौशेरवां के पासगया नौशेरवांने देख कर पूछा कि अमीर को क्यों तू ने बांधा है अमीर ने कहा कि मैंने तुम से वादा किया था कि हमज़ा को बांधकर तुमको सौंप देवेंगेसो मैंने अपना वादा पूराकिया अब आप अपना वादा पूराकरके अपनी बेटी का मेरे साथ ब्याह कर दीजिये ब-ख़्तक ने उठकर नौशेरवां के कान में धीरे से कहा कि हमज़ा इस समय बेप्रयास मारा जासक्ता है आप इसको मार लीजिये तब बादशाह ने कुछ उत्तर न दिया लेकिन अमीर को विदित होगया कि नौशेरवां का चित्त मुझ से साफ़ नहीं है हाथ खोलकर शादाद से कहा कि बख़्तक पापी को पकड़कर खूब पीटो उसने तुरन्तही अमीर की आज्ञानुसार किया नौशेरवां बख़्तक का हाल देखकर महल में चलागया उसी समय जिसने बख़्तक की सहायता की वही अमीर के हाथ से मारागया आखिरकार वहां से अमीर अपनी सेना में चले आये और यहां से एक पत्र लिखकर अमरू के हाथ नौशेरवां के पास भेजा कि हमने अपनी बात पूरी की आपभी अपनी बात को पूर्ण कीजिये नौशेरवां ने लोगों से पूछा कि तुमलोगों की इसमें क्या सलाह है? लोगों ने कहा कि हमारी बुद्धिमें तो उसके साथ ब्याह करना अनुचितहै लेकिन नौशेरवां ने न माना और सामान करके अपनी बेटी का ब्याह हमज़ा के साथ कर दिया तब हमज़ा तो लेकर अपने स्थानपर आकर उस के साथ भोग विलास करने

लगा उधर बख़्तक ने इधर उधर पत्र भेजा कि बड़े अफ़्सोसकी बातहै कि तुमलोगों के होते हमज़ा ने नौशेरवां की दो बेटियों के साथ ब्याह करलिया और बादशाह का दामाद कहलाताहै लेकिन अब भी इतनी हिम्मतकरो कि आकर इस अरबघाती से मेहरअफ़रोज़ को छीन लो तौभी अच्छाहै और सब नगरबासियों ने इकट्ठे होकर हुरमुज़ से कहा कि बादशाह की बुद्धि तो अवस्था के साथ कम होगई है परन्तु जो तुम यत्नकरो तो हमज़ा आसानी से मारा जासक्ताहै शाहज़ादे ने पूछा कि वह कौनसी युक्ति है सबों ने कहा कि जो बादशाह कोहअलबुर्ज़ में आदी के पास जाकर पनाह लेवे तो हमज़ा वहां के जाने से अवश्य है कि माराजाय आख़िर बादशाह सबकी सलाह से कोह अलबुर्ज़ की तरफ़गये ॥

अमीर का कोह अलबुर्ज़ की तरफ़जाना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि जब अमीर को मालूम हुआ कि नौशेरवां ने पहाड़ अलबुर्ज़ में जाकर आदी से इस बिचार से पनाहली है कि यहां जो हमज़ा आवेगा तो जीता बचकर न जावेगा उसी समय लैनडोरी भेजकर दूसरे दिन कूचकर के कई दिनों के चलने के पीछे जाकर देखा कि नौशेरवां पहाड़ की खोह में सेना समेत पड़ा है और चारों तरफ़ से सेना आरही है यह तमाशा देख अमीर भी थोड़ी दूर पर उतर पड़े इसीतरह कई दिनतक दोनों सेना पड़ी रहीं जिस समय बहराम और आदी चालीस सहस्र सवार समेत आये उसी दिन नौशेरवां ने डङ्का बजवाकर सेना को लाकर परेट पर जमाया तब अमीर भी सेना लेकर सामने गये अभी दोनों सेनाओं में से कोई न निकला था कि बनकी तरफ़ से एक सवार आकर दोनों के बीच में खड़ा होकर नौशेरवां की सेना को ललकारा तो आदी ने आकर सामना किया तो उसने एकबारगी उठाकर ऐसा देमारा कि हड्डियां आदी की चूर होगईं बहराम चोब अपने भाई का हाल देखकर मैदान में आया तो उसका भी यही हाल किया तब तो नौशेरवां की सेना में से किसी ने शिर उसकी तरफ़ न उठाया वह थोड़ी देर खड़ारहा फिर मुसल्मानी सेना की तरफ़ मुख करके ललकारने लगा रुस्तम पीलतन ने आकर उसकी कमर पकड़ी उसने भी कमर पकड़ी दोनों ने ऐसा ज़ोर किया कि घोड़ों के पैर पृथ्वी में धस २ गये आख़िर को सवार ने रुस्तम को छोड़ कर कहा कि तुम जाओ किसी दूसरे को भेजो इसी प्रकार से सब बारी २ आये लेकिन कोई उससे जीत न सका तो आख़िर को अमीर जब आये तो उसने दौड़ कर अमीर की कमर पकड़ी तब अमीर ने कमर उसकी पकड़कर शब्द करके उठा कर कहा कि बता तू कौन है ? वह बोला कि क़ैसक़ैमाज़ख़ावरी मेरा नाम है क़ैमाज़-शाह का मैं पुत्र हूं तब तो अमीर ने उसको धीरे से पृथ्वीपर रखकर गले से लगाया और क़ैमाज़शाह से पुकार कर कहा कि ईश्वर आपका पुत्र मुबारककरे वह सुनकर अतिप्रसन्नहुआ अमीर डङ्का बजवाकर सेना में आये बड़ी धूमधाम से उसकी मेह-मानी की दूसरे दिन जब फिर दोनों सेना मैदान में आईं तो उस दिन आदी चोब

और सरशबान दोनों का शामतक सामना रहा कोई किसी से जीत न सका रात्रि को दोनों सेना ने आराम किया प्रातःकाल फिर सामना हुआ तो उसदिन आदी खोब ने अमीर को ललकारा अमीर ने आकर दोनों भाइयों को बांधकर अमरू के हवाले करदिया और विजय का डङ्का बजवाकर अपने खीमे में रात्रिको बैठकर दोनों से बुलवाकर पूछा कि अब क्या इच्छाहै ? उन्हों ने कहा कि सेवकाई के सिवाय और कुछ नहीं तब अमीर ने उनको कलमा पढ़ाकर मुसल्मान किया और अमरू ने गुलामी का बाला उनके कानों में डालकर अपने साथ बैठाकर बड़ी प्रतिष्ठा की तत्पश्चात् उन दोनों ने अपनी सेना को लिखा कि तुमलोग शाह को छोड़कर हमारे पास चले आओ ॥

शाहज़ादे बदीउज़्ज़मां गैलीसवार का लड़की गुनजालशाह के पेट से पैदाहोना और बहादेना शाहज़ादे को संदूक़ में बन्द करके नदी में और हज़रतखिज़र की आज्ञानुसार क़रीशा बेटी आसमानपरी का लेजाकर रक्षाकरना ॥

लेखक लिखता है कि जब अमीर कोहअलबुर्ज़ की तरफ़ जाने लगे तो गैली सवार को जो उन दिनों में अवधान से थी गुनजाल शाह के पास एक धरोहर के तौर पर रखगये थे उस पापी का हाल सुनिये कि जब उसके पुत्र पैदाहुआ तो उस ने अपने समीप मँगवाकर दाई से कहा कि इसको मारडालो उसको दया जो आई तो उसने कहा कि आज्ञा हो तो जीताही गाड़लूं उसने कहा कि अच्छा आखिर-कार उसने नदी के किनारे जाकर एक संदूक़ में रखकर ईश्वर को सौंपकर बहादिया वह संदूक़ बहते २ उसी स्थानपर जहां आसमानपरी और क़रीशा स्नान करती थीं लगा क़रीशा ने संदूक़ पकड़वाकर खोला तो उसमें देखा कि एक लड़का अति स्वरूपवान् लेटा है इतने में हज़रतखिज़र ने प्रकट होकर क़रीशा से कहा कि यह हमज़ा का पुत्र है इसको तुम लेजाकर रक्षाकरो जब बड़ा हो तो हमज़ा के पास इसको भेज देना और बदीउज़्ज़मानी इसका नाम रखना हज़रतखिज़र यह कह कर अन्तर्धान होगये क़रीशा गोद में लेकर क़ाफ़ में आई और परियों का दूध पिलाकर बड़ी रक्षा करनेलगी और जब से सात बर्ष का हुआ तभी से सिपाहगरी सिखलाने लगी जहां कहीं युद्ध करने को जाती उसको अपने साथ लेजाती ग्यारहवें बर्ष एकदिन उसने क़रीशा से पूछा कि मेरे माता पिता कहां हैं ? उसने कहा कि माता को तो मैं नहीं जानती लेकिन पिता हमारा तुम्हारा एकही है दुनिया में राज्यकर रहा है हमज़ा उसका नाम है उसने कहा कि फिर हमको कृपा करके पिता की सेना में भेजदो तब आसमानपरी और क़रीशा ने बहुतसी उत्तम २ वस्तु रखकर परियोंको बुलाकर आज्ञादी कि इसको लेजाकर कोहअलबुर्ज़पर मुसल्मानी सेना में पहुँचा दो किसी प्रकार से मार्ग में दुःख न होने पावे और चलती समय उससे दो चार आदमियों का नाम बतलाकर कहा कि तुम पहले लड़ाई करके अपने को प्रसिद्ध करना तब तुम्हारे भाई लड़कर अमीर से आकर मिले हैं आखिरकार

वह आसमानपरी और क़रीशा से विदाहोकर चला परियोंने कई दिनके बाद लाकर अलबुर्ज़के समीप उतरकर दोनों सेनाओं का पता बतलाकर उसको सेनाकी तरफ़ भेजा आप छिपकर तमाशा देखने लगी बदीउज़्ज़मां जाकर दोनों सेना के बीच में खड़ा होकर मुसल्मानी सेनाकी तरफ़ मुख करके पुकारने लगा कि तुम में से जिसको मरने की इच्छा हो वह आकर मेरा सामना करे सबलोग देखकर बड़े संदेह में हुए कि यह कहां से आया इतने में उसने फिर पुकारा कि जो मृत्युसे प्राण बचाना था तो ओढ़नी ओढ़कर घर में बैठे रहते मैदान में क्यों आयेहो? यह सुन कर कयोमुर्सने आकर सामना किया उसने आतेही कयोमुर्स से वारमांगी कयोमुर्स ने कहा कि पहले तू वार करले तो फिर हम करेंगे तब तो उसने हाथपकड़कर घोड़े से उठाकर पृथ्वीपर रखकर कहा कि तुम जाओ दूसरेको भेजदो और दूसरा आया तो उसको भी उठाकर रक्खा तीसरे को बुलाया इसीप्रकार से सबको हराकर आ-ख़िर को जब साद आया तो उसको भी उठाकर पृथ्वी पर रख दिया और उससे कहा कि जाकर अब अमीर हमज़ा को भेज दो उसने आकर अमीर से कहा तब अमीर मैदान में आये तब बदीउज़्ज़मां देखतेही बिजलीके समान घोड़ेको चमका कर अमीर के समीप लाकर कमरपकड़कर उठानेलगा तब अमीरने भी उसकी कमर पकड़ी और दोनों ने ऐसा ज़ोर किया कि घोड़े ब्याकुल होगये लेखक लिखताहै कि जो घोड़ों परसे उतर न पड़ते तो घोड़ों की कमर टूटजाती और अमीर ने चाहा कि इसको शिरतक उठालेवें लेकिन वह हिलता भी न था तब तो बख़्तक नौशेरवां से कहने लगा कि आज हमज़ा इसके हाथ से माराजावे तो कुछ आश्चर्य नहीं है आख़िरकार जब अमीर पैर न उठासका तो क्रोधित होकर तलवार निकालकर खड़ा होगया कि इसको मारें इतने में क़रीशा ने आकर हाथ पकड़लिया और कहनेलगी कि यह आपका पुत्र मेरा भाई है अमीर बड़े आश्चर्य में हुए कि यह किसके पेट से पैदाहुआ है तब क़रीशा ने सब हाल अमीर से कहा अमीर सुनकर अतिप्रसन्न हुए और अमरू से पुकारकर कहा कि यह हमारा पुत्रहै ईश्वर ने हमारी सहायता के लिये भेजाहै यह कहकर उसको गले से लगाकर डङ्का बजवाते हुए ख़ीमे में आकर चालीस दिनतक नाचरङ्ग होनेकी आज्ञा दी लेखक लिखता है कि समुन्ददेव जिस ने अमीर के डर से परदेक़ाफ़ को छोड़कर कोहअलबुर्ज़ में आकर ठिकानापाया था जब उसने सुना कि हमज़ा यहां आया है तब वह अपने स्थान से रात्रि को निकल कर अमीर की सेना में आकर अमीर को ढूंढ़नेलगा यहांतक कि सादके ख़ीमे में पहुँचा उसको सोता देखकर बेहोश करके अपने स्थानपर को उठालेजाकर नदीपार क़ैदकिया प्रातःकालहोतेही सेना में गुलमचा कि सादको ख़ीमे से कोई उठा लेगया अमीर सुनकर अति दुःखीहुए और अमरू से बुलाकर कहा कि तुम जाकर बुज़ुरुच-मेहर से पूछो कि साद को कौन लेगया ख़्वाजे ने बिचार कर बतलाया कि देवसमुन्द ने लेजाकर अलबुर्ज़नदी के पार क़ैदकिया है जो अमीर अकेले जावेंगे तो उसको

पावेंगे अमीर अमरू से यह ख़बर सुनकर उसी समय यारों से बिदा होकर अशक़र को नदी पैराकर पार उतरे वहां जाकर अशक़र को तो चरने के लिये छोड़ दिया और एक जानवर भूनकर भोजन करके रात्रि को एक वृक्ष के नीचे सोरहे प्रातः-काल सवारहोकर बुज़ुरुचमेहर के बतानेकी पतासे चले जब क़िले के समीप पहुँचे तो समुन्ददेव अमीर का नाम सुनकर हज़ार देव लेकर क़िले से निकलआया तब अमीर ने देखकर कहा कि ओ पापी! अब तेरा प्राण क्योंकर बचेगा देखना तेरा कौन हाल होनाहै? तब तो समुन्ददेव ने एकदेव को आज्ञादी कि इस पापी को पकड़ लाओ अमीरने आतेही उसको मारडाला इसप्रकार से सातदेवों को उसने बारी २ से भेजा और अमीर ने मारडाला आख़िर को समुन्ददेव न क्रोधित होकर हज़ार मनका पत्थर अमीर के शिरपर फेंका अमीर ने तलवार पर रोंककर एकवार ऐसा मारा कि उसके सात हाथकटकर अलग गिरपड़े तब तो सब देव देखकर भाग गये और वह देव फिर थोड़ीदेरके बाद अच्छा होकर अमीरके साथ लड़नेको खड़ाहुआ यही हाल सबदिन रहा सायंकाल को देव अपने क़िले में चलेगये और अमीर एक वृक्ष के नीचे सोरहे तब स्वप्न में हज़रत ख़िज़र ने आकर कहा कि क़िले के भीतर एक अमृत का कुण्ड है जबतक उसको न पाटोगे तबतक यह देव किसीतरह से न मारा जायेगा अमीर स्वप्न के देखतेही जाग उठे और क़िले के भीतर जाकर उस कुण्ड को कूड़े करकट से हज़रत ख़िज़र की आज्ञानुसार पाटकर वृक्ष के नीचे आकर सोरहे प्रातःकाल को फिर समुन्ददेव अपनी सेना लेकर क़िले से बाहर आ-कर खड़ा हुआ और पहले दिनकी तरह एक पत्थर हज़ार मन का अमीर के ऊपर फेंका अमीर ने उसको रोंककर एक तलवार ऐसी मारी कि आधी गर्दन उसकी कटकर गिरपड़ी तब अमीर के आगे से भागा अमीर ने भी उसका पीछा किया तो वहां जाकर देखा कि जब उसने कुण्ड को न पाया तो शिर पटक २ अपने को मार-डाला तब अमीर ने उसका शिर काटलिया और लोथ बनकी तरफ़ फेंक दी और वहां से ढूंढ़ते २ साद के पास पहुँचे देखा कि बेहोश एक पिंजड़े में परा है उसको चैतन्य करके साथ लेकर बाहर आकर क़बाब बनवाकर दोनों ने खाया तत्पश्चात् दोनों साथ होकर समुन्ददेव के शिर को लेकर नदी से उतरकर अपनी सेना में प-हुँचकर देवके शिर को शत्रुकी सेना में फेंकदिया शत्रुकी सेना देखकर बड़े आश्चर्य में हुई कि जिसका शिर इतना बड़ा है उसका डील तो और ही बड़ा होगा जब हमज़ा ने इसको मारडाला तो कौन मनुष्य उससे जीतसक्ता है ये बातें होही रही थीं कि बनकी तरफ़ से एक सेना आती दिखाई पड़ी दूतों ने जाकर देखा तो मा-लूम हुआ कि बख़िया शुतरबान और मलिकअशतर नौशेरवां की सहायता के लिये आते हैं तब तो हरमुज़ ने जाकर अगवानीली और अपनी सेना में लाकर अति प्रतिष्ठा से सम्मख होकर टिकवाया॥

वृत्तान्त अजलपुत्र अब्दुलमुत्तलिब भाई हमज़ा का ॥

लेखकलोग लिखते हैं कि अमीरहमज़ा के जाने के पश्चात् अब्दुलमुत्तलिब के एक पुत्र पैदाहुआ ख़्वाजे ने उस का नाम अजल रक्खा बिधिपूर्वक उसकी रक्षा किया बारह वर्ष की अवस्था में जिस समय क़लमाक़शाह ने मक्के पर चढ़ाई की थी और नगरवासी डरके क़िलाबन्द होकर बैठे थे उस समय अजल ने जाकर अपने पितासे कहा कि जो आप एक घोड़ा और हथियार देवें तो मैं जाकर क़लमाक़शाह की पराजय करदूं ख़्वाजे ने हँसकर कहा कि अभी तुम इससे युद्ध करने के योग्य नहीं हो और मेरे पुत्रों में केवल हमज़ाही को यह शक्ति है कि उससे कोई न जीतसके अजल ने कहा कि ईश्वर हमारा सहायक है आख़िर हम भी तो हमज़ा ही के भाई हैं जब उसने बहुत हठकिया तब लोगों ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि आप क्यों नहीं इसको जाने देते विदित होता है कि यह बड़ा बहादुर और प्रतापी होगा आख़िरकार ख़्वाजे ने एक घोड़ा और हथियार देकर ईश्वर के भरोसे पर छोड़कर भेजा अजल हथियार लेकर घोड़ेपर सवार होकर अपने यारों समेत क़िले से बाहर निकलकर क़लमाक़ शाह की सेना की तरफ़ चला क़लमाक़ शाह ने देखकर जाना कि सुलह के लिये आता है एक सवार को भेजा कि जाकर देखो यह सवार क्यों आता है उसने जाकर अजल से पूछा कि जो सुलह के लिये आया हो तो चल हम सुलहकरादेवें अजल ने तलवार निकालकर ललकारा दोनों का सामना हुआ सवार मारागया इसीप्रकार से क़लमाक़शाह ने चालीस सवार भेजे सबों को अजल ने मारा आख़िर को क़लमाक़शाह ने आकर सामना किया उसको भी अजल ने उठाकर पृथ्वीपर देमारा और छाती पर चढ़कर कहा कि मुसल्मान हो नहीं तो मारडालताहूं उसने कहा कि जो तू यह इक़रारकरे कि हम तुमको हमज़ा के पास भेज देवेंगे तो जो तू कहे वही करें उसने कहा कि यह तो होनाही है आख़िरकार वह मुसल्मान हुआ अजल ने उसको छोड़कर गले से लगाया और अपने पिता के पास लेगया अब्दुलमुत्तलिब ने दोनों की बड़ी प्रतिष्ठा की और बहुतसा रुपया अशरफ़ी निछावर करके मंगतों को दिया और क़लमाक़शाह की बड़ी मेहमानदारी की दूसरे दिन अजल ने अब्दुलमुत्तलिब से कहा कि अब हमारी इच्छा है कि भाई हमज़ा के पास जाकर अपना सब हाल उसको सुनावें ख़्वाजे ने अति प्रसन्नता के साथ जाने की आज्ञादी तब वे दोनों सेना समेत वहां से चले मार्ग में आकर करबमादी पुत्र आदी कर्बे से मुलाक़ात हुई तो मालूम हुआ कि वह भी अमीर के पास जाता है तब अजल ने कहा कि हम भी वहीं चलते हैं इससे दोनों आदमी साथही चलें उसने कहा कि आप यहां ठहरिये मैं जाकर मक्के की यात्रा करआऊं तो चलें तब अजल तो उसी स्थानपर सेना समेत उतरपड़ा और करबमादी मक्के की तरफ़जाकर चौथेदिन वहां से आया तब दोनों साथ होकर अमीर के तरफ़ चले मार्ग में अजल ने करबमादी से कहा कि अमीर के सब लड़के जब

पहले अमीर के पास गये हैं तब लड़कर सेना में दाखिल हुए इससे हमलोगों को भी यही करना उचित है आखिर को पहले अजल जाकर दोनों सेना के बीच खड़ा होकर लड़कर अमीर की सेना में गया फिर करबमार्दाने भी ऐसा किया तत्पश्चात् क़लमाक़शाह सेना समेत जाकर अमीर से अतिनम्रता के साथ मिला तब अमीरने तीनों पहलवानों को साथ लेकर ख़ीमे में लेजाकर बड़ी धूमधाम से मेहमानदारी की प्रातःकाल डङ्के का शब्द सुनकर मैदान में गया तो उसदिन बख़िया शुतरबान और शबानतायफ़ी का सामना हुआ शबानतायफ़ी घायल होगया इसीप्रकार से केवल बख़िया शुतरबान ने अमीर के कई सरदार पहलवानों को घायल किया तीसरे दिन बदीउज़्ज़मां ने जाकर सामना किया दोनों से लड़ाई हुई आख़िर को बदीउज़्ज़मां ने उठाकर मुश्कें बांधकर अमरू के हवाले करदिया वह बांधकर अपने ख़ीमे में लाया मलिकअश्तर ने जब अपने चचा की यह गति देखी तो नौशेरवां से कहनेलगा कि हमज़ा के पुत्र बड़े बहादुर और पहलवान् हैं देखो कि सब बहादुरी से मेरे चचाको क़ैदकिया नौशेरवां ने कहा कि हमज़ा के सब पुत्र ऐसेही हैं तब उसने कहा कि आज लड़ाई बन्दरहे कल में इससे सामना करूंगा कि लोग यह न कहें कि अमीरका पुत्र थकाथा इससे बांधागया नौशेरवां लौटने का डङ्का बजवाकर अपने ख़ीमे में आया और अमीर भी अपने स्थानपर गये और बहुतसा रुपया अशरफ़ी लुटवाकर सभा में बैठाकर बख़िया को बुलाकर मुसल्मान होने के लिये कहा उसने कहा कि जबतक मलिकअश्तर न आवें तबतक मुसल्मान करने से क्षमा रखिये तब अमीर ने उसको मादीकरब के पहरे में करदिया इतने में एकयार ने आकर विनयकी कि एक दूत ख़ुरसना से पत्र लेकर आया है अमीर ने उसको बुलवाकर पत्र लेकर सब के सामने चिल्लाकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि फिरंगियों ने ऐसा हमको दुःखदिया है कि हम क़िलेबन्द हैं इसलिये यातो आप आइये या रुस्तमपीलतन को भेजिये नहीं तो धर्म भी छूटेगा और देशभी हाथसे जायगा अमीर ने पत्र सुनाके पश्चात् सरदारों से कहा कि तुम यहांकी ख़बरदारी करो हम जाकर उसको मारकर लाते हैं और हमारी जगह पर रुस्तमको जानना रुस्तम ने हाथ जोड़कर कहा कि मुझे आज्ञा हो तो मैं जाकर ख़ुरसना में उसका शिर काटलाऊं अमीर ने कहा कि अच्छा पचास सहस्र सेना साथ लेकरजाओ रुस्तम ने कहा कि सेनाकी कुछ आवश्यकता नहीं है आपके प्रताप से मैं अकेला जाकर उसका शिरकाटलाऊंगा कितनाही अमीर ने सेना साथ लेजानेको कहा लेकिन रुस्तमने न माना अकेला घोड़ेको दौड़ाकर उस नगरके समीप जाकर पहुँचा तो देखा कि फिरंगी सेना क़िलेको चारों तरफ़ से घेरे पड़ी है रुस्तम ने जातेही एकबारगी चिल्लाकर ललकारा मारज़ूक़शाह ने मालियानामी अपने बड़े पुत्र को रुस्तम के सामने भेजा रुस्तम ने पहुँचतेही दो तीनवार उससे मांगकर यकबारगी उठाकर पृथ्वीपर देमारकर मारडाला यह हाल देखकर मरज़ूक़शाह की सब सेना भागी रुस्तम ने पीछाकिया बराबर मारते चलेगये चारकोस पर फ़तेहनोश

से सेना समेत मुलाक़ात हुई उसने कहा कि अब आप पलट चलिये लेकिन रुस्तम ने न माना और कहा कि आप जाकर क़िलेकी ख़बरदारी कीजिये हम शत्रु को मारकर आते हैं रुस्तम तो शत्रु के पीछे गया फ़तेहनोश ने उसीस्थानपर से सब हाल लिखकर अमीरके पास भेजा आख़िरकार जब रुस्तमने मरज़ूक़शाहका पीछा न छोड़ा तो वह खड़ा होकर लड़नेलगा यहांतक लड़ा कि रुस्तमका घोड़ा मारा गया और आपभी घायलहोकर एक टीलेपरसे तीर मारनेलगा जब तीरभी समाप्त होगये तबतो ईश्वरका ध्यान करनेलगा इतनेमें अमीर पहलवानों समेत आंपहुँचे रुस्तमको घायल देखकर शत्रुकी सेनापर जाकर व्याघ्र के समान टूटपड़े और चिल्लाकर कहनेलगे कि जिसने हमज़ाको न देखा हो वह आज आकर देखलेवे हमज़ा का नाम सुनतेही मरज़ूक़शाहकी सेना कांपगई किसीका पैर आगेको न बढ़ा और सब भागकर क़िले में चलगये अमीर वहां से रुस्तम के पास आये उसके घावोंपर नोशदारू के फाहे लगाकर क़िले की तरफ़ चले मरज़ूक़शाह ने देखा कि अमीर क़िले में आकर सबको मारडालेंगे तो वह आपही बालबच्चों को साथ लेकर अमीर के क़दमों पर गिरा अमीर ने कहा कि जो बालबच्चों समेत आकर मुसल्मान हुआ तो अपनी बेटी भी रुस्तमको दे तो हम तेरा अपराध क्षमाकरें उसने मानलिया आख़िर को रुस्तम का ब्याह उसकी बेटी के साथ हुआ और कुछदिन वहां रहकर सबको साथ लेकर अमीर कोहअलबुर्ज़ में आये सेनाके सरदार अमीर को देखकर दौड़कर अमीर के क़दमों पर गिरे अमीर ने सबको छाती से लगाया और अपना सब हाल सबसे सुनाया इतने में मलिकअश्तर ने अमीर को ललकारकर कहा कि हमज़ा तू मेरे डरसे भागगया था लेकिन तेरी मृत्यु फिर घसीट लाई तब अमीरने जाकर सामना किया ऐसी लड़ाईहुई कि कई हथियार टूटगये और कोई जीत न सका और जो हथियार टूटताथा उसे अमरू उठाकर अपने झोरे में रखलेता था आख़िरको अमीर ने कहा कि अब हमारी तुम्हारी हथियार की लड़ाई होगई अब पैर पकड़कर उठाओ जो जिसका पैर उठालेवे दूसरा उसकी आज्ञामें होकर रहे उसने कहा बहुतअच्छा तब दोनों कमरपकड़कर बलकरनेलगे आख़िर को अमीर ने उसकी कमर पकड़कर उठाकर पृथ्वीपर देमारकर अमरू को सौंपदिया अमरू ने झटपट बांधलिया मलिकने कहा आप मुझे क्यों बांधते हैं मैं आपकी आज्ञा में रहूंगा तब अमीरने उसको मुसल्मान करके गले से लगाया और अमरू ने उसी स्थानपर गुलामीवाला उसके कान में डालदिया तब अमीर डङ्का बजवातेहुए ख़ीमे में आकर बख़िया को बुलाकर मुसल्मान किया और दोनों को अतिप्रतिष्ठाके साथ सम्मुख होकर ख़िलअत देकर अपने साथ बैठाकर भोजन करवाया और अनेक प्रकार से उसको प्रसन्न किया प्रातःकाल होतेही एक मनुष्य ने आकर ख़बर दी कि ज़ोपीन फ़ौलादी बड़ी सेना लेकर नौशेरवां की सहायताके लिये आया है अमीर सुनकर चुप होरहे इतने में एकने फिर आकर ख़बर दी कि एक मनुष्य दरवाज़ेपर

खड़ा है और कहता है कि अमीर से कहदो कि तुम्हारे पिता बुलाते हैं अमीर सुनकर बड़े संदेह में हुए क़न्दज़ ने कहा विदित होताहै कि वही सौदागर है किसी प्रयोजन से आया है अमीर ने कहा अच्छा जाकर देखो वह हो तो बुलालेआवो आख़िर को वह आकर बुलालेगया अमीर ने देखकर अतिप्रतिष्ठा के साथ बैठाकर पूछा कि आप यहां किसप्रयोजन से आयेहैं उसने एक तसवीर निकालकर अमीर को दिखलाई और कहा कि जिसकी यह तसवीर है वह हरदम की बेटी है वह कहता है जो कोई मुझ से जीते वह इसके साथ ब्याह करे सो मैं ने उसको एक झरोखेसे देखा है तभी से यह हाल हुआ अब आप जो सहायता करें तो वह मिल-सक्ती है अमीर ने उससे वादाकर भोजन कराके बिदा किया लिखनेवाला लिखता है कि सादपुत्र अमरू उस तसवीर को देखतेही मोहित होगया और दोपहररात्रि व्यतीत होनेपर सेना से उठकर घोड़ेपर सवार हो बड़ौदा की राहली और नगीम और गोरन पहरेपर फिरतेथे उन्होंने पूछा ऐ बादशाह ! इस समय कहां जाते हो उसने कहा आनाहो तो आओ नहीं चुपके चले जाओ चलनेपर आप मालूम हो-जायगा तब दोनों भाई सादके साथ होकर चले थोड़े दिनकेबाद बड़ौदा के समीप पहुँचे तो एकबाग़ देखकर उसी में जाकर उतरपड़े एक तरफ़ उसीमें बकरियां चर रहीथीं पकड़कर दो तीन बकरियों को हलाल करके भून कर खाया जब इसकी ख़बर हरदम को हुई तो उसने आकर लड़कर दोनों सरदारों को मारकर सादको भी पछाड़कर छोड़कर कहा कि जा हमज़ा को भेज दे तब साद लज्जा के मारे अमीर के पास तो न गया लेकिन जाते २ हरदम के भानजे के बाग़ में पहुँचा वहां तकिया लगाकर बैठकर ठंढी वायु लेनेलगा संयोग से बाग़ की मालिकन अपनी सहेलियों समेत उस बाग़ में टहलरहीथी उसने आकर साद से पूछा कि ऐ जवान ! तू कौनहै सादने उत्तर कुछ न दिया हथियार लेकर खड़ा होगया उसने उठते ही एकगदा साद के शिरपर मारी सादने उसीको छीनकर एक लकड़ी ऐसी मारी कि वह लोट पोट होकर पृथ्वी पर गिरपड़ी सादने छातीपर बैठकर चाहा कि इसको बांध लेवें इतने में स्तनपर हाथ पड़गया तो वह उठकर अलग खड़ीहुई और मुख पर से बुरका उतारा उसका मुख देखते ही साद मोहित होगया आख़िर वह अपने स्थानपर लेगई साद ने उसके साथ ब्याह किया और चैन से भोगबिलास करने लगे अमीर का हाल सुनिये साद के लोप होने का हाल सुनकर अति व्याकुल हुए जब कहीं पता न मिला तो लन्धौर ने कहा कि जिससमय सौदागरने उस स्त्री की तसवीर आप को दिखलाई थी साद को मैंने देखा था कि उसका मुख लाल होगया था क्या आश्चर्य है कि वहीं गया हो इतने में ख़बर मिली कि बरग और नारंग भी नहीं हैं तब तो अमीरके चित्तमें निश्चयहुआ कि वहीं गया रुस्तमको अपने स्थानपति करके अमरूको साथ लेकरजाकर उसीबाग़ में बकरियां भूनकर खाने लगा रखवारोंने आकर कहा कि ओ पापियो ! तुमको क्याहुआहै ? अभी कई दिनहुए

हमज़ा का पोता दो मनुष्योंसमेत आया था उसने भी तीन बकरियां मारकर खाई थीं हरदमने आकर दोनों मनुष्योंको मारकर उसको निकाल दिया था सो तुम्हारी भी आज वही गति होगी अमीरने उसको निकट बुलाकर पूछा कि हमज़ाका पोता किधर गया उसने कहा यह तो मैं नहीं जानता लेकिन हरदम ने मारा नहीं केवल निकाल दिया था अमीर ने ईश्वर का धन्यबाद करके कहा कि जाकर हरदम से कहदो कि हमज़ा आया है तुमको बुलाता है उसने जाकर हरदम से अमीर का संदेशा कहा वह हमज़ा का नाम सुनतेही हथियार बांधकर अमीर के पास आया अमीर भी उसको देखकर उठकर अशक़र पर सवार हुए हरदम हमज़ा को देख कर हँसकर कहनेलगा ऐ हमज़ा! जबसे मैंने तेरा नाम सुना तबसे सदैव मेरे चित्त में यही इच्छारही कि कब तुझसे मुलाक़ात हो और तेरी बहादुरी देखूं ला वार चला अमीर ने कहा कि पहले तू चला फिर हम उत्तरदेंगे हरदम नें गदा घुमाकर अमीर के शिरपर मारी अमीर ने उसको रोककर अपनी वार की इसी प्रकार से दोनों से ऐसा युद्ध हुआ कि हरदम की गदा टूटगई और उसने एक बृक्ष उखाड़कर अमीर के ऊपर मारा अमीर ने उसको भी रोका तब तो हरदम अमीर की बड़ी प्रशंसा करनेलगा कि जैसा मैं सुनता था वैसा ही तू है अब तू कृपा करके अपने मुख को दिखलादे अमीर ने नक़ाब हटाकर अपना मुख सूर्य के तुल्य उसको दिखला दिया वह देखकर अतिप्रसन्न हुआ और कहने लगा कि अब शाम होगई कल प्रातःकाल फिर आकर तेरा सामना करूंगा यह कहकर अपने स्थान को चला गया उसने अपने स्थानपर सब हाल अपनी बहिन से वर्णन करके कई बकरियां और शराब अमीर के भोजन के लिये भेजदिया और प्रातःकाल फिर आकर अमीर से युद्ध करने लगा आख़िर को अमीर ने उठाकर पृथ्वीपर देमारा तब उसने मुसल्मान होकर अमीर को अपने स्थानमें लेजाकर अपनी बहिनसे अमीर का ब्याह करादिया यह ख़बर साद को पहुँची वह सुनतेही हथियार बांधकर घोड़े पर सवार होकर हरदम के दरवाज़े पर जाकर चिल्लाया अमीर ने उस शब्द को सुनकर हरदम से कहा कि जाकर देखो कौन है हरदम अपनी गदा नौसौमनी लेकर बाहर आया साद ने देखतेही घोड़े पर से कूदकर हरदम को उठाकर पृथ्वी पर देमार कर छाती पर खड़ा होगया तब हरदम ने कहा कि ऐ पहलवान! तू अपना नाम तो बतला उसने कहा कि मेरा साद पुत्र अमरू नाम है हमज़ा का मैं पोताहूं हरदम ने कहा कि तू मुझ को छोड़दे तो मैं तुझे तेरे दादा के पास लेचलूं साद उसकी छाती से उतरकर उस के साथ होकर अमीर के समीप गया वह देखतेही पैरों पर गिरपड़ा अमीर ने उठा कर छाती से लगाया सब तरहसे प्यार करके बैठाया तत्पश्चात् अमीर हरदम और साद को साथ लेकर उससमय में अपनी सेना में पहुँचे जब ज़ोपीन फ़ौलादी और मरज़ूक़ से सामना था अमीर को देखकर सब सरदार दौड़कर अमीर के क़दमपर गिरे ज़ोपीन फ़ौलादी ने मरज़ूक़ को उठाकर पृथ्वी पर देमार कर कहा जा दूसरे

को भेजदे इसीप्रकारसे ज़ोपीन ने कई पहलवानों को हराया आख़िर को अमीर ने आकर उठाकर अमरू के हवाले कर दिया परन्तु ऐसा पहलवान था कि अमीरका भी बड़ी देरतक सामना किये अड़ा था बड़ी देर में अमीर का बस इस पर मिला है तत्पश्चात् अमीर तो अपने महल में डङ्का बजवाने चले गये यहां सरदारों ने अमरू से कहा कि इसने हमलोगों को बड़ा दुःख दिया है इसको मार डालें तब अमरू ने प्रथम तो न माना लेकिन जब सरदारों से लोभ दिखाया तब तो अमरू ने स्वीकार करके कहा कि अच्छा मैं अमीर को समँभालूंगा हरदम ने शीशा गरम करके ज़ोपीन को पिलादिया उसको समाप्त करादिया अमीर ने सभा में बैठकर ज़ोपीन को बुलाया लेकिन लोगों से विदित हुआ कि हरदम ने ज़ोपीन को शीशा पिलाकर मारडाला तब अमीर ने क्रोधित होकर हरदम को बुलाकर पूछा तुमने ज़ोपीन को क्यों मारडाला उसने उत्तर दिया कि मैंने अमरू की आज्ञानुसार मारा मैं बिना किसी की आज्ञा के क्यों मारता तब अमीर ने अमरू को बुलाकर पूछा ऐ पापी ! तू ने क्यों ज़ोपीन को मारा उसने कहा कि वह इसी लायक़ था तब अमीर ने कहा कि क्या करूं तेरे समान और कोई दूसरा होता तो अभी तेरा शिर कटवा डालता लेकिन तिसपर भी सात कोड़े मारकर कहा कि अब फिर जो ऐसा करेगा तो मरवाडालूंगा तब अमरू ने कहा ऐ अमीर ! सात कोड़े के बदले सत्तर कोड़े मारूंगा यह कहकर नौशेरवां की सेना में जाकर अपना सब वृत्तान्त कहकर रहने लगा और सदैव अमीर के पकड़ने की युक्ति में लगा आख़िरकार एक दिन रात्रि को अमीर को उठालेजाकर बन में एक वृक्ष में बांध कर चैतन्यकरके एक लकड़ी तोड़कर सत्तर लकड़ी मारीं अमीर ने हँसकर कहा कि अच्छा अब जो तेरा प्राण बचगया तो मेरा नाम हमज़ा नहीं तो नहीं यह कहकर ज़ोरकरके कमन्द को तोड़ डाला तब अमरू जिसप्रकार से बेनाथ का ऊंट भागता है वैसेही अमीर के सामने से भागा अमीर ने तीर कमान लेकर उसका पीछा किया तब तो अमरू डरकर कि अमीर का तीर बेमारे रहताहीं नहीं दौड़कर अमीर के पास आया अमीर ने कहा अब बे तेरा प्राण लिये न छोड़ूंगा अमरू ने कहा जो यही इच्छा है तो मैं हाज़िर हूं जो इच्छा हो वह कीजिये तब तो अमीर ने केवल सौगन्द उतारने के लिये नस्तरदेकर रुधिर निकालकर अमरू को साथ लेकर सेना में आये ॥

मरज़क हकीम का बख़्तक के भेजने से आना और अमीर को सरदारोंसमेत अन्धा करना ॥

लिखनेवाला लिखताहै कि एकदिन मरज़क नाम हकीम जिससे बख़्तकसे बड़ी मित्रताथी उसने कहा कि जो नौशेरवां आज्ञादेवे तो हम जाकर हमज़ा को सेना समेत अन्धा करदेवें बादशाह ने सुनकर उसको बुलाकर ख़िलअत देकर जाने की आज्ञादी हकीमने अमीरकी सेनामें जाकर अमरू से मुलाक़ात करके कहा कि जो अमीर आज्ञादेते तो मैं सेनामें दवाकरता और सदैव सेवकाई में हाज़िर रहता अमरू ने जाकर अमीरसे सबहाल कहा तब अमीरने उसको बुलाकर अपनी सेनामें वैद्यक

करनेकी आज्ञा दी तत्पश्चात् एकदिन अमीर के नेत्रों में गर्दपड़ी उससे नेत्रों में दुःख होनेलगा तब उसने एकअञ्जन ऐसा दिया कि जिससे तुरन्तही अमीर के नेत्र अच्छे होगये यह देखकर सब लोगोंने अतिप्रसन्न होकर उसको इनआम दिया तत्पश्चात् उसने एकसुरमा ऐसादिया जिसके लगाने से सब अन्धे होगये और जाकर नौशेरवां से कहा कि मैं अमीर को सरदारों समेत अन्धा करआयाहूं डङ्का बजवाकर युद्धकी तैयारी करके सबको मारलीजिये नौशेरवां ने तबलजङ्ग बजवाया अमीर ने भी सुनकर डङ्का बजवाकर मुखधोने के लिये जल मँगवाया तबतो सबको यही मालूमहुआ कि हम सब अन्धे हैं बड़े अफ़सोस में हुए और कहनेलगे कि जो सामने नहीं जाते तो शत्रुकी सेना आकर सब लूटपाट लेगी इससे चलकर लड़ो जैसी ईश्वर की कृपा होगी वही होगा लेजाकर सेना का परेट शत्रुके सामने जमाया नौशेरवां ने कहा कि जो अन्धे होते तो काहेको आते मरज़क़ने कहा कि किसीको लड़ने के लिये भेजिये आपही विदित होजायगा तब नौशेरवां ने गाज़ीसवार को भेजा उसने जाकर अमीर की सेना के सामने जाकर ललकारा कि ऐ अरबबासियो! तुम सब अन्धे होगये इतनी देर से पुकारताहूं कोई सुनता नहीं तब तो हरदम क्रोध से जलउठा और आकर उसका सामना करके मारडाला तब नौशेरवां ने बराबर से पचास वीर भेजे सबोंको हरदम ने मारा आख़िरको नौशेरवां की सेना में घुसकर ऐसा मारा कि इतने डिठियारे में कभी नहीं मारा था तब तो नौशेरवां की सेना भाग खड़ी हुई और अतिप्रसन्न होकर क़िलेमें आकर मुरचोंपर सिपाहियोंको मुक़र्रर करके क़िले को बन्दकरके ईश्वर का भजन करनेलगे नौशेरवां ने पहले जाकर क़िले में युद्धका सामान किया लेकिन जब क़िलेवालों ने तीरसे बहुतही सेना को घायल किया तब क़िले से हटकर घेरकर उतरपड़ा॥

हाशम पुत्र हमज़ा और हारस पुत्र साद का अमीर के पास आना और अमीर के नेत्रों का हज़रतख़िज़र की सहायता से अच्छा होना॥

लेखक लिखता है कि हरदम की बहिन के पेट से जो पुत्र हुआथा उसने उसका नाम हाशम रक्खा और साद के पुत्र का नाम हारस रक्खा था जब वह दोनों नौ बर्ष के हुए तब दोनों में बड़ी मित्रताहुई ऐसी मित्रताथी कि साथही भोजन करते और बन में शिकार खेलनेभी साथही जाते थे आख़िर को जब उनको ख़बर मिली कि अमीर बदाऊं क़िले में क़ैद है तब दोनोंने आकर नौशेरवांकी सेनाको मारकर भगा दिया तब अमीर ने जानकर कि ईश्वर से सहायक आयाहै क़िलेका दरवाज़ा खोलकर उनको भीतर करलिया उनका हाल विदित होनेपर अमीर ऐसे प्रसन्नहुए कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता दोनों को दोनों जांघोंपर बैठालकर प्यार करनेलगे तब हाशम ने कहा कि यहां पर हमारी सेना को बड़ा दुःखहै इससे बरोदा में चलकर बास कीजिये वहां बड़ा सुख मिलेगा अमीर ने उसीसमय डङ्का बजवाकर बरोदा की तरफ़ कूचकरके क़िले में जाकर उतरपड़े और शत्रुकी भी सेना पीछे २ आकर क़िले को घेरकर उतरपड़ी अमीर दिन रात्रि ईश्वर का भजन करतेथे कि

एक दिन हज़रत ख़िज़र ने आकर एकपत्ते का रस अमीर के नेत्रों में टपकाकर अच्छा करदिया तब अमीर ने हज़रत ख़िज़र से सलाम करके कहा कि मैं तो अच्छा हुआ लेकिन मेरे सरदारभी सब अन्धे हैं तब हज़रत ख़िज़र ने कई पत्ते देकर कहा कि इसीका रङ्ग लेजाकर सबके नेत्रों में छोड़देना सब अच्छे होजायँगे आख़िरकार जब सबको दिखाई पड़नेलगा तो अमरू ने अमीर से कहा कि यह सब बख़्तक ने किया है आज्ञा हो तो उसको इसके बदले में दण्डदूं अमीर ने मनाकिया लेकिन उसने न माना नौशेरवां की सेना में जाकर बावरची बनकर पहिले बख़्तक के पास रहा फिर बादशाह के बावरचीख़ाने का दारोग़ा होगया तब एक दिन घात पाकर बख़्तक को उठालाकर शिर काटकर गाड़लिया और शेष धड़का कबाब बनाकर लेजाकर नौशेरवां के भोजन में दिया संयोग से एक उंगली जिसमें बख़्तक मुंदरी पहिने था वह बादशाह के भोजन में निकल आई बादशाह ने अंगूठी से जाना कि यह बख़्तक की उंगली है बावरची से पूछा कि यह उंगली किसकी है उसने कुछ उत्तर न दिया तब बख़्तक की खोज कराई जब उसका पता न मिला तो बुज़ुरुच-मेहर से बुलाकर कहा कि आइये भोजन आपके लिये रक्खा है ख़्वाजे ने कहा कि मैं भोजन करके आयाहूं तब बादशाह ने कहा मैं जानता हूं कि जिस कारण तुम भोजन नहीं करतेहो निश्चय है कि तूने रमल से विचारा होगा लेकिन हम से ख़बर नहीं की ख़्वाजे ने कहा कि हमलोग बेपूछी कोई बात किसीसे नहीं कहते हैं इससे बादशाह ने क्रोधित होकर बुज़ुरुचमेहर को अन्धा करके निकाल दिया और हरमुज़ को गद्दी पर बैठाकर आप मदायन को चलागया और बुज़ुरुचमेहर ने आकर अमीर से सब अपना हाल कहा और वहांसे मक्के में जाकर फिर उसके नेत्र अच्छे होगये अब हरमुज़ का हाल सुनिये कि बादशाह के जाने के बाद गद्दीपर बैठकर श्यावासपुत्र बुज़ुरुचमेहर को तो सेनापति प्रधान बनाया और बख़्तियारक को दूसरा वज़ीर बनाया परन्तु बख़्तियारक थोड़े दिनों के बाद ऐसा मुँहलगा होगया कि वे उसके पूछे हरमुज़ कोई कार्य न करता एकदिन हरमुज़ ने कहा कि कोई युक्ति ऐसी करनी चाहिये कि जिससे हमज़ा माराजावे बख़्तियारक ने कहा कि गावलंगी बादशाह ख़ाम का बड़ा बहादुर है और वहांके लोग मनुष्य का भोजन करते हैं जो उसको आप लिखें तो वह आकर हमज़ाको सेनासमेत नाशकरदेगा आख़िरकार बख़्तक ने लिखकर बुलवाया जब उसने आकर अमीर की सेना का सामना किया तो प्रथम तो चालीस व्याघ्रसवार मारेगये तत्पश्चात् जब उसने आकर अमीर का सामना किया तो अमीर ने ऐसी तलवार चलाई कि वह भागकर अपनी सेना में खड़ाहुआ और हरमुज़ से कहने लगा कि हम हमज़ा से नहीं जीत सके हैं लेकिन जो तुम हमज़ा से बचा चाहतेहो तो कज़ाबकदर में सरपाल पुत्र सलसाल के पास चलो वह तुम्हारी सहायता करेगा हरमुज़ ने सबसे सलाह पूछी सबोंने तो आनेकी सलाहदी लेकिन श्यावास ने कहा कि वहां जाकर बड़ा दुःखप्राप्त

होगा वहां न जाइये परन्तु उसने न माना आख़िरकार वहां जाकर ऐसी आपदा में पड़ा कि उसका बर्णन नहीं होसक्ता जब हमज़ा ने आकर मुसल्मान करके सहायता की तब वहां से छूटकर आनेपाये जब अमीर ने हरमुज़ को वहां से मदायन की तरफ़ भेजदिया तब तो सरपाल अतिक्रोधित होकर सेना लेकर क़िले से निकला अमीर ने जाकर सामना किया बड़ीभारी लड़ाई हुई आख़िर को अमीर के हाथसे बांधागया और मुसल्मानी धर्म स्वीकार करके अमीर के गुलामों में मिला और अमीर को अपने नगर में लेजाकर कई दिनोंतक मेहमानदारी की तत्पश्चात् अमीर ने सरपाल से पूछा कि कोई और स्थान यहां देखने के योग्य है उसने कहा तीन मंज़िलपर तिलस्मातजमशैदी है वहां चलदेखिये अमीर ने कहा जो तूने उसको देखा हो तो पहले सब हाल बर्णनकर किसने बनवाया है उसने कहा कि जमशैद मरने से पहले नगरको उजाड़कर वहां सब तरह के मनुष्य जादू के बनारक्खे हैं और एक क़बर खुदाकर उसी में बैठकर सोरहा दूसरा यह है कि जङ्गल में एक दामीप अलमनाम जादू का बना है वह भी देखने योग्य है तीसरे एक देव सफ़ेद बड़ा दुष्ट है उससे सबलोग डरते हैं देवसफ़ेद का नाम सुन कर अमीर ने कहा कि विदित होता है कि वह वही देव है जो क़ाफ़ में था हमारे डरसे भागआया है आख़िरकार अमीर ने जाकर पहले तो जादू के तिलस्मातों को तोड़कर सरपाल और अमरू को उसका तमाशा दिखाया फिर कुयें में जाकर देवसफ़ेद को एकबारगी घेरकर शिरकाट कुयें से बाहर लाकर लोगों को दिखाया और देव जो उसके साथ थे उनमें से बहुतेरे मारेगये और बहुतेरे भागगये और बहुतों को अमीर ने मुसल्मान करके कहा कि तुम क़ाफ़ में जाकर कर्राशा के समीप रहो तत्पश्चात् सफ़ेददेव का शिर लेकर कुयें के बाहर आये और सरपाल को दिखाकर आर्कटबन्द में लटका दिया और आप घोड़ेपर सवार होकर वहां से रवानाहुए थोड़ीदूर जाकर एक हरे मैदान में शिकार खेलनेलगे और सब सन्देह मनके दूर बहाने लगे ॥

रुस्तम पीलतन का अहरन से भाग जाना ॥

लिखनेवाले इस इतिहास को यों बर्णन करते हैं कि रुस्तम पीलतन ने देखा कि अमीर को गयेहुए देरहुई अबतक कुछ समाचार न मिला सो अब हम यहां बैठकर क्याकरें इससे यह अच्छी बात है कि जमशैद में जाकर तिलस्मात की सैर करें सरपाल के पुत्रों को लेकर कज़ाबक़द्र से सेनासमेत चलकर कई दिनों के बाद तिलस्मात जमशैद में पहुँचा उसको टूटा देखकर मालूम किया कि अमीर इसको तोड़कर और कहीं गये तब वहांसे सेना लेकर नगर में गये तो वहां देखाकि जमशैद की लोथ एक तख़्तपर पड़ी है और ख़ज़ाने की कोठरी जो खोलकर देखी तो सर्प और बिच्छू दिखलाई पड़े तब सरपाल के बेटों से कहा कि अब बख़्तक को भी चलकर देखना चाहिये उन्होंने कहा कि अहरन शेरगरदां वहां का बादशाह है उसका एकसौ पच्चीस गज़ का डील है और सब सेना उसकी मनुष्य खाती है इस

से वहां जाना उचित नहीं वहां से किसी का प्राण नहीं बचता रुस्तम ने कहा कि मालूम होता है वह भी सरपाल के बराबर है उसने कहा कि वह सरपाल से कहीं बलवान् है जब वह हमारे देश में आता है हमारे पिता उसकी शङ्का में पहाड़ पर भागजाते हैं तब रुस्तम ने पूछा कि मुरजवां कहां है उन्होंने कहा कि वह भी वहीं है आख़िरकार रुस्तम ने जाकर अहरन से लड़ाई की और कई सरदारों समेत आप मारागया उसके मारेजाने के बाद अहरन को मालूमहुआ कि हमज़ा सेना में नहीं है तब तो अपने क़िले में चलागया और अमीर की सेना में रोना पीटना मचगया आख़िर को रुस्तम को गाड़कर अमीर का आसरा देखनेलगे अमीर का हाल सुनिये कि जब शिकार से छुट्टी पाकर जमशेद में आये तो सेना के उतरने का पता पाकर अमरू से कहा कि विदित होता है कि रुस्तम यहां तक आकर बख़्तक की तरफ़ गया ईश्वर ख़ैरकरे मेरा चित्त व्याकुल है यह कहकर बख़्तक की तरफ़ चले जब समीप पहुँचे तो जितने सरदार और पुत्र थे सब देखकर चिल्ला २ कर अमीर के क़दमोंपर गिरे अमीर भी देखकर घोड़े परसे पृथ्वीपर गिरपड़े और इधर उधर लोटनेलगे सरदारों ने देखा कि अमीर अतिव्याकुल हैं सब सरदारों ने अमीर से समझाकर कहा कि ईश्वर की रचना अपरम्पार है उसमें किसी का साझा नहीं इससे कुछदिन आप जङ्गल में चलकर चित्तको स्थिर कीजिये फिर जैसा ईश्वर करेगा वही होगा आख़िर समझाकर अमीर को जङ्गल की तरफ़ लेगये संयोग से उसी दिन मुरजवां अहरन से विदा होकर ख़ाम को जाना था उसने मार्ग में सुना कि हमज़ा रुस्तम के दुःख से जंगल में चित्त बहलाने के लिये सबको साथ लेकर शिकार खेलने आया है उसने एक जादूगर को बुलवाकर घोड़ा ज़ीनसमेत तैयार कराकर उसी मार्ग में खड़ा करके आपलोगों समेत एक स्थानमें छिपकर बैठकर देखनेलगा इतने में साद उसी तरफ़ से घोड़ेपर सवार निकला उसने घोड़े को देखकर अपने घोड़ेपर से कूदकर उसपर सवार होकर एक कोड़ा मारा तो वह घोड़ा वहां से बाग़ से अधिक भागा आख़िर को साद ने तलवार निकालकर घोड़े को मार डाला तो घोड़ा साद समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा मुरजवां ने दौड़कर साद को बांधलिया और ख़ाम की तरफ़चला जिस समय बगली के समीप पहुँचा सादको हाज़िर करके कहा कि देखिये यह हमज़ा का पोता और मुसल्मानी सेना का बादशाह है किस तौर से मैं बांधलाया हूं साद ने कहा ऐ बगली ! यह तो कहता है कि मैं बांध लाया हूं सो हमारा इसका सामना हो आपही झूठ सत्य विदित होजायगा आख़िर को दोनों से लड़ाई हुई सादने उठाकर मुरजवां को पृथ्वीपर देमारा तब मुरजवां ने फिर उठने की इच्छा की इतने में गावलंगी ने उठकर मारडाला और साद को गले से लगाकर अपनी बग़ल तख़्तपर बैठाया और कहा ऐ पुत्र ! किसी प्रकारसे संदेह न करो मैं तुझको विदा करदेता लेकिन इस कारण मैं तुझको यहां रक्खूंगा कि हमज़ा तेरेलिये वहां आवे तो मुझसे भी मुलाक़ात होजायगी साद गावलंगी की मुहब्बत

देखकर अतिप्रसन्नता से रहनेलगा बदीउज़्ज़मां ने जो सादके घोड़े को खाली और जादू के घोड़ेको मुआदेखा तो अतिव्याकुल होकर इधर उधर उठनेलगा जब कहीं न पता मिला तो कहा कि विदित होता है कि मुरजवां ने यह दुष्टपना किया होगा आख़िरकार ढूंढ़ते २ मार्ग में गावलंगी के दो दामादों को मारताहुआ गावलंगी के नगर में पहुँचा तो उसको भी एक पत्र लिखा कि साद हमारा भतीजा तुम्हारे पास है जो अपना भला चाहतेहो तो उसको हमारे पास भेजदो हरदम ने पत्र लेजाकर देखा कि गावलंगी और साद एकही तख़्तपर बैठे हैं हरदम गावलंगी को देखकर बड़े आश्चर्य में हुआ कि ईश्वरने ऐसा मनुष्य भी संसारमें पैदाकिया है गावलंगी ने हरदम को देखकर अतिनम्रता से कहा कि भाई अच्छे तो हो यह कहकर अति नम्रता से उससे कहा कि जैसे बदीउज़्ज़मां ने मेरे दो दामादों को मारा है परन्तु मैं हमज़ा से वैसा बदला नहीं लेसक्ता हूं हरदम गावलंगी की बातें सुनकर अपने चित्त में अतिलाजित हुआ कि यह तो ऐसी बातें करता है और पत्र में और तरह से लिखा है लेकिन लाचार होकर पत्र देकर सब संदेशा उनसे कहा गावलंगी ने पत्र को पढ़कर संदेशा कहा कि मैंने आपको कौनसा दुःख दिया है जो आपके चचासाहब ने यह पत्र लिखाहै सादने कहा कि उनको यह क्या मालूम किसतरह से आप मुझ से सम्मुख होते हैं गावलंगी ने कहा हां यहभी आप सत्य कहते हैं तब हरदम को ख़िलअतदेकर कहा कि तुम जाकर बदीउज़्ज़मां से हमारा सलाम और हमारी तरफ़ से कहना कि सत्य है मुरजवां सादको दग़ादेकर पकड़लाया था सो हमने उस को मारकर साद को अमीर के आनेतक मेहमानरक्खा है सो आपभी उतरकर शिकार खेलिये और अमीर के आनेतक हमारे मेहमान रहिये और जो लड़ने की इच्छाकरोगे तो उसका फल अच्छा न होगा लेकिन बदीउज़्ज़मांने न माना युद्धका डङ्का बजवाकर सामना किया आख़िर को जब शिरवरहनातपशी दोनों भाई मारे गये तब गावलंगीने बड़ाअफ़सोस किया और दोनोंकी लोथ उठाकर बदीउज़्ज़मां के आगे लाकर रखके कहा कि अब जो हुआ सो हुआ अब भी हमज़ा के आनेतक चुपचाप बैठेरहो नहीं जो मुझको मारने की इच्छाहो तो मैं हाज़िर हूं बदीउज़्ज़मां ने कहा कि मैं जल्लाद तो हूं नहीं कि तुझे मारूं हथियार बांधकर आ हमारी तेरी लड़ाई हो तू भी मेरा बल देखे गावलंगी हथियार लेकर शाहज़ादे के सामने आया तब भी मनाकरतारहा लेकिन कौन मानता है आख़िर को गावलंगी ने तीन वार बराबर किये तीनों को अमीरज़ादे ने एक गदा ऐसी मारी कि गावलंगी की सवारी का बैल मरगया और गावलंगी भी व्याकुल होगया तबतो गावलंगी बदीउज़्ज़मां की बड़ी प्रशंसा करनेलगा और सायंकाल तक दोनोंमें गदा और तलवार चला की यह हाल अमीर को पहुँचा कि मुरजवां साद को उठालेगया है और बदीउज़्ज़मां उसकी खोज में ख़ामतक पहुँचे यह सुनकर अमीर ने अमरू से बुलाकर कहा कि मैं तो बे अहमर के मारे यहांसे कहीं हट नहीं सक्ता तुम जाकर हालली अमरू

वायु के समान वहां से उड़कर अतिशीघ्रही खाम में पहुँचा देखा कि गावलंगी और बदीउज़्ज़मां से लड़ाई होरही है सेना के सरदार देखकर दौड़कर अमरू से मिले गावलंगी अमरू को देखकर लड़ाई से हटकर अमरू से बातें करनेलगा अमरू ने कहा कि ईश्वर की कृपा से आप छोटे बहुत हैं इससे बातें नहीं सुनाई देतीं समीप आओ तो आपकी बातों को सुनूं यह कहकर कूदकर उसकी छातीपर जाबैठा और कहा कि मैंने तेरा बड़ा नाम सुना है लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि अमीर के लड़कों से लड़ते हो उसने कहा कि मैंने कुछ नहीं किया मेरी बातों को सब अमीर की सेना गवाह है अब तुम आयेहो बदीउज़्ज़मां को ईश्वर के लिये समझादें कि वह अमीर के आनेतक चुपचाप रहे मुझको अमीर से लज्जित न करावे तब अमरू ने अमीरज़ादेको समझाकर मैदान से फेरदिया और आप गावलंगी के साथ उसके क़िले में गया वहां जाकर गावलंगी से लौटनेकी इच्छा की परन्तु उसने न माना और कहा कि आज हमारे यहां मेहमान रहिये और अपना कुछ तमाशा दिखाओ मैंने आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है यह कहकर साद और अमरू को साथ लेकर भोजन किया और शराब और क़बाब खा पीकर कहा कि तुममें सब अच्छा है केवल एक बुराई है कि तुम अपनी दाढ़ी क्यों मुड़ाते हो तुमको लोगों के सामने लज्जा नहीं आती है अमरू ने कहा कि सातसौ अशरफ़ी आपभी दाढ़ी की बनवाई भेज दीजिये नहींतो दाढ़ी आपके मुखपर न रहेगी गावलंगी ने कहा तब मैं तुझको मर्द जानूं जो तू मेरी दाढ़ी मूड़ले मैं किसी प्रकार से क्रोधित न हूंगा अमरू ने कहा कि आपकी दाढ़ी मूड़ना कुछ कठिन नहीं है बहुत अच्छा आज मैं रात्रि को आपकी दाढ़ी मूड़ूंगा ख़बरदार रहिये आख़िरकार रात्रि को अमरू ने आधी दाढ़ी मूड़कर जगाकर दूरसे सलाम करके कहा कि आईना लेकर मुख देखिये उसने जो देखा तो आधी दाढ़ी मुड़ी पाई अतिलज्जित होकर कहनेलगा कि कोई युक्ति ऐसी करो कि सब दाढ़ी बराबर होजावे तब अमरू ने वहभी आधीमूड़कर झोरे से एक दाढ़ी निकालकर जमादी और कहा कि जबतक गर्मजल से दाढ़ी न धोओगे तबतक इसी प्रकार से रहेगी गावलंगी ने आईना लेकर देखा तो असल में वैसेही मालूम हुआ जब प्रातःकाल हुआ गावलंगी ने सातसौ अशरफ़ी ख़िलअतपर अधिककरके अमरू को देकर बिदाकिया अमरू ने वहां से आकर बदीउज़्ज़मां को अच्छीतरह से समझा दिया कि जबतक अमीर न आवें तबतक तुम गावलंगी से सामना न करना यह कहकर अमीर के पास रवानाहुआ कई दिनों के बाद पहुँचकर सब हाल अमीर से कहा अमीर ने दोनों पहलवानों के लिये बड़ी ग़मी मनाई प्रातःकाल को अहरन शेरगरदां डङ्का बजवाकर मैदान में आया और ललकारनेलगा तब अमीर ने भी जाकर मैदान में उसका सामनाकिया उसने अमीरपर एकवार चलाई अमीर ने उसको रोककर कहा कि दो वार और करले तब उसने झुलझुलाकर दो वार ऐसे किये कि अशक़र व्याकुल होगया तब अमीर ने एकही वार में उसके घोड़ेको मारा और

आप भी अशक़र पर से कूदकर उसके सामने गया थोड़ीदेरतक गदा चली जिससे पृथ्वी हिलगई फिर तलवार चलनेलगी इसीप्रकार से तीनदिनतक युद्धहुआ चौथे दिन अमीर ने शब्द करके शिरपर उठालिया और घुमाकर पृथ्वीपर देमारा और अमरूसे कहा कि इसको बांधलो अमरू बांधकर लेगया और अमीर तलवार लेकर उसकी सेनामें गया जो मुसल्मान हुए उनको छोड़कर बाक़ियोंको मारडाला लोगों ने अमरू से कहा कि अमीर इसको न मारेंगे तुम मारकर रुस्तम का बदलालेलो अमरू ने लोगोंके कहने से उसके कान में शीशा गर्म करके डाल दिया वह मर गया इसी प्रकार से सब तरह से वहां का नाश करके कई दिनोंके पश्चात् चलकर ख़ाम में पहुँचे गाबलङ्गी ने अमीर के आने की ख़बर पाकर साद को ख़िलअ़त और बहुतसी सौगात देकर अमीर के पास भेज दिया अमीर ने सादको गलेसे लगाया और गाबलङ्गीकी कृपा करने पर अति प्रसन्न हुए प्रातःकाल गाबलङ्गी डङ्का बजवाकर मैदान में आकर खड़ाहुआ अमीर भी जाकर सामने खड़ेहुए लेखक लिखता है कि इक्कीस दिन रात्रि ऐसी लड़ाई दोनों से हुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता बाईसवें दिन अमीर ने गाबलङ्गी से कहा कि सब प्रकार की लड़ाई होचुकी अब तुम हमारा पैर उठाओ हम तुम्हारा जो उठालेवें वह उसके आधीन होकर दूसरा रहे गाबलङ्गी ने अति प्रसन्नता से स्वीकारकरके कहा कि हमज़ा इसमें तुम बहुत चूके अमीर ने कहा अच्छा देखा जायगा देखें कौन लज्जित होता है तब गाबलङ्गी ने इसप्रकार से बल किया कि अँगुलियां टूटगई और कानों और नेत्रों से रुधिर गिरने लगा आख़िर को छोड़कर कहा कि मुझमें इससे अधिक बल नहीं है तब अमीर ने कहा अच्छा ख़बरदार हो हम उठाते हैं यह कहकर एक शब्द ऐसा किया सोलह कोस तक के पहाड़ आदिक हिलगये और एक बारगी गाबलङ्गी को उठाकर पृथ्वी पर रखकर अमरू से कहा बांध ले उसने कहा मैं तो आपही बँधाहूं तब अमीर ने उसको मुसल्मान करके छाती से लगाकर सेनामें लाकर सब सरदारों से अधिक प्रतिष्ठा की और सब सरदारों से मिलाकर अपने साथ बैठाकर भोजन कराया तब गाबलङ्गी ने अमीर को पुत्रों और सरदारों समेत अपने क़िले में लेजाकर चालीस दिन तक मेहमानदारी की ॥

अमीर का बख़्तर को जाना और वहांके बादशाह कारबबख़्तर को मारना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने मेहमानदारी के बाद गाबलङ्गी से पूछा कि यहांसे निकट कौन नगर है उसने कहा कि बख़्तर नगर अतिसुशोभित स्थान है लेकिन वहां का बादशाह कारबबख़्तर बड़ा पहलवान एकसौसाठ गज़का डील है और मनुष्यों का आहार करता है वह जब हमारे नगर में आता है हम उसके डर से पहाड़पर भागजाते हैं और वह जादूगर भी है अमीरने कहा मैं तो जादूगरों और मनुष्यभक्षी और अग्निपूजकों का शत्रु हूं अब वे इसके मारे मुझे चैन न होगी बुज़ुर्ग़मेहर की कहावत मेरा फ़राशफ़र्म उपनाम है यह कहकर गाबलङ्गी से कहा

कि अच्छा अब हम जाते हैं गावलङ्गी ने कहा ऐ अमीर! जीतेजी अब आप अपने निकट से अलग न कीजिये अमीर ने कहा जो ऐसा हो तो मेरे साथ चलो तब गावलङ्गी अपने पुत्र रमलगावलङ्गीको अपना स्थानपति करके अमीर के साथहुआ थोड़े दिनों में बख़्तर के समीप पहुँचकर चारकोस के फ़ासले पर उतरकर बख़्तर को एक पत्र लिखा कि ऐ कारबबख़्तर! यहां आकर मुसल्मान होकर मेरे आधीन हो नहीं तो ऐसी ख़राबी से तुझको मारूंगा कि जीवजन्तु तेरेलिये दुःख पावेंगे जब अमरू पुत्र अम्बियाने पत्र लेजाकर दिया उसने थोड़ासा पढ़कर आज्ञादी कि यह जाने न पावे इसके लानेवालेको पकड़लो अमरूने टोपी झाड़कर शिरपर रक्खी और कारब के शिरपर एक थप्पड़ मारकर टोपी शिर से लेकर अमीरके पास आकर सब हाल वर्णनकिया अमीर ने रात्रिको शराब पीने में काटी प्रातःकाल कारबने जब आकर मैदान में डङ्का बजवाया तो अमीर ने भी जाकर सामना किया आख़िरको कारब मारागया तत्पश्चात् उसकी सेना को मारकर नगर को लूटकर आराश नगरमें आये तो वहां के बादशाह आराशने क़िलेसे निकलकर अमीर का सामना किया अमीर ने देखा तो १८० गज़का उसका क़द है और एक भयानक रूप है जिस समय उसने अमीरके ऊपर गदा चलाई अमीर कूदकर दूसरी तरफ़चले गये तो गदा उसकी पृथ्वीपर जितनी दूरमें गिरी उतनी पृथ्वी धसगई उसने झुककर चाहा कि गदा उठाकर फिर अमीरको मारे इतनेमें अमीरने एक तलवार ऐसी मारी कि वह दो भाग होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सेना उसकी यह हाल देखकर क़िले में भागगई तब अमरूने सुरंग लगाकर उस क़िलेको भी उड़ा दिया जितने मनुष्य-भक्षक थे सबको यमपुरी में पहुँचाया ॥

अमीर का नेस्तान की तरफ़ जाना और वहां के बादशाह को मारना ॥

लिखनेवाला लिखता है कि अमीरने आराश को नाशकरके गावलङ्गीसे पूछा कि अब इसके आगे कौन नगर है उसने कहा एक अतिसुशोभित नगर नेस्तान है और वहांके स्वामीका नाम सगंदाजखूंख़ार नेस्तान है उसका डील १६० गज़का है और उसकी सेनाभी अधिक है और बड़े २ बहादुर सरदार हैं और क़िला ऐसा पुष्ट बना है कि जिसमें मनुष्य तो क्या जीवजन्तुभी जानेका रास्ता नहीं पाते और पृथ्वीसे ऐसी लव निकलती है कि पहाड़ जलते हैं लेकिन अमीरने इन बातोंका कुछ बिचार न किया नेस्तानकी तरफ़ कूचकरके चले जब उस स्थानपर पहुँचे तो अमीरकी सेना गरमीके मारे आगे न बढ़सकी बहुतसे लोग मरनेलगे उससमय अमीरने ख़्वाजे ख़िज़र की कमन्द निकालकर पृथ्वीपर फैलादी और कहा कि इसीको पकड़ कर सब लोग चलेआओ अब कुछ न डरो लिखनेवाला लिखता है कि सब सेना उस नदी में जलकर मरगई केवल एक सरदार ऊंट पर सवार और ३०० सिपाही कमन्द पकड़कर नदी से पार उतरे बड़े दुःख सहने के बाद नगर नेस्तान के समीप पहुँचे वहां का बादशाह अमीर का नाम सुनकर जातेही सेना लेकर सामने आया और अमीर

पर खड्ग मारनेलगा यहांतक कि बहुतसे जवान अमीर के मारेगये तब तो अमीर ब्याकुल होकर दोनों हाथों में तलवार लेकर इस प्रकार से उसकी सेना में घुसकर मारने लगे कि जिस तरह ब्याघ्र बकरियों के झुण्ड में घुसकर मारता है यहां तक खूँख़्वार मारेगये कि उनके रुधिर से एक नदी बही आख़िरकार नेस्तानसंग ने आकर अमीर के शिरपर एक तलवार मारी अमीर ने उसको रोका और जब वह गदा उठानेलगा तो अमीर ने कूदकर एक तलवार ऐसी मारी कि उसके चारोंपैर कटकर अलग होगये तो एक तलवार दूसरी मारकर शिर को काटकर पूरा करदिया और जो क़िले में थे उनको सुरंग लगवाकर उड़वादिया और कहा कि मैंने बुज़ुरुच-मेहर से सुनाथा कि ज़ुलमात से केवल ७० सिपाही बचकर आवेंगे और अब ७१ हैं नहीं मालूम कि कौन मरेगा यह कहकर अतिदुःखित हुए लिखनेवाला लिखता है कि अमीर ने गावलंगी से कहा कि हे मित्र ! लाख सवार हमारे साथ थे उनमें से केवल ७१ हैं इनके मरने से मुझको बड़ा दुःख हुआ अब बताओ कि इसके आगे कौन नगर है उसने कहा कि यहां से थोड़ी दूरपर आरोबेलनामे नगर है वहां के स्वामी का नाम आरदपीलदन्दां और मुर्जवान पीलदन्दां और उसके आगे ज़रद हस्तजादू का तिलस्मात है वहां अपूर्व २ तरहकी बस्तु हैं तब अमीर वहां से चलकर आरदबेल में पहुँचे वहांके स्वामी को सेनासमेत मारकर चलकर जरदस्त जादूगर के तिलस्मातमें पहुँचे तो एक चारदीवारी दिखाई पड़ी और उसके भीतर एक गुम्मद दिखाईपड़ा तो उसमें से गाने बजानेका शब्द सुनाईपड़ा तब अमीरने गावलंगी से कहा कि इसमें मनुष्य मालूम होते हैं कि गाने बजाने का शब्द सुनाई देता है उसने कहा यहां मनुष्य नहीं हैं यहां सब जादू है तब अमीरने कहा कि तुम सबसे बड़े हो जाकर देखो तो क्या बात है गावलंगी ने जाकर जो दीवार से झुककर देखा तो एकबारगी चिल्लाकर दीवारके भीतर कूदपड़ा इसी तरहसे सब देख २ कर भीतर कूदगये तब अमीर अति दुःखित होकर सोगये तो देखा कि आकाशसे एक तख़्त उतरा उसपर एक बृद्ध मनुष्य बैठा था उसने आकर अमीर से कहा कि ऐ पुत्र ! दुःखित क्यों होते हो इस गुम्बदपर एक सफ़ेदमुर्ग़ बैठा है उसको तीरसे मारो जादूका नाश होजावेगा यह कहकर तख़्त तो आकाश की तरफ़ उड़गया और अमीर के नेत्र जो खुलगये तो देखा कि गुम्बद पर एक सफ़ेद मुर्ग़ बैठा है अमीर ने तीरसे उसको मारा उसके गिरतेही तिलस्मात टूटगया लोग जो उसके भीतर थे सब आपही अमीर के क़दमों पर आकर गिरे अमीरने सबसे मिलकर ईश्वर का धन्यबाद किया उन लोगों से जो वहांका हाल पूछा तो उन्होंने कहा कि एक ऐसी स्वरूपवान् युवा स्त्री दिखाई पड़ी कि जिसके देखने में हमलोग ब्याकुल होकर कूद पड़े थे अमीरने कहा कि गुम्बदका दरवाज़ा खोलकर देखो तो इसके भीतर क्याहै परन्तु उनमें कोई न खोलसका तब अमीरने जाकर दरवाज़े को तोड़ा और भीतर जाकर देखा तो गुम्बद में एकताबूत लटका था उसको उतारकर खोला तो ज़रदहस्त

जादू की लाश और एक किताब मिली अमीर ने उसको जलादिया लेकिन दो चार पत्र अमरू ने चुरालिये थे वही जादू अबतक दुनिया में है तत्पश्चात् उसकी लोथ किताब समेत जलाकर तिलस्मात के किनारे आये तो यारों से कहा कि आज सब कोई पहरा दो वारी २ सोना यह कहकर आदी को पहले पहरेपर बैठाया तो सामने से एक हिरन आया उसको मारकर खाने के लिये पकानेलगा इतने में एक बुढ़िया स्त्री आकर दांत चबानेलगी तब आदी ने कहा सत्य बता तू कौन है उसने कहा कि मैं एक सौदागर की स्त्री हूं मेरे पुरुष को व्याघ्र ने मारडाला है मैं तीन दिन से भूखी हूं थोड़ासा मांस मुझको भी दे उसको जो दया आई तो उठकर डेकचे से मांस निकालने के लिये झुका इतने में बुढ़ियाने उठकर एक थप्पड़ मारकर आदी को बेहोश करदिया और मांस खाकर चलीगई यही हाल अश्तर और लन्धौर का भी हुआ आखिरी पहरा जब अमीर का हुआ तो अमीरने भी हिरनका शिकारकरके पकाया तब वही बुढ़िया आकर मांगने लगी तो अमीर ने उसके मुख से मांस की सुगन्ध पाकर जाना कि यह चुड़ैल है उठकर एक हाथ में तलवार लेकर एक हाथसे मांस उसके लिये निकालने लगे इतने में उसने चाहा कि मारकर बेहोश करे कि अमीर ने दूसरे हाथसे एक तलवार मारकर दो टुकड़े करदिये पृथ्वीपर गिरते ही वह एक तरफ़ को भागी अमीर ने उसका पीछा किया देखा कि वह शिर एक कुयें में गिर पड़ा अमीर उसी कुयेंपर खड़ेहोगये इतने में सब लोग भी पहुँचगये अमीर ने अमरू से कहा कि ढालमें कमन्द को बांधो हम इस कुयें में जावें अमरू ने कहा कि आप जगतपर खड़े रहिये मैं जाकर हाल लेआताहूं यह कहकर अमरू कुयें में गया वहां जाकर देखा कि वह शिर एक सुवर्ण के पात्र में एक अतिस्वरूपवान् स्त्री के सामने रक्खा है और वह स्त्रीरोरो कहरही है कि मैंने मना किया था कि हमज़ाके पास न जा आखिर तू ने अपना प्राणदिया और मुझको भी दुःख में डाला अमरू ने यह सुनकर कमन्दको फेंककर उसको बांधलिया और अतिशीघ्र ही शिर समेत लाकर अमीर के पास रखकरसब हाल सुनाया अमीर ने पूछा कि तू कौन है और वह बुढ़िया कौन थी उसने कहा कि मैं ज़रदस्तकी बेटी हूं और वह माता थी तब फिर अमीर ने पूछा कि तू अकेली क्यों है उसने कहा कि दो बहिन मेरी सेना समेत तिलस्मात में रहती हैं वेइसके मरने का हाल सुनकर आकर तुमसे यथाशक्ति युद्ध करेंगी तब अमीर ने उसको अमरू को सौंपकर कहा कि इसको बड़ी ख़बरदारी से रक्खो इससे ग़ाफ़िल न रहना वह रात्रि तो बीतगई प्रातःकाल होते उसी कुयें से जादूगरों की सेना निकलकर मैदान में उतरी और उस सेनाके सरदार ज़रदहस्त की दो बेटियां थीं एकका नाम गुलरुख़ था और दूसरी का फ़र्रुख़ था और उनकी एक दाई जादू में प्रचण्ड थी उन्होंने उसीको जादू करने की आज्ञा दी एक दिन अमीर ने उस लड़की सेपूछा कि तेरी बहिन मुझ से क्या लड़ेगी उसने कहा कि वह लड़ तो नहीं सकी लेकिन जादू से आपको ख़राबकरेगी तब अमीरने अमरू

से कहा कि तुम इसे लेजाकर किसीप्रकार से पूछो कि जादू क्या चीज़है और किस तरह से बनता है अमरू ने लेजाकर अनेक प्रकार से उससे पूछा लेकिन उसने न बताया तब उसको मारडाला और अमीर से आकर कहा कि मैंने तो उसको मार डाला लेकिन मैं जाकर किसीसे पूछ आता हूं यह कहकर जादूगरों की सेना की तरफ़चला मार्ग में जादूगर की सेना का एक सवार मिला उसको मारकर अपनी सूरत उसीतरफ़ की बनाकर सेनामें गया कि अपना कार्य सिद्धकरे जब रात्रिहुई तो चौकी के लोगों के साथ फ़र्रुख़के पलँगकी चौकी देने गया संयोग से एक जादूगर ने फ़र्रुख़ से आकर कहा कि आज कईदिनों से दाई हमज़ा की सेनापर जादू कररही है लेकिन कुछ मालूम नहीं होता फ़र्रुख़ ने कहा कि कल शामतक जादू तैयार होगा तब तमाशा देखना हमज़ा की सेनामें एक मनुष्य भी न बचेगा यह सुनकर अमरू ने प्रातःकाल अमीर से आकर कहा अमीर ने कहा कि कोई ऐसी युक्ति करो कि उसीकी सेनापर जादू पड़े आख़िरकार अमरू ने जाकर उस दाई को मारकर जादूगरोंकी सेनापर जादू फेंककर नाशकरदिया सब ख़ेमे और असबाब जला दिया कोई वस्तु रहने न पाई तत्पश्चात् थोड़े दिनोंके बाद अमीर ने गावलंगी से पूछा कि अब कोई और स्थान बताओ उसने कहा कि अब सब पापी मारेगये अब थोड़े दिनों तक चलकर ख़्वाम में आराम कीजिये आख़िरकार अमीर वहां से चलकर ख़्वाम में आये गावलंगी ने कई दिनों तक मेहमानदारी की उसके पश्चात् एकदिन अमीर यारोंसमेत शिकार खेलने गये तो एक हरिन बदीउज़्ज़मां के आगे से भागा उसने पीछा किया भागते २ वह एक हौज़ में कूदपड़ा बदीउज़्ज़मां भी कूदपड़ा उसके पीछे अमीर भी यारों समेत कूदे उसमें जाते अमीरने देखा कि एक बड़ा भारी मैदान है और न कहीं हरिन है न बदीउज़्ज़मां अमीर दुःखित होकर कहने लगे कि ७१ मनुष्य थे जिसमें से एक और गया अब सत्तर हैं यारों ने कहा कि यह ईश्वर की रचना है इसमें सिवाय चुप रहने के कुछ चारा नहीं है ॥

अमीर का मक्के की तरफ़ जाना और हज़रत सालिम से मिलकरएक स्त्री के हाथ से अशक़र समेत माराजाना और वृत्तान्त का पूराहोना ॥

लेखकलोग इस अमृतरूपी वृत्तान्त को यों वर्णन करते हैं कि जब अमीर का चित्त स्थिरहुआ तो गावलंगी ने कहा कि आपने कहथा कि तुमको मक्के में लेचलकर पैग़म्बर अलेहुस्सालिम से मुलाक़ात करावेंगे सो अब चलिये तब अमीर सब को साथ लेकर मक्के की तरफ़ चले कजावक़दर में जब पहुँचे तो सरपाल पुत्र दाला अमीर को यारों समेत अगुवानी मिलकर अपने नगरमें लेजाकर कई दिनों तक मेहमानदारी की उसी समय में सरपाल के पिता का वैकुण्ठबास हुआ तब अमीर ने उसकी सब क्रियाकर्म करवाकर सरपाल को समझाकर तख़्तपर बैठाकर मक्के की तरफ़ चले थोड़े दिनोंमें चलकर मक्के में पहुँचे गावलंगी और सब यार पैग़म्बर के क़दमों पर गिरकर मुसल्मानहुए तत्पश्चात् एकदिन सब बैठे थे कि एक दूसने

आकर कहा कि मिश्र, रूम और शाम के बादशाह बड़ी सेना लेकर युद्ध करने की इच्छा से आये हैं तब हज़रत ने हमज़ा को सेना समेत कोहबुकबलीस पर भेजा तत्पश्चात् आप भी गये शत्रु ने सेना की परेट जमाई अमीर ने गावलंगी को उन के सामने भेजा तब एक बड़े पहलवान ने आकर गावलंगी को ललकारा गावलंगी ने उसको पृथ्वी से उठाकर घुमाकर देमारा तो वह मरगया इसीप्रकार से कई बीर गावलंगी के हाथ से मारेगये तब शत्रुकी सेना ऐसी लज्जित हुई कि कोई गावलंगी के सामने न आया आख़िर शहज़ाद हिन्द ने आकर गावलंगी का सामना करके समाप्त किया अमीर उसके लिये दुःखित होकर आपही उसके सामने गया और गावलंगी के बदले में उसको भी मारा और उसकी सेना में व्याघ्रके समान धस-कर सेनाका नाश करदिया और जो बचे वे भागगये तब पैग़म्बर अमीर को अति प्रसन्नता के साथ लेकर मक्के में आये लेखक लिखता है कि पुरहिन्दीकी माता अपने पुत्र का मरना सुनकर शाहनशाह हिन्दरूम, शाम, चीन, जबसजंगबार और तुर-किस्तान को बड़ीभारी सेना समेत मदायन में आकर हरमुज़ को साथ लेकर मक्के में आई तब जनाब रिसालत पनाह सलीमने सुनकर कहा कि हमारा चचा हमज़ा इन सेनाओं के लिये अकेला बहुत है यह कहना जनाब अहदियत को बुरा मालूम हुआ जब जाकर शत्रु के सामने खड़ेहुए तो हरमुज़ ने कहा कि इनसे एक २ ल-ड़नेमें न जीतोगे एकबारगी घेरकर मारलो यह कहते हरमुज़ की सेना एकबारगी मुसल्मानी सेनापर टूटपड़ी तो उसी में लन्धौर साद पोता हमज़ा आदी अक़रब आदि सरदार मारे गये और एकदांत जनाब रसालतपनाह का टूटगया यह सब ख़बर अमरूने जाकर अमीरको दी अमीर सुनतेही घोड़ेपर सवारहुए और शत्रुओं को मारते २ हरमुज़तक पहुँचे वह हमज़ा को देखकर तख़्तपर से भागा अमीर ने उसका पीछा किया मार्ग में हज़ारों को मारते हुए चार कोस तक चले गये जिस समय लौटे मक्के की तरफ़ आते थे मार्ग में हिन्दमारपुर ने जो छिपी बैठी थी निकलकर एक तलवार अशकर के मारी कि चारों पैर कटगये अमीर अशकर समेत पृथ्वीपर गिरे उसने फिर कर एक तलवार से अमीर का शिर अलगकरदिया और पेट फाड़कर कलेजा निकालकर खागई और लोथके सत्तर ७० भाग करदिये तत्प-श्चात् जब उसको होश आया कि करीशा हमज़ा की बेटी जब अपने पिताके मरने की ख़बर सुनेगी तो वह सब देवों की सेना साथ लेकर आवेगी तो मैं क्या उसको उत्तर दूंगी यह बिचारके हज़रत सालिम के समीप जाकर उनके पैरों पर गिरके मुसल्मान होकर अपराध को क्षमा कराके हज़रत को अमीर की लाश के स्थानपर लाई हज़रत सालिम ने अमीर के शरीर के टुकड़ों को इकट्ठा करके सबपर पृथक् २ नेमाज़ पढ़ी और उस समय अंगूठों के बल हज़रत खड़े थे लोथ गाड़ने के पीछे लोगों ने हज़रत से पूछा कि आप नेमाज़ पढ़ती समय अंगूठों के बलसे क्यों खड़े थे उन्होंने कहा कि फ़रिश्तोंके मारे खड़े होने की जगह न थी और [illegible]

ने हर टुकड़े पर सत्तर बार निमाज़ पढ़कर लोगों के सामने अमीर की अतिप्रतिष्ठा की आख़िर को जब हमज़ा को गाड़कर हज़रत और हिंदा हज़रत सालिम के पास आये तो उन्हों ने हिन्दा की तरफ़ से मुख फेरलिया तब उसने कहा कि आप आकाशपर तो देखिये हज़रत ने शिर उठाकर देखा तो अमीर तख़्तपर बहिश्त में बैठे हैं और गुलाम सब हाथ जोड़े खड़े हैं तब तो हज़रत सालिम ने ईश्वर का धन्यबाद किया तत्पश्चात् करीशा सेना समेत हज़रत सालिम के पास आकर अपने पिता के मारनेवाले को बुलाया हज़रत सालिम ने अमीर का तख़्त बहिश्त में दिखलाकर कहा कि आपके पिता जो इसके हाथ से न मारेजाते तो काहे को इस प्रभुत्व को प्राप्त होते इससे हमारे कहने से अब तुम बदला न लो लेखक लिखता है कि उसी समयमें १६ फ़रिश्तों ने आकर करीशा को समुझाया था आख़िरकार हज़रत सालिम की आज्ञानुसार करीशा अपने देश को सेना समेत पलट गई ॥

अमीर के शरीर के ७० भाग होने और हज़रत के दांत टूटने के दो कारण लोग कहते हैं ॥

१—जब कि हज़रत ने बेकलमा पढ़े कहाथा कि इस सेना के लिये मेरा चचा हमज़ा अकेला बहुत है ॥

२—एक रात्रिको आशिपरजा अपने कपड़े सीरहीथी हज़रत उस तरफ़ निकले संयोग से उसकी सुई से तागा निकलगया हज़रत हँसपड़े उनके दांतों की चमक से आशिपरजाने सुई में तागा डालदिया हज़रत ने कहा कि मेरे दांत ऐसे हैं कि उनकी चमक से तुमने सुई में तागा डालदिया यह बात हज़रत को नापसन्द आई इससे दांत उन हज़रत के टूटगये उसी लड़ाई में हज़रत अमीर के पैर में तीर टूटकर रहगयाथा अनेक प्रकार से जर्राहोंने निकाला लेकिन निकल नहीं सका जिस समय निमाज़ पढ़कर ध्यान करने लगे हज़रत सालिम ने पहलवानों से कहा कि अलीरज़ा के पैर में से तीर निकाल लो पहलवानों ने जाकर निकाल लिया लेकिन हज़रत को कुछ मालूम न हुआ निमाज़ पढ़ने के बाद रुधिर देखकर पूछा कि यह रुधिर कैसा है सेवकों ने सब हाल कहकर पूछा कि क्या आपको नहीं मालूम हज़रत ने सौगन्द खाकर कहा कि मुझे सत्य नहीं मालूम कि यह तीर कब लगा है ॥

ईश्वर इस लेखक का प्रभुत्व संसार में बढ़ावे कभी किसी का आश्रित न करे और अपनी अनुग्रह से सत्य असत्य का अपराध क्षमा करके अपनी सेवकाई में संयुक्त रक्खे ॥

इति चतुर्थभागः समाप्तः ॥

———*———

अद्भुत सृष्टि चरित्र

अर्थात्

अजायबुल्मख़्लूक़ात

का नागरी उल्था

जिसमें

पृथ्वी पर जितने अपूर्व वृक्ष व पशु पक्षी जीव जन्तु हैं उन सबका वृत्तान्त और आकाशके ग्रहोंका भी वर्णन चित्रोंसहित वर्णित है

जोकि

मुन्शी नवलकिशोर मालिक मतबाकी आज्ञानुसारफ़ारसी से उर्दूमें तर्जुमा किया गया उसीको उक्त मुन्शीसाहब की अनुमति से उर्दूसे जीवारामजाट ने हिन्दीमें प्रारम्भ किया और पण्डित प्यारेलाल बैकुण्ठनिवासीने पूराकिया

पहिली बार

सम्पूर्णविद्याभिलाषियों के अनुरागार्थ

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छापागया

अगस्त सन् १८८६ ई०

अजायबुलमख़लूक़ातकी तसवीरोंका सूचीपत्र ॥

नम्बरशुमारमुसलसल किताबफ़ारसीहिल	हिन्दुसासफ़ा	नम्बरकि़ताबहिंदी	बयान
२७७	३८२	२७३	कुमात नाम घासकावर्णन ॥
२७८	३८२	२७४	लबलाब वृक्षका बर्णन ॥
२७९	३८३	२७५	लसानुलहमलघासका वर्णन ॥
२८०	३८३	२७६	लसानुलअसाफीर अर्थात् सरू वृक्ष के फलका वर्णन ॥
२८१	३८३	२७७	लसफ अर्थात् कबर घासका वर्णन ॥
२८२	३८४	२७८	लफ़ाख़ अर्थात् शाहतरज घासका वर्णन ॥
२८३	३८४	२७९	लोबिया का वर्णन ॥
२८४	३८५	२८०	लोक़ अर्थात् फीलगोश का वर्णन ॥
२८५	३८५	२८१	नीलोफरका वर्णन ॥
२८६	३८७	२८२	मासअर्थातउड़दका वर्णन ॥
२८७	३८६	२८३	माजरयून घासका वर्णन ॥
२८८	३८६	२८४	माहूदाना अर्थात् हबुलमलूक वृक्षका वर्णन ॥
२८९	३८७	२८५	माहोज़ज घासका वर्णन ॥
२९०	३८७	२८६	अरज़जोश घासका वर्णन ॥
२९१	३८७	२८७	नारदेन अर्थात् बालछड़वृक्ष का वर्णन ॥
२९२	३८८	२८८	नानख़्वाह अर्थात् अजवायन वृक्षका वर्णन ॥
२९३	३८८	२८९	नरजिस अर्थात् नरगिसवृक्ष का वर्णन ॥
२९४	३८९	२९०	नसरीं अर्थात् सेवती वृक्ष का वर्णन ॥
२९५	३८९	२९१	नाअ़नाअ़ अर्थात् पोदीना का वर्णन ॥
२९६	३९०	२९२	हलियून घासका वर्णन ॥
२९७	३९०	२९३	हिन्दबाफारसी अर्थात् कासनी का वर्णन ॥
२९८	३९१	२९४	दरस वृक्षका वर्णन ॥
२९९	३९१	२९५	यकतैनअर्थात्कद्दूकावर्णन ॥
३००	४६७	२९६	घोड़ेका वर्णन ॥
३०१	४६८	२९७	बंगलअर्थात् खच्चरका वर्णन ॥
३०२	४७०	२९८	हुमार अर्थात् कालेगधे का वर्णन ॥
३०३	४७१	२९९	हुमारुलवहसी अर्थात् जंगली गधेका वर्णन ॥
३०४	४७४	३००	उलनोमनामपशुओंकावर्णन ॥
३०५	४७७	३०१	बक़र अर्थात् बैलका बर्णन ॥
३०६	४७८	३०२	बक़रुल् वहश अर्थात् बारहसिंगा का वर्णन ॥
३०७	४७९	३०३	जामूसअर्थात् भैंसेकावर्णन ॥
३०८	४७३	३०४	जराफा अर्थात् शुतरगावपलंगजीवका वर्णन ॥
३०९	४८०	३०५	ज़ान अर्थात्भेंड़का वर्णन ॥
३१०	४८२	३०६	मअ़ज़अर्थात्बकरीकावर्णन ॥
३११	४८३	३०७	ज़िब्बीअर्थात्हिरणकावर्णन ॥
३१२	४८५	३०८	येल अर्थात् पहाड़ीबकरी का वर्णन ॥
३१३	४८५	३०९	अलसबाअ़ अर्थात् जंगलीदुःख देनेवाले जानवरका वर्णन ॥
३१४	४८६	३१०	इबनआवे अर्थात् सियारका वर्णन ॥
३१५	४८०	३११	इबन अरस अर्थात् नेवलेका वर्णन ॥
३१६	४८८	३१२	अरम्बअर्थात्खरगोशकावर्णन ॥
३१७	४९१	३१३	असद अर्थात् शेरका वर्णन ॥
३१८	४९१	३१४	बबरका वर्णन ॥
३१९	४९३	३१५	सालिब अर्थात् लोमड़ी का वर्णन ॥
३२०	४९९	३१६	हरीशा नाम जीवका वर्णन ॥

नम्बरशुमारमुसलसल किताबफ़ारसीकृत	हिन्दुसासफ़ा	नम्बरकिताबहिंदी	बयान
३६४	५३०	३२०	ज़मफ़रव़ अर्थात् जमक पच्ची का वर्णन ॥
३६५	५३०	३२१	समानी अर्थात् समानापच्ची का वर्णन ॥
३६६	५३०	३२२	सन्कर अर्थात् शिकारी मुर्गा का वर्णन ॥
३६७	५३१	३२३	शाहीननामपच्चीका वर्णन ॥
३६८	५३१	३२४	शफ़ीननाम पच्चीका वर्णन ॥
३६९	५३१	३२५	शक़राकनामपच्ची का वर्णन
३७०	५३१	३२६	साफर नाम पच्चीका वर्णन ॥
३७१	५३२	३२७	सक़र अर्थात् चर्ख़नाम पच्ची का वर्णन ॥
३७२	५३२	३२८	तायरुलबहर नाम दरियाई पच्ची का वर्णन ॥
३७३	५३३	३२९	ताऊस अर्थात् मोर पच्ची का वर्णन ॥
३७४	५३३	३३०	तैहज अर्थात् तेह पच्ची का वर्णन ॥
३७५	५३३	३३१	अस्फूर अर्थात् गोरय्या पच्ची का वर्णन ॥
३७६	५३४	३३२	उक़ाब पच्ची का वर्णन ॥
३७७	५३६	३३३	अक़अक़ नाम एक प्रकार के कव्वे का वर्णन ॥
३७८	५३७	३३४	उनका अर्थात् सीमुर्ग़ नाम पच्ची का वर्णन ॥
३७९	५३८	३३५	ग़राब अर्थात् एक प्रकार के कव्वे का वर्णन ॥
३८०	५३८	३३६	ग़ज़ीबक़ नामपच्चीका वर्णन ॥
३८१	५३९	३३७	गव्वाज़ नाम पच्चीका वर्णन ॥
३८२	५३९	३३८	फ़ाख़्तानाम पच्चीका वर्णन ॥
३८३	५४०	३३९	क़ीह अर्थात् चकोर पच्ची का वर्णन ॥
३८४	५४०	३४०	क़ुबरा अर्थात् हुद हुद नाम पच्ची का वर्णन ॥
३८५	५४१	३४१	क़ता अर्थात् लवानाम पच्ची का वर्णन ॥
३८६	५४१	३४२	कुमरी अर्थात् टोटरू पच्ची का वर्णन ॥
३८७	५४२	३४३	कोक़नस अरज नाम पच्ची का वर्णन ॥
३८८	५४२	३४४	करकीअर्थात्कोंचपच्चीकावर्णन
३८९	५४२	३४५	करवाननाम पच्चीका वर्णन ॥
३९०	५४३	३४६	लक़लक़ नाम पच्ची का वर्णन ॥
३९१	५४३	३४७	मालिकुलहज़ीं अर्थात् बगला का वर्णन ॥
३९२	५४३	३४८	मका नाम पच्ची का वर्णन ॥
३९३	५४४	३४९	नसर अर्थात् करगस नाम पच्ची का वर्णन ॥
३९४	५४५	३५०	लगामा अर्थात् शुतरमुर्ग़ का वर्णन ॥
३९५	५४६	३५१	हुदहुदनाम पच्चीका वर्णन ॥
३९६	५४७	३५२	वतवात अर्थात् अबाबील नाम पच्ची का वर्णन ॥
३९७	५४७	३५३	यराग़ा अर्थात् पटबीजना नाम पच्ची का वर्णन ॥
३९८	५५१	३५४	साँप का वर्णन ॥
३९९	५५३	३५५	बरग़ोस अर्थात्कालेपिस्सू का वर्णन ॥
४००	५५४	३५६	जरादअर्थात्टिड्डीकावर्णन ॥
४०१	५५४	३५७	हरबा अर्थात् गिरगिट का वर्णन ॥
४०२	५५५	३५८	हरक़ूसनाम कीड़ेका वर्णन ॥
४०३	५५५	३५९	हलज़ूनअर्थात् शंखनामकीड़े का वर्णन ॥

नम्बरशुमार मुसलसल किताबफ़ारसीहिन्दुसासफ़ा	नम्बरकिताबहिन्दी	बयान
४४३ ५८५	३६८	मनुष्य सदृश दो मुखवाले जीवों का वर्णन॥
४४४ ५८५	३६६	दो मुख और बहुत पैरवाले मनुष्य समान जीवों का वर्णन॥
४४५ ५८५	४००	शिर मनुष्य के और सब शरीर सर्पोंके समान जीवोंका वर्णन॥
४४६ ५८५	४०१	मुंह और आंखें हृदय पर ऐसे जीवोंका वर्णन॥
४४७ ५८५	४०२	आधा शिर एक हाथ एकपैर वाले नसनास नामक जाति के मनुष्यों का वर्णन॥
४४८ ५८५	४०३	मुख मनुष्य के सदृश और पीठ कछुवे की तरह के जीवों का वर्णन॥
४४६ ५८५	४०४	ज़राफ़े अर्थात् ऊंटके सदृश जीवका वर्णन॥
४५० ५८६	४०५	खच्चर का वर्णन॥
४५१ ५८६	४०६	ऊंट और ताज़ीघोड़े से उत्पन्न जीवोंका वर्णन॥
४५२ ५८६	४०७	मनुष्य और रीछके मैथुन से उत्पन्न जीवोंका वर्णन॥
४५३ ५८६	४०८	भेड़िये और हुंडारसे उत्पन्न जीवोंका वर्णन॥
४५४ ५८६	४०६	भेड़िये और कुत्तेके मैथुन से उत्पन्न जीवोंका वर्णन॥
४५५ ५८६	४१०	पालू और पहाड़ी कबूतरको संगति से उत्पन्न जीवों का वर्णन॥
४५६ ५८७	४११	ऊककेपुच बड़े पराक्रमी ऊज का वर्णन॥
४५७ ५८८	४१२	अद्भुत बड़े डौलके समुद्र के बहेहुये मनुष्य का वर्णन॥
४५८ ५८८	४१३	पहाड़ी पन्द्रह वर्षकी उमर वाले बड़े बली नव गज के लंबे लड़केका वर्णन॥
४५६ ५८८	४१४	कमर से नीचे स्त्रीके सदृश और ऊपर का शरीर अलग दो शिर दो मुंह चार हाथ वाले जीवका वर्णन॥
४६० ५८६	४१५	मुख मनुष्य का और सब अंग कव्वेकेसदृश जीवकावर्णन॥
४६१ ५८६	४१६	दो परवाली बिचित्र लोमड़ी का वर्णन॥
४६२ ५८६	४१७	एकस्त्री के पैदाहुये दो शिर वालेलड़के का वर्णन॥
४६३ ५६०	४१८	शिरपर एकसींग वाले बिचित्र घोड़े का वर्णन॥

नोट—नम्बर किताबहिन्दी में कम्पोज करने में ग़लती हुईहै इसलिये नाज़रीन नम्बरशुमार और हिन्दुसह सफ़हसे और जिस बयान पर वह तसवीर दर्ज है उसमें सिलसिलह नम्बर मुसल्सलका सहे करलेंगे और इस तकलीफ़ को माफ़ करेंगे॥

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४
तसवीर नं० ३
तसवीर नं० ४
तसवीर नं० ५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ६
तसवीर नं० ६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ११

तसवीर नं० ७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २२
तसवीर नं० ८
तसवीर नं० ६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २३

मुतअल्लिक़े सफ़ा २३
तसवीर नं० २०
यह शकल कसूफ़ की है
तसवीर नं० २१
चन्द्र मंडल
भूमि का घेरा
सूर्य मंडल
मुतअल्लिक़े सफ़ा २४
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५
तसवीर नं० २२
तसवीर नं० २३

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८
तसवीर नं० २४
तसवीर नं० २५
मुतअल्लिक़े सफ़ा २०
तसवीर नं० २६
मुतअल्लिक़े सफ़ा २०
तुला
कन्या
सिंह
कर्क
मिथुन

तसवीर नं० १७
मुतअल्लिक़े सफ़ा २३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २४
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५

मुतअल्लिक़े सफ़ा २५
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६

तसवीर नं० २२
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६

तसवीर नं० २३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६

तसवीर नं० २४
मुतअल्लिके सफ़ा २६
तसवीर नं० २५
मुतअल्लिके सफ़ा २७
तसवीर नं० २६
मुतअल्लिके सफ़ा २७
तसवीर नं० २७
मुतअल्लिके सफ़ा २७
मुतअल्लिके सफ़ा २८
तसवीर नं० २८

मुतअल्लिक़े सफ़ा २८
तसवीर नं० २९
तसवीर नं० ३०
मुतअल्लिक़े सफ़ा २९
तसवीर नं० ३१
मुतअल्लिक़े सफ़ा २९

तसवीर नं० ३२
तसवीर नं० ३३
तसवीर नं० ३४

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३०
तसवीर नं० ३५
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३०
तसवीर नं० ३६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३१
तसवीर नं० ३७

तसवीर नं० ३८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३१
तसवीर नं० ३९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२
तसवीर नं० ४०

तसवीर नं० ४१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३२
तसवीर नं० ४२
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३२
तसवीर नं० ४३
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३३
तसवीर नं० ४४
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३३
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४
तसवीर नं० ४५

तसवीर नं० ४६
मुतअल्लिके सफ़ा ३७

मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३५
तसवीर नं० ५०
तसवीर नं० ५१
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३६
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३७
तसवीर नं० ५२

तसवीर नं० ५३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७
तसवीर नं० ५४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७
तसवीर नं० ५५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८
तसवीर नं० ५६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८

तसवीर नं० ५७
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३८
तसवीर नं० ५८
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९
तसवीर नं० ५९
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९
तसवीर नं० ६०
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९
तसवीर नं० ६१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४०
तसवीर नं० ६२

तसवीर नं० ६३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४०

तसवीर नं० ६४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४०

तसवीर नं० ६५

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४२

तसवीर नं० ६६

तसवीर नं० ६७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४३
तसवीर नं० ६८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४३
तसवीर नं० ६९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४४
तसवीर नं० ७०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४४
तसवीर नं० ७१
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४५
तसवीर नं० ७२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४५
तसवीर नं० ७३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४५

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४६
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४७
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४८
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ५०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५०
तसवीर नं० ८२
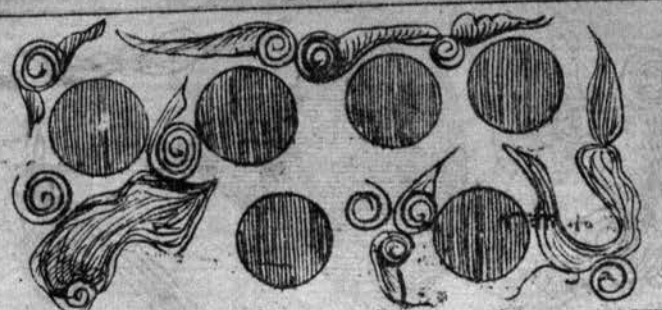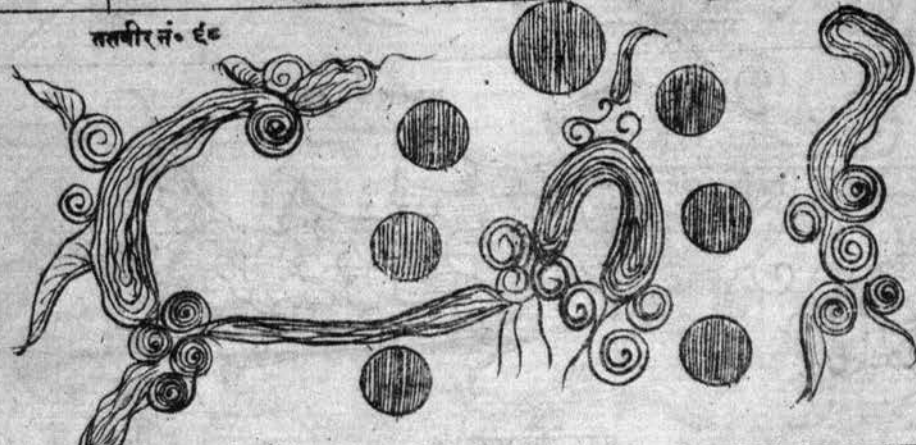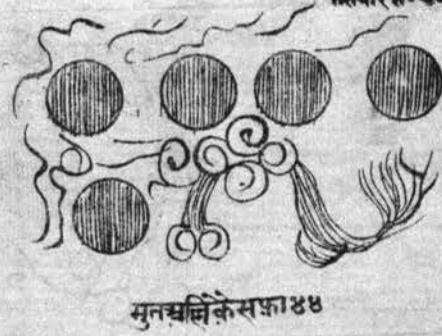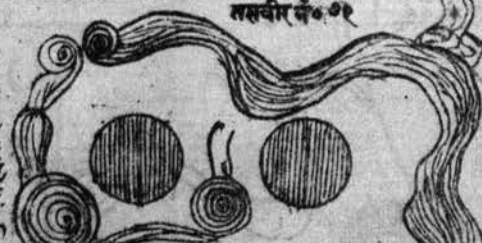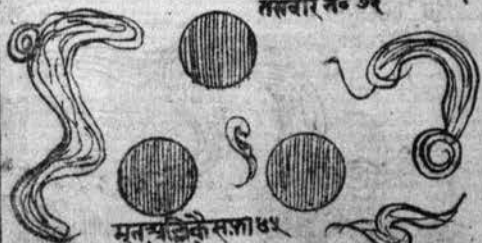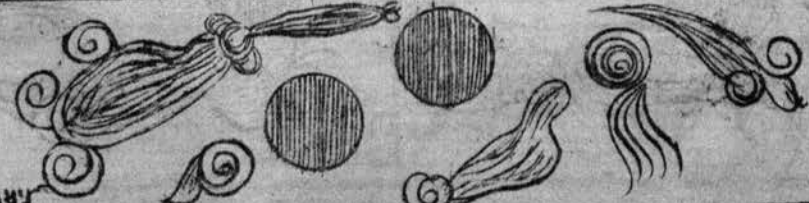
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५०
तसवीर नं० ८३

तसवीर नं० ८४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५१
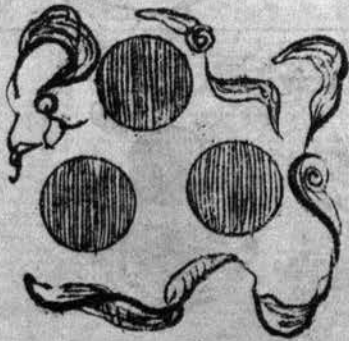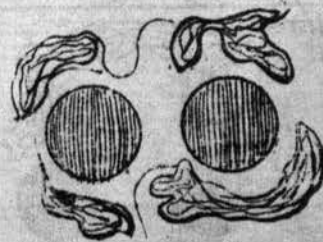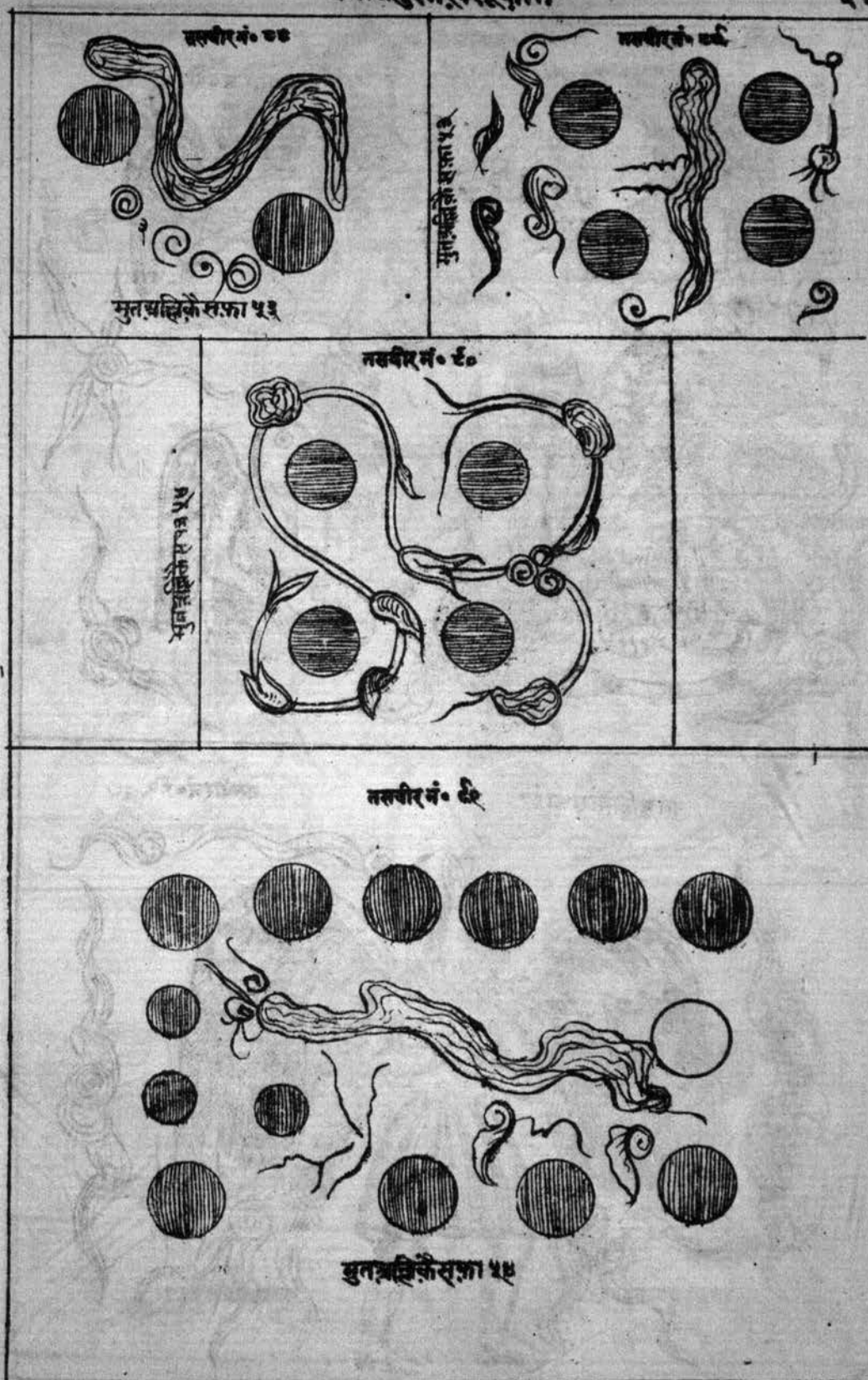
तसवीर नं० ८५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५२

तसवीर नं० ८६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५२

तसवीर नं० ८७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५२

तसवीर नं० ८८
तसवीर नं० ८९
मुतअल्लिके सफ़ा ५३
तसवीर नं० ९०
तसवीर नं० ९१
मुतअल्लिके सफ़ा ५४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५६
तसवीर नं० ६१
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ६०
तसवीर नं० ६२

तसवीर नम्बर ९७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६२
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६६
तसवीर नम्बर ९८
तसवीर नम्बर ९९
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६६

मुतअल्लिक़े सफ़ा ६६
तसवीर नम्बर १००
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७
तसवीर नम्बर १०१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७
तसवीर नम्बर १०२
तसवीर नम्बर १०३
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७
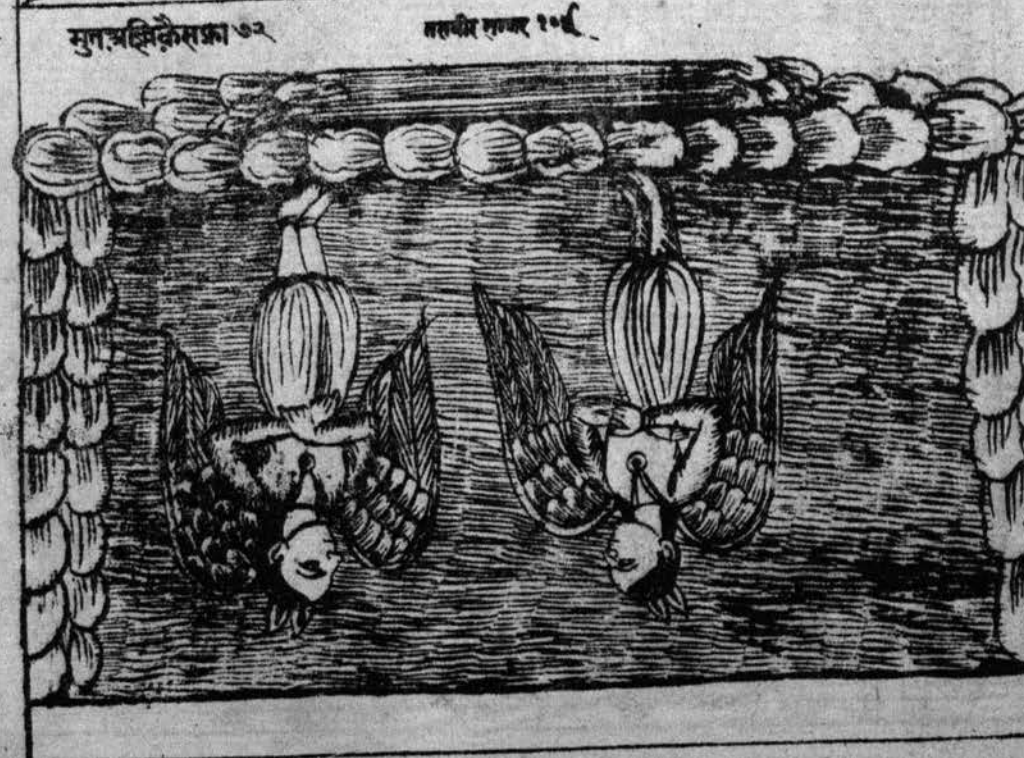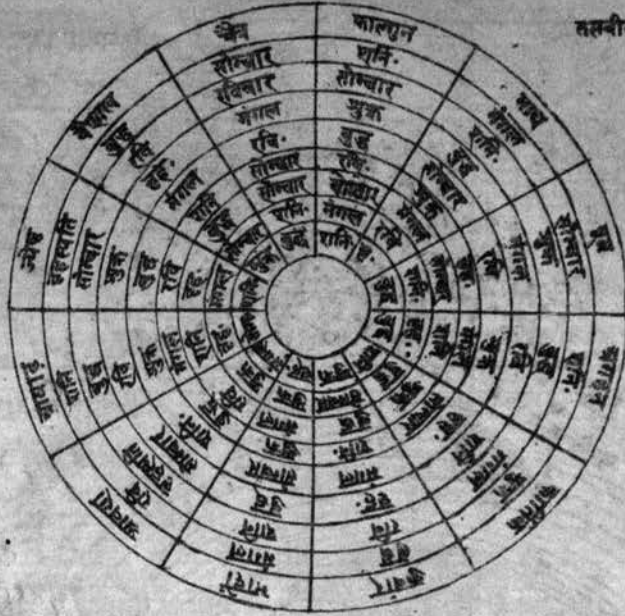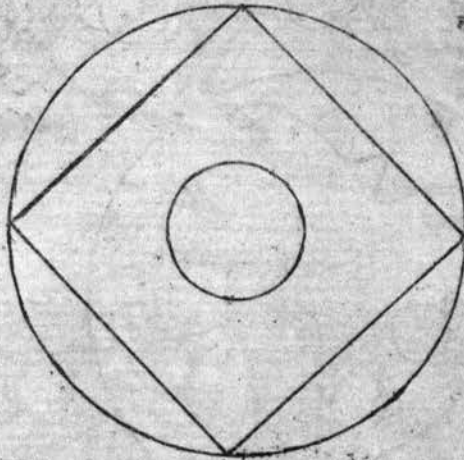
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ६७
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ६८
तसवीर नम्बर १०५
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ७२
तसवीर नम्बर १०६

तसवीर नम्बर १०७

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ८९

चैत्र
सोम्वार
रविवार
मंगल

फाल्गुन
शनि.
सोम्वार
शुक्र

तसवीर नम्बर १०८

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २२१

तसवीर नम्बर १०९

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २२९

तसवीर नम्बर ११०
तसवीर नम्बर १११
तसवीर नम्बर ११२
तसवीर नम्बर ११३

तसवीर नम्बर ११४
मुताबिक़ सफ़ा १२३
तसवीर नम्बर ११५
मुताबिक़ सफ़ा १२४
सूरत मरदुमान परदार
तसवीर नम्बर ११६
मुताबिक़ सफ़ा १२४

तसवीर नम्बर ११७
तसवीर नम्बर ११८
स्रात मैंड़ा

सूरत दरख़्त वाक़वाक़ की
तसवीर नम्बर ११९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १३६
तसवीर नम्बर १२०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १३८
तसवीर नम्बर १२१
सूरत साँप की
मुतअ़ल्लिक़ सफ़ा १३९
सूरत मरदुमान सग चेहरा
तसवीर नम्बर १२२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १४४

मुतअल्लिके सफ़ा १४७
तसवीर नम्बर १२३
तसवीर नम्बर १२४ मुतअल्लिके सफ़ा १४७
तसवीर नम्बर १२५
मुतअल्लिके सफ़ा १७५
तसवीर नम्बर १२६
मुतअल्लिके सफ़ा १४५
तसवीर नम्बर १२७
मुतअल्लिके सफ़ा १४६
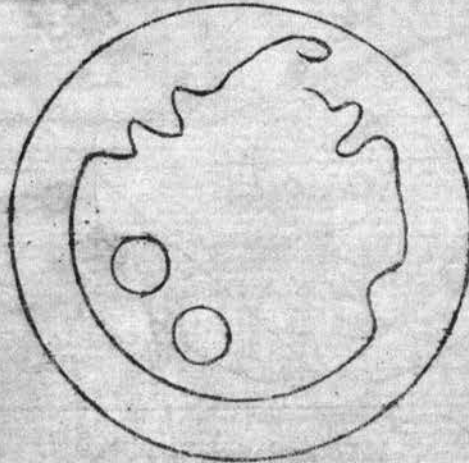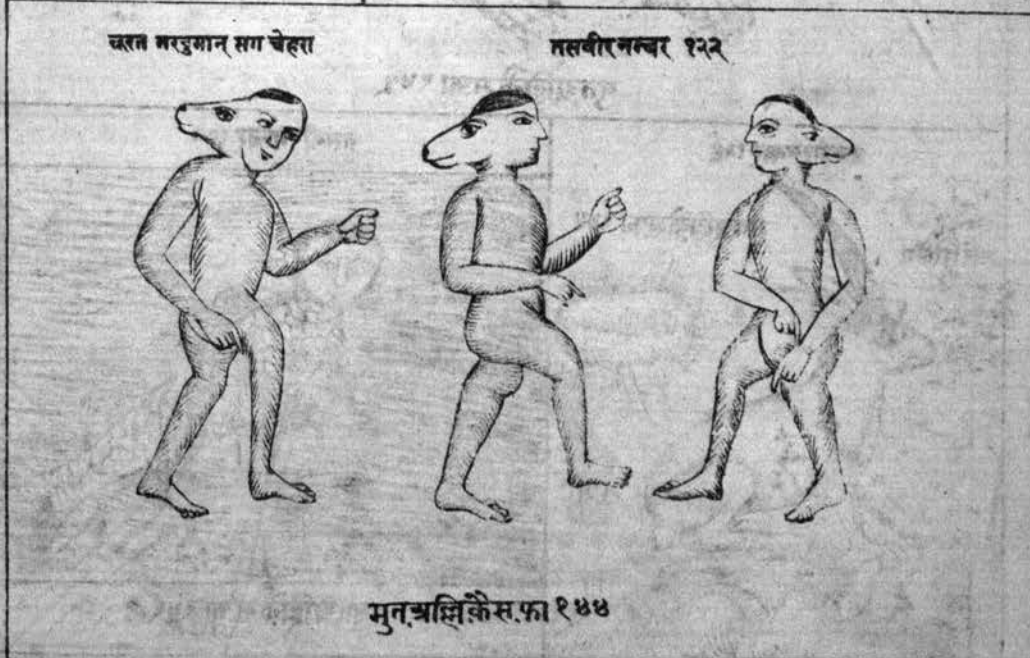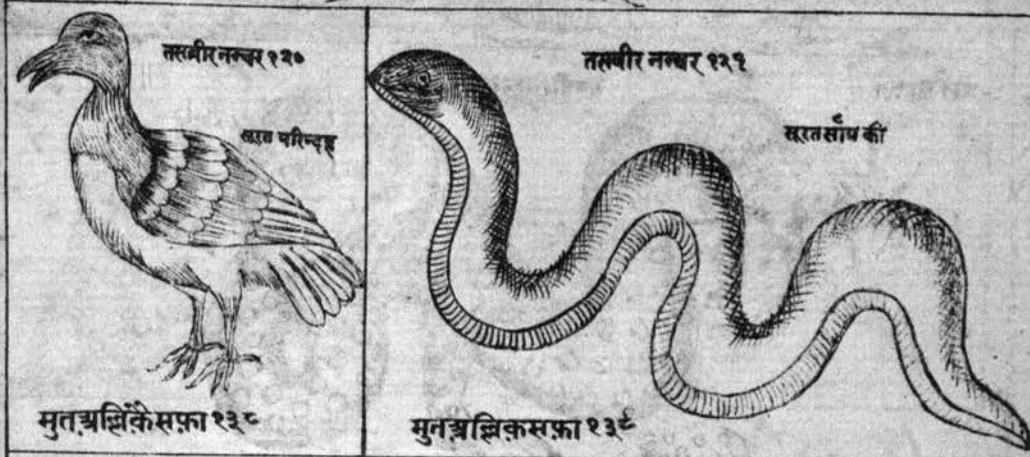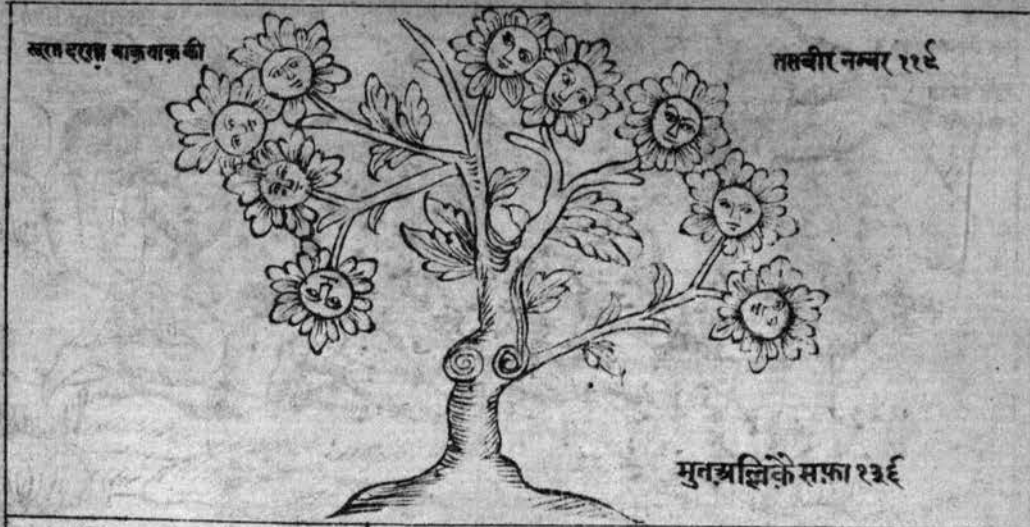
तसवीर नम्बर १२८

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५२
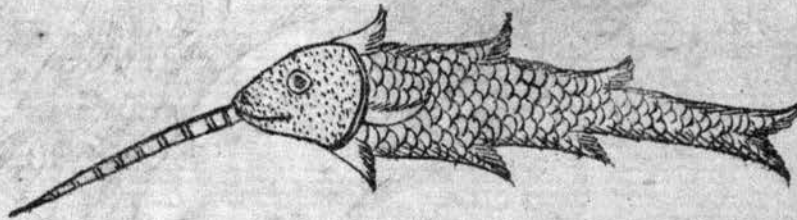
तसवीर नम्बर १२९

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५३

तसवीर नम्बर १३०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५४

तसवीर नम्बर १३१
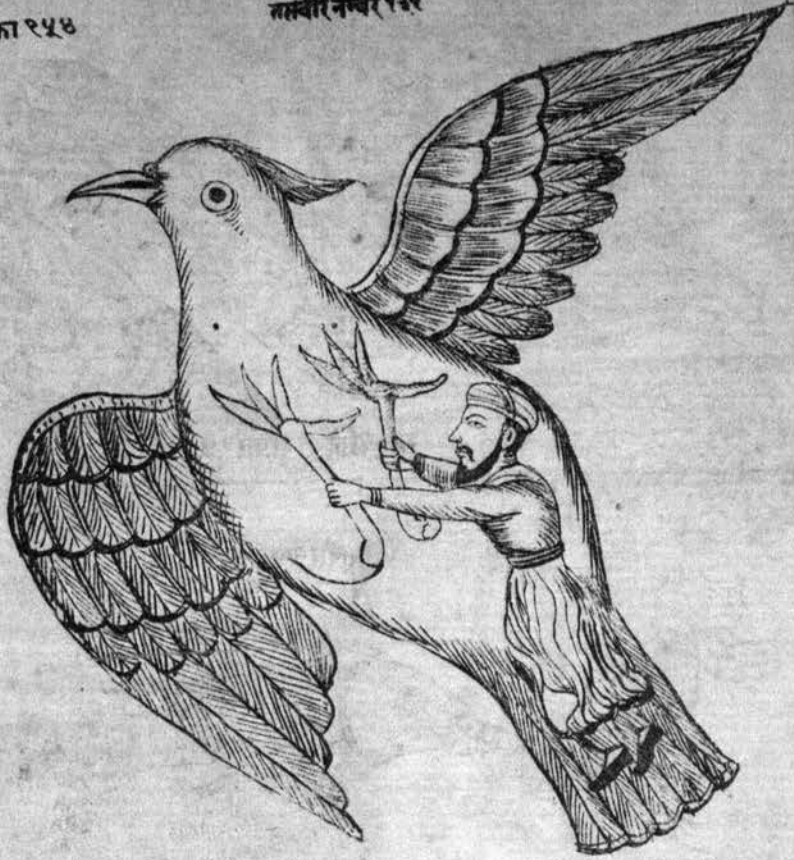
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५६

तसवीर नम्बर १३२
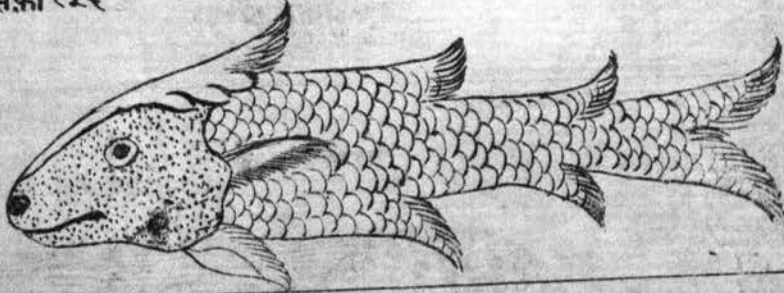
तसवीर नम्बर १३३
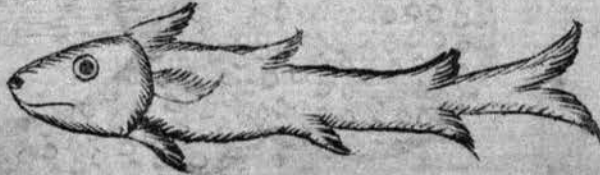
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १५७
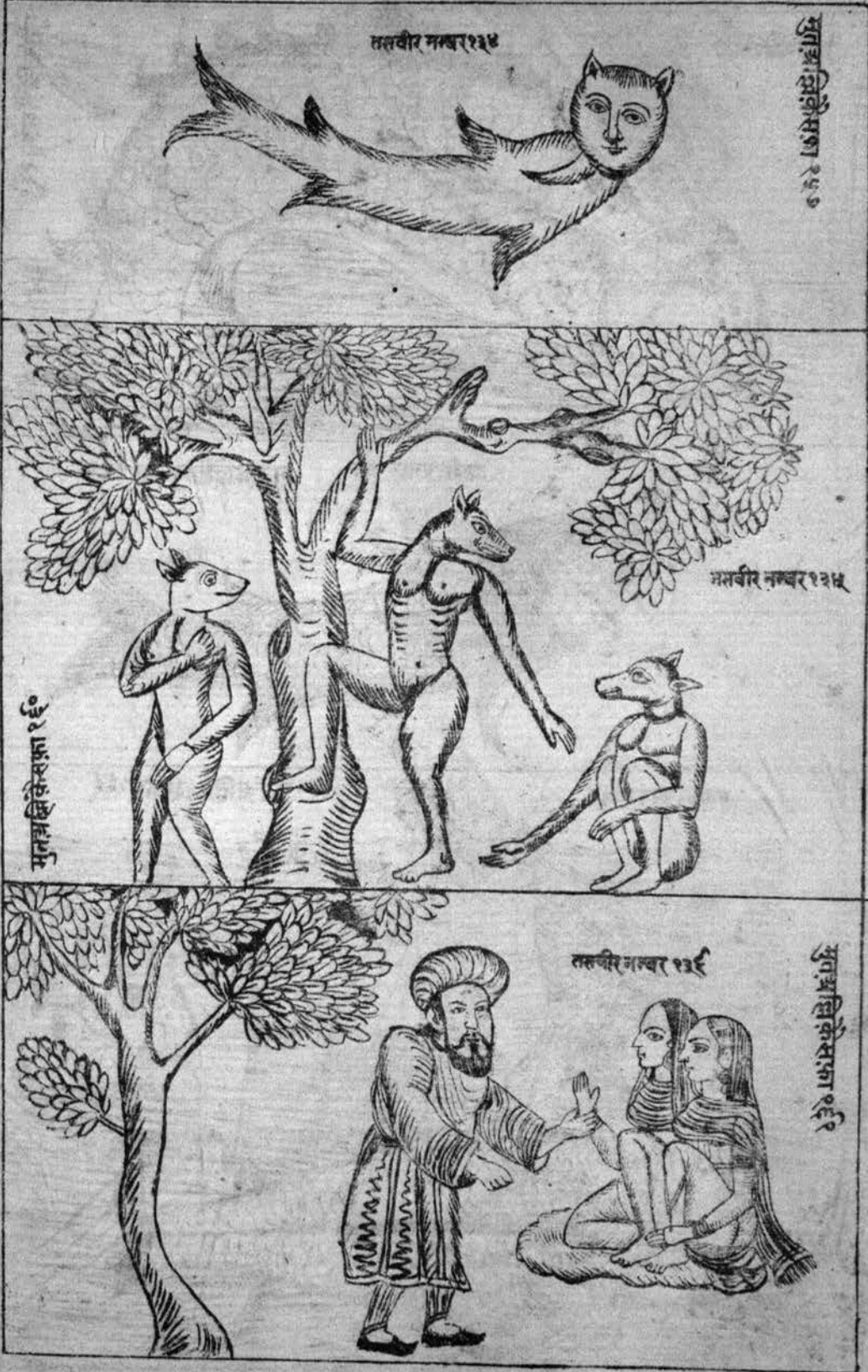
तसवीर नम्बर १३४
मुलाहिज़े किस्सा २६७
तसवीर नम्बर १३५
मुलाहिज़े किस्सा २६८
तसवीर नम्बर १३६
मुलाहिज़े किस्सा २६९
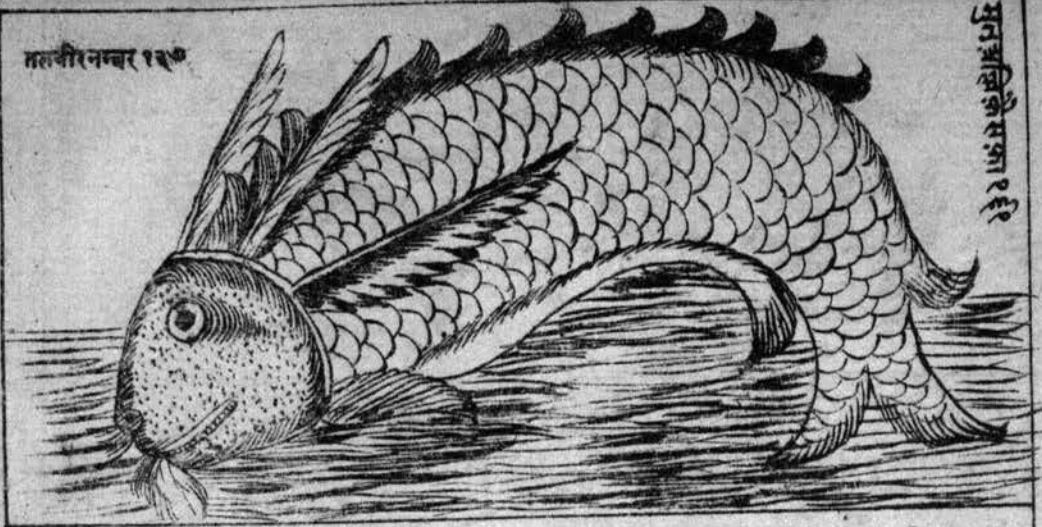
तसवीर नम्बर १२७

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६१

तसवीर नम्बर १२८ मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६२

तसवीर नम्बर १२९ मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६६
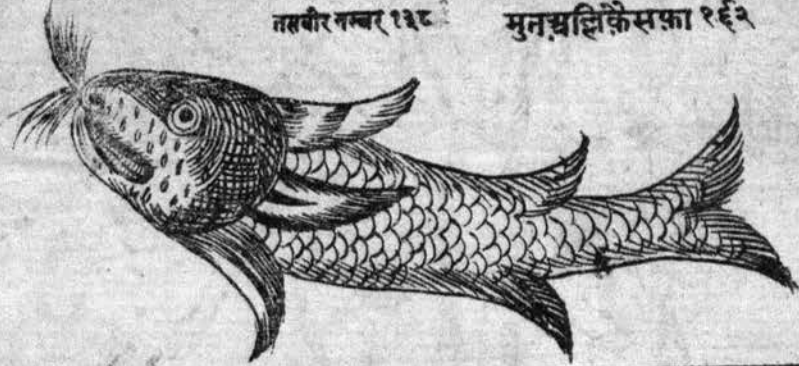
तसवीर नम्बर १३०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६०
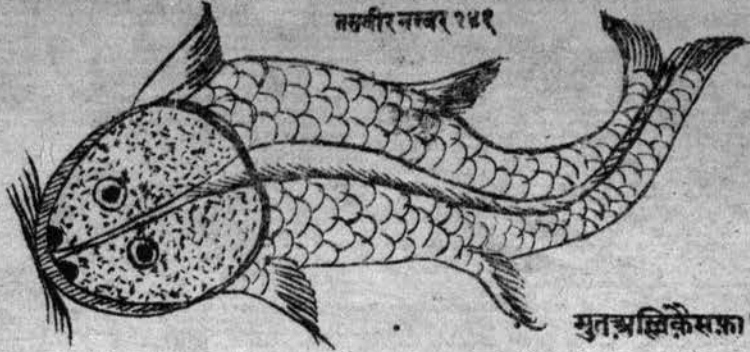
तसवीर नम्बर १४१
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १६७
तसवीर नम्बर १४२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १६८
तसवीर नम्बर १४३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १६८
तसवीर नम्बर १४४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १६८
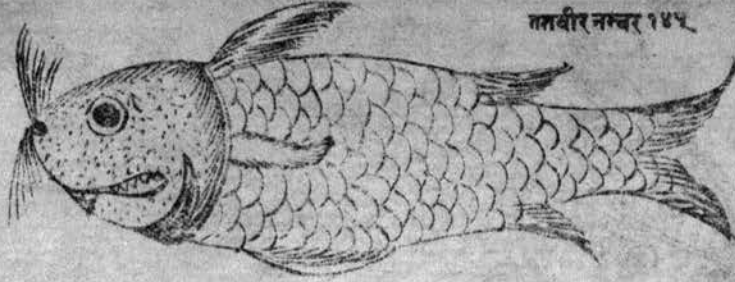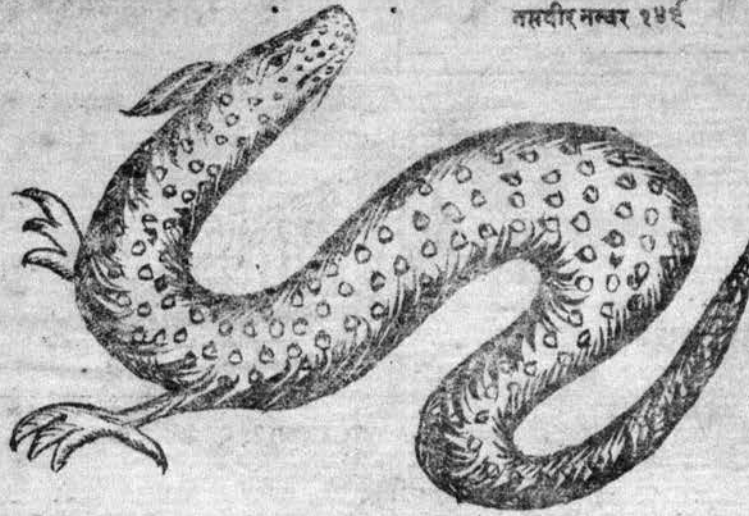
तसवीर नम्बर १४५
तसवीर नम्बर १४६
तसवीर नम्बर १४७
तसवीर नम्बर १४८

तसवीर नम्बर १४९

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७३

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७३

तसवीर नम्बर १५०

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७४

तसवीर नम्बर १५१

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २७६
तसवीर नम्बर १५२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २७७
तसवीर नम्बर १५३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २७८
तसवीर नम्बर १५४

तसवीर नम्बर १५५
मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा १७८

मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा १७८
तसवीर नम्बर १५६

मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा १७९
तसवीर नम्बर १५७
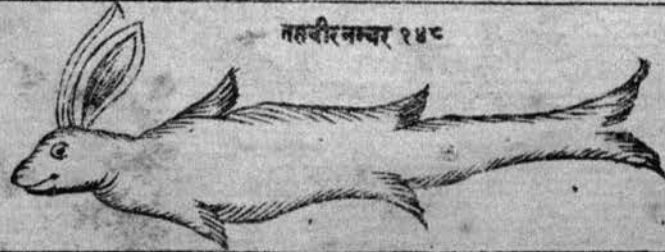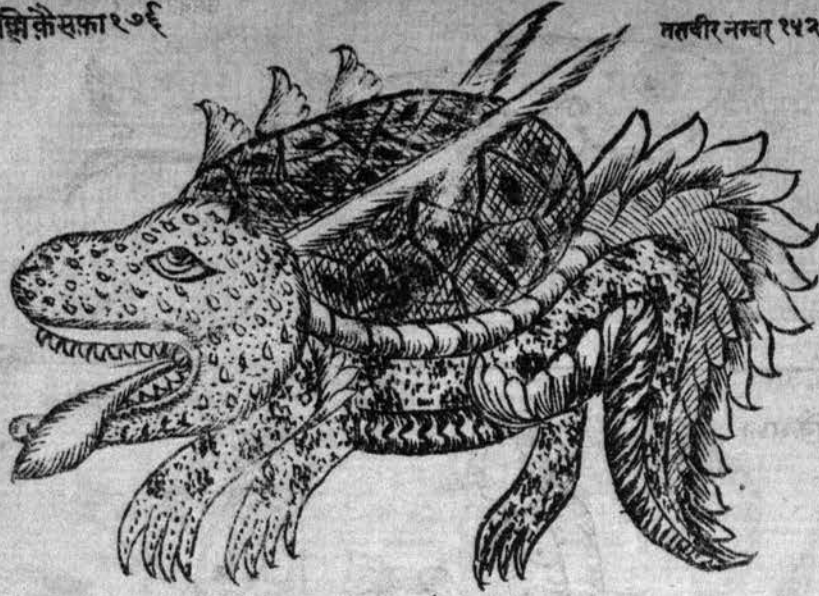
तसवीर नम्बर १५८
मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा १७९
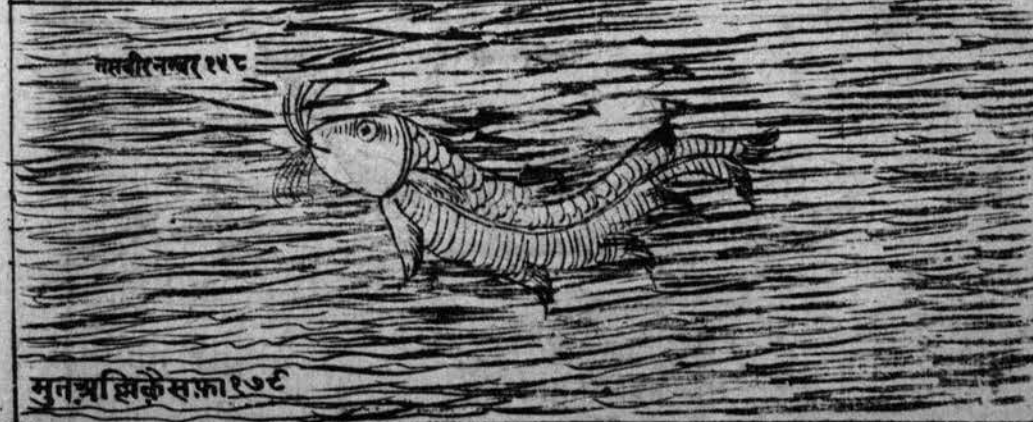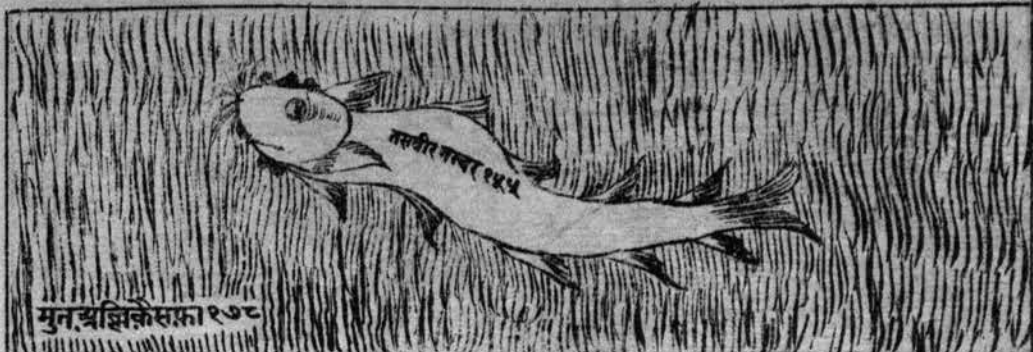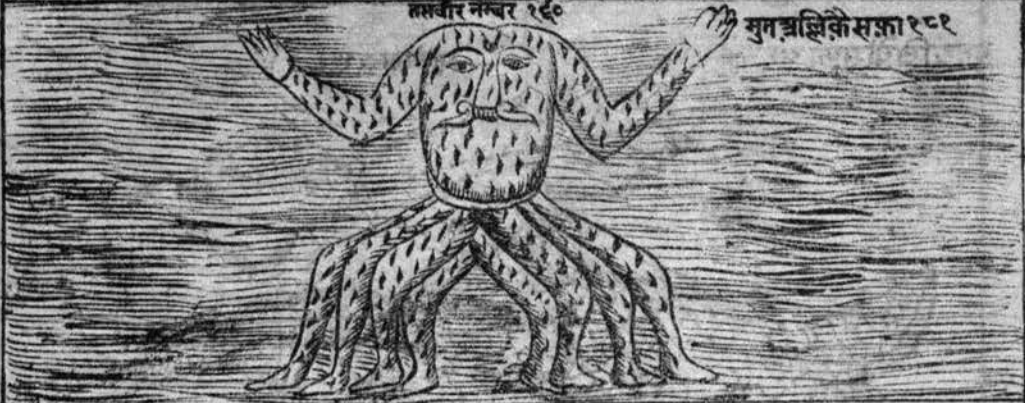
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा १८०
तसवीर नम्बर १५९
तसवीर नम्बर १६०
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा १८१
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा १८१
तसवीर नम्बर १६१
तसवीर नम्बर १६२
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा १८१
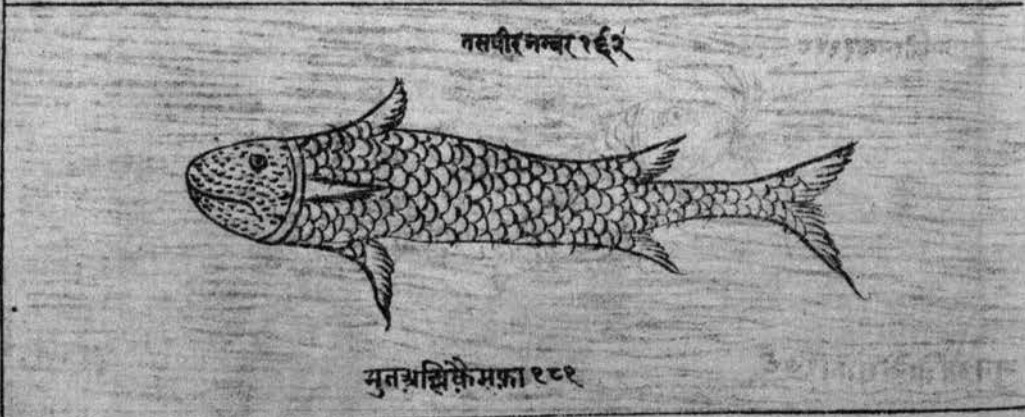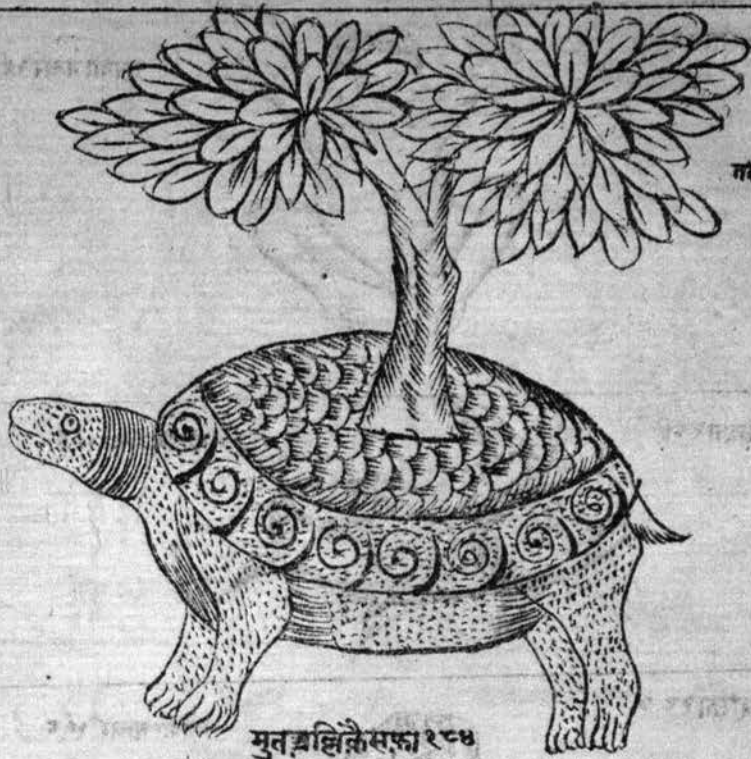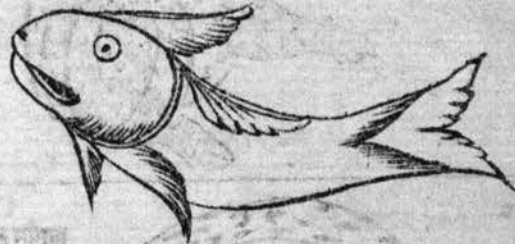
तसवीर नम्बर १६३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १८४

तसवीर नम्बर १६४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १८५

तसवीर नम्बर १६५
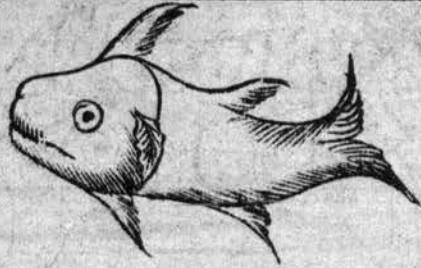
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १८५

मुतअल्लिक़ेसफ़ा १८५
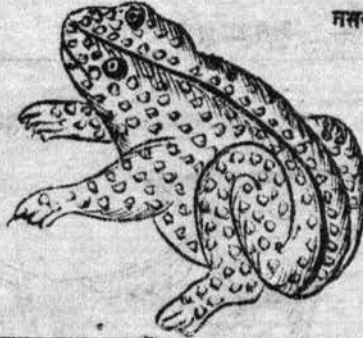
तसवीर नम्बर १६६

मुतअल्लिक़ेसफ़ा १८५

तसवीर नम्बर १६७

मुतअल्लिक़ेसफ़ा १८७
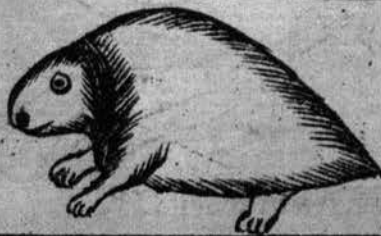
तसवीर नम्बर १६८

मुतअल्लिक़ेसफ़ा १८८

तसवीर नम्बर १६९
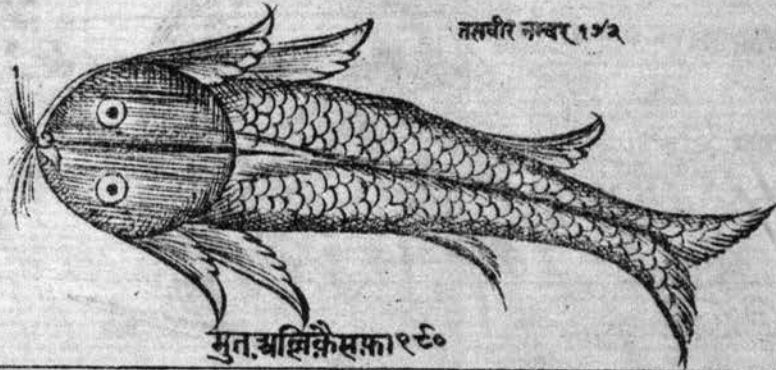
मुतअल्लिक़ेसफ़ा १८८

तसवीर नम्बर १७०
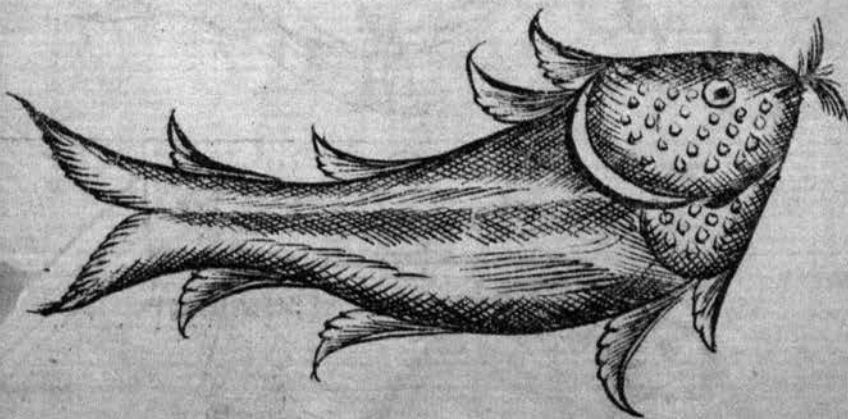
मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा १८९

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा १९०

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा १९०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६१
तसवीर नम्बर १७४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६१
तसवीर नम्बर १७५
तसवीर नम्बर १७६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६२
तसवीर नम्बर १७७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६३
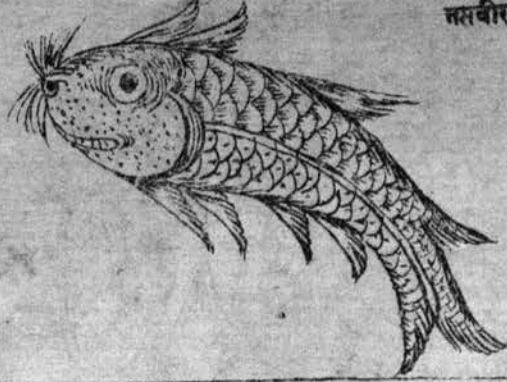
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १९३
तसवीर नम्बर १७८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २०१
तसवीर नम्बर १७९
दक्षिण
अक़ालीम अर्थात् प्रथम खण्ड
द्वितीय खण्ड
तृतीय खण्ड
चतुर्थ खण्ड
पंचम खण्ड
षष्ट खण्ड
सप्तम खण्ड
उत्तर
पश्चिम
पूर्व
तसवीर नम्बर १८०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २१०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३३६

तसवीर नम्बर १८१

तसवीर नम्बर १८२

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३३४

तसवीर नम्बर १८३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३३५

मुतअल्लिक़े सफ़ा २२६
तसवीर नम्बर १८४
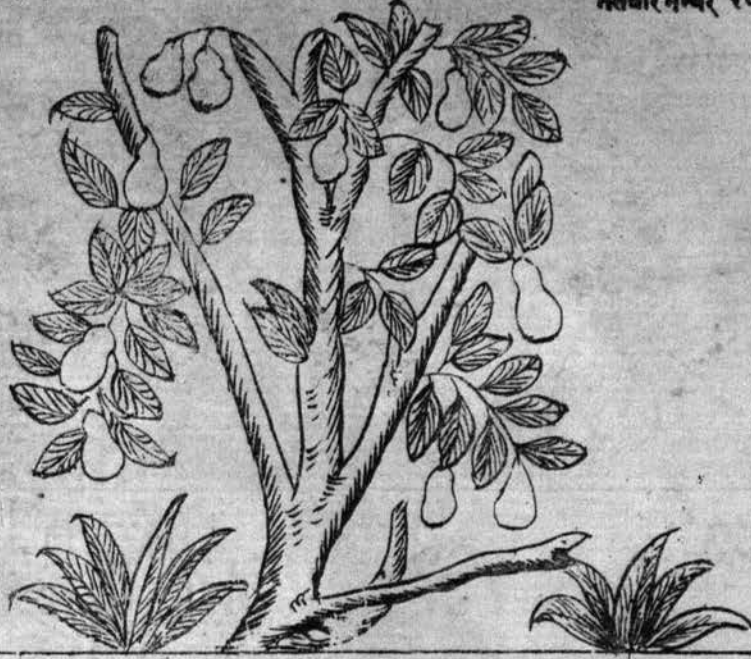
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३३६
तसवीर नम्बर १८५

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२६
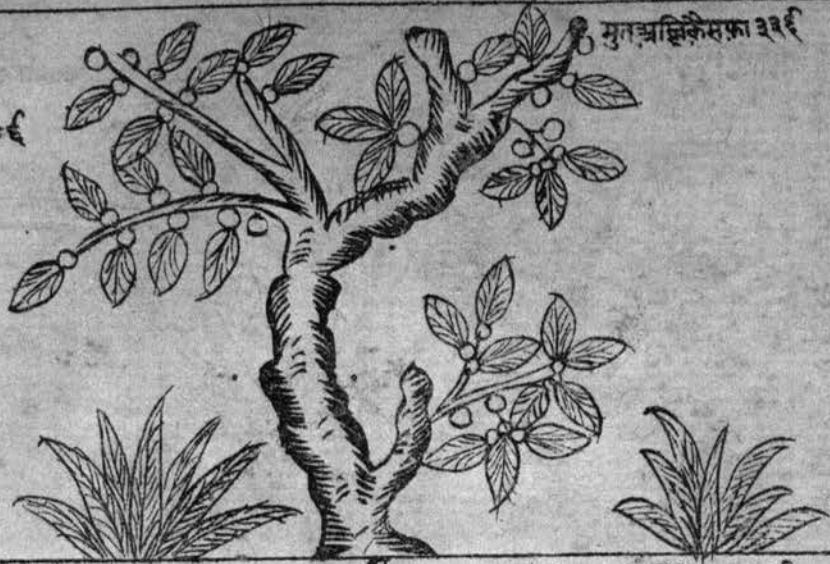
तसवीर नम्बर १०६

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२६

तसवीर नम्बर १०७

तसवीर नम्बर १०८

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२७

तसवीर नम्बर १८९
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३२७
तसवीर नम्बर १९०
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३२८
तसवीर नम्बर १९१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३२८

तसवीर नम्बर १९२
मुतअल्लिक़े सफ़ा २३८
मुतअल्लिक़े सफ़ा २३९
तसवीर नम्बर १९३
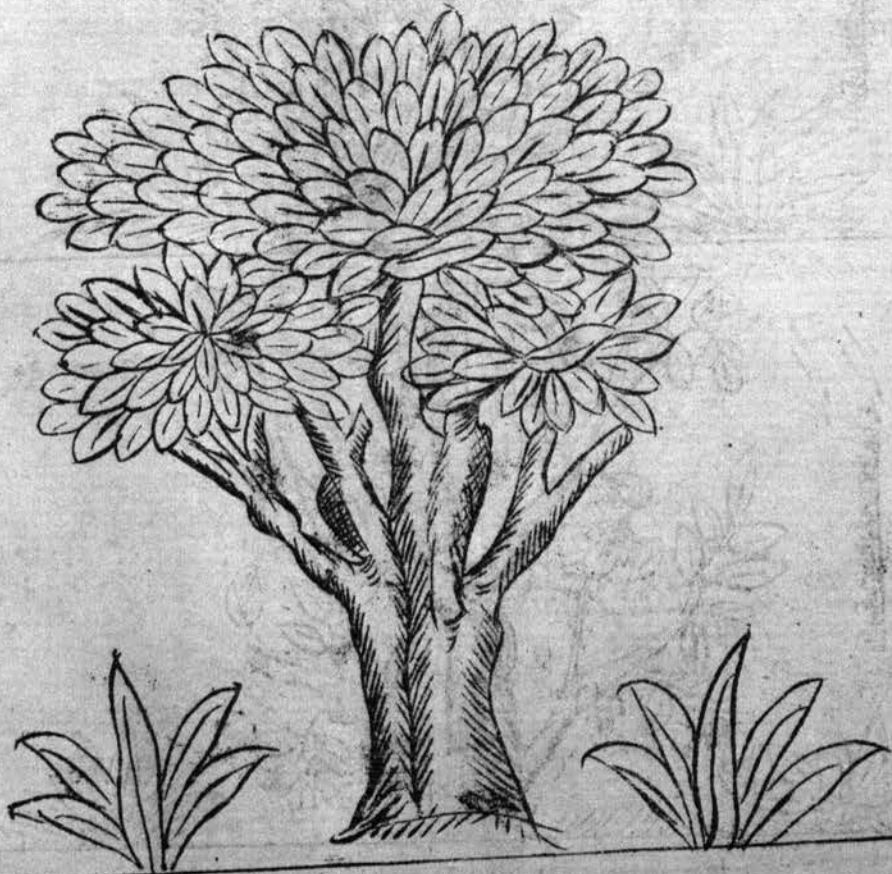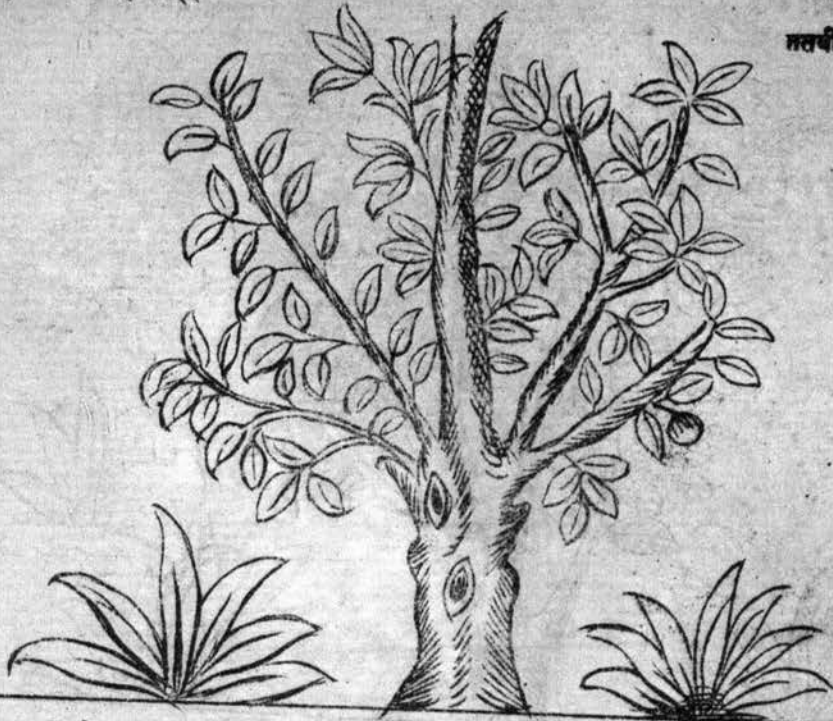
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३३९

तसवीरनम्बर १९४
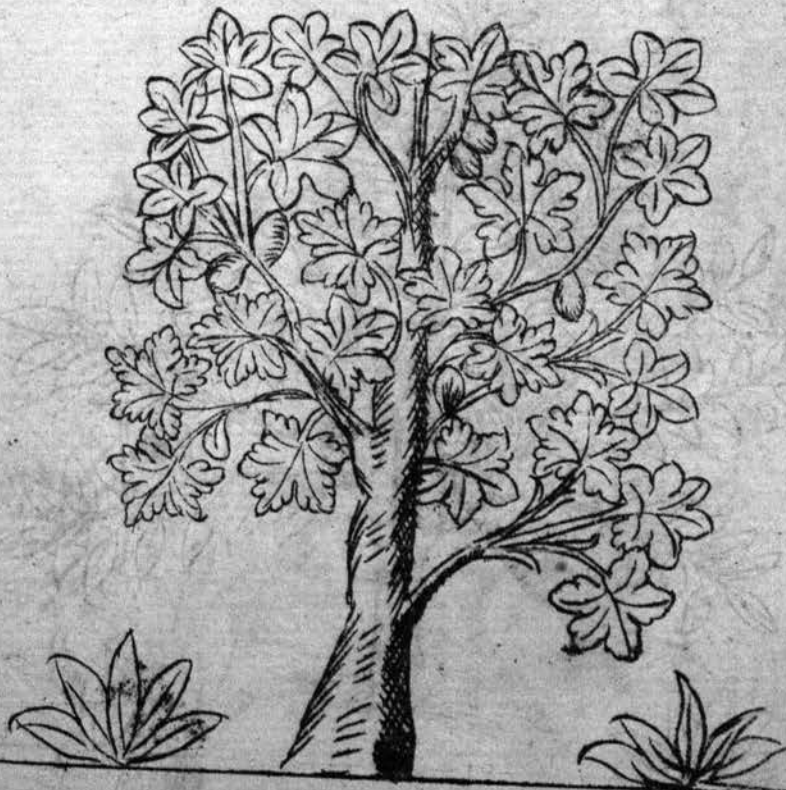
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३४१

तसवीर नम्बर १९५

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४२
तसवीर नम्बर १९६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४२
तसवीर नम्बर १९७

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५२
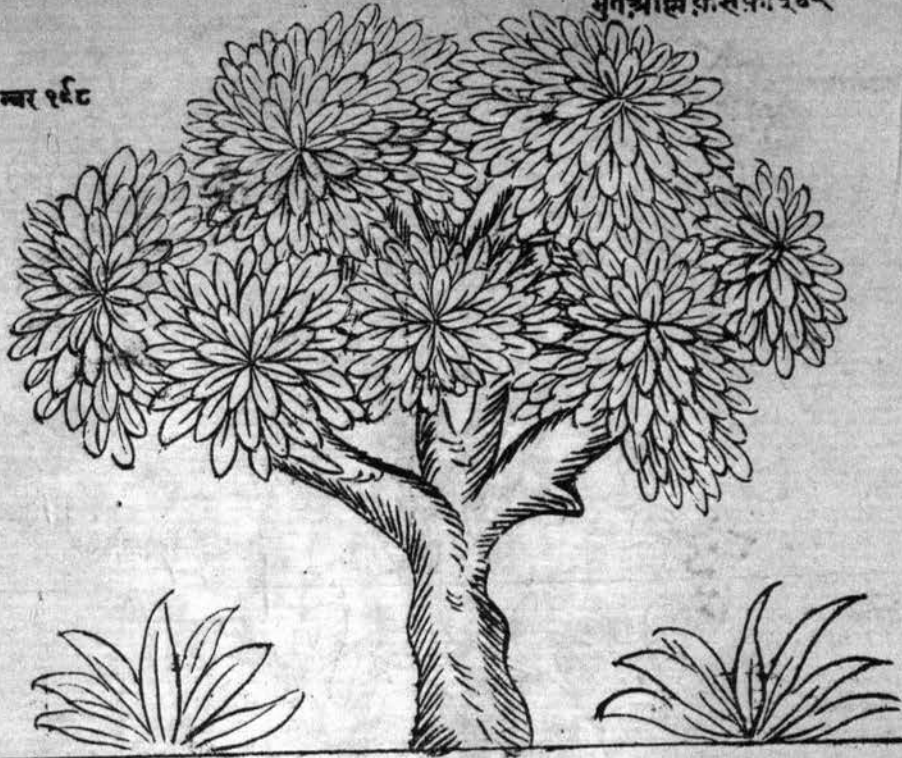
तसवीर नम्बर १९८

तसवीर नम्बर १९९
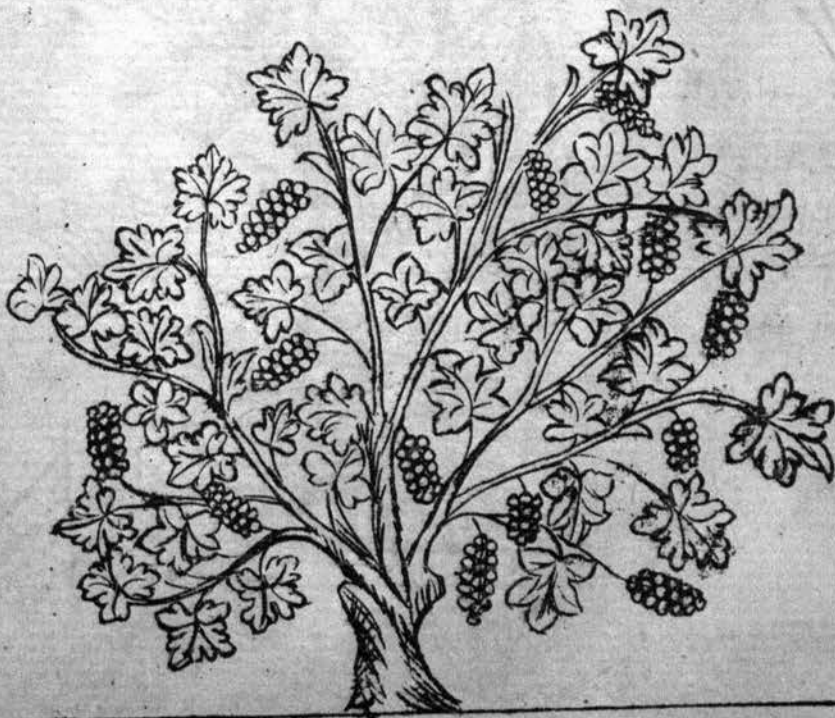
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५२

तसवीर नम्बर २००
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४२
तसवीर नम्बर २०१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४३
तसवीर नम्बर २०२
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४३
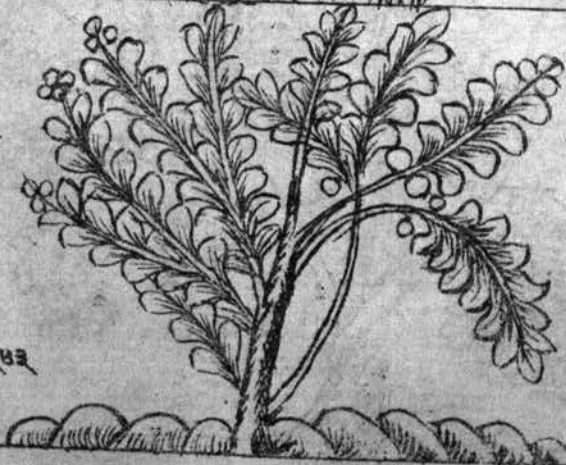
तसवीर नम्बर २०३

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४३

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४४

तसवीर नम्बर २०४
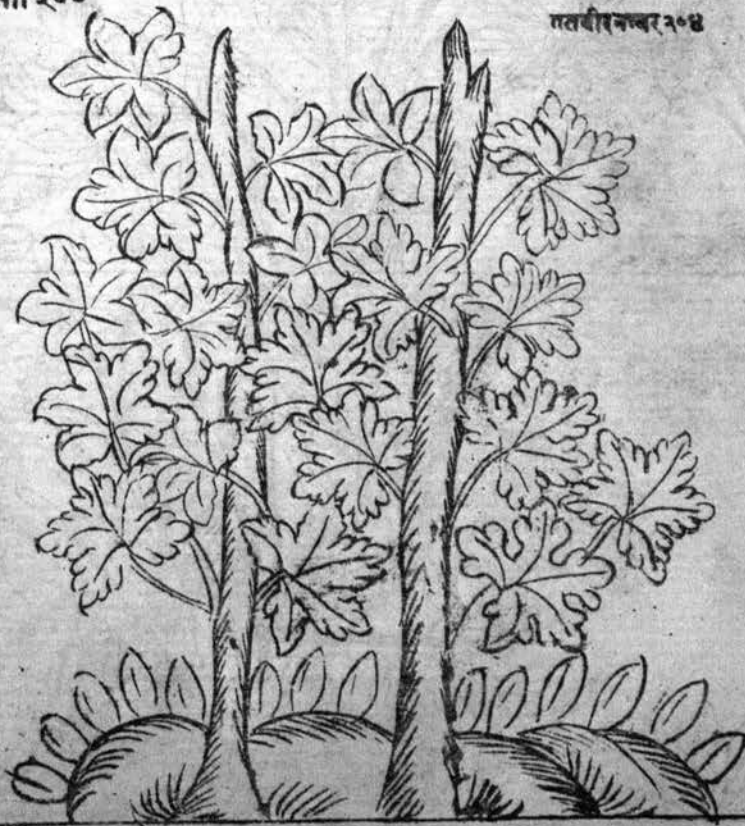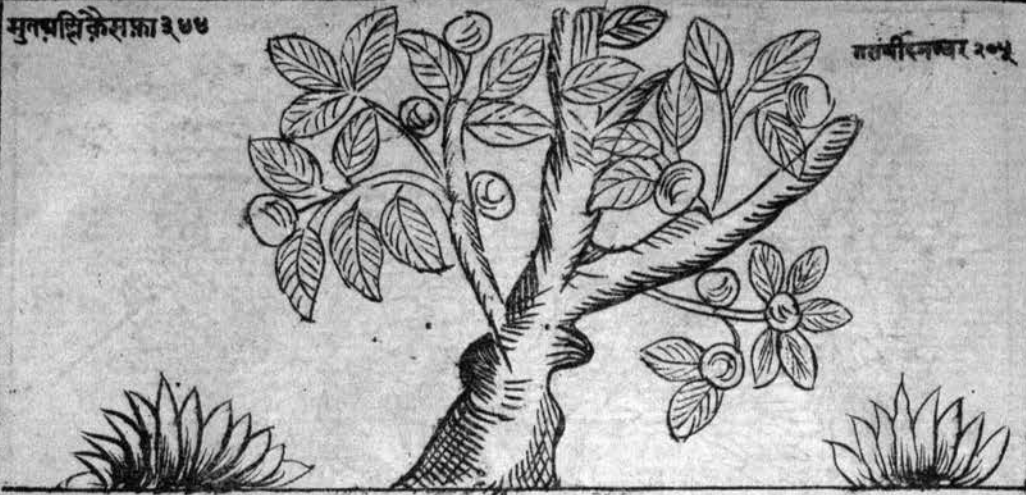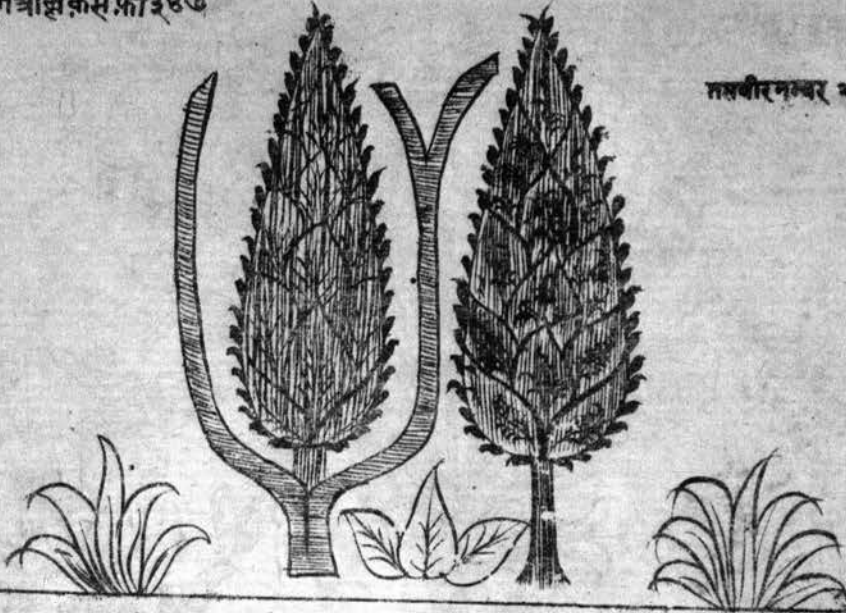
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३७४
तसवीरनम्बर २०५
तसवीर नम्बर २०६
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३७५
तसवीरनम्बर २०७
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३७७
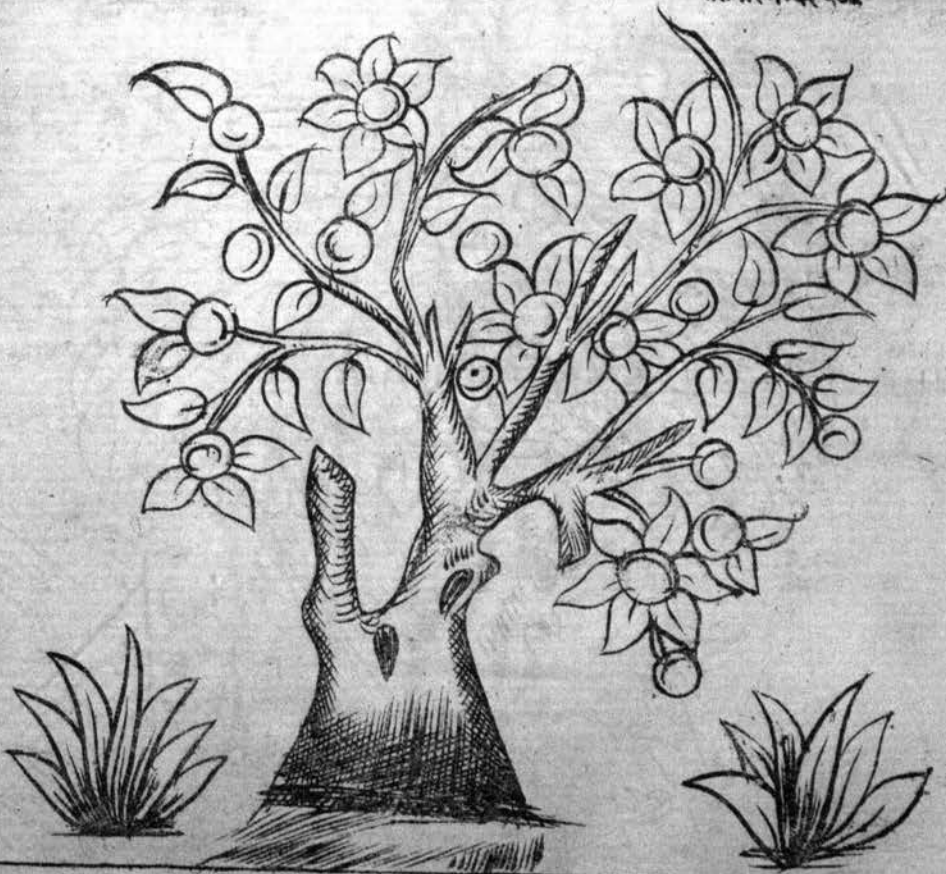
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४७
तसवीर नम्बर २०८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४८
तसवीर नम्बर २०९

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २४८

तसवीर नम्बर २१०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २४८
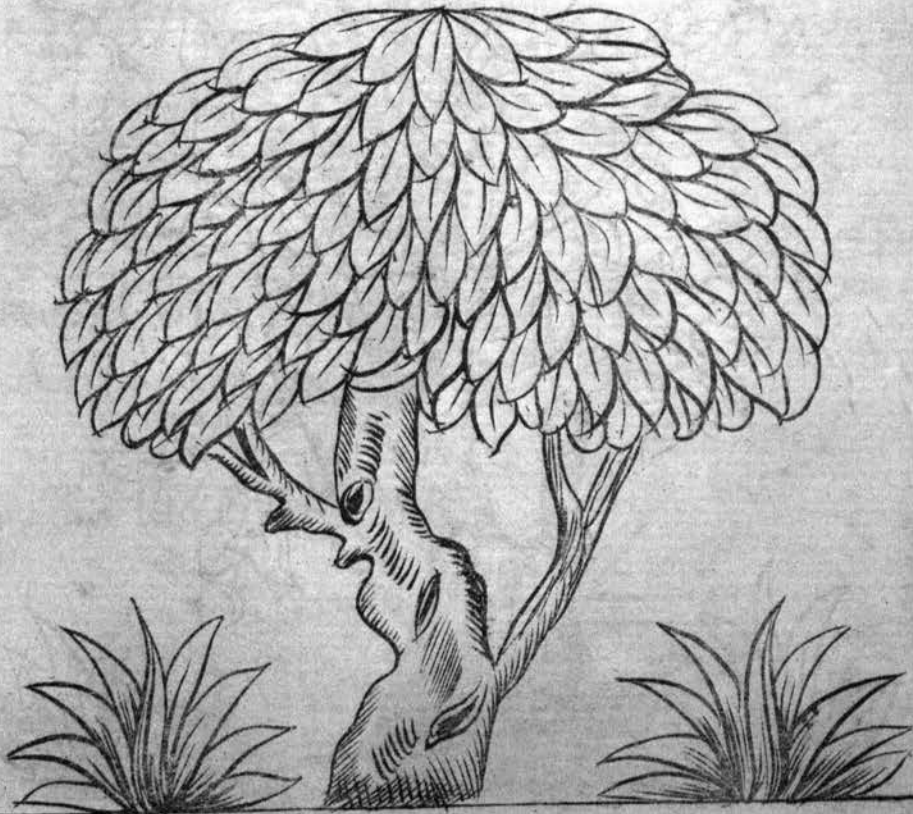
तसवीर नम्बर २११
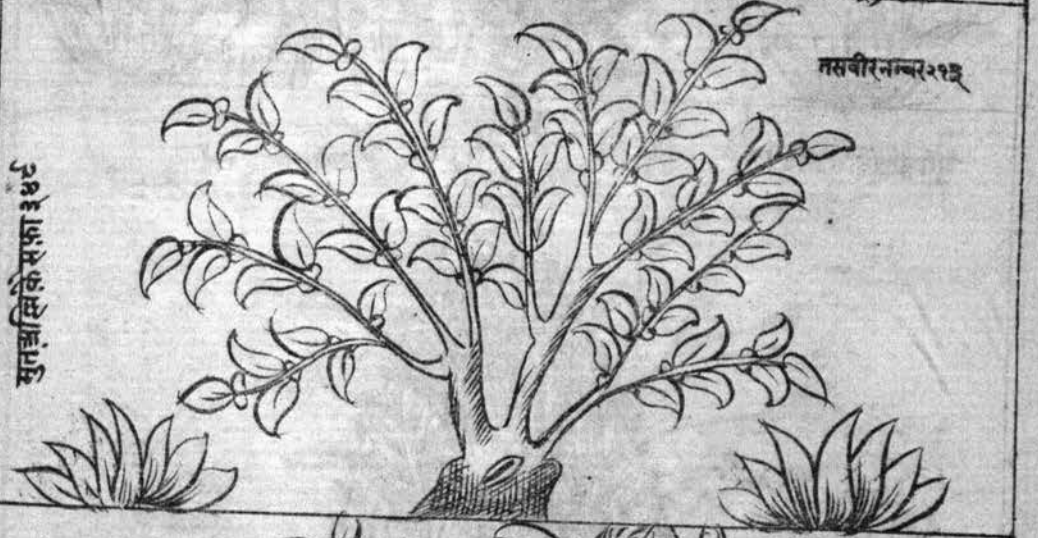
तसवीर नम्बर २१२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २४८
तसवीर नम्बर २१३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३४९
तसवीर नम्बर २१४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३४८

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा३४९
तसवीरनम्बर२१५
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा३५०
तसवीरनम्बर २१६
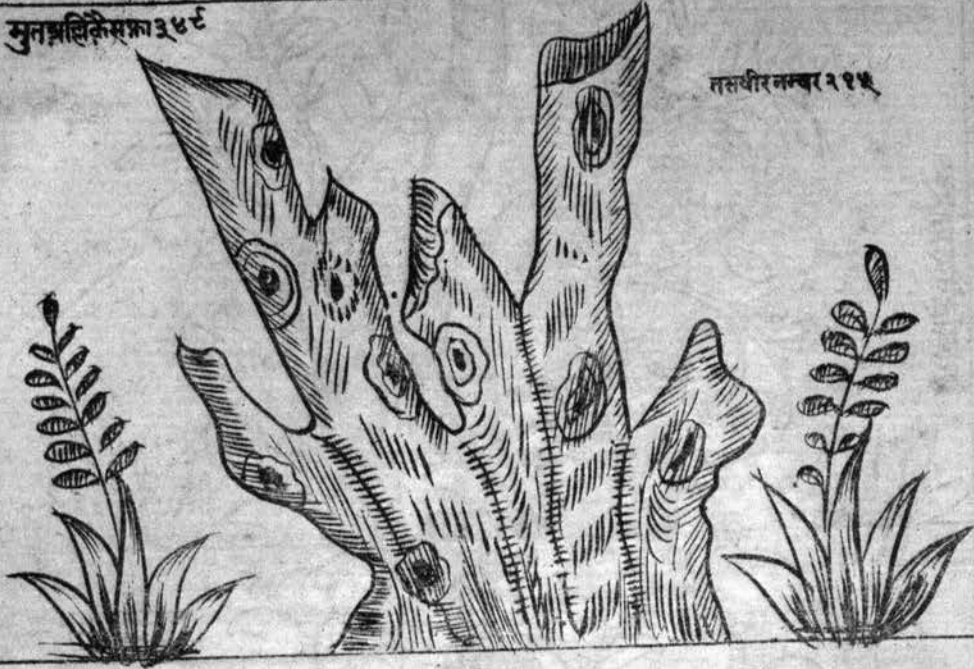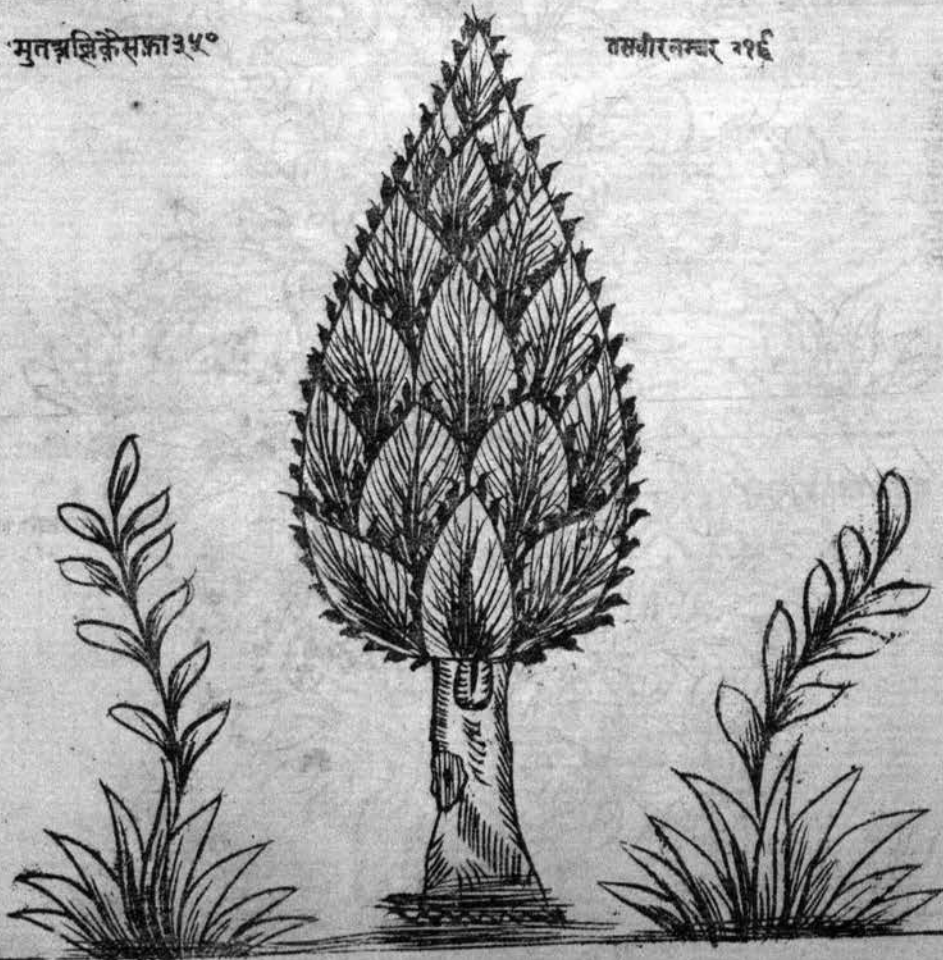
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २९७
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २९८
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २९९
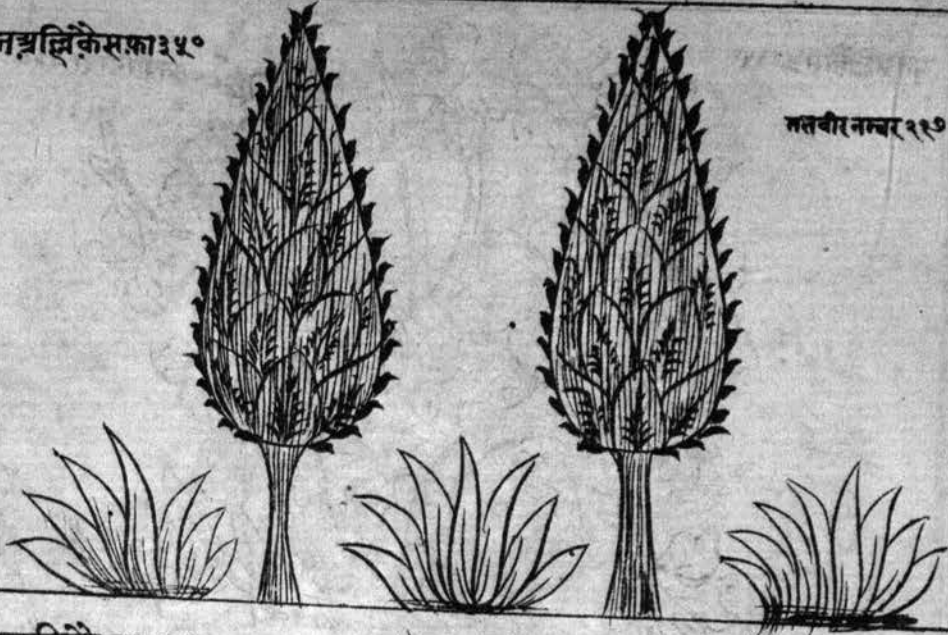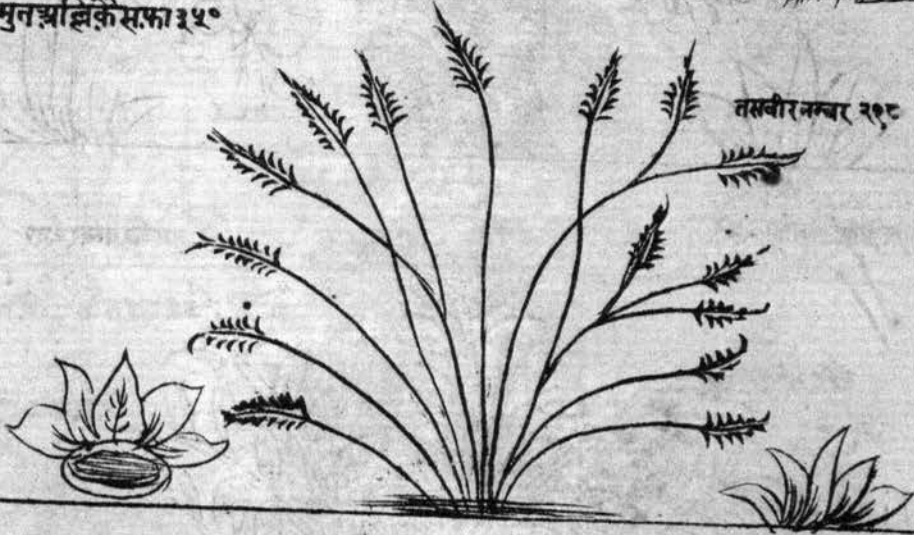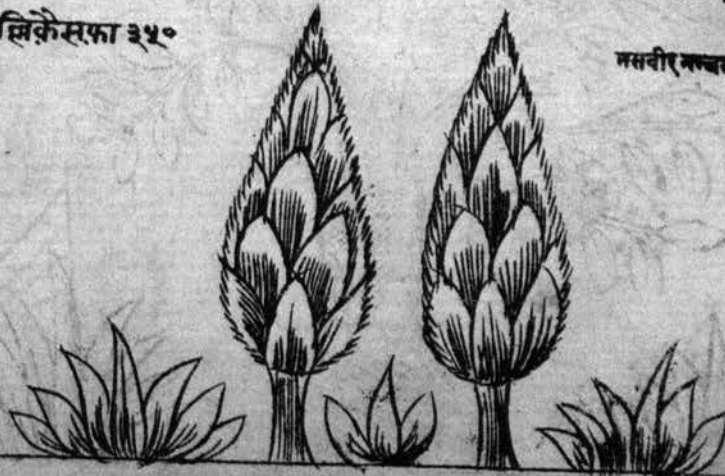
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५१
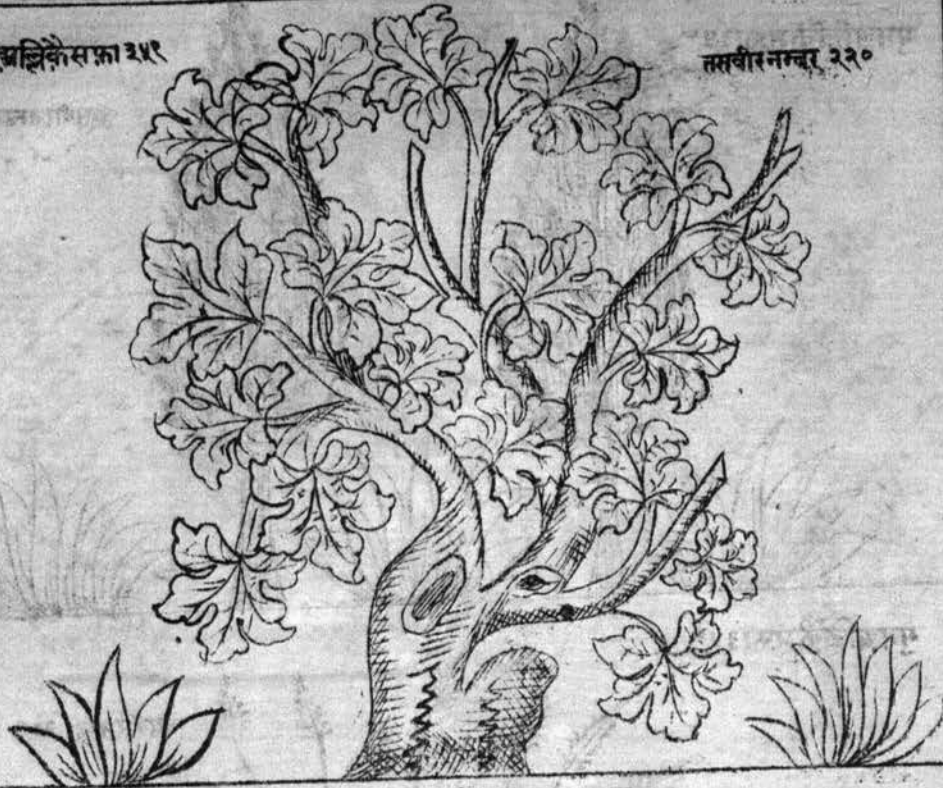
तसवीर नम्बर २२०

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५२
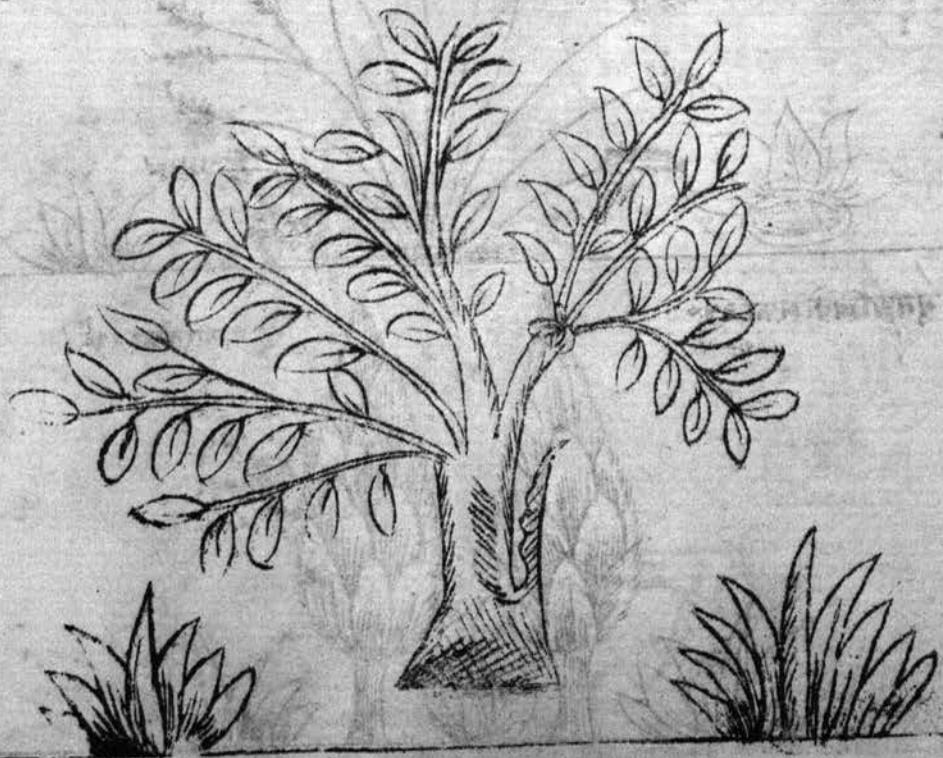
तसवीर नम्बर २२१
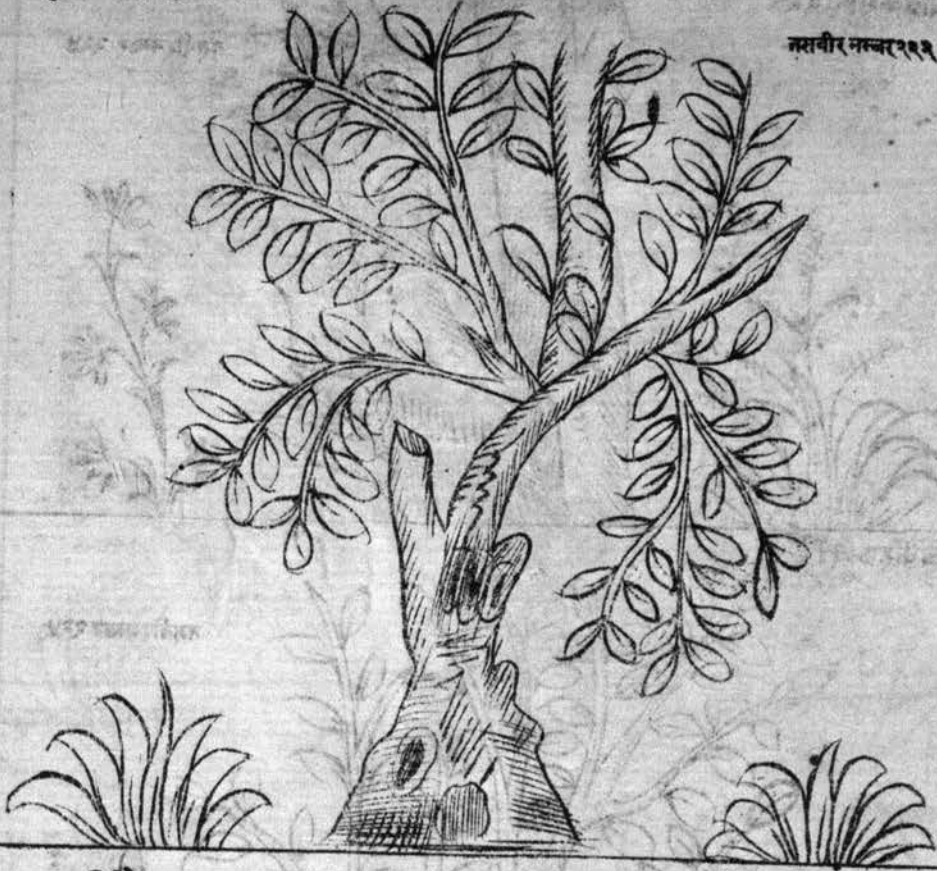
मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३५२
तसवीर नम्बर २२२
मुनअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३५२
तसवीर नम्बर २२३
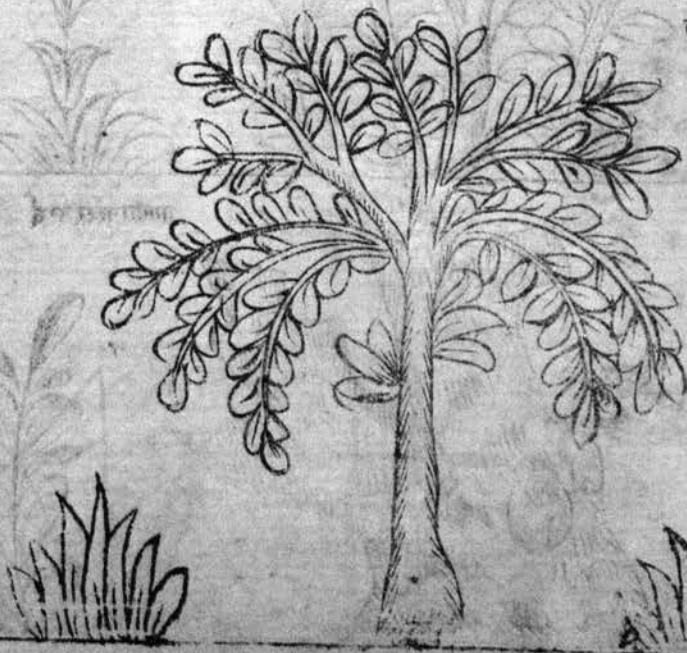
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५२

तसवीर नम्बर २२४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५२

तसवीर नम्बर २२५

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५३

तसवीर नम्बर २२६
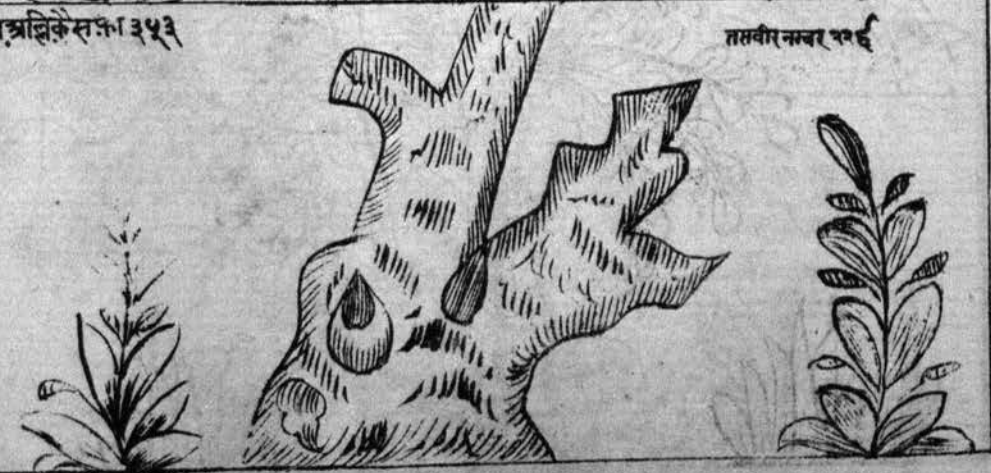
तसवीरनम्बर २३५
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २५३
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २५४
तसवीरनम्बर २३६
तसवीरनम्बर २३७
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २५५
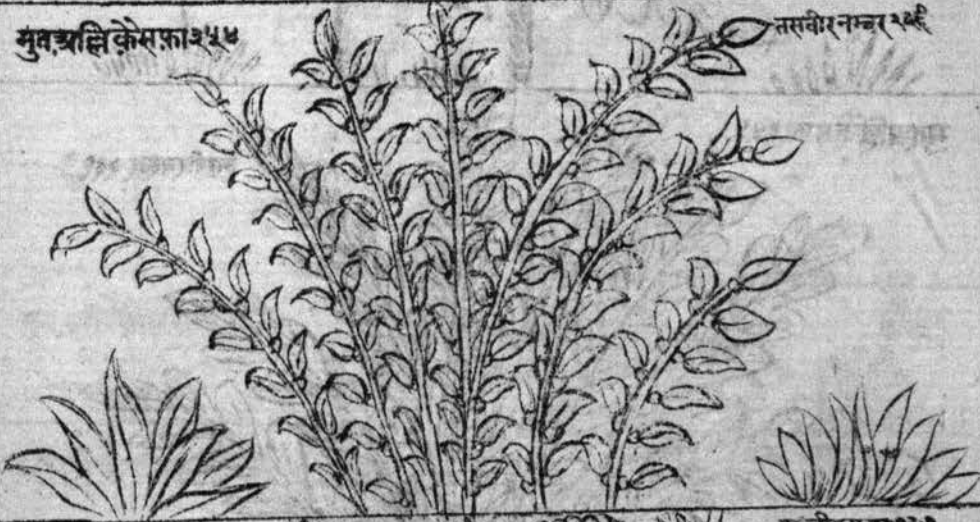
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३५५

तसवीर नम्बर २३०

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३५५

तसवीरनम्बर २३१

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३५६

तसवीरनम्बर २३२

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २२३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५६
तसवीर नम्बर २२४

तसवीर नम्बर २२५
तसवीर नम्बर २२६
तसवीर नम्बर २२७
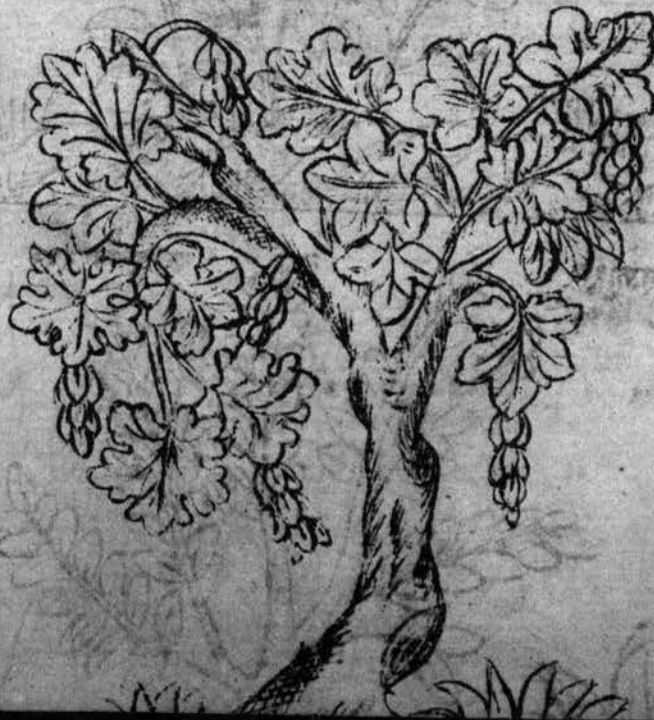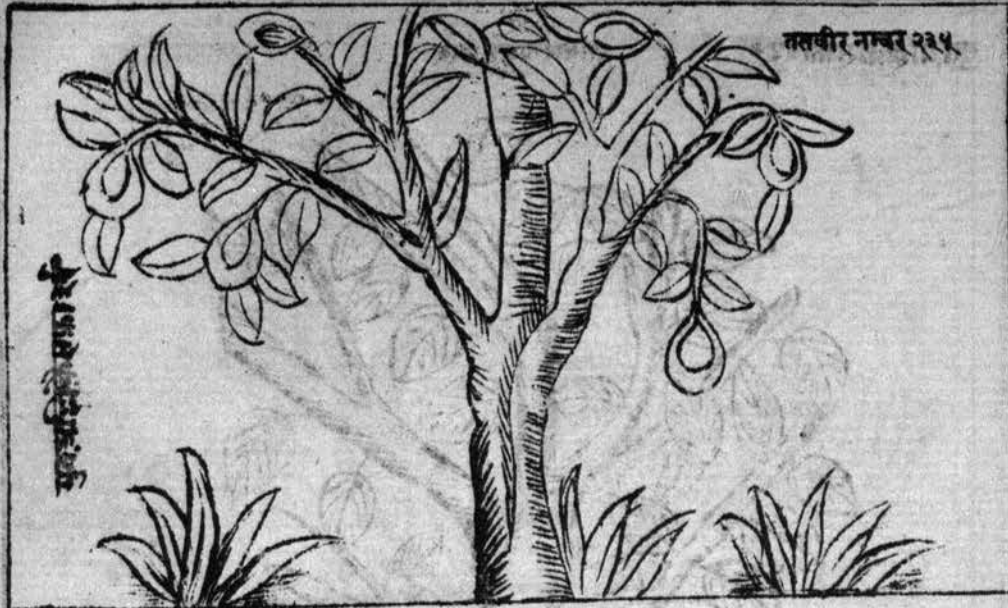
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३६२
तसवीरनम्बर २३८
तसवीर नम्बर २३९
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३६३
तसवीरनम्बर २४०
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३६४
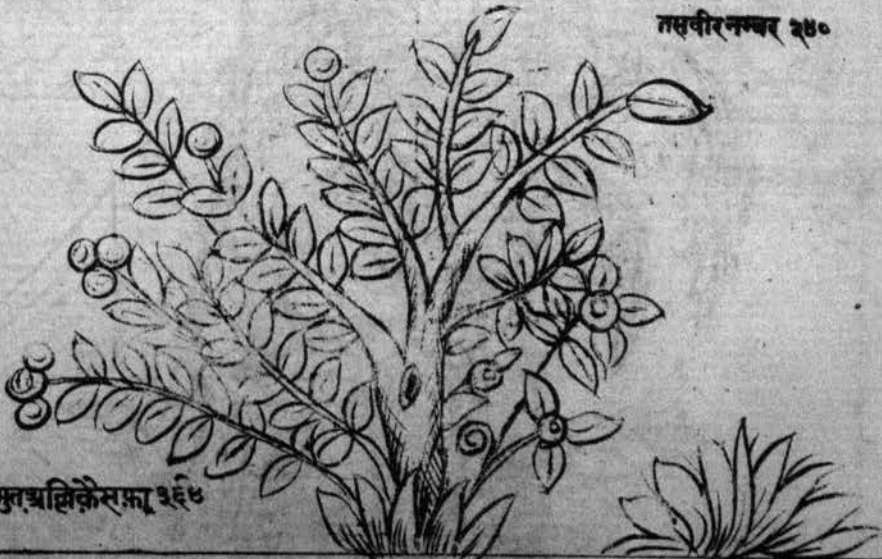
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३६४
तसवीर नम्बर २४१
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३६५
तसवीर नम्बर २४२
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३६५
तसवीर नम्बर २४३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६६
तसवीर नम्बर २४४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६८
तसवीर नम्बर २४५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६९
तसवीर नम्बर २४६
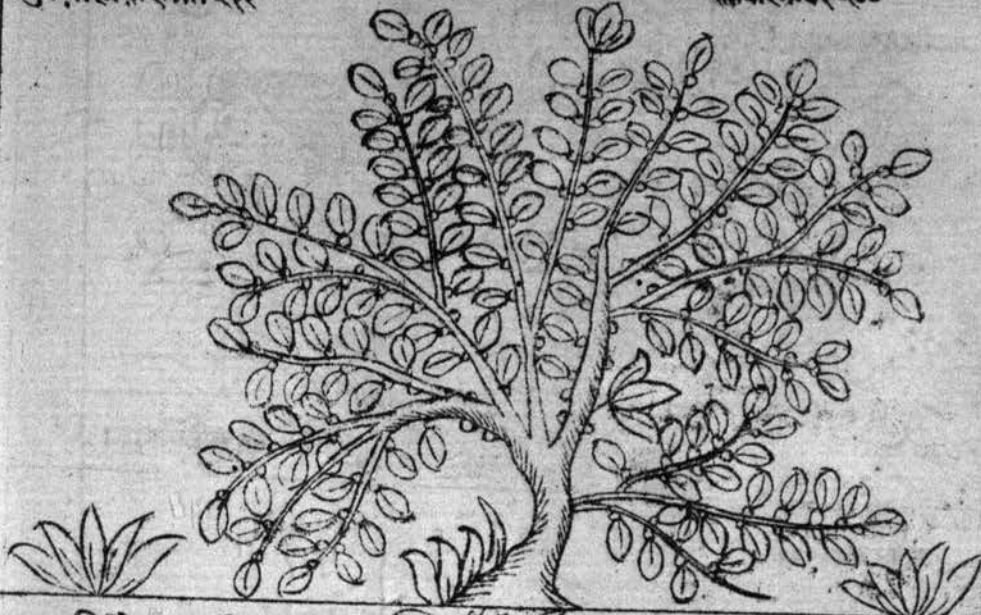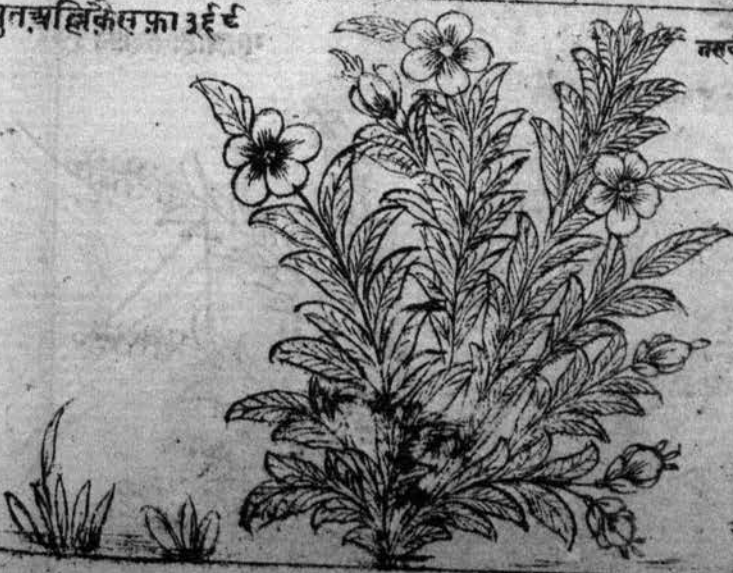
तसवीर नम्बर २५७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६९
तसवीर नम्बर २५८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७१
तसवीर नम्बर २५९

तस्वीर नम्बर २५०
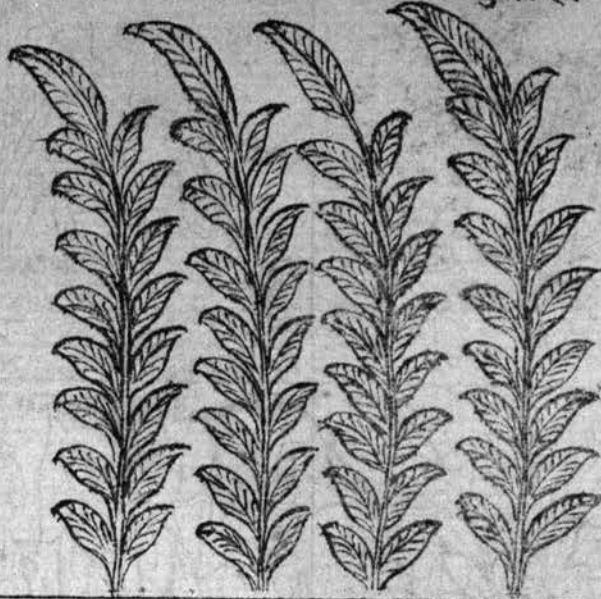
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७२

तस्वीर नम्बर २५१

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७२

तस्वीर नम्बर २५२

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७२

तसवीर नम्बर २५३ मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७३
तसवीर नम्बर २५४
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७३
तसवीर नम्बर २५५
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७४
त॰ नं॰ २५६ मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७४
तसवीर नम्बर २५७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७४
तसवीर नम्बर २५८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७४
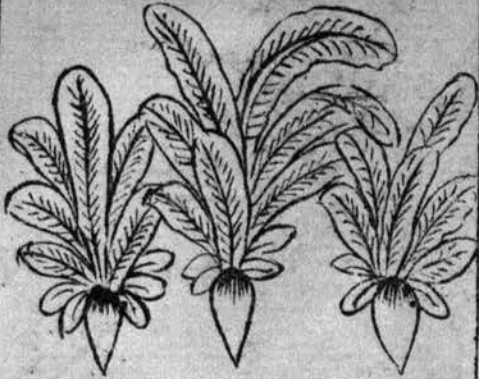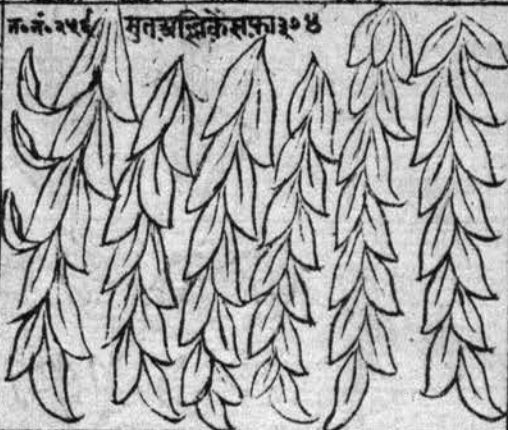
तसवीर नम्बर २५९
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा३७५
तसवीर नम्बर २६०
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा३७९
तसवीर नम्बर २६१
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा३७९
तसवीर नम्बर २६२
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा३७९

तसवीरनम्बर २६३
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७६
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७७
तसवीरनम्बर २६४
तसवीरनम्बर २६५
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७८
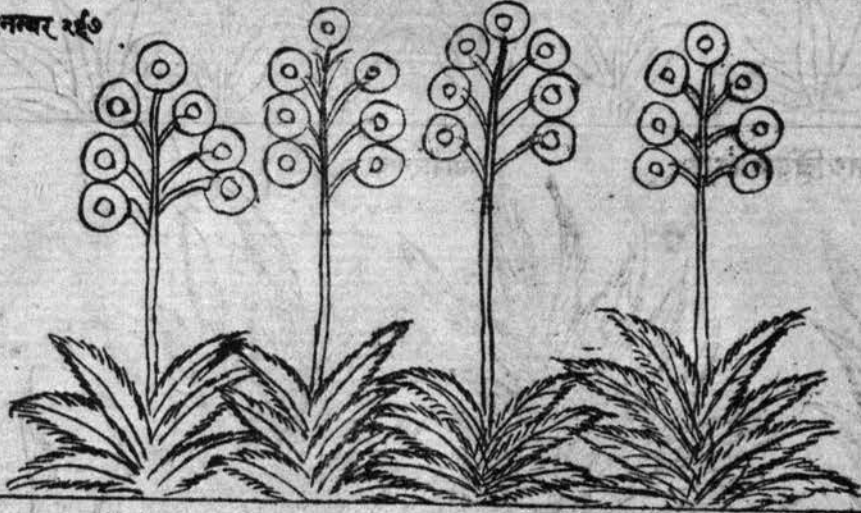
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३७८
तसवीरनम्बर २६६
तसवीरनम्बर २६७
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३७८
तसवीरनम्बर २६८
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३७६
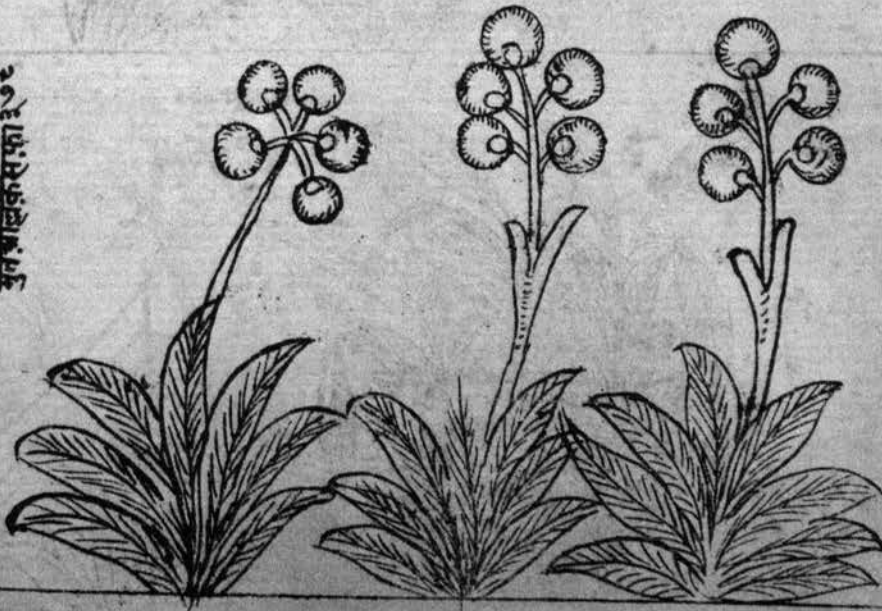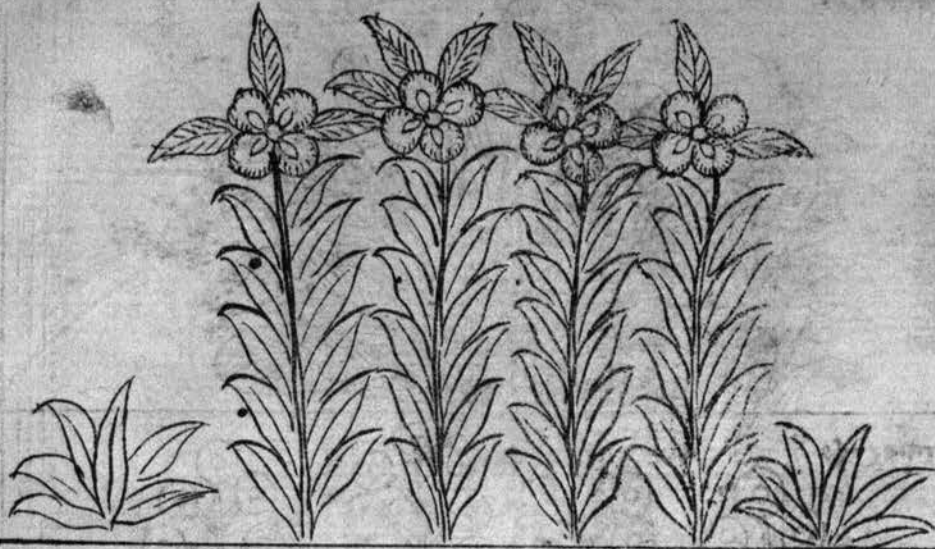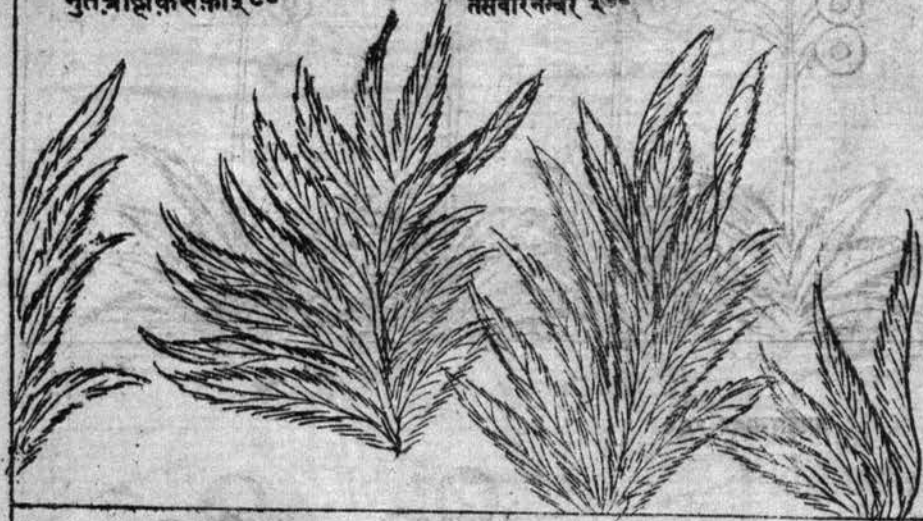
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३७९
तसवीरनम्बर २६९
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३८०
तसवीरनम्बर २७०
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३८०
तसवीरनम्बर २७१

तसवीर नम्बर २७२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८१
तसवीर नम्बर २७३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८१
तसवीर नम्बर २७४

तसवीर नम्बर २७५
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९२
तसवीर नम्बर २७६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९२
तसवीर नम्बर २७७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९२
तसवीर नम्बर २७८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३९२

मुतअल्लिक़े सफ़ा २८३
तसवीर नम्बर २७९
मुतअल्लिक़े सफ़ा २८३
तसवीर नम्बर २८०
तसवीर नम्बर २८१
मुतअल्लिक़े सफ़ा २८३

तसवीर नम्बर २८२
मुतअल्लिके सफ़ा ३८४
मुतअल्लिके सफ़ा ३८४
तसवीर नम्बर २८३
मुतअल्लिके सफ़ा ३८५
तसवीर नम्बर २८४

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३८५

तसवीर नम्बर २८५

तसवीर नम्बर २८६

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३८५

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३८६

तसवीर नम्बर २८७

मुतअ़ल्लिक़ सफ़ा २८६
तसवीर नम्बर २८८
तसवीर नम्बर २८९
मुतअ़ल्लिक़ सफ़ा ३८७
मुतअ़ल्लिक़ सफ़ा ३८७
तसवीर नम्बर २९०

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८७
तसवीर नम्बर २९१
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८८
तसवीर नम्बर २९२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८८
तसवीर नम्बर २९३

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३८९
तसवीर नम्बर २९४
तसवीर नम्बर २९५
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३८९
तसवीर नम्बर २९६
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३९०

तसवीर नम्बर २९७

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९०

तसवीर नम्बर २९८

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९१

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९२

तसवीर नम्बर २९९

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४६७

तसवीर नम्बर ३००

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४६८

तसवीर नम्बर ३०१

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४७०

तसवीर नम्बर ३०२

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ४७१
तसवीर नम्बर ३०३
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ४७४
तसवीर नम्बर ३०४
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ४७७
तसवीर नम्बर ३०५

तसवीर नम्बर ३०६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४७८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४७६
तसवीर नम्बर ३०७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४७६
तसवीर नम्बर ३०८
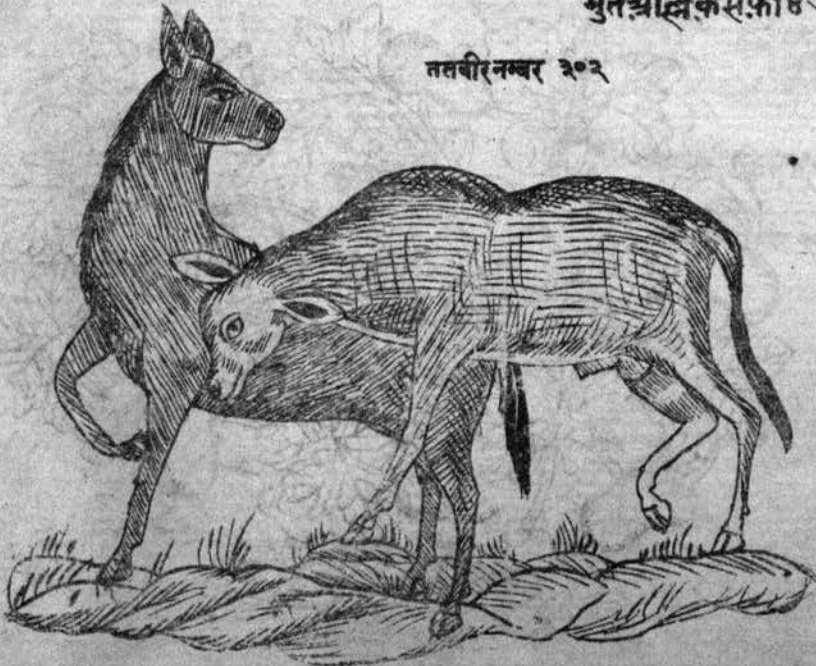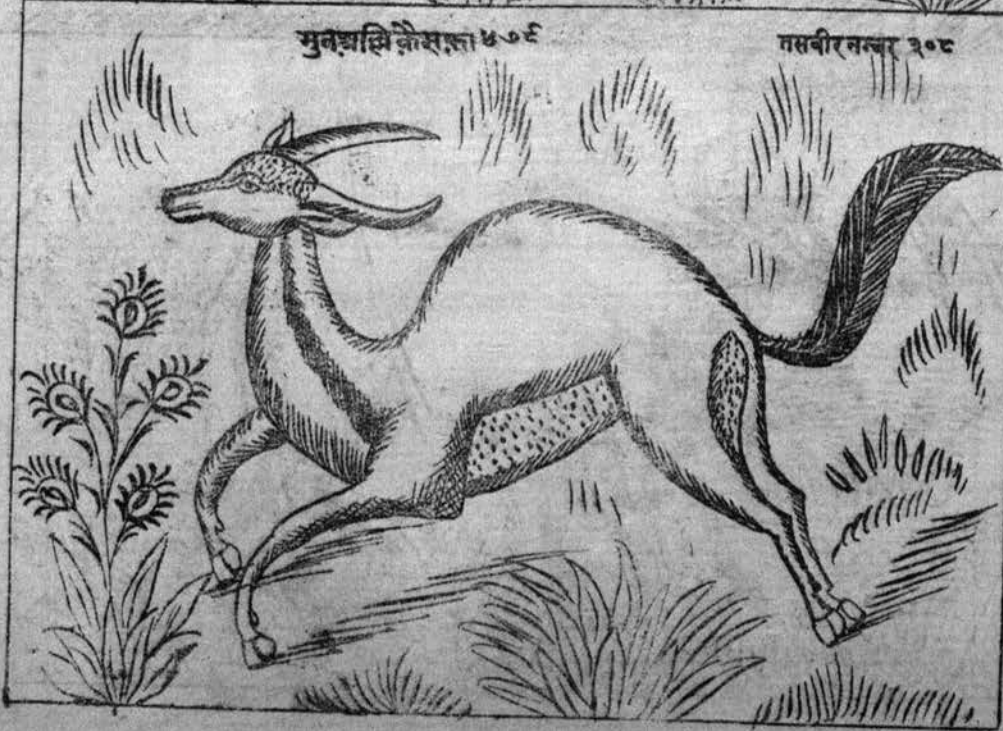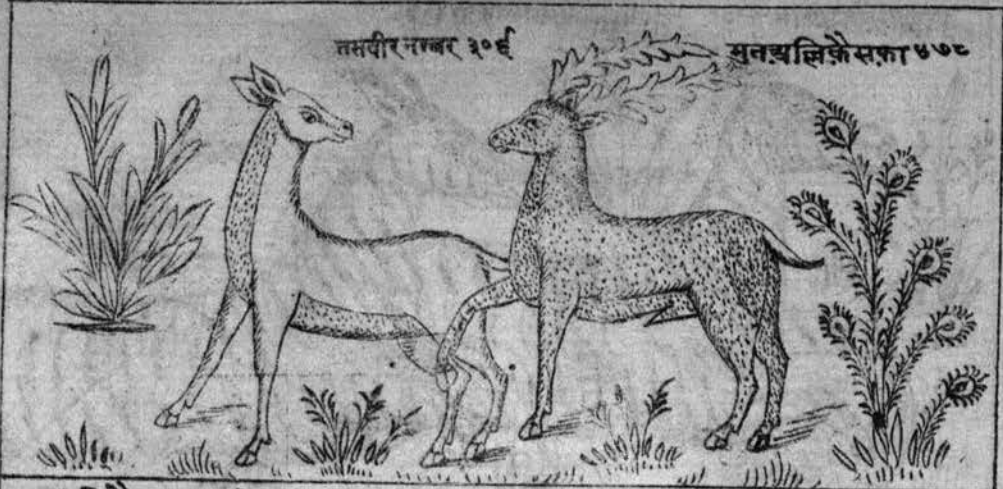
मुनअ़ल्लिक़ैसफ़ा ४८०
तसवीर नम्बर ३०९
तसवीरनम्बर ३१०
मुनअ़ल्लिक़ैसफ़ा ४८२
तसवीरनम्बर ३११
मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ४८३
मुनअ़ल्लिक़ैसफ़ा ४८५
तसवीरनम्बर ३१२

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ४८५

तसवीर नम्बर ३१३

तसवीर नम्बर ३१४

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ४८६

तसवीर नम्बर ३१५

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ४८७

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ४८८

तसवीर नम्बर ३१६

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ४८९

तसवीर नम्बर ३१७

तसवीर नम्बर ३१८
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४९२
तसवीर नम्बर ३१९
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४९३
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४९२
तसवीर नम्बर ३२०
तसवीर नम्बर ३२१
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४९४
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ४९६
तसवीर नम्बर ३२२

तसवीर नम्बर ३३३
तसवीर नम्बर ३३२
तसवीर नम्बर ३३४
तसवीर नम्बर ३३५
तसवीर नम्बर ३३६

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ५०८
तसवीरनम्बर ३२७
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ५१०
तसवीरनम्बर ३२८
तसवीरनम्बर ३२९

त० नं० ३४२
त० नं० ३४३
त० नं० ३४४
तसवीर नम्बर ३४५
तसवीर नम्बर ३४७
तसवीर नम्बर ३४८
तसवीर नम्बर ३४९
तसवीर नम्बर ३५०
तसवीर नम्बर ३५१
तसवीर नम्बर ३५२
तसवीर नम्बर ३५३

तसवीरनम्बर ३५४
तसवीर नम्बर ३५५
तसवीर नम्बर ३५६
तसवीर नम्बर ३५७
तसवीरनम्बर ३५८
तसवीरनम्बर ३५९

तसवीरनम्बर ३६०
उनका ज़िक्र सफ़ा १२८
तसवीर नम्बर ३६१
उनका ज़िक्र सफ़ा १२८
तसवीर नम्बर ३६२
उनका ज़िक्र सफ़ा १२९
तसवीर नम्बर ३६३
उनका ज़िक्र सफ़ा १३०
तसवीर नम्बर ३६४
तसवीरनम्बर ३६५
तसवीरनम्बर ३६६

तसवीर नम्बर ३६७
मुतअल्लिके सफ़ा ५३२
तसवीर नम्बर ३६८
मुतअल्लिके सफ़ा ५३१
मुतअल्लिके सफ़ा ५३१
तसवीर नम्बर ३६९
मुतअल्लिके सफ़ा ५३२
तसवीर नम्बर ३७०
तसवीर नम्बर ३७१
मुतअल्लिके सफ़ा ५३२
तसवीर नम्बर ३७२
मुतअल्लिके सफ़ा ५३२
मुतअल्लिके सफ़ा ५३३
तसवीर नम्बर ३७३

मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३२
तसवीरनम्बर ३७४
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३३
तसवीरनम्बर ३७५
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३४
तसवीरनम्बर ३७६
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३६
तसवीरनम्बर ३७७

तसवीर नम्बर ३७८
तसवीर नम्बर ३७९
तसवीर नम्बर ३८०
तसवीर नम्बर ३८१
तसवीर नम्बर ३८२
तसवीर नम्बर ३८३
तसवीर नं० ३८४

तसवीर नम्बर ३८५
तसवीर नम्बर ३८६
तसवीर नम्बर ३८७
तसवीर नम्बर ३८८
जनखुलिकि सफ़ा ५४२
तसवीर नम्बर ३८९
तसवीर नम्बर ३९०

तसवीर नम्बर ३९९
तसवीर नम्बर ४००
तसवीर नम्बर ४०१
तसवीर नम्बर ४०२
तसवीर नम्बर ४०३
तसवीर नम्बर ४०४

तसवीरनम्बर ४१७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५६७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५६७
तसवीरनम्बर ४१८
तसवीरनम्बर ४१९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५६८
तसवीरनम्बर ४२०
तसवीरनम्बर ४२१
तसवीरनम्बर ४२२
तसवीरनम्बर ४२३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५७२
तसवीरनम्बर ४२४
तसवीरनम्बर ४२५
तसवीरनम्बर ४२६

तसवीरनम्बर ४२७
उतअ्लिकी सफ़ा ५७४
उतअ्लिकी सफ़ा ५७४
तसवीरनम्बर ४२८
तसवीरनम्बर ४२९
उतअ्लिकी सफ़ा ५७१
तसवीरनम्बर ४३०
उतअ्लिकी सफ़ा ५७७
तसवीरनम्बर ४३१
तसवीरनम्बर ४३२
उतअ्लिकी सफ़ा ५८२
तसवीरनम्बर ४३३

तसवीर नम्बर ४३४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३

तसवीर नम्बर ४३८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८४
तसवीर नम्बर ४३९
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८४
तसवीर नम्बर ४४०
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८४
तसवीर नम्बर ४४१
तसवीर नम्बर ४४२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८५
तसवीर नम्बर ४४३

मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८५
तसवीर नम्बर ५५४
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८५
तसवीर नम्बर ५५५
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८५
तसवीर नम्बर ५५६
तसवीर नम्बर ५५७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५८५

तसवीर नम्बर ४४८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८५
तसवीरनम्बर ४४९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८६
तसवीरनम्बर ४५०

तसवीर नम्बर ४५१ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८६

तसवीर नम्बर ४५२ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८६

तसवीर नम्बर ४५३ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८६

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८६ तसवीर नम्बर ४५४

मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८६
तसवीर नम्बर ४५५
तसवीर नम्बर ४५६
मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८७
मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ा ५८८
तसवीर नम्बर ४५७

मुतअल्लिक़े सफ़ा ४९८
तसवीर नम्बर ४५८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४९८
तसवीर नम्बर ४५९
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४९९
तसवीर नम्बर ४६०
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४९९
तसवीर नम्बर ४६१

इति

अजायबुल्मख्लूक़ात ॥

पहिलभाग ॥

आकाश के पदार्थों के वर्णन में ॥

और इसमें कई दृष्टियां हैं पहिली आकाशों का यथार्थ और उनकीसूरत और कारण औरचालोंकेवर्णन में (सूक्ष्मवर्णन) हकीम लोगकहते हैं कि आकाश चौड़ा शरीर गोलहै कि जिसकी सूरत हिलता है आधों आधपर कि उसको संयुक्तहै न हलकाहै नभारी न ठंढाहै न गर्म न गीलाहै न सूखा न वह टूटसक्ताहै न जुड़ सक्ताहै और प्रत्येक-बातकी दलीलें हिकमत की किताबों में विद्यमानहैं इस किताब में उनकी दलीलें नहीं लिखीं और सम्पूर्ण आकाश गेंदकीसदृश गोल हैं और एक दूसरेको घेरे हुयेहैं जैसे पियाज के छिलके और ठीक बातसे उनका बँटना नौकुर्रे परहै इस प्रकारसे कि मुमास होतीहै तहांछोटी हर एक की इन आकशसे तह बड़ी उस आकाशको कि जो उसके नीचेहै पहिला आकाश चन्द्रहै कि तत्त्वओं को घेरे है दूसरा आकाश बुधतीसरा आकाश शुक्र चौथा आकाश सूर्य्य पांचवां आकाश मंगल छठा आकाश वृहस्पति सातवां आकाश शनैश्चर आठवां अचलग्रहोंका आकाश कि उस पर ग्रह अनगिनती हैं नवां

आकाश कि उस पर कोई ग्रह नहीं अतलसकी तरह सादाहै और सबसे बड़ाहै व सबको घेरे है इसलिये उसको अतलसका आकाश व बड़ा आकाश भी कहतेहैं और प्रत्येकआकाशको एकस्थान मुख्य नियतहै कि वह अपने स्थानसे दूसरे स्थान पर नहीं जाता परन्तु अपने स्थानपर चलायमानहै एक क्षण भी नहीं ठहरता और चलन आकाशकी अतीवशीघ्रहै जिस पदार्थकी शीघ्रतामानलीजाय यहांतक बीज गणितमें सावित हुआहै जितनी देरमें बड़ा दौड़ने वालाघोड़ा अगले दोनों पांवउठाकर पृथ्वीपर रक्खे उतनीदेरमेंबड़ा आकाश३ सहस्रकोशचले अबजाननाचाहिये कि बड़ा आकाश चलायमान होता है पूर्वसे पश्चिम ओरको और शेष आठ आकाश आकाशोंके आकाश के बिरुद्ध पश्चिमसे पूर्वको चलतेहैं और ग्रह अपने२ आकाशों के साथ चलते हैं परन्तु चर ग्रहें आप भी चलाय मान हैं और एक आकाश दूसरे आकाशको पूरे तौरसे घेरेहै इस रूपसे जोकि नीचे रूप बनाहै ॥

तसवीर नम्बर १

दूसरी दृष्टि चन्द्रित आकाशके बर्णन में ॥

चन्द्र आकाशके दोसतह गोल हैं और प्रत्येक समास्त हैं और व्यास दोनों वृत्तका व्यास पृथ्वी है और उसकी बड़ी सतह आला अर्थात् ऊर्द्ध सतहसे मिलीहुई है और सतह अर्द्ध बुधके आकाशसे और सतह ऊर्द्ध चन्द्रमाके आकाशसे कि वह अर्थात् नीचेकी सतहसे मिलीहुई और सतह औंधा अग्निचक्रसे और चन्द्रमा की गति अपनी निजचालसे२८दिवसमेंपूरीहोतीहै और चन्द्रित आकाशका दौरा१४ दिवसमें इसलिये २८ दिवसमें कि उसमें चन्द्रका दौरा पूराकरताहै उतने समयमें बड़ामण्डलदोबार चक्रदेताहै पहिले दौरामें चन्द्रमाका प्रकाशितमुखपृथ्वी की ओर होताहै अर्थात् द्वीजसे लेकर पूर्णमासी तकऔरदूसरा मध्यमें ऊपरकी ओरहोताहै तो उस समय अप्रकाशित मुखचन्द्रमाका पृथ्वीकी ओरहोताहै उससमय से संसारमें अंध्यारा होताहै मानोपृथ्वीके केन्द्रकी ओर चन्द्रमाकी पीठहोती है इसलिये

पूर्णमासीसे लेकर अमावस तक चन्द्रमाका प्रकाश दिन प्रतिक्रम- होताजाता है, इसलिये सम्पूर्ण मण्डल के चारभाग होते हैं उनमें से तीनतो पृथ्वीकी परिधिहैं और चौथा जो छोटाहै परिधि नहीं हैं जो परिधिहैं उनतीनोंमेंसे प्रथम जिसको शुक्रका मण्डल कहते हैं उसकी दीर्घ धरातल बुध मण्डलकी धरातलसे मिलीहै, दूसरे को सूर्य्य मण्डल कहते हैं कि बड़ी धरातल उसकी नीचेके मण्डलशुक्र की धरातलसे मिलीहै तो उसकी धरातल का भीतरी अंग अग्नि- मण्डलसे मिलीहै और मायल उसको इसकारण कहतेहैं कि वह शुक्रकी ओर झुकाहै और केन्द्र उसका पृथ्वीका केन्द्रहै(तीसरे) को बाहिरी केन्द्र कहते हैं क्योंकि उसका केन्द्र पृथ्वी के केन्द्र से हटा है और बड़े मण्डल की तरफ दबाहुआ है, इसप्रकार से कि उसके नीचकी धरातल बड़े मण्डल की धरातल को एक बिन्दुपर छूतीहै और बिन्दुको औज अर्थात् उंचाई कहते हैं और इसी प्रकार से उसकी भीतरी धरातल मिलीहुई है पूरे मण्डल की छोटी धरातल से एकबिन्दु पर जो उनदोनो के बीचमें है इस बिन्दु का नाम हज़ीज कहतेहैं तो अब इससे दो रूपहोतेहैं और वे दोनो एकदूस- रेसे चाल और रूपकेकारण भिन्नहैं इनमेंसे एक तो घेरताहै उस- मण्डल को जिसका केन्द्र बाहिरी है और दूसरे की चाल घेरती हुई ऊपरको ओर होतीहै और शक्ति उसकी उस बिन्दुहज़ीज़ की ओर होती है और चाल और शक्ति उस घेरनेवाले मण्डल की उसके बिपरीति होती है और दोनो में से प्रत्येक को मुतम्मिम कहतेहैं और चौथाछोटा मण्डल अर्थात् कोचक मण्डल कहते हैं इसको फ़लक तदबीर कहतेहैं चन्द्रमाका मण्डल इसीमें जड़ाहुआ है, और यह मण्डल चन्द्रमाके मण्डलकेसाथ चलताहै और मण्डल- के चलको सिवाय उसकी एक चाल निजकी भीहै इस बात पर सम्पूर्ण बिद्वानोंकी मति एकहै कि चन्द्रमण्डल और चन्द्रमण्डलको धरातल से ११८०६६ एक लाख अठारह हज़ार छासठ मीलका अन्तरहै और स्वरूप चन्द्रमाके मण्डलका यहहै॥

तसबीर नम्बर २

बतली मूसनामक (योतिर्बिदि) ने अपनी किताब में मण्डलों की चाल प्रभाव अंग और रूपके बिषय में लिखा है और उनकी तर्कणा ओंका गणितसे सिद्धि कियाहै और इसबात के सत्यहोनेमें किसीको भी सन्देह न होगा परन्तु हां केवल उसीको जो गणित नहीं जान्ता और जिसने रेखा गणितका दूसरा अध्यायभली भांति पढ़ाहै उसको तो यह सम्पूर्ण अतिही सरलहै जो थोड़ा भी चित्त इसओरको लगावेतो, ॥ अब चन्द्रमाका यथार्थ जानना चाहिये– चन्द्रमा एक तारा है और नीचे का मण्डल मानाहुआ स्थान है वास्तवमें उसका मण्डल तो स्यामहै परन्तु प्रकाश सूर्य्यसेलेता है क्योंकि स्वरूप बिपरीति हैं इसलिये निकट और दूरके अनुसार प्रकाश मिलताहै और प्रत्येक ग्रहस्थान में २ ¼ दोरात्री और दो बटेतीन रात्री रहताहै और सम्पूर्ण मण्डलके चारोंओर एक महीना में फिर आताहै, सम्पूर्ण मण्डलोंसे इसका मण्डल छोटाहै परन्तु सबसे अधिक शीघ्रगामीहै इसीसे इसको तारापति कहतेहैं, इसके मंज़िल अर्थात् स्थान अट्ठाईसहैं प्रत्येक रात्रीमें एक स्थानजाताहै इसी प्रकार महीनाके अन्तमें छिपजाताहै और जिसरात्रिको छिपा रहताहै उसरात्रीको भी एक मंज़िल जाताहै तिसउपरान्त ज्यों २ सूर्य्य के सन्मुख होताहै त्यों हीं दृष्टि आतीहै, सदैव समदर्शी ईश्वरने कहाहै कि मैंने चन्द्रमाहींके लिये ये चालें बनाईहैं यथार्थ स्वरूप चन्द्रमा का यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३

बिद्वान् इस बातको मानते हैं कि मण्डल चन्द्रमा का उन्तीस भागों मेंसे एक भागहै और मण्डल उसका चारसौबावनमीलका है और ब्यास उसका एकसौ चवालीसमील कहाजाताहै और यही मति गणित कारोंकीहै ॥

चन्द्रमाके अधिक और न्यून प्रकाशके विषय में ॥

चन्द्रमाका मण्डल मैला और काला है उसमें प्रकाश करनेकी

शक्तिनहींहै बरन जितना प्रत्यक्ष दृष्टिआताहै इतना अर्द्धभाग उसका सूर्य्यके सन्मुख है वह सदैव प्रकाशित रहता है और जब सूर्य्यकेनिकट होताहै तो उसका प्रकाशितमुख सूर्य्यकीओर होता-जाताहै और अर्द्धभाग अप्रकाशित पृथ्वीकी ओर इसदशामेंचन्द्र-मा संसारसे अदृष्टिवान होजाता हैं केवल एक रात्रीभर और जब फिर कर सूर्य्यके सन्मुख आताहै तो प्रथम क्रमसे कि जिससेद्वीज से प्रयोजनहै दृष्टिआताहै और ज्यों २ क्रम २ से सूर्य्यके सन्मुख दूरीपर होताजाता है त्यों २ प्रकाशवान क्रम २ से होताजाता है यहांतक कि जब पूरा मण्डल चन्द्रमाका सूर्य्य के सन्मुख होताहै तो पूरा प्रकाशवान होताहै इसको पूनोंका चांद अर्थात् पूर्णमासी कहतेहैं तिस उपरान्त महीनाके अन्तमें ज्यों२ सूर्य्यकेनिकट होता-जाताहै त्यों २ प्रकाशित मुख उसका बुधकी ओर होताजाता है और जो अर्द्धभाग श्यामहै सो पृथ्वीकी ओरको यहांतक कि पृथ्वी के निवासियों के दृष्टिसे अदृष्टिवान होजाता है,जो महीना उन्तीस दिनका होताहै तो अट्ठाईसवीं रात्री को छिप जाता है इसीप्रकार मास२ प्रति घटा बढ़ाकरताहै और स्वरूप उसका नीचेलिखाहै॥

तसबीर नम्बर ४

व्याख्यान–चन्द्रग्रहणके बिषयमें„सूर्य्य और चन्द्रमाके मध्यमें पृथ्वीका आनाही ग्रहणका कारणहै„जिस समय चन्द्रमा एकबिन्दु अथवा दो बिन्दुरासिके निकट पहुंचताहै जहांसे कि सन्मुखहोना हैतो आगे आनेके समय पृथ्वी बीचमें बराबर आजातीहै तबचन्द्र-मा पृथ्वीके छायामें होजाता है उस समय चन्द्रमाका यथार्थस्वरूप जिससे श्याम स्वरूपसे प्रयोजनहै कष्टित दृष्टिआताहै और क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत बड़ा है इसलिये चन्द्रमाका छाया पृथ्वीपर गाजके रंगका प्रगट होताहै और बनावट उसकी पृथ्वीकेसदृशहै इसलियेजो प्रकाशकी किरणें सूर्य्यसे पृथ्वीपर परती हैं उनकोपृथ्वी रोकनहीं सक्ती किन्तु पृथ्वीको तोड़कर निकल जातीहैं औरदूसरी ओर मिलजाती है इसीकारण पृथ्वी का स्वरूप गाजरकासा दृष्टि

आताहै,,जिससमय चन्द्रमाका कुछभाग आगेबढ़नेको न रहै तोउस समय सम्पूर्ण मण्डल चन्द्रमाका पृथ्वीके गाजरके से रंगमें होगा तो उससमय सर्वग्रहण होजायगा और जो चन्द्रमाका मण्डलकुछ चलनेको शेषभाग रहगयाहै तो कुछ ग्रहण परैगा और कुछ नहीं और कभी गाजर के छाया से मिलाहुआ होताहै—अर्थात् कनारा उसका मिलाहोगा गाजरके रंगके सायाके कनारासे तो उसदशामें कुछभी ग्रहण न परैगा और यह उसीसमयमें होगा जब कि अर्द्ध-व्यास चन्द्रमा का अर्द्धव्यास छायाका दोनों बराबरहों और अर्द्ध-भागसे कुछ कमहोगा तो एक टुकड़ा ग्रहण पड़ैगा और उस समय चन्द्रमाका ऐसा स्वरूप होगा॥

तसबीर नम्बर ५

व्याख्यान—चन्द्रमाके गुणफल और स्वभावके विषयमें,, विद्वानों केनिकट यह बात सिद्धिहै कि चन्द्रमाका जो गुणहै सोतरीके कारणहै जैसे सूर्य्यका ऊष्णताके कारण और व्यापारका भरोसा इसतर्कणा का सिद्ध समाधान है,उसमें से नदी के पानी का घटना बढ़ना है जैसे जब कि किसी देशके नदीके पूर्व अथवा पश्चिम में होताहै तो उस तरफ का पानी बढ़जाता है और ज्यों २ चन्द्रमा ऊंचा होता जाता है त्यों २ वहांका पानी बढ़ताही जाता है यहां तक कि जब चन्द्रमा उसगांव के बीच आसमान पर पहुंचे तो पानीउस ठौर का बहुत बढ़जाताहै और जब उस देशके बीचसे चन्द्रमा हटनेलगताहै तो पानी नदियोंका घटनेलगताहै अर्थात् जब चन्द्रमा उसदेशके पश्चिम पूर्वमें पहुंचै उस समय नदियों का पानी अतिही कमहो-जाता है, जब फेरचन्द्रमा उसगांवके पूर्व्वसे आगेबढ़ताहै तो फिर यथापूर्व पानी नदियोंका बढ़नेलगता है यहांतक कि जब चन्द्रमा ठीक मध्य में पहुंचै उस समय नदी का जल परिपूर्ण होजाता है और जब चन्द्रमा उस नदी के पश्चिम को होजाता है तो फिर उसी प्रकार कमहोने लगता है और जब पूर्व्व में आता है तो फिर यथा पूर्बक बढ़ता है प्रथम बाढ़में तो बायुबेग से चलती है

और नदीमें लहरें उठने के कारण शब्दाघात अधिक होताहै फिर ज्यों२ चन्द्रमाका मण्डल फिरता जाताहै त्यों२ क्रम२से कमहोता जाताहै उस समय सब लहरें आदिभी कम होजातीहैं" जो कोई मनुष्य नदी के तटपर बैठकर देखे तो यह घटने बढ़ने का सम्पूर्ण हाल उसपर बिदित होजायगा प्रथम पानी उसठौरसे बढ़ने लगता है जहां कि गहराई अधिकहो और जगहमें फैलाव अधिकहो और पृथ्वी कड़ी हो और चन्द्रमा उसके निकट हो जिसमें नदीकी गहराईमें भापका अधिकत्वहो और घुटकर निकलनाचाहैं पर निकल नसकें इस कारण नदी में लहरें और शब्दाघात अधिक होता है औरजल ऊंचा होताजाताहै और जहांपर ये सम्पूर्णबातें नहीं तो वहां जलका घटना बढ़ना नहोगाऔर घटाव बढ़ाव उस ठौरकाहै जहां कि दिनरात सूर्य्यके उदयअस्तसे होताहै—और जो ज्वार भाटा कि महीनेमें एकबारआतीहैं उसके विपरीतिहोताहै औरसमुद्रके निकट निवासी कहतेहैं कि सूर्य्य और चन्द्रमा के घटाव बढ़ावसे सागर बढ़ता है और जब चन्द्रमा कमीपर होताहै तो दूसरे चन्द्रोदय तक कम होताजाताहै फिर यथापूर्बक बढ़ताहै इसीप्रकार प्रत्येक मास में घटा बढ़ाकरताहै जैसे चन्द्रमाके गुणोंमें से एकगुण तो यहहै कि जबचन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियाकी रगें रक्तसेपरिपूर्ण होती हैं और ज्यों२चन्द्रमा बढ़ताजाताहै त्यों २भरती जातीहैं और स्वभाव गरमहोता है और जब चन्द्रमा घटताहै तो रक्त जीवधारियों का कमहोताजाताहै और दुर्बलहोतेजाते हैं और कफपित्तवातादि भीतर की ओरको झुकते हैं और रगोंका सम्बन्ध रक्तसे कमहो जाता है और स्वभावमें रूखापन अधिकहोता है बैद्यजनोंपर यह भलीभांति विदितहै और बैद्यों की यह बाक्य (क़ौल) है कि समय को देखना और दिनोंका अन्तर निकालना चन्द्रमाके घटाव बढ़ावके अनुसार जैसे कोई मनुष्य शुक्लपक्षमें बीमारहो तो उसका चित्त रोगशान्ति की ओर अधिक होगा उसकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में बीमार हो किस हेतुसे कि चन्द्रमाकी बाढ़ चित्तको बलवान् करतीहै अर्द्धभाग

कृष्णपक्षमें बलवान् दुर्बल होजातेहैं और एक गुण यहहै कि जब चन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियों के बालतन के बहुत शीघ्र ऊगते और बलवान् ऐसे होते हैं कि उनका उखाड़ना बहुत कठिन होताहै और जब चन्द्रमा कमी की ओर होताहै तो उसके विपरीति अर्थात् बाल देरको निकलते हैं और बहुत कम ज़ोर होते हैं और उसके सिवाय जीव धारियोंके दूधकी वृद्धि होतीहै अर्थात् पहिले की अपेक्षा उस समय में कि जब बिधु पूर्ण होताजाता है जीवों की कुचोंमें दूध अधिक होजाताहै॥ इसी प्रकार जब चन्द्रमा न्यूनता पर होताहै तो दूध जीवधारियोंका उसीक्रमसे जैसे बढ़ाथा कमहोजाताहै" यह बात तो प्रकटहै क्योंकि गूदा आदमी के शीशका और सफ़ेदी अण्डांकी चन्द्रमाके पक्षमें बढ़जाताहै और अर्द्ध मास में फिर उसके बिपरीति होजाताहै और बिद्वानोंने कहाहै कि यह सम्पूर्ण बिवस्था चन्द्रमा के बिचल होने से एक ही दिनमें बदल जाती हैं अर्थात् जब कि चन्द्रमा पूर्व में होताहै तो दूध जीव धारियों का अधिक होताहै और गूदा उनकी हड्डियों का बढ़जाताहै और जो कदाचित् पक्षीकेपेटमें अण्डाहोताहै तो बड़ाहोता है और अण्डों से और जब चन्द्रमापश्चिममेंहो तो उसके बिपरीति होताहै और जब चन्द्रमा पश्चिम में होता है तो तत्काल इन सम्पूर्ण वस्तुओं में न्यूनता होजाती है जो मनुष्य इन सब बातों को भलीभांति परखा चाहे अच्छीतरहसे परखसक्ताहै, उसमेंसे एकबात यहहै कि आदमी चांदनी में बहुत बैठे तो उसके शिर में दरद और शरीर में आलस्य और ज़ुकाम अर्थात् श्लेष्मा होजाता है और चांदनी में मांसको धरदे तो उसकी बास और उसका स्वाद बदल जाताहै दूसरी बात मछलियों की है कि चन्द्रमा के प्रथम भागमें बहुत और मोटीहोती हैं और अन्तके भाग अर्थात् पूनोंसे अमावस तक कम और दुबली होती हैं इसको छोड़के और जीवों की ओर देखो चन्द्रा के प्रथम भाग में सर्प, बिछू, सिंह, व्याघ्र चीता और इसी प्रकार के मांसाहारी जीव अपनी भाट बिलों से दूसरे पक्षकी

अपेक्षा अधिक निकलते हैं बहुधा अहेर करने वाले जीव चन्द्रमा के प्रथम भाग में शिकारकी अधिक चाहना करतेहैं ॥ दूसरे वृक्षों को देखो कि जो वे चन्द्रमाके प्रथमभाग अर्थात् शुक्लपक्षमें लगाये जावें तो बहुत जल्द बढ़तेहैं और फलोंकी अधिकता होती है और जो वे कृष्णपक्षमें लगाये जावें तो देरमें बढ़तेहैं और कम फलते हैं और बहुधा सूखजाते हैं इसको छोड़ सम्पूर्ण वस्तु खेती तरकारी आदिदे जितनी वस्तु शुक्लपक्ष में बोईजातीहैं और उगतीहैं वे सब बहुत जल्दी बढ़ती हैं और कृष्णपक्षकी अपेक्षा जिह्वा को स्वादिष्ट मालूमहोती हैं जैसे सकृतालू, खरबूज़, खीरा, ककरी, लौकी, तुरई और यहबातें तो किसानों को भलीभांति मालूम हैं इसके सिवाय जब चन्द्रमाका प्रकाश मेवोंपर पड़ता है बहुत लाल पीलारंग निकलताहै उनकी अपेक्षा कि जिनपर शुक्लपक्ष का प्रकाश न पहुंचा हो और केवल शुक्लपक्षही में उनकी रंगत अच्छी होगई हो— कुमसा हट न तचन्द्रमा और कतांका (एक प्रकार का कपड़ा होता है जो चन्द्रमाको देखके टूक२होजाता है) देखलो कि चन्द्रमा को देखतेही टूकर होजाताहै ॥

यहप्रभाव प्रथम अर्द्धभागमें अधिकहोताहै उत्तरार्द्धकी अपेक्षा ॥ इसके सिवाय खानिकी वस्तुओं को देखो कि जो रत्न जवाहिरादि शुक्लपक्षमें निकलतेहैं उनकी सफाई और चटक भड़क उन रत्नोंकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में पैदाहोते हैं अधिक होतीहै ॥ विद्वान् तो इसको मानते हैं कि जो मनुष्य चाहै परीक्षा इसकीकरै कि अपनी बुद्धि कितनी बढ़तीहै और सरस्वती कैसी प्रबलहोती है और चांद घटनेलगता है तो कैसी हीनहोतीजाती है और परीक्षक को उचित है कि जब चन्द्रमा शुक्रके निकट सूर्य्य अर्थात् वृषराशिके स्थानमें हो तब नुसा अर्थात् बालउगने होने की औषधि का सेवन करै उस समय प्रकट होजायगा कि चन्द्रमा की अधिकता और न्यूनता के कारण कितना अन्तर होता है क्योंकि जब चन्द्रमा की बाढ़होती है उससमय बुद्धि चित्त बलवान् होतीहै तो बाल छोजते नहीं और

ओषधी का कुछ गुण नहीं होता वरन उससमय में जो कोई बाल उखारैं तो कष्टहोता है और कड़ेपन से उखड़ेंगे चाहै उसको बाल उखाड़ने की आदतभी हो इसलिये ये सम्पूर्ण बातें इसीका समाधान करती हैं कि जब चन्द्रमा बाढ़पर होता है तो चित्तकी वृत्ति बहुतही प्रबल होती है शरउलसमा एक सफ़ेदी आसमानपर है कि अरबदेश निवासी उसको शरउलसमा कहते हैं और फ़ारस के कहकशां और हिन्दुस्तान के हिन्दूपन्थ कहते हैं इसकी निर्णय किसी बिद्वान ने आजतक उसके वृत्तान्त में कोई बार्त्ता सत्य नहीं वर्णन की कि बुद्धि उसको अंगीकारकरे इसलिये कि जो कुछ उसकी प्रशंसा में लिखा है वह बुद्धिमें नहीं आसक्ता कोई कहते हैं कि छोटे२ उड़गण हैं एक२ के पास और अरबदेश वाले इसको उम्मुलनुजूम कहते हैं इसकारण से कि यह उड़गण उसमें एकत्रित होजाते हैं और पहिचाने नहीं जाते हैं और बादल के टुकड़े के सदृश दिखाईदेते हैं जाड़ों में पूर्व्वार्द्ध रात्रि में आकाश के किनारोंपर और गर्मियों में आकाश के बीच में उत्तर से दक्षिणतक और बनिस्बत हमारे चक्की की तरह घूमते हैं फिर दिखाईदेते हैं अर्द्धरात्रिको कि पूर्व से पश्चिम की ओर जाते हैं और परार्द्धरात्रि को दक्षिण से उत्तरको जो पश्चिमीय है वह दक्षिणीय होजाता है और जो दक्षिणीय है वह पश्चिमीय अतएव माता की दया से सम्पूर्ण उड़गणोंके वृत्तान्तकी खोजमेंहै और परमेश्वर उनके वृत्तांत को अच्छीतरह से जानता है कि वह गोल आकाशपर है और हमारी निस्बत चक्कीकी सदृश घूमता है या किसी और आकाश पर है उन आकाश से जिनका वृत्तान्तहुआ (तीसरीदृष्टि) वृहस्पति के आकाश के वर्णनमें॥ और वह अपने हद्दमें दोसतह गोल देखताहै एक दूसरे के सामने है दोनोंसतह की कीली दोनों संसारकी कीलीहैं औंधासतह उसका सतहमुक़ाअर शुक्रके आकाशसे मिलाहुआ है और सतह मुक़ाअर उसका सतह मुहद्दब चन्द्रितआकाशसे मिला है और १ बर्षकी मुद्दत में उसकादौरा पूर्वसे पश्चिम तक

सम्पूर्ण होताहै और जिसतरहपर अन्तरित चन्द्रित आकाशमें एक और आकाश खारिजुलमर्कज़है उसीप्रकार इस आकाशके अन्तरित-मेंभी एकआकाश और है कि उसका मर्कज़ संसारीमर्कज़से अलग है और खारिजुलमर्कज़ है कि उसको गोल आकाश कहते हैं और गोला आकाश के बीचमेंभी एक और ऐसाही आकाशहै कि उसको खारिजुलमर्कज़ आकाश कहते हैं और गोल आकाश वृहस्पति इस दूसरे आकाश खारिजुलमर्कज़ के बीचमें है और वृहस्पति उसीआ-काश में गड़ाहै इस सूरतमें वृहस्पति के दो उंचानहुये एक कुल्ली आकाश में और दूसरा गोलआकाशमें और ऐसेही दो निचानहोते हैं और हकीमलोग कहते हैं कि बीच मुतादिद आकाश का अर्थात् मसाफत दर्म्मियान सतह उच्च और सतह निम्न उसके तीनलाख अट्ठासीहज़ार चारसो बयासीमील है और यह सूरत वृहस्पतीय आकाशकी है॥

तसवीर नम्बर ६

वृहस्पति के फल का वर्णन॥

यह कि वह एकनक्षत्रहै किज्योतिषी उसकोव्यतिरिक्त कहते हैं इसवास्ते कि वह अच्छेके साथ अच्छाहै और नीचके साथ नीच है इसकेफल येहैं कि चपता व ज्ञान और बुद्धिका दाताहै और बिद्वानों के अनुसार तन इसका बाईस भागोंमेंसे एक भागहै अर्थात् पृथ्वी का बाईसवां भागहै और उसके तनका घेरा दोसौछियासी फर्सख़ हैं और व्यास उसके घेरेका दोसौतिहत्तर मीलहै और वह प्रत्येक स्थानमें सत्तरदिवस निवासकरता है उसकी चालबहुत धीरहै और सूर्य्यके चारों ओर हर दिवस फिरताहै ज्योतिषी कहते हैं कि जो वह आनन्द में अर्थात् शुभराशि के निकट हो तो उस समय जो लड़का पैदाहो तो वह लड़का अत्यन्त चतुर बिद्वान् औ बुद्धिमान् होता है और न्याय और गणित में बड़ा प्रबीण होता है और जो अच्छी दशामें नहीं अर्थात् अशुभ राशि के निकट होताहै तो उस सायत का जन्मा लड़का अतिही छली कपटी और झगरेलू होता है

सत्य ईश्वर जाननें हाराहै स्वरूप बुधकायहहै जो नीचे लिखाहै॥

तसवीर नम्बर ७

चौथा व्याख्यान शुक्र के विषय में॥

इसके दोमण्डलहैं और एक दूसरेके विपरीत हैं उसके मण्डल की धरातलका बाहिरी अंग मिलाभयाहै सूर्य्य मण्डलके धरातल के भीतरी अंगसे और उसकी धरातलका भीतरी अंग मिलाभया है बुधकी धरातल के बाहिरी अंग से और केन्द्र उसका पृथ्वी का केन्द्रहै और उसका फेरा पश्चिमसे पूर्व को अपनी नियत चाला-नुसार एक वर्षमें पूरा होताहै परन्तु इतना भेदहै कि उसके भीतरी मण्डलकी चाल कभी शीघ्र भी होती है और कभी न्यूनता के साथ प्रथमदशामें तो शुक्र सूर्य्यके आगे होता है और दूसरीदशामें पीछे होजाता है ईश्वर ने चाहा तो उसका सविस्तर समाचार ग्रहों के वृत्तान्तमें आवेगा और उसके ऊपर और नीचेकीधरातलके बीचमें अन्तर तीनहज़ार सातसौपञ्चानवे मील काहै और मण्डल उसका सूर्य्य मण्डलके सदृशहै और शुक्र मंडलकी सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ८

व्याख्यान शुक्रके फलके विषय में॥

ज्योतिषी लोग शुक्र को सादअसग़र अर्थात् थोड़ा शुभकर्त्ता कहतेहैं क्योंकि शुभता में बृहस्पतिसे कमहै और स्वरूप शुक्र का एक भागहै चौंतीस भागों में से अर्थात् पृथ्वी का चौंतीसवां भागहै॥ उसके मण्डलका व्यास चारसौ चौरानवे मील है और एकसेदश अर्थात् १० मील है और प्रत्येक स्थान में सत्ताईस दिन रहताहै और बुधके सदृश सदैव सूर्य्यके चारोंओर फिरता है ज्यो-तिषी कहतेहैं कि यह आनन्दका स्वामी है और कोई २ कहता है कि उसके दर्शनों से आनन्द होताहै यहांतक जिस किसी पुरुषको किसीके विरह का दुःखहो जोवह शुक्रको देखा करै तो विरहाग्नि की ज्वाला कमहोजाय यथादोहा॥

दो० विरहानल की ज्वाल को सकत न हृदय सँभार॥
चहौ शुक्र बिनती करहुं हर मम दुःख अपार १

और कोई२ कहताहै कि यह प्रीतिधाम है यहांतक कि विवाह के समय शुक्र देखताहो और शुभस्थानमें हो और उससमय पति अपनीस्त्री से रतिकरै तो उनदोनों स्त्री पुरुषमें ऐसीप्रीति होवै कि जिसके देखनेसे मनुष्योंको आश्चर्यहो और स्वरूप शुक्रकायहहै॥

तसवीर नम्बर ६

पांचवां व्याख्यान सूर्य्यमण्डल के विषय में।

सूर्य्यकामण्डल घिराभयाहै सन्मुख दोधरातलोंसे जोमण्डला-कार हैं और केन्द्र उन दोनों धरातलोंका पृथ्वीका केन्द्रहै उसकी धरातल का बाहिरी भाग मिला भया है मंगल की धरातल के भीतरीभागसे और सूर्यमण्डलकी धरातल का भीतरीभाग मिला भया है शुक्र की धरातल के बाहिरी भाग से और चक्र उसका पश्चिमसे पूर्वको ३१६ दिन और एक चौथाई में पूराहोताहै और उसके मण्डल के भीतर एकमण्डल औरहै और केन्द्र उसका पृथ्वी के केन्द्रसे हटाहुआ है जैसे तीन पूर्वोक्त मण्डलोंके विषयमें लिख चुकेहैं उनमें कुछ भेदनहीं वरन यहां पर सूर्यफलकतदवीर अर्थात् मण्डलको चक्र की ठौर है सूर्य्यमण्डल में मण्डल को चक्रनहीं है इससे ईश्वर की अत्यन्त दयाहै क्योंकि जो इसमें कोचक मण्डल भी होता तो और दूसरे ग्रहोंकी भांति यह भी फिरताहुआ जाता तो छः महीने गरमी रहती और छः महीने जाड़े की ऋतुरहती तो इसदशा में सूर्य्य एकध्रुव का ओर रहता तो अति गरमी होने के कारण बहुधा जीव मरजाते और वनस्पति जल जातीं और इसी प्रकार जो छःमहीनेतक सूर्य्य ध्रुवसेहटारहता तो जाड़ा बहुतहोता और गर्मी मिटजाती और जीवोंकी प्रकृति बदलजातीचक्र सूर्यका ऊपर और नीचे की धरातल के बीच तीनलाख पचपनहज़ार चौ-हत्तर मीलका है और स्वरूप सूर्य मण्डलका यह है॥

तसवीर नम्बर १०

जिर्म अर्थात् स्थूल सूर्य्यका सबग्रहों से बड़ा और प्रकाशवान् है और पृथ्वीके सदृशतीनसौ छप्पनवार है और व्यास सूर्यमण्डल

का यकतालीसहज़ार नौसे नब्बेमील है और निवास इसका सब स्थानोंमें एकसा नहींहोता किसीस्थानमें तो तीसदिन और किसी में तीस से अधिक और किसीमें उन्तीसदिन और नित्त एकस्थान को छोड़के दूसरेमें जाताहै ॥ ज्योतिषी लोग मानते हैं कि १सूर्य्य सम्पूर्ण ताराओं में राजा के समान है और २ चन्द्रमा मन्त्री और युवराज है और ३बुध लेखक और ४मंगल सेनापति और ५वृह-स्पति न्यायकार और ६ शनिश्चरकी साध्यक्ष और शुक्र सेवक है और जो मण्डल हैं सोई खण्ड हैं और जो स्थानहैं सोई शहर हैं और जो क्रमहैं सोई गांव और विस्तार उसका मकान है और यह उपमा बहुत ठीक है और ईश्वर की आश्चर्य्ययुत माया यह है कि उसने सूर्य्य को चौथे मण्डलपर जड़ा है जिसमें उसकी गरमी से संसारिक बस्तु स्वाभाविक स्वभाव को लिये रहें ॥

क्योंकि जो वह तारा मण्डलपर होता तो तत्त्व उससे दूरपरते तो सम्पूर्ण तत्त्व संयुक्त पदार्थ खराब होजाते ॥ और जो प्रथम मण्डल अर्थात् चन्द्रमाके मण्डलपरहोता तो मारे गरमी के पदार्थ जलजाते एक भलाई ईश्वर ने और की है कि उसको दौड़ने द्वारा नियतकिया है और एक ठौरपर ठहरने भी नहींदिया क्योंकि एक ठौर ठहरता तो वहां ऊष्णता अत्यन्त होती और दूसरी ठौर शीत होता इस विषय में ईश्वर की अत्यन्त बुद्धिमानी है कि पूर्व से उदय होकर पश्चिम में अस्तहोता है इसलिये कि पृथ्वी खुलीहुई है जिसमें इसकी किरणेंपरनेसे पृथ्वी फलदायकहो प्रत्येक सम्बत में दो झुकाव करता है एकबार सम्बतभर में उत्तरायण और एक बार दक्षिणायन जिससे ये दोनों किनारें भी उससे लाभ उठावें प्रथम उत्तर की ओर को जाता है क्योंकि वह देशान्तर का भाग बहुत विस्तारिक है फिर उसओरसे फिरता है दक्षिणको इसलिये ईश्वर की वाक्य से यही प्रयोजन है ॥

व्याख्यान सूर्य ग्रहण के विषय में ॥

ग्रहणपरनेका यह कारण है कि चन्द्रमाका मण्डल हमारी दृष्टि

और सूर्यके मध्यमें आजाताहै क्योंकि चन्द्रमा का मण्डल श्याम है वहसूर्य्यका अवरोधकहोजाताहै इसलिये वहहमारी दृष्टिसे छिप-जाताहै जब किचंद्रमा सूर्य्य के निकटहो किसी एक अथवा दो बि-न्दवोंपर ध्रुवकेहोतो चन्द्रमा सूर्य्यके नीचे२ चलताहै तो सूर्य्य हमारी दृष्टिसे छिपजाताहै क्योंकि चन्द्रमा हमारीदृष्टि और सूर्य्यके बीचमें होनेके कारण अवरोधक होताहै प्रकाशका क्योंकि जो किरणेंहमारी आंखोंसे निकलतीहैं तो पहुंचकर मख़रूती छायापर परतीहैं और त्रिकोण उसका दृष्टि विन्दु है निदान जब दृष्टि हमारी निकलतीहै वह प्रथम चन्द्रमापर परतीहै इसीसे सूर्यनहींदृष्टिपरते हैं फिर जो चन्द्रमा से सम्बन्ध अपने स्थान से न होगा तो उससमय चन्द्रमा चन्द्रमण्डल के बीच में होगा तो सूर्य्य बिल्कुल खुलारहेगा और जो चन्द्रमा अपनी ठौरपर हो तो मण्डल उसका दृष्टि के सन्मुख होगा उससमय सूर्य्य कुछही दृष्टि आवेगा और थोड़ासा छिपार-हेगा यह उससमय होताहै जब कि मण्डल थोड़ाहो अर्थात् दोनों सूर्य्य और चन्द्रमाके व्यास आधेहों अर्थात् दोनोंके सदृश तो जब मख़रूत अर्थात् गाजर के रंगका छाया चन्द्रमापर पूरा आयजाय-गा तो उससमय सूर्य्य अलगहोने के कारण प्रकाश होनेलगेगा इसदशा में ग्रहण थोड़ीदेर तक परैगा और समयकी थुराई और बहुताई मनुष्यों की दृष्टि और देशानुसार होती है और किसी २ शहर में ग्रहण नहींपरता और सूर्य्यग्रहण की सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ११

सूर्य के गुण और स्वभाव के विषय में ॥

जानना चाहिये कि सूर्य्य के स्वभाव बहुतहैं और गुण और स्वभाव सूर्य्यके उल्वियात अर्थात् आकाशसम्बन्धी समाचार और सफ़िलियात् अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धी में अपूर्व आश्चर्य्यक हैं स्वे-भाव जो उल्वियात अर्थात् आकाशी समाचारके अनुसार ये हैं कि उसका प्रकाश अद्वैत है और सम्पूर्ण तारागणों का प्रकाश उसके सन्मुख छिपजाताहै और जो गुण चन्द्रमा में हैं वे सम्पूर्ण

सूर्य्य से प्राप्तहोते हैं स्वभाव उसका सिफलियात् अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धी समाचार के अनुसार यह हैं कि जब सूर्य्यकी गरमी नदी समुद्रादि पर परतीहै उससूर्य्य की गरमी के कारण जलमेंसे भाफ उठतीहै तो वही भाफ जो जल के अत्यंत छोटे२ कण ऊपर जाकर ठण्ढपाने से जमकर बादल होजाते हैं और वायु उन बादलों को दूर २ उड़ाकेजाती है और जहां पर जलकी आवश्यकता होती है वहां जल वर्षताहै यही संसारका हिसाबहै और उनसे नहरैं और सोते बहते हैं जिससे जीव और बनस्पति और धातु आदि बनेरहें उनमेंसे जो बस्तु पृथ्वी से निकलतीहैं उनका व्याख्यानहै कि जल के कण माटीके साथ मिलते हैं तो एक प्रकार की चिकनाहट पैदा होतीहै और सूर्य्य उनको उपाता है तो नानाप्रकारकी बस्तु धातु-संज्ञक पैदाहोतीहैं जैसे सोना,चांदी,तांबा,लोहा,शीशा,लाल,हीरा पन्ना,गन्धक,हरताल,लोन,फिटकरी आदि पदार्थ निकलते हैं और जोर गुण उनके हैं,सो छिपेनहीं हैं फिर अब बनस्पतिको देखो कि जहां सूर्यकी गर्मी पहुंचतीहै वहांवृक्ष उत्पन्नहोतेहैं और घनेहोते हैं और घास होतीहै जहां सूर्य्यकी गरमी नहींपहुंचती वहां कुछ नहीं जमता देखो जैसे बड़े२ वृक्षोंके नीचे जहां सूर्य्य की धूपकी गरमी नहीं पहुंचती वहां कुछभी नहींउगता जोकोई सूर्य्यके गुण स्वभाव की परीक्षा लेनाचाहै तो कमल और सूर्य्यमुखीको देखले कि भानू-दयके समयसे ये बस्तु कैसी बलवान् होतीजातीहैं जब सूर्य्य आस-मानके मध्यमें आताहै तो इनका बलपूरा होजाताहै और जबदोपहर केसमयसे सूर्य्य कमीकीओर होताहै तो ये बस्तुभी कम और निर्बल होतीजाती हैं और जब दूसरे दिन सूर्य्योदय होताहै तो फिर सम्पूर्ण वस्तु यथापूर्वक शक्तिवान् होजाती हैं इसी प्रकार जीवों को देखो कि जब प्रातःकाल सूर्य्य उदयहोताहै तो उनके शरीर में शक्ति और चित्त प्रसन्नहोता है और ज्यों २ सूर्य्य ऊंचा चढ़ताजाता है त्यों २ उनकी शक्ति और आनन्दबढ़ता जाता है और जब सूर्य्य मध्य से पश्चिम को ढुलताहै तो उनकी शक्ति आनन्दघटता जाता है उसी

समय तक जबतक सूर्य्य अस्तहोवे औ जब सूर्य्यग्रदृश होजाता है तो जीव अपने घरों की ओर झुकते हैं और वहां मृतक की भांति परेरहते हैं जब रात्रिबिहाय प्रातःकाल होताहै तो सम्पूर्ण जीव अपनी पिछली दशामें आजाते हैं॥ सत्य तो ईश्वर ही जानता है परन्तु सूर्य्य के सम्पूर्ण गुणोंमें से एकगुण यहभी है कि जिन देशों के ध्रुवकी ओर सूर्य्य रहताहै जैसे हवशी तो वहांके निवासियों का रंगकाला होताहै और मारेगरमी के उनका चेहरा काला और कुरूप होता है और शरीर आदमियों का रूखा और स्वभाव और प्रकृति उनकी मांसाहारी पशुवोंकीसी होती है और जो लोग ऐसे देशोंमें बसते हैं कि जो सूर्य्य से दूरहैं जैसे रूस और सकालिया-दि तो वहांके निवासियों का रंग कच्चा और श्वेत करता है और उनके चेहरों को चौड़ा और शरीर को मोटाकरता है और आदतें और कर्म्म स्वभाव उनके पशुओंके सदृश होते हैं सूर्य्यके गुणोंमेंसे एक यहभी है कि ब्राहिमा लोग कहते हैं कि सूर्य्य प्रत्येकस्थानमें तीनहज़ार वर्षतक ऊंचा रहताहै और छत्तीसहज़ार वर्ष में मण्डल भरमें फिरताहै॥ इनदिनों सन् ६६४ हिजरी में वास उसकाजौज अर्थात् मिथुन स्थानमें है॥ ब्राहिमा इसीबात पर आरूढ़हैं कि जब दक्षिणायन स्थान बदलता है तोपृथ्वीकी रचना बदलजातीहै इस प्रकार जो वसगितई सो तो उजाड़ होजाती है और जो उजाड़ है वहां बसजाता है नदी सूख जाती हैं और जंगल नदी होजाती हैं उत्तर दक्षिण होजाताहै और दक्षिण उत्तर होजाता है इसकेसत्या-सत्यका जाननेहारा तो ईश्वरहीहै॥

छठाव्याख्यान--मंगलके मण्डल के विषय में॥

इसके मण्डल में दो धरातल हैं और एक दूसरे के सन्मुख है और उनदोनों धरातलों का केन्द्र पृथ्वीका केन्द्र है अर्थात् उसकी धरातलका बाहिरीभाग बृहस्पति के मण्डल के भीतरी भाग को स्पर्श करताहै और उसके मण्डलका भीतरीभाग सूर्य्यमण्डल के बाहिरी भागको स्पर्श करताहै चक्र उसका अपनी चालानुसार

दक्षिण से पूर्वकी ओर एकवर्ष दोमहीना ओर बाईस दिन में पूरा होताहै ओर उसके मण्डलकी सूरत चन्द्रमा अथवा शुक्रके मण्डल की सी तद्रूप है इसलिये कुछ उसके व्याख्यान की आवश्यकता नहीं ओर उसके स्थूलका व्यास अर्थात् उसके गोलाकार की मुटाईवतलीमूस (ज्योतिर्विद) के वाक्यानुसार बीसकरोड़ तीनलाख छिहत्तरहज़ारनौसैअट्ठानबेमील है गुण ओर प्रकृतिउसकीये हैं कि ज्योतिषी लोग उसको नहस असगरअर्थात् छोटी अमांगल्यकहते हैं इसलिये कि वह शनिश्चर से कम अमंगलहै ओर क्रोध ओर वधादिक कर्म्म सम्बन्धी है ओर स्थूल उसका पृथ्वी के स्थूल से ज्योढ़ा १ ½ है ओर उसकाव्यास नवलाख अस्सीहज़ार आटसै पैंतीस मीलहै ओर जब एकस्थान को छोड़ दूसरी ठौर जाताहै तो वहां ४० दिनरहताहै ओर प्रत्येकदिवस में ४० दर्जे जाताहै ओर जो कोई मनुष्य प्रमाणचाहै तो महसवती किताब (मुसल्मानों में एक ज्योतिषकी पुस्तक) कोदेखे॥ स्वरूप मंगल का यहहै॥

तसबीर नम्बर १२

सातवां व्याख्यान--बृहस्पति मण्डल के विषय में॥

इसके मण्डल के भी दो धरातल हैं धरातल का बाहिरी भाग शनिश्चर मण्डल की भीतरी धरातल से मिलाहै ओर धरातल का भीतरी भाग मंगल के धरातल के बाहिरी भागको स्पर्श करताहै केन्द्र दोनों धरातलों का पृथ्वीकाकेन्द्रहै ओर अपनी चालके अनुसार ग्यारह वर्ष दशमहीने पन्द्रहदिन में पूरा होताहै ओर उसके स्थूलकी मुटाई अर्थात् भीतर ओर बाहिरी कनारों का बीच बीस करोड़ तीनलाख बत्तीस हज़ार चारसौ बत्तीस मीलहै ओर सूरत बृहस्पति की यहहै॥

तसबीर नम्बर १३

प्रकृति ओर स्वभाव येहैं कि ज्योतिषी इसको अत्युत्तम कहते हैं कि यह मंगल मयहै किसहेतु से कि शुभ ओर मंगलमें शुक्रसे

बढ़करहै और बड़प्पन इसमें बताते हैं और स्थूल उसके मण्डल का पृथ्वीसे ८४ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{4}$ चौरासीसही औरएकतिहाई और एक चौथाई गुणा बड़ाहै और व्यासउसका ४ $\frac{1}{10}$ चारसही एकबटाहुआ दशगुणा पृथ्वीके व्याससे अधिकहै और नित्त पांचदर्ज़े जाताहै और उसका मण्डल तद्रूप चन्द्रमा कासाहै उसकावर्णन करनेकी कुछ आवश्य-कता नहीं है किसहेतुसे कि पूर्वोक्त मण्डलों के देखनेसे सबविदित होजायगा॥

आठवां व्याख्यान--शनिश्चर के स्थानके विषय में॥

इसके दो धरातल हैं और एक दूसरे के सन्मुख हैं और केन्द्र दोनों धरातलों का पृथ्वीका केन्द्र है और इसकी धरातल का बा-हिरी भाग तारा मण्डल की धरातल के भीतरी भागको स्पर्श करता है और धरातल का भीतरीभाग बृहस्पति के मण्डल के बाहिरी अंगसे स्पर्श करता है और चक्र उसका पश्चिमसे पूर्व को उन्तीस बर्ष पांचमहीने छःदिन में पूरा होजाता है और मण्डल उसका पूर्वोक्त मण्डलोंके सदृशहै अर्थात् शुक्र शनिश्चर बृहस्पति मंगलादि इसलिये उसके व्याख्यानकी कुछ अवश्यकता नहींहै॥ बतलीमूस (एकज्योतिर्विद) कहता है कि उसके मण्डलके स्थूलका दल २१०३३६६०६ इक्कीस करोर तीनलाखछत्तीस हज़ार छासौ छःमीलहै और स्वभाव ज्योतिषी लोग कहतेहैं कियहअत्यन्तअशुभ है इसकी अशुभता मंगलसे अधिकहै और मृत्यु, नष्टता, और शो-कका दाता है और स्थूल उसका पृथ्वीके स्थूलसे ८१ $\frac{1}{10}$ इकयासी सही एकबटा हुआ गुणअधिकहै और व्यासउसके मण्डलका पृथ्वी के व्याससे ४० $\frac{2}{3}$ चालीस और दोतिहाई गुण अधिकहै॥ ज्योति-षियोंके निकट शनिश्चर के दर्शन शोक, दरिद्रता और भ्रमनाकादा-ताहै जैसे बृहस्पति के दर्शनों से आनन्द और लक्ष्मी प्राप्त होती है उसी प्रकार इसके दर्शनोंसे ये अशुभ बस्तु प्राप्तहोती हैं स्वरूप शनिश्चरका यहहै॥

तसबीर नम्बर १४

ब्याख्यान - नखत, उनकी चाल और सिधाईके बिषयमें ॥

जिससमय मण्डलकोचककीचाल बड़े अर्थात् घेरेहुएमण्डलकेअनुसार होतीहै तो उस समय नखत ठीक२ औरसूधे दृष्टिआतेहैंकिस हेतुसे कि बड़े और छोटे दोनों मण्डलोंकी चाल इकट्ठाहोती हैं इसलिये नखतों की चाल बढ़जाती हैं और सिधाई को चकमण्डल के धरातल के बाहिरी कनारेसे होतीहै और केन्द्रछोटे नखतोंका कोचक मण्डल परहोवे तो कोचक मण्डलकी चाल घेरनेवाले मण्डल के विपरीत होती है इसलिये जबतक छोटे मण्डल की चाल बड़े मण्डलसे कमती रहती है तोउस समय नखत सीधादृष्टि आताहै, बरन जिस समय वह कमचलताहै तो उसकी चालमालूम नहींहोती और जब उसकी चालबड़े मण्डलसे अधिक होतीहै तो नखतफिरता दृष्टिआता क्योंकि यद्यपि बड़ाही मण्डल छोटेको चलाताहै तदपि उसकी चालबड़े मण्डल से अधिक होती है जैसे बड़ा मण्डल एक हिस्सा चलताहै तो छोटादो चलता है एक हिस्सा बड़ेसे आगेही रहताहै तो एकहिस्सा उससे अधिक रहताहै तो इसदशा में नखत फिरता दृष्टिआता है और जबचालें बड़े और छोटे दोनों मण्डलों की सम होती हैं तो नखत सीधादृष्टि आता है ॥ जो उसका यथार्थ जाननाचाहैं तो मानलेंगे उसकी सिधाईके अनुसारनहीं ॥ जैसे एकरेखा पृथ्वी के केन्द्रसे हटीभई इसप्रकार खड़ी खींचें जो नखतके स्थूलको काटतीहुई ऊपरके स्थान तक पहुंचे और इसीप्रकार चालकेसमय एकरेखा और मानलें तो इसप्रकार उसकीचाल और सिधाई ठीक२मालूमहोजायगी और स्वरूपनखतोंकायहहै॥

तसबीर नम्बर १५

अध्याय नवां--तारामण्डल के विषय में ॥

तारामण्डल के दो धरातल हैं और एक दूसरेके सन्मुखहै और केन्द्र उनदोनोंकापृथ्वीका केन्द्रहै ॥ उसकी धरातलकाबाहिरीभाग महामण्डल की धरातल के भीतरीभाग से मिलाहै और वहमण्डल

सम्पूर्ण मण्डलोंको घेरेहुये है और फिराताहै इसके धरातल का भीतरी भाग मिलाहै शनिश्चर के मण्डल के बाहिरी भागसे यह मण्डल भी पूर्व से पश्चिमको चक्रदेताहै और अपनी चालके अनुसार एकसौ बर्षमें एकदर्जा से दूसरेपर जाताहै इसप्रकार छत्तीस हज़ार वर्षमें इसका चक्र पूराहोताहै और दोनों ध्रुव मध्यरेखा के दोनों कनारों से मिलेभये हैं कि जिसपर सूर्य्य चक्रदेता है ईश्वरने चाहा तो उसका बयान बहुत बतलीमूस और नैयरस्द (ज्योतिर्विद) और दूसरे ज्योतिर्विद विद्वानों से जो इसके पहिले बीतजाचुके हैं प्रकटहुआहै कि सम्पूर्ण तारागण इसीमण्डल में जड़ेहैं और अपने मण्डल की चालानुसार भ्रमित हैं और उसके मण्डल की मुटाई भीतरी और बाहरीकनारोंके बीच चौंतीसहज़ार सातसौ चवालीस मीलहै बतलीमूसने लिखाहै कि महामण्डल का व्यास एकअरब इक्कावनकरोड़ पांचलाख तीसहज़ार एकसौ चौरासी मीलहै व्यास्थूल उसतारा का जो महामण्डल के ऊपर है ९४ (चौरानबे सही एकबटा पांचगुणा पृथ्वीके स्थूलसे अधिक है और छोटेसितारों का स्थूल जो छठे दर्जे भारी हैं पृथ्वी से अट्टारह गुणा अधिक है जो कदाचित् कोई मनुष्य सन्देह करके इसको झूठ कहे कि यहतो पृथ्वी पर रहता है इसने आकाश और वहांके तारागणों की माप क्योंकरकी तो यहबात उसकी सुनने के योग्य नहीं इसहेतु से कि जो बस्तु उसको न नमालूमहो तो क्यायह अवश्यहै कि दूसरा भी न जाने जो मनुष्य गणितविद्या में अभ्यास रखताहो तो उसको कुछ समझना कठिननहीं क्योंकि प्रत्येक कामके लिये एक मनुष्य है क्योंकि ईश्वरनेकहा है कि हमने अपनीसृष्टिमें मनुष्यको सर्बोपरि कियाहै और बुद्धिदीहै उसको बहुतसी बस्तुजाननेके लिये ॥

व्याख्यान—तारोंके विषयमें—जानना चाहिये कि तारामण्डल परइतने ताराहैं कि वे मनुष्यकी बुद्धिसे बाहिरहै कि वह उनकोगिन सकै परन्तु पुराने बिद्वानोंने लिखाहै कि एक हज़ारबाईस नखतहैं उनमेंसे नौसौसत्रह नखततो ऐसेहैं कि उनसे अड़तालीस सूरतें और

बनतीहैं और प्रत्येक सूरतमें कईतारा हैं बतलीमूसने अपनी किताब मजसतीमें लिखाहै कि कुछेकतो उत्तरीय अर्द्ध मण्डल पर औरकुछेक मध्यमें जो सितारोंका रास्ता है और कुछकोंको दक्षिण अर्द्ध मण्डल पर और प्रत्येक सूरतका नाम अलग २ करके इसप्रकारसे कि जो ताराजिसचीज़ अथवा जीवके सदृश दृष्टिआया उसीके नामसेउसको प्रसिद्ध कियाहै,, जैसे जिसका स्वरूप मनुष्यके सदृश दिखाई परा उसको मनुष्यके नामसे और जो पशूकी सूरतके समान देखाउसको उस पशूके नामसे कोई मनुष्यके नामसे जैसे मिथुन और कोई जल-चारीके समान जैसेसरतां अर्थात् कर्क और कोई थलचारीके समान जैसे हमल, अर्थात् मेष कोई पक्षीकीसूरतके समान जैसे उक़ाव और कोईऐसे किजिनकीसूरत प्रकट नहीं जैसेमीज़ां अर्थात् तुला और कोई ऐसेहैं कि जिनकी सूरत पूरीनहीं उनके सदृश हैं जैसे क़ता-तुलफ़रस-और बहुतसे ऐसी सूरतेंहैं कि जिनका आधाअंग तोएक जीवका और आधा दूसरे जीवका जैसे रामी और कोई २ स्वरूप ऐसेहैं कि वे पूरेही नहींहोते जबतक उनके साथ दूसरे ताराकासं-योग न हो जैसे ममसकुलअना-कि जिसका स्वरूप पूराही नहीं होता जैसे तारा नैयर जो उत्तरकी तरफ़ वृषके पासहै और उसके साथ न मिलायाजावे तो वृषके निकट शनिश्चरके ऊपर ममसकुल अनाहोंगे परन्तु इन सूरतों का इसलिये वर्णन इन नामोंके साथ किया है जिसमें प्रत्येक सितारे को उसनामसे पहिचान लेवें और उसकी ओरइशाराकरसकें कि उसका स्थानकहांहै और उसकीबना-वट कैसीहै और फिर उत्तर दक्षिण उस रेखासे जो धन और मकर के बीच उत्तरीय ध्रुवके ऊपरसे जातीहै कितनीहै और स्त्रीकाबिचार भली भांति करसकें शेष एकसौ अठारहतारा हैं उनमेंकोईसूरतसंयुक्त नहींहैं इसलिये जो ताराजिस सूरत के पास वहहै उसीके नामसे उसको प्रसिद्ध किया है और खारिजुल सूरत (स्वरूपके बाहिर) उनका नामरख दियाहै जैसे वह तारा जो मेषके ऊपरहै अरबदेशीय उसको नाज़िम कहते हैं उन अड़तालीस सूरतों मेंसे इक्कीस अर्द्ध

उत्तरीय भागमें हैं और बारह फलकुलबुर्ज परहैं और पन्द्रह अर्द्ध दक्षिणीय भागमेंहैं इसलिये अब हरएककी सूरत और नामपृथक्२ और जितने तारा उनसे सम्बन्ध रखते हैं अरबदेशीय ज्योतिर्विदों के अनुसार लिखते हैं ॥

सूर्य शुमालिया (पुस्तक–अबदुलरहमान अगले दिनों अरब में ज्योतिर्विद हुआ) वह इक्कीस सूरतें हैं और जिनका कोई स्वरूप नहीं वे उन्तीस हैं तो इसलिये अब अर्द्ध उत्तरीयमण्डल में तीनसौ साठहैं दुब्बय असग़र (दुब्ब–रीछ) (असग़र–छोटा) उत्तरीय ध्रुव के निकटहैं और उसकी मुख्य सूरत अनुसार सातसितारेहैंजिनके स्वरूप नहीं लिखे वे पांचहैं अरबदेशीय उनसात को बनातुलनाश लड़कियोंका खटोलाकहते हैं और उनमेंसे चारसूरतें समकोण चतुर्भुजकेसदृशहैं उनकोनाश(खाट) कहतेहैं और तीनतारे जो दुम्बाल की ओर हैं उनको (लड़की) बनात कहतेहैं और उन चारतारोंमें से दोको जो उन्हींके तारे हैं फरक़दीं बोलतेहैं और जो तारेदिनियाल की ओरको हैं उनको मकर कहतेहैं इसीसे दिशा अर्थात् पूर्व पश्चिम जानीजातीहैं ॥

जब सम्पूर्ण तारों कि जिनकी सूरत है और जिन की नहीं है एकट्ठासमक (मछली–ऊँचाई) की ओर देखें तो और समके सदृश मालूम हों तो उनको फांस कहते हैं क्योंकि वह उसी की सूरत हैं और कुतुब बीच में रहता है और कुतुब दायरय मोहल उलक़ार मकर बहुत निकट है दब्बय असग़रो (छोटारीछ) की यह सूरत है जो लिखी है ॥ तसबीर नम्बर १६

कोकबदुब्बयकबीर (सितारा बड़ेरीछसमान) ये लिखीहुई सूरत में उन्तीस हैं और ८ तारे बाहिर स्वरूप हैं अरबदेशीय चार को जो समकोण चतुर भुजके समानहैं और तीन जो दुम्बाल अर्थात् पूंछपरहैं उनको बना तुलनाश कुबरीअर्थात् लड़कियोंकी बड़ी खाट बोलतेहैं येचारनाशहैं और तीनबनात फिर इन तीन तारोंमें से जो तारा किनारे दुम्बाल पर हैं उसको क़ायद कहते हैं और जो बीच

मेंहै उसको अनाक़ और जो नाशके निकट दुम्बाल परहै उसको जर्ज़कहते हैं और अनाक़के पास एकछोटासा तारा है उसको सुहा कहतेहैं और उससे अपनी दृष्टिकी परीक्षा लेतेहैं और छहतारे और हैं उसकी राहमें एक २ क़दम पर दोतारे उनको अरबदेशीय फ़क़-रातुलतवा कहते हैं और वह सितारा कि जो दाहिनी पांवपर है उसके पास एक सितारा और है उसको सर्फ़ा कहते हैं और वह सिंहकी पूंछपरहै और थोड़ेसे तारे सर्फ़ाके ऊपर एकट्ठाहैं उनको नैयर शावान कहतेहैं और सात सितारे औरहैं उनकी गरदन,छाती और जांघोंपर अर्द्धघेरा के समान दृष्टिआते हैं उनका नाम शरीर नवातुलनाश कहते हैं और कोई २ उनको हौज़कहते हैं और कुछ तारे नाक,कान,और उसकी आंखों के पासहैं उनको तवाकहते हैं मानों असदसनाके हौज़पर खड़ाहै और दोतारे उनआठ तारोंमेंसे जिनका स्वरूप नहीं लिखा कि जो सलवा और क़ायद के बीचहैं और एक उनदोनोंका अधिक प्रकाशितहै अरबदेशीय इसको कबद उल्लासूद कहते हैं और छहसितारे जो बाक़ीहैं वह दाहिने हाथपर हैं जो तीन उनमेंसे प्रकाशवान्हैं उनको तवा और शेषोंको औलाद तवाबोलतेहैं और सूरत दुब्बय अकबरकी यहहै (बड़ारीछ) ॥

तसबीर नम्बर १०

कवाकिबुत्ततीनअर्थात् अजग़रकेसदृशतारा--इसमें इकतीसतारे हैं और सबकी सूरतमें हैं कोईतारा ऐसानहीं जो स्वरूप से बाहिर हो और जो तारा उसकी ज़बान परहै उसको अरबदेशीय रवाक़िप बोलते हैं और चारसितारे उसके शीशपर हैं उनको अवायद और एक सितारा छोटासा अवायदमेंहै उवा अर्थात् ऊंटका बच्चाकहतेहैं और दो सितारे जो पीछे ज़ेवयन अर्थात् दो भेड़ियोंके हैं उनको नैयरैन कहते हैं और दो सितारोंमेंसे जो एक प्रकाशमें कमहै और ज़ेवयनके आगेहैउनको मुतफारज़ैव कहतेहैं और जो थोड़ेसे सितारे ज़ेवयनके और नैरयनके बीचमें मोड़के निकट रिवा (ऊंटके बच्चा-समान) पर स्थित हैं अरबदेशीय इनकोज़ेवयन इसलिये कहते हैं

कि वे मानों भेड़ियेहैं और ऊंटके बच्चेपर टूटरहेहैं और अवापद की उपमादीहै चारउनमेंसे जोघेरेहुये हैं वह मानो उसकोचाहतेहैं कि भेड़ियोंसे बचालें और एकतारा और मुख्य दुम्बाल (पूंछ) पर है वह अधिक प्रकाशवान है उसको अरबदेशीय जावह कहते हैं क्योंकि वह कफ़तारबिज्जूका पुल्लिंगहै ॥.

तसवीर नम्बर १८

तारा– फ़िक्रा ऊश तुलमुलत हव (भड़कने वालेकेसमान)इसके स्वरूपमें इक्कीस तारेहैं और दश स्वरूप के बाहिर हैं ताराजातुल कुर्सी(कुर्सीपरबैठनेवाली)और मकरके बीचमें जो दुजाजा (मुर्गीरूप) के पूंछ पर प्रकाशितहै उसको रुफ़ और जो उसकी छातीपै है उस को क़रहा कहतेहैं और जो उसके दाहिने कन्धे पर है उसको फ़र्क़ कहते हैं जो तारा ज़रआ और बाहिरी तारा और दुजाजा (मुर्गी) के भुजासे बनताहै उसको क़दर कहतेहैं और जो दाहिने पंखपरहै उसकी राई अर्थात् चरवाहा और जो पैरोंके बीचमें छोटासा तारा बांये पैरकी तरफ़ झुका हुआहै उसको कलीब उलराई अर्थात् चरवाहेका कुत्ता कहतेहैं और जो छोटे २ तारे उसके पैर और मकरके बीचमें हैं उनको अरब देशीय भेड़ें कहते हैं आगे सांच का बतानेवाला तो ईश्वरही है ॥

तसवीर नम्बर १९

तारासैयाह– अर्थात् फिरने वाला इसमें तेईस तारे हैं जिनमें से बाईस तो स्वरूपमें हैं और एक स्वरूप के बाहिर है और वह मनुष्यके स्वरूप समानहै दाहिने हाथमें आसा (दण्ड) लिये बनातुलनाश लड़कियों की खाट और फ़िका के बीच में खड़ा है और तारा उसके दाहिने मूढ़े परहैं उनको सना कहते हैं और जो कि बांयेहाथ और बाज़ूपर और जो उसकी गरदन पर छोटे२ तारा हैं उनको सना की औलाद कहतेहैं और बाहिरी तारोंमेंसे एकतारा उसकी दो रानोंके बीचमें प्रकाशित है उसको अरबदेशीय समाकरामा–हारिसुल समा–हारिसुलसुमाल कहते हैं क्योंकि वहसदैव

प्रकाशित रहताहै और सूर्य्यके प्रकाशसे छिपता नहीं जो सितारा उसके बांयें टांगपरहै उसको रमा कहतेहैं॥

तसबीर नम्बर २०

तारा अकलील शुमाली (अकलीलताज़ अर्थात् उत्तरीयताज) ये तारे अफ़क़ा परहैं यह आठ तारे मिलकर स्वरूप बनताहै और सैयाह के आसाके (दण्ड) पीछे हैं और अच्छी तरह गोल नहीं हैं किन्तु टूटे कटोराके समानहैं इस लिये फ़ारसदेशीय इनको कासय दुर्वेश अर्थात् भिक्षुक पात्र कहतेहैं और इन तारोंमेंसे एक तारेका नाम इफ़का कहतेहैं और स्वरूप उसका यहहै॥

तसबीर नम्बर २१

ताराजासी (नाचने वालेकी सूरत) इसको राक़िस (नाचनिया) भी कहते हैं यह आदमी के स्वरूप के समान है दोनोंहाथ फैलाये हुये और दोनों जांघोंको टेढ़ी कियेहुयेहैं और दाहिना पांव उसका सैयाहके आसाकी ओरहै और बांयांपांव उन तारोंकी ओरकोहै जो तनीन (अजगर) के शीश पर हैं और उनको अवायद कहतेहैं (बीच में पड़नेवाले) और इसमें अट्ठाईस तारे हैं उस ताराको छोड़के जो इसके और सैयाहके बीचमें है और एक तारा स्वरूप के बाहिर है और स्वरूप यह है॥

तसबीर नम्बर २२

तारे नस्त्रवअक़ा (तारेगीधरूपी) ये दशताराहैं और दशोइस के स्वरूप में हैं और इन तारों का नाम नस्त्रवअक़ा (गीध) इस हेतु से रक्खाहै कि अरब देशीय इनकी उपमा गीधके साथदेते हैं दोनों बाज़ू अपने इस भांति समेटेहै कि मानों गिरना चाहता है संसारी इसको अनाक़ी कहते हैं इसके पांखपर एक तारा प्रकाशित है और अरब देशीय इसको अज़फ़ार कहते हैं और नस्त्रव अक़ाका स्वरूप यहहै॥

तसबीर नम्बर २३

तारादुजाजा(मुर्गीरूपीतारा)इसके १६ताराहै सत्रह तो इसके स्वरूपमेंहैं और दो स्वरूपके बाहिर हैं चार तारे जो एक पंक्ति में

जो आकाश पंथको काटजाते हैं उनको फवारिस (घुड़चढ़े) कहते हैं इस हेतु से कि मानो चार सवार अलग२ घोड़ा दौड़ारहे हैं उनमें से दो सितारे प्रकाशित पक्षी(तापर)की तरफ है उनको रदाफ़ पीछे जानेवाले कहते हैं क्योंकि उन चारोंके पीछे जातेहैं मानो उन के अनुगामीहैं और कोई २ कहतेहैं कि वे सब तारे जो उस बाजू परहैं सब फवारिस (सवार) में सेहैं और जो छाती परहैं उनको रावआ कहतेहैं और दो दाहिने और दोबांयेंपरहैं और एक स्वरूप के पीछेहैं सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २४

तारे ज़ातुलुल कुर्सी (कुर्सीपर बैठने वाली) यह तारा एकस्त्री का स्वरूप है जैसे कोई स्त्री कुर्सी पर तकिया लगाये पैर पर पैर धरेहो रास्ता में उस ताराके ऊपर जो मुलतहब के ऊपर है इस में तेरह तारा हैं उनमेंसे जो बहुत प्रकाशित हैं उनको अरबदेशीय कफुलख़ज़ीव (रंगेहाथ) बोलते हैं और यह हाथेली (कफ़) सूक्ष्म है सुरइयाका इस तारा को हाथ फैलेहुये से उपमा दी है और जो उसके भीतर छोटे २ तारे हैं उनको अंगुलियों से सूरत है ॥

तसबीर नम्बर २५

तारा परसिया ऊश--उसके छब्बीस सितारे हैं जिनसे उसका स्वरूप बनाहै और तीन तारे स्वरूप के बाहिर हैं और एक पुरुष किसी सूरत दृष्टि आता है दाहिना पांव उठाये अपने बांयें पांवपर खड़ाहै दाहिनेहाथ में नंगीतलवार लिये अपने शीशपर धरेहै और बांयें हाथ में देवका कटाहुआ शीश लटकाये है इसी से उसको-- हामिलउलरा सुलगोल (देवका शीशउठानेवाला) कहते हैं सूरत उसकी यह है

तसबीरनम्बर २६

तारा—मम्सकुलअना इसका स्वरूप एक मनुष्य के सदृश है और सुरइया और दूध अकबरके बीच में (बड़ारीछ) नखत हामि-लरासुलगोल (देवका शीश उठानेवाला) के पीछे खड़ा है इसके स्वरूपमें तेरह सितारे हैं और कोई स्वरूप के बाहिर नहीं हैं और

इनको खयाम तम्बूके समान बोलतेहैं इसलिये कि वे खीमे अर्थात् तम्बूके सदृशहैं और दश तारे उसके शीशपै हैं उनको अयक़ और जो घुटने पर हैं उनको अरबान और जो बांई कलाई पर हैं उनको जदैन (मकरकाबहुबचन) कहते हैं और अयून अनज़भी कहते हैं और रक़ीब अर्थात् इते सुरइया कहते हैं इसलिये कि वह कभी२ सुरइया के साथ उदय होता है और जो काबयन पर हैं उन तीनों को तबाबाउलअयूक़ कहतेहैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर २७

ताराहो अलहैया—यह एक स्वरूपवान् मनुष्यके सदृश अपने दोनों हाथों से सर्पको पकड़े हुये खड़ाहै उसके स्वरूप में चौबीस सितारेहैं और पांच स्वरूपके बाहिर हैं इनमेंसे जो तारे होआ के शीशपै हैं उसको राई अर्थात् चरवाहा कहते हैं और जो राई के शीश परहैं उनको कलीबुलराई (चरवाहेकाकुत्ता) कहते हैं और जो दोमें से मुख्य है वह हौवाका केन्द्रहै और दाहिनेकन्धे पर है उसको भी कलीबुल राई कहते हैं और हईयाके स्वरूप में आठ ताराहैं उनमें से जो गरदन पर हैं इसको अनकुल हैया कहते हैं और जो पंक्ति हैयाके शीश पर है नुस्क़सामी कहते हैं इस हेतु से कि वे शाम (देशकानाम) के तरफ अस्त होतेहैं और जो पंक्तिउसकी गरदनके नीचे हैं उनको नुस्क़ई मानी कहते हैं इस हेतुसे कि वह यमन (देशकानाम) की ओर अस्त होतेहैं और जो दोनों नुस्क़के बीचमें जो तारा हैं उनको रोज़ह कहते हैं और जो रोज़ह के बीच में हैं उनको आनाम कहते हैं और सूरत उसकी यह है॥

तसबीर नम्बर२८

तारसहम अर्थात् तीरसमान उसमें पांच तारा हैं बाणके सदृश उनका मुख पूर्व और रोदा पश्चिम को और वह पंथमें दुजाजा (मुर्गी) की चोंच और गिद्धपक्षी पर स्थित हैं और उसकी लम्बाई में चारतारा दृष्टिआते हैं और जब समाके बीचमें पहुंचते हैं तो दो गज़ मालूम होतेहैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर २६

तारा उक़ाब (पक्षी) इसके स्वरूप में ६ तारे हैं और एकस्वरूप के बाहिर हैं और जोस्वरूपके भीतरहैं उसमेंसे तीनतारे हैं उननाम गिद्धपक्षी है इसहेतु से कि गिद्ध सन्मुखहै और दो तारोंको सभर कहतेहैं और देखनेमें दोगज़मालूमहोते हैं, औरसूरतउसकीयहहै॥

तसबीरनम्बर ३०

तारादफ़ैन ॥ उसके स्वरूप में दशतारा हैं नस्त्रतायर अर्थात् गिद्धपक्षीके पीछेहैं तारानूरानी अर्थात् चमकदार उसकी पूंछपरहै उसको दिलफ़ैन कहते हैं और अरब देशीय उन चार तारों को जो उसके बीचमेंहैं उलअयूद कहतेहैं और संसारी लोगउनको सलीस कहतेहैं और जो दुम्बाल परहै उन्हें असलीव कहतेहैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर ३१

ताराकतातुलफ़र्स—इसमें चार तारेहैं जो दिलफ़ैनकी पीठ पै हैं उनमेंसे दो तारे एक दूसरेसे बहुत निकटहैं उनके बीचमें एकबीता का अन्तर होगा ये उसके मुहपर हैं और दोतारा हैं उनके बीचमें अन्तर एक गज़काहै वे उसके शीशपरहैं और उसकी सूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर ३२

तारा फर्सुल अज़ीम अर्थात् बड़े घोड़ाकेसमान इसके स्वरूपमें बीस तारेहैं और घोड़ाके समानहैं इसका पीछेकाधर नहींहै केवल शिर और गर्दन और अगले पांवहैं और पट्ठे और पीछेके पांवनहीं हैं प्रथम तारा इसकी नाभीपैहै और वह मिरातुल मुसलसलापरहै अरबदेशीय उसकोसरतुलफ़रसकहतेहैं और जोतारा उसकीपेशानी पर है उसको जिवाह तुलफ़रस और जो उसके दाहिने कंधेपर है उसको मंकबुलफ़रस कहतेहैं और जो तारा उसकी पीठपर गर्दन केपासहै उसकोमतींउतफ़र्स कहते हैं और जो उसके मुखपरहैउसको क़मुलफ़र्स बोलतेहैं अरबदेशीय इनचारों प्रकाशित तारोंकी क़मुल-फ़र्स—जिनाहुलफ़र्स और मंकबुलफ़र्स कहते हैं और जिनाहुल फ़र्स और जो दो तारे मध्यमें हैं समकोण चतुर्भुज के सदृश हैं उनको

दिलोकहते हैं और जो दोतारे इनमेंसे मुख्य हैं उनको अरकूह कहते हैं और जो जिनाह के नीचे है उसको अक़रब कहते हैं और इन सबको उरमुरस से उपमा इस लिये देतेहैं कि वे मध्य आसमान हैं और दिनोके शीशवाले तारों में से जो स्वरूप के शीश परहै उनको सादुल ख़वैया कहतेहैं और दो तारे जो घुटनों परहैं उनकोसादुलनज़र कहतेहैं और जोउसकीछातीवाले तारोंको सादुलयारा कहते हैं और सूरत उसकी यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३३

तारा मिरातुल मुसलसला– यह तारा एक स्त्री के सदृश है अपने दोनो हाथ फैलाये हुयेहै उनमेंसे दाहिना उत्तरकीतरफ और बांयां दक्षिणकी तरफ और उसके पैरों पर बहुतसे सितारे हैं सो मानों एक जंज़ीर पड़ीहुई है इस कारण उसका नाम मिरातुल मुसलसला (जंज़ीर वाली स्त्री) कहतेहैं इसके स्वरूपमें तीसतारेहैं और जो तारा उसके शीशपर सरतुल फर्स अज़ीमके सन्मुखहै वह बाहिरहै और वह प्रकाशित तारा उन तारोंमेंसे है जो मकर के नीचेहै उसको हौतका पेट कहतेहैं और सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३४

कोकबतुल फरसुलताम (तारापूरेघोड़ेकेसमान) इसमें यकतीस तारेहैं और यह फर्स अर्थात् घोड़ा दूसराहै अत्यन्त शोभायमान फर्स अज़ीम (बड़ेघोड़ा)के सदृशहै और कोई२ तारा इसके स्वरूप में फर्स अज़ीमकेहैं और उसकी गर्दन तरफ इतने अधिक तारे हैं कि उनसे उसकेशीशकाआकार होगयाहै और स्वरूपउसकायहहै ॥

तसबीर नम्बर ३५

कोकबतुल मुसल्लस अर्थात् त्रिभुज रूपीतारा यहतारा त्रिभुज दीर्घके सदृशहैइसके स्वरूपमें चार ताराहैं और एकतारा प्रकाशित इसके बांयें पांव त्रिभुजकी श्रेणीपर स्थितहै सो बाहिरहै और उन चार तारोंमें से एक तो त्रिभुजके शीशपरहै और तीनि उसके पृष्ठि की ओरहैं और स्वरूप उसका यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३६

ब्याख्यान बारह ब्रूज अर्थात् राशोंके बिषय में ॥

जानना चाहिये कि सूरतें जो मुन्तक़ तुल ब्रूज (ग्रहोंकास्थान) के दायरामें सितारोंकी राहमें हैं वे बारह हैं उनको राशि कहते हैं और प्रत्येक राशि अपने स्वरूपानुसार उसी नामसे प्रसिद्धहै इस लिये प्रत्येक राशि और उस के तारों की संख्या स्वरूपानुसार अरब देशीय ज्योतिर्विदों के मतानुसारका बर्णन होगा अब प्रथम राशिसे आरम्भ करतेहैं ॥

कोकबतुलहमल अर्थात् मेषराशि—तेरहतारे तो उसकेस्वरूपमें और पांच स्वरूपके बाहिर हैं आगेका अंग उसका पश्चिम और पीछेका अंग उसका पूर्वकी ओर है और उसका मुख पीठकीओर फिराभया है दोतारे जो उसके सीगोंपरहैं उनको शुरतैन कहते हैं और एकतारा जो स्वरूप के बाहिर उसके सींगपर उसको नात्यह कहतेहैं और जो तारा उसके लिंग और जांघोंपर समत्रिभुज के सदृश उसकोवतीन अर्थात् पेटकहते हैं और शुरतैन और वतीन दोनों चन्द्रमा के स्थानहैं सूरत मेषकी यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३७

कौ कबतुलसूर अर्थात् वृष—यह बैलकी सूरत है इसका आधा अंग पीछेका नहीं है ॥ आगेका अंग इसका पूर्व को ओर पीछेका अंग दक्षिणकीओर और शीश अगले पहलूकी तरफ झुका है और दोनोंसींग पूर्वकी ओर हैं इसके खुर और दोनोंपांव नहीं हैं इसके स्वरूप में बत्तीसतारे हैं और जो प्रकाशित तारा उत्तर की तरफ मम् सकुल अना के पांवपर स्थित हैं वे उनतारों के बीचमें हैं जो स्वरूप के बाहिर हैं और वे ग्यारह इस के आधे फटे अंगपर चार तारे एक पंक्तिमें हैं उसकी दक्षिणकी आंखमें जो लालताराहै उस कानाम दबरान है और ऐनुलसूर अर्थात् बैलकी आंखभी कहतेहैं और अरब के निवासी कामिलुलसूर अर्थात् पूरा बैल के तारे की सुरइया कहते हैं और वह दोतारे प्रकाशित और तीनअंगूरके दाने

के सदृश एकठौर एकट्ठा हैं और क्योंकि ये तारे आपस में अत्यन्त निकट२ हैं इसीकारण से एकतारा दृष्टिआते हैं इसलिये उसको नजम कहते हैं और जो सितारे चोंचदार बैल के कान के स्वरूप सदृश है उनकानाम कलवैन है और योंभी कहते हैं कि ये दोनोंतारे देरानके कुत्ते हैं अरबके निवासी उसको अशुभ कहते हैं कि कोई नजमके सन्मुखहो तो उसे क्षेमनहीं उनकी गरदन में कुछ सितारे हैं उनको फलास कहते हैं और फलासकोसआदनोंक कहतेहैं अरब केबासी कहतेहैं कि देरां नखतमें बर्षानहींहोती बरन यहबात उन के मतानुसार प्रमाणिक नहीं है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८

को कबतुलतवामीन—याजौजा अर्थात् मिथुन इसके अट्ठारह तारा तो स्वरूप मेंहैं और सात स्वरूपके बाहिर हैं उसको सूरत सदृश दो मनुष्यों के शीश जिनके उत्तर और पूर्व और पैर दक्षिणओर हैं और इसके और उन सितारोंमें भेदहैं और प्रत्येक स्वरूपके शीश पर वह जो दो सितारा प्रकाशित हैं उनके नाम अरबनिवासी लोगोंने ज़िरामळ सुतकहाहै और जो दोसितारे हाथोंपर हैं उनका नामहक्रिया कहतेहैं कि इनदो तारोंमेंसे एकका नाम मनेसाहै और एकका नाम ज़रा है और जो दो सितारे आगे के पांवपर हैं उनको नज्जाशीकहतेहैं सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ३९

कोकबतुलसर्तों अर्थात् कर्क के सदृश तारा (कर्क) इसके स्वरूपमें नौ और स्वरूपके बाहिर चारतारेहैं अरबदेशीय इनमेंसे प्रकाशित तारोंको नशरा कहते हैं और दोतारा जो नशराके पीछे हैं उनको हमारैन कहते हैं प्रकाशित तारा और जो पीछे के दक्षिणी पांवपरहैं उसको तरफ़ा कहते हैं और स्वरूप सर्तांग (कर्ककायहहै॥

तसबीर नम्बर ४०

को कबतुल असद अर्थात् सिंह रूपी तारा(सिंह)इसके स्वरूप मेंसत्ताईस और स्वरूपके बाहिर आठतारेहैं जो तारे मुहको घेरेहैं उनको तरफ कहते हैं और गरदन पर जो चारताराहैं उनको मस्तक

कहतेहैं और पेटकेतारे और ख़िर्क़यफ़िक्रा (फ़क़ीरके चेला) कोशुक्र कहते हैं और पीछे दुमवालोंको सिंहका दिलकहतेहैं और मुज़फ़्फ़र के सितारोंको सर्फ़ा इसलिये कहतेहैं कि जब वह उदय होताहै तो गर्म्मी कमहोजाती है और जब पश्चिम में जाके अस्तहोता है तो सर्दी कमहोजातीहै स्वरूप उसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१

कोकबतुल सम्बुला (फूलोंवाली) अर्थात् कन्याराशि इसके स्वरूपमें छत्तीस और स्वरूपके बाहिर छहतारा हैं इसका स्वरूप स्त्रीकाहै और शीश इसका सर्फ़ाके दक्षिणमेंहै और वह तारासिंहकी पंछपर स्थित है और दोनों पांव ज़ेवैन (भेड़ियों) के आगे हैं और जो तारे तुलाके ऊपर हैं उनको अवा (भूकनेवालाकुत्ता) कहते हैं और यह चन्द्रमा का तेरहवां स्थान है कोई २ कहता है कि अवा (भूकनेवालाकुत्ता) तेरह तारे हैं जो मुख्य स्वरूपके पेट और पेट के नीचे स्थित हैं ये कुत्ते हैं सिंह के पीछे अफ २ करते हैं (भूकते हैं) इसके उदयमें सरदी आतीहै और जो तारा उसके हाथोंके निकटहैं उसको समाक एज़ाल कहते हैं और जो समाकरामाके सन्मुख है उसको एज़ाल कहतेहैं क्योंकि उसके पास हथियार नहींहैं इसका नाम सनीला कहते हैं और कोई २ इसको सिंहकी टांग कहते हैं इसके बायें पांवके ताराको अज़र इसलिये कहते हैं कि इसके तारे वृषमेंहैं सो मानो स्वरूपको छिपाये हुयेहैं और सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ४२

कोकबतुलमीज़ां अर्थात् तुलाके समान तारा इसके स्वरूप में आठतारे हैं सो कन्या और वृश्चिक के बीचमें हैं और नौ स्वरूपके बाहरहैं और कोई तारा नहींहै स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर ४३

कोकबतुल अक़रब अर्थात् बिच्छू के समान तारा (वृश्चिक) इसके स्वरूपमें इक्कीसतारेहैं और तीनतारा स्वरूपके बाहिरहैं अरबदेशीय इसके मस्तकके तीनतारोंको अकलील अर्थात् ताजकहते हैं

(कूट) और जो तीनतारा इसके शरीरके ऊपर हैं उनको क़लबुल अक़रब (वृश्चिकका हृदय) कहते हैं और जो तारा हृदयके सन्मुख और हृदयके बीचमें हैं उनको बनात (लड़का) कहते हैं और जो थोड़ेसे तारे ख़ज़रातमें हैं उनको कफ़रात कहतेहैं और जो तारा दो ज्यनबकी तरफ़हैं उनको सोलह अर्थात् डंककहतेहैं सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ४४

कोकबतुलरामी (धनराशि) इसका नाम क़ूसभी है इसकेस्वरूप में यकतीस ताराहैं और कोई तारा इसके गिर्द प्रकट नहीं हैं और जो तारा इसके आधीन दक्षिणकी तरफ़ दाहिने हाथके पासहै उसको जूयआब अर्थात् पानीकी नहर कहते हैं और जो तारा इसके ऊपर और बगलके नीचे पूर्वकी तरफ़ हैं उनको नआयम कहते हैं और जो तारा इसकी कमानके उत्तरहै उसको तलीमैन कहतेहैं और जो तारा बायेंजांघ और टांगपरहैं उनको मरदैन कहतेहैं सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४५

कोकबतुलजदी अर्थात् मकर के समान तारा (मकरराशि) इसके स्वरूप में अट्ठाईस ताराहैं और कोई तारा इसके आसपास नहींहैं उसकी पंछके दो सितारोंको सादज़िबह कहते हैं और कारण इसका यहहै कि इनदोनों सितारोंमेंसे एक अत्यन्त छोटाहै उसको ज़िबहसग़ीर (छोटा) कहते हैं अर्थात् छोटे की ग्रीवा काटनेवाला और जो दोतारे पूंछपेंहैं उनको मख़तीन कहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४६

कोकबतुलसाकिबुल मादहौअलवलद अर्थात् (कुम्भराशि) इसको देवकहतेहैं इसके स्वरूप में बयालीस तारेहैं और तीनस्वरूपके बाहिर हैं अरबदेशीय उसके दाहिने कन्धेवाले सितारों को सादुलमलक कहतेहैं और बायें कन्धेवालेको और उसको जो मकर कीपूंछपरहै सादुलसऊद कहते हैं और बायें हाथवालों को सादव ळवाकहतेहैं और इनतारोंमें सादज़िबहसे अन्तर बहुतहै सोइसदूरी को फैलेहुये मुखसे उपमा देतेहैं मानो इस चौड़ाईमें होकर निकल

जायगा कहतेहैं कि जिससमय इसको प्रकाशित कियाहै उससमय यह आज्ञाहुई कि जो तारा इसकी भुजापर है और जो तीनतारा इसके बायेंहाथपर हैं इनको सादुलअहइया इस कारण कहते हैं कि जिस समय वह प्रकाशित होताहै उस समय जाड़ों में दुखदाइयोंको छिपाताहै और जो ताराहौत (मीन) के मुखमें है उसको सफ़दऔवल कहते हैं ॥

तसवीर नम्बर ४७

कोकबतुलसहमर्गी अर्थात् मछली के समान तारा (मीन) चौंतीसतारे तो इसके स्वरूप में हैं और चालीस स्वरूप के बाहिर हैं और मछलियां हैं इनमेंसे एकको तो समकतुल मुक़द्दमा कहते हैं और दक्षिण में फ़र्सअज़ीम (दीर्घअश्व) के पीठपर स्थितहै कोकबमिरातुल मुसलसला (रस्सीवाली) और इन दोनों के मध्य दक्षिणमें एक रस्सी तारोंकी मानलीहै जो इनदोनों मछलियों को एकमें लपेटतीहै और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४८

अनाउलसूरुल जनूबतह—ये पन्द्रहतारे हैं प्रथम तारा क़तीस यह वह ताराहै जो अर्द्ध दक्षिणमें स्थितहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ४९

इसतारेका स्वरूप पशुक़ाहै और उसके निवास की जगह ग्रहोंके मण्डलपर लिखीहै और नाम उनकेअरबदेशीय लोगोंके निश्चयके अनुसार लिखेजातेहैं ॥

बकीयतुल शराक़तीस—इसका शीश मछली के शीश समान पश्चिम में स्थितहै और जो मेषताराके दक्षिणमेंहै और पूंछउसकी पश्चिममें उनतीन बाहिरीमेंहैं उनके पीछे स्थितहै जो साकिबुलमाहैं इसके तारे बाईसहैं अरबदेशीय इसके सरके सितारोंकोकैवत फुलजदना कहते हैं इस हेतुसे कि इसकी आकृति कफ़ुलख़ज़ीवके सदृश उसके नीचेहै जो पांचतारे इसके शरीर परहैं उनका नाम अनामातहै और जो दुमपर हैं उनको निज़ाम कहते हैं और जो

सितारा तायफ़ा (झुएड)दक्षिणमेंहैं उनकोसफ़दासानी कहतेहैं ॥

कौकबतुलज़िबह—अर्थात् मत्थेवाले इसके स्वरूपमें अड़तीस तारेहैं और स्वरूप इसका पुरुषके सदृशहै और नाहियाकेदक्षिण में हाथमें लकड़ी पकड़ेहुये खड़ाहै और उस लकड़ीके भीतर तलवारहै इसके मुखवाले तारेका नाम अरबदेशीयने हक्कारक्खा और अतानीभी कहते हैं इसके दाहिने कन्धेपर जो दो बड़े तारे प्रकाशितहैं उनको मंकबुलजौज़ कहते हैं और जो प्रकाशित ताराइसके बायेंकन्धे परहै उसका नाम नाहिदहै और मर्दुमभी कहते हैं और जो इसकीकमरपै तीन सितारे एकपंक्तिमें हैं उनकोमुन्तक़तुलजौज़ कहते हैं और जो तीन तारा एक पंक्ति में इकट्ठे हैं उनका नाम सयफुलजवार है और एक तारा जो इसके बायेंपांव में है उसका नाम रजुलजवार है और नवतारा जो बटेहुये बाहँ पर हैं उनको ताजुल जौज़ाकहते हैं और जवायब जौजह भी कहते हैं और सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ५०

कौकबतुलनहर अर्थात् सर्परूपी तारा—इसके स्वरूप में चौंतीसतारेहैं और बाहिर स्वरूपके कोई तारा नहीं है इसकी आदि उस प्रकाशित तारेसेहै जो जौज़ाके बायें पैरपर स्थितहै औरपश्चिम में उनतारोंकी तरफकी चढ़ताहै जो क़तीसकी छातीपर हैं इसलिये पूर्वमें तीन तारोंपर होकर दक्षिणकी ओरजाताहै अर्थात् तीनतारों पर दृष्टि करताहै पूर्वमें होकर तीनतारोंपर दृष्टिकरता है इसलिये दक्षिण होकर पूर्वको जाताहै और वहांसे दक्षिणमें होकर तारोंके झुण्डपर मुखकरके अलग होताहै और जो जनूबनदोतारा निकट२ हैं उनके पासहोकर पश्चिम से निकलता है और इकट्ठे तीन तारोंपर पहुंचता है अरब निवासियों ने इसके प्रथम द्वितीय और तृतीय तारेकानाम और नहरकेचारोंतारोंकानाम औजीउलनअमरक्खाहैऔर जगह इसकी बैज़हहै और जोआसपास तारेहैं उनको बैज़हकहतेहैंऔर आखिर नहरमेंजोताराहै उसका नाम तिलिस्महै

इसतिलिस्म और उस तिलिस्म के बीचमें जो ताराहै होतके मुख में उसका नाम फ़राजुन अमहै-सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर ५१

कोकबतुलअरतब अर्थात् खरगोश रूपी तारा- इसके स्वरूपमें बारा सितारे हैं और इसके स्वरूपकेबाहिर कोई तारा नहीं जड़ाहै यह तारा जवारके पाईंनहै और इसका मुख पश्चिम और पांव पूर्व की ओर हैं अरबदेशीय लोगों ने इसके चारतारों को जो दो हाथोंमें और दो जो पैरों में हैं उनका ना कुर्सीउल जौजा अर्थात् मिथुन की कुर्सी रक्खा है —सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ५२

कोकबकलबुल अकबर अर्थात् बड़े कुतारूपीताराइसके स्वरूप में अट्ठारह तारेहैं औरग्यारह स्वरूपके बाहिरहैं और कुत्ताकी सूरत है और मिथुनके पीछेहै इसीसे इसका नाम कुत्ताहै अरबवाले उस प्रकाशित तारेको जो चन्द्रमाके स्थान में है शारी अबूर नाम कहते हैं और शारईमानीभी कहतेहैं क्योंकि मजरासे बढ़ाहै और सोहेल के निकटहै और एमानी कहने का यह कारणहै कि यह यमन की ओरहै और जो ताराइसके शीशपर है उसका मर्ज़ुमुल अबूदनाम है और चार सितारे कन्धे और दुम और रानपर हैं उनको अज़ारी कहते हैं और जो चार तारे स्वरूप के बाहिरहैं एक पंक्तिमेंहैं उनको फ़रूद कहतेहैं और जो प्रकाशित तारे जो स्वरूपके बाहिरहैं उनको हज़ार कहतेहैं और स्त्री भी कहतेहैं और कोई२ अरब देशीय उसका नाम महली फ़यन कहते हैं इस हेतुसे कि सुहेलके प्रथम उदयहोता है और उनको अपने प्रकाशसे छिपा लेतेहैं-सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ५३

कोकबतुलकलबुलमुक़द्दम अर्थात् आगेके कुत्तासमान ये दो तारे नैरयन के बीचमें हैं जो तवाईन के शीशपर और कलबुल अकबर के (बड़ाकुता) पीछे हैं एक उनमें से अधिक प्रकाशित है अरबदेशीय इसका नाम शारीशामी कहते हैं और कारण यह है कि यह शाममें

अस्त होजाताहै और इसको शारी अमीज़ा भी कहते हैं क्योंकि यह सुहेलका बड़ा मित्रहै और एमानिया मजरा से निकला है इसलिये नाहिया सुमालिया में रहा और सुहेलकी बिरहमें यहांतक रोया कि आंखें डूबगईं इन दो तारों को जो तवामीन के सर पर हैं ज़राबुल असद मक़बूज़ा कहते हैं —सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५४

कोकब तुरस फ़ीनत—इसके स्वरूप में पैंतीस तारे हैं और आस पासमें कोई तारा नहींजड़ाहै बतलीमूसने, लिखाहै कि जो सितारा बड़े मख़ज़ाफ़ जनूबी परहैं वे सुहेलहैं यह तारा सब तारों से बहुत दूरहै इस्तिरलाब में इसकी सूरत बनाते हैं परन्तु अरबमें भेद है कोई तो कहताहै कि यह जो तारा मख़ज़ाफ़की तरफ़हैदूसरा सुहेल है और दक्षिण ध्रुवके नीचे मख़ज़ाफ़ के निकट है उसीपर स्थितहै और सफ़ीनतकी—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५५

कोकब तुशुजआ इसके स्वरूप में पच्चीस तारे हैं इसका शीश कर्कके दक्षिण में है यह तारा शारी और अमीज़ा के बीचकलबुल असद (सिंहकाकुत्ता) से कुछेक दक्षिण दबा हुआहै और फिर पूरब दक्षिणकी राह लेता है और मित्रों की ओर होकर दूसरे तारोंकी ओर होताहै इसकी पीठपर चार ताराहैं उस प्रकाशित तारेके उत्तर और उस ताराको जो उन्कपर अरब देशीयएकफ़र्द कहते हैं क्योंकि जो कुछ उसमें रह जाता है सो एकही है और शेषतारे शुजआ के नामसे प्रसिद्ध हैं अरबदेशीय उनको कईप्रकारसे कहते हैं कोई २ कहतेहैं कि फ़रद (एक) और जवारकेबीचमें एक बड़ाताराहै उसका नाम शरासीफ़ है जवार तारा मुस्तदीर है और उसको मुअलक़ कहते हैं उसका नाम बातिया है सत्य बतानेवाला आगे ईश्वर है स्वरूप शुजाअ यहहै॥

तसवीर नम्बर ५६

कोकब बातिया ये सात सितारे शुजआके उत्तरमें स्थितहैं अरब-

देशीय इसका नाम मौलिअबी कहते हैं और ठीक२ पूरब पश्चिम बातियाके सरपर स्थित हैं और जो तारे पीछेके अंगमें वे पश्चिम और दक्षिणके कोण परहैं और–सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ५७

कोकबतुलगराब यह बातिया के सातों तारों के पीठपर समाक एज़ाल के उत्तर दक्षिण में स्थितहै अरबदेशीय इसका नाम अजउलआसद कहते हैं और अरशसमाकएज़ाल और हम्मालभी कहते हैं और —सूरतयह है॥ तसबीर नम्बर ५८

कोकबक़न्तूरस–इसके स्वरूपमेंसैंतीसतारेहैं यहएकपशूकी सूरत है कमर से ऊपर भाग तो मनुष्य के सदृश हैं और धड़के नीचे से घोड़ा का स्वरूप है इसका मुख पूर्व्व और पूंछ पश्चिम तरफ़ है इसकी सूरत ऐसी है कि एकहाथ में तो दो गुच्छे अंगूरके हैं और एक हाथ में सवा अर्थात् बाघहै इसके पेटमें जो तारा है उसको बतन अर्थात् पेटकहते हैं दाहिने हाथ में हसारनामक तारा और दूसरे हाथमें वज़ननामक तारा है और ये वे तारे हैं जिनका नाम महलीफ़ैन और महसतैनहैं जैसा कि ऊपर व्याख्यान हुआहै और मित्रोंके मज़रापर होकर सुहेलपर जाताथा तो अब एक दूसरे के बिपरीत हैं और एकस्वरूप होने के कारण कोई तो कहता है कि यह सुहेल है और कोई सुहेल नहीं कहता निदान इसको सुहेल कहना ठीक नहींहै–सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर ५६

कोकबसवा अर्थात् बाघरूपी तारा यहसूरत उन्नीस तारोंकी है कोई २तारे इनमें से क़न्तुरसके तारोंसे मिलेभये हैं क़न्तुरसने बाघ का हाथ पकड़ा है अरबदेश निवासी इसका नाम क़न्तुरस और ससवा और शुमारिया कहतेहैं इनमेंमैलापन और अंधियारा बहुत है और कोई इसके आसपास तारा नहीं है—सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ६०

कोकबतुलमजरा--इसके तारों की संख्या सातहैं अरबदेशीय इसका कोई नाम नहींकहते और–सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर ६१

कोकतुल अकलीलजनूबी--अर्थात् दक्षिणीक्रीट इसके स्वरूप में तेरह ताराहैं इसके आगे दो तारे हैं जो रामीके पैरोंपर हैं कोई २ इसका नाक़वा बतलाते हैं और कोई बख़ीउलनाम कहते हैं और वे अशरीं इसकारणसे हैं कि वे नाअमसके दक्षिणमें हैं--सूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर ६२

कोकबहौतजनूबी अर्थात् दक्षिणीमीन--इसके स्वरूप में ग्यारह और बाहिर सूरत के छःतारा हैं देवके दक्षिणमें पूर्वकीतरफ मुख और पश्चिमकी तरफ पूंछहै इसकानाम क़मुलहौत है और इसके आसपास कोईतारा प्रकटनहींहै--सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ६३

चन्द्रमाके स्थानों के विषय में॥

ये चन्द्रमाके अट्ठाईसअस्थानहैं प्रतिरात्री एकमें इनस्थानोंमें से वास करताहै जिससे पूरणमासी तक चन्द्रमा पूरा होजाता है जो महीना उन्तीस दिनका होताहै तो चतुर्दशी के दिन चन्द्रमा छिप जाता है और तीसदिन का महीना हुआ तो अमावस के दिन चन्द्रमा अदृश होजाताहै इस अस्त होनेकी दशामें भी एक स्थान जाताहै इन्हीं अट्ठाईस स्थानों में से चौदह तो ज़मीनके ऊपर और चौदह पृथ्वीके नीचे हैं जबइन अट्ठाईस नक्षत्रोंमें से कोई की हानि होतीहै तो उसके पलटे दूसरा उदय होताहै अरबदेश निवासी इन अट्ठाईस स्थानोंमेंसे चौदहको शामी कहतेहैं और चौदहको एमानी कहते हैं मनाज़िल शामी अर्थात् शामी स्थानोंमें से प्रथम स्थान कर्क और अन्तका स्थान एज़ाल हुमाक अर्थात् मीनहै एमास्थान प्रथममेंअक्कार और आखिर रथाहै अरबदेशीय इसको सक़ूतुलनज़म भी कहते हैं वर्ष भरमें एक सम्पूर्ण स्थान पूरे होजातेहैं नये सम्वत् में फिर उसी रीति से प्रथम स्थानसे आरम्भ होताहै कोई २ कहते हैं कि जिस समय नजम सक़ूत नजम तकरहताहै तेरहदिनहैं इसलिये जो कुछखेदहोताहै वह सम्पूर्णप्रभाव उन्हीं साक़ितताराेंकाहै

विद्वान् इन स्थानों के विषयमें बहुधा सन्देह करते हैं प्रकटहो कि शामीके स्थानों में से प्रथम स्थान कर्कहै लोग कहतेहैं कि ये दोनों तारे मेषके सींगहैंइसका नाम नातहहै जो दोनों सींगों के बीच में है और इनकी सूरत यहहै कि एक तो कैंदुलसमानाहिया उत्तर में रहतीहै और दूसरा दक्षिणमें इसलिये जबसूर्य्य इसस्थानमें आता है तो वह मध्यमऋतु होतीहै और रातदिन बराबर होताहै साजाने लिखाहै कि जिस समय कर्क उदय होताहै तो समयके सम्पूर्ण अंग समान होतेहैं और बिदेशी लोग अपने२ देशोंको आतेहैं और सब मनुष्य अपने२ इष्ट मित्रों को सौगात भेजतेहैं और नैसां(रूमीमहीनाका नाम) महीनामें उदय होताहै और सकूननशरी उल आखिर (रूमीमहीनाकानाम) अट्ठारहवीं को उदय होताहै और अज़ार की अट्ठाईसवींको सूर्य्य इस स्थान में आताहै इसलिये जब सूर्य्य कर्क का होताहै तो एक साल होता है और इसका नाम सरतां-अर्थात् कर्क इसकारण कहते हैं कि यह नए सम्वत् का चिह्नहै इनमें से अशरात नामक एक सायतहै वह इसका चिह्न है तारा-शीरीसे क्षेमके चिह्न प्रकट होतेहैं और वृक्षोंमें फलउत्पन्न होतेहैं और जौकीफ़सल काटतेहैं और सरता का द्वितीय अक्षरहैं॥

तसबीर नम्बर ६४

दूसरी (मंजिल) व तीनकी—दूसरास्थान—व तीन पेटवाले इसका नाम बतानुलहमलहै यह तीनतारा छिपेहुये हैं मानों आ-सानीहैं और सुरइयाके बीचमें यह सूरतहै

तसबीर नम्बर ६५

नैसाकी अन्तकी रातको उदय होताहै और नशरींउलअौवल की रात को अस्तहोताहै इसके अस्तके निकट नदी हैं इसलिये संतुष्ट होताहै और जरून और ख़तातीप और बेहदाक्षादि नाना प्रकार के पक्षी अहेर करनेवाले अपने २ घोसलों में चलेजाते हैं मोरचाको चढ़नेकी सामर्थ्यनहींरहतीहै साजा(नामज्योतिर्विद) ने लिखाहै कि जिससमय बतीन उदयहोताहैं उससमयपक्षीकज़ा

करताहै अनीति और झगड़ेका आरम्भहोताहै जिसकिसी के पास जिसकी धरोहरहै देनेसे स्वामीको नहींकरता है और इससमयका प्रभावहै कि मनुष्यको सुगन्धकी इच्छाहोती है और लुहारोंको भी अपने हथ्यारों की इच्छाहोतीहै एक अरबदेशीय जिसने इनतारों कावतीन और देरांनाम धराहै कहताहै कि इनमें से एक वर्षा का नखतहै जिसकेनामसे प्रतिसम्वत्‌के आदि में जलबर्षताहै नहीं तो अवर्षण होजाय यह रुबके निकटहै अत्यन्तबुरा है और वर्षामें सब से कमहै किसहेतु से कि यह बहुतकम होता है कि सुरइयाइस के निकट पहुंचाही सुरइया अतिही उत्तम ताराहै और सब तारों से अधिक प्याराहै बतीन के समय में चरागाह सूखजाते हैं और गेहूं काटने के प्रथम उदय होताहै इसका द्वैतजवांतान है १ ॥

मंज़िल (स्थान) तीसरी सुरइयाके विषय में यहतारा मेष का लिंग (आलत) है और स्थानों की अपेक्षा यहस्थान अधिक प्रसिद्धहै ये छःतारे हैं और बहुतसे तारे इस में छिपेभये हैं और सूरत सुरइया की यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६६

कोई २ इसको हम्मार कहते हैं और उपमा इसकी गुच्छासेदी है विद्वानों के निकट अस्तहोने के समय इसकास्वरूप गुच्छेकेसदृश होताहै अर्थात् छोटे२तारे अंगूर के गुच्छा के सदृशहैं उनको अनक़ूद (गुच्छा) कहते हैं साजा कहता है कि जिससमय सुरइया उदय होताहै उससमय संसार में गर्म्मीका आरम्भ होता है घासजंगलों मे सूखजाती है पशुओं के रोम निर्बल होजाते हैं जाड़ों में इसके उदयका समय सोनेके समय होताहै जिससमय रातको यह उदय होताहै उससमय चरवाहा पशमीनहपोश होजाते हैं और जोप्रातःकाल उदय होताहै तो गर्म्मी अत्यन्त होती है और जो चाश्त के समय उदय होताहै तो चरवाहोंको प्यास की अधिकता होती है जिससमय सुरइया उदयहोताहै उससमय कोईबला संसारमें नहीं रहती और वृक्षोंके फल निरोग्य होते हैं सुरइया हज्जाज़ में उदय

होताहै उससमय जंगल हराभरा होताहै और जो सुरइयाकेतारों का झुण्डहै वह दशमीके तारोंसे अत्योत्तमहै अकरमा के बेटे सुलेमानने कहाहै कि जिससमय सुरइया उदयहोत हैं उससमय नदी बेगसे जातीहै और वायु बड़ेबेग से विपरीति चलतीहै उससमय ईश्वर पानी के ऊपर पहरुआ नियत करताहै अर्थात् जो मनुष्य सुरइया के उदयके उपरान्त जलमें पंथचलै वह मुसल्मानी धर्म्म के बाहरहै सुरइयाके उदयमें गर्म्मीका अधिकत्त्व होताहै सेबऔर ज़रदआलू उत्पन्न होतेहैं और अंगूर सूखजाते हैं सुरइयाकेअन्तमें नीलनामक नदी बढ़तीहै और पशुओं के दूध अधिकहोता है और द्वैत इसका अकलील (ताज)है ॥

चौथी – मंज़िल (स्थान) देरांकीहै यह लालतारा प्रकाशित् हैऔर चारोंओर छोटे २ तारा घेरेहैं वृषके शीशपैसे होकर सुरइया के पीछेसे उदयहोताहै और इसको तावाहुलनज्म (तारों के आधीन) भी कहते हैं यहतारा अशुभहैअरबदेशीय इसके प्रकाशको तिरस्कार करते हैं यह नशरींउल अवलमहीनाकी छब्बीसवीं को उदय होताहै साजा (नाम)नेलिखाहै कि इसके उदयमें गर्म्मी आतीहै और पृथ्वी गर्म होजाती है इसके उदय के समय पृथ्वी का स्वभाव खंगखारा और आतिशफरोख़्ताका होजाताहै कुछतारेइसके स्वरूपके सन्मुख हैं उनमेंसे जो छोटे दोतारे हैं वह मानों चाहतेहैं कि देरांसे चिपक जायँ अरबदेशीय इनदोनों का नाम सगान (कुत्ते) बतातेहैं और शेष तारोंको क़लास और एक लालतारा जो देरांके पास प्रकाशित है उसका नाम महल है और हावीउलनज्म (तारा घेरनेवाला) भी कहते हैं इसके उदय में अत्यन्त गर्म्मी होती है और वायु गर्म्म चलती है और स्याह अंगूर की पैदायश होती है और द्वैत इसका क़ल्ब है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ६०

पांचवीं मंज़िल (स्थान) हक़ाकीहैविद्वानोंके निकट हक़ा जौज़ा अर्थात् मिथुनका शीशहै इतिहास कहतेहैं कि किसीने अपनी स्त्रीसे

कहा कि तू आकाशके तारोंसे सम्बन्ध रखती है तब इब्नअधासने (प्रसन्नहो) ईश्वर उसपर) कहा कि काफ़ीहै तुझे हकउलजोज़ा— इसीसे उसको हका कहतेहैं क्योंकि दायरुलकूसके सदृश है॥

तसवीर नम्बर ६८

यह नहमख़रीज़ां में उदयहोताहै औ कानूनुल औवल की नवीं को अस्त होताहै इसका तारा प्रकटनहींहोता बरन(जौज़ा)मिथुन से प्यारहोने के कारण उसके साथ रहता है साजा कहता है कि हका जब उदय होताहै तोमनुष्य आपसमें एक दूसरे कोतुहफा देते हैंदीप प्रकटहोतेहैं और गर्म्मी अत्यन्त होतीहै॥

मंज़िल हिनाकीहै—इसमें पांचतारेहैं दो सफ़ेद इन्हींमें से हैं इनके बीच में दूरी एककोड़ा की बराबरहै और बारह हका हैं इन दोनों तारों मेंसे एकको आज़ और दूसरेको मसान कहते हैं और शेषतीनतारे इनदोनों को घेरेभये हैं इन पांचमें से चार तो दाहिनी तरफ़ और एक बांयें तरफको है और—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ६६

औ हम अबदी कहताहै कि हनाजोज़ा (मिथुन) की कमानहै जिससे सिंहके हाथ पर तीरमारता है और ये आठतारे कमान सदृशहैं और कमानकी मूठिकी ठौर दो तारे श्वेतरंगकेहैं और ख़रीज़ांकी बाईसवीं रात्री को उदय होताहै और क़ानून की बाईस रात्री को अस्तहोताहै उसके सम्पूर्णतारे जौज़ा (मिथुन)के तारोंमें सेहैं सुरइया के उदयसे लेकर अन्तहोने तक सोसमारका शिकार खेलते हैं और इसअन्तरमें अत्यन्त गर्म्मी होतीहै तबछोहारा और अंज़ीर पकताहै और फिर छिपजाताहै रक़ीब इसका नाम है॥

मंज़िल सातवीं ज़िराउल असदकीइसका नाम ज़िराउलअसद मक़बूज़ा है अर्थात् सिंह के हाथ में एक मक़बूज़ा अर्थात् बधा हुआ और दूसरा मसबूता अर्थात् फैलाहुआ है फैलेहुये की शाक शां यमन की ओर सिमटे हुयेहाथ की शाकशाम की तरफ़हैं तो चन्द्रमा सिमटे हाथ की ओर बास करताहैऔर ये दो तारेहैं कि

प्रत्येकके बीचमें अन्तर एककोड़ा के अनुमान होगा और यहीहाल फैलेहुये हाथकाहै और स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ७०

कानूनुल आख़िर की रात्रीको अस्तहोताहै इसका तारा शुभहै दयूयोगकभी अरिष्टता होताहैअरबदेशीय लोगोंको इसकानिश्चय हैकि जो इसकेसालमें बर्षाकम भी होतो भी खेतीअच्छी होती है और जो बर्षा अधिक भी हो तो भी फसल बुरी नहींहोती जिसके उदयमें सूर्य्य भलीभांति तप्ताहै और मद्यपोंकी सभाजमती है और गर्मी के दिनों में गर्मी अधिकहोती है अनार, सिरका, ऊखादिका आधिकत्व होता है और पानीइतना होताहै किमनुष्य जलकोबाग और तलावों में काटलेजाते हैं और ऋतु के अन्त में वृक्ष फलते हैं इसकाहैत ज़िरा वल्दहहै ॥

मंज़िलआठवीं अनफुल असदकीहै—ये तीनतारेहैं मानोसिंहके प्यारेहैं तमूज़की सत्रहवींको उदय और कानूनुल आख़िरको अस्त होजाता है साजा लिखताहै कि नसराके उदय में मनुष्यों के मुख लाल होजाते हैं और सन्तानकी अभिलाष होती है इसलिये बीर्य्य कोरोकनहीं सकते इसलियेउसकेस्वभावकेअनुसारकर्मकरते हैं जिसमें वृद्धिहो और नसरा अस्तहोताहै जो लकड़ियों से पानी बहने लगताहैइसकेअस्तमें अत्यन्त गर्मीहोतीहै तो अधिकगर्मी के कारण खेतीऔर बागोंमेंबड़ानुकसान होताहैऔरहैतइसकासादज़िवह है॥

तसवीर नम्बर ७१

नवीं मंजिल तुरफाकीहै—सिंहकी तरफ ये दो छोटेतारे हैं और फर्कदीन से भी छोटेहैं माह आबकी प्रथम रात्री को उदय होतेहैं और आख़िर कानूनकी रात्रीको अस्त होजाते हैं ॥

तसवीर नम्बर ७२

साजा ने लिखाहै कि जब ये उदयहोता है तो व्यापार अधिक होताहै और मनुष्यदरिद्रता के हाथ से छूटजाते हैं वृक्षों पर फलअधिक होतेहैं और बिषयभोग बढ़ताहै निश्चयकरके मिस्र के

न्दर रूमीने इस पत्थरकी खान पाई तो अपने सम्बन्धियोंकोआज्ञा दी कि इसको बहुत उठालेवें लोगों ने आज्ञाका पालन किया रात्रि को हर मनुष्यपर चारों ओरसे पत्थर पड़नेलगे और कोई मनुष्य मालूम न होताथा तो उस समय यह प्रकट हुआ कि यह पत्थर जिन्न मारतेहैं और वह नहीं चाहते हैं कि इस पत्थरको कोई यहां से लेजाय सो सिकन्दर वहांसे बहुत जल्दीसे चलाआया और इस पत्थर के रक्षा करनेकी आज्ञादी उस समय से यह पत्थर सिकंदर के कोष में रहताथा और सिकन्दर सफ़र में अपने पास रखताथा इसका यहप्रभावथा कि जहां सिकन्दरपहुंचताथा वहांसे जिन्न और देव भागते थे और इसी तरह से चीरने फाड़ने वाले जानवर भी दुर होतेथे (कैहार) अरस्तूका बचन है कि इस पत्थर को पूर्बकी धरती पर पाते हैं और सोनेकी खान में होताहै इसका रंग याक़ूत सुर्ख़के सदृश है इसके प्रभाव यह हैं कि जादूको दूर करता है जो इसको दोजौके बराबर घिसकरपियें तो दिवानापन बिस्मरणाहोके रोग दूरहों (क़रबातीसून) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्द की धरती में हाथ आता है यह लहू को बन्द करता है जो इसको मुखमें रखकर फ़स्द खुलवायें तो कभी लहू न निकलेगा (क़रूम) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको नदीसे निकालते हैं सफ़ेदलाल पीला और सब्ज़ होताहै इसका प्रभाव है कि जिसके पासहो वह मनुष्य सत्यबक्ता होगा और उसके पाससे भूतप्रेत और जिन्नभाग जावेंगे जो एक जौ के अनुमान घिसकर थोड़े ऊद अर्थात् अगर लकड़ीके साथ पियें तो बहुत प्रकारकी पीड़ाको जैसे जोड़ोंकी पीड़ा आदिको लाभकरे (कलक़दीस) यह एक प्रकार की फिटकरी है इसमें अत्यन्त गर्म्मीहै और क़लक़तार और क़लक़न्द जो आगेबर्णन किये गये हैं इन दोनों से इसका गुण हर बिषय में अधिकतर है (क़लक़तार) यह भी एक प्रकारकी फिटकरीहै जालीनूसने लिखा है कि यह भी क़लकदीसहै परन्तु उससे गर्म्मी कम है इसका स्व-भावहै कि सूजनको दूर करतीहै और अधिकमांस को नष्टकरती है

देशवालोंको इसकेसमयमें वायु बेगसेचलतीहै और अंगूर बादाम और पिश्ताआदि मेवा अधिक होतीहै और इसकाहैतसादबलाहै॥

दशवींमंजिलजिवहतुल असदकी—ये चारतारेहैंजिनमें चौदह तारेहैं और एकदूसरे के सन्मुख ऊजाज में स्थितहैं दोनों के बीच ताज़िआनहका अंतरहै इसके उत्तर दक्षिणीताराकोक़ल्बुल असद कहतेहैं यह आवमहीना की चौदहवीं रात्रीको उदय और शाबान की बारहवीं रात्रीको अस्तहोताहै इसके अस्तहोतेही जाड़ेकीहानि होतीहै वृक्षोंके पत्तेगिरजाते हैं और वायुमेंबादल होतेहैं और ऊं-टिनी गर्भिणी होती हैं साजा ने लिखाहै कि जो ताराजिवहतुल असद उत्पन्न होताहै तो अरबदेशीय लोगोंके स्वरूप का रंगरूप बदलताहै यहतारा शुभहै अरबदेशीय कहताहै कि (जिबहसि-तारेके पानीसेजंगलपूरा न हुआ परन्तु रातकोपूराथा) और कोई२ अरबदेशीय कहताहै कि जब सुहेलहज्जाज़में जिवहके साथ उदय होताहै तो अंगूरहोतेहैं और ताजेछुहारे मिलतेहैं घास सूखजातीहै मनुष्योंको दृष्टि छांहआती नहीं इसका हैतसादुलसऊदहै ॥

तसवीर नम्बर ६३

ग्यारहवीं मंजिल जुहरा कीहै — (शुक्र) ये दो तारे प्रकाशित हैं और अन्तर इनदोनोंके बीचमें एक ताजिआनह(कोड़ा) के अनुमान होगा अरबदेशीय उनकोहरामी कहतेहैं और सिंहकक्रोधसमय जो रोम उसके अंगपै खड़ेहोजातेहैं उसको जोहरा कहते हैं औरइनको जोहरा कहनेकाकारण यहहै कि इनदो तारोंमेंसे अधिक प्रकाशित है और इनमें कुछ कजभोहै यह आबकी चौथी तारीखको उदयऔर पच्चीसवीं शाबानको अस्तहोताहै इसकी उदय और दृष्टमें बर्षा अधिक होतीहै (दृष्टिसे प्रयोजन वहहै जो और दूसरे नखत और तारों में होतीहै) सो जो बिप्रीतिहो तो प्रशन्साके योग्य है जिस समय जोहरा उदय होताहै उससमय एराक़देश में सुहेल दृष्टि आताहै और रातको सर्दी और दिनमें गर्मीहोतीहै हैतइसकासादुल बिलहै और स्वरूप इसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर ७४

मज़लिस बारहवीं सर्फ़ह्कीहै ज़ोहरा (शुक्र) केपीछे एकतारा अधिक प्रकाशित स्थितहै बहुतमें कहतेहैं कि यह क़लबुल असद है (सिंहका हृदय) इसको सर्फ़ा कहनेका यह कारण है कि इसके उदय होतेही जाड़ेको आदि होतीहै यह ऐलूलकी नवीं रात्रिको उदय होताहै और अयाज़ की नवींरात्रि को अस्तहोजाता है और इसके समय में मृत्यु होतीहै अरबदेशीय जब लड़कों कादूध छुड़ाते हैं तो इसीका आसरा देखते हैं साजा कहता है कि इसके उदय होतेही सब व्योपारों में लाभहोतीहै और गर्म बहुत रहतेहैं सरफ़ा के समय मेंरात्री को जाड़ा और पानी बर्षता है और हैत इसका फ़राबेउहै—सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ७५

मंज़िल तेरहवीं अवाकीहै ये चारतारे सरफ़ा के असरपर प्रकट हैं औ इनकी उपमा निंदनीय स्वरूपसे दीहै और उसके निन्दाका चिह्न प्रकटहै और--सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ७६

और उनको कुत्तों के नामसे प्रसिद्ध कियाहै मानों सिंहके पीछे जाते हैं बहुतसे ज्योतिर्विद कहतेहैं कि सिंहकी तरफ फिराहै अव्वल महीना की बाईसवीं रात्री को उदय और आज़ार की बाईसवीं रात्री को अस्त होता है साजा कहता है कि इसके उदय के समय वायुभलीमालूमहोतीहै और नंगा बैठना अथवा जंगलमें सोनाजाड़े के कारण निश्चय करके उनकेलिये जिनकेपास वस्त्र न हो वर्जितहै उसके प्रकाश के समय रातदिन बराबर होता है और यहएतदाल खरीफी है और एतदाल खरीफी उससे प्रयोजन है कि जब सूर्य नुक़तय एतदाल खरीफी पर बासकरता है यहस्थान तुलाका है और रातदिन बराबर होता है और जब नुक़तय एतदाल रबी में सूर्य [illegible] है मेष है उस समय बराबरी रातदिन की होती है उसदिन के [illegible] रात बढ़ती है और दिन छोटा होताजाता है इसी प्रकार

मेषकी आदि से दिन बढ़ता है रात्री छोटी होती जाती है और हैतं इसफ़रादेव मौखर है॥

चौदहवीं मंज़िल समाक एजल की--इसहेतुसे कि समाक रामा में सूर्य्य का निवास नहीं होता है यह प्रकाशित तारा है और इसको समाक एज़ल कहते हैं (एज़ल उसको कहते हैं जो हथ्यार बन्द न हो) अरबदेशीय दोनों समाक को सिंह की टांगें बताते हैं और यह समाक एज़ल मकर है मयाज़ और शामियह के बीच में तो जिसका स्थान जिसके नीचे है वहीछोटा है उसका नाम एमानी है क्योंकि वह अर्द्धभाग मण्डल के अर्द्ध दक्षिणीभाग में स्थित है तो वह हिस्सह यमन है और जिन तारों का स्थान समाक के ऊपर है वह शाम है किसहेतु से कि यह अर्द्धमण्डल शामकी ओरहै समाक जलकरि यह की सीमा है॥

खत उस्तवासेन शरींउल ओवलको पांचवींतारीख को उदय होता है और बैसां की चौथी तारीख को अस्त होता है इसका प्रकाश प्यारा होता है क्योंकि इसके समय में वर्षा न होना कम सुनने में आता है और वर्षा इसकी खतीतह तक पहुंचती है (खतीतह एक देश का नाम है) जहां कि सम्वत् के स्वभाव अनुसार वर्षा होती है और नशर एक प्रकार की चरागाह है कि जहां के चरने से रोग उत्पन्न होता है साजा कहता है कि जिस समय समाक उदय होताहै उससमय वह रोग शांति हो जाता है और उस वर्षा से लाभनहीं होती क्योंकि उस समय उसपानी को ऊंट नहीं पीते हैं जब समाक उदयहोता है तो घास काटीजातीहै और वर्षाभी होती है और इसका हैतवतनु लहौतहै और यह अन्तस्थान है चौदह स्थान शामी नामक से॥

तसवीर नम्बर ६०

मनाज़िल यमानिया के विषय में॥

इसमें से पहली मंजिल कफ़्फ़ारकी है ए तीन सितारे छिपेहुये हैं उनमें से एकतारा तो अत्यन्त छिपाहु आ दूसरे से अधिकहुआ

दृष्टिआता है और तीसरा एक कोड़ेकी दूरी पै दृष्टि आता है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ७८

इसी कारण इसको अफरा कहते हैं कि उसके उदय के निकट पृथ्वी रमणीक होतीरहती यह नशरींउलऔवल की अठारहवीं को उदयहोता है और नैसां की सोलहवीं को अस्तहोजाता है साजा ने लिखा है तो शरीर के रोमथर्राते हैं और वृक्षभी थर्राते हैं औरपृथ्वी अपनी शक्ति से अशक्ति होजाती है और जीवों की वृद्धिभी कम होजाती है और इसके अस्त होनेके उपरांत गर्मी मिटजाती है और सर्दी परने लगती और उसकी आदि में कुहारों की फसलका अन्त होता है और हैत उसका सरतां (कर्क) है॥

दूसरी मंज़िलजवाना की है—यह मिज़ अकरबकीहै (वृश्चिक) ये दो तारे हैं संसार की दृष्टि में जुदा २ दृष्टि आते हैं परन्तु पांच गज़ की दूरी दोनों के बीच में है नशरींउलऔवलके अन्तमें उदय होता है और नैसांके अन्त में अस्तहोता है अरबदेशीय निश्चयकरते हैं कि इसके समय में उत्तर की बायु बेग से चलती है और गर्मी के दिनों में अत्यन्त गर्मीहोतीहै साजा कहता है कि ज्योंहीं उदयहोय त्योंहीं अपने कुटुम्ब के जाड़ेके कपड़ा बनानेकीफ़िक्रकरै—यकलीमअहलमें नजरातमें मनुष्यघरमेंआजाते हैं और इसकी सर्दी और बर्सातमाह के खानेमें आतीहै इसका हैतवतीन है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ७६

मंज़िल तीसरी अकलील (ताज) की है यह अकरब (वृश्चिक) का शीश है वहतीनतारे हैं एक मोतरजां स्वरूप बनाहै नशरीन औवलकी प्रथम रात को उदय होता है और तेरहवीं अयाज़ को अस्त होता है साजा ने लिखा है कि इसका उदय फहूलहाता है इसके अस्त होनेपै काजल सूखजाताहै औरइसकी दृष्टिके समय वर्षा बहुत होती है और सुरया इसका हैत है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ८०

मंजिल चौथी क़लब की है--यह अकरब (वृश्चिक) का कलब (हृदय) है रंग इसका सुर्ख है और इसके पीछे अकलील है और यह उन दो तारों के बीच में स्थित है जिनका नाम बनात है और ये दोनोंतारा प्रथम तारा की बराबर लाल नहीं हैं ये दोनों जाड़े की ऋतु में उदय होते हैं छब्बीसवीं नशरींउल औवलको तो उदय होते हैं और छब्बीसवीं अयाज़ का अस्त जो कुछ पशु आदि इसके उदय में होते हैं वे सरदी का फलदेते हैं भोजन और ऊंटादि पशुओं का चारा इसके उदय में कम होजाता है साजाकी बाक्य है कि इसके उदय के समय की सर्दी कुत्ता की समानपुकार करती है अरब देशीय इसके क़लब और नशर को वाक़यहज़ारैन कहते हैं इसहेतु से कि जिमस्तान इसके उदय में पीठ दिखाता है और अरबदेशीय इसको बुराजानते हैं इसलिये जब चन्द्रमा वृश्चिक में आता है उस समय पन्थ चलना बुराजानते हैं क्योंकि इसके समय जाड़ाअधिक होता है दूसरे बायुबेगसे चलती है तीसरेवृक्षों के पत्ते और फलों में पानीहोता है इसका हैतदेरां है ॥

तसवीर नम्बर ८१

मंज़िल पांचवीं सोलह की है ये दो तारे इस प्रकार इकट्ठे स्थित हैं कि मानों वृश्चिककी पूछको छूना चाहते हैं और इसको सोलह कहने का यह कारण है कि इनमें उँचाई ऐसी है कि मानों मदीना को उठाना चाहते हैं इसके और वृश्चिक के पूछ के बीच में एक बादल के टुकड़ा के समान है कानून उलऔवलकी नौवीं तारीखकोउदय और नौवींखरीजांको अस्तहोताहै साजाने लिखाहै किइसकेउदयमेंकुटुम्बदरिद्र होजाताहै और इसकीदृष्टिके प्रभावसे वृक्षोंके पत्तेगिरजाते हैं और वर्षाअधिक होतीहै और जोअरबदेशीय मीज़ाबमेंहों वे जहांतहां होजातेहैं इसकाहैतहक़ाहै ॥

तसवीर नम्बर ८२

मंज़िल छठींनआयमकी—ये आठतारे सोलहकेपीछेहैं उसमें से

चारतो मजहरमें जिनको नआयमदारदकहतेहैं और कारण इसका यहहै कि वेइसप्रकार स्थितहैं कि मानो उनकी इच्छापानीपीनेकी है और शेष चारतारेजो मजराके बाहिरहैं वे इसप्रकारसे हैं किमानो नहरसे पानीपीके निकलेहैं इनको न आयमसादिर कहतेहैं इनचारों मेंसे प्रत्येकएकदूसरेकी जगहसे मिलाभयाहै बाईसवींकानूनउल औ-वलकोउदय और बाईसवीं खरीजांकी रात्रीको अस्तहोतेहैं साजाने लिखाहै कि इसके उदयमें जीवधारी चलते बहुतहैं मानो चरवाहा नहीं है और पक्षीएकसाथ उड़ते हैं इसके स्वभाव इसकेसिवाय कि ज़िमस्तानका आरम्भहोता है और दिनबढ़ताहै औ रातघटती है लिखे नहींहैं इसका हैतहकाहै ॥

तसवीर नम्बर ८३

मंज़िल सातवीं वलदहकी है—यह एक प्रकारकी फिज़ा अर्थात् रमणीक वरगित आसमान परहै नायम और सादजिवह के बीचमें कोई तारानहींहै और बासमें एक ताराके सिवाय और कुछनहीं है और वहताराभी ऐसा छोटाहै कि दृष्टिकामनहीं करती उसकानाम वलदहहै और उसकीउपमा ऐसीठौरसेदीहै कि जहां साळव (लो-खड़ी) सोतीहै सो वह अपनी पूछफिराती है इससे तारे चारोंओर बिखड़जाते हैं कभी २ चन्द्रमा भी यहां आताहै और क़लावह में से जाताहै क़लावह छहतारेछोटे २ हैं छिपेहुये कमान के सदृश कोई अरब देशीयतो इनको कूमकहताहै औरकोई औज़ी जवालुल क़ूस एकतारा है कि उसको सहमुलरामी भी कहते हैं कूससाद जिवहके आगे स्थितहै वलदह कानूनलआख़िरकी चौथीरातको उदयहोताहै और महीनातमूज़की चौथीरात्रीकोअस्तहोता है साज़ा कहताहै कि जब वलदह उदयहोता है तबपानीपीनाशुभहै क्योंकि इसके प्रकाशमें चिकनाईहै और पानीस्वादिष्ट भी होजाताहै और जाड़े अधिकपरतेहैं मुख्यलेखतो यहहै कि जिमिस्तान का पत्थर कड़ाहोताहै और बागकूटेसे साफहोजातेहैं और अंगूरकेवृक्षनिर्फल होजातेहैं ॥ इसका हैत जराअ है ॥

तसवीर नम्बर ८४

मंज़िल आठवीं सादज़िवहकी है—ये दोतारे हैं और नैरैन के सिवाय कोई तारा नहीं है॥ इनके बीच में दोगज़का अन्तर दृष्टि आता है और इनदोनोंमें से एकका तो मुख उत्तरको मालूमहोता है और दूसरेका मुख दक्षिणको॥ इनदोनों के ऊपर एक छोटासा तारा और है जो अपने नीचेके बड़े तारों में चिपका है॥ कानूनुल आख़िरकी सातवीं रात्रीको उदय और सत्रहवीं नमूज़ को अस्त होता है॥ प्रभाव यहहै कि वृक्षोंकी शाखाओं में पानी पहुंचताहै और बादाम के ऊपर छिलका पैदाहोता है और पत्ते गिरने लगते हैं और हैत इसका नसरा है॥

तसवीर नम्बर ८५

मंज़िल नौवीं सादबलाकी—ये दोतारे मजरह में बराबर हैं एक इनमें से अधिक छिपाहै॥ इनमेंसे बड़े तारेको बला इसकारण कहते हैं कि यह बड़ातारा अपनाप्रकाश छोटेको ओर पहुंचता है॥ यह कानूनुल आख़िर की अन्त रात्रीको उदय और महीना आबकी प्रथम रात्रीको अस्तहोता है॥ साजाने लिखा है कि जब बला उदयहोता है तब अंगूर इतना पैदाहोता है कि मारे गुच्छों के पृथ्वी मुंदजाती है और पशुओंसे बहुत जल्दी फलमिलता है॥ उससमय में एकपक्षी पैदाहोता है सो मनुष्य उसकी अहेर करते हैं और पृथ्वी बनस्पति से गहगहाने लगती है और हुदहुद (पक्षी) अण्डादेता है और दक्षिणी बायु बहुत चलती है और पशुओं का दूध क्षीणहोता है॥ हैत इसका तर्फ़ है॥

तसवीर नम्बर ८६

दशवीं मंज़िल सादुलसऊद को है—ये तीनतारे हैं उनतीनों में से एक दोकी अपेक्षा अधिक प्रकाशित है॥ अरबदेशीय अपने लड़कोंका नाम इसके नामसे प्रसिद्ध किया करतेहैं॥ इसी कारण सादुलसऊद कहते हैं॥ यह शबात की बारहवीं रात्री को उदय औरमहीनाआबकी चौदहवीं रात्रीको अस्तहोताहै साजा लिखता

है कि इसके समयमें धूपबुरी लगतीहै और बसन्तऋतुका आरम्भ होताहै॥ इसके उदयमें पक्षी चहचहाते और कामकलोल करते हैं॥ खतातीफ़ (नामपक्षी) पंख गिराते हैं ऊंट और बैलमोटे होते हैं॥ और फूल बहुत होते हैं हैत इसका जिवह है और स्वरूप सादुल-सादका यह है॥

तसवीर नम्बर ८७

मंज़िलग्यारहवीं साद अजनिवाकी--येचारतारे इकट्ठे स्थित हैं दोतारे लम्बाई और दो चौड़ाई में हैं इनसे ऐसे मनुष्य का स्वरूप बनताहै जो बहुत धीरा चलताहो कहतेहैं कि इनमें एक सादहैवही प्रकाशितहै और शेषतारोंका नाम सादुलआजनिवाहै यह बफ़ासे आगे उदय होताहै और बफ़ा उससमयका नामहै जब जाड़ेकेडर नहींहोता इसके उदय होतेही मांसाहारी जीव बाघ और भेड़िया के तुल्य और काटनेवाले जीव सांप बिच्छू के समान प्रकट होने लगतेहैं इसप्रकारसे कि मानो ये दुखदाई जीव इसकी सेनाहैं यह शबातकी पच्चीसवीं रात्रीको उदय और बाक़ीकी चौथी रात्रीको अस्त होताहै साजाने लिखाहै कि इसका उदय खलोंको फलीभूत होताहै जितने खलजीवहैं वेसबइसकेसमयमें चिकने परतेहैं जितने जाड़ेमें तनक्षीन होते हैं उतनेही इसके समयमें पीनहोतेहैं इसके उदयमें बर्षा अधिक होजातीहै और अंगूरोंकी फ़सल नष्टहो जातीहै अंगूरोंके गुच्छे टूट २ केगिरजाते हैं हैतइसका ज़ोहरा (शुक्र) है सूरत इसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ८८

मंज़िल बारहवीं फराऔवलकीहै—इसका नाम फराऔवल है दादके औवलस्थितहै येचार तारे हैं सो इनमेंसे दोको तो फराऔवल और दोको फराआखिर कहते हैं (फ़रा--देउ) फ़रादेउ अकूबीं के बीचमें गिरताहुआ दृष्टिआताहै फराऔवलका उदय आजारकीन रात्री को होता है और ये बलकी नवीं रात्री को अस्तहोता है साज़ा के अनुसार इसके उदय होनेके समय अंगूर सूख जाता है

मनुष्यस्त्रियोंके साथ बिवाह और रति करने में अधिक चित्तदेते हैं यहतारा अतिही शुभहै जमरहसालिसामें उदय होता है उस समय बादाम, सेव, और आलू बुख़ारा अधिक होते हैं और इस अस्त होनेके समय रोगी मृत्युको प्राप्तहोतेहैं इसका हैतसप्तहै॥

तसवीर नम्बर ८६

मंज़िल तेरहवीं फ़रासानीकी है (फरा-देउ और सानी-द्वितीय) इसका व्याख्यान फ़राओवल के साथ होचुका है, यह बाईसवीं रात्री को आज़ारमहीना में उदय और बाईसवीं एवल को अस्त होताहै यहतारा शुभहै इनफराका उदय जाड़ेके आदि और अस्त जाड़े के अन्तमें होता है इसके अस्तके समय हज्जीज़ और थानामें वृक्ष काटेजाते हैं और गोराबनाते हैं और शहद निकालाजाता है इसके समयमें जाड़ाहोताहै घास अधिक होतीहै बेर और बाक़ला बहुत पैदाहोताहै रात दिन बराबर होनेलगताहै और हैत इसका अवाहै और इसकी सूरत फ़रा ओवलके सदृश है इसलिये अधिक व्याख्यानकी आवश्यकता नहींहै॥

तसवीर नम्बर ६०

मंज़िल चौदहवीं हौतके वतनमें है (हौत-मीन) (वतन-पेट) इस स्थानमें तारे अधिकहैं और एक मछलीके स्वरूपपर है इनको रशाभी कहतेहैं इस तारेका शीश तोशान की ओर और पूंछयमन की तरफ है पीछेका धड़ इसका पश्चिमकी तरफ़ और आगे का धड़ पूरब की तरफहै इसतारेका अर्द्धभाग अधिक प्रकाशितहै और आख़िर के अर्द्धभाग में एकतारा अतिही प्रकाशवान् दृष्टि आता है और इस मंजिलका हिसाब इसी तारेपर है यह नैसांमही की चौथी तारीख़को उदय और नसरींउलओवल की पांचवीं रातको अस्त होताहै उसके अस्तकेसमय पानी पृथ्वीके नीचेचलाजाता है इसके अस्त होनेके उपरान्त सरतां (कर्क) उदय होताहै तब फिर यथा पूर्वक पानीजारी होताहै साजाने लिखा है कि वतनुलहौत के उदय में जीवोंमें चल बिचल होतीहै निश्चय करके जलचारी

जीवोंमें उस समय शिकारी लोग अहेर को जाते हैं इसका हैतसमाकहै इसके समय में बर्षा बहुत होतीहै और अवर्षण कभी भी नहीं होताहै और इसके प्रकाशके आदिमें जो काटेजाते हैं ॥

तसवीर नम्बर ६१

इति ॥

दशवां व्याख्यान फ़लकुल अफ़लाक अर्थात् महामण्डलके विषय में ॥

इसको फ़लकुलअफ़लाक अर्थात् महामण्डल कहनेका यहकारण है कि यह सम्पूर्ण मण्डलोंको घेरेहै और अपनी नियत चाल से सम्पूर्ण मण्डलों को चक्रदेता है ॥ इसकानाम फलकअज़ीम भी है क्योंकि यह सम्पूर्ण मण्डलों से बड़ा है और इसकानाम फ़लक अतलस भी है क्योंकि इसपर कोई तारा नहीं है ॥ इसकाचक्र पूर्व से पश्चिमको होताहै और ध्रुवइसका तारामण्डल(फ़लकसवाबित) पर है और इनदोनों में भी एक ध्रुवको दक्षिण ध्रुव और दूसरे को उत्तर ध्रुव कहते हैं और चौंतीसघड़ी में सम्पूर्ण मण्डलों का उनके तारों सहित चक्रदेताहै ॥ इसकीचाल सम्पूर्ण बस्तुओं की चाल से जो मनुष्य की दृष्टि गोचरमें आसकती हैं बेगतर है ॥ यह गणित से मालूमहुआ है कि सूर्य दूसरे की चालसे फिरता है अर्थात् सूर्य को फिरानेवाला दूसरा है तिसपर जितनीदेर में मनुष्य पांव उठा के पृथ्वीपरधरै उतनीदेर में ८०० आठसौकोस जाता है और इस बातकी प्रतीतकेलिये रसूलखुदा (ईश्वरकादूत) की वार्त्ता साक्षी है कि जब नमाज पढ़ने से पहिले प्रश्नकिया उसके प्रतिउत्तर में जिबरीलने कहा—लानअम—तब रसूलने इसकी निर्णय पूछी तब जिबरीलने कहा कि जितनीदेर लानअम—के कहनेमें लगी उतनी देरमें सूर्य ५०० पांचसौ कोसगया है ॥ महामण्डल के फिरने से दिन और रात होते हैं इस आसमान के चक्रदेने में जिस समय सूर्य जिसतरफ उदयहोता है उसओरके पृथ्वी,वायु और धरातक प्रकाशवान होते हैं ॥ जीव चलते फिरते हैं बनस्पतिकी वृद्धिहोती है और जब सूर्य इस आसमानकी दूरीपै जाकर अस्तहोता है तो

वहां के बायु काली होती है और पशु बासालेते हैं और बनस्पति मुर्झाय जाती हैं ॥ जो कोई बुद्धि स्थिरकर के इस मण्डलका हाल जानाचाहै तो उसको विदित होगा कि मानो दोदाव्वह अर्थात् पाट रखताहै उनमें से एकको चैनदेता है और दूसरेको फिराताहै इसलिये जबतक इसमण्डलमें चक्रहै तबतक पशु और बनस्पतिकाभी यहीहाल रहैगा जैसे ईश्वरने कहाहै कि इसलियेजब यह आसमान की चाल बन्दहोगी उससमय यह संसारिक प्रबंध वृथा होजाताहै और वृथा होनेका यह कारण है कि ईश्वर की आज्ञा है और कहना सत्य है विद्वानों ने इस आसमान को घेराहुआ देखा है क्योंकि उनको निश्चय है कि इस आसमान को छोड़ के और न तो आकाश है और न पृथ्वी है अबू अबदुल्ला महम्मद अमर के बेटे की बात काटके लिखा है कि जोकोई अपनी बुद्धिबल से आकाशनापै तो बड़ी अन्धी पन्थ में फँसता है किसी २ ने आयतों खबरों हदीसों और बिद्वानों की बाक्यों को लिखा है कि कुर्सी उस आसमानका नाम है जिसके बिषय में यह सम्पूर्ण लिखागया है और अरशनवां आसमान है और वह सब आसमानों से बड़ा है ईश्वर जानता है अरश और कुर्सी के होने में कोई सन्देह नहीं है किस हेतु से कि इनके बिषय में कुरान में आयतें वर्त्तमान हैं और अबूदर्द ने राजी हो ईश्वर उसपर पैग़म्बर से बर्णन किया है कि हज़रत रिसालतमाब ने कहा कि सातों आसमान ऐसे हैं जैसे जंगल में कुण्डल पड़ाहो तो आसमान कुर्सी अरश (महामण्डल) के सामने ऐसे हैं जैसे कुण्डल और जंगल अरश के समान हैं बड़ाई में अरश ईश्वर ने बड़ा बनाया है और उन सातों आसमान का अरश उसीप्रकार क़िबला है जैसे पृथ्वी वालों को मक्का है हदीस में लिखा है कि मेकाईलने ईश्वरसे छुट्टीमांगी कि मैं अरशका पर्यटन करआऊं ईश्वरने कहा कि अच्छातो मेकाईलने इतना पर्यटन किया किवृद्ध होगया तब उसने ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे ईश्वर सामर्थ्यहोजाय ईश्वरने कहा एवमस्तु तब उसने इतना पर्यटन किया कि बारह

इसप्रकार सर्वभीतिगये इतने समय के अन्तर में अरब के एक छोटे से टुकड़ेका पर्यटन किया इमामजाफ़र ने कहा है कि अरब में एक स्थान है जो जब कोई सधर्म्म दण्डवत् करता है अथवा रुकू (झुकना) करता है तो वह स्वरूपभी उसी प्रकार सब करता है उससे मालूम होता है कि पृथ्वीपे किसीने दण्डवत् करी और नहीं तो जानाजाय कि कोई पूजन और ध्यान करनेवाला पृथ्वीपर नहीं है निदानइस स्वरूपके क्रम्म देखनेसे मालूम होताहै कि पृथ्वीपै सधर्म्म हैं तबमला-यका ईश्वरसे उसके पापोंकीक्षमा मांगते हैं ॥

ग्यारहवां अध्याय आसमान के निवासियों के विषयमें ॥

---

५ सम्पूर्ण वैद्य और विद्वान् कहते हैं कि मलायकों (देवता) का शरीर पांचतत्वका नहीं है और स्वच्छबुद्धि और अमर हैं जिन और शैतान और मलक में भेद है किसीने तो लिखा है कि इनमें इतना अन्तर है कि जितना कामिल और नाक़िस (सिद्धि और असिद्ध) में होता है अथवा जितनानेककार और बदकार (साधुअसाधु) में होता है विदितहो कि मलक (देवता) काम क्रोध और मोह के तिमिर से बा-हिर हैं अर्थात् वेजोकाम करते हैं सो ईश्वर की आज्ञानुसार करते हैं उनका अन्न और जल केवल ईश्वरका भजन है और ईश्वर की कथा श्रवण में उनका प्रेम है और उसीमें प्रसन्न रहते हैं ईश्वरने इनके स्वरूप भेदानुसार स्वभाव बनाये हैं और इनकी संख्या और भेद सृष्टिकी रक्षाहेतुरचे हैं ॥

६ किसीविद्वान् ने लिखा है कि आसमानपर सृष्टिनहो तो ईश्वर सर्वशक्तिमानकी बुद्धि कैसे इसबातको मानेगी जबकि उसने खारी समुद्रमें नानाप्रकार की सृष्टि रची है जो उसका आराधन करते हैं और मछलीको जलमें वासदिदिया जंगल और पहाड़पै नहीं भेड़ा और जलमें देखो वहां नानाप्रकार के मांसाहारी जीवउत्पन्न किये कोई २ यहकहते हैं कि ईश्वरने आसमान के उपरान्त ऐसे जीव उत्पन्न कियेहैं कि उनके स्वरूप दिवालोंपर अंकित कियेजाते हैं

और इसी सृष्टिके अनुसार हैं जैसाकि और मलायका (देवताओं) को ईश्वर के सिवायकोई नहींजानताहै जहांतक कि रसूल (दूत) ने खबरदी और हदीस (शास्त्र) से पाया जाता है सो लिखताहूं कि सृष्टि में कोई कण किसी वस्तु का ऐसानहीं है जिसपर ईश्वर ने रखवारी के लिये कोई नियत नकियाहो वर्षा विषय एकबूंद भी ऐसी नहीं पृथ्वी पर परती जिसके साथ एक देवता रक्षाके लिये न आताहो (यहां देवता से वरुण प्रयोजन है) भला जब पानी की बूंदोंका यह हालहै तो आसमान, तारागण, वायु, मेघ, पृथ्वी, पर्वत, जंगल, नदी, सोता, खानकी वस्तु, वृक्ष, और जीवधारी आदि को कौनकहै यहां से मालूमहुआ कि सृष्टि का प्रवन्ध देवताओं (मलायक) सेहोता है इसलिये मलायका (देवताओं) का व्याख्यान दोप्रकार से करता हूं प्रथमतो यहकि जो कुछ अपनी पुस्तकों (कुरानादि) सेपतालगाअथवा जिसको बुद्धि अतर्क मानले प्राचीन शास्त्रवेत्ताओं नेभी मलायका (देवताओं) सेही पतापायाहै जो आकाश को उठायेहैं और वे सम्पूर्ण फरिस्तों में प्रतिष्ठित और निकटनिवासी और प्यारेहैं और उसीसेबाकी और दूसरे फरिस्ता तनमन से याचना करते हैं और उनको दण्डवत् करते हैं और निशिवासर उनकी सेवाकरते हैं इसहेतु से कि इनकी प्रतिष्ठा सब मलायक से बढ़केहैं और ईश्वरकी सेवाकरते हैं और उसके पार्षद हैं अर्थात् निशिवासर उसीके गुणगातेहैं और पापी और दोषियों के तारने के लिये प्रार्थना करते हैं नवीको हदीस (शास्त्र) में लिखा है कि इनमलायक में से एककी सूरत आदमी कीसीहै और दूसरा पशुके स्वरूप सदृश है और तीसरा गिद्ध के स्वरूप सदृश और चौथा बाघके सदृशहै हज़रत रसूलखुदाने अम्बियाबिनअबीसल सलतकी वाक्यसुनके बड़ा आश्चर्य किया क्योंकि पूर्वोक्त अम्बिया ने इसामलां अरशके नाम अपनी एकबैतमें (पद्य) लिखाथा और वहउस समय लिखाथा कि मनुष्यनिराक्षरथे ॥

तसवीर नम्बर ६२

इब्न अब्बासने कि ईश्वर उसपरदयालु हो कहाहै कि ईश्वरने जो अर्श उठानेवाले पैदाकिये वे अवचारि हैं और जब प्रलय होने की क़ियामतक दूसरे फ़रिश्ते इनकी सहायताको औरभेजैगा औरइसकी पुष्टता के लिये यहक़ुरानकी आयत— अखण्डनीय प्रमाणहै आयत ये लोग लम्बाई चौड़ाई स्थूलमेंऐसे हैं किमनुष्यकीसामर्थ्य नहीं जो इनकी प्रशंसाकरै क्योंकि सम्पूर्ण देवता इनकी शिक्षा के आशा-वान् रहते हैं इनमें सेएकजो मनुष्यका सा स्वरूपहै सोतो मनुष्यों की भलाई के लिये ईश्वरके सन्मुख प्रार्थना किया करता है और वहजो बैल की सूरतहै सो सम्पूर्ण पशुओंकी भलाईऔर आनन्दके लियेईश्वरसेप्रार्थनाकियाकरता हैऔर वहजोगिद्धके स्वरूप सदृश है सोसम्पूर्ण पक्षियोंके आनन्द का याचक हैऔरवहजोबाघके स्व-रूप सदृशहै वह सम्पूर्णजीव मान्साहारी के आनन्दऔर भक्षण के लिये प्रार्थना करतारहता है सम्पूर्ण फरिस्तों में से एक फरिस्ता अतिही बड़ा है वहअपनेस्थूलके कारण एक पंक्ति में अकेलाही खड़ा रहता हैऔर सम्पूर्ण दूसरी पंक्तिमें गिन्ती से यहभीख्याल किया है किवह श्वास लेताहैतो उसकीप्रत्येक श्वास से एक जीवके प्राण निकलतेहैं अर्थात् प्रत्येकश्वासमेंएकजीव उत्पन्न होताहै यहलिखा है कि ईश्वर ने इस बड़े फरिस्ता को इसकाम पै नियत किया है कि जो चन्द्रमा के मण्डल के नीचे मण्डल है उसको चलावे नीचे चन्द्रमा से यह प्रयोजनहै कि तत्वोंको अर्थात् अग्नि, वायु, जल और पृथ्वीको और उनतत्वों से जोकुछ पैदा हो जैसे सोना, चांदी, लोहा, तांबा, कांसा, लाल, हीरा, पन्ना, जमुर्रद आदिऔरबनस्पतिजो पृथ्वीसे उगतीहैं चाहै वे बड़ी हों चाहै छोटी और जीवधारी थलचर जलचर और नभचर चाहै मनुष्य हों अथवा पशु यह फरिस्ता [illegible] बहुत बड़ाहै और सम्पूर्ण सृष्टिमें सबसे बड़ा औरप्रति-ष्ठितहै और बड़ा बली है उसको इतनी सामर्थ्य है कि जैसे यह आसमानको चक्र देरहाहै चाहै तो रोक रक्खै ॥

इसराफ़ील-यह फ़रिश्ता ईश्वर का निकट निवासीहै अर्थात् आज्ञाकारी है जो आज्ञा ईश्वर को देनी होतीहै सो इसीके द्वारा भेजताहै और जीवों के प्राण यही हरताहै रसूलखुदा ने कहा है मैं क्योंकर आराम करूं और शूर बजानेवाले ने शूरको (करनाल) मुख पै रक्खाहै और आज्ञा पा चुकाहै कि जैसे वह समय पहुंचे तैसेही करनाल को बजादे मक़ातिल ने जो प्राचीन विद्वानों में से है कहाहै कि करण से प्रयोजन सींगसे है सो वह इसराफ़ील अप-ने मुखपै धरेहै इस आसरे में कि जैसेही ईश्वरकी आज्ञाहो तैसेही उसको फूंकदे और वह सींग करनाल की सूरत काहै और उस करनालके मुखका घेरा पृथ्वी औरआसमान दोनोंसेबड़ाहै निदान उसकी दृष्टि अरश की ओर है और ईश्वरकी आज्ञाका आशावान है कि जैसेही ईश्वरकी आज्ञा पावे त्योंहीं उसको फूंके जिस समय यह करनाल फूंकेगा उस समय सम्पूर्ण पृथ्वी और आसमान अचेत होजायँगे जिसको वह ईश्वर सृष्टि करता चाहेगा सो तो चित में रहेगा और नहीं हज़रत आयशासदीक़ा ने काबुल अहबार से कहा कि मैंने रसूलखुदा से यों कहते हुयेसुना कि हे ईश्वर मैंने क़ुरानके द्वारा जिबराईल और मेकाईल कातो वृत्तांत जाना परन्तु अभी तक इसराफ़ील के समाचार कुछ भी नहीं जानताहूं इसलिये मुझे उसके हालसे सचेत करदे काबुल अहबारने कहा कि वह एक ऐसा बड़ाफ़रिश्ता है जिसके चार पंखहैं उनमें से एक से तो पृथ्वीका पूर्वभाग दबायेहै और एक पंखसे पश्चिम का भाग और तीसरे पंख से आकाश को थांभे है और चौथा पंख मुखपै किये है और इसके दोनों पैर सातवीं ज़मीन अर्थात् पाताल लोककी पीठ पैहैं और शीश ईश्वर के खम्भा कि बराबर अरशमेंहै और दोनों आंखों के सामने जवाहिर की पट्टीहै जब ईश्वर को आज्ञा देने की आवश्यकता होतीहै तो क़लमको आज्ञा देताहैकि उसपट्टी पैलिखे तिस उपरान्त ईश्वर उस पट्टी को इसराफ़ील की दृष्टि सामने

लाताहै तो इसराफ़ील उस तख़्तीको मेकाईलके पास पहुंचा देता है इसराफ़ीलके सहायक और भी फ़रिस्ता हैं परन्तु फ़रिस्ता से लेकर सम्पूर्ण और इत्यादि उसके आज्ञाकारीहैं और उनकी तरफ़ से फ़रिस्ता सम्पूर्णसृष्टिमें वर्त्तमान हैं यहां तक कि तत्त्वों पर और जो पदार्थ तत्त्वोंसे बनेहैं पैदाहोते समय प्राण वायु उनके शरीरमें फूंकतेहैं प्राण वायु से प्रयोजन उस वायु सेहै कि जिसके बलसम्पूर्ण जीव और पदार्थ सजीव रहतेहैं और जबप्राण वायुका फूकना बन्द करदें तो वही कारण मृत्युका है॥

तसवीर नम्बर ६८

जिबरईलअलैहस्सलाम॥ यह फ़रिस्ता अमीन वही अर्थात् मध्यस्थहै आकाशवाणीका और क़ुदसका ख़ज़ांची अर्थात् ईश्वरका कोषाध्यक्ष है इसीकारण इसको रुहुलक़ुदस और नामूस और मलायका ताऊस कहतेहैं हज़रतरसूल खुदाने कहा कि जिससमय ईश्वर आकाशवाणी देता है तो स्वर्ग निवासी उसको घड़ियाल के शब्दके समान सुनते हैं मानो कोई पत्थर पर जंजीर खींचताहै तब इस भयानक शब्दको सुनके सम्पूर्ण अचेत होजाते हैं और उसी दशामें पड़े रहतेहैं जब हजरत जिबरईल उनके पास आतेहैं तब उनकी घबड़ाहट दूर होती है तो पूछते हैं कि ईश्वर ने क्या कहा उससमय जिबरईल कहते हैं कि अलहक़ यह सुनकर सम्पूर्ण मलायका (देवता) अलहक़ अलहक़ कहने लगते हैं और हदीस में लिखाहै कि मैं बरहक़हूं अर्थात्‌मैं सत्यपैहूं—धर्म पैहूं अर्थात् मैं धर्मका साथीहूं हजरतरसूल खुदा मुहम्मदने) जिबरईल से कहा कि मुझे आपकी माया रूपी स्वरूपको छोड़ जो आपका मुख्य आदि स्वरूप है उसको देखनेकी अभिलाषहै यह सुन जिबरईलने कहा कि मेरे स्वरूप के देखने की तुममें सामर्थ्य नहीं है तब हज़रतने उत्तर दिया कि नहीं मुझमें सामर्थ्य है तब जिबरईलने कहा कि [illegible] हो तो आवो तबमैं तुमको अपना स्वरूप दिखाऊंगा [illegible] जिबरईलने अपना स्वरूप धारके

महम्मद साहबके सन्मुख प्रकटहुये तो क्यादेखा कि सम्पूर्ण संसार को घेरेहै यह देखके मुहम्मद साहबको मूर्च्छा आगई जबचेतमें आये तब जिबरईलको अपनी पहिली सूरतमें देखा और कहा कि तुम्हारे स्वरूप को देखके यह बुद्धिमें आताहै कि आपके स्वरूपके बराबर सृष्टिमें और भी कोईहै तब जिबरईलने कहा कि जो इसराफ़ील को देखें तो यह आश्चर्य मिटजाय क्योंकि उसका स्वरूप ऐसा दीर्घहै कि आकाशको अपने कन्धे पर उठाये हुयेहै और पैर उसके सातवीं ज़मीनके पीठपर हैं अर्थात् पाताललोक में हैं) इस बड़ाई पर भी ईश्वर की दयासे चींटीकेसमान छोटे होजातेहैं काबुल अख़बारने लिखाहै कि जिबरईल मलायकमें सर्वोपरि हैं उनके छः पंखहैं औ प्रत्येक पंखमें एकसौ पंखहैं जब जिबरईल महम्मदके पास आये तो महम्मदने प्रश्न किया कि आपकी ताक़त कितनी है जिबरईलने उत्तर दिया कि मैंने केवलदो बाज़ूपर शहर क़ौमलूतको उठाया और आसमानपर लेगया वहां के निवासियोंने उसकी खड़ खड़ाहट सुनी फिरमैंने गिरादिया ऊपरका नीचे अर्थात् बस्तीतो नीचेहोगई और शहरकी पेंदी ऊपर होगई जिबरईल के आज्ञाकारी सम्पूर्ण संसार है और इस कामके लिये नियत हैं कि वे जीवोंके शरीरमें शक्ति देतेहैं जिसमें उनको कष्ट न हो ॥

असबाग नम्बर ६५

मेकाईल यह फ़रिस्ता झगड़ा और कष्ट को दूर करता है और भोजनों को देता है जीवों को विद्या और परमार्थ सिखाताहै काबुल अहबारने लिखा है कि सातवें आसमान पर मसजूर नामक नदी है उसमें इतने फ़रिस्ता हैं कि उनकी संख्या ईश्वर के सिवा और कोई नहीं जानताहै और हज़रत मेकाईलउनके सरदारहैं और उसी नदी में नियत हैं इसका मुख इतना चौड़ा है कि जोयह अपना बदन फैलावै तो सम्पूर्ण आसमान इसके बदन के आगे एक राईके दाना समान दृष्टि आताहै और जो अपना प्रकाश पृथ्वी अथवा आसमानको दिखावे तो सम्पूर्ण निवासी जलजायँ सम्पूर्ण संसार में इसीके मित्र

औरसेवकनियतहैंवेमर्मादिमेंसत्यदेतेहैंऔरसम्पूर्णापृथ्वी,वायु, मेघ, वृक्ष,जीव और धातु आदि सम्पूर्ण पूर्वोक्त सृष्टिमें जोसहायकनियत होतेहैं वेसबमें काईल केद्वाराहोते हैं॥

तसवीर नम्बर ६६

इज़राईल॥ यहफरिस्ता प्राणहरता है (मृत्यु) काबुलअहबारने लिखाहै कि परमेश्वरने इसके दोनोंपैर सातवीं ज़मीन (पाताल) के नीचे और शीश अरशके ऊपर कियाहै इसका मुखलौह महफूज़ की तरफ रहताहै इसके सहायक जीवोंकी संख्यानुसार हैं सम्पूर्ण संसार को अपनी आंखों के आगे रखता है जिसका अन्न जल बन्द हुआ और समय नियत आपहुंचा उसके शरीर से प्राण-निकालताहै अशावइसलमके बेटा की वार्ता है कि इज़राईल से हज़रत खलीलुल्लाने पूछाकि जो एक मनुष्य पूर्व में और दूसरा पश्चिम में और एक देशमें महामारी हो और एकमें युद्ध हो तो तुम प्राणक्योंकर हरोगे इज़राईल ने उत्तरदिया कि उससमय स-म्पूर्ण शक्ति जीवोंकी मेरी अंगुलियों के बीच आजाती है ज़हबबिन मम्बाने लिखाहै कि दाऊद के बेटे सुलेमान ने चाहाकिमैं मृत्युको देखूं और उससे मयत्री करूं इसपै मृत्यु आय प्रकटहुई मानोउसके तख्तके नीचेही बैठीथी और सुलेमान को नमालूमहुआ सुलेमान ने पूछा कि तुमकोन हो उसने उत्तरदिया किमैं मृत्युहूं इसबात के सुनतेही सुलेमान को मूर्च्छाआगई तब मृत्युने ईश्वरसे प्रार्थना की कि हे सच्चिदानन्द इसको मेरे देखनेकी बड़ी अभिलाषथी जब मैं इसके सनमुख आईतो इसको मूर्च्छा आगई इसलिये इसको ऐसी शक्ति औ दृढ़ता देजिस्में यह मुझे देखै इस पै आकाश वाणीहुई कि अपना हाथ सुलेमानकी छातीपरमल मृत्युने आज्ञानुसारछाती पर हाथरक्खा तो सुलेमान को चेत भया तब सुलेमान ने पूछा कि मैंने तुझे सम्पूर्ण सृष्टि में सब से बड़ा पाया इसका क्या कारण है कि सम्पूर्ण फरिस्ते तेरेही सदृश हैं तब मृत्युने उत्तरदिया कि इ-सका ईश्वरसाक्षी है कि इससमय मेरेदोनोंपावँ उसफरिस्ता के कंधे

पर हैं जिसके पेर सातवें लोक पृथ्वी के बाहिर पांचसौ वर्षकी राह पर हैं और शीश उसका सातवें आसमान से ऊपर हजार वर्ष के रास्ता पर है और वह दोनों हाथ फैलाये मुख खोले कह रहा है कि जो ईश्वर की आज्ञा हो तो मैं पृथ्वी आसमान उनके सम्पूर्ण वासी और पदार्थों समेत एकहीग्रास करजाऊं यह सुनके सुलमान ने कहा कि यह तो तूने एक आश्चर्य की बातकही तबमृत्युने उत्तर दिया कि जोतू मेरे उस स्वरूपको देखे जिसस्वरूपको धारण करके जीवोंके प्राणलेताहूं तो न जाने कौन हालहो तब सुलेमानने कहा कि अब तू मेरे देखने को आयाहै या मेरेप्राण लेनेको मृत्युने कहा कि नहीं केवल देखने को आया हूं तबसुलेमानने उससे मैत्रीकीतब तो मृत्यु वृहस्पतिके दिन सुलेमान के मिलनेको नित्त आया करती और तीसरेपहरतक बैठीरहाकरती एकदिन सुलेमानने मृत्युसेकहा कि तुम प्राणहरने में न्यायनहीं करते क्योंकि किसीको तो मारते हो और किसीको छोड़देतेहो तब इसपर मृत्युने कहा कि इसप्रश्न में हमतुमदोनों बराबरहैं इसका यहभेदहै कि शबरातके दिनईश्वर के यहांसे एकपाटी आतीहै उसमें सम्पूर्ण ब्योरालिखा होताहै कि अमुक पुरुष के प्राण इसप्रकार हरने चाहिये मैं उसी अनुसार काम करताहूंइसीप्रकार आधमहीना शावानतक दूसरी तख्तीआतीहै अहलतौहीद (वेदानुगामी)और योगेश्वरके प्राणतो दाहिने हाथमें हरतीहूं और श्वेतबस्त्र में लपेटके-अर्लाईनस्थानमें पहुंचातीहूं और नास्तिकों के प्राण बायें हाथ से हरती हूं और गूदड़ में लपेट के सजीईनस्थानमें पहुंचाती हूं और उसके शुभाशुभ धारण का ब्योरा तो ईश्वर आपही जानताहै अर्थात् मुसलमान औरकाफ़िर निदान इनके कर्मानुसार फल देताहै आमशने खसीमासे कहा है कि एक समय मृत्यु सुलेमान के पास आई तो उससमय सुलेमानकी सभा में एकमनुष्यकी ओर बारबार देखतीथी जब मृत्यु बाहिर गई तब उसने हज़रत सुलेमानसे पूछा कि हे जगत्पति यह कौनथा सुले-माननेकहा कि यहमृत्युथी तबउसनेकहा कि यहतो मुझे इसप्रकार

देखती थी कि मानों मेरेप्राणलेगी तबसुलेमान ने कहा कि तू क्या चाहता है उसने उत्तरदिया कि मैं उससे अतिही भयातुरहूं सोदया करके उसके भयसे अभय करिये तबसुलेमान ने कहाकि इसको बलाद हिन्दमें पहुंचादो जब दूसरीबार मृत्यु फिरआई तब सुलेमान ने पूछाकि तुमउसदिन मेरे एक सभासद की ओर बारबार क्यों देखतोथी यहसुनमृत्युने उत्तरदिया कि मुझेकेवल यहआश्चर्य था कि इसमनुष्य के प्राणलेने के हेतु बलाद हिन्द में मुझेक्यों कर आज्ञा मिलेगी क्योंकि मुझे आज्ञा हो चुकी थी कि इसके प्राण बलाद हिन्द में लिये जायें और दिन थोड़े रहगये थे और आपकी सभा में वह बैठाथा सो मैं इसी शोचमें था कि हे ईश्वर इस थोड़ी सी अवधिमें वह वहां इतनीदूरीपै कैसेपहुंचेगा मैं नियत समयपै वहां पहुंचा तो उस उसको वहीं पाया तो उसके प्राणलिये ओहवबिन मम्बाकी वार्ता है कि एकबार मृत्यु किसी जन्वारके प्राणहरे और आसमान को भेजे तब फ़रिश्ता (गण) ने पूछा कि भला प्राणहरते समय तुझ कभी किसीपै दयाभी आईहै तबमृत्युने उत्तर दिया कि हां आई जब मुझे एक स्त्रीके प्राणहरने की आज्ञा हुई जब मैं वहांगया तो देखा एकजंगल में वहदीनहै और उसीसमय उसके पुत्रहुआ था उससमय मुझे उसस्त्रीकी दीनता कष्ट और उसलड़के की एकाकीपै अत्यन्तदया आई तब मलायका (गण) ने पूछा कि यह जन्वार वही लड़का था कि जिसकी माता के प्राण जंगल में हरेथे मृत्यु ने कहा कि हां यह वही है आगे सत्य जाननेवाला ईश्वर है॥ सम्पूर्ण मलायका (गण) से बढ़केहैं जो निशिवासर ईश्वराराधन के सिवाय और कुछ नहींजानते और सदैव ईश्वरकी प्रशंसाकिया करते हैं हदीस (शास्त्र)में लिखा है॥ रसूलखुदा कहता है ईश्वर ने पृथ्वी उत्पन्न की जो सूर्य्य की सैरकरने की जगह है एक क़ौम ने हज़रतरसूलखुदा से प्रश्न किया कि हमको नहीं मालूमहोता कि एक श्वासलेने में कोई क्योंकर पापीहोसक्ता है तब हज़रतनेकहा कि परमेश्वर ने आदम (शिव) को पैदा किया और ये लोग नहीं

जानते लोगोंने कहा कि शैतान इनकेसाथ कहांहै तब महम्मद ने फिरिकहा कि तुम नहींजानते कि ईश्वरने शैतान को पैदाकिया है तब हज़रत महम्मदने यह आयतपढ़ी कि ईश्वर जिसवस्तुको हम नहींजानते देखो कैसा ईश्वर बड़ाहै॥

सम्पूर्ण मलायकों ईश्वरके मेंसे सातवें आसमानवाले काबुल अहबारने लिखाहै कि ये वे फरिश्ते हैं जो कि हाथोंसेमाला और जिह्वा से प्रशंसा और आराधन कियाकरते हैं और निशिवासर सुभानअल्लाह व इल्लिल्लाह इल्लिल्ला रटाकरते हैं और इसी प्रकार ईश्वर ने भी उनकी प्रशंसा कीहै कि वे तसबीह करते हैं अर्थात् कहते हैं कि ईश्वर अमलहै दिनमें और रातमें कभी इसको विस्मरण नहींकरते जब प्रलयहोगी तब कहेंगे किन्तु अमलहै जैसे तुझे माननाचाहिये वैसा हमने नहींमाना और तू अमल है जैसा तूहै हम नहीं जानते तेरीप्रशंसा हम नहीं करसक्ते किन्तु तूही अपनी प्रशंसा करसक्ताहै॥ अबदुल्ला बिनअब्बासने कहा कि आसमान की सृष्टिमें मलायकाओं के (देवता) बैलकेबदन हैं ईश्वरने एक मोकिल (नियतपुरुष)का नामइसमाईलधराहैऔर येसबउसीके आधीनहैं॥

प्रथम आसमान के फरिश्तोंके बदन बैलकेसेहैं और उनकेआधीश्वरका नाम मलकइसमाईलहै॥

तसबीर नम्बर ६०

द्वितीय आसमान के फरिश्तों के स्वरूप उक़ाबकेसे हैं कोषमें उक़ाबका अर्थ फर्स अल्लाहकाह अर्थात् ईश्वरकाघोड़ा इनकेआधीश्वरका नाम मींजाईल है॥

तसबीर नम्बर ६८

तृतीय आसमान के मलायकोंका स्वरूप गिद्धकाहै और इनके मोकिल (आधीश्वर) का नाम सायदियाईलहै॥

तसबीर नम्बर ६६

चतुर्थासमान के मलायकों का स्वरूप घोड़ेका है और इनकी मोकिलका नाम सलसलाईलहै॥

तसबीर नम्बर १००

पंचमआसमान के मलायकों का स्वरूप हूरूलयैन अर्थात्परीका है और उनके मौकिलका नाम कल्कलाईलहै ॥

तसबीर नम्बर १०१

षष्ठम आसमान के मलायकों का स्वरूप लड़कों का है और इनके मौकिल का नाम समखाईल है ॥

तसबीर नम्बर १०२

सप्तम आसमानके मलायकोंकी सूरतमनुष्योंकीहैइनकेमौकिल कानाम रोयाईलहै ॥ तसबीर नम्बर १०३

ओहबबिन मंबियाको निश्चयहै कि आसमान पै थोड़े परदे हैं उन परदोंमें इतने मलायक भरेहैं कि एक दूसरेको नहींपहिंचानते और निशिवासर परमेश्वरका आराधन कियाकरते हैं और नाना प्रकारकी बोलीमें अति भयानक डरनेवाले शब्दउच्चारण करतेहैं ॥

मलायका हिफ़ज़। अर्थात् रक्षा करनेवाले इनको किरामुलका भी कहते हैं इब्नजगीह कहता है कि ये दो फरिश्ते हैं मौकिल औलाद आदमके से एक तो दाहिने हाथ पैरहता है और दूसरा बायेंहाथ पे सो दाहिने हाथवाला तो पुण्य और बायें हाथ वाला पाप लिखता है कोई २ कहता है कि चार फरिश्ते हैं उनमें से दो दिनको और दो रात को रहते हैं और अहद अल्लाह बिन मुबारकने पांच फरिश्ते लिखे हैं कि दो रातिको और दो दिन को और एक कभी साथ छोड़ता ही नहीं और नास्तीकों की भी रक्षाहोती है क्योंकि कुरान में कुफ्फारान् की भी रक्षा लिखी है और उस आयत का यह अर्थहै कि जब मनुष्य पापकरता है तो बायें कन्धेवाला फरिश्ता छःघड़ीतक उस पाप को नहींलिखता जो कदाचित् उसदोषीने इसबीच में तो वह और इस्मग़फ़ारकिया तो वह उस पापको नहीं लिखता (तो वह और इस्तग़फ़ारका अर्थहै अपने को धिक्कारना और कहना कि अब ऐसा न करूंगा हे ईश्वर क्षमाकर) और जो उसने इस ६ घड़ी के बीचमें तो वहन की और

इस्तग़फ़ारन चाहा तो ६ घड़ी उपरान्त उसपाप को उसके कर्म्मों के खाते में लिखताहै दूसरे व्याख्यान में यों लिखाहै कि जबजीव से पापहोताहै तो वह लिखाजाताहै और जब कोई पुण्यका काम करता है तो दाहिनेहाथ का फ़रिश्ता कहता है कि इसपाप को मिटादे मैं इसकी दशनेकियोंमें से नौ लिखूंगा और एक उसके पाप के पलटे न लिखूंगा इसबातको सुनके बायेंहाथवाला उसके आधीन होनेके कारण मिटादेता है इन्स बिन मालिक रसूल का कहा कहते हैं कि ईश्वरने प्रत्येक जीवपै दो फ़रिश्ते नियत किये हैं जो उनके शुभाशुभ कर्म्मलिखें जीव जब मरताहै तो वेही दोनोंफ़रिश्ते ईश्वरके सन्मुख जाय खड़ेहोतेहैं और प्रार्थना करतेहैं कि हे सच्चिदानन्द अमुक मनुष्य मरगया अब हम कहांजायँ तब ईश्वर कहताहै कि आसमान तो मेरे मलायका से भरेहैं और पृथ्वी मनुष्यों से भरी है और ये अपनी २ सेवा भक्ति में लगेहैं तो अब तुम मेरे बन्दे (उसीजीवकीक़बुर) की क़बुरमें जाओ और प्रलयतक मेरी स्तुति और गुणगावो अर्थात् निम्नलिखित तीनशब्दोंको कहो कि ईश्वर अमलहै, ईश्वर सर्वोपरिहै और ईश्वर अद्वैत है और उसका फल मेरेबन्देके पुण्यखातेमें लिखो और येहीकिरामुलकातिबीनहैं॥

तसवीर नम्बर ५०

मअ़क़बात--ये चन्दफ़रिश्ते हैं--जो आसमान से सिढ़ी लाते हैं और मनुष्योंके प्राण आसमान को लेजातेहैं और उनके शुभाशुभ कर्म्मोंकोभी लेजाते हैं विद्वानोंने कहाहै कि जो मनुष्य प्रातःकाल नमाज़पढ़े तो फरिश्ता उसके पास नित्तआवें और उसको नमाज़ पढ़तेपावें और रातिवाला फरिश्ता उससे जुदारहै और उसको नमाज़में पावै और इसीतरह नमाज़ मग़रिब जब अदाकरै तो जो पाप इनदो नमाज़ों के बीचमें होगा तो उसका प्रायश्चित्त होगा और ऐसा हो तो मलायका उसकी भलाईके सिवाय उसकीबुराई आसमान पर न लेजायँगे और यहबात पुष्टहै और इसकोमहाशय अमीर अलेहुस्सलाम की वाक्य पुष्टकरती है वह यहहै ईश्वर ने

बनी आदमका उपनाम देकर कहा कि हे आदम (शिव) के पुत्र हमारे और तेरे बीच में कौन न्याय करनेवाला है कि हमतो तुझे ऋद्धि सिद्धि देते हैं और तू पापकरता है तो मेरी भलाई और तेरी बुराई और सदैव हमारा फरिश्ता करीम तेरे महापाप लिखलाता है हे आदम के पुत्र मैं जो तेरे कर्म दूसरेसे सुनताहूं और तू उससे कुछसचेत नहीं होता अचेतहै जो कदाचित् मैं उसके अनुसारकरूं तो बहुत शीघ्र तेरे प्राण अन्न हरता और तू महादुःखको प्राप्तहोता ॥ मनकिर और नकीर ये दो फरिश्ता हैं सम्पूर्ण मलायकों में से सो ये आदमी की कबुर में जाके ईश्वर और रसूल से प्रश्न करते हैं इन्सबिन मालिक ने हज़रत से वर्णन किया है कि जब मृतकमनुष्य को दफन करके लोग घरोंको पलट आतेहैं और उनके पैरोंकी आहट सुनाई देती है कि इतने में दो फरिश्ते उसमुर्दे को क़बुर के भीतर बैठालते हैं और उससे प्रश्न करते हैं कि महम्मद रसूल खुदा के विषय में तू क्या कहता है उस समय जो वह मृतक मोमिन (सधर्म्म) है तो कहैगा कि हां मैं साक्षीदेताहूं उसकी कि वह सत्य हरिदास है और उसका दूत है तब फरिश्ते उससे कहते हैं कि देख तू अपनी ठौर कि नर्क था यह केवल महम्मद रसूलखुदा की दयादृष्टि से कि यह बदल के बैकुण्ठ होगया इसलिये वह जीव उनदोनों ठौरोंको देखलेगा यह प्रश्नोत्तर तो मुसलमान मृतक का है और अब काफिरों (नास्तीकों) का हाल सुनो जब येही सवाल करेंगे कि तू महम्मद के विषय में क्या जानता है वह कहैगा मैं कुछ नहीं जानताहूं जो सब सन्सार कहता रहा सोई मैं भी कहतारहा तब उसको वे जवाबदेंगे कि अरे तूने नहीं पहचाना और तूने नहीं सुना उनका यश तिस उपरांत उसको लोहे के कोड़ों से मारेंगे तब वह पुकारेगा कि जिसको तमाम सृष्टि मनुष्य और जिनों के सिवा सुनेगी मलायका सैयाहीन ये फरिश्ते सभाओं से अधिक प्रीतिकरते हैं औरों की वार्त्ता की अपेक्षा अबदुलसईद रसूल का कहा वर्णन करते हैं कि उन्हों ने कहा कि ईश्वर के कुछ

गया है वेसन्सारमें फिरा करते हैं और ये उन फरिश्तों से अलग हैं जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्म्मों को लिखा करते हैं. जब कोई सभा ऐसी पाते हैं कि जहां ईश्वर की वार्त्ता होती हो तब वे अपने साथियों को बुलाते हैं कि आयो तुम्हारा काम होगया तब ईश्वर के पास जाते हैं जब उनसे ईश्वर पूछता है कि तुमने हमारे जीवों को किसकाम में पाया तब वे उत्तर देते हैं कि तेरा धन्यवाद करते जब ईश्वर पूछता है कि क्या उन्हों ने मुझे देखा है तब वे कहैंगे हैं नहीं जब ईश्वर पूछता है कि जो वेलोग मुझको देखें तो उनकी क्या दशाहो तब फरिश्ते कहते हैं कि जो देखेंतो और भी अधिक मेरा यशगावें और तेरी भक्ति करें जब ईश्वर उनसे पूछता है कि कोनसी भयके कारण मेरीशरण में आतेहैं तबवे कहैंगे कि नर्क की ज्वाला के भयसे जब ईश्वर प्रश्न करताहै कि जो वे इसनर्ककी अग्निको देखें तोउनके कितनी भय होगी तब वे कहैंगेहैं किदेखें तो औरभी अधिक भयभीत हों जब फिर ईश्वर पूछता है कि फिरवे मुझसे किस बस्तुकी चाहना राखते हैं तबवेकहैंगे हैं कि बैकुण्ठकी जब फिर ईश्वर पूछता है कि क्या उन्होंने बैकुण्ठ देखा है फरिश्ते कहते हैं कि नहीं जब फिर ईश्वर पूछता है कि जो देखें तो कितनी बड़ी लालसा इसके देखने की हो उस समय ईश्वर कहता है कि मैं तुमको साक्षी देके कहताहूं मैंने उनके अपराधोंको क्षमाकिया तब मलायका कहते हैं कि अमुक पुरुष जो उनके झुण्ड में था सो तेरा कभी नामभी नहीं लेताथा वह तो उस समय दैवयोगसे वहां आगयाथा। तब ईश्वर कहता है कि यह वहझुण्डहै जिनका सत्संगी अभागी नहीं होताहै ॥

इनफरिश्तोंमें से–दोफरिश्ते हारूत और मारूत नामक औरहैं इन दोनोंको चाह बाबुलमें दण्ड दियाजाताहै सृष्टिमें जोफरिश्तोंने मनुष्योंको पापकरते पाया तबकहा कि हेसच्चिदानन्द वेतेरी बड़ाई और तेरेदयालु चित्त और प्रतापको नहीं जानते तबईश्वर ने कहा कि जोतुमभीइन्हींके समान रहो तो तुम तो पाप न करोगे उन्होंने

उत्तर दिया कि नहीं जब ईश्वर ने आज्ञादी कि अच्छा विचारो कि दो फ़रिश्ता पृथ्वीपर जायँ तबहारूत और मारूत पृथ्वीपर आये और मनुष्योंकी विषय इनके भी शरीरमें दीं वहां इन्होंने देखा कि मनुष्य इनमेंफँसे हैं परन्तु उनविषयोंसे न बचसके अन्तको पापभागीहुये तब ईश्वरने कहा कि अब चाहे तो संसारी दुःख भोगो और चाहे स्वर्ग का दुःख भोगो इसपै दोनोंने एक दूसरे से पूछा कि क्या करना चाहिये तब उसने उत्तर दिया कि संसारी दुःखतो थोड़े दिनकाहै और स्वर्गके दुःखकी थाहनहींहै इसलिये संसारी दुःख भोगना चाहिये तो इसीसे चाह बाबुलमिला जैसा कि लिखाहै कुरानमें कि हारूत और मारूतको चाह बाबुल जिसने इनदोनों अपराधियों को देखा हैं वह कहता है कि दोमनुष्य अति दीर्घ उलटे टँगे हैं और एँड़ीसे जाचों तक तौक़ और ज़ंजीरों में जकड़े हैं दूसरी कहावत यों है कि ईश्वरने कहा कि देखो अब मैं तुमको मनुष्योंके पास भेजता हूं और मेरे और तुम्हारे बीचमें रसूल नहीं है पृथ्वीपर जावो परंतु वहां नतो चोरी और व्यभिचार कीजियो और न मेरे साथ किसीकोसाझी कीजियो काबुल अहिवारने लिखा है कि पहिलेही निदान आज्ञा भंगकी अर्थात् जिनकी नाहीं थी उन्हीं कर्मोंको किया तिस उपरांत आसमान पर जाने लगे तो न जाने पाये जब हज़रतइदरीस पैगम्बर हुये तब उन्से कहा कि हमारे अपराधोंको ईश्वरसे क्षमा करादे इसपै पूर्वोक्त पैगम्बर ने कहा कि भला यहकै मालूम हो कि मेरे कहनेसे तुम्हारे अपराध क्षमाहोंगे इसपै उन्होंने कहा कि तेरी प्रार्थनाके उपरांतहम जैसेअब हैं जो वैसेही बनेरहैंतब जानियो कि तेरी प्रार्थना सुनीगई नहींतो इसके विपरीति जाना अर्थात् अपराध क्षमा नहींहुये निदान हज़रतइदरीसने नमाज़ पढ़के प्रार्थनाकी तिस उपरांत उनकी तरफ जो देखा तो वे दृष्टि न आये इससे जाना कि वेदुःखमें फँसे और उनको बाबुल नाम पृथ्वी पै लेगये हैं और वहां बन्द हैं ॥

जो फ़रिश्ते कि सृष्टिमें नियत हैं उनमें से कुछ फ़रिश्ता ऐसे हैं

कि जो सृष्टिकी सहायता करते हैं और प्रत्येक मनुष्य पै नियत हैं अबूअमामाकी कहावत कहते हैं कि ख़ुदाके पैग़म्बरने यह कहा है कि प्रत्येक मोमिन अर्थात् सधर्म पर एक सौ साठि फरिस्ते नियत हैं जो दुःखको मिटाते हैं उनमेंसे सात फरिश्ता आंखोंपै नियत हैं वे वैसेही कष्टसे बचाते हैं जैसे गर्मी में शहदसे मक्खी दूर कीजावें और वही बातहै जिसकी पैग़म्बरने नबी होनेके कारण पहिचाना॥

तसवीर नम्बर१०५

परन्तु अब हम भोजन और जीवधारीबनस्पतिके विषयमें बर्णन करतेहैं॥

यह समझना चाहिये कि कोई बस्तु हमारे खानेके योग्य नहीं होसकती जब तक वे सातों फरिश्ते अपना २ काम न करें और जो बस्तु निकल जाती है उसकी ठौर दूसरी बस्तु शरीर में न धरें तो इस दशामें शरीर भोजनके आधीन न होगा फिर यहभी है कि शरीर भीतरी और बाहिरी गर्मीके कारण सदैव गला करता है जब गर्मी तरीमें आती है तो तरीको सुखा देती है और जिमाद अर्थात् अंग आदिका भोजन अपना शरीर है परन्तु जब तक कोई बस्तु उसके साथ शरीर में से नमिले तबतक कोई अंग न बनेगा अर्थात् रक्त,मांस,अस्थि न होगा जैसे गेहूंको दाना आपही भोजनहै परंतु रोटी और आटा नहीं होता जब तक उसका पकाने वाला अपना काम न करे तब तक रोटी नहीं होती इसी प्रकार प्रगट सृष्टि तो मनुष्य है अलखमलायक इसलिये ईश्वरने अपने जनोंके हेत लक्ष अलक्ष दोनो भांतिके पदार्थों से परिपूर्ण किया है पहिला फरिश्ता भोजनोंको मांस और हड्डीके ढंगपर करता है क्योंकि भोजन आपही आप नहीं बदलते दूसरा फरिश्ता मुखमें देखता है तीसरा उसको रक्त और मांसके स्वरूपमें लाता है चौथा फरिश्ता उसकेख़ुदर अर्थात् मलको नियत द्वारासे बाहिर निकालता है पांचवां फरिश्ता उनको बांटता है छठा फरिश्ता मांसको मांसमें और जोहड्डी के योग्यहै उसकोहड्डी में चपकता है और सातवांफरिश्ता उस को देखा करताहै कि ठीकहै कि नहीं निदान सबठौर वैसी बस्तु पहुंचा

वैसा कि जोउपके योग्यहों और खराब नकरें जब कोई अंग खराब होनेलगता है तो उससमय पतले २ कण उस ठौर जानेलगते हैं और नये कण उसठौर इकट्ठे होते हैं और पुराने खींचलाता है और प्रत्येकवस्तु कामांगोपांग देखतारहताहै और यह न हो तो भोजन सम्पूर्ण शरीरमें पहुंचै और पैरोंकी तरफ न पहुंचे तो पावँ आदमीके वैसेही रहैं जैसे कि लड़कपनमें थे और सम्पूर्ण अंग बटजायँ और पैर वृथा रहैंगे चलैंगेनहीं इसलिये यहसबकामसातवें फरिश्तेका है इसी प्रकार सम्पूर्ण बस्तुओं को जानना चाहिये॥

(बारहवां व्याख्यान)अरस्तातालीस के निकट प्रत्येकसमयमहामण्डल के चक्रसे प्रयोजन है और दूसरे विद्वानों के निकट रात दिनसे प्रयोजनहै समय अथवा काल यों बांटाजाताहै कि काल तो करनपै और करन सालपै और साल महीनोंपै और महीना दिनों पै और दिन घड़ियों पै और घड़ी पलोंपै और पल बिपल पै और बिपल स्वांसा पै इसी प्रकार एक बस्तु दूसरी बस्तुसे मिटती है और किसी २ का निश्चय है कि जो कुछ सन्सार में भलाई बुराई होती है सो सब कारण सन्सार का है परमेश्वर से कुछ प्रयोजन नहीं है वहसब आसमान की चालसे होता है इसीसे मनुष्य समय को निन्दा करते हैं परन्तु यह शरा (कुरान) के बिपरीतिहै क्योंकि जो हानिलाभ सन्सार में होते हैं वहसब ईश्वर की आज्ञासे होतेहैं कुरान में लिखा है कि सन्सार को गाली मतदो क्योंकि ईश्वर आपही सन्सार है प्राचीन बिद्वानों का निश्चय है कि अगलेदिन अच्छेथे और ज्यों २ दिन बीतते गये त्यों २ बुरा होता गया और आगे बुराहोता जायगा किसी २ के निकटतो समय काल सदाका ऐसाही बुरा है कभी कोई इस सन्सार में सन्तुष्ट नहींरहा अबूउल-अलामारी ने बदीउलजमा के नाम पत्र लिखा कि समय काल खराब नहींहुआ बदीउलजमा ने उसके प्रति उत्तर में लिखा किसत्य सत्य समय काल बुराहुआ भला कौनसमय अच्छाथा बताओ नबी अब्बास के आगे भी अच्छा उसका अन्त समय भी हमने देखाथा

और आदि के समाचार सुनने में आते हैं अच्छा तो मदे अम्बिया का समय अच्छा था उसके भी समाचार पुस्तकों में लिखे हैं क्या यह प्रमाणिक नहीं हैं और नबीहज़र के समय के भी समाचार जो उस समय हुआ सो विदित है अच्छा तो हाशिम का समय अच्छा था जिसके लिये महाशय अमीरुल मोमिनीन ने प्रार्थना की है अच्छा क्या हज़रत उसमान का समय अच्छा था या खलीफों का समय अच्छा था या जाहिलियत का समय अच्छा था या महम्मद साहब का समय अच्छा था या इससेभी आगेका समय काल अच्छाथा या हज़रत आदम का समय काल अच्छा था आदम के आगे समय अच्छा था जिस के विषय में मलायका ने कहा है इन सम्पूर्ण प्रमाणों से प्रकट है कि समय काल सदा से युगही है हां इतना है कि कुछथोड़ा २ भेद रहाहै॥

रात दिनके विषय में॥

सूर्यके उदय और अस्तके बीचके समय का नाम दिन है और सूर्य अस्त होनेसे सूर्यके उदय के बीच के समय का नाम रात है और रात दिनमें चौबीस घड़ी होतीहैं उसमें न तो कमहोताहै और न अधिक और जो ऋतु के कारणसे रात बड़ी होती है तो दिन कम होजाता है और दिन बड़ा होता है तो रात कम होजाती है निदान दोनों चौबीसही घड़ीके बीचमें रहते हैं सबसे बड़ादिन खरीज़ां की सत्तरहवीं तारीखको होता है और यह उस समय होता है जब कि मीन राशि का अंत होता है उस समय दिन १५ पन्द्रह घड़ी और रात ९ नौ घड़ीको होती है इससे छोटी रात कभी नहीं होती है इस के उपरांत फिर दिन घटने लगता है और रात बढ़ने लगती है अंत को अट्ठारहवीं ऐवलको रात दिन बराबर होजाता है और यह उस समय होता है जब कन्या राशिका अंतहोता है उससमय दिन और रात १२ बारह २ घड़ीके होते हैं फिर उस समय से फिर रात बढ़ती है और दिन घटने लगता है यहां तक दिन ९ नौ घड़ीका और रात १५ पन्द्रह घड़ी की होती है यह रात की बाढ़का अन्त है इसके

उपरांत फिर रात घटने लगती है और दिन बढ़ने १६ तारीख़ रूमी तक कि जब सूर्य्य मीन राशिका होता है यह समय रात दिन की बराबरी का है और उस समय आसमान का चक्र नए सिरेसे होता है उसी समय से रात दिनका हिसाब भी नया होता है विदित हो कि यह ईश्वरकी दया है कि समयको रात दिन में बांटा है और मनुष्य अपने काममें फँसा रहता है इसीसे अधिक परिश्रम के कारण अशक्ति होता जाताहै इसीसे नींदके वश्य होजाता है जिसमें थकवाही मिटावे इसीलिये ईश्वरने रात दिन बनाए कि दिन में काम करै और रातको उस काम करनेकी थकवाही मिटावे और रात दिन जो न होते तो बड़ी खराबी होती क्योंकि जबकोई किसीसे किसी कामके करने को कहता और वह उस समय सोता होता तो वह काम न होता इसी कारण यह रात दिनमें समयको बांटा है॥

दिनोंकी उत्तमता और उनके प्रभावके विषयमें॥

हनफ़िया पंथ अर्थात् हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह के पंथ में जुम्मा अर्थात् शुक्रका दिन सैयद है और महाशय रसूल अर्थात् महम्मद भी इसीपंथ में थे अबुहरेरह रसूल की कहीबात है कि सबदिनों से उत्तमदिन वह है कि जिस दिन सूर्य उदय हुआ और वहदिन जुम्मा अर्थात् शुक्र का है और इसी दिन हज़रत आदम पैदाहुये थे और इसीदिन वैकुण्ठ में गये और इसी दिन पृथ्वी पर आये और इसीदिन हज़रत आदम की तौबह ईश्वरने मानी और इसीदिन प्रलयहोगी और इसीदिनमें एकऐसीमहूर्त्त है कि उससमय जो कोई मुसल्मान जिसविषयमें ईश्वर सेप्रार्थना करै वह मानीजाती है क्योंकि इसदिन मलायका जीवोंका शुभाशुभ कर्म्म देखतेहैं जब देखा कि कोई जुमा की नमाज नहींपढ़ता तो वे आपसमें वार्त्ताकरते हैं कि आज इसको कौनसा काम आलगा कि जिस में इसने अपनी वस्तु माटी में मिलाई फिरकहते हैं कि हे ईश्वर जो यह मनुष्य मारे फ़िक्र के तेरा आराधन नहीं करसका तो तू इसको लक्ष्मीपात्र करदे और जो रोगी है तो आरोग्य

करदे और जो वह कोई काममेंहैं तो उससे रोकदे औरखेलमें है तो उसके मनको वहां से हटाके अपनी सेवाकी ओर लगा किसी २ पुराने आदमी ने कहा है कि ईश्वरके पास एक ऐसी अपूर्व बस्तु है जो किसीको नहीं देता परंतु जो बृहस्पति को रुधरा समय मांगता है उसको देता है और जोमनुष्य शुक्रवारको नखकटावेगा उसको रोग न होगा इसमाईल ने कहा है कि मैं एकदिन खलीफ़ा हारून के पास गया उस दिन शुक्रथा तब हरून ने पूछा किशुक्रके दिन नख कटाना सुन्नत है(शास्त्रोक्त) और श चको भी मिटाता है तब इसपै कहा कि हे धर्म्मिष्ठ तू भी फ़िक्रसे डरता है उसने उत्तरदिया कि मुझसे अधिककोई फ़िक्र मन्दन होगा ॥

शनिश्चरवार—इसदिन यहूदी लोगोंकी ईदहुईहै कलबीने कहा है किहज़रत मूसाने अपने पंथ वालोंने कहा कि अठवारे में एकदिन ईश्वरके पूजनकेवास्ते मानलो अवश्य है उसदिन और कोई काम न करो उन्होंने शनिश्चरके सिवा और कोई दिननहीं माना कहते हैं कि यह दिन वही है कि जिस दिन ईश्वर संसार को उत्पन्न करके निश्चिन्त हुआ है यहूदी लोगों का यह निश्चय है कि जो कुछ भलाई बुराई शनिश्चरके दिनहो वह दूसरे शनिश्चर तक ऐसी ही रहेगी अर्थात् सब दिन उसीके अनुसार होंगे इसीसे इसदिन लेनदेने का व्यवहार नहीं करते परन्तु मुसल्मान इसके विपरीति हैं क्योंकि रसूलखुदानेकहाहै कि सानोंका यह निश्चयहै कि शनिश्चरके दिन वृक्षादि काटना शुभहै ॥

रोज़य कशम्बा—रविवार—यह दिन अंग्रेज़ोंकी ईद है और उनके मतानुसार अन्तका दिन रविवारहीहै और इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचनाका आरम्भ कियाहै यह लिखाहै कि ईसाने अपने पंथवालोंसे कहा कि जुम्मा (शुक्र) मानों उन्होंने कहा कि यह तो हमनहीं चाहते कि यहूदियों की ईदके उपरान्त हमारी ईद हो फिर रविवारको माना और इसीपै आरूढ़ हैं कि सम्पूर्ण कामों के आरम्भके लिये रविवार अत्यन्त शुभहै ॥

दोशम्बा—सोमवार—यह दिन शुभहै महम्मद साहबने वृह-स्पति और इस दिनको पूजा करनेका आरम्भ किया है महम्मद साहबके मतवालोंने इनदोनों दिनों के उत्तमताके विषय में प्रश्न किया तब कहा कि इसदिन जीवों के शुभा शुभ कर्मोंका हिसाब आसमानपै जाताहै और मैं इसमें प्रसन्नहूं कि मरे कर्मोंको भी आसमान पर लेजावें और मैं रोज़हमेंहूं (व्रत) हदीस (शास्त्र) मेंलिखाहै कि हज़रत मुस्तफ़ानेइसीदिन जन्मलिया और इसीदिन से आकाशवाणी आनेका आरम्भहुआ और इसीदिन हज़रतमदीना को पधारे और इसी दिन महम्मद साहब बैकुण्ठ बासीभी हुये

सेहशम्बा—मंगल—इसदिनको हजामतबनवाना और स्नान करना ठीकहै और इसीदिन क़ाबीलने हाबीलको बधकियाहै ॥

चहार शम्बा—बुध—इसमें क्षेम बहुत कमहै और इस दिनको अशुभ कहते हैं यह कहावतहै कि एक मसखरा से उसके भाईने कहा कि मेरेसाथ एक कामको चलनाहै तब उसने उत्तर दियाकि आजबुध है इसलिये आज के दिन बैठरहना उचितहै तब उसके भाईने कहा किआजके दिनयूनुस जो पैदाहुयेथे तबउसने उत्तरदिया कि हां यहीतो कारणथा कि वैमरगये और उसकी सिद्धाईमिटगई ॥ और उनकी आज्ञा भङ्गहोनेलगी और उनको मछली के पेटमें जा-नापड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि अच्छा हज़रत यूसुफ़ ने जो इसीदिन जन्मलिया तब उसने उत्तरदिया कि हां देखोउनकोउनके भाइयोंने कैसे२ कष्टदिये और उनको अकेले क़ैदमें रहनापड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन ईश्वर ने हज़रत इब्राहीम खली-लुल्लाहको आकाशबाणीदी तब उसने उत्तर दिया कि हां फिर देखो जब तक वे गुलखन नामक अग्निकुण्डमें न गिरे तबतक वह अग्नि कुण्ड शीतल नहींहुआ फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन को हमारे पैगम्बर हज़रत अलैह उस्सलाम की जयहुई तब उसने कहा फिर देखो जब आंखों से अन्धेहुये दम छुटनेलगा उसीके पीछे मृत्यु ने आघेलिया ॥

(पंचशाख्या--वृहस्पति) यह अतिहीं शुभदिन है निश्चयकर प्रार्थना और यात्राहेतु जुहरी ने हज़रतसे कहाहै और हदीसमरफू है (हदीसमरफू का अर्थयहहै कि उसकीश्रेणी अन्ततक चलीगई अर्थात् धर्म्माध्यक्ष तक) कि जो मनुष्य यात्रा करना चाहे वह इस दिन यात्राकरै और इसदिन हजामत बर्जितहै हमदूंबिन इस्माईल नें लिखाहै कि मैंने मोतसिमसे सुनाहै और उन्होंने हारूंनसे और उन्होंने महदी से और उन्होंने मंसूर से और उन्होंने अपने माता पिता से और उनके पिता ने अपने पितामा से और उन्होंने इब्न अब्बास से और उन्होंने रसूल मुहर्रम मउल्लिह अलैहे सल्लम से वर्णनकिया है कि जोकोई वृहस्पतिके दिन हजामत अर्थात् पछना लगवावेगा वह तप मेंग्र के उसीरोग में मरेगा उसने लिखाहै कि मैं मोतसिम के पास बहुतदिन पीछेगया और दैवयोग उसदिनगुरुवारथा तो देखाकि वहहजामत बनवारहा था यहदेख मुझे आश्चर्य्यहुआ तब उसनेकहा कि हमदूं कदाचित् तुझेमेरा पिछला कहा हुआ याद आया है तब मैंनेकहा सत्यहै इसपै उसनेकहा कि ईश्वर जानता है कि मुझे बिस्मरण होगया परन्तु जब बनवाने लगा तब यादआई अन्तको उसीदिन तपग्र या और उसीतपमें प्राणगये इब्न मालिक कहताहै किएकबार रसूलमत्यधामने कहा कि मुझसेलोगों ने पूंछा कि कौनबार अच्छाहै तब मैंने कहा कि शनिश्चरका दिन छलकारी है क्योंकि इसीदिन कुरैश ने दारुलमदूह में जाकर छल किया है और रबिबार का दिन वृक्षलगाने और मकान बनाने के लिये उत्तमहै क्योंकि इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचना करी है और सोमबार यात्रा और व्यवपारका दिनहै क्योंकि इसीदिन शईबअलैहुस्सलाम ने यात्राकी और व्यौपार से लाभहुआ और मङ्गलबार खूनका दिन है क्योंकि इसी दिन हौवा (प्रधानप्रकृत) अलैहास्सलाम रजस्स्वलाहुई और बुधवार अतिअशुभहै क्योंकि ईश्वरने इसीदिन आदूस नामक जातिका संहार किया है और फिर उनको उसकी सेना सहित नदी में डुबाया है और गुरुबार रणभूमि और

राज सभामें जानेके लिये शुभहै क्योंकि हज़रत खज़ीरुल्ला इसी दिन बादशाह कियेगयेथे और बड़ीप्रतिष्ठ हुई और शुक्रवारविवाह के लिये शुभहै क्योंकि बाबा आदम (शिव) का विवाह हौवा के (पार्वती) साथहुआहै सो यही दिनथा॥

इति

वर्षमें जो रात और दिन उत्तमहैं उनके विषयमें॥

मुहर्रमकी पहिली तारीख इस हेतुसे उत्तमहै कि वह सम्बत्का प्रथम दिनहै और इस महीने का नवां और दशवां दिन हदीस में उत्तम लिखा है॥ बारहवीं रबीउल अव्वल इसहेतु उत्तम गिनीजाती है कि इसीदिन हज़रत मुस्तफ़ाका जन्महुआ और अव्वलरज्जब इसलिये उत्तमहै कि हिरामके महीनोंमेंसे अव्वलहै और रज्जबकी पन्द्रहवीं हदीसमें उत्तमहै और रमजानकी सत्ताईसवीं और ईदका दिन इसलिये उत्तमहै कि दो ज़खकी आगसे खलासीहुई और इष दिनरोजा रखनेके कारण उत्तमहैं और हदीसमें लिखेजाने कारण उत्तमहै और ईदज्ज़ोहा इस कारण उत्तम है कि उसदिन मनुष्य ईश्वरकी दयादानके पाहुनहैं और जुम्मा (शुक्र) पंजशम्बा (गुरुवार) और शम्बा (शनिश्चर) इनका वर्णनहोही चुकाहै तो अब रातों का वर्णन करतेहैं सो सुनिये मुहर्रम की पहिली और दशवीं रात और रज्जबकी अव्वलरात और शाबानकी पन्द्रहवीं रात और सब रातकी रात और पांचताक़रातें अशरह आखिर रमज़ान की उत्तम हैं क्योंकि इन्हींसे बक़रहै और सत्ताईसवीं रमज़ानकी रात इसहेतु उत्तमहै कि उसके लिये हदीसहै और ईदैनकी रातोंके विषयमें हदीसहै ये थोड़ीसी मायतेहैं इनमें क्षेमहै और व्योपार के लिये उत्तमहै बिदितहो कि जो सौदागर अपना समय व्यर्थखोताहै उसे लाभ नहींहोती॥

महीनोंका वृत्तान्त॥

प्रत्येक देशके मनुष्यों के महीने अलग २ होते हैं जैसे अरब, [illegible], अबरु, तुरक और हिंदादि परन्तु [illegible] महीनेअरब

और रूम श्रो फ़ारसके हैं इसलिये इन्हीं की जो प्रसिद्ध भलाई बुराईहै उन्हींकासूक्ष्म वर्णन करतेहैं ॥

(अरबी महीनोंका वर्णन) अरबदेशीय उससमय को महीना कहतेहैं जो दो द्वीजके बीचमें है और प्रत्येक सालमें बारह महीने होतेहैं और इनके सालके एकसौचौवन दिन होतेहैं इसलिये इसी हिसाबसे कोई महीना तो तीसदिन का और कोई उन्तीस दिनका होताहै और जोटुकड़े दिनोंके बचतेहैं वेइकट्ठेहोके एकदिन होजाता है और उसे ज़ी हुलहज्जा के अन्त में बढ़ालेते हैं क़ुरानशरीफ में इन की पुष्टता लिखीहै और उत्तम महीने चार हैं एक रजब दूसरे ज़ीक़ाद तीसरे ज़ीहुलहज्जा चौथे मोहर्रम एक केवल रजबतो अकेलाहै और महीना तो सब मिलेभये हैं एक दूसरे से और इन महीनों को हिराम कहतेहैं इसहेतु से कि इनमहीनों की पूजा पाठ का फल अधिक होताहै और इसीप्रकार जो इन महीनों में पाप करे तो उसकी भी अधिक वृद्धि होतीहै और इन महीनों में अरब देशीय युद्धादि नहीं करते थे और जोकोई अपने शत्रुकेडरसे भय-भीतहो वह इनमहीनों में उसमें निर्भयरहै यहांतक कि जो किसी के दरवाज़े पर मक़्तूल हो और वह घातिक उसके द्वार पर जाय और उससे मिले तो भी उससे कोई न बोले अबमें प्रत्येक महीना को सविस्तार वर्णन करता हूं ॥

(महीना मोहर्रम) यह महीना उत्तम और हर्षकाहै और कारण इसका यह है कि इन दिनों में युद्धादि करना अयोग्य है इस महीनेका प्रथमदिन पवित्रहै उसदिन अरबका बादशाह मजलिस करताहै और लोग आनन्द मनातेहैं जैसे फ़ारस में नौ रोज़ सुलतानी होताहै और अजमका बादशाह इसदिनको आनन्द और हर्ष का दिन जानताहै और मोहर्रम के दशवें दिनको आशोरह कहतेहैं यहदिन सम्पूर्ण पन्थवालों के निकट उत्तम इसकारण है कि इसी दिन ईश्वरने हज़रत आदम (शिव) की तो बह (विकार) को माना और इसीदिन नूहकी नौका जूदापर्वत पर पहुंचके ठहरीऔर

अरूप मिटी और इसीदिन हज़रतइब्राहीम और मूसा औरईसाको खिलाफ़त अर्थात् धर्माध्यक्षकी पदवीमिली और इसीदिनहज़रत इब्राहीम अग्निकुण्डमेंपड़े तो आग शीतलहुई और इसीदिनईश्वरने हज़रत यूसुफ़ की आंखोंको दृष्टिदी और इसीदिन यूसुफ़ बन्दि से निकले औरइसीदिन हज़रत सुलेमानको खिलाफ़त का तख़्तमिला औरइसीदिन यूनुसकी जातवालोंका कष्टमिटा और इसीदिन हज़रतएयब का कष्टमिटा और इसीदिन हज़रतज़करिया की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी औ हज़रत यहिया अलेहुस्सलाम ने जन्मलिया और इसीदिन हज़रत मूसाकी प्रतिष्ठाहुई कि इससे प्रकाश दृष्टि आया यह कहावत है कि जब महम्मद साहब मदीना में आये तो देखा कि यहूदीलोग आशोरा के दिन रोज़ा रखतेहैं जब उनसेपूंछा कि इसदिन रोज़ा रहने से क्या प्रयोजनहै तब उन्होंने उत्तरदिया कि इसीदिन परमेश्वर ने फिराऊंन को उसकी सेना सहित जलमें डुबाया और हज़रत मूसाको उसकी सेना सहित बचाया तब हज़रत महम्मद ने कहा कि मैं मूसा से अधिक माननीय और अधिकारी हूं इसपै आज्ञादी कि नित्त आशोरा को रोज़ह रक्खा जावे मुसल्मान इसदिन को बड़ा मानते हैं क्योंकि हुसेन साहब और सम्पूर्ण उनके साथी इसीदिन शहीदहुये अर्थात् अधर्मियों के हाथ से मृत्युको प्राप्तहुये इसीकारण शियालोगों ने इन दिनोंको शोक माना और अहलत सन्नुन, अर्थात् सुन्नीलोग का निश्चय है जो इस दिन सुर्मा लगावें तो एक बर्षतक नेत्रों में ढरका का रोग न होगा औरसत्रहवीं मुहर्रम को असहाब फ़ील कावाके गिरान को आये और ईश्वरने अपनी शक्ति अबाबील(छोटीचिड़िया) को दिया उसने असहाब फ़ीलपर फ़तेह पाई ॥

(महीनासफ़र) इसका कारण यहहै कि इसमहीना में लोगोंके घरकेघर खाली होजाते थे और लोग लड़ाईको जाते थे और कोई उससमय में अब महम्मदी धर्मका प्रचार नथा इसमहीनेको हिरान कहतेथे और इससमयमें इनमें एकमनुष्य खड़ाहोकर पुकार

ताथा कि तुम्हारे ईश्वर ने सफ़र के महीनाको तुमपर हराम किया है इसलिये तुम भी इसको हरामसमझो और इसीअनुसार इसको हिराम जानतेथे और ये लोग कभी२ काम भी करगुज़रतेथे और अरबदेशीय मनुष्य शूरवीर होतेहैं जब तीनमहीने लगातार गोशानशीन रहतेथे तो बड़ेकष्ट से बीतते थे गोशानशीन का अर्थ यह है कि एकान्त में बैठ ईश्वर का स्मरण करना ॥

सम्पूर्ण प्रजाका निश्चयहै कि इसमहीनामें घरबैठना युद्धादि की अपेक्षा उत्तम है रसूलअल्लाह सलेहो सल्लम ने कहा है कि जो कोई मुझे इसका आनन्द देताहै कि महीना सफ़रका बीता तो मैं उसको बैकुण्ठ का आनन्ददेताहूं कहते हैं कि अव्वल सफ़रको ईदनबी अम्बिया की हुई है और हुसेन का शीश दमिश्क में लेगये हैं कहतेहैं कि जिससमय एज़ीद बिनमाविया ने हुसेनका शीशपवित्र देखा तो कहा कि हे ज़ियाद के पुत्र तुझको ईश्वर नष्टकरे जो इस काम को न करता तो भी तो मैं तुझसे प्रसन्नथा और इमामअली ज़ैनुबलाबदीन ने इमामहुसेनके बेटेसेकहा कि मैंने आज्ञा नहीं दी ॥

बीस तारीख़ महीना सफ़रको इमाम हुसेनकेशीशकोफेरा और चौबीसतारीख़ सफ़र को रसूल अल्लासलल्लिल्ला आलेह वस्सल्लाम खोहा में गये और उनकेसाथ अबूबकर थे ॥

(महीना रबीउल औवल) इसमहीना को रबीउलऔवल इस कारण कहतेहैं कि लोग इसमहीना में सब काम छोड़ पुण्य दान और ईश्वर के पूजापाठ में लगते हैं और यह 'महीना अत्योत्तम है क्योंकि इस महीना में ईश्वर ने संसार में मनुष्यों को भलाई का अधिकारी कियाहै इसमहीनेकी आठवीं तारीख़ को हज़रत मदीना को आयेहैं और इसमहीना की बारहवीं को हज़रत ने मौलूदकियाहै और तेरहवींको हुसेन मुख़तार सकफ़ीसे हुसेनअलेहुस्सलाम बदला लेकर लौटगयेहैं और यह कहावत प्रसिद्ध है ॥

(रबीउलऔवल) इसमहीनाकी तीसरीतारीख़ को हज्जाजिनयूसुफ़ने कावामेंआग लगाईहै जबकि अब्दुल्ला बिनज़ेरने इसकोघेराहै ॥

(जमादि उल औवल) इन दोनोंमहीनों को जमाद कहने का यह कारणहै कि येजाड़े और बसन्तमें होतेहैं इसमहीना की नवीं तारीख़ को ज़ाफ़रतयारका मौलूद हुआ है और पन्द्रहवीं को बड़ा युद्ध हुआहै॥

(महीना जमादिउल आख़िर) पुराने लोगोंका निश्चय है कि इस महीने में महाशोक हुयेहैं और इस महीनेकी पहिली तारीख़ को हज़रत रसूल के पास फ़रिश्ते आयेहैं और दूसरी तारीख़ को हज़रत अमीरउल मोमिनीन को विलायत अर्थात् धर्म्माध्यक्ष की पदवी मिली॥

(महीना रज्जब) यह ईश्वर का महीना है कहते हैं कि अरब देशीय लोगों ने इस महीने की ताज़ीम (मान)की है और रज्जब के अर्थ हैं–बड़ा–इस महीने को असम अर्थात् बहरा कहते हैं क्योंकि इस महीना में हत्यारों की आवाज़ नहीं सुनते और इस्म अर्थात् बहरा कहने का यह कारण है कि इस महीनाके पापों का दण्ड नहीं मिलता और इस महीने को असब कहते हैं क्यों कि ईश्वर इस महीना में अपनी दयाका मेह बर्षाता है और ईश्वर अपने जनों पर क्षमा करता है और बहुत सी हदीसों में भी यह महीना सर्वोपरि लिखा है और प्रत्येक हदीस से यह प्रमाण मिलता है कि इस महीनाके पूजादिका फल अधिक होता है इस महीनामें जोमांगो सो ईश्वर देता है जिस समय में लोगमहम्मदी धर्म्म में न थे उस समय जोकोई दुःखी चाहताथा कि दुःखदायी से पलटा लेय तो वह इस रज्जबके महीना तक संतोष करता था और जब वह इस महीने में ईश्वर से प्रार्थना करता था तो वह सुनी जाती थी और इनबातों के सिवाय यहभी है कि इब्न अब्बासने कहा है कि एक दिनमें अमर इब्नुलख़त्ताब के पास गया तो देखा कि एक वृद्ध अन्धा लँगड़ाएक मनुष्य का हाथ थाँभे हुये आया उस समय अमर ने कहा कि इस अन्धे मनुष्यके सिवा आज तक किसी और को नहीं देखा तबएक मनुष्य वहां वर्त्तमान था उसने कहा कि हे धर्म्माध्यक्ष आपने इस

को नहीं पहिचाना तबअमरने कहा कि मैंने नहीं पहिचाना तब उसने उत्तर दिया कि यह सनाय इसलिमीहै जिसको अइयाजनेआपदिया था तब अमरने कहा कि अइयाज़को बुलाओ जब वह आया तब अमरने कहा कि जोतेरे और सनाके वीच व्यवस्थाहै सो आपभांति फिरकह तब उसने इस प्रकार बर्णन किया कि यह ब्राह्मनण्य थे और मैं इनका चचेड़ा भाई हूं और मेरे पिताके बंशमें मेरे सिवा कोई और नथा इन्होंने मेरे पिताका सम्पूर्ण धन व वित्तलैलिया और मेरे साथ बड़ी अनीति करी तब मैंने इनसे बात नकी और ईश्वर का स्मर्ण किया और मैंने इनकी बहुतसी आधीनताकी परंतु इन्होंनेएक कान नहीं करी और इनके चित्तमें कुछभी दया नहीं आई तब मैंने महीना रज्जब तक संतोष किया जब रज्जबका महीना आया तब मैं ऊपरकी ओर हाथउठाके परमेश्वरसे प्रार्थनाकी सो इसके नौआदिमी थे सो उसी बर्षके भीतर क्रम २ से मृत्युको प्राप्तहुए और यह एक रह गया सो अन्धा और लँगड़ा होगया जैसा कि आपकी दृष्टि गोचरमें वर्त्तमान है इसप्रकार इसके हाथ पकरके खींचते हैं तबअमरने कहा कि ईश्वर अमलहै और यह एक अपूर्व बात है कि रज्जब की पहिली तारीख़को हज़रतनूहनौकारूढ़हुए और इसी महीना की चौथी तारीख़को सफ़ोलोगोंमें युद्धहुआ जिसका नाम जंग सफ़ैन है और इसमहीनाकी पन्द्रहवींको हज़रतदाऊद मरे लिखाहै कि इस महीनाकी सत्ताईसवींको ईश्वरकी दयादृष्टिसे संसारसुखीहुआ और सत्ताईस रज्जबको हज़रत आसमानको गए॥

(शाबान)इसको शाबान कहनेका यह कारण है कि इसदिनको सबलोग एकठौर पै इकट्ठे होते हैं और इस महीनाको शहरनबीअल्लाहभी कहतेहैं जैसा कि हदीसमें लिखा है कि शाबान हमारामहीना है और शबरात उसकी हमारी रातहै हज़रत रसूलसल्लिल्लाह अलेहुस्सलमकी कहावत है कि ईश्वर जीवोंके पापों को क्षमा करता है परन्तु जो मनुष्य अपने भाईका शत्रुहै अथवा नास्तिक है उसके पापोंकी क्षमा नहीं होती और कोई २ कहते हैं कि शाबान की

अर्द्धरात्री पवित्रहै औरहज़रत आयशाकी कहावतहै किईश्वर अपने जनोंके पापोंको शावानकी अर्द्ध रात्रीभर क्षमा करताहै और तेरहवीं शावानको क़िबलाकी जगह का बदलना नियत हुआ॥

रमज़ान- इसको रमज़ान इसकारण कहते हैं कि उस समयमें दिश जूकी सख़्तीको मसादिक़ है और मसादिक़के अर्थ मिलने के हैं और किसी २ ने इसका कारण यों लिखा है कि इसदिन पापकी क्षयहोती है और हज़रतरसूलने कहा है कि रमज़ान हमारे पंथका महीना है और इसदिन उनके पाप मिटजाते हैं और अबीज़र ग़फ़ा-रीकी कहावत है कि सहीफ़ाइब्राहीम के लिये आया तीसरी रमज़ान की रातको और रमज़ानकी चौबीसवींको फ़ुर्क़ानमजीद हज़रत मह म्मद मुस्तफ़ाको मिला और अठारहवीं रमज़ान की रातको हज़रत दाऊदको ज़बूर मिला और तेरहवीं रमज़ानको हज़रतईसा की इं-जील मिली इन्सविन मालिकने लिखा है कि यह हज़रत महम्मद रसूलअल्लाहकी यह कहावत है कि पहिली रात्रीको रमज़ानके म-हीनामें ईश्वर बैकुण्ठके ख़ज़ांचीरज़वांको आज्ञादेता है कि बैकुण्ठका दरवाज़ा खोलकर इसको सुधार जिसमें महम्मदके धर्म्म वाले म-नुष्य जो रोज़ा रखतेहैं यहां आवेंगे और जबतकरमज़ानका महीना का अंतनहो तब तक द्वार बैकुण्ठका बन्द न करना और यमराज से कहदेता है कि नर्कका द्वार बन्द करदें महम्मदी धर्म्मवालोंके लिये जब तक रमज़ानका महीना पूरा नहो तब तक नर्क का द्वारा नखो-लना तिस उपरांत जिबरईल अलेहुस्सलामको आज्ञा देता है कि तुम पृथ्वीपर जाकर शैतानोंके पैरों में बेड़ी और गलों में तौक़ डाल दो जिसमें वे महम्मदी धर्म्म वालोंके रोज़ा न भ्रष्ट करने पावें और रोज़ादार लोग आनन्दसे निःकण्टक अपने२ रोज़ाखोलें ईश्वर नित्य रमज़ानके महीनामें नर्कीजीवोंको छोड़ताहै॥ अब्दुल्लाहइब्नअब्बास की कहावत है कि रसूलअल्लाह ने कहा कि एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक सम्पूर्ण बैकुण्ठ इस कारण सुधारा जाता है कि जिसमें रम-ज़ान केमहीनेके रोज़ा रखनेवाले लोग इस में आवें और रमज़ान

की रातों को एकप्रकारकी वायु ईश्वर के स्थानके नीचे से ऐसी च-
लती है जिसके से सम्पूर्ण वृक्ष गहमहा उठतेहैं और उन वृक्षोंसे
अति रसाल मनहरन शब्द सुनाई देते हैं और बरांगणाखड़ीहोकर
रजवां से पूछतीहैं कि आज क्या आनन्द है तब रजवां (बैकुण्ठ-
का कोषाध्यक्ष) कहताहै कि हे परम सुन्दरियो आज रमज़ानकी
पहिली रातहै सो ईश्वर ने आज्ञादीहै कि नर्कके द्वार बन्द करादिये
जांय और बैकुण्ठके द्वार खोलनेकी आज्ञादीहै ईश्वर नित्त रमज़ान
की रात्री को रोज़ा खोलने के समय एक,२ हज़ार नर्की जीवों के
अपराध क्षमा करके छोड़ता है और अन्त रमज़ान के दिन इतने
पापियों को छोड़ता है कि जिनकी संख्या सम्पूर्ण महीने पापियों
की बराबर होतीहै इब्न अब्बास ने लिखाहै कि इसी महीना में
शबे क़दर भी होतीहै सो उसदिन जितना बर्षका पाप पुण्य और
अन्नादि पदार्थोंका हिसाब होता है वह इसीरात को लिखाजाताहै
यहरात अति शुभहै जाय ज़हज़रतरसूलकी कहावत को कहता है
कि उन्होंने कहा कि मैं शबेक़दर को रमज़ान के दशदिन अन्त में
भूलगया यहरात अति सुन्दर है कि नतो गरमहै और नतो शर्द है
दायम हज़रत रसूलकी कहावत कहताहै कि हज़रतने कहा है कि
शबेक़दर को रमज़ान की सत्रहवीं और इक्कीसवीं और तेईसवीं को
बुलाओ बस तिस उपरान्त हज़रत पैग़म्बर तो चुपहोरहे अबाबिन
काबने कहा है कि रमज़ानकी सत्ताईसवीं तारीख़ को शबेक़दर है
और कहतेहैं कि उसरात को सूर्य्य थाल के समान उदय होता है
और उसमें किरणें नहीं होतीं और कोई२ कहताहै कि सूरै लील
तुल क़दर के अव्वल से शबेक़दर है अन्तको सत्ताईसवींतारीख़ही
ठीक ठहरीगई और सातवींको मामू ख़लीफ़ा ने हरित वस्त्र धार-
णकिये और उन्नीसवीं को हज़रत रसूल ख़ुदा ने मकापर जयपाई
और अठाईसवीं को अब्बासिया का न्योता ख़ुरासान में हुआ और
सत्ताईसवीं को सैदुल मुर्सलीन सल्लिल्लाह अलैहेवसल्लम की सहा-
यता को फ़रिश्ते आये ॥

महीना शौव्वाल—इसका कारण यों कहते हैं कि शवि के समय ऊंट अपनी पूछको काटता है और बीसवीं शौव्वाल कीरात को ईदहै इब्न अब्बास कहताहै कि ईश्वर आज्ञा देताहै जिबरईल को कि तुम फित्न की रात को फरिश्ते लेकर पृथ्वी पर जाओ वे आकर महम्मदी धर्म्मवालों को आशीर्व्वाद देते हैं और जो कोई सधर्म्म नमाज़ अथवा ईश्वरका आराधन करताहै उसकी संगतिरात भर करतेहैं और उसको आशीर्व्वाद देतेहैं और जिबरईल पुकारते हैं अलरहील अलरहील तब फरिश्ते पूछते हैं कि हे जिबरईल ईश्वरने सधर्मी के साथ क्या किया तब जिबरईल कहते हैं कि आजकी रात को ईश्वर ने इनके ऊपर दया दृष्टिकी और इनपर क्षमा की तब उस के प्रातःकाल को फरिश्तों का समूह आकर कहता है कि हे महम्मदी धर्म्मवालो बाहिर निकलो जिसमें ईश्वर तुम्हारे ऊपर क्षमाकरे तोजब वे नमाज पढ़ने हेतु बाहिर निकलते हैं तो ईश्वर इनकी नमाज़गाह अर्थात् पूजनकी ठौर पर कहता है कि हे मेरे दासो आज तुम अपनी अभिलाषा मेरे सम्मुखे प्रगटकरो मैं सत्यधाम सत्य २ कहताहूं और प्रतिज्ञा करताहूं कि जो तुम्हारी अभिलाषा होगी चाहे वह स्वारथ हो चाहे परमार्थ तत्काल सब पूरी करूंगा और वह वचन इसकारणसे है कि उस दिन ईश्वर अपनी दयाकी दृष्टि करता है और इसी कारण उस दिन का नाम रोज़ रहमत है इसी दिन ईश्वरने हज़रतजिबरईलको आकाशबानी पृथ्वीपर पहुंचानेकी सेवादी और इसीदिन नहलपर वही अर्थात् आकाशबानी हुई और चौथीशौव्वालको शहीद होनेकी इच्छा से हज़रत महम्मदसलल्लिल्लाह अलेहोसल्लम नसारा अर्थात् ईसाई लोगोंके सम्मुख युद्धको चले और बीसवीं शव्वालको हज़रत यूनुस मछलीके पेटमें गये और पच्चीसवीं शव्वालसे अंत तक यह महीना अशुभ है इन्हीं दिनोंमें ईश्वर ने आदनामक जाति का संहारकिया और महा महा अंधकार पृथ्वी में उत्पन्नहुये जिस वायु और मेघसे उन लोगोंका स्वरूप मुर्गी वालोंकासा होगया था॥

महीना ज़ीक़ाद—इस महीने को ज़ीक़ाद कहनेका यह कारण है कि इस महीनामें अरबदेशीय युद्ध नहीं करते थे किन्तु अपने२ घरों में बैठे रहा करते थे क्योंकि यह महीना अव्वल माहहराम है अव्वल माह ज़ीक़ाद को ईश्वरने हज़रत मूसाको दर्शन देनेकहे और चौथी तारीखको असहाबकहफ़ और पांचवींको इब्राहीम और हज़रतइसमाईलने काबाकी नींवदी सातवींको हज़रतमूसाके हेतु नदी सूख गई और चौदहवींको हज़रतयूनुस मछलीके पेटसे बाहिर आये और उन्नीसवींकोईश्वरनेहज़रतयूनुसके लिये कद्दूका वृक्ष उत्पन्न किया॥

महीना ज़ुलहिज्ज—इस महीना को ज़ुलहिज्ज कहनेका यह कारणहै कि अरबदेशीय मनुष्यों ने जाहिलियत के समय अर्थात् जबकोई धर्म्म न था हज्ज कियाथा इसमहीना के प्रथम दशदिन मालूमात के हैं और ईश्वर इनको बहुत प्रसन्न करताहै इसमहीना की दूसरी तारीख को जनाब अमीर और बीबी फ़ातमाका विवाह हुआ और इसमहीने की आठवीं को रात तरविया है और उसका यहहेतुहै कि उसदिन सक्का मसजिदुल हराम में पानी भरा करते थे जाहिलियत और मुसलमानी धर्म्मों दोनों के समय में प्रलय तक उसपानी को देनाहै और हज्जाजको नवीं तारीखअर्फ़ा है इस हेतुसेकि इसदिन एक दूसरेको पहिचानते हैं और यहभी कहते हैं कि इसीदिन हज़रत जिबरईल ने हज़रत ख़लीलुल्लाह को हज्ज करनेकी शिक्षाकीहै और इस महीनाकी दशवींको नहरकी अज्हु-ल्जुहा का दिन है और इसी दिन औज ने हज़रत इसमाईल को सौगात भेजी और नहरके तीनके तीनदिनको तशरीक़ इसकारण कहते हैं कि इसदिन कुर्बानी अर्थात् बलिप्रदानका मांस बांटागया है इन तीनके और अट्ठारहवीं को ग़दीर अर्थात् ताल ख़म हुआ है और तेईसवीं को हज़रत अमीरुलमोमिनीन नमाज़के समय बैकुंठ को पधारे और छब्बीसवींको हज़रतदाऊद ने अपने अपराधों की क्षमा मांगी ॥

इति ।

इन महीनों का प्रथम दिन जानने के लिये एक चक्र बनाया है जिससे उसके जाननेमें अतिही सरलता होगी और इसके जानने की यह रीतिहै कि जब कोई जानना चाहे तब सन् लिखकर उसमें से हिजरीसन् निकाललेय और उसपै चार अधिक करके आठ आठ करै और उस महीनासे चारचार करके गिनताजावे तो वही महीना की संख्याहोगी सोई पहिला दिनहोगा और भागके उपरान्त आठ शेष बचें तो उनको छोड़देय जो अन्तकी संख्या है सोई महीना है चक्र यह है जो लिखाजाता है ॥

तसवीर नम्बर १०६

इमामसादिक ने कहाहै कि जब तुमको रमज़ानका प्रथम दिन जाननाहो तब तुम्हें उचित होगा कि जिसदिन तुमने बीतेसाल में रोजह रक्खा था उसके पांचवें दिन जानो कि वर्तमान साल का पहिला महीनाहोगा बहुतेरे गणितकारोंने इसइस रीतिकी परीक्षा लीहै सो पचास वर्षतक ठीक आईहै ॥

ब्याख्यान—रूमी महीनोंके विषयमें ॥

इन महीनों में दिनों की संख्या एकसी नहींहोती किन्तु कमती बढ़ती होताहै यूनानके वैद्योंका यह सिद्धान्तहै कि महीना सूर्य्यकी चालानुसार होतेहैं और उसका ब्योरा यहहै कि तीन महीनाउपरान्त सूर्य्यकी चाल बदल जातीहै इसलिये कुछ महीना तो उसके अनुसार होतेहैं और कुछ दूसरीरीतिमें इसीकारण कोईमहीना तो तीस दिनका और कोई इकतीस दिन का और कोई अट्ठाईस दिन का होताहै इसलिये जो महीना जितनेदिनोंका होनाचाहिये उसी संख्या पर नियत किया है और सम्पूर्ण दिवस एक वर्ष में तीनसौ साठ होतेहैं और इसके सिवाय वर्षमें पांचदिन और मिलातेहैं और महीना इसरीतिसे नियत किये हैं नशरीउल औवल,१ नशरीउल आख़िर,२ कानूनउल औवल३, कानूनउल आख़िर,४ शबात ५ आज़ार,६ नैसां,७ अयार,८ ख़रीज़ां,६ तमूज़,१० आब,११ ऐलूल,१२ एक अरबदेशीय कविने बारहों महीनों के नाम छोबैत में

इकट्ठे कियेहैं सो उनदोनों बैतोंका अर्थ यहहै कि नशरीउलसानी १ और ऐलवल२ और नैसां३ और ख़रीज़ां ये चारमहीना तो तीस२ दिनके होते हैं और शवात अट्ठाईस दिनका और शेष इकतीस २ दिनके होतेहैं (नशरीउलओवल) यह महीना ३१ दिनकाहै इस महीनाकी पहिली तारीख में तहरीकसवा है और तीसरे दिनदबीर रुहाव और चौथी में असहाव कहफ़ का बर्णन है और पांचवीं में कावा (यमन धर्म्मस्थली) के निकट तसामा बैतुलमुक़द्दस है वहां आसमानसे आगआतीहै तबसे वहां शमाज लाईजाती है सातवीं कोई तवारीक़ है और नवीं में हज़रत ख़लीलुल्लाह का बर्णनहै और दशवींमें हज़रत ख़लीलुल्लाह अपने पुत्रको बलिप्रदानके लिये लाये हैं और तेरहवीं तारीख को दरिया बढ़ती है और पन्द्रहवीं को सरदीहोतीहै और आंधी ऐसेबेगसे आतीहै कि वृक्ष जरमूलसेउखड़ जातेहैं और जो उसदिन वृक्ष से लकड़ी काटै तो वह घुनती नहीं और टढ़ीभी नहींहोती और अट्ठारहवींमें नील नदी घटतीजाती है और इक्कीसवीं को ईश्वर नदीकिनारे फिरती है और चौबीसवीं को लोग कोठोंसे घरोंमें आते हैं और छब्बीसवींको ज़करियाके पुत्रका शीश कबुरमें धरागयाहै और अट्ठाईसवींको जाड़ेका आरम्भ होता है और दार दिखानेका मौसम जातारहताहै और तीसवींको बोह दाद और खतातीव और रहम आदि पक्षीपृथ्वीपर बास करतेहैं॥

इति

(नशरीउलसानी) यह महीना ३० दिनका होता है इसके पहिले दिन दक्षिणकी बायु बड़े बेगसे चलती है और दूसरे दिन के प्रथम भागमें मेघ बर्षता है और पांचवींको मांसाहारी दुःखदायी जीव अपनी भाठिमें जा छिपतेहैं और सातवींको शामदेशमें जैतून कनतेहैं और मेघोंका अधिकत्व होताहै और नदीमारे लहरोंकेढंग मगाने लगतीहै और नावोंका आनाजाना बन्दहोता है और आठवीं को भी नदीबाढ़ही पर रहतीहै नवींको प्रथमबार आता है तेरहवीं को फ़ारसका दरिया बढ़ने लगताहै जो उसदिन कोई वृक्षकोकाटे

तो उसमें घुन न लगेगा सत्तरहवींको सोमनाम मेलाहोता है और यह चालीस दिनतक रहता है बीसवींमें बिनहड्डी के जीव मरजाते हैं और बाईसवींकी रातको ठण्ढापानी पीना वर्जितहै तीसवीं को क्वत में जैतून चुनाजाता है और अट्ठाईसवीं को अत्यन्त कराल लहरें दरियामें उठती हैं ॥

(कानूनउल औवल) यह महीना इकतीस दिनका होताहै पहिले दिन दमिश्क़ में बाज़ार लगाई जातीहै और पानकी डारें बोतेहैं और बारहवींको अरूनकी बाज़ार होतीहै और चौदहवींको औवल अरबानिथात है और सतरहवीं में गोमांस और नींबूका खाना और सोनेके उपरान्त जलपीना और हजामत बनवाना और नूरा अर्थात् बारसफ़ा का लगाना बर्जित है और इनको मैलाद अकबर कहतेहैं और इसके अर्थ इन किलाय अर्थात् उलट पलट केहैं और इसदिन नूरहदनुकसानसे बाहिरआताहै और अधिकत्व की सीमा से बढ़जाता है और उस जो आदमीका है सो प्रकट होताहै और जिनोंकी शक्ति कमहोतीहै और नाशको प्राप्तहोते हैं और उन्नीसवीं को रात बढ़तीहै और दिन घटताहै और इक्कीसवीं को दानियाल पैगम्बर का वर्णन है और तेईसवीं को नीलनामक नदी बढ़ती है और वृक्षों के पत्ते और ओस गिरने लगती है और पच्चीसवीं को ईसा मरियम के बेटाका जन्म हुआहै और छब्बीसवीं में हज़रत दाऊद और हज़रत यकूब का वर्णनहै और उन्तीसवीं को सोने के उपरान्त पानी पीना वर्जित है क्योंकि उस समय जिनलोग पानी में वान्तकरतेहैं इसलिये जो मनुष्य उससमयपानी पीता है उस की बुद्धि नष्ट होती है और यहदशा वायुजल को आरम्भ करती है और ठण्डा पानी पीना शरीर की शक्तिवाली गर्मी को मिटाताहै ॥

(कानून उलसानी) यह महीना इकतीसदिन का होताहै इसकी पहिली तारीख़में वर्षाकी आशा होती है और इसमहीनेमें [illegible] देशीय [illegible] प्रकट करतेहैं जैसा कि ईसाई [illegible]

के मलजा किया शहर के निवासी वह शहर ईसाइयों का है दूसरा दिन गीली लकड़ी काटने का है और छठांदिन बलिप्रदान का है लोग कहतेहैं कि इसदिन में एक ऐसा मुहूर्त है कि जिसमें खारीपानी मीठा होजाताहै और दशवींको रोज़ा का दिन है और सत्रहवीं को फ़ारस के शहरों में जाड़ाहोने लगताहै चौबीसवीं को हज़रत बीबीका रोज़ाहै इसदिन से हरियाली फैलती है और पक्षी प्रसन्न होकर शीघ्र उड़ते हैं पचीसवीं को रुई और खरबूज़ा बोये जाते हैं और दूसरे खण्ड में वृक्ष लगाये जाते हैं और मिश्र में अंगूर बोयेजाते हैं और ऊंटको ऊंटनीपर छोड़ते हैं॥

(शबात) यह महीना अट्ठाईस दिनका होताहै इसकी सातवीं तारीख़ को हमीरा अदना गिरता है और तेरहवींको वृक्षोंसे पानी जारीहोकर नीचेसे ऊपरको जाताहै और चौदहवींको औसत हमीरा भी गिरजाता है और पन्द्रहवीं को खीरा ककरी बोई जातीहैं और जंगली पशुओं के बच्चे होतेहैं और पक्षी बोलतेहैं और परस्तूर प्रकट होताहै और मकरियां अण्डे देती हैं और गुलाब और चमेली और नरगिस बोईजाती है और अंगूर के वृक्षों में पत्ते निकलते हैं और चरागाह में घास अधिक होतीहै और देशमें नानाप्रकार की वायु चलतीहै और अंगूरके समयमें वर्षाहोती है और शाम के देश में कमात पैदा होतीहै॥

बीतवींको नक्ता और मच्छड़ उड़ने लगतेहैं इक्कीसवींको तीसरे हमीरा का अगाठोता है इन हमीरों के अस्तका यह अर्थहै कि अगले दिनों में आतिश परस्त अर्थात् अग्निहोत्र लोगथे वे लोग जाड़ेकेदिनों में तीनमकान छिपेहुयेबनाते थे सो कोई एकइनमकानों में से एक दूसरे की परिधि होतेथे सो उनघरोंमें बाहिरी खण्ड में ऊंट,घोड़ा,बैल आदि रहतेथे और दूसरेखण्डमें बकरी और तीसरे में आप रहाकरतेथे और कोयला अग्नि के कारण सबेरतकले रहते थे सातवींको बड़ेजीवों को जंगलकी वायु खवातेथे और छोटे जीवों को जंगलोंपर छलतेथे और आपअन्य छोटेजीवों की ठौर पाते थे

इसलिये जब हमीरा बीतगया तब छोटे जानवरों को बड़े जीवोंकी ठौरछातेथे और जब हमीरा दूसरावीता इसीप्रकार दूसरे अठवारे में आपही जंगलमें जाकर अग्निप्रचण्ड करतेथे क्योंकि वायु ठीक चलने लगतीहै इन्हींको हमीरा कहतेहैं निदान तीनों हमीरा बीत जातेहैं इक्कीसवीं को वायुगर्म चलती है पृथ्वी तपने लगती है और अंगूरों के वृक्ष लगाये जाते हैं छब्बीसवीं को अइयामुलमजूर है यह सातदिन तक रहतेहैं इसमें से तीनदिन तो शवात महीना के और चार दिन आज़ार के शवात के अट्ठाईस दिन हैं और प्रत्येक दिनका एकनामहै इसलिये अमरअजोज़ के थोड़ेसे नामहैं कि जिन में सरदी होतीहै और आंधी और विपरीत वायु चलाकरती है बहुत मनुष्यों का निश्चय है कि आंधी और वायु का चलना समय की स्वाभाविक रीतिहै क्योंकि जब अजोज़के दिनआतेहैं तो वायुआदि का चलना अवश्य होता है जिससे संसार में जाड़ाहो और आंधी आदिचले क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि शीतऋतु में वायुचले और किसीमें न चले क्योंकि जिमिस्तान में अधिक सरदी होती है जैसे गर्मी के अन्तमें गर्मी अधिक होतीहै और ऋतुके अन्तमें ऐसी सरदी होती है कि दीपक की गर्मी मिटजाती है तो काजल कड़ा होजाता है॥

(आज़ार औवल) इसमहीना के समयमें टीड़ी और मक्खियां अधिक निकलती हैं और अजोज़ मेंसे चौथा समय है और कोई २ जौजके चिह्न इसप्रकार से लिखते हैं कि उसदिन ईश्वर ने आद नामक जातिका संहारकियाहै और उससमय एक अजोज़ अर्थात् वृद्ध स्त्री बचगई थी वह उस समय अपने सजातीयलोगों के लिये विलाप करती थी इसीकारण इन दिनों को अजोज़ कहते हैं सातवीं को वायु वेगसे चलती है और बारहवीं को हजामत करते हैं (हजामत) यहशब्द अरबी है उसदेशमें इसका अर्थ पछने लगाने काहै परन्तु आर्य्य लोगों ने इसशब्द का अर्थ बाल काटने अथवा कटवाने का कियाहै और आर्य्यलोगों में मुसल्मानोंकी भी सूचना

है क्योंकि आर्य्योंको यहशब्द उन्हीं से मिला—तेरहवीं को गिद्ध ऊपर आकाश के प्रकट होते हैं और सोलहवीं को सर्पों की आंखें खुलतीहैं क्योंकि सर्प्प जाड़ेकेमारे पृथ्वीमें जारहते हैं इससे उनके नेत्र अन्धे होजातेहैं और अठारहवीं को दिनरात बराबर होजाती है और वहां अजम का प्रथम दिनहै और नदीका पानी जमजाता है क्योंकि सूर्य्य अपनी शक्तिको खींचलेता है कोई२ कहते हैं जो मनुष्य अक़ीम अर्थात् बांझ हो और इसरात को सरव के वृक्ष को देखके अपनी स्त्री के साथ रतिकरै तो निस्सन्देह उसकी स्त्रीगर्भिणी होजायगी और इसीरात्रि को काम कृशानु बढ़ावनहारी वायु चलती है तिसकारण पुरुषों को स्त्री की अधिक अभिलाष होती है इसीदिनगेहूं में बाली पैदाहोतीहै और सम्पूर्ण वृक्ष हरेभरे होजाते हैं और कोकनार और अंगूरों की खेतीहोती है और बादाम और आलूबुख़ारा के ऊपर छिलका पैदाहोता है और नदी में घड़ियाल डरताहै पच्चीसवीं को नदी में बाढ़होती है और उस दिन ईदनार होतीहै (ईदनार उसदिन को कहते हैं जिसदिन हज़रत ईसामसी कीमाता मरियम को ईसामसी का गर्भ में आना मालूम हुआ)

(नैसां) यह महीना इकतीस दिनका होता है इस महीनाके प्रथम दिन वर्षा की आशा होती है चौथा दिन इसका सानीन का है चौदहवीं को ईसाई लोगों का ईदुलफितर होता है अट्ठारहवीं को हाथमें लोहा लेना अच्छा है बीसवींको पुरवाई बड़े वेगसे चलती है और पक्षी प्रसन्न चित्त दृष्टि आते हैं इकीसवींको फ़लमर्तैनशहर में एक प्रसिद्ध बाज़ार लगती है और मनुष्य बहुत इकट्ठे होते हैं बाईसवींको दक्षिणी वायु वेगसे चलती है और जंगल हरा होनेके कारण चित्त प्रसन्न होता है और तेईसवींको हज़रत ऐयब की क़बर पै मेला होता है और सत्ताईसवींको फ़ात नामक नदीकी बाढ़ बन्द होजाती है और अट्ठाईसवींको रक्त शरीर में फिरता है और वृक्षों पर मेवा फलता है और बादाम नया पैदा होता है॥

(अयार) यह महीना इकतीस दिनका होता है इसका प्रथम

दिन आरमियां पैगम्बर के दर्शनों का है दूसरी तारीख़ को छोछड़ी अपने बिलोंमें जाती हैं जंगल में बहुत कम निकलती हैं छठवीं को हज़रत ऐयूबकी ज़ियारत होती है सातवीं को ईदसलीब होती है नवींको हज़रत शईबकी ज्यारत होती है पंदरहवीं को ईद सम्पूर्ण मसजिदोंकी है सोलहवींमें नसीम बायु (प्रातःकालकी वायु) जिस को अमृत बेला कहते हैं चलती है और कुमात काटा जाता है जो जलमें पंथ चलने के लिये शुभ होता है और इसी तारीख़को हज़रत ज़करियाकी ज्यारत होतीहै और तेईसवींको हज़रत शमऊनकी ज्यारत होती है और चौबीसवींको महामारी दूर होती है और देहातमें खेती काटी जाती है लू चलती है और अंगूर काला होता है और मिश्रकी नील नामक नदी बढ़ती है औ पानीके पंथ के लिये उत्तम है पचीसवीं को ईदगुल सम्बुल होती यह सम्बुल दूसरे प्रकार का फूल है उन्तीसवीं को शम्बा क़यामत और इकतीसवीं को शकुन चीनका दिन है॥

(ख़रीज़ां) यह महीना तीस दिनका होता है इसकी प्रथम तारीख़को हज़रत हक़ील पैगम्बरकी ज्यारत है ग्यारहवीं को नौरोज़ खलफ़ाय बग़दाद का है सोलहवींको नीलनदीका पानी बढ़केचारों ओरको निकल जाता है अट्ठाईसवींको दिन बढ़ता है और रात घटती है इसको इनफिलाबसैफी कहते हैं बाईसवींको ख़रीज़ां, अंजीर, और अंगूर फलते हैं और मर्गी होतीहै खेत काटेजाते हैं और हज़रत ज़करियाके बेटा यहियाका जन्म हुआ है इस दिन बड़ी लू चलती है और हेजून नामक नदी बढ़ती है और अट्ठाईसवीं को व बारहका अन्त दिन है और उन्तीसवींको असहाव तजुरबा परीक्षा लेतेहैं कि जो इसदिन ओसअधिकगिरै तो जानलेंगे कि नीलनाम नदी बढ़ेगी और जो कमती गिरै तो जान लेंगे कि नहीं बढ़ैगी॥

(तमूज़) यह महीना यकतीस दिनका होता है इस महीनाकी पांचवीं तारीख़ को शारी नामक तारा उदय होता है उसके उदय होनेके पहिले किसान लोग एक तख़्तापर सात दिन तक गेहूं जौ

उर्द आदि अन्न बोते हैं और उसके उदय की रात्री को उस तख्ती को ऊंचेपर धरतेहैं सवेरेके समय उस तख्ती को देखते हैं जो उसमें वह अन्नजमा तबतो जानतेहैं कि अबकी साल किसानी अच्छीहोगी और जोन्जमा तो उसके विपरीत मान लेते हैं और महम्मदी धर्मके पहिले आतिश परस्त अर्थात् अग्निहोत्र लोग ऐसाही किया करते थे सातवीं तारीख को टीड़ीकी मृत्यु आती है दशवीं को बसरा नामक शहर की बाज़ार लगती है अट्ठारहवीं को बाहूर नाम के दिनहैं ये सात दिनहैं इनमें सरदी और गर्मी का विचार किया करते हैं चौबीसवींको गर्मी अधिक होती है बायु गर्म चलती है महामारी जो होय तो मिटजातीहै आंखों में पीड़ा होतीहै और ज्वार और गाजर बोते हैं पच्चीसवीं को अधिक गर्मी होनेके कारण रति करना बर्जित है सत्ताईसवीं को छुहारे और अंगूर तोड़ते हैं और नदी बढ़ती है ऊख काटते हैं मेवा पकजाते हैं तीसवीं को मरियम ईसामसीकी माताकी ईद होती है ॥

(आब) यह महीना इकतीस दिनका होताहै इसके पहिलेदिन से पन्द्रहवीं तारीख तक मरियम के मरनेके रोज़ह रखतेहैं तीसरी को ईसामसी की ज्यारत है चौथी को पन्द्रह दिन तक हज़रत इलियासपैगम्बरकी ज्यारतहै पांचवींमें हज़रत मूसाकी ज्यारत है और छठीको ईदतजल्लीहै नवींको नानाप्रकार की बायु बेगसे चलती है दशवींको अमाकी बाज़ार लगतीहै बारहवीं को बायु अच्छी चलने लगती है पन्दरहवीं को मरियमकी ईदज्यारत है सत्तरहवीं को दूसरी ईदतजल्ली है अट्ठारहवीं को बायु बेगसे चलती है और अनार अधिक उत्पन्न होता है बीसवीं के अन्त में बिषकी बायु चलती है बाईसवींको गर्मी कम होजातीहै छब्बीसवीं को आंखोंमें पीड़ा होती है सत्ताईसवींको हज़रत यहियाकी माता और ऐसाकी ज्यारत है अट्ठाईसवींको रात अच्छीहोतीहै और पानी स्वादिष्ट होता है और श्लेष्मा होता है और बहुधा कफ उत्पन्नहोताहै और औषधके खाने से चित्त प्रसन्नहोताहै और छुहारा और अंगूर अधिकहोता है और

मन्द २ मेघ बर्षता है और शाम देशमें तुरंजवीन उत्पन्न होती है॥

(ऐलवल) यह महीना तीस दिनका होता है इसके पहिले दिन नये सम्बत् की ईद होती है तीसरे दिन यूशा यूनुस के बेटा की ज्यारतहोती है प्रथम अपनीसभामें अग्निका सेवनकरते हैं पांचवें दिन ज़करियाकी ज्यारत होती है बारहवीं को फ़स्द लेते हैं और औषध पीते हैं तेरहवें दिन नील नदी की बाढ़का अन्त होजाता है और बैतुल मुक़द्दसकी ईदहोती है चौदहवें दिन ईदसलीब होतीहै सोलहवें दिन लड़कोंका दूध बढ़ातेहैं अट्ठारहवें दिनदिनरात सम तापर आजाता है और वहदिन अजमदेशियोंके निकट बसन्त ऋतु का प्रथम दिन है और कहते हैं कि इस दिन जो बादल प्रकट हो तो वह जीवको चैतन्य करता है और शरीर को नीरोग करता है बीसवें दिन वृक्षोंका पानी डालियों की ओरसे जड़की तरफ़ आता है और पत्ते निकलते हैं असहाब तजुर्बा ने लिखा है कि चौबीसवें दिन एकहवा ऐसी चलती है कि शहरमें चितकबले कौआ दृष्टि आते हैं उनको ऐक़ा कहते हैं और ये ऐसी बातें हैं जोकभी२वर्षमें दो२ बारभी होती हैं अब्दुलक़द्दूसने इस विषयमें एक क़सीदा लिखा है अर्थात् छन्दोक्त कविताई की है सो यह है॥

(व्याख्यान फ़ारसी महीनों के विषयमें)

ये महीने सबतीसदिन के होतेहैं और इनकेवर्ष के तीनसौ पैंसठ दिनहोते हैं इसीसे प्रत्येक महीना तीस दिनका होताहै और पांच दिनजो बढ़तेहैं वे मिलायेजातेहैं फ़ारसियोंकेअठवारे अरबदेशियों की रीति के अनुसार नहींहोते बरन इनकेमहीने में प्रथमदिन से लेकर तीसोदिन के भिन्न२ नाम नियतहैं उसीके अनुसार वहांके बादशाहोंके बस्त्र और भोजन प्रतिदिनके भिन्न२नियत हैं जो उस महीनामें दूसरीबार होतेहीनहीं और महीनाकेदिनोंकेनाम येहैं॥

हुर्मुज़१ वहमन २ उर्दीबिहिश्त ३ शहर्यूर ४ स्फ़न्दारमुज़ ५ ख़ुर्दाद ६ अमुर्दाद७ दैबाज़ुर८ आदिर९ आवान्१०ख़ुर११ महु-र १२ तीर१३ गोश १४ दिब्महर१५ म्येहर१६ सरोश१७

रश १८ फ़र्वर्दीन१९ वहराम२० राम२१ ग्वाद२२ दिप्दी २३ दीन २४अर्शसं२५ अशता२६ अशमा २७ रमयाज़ २८आसफ़न्द २९ अनेरान ३०तीसोंदिनके अलगअलगनाम रखनेकायहकारण है कि प्रत्येकदिन के भोजन बस्त्र नियतहैं वे ही भोजन और बस्त्र जोएक दिन होचुके हैं दूसरी बार उसी महीनामें नहीं होते इनकी ईदें कोई तो परमार्थ के लिये हैं और कोई देश व्यवहारके अनुसार हैं जो अगले बादशाहोंने इसलिये नियतकी थीं कि उसदिन शरीर भोगादि और ईश्वर का आराधनकरें और प्रजा लोग उनकी मान बड़ाईमें लगेरहें और संसारके लोगोंके लियेभी कुछेक दिन नियत करदिये थे और ऐसीरीतिसे येदिन नियत कियेथे कि जिसमें दान पात्र और भिक्षुकों की आशाभी भलीभांति पूरीहो और अब तक उसी रीति पर आरूढ़ हैं परमार्थकी ईदें वे हैं जो उनके प्राचीनोंने नियतकी थीं और परमार्थके लिये थोड़ेसे दिन हैं अब हम जो बात जिस महीनामें होती है उसको लिखते हैं ॥

(फ़र्वरदीं) यह प्रथम महीना है इसका प्रथम दिन ईद सुल- तानी का पहिला दिन है अर्थात् नौरोज़ इसका अर्थ कोपमें नये सम्बत् का प्रथम दिन है क्योंकि उनको पुराने सालसे कोई प्रयो- जन नहींरहता वहांके विद्वान् कहते हैं कि उस दिन ईश्वरने आस- मान बनाया और तारोंको चलनेकी शक्तिदी और सूर्य्यको उत्पन्न किया और इसके दिनका नाम हुर्मुज़ है इनके निश्चयके अनुसार हुर्मुज ईश्वरका नामहै फ़ारसकेविद्वानोंको निश्चयहै कि आजकेदिन ईश्वरने संसारमें सात्विकधर्मबांटाहै और इसकेसिवाय व्यापारी लोगोंका यह निश्चय है कि आजके दिन जो कोईप्रातःकाल बिना बोले किसीसे थोड़ीसी शकर खायलेय और ज़ीत का तेल अपने शरीरपर लेपनकरलेय तो सालभरकी सम्पूर्णअशुभता उससे दूर रहेगी सत्रहवेंदिन को शरोश कहते हैं शरोश उस देवता का नाम है जो रात्रका दैतहै कहते हैं कि यह नाम जिवरईलका है वहजिन और जादूगरोंका शत्रुहै और यह रातिभरमें तीनबार निकलता है

सो पहिली बारमें तो जिनोंको दूरकरता है और दूसरी बारमें जितनी वस्तु पृथ्वी और आसमान के बीचमें जलके सदृश हैं उनको मीठी करता है और मुर्गा बांग देता है और काम का वेग होता है और तीसरीबारमें प्रातःकालहोताहै उससमय बनस्पति प्रफुल्लित होतीहैं और रोगी नीरोगहोतेहैं और दुखिया सुखीहोते हैं औरउस समय का स्वप्नसत्यहोताहै और फरिस्तोंको आनन्द और परियोंको शोक होताहै उन्नीसवां इसमहीनाका दिन फ़र्वरदींहै यह वह ईदहै जिसका नाम फ़र्वरजानहै यह केवल दिनकेकारण करिकेहै क्योंकि जैसादिन होता है उसीके अनुसार त्योहारहोताहै और जिसमहीना में जो ईदहोतीहै उसकानामउसमहीनाहीं के नामसे प्रसिद्धहोताहै फ़ारस के महीनों के निकट भी यहदिन ईदकाहै और वहांके बादशाहों के निकट तो सम्पूर्ण महीना ईदहीका है इसमहीना के छः भाग कियेहैं उनमें से प्रथम पांचदिन तो बादशाहोंकी ईद और दूसरे पांच दिन राज सम्बन्धीय महीनों की ईद और तीसरे पांच दिन राजभृत्यादि की ईद और चौथे पांचदिन बादशाह के कुटुम्ब और संबन्धियोंकी ईद और छठेपांच दिन प्रजालोगोंकी ईद के लिये नियत किये हैं जो पांचदिन प्रथमके जो बादशाहों की ईदकेहैं उनमें तख़्त पर बैठ डोंड़ी पिटवा देतेहैं कि बादशाह बैठा है जिसमें प्रजा लोग आयके सलाम करैं और दान सन्मान बादशाहों केसे हों पांच दिन दूसरे जो महीने की ईद नियत है उसमें बड़े२लोग राज्यनिवासी बादशाहके दर्शनोंको आते हैं तीसरे पांच दिनमें मंत्रीलोग सभामें आते हैं चौथे पांचदिनमें बादशाह के कुटुम्बके दर्शनोंको आतेहैं पांचवेंभागमें फ़रज़िन्दानखिलाफ़त अर्थात् कुंवरों की मुलाकात होती है और उनको शिरोपाव मिलते हैं छठे पांचदिनमें जब इन सबसे निवृत्तहोने के उपरांत मुख्य२ पुरुषोंसे बैठकर वार्तालाप करते हैं और जो भेंटादि आती है उसको भली भांति देखि कोषमें धराते हैं॥

(उर्दीबिहिश्त) इस महीनाके तीसरे दिनको उर्दीबिहिश्त कहते

हैं यह ईदका दिन है और इसका कारण यह है कि एकतो महीना का नाम है दूसरे ईदका नाम है तीसरे अग्निके देवताका भी नाम उर्दीबिहिश्त है और यही देवता औषधिओं का भी स्वामी है इस महीनाके छब्बीसवें दिनका नाम अस्तादिन है और यह प्रथम खन्हार है खन्हार छह हैं और प्रत्येक खन्हार की संख्या नियत है और प्रकट तो यह आदिर राज है इनमें पुण्य दान और पूजा पाठ मजूसी धर्म्मानुसार होते हैं ॥

(ख़ुर्दाद) इस महीना के छठे दिनको ख़ुर्दाद कहते हैं यहनाम उसदेवताका है जो फल और बनस्पति का स्वामी है और जलको शुद्धकरताहै इसके छब्बीसवें दिनको अश्तारोज़ कहतेहैं और इसी दिन ईश्वर ने वृक्ष और फलादि उत्पन्न किये हैं और इसके तीसरे दिन का नाम अनेरान अथवा अनेरान कानभी कहते हैं जैसे ईद का संयोग आनपड़ा उसी प्रकारसे नामधरागया इसलिये जो दो नाम इकट्ठे आकर पड़े तो इसका नाम ईद रक्खागया इस ईद को शरीर की सफ़ाई और स्नान करते हैं और अस्फहान देश में अब तक होती है ॥

(तीर)इस महीनाके आठवें दिनको ख़ुर्दाद कहतेहैं यहआनंद की ईद नीलोफ़रके नामसे होती है यह नया नाम है इसके तेरहवें दिनको तीर कहते हैं और यह ईदका दिनहै और दो संज्ञाओं का एकही नाम होनेके कारण इसका तीर नाम धरागया क्योंकि ईद का भी नाम तीर और दिनका भी नामतीर है इसीदिन ईरान मुनोछरने अफ़रासिआवको विना जीतेही देदिया तवरिस्तानमें मुनाछर नाम एक पहाड़ है इसके सोलहवें दिनका नाम म्येहररोज़ है और म्येहर सूर्य्यकोभी कहतेहैं और यहपांचवीं खन्हारका प्रथम दिन है इसीदिनईश्वरने दरिन्दे अर्थात् मांसाहारी जीव उत्पन्न कियेपरंतु इतना भेदहै कि ये मांसाहारीपक्षी नहीं किन्तुथलचारी बकरी बैल ऊंटबैलके सदृश हों ॥

(अमर्दादमाह) इस महीनाके सातवें दिनका नाम अमर्दाद है

और ईदभी इसी नामकीहै और इसकानाम मरादादगान कहते हैं ॥
(शहर्यूरमाह) इस महीना के चौथे दिन को शहर्यूर कहते हैं और इसकी ईद का नाम भी शहर्यूर है निदान दिन और ईदका साथ चला जाता है यह पांचवीं खन्हार का प्रथम दिन है इसके सोलहवें दिनको म्येहररोज़ कहते हैं और बीसवें दिन को बहराम और म्येहरजानसग़ीरभी परिद्ध करते हैं ॥
(म्येहरमाह) इसके सोलहवें दिनको म्येहररोज़ कहते हैं जो एक बड़ी ईदका नामहै जिसका नाम म्येहरजान है इसलिये दोनों ईदोंके नामहैं और इसकेसिवाय सूर्य्यका भी नाम है अगले दिनों में बादशाह लोग अपने लड़कों को सुवर्णका क्रट पहराते थे और उसमें सूर्य्यका स्वरूपभी बनाते थे और फरेदूं इसदिन युद्ध करनेके विचारसे निकला और जोहाककी अजयहुई और मलायक ने पृथ्वी पर आकर इस रणभूमिमें विजयी होनेके कारण फरेदूंको धन्यबाद दिया ईश्वर ने इसीदिन बायुको इस संसारमें चलनेकी आज्ञादी और फ़ारसके विद्वानोंकी वाक्यहै कि जो मनुष्य आजके दिन कुछ अनार खावे और गुलाब सूंघे तो ईश्वर उसके आफातको दूर करदेगा और इसके इक्कीसवें दिनको अमररोज़ कहते हैं इसी दिनफरेदूंने जोहाकपै जयपाई और उसको क़ैद कियाहै और जोहाकने अपने बधके लिये फरेदूंसे कहा परन्तु उसने उसको देना बन्द पहाड़में क़ैद किया ॥
(आमनमाह) आमन माह ईद का नाम है परंतु ईद और महीना दोनोका नाम होनेके कारण इसका नाम अमाकान है और इस महीनाके प्रथम दिनका नाम अस्तारोज़ कहते हैं और उसका नाम फ़र्वरजान है फ़ारस वाले मनुष्य इसदिन को भोजन फरेदूंके नाम बनवाते हैं और कोठोंपर पानी इस निश्चयके कारण धरवाते हैं कि आजके दिन उनके पितृ महाकष्टसे निकलके इस पानीकी ठौर आते हैं तो उनको शक्ति मिलती है और अग्नि में सुगंध की बस्तु छोड़ते हैं जिस्में पितृलोग प्रसन्नहों इसबात पै सम्पूर्ण फ़ारस

वालोंकी एकमति नहींहै क्योंकि कुछलोग तो कहते हैं कि ये पांच दिन आमन महीनाके अन्तमें हैं और कुछ कहते हैं कि ये पांचदिन आदिर महीनाके हैं परन्तु हवन करना उनके मतानुसार सब प्रकार ठीक है ॥

(आदिरमाह) इसके प्रथम दिनको हुर्मुज़ कहतेहैं इसमें गदहा की सवारी है और यह वह रीति है कि एक पुरुषको सज नामक मसखरा हुआ था और इसके समाचार ये हैं कि आजके दिन वा गदहेपर सवार होकर पुराने गूदड़े पहर गरम भोजन कर शरीह में गरम२ वस्तुओंका लेपनकर हाथमें पंखा लिये हुये निकलकर जिस्में लोगोंपर यह बिदित हो कि इसको बड़ी गर्मी लगतीइस दशामें सबमनुष्य हँस२के कोई तो पानी उसके ऊपर फेंकते और कोई बर्फ फेंकके मारते इस कारण से उसको लाभ होता था निदान इसीप्रकार आगे२तो वह टटोलिया और पीछे२ उसके संसार तारी वजातेहुये दौड़ते थे अन्तको जब बादशाहके सन्मुख होकर निकलता तो वहभी उसीप्रकार उसपे बर्फ फेंकता परन्तु उस तक पहुंचती नहीं थी और उस मसखराके पास लाल माटी घोरी हुई रहती थी उसको उनपे छिड़का करता था जो उसको कुछदेतेनहीं और छेड़ते थे कहते हैं कि इस दिन एकमोती नदीसे ऐसा निकला था जो किसीने आगे न देखा था यह वही दिनहै जिसदिन ईश्वर ने उचित और अनुचित में विवेककिया और यह भी कहतेहैं कि जो कोई आजदिन प्रातःकाल बिहीखाकर नींब सूंघे तो उसको सम्पूर्ण वर्षभर भलाईही मिलै इस महीनेके नवेंदिन को आदिर रोज़की ईद होतीहै जिसको खुर्शैद कहते हैं इसदिन वहांके लोग अग्निका स्पर्श करते हैं आदिर फरिश्ते का नाम है जो अग्नि का देवता है जर्दश्त ने आज्ञा दी थी कि आज के दिन सम्पूर्ण लोग अग्निकुण्ड के दर्शन करें और बलिप्रदान का उद्योग करें और आज बादशाह सभासदों के साथ राजप्रबन्धके विषय में विचार करते रहे हैं ॥

(दिपमाह) इसका नाम खुर्शेदमाह भी है इसका प्रथम दिन खुर्शेद रोज़है यह ईश्वरका दिनहै आजके दिन बादशाह तख़्त से उतर पड़ा करता था और श्वेतवस्त्र धारणकरके साधारण बिछौना पर बैठ प्रजालोगों के साथ प्रसन्नचित्त होकर प्रत्येकसे मित्रवार्त्ता करता और उत्तम मध्यम नीच और किसानों से भी मिलता और सबके साथ बैठकर भोजन करता और कहता कि मैंभी तुम्हारे ही समान हूं और बिना तुम्हारी प्रसन्नता के बादशाह नहीं होसक्ता क्योंकि यह तुम्हारे हाथ में है॥ राज्य का प्रबन्ध बादशाह को सौंपागया है और राजा और प्रजामें कोई बड़ा छोटा नहींहै किंतु तुम और मैं दोनों दो भाइयों के समान हैं इसलिये एक को दूसरे से मान करना उचित हैही नहीं इसके प्रथम दिनको कन्हार और बल और खुर्शेदरोज़ कहते हैं इसदिन ईश्वर ने आसमानकीरचना करीहै इस महीना के चौदहवें दिन का नाम गोशरोज़ और शेरसो कहते हैं इसदिन फ़ारस के निवासी मांस और दूध भोजन करते हैं मांस और तरकारी को मिला के बनाते हैं और शैतानोंके लिये धूनीदेते हैं आजकी धूनीसे प्रेतादि की बाधा मिटतीहै इस महीना के पन्द्रहवें दिन को दिप्म्येहर कहते हैं यह ईद का दिन है और इसदिन आटा अथवा माटी से एक मनुष्यका स्वरूप बनातेहैं और उसको द्वारपर धरते हैं और फिर उसको जलाते हैं फ़ारस के विद्वानों को यह निश्चय है कि आजके दिन जो मनुष्य किसीवस्तुके बिनाखाये से व खाकर नरगिस का फूल सूंघे तो उसका वह वर्ष अत्यन्त आनन्द से बीतेगा और जो कोई आज रात्री को भोजन करै तो वह दुर्भिक्ष और शोक से बचैगा॥ इस महीना के सत्रहवें दिनको म्येहर रोज़ कहते हैं यहदिन ईदका चकीलहै और यह भी कहते हैं कि इसीदिन फ़ारसने तुर्क पर चढ़ाईकरी थी और आजकी चढ़ाई के लिये सेना भी आजहीके दिन चलीथी कहतेहैं कि इसी-दिन फरेदूं बैलपर सवार हुआथा और इसीदिन एक चांदी की गौ प्रकट हुईथी उसके दोनों सींग सोने के थे और गोशाला चांदी का

जो कभी प्रकट और कभी छिपताथा और जिसनेउसको देखा उस-
का न्योतामाना और उनको सज्जनोंके सिवाय किसीनेनहीं देखा॥
(बहनमाह)इस महीना का दूसरा दिन वहवनरोज़है और वह
ईदका दिनहै इसका नाम वहमंचाहै और दोनोंका एकनामहोनेके
सिवाय यहनाम एक देवताका भी है जो पशुओं की रक्षा करता है
फ़ारसी लोग इसदिन नानाप्रकार के भोजन बनाते हैं और शीर
सफ़ेद वहमन सफ़ेद के साथ घिसकर पीते हैं इसके पीने से सर-
स्वती प्रबल होतीहै आज का दिन रोगियों को औषध पीने और
तैलादि खींचने और धूनीदेनेके लिये अत्युत्तमहै कहतेहैं कि इसको
जामासप और ज़ेरगुश्तांसप किया करते थे जिसकाफल विदित है
इसमहीनाके पांचवें दिनका नामइस्फन्दार और वोसोदा है दशवें
दिनका ईदआमन नामहै और इसके सौनामहैं और कारण सौनाम
होनेका यहहै कि उस समय से सालके अन्ततक सौवाकी हैं और
ज़िमिस्तानजन्मसे इसीदिन निकलताहै और मनुष्य अग्नि जलाके
जाड़ेको दूरकरतेहैं पक्षीभूनकरखाते औरमदिरापानकर विषयभोग-
करतेहैं इस महीना का तीसरादिन अनेरानहै जिसको फ़ारसवाले
आवज़ेरगान कहते हैं इसनाम के अर्थ बर्षा करनेवाले काहै और
अस्फहान में यह ईद अबतक मानी जाती है और कारण इसका
यहहै कि मेघ घिरके जमजाताहै बादशाह फ़ीरोज़के दिनोंमें महा-
दुर्भिक्ष पड़ा सो संसार में विदितहै उस समय बादशाह ने अपना
कोष खोलदिया और प्रजालोगों को बांटा और पृथ्वी का पोता
अर्थात् लगान छोड़दिया जैसे माता पुत्र की रक्षाकरते हैं उसीप्र-
कार प्रजालोगोंकी रक्षाकरी किसीको अन्नबिना नहीं मरनेदिया
और फ़ीरोज़ने ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हेईश्वर तू मेरेदेशको दुर्भि-
क्षके महारोगसे नीरोग करदे जिसमें मेरे प्रजालोग इसके भय से
निर्भयरहें कभी मेरीप्रजा को यह मृत्युरूपीदुःख फेर दृष्टि न आवे
यहकह आप अग्निकुण्डमें जाय अग्निको इसप्रकार लिपटनेलगा
जैसे कोई अपने परम मित्रको छातीलगावे इसमें अग्निका प्रज्व-

लितलूक उसकी दाढ़ीतक पहुंचा परन्तु शीतल होगया कुछअग्निने अपना प्रभाव न किया तब कहा कि हे ईश्वर जो यह अवर्षण मेरे दुष्टकर्म्म करकेहै तो तू मुझपर प्रकटकरदे जिसमें मैं उसपापको न करूं अथवाराज्यका परित्याग करूं और जोकिसी दूसरेके कर्मोंका फलहै तो तू उसका नाश करदे और अपने जीवों को अपनी दया के मेघ से सींच निदान यह प्रार्थना कर ज्योंहीं अग्निकुण्ड में से निकला त्योंहीं एक बादलका टुकड़ा दृष्टिआया उससे इतनाजल वर्षा कि कभी आगे नहीं बर्षाथा तबफ़ीरोज़को निश्चयहुआ किईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और नदी ताल जलसे परिपूर्ण होगये और सोता ठौर २ बहनेलगे और संसारी जलसे संतुष्ट हुये निदान उस दिनमें यह रीतिप्रचलितहोगई और अबतक वह रीतिमानीजातीहै॥

(माह इस्फन्दार) इसके पांचवें दिनका नाम इस्फन्दारन्दईद है और इसका अर्थ बुद्धि और परम चतुरता के हैं और इस्फन्दारन्द उस फरिश्ते का नामहै जो पृथ्वी का देवता है और पतिव्रता स्त्री को भी कहते हैं इस ईद को बहुधा स्त्री वाले पुरुष मानते हैं और दृढ़करके सपतिका स्त्रियोंका त्योहारहै और यहईद इस्फहान और अंजवल के शहरों में उसी प्रकार मानीजाती है इस ईद का नाम निज़दुकेरां है इसदिन जादूगर लोग मंत्रादि जगाते हैं और यंत्र लिखते हैं प्रातःकाल से भानूदय तक इसकाम में रहते हैं उनमें से तीनयंत्र तो दीवानख़ानेके ऊपर लगाते हैं और उस दीवार को अपने द्वारके आगे रखते हैं और इसमहीनेके ग्यारहवें दिन मिथुन राशि होतीहै इसीदिन ईश्वरने मेवोंकी रचना करीहै और इसमहीनाके उन्नीसवें दिन फर्वर्दीन है इसदिनको अन्हार कहते हैं और बहते पानी में गुलाब छिड़कते हैं और इसहर्ष के पलटेमें धन्यबाद देतेहैं और यह धर्म्म उनलोगों में अभी मानाजाताहै॥

वाक्य॥ अरब और रूम और फारस में इन तीसों दिन के बारह २ महीने हैं और उन बारहों महीनों में चारऋतु हैं इनलोगोंकी बर्षामें भेदहै क्योंकि अरबदेशीय अपने महीना को दुइजसे

गिनते हैं इसरीति से वर्ष के तीनसौ चौव्वन दिन होते हैं और रू-
मियों ने अपने महीना की गिन्ती सूर्य्य के चालपर नियत की है
इसके साल के तीनसौ पांच दिन होते हैं क्योंकि इतनी अवधिमें
सूर्य्य आकाश मण्डल पर फिरआता है फ़ारसवालोंने अपनेमहीनों
को तीसदिन का नियत कियाहै इस हिसाब से इनका सालतीन
सौ साठ दिनका होताहै और अरब के हिसाब में इसको क़मरी
अर्थात् चन्द्रवत् कहते हैं और रूमके हिसाब से शम्सी अर्थात्
सूर्य्यवत् कहते हैं अरब और रूम के हिसाबसे एकसौ वर्ष में तीन
वर्षका अन्तर पड़ताहै जैसा कि ईश्वर ने क़ुरानमें कहाहै कि तीन
सौवर्ष रूमके हिसाब के अनुसार और अरब की रीति से नव वर्ष
का अन्तर पड़ताहै अरबके वर्षका आरम्भ मुहर्रम से होताहै और
रूमीलोगों के वर्षका आरम्भ उसदिन मे होता है जब कि सूर्य्य
मेषकी संक्रान्तिका होता है॥

फ़स्ल—वर्ष की चारऋतों के विषय में॥

प्रकटहो कि रासमण्डल की रेखा दो विन्दु पर जो एक दूसरे
के सन्मुख है काटती है उसमें अर्द्ध उत्तरीय कोनकते एतदालरबी
अर्थात् उत्तरायण कहते हैं और दूसरे बिन्दुका यह वृत्तान्त है कि
जबउससे दक्षिणकी ओर सूर्य्यबढ़ा तो उसकोएतदालख़रीफी अर्थात्
दक्षिणायन कहते हैं और अर्द्ध उत्तरीय वहहै कि जबसूर्य्यमध्यरेखा
से उत्तरही में रहै उसको नुक़ता इनक़िलावसैफी कहते अर्थात्
गर्मी की ऋतु कहते हैं और मुनसफ़निस्फ़ वह है जब सूर्य्यम-
ध्यरेखा से दक्षिण की ओर हटा रहै यह जाड़े की ऋतु से प्रयो-
जन है इसका नाम इन क़िलाव शनबीहै तो इस के चारबिन्दु
पै बराबर चार भाग होतेहैं परन्तु रबी जो दो बिन्दु अर्थात् एत-
दाल रबी और इन क़िलावसैफी के बीच में और यह समय उसी
समय तक पायाजाता है कि जबतक सूर्य्य धन राशि के बराबरहो
इस अन्तर को ज़मानारबी कहते हैं और रबी दो बिन्दु इन क़िला
बख़रीफी के बीच को कहते हैं और इस को ज़माना सैफ़ अर्थात्

गर्मी की ऋतु कहते हैं किसहेतु से कि जबतक सूर्य्य इस क़ौस के सनमुख रहता है उस समय तक गर्मीकी ऋतु रहती है और रबी वहहै जो दो नुक़ता एतदाल ख़रीफ़ी और इनक़िलाबशनबी है यह समय ख़रीफ़में पायाजाताहै औरबसेपायज़ कहते हैं और रबी जो दोनुक़ते इनक़िलाब शनबी और एतदाल रबीके बीचमेंहै वह समय है जब जाड़ाहोनेलगता है यहभी ईश्वरकी एक दया है कि उसने अपनी सृष्टि के लिये प्रत्येक ऋतु का स्वभाव एक दूसरी के बिप्रीति बनाया जिसमें चारों ऋतुजीवोंके शरीरमें क्रम २ से प्रवेस करें जब गर्मीसे जाड़ाआता है जो एकही साथ भरपूरा जाड़ाहोने लगै तो बड़ाउल्टापल्ट होनेलगे देखोऋतु बायु से पलटने लगती हैं रबीका समय उसवक्तहोताहै कि जब सूर्य्यमेष राशिका प्रथम अंश पर होताहै उससमय दिनराति साधारण अर्थात् न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दीबायु भली बसन्त ऋतुकी बर्फ़ पिघलतीहै नदी बहतीहै हरेरी लहलहातीहै फूलखिलतेहैं जीवरोमझोरतेहैं इसकारण संसार आनन्दितहोताहै और पृथ्वी खरफूससे स्वच्छदृष्ट आतीहै (सैफ़ अर्थात् गर्मी) उससमयहोतीहै जबसूर्य्य प्रथम कर्क रासिका होताहै उससमयदिन अत्यन्तबड़ा और रातअत्यंतही छोटी होतीहै तिसउपरांतरात बढ़नेलगतीहै और दिनछोटाहोनेलगताहै उष्णता अधिकहोतीहै बनस्पति औरजीवपुष्ट होतेहैंफल उत्पन्नहोते हैं परन्तु उनके दाने सूखजाते हैं बहुधा जीवधारीजहांतहांबिकलदृष्टिआते हैं मक्खी अधिक होती हैं सन्सारियोंका बिषय भोग अच्छा होताहै नावें चलने लगती हैं मनुष्योंको जीविका बहुत होती है और दूध अधिकहोताहै पशुपक्षियोंके लिये चारा अधिक दृष्टि आता है और पृथ्वीअलंकृत होजातीहै (खरीफ़) इस समय सूर्य्य तुला रासि का होताहैइससमयदिनराति बराबरहोतीहैं और रात्रीइसीदिनसेबढ़ने लगतीहै यहसमय वृक्ष और बनस्पति और फूलोंका मानोंचिह्नहै औरइससमय वृक्षोंमें पत्ते निकलतेहैं इससमयमें उत्तरी बायुचलती है पानीकम होताहै नदीनाला सूखजाते हैं बनस्पति और वृक्षोंके

फलफूल मुर्झायजातेहैं मनुष्य अन्न और मेवा इकट्ठा करतेहैं पृथ्वी मक्खी और उखमजी जीव पक्ष्यादि से साफदृष्टि आतीहैं ये सब जायके ऐसेठौर छिपरहतेहैं जहां न अधिक सरदी और न अधिक गरमीहो जाड़ेका डरसबको लगताहै लोगजाड़े के लिये सामान इकट्ठा कररखतेहैं मोटे और जवानोंकी सूरत वृद्धोंकीसी होजाती है (शितां) इससमय प्रथम कर्करासिमें सूर्य्य आताहै इससमय रात्री अत्यन्त दीर्घहोती है तिस उपरान्त रात्री घटने लगती है और दिन बढ़नेलगताहै और जाड़ा अधिकहोजाताहै वृक्षोंमें पत्ते निकलने लगतेहैं पृथ्वीके जीव अपने २ घोसलोंमें जा छिपतेहैं ओस और अँधियारा अधिकहोताहै आईनामें मुर्चालगजाता है अच्छे२ पशूमरजातेहैं और पानीमें सर्दीहोतीहै यहसमय ऋतुका पूराबल होताहै जैसे गर्मीकी ऋतुमें अतिकठिन गर्मीहोतीहै और संसार वृद्ध स्त्रीकेसमान होताहै जैसे किसी स्त्रीकी आयुर्बल का अन्त हो और यही दशा उससमय तक रहती है कि जबतक मीनके सूर्य्यका अन्त होता है तिस उपरान्त जाड़े की ऋतु का अन्तहोता है और बसन्तऋतु आतीहै और यहीदशा सदैवबनीरहतीहै ॥

इति चारोंऋतुओं का वृत्तान्त समाप्तहुआ ॥

फसल चन्द्र अजाय बात अर्थात् अपूर्व बातोंके विषय में ॥

कोई २ बिद्वान् कहताहै कि प्रत्येक हज़ार बर्ष उपरान्त ईश्वर एक पैगम्बर अर्थात् धर्म्म उपदेशकउत्पन्न करताहै वह संसार में आपसत्य धर्म्म उपदेश करता है परन्तु इस अवधिके आदि अन्तके विषयमें कुछनहीं कहा परन्तु इतनाहीं कहाहै कि हज़ार बर्षमेंउत्पन्नहोताहै इससे प्रकट होताहै कि हज़ार बर्षमें दो पैगम्बर अर्थात् एक आदि और एक अन्तमें प्रकटहों इसलिये प्रथम हज़ार बर्ष में हज़रत आदम मनुष्योंकी जड़ उत्पन्नहुये तिस उपरान्त दूसरे हज़ार बर्षमें हज़रतनूह उत्पन्नहुये और तीसरे हज़ार बर्षमें हज़रत ख़लीलुल्लाह चौथीबार हज़रत मूसा और पांचवीं बार हज़रतसुले-

मान छठवींबार हज़रत ईसामसी और सातवींबार जेवअल्लाह महम्मद मुस्तफ़ा उत्पन्नहुये जिसके उपरान्त कोई और नबीनहींहुआ और सातही हज़ारबर्षसृष्टिकोहुये अधासके पोतेसादीकी कहावतहै कि संसारको छःहज़ारएकसौ बर्षबीति चुके हैं बिद्वानोंने कहाहै कि अब हज़रत महम्मद मुस्तफ़ाके उपरान्त एकसौ बर्ष उपरान्त एक महा विद्वान् उत्पन्न होताहै जो धर्म्मका झगडा उड़ाताहै तोपहली सदीमें ईश्वर ने अब्दुल अजीजकेबेटे अमर को प्रकट किया और दूसरी सदीमें ईश्वर ने औरेसउलशाफ़ीकेबेटा महम्मदको उत्पन्न किया और तीसरी सदीमें अबूउल अधास अहमशरीह को उत्पन्न किया चौथीसदी में तबाबुलवाक़लानीके बेटा अबूबकरको उत्पन्न और पांचवीं सदीमें अबूउल महम्मद गिज़ालीकोपैदा किया छठी सदीमें अमरुल राज़ीकेबेटा अबू अब्दुल्ला उत्पन्नहुये मालिकका बेटा इन्स कहताहै कि ईश्वरने जिसको चालीस बर्षकी आयुर्बलदी तो ईश्वरने लालच किया और उसको नाना प्रकारके कष्टजैसे काम क्रोध लोभादि जो शैतानीकामहैं उनमें फांसा और जिस किसीको पचास बर्षकी उमरदी वह मुसल्मानोंमें पवित्र हुआ और जिसको साठबर्ष की उमर दी तो मानों ईश्वर ने उसको तोबह अर्थात् धिक्कारको माना (धिक्कारसे प्रयोजन यहहै कि जब मनुष्यनेकोई पापकिया और उसने जाना कि मैंने पापकिया उससमयवहईश्वर के सन्मुख लज्जितहोके कहताहै कि हे ईश्वरमैं पापीहूं परन्तु आगे फिर ऐसा कर्म्म न करूंगा)और जिसकी आयुर्बल सत्तरबर्षकीहुई वह स्वर्ग और पृथ्वीका प्याराहै और जिसको ईश्वरने अस्सीबर्ष की उमरदी उसके पाप काग़ज़से छेकदिये निर्दोष किया और जिसकी उमर नब्बेबर्षकीहुई तो उसके संसारके कियेहुये पापोंको क्षमाकिया औरस्वर्गमें अपनेबंशवालोंके पापक्षमाकराताहै बिद्वानों का निश्चयहै कि समयके प्रभावसे संसार में अपूर्व पदार्थदृष्टिआते हैं कि पशुओंसे नानाप्रकारके पशु उत्पन्न होते हैं और बनस्पतिमें नानाप्रकारके फूल औपत्ती दृष्टिआती हैं जिनको देखि आश्चर्य्य

होताहै और आबादी उजड़ जाती है औ उजाड़ बस जातीहै सूखेमें नदी नदी में जंगल और पहाड़ दृष्टि आते हैं इस फसल का निम्न लिखित वार्त्ता पर अन्त किये देते हैं॥

(इतिहास)कहते हैं कि बनी इसराईलके समयमें एकयुवातपस्वी को देखा कि हज़रत खिज़िर अलेहुस्सलाम उसके पास आते थे यह समाचार उड़ते २ बादशाह के पास पहुंचे बादशाहने उसयुवा तपस्वी को बुलवाय के कहा कि जब तेरे पास हजरत आवें तत्-काल बादशाही सभा में ला नहीं तो तेरा बधकिया जायगा वह युवा यह कहके कि अच्छा लेआऊंगा चलाआया और इस सन्देह में था कि जब हज़रत ख़िज़िर आये तो उस जवान ने उनकेसामने सम्पूर्ण वृत्तांत आद्योपांत कहा तब हज़रत खिजिर ने कहा कि अच्छा चलो निदान दोनों बादशाह की सभा में पहुंचे तो बादशाह ने पूछा कि खिज़िर तुम्हींहो खिज़िर ने उत्तर दिया हां मेंहींहूंतब बादशाह ने कहा अच्छा जो कुछ अपूर्व आश्चर्य्य की वस्तु तुमने देखीहो सो मेरे सन्मुख बर्णन करो इसपर हज़रत खिज़िर नेकहा कि मैंनेतो बहुत से अपूर्व पदार्थ देखे हैं परन्तु जो इस समयवर्त्त-मानहै उसको कहताहूं वह यहहै कि अभी थोड़ी देर पहिले मैंएक शहरमें पहुंचा कि जहां अमित मनुष्य और बड़े २ ऊंचे मकान बने हुये थे वहां मैंने एक पुरुष से पूंछा कि यहबस्ती कितने दिनसेहुई है उसने उत्तर दिया कि यह बस्ती प्राचीन है मुझे तो क्या मेरे बाप दादा कोभी इसकी आदि नहीं मालूमहै जब पांचसौ बर्ष उप-रांत फिर उस शहर में आयातो उसको उजाड़पाया यहांतक एक दहाई बस्तीभी न दृष्टिआई उसठौर एकमनुष्यको घासखोदतेदेखा उससे मैंने पूछा कि यह शहर कब उजाड़ हुआ उसने उत्तर दिया कि मैंने तो सदैव इसको ऐसाही उजाड़ देखा तब फिर मैंने पूछा कि क्या यह शहर कभी आबाद न था उसने उत्तर दिया कि न तो यहां की आबादी का हाल मैंने अपनी आंखोंसे देखा और न अपने बाप दादेसे सुना फिर जो पांचसौ वर्ष उपरांत उस ओरको

आय निकला तो उस पृथ्वी में जलहीजल दृष्टिआता है वहांथोड़े से जहाज़ मिले उनसे जो पूछा कि यह पृथ्वी समुद्र में कबबहगई थी तब उन्होंने उत्तर दिया कि बड़े खेद की बात है कि तुमसमुद्र को पूछतेहो अरे यह तो सदासे जल भूमिही है यहां हमने पृथ्वी का हाल तो अपने बाप दादासे भी नहीं सुना जब फिर पांचसौ बर्षके उपरांत उस ओरको गया तो देखा कि समुद्र सूख के पृथ्वी का धरातल दृष्टिआता है वहां जो मनुष्य घासइकट्ठी करतेथेउनसे पूछा कि यह पृथ्वी पानी से कैसे निकली उन्होंने उत्तर दिया कि यहतो सदासे पृथ्वीही है तब फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या यहां कोई नदी अथवा समुद्र न था उन्हों ने मुझे उत्तर दिया कि न तो हमने अपनीआंखोंसे देखा और न कानोंससुनाकि यहांकोईसमुद्र था निदान इस के भी पांचसौबर्ष उपरांत जब मेराजानाउस ओर कोहुआ तो देखा कि एक अतिही दीर्घविस्तारिक शहरबसाहुआ है फिर वहांके लोगों से उस शहर की आदि के समाचार पूछे तो उन्हों ने भी यही उत्तर दिया कि यह तो सदा से ऐसाही बसा हुआ है हमको तो मालूम नहीं कि कब इसकी नीव दीगई है यह सुनके बादशाह कहनेलगा हे हज़रत मुझे आप के साथ चलनेकी अभिलाषा है हज़रत ख़िज़िर ने उत्तरदिया कि मुझसे तो यह नहीं होसक्ता परन्तु हां जो तुम इस युवा पुरुष के साथरहोतो निश्चय है कि ईश्वर तुमको सीधीराह दिखावे विदित हो कि जो कुछ आसमान के नीचे अपूर्व पदार्थ नदी,पृथ्वी और बड़े २ पहाड़, नहरें धातुओं के गुण और वृक्षों के स्वभाव इन सम्पूर्ण बस्तुओंके जानने में बुद्धिमानों की तीक्ष्ण बुद्धि भ्रमित है परन्तु जिन वस्तुओं के जानने में बुद्धिमानों को भ्रम होता है उनको विद्वानों ने जितना अपनी बुद्धि और चतुराई से जानाहै वह ईश्वर की कृतिके सन्मुख इतनाभी नहींहै जैसे नदीके सन्मुख एकबूंद अथवा पृथ्वीकेसन्मुख एककण मैं पूर्वही कहचुकाहूं कि इसपुस्तकमें दोभागहैं सो प्रथम भाग तो बीतगया अब दूसरे भाग का वर्णन कियाजाता है॥

अथ दूसराभाग॥

सिफ़िलियात अर्थात् भूमि सम्बन्धीपदार्थों के विषय में ॥

विदित हो कि ये वे वस्तु हैं जो तत्त्वों के स्वभाव क्रम और मेल से आसमान के नीचे वर्त्तमान हैं विद्वान् कहते हैं कि तत्त्व बनाये भये हैं और तत्त्व सम्बन्धीसे प्रयोजन शरीर से और शरीर माताकी ठौरहैं और धातु,बनस्पति और जीवधारीको उनकीसन्तान कहतेहैं अर्थात् उन्हींसेबने हैं और ये चारहैं अर्थात् पृथ्वी,अप,तेज, बायु,अग्निअत्यन्तऊष्महै और चन्द्रमाके मण्डलके नीचे और बायु के ऊपर है बायु शीत ऊष्म आगके नीचे और पानी के ऊपर है पानीसरद तरपृथ्वी के ऊपर और हवासे नीचेहै पृथ्वी सरदखुश्क और इसकी नियत ठौर मध्यभूमि है इन चारों तत्त्वां में से प्रत्येक तत्त्व एक दशामें तो उसके समानहै और दूसरी दशामें उसके बिपरीति और एक स्वरूपहोनेके कारण बायुमें मिलजाताहै तोदोनों एक ठौर रहते हैं और जब स्वभावमें एक दूसरे के बिपरीत हुआ तो दोनोंअलगहैं प्रत्येक तत्त्व एक२केन्द्र परहै यह वहां के सिवाय और कहींनहीं रहता परंतु हां जब उसके मुख्यकेन्द्र पर रहने में कोई रोकहै और उस समयवह केन्द्रकी रोकपृथ्वीपर होतो भारी अथवा गाढ़ाहोगा और जोवह परिधिकी ओरहोतो हलका अथवा पतलाहोगा बिदितहो कि ईश्वर ने अपनी निर्दोष बुद्धि और चतुराई से तत्त्वों की अपूर्ब्ब और अद्भुत क्रमसे रचना कीहै किजो तत्त्व हलकाहै वह तो आसमानके निकट है और जो भारीहै वह आसमान से दूरहै जैसेपृथ्वी कि इसका निवास आसमानके बीच नियत हुआ और जो तत्त्व इसकी अपेक्षा हलकाहै वह इसके ऊपर है जैसे पानी कि जिसका निवास बायुके नीचेहै और पानी ऊपर होने का यह कारण है कि जब माटी पानी पर छोड़ो तो माटी तोनीचे चलीजाती है और पानीऊपर रहजाताहै क्योंकि माटीकी

अपेक्षा पानी हलकाहै यही कारणहै कि वह आसमानके निकट है तीसरा तत्त्व वायु जो पानीकी अपेक्षा हलका और अग्निसेभारी है तो इसका निवास पानीके ऊपर है चौथेअग्निजो अत्यन्त हलकी है इसीसे उसका निवास वायुके ऊपर और चन्द्र मण्डलकेनीचेहै॥

फसल इनक़िलाबअनासिर अर्थात् तत्त्वों के मेल के विषयमें॥

कोई तत्त्व किसी तत्त्वके साथ मिल जाताहै जैसे वायु पानी के साथ मिलजाती है और यह बहुधा देखागया है कि जो बरतन कांचका बना हो उस में बहुधा पानीके कण इकट्ठेहोजाते हैं जो उसमें कोई वस्तु जमी हुई डालीजावे तो उसके चारोंओर पानी के कण दृष्टिआतेहैं उससे यह मालूम होताहै कि यह बरतनका पानी नहीं है वरन जो वायु उसके चारोंओर है वही सरदी पाकर जमगई है और पानीभी सूर्य और अग्निकी गर्मी पाके भाफ़होके वायु का स्वरूप होजाताहै और वायु आगके साथ मिलजाती है जैसे किसी ठौर लूककी दशा देखी गईहै औ पानीमाटी से बदलजाता है जैसे बहुधा देखा जाताहै कि कोई २ पानी माटी और पत्थर होजाता है और माटीभी पानीके साथबदल जातीहै जैसेरसायनवाले इस काम को करते हैं कि उसके कणों को ऐसा महीन करते हैं कि उसमें माटी का अंशनहीं रहता इसलिये इन तत्त्वोंमेंसे जो पतलेहैं वे तो बहुत शीघ्र बदलते हैं और जो गाढ़े हैं वेदेर में मिलते हैं क्योंकि जब हम दो प्रकार का जल जिनमें एक भारी और दूसरा हलका हो इकट्ठाकरें उनको सरद वायुमें धरदें तोउनमें जो पानीकि सरद है वहजल्दी जमजायगा और जो इसीप्रकार इन दोनों पानीको आग अथवा धूपमें धरें तो यहपानी जो अधिक सरदहै जल्दीगर्महोगा॥

नज़र दूसरी अग्नि गोलाकार के विषय में॥

विद्वानोंके निकट अग्निएकस्वरूपहै इसका स्वभाव गरम खुश्क और अपने स्वभावानुसार चलती है क्योंकि इसका ठौर आसमान के नीचे नियत है और यह अग्नि निःकेवल है अर्थात् किसी दूसरे तत्त्व से नहीं मिली है और उसमें कोई रंग नहीं है और

कहते हैं कि केवल अग्निको कोई देख नहीं सक्ता क्योंकि हम देख-
तेहैं कि जब शमा अर्थात् बत्ती जलती है तो उसका लूक बाती मे
अलग होता है और इसमें सन्देह नहीं है कि अग्निकी गरमी
बाती के पास अधिक है और यह भी एक परीक्षा है कि जबलो-
हार भट्ठीको देरतक फूंकते हैं तोवायु उसकेपासकी इतनी गरम
होती है कि जोकोई वस्तु उसके निकट धरो तो जलजाती है इस
से मालूम होता है कि अग्निकी शक्ति केवल उसके मुख्य अथवा
यथार्थ में होती है परन्तु वह अग्नि जो तत्त्वोंके ऊपर है अत्यन्त
बलवान् है इसीकारण से वह दृष्टि नहीं आती और ईश्वर की बुद्धि
मानी तो देखना चाहिये कि उसने अग्निको चन्द्रमा के नीचे क्यों
कर बनायाहै जब कि उसकी उष्मता से गाढ़ी भाफ़ जलती है और
मैली भाफ़ स्वच्छहोतीहै जिसमें चन्द्रमाके नीचे संसारमें जोमैली
वस्तुहैं वह स्वच्छहोजायँ और ईश्वरने उसकी एक तवक़ाअर्थात्
एक खंड बनाया (तवक़ाकेमुख्य अर्थतो परतकेहैं) जिस में उष्मता
अति कराल है और जो कुछ पदार्थ धुंआं और भाफ़ बनजाते हैं
उनको भस्म करताहै और ईश्वरने इसतत्त्वनिःकेवलको बिनारंग
बनाया क्योंकि जो उसमें प्रकाश और रंगऐसा होता जैसे कि
हमारी अग्निमेंहै तो निस्सन्देह उसका रंग और बास आसमान
के देखने में हमारी आंखोंका अवरोधक होता अर्थात् आसमान
दृष्टि नआता और दूसरी बुद्धिमानी ईश्वरकी यहहै उसको (अग्नि
ज़िमहरीर अर्थात् अति कराल शीत के बीचमें छिपाया है जिस में
अग्नितो शीतको और शीत अग्निकी उष्मताको दोनों एक दूसरेको
संसारकी ओर आनेसे रोकें (ज़िमहरीर जो शब्दऊपर लिखआये
हैं उसका अर्थ अतिशीतका है वह शीत कि जिस में अन्तके दिन
ईश्वर काफ़िर अर्थात् नास्तिकों की यातना करेगा हिन्दुओं के
मतानुसार इसको हिवार कहना उचित है यह केवल उसके गुणसे
पायाजाताहै परन्तु हिन्दुओंके मतानुसार हिवारकास्थान अन्य है
यह नहीं है) नहीं दुष्टतो मरते परन्तु उनके साथजीव और बन

स्पतिकाभी नाशहोता और जो अग्नि आहिन और पत्थरके संयोग से प्रकट होतीहै सो भी एक ईश्वर की मायाहै और एक अद्भुत मायाहै कि अफार और मर्ख (दोनोंएक प्रकारके वृक्ष हैं) सेअग्नि प्रकट होती है और यह अग्निके विरुद्ध है क्योंकि इसमें तोतरी अधिक होती है जिसमें से अग्नि प्रकट होती है नहीं मालूम कि दोनोंएक दूसरेके विरुद्ध एकही वस्तुसे उत्पन्न होती हैं मर्ख एक प्रकारका वृक्ष है जिस से अरब देशीय अग्नि निकालते हैं और अफ़ार के कई अर्थ हैं एकतो पृथ्वी के समान दूसरे वृक्ष तीसरे पांचवें छोहारे आदि के एकतो ईश्वर की अद्भुतमाया यहहै कि अग्नि से प्रकाश भी होता है और उसमें उष्मता भी है ये दोनों अर्थात् प्रकाश और उष्मता केवल अग्नि के आधीन हैं दूसरी अद्भुत बात यह है कि लोहे और अग्नि को राख कर डालती है निदान मनुष्य की बुद्धि और चतुराई ईश्वरकी बुद्धि और चतुराई के आगे लज्जित होरहती हैं इसमें जालनाकि सर्व नाम वाचक क्रिया अग्नि की ओर है जालना वह अग्नि है जो बनी इसराईल के लिये प्रकट हुईथी इसमें उनके पखलास का अलंकृत वर्णन भरा है उस की परीक्षा ले तो बनी इसराईल बलिप्रदान की सम्पूर्ण रीतों के उपरांत बलि पशु को एकघेरे में छोड़ देते थे वहां पैगम्बर सल्लिल्लाहोसल्लम आके आशीर्वाद देते तो लोग अपने घरों के द्वारपर होते थे उस समय पैगम्बर के आशीर्वाद से श्वेत रंग की अग्नि आके बलिप्रदान पै प्रकट हो उस को चारोंओर से घेर के उस बलिप्रदान को जलादेती थी ईश्वर ने इसका वर्णन यहूदियों के समाचार के विषय कुरान में किया है और आगमें से एक प्रकार की अग्नि खूतैन है जो अयसदेश में प्रकट होतीरही जब रातके समय आसमान पै प्रकट होती तो बनीतय अर्थात् तयके वंशवाले उस अग्नि के प्रकाश में अपने ऊंटोंको तीनदिन राह की दूरीसे देखते रहे यहांतक कि ऊंटों की गर्दन दिखाई देतीथी उस अग्नि का प्रकाश प्रत्येक वस्तुपै होता था और जिस वस्तु के चारों

ओर होती थी उस बस्तु को भस्मकर देती थी ओर दिन में उसको केवल उसका धुंआंसा प्रकट होता था तब ईश्वर ने खालिद बिन-शना का भेजा यह मनुष्य बनी अयस में से था ओर बनी इसमाईल के उपरांत आया था उस समय कुंआंबना के उस प्रकाश को उसमें बन्द किया तो लोग देखते थे कि वह प्रकाश उस कुंआं में जा छिपा ओर फिर उसका चिह्न मिला ॥

फसलतारा सम्बन्धीय ओर उनके नुक़सान के विषय में ॥

विद्वानों का बाक्य है कि कभी धुंआं बायुकीओर सीधाहोता है धुंआंमें एक मुंह होताहै जिससे अग्निका ज्वाला प्रज्वलित होताहै ओर वह बिलकुल आग होकर उसीओर को जाता है जहां से कि धुंआं उठता है ओर वह बिलकुल आग होके उसके आसपास को जलादेताहै जैसे जब चिराग बुझताहै ओर उसको दूसरे दीपककी गुलके नीचे लेजावें तो उसकी ज्योति उस धुंआंमें अग्निप्रकट हो-जातीहै परन्तु जब पृथ्वीसे उसका सम्बन्ध छूटा तोभी पतलाहोने के कारण आग प्रकट होजाती है ओर उसमेंसे धुंआंका अंश जाता रहताहै मानों वह मिटगया ओर आगेहम इसका बर्णन करचुकेहैं कि केवल अग्नि तो दृष्टि में आही नहीं सकती इसलिये जब आग जलतीहै सो प्रथम उसमें धुंआंके समान कुछ स्वरूप दृष्टिआते हैं कभी तो ताराके समान ओर कभी पशूके समान कभी मनुष्य के समान ओर कभी गाजगरके रंग समान ओर मुख्य इसकी वही चीज़है जो अग्नि मण्डलके पासहै ओर मखरूत अर्थात् गाजरके समान वहहै जो कुरयज़िमहरीर अर्थात् हिवार के पासहै ओर कभी २ ऐसा मालूम होताहै कि आसमान पै एक गोलाकारसे कोई बस्तु कभी तो उत्तरकी ओरको ओर कभी दक्षिणकी ओरको बढ़के खतमहोताहै तनकध्यानदेकेदेखो तो मालूमहोगा कि मानोंगोला-कार ब्यासवत् है जिसमें आग प्रज्वलित है फिर हवा में खड़ेहो के देखो कि चाहे कितनीही आग उस में ब्यापै परन्तु अग्नि अधि-

कही प्रज्वलितहोती जायगी इसलिये कि जिसमें वहमिटिजाय॥
इति

कोई २ आगेके बिद्वान् इसमें अपनी मतिदेते हैं कि मनुष्य के श्वास और आगसे एक ऐसा एका है जो और किसी दूसरे तत्त्वसे नहींहै जब आग प्रज्वलितहुई तो इसका बुझना तो अति कठिन है और जब कमहोतीहै तो उसका बुझना कुछ कठिन नहीं सोई दशा मनुष्यके श्वासकीहै किजब अधिक है तबतो उसका मिटानाकठिन है और जब कमहुई तो बन्दहोजातीहै और एक अद्भुत बात यह है कि जहां अग्नि सजीवहै तहां श्वासभी चलती है और जहांअग्नि मृतक अर्थात् जहां नहीं है वहां श्वास भी नहीं इसी प्रकार जब खानों से धातु निकालने वाले मनुष्य खानों में धातु निकालने के लिये धसना चाहतेहैं तो एक लम्बी लकड़ी के सिरेपै आग जलाके अपने मुखके सामने रखतेहैं जो उस लकड़ीमें आगजलती रही तब तो उसग़ार अर्थात् खोह में धसे और जो बुझगई तो उस में नहीं धसते इसीप्रकार जो किसी कुंआं में धसनाहुआ तो प्रथम कण्डील में दिया धरके कुंआंमें पहुंचाते हैं जो वहदिया उसकुंआं में जलता रहा तब तो उस में धसे और जो बुझगया तो उस में नहीं धसते और दूसरी दृष्टान्त आगकी मनुष्य के साथयहहै कि दीपक में जब तेल नहीं होता और बुझना चाहता है तो प्रथम एकलोप दीपक में ज़ोर से चमकती है तिस उपरान्त बुझताहै इसी प्रकार मनुष्य मरते समय अधिक ज़ोरसे श्वासलेने लगता है जिसकानाम ऊर्ध्व-श्वासहै जब यहदशा मनुष्यकी होतीहै तोमरनेमें कुछदेर नहींहोती॥

नज़र तीसरी बायुमण्डल के विषय में॥

बायु एक जिस्मबसीत अर्थात् एक ऐसालम्बा चौड़ा स्वरूप है जिस में कोई वस्तु नहीं मिली है इसका स्वभाव गरम तरहै और अत्यन्त हलकी और पतलीहै और अग्निके नीचे फिरती है बिद्वानों के निकट बायु के तीन भागहैं प्रथम तौ वह जो चन्द्रमा मण्डल से मिलीहुईहै दूसरे वह जो समहअरज़ी अर्थात् सर्बभूत मय है और

तीसरी बायु वह है जो बीच में भरी है परन्तु जो बायु चन्द्रमा के आसमान में है वह अत्यन्त गरम है उसका नाम असीर है और बीचकी बायु अत्यन्त सरदहै जिसका नाम महरीरहै और तीसरी बायु सूर्य्य की किरणें परने से होतीहै उसका इन आकाश हवाय मोतदिल में हुआहै और जो ऐसा न होताती जो बायु दुनियामें है वह अत्यन्त सरद होती जैसी कि दशा उत्तरीय ध्रुव के निकट है जहां बायु अत्यन्त शीत होतीहै और वहां छः महीनेकी रातहोतीहै और मारे सरदी के पानी जमजाता है और अन्धकार छा जाताहै वहां जीव और बनस्पति का नाश होजाता है बिद्वानों के निकट बायुकी उंचाई सोलह हज़ार गज़है और छुटाई पृथ्वी के बाहर है इसका कारण यहहै कि जो पृथ्वीभरके पहाड़ों से भारी पहाड़हो उसकी उंचाईकी बराबर धरतीमें न पहुंचेगी और इससोलह हज़ार से यह प्रयोजन है कि वह मेघादि के कारण गरमी को नहीं रोक सक्ता बायुमें तारोंके गरम करनेकी किरणोंके परनेसे गरमीहै और यह पृथ्वी के धरातल से मुनकिस होतीहै और घेरा नसीम (नाम-बायु) का जो पृथ्वी से मिला है वह गहराई सही पृथ्वीमें है वहां फेफड़ा वाला जीव नहीं रहसक्ता जहां हवा और नसीम नहो जो कुछ उलटपलट भाफ़, धुंआं और बायुभेद , मेघ, गरजन, बिजली वर्षा औ बायु, छाहीं, ओस, बर्फ़ और प्रकाशादि में होताहै वह कोई तो बायुनसीम और कोई बायुशरीर के कारणसे होता है अब ब्यौरेवार वर्णन कियाजाता है ॥

मेघ और बर्षा का वर्णन ॥

बिद्वानोंका निश्चयहै कि जबसूर्य्य पानीपर चमकताहै तो पानी से पृथ्वी के अति महीन अंश घुलजाते हैं और उसे धुंआं कहते हैं और जब भाफ़ और धुंआं वायुकेसाथ ऊंचे उठतेहैं और बायु उससे अलग हुई तो ये अन्तरिक्ष में लटके रहजाते हैं और इनके आगे बड़े ऊंचे२ पहाड़ रोकतेहैं और ऊपर से भाफ़ का संचित अर्थात् मेघ निकट होताहै तो सदा ये भाफ़ और धुआं बहुत से इकट्ठे होके

बायुमें गाढ़े होजाते हैं और बहुधा एकके अंश दूसरे में मिलजाते हैं और यहां तक कि वे जमजाते हैं और भाफ़ और धुंआं के मेल से बादल बनता है और ज्यों२ ऊंचे होतेजाते हैं त्यों२ एक दूसरे में मिलते जातेहैं और फिर बूंदहीबूंद नीचेकीओर टपकता है जो यह भाफ़ रात्री के समय ऊंचेको उठतीहै जबकि बायु सरद चलती है तब तो ऊपर जानेसे रुकजाता है और वहां जमजाता है तो प्रथम तो बायु इसभाफ़ को अति पतला बादल बनातीहै और जो सरदी बहुतही है तो यहभाफ़ जमकेबर्फ़ बनजाता है और क्योंकि सरदी अधिक होने के कारण जमगया है तो उस समय वह पृथ्वी पर ओले और पानीके समान गिरताहै जो सरदी साधारणहै अर्थात् ऐसी सरदी है कि जिससे जीव और बनस्पति को कुछ कष्ट नहीं पहुंचता तो क्रम२ से एकके उपरान्त दूसरा मेघबनता जाताहै जैसे बहुधा वसन्तऋतु में दृष्टिआतेहैं कि पहाड़ोंपर रुईसी बिछीहै और जब उसमें ज़िमहरीर अर्थात् अति शीत हवालगी तो ऊपरही से भाफ़गाढ़ीहोजातीहै और पानीमें जबउसकेअंश मिलतेहैं तो भारी होके हवा और मेघ से बूंदहीबूंद पृथ्वीपर टपकनेलगता है जो वे पानी की बूंदें नन्हीं नन्हीं हों तबतो उनके गिरने के पहिले जाड़ा अधिक होताहै और जो बारिद भाफ़ की हवा न लगी तो अधिक टपकते हैं और जो पानीकी बूंदें कमती हुईं तो रातकी सरदी में जमजातीहैं और जो वह पानीकीबूंदें बस्तीहों तो बर्षा नरमहोतीहै और जो वे बूंदें जमगईं तो वही बिजली होजातीहै निदान मेघका बर्षना ईश्वर की दया समझनी चाहिये क्योंकि जहां जीवोंके रहने की ठौरहै वहां प्रति संवत् पानी बर्षता है और ऐसे बियाबानों में जहां कि जीव रहसकें परीक्षा लेनेवालोंके निकट एकपरीक्षा यहहै कि जिसठौर में आदमियों के निवास से चालीस दिन की दूरी है वहां रहने के योग्यनहीं किस हेतु से कि वहां मेघनहीं बर्षता और अत्यन्त दया ईश्वर की यही है कि उसने आपने बंदोंपर दया की बर्षाकी है और यह बर्षा न तो ऐसी अधिक होती है कि जिसमें

बनस्पति मिटजायँ और न इतनीकमती होतीहै कि जिसमें बनस्पति ऊगेंहीं नहीं और न मनुष्यों की कुछ हानि होती है जैसी कि दशा नूहकी ज़ातवालों की गति हुई ॥

फस्ल बायु के विषय में ॥

बायु पवन की लहरसे उत्पन्न होतीहै जिसतरह समुद्रकी लहर किसी पानीको रोकतीहै सो मानों बायु और पानी दो समुद्र एक पास स्थितहैं भेदकेवल इतनाहै कि पानीगाढ़ाहै और चाल भारी है बायुका अंग पतला और चाल इसकी हलकीहै अब इसहवाकी कैफ़ियत सुनना चाहिये कि यहबायु चन्द धुंआंहै जो सूर्य्यकीगर्मी पाके पृथ्वीसे निकलके ऊपरको जातेहैं जबवह तवक़ या वारिदा अर्थात् बायुमण्डल तक पहुंचे तो दो मेंसे एकबातअवश्यहोगी कितो यह कि उनकी गर्मी बीचहीमें मिटजातीहै और कियह कि उसकी गर्मीवहांतक बनी रहतीहै जोउसकी गर्मीकमहोगई तबतो कसीफ़ होकेनीचे गिरनेका अनुमानकरताहै और जबनीचेकीओरको चलाती हवाका झकोरा उसमें भरके हवा होजाता है और जो उसमें गर्मी बनीरही तो ऊपरको जाते२ बायुमण्डल तक पहुंचा तो वहां पवन के झकोरे उसको मेघबनाते हैं और वह हवा होजाता है और वह यह है कि हवा मुद्दतिउरियाह होती है तब वह मख़रज मोज से बाहर निकलती है और कभीऐसा होता है कि और हवायें उसमें जा मिलती हैं और चन्दधुंआं नीचे से जा पहुंचते हैं और वे वहां पहुंच के बायुका स्वरूप बनजाते हैं अथवा कभी ऐसा होताहै कि विना किसीकी सहायता के सूर्य्यकीकिरणों के कारण बायुआपही आप चलने लगती है क्योंकि सूर्य्यकी किरण बायु को चलाती है उससे वह अधिक होती है और इसीकारण बायु चलती है परन्तु रोवा उसबायुको कहतेहैं जो अपनेही स्वरूप भरमें फिरती है जैसे मनारा जो मनाराके समान बायुचली बायुमण्डल से उत्पन्नहोके बादलमें पहुंचाकर उसेशीघ्र घुमाया और उसीसमय बादलकेसाथ फिरती हुई भूमितक पहुंचती है कभी इसकी उंचाई गोल होती है

अर्थात् जिसराह से कि वहबादलमें जातीहै वह गोलाकार होकर जाती है इसलिये उसका फसना भी गोलहोता है जैसे घूंघुरवारे बालों से शिर टेढ़ा मालूम होता है और कभी वह रोवादोहवाओं सेमिलती है क्योंकि एकदूसरीका आनानहींचाहतीतो उसकेबिरुद्ध से एक मुस्तदीर सूरत होतीहै जिसका स्वरूपटुकड़ाकासाहोता है कभीयह हवामदोवा ऊपरआती है और नौकाको पानीके ऊपरचक्र देतीहै और कभीऐसाहोता है कि रोवा वायुपर बादलका टुकड़ा आ जाताहै तो वहरोवाकोगोलकरदेता है तो रोवा ऐसी मालूम होती है कि मानों तनीन अर्थात् अजगरचंद्रमा के आसमान के नीचे से धरती तक उड़ता है मुख्यस्थान बायु के चलनेकेचार हैं प्रथमउत्तरजिस के फिरनेकी ठौर सुहैल से लेकर पूरब में सूर्य्यतक दूसरी बायस वाजिसकी ठौर बनातुलनाश अर्थात् सप्तऋषियोंसे लेकर पूरबतक तीसरी बाददबूर जिसकी सीमा सुहेल से लेकर पश्चिम तक और सूरत उसकी इस प्रकार की होगी॥

तसवीरनम्बर १००

उत्तर की बायु शर्द खुश्क लिखी है क्योंकि वह ऐसी ठौर से निकलती है जहां सूर्य्य की किरणें प्रवेशनहीं करतीं और न बरफ और समुद्र उसके पास तक पहुंचते हैं और बायु जब इनका स्पर्श करतीहुई आती है तो बायु शरद होती है और उत्तर में तरी कम है और खुशकी अधिक है उत्तर की बायु दक्षिण की बायु की अपेक्षा अधिक बेगसे चलती है क्योंकि वहएक तंगराहसे निक- लती है जैसे सुराही आदि सँकरे मुहँ के बरतनसे पानी निकलता है और दक्षिण का यह हाल नहीं किन्तु उसका द्वार थाल के समान खुलाहुआ है और इसी कारण उसमें वह बेगनहीं है और उत्तर की ओरकी राह तंग होना इससे भी साबित है कि वह पहाड़ों के बीच में होके निकलती है और उत्तर में पहाड़ बहुत हैं और दक्षिणकी बायु केवल समुद्र पै होहो के आती है जहां कोई पहाड़ नहीं हैं उत्तर की बायु दिमाग को पुष्ट करती है रंग को चमकाती

है चित्त प्रसन्न और काम की सहायक है उत्तर और दक्षिणकीबायु के स्वभाव के विषय में बैद्यों ने लिखा है कि उत्तर की बायु के प्रभाव पुरुष जीव उत्पन्न होते हैं और दक्षिण की वायु के प्रभाव से स्त्रीलिंग जीव पैदा होते हैं और अरब देशीय उत्तरकी बायुकी निंदा करते हैं क्योंकि इसकेचलनेसे शरदी और मेघा उत्पन्न होते हैं जाड़े के दिनों में और बायु की अपेक्षा अधिक बेग से चलती है अरब देशियों के निकट दक्षिण की बायु उत्तम है क्योंकि इसके गुण उत्तरीय बायु के बिपरीत हैं दक्षिण की बायु गर्मतर है क्योंकि यह मध्यरेखा पर बहती है वहां अत्यन्त गर्मी होती है क्योंकि सालमें सूर्य्य वहां दो बार जाता है और वहां से दूर भी नहीं होता इसी कारण वहां गर्मी अधिक होती है और दूसरा समाधान यह है कि दक्षिण में समुद्र बहुत हैं और सूर्य्य की गर्मी उनसे निकलती है और बहुधा अंजीर के भाफ उस समय दक्षिण बायुलिये होतीहै सो वह अंग में आलस्य उत्पन्न करतीहै शिरको भारी और आंखों को धुंधली करती है ॥

बहुधा दक्षिण की बायु चलने के समय समुद्र में अँध्यारा सा छाजाता है उत्तरीय बायु के समय यह दशा नहीं होती उत्तरबायु को साफ करता है और समुद्र के धरातल को बराबर करता है और दक्षिण बायु को खराब करता है और समुद्र के धरातल को नीचा ऊंचा करता है यह एक आश्चर्य्य की बार्ता है कि जबदक्षिण की बायु चलती है तो पानी को गरम खुश्क करती है और जब उत्तरीय बायु चलती है तो उसको अपनी गर्मीसे गलाती है जैसा कि बैद्योंने कहा है कि उत्तरीय बायु चलने के समय समुद्र में गर्मी आय टिकती है जैसा कि जाड़ों में देखा जाता है कि सत्यहीपृथ्वी के अन्तः करण में गर्मी भरजाती है इसी से पृथ्वी के भीतरकापानी गरम रहता है परन्तु दक्षिणीय वायु चलने के समय वह गर्मी बाहिर निकलती है जैसे गर्मी के दिनों पानी के भीतर से गर्मी निकलती है और पानी अपने आप शरदहै अरब निवासी दक्षिणकी

बायुको धन्यवाद देते हैं क्योंकि सिवाय इस बायु के और किसी बायु के चलनेसे पानी नहीं बर्षता सवा एतदाल से निकट है जैसा कि बहना उसका अव्वल सुबाकी शरदी लिये है क्योंकि वहतरीकी ठौर से होकर वह आती है सूर्य्य की दूरी के कारण जो बायुरात को चलती है अत्यन्त अच्छी होती है परन्तु उसके चलने का समय अतिही थोड़ा है क्योंकि सूर्य्य की किरणें निकलने तक है बस सूर्य्योदय होतेही उसको दूर करता है निदान सूर्य्य निकलतेही उसको गरम कर देता है अन्त को साधारण होजाती है और इसको बादसहरी भी कहतेहैं इसकाबहना आनन्दसे भराहोताहै इसके वहनेसे मनुष्यको सोनेकेउपरांत आनन्दमालूम होताहै रोगी लोगों को आराम होता है निदान इसी बायु का समय शहर कहाता है क्योंकि न तो इससमय गरमी होतीहै और न शरदी होती है और बबूरिया नाम बायु सवा के बिपरीत है यह बायु सूर्य्यास्त होने के समय बहती है तिस पीछे रात होती है और सवाकी गरमी बबूर को गरम नहींकरती है इसीकारण दिन के अन्त को बहतीहै और रातकोनहीं चलती क्योंकि उससमय सूर्य्यउसकेस्थानपै जापहुंचता है और उसकी भाफों को गलाता है सो इसीसमय से इसका चलना अति कमती होजाता है इसका स्वभाव सवा के विरुद्ध है इसका वर्णन तहक़ीक़ मवसूत और रोशन कियागया है आगे ईश्वर जानें ॥

इति

अद्भुत स्वभाव वायों के ये हैं कि जैसे जो वायु आवाजोंसे निकलती है वह भाफ और धुआं से खाली है और वृक्षों को फलाती है और खेती को चैतन्य करती है और ज़ारकी खेती को सुखाती है और जीवों की प्रकृति को बदलती है कहते हैं कि हवा पृथ्वी के अन्तःकरण में जाके उगाती है और मनुष्यों के शरीर में आलस्य लाती है और बलवान् निर्बल और रंग को पीला करती है और कोई २ हवा ऐसी है शरीर को पुष्ट और अंगों को बलवान् करती

और रंग को चमकाती है और अद्भुत बायु वे हैं कि किसी मेघ को तो बन्द और किसी को फैलाती हैं ॥

फ़सल गरजन और बिजली आदि के बिषय में॥

बिद्वानों की बाक्य है कि जब सूर्य्य पृथ्वीपर चमकता है तो पृथ्वी में जो अग्नि का अंश है सो गलजाता है और अजजाय अरज़ी अर्थात् वे अंश जो किसी दूसरी वस्तु में होके प्रकट होते हैं उनके साथ मिलजाते हैं और इनदोनों के मेलसे धुआं उत्पन्नहोता है और इन धुआंसे समुद्र के पानी को सहायता मिलती है तब पानी और धुआं दोनों मिलके ऊपर को ऊंचे उठते हैं वहां ये धुआं बँधकर बादल में घिर जाते हैं उस समय जो वह धुआं अपनीही गरमी में रहा तब तो ऊपरही को बढ़ने का अनुमान करता है और जो शरद होगया तो नीचे पृथ्वीकीओर गिरने लगता है उससमय बादल के टुकड़ों को बड़े बेग से तोड़ता है तो उसीमें गरजन का शब्द होता है और कभी उस अग्नि की गरमी से जो उसमें है अग्नि का ज्वाला प्रज्वलित होता है वही बिजली चमकती है जो वह अग्नि का अंश पतला है तब तो चमक के ऊपरही रहजाती है और जो गाढ़ा है तो वह बिजली हो गिरती है जिसको लोग बिजली अथवा चिर्री अथवा गाज कहते हैं और इसी को हम लोग इन्द्र का बज्रकहतेहैं जहां जिस वस्तुपर यह गिरती है उसको जला के भस्म करदेती है कभी तो ऐसा होता है कि लोहे को गलातीहै और लकड़ी को कुछ नुकसान नहीं पहुंचाती और कभी सोने को गलाती है उसके कपड़े को कुछ हानि नहीं पहुंचाती कभी पहाड़ों पर गिरके टुकड़े करदेती है कभी समुद्र में गिरके जल चारी जीवों को भस्म करदेती है विदितहो कि गर्जन और चमक बिजलीदोनों साथही होती हैं परन्तु बिजली गिरने के पहिलेही दृष्टि आती है क्योंकि उसका देखना आंखका काम है और सुनना कानोंकाकाम है और प्रकाश की चाल बायुसे अतिही शीघ्र है इसलिये प्रकाश प्रथम दिखाई देता है और शब्द पीछे सुनाई देता है क्या तुमने

धोबियों को नहीं देखा कि प्रथम तो देखते हैं कि कपड़ा पत्थरपर पहुंचगया तिसके उपरांत शब्द सुनाईदेता है गरजन और बिजली यों नहीं होते परन्तु जाड़े के दिनों में भाफ और धुआं कम होनेके कारण होते हैं और यहीकारण है कि बारिद देशों में पायेजाते हैं और बरफ गिरने की ऋतु में नहीं होते उसका कारण यह है शरदी धुआं वाले भाफों को बुझा देती है और जब वर्षा अधिक होती है तो बिजली गिरतीहै किस हेतुसे कि बादल के अंग कड़ेहोजाते हैं इसका कारणयहहै कि जबबादल कसीफ होजाताहै और पानीउसमें भराहोता है तो जबबलकर बेगसे पानी निकलता है तो ऐसा मालूमहोताहै कि कदाचित् पहिले इसको कोईरोकेथा इसीसे पानी जमगया और अब रोक मिटगई इसीसे इतने बेगसे बहा है और इसतर्कणाका समाधान यह है जैसे कोई अपनी हँसीको रोके तो अवश्य उसको ऐसे ज़ोरसेहँसीआवेगी कि उसको रोक न सकैगा॥

नज़र चौथी पानीके गोलाकारके विषय में॥

पानी एक स्वरूप बसीत अर्थात् ऐसा लम्बा चोड़ा है जिसमें कोई दूरी बस्तु नहीं मिली है इसका स्वभाव शरद है और तरीसे भरासाफ़है और बायुके नीचे मकानकी ओर चलता है और पृथ्वी के ऊपर है बिद्वानों के निकट इसका स्वरूप गोलाकार है उसके सिद्ध करनेमें यह दृष्टान्त देते हैं कि जैसे कोई मनुष्य जहाज़ पर चढ़के किसी पहाड़के निकट पहुंचे तो प्रथम उस पहाड़की उँचाई दृष्टि आवेगी तिस उपरान्त निचाई चाहे कितनाही उस समुद्र से दूरी पै हो जो यह पूर्वोक्त बर्णन सत्य न होता तो उँचाई नहीं किन्तु उसकी निचाई प्रथम दृष्टि आनी चाहिये थी परन्तु पानी का गोलाकार होना निस्सन्देह नहींहै क्योंकि ईश्वरने पृथ्वीको जीवों का आधार बनाया है और निज करके मनुष्य जो सृष्टिमें सर्वोपरि हैं उसके निवास की ठौर नियतकिया है और यह तो प्रकटहै कि जीव बिना बायुकी सहायता के उड़नहीं सक्ते क्योंकि पक्षियों को श्वास लेनेकी आवश्यकता अधिक है इसलिये ईश्वर ने पृथ्वी को

शिखा और शृङ्गसहित बनाया जो पृथ्वी की पृष्ठपर प्रकटहैं और यह कुछ इसकी दलील नहीं कि पृथ्वी का स्वरूप पानी के स्वरूपवतहो इसलिये उस उँचाईको तो पशुओंका निवासबनाया और पृथ्वी और गारोंको जलचारी जीवोंका बासा बनाया और प्रत्येक तत्त्वअपनी नियत सीमामें घिराहै परन्तु पानी जो ईश्वरकी आज्ञासे पृथ्वीको चारोंओरसे कसेहै वह अलगहै और तर्कणाओं के समाधान से सिद्धहोचुका है ॥ पानी दोप्रकारका होताहै एक मीठा और दूसरा खारी ॥ इनमें से प्रत्येक में एकगुण है जिसमें खारी पानीका खारीपन तो अजजाय अर्जीके कारण है जो सूर्य्य की उष्णता से जलके आगमें मिलगयाहै उसीसे पानी खारीहोगया और जो समुद्रका पानी मीठा रहजाता तो सूर्यकी उष्णता पाकेअवश्य बदलजाता और बहुतदिनतक भरारहनेसे मीठापानी सड़जाता और यह समुद्रका पानी खारीही होने के कारण बहुत दिनोंतक एकरस बनारहता है और जो समुद्रका पानी खारी न होता किन्तु मीठाहोता तो सड़के बायुमें अति दुर्गंधि पृथ्वीमें चारों ओर फैलती जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी की बायु खराब होजाती वही हुलका और महामारी का कारण होती तो समुद्र सृष्टिका नाश करता इसीसे ईश्वर की निर्दोष बुद्धिने शोचा कि समुद्र का पानी खारीहोना चाहिये जिसमें यह दूषण मिटजाय और इसकेसिवा खारीपानी में अम्बरहोता है और बहुत से लाभ खारीपानी में हैं जिनका बर्णन ईश्वराधीन बहुत जल्दी किया जायगा और जवाहिर अरज़ से जो मलादि पैदाहोते हैं उनसे साव और मुशकिला आदि रोग अच्छेहोते हैं ॥ हज़रत जिबरईल ने जमजम के पानी को साफ किया उससे सबप्रकार के रोग अच्छेहोते हैं लिखाहै कि जितने पानियोंको बैद्योंने परखा है जो सबका गुण एकठौर किया जाय तो जमजम के पानी के गुण के सौवेंभाग की बराबर भी न होगा अजबके पानी पीनेका बड़ालाभ है क्योंकि वह आयुवर्द्धक है मीठेपानी में वह शक्ति है कि जो उसमें सृष्टिके पदार्थ मिला के

खाय तो जबतक उसमें कोई बस्तु उसका स्वाद पलटने के लिये मिठाई अथवा खटाईकोसी न मिलावे तबतक उसको नहीं खासक्ते और उसका रंग और स्वाद कोई नहींहै और एक अद्भुत बात यह है कि जितने पदार्थ ईश्वरने उत्पन्नकिये हैं वे खानेकेयोग्य नहीं होते जबतक उनमें कुछ कमती बढ़ती न कियाजाय परन्तु हां पानी है जिसके लिये कोई यत्न नहीं करनी पड़ती ईश्वर ने इस पानी को अपनेही इलाज पर रक्खा है और सूर्य्य का गुण उसका सहायक नियतकिया है कि जहां चाहें तहां बायुके द्वारा उस पानी की बर्षा करैं और नदी नाला झील ताल कुवां मनुष्यों की आवश्यकतानु-सार बहाता भरता है और जो मनुष्य चाहे कि मीठे पानीसे खारी पानीनिकालें तो बड़े परिश्रमका काम है॥

फ़सलदरियामें फिरनेके बिषयमें॥

यहउस ईश्वर अद्वैतकी अद्भुत मायाहै कि समुद्रको पृथ्वीके चारों ओर रक्खा जो ऐसा न होता तो बुद्धि से मालूमहोताहै कि सम्पूर्ण धरतीको डुबालेता कहींसूखीठौर न रहती जो ऐसाहोता तो ईश्वर की अखण्डित बुद्धिमानी झूठी होजाती जब ईश्वर ने जीव और बनस्पति की सृष्टिरची तो उससमय उसकी परम चतुरता ने यह बात ठहराई कि कौन भाग पृथ्वी का पानी से खुला रहै जिसमें संसारी लोग अपने रहने के लिये मकान बनासकैं इसलिये जिस ओर सूर्य्य गरमहैं उसओर पानी भी गरम रहताहै औ पानी का यहहाल है कि जब गरमहोता है तो उसओर को आप खिचता है और जिसओर को खिचताहै उसओर को पानी अधिक होताहै तो दूसरी ओर अवश्य पृथ्वी सूखी रहजाय और वह ओर सूर्य्य से दूरहै और जिसओर सूर्य्य निकटहै वहदिशा दक्षिणहै और जिस दिशा से सूर्य्य दूरहै वह दिशा उत्तर है इसलिये समुद्र दक्षिण की ओर होजाता है और उत्तर की ओर सूखजाता है इसलिये ईश्वर की यह बुद्धिमानी सदा के लिये होजाती है जो संसारकी कृत्तिही कार्य्य कर्त्ता होजाती है॥

इनटापुओं में से बहुधा बड़े और छोटेहैं और कोई२ मनुष्योंसे बसे भी हैं और उनमें खेतीहोतीहै और वहां गांव और शहरआबाद हैं और टापुओं में से ख़राबहै वहां जंगल और बियाबान और मैदान और पहाड़हैं और जंगलीजीव और बहुधा भेड़ व बकरी और ऊंटादि उपयोगी जीव भी रहते हैं जिनकी गणना ईश्वर के सिवा और कोई नहीं करसक्ता और समुद्रोंमें से कोईछोटे औरकोई बड़े जिनमें से कोईमीठे और कोईखारीहैं और इनटापुओं में अद्भुत जीव रहतेहैं जिनका व्यौरावार वर्णन ईश्वराधीन किया जायगा ॥

फ़सल अद्भुत समुद्रों के विषय में ॥

समुद्र के विषय में ये थोड़ीसी बातें हैं कि ऊंचाहोना और लहरें उठना और गरमहोना जो समयानुसार ऋतु के कारण महीना के आदि अन्त में हुआ करतीहैं पानी ऊंचा होने का तो यहकारण है कि जबसूर्य्य ने स्वच्छजल में प्रवेश किया और वह तहलील हुआ अर्थात् गला तो जितनी ठौर वहां है उससे अधिक चाहिये तब उससमय चारोंओरको फैलनेलगताहै अर्थात् पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण और ऊपर को भी तब उस समय इन समुद्रों के किनारे चौबायु प्रकट होती हैं और जो किसी समय किसी समुद्र में चन्द्रोदयसेबाढ़ होती है तो कहते हैं कि इन समुद्रों में संग खारा है सो जब चन्द्रमा इन समुद्रोंके कनारों पर चमका तो चन्द्रमा की किरण उनपत्थरोंपर परती है तो उन पत्थरोंपरसे चन्द्रमाकी किरणें फिर बाहिर को उलटी लौटती हैं सो उसी जोर में समुद्रका पानी गरम और पतला होजाता है इसलिये अधिक ठौर के लिये लहरें लैता है और कनारों पर उबलता है यहां तक कि उन लहरों से जहां तहां छोटी२ नदियां होजातीहैं और अच्छी बस्तुओंको अपनी ठौर लाता है और यही हाल लौटने के समय भी होता है और सदैव यही हाल रहता है जब तक चन्द्रमा आसमान के मध्य में रहता है और जब चन्द्रमा पश्चिम को झुकताहै तो पानीमें शरदी आजाती है और गाढ़ा होके अपनी गहराई की ओर को झुकता है

फिर यथापूर्बक होजाता है और सदा यही हाल रहता है और जब चन्द्रमा फिर पूर्व में उदय हुआ तो समुद्र की बाढ़ फिर होने लगती है और जबतक चन्द्रमा मध्य आसमान में रहता है तबतक यही हाल रहता है और जब मध्य से उतर के पश्चिम में गया तो बाढ़ कमती हुई और पानी गाढ़ाहोके लौट आता है और जबतक पूर्व में अपने नियत स्थान में न आवे तबतक समुद्र सावधान रहता है बैद्यलोग इसके घटाव बढ़ाव के बिषय में कहते हैं कियह दशा समुद्रकी ख़िलतों के कारण होती है जैसे क़िसी के मिजाज़में कफ अथवा पित्त अथवा बात अधिक हो अथवा सौदा हो तो उसी के अनुसार यह दशा होती है और फिर क्रम २ से थँभती है और इसी बिषय में हज़रत रिसलतमाव ने कहा है कि जो परिश्ता पानीका मोकिल है जबवह अपना पैर समुद्र पै धरता है तो बाढ़ होती है और जब उठा लेता है तो घट जाता है निदान अबइस किताब में समुद्र का स्वरूप और उसका नियम और उसके मुख्य का हाल लिखाजाता है॥

(अलवहरुलमुहीत अर्थात् महासागर जो चारों ओर पृथ्वी को घेरेहै)॥

इसका नाम दरिया ओकियानूस है यह बड़ा समुद्र है इसी से सब समुद्र निकले हैं इसका कनारा किसीने नहीं देखा काबुल-अहिवार ईश्वर उसपै प्रसन्न हो कहता है कि ईश्वर ने सात समुद्र उत्पन्न किये हैं उनमें से प्रथम समुद्र यही है जो चारों ओर घेरे है इसकानाम दरिया वन्तसहै इसके बाद और दरियाहैं जिनके नाम येहैं काबीस १ मुजलिम २ असम ३ मरमास ४ साकिन ५ और पाकी ६ इन समुद्रोंमेंसे एक दूसरेको घेरे हैं और समुद्र जो पृथ्वी परदेखे जाते हैं वे सब इनकी अपेक्षा आखात और नदी ऐसे दिखाई देते हैं इन समुद्रोंमें जीव इतने हैं कि जिनकी संख्या ईश्वर के सिवा कोई दूसरा नहीं जानता॥

अबूउलरैहाख्वारज़िमी लिखताहै कि पश्चिमका समुद्र जो इन्द-

लसदेश के किनारे है उसका नाम दरियाय मुहीत है और यूनानी भाषा में ओक़ियानूस है ॥

इसमेंकोई आखातनहीं किन्तु किनारेके निकटसे कुछराह उत्तरकी ओर निकली है उसीराह में एकआखात वन्तसनाम है यहतोनाम यूनानी लोगोंका है और उनकेसिवा उसकानाम बहर तरावरवीदा कहतेहैं और वह आखात कुस्तुन्तुनिया के क़िलेके पास जाके तङ्ग होजाता है और दरिया शाम में मिलकर उत्तरकी ओर होके सक़ालवाकी धरतीके निकट पहुंचतीहै वहां से एकअति बड़ाआखात निकलकर सकालिब के उत्तर ओर पहुंची है और.वहां बलगार में मुसल्मान इसकानाम लोरङ्गकहतेहैं तिसउपरान्त पूर्वको फिर के तुर्किस्तानकी धरती में से कुछतो धरती और कुछपहाड़ोंमें होके पूर्बमें चीनके चारोंओर गयाहै इससमुद्र से एक अतिबड़ा आखात निकला है और इस समुद्र का नाम ठौर२ पर अलग २ है पहले चीन की धरती पै है वहां इसका नाम चीनका समुद्र है तिस पीछे हिन्दुस्तान की धरती में हिन्दका सागर और यहां दो आखातहुये जिनमें से एककानाम फ़ारसका समुद्र और दूसरेका नाम दरिया कुलजुम अर्थात् लाल समुद्र है और अन्त का दरियाय बरबर में इसकाअन्त होताहै और अदन से सफ़ालारङ्गतक यहसमुद्र पहुंचताहै इससमुद्र में मारेडरके बहुतकम जहाज़ चलतेहैं तिस उपरान्त यहसमुद्र चन्दपहाड़ों पै पहुंचता है जिनकेनाम का सम्बन्ध चन्द्रमा से रक्खा और दरिया नील और मिश्रकी ओर होके इसी तरह सौदान मग़रबी की धरतीमें होके इन्दलस के देशहोके महा सागर में जामिलाहै इससमुद्र में इतनेटापू हैं कि जिनको ईश्वरके सिवा और कोई नहींजानता और रोदस और सकलवा नाम टापू भी इसीसमुद्र में हैं इसके दक्षिणओर जङ्ग और सरनद्वीप और सक़तरा और वहजान और रावहनाम टापूहैं परन्तु दरिया ख़िरज़ के पास कोईटापू नहींहैं और न इसतरह के समुद्रमेंसेहैं यह महासागर गोलाकार है जो कोई इसमें घूमाचाहे तो इसके किनारों पै

होके सम्पूर्ण समुद्र में फिर आवेगा और सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर १०८

अब इस वार्त्ताका अन्त इसकथातक पूराकरताहूं जो रहमतुल्ला-अलेह समरकन्दीने अपनी किताबमें लिखाहै ज़ुलक़रनीनने चाहा कि इससमुद्र के किनारे का पता लगावें ॥

इसविचार से जहाज़ पर सवारहोके आज्ञादी कि बराबर एक वर्ष पर्य्यन्त इसका पर्य्यटन करें कदाचित् इसकाकुछ यथार्थ हाल मालूम होजाय परन्तु वह जहाज़ साल भर फिरतारहा पानी की दृष्टि के सिवा कुछदृष्टि न आया उससमय लौटनेका अनुमानकिया तो जहाज़वालों ने कहा कि अच्छा एकमहीना और सैरकरलीजिये कदाचित् कहीं पता लगहीजाय जिससे कुछ आने की सी होजाय तब एकमहीना और फिरे तो अकस्मात् एक जहाज़ मिला उस पै थोड़ेसे मनुष्य थे परन्तु वहां यह कठिनता आयपरी कि वे आपस में एकदूसरे की भाषा नहीं समझते थे तब ज़ुलक़रनीन के जहाज़ परसे एकमनुष्य उनके जहाज़में से एकस्त्रीलाया उसके साथ रति करनेसे बालक उत्पन्नहुआ वह अपने मातापिताकी भाषा समझता था तो उसलड़के को मध्यस्थ बनाके वार्त्ता करनेलगे जब लड़के ने अपनी माता से पूछा कि तू किस तरफ़ से आईहै तब उसने उत्तर दिया कि उसतरफ़ से फिर उसनेपूछा कि किस प्रयोजन से आई तब उसने उत्तरदिया कि मुझे हमारे बादशाह ने भेजाथा कि इस समुद्रके समाचार लेआव जब फिर लड़केने पूछा कि तुम्हारा बादशाह वहां कौन है तब उसने उत्तरदिया कि तुम्हारे बादशाह की अपेक्षा वह बादशाह महाप्रतापीहै और तुम्हारे देशसे देश उसका बहुत बड़ाहै और इसदेश की अपेक्षा वहां प्रजा अधिक है ॥

शेष ईश्वर सत्य जाननेवालाहै बहरचीन अर्थात् चीनका समुद्र यह समुद्र महासागर से मिला है पूर्वसे कुलज़ुम और कुलज़ुम से पश्चिम तक भराहै इसको बराबर कोई समुद्र दूसरा बड़ा नहीं है इस समुद्र में ज्वारभांटा का बड़ा जोर है और गहराई भी इसकी

अत्यन्त है काबुल अहिवार ईश्वर उसे प्रसन्न हो कहताहै कि हज़्-रत ख़िज़िर के साथ कुछलोग जहाज़ पै सवार हुये जब इस समुद्र पै पहुंचे तो हज़रत ख़िज़िर ने कहा कि मुझे पानीके नीचे जानेदो तब उन्होंने कहा कि अच्छा तब हज़रत ख़िज़िर कुछदिन पानीके नीचेरहे जब पानी से बाहिर निकले तो लोगों ने पूंछा कि आपने पानीमें क्या २ देखा इस पै हज़रतने उत्तर दिया कि मुझे समुद्र के भीतर एक फरिस्ता मिला तो उसने मुझसे पूंछा कि हे मनुष्य तू कहां जाताहै उसे मैंने उत्तर दिया कि इस समुद्रकी थाह लेने को कि कितनागहराहै इसपै उसफरिस्तेने उत्तरदिया कि यहबात तो असम्भाविहै इसकी गहराई तुझे किसी प्रकार मालूम नहीं होसक्ती क्योंकि एक मनुष्य हज़रत दाऊदके समय में इसमें गिरा था वह अभी तक पेंदीमें नहीं पहुंचाहै जिसको गिरे तीन सौ वर्ष बीत गयेहैं ॥

दरियाई लोगों की जबानी मालूम होता है कि इस समुद्र में फ़ारसके समुद्रके समान ज्वारभांटा आया करताहै जिसका बर्णन आगेकर आयेहैं बैद्योंकी बाक्य है कि इस ज्वारभांटाका कारण यहहै कि पृथ्वी गोलाकारको समुद्र घेरेहै अबुउलरेहां ख्वारज़िमी अपनी किताब आसारवाकिया में लिखता है कि चीन समुद्र में जब तूफ़ान आनेवाला होताहै तो वहां के निवासी आगेसे सचेत होजातेहैं किस हेतुसे कि समुद्रकी गहराईसे एक मछली निक-लतीहै और जब तूफ़ान भरजाताहै तो एकप्रकारकी चिड़ियाहै सो समुद्रसे निकलके जहां घासफूस इकट्ठा होताहै वहां आय समुद्र के किनारे अण्डादेती और इसके अण्डा देनेके समय तूफ़ान ठहर जाया करताहै इस समुद्रमें इतने टापूहैं जिनकी गणनाज़बान से कहने और कलम के लिखने से बाहिर है इस समुद्र में मोती भी अच्छे २ बड़े दानोंके निकलतेहैं इस समुद्रके किसीटापूमें मरवा-रीद बहुत पैदाहोतेहैं जहां कि मीठापानीहै और अद्भुत स्वरूपके जीव यहांपायेजातेहैं और इसके सिवायइससमुद्रमेंजवाहिरात की

खानभी बहुत हैं निदान अब हम किसी२टापूके समाचार लिखतेहैं और समुद्र के अपूर्व अद्भुत जीवादि को जिनको हमने नहीं देखाहै उनके समाचार अपने परम मित्रोंको सुनातेहैं॥

वर्णन चीन समुद्र के द्वीपों के विषय में॥

इस चीन समुद्र में बहुत से द्वीप हैं उनमें कोई तो प्रसिद्धहैं और वहां मनुष्य भी आते जाते हैं और बहुत से प्रसिद्ध नहीं हैं उनमें से एक द्वीप अत्यंत बड़ा है और उसका नाम राइह है यह ऐसा बड़ाद्वीप है कि इसकी सीमा चीनकी सीमातक है और शहर उसके हिन्दुस्तान की सीमा से मिलगये हैं वहां के बादशाहको महाराज कहते हैं ज़करियाउलज़ाज़ी के बेटा महम्मदने लिखा है कि महाराज के कोषमें दोसौमन सोना नित्य खिराज का आता है और मन वहां का छःसौ दिरहम का होता है और दिरहम साढ़े तीन माशा का होता है (बिदित होकि अँगरेज़ी सेर के हिसाब से जो सेर अस्सी रुपैया चेहरेदार भरका होता है और यह रुपैया साढ़े-ग्यारह माशा का होताहै) नित्य इससोने की ईंटें बनवाकर पानी में डाल देते हैं मानों यह पानी उस राजा के ख़ज़ाने की ठौर है इबनुलफ़क़ीहा कहता है कि मैंने इस द्वीप में बहुत से जीव ऐसे अपूर्व देखे कि जिनके समान दूसरी ठौर नहीं देखा उन जीवोंमेंसे ऐसी बिल्ली देखीं कि उनके पर कानोंसे पूंछतक चमगादर कैसे थे और सूरत उनकी यह है॥

तसवीर नम्बर १०६

दावल यह एकप्रकारकी बकरियां होती हैं यहजीव बैलके सदृश होता है इसका रंग लाल होता है और शरीर में श्वेत बुन्दें होतेहैं और मांस इसका खट्टा होता है और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ११०

(दावहज़िबाद) दावह बिल्ली के सदृश होता है इससे ज़िबाद पैदा होता है॥

तसवीर नम्बर ११९

और हिन्दी में इसको मुश्कबिलाई कहते हैं इनके सिवा इस द्वीप में एक पहाड़ है जिसको नसवान कहते हैं जिसमें सांप बहुत होते हैं और बहुधा ऐसे सांप अजगर हैं जो हाथी और भैंसे को निगल जाते हैं इस द्वीप में ऐसे बन्दर बहुत हैं जिनका पेट सफेद और पीठ कालीहोतीहै खाकानके पोते और पहियाके बेटे ज़करिया ने लिखाहै कि मैंने इस राइह द्वीप में ऐसे जीव देखे हैं कि जिनके भोजन वस्त्र तो मनुष्य केसे और पंख पक्षियों के से होते हैं जिनके बलसे एक वृक्षसे दूसरे पै उड़जातेहैं और बातें भी करते हैं परंतु उनकी बात समझ में नहीं आती इनकी वार्त्ता ज़रज़ोज नाम पक्षी की सी होतीहै इनका रंग श्वेत काला और हरा होताहै और एक प्रकार के और देखने में आये जिनका रंग श्वेत लाल और पीला होताहै उनकी वार्त्ता अपूर्व होतीहैं सूरतें यहहैं ॥

तसवीर नंबर ११०

और यह भी कहताहै कि उसी द्वीप में हरे और मुनक़्क़श मोर भी देखे हैं और इस द्वीपमें एक छोटेसे पक्षीका अपूर्वस्वरूपहोता है शरीर तो उसका पढुकी से छोटा होता है परन्तु चोंच उसकी पीली होती है और दोनोंपंख उसके काले और पेट श्वेत और दोनों पांव लाल और बोली भी भली होती है महम्मदीनबदुरुल रामी कहता है कि इसद्वीप राइह में कोई २ फूल लाल श्यामता लिये हुये देखेहैं मैंने थोड़े से फूल श्याम चुनके अपनी चादरमें रखलिये थोड़ी देरमें देखा तो चादर में अग्नि मालूमहुई सो फूल तो जलके राख होगये परन्तु चादर साबितरही यह हाल देखके वहांकेमनुष्योंसे इसके यथार्थ समाचार पूछा तो उन्होंने कहा कि इन फूलों में बड़े २ फ़ायदा हैं परन्तु यह अनहोनी है कि कोई इनको बाहर निकाल लेजाय ज़करिया राजीकाबेटा महम्मद कहताहै कि इसी द्वीप में एक कपूरका वृक्ष ऐसा बड़ाहै कि जिसकी छायामें एकसौ मनुष्य बैठरहैं इस वृक्षके ऊपर से चन्द प्याला कपूर टपकता है

और बहुधा मनुष्य इस वृक्षके नीचे छेद करते हैं वहां से गोंद के समान कपूर निकल जमजाताहै जबवह कपूर निकाल लियाजाता है तो वहवृक्ष सूखजाता है एकद्वीप रामीनामक है यहां बहुतसी अपूर्व आश्चर्य्यक वस्तुहैं इब्नुलफतिया ने लिखाहै कि इस द्वीप में एक जातके स्त्री पुरुष हैं वे शीशसे लेकर पांवतक नंगेरहते हैं उनकी वार्त्ता कोई नहीं समझता है और ये वृक्षों पर रहते हैं और इनके शरीर के ऊपर ऐसे लम्बे २ बाल होते हैं कि उनके गुप्तांग छिपजाते हैं और इसजात के मनुष्य इतने हैं कि उनकी संख्या नहीं होसक्ती वृक्षों के फलोंको खातेहैं और मनुष्यको देखकरभाग जाते हैं कहते हैं कि इस जमात में से किसीने एक को पकड़ा था और वह उसको अपने रहने की ठोर जहां मनुष्य रहते हैं लेगया परन्तु वह मनुष्यों से न मिला जो तनकभी आंखबचने में भाग २ के जंगल को जाताथा और स्वरूप यहहै॥

तसवीर नंबर ११३

जकरियाके बेटे महम्मद ने लिखाहै कि इसद्वीप में एक प्रकार के मनुष्य होते हैं कि वे नंगेरहते हैं और उनकी वार्त्ता समझ में नहींआती और उनका शरीर चारबीता से अधिक नहींहोता इनके छोटे २ बाल लाल रंग के होते हैं और ये वृक्षों पर जाने की ढब अच्छी जानते हैं महम्मदराजी कहताहै कि इस द्वीप में गेंड़ा और भैंसा बहुत होते हैं इसद्वीप में बेत और मजीठ के वृक्ष बहुत होते हैं और इन वृक्षोंका बीज बोयके जमाते हैं और इनका फल खनूब कासा और स्वाद अलकम कासा होताहै सूरत गेंड़ेकी यहहै॥

तसवीर नंबर ११४

इन द्वीपों में से एकद्वीप वाक़वाक़ नामक है यह द्वीप राइद के द्वीपसे मिलाहै लिखाहै कि यहां एक स्त्री राज्यकरती है और इस द्वीप के आस पास एकहज़ार सात सौ द्वीप निकट२ हैं और ये सम्पूर्ण द्वीप उसी स्त्री के आधीन हैं मुबारक़सैरफ़ी के बेटा मूसाने लिखाहै कि मैंने इसद्वीप की आधीश्वरी को देखाहै कि वह तख़्त

पर नंगी शीशपर सुवर्णका क्रीटधरे हुई बैठी थी और इसकी सेवा में चार हज़ार स्त्री अभोगित जिनके मुखारबिन्दु इन्दु के समान वर्त्तमान थीं इस द्वीप में एकप्रकार का वृक्षहै जिसके फलोंसे वाक़ वाक़ शब्द निकलताहै और इसशब्दको वहांकेनिवासी भलीभांति समझते हैं जकरिया के बेटा महम्मद का लेखहै कि इस द्वीप की भूमि अत्यन्त फलदायक है यहांतक कि वहांके वासी अपने घोड़ों की ज़ंजीरें सोनेकी बनाते हैं और बन्दरों की भवँरकली सोने की और कपड़ा भी सोने के तारों से बुनवाते हैं वाक़ वाक़ के वृक्ष का स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर ११५

इस द्वीप में आबनूस का वृक्ष होता है जिसकी प्रत्येक डाली पत्थर के टुकड़ा समान होती है इस वृक्ष के पत्ते हरे होते हैं और जबतक यह वृक्ष पौधा रहता है तबतक इसका रंग श्वेत होता है और पुराना होनेपैकालारंग होजाताहै ॥

इन द्वीपोंमें से एकद्वीप सलाही नामकहै यहां की भूमि आनंद-दायक और रमणीक है जो मनुष्य उसओर जाताहै उसका चित्त वहां से निकलनेको नहींचाहता है यहां के अपूर्व पदार्थों में अंगूर बरात,शहब और शाहनिहां हैं इब्नुलफ़तिया अपनी किताब में लिखताहै कि इसद्वीपका हाकिम प्रतिसंवत चीनवाले बादशाहको भेंट भेजताहै यह बड़ेआश्चर्य्य की बातहै कि जो किसी साल में यहांका हाकिम चीनके आधीश्वर को सोगात न भेजे तो चीन में दुर्भिक्ष होजाताहै और उसवर्ष में वहां अवर्षण होजाताहै उनमेंसे एक नवान नामक द्वीपहै यहां एकजाति के मनुष्य नंगे श्वेत रंग अत्यन्त स्वरूपवान् रहते हैं और बहुधा पहाड़ों की चोटी पर इस डरसे रहते हैं कि कदाचित् उनको कोई स्वरूपवान होनेके कारण पकड़ न लेजाय और ये लोग मनुष्य का मांस खाते हैं और इस पहाड़ के पीछे दो बड़े लम्बे चौड़े द्वीपहैं और उनमें काले रंग के लोग रहतेहैं जिनके शरीर आदनामक जातके से बड़े होते हैं उनके

पांव ऊपर के शरीर की अपेक्षा छोटे एकगज के अनुमान होते हैं और उनके चेहरा लम्बे होते हैं और सम्पूर्ण जाति मनुष्यों का मांस खाते हैं एक द्वीप अनूराननामकहै यहांके अपूर्बपदार्थोंमें गेंड़ा होताहै और एक प्रकार के बन्दर बलवान् और शरीर उनका गदहाके समान होता है कहते हैं कि यहां सिकन्दर जुल्क़रनैन के जहाज़ ठहरे थे उन्होंने इस द्वीपमें एकजाति को देखाथा किजिनके हाथ पैर तो मनुष्योंके से और चेहरा कुत्ता और दूसरे मांसाहारी जीवों के से थे जब ये लोग निकट जा पहुंचे तो वह लोग दृष्टि से छिपगये तो सिकन्दर के साथियों ने जाना कि ये लोग जिनों में से मालूम होतेहैं ईश्वरही इनका हाल जानताहै॥

व्याख्यान अपूर्बजीवों के विषय में॥

इसद्वीपके समुद्र में अपूर्ब आश्चर्य्य के जीव दृष्टिआते हैं उनमें से बहुधा जहाज़ियों से सुननेमें आयाहै कि जब इससमुद्रमें कराल तूफ़ान आताहै तो लहरों में काले २ स्वरूपके मनुष्य चार अथवा पांच बीताके बहुत दृष्टि आते हैं मानों वे छोटेक़दके हबशीहैं बहुधा जहाज़ों पर आजाते हैं परन्तु कुछ हानि नहीं करते और किसी जात के इनमें से ऐसे होते हैं जो जहाज़ों पर चढ़आते हैं जब वायु ठीक होतीहै और जहाज़ कुशलक्षेम चलाजाताहै तो जहाज़ियों के हाथ लोहेके पलटे अम्बर बेचते हैं और अम्बर को अपने मुँह से पकरके जहाज़ों तक पहुंचाजाते हैं और इनका व्योपार उस द्वीप में भी है जहां एक जात ज़ंगियों के समान है और इस जात का नाम महकूईहै और अपने दन्तों से आदिमी की छातीफाड़केखाते हैं उनमें से एक ऐसे काले रंग की जातहै कि जब जहाज़ उनके निकट पहुंचताहै और समुद्र बाढ़पर होताहै तब वहलोग जहाज़ों पर चढ़आते हैं बहुधा सागर के व्योपारियों से सुनने में आता है कि कभी २ समुद्र के भीतर से पक्षियों के समान ऐसा सूर्य्य के सदृश प्रकाश प्रकटहोताहै कि जिसकेदेखनेसे आंखेंचौंधाखातीहैं॥

तसबीर नम्बर ११६

जब यह पक्षी जहाज़ पर आय बैठताहै तो समुद्रकी बाढ़ मिटि-जातीहै और वह पक्षी भी दृष्टिसे लोप होजाता है और उसका जाना कोई नहींजानता और उसका आ बैठना तूफानके समयक्षेम का चिह्न है इसके सिवाय ऐसे जीव द्वीपों में रहते हैं कि जिनके शीश बहुतबड़े और रंग भिन्न २ होते हैं और दांत उनके लाल के समान और उनके दोपर होतेहैं और वे जलचारी जीवोंको भोजन करते हैं इनमेंसे कोई२जीव तो ऐसेहैं जो महाभयानक शब्द उच्चा-रण करते हैं और छःमहीनातक द्वीपमें रहते हैं परन्तु इनका भो-जन नहीं मालूम इनके सिवाय एक मछली ऐसी बड़ी होती है जो दोसौ गजसे भी अधिक लम्बीहोती है जिसकी चपेट से जहाज़ को डरहोता है इसलिये जब कोई जहाज़ निकलता है और जहाज़ि-योंको यह मालूमहुआ कि यहमछली आपहुंची तब पत्थरोंसे मार-ते हैं और पुकार मचाते हैं तो यह भयानक मछली भागजाती है जब यह मछली अपने दोनोंपर खोलती है तो जहाज़ से बड़ी दृष्टि आतीहै बहुधा यह मछली वाक़वाक़ द्वीपके निकट रहती है इसके सिवाय वहां कछुआ ऐसे बड़े २ होतेहैं कि जिनकीपीठ बीस गज़ से अधिक चौड़ी होती है और स्त्री एकबार हज़ार अण्डा देती है इसके सिवाय एकमछली है कि जिस के शरीर पर छिलका नहीं होता केवल पिण्ड मांस और चरबीका होताहै और खूकके समान उसका चेहरा होताहै और स्त्री की भगके तुल्य उस की भग होती है तिसपर रोमभी होतेहैं ॥

इसके सिवाय एक केंकड़ा अर्थात् गेंगटा होताहै जब समुद्र से निकलताहै तो एक गज और एक बीताका पत्थर होजाता है और मर जाताहै उस समय लोग उसको लाके सुर्मामें पीसते हैं इसका गुण बहुतों के निकट मुजर्रब अर्थात् परखाया है एक प्रकार की मछली सीला नामहै यह मछली पकड़ने के उपरान्त दो दिन तक जीतीहै तीसरे दिन मरतीहै उस समय इसको मनुष्य बनाय खाते हैं

और जो पकाने के समय इसको देगमें बिना ढकना खुली पकावें तो आंचनहीं लगती औ न मान्स उसका पकताहै इसके सिवाय हरिशता नाम चिड़िया होतीहै जो कबूतर से कुछेक बड़ी होती है तोहफ़तुलग़रायबकी बातयहहै कि जब यह पक्षी उड़ताहै तो इसके नीचे एक पक्षी करकर नाम भी जल्दी२ उड़ता है और इस आसर में रहताहै कि जो ऊपरका पक्षी बीटकरै तो मैं खाऊं क्योंकि उसका भोजन यहीहै और हरिशता उड़ते समयके सिवाय कभी बीटि नहीं करता और करकरनाम पक्षी उसकी बीटके सिवाय कुछ और नहीं खाता है इसके सिवाय एक दाबतुल मुशकहै यहजीव कुछेक बतक के स्वरूपवत होताहै जबवह समुद्रसे बाहिर निकलताहै तो मनुष्य उसका अहेर करते हैं तब उसका पेट फाड़ के एक प्रकार करकत जिसे मुशक अर्थात् कस्तूरी कहते हैं निकालते हैं उस समय उसमें कई तरहकी सुगन्ध नहीं आती परन्तु हां जब वहांसे दूसरी ठौर लेजाते हैं तो सुगन्ध प्रकट होतीहै इसके सिवाय दरियाई सांपोंमें से एक प्रकारके सांप होतेहैं जो समुद्रसे निकल कर हाथी गाय और भैंसादिको निगल लेतेहैं और वृक्ष और पहाड़ोंसे चिपट कर बल करते हैं जिसमें जो जीवों को वे समूचे लील गयेहैं उनकी हड्डी टूटजायँ और उन हड्डियों के टूटनेकी आवाज बाहिर सुनाई देतीहै और सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ५१०

इसी समुद्र में मरवारी दादि अर्थात् अमोल रत्न पाये जाते हैं बहुधा शोभाय मान अपूर्व २ भांति के जीव दृष्टि आते हैं उनमें से बहुत से जीव तो ऐसे होतेहैं जो दो२ सौ गज़के लम्बे होतेहैं और कोई दोसौ बीताके होते हैं और ये जानवर एक दूसरेको खाजाते हैं इस समुद्रमें सदैव लहरें उठा करतीहैं जो कदाचित् इस ओरको कोई जहाज़ आ निकला तो सदा भँवरमें पड़ा रहता है वहां से निकलना तो असम्भाविहै परन्तु नाख़ुदालोग इसठौरको जानतेहैं जहांतक बश चलता है वहां इस ओरको जहाज़ नहीं चलाते ॥

इस समुद्रकी अन्तवार्ता ॥

एक अपूर्व वार्त्ता इस समुद्र के बिषयमें लिखी जातीहै कि जब ब्योपारी लोग जहाज़ पर सवारहोकर चले तो दैवयोग बायु वेग से चलनेके कारण जहाज़की सूधीराह छूटगई और बायुके झकोरा ने कहीं से कहीं ले डाला परन्तु उस जहाज़ का सरदार अत्यन्त बुद्धिमान था और वह अंधाभीथा इसकी आदतथी कि वह जहाज़ पर रस्सों के ढेरके ढेर लादाकरता था इसपै जहाज़ वाले कहा भी करतेथे कि इसके पलटे जो हमारा असबाब लादलेता तो अच्छा था परन्तु वह नाखुदा इनकी बात नहीं सुनता था निदान एक बार उस तूफ़ान में वह सब लोगों से हरबार यह पूछता था कि आपुलोग क्या देखते हैं तब मल्लाह लोग उत्तर देते कि हमको पहाड़ दिखाई देता है ॥ एकबार लोगों ने एकसंग यह उत्तर दिया कि हमको एक कालापक्षी दृष्टि आता है जो पानीके ऊपर फिरता है यहसुन कपतान मूड़पीटने और रोनेलगा तब सबलोगों ने पूछा कि इसका क्याकारण है तो उसने उत्तरदिया कि कोईदम में तुम्हें मालूम होजायगा ॥ जबतक यहबार्ता कररहेथे कि इत ने में हमारा जहाज़ उसीभवँर में जापड़ा जिसको काला पक्षी समझेथे वे जहाज़ दृष्टिआये जिनके सवार उस भवँरके बीच मारे भूख और प्यासके मरगयेथे ॥ जब हमलोगोंने घबड़ाके अपने प्राणोंसे हाथ धोबैठे तब मुअल्लिम ने हमारी घबड़ाहट को देखके कहा कि हे साहबो जो आपलोग अपने माल में से आधादेउ तो इसजीव घातिनी ठौरसे कुशलक्षेम बचजावो ॥ हमलोगोंने हारमान आधा देनाकहा उससमय उसने अमित रुपैया समुद्रमें डालदिया तो उस रुपैयेके साथही अमित मछलियां इकट्ठीहोगईं तब हमलोगोंने उस शिक्षक (मोअल्लिम) की आज्ञानुसार मृतकोंकी लाशोंको काट२के रस्सोंमेंबांध समुद्रमें एकतरफ़ लटकादिया और एकएकसिरा उन रस्सोंका जहाज़ में बांधदिया तो मछलियों ने उन मांसके टुकड़ोंको निगललिया ॥ उससमय उसशिक्षक की शिक्षानुसार नगारे और

ढोल हमलोग बजानेलगे और एकसाथ हल्ला मचाया और मछलियां भागीं तो मांसवाली रस्सी जो जहाज़में बंधीथी और मांसके टुकड़े थे उनकेपेटमें बस उन्हीं मछलियोंकेसाथ जहाज़भी चला जब उस जीवघातिनी ठौरसे निकलगया तब शिक्षकने कहा कि रस्से काट दो तब इसयत्न से हमलोगों के प्राण बचे और नये से जन्महुआ॥

हिन्दुस्तानका महासागर॥

यह सब समुद्रों से बड़ा और गहरा है इसका हाल कोई नहीं जानता और इसका मेल महासागर घेरनेवाले से प्रकट है और पूर्वके समुद्र के समान नहींहै॥ इस समुद्र में दोआखात हैं उनमें से बड़ा आखातफ़ारसका समुद्र है और छोटा आखात लालसमुद्र है॥ फ़ारसका समुद्र उससे जुदाहोकर उत्तर की तरफ़को जाताहै और लाल समुद्र उससे निकलकर दक्षिण की ओरकी तरफ़ झुका है॥ इब्नुलफकिया कहता है कि हिन्दकासागर फ़ारस के समुद्र से भिन्न है क्योंकि जबसूर्य मीनराशि में अथवा उसके निकटआता है अर्थात् (नौरोज़सुलतानी) जो प्रथम मेषसे प्रयोजनहै तबबड़ेही ज़ोरसे इसमें ज्वार भाटा आते हैं जिसके डर से कोई जहाज़ नहीं चलासकता और यहदशा उस समयतक रहती है कि जबतक सूर्य तुलाराशि में न आयजायँ और जब सूर्य मिथुनराशि में रहता है तब अधिक तूफ़ानका समय है और जब सूर्य कन्याराशिका होता है तो उससमय तूफ़ान कम होजाता है इसलिये जबतक सूर्य फेर मीनका न हो तबतक समय राह चलने के योग्य नहींहोता है निदान उत्तम समय राहचलनेका वह समय है किजब सूर्य बुर्जक़ौस अर्थात् धनराशि का होता है इस समुद्र में जितने अपूर्व और आश्चर्य के पदार्थ और जीव हैं उनका लिखना असम्भावि है॥ परन्तु उनका सूक्ष्म वर्णन होता है॥

व्याख्यान—हिन्दमहासागर के द्वीपोंके विषय में॥

बतलीमूसने कहा है कि समुद्र में बहुत बड़े २ द्वीप हैं और प्रत्येक द्वीपमें इतनी बसगिति है कि उसकी संख्या नहीं होसकती

परन्तु जिन २ द्वीपों में व्योपारियोंका आवागमन है वे प्रसिद्धिहैं उनमें एक द्वीप जो तातोईलनामक है वह राइह द्वीप के पास है इसके विषयमें इब्नुलफ़क़िया लिखताहै कि यहां एकप्रकारके मनुष्य होतेहैं जिनका मुख तो चन्द्रमा के समान चमकता है औरबाल उनके घोड़ेकी पूंछके समान होतेहैं इस द्वीपमें पहाड़ बहुतहैं और प्रात समय वहां से मधुर २ आवाज़ आतीहै और रात्री को भयानक शब्द सुनाई देताहै दरियाई राह चलनेवालों का निश्चयहै कि दज्जाल इसी द्वीपमें रहताहै और इसी ठौर से इसका पतालगता होगा इसठौर लौंगें बिकतीहैं और उनके बिकनेकी यह रीतिहैकि जब सौदागर लोग वहां पहुंचते हैं तब जहाज़ों से अपना २ माल उतार कर किनारेपर ढेरकरते हैं और रातको अपने२ जहाजोंपर जायसोते हैं जब सवेरको जाकरदेखते हैं तब वहां अपने२ मालकी बगलमें लौंगोंके ढेरपाते हैं तो जिसकोमंजूरहुआ वह अपनामाल तो वहींछोड़आया और लौंगें उठालाया और जिसकोलौंगें अपनेमालके पलटे थोड़ीदृष्टिआतीहैं तो मालऔरलौंग दोनोंको वहींछोड़आतेहैं औरदूसरीरातको फिर आसरादेखतेहैं जब प्रातसमय जाकर देखते हैं तोलौंगें और अधिकपातेहैं और जो ब्योपारी लोग अनीतिकरके चाहैं कि अपना माल और लौंगें दोनों लेकर चलदें तो जबतक लौंग अथवालौंगोंकेपलटे अपनामाल नधरदेयँ किनारेपर तबतकजहाज़ चलनहीं सक्ता ब्यापारी लोग कहतेहैं कि एकबार हमने उसद्वीप में थोड़ी वैसके पीलेरंगके मनुष्य कान छिदेहुये तुर्कोंके समान देखे जिनके शीशके बाल लम्बे २ और स्त्रियोंकेसे कपड़ा पहिरेथे वेचट हमारी आंखोंसे छिपगये हमने उनका बहुत साआसरा देखा और बहुत दिन तक वहां ठहरेरहे परन्तु फिर उनमें से हमको दृष्टि न आया और फिर कोई लौंगभी नहींलाया इससे मालूम हुआ कि वे हमारे सामने आना नहीं चाहते तब फिर हारके चलेआये जब फिर कई वर्ष के उपरान्त गये तो फिर यथा पूर्वक लौंगेंपाई लौंगोंका स्वभाव है कि जो वहांखाय तो उसे बुढ़ापा कम ब्यापता है

और यहभी कहते हैं कि यहां के निवासियोंका भोजन गेंगटा और बस्तर अलूफ नाम वृक्ष के पत्ते पहरते हैं और फल उसका खाते हैं और जिस प्रकार गेंगटा उस द्वीप निवासी खाते हैं वह जब तक पानीमें रहता है तब तक तो मांसका रहताहै और जहां पानी से निकला वहां तत्काल पत्थर होजाताहै कहतेहैं कि वही पत्थर पीसके सुर्मा में परताहै और ये लोग मछली, नारियल, लौंग और केला भी खाते हैं एक द्वीप सलामता है वहां कपूर, चन्दन, और सम्बुल अधिक होता है कहते हैं कि इसद्वीप में एक मछली ऐसी होती है कि जो पानीसे निकल के वृक्षोंके फल खाया करतीहै और मेवाके स्वाद में विह्वल हो पृथ्वी पर गिरपड़ती है तो उससमयम-नुष्य उसका अहेर करते हैं तोहफ़तुलग़रायब नाम पुस्तक का ग्रन्थ कार लिखता है कि इस द्वीप में एक महा अपूर्व सोता है जिसमें पानी उबलता है और उसीके निकट एक छेद है उसमें जाता है और जो छींटें उसकी चारों ओर को पड़ती हैं वेही संग ख़ारा हो-जाते हैं परन्तु दिन को तो श्वेत रंगके पत्थर होते हैं और रात को उसका रंग काला होजाता है इसके सिवा एक द्वीप क़सर नामक है यहां एक सफ़ेद महल है जहाज़ वाले जब उसको देखते हैं तो उसको क्षेम और मनमानी बायु का शकुन समझते हैं कहते हैं कि यह महल अतिही बड़ा है परन्तु उसके भीतर का हाल कुछ नहीं मालूम है कहते हैं कि उसमें मृतकोंकी हड्डियां भरी हैं और कहते हैं कि बहुधा अजमके बादशाह इस द्वीप में सेना सहित गए परन्तु ज्योंहीं उस क़सरमें गए त्योंहीं नींदने उनको दबायलिया जो कोई उस क़सरके द्वारपर थे वे इस दशा को देखतेही भाग आये और जो उसके भीतर जा चुके थे विह्वल और अशक्ति होके मर गये॥
(बार्ता) कहते हैं कि सिकन्दररूमी किसीद्वीपमें ऐसे मनुष्यदेखे जिनके शिर तो कुत्तों कैसे और दांत बाहिर निकले हुए थे अन्तको सिकन्दर के जहाज़ से लड़ाई हुई वहां से क़सर का प्रकाश चमका जहांसे इस जातके मनुष्य निकले थे उस समय सिकन्दरने चाहा

कि यहां जहाज़को लंगर करके इस द्वीप की सैर करै परन्तु वह-रामहकी मति नहीं ठहरी और कहा कि जो इस क़सर में जाते हैं वे वहां अचेत होजातेहैं निदान इसमें अपूर्व बस्तु अमित हैं और श्वान बदन मनुष्योंका स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ११८

सुलसा द्वीपके विषय में ॥

तोहफतलुल ग़रायब नाम पुस्तक में लिखाहै कि ये तीनों द्वीप अपूर्व बस्तुओं के विषयमें एक दूसरेसे बढ़कर हैं पहिले द्वीपमें तो रातभर आसमान में बिजली चमका करती है और दूसरे द्वीप में आंधीबड़े वेगसे चला करती है और तीसरे द्वीप में सदैव बर्षा रहा करतीहै एक सीलोन नाम द्वीप आठसौ कोसकाहै मनुष्य कहते हैं कि सरनद्वीप इसी टापूमें है जहां हज़रत आदम (शिव) बैकुण्ठ से आयकेरहेथे और अबतक पूर्वोक्त स्वामी के चरणों के चिह्न इस टापूमें बर्त्तमानहैं सत्य जाननें हारा ईश्वरहै ॥

तसवीर नम्बर ११६

इस द्वीपमें कई बादशाहहैं जो एक दूसरेसे कुछ सम्बन्ध नहीं रखते किन्तु सबस्वीचक्राचारीहैं ये लोग समुद्रकोसलाहिता कहते हैं और यह टापू चीन और हिन्दुस्तान के बीचमें है और इनदोनों देशोंके अपूर्व पदार्थ यहां आतेहैं और यहांकी सौगात जैसे चीनी चन्दन, सम्बुल, लौंग, मजीठादि दूसरे देशों में जाती है इसटापू में रत्नोंकी खानि हैं और इसटापू में एकपहाड़ है जहां अग्निका ढेर है जो रात्रीको प्रकट होती है और दिनको धुआंसा दृष्टि आता है किसीकी सामर्थ्य नहींहोती जो वहां जाय इसटापू में ऐसे मनुष्य बसे हैं जिनके रङ्ग तो सुनहरेहैं और मुखछातीसे मिलाहै यहांतक कि गर्दनका चिह्नभी नहींप्रकटहै इसटापूमें नारियल, केला और ईखादि अधिकत्व से होतीहैं स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर १२०

लीकालूसनामएकटापूहै वहांकेलोग नंगेरहतेहैं औरमछलीखातेहैं

हैं यहांकेलोग व्योपारियोंसे लोहा मोललेतेहैं एकटापू मारनामक है यहबहुत बड़ा औरअत्यन्त घनाबसा है और बहुधा क़िले आदि परिपूर्ण हैं जैसे कि कोई बड़ेशहर की बसगित होतीहै मकान बहुत बड़े२भांति२के इसमें वर्तमानहैं,पहाड़ और वृक्षबहुतहैं ॥ कहते हैं कि यहां एकअजगर अत्यन्त बड़ाथा गौ, भैंस, घोड़ा, ऊंट, आदमी जिसको पाताथा उसको निगलजाताथा जब सिकन्दर रूमी यहां पहुंचा तो वहां के शेष बासियोंने उसके दुःखका समाचार कहा कि हे बादशाह दीर्घआयु इस दुष्टके लिये हमने बारी अर्थात् ओसरी नियत कर रक्खी है इसलिये दो बैल निरन्तर इसको पहुंचाते हैं वह उनके दोहीग्रास करताहै और जो किसी दिन न भेजैं तो गांव की ओर चलनेका अनुमान करता है सो अब तो पशुभी कमहोगये इसलिये हमारा न्याय तेरेहाथहै यह सुन सिकन्दरने दो बैलमांगे उनकी खाल निकाल उसमें चूना गंधक और हरतार भरवाय बैल की सूरत समान सिंवायके आज्ञादी कि इनको नियत ठौरपर पहुंचायआवो ज्योंहीं दोनों धोखेकेबैल उसठौर धरेगये त्योंहींनिकल कर यथा पूर्वक लीलगया ॥

तसवीर नम्बर १२१

पेटमें जातेही अग्नि लगगई और वह मरगया दूसरे दिनजब वह न निकला तो जायके देखा मृतक पाया इस हर्षके समाचार शहरमें पहुंचाये और सिकन्दर के आगेभेंट लेधरी उसीभेंटमें एक जीव खरगोशके सदृश सौगातदियाथा जिसकेसींग तो काले और रंग पीलाथा और जो मान्साहारी जीव उसको देखता वह भाग जाताथा और सूरत उसकी यहहै

तसवीर नम्बर १२२

व्याख्यान उनजीवोंके विषय में जो इस सागरमें मिलते हैं ॥

अजायबुल अख़बार कहता है कि इस समुद्रमें फ्यूलनामी एक पक्षी होता है यह अपने माता पिताको अधिक मानता है जब यह पक्षी वृद्धहोता है तो उसके दोबच्चे उसको उठाकर घोसलामें बैठा

देते हैं और सांझ सबेरे उसकेलिये भोजन पहुंचा देतेहैं ॥ जब यह पक्षी अण्डा देकर सेता है तो चौदह दिनतक जबतक अण्डों से बच्चे न निकलें समुद्र थँभा रहता है इस चौदहदिनके अन्तर को दरियाई लोग शुभ समझते हैं और समुद्र के थँभने से जानजातेहैं कि इस समय वह पक्षी अण्डा सेता है ॥ एक प्रकार की मछली होती है जिसका संपूर्ण अंग तो मछलीकासा होता है केवल मुख मनुष्यकासा होताहै उसके मुखपै थोड़ेदागहोते हैं जो पानीमें दृष्टि आतेहैं इसीपहिचानसे धीमरलोग इसकी अहेरकरतेहैं और बाहिर निकाल उसके अपूर्वस्वरूपको देखिआश्चर्यकरतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १८३

इसके सिवाय एक प्रकार की मछली सदैव अपना मुहँखोले फिरा करती है और मुख खुला रहने के कारण और जीव उसके पेटमें चलेजाते हैं वेही उसका भोजन होजाते हैं ॥ एक प्रकार का जीव ऐसा होता है जिसके नाक से प्रज्वलित अग्नि निकलती है इससे उसके आसपास की घास जलजाती है और एक प्रकारका जीव रात्रीको समुद्र से निकल के उड़ता है मनुष्यों ने उसकानाम उड़नेवाली मछली रक्खा है क्योंकि रातभर चरागाहों में चारा खाया करती है और भानोदय से प्रथम समुद्र में चलीजाती और एक प्रकारकी मछली ऐसीहोती है कि जो उसके पानीसे लिखें तो रात्रीको दृष्टिआताहै परन्तु दिनको दिखाईनहींदेता क्योंकि उसका पानी काग़ज़ही के समान श्वेतहोता है और इस मछली का नाम कारमाही है ॥ एककांटा इसकी पीठपर लम्ब के अनुमान होता है वह अतिही तीक्ष्णहोता है इसके कारण कोई मछली इसकी बराबरी नहीं कर सकती है विदित हो कि समुद्र के अपूर्व आश्चर्य्यक पदार्थोंकी तो मितिनहींहै और मनुष्योंको उसकेमानने में कुछसंदेह होता तो मैं और अधिक लिखता इसलिये इस बर्णन को इतिश्री करनाही उचित है अब ईश्वराधीन जो जीव जलचारी प्रसिद्ध हैं उनका वर्णन कियाजायगा ॥

फ़ारस के समुद्र के विषय में॥

यह हिन्द के सागर की एक खाड़ी है यह समुद्र बहुत शुभ है और समुद्रों की अपेक्षा इसमें तूफ़ानादि का डर बहुत कम है ज़-करिया का बेटा महम्मद लिखता है कि लोगों ने अबदुलगफ्फार शामी से ज्वार भाटा के विषय में प्रश्नकिया तो उसने उत्तरदिया कि बड़े समुद्रों में ज्वार भाटा नित्त नहींआते किन्तु सालमें दोबार एकबार तो पूर्व में उत्तरकीओर छःमहीनातक बढ़ताहै जिस समय बढ़ता है तो चीन में जलका अधिकत्व होता है और पश्चिम में पानी कमहोजाता है और दूसरीबार जाड़ोंमें पश्चिम से दक्षिणको बढ़ता है यहबाढ़ छः२ महीनातक रहती है उससमय पानीकाज़ोर पश्चिमी समुद्रों में हुआ करता है और पूर्व के समुद्रों में जोर कम होजाता है परन्तु फ़ारसके समुद्रका घटाव बढ़ाव चन्द्रमाके ऊपर है और यही दशा हिन्दमहासागर, चीनसमुद्र, और तराबरन्दा की है कि जब इन समुद्रोंमें से किसीके निकट चन्द्रमा होता है तो समुद्र बढ़ने लगता है जिससमय चन्द्रमा मध्यरेखापर पहुंचता है तो समुद्रकीबाढ़का अन्तहोताहै और वहांसेचन्द्रमानीचेकी ओरको झुकता है तो समुद्र भी घटने लगता है यहांतक कि जब चन्द्रमा उस समुद्र के निपट पश्चिम में पहुंचा तो समुद्र में बाढ़ रहतीही नहीं और जब चन्द्रमा फिर पश्चिम की ओरचला तो फिर समुद्र बढ़ने लगता है परन्तु जब चन्द्रमा पृथ्वीके नीचे की ओर जाता है तो बाढ़ निर्बलहोती है और जब चन्द्रमा पृथ्वी के नीचे२ जाताहै तब घटने लगता है॥ जब चन्द्रमा पूर्व से उदयहुआ तो जबतक चन्द्रमा मध्यरेखापर न पहुंचे तबतक बढ़ताहै॥इसकेसिवाय अब-दुलगफ्फार शामी कहता है कि इसके सिवाय चन्द्रमाके घटाव ब-ढ़ाव के अनुसार समुद्र के बढ़ने का एकसमय और है अर्थात् जब महीना की आदि में चन्द्रमा उदयहुआ तो ज्यों२ चन्द्रमा बढ़ता है त्यों२ समुद्र भी उमड़ता चलाआता है (यह लेख महीनाका मुस-ल्मानों का है क्योंकि मुसल्मानों का महीना द्वीजसे लगताहै और

कृष्णपक्ष में प्रतिपदाके दिन समाप्त होताहै) इसप्रकार पूर्णमासी तक चन्द्रमा बढ़ता है उसीप्रकार समुद्र भी दिनप्रति बढ़ता जाता है जब पूनोसे चन्द्रमा घटनेलगा तब समुद्र भी क्रम क्रम से घटता है॥ इब्नुलफकिया ने लिखा है कि फ़ारस के समुद्र में लहरें बहुत उठती हैं उससमय समुद्र में चलना कठिन है और फ़ारसके सागर में लहरें बन्दहोती हैं तो हिन्द महासागर में लहरें उठनेलगती हैं फ़ारस के समुद्र में बाढ़ उससमय होती है जिससमय सूर्य कन्या-राशि का होता है और कर्करेखा के निकट होता है और जब तक सूर्य्य मीनराशि में न जाय तबतक फ़ारसके समुद्र में ऐसीही बाढ़ बनीरहती है और अतिकराल बाढ़ इस समुद्रकी उससमय होतीहै जिससमय सूर्य कौस अर्थात् धनराशि में होता है और जब सूर्य्य मीन से निकल मेषराशिका होता है कि जिससे नौरोज सल्तानी से प्रयोजन है उससमय बाढ़ कमहोती है और जल ठहरजाता है उत्तम समय इस समुद्र के चुपहोनेका वह है कि जब सूर्य मिथुन-राशिका होता है॥ अबदुल्लाचीनी कहता है कि ईश्वर ने इस फ़ा-रसही के समुद्र को घटना बढ़ना दिया है क्योंकि यह समुद्र ८० अस्सीगज गहरा है और इसके मुहरों में अक़ीक़ और याक़ूत— और सोने, और चांदी, लोहे, तांबे की खान भी हैं और बर्णर की सुगन्धिक वस्तु भी इस में उत्पन्न होती हैं इस समुद्र में जो भवँर उठता है तो उसमें से जहाज़ किसीभांति कुशलक्षेम नहीं निकल सक्ता परन्तु हां जो ईश्वरही कुछ दयादृष्टि करे तब बेड़ा पार हो॥ इससमुद्र में नानावर्ण और स्वरूप के अपूर्व जीव हैं जिनका वर्णन ईश्वरने चाहा तो बहुत शीघ्र कियाजाता है॥

व्याख्यान फ़ारस समुद्र के टापुओं के विषयमें॥

इस समुद्र के बहुधा टापूबसे हैं और व्योपारियोंकाभी आवा-गमन है॥ इन टापुओं में से जैसे टापू क़तीस, हुरमुज़, बारक, दिलारक, खज़ीव, और इन्द्रावी आदि के आबाद और व्योपार की जगहहैं जो इनका ब्योरावार समाचार लिखाजाय तो पुस्तक बड़ी

हुई जाती है ॥ इनमें से एक खरकनाम टापू है जिसमें हज़रतइमा महम्मदइनाफ़ा की जिसपै ईश्वर प्रसन्नहो क़बर है ॥ कहते हैं कि इसी टापू में मोती निकालेजाते हैं और वह मोती निकलता है जिसको दुरयतीम अर्थात् एकाकी मोतीकहते हैं और यहभी कहते हैं कि जिन समुद्रोंका मेल इससे है उनकेसिवा और मोतीकीसीपी कहीं नहीं उत्पन्नहोती जब रवी अर्थात् बसन्तऋतु आती है और आंधी वेगसे चलती है उससमय समुद्रमें लहरें उठती हैं तब समुद्र की छींटें उड़ने लगती हैं और उनछींटोंकी बूंदें लज़ब जल अर्थात् मिलीहोती है तो यहरीति है कि वे छींटें सीपमेंपरतीहैं तो वे मोती होतेहैं और सीपी उनबूंदोंकोबीर्यकेसमान अपनेपेटमें रखलेतीहैंसो कभी तो ऐसाहोताहै कि उत्तमसुडौल बड़ामोती मिलताहै औरकभी छोटे२ इसकाकारण यहहै कि जब सीपकेमुखमेंये छींटेंपरतीहैं तो उसको ग्रासकेसमान मालूम होते हैं फिर सीपीवायुनसीम अर्थात् प्रातसमयकी बायुकेसमय अथवा सूर्य्यके उदयास्तके समय समुद्रके किनारेपरआतीहै और दोपहरकेसमय सूर्यकीगर्मीकेकारण किनारे परनहीं आती उस समय सीपी बायु लेने को अपनामुख खोलतीहै तो उत्तरकी बायुके प्रभावसे वे पानीकी बूंदें जो उसके पेटमेंहैं जमके मोती होजातेहैं जो सीपीकामुख मीठे पानीसे भराहोताहै तो मोती साफ चिकना सुडौल और चमकदार होताहै और जो कुछ भी उस में खारी पानीका मेलहुआ तो अवश्य रंग रूपमें कुछ न कुछ भेद होताहै अर्थात् पीला अथवा काला रंग होताहै जिससमय सीपी के पेटमें बूंद जमकर मोती होजाताहै तो सीपी समुद्र की जमीन पै जाके पत्थरोंमें चिपक रहतीहै जबवहां मनुष्य मोती पातेहैं तो बहुत प्रसन्न होते हैं और जीवकी लोग गोता मार२ के सीपी को पत्थर से बड़ी कठिनता से अलग करते हैं किस हेतु से कि वह पत्थर से इस प्रकार चिपक जातीहै कि मानों पत्थर का अंगही होजाती है जो मोती सीपीमें जमने से थोड़ी देरके पीछे निकालतेहैं तो वे मोती अच्छे चमकदार होते हैं और जो कुछ दिनों पीछे निकाले जाते हैं

तो उन मोतियोंका रंग मैला होताहै इसकेसिवाय एकटापू हवाली जाशक नाम कतीस टापू के निकट है यहां के निवासी दरियाई लड़ाई में बहुत जल्दबाज होते हैं और तूफ़ानके समयमें स्थिरचित्त होतेहैं और नाव चलाने और समुद्र सम्बन्धी कामों में बड़े चतुर और सार विद्यामें बड़े प्रवीणहोतेहैं शहर क़ब्रसके निवासी कहते हैं कि अगले बादशाहोंमें से किसीने लौंड़ी सौगात की रीति से जहाज़ पै सवार करके इस ओरको भेजीथी दैवयोग वे जहाज़ इस टापू जाशक में ठहरीं और लौंड़ियां जहाज़ों से उतरके जीव बह-लानेके लिये यहां वहां फिरने लगीं कि इतने में जिन लोग उन लौंड़ियों को पकरलाये और उनके साथ रतिकी उनसे इस जातके लोग पैदाहुये इसी कारण ये लोग चपल और शूरबीर होतेहैं और कहतेहैं कि ये लोग जलमें ऐसेशीघ्र चलतेहैं जैसे कोई थलमें चलता है इसके सिवाय एक टापूकैद दिलावरी और मन्दर शिकम ये टापू फ़ारसके समुद्रमें हैं इसटापूमें अम्बर आशहब और स्याहनिकलता है और बहुधा फिरने वालों से सुनाहै कि अम्बर इस समुद्रके पैंदी में होताहै जैसे किसी धरतीमें क़तरान होताहै और अम्बर श्वेत और काला होताहै जब समुद्र में अतिही वेगसे लहरें उठती हैं तो उन लहरों के साथ पत्थरादि समुद्रके बाहिर चलेआते हैं उनमें यह अम्बर चपटा होताहै कभी ऐसा भी होताहै कि बड़ीमछली अम्बरको खा जातीहै तो चट मरजाती है॥

व्याख्यान अद्भुत जीवों के विषय में॥

इस समुद्रमें अद्भुत जीवोंमें से एक प्रकारकी मछली होतीहै जो ज्वार भाटा बन्द होनेके उपरान्त पानीपर प्रकट होती है अबूरेहां ख़्वारज़िमीने अपनी किताबमें लिखाहै कि इस मछलीको आसार वाक़िया कहतेहैं लिखाहै कि क़ानूनसानी (मुसल्मानों के महीना कानाम) कि तेरहवीं तारीख़को समुद्र में लहरें उठतीहैं तो फ़ारस और असकन्दरिया की ओरको पानी जाताहै और यह हाल कुछ दिन नियत तक रहताहै और हवा बन्द और अँध्यारा होजाता है

इस समय में जहाज़ और नावों को लंगरकी ठौरपे बाँध रखते हैं लिखाहै कि ऐसी एक प्रकार की बायुहै जो समुद्र के भीतर प्रवेश करके समुद्र को उफलाती है और इसका समाधान इससमुद्रके चलविचलसे होताहै एकप्रकारकी मछलीहै वह कभी तो एकदिनपहिले और कभी एकदिन पीछे प्रकट होतीहै इसकेसिवाय अस्तूर,ख़राफ़ और परस्तौज ये मछलियों के नाम हैं जो साल में एक नियत समयपानीपर प्रकटहोतीहैं और कभी२ ऐसाभी होताहै कि वे कुछ दिनतक पानी पै बनी भी रहती हैं और बसरा के निवासी इनके आने जानेके समयको जानतेहैं॥ हाफ़िज़को निश्चयहै कि बसरा देशकी दजलानदीमें नानावर्ण की मछलियां दृष्टि आतीहैं जो परस्तौज और अस्तूरके सदृशहैं और कारण यहहै कि जब मछलियां खारी पानीपीते २ अकुतायजाती हैं तो नदीमें मीठा पानी पीनेको आतीहैं जैसे ऊंट खिला (एकप्रकारकी घास) खाते खाते दिक हो जाताहै तो उसका चित्त चलताहै हमज़ खानेको जो एक प्रकारका खारी चारा है जो बनस्पति से अधिक करुआ होता है जैसे दमस असल और तुर्फा अरब देशीय कहतेहैं खिला तो रोटीके समान है और झाऊ मेवाकी ठौरहै इसलिये जैसे ऊंट खिला घासको खाते२ ऊँक जाताहै तो झाऊ खानेकी इच्छा करता है तैसेही जब मछलियां खारी पानी पीते२ ऊँकतीहैं तो नदीमें मीठा पानी पीनेको आतीहैं निदान खारीपानी मछलियों के लिये रोटीकी ठौर है और मीठापानी मेवाकी ठौरहै बसरा निवासी कहतेहैं कि इस प्रकारकी मछलियां बसरामें सालमें दो बार आती हैं जब दो महीना बीतते हैं तब पहिली आई मछली लौटती हैं और उनके पलटे दूसरे तौर की मछली आतीहैं इसकेसिवाय एकप्रकार परस्तौजकी जातिकीमछली जंग शहरकी ओरसे आती हैं और दजलाके मीठे पानीमें परती हैं जंग के निवासी इस मछली को भली भाँति जानते हैं और कहते हैं कि धीमर लोग परस्तौज मछलीको छोड़ बसरा और जंगके बीच में और किसी दूसरी मछलीकी अहेर नहीं करते हैं दरियाई लोग

कहते हैं कि जिस समय बसरामें परस्तौज मछली आतीहै तो उस समय इस प्रकार की मछली का जंग में चिह्नभी नहीं मिलता है और इसी प्रकार जब बसरासे जंगकी ओर जाती हैं तब बसरामें इस प्रकार की मछली का चिह्न नहीं मिलता है इसकेसिवा एक प्रकारकी कोसज नाम मछलीहोतीहै यहमछली पानीमें इसरीतिसे शिकार खेलती है जैसे बाघ पृथ्वीपै अहेर करता है जीवोंको अपने दांतोंसे इस प्रकार काटती है जैसे किसी पहलवानके हाथसे तर-वार का वार परताहै और लम्बाईमें यह एक अथवा दोगज़कीहोती है इसके दांत आदमी के दांतोंकेसमान होतेहैं और इसमछली को देखसम्पूर्णमछली भागतीहैं जो कहीं बड़ीमछलीको पाजाती है तो टुकड़ा२करडालतीहै और जो कहींमनुष्यकोपाजातीहै तो उसकोभी टुकर२ कर डालती है यह बड़ी बला है इस नदीमें यह मछली ऐसी है जैसे नील नाम नदी नाक महाकाल हैं किसी समय बसरा की नदी दजलामें इसमछलीकी बहुतज़ात होती हैं॥ और मछलियोंकी ज़ातोंमें से,रत्यान,ज़क्र,ज़ाल और कूयज़ज भी हैं इन मछलियों के आनेके समय नियत हैं उस समय मनुष्य इनका आसरा देखते हैं इसकेसिवाय एकप्रकारका जीव अजगरहोता है जिसको मारकहते हैं यह कोसजसे भी दुष्टहोता है इस जीवके दांत मांसाहारीजीवों केसे होतेहैं और शरीर इसका छोहारेके वृक्षके समान होता है और दोनोंआंखें इसकीरक्तरंग होतीहैं और स्वरूप अत्यंत भयंकर होता है और सम्पूर्ण जलचारीजीव इस दुष्टसे भागते हैं॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १९४

इसके सिवाय एकप्रकारकी मछली हरेरंगकी एक गज़से अधिक लम्बी और पूंछ उसकी एक गज़से कुछेक कम आराके समानहोती है यह मछली अपने पूंछसे जीवों को घायल करदेती है अजायबुल मख़लूक़ात के ग्रंथ करताने इस मछलीको एक टापूमें देखाहै अहि-रिया इसका अहेर करते हैं और बाज़ारों में पुकारके बेचते हैं और स्वरूप इसका यह है॥

तसवीर नम्बर १२५

इसके सिवाय एक मछली मदूर ढाल के सदृश होती है उसकी पूछ तीन गज़से अधिक लम्बी होती है मानो उसकी पूंछ सांपकी सूरत होती है उसकी पूंछके बीच एक कांटा लाल के रंग समान होता है और इस मछलीके सम्पूर्ण शरीर में काले और श्वेत बुंदे होते हैं और इसकी पीठपै नाक और पेटके नीचे मुँह होता है और इसकी भग स्त्री की भगके सदृश होती है॥ स्वरूप उसका यहहै॥

तसवीर नम्बर १२६

अब हम इस समुद्र के अद्भुत जीवोंके वृत्तांत के अन्तमें वह वृत्तांत लिखते हैं जो तोहफतुलगरायबके ग्रंथ करताने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मुझसे एक अस्फ़हान के निवासीने कहाकि मैं ऋणी था और कुटुम्ब की फ़िकरसे नाकय आय रहा था निदान देश छोड़ देश विदेश फिरते २ अन्त को दरियाई सफ़र पै कमर बांधी दैवयोग हमारा जहाज़ एक दर्दूर नाम भवँर में जाफँसा और यह दर्दूर फ़ारसके समुद्रमें अधिक प्रसिद्ध है तब शिक्षकने कहाकि यह भवँर अति कराल है इस्में से जहाज़ का निकलना अति कठिन है यहसुन मल्लाहोंने कहाकि हे शिक्षक ईश्वर के लिये जो तुझे कोई यत्न मालूम हो तो बताव देख हम ऐसी जीव घातवी ठौरमें फँसे हैं यह सुन शिक्षकनेकहा कि हां एक बात कहता हूं कि जो एक कोई सब मनुष्योंके लिये अपने प्राण देनेको उद्यतहो तो निस्संदेह कोई न कोई यत्न निकाली जावे तब मैंने उद्यतहो अपनी प्रसन्नता प्रकट की और कहाकि तेरी क्या मति है तब शिक्षकने कहा कि इसटापूमें जो इस भवँरके निकट तीन दिनकी राह पैहै वहां जाके ढोल बजाव और रात दिनमें कभी बन्दन करना निदान शिक्षकने मुझे कुछदिन केलिये भोजनदिये और मैंने उसटापूमें ढोल बजानेको आरम्भ किया तो मैंने देखा कि जहाज़ चला और चलते२ मेरी दृष्टिके बाहिर होगया तो मुझे घबड़ाहटहुई इतने में मुझे एक ऐसा बड़ा वृक्ष दृष्टि आया कि मैंने कभी अपने जीतेजी नहींदेखा और उसवृक्षकी चो-

टी तख़्तके समान चौड़ी थी जब सूर्य्यास्त हुआ तो क्या देखा कि एक अति बड़ा पक्षी श्वेतरंग उस वृक्ष पै आबैठा उसको देखके मैं बहुत डरा और वहांसे दूरजाबैठा इसी शोचमें रात बीती प्रातःकाल होते वह पक्षी उस वृक्षसे उड़गया इसी प्रकार जब दूसरे दिन संध्या समय जब वह पक्षी फिर आयबैठा तो मैं अपने प्राण होमके उसके सन्मुख जाखड़ा हुआ परन्तु उसने मेरी ओर न देखा और सबेरे उड़गया जब फिर तीसरी संध्याको वह पक्षी आयके बैठा तो मैं फिर उसके पास जाय के जीकड़ा किये बैठारहा जब उस पक्षीने उड़नेके लिये पर खोले तो मैंने उसकी टांगें पकड़ली और वह पक्षी उड़ा तो इतना ऊंचा गया कि सम्पूर्ण पृथ्वी मुझको पानीके हौज़के समान दृष्टि आने लगी उस समय मैं अत्यंत घबड़ाया था और मारे डरकेउसकी टांगेंमेरे हाथोंसे छूटी जाती थीं इतने में एक संग आबादी और मकानोंकेचिह्नप्रकटहुये और वहपक्षी उसओरको झुका और पृथ्वीपर पहुंचा मुझको वहां उतार के वह फिर उड़ गया वहां के मनुष्यों ने मुझको देखके आश्चर्य्य किया और वे मुझको अपने बादशाहके पासलेगये बादशाहने एक मनुष्य को जो हमारी भाषा समझता था आज्ञादी कि इसका हाल पूछ उसके पूछनेपर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत कहसुनाया वह यह सुनके प्रसन्नहुआ और मुझको द्रव्यदी बादशाहकी आज्ञानुसार मैं वहां कुछदिन रहा इतने में मेरा जहाज़ मेरे बिछुरे मित्रों सहित वहां आपहुंचा जबउन्होंने मुझसे वृत्तांत पूछा तो मैंने सम्पूर्ण बार्त्ता कह सुनाई और उस पक्षीका स्वरूप यह है ॥

तसबीर नम्बर १६०

लाल समुद्र ॥

यह समुद्र हिन्दमहासागर की खाड़ी है इसके दक्षिणी कनारों के शहरोंमें बरबर और यश है और पश्चिम के कनारों पै अरब के शहर हैं और पूरबके कनारों पै यमनके शहर हैं कुलज़ुम एकशहर का नामहै जो इसके कनारेपर स्थित है इसी कारण इससमुद्र का

भी नाम कुलजुम रक्खा गया इसकाघटाव बढ़ाव और लहरें हिं-
दके सागरके समान हैं इसलिये दूसरी बार वर्णन नहीं किया यह
वही दरिया है जिस्में फ़रऊंनको ईश्वरने बोरा है इसके और यमन
के दरिया के बीचमें एक पहाड़ है और इसी पहाड़को कारण यमन
समुद्रकी बाढ़से यमनके शहरका कुछ नुक़्सान नहीं होता किसी२
बादशाहने इसका पानी निकालने के लिये पहाड़ को काटा परंतु
पानी ऐसे वेग से निकला कि बहुधा यमन के लोग मर गये और
जद्दा,तबा,और मदीनशरीफके निवासमें होकर निकला है और हि-
न्दसागर और जंग और फ़ारसके सागरके बीचमें है॥

व्याख्यान इस सागर के टापुओं के विषय में॥

इस सागर के बहुधा टापू खराब हैं और व्योपारियों का उस
ओर को आवागमन नहीं है और संसार में कुछ प्रसिद्ध भी नहीं
हैं इसका एक टापू आमिलाके निकटहै उसमें कुछेक बसगित है प-
रन्तु यहांके निवासी दीन और दुःखी हैं और यहांके निवासियोंकी
जात का नाम बनोहसद है और भोजन उनका केवल मछली है
खेती किसी प्रकार की नहीं करना जानते इस टापू में मीठा पानी
नहीं होता इनके निवासके घर टूटे फूटे और नावें डोंगी हैं जो कोई
इस ओरसे जानिकलता है तो उससे भोजन और पानी मांगते हैं
इस टापूके निकट दो पहाड़ोंके बीच एक बड़े जीव घातिक भवँरकी
ठौर है और जब वायु चलती है तो भवँर दोनोंओर को सीधा हो-
जाता है और जो नौका इसके बीच पड़जाती है तो तत्काल उलट
जाती है इस टापू का विस्तार छः मील का है कहते हैं कि फ़रऊंन
ठीक इसीठौर अपनी सेनासहित डूबा था इसीमेंसे एकटापू जसा-
सा नामहै और जसासा एक जीवका भी नामहै जो दज्जाल को
समाचारदिया करताहै कहतेहैं कि दज्जाल इसी टापूसे निकलेगा
शईने क़ैसकी बेटी फातमाका कहाहै कि असरकी नमाज़के उपरांत
हज़रत महम्मद हमारे पास आये और खुतबा अर्थात् पढ़के कहा
कि हम प्रीतिके कारण तुमको इकट्ठा नहीं करते यह न जानना

चाहिये कि डरदेनेके लिये इकट्ठा नहींकरते इस समय हम तुमको एकहदीस अर्थात् उपदेश सुनानेको इकट्ठा करतेहैं जो इतीमुद्दारी ने मुझसे वर्णन कियाहै उसने मुझसे यह कहा कि एक यूथ हमारी जातिका इस सागरपर पहुंचा तो एकाएक बायु वेग से चली और इनकी नौकाको टापूमें लेडाला वहां एकदावह को देखा तो उससे पूछा कि तूकौनहै उसने उत्तरदिया कि मैं जसासाहूं यहसुन उन्हों-ने उससे कहा कि हमको टापूके समाचार बता उसने कहा कि जो तुम समाचार चाहतेहो तो टापूमें जाओ वहां तुम्हारे मिलनेकी एक पुरुष आशा कियेहै निदान ये लोग उसके पास गयेतो उसने पूछा कि कहांसे आतेहो तब इन्होंने अपनासम्पूर्ण समाचार कहसुनाया तब उसने पूंछा कि दरियाय तबरियाके समाचार कहो इन्होंने उत्तरदिया कि वह जोश में है जब उसने अमान के नखल वृक्ष के समाचार पूछे तो इन्हों ने कहा कि उसके फल अमान के निवासी खातेहैं फिर उसने पूछा कि दरियारार का क्या हालहै इन्हों ने उत्तरदिया कि उसकापानी वहांकेनिवासी खरचकरतेहैं तब उसने उत्तरदिया कि जबदरिया सूखेगा तो हम आमिराकी सम्पूर्ण धरती को मक्का और मदीनाके सिवाय अपने आधीन करलेंगे पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ चुम्बकहै यह लोहेको अपनी ओर खींचताहै इसकारण जो जहाज़ उस ओर को आते हैं उनमें लोहेकी एककील भी नहीं होती (ब्याख्यान) जो जीव मुख्य इस सागरमें हैं उनका वर्णन किया जाताहै क्योंकि जो जीव इसमें हैं और वहीं दूसरों में भी हैं उनका वर्णन वृथाहै उन जीवोंमें से एक मछली ऐसी होतीहै कि जिसकी पूंछके चपेटासे जहाज़ डूबजाताहै यहमछली दोसौ गज़की हुआ करतीहै और उसके शरीरपै चित्रकारी होतीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १२८

उनमें से एक मछली है जिसको अहेर करते हैं और सुखा के धररखतेहैं और सूखने के समय उसकाअंग रुईके मलुआके समान

होजाता है उसको मनुष्य कातके अत्यन्त मौलिक बस्त्र बनाते हैं और नाम उस कपड़ाका सूबसमकीहै सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर १२६

उनमें से एक मछली एक गज़की लम्बी होती है उसका बदन उल्लूकासा होताहै और सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर १३०

एकमछली बीसगज़की लम्बीहोतीहै उसकेपेटमें एकहज़ार अण्डा होते हैं और एक मछली ऐसीहोती है कि उसका बदन गायकासा होता है वह बच्चे जनती है और अपने बच्चोंको दूध पिलाती है॥

जंग का सागर॥

यह तद्रूप हिन्दसागर के है जंगकादेश इस सागर से दक्षिणमें सुहेल के नीचे है जो मनुष्य इस सागर में सवारहोता है तो वह दक्षिण ध्रुव को देखता है और सुहेल भी भलीभांति दृष्टिआता है और उत्तरध्रुव किसीभांति नहीं दृष्टिआता इससागर के किनारेपै बरबर के शहर हैं और यहां हबशियों की जाति बसती है॥ इस सागर की सीमा महासागर से मिली हुई है इस सागर की लहरें बड़ी कराल और पहाड़ के समान ऊंची होती हैं और दूसरे सागरों के विपरीति इसकी लहरें कभी कम नहींहोती हैं और इस समुद्र में कभी फेना नहीं उठताहै और इसकी लहरों का शब्दाघात ऐसा होताहै कि हे ईश्वर इस समुद्र में टापू बहुधा बड़े२ हैं और उनमें वृक्षभी बहुतहैं परन्तु फलवालेकोईनहींहैं उनमेंआबनूस चंदनक़ना और साजके वृक्ष बहुतहैं और इससमुद्रके किनारे अंबरमिलता है॥

व्याख्यान इस समुद्र के टापुओं के विषय में॥

इन टापुओं मेंसे एकटापू महरकाहै यह बड़ाहै और यह टापू ऐसे ठौर पर है कि उस तरफ़ को मनुष्य कम जाते हैं किसी २ व्योपारियों से सुना है कि एकबार हमलोग सवार हुये हमारा जहाज़ बहकर इस टापू में पहुँचा वहां हमने वासियों की संख्या बहुत देखी हम वहां कुछदिन तक रहे वहां के निवासियों की भाषा

सीखी और सबसे मिले तो एकरात्रि को देखा कि वे सब इकट्ठे होके उसतारे को देखते हैं जो उसटापू में उदय होताहै बस उस तारे को देखतेही सबलोग रोदन करनेलगे जब हमने उससे पूंछा कि यह क्या कारणहै तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब तीस वर्ष उपरान्त यहतारा उदय होताहै तो जितनी वस्तु इसटापू में होती है वह सब जलके राख होजातीहैं यह कहकर अपनी नावें तय्यार कीं और जो वस्तु हलकी लैचलनेवालीथीं और उनका बोझा नाव पर लादसकते थे लादके नावोंपर सवारहो दूसरी ओर दूरचलेगये जब उसका समय बीतगया तो आये तब जो चीज़ें वहां छोड़गयेथे वह सब राख पाईं निदान उनलोगों ने नए सिरेसे अपने मकान बनायें और अपना२काम करनेलगे इनमें से एकटापू सुसानामकहै वह जंगके शहरोंसे बहुत मिलाभया है बहुधा व्योपारियोंसे सुनाहै कि इसटापू में एकशहर श्वेतपत्थरोंकाहै उससे आवाज़ सुनाईदेती है इसीकारण इस नामसे यह टापू प्रसिद्ध हुआहै यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि वहां कोई मनुष्य नहींहै बहुधा व्योपारीलोग यहां आ केमीठा पीनापीते हैं यहांका पानी अत्यन्त मीठाहै और इस टापूकी सीमाकिसीकोनहीं मालूमहै परन्तु हां इतना तो मालूम है कि इस टापूमें एकपहाड़ बहुत बड़ाहै और उसमें से भयानक शब्द सुनाई देते हैं कहतेहैं कि यह शब्द वहां के निवासियोंका कालका कारण है इसपहाड़के आसपास एक सांपहै जो वर्ष में एकबार निकलताहै और जंगके बादशाह इसको बड़ेयत्नसे पकड़ते हैं और सिवाय उनके ख़ज़ानेके कहीं नहीं मिलता इस सांप में बड़े २ गुणहोते हैं प्रथम तो यह गुणहै कि जो कोई बादशाह इसकी चरबीको अपने शरीर में मले तो उसको ताक़त और डर अधिक होता है और उसका चित्त सदैव प्रसन्न रहताहै और दूसरा गुण यहहै कि जिस किसी कोसल रोगहोतो उसकी खाल पर बैठे तो रोगशान्त होजाय हि-न्दुस्तान में इसकी खाल बहुत कम मिलती है और जो मिली तो बहुत दामदेने परतेहैं जंगके बादशाह इसके शिकार खेलनेकी बहुत

यत्न किया करतेहैं तबभी कभी २ हाथ लगताहै एक टापू ऐसा है जिसके बिषय में इस हक़सराज के बेटे याक़ूब ने लिखाहै कि मैंने एक रूमके निवासीको देखा कि उसकेमुखपैनखसे नोचनेके चिह्न बनेहैं जब मैंने उससे पूंछा तो उसने कहा कि मैं जहाज़ परसवार था दैवयोग वह जहाज़ तूफ़ान में आयके फटगया मैं उसके एक तख़्तापर रहगया अन्तको वह तख़्ता लहरोंके झकोरोंसे एकटापू में जा पहुंचा वहां ऐसे मनुष्य थे कि जिनका शरीर एक गज़का होगा और नखसिख से नंगेथे वे मुझको पकड़के अपने बादशाह के पास लेगये उसने मुझेक़ैद करनेकी आज्ञादी उन्होंने मुझे एक पिँजरामें बन्दकिया मैं उस पिँजराको तोड़के बाहिर निकल आया तो उन्होंने मुझे नहींसताया किन्तु स्वतंत्र रहने दिया फिर उनसे और मुझसे बहुत मेल होगया तो एक दिन क्या देखताहूं कि वे लोग लड़ाईके लिये उद्यत होरहेहैं जब मैंने उनसे कारणपूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि एक हमारा शत्रु आताहै उसीसे लड़नेकी तय्यारी कररहे हैं यह कहहीरहेथे कि इतनेमें एकझुण्ड ग़रानीका जो एक प्रकारके जंगी पक्षी होतेहैं आ पहुंचा वे पक्षी इनकोकाना कर डालतेथे जब मैंने उनका अधिक घबड़ाना देखा तो मैंने एक लाठी उठाके उनको मारने लगा इतनेमें उन्होंने भी अपने पंजोंसे घायल किया और मेरे मुखपै उन्हींके पंजोंके चिह्नहैं अन्तको मैंहीं जीता और पक्षी उड़गये उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया तिसउपरांत मैंने उनसे दो तख़्तलिये उनको वृक्षोंकी डालोंमें बांधनौकासमान बनाया और कुछथोड़ा अन्नजल रास्ताके लियेलिया ईश्वरने मुझे रूममें पहुंचा दिया इस कथानक को अरस्तातालीसने पुष्ट किया है और अपनी किताबहैवामें लिखाहै कि जब नीलनदी बढ़ती है तो ग़रानीक नाम पक्षी ख़ुरासानसे मिश्रकी तरफ़ जाके उन लोगों से लड़ते हैं जिनका शरीर एक गज़का होताहै एक टापू सकसार नामकहै इसके बिषय में असहफ़सराज के बेटे याक़ूब ने लिखा है कि एक मनुष्य ने मुझसे वर्णन किया कि मैं एक नौकापर सवार

होकर चला तो वायु ने ऐसेटापू में पहुंचाया कि जहां कोई मनुष्य नहींजाता॥ वहां मेरेसामने एकझुण्ड ऐसे मनुष्योंकाआया जिनका मुखकुत्तेकाथा और सम्पूर्ण अंग मनुष्यकासा स्वरूप उनकायहहै॥

तसवीर नम्बर १३१

निदान ये लोग मेरे सामने आय खड़ेहुये और उनमें से एकने मेरेनिकट आय एक लकड़ीलेकर मुझे बकरियोंकी भांति हांका और एक ऐसे मकान में लेगये जहां बहुतसे मनुष्य बन्दथे वहीं मुझे भी बन्दकिया अब यह नित्त नियत किया कि हमको जंगल की मेवा लायके खवावें इतनेमें एकदूसरे मनुष्यने जो हमारेसाथक़ैदथा उस ने कहा कि ये इसलिये मेवा खवाते हैं जिसमें मोटे होजायँ तब ये जंगली हमको क्रमक्रमसे कवाबबनाकर खायँगे यह वृत्तान्त सुन मैं तो थोड़ा खानेलगा और जो मेरे साथी खाय खाय के मोटेहुये थे उनको वे खायगये और मैं कमखाने के कारण अति तनुक्षीण हो-गयाथा सो मुझे उन्होंने खानेपीने के लिये स्वतन्त्र छोड़दिया था और दूसरा मनुष्य जिसने मुझे बताया था सोभी अतिबीमारहोने के कारण खानेसे बचरहाथा एकदिन उसमनुष्य ने मुझसे कहा कि इनलोगों की यहां एक ईदहोती है उसदिन ये लोग बाहिरजाते हैं और वहां तीनदिन तक रहते हैं इसलिये जो तू अपना छुटकारा चाहताहै तो इसका यत्नकर और मैं तो बीमारहोनेके कारण कहीं जा नहींसक्ता परन्तु इतना जानले कि ये लोग बड़ेदौड़नेवालेहोते हैं और मनुष्य की बासको शीघ्रसे सूंघतेहैं परन्तु हां इतनाहै कि जो मनुष्य कदानाम वृक्षकेनीचे पहुँचजाताहै तो इनकेडरसे निर्भय हो-जाताहै परन्तु वह वृक्ष यहांसे दूर बहुत है॥ मैंने तो यहसुन चट उसीदिन अपनीराहली और रातदिनदौड़ा और उनजंगलियोंने भी मेरापीछा किया मैं मारा मारा गिरता परता कदा नामक वृक्षके नीचेआया वहां मुझेदेख अपनासा मुहँलगाके लौटगये॥ जब मुझे उनसे छुट्टीमिली तो मैं उसटापू में जहांतहां फिरनेलगा॥ इतने में मैंनेदेखा कि एकबड़ावृक्ष मेवासे लदाहै और उसके नीचे बहुतसे

सुन्दर स्वरूपवान् मनुष्यबैठेहैं यहदेख मैं उनकेपास जाबैठा परंतु न तो उनकीबातें मेरीसमझ में आतीथीं और न मेरीभाषा वे समझते थे, इतने में उनमें से एकमनुष्य मेरी गर्दन पै हाथ धरके मेरे ऊपर सवार होलिया और अपने पैरों को मेरी गर्दन में लपेट मुझे चलनेकी सैनबताई मैंने तो चाहा कि किसीबहानेसे इसकोगिरादूं परन्तु उसने ज़ोर से एक थप्पर मारा मानो वे लोग देखने में तो मनुष्यका स्वरूप थे परन्तु उनकीटांगोंमें हड्डी न थी इसीसे वेलोग चल फिर नहींसक्तेथे निदान वह मुझे अपनीसवारी में पाकर वृक्षों केनीचे फिरनेलगा और वृक्षकेफल अपनेमित्रोंकोदेताथा वे खातेथे और हँसतेथे दैवयोगसे वृक्षकीडाली उसकीआंखोंमें लगी सो दोनों आंखें अंधीहोगईं तब मैंने अंगूरका गुच्छानिचोरके उसे पीनेकेलिये सैनदी उसने उस शराबको पिया तो उसके मदमें होनेसे उसकेपैर ढीलेपरे तब मैंने उसको गिरादिया और जो मेरेमुखपै चिह्नहैं सो उसके नखोंके हैं जो उसने मेरे तमाचा मारा था॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १३२

व्याख्यान इस सागर के जीवों के विषय में॥

एक प्रकारकी मछली मन्शार नाम होती है कोई २ व्योपारी ने कहा है कि हमने उसको पहाड़ के समान देखा है और मूड़ से पूछतक आरा के समान होता है और आबनूस के समान काला प्रत्येक कांटा पीठपै दो गजका दृष्टि आताहै और उसके शीशपै दो हड्डियां दश गजके अनुमानसे दृष्टि आतीहैं जिनके द्वारा समुद्रमें रातदिन जीवोंको दुःखदेतीहै और उसके आनेकी आवाज़ बाहिर वालोंके कानोंतक पहुंचती है इस मछलीकी नाकसे पानी निकलताथा जिसकी छींटें हमतक पहुंचतीथीं और जो कोई जहाज़ इसकी पीठपै आजाताहै तो तत्काल दोटूक होजाताहै स्वरूप उसकायहहै॥

तसवीर नम्बर१३३

इनमें से एक प्रकारकी मछली बालनाम होतीहै जिसके तनकी लम्बाईचारसौ अथवा पांचसौगजतक होतीहै इसकेदोनोंपरजहाज़

के बड़े २ बादमानोंके समान होतेहैं जो कभी २ अपना मुहँ पानी के ऊपर निकाल कर जो फुंकार मारती है तो वह पानी एक तीर के उँचाई तक जाताहै जो नौका उस तरफ़को आती है तो जहाज़ वालेढोल और नक्कारे बड़े ज़ोरसे बजाते हैं जिसमें वहमछली भाग जाय और दूसरी छोटी मछली खाती है और यह दरियाई जीवों के लिये महाकालहै जब इस मछली के अन्यायसे जीव अतिदुःखी होते हैं तो ईश्वर एक मछली को जो एक गजकी होती है इसके लिये काल नियत करता है वह इस मछलीके कानमें घुसजाती है और इसकी खोपड़ीका गूदाखातीहै तब यह मछली इतनी दुःखी होतीहै कि अपना शीश पटकते२ पानीके बाहिर आयके मरजातीहै तोपहाड़ के सदृश दृष्टि आतीहै और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १३४

दरियाई लोग वर्णन करतेहैं कि जब यह सागर जोरोंपै आताहै तो अम्बरके टुकड़ेकेटुकड़े पत्थरकेसे चट्टान बाहिर फेंकताहै तब उन अम्बरके टुकड़ोंको खाजातीहै और तत्काल मरजाती है और पानीपै तैर आती है तब दरिया के आसपास के लोग जो इसी फ़िकर में रहतेहैं झटरस्साबांधके बाहिरनिकालते हैं और उसकापेटचाककरके उसके भीतर से अम्बर निकालते हैं और इस प्रकार के अम्बर को समकीकहतेहैं और उसकोहिन्दुस्तान,फ़ारसऔरएराकमेंलेजातेहैं॥

दरिया पछाहँ॥

यह दरिया तद्रूप शाम के दरिया के समान है महासागरमें से घूमके उत्तर की ओर बलादइंडलसतगया है वहां से बलाद फरंग और कुस्तुन्तुनिया होकर दक्षिण की ओर निकल कर बलादसला नीक और शबीहा और आतंजा में पहुंचा है फिर वहां से शाम में होताहुआ अलज़ाक़िया तक पहुंचाहै इससागर में टापू बहुतहैं जैसे अन्दस, मेवरक़ा, सक़लबिया, अक़ूपतसन और क़रस हैं और रोदस के अख़बार मिश्र की किताब में लिखाहै कि फ़रऊन सेना सहित बूड़जाने के उपरान्त मिश्रकी बादशाहत बनी दिलूका के बादशाह

के आधीन हुई ये लोग बड़े छली और कपटी थे जब रूम ने चाहा कि इनको आधीन करें तब इन्होंने यत्न शोचा कि बहरजुलमात अर्थात् कालेसमुद्र से एकनहर खोदी उस नहर ने इतनाजोर मारा कि उससे बड़ेबड़े देश के देश बहगये और यह नहर एकनदीहोगई और मिश्र और रूमके बीचमें एक रोकहोगई और यह दरिया वही है जिसका हम वर्णन पहिले करआयेहैं इसरीति से दरिया पछाहँ और दरिया इस्कन्दरिया और दरिया शाम और दरिया रोम और दरिया ज़ंज और दरिया कुस्तुन्तुनिया सब एकहोगये और सबसे बड़ेसागर रोम और पछाहँहैं इसकी चौड़ाई ३ तीनफरसख अर्थात् ६ मील है और लम्बाई ३० तीसफरसख अर्थात् ६० मीलहै और रूमकासागर इन्दलस के आगेहै और पूर्व में भी उसके इन्दलसहै इसका रंग हराहै और पछाहँ के दरिया का रंग काला रोसनाईके समान है यहां तक कि जो कोई उसका पानी बर्तन अथवा हाथ में लेके देखे तो काला दृष्टि आता है और पानी उसकासाफ है इसका रंग जमीउलबहरैन में मालूम होता है और प्रति दिन यह दिनभर में चारबार तो बढ़ताहै और चारबार घटताहै॥ काला सागर तो भानोदय के समय बढ़ता है औ हरासमुद्र घटताहै और दरिया रोम में कि हराहै दाखिलहोताहै और यहदशा सूर्य्यढले तक रहती है और दिनढले पै कालासमुद्र घटता है और दरिया हरेसे इसमें पानी आता है यहदशा सूर्य्यअस्त तक होती है फिर दूसरी बार कालासागर घटता है और हरे सागर में बाढ़ रहती है आधी राततक तिस उपरान्त हरा सागर घटता है और कालासागर भानोदय तक बढ़ता है॥

व्याख्यान इस सागरके टापुओंके विषय में॥

अबुहामिद इन्दलसी अपनी उस किताब में जो हबीरा के बेटा वज़ीरके लिये बनाई इस टापूका वृत्तान्त लिखता है बहुत से टापुओं मेंसे एक जमाउलबहरैन नाम है इस टापू में एक पत्थर का मीनार दोसौगज़ ऊंचा है उस पै एक मनुष्य का स्वरूप इस

ढबसे बनाहै कि अपने दाहनेहाथ से एकचादर ओढ़े हैं और उसी हाथको कालेदरिया की तरफ़ फैलाये है मानो किसीवस्तु की ओर सैनकर रहाहै इसविषय में लोगों ने अपनी२ युक्तिअनुसार बहुत कुछ लिखाहै परन्तु सत्य ईश्वरही को मालूम है और यहभी लिखा है कि दरियाय स्याह में इन्दलसकीओर एकपहाड़है तिसपर एक कनेसा है तिसपर संगखाराका एकमहलहै और वहांपर एकबड़ी क़ुवा है उसपर एक कौवा अकेला रहता है और उस कनेसा के सन्मुख एक मसजिद है जिसके देखने को मनुष्य दूर २ से आते हैं और कहतेहैं कि इसठौर जो प्रार्थना कीजाय सो मानी जातीहै और जो लोग ईसाई अथवा मुसल्मान उस कनेसा अथवा मसजिद के दर्शनों को जाते हैं तो वह कौवा अपनाशीश उस क़ुवा से बाहिर निकाल जितनी संख्या मनुष्यों की होती है उतनी बार बोलताहै तो कनेसा के मुजाबिर अर्थात् पुजारीलोगोंको यात्रियों की संख्या मालूम होजातीहै तो उसकनेसासे निकल के यात्रियों के लिये भोजन लाते हैं और उनको खवाते हैं यह ठौर कनेसा कलाग अर्थात् कौवा के नामसे प्रसिद्ध है क़ैसून को सन्देह है कि यहकौवा कहांसे खाता है क्योंकि सदैव उसी क़ुवा पर रहता है और कहीं नहींजाताहै ॥ इनमेंसे एकटापू तूंसनाम जिसकोदीतन्स भी कहतेहैं अति बढ़ा रोमके सागर में है और सत्य तो यह है कि वह दरिया मग़रिब में है अबूहामिद कहताहै कि इस टापू में सब प्रकार की मछली रहती हैं और वे एक नियत समय तक रहकर चलीजातीहैं तो दूसरीजाति की मछलीआतीहैं और इनमछलियों की जात एक सौ तीस तक हैं ॥ तोहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थकार लिखताहै कि दरियाय रोम में एकटापू है जिसमें नाना प्रकार के फूल और वृक्षहैं अबूहामिद इन्दलसी ने अपनी पर्यटनमें लिखाहै कि दरियारोममें एकटापू मैंने खालतानाम देखा जिसमें एकमहाड पर बकरियों का इतना अधिकत्व देखा जैसे टीड़ी का और वे मारे मुटाई के भाग नहींसकी थीं इसलिये जबकोई जहाज़ इसओर को

आता है तो मनुष्य उन पहाड़ी बकरियोंको मनमाने जितनी ले जातेहैं उनमें कोई बकरी तो मोटी कोई गर्भिणी और कोई जवान और कोई बच्चाहोतीहै निदान इसटापूमें बकरियों के सिवाय कोई पशू नहींहोता ॥ हां इसटापू में वृक्ष घास और चारा अधिकहै मेरे निकट तो सम्पूर्ण जहाज़ जो सागरमें वर्त्तमानहों केवल बकरियों-हींसे भरलिये जावें तब भी बकरी न चुकेंगी ॥ दरियाई लोगों ने कहाहै कि कुस्तुनतुनियाके निकट पूजनीय स्थानहै जो लोग उस ओर से निकलतेहैं तो कुछ सौगात वहां चढ़ातेहैं और उसकीपरि-क्रमा करतेहैं ॥ दिनके पिछले हिस्सा से पानी बढ़ने लगता है तब संसारीलोग अपनी २ राहलेते हैं और वह ठौर पानीमें फिर मूंद जातीहै और दूसरी साल फिर उसीदिन प्रकट होती है झूंठ सत्य ईश्वर जाने ॥

व्याख्यान इस सागरके अद्भुत जीवोंके विषयमें ॥

हारूनुमग़रबी के बेटा अब्दुलरहमानने एक हम्मामी की मज-लिस में वर्णनकिया कि मैंने एकबार जहाज़पर चढ़के पछाहँ जाने का मनोरथकिया तो जाते २ रतून नाम ठौरपरपहुंचा तो मेरेसाथ एकदास सक़लबीनाम था उसकेपास शिस्त अर्थात् मछली पकरने की डोरी थी उसने शिस्तको सागर में छोड़ी तो उसमें एकमछली एकबीता की आई उसमछली के दाहनेकान में लायलाह इल्लल्लाह और पीठि पै महम्मद और बायें कान पै रसूल अल्लाह लिखा था अबूहामिद इन्दलसी ने लिखाहै कि जब समुद्र का उतार था जो मैंने देखा कि समुद्र के उतार की ओर एक पहाड़ है उस पै एक ऐसी लाल नारंगी रक्खी है कि मानो वृक्ष से अभी टूटके आई है उससमय मैंने जाना कि कदाचित् किसीजहाज़ वाले की गिरगई है यह शोच मैंने चाहा कि इसको उठाऊं तो मालूम हुआ कि यह तो जानवरहै जो कड़ा पत्थरसे चिपकाहुआ मैंने बहुतेरा जोरकिया परन्तु वह पत्थर से न छूटा उससमय मैंने छुरी से काटना चाहा परन्तु छुरीनेभी कुछकाम न किया ॥ इस जानवर के न तो आंखें

थीं और न शीश मुख अर्जवन अर्थात् शाख के बीचमें था तब रावी ने उसपै कपड़ा लपेट के खींचा तो लालरंग का मुलायम लम्भा निकला और नारंगीसे इसमें कुछ भेद न था अन्त को मैंने उसे छोड़दिया तो वह अपना मुख खोल के श्वास लेनेलगा ॥

अबूहामिद इन्दलसीने वर्णनकिया कि एकबार मैं रोमकेकिनारे पत्थर पर बैठा मुंह हाथधोयरहाथा इतनेमेंपत्थरके नीचेसेएकपीले सांप बुन्दीदारने शिरनिकाला तो मैंनेदेखा कि उसकाशिरख़रगोश के शिरकेसमानथा और दोनों आंखें बड़ी और फैलीहुईथीं तब मैंने एककटारमारा परन्तु उसने कुछअसर न किया और वहसांपपत्थर केनीचेसे निकलके दरिया में पैरनेलगा इस सांपकाफन तो एकथा परन्तु धर पांचथे और तीनगज़का लम्बाथा तब मेरे साथियोंने इस प्रकारकेसांपमारे उनकीखाल निकाली तो वह प्याज़से भी अधिक मुलायमथी और उसकामांस दुम्माकेमांसकेसमान था और सम्पूर्ण शरीर में उसके हड्डी और कांटेनथे तिसपरभी उसपर कोई हथ्यार लोहेका असर नहींकरता था समुद्रगामी लोगोंने लिखाहै कि जब कभी यह सांप जहाज़ पर आजाताहै तो जहाज़ के कुत्तोंको खाता है और इस जीव को दरियाई ख़रगोश भी कहते हैं इसका व्योरा और गुण जलचारी जीवोंके साथ लिखाजावेगा और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १३७

इनमें से एक प्रकारकी मछली होतीहै जो शेख़ यहूदी के नाम से प्रसिद्ध है अबूहामिद इन्दलसी ने लिखा है कि इसका चेहरा मनुष्यकासा होताहै और दाढ़ी भी होतीहै इसके गोशालाकी बराबर ताक़त होतीहै और यह जीव मेढ़क के समान होताहै और इसको शेख़ यहूदी कहने का यह कारणहै कि यह शनिश्चरकी रात को पानीसे निकलके सूखेमें जातीहै और जबतक इतवार की रात को सूर्य्य अस्त नहीं होता तबतक जंगलमें बिना अन्नजल रहतीहै जो कदाचित् कोई इसको उसदिन मारे अथवा काटे तो किसी प्रकार नहीं मरती जब इतवार के दिन सूर्य्यास्त होता है तो यह जीव

मेढककेसमान कूदके पानीमें जाता है कहतेहैं कि इसकी खाल न क़रसपै (जे। एक प्रकारका रोग पैरकी अंगुलियों में होताहै उस से मनुष्यलँगड़ा होजाताहै) बांधना फलदाईहै उसका दर्द उसीसमय बन्द होजाताहै और उसकी सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १३६

अबूहामिद इन्दलसी ने बर्णन किया कि मैंने एक मछली दो गज़की देखी जिसका शरीर चौकोन था और उसकी दोनों आंखें तो प्रकट थीं परन्तु उसके शीश और मुख का पता न मिला और न यह मालूमहुआ कि यह खाती क्योंकर है और एक प्रकार की मछली अस्तर नाम होती है अबूहामिद ने कहा कि मैंने एक मछली जमाउलबहरैन में देखी जोपहाड़की बराबरथी और चिल्ला२ केरोतीथी उसकी बराबर भयानक शब्दरोनेका अपनीसम्पूर्ण उमर में नहींसुना और उसके सुनने से मारे डरके कलेजा फटाजाता था निदान उसके चिल्लाने से दरिया का पानी हिला और लहरें उठने लगीं यहदेख मैंबहुतडरा कि ऐसा नहो कि मैं डूबजाऊं दरियाइयों ने कहा कि यह वह मछली है जिसको अस्तर कहते हैं एक कला किस्म की मछली होती है जो इस मछली के पीछे खाने को दौड़ती है और यह उसके डरसे भागती है और चिल्ला २ के रोती है तब यहभागके दरिया मजमाउलबहरैन में छिपती है और वह मछली अति बड़ी होने के कारण उसमें नहींसमाती इसलिये लौटजाती है और सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नंबर १३७

इनमें से एक प्रकार की मछली का नाम मूसा और यूशा है अबूहामिद इन्दलसी ने लिखा है कि मैंने एक मछली शहर सबा केनिकट देखी इस मछली की पैदायश उस भुनीहुई मछली से है जिसको हजरत मूसा और यूशा ने आधी तो खाई और आधी को ईश्वर ने सजीव करदिया था और इसीके विषय में क़ुरान में भी लिखाहै उसकी जाति अबतक इस ठौरपर है यह मछली एक गज़

लम्बी और एक बीताकी चौड़ीहोती है॥ एकतरफ़ इसकेकांटे और हड्डी होतीहै उसपर महीन खाल होती है जिसमें उसकी हड्डी न बिखरजायँ और एक आंख और आधा शिर है जोकोई दूरसे देखे तो मांसका लोथरा समझेगा और आधी खाईहुई मालूम होती है इसे लोग शुभसमझ के लक्ष्मीपात्रोंके पास सौगात लेजातेहैं यहूदीलोग इसको खातेनहीं बरन दूर२लेजातेहैं सूरतउसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर १३८

एकप्रकार की मछली कुलाहनमद होतीहै जिसको तुर्कलोगपहरते हैं इसमछली के मुख और शीश नहींहोता औरइसके पेटमें आँतें आदिक कुछ नहीं होती हैं केवल गायके पेटके समान होतीहै जब कोई इसका शिकारकरतेहैं तो चलतेही पानीकालाहोजाताहै कदाचित् वह पानी इसीके पेटका होताहै और जब यह मछलीजाल में आतीहै तो जालके फन्दे कालेहोजाते हैं और उसपानीसे स्याहीकी भांतिलिखते हैं वह पानी बहुत अच्छा होता है कभी उसका लिखा मिटता नहीं है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर १३९

इसमें से एक मछली और इस सागरमें पाईजाती है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि जो उसको टुकड़ा टुकड़ा करडालो तब भी उसके टुकड़े चलाकरते हैं और उसको मांसकी तरह पकावें तो आग पर उसके टुकड़ों की ऐसी हरकत होती है कि डेग उलटजाती है यहां तक कि पकने तक तड़प हुआ करती है और इस मछलीका मांस स्वादिष्ट होता है और एक प्रकार की ख़ताफ़ नाम मछली होती है इसके काले दो पंखहोते हैं यह मछली पानीसे निकल के पक्षीके समान उड़ती है और स्वरूप उसका यहहै॥

तसवीर नंबर १४०

एक मछली मनारा नामक होती है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि यह मछली मिनारकेसमान निकलती है और नौकापर आने का अनुमान करती और चाहती है कि जहाज़को तोड़डाले परंतु

जिस समय इस मछली को देखते हैं तो जहाज़ वाले बड़े ज़ोर से बाजा बजाते हैं और हल्ला मचाते हैं जिसमें यह मछली भागजाय और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १४१

एक प्रकार की मछली ऐसीहोती है जिसके विषयमें अबूहामिद इन्दलुसीने लिखाहै कि जब पानी सूखजाता है तो उसी कीचड़ में वह मछली छह घड़ी तकतो तड़पा करती है तिस उपरांत उसकी देहकी खाल गिरजाती है और दोपंख निकलते हैं जिनके द्वारा उड़के फिर पानीमें चलीजाती है इस समुद्रमें सांपभी बहुत होते हैं तुराबिलीस कहता है कि बहुधा अद्भुत सांप होते हैं और बहुधा लावंकिया और अक़रा पहाड़के निकट भी होते हैं जिस समय ये दुष्ट पानीसे निकलतेहैं तोबहुधा थलचारी जीवोंकी नाश होती है॥

दरियाय खुरज़॥

यह दरिया तबरिस्तान और जरजान का है ये दोनों देश इस सागर के पूर्व उत्तरकोण पर स्थित हैं इनके उत्तरमें ख़िरज़की विलायत है और पश्चिममें शरवान और फ़ितक़ देश हैं और दक्षिण में एक गीलाननाम बड़ादरियाहै जो किसी सागरसे मेल नहींरखता जो कोई इसके चारोंओर घूमा चाहै तो जहांसे सवार हो वहीं आजायेगा दूसरे समुद्रों की अपेक्षा इस समुद्रमें फिरना बहुत कठिन है इसमें ज्वार भाटा नहींआता परन्तु लहरैं बड़े ज़ोर से उठती हैं इसमें मोती आदिक रत्न कुछ नहीं होते हैं इसके टापू खराब कोई आदमी नहीं रहता है परन्तु टापुओं में पानी और जंगल है लिखा है कि इस समुद्र का दौर पांचसौ कोश और लम्बाई आठसौ कोश और चौड़ाई छह सौ मील है और यह स्वरूप इसकी गोलाई लिये है अब इस समुद्रके टापुओं का बर्णन किया जाता है॥

व्याख्यान टापुओं के विषय में॥

अबूहामिद इन्दलसीने अपने पर्यटनमें लिखा कि मैंने एकपहाड़ इस समुद्रमें काली माटीका देखा और यह समुद्र इस पहाड़के चारों

ओर है और इस पहाड़ की चोटीपर एक सोता है जिसमें से पानी निकला करताहै और इस पानीके साथ छोटे २ फल चुन्नीके समान बहते हैं जिनको लोग सौगात दूर दूर लेजाते हैं और इसमें एक अद्भुत टापू सांपों का है और यह टापू उसी काले पहाड़ के पास है यह टापू सांपोंसे भराहै और इसमें चारा बहुत है परन्तु मारे सांपों के किसीकी सामर्थ्य नहीं जो इसमें पाँवधरसके मारे सांपोंके दरियाई पक्षियोंके अण्डोंको ये दुष्ट खाजातेहैं मैंने देखा है कि लोग लकड़ीसे सांपोंको हटाके राह करतेहैं और दरियाई जीवोंके अंडे बच्चों को बचातेहैं परन्तु इतनाहै कि वे मनुष्यसे नहीं बोलते इनमेंसे एक टापू जिननाम है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि इसटापूमें मनुष्य और जंगली कोई नहीं हैं कहते हैं कि इसटापूमें जिन्नात बसते हैं जिनकी आवाज़ सुनीजाती हैं एकटापू ग़नमनाम है सलामतरजमान ने कहा है कि मैं अलुवासिक़बिअल्ला अमीरुलमोमिनीन का एलची था,मैंने देखा कि इसटापूमें पहाड़ी बकड़ी बहुतहैं और मारे मुटाईके भाग नहीं सकती हैं जब इसटापूमें जहाज़ पहुंचा तो शिकार खेला उसमें सबप्रकारकी बकरीथीं मोटी गर्भिणी और जवान इसटापूमें बकरियोंके सिवा कोई नहीं रहताहै इसटापूमें सोता और चरागाह बहुत हैं कहते हैं कि अलुवासिक़बिअल्ला अमीरुल मोमिनीनने अपनी बादशाहीके समय में एक रात्रि को बग़दाद के निकट स्वप्नदेखा कि सद्दज़वायक़रनैन (एक दीवार समुद्रके किनारेपरहै) गिरपड़ी इस स्वप्नके देखने से ख़लीफ़ा को महादुःख हुआ तब ख़लीफ़ाने तुजहामको इसकी शोधके लिये भेजा कहतेहैं कि वह रजज़में पांच दिन ठहरा तो वहां एक अद्भुत वस्तुदेखी अर्थात् वहांएक बड़ी मछली का शिकार किया और उसके कान में रस्सी बांधके उस को घसीटा तो तत्काल उसका कान सूज आया उसमें से एक स्त्री लाल और श्वेत दीर्घ केश अति सुन्दर प्रकटहुई उसको वहांसे लेगये वह दीन बहुत रोतीथी और शीशके बाल नोचतीथी ईश्वर की दयासे उस रोनेवाली स्त्री के शरीरमें नाभीसे लेकर जांघोंतक एक

श्वेत और स्याह वस्तु लपेटी थी और वह पायज़ामाके समान मालूम होती थी निदान वह स्त्री लोगोंके पास मरगई मैंने इस वार्ता को बहुधा किताबोंमें देखा है निजकरके जो किताब अबूहामिद इंदलसीने जीरू के बेटे वज़ीर के लिये बनाई थी उसमें यह हाल सविस्तार लिखा था और इसी भांति शामके समुद्रमें एकसांप है जोजलचारी जीवों को दुःख दिया करता है जब उसका अन्याय अपनी सीमा से बढ़जाता है तो ईश्वर एक ऐसा अब्र पैदा करता है जो उस दुष्टको उस समुद्रसे निकाल देता है और वह सांप एक काला अजगर होजाता है उसका स्वरूप एक मकान अथवा एक बड़े वृक्षके बराबर होता है इसके श्वासके आस पास वृक्ष और जीव जलजाते हैं और यह अब्र इस दुष्टको याजूजमाजूजकी ओर फेंकदेता है और याजूज माजूज आयके इसके टुकड़े २ करडालते हैं और इसके मांस को वे एक वर्षपर्यंत खाते हैं और इसीप्रकार इब्नअब्बासने प्रसन्न हो ईश्वर उसपै लिखा है और उसका स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर १४२

इसी प्रकार एक वार्त्ता नौशेरवां बादशाह की है कि जब वह पूर्वोक्त बादशाह सद्दुल मुतहर (एक दीवारहै जो समुद्र किनारे बनी है) बनानेसे निःचिंत हुआ तब प्रसन्न होकर आज्ञादी कि उस दीवारपर एक तख़्त रक्खा जावे तिस पै बैठ कर ईश्वर का आराधन करूं तिसपै ये बातेंकहीं कि हे ईश्वर यह तेरी दया दृष्टिसे पुण्य का काम इस दासने पूराकिया अब इसके पलटे मुझे मेरे जन्मभूमि में भेजदे और इस महाकष्टसे छुड़ादे इसमें बड़ीदेर तक शीश पृथ्वी पै धरे रहा जब शिरउठाया तब कहा कि अबमुझे ख़िज़र और तुर्कों की लड़ाई का भय नहीं है तब संसार को बहुतसा दान दिया इस हेतुसे कि उन्होंने इसके साथ बहुत सी मेहनत की थी इतने में एक बड़ा अद्भुत जीव आय प्रकटहुआ और उसके साथ जो एक मेघ था उसने सूर्य्यको छिपा दिया इतनेमें जो राजसी बीरथे उन्हों ने कमान की ओर हाथ बढ़ाया बादशाह ने यह देख के पूछा कि क्या यत्न

शोची है तब भृत्योंने उत्तर दिया कि तीर और कमान से इसबला को मिटावेंगे तब नौशेरवां ने कहा कि ठहरो जब ईश्वर ने मुझको बारहवर्षतक अपनी रक्षामें रक्खाहै तब इससमय इसजीवसे मुझे क्योंकर दुःख पहुंचावेगा यह सुनके सब लोग धीर हुये और वह जीव भी संपूर्ण प्रकट हुआ जिसकी सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १४३

निदान उस जीवने बादशाह के पास आयके प्रार्थना करी कि मैं इस दरिया के निवासियों मेंसे हूं मैंने सात बार इसी भांति दीवार तय्यार होते और गिरते देखी बहुधा यह दीवारें इस समुद्र के किनारे सिकन्दर और देवदादन आदि ने बनवाईं तब मुझे ईश्वर ने आकाशबाणी दी कि तेरे समय में तेरी सूरत का बादशाह संसार में होगा जो इस दीवार को बनावेगा जो जबतक संसार रहेगा तबतक रहेगी इसलिये आज मालूमहुआ कि आप वही बादशाह हैं बस यहकहकर अदृश्यवान् होगया ईश्वरजाने कि वह आसमानपर चलागया अथवा वह समुद्रमें चलागया॥

व्याख्यान इस समुद्रके जीवों के विषय में ॥

दरियाई जीवों का हाल तो ईश्वर के सिवाय किसी को नहीं मालूम परन्तु जितने प्रसिद्ध हैं उनका हाल लिखाजाता है ये जीव दो प्रकारके होतेहैं एक तो ऐसे कि जिनके फेफड़ा नहीं होता जैसे मछली सो यह जाति तो पानी के सिवाय और कहीं जी नहींसक्ती और एक मेंढक के समान जिसके फेफड़ा होताहै यह जाति दोनों ठौर रहती है अर्थात् पानी और वायु में और मछली को वायु की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि उसके दिलमें पानीकी तरीभरीरहती है और इसी कारणसे उनको फेफड़े की ज़रूरत नहीं है यह ईश्वर की चतुराई और बुद्धिमानी है कि जिस जीवको जिस अंगका प्रयोजन है उसको वही अंग दिया है इसलिये जिन जीवोंका स्वरूप पूरा है और उसकी बनावट पूरीहै तो उसको बहुतसे अंगोंकी आवश्यकता है और जिस जीवका स्वरूप खण्डितहै वह दूसरे जीवोंकी अपेक्षा

नाक़िसहै तो उसको बहुत अंगोंकी इतनी आवश्यकता नहीं है इस-
लिये ईश्वरकी चतुराई से यही बात ठीकहुई कि जिस जीवको जिस
अंगकी ज़रूरत हुई उसको वही अंग दियागया चाहै उसके अंग पर
छिलकेहों चाहै खाल अथवा और कोई दूसरी बस्तुहो जिस्से उसके
शरीरकी रक्षा होसके और जो अंगहीनहैं उनकी आवश्यकता मिटा
दी ईश्वरकी माया करके जलचारी जीव दो प्रकारके होतेहैं एक तो
सीपी वाले दूसरे छिलकेवाले और जलचारी जीवों को बाजू दिये
हैं जिनके द्वारा पानीमें पैरसकें जैसे पक्षियोंको पंख दियेहैं जिससे
वे वायुमें उड़सकें इनमें से किसीको तो ऐसा बनायाहै कि वे दूसरों
को मारके खायँ और किसीको ऐसा जिसको मनुष्य शिकारकरके
खायँ इसीकारण सीधे पक्षियोंकी सृष्टि ईश्वरने अधिक रची जिसमें
उनकी नाश न हो जाय अब जलचारी जीवों का बर्णन बर्णमाला
केक्रमसे लिखा जाताहै (अरनबुलवहर) इसजीवकाशीश ख़रगोश
केशीश समान होताहै और शरीरका शेष भागमछली की बनावट
का शेखुलरईसने लिखा है कि जो उसको जलाके मंजन बनावें तो
दांतोंकी चमक अधिकहोगी ॥ सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १४४

(अलवरस)यहजीव मछलीकी जातिका होता है यहजीव महा
भयानक होता है क्योंकि और जीव तो शिकारी भी होतेहैं परन्तु
यह नहीं होता और यह दूसरे जीवोंकी हड्डी खाताहै ॥ इसकागुण
यहलिखा है कि जो इसका मांस भून के उनदो मनुष्योंको खवावे
जिन में आपस में मनमैली हो तो दोनों में प्रीति हो जायगी ॥
सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १४५

(आदमआवी) यह जानवर तद्रूप मनुष्य के स्वरूपवत् होता
है केवल इसके पूछ अधिक होती है ॥ एकमनुष्य एकआवी आदमी
को पकड़लायाथा उसने मनुष्योंको दिखायाथा और सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर १४६

किसी२ने लिखा है कि दरियाय शामके किनारे कभी२ मनुष्य

की सूरत प्रकटहोती है उनके नीचे एकछेद होता है जिसके द्वारा दिसा फिरते हैं और इनको शैखुलहजर कहते हैं और जोकोई एक उसको देखताहै तो दूसरोंको भीदिखाता है कहावत है कि किसी ने एक दरियाई आदमी किसी बादशाह के पास सौगात भेजाथा वह वहां बहुतदिन जातारहा बादशाह ने चाहा कि उसका हाल जाने परन्तु वह उसकी बोलीनहीं समझताथा अन्तको एकस्त्री का प्रसंग कराया तो लड़का पैदाहुआ वह लड़का अपने मा बापकी वार्ता समझता था ॥ बादशाह ने उससे पूछा कि तेरा बाप क्या कहता है तब उसने कहा कि हम पशुओं की पूछ तो नीचेकी तरफ़ होती है और मनुष्योंकी पूछ मुँहकी ओर होती है अर्थात् नाक ॥

(बक़रआबी)यहजीव दरिया से चरनेके वास्ते निकला करता है और अम्बरका गोबर करता है इसलिये जो अम्बर दरिया किनारे परा मिला करता है उसको बहुत से तो कहते हैं कि अम्बर समुद्र केनीचेहोता है सो जब समुद्र लहरेंलेता है तो बाहिर फेंक देता है और बाज़े कहते हैं कि अम्बर सोतों में होता है इसलिये यहमानके कि उसी बैलका गोबर है तो उसके गुणयेहैं कि दिमाग़ को बली करता है और मन बुद्धि स्थिर रहती है और जोकोई एक दांग रोज़खाय तो वीर्यकी वृद्धि करता है और सूरत यह है ॥

तसबीर नम्बर १४०

वाल ॥ यह एक प्रकारकी मछली होतीहै जो पचास गज़ की लम्बी होतीहै ॥ यह मछली जहाज़ तोड़ डालतीहै जो चीज़पातीहै सो खायजातीहै यह अम्बर को लीललेतीहै तो मनुष्य इसके पेटसे अम्बरको निकालते हैं उस अम्बरको मवलू कहते हैं इसमें सुगंध नहींहोती कभी २ यह मछली बाढ़के समय दरिया बसरा में मिलतीहै परन्तु फिर लौटना अतिकठिनहै क्योंकि वह दरिया तंगहै उस समय धीमरलोग इसका अहेर करते हैं और शिस्तके द्वारा इसको निकालते हैं और तीरों से मारते हैं उसकी खोपड़ी से तेल निकालके चिराग़ जलातेहैं और जहाज़ों के पुरज़े मलते हैं ॥

तमसाह ॥ फ़ारसी में इसको नहनंग कहतेहैं (इसदेशमेंइसको नाक कहतेहैं परन्तु यहां की नदियों में छोटाहोताहै) इसका मुंह चौड़ा और साठि दांतहोते हैं बीस तो ऊपरकी ओर और चालीस नीचेकी तरफ़ नीचे के दो दांतों के बीचमें ऊपरका एकदांत परत है इसीसे इसकी पकड़ अति कठिन होतीहै ॥ इसकोजीभ बहुतबड़ी और पीठ कछुआकी पीठीके समान होतीहै जिससे उसपै लोहाभी नहीं बेधताहै इसके चारपांव और पूछचार गज़की लम्बी होतीहै इसका शीश दो गज़ और धड़ आठ गज़का लम्बा होताहै ॥ खाते समय दूसरे जीवों के बिपरीत इसका ऊपरकाकल्ला हिलता है ॥ इस जानवरमेंनतो अगड़ाईलेनेकी सामर्थ्यहै और न शिर झुकाने की किसहेतुसे कि इसकी पीठिमें कोईजोड़ नहींहोताहै और अति भयानक कुरूप होता है ॥ यह मनुष्यका शत्रु है यहांतक कि ऊंट खच्चरादि सम्पूर्ण जीव इससे डरतेहैं और यह जानवर दरिया और दरियाहिन्द में पायेजातेहैं ॥ यह दुष्ट जब आदमीको नदी किनारे देखताहै तो पानीमें बुड़कीमारके मनुष्यके पास आयकूदके दीनमनुष्यको खींचलेजाताहै ॥ यह जीव पक्षी के समान अंडा देताहै और इसके अण्डों में मुशककी बास आती है और इसका बिष्ठामुख की ओरहोके निकलताहै क्योंकि इसके शरीरमें मुखके सिवा औरकोई छेदनहीं होता और जब कोई चीज़खाताहै और उसके रेशेदांतों में रहजानेके कारण कीड़ा परजाते हैं उस समय यह पानीके बाहिर निकल सूर्य्यकी ओर मुंहफैलाय के बैठता है तब एक पक्षी तमूय (नामपक्षीके) समान आय इसके मुखके कीड़े चुनखाताहै निदान वह पक्षी उसकीड़े बीननेमें मानों उसका रक्षकहै जब किसी अहेरियाको देखताहै तो बोलने लगता है तब वह नहनंग नाम जीव पानीमें चलाजाताहै निदान जब वह नहनंग देखताहै कि कीड़े बिन गये तब मुहबन्द करलेता है और चाहता है कि उस पक्षी को भी लीलजावे परन्तु ईश्वरने उस पक्षीके शीशपर एक ऐसो पैनी हड्डी कांटेके समान बनाईहै कि बहुत उसके मुँहमें बन्द करने के समय

चुभतीहै तो बिकल होकर मुँह खोल देताहै तब उस दीन पक्षी का प्राण बचता है इसी कारण यह कहावतप्रसिद्धहै कि नहनंग का पलटा ऐसा होताहै जब यहजानवर पलटजाता है तो सीधा नहीं होसक्ता उस समय जो इसका शिकार खेलना चाहैं तो उसको किसीयत्नसे बाहिर लातेहैं और उलटके उसकाहृदय निकाललेतेहैं और जो कोई उसपै सवार होजायतो भीकाबूमें होजाता है किस हेतुसे कि वह पलट नहीं सकता है और इसके अंगोंके गुण दो हैं कि जिसकी आंखमें ढरका का रोगहो वह इसकी आंख लेकर तावीज़ बनावे तो ढरका बन्दहोजाय और इसके दांत जिसके पास हों तो उसे रति करनेकी सामर्थ्य अधिकहो और जो इसकी पूंछ की खाल मढ़के मेंढाके माथेपर बांधे तो लड़ाईमें सम्पूर्ण मेंढों से जीते और इसकी चरबीका फाहा काटेहुये घावपर लगावे तो फलदायक होताहै इसकीपीठिको घिसिकैलगावे तो आंखोंकीसफ़ेदीमिटिजाय और इसके हृदयकी धूनी मिर्गी वालेको फ़ायदा करतीहै और जो इसकी बीटि का सुर्मा आंखों में लगावे तो सफ़ेदी दूरहोती है और स्वरूपउसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर १४८

तनीन अर्थात् अजगर ॥

यह जीव अति भयानक होताहै फ़ारसीमें इसको मार कहते हैं इसका शीशबड़ा और आंखें सफ़ेद होती हैं मुंह बहुत बड़ा खुला हुआ और पेटबहुत बड़ा और दांत बड़े२ होतेहैं जलचारी जीवों को बराबर लील जाताहै जब यह जीव चलताहै तो नदी उलट पलट होने लगतीहै जब यह दुष्ट अपना पेट जीवों को खाके भरता है तो उसको झुकाके ऊंचा कमानके समान करताहै उस समय जो कुछ इसके पेटमें होताहै वह सम्पूर्ण सूर्य्याग्नि से भस्म होजाता है कहतेहैं कि किसी मनुष्य ने एक मृतक अजगरको दरिया किनारे देखाथा वह छहमील के अनुमान लम्बाथा और रंग इसका चीते कासा होता है और मछली के समान इसके भी अंगपर सिफुने

होतेहैं और दोबड़े बड़े बाजू होते हैं और शीशटीलेकीबराबर मनुष्य के शीशकेबनावका होताहै और दो कान छोटे२ और दो आंखें गोल बड़ी२ होती हैं ॥ उसकी गरदन से छःगरदन दृष्टि आती हैं और प्रत्येक बीसगज की लम्बी और प्रत्येक गरदन पर सांप का शीश प्रकट है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १४६

सदादबिन अफलजकीकहावतहै कि मैं एकबार अमरुलवलीकी सभामेंथा उस समय अजगरकी वार्त्तावली तो मुझसे पूछा कि तुम जानतेहो कि यह कहां से आता है जब मैंने कहा कि मैं तो नहीं जानता तब उसने यों बर्णन किया कि यह सर्प जंगल में होता है और थलचारी जीवोंको खाया करता है जब वहां इसका अन्याय अधिक होताहै तो ईश्वर फरिश्तों को आज्ञा देताहै वे इसकोदरियामें फेंकदेतेहैं और जब यह दुष्ट जलचारी जीवोंके साथभी वही अन्याय करता है तब ईश्वर दूसरे फरिश्तोंको आज्ञा देताहै कि वे उसको दरियाके बाहिर डालदेते हैं और उसपै एक मेघको नियत करता है कि वह उसको याजूज माजूजकी तरफ़ फेंकदेताहै ॥ एक बार मेघने इस सांपको दरिया इन्ताकिया जो फेंका तो यह सांप एक देशके कोटके ऊपर होकर गया तो इसकी पूछ उस क़िले में लगी सो उसकोटके इसकीपूछ की चोटसे उन्नीस बुरज गिरगये ॥ कहतेहैं कि वहमेघ इससांपसे वैसाहीसम्बन्ध रखताहै जैसेचुम्बक लोहेसे इसीसे जब वहमेघ इसकोदेखताहै तो तत्कालउठाके फेंक देताहै और यह भी कारण है कि उस मेघके डरसे यह सर्प मुख नहीं निकालता ॥ परन्तु हां जब मेघानहीं होते तब मूंड़ निकालता है ॥ इसके अंगोंके गुणोंके बिषय में लिखाहै कि इसका मांसखाने से शरीर पुष्टहोताहै ॥ जालीनूस (महाबैद्यराज अगले दिनोंहोगया) के मतानुसार इसके मांस के टुकड़ा करके घावपै बांधे तो फ़ायदा होताहै एक क्षणमात्रमें अच्छा होताहै ॥

(जरी) इस जीवको फ़ारसी में मारमाही अर्थात् बाम मछली

कहतेहैं प्रत्येक नदींमें प्रकट होताहै और यह जीव सांप औरमछली के संयोगसे होताहै हाफ़िज़ने लिखाहै कि यहजीव जंगली मूसों को खाताहै जहाज़ वाले कहतेहैं कि रातको मूसे पानी पीनेकोआते हैं तो यह जानवर घातकी ठौर छिपा रहताहै मुहँ खोलेहुये इस आसरेमें रहताहै कि ज्योंहीं वह मूसा निकट आवे त्योंहीं निगल जाय सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १५०

इसका गुण यहहै कि इसका मांस खानेसे आवाज़ साफ होती है और फेफड़ाके रोग शान्त होतेहैं और इसके मांस को पीसके जो देही के लहसुन रोगपै लगावे तो मिट जाताहै और इसके पेटका पानी निकालके जो दीवाने घोड़े की नाक में टपकावे तो तत्काल अच्छा होता है ॥

(हलका)यह भी एकप्रकार की मछली है जो कुछेक मारमाही के स्वरूपवत् होती है यहबालू के नीचे रहा करती है और सांझ सबेरे खाने के लिये निकला करती है ॥ इस मछली की हड्डियां अतिही नरमहोतीहैं इसका मांस खानेसे स्त्री अत्यन्त पीनहोती है और सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १५१

(दिलफ़ीन) इस जीव का दर्शन शुभहोता है जब जहाज़वाले इसको देखते हैं तो प्रसन्नः होते हैं ॥ यह जानवर जब किसी को बूड़ते देखता है तब उसको पानी से निकाल के ततकाल किनारेपै करदेता है और उसीभांति इसके गुण भी अच्छे हैं कि डूबने से बचाता है ॥ कहते हैं कि इसके दोपंखहोते हैं जब यह जहाज़ को देखता है तो अपने पंखखोल के जहाज़के साथ होलेता है और जब थकजाताहै तो पंख समेटके पानीकेभीतर बैठजाताहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर १५२

(जूबियान) यह भी एकप्रकार की मछलीहोती है जहां तीर की गांसीलगीहो अथवा कांटाटूटगयाहो वहां पै इसकामांस बांधना

फ़ायदा देता है॥ क्योंकि तत्काल बाहिर निकाल देता है और इसके मांसको कालेचनाके साथ पकाके खानेसे जबुलक़रा अर्थात् रोग मिटता है और स्त्रियों के साथ रतिकरने की सामर्थ्य अधिक होती है॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १५३

(रादा) यह छोटीसी मछली है इस जानवरमें मस्ती बहुतहै॥ इसके गुणके विषय में लिखा है जब यह मछली धीमरके जाल में फँसती है और धीमर चाहता है कि जालको खींचें तो इस मछली में सर्दी इतनी होती है कि उसके हाथ कांपने लगते हैं और डोरी हाथसे नहीं थँभती है जो जालकी डोरी लम्बी न हो और धीमर उसको हाथसे छोड़ न देय तो सम्पूर्ण गर्मीकी शक्ति शरीरसे निकल जाय॥ इसलिये जब वधिकको इसमछलीका जालमें आनेके चिह्न मालूम होजाते हैं तो जालकी रस्सी किसी वृक्षमें बांधदेतेहैं अथवा पत्थर में अटकादेते हैं जबवह मरजाती है तब निकालते हैं क्योंकि मरनेपै उसकी सर्दी इतनी तीक्ष्ण नहीं रहती है॥ हिन्दुस्तान के वैद्यलोग इसका सेवन उसीसमय बताते हैं जब कोई रोग गर्मीके कारण होता है इसका खाना अक़लीम शिशुम अर्थात् देश में मिलतीही नहीं॥ शेखुलरईस अबूअली सैनाने लिखा है कि रादा मछली के निकट मिर्गीवाला आयजाय तो तत्काल उसका रोग मिटजाय और यह भी लिखा है कि जो कोई स्त्री इसका थोड़ासा मांस तावीज़ बनाके अपने पास रक्खे तो उसका पुरुष कभी उस से अलग न हो बरन उसकी प्रीति वश्य होजाय और यही कर्म्म जो पुरुष करे तो स्त्री उसकी दासी होजाय और उसकी आज्ञा से मुख न फेरे और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १५४

(ज़ामूर) दरियाईलोग इस मछली को अ[illegible] शकुन समझते हैं॥ शिकारी लोग जब इसको देखते हैं तो इसको फँसातेहैं और दूसरी मछलियों को छोड़देते हैं॥ जिस समय यह मछली जहाज़

को देखती है तो जहाज़ के आगे २ चलती है और जब कोई बड़ी मछली जहाज़ पै का अनुमान करती है तो यह उसके कान में जाके उसको दुःख देतीहै तब वह मछली अपने शीशको पत्थर पर दे २ मारतीहै यहां तक कि जब वह मछली मरजातीहै तब उसके कानसे निकलती है और उस दुष्टसे जहाज़ वालों को बचाती है बहुधा यहमछली बैतुलमुक़द्दस की ओर होती हैं शेखुलरईस कहता है कि इसकी खाल जलाके पशूकीआंखोंको सफ़ेदी मिटातीहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ५७४

सरतांबर्रीअर्थात् गेंगटा ॥ यह ऐसा जीव होताहै जिसकेशीश नहींहोता और इसकी दोनों आंखेंकन्धे पर होतीहैं और मुहँ छाती पर और आठपैर होतेहैं यह जीव एक अंगपर चलताहै और साल में सातबार केंचुली छोड़ताहै॥ इसके रहनेके मकान में दो दरवाजा होते हैं एक तो पानीकी तरफ़ और दूसरा सूखे की ओर जब यह जीवदेही की खाल गिराता है तब पानीकी ओरका दरवाज़ा बन्द करदेताहै जिसमें कोईदुःखदायी उसकोदुःख न देसके और सूखेकी ओरका दरवाज़ा खोलारखताहै जिसमेंबायुका आवागमनरहै और जल्दीनई खाल जमआवे और जब बायु बहुतलगतीहै तो उसकी खालपुष्टहोतीहै उससमय पानीकीओरका दरवाज़ाखोलताहै और दरिया की ओर भोजनों के लिये आता है आधा ऊपर का धड़ तो मनुष्यकासा होताहै और आधानीचेका गेंगटाकासा जब यहकिसी निःफलवृक्षपर चढ़ताहै तो वह उससमय ईश्वरकी आज्ञासे फलित होजाताहै और क्षेमपूर्व्वक रहताहै जो इसका मांस खालसे अलग करकेतीरादिके घावपैलगावे तो फ़ायदाहोताहै और बीछूकेकाटनेके लिये भी फलदायीहै और जो इसकी जलीखाक का शर्बत बनाके पीवे तो कुत्ता के काटनेको फ़ायदा देताहै और उस खालका सुर्मा बनाके आंखों में लगावे तो आंखोंकी सफेदी मिटजातीहै और जो दांतों में मंजनलगावे तो दांत चमकने लगें शेखुलरईसअबूअली-

सैना के बेटा ने लिखा है कि जो मनुष्य जिस किसी को सल का रोग हो तो उसको इसका मांस अच्छा है क्योंकि अंगों का कड़ापन नरम करताहै ॥ जो इस गेंगटाकी आंखको जबुलफ़ार के साथ किसी सोतेहुये आदमी के बांधे तो अच्छे२ स्वप्न देखताहै ॥ जो इसकी आंखका जबुलफ़ार के साथ जो लड़का अधिक रोताहो उसके बांधने से उसका रोना बन्दहोताहै और जो उसका पानी आंखोंमें टपकावे तो आंखका ढरका और आंखकी पीड़ा कमहोजाय जो गेंगटाको ऐसे वृक्षपै डालदें जिसके फल गिरजाते हों तो फिर उसके फल कभी न गिरेंगे जिसको चौथेदिन तप आताहो उसको इसके पैरोंकी धूनीदेना अच्छाहै और जिसके कंठमाला हो उसके गलेमें गेंगटाके पैर और कपूर और अम्बरकेलेपकरै तो कंठमाला का रोग तत्काल अच्छाहोजाय और जबतक वह तावीज अपनेपास रक्खैगा तबतक कभी उसके कंठमालाका रोग न होगा और जो गेंगटा मीठेपानी में रहताहै उसके अण्डे शुक्रशर के साथ खाय तो तपादिक मिटजाय और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १७६

सरतांआबी अर्थात् पानी में रहने वाला गेंगटा ॥

इस दरियाई जानवरका अद्भुत स्वरूप होताहै मानों पांचसांप इकट्ठे हैं और शीश पांचों का एक है देशकूरीदस नामक हकीम लिखताहै कि जो इसकी हड्डी और खालको जलाके झाईं औरवहक़ परमलै फ़ायदा देताहै और दांतोंपै मलनेसे दांत चमकने लगते हैं और लोनके साथ सुर्माबना के आंखोंमें लगावे तो नाखूनाका रोग शांत होजायगा और उसके छिड़कनेसे घाव अच्छाहोजाताहै और खाज अच्छीहोजाती है और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १७७

(सक़नक़ूर) शेखुलरईस ने कहाहै कि यहजानवर दरियानील में शिकार कियाजाताहै बहुधालोग कहते हैं कि यह जानवर नह-नह्न अर्थात् नाकसे उत्पन्नहोताहै और बहुधालोग तमसाह अर्थात्

नाककहतेहैं परन्तु ठीकतो यहहै कि जो यहजानवर अण्डेसे निकलके पानीमें रहता है तब तो उसको सक़नक़ूर और जो अण्डासे निकल के सूखेमें रहताहै तो उसे नहनङ्ग अर्थात् नाक कहतेहैं इनसक़नक़ूर में से वह उत्तम है जो उस समय मारा जाय जब सूर्य्य तुला राशिका होताहै और उससमय जो सक़नक़ूर किसीआदमी को काटे और उसी समय सक़नक़ूर पानीमें न जानेपावे पहले उसके काटेको अपने मुहँ की लब अर्थात् थूकसे धोयडाले तो सक़नक़ूर तत्काल मरजाताहै और जो उसघावको न धोवे और वह सक़नक़ूर दरियामें चलाजाय तो आदमी मरजायगा कहतेहैं कि इसके दो कांटे मछली की तरह होतेहैं और जितना बड़ाहोय उतनाहीं इसकागुण अधिक होता है शैख़ुलरईस अबूअली सैनाकहता है कि इसकी नाभी का मांस और इसकी चर्बी अत्यन्त बीर्य्यबर्द्धक होती है यहां तक कि आदमी कामकी पीड़ा से बिकल होजाता है और जब तक हज़ार सुअर न खाय तबतक किसीभांति बिकलता न मिटेगी और जो इसकीपीठ के बीचवाले मुहराको मर्द अपनीपीठ में लगावे तो रति करनेकी शक्ति अत्यन्त होतीहै और उसका मांस ऐसेलड़केकी देही में बांधे जो सोते में चोंक परता हो तो तत्काल यह रोग अच्छा होजाय और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ११८

(सलहफ़ात अर्थात् कछुआ) फ़ारसीमें इसको सङ्गपुश्त कहते हैं और यह जानवर पानी और सूखे दोनोंठोरमें रहताहै अजायबुलमख़लूक़ात का ग्रन्थकर्त्ता लिखता है कि मैं एक बार जहाज़ पर सवार हुआ तो एकाएक ऐसा टापू मिला जहां पानीमें से एक प्रकार की हरीघास दिखाई देती थी वहां हमलोग खाना पकाने के लिये उतरे और चूल्हे खोद २ के रोटी बनानेलगे कि इतने में तत्काल टापू की धरती हाली त्योंहीं मल्लाहों ने पुकारा कि जल्दी जहाज़ पर आजाओ यह टापू नहीं किन्तु कछुआ है जो अग्नि की गर्म्मी पाके हिलना चाहता है निदान उसके डीलडौल से एक

टापू का स्वरूप प्रकट था और मालूम होता है कि वह बहुतदिनों से उसीठौर पड़ाहुआथा कि उसके ऊपर माटी का ढेर होगया था और उस माटीपै हरीघास जमगईथी॥ कहते हैं कि यह जीवसमुद्र से निकलके अण्डेदेताहै और चराकरताहै और अपने अण्डेआंखोंके नीचे रखता है किसहेतु से कि और तो सम्पूर्ण शरीर पत्थर के समान होताहै उसमें गर्म्मी नहीं होतीहै॥ जब यह कछुआ पुरुष अपनी स्त्रीसे रति करना चाहताहै और वह स्त्री इसकी आज्ञानहीं मानती तो यह जानवर अपने मुहँसे एक प्रकारकी घास धरलेता है उसमें यह गुणहै कि जब कोई उसको अपने मुहँमें धरलेता है तो सम्पूर्ण जीवधारी उसके वश्य होजाते हैं इसी कारण वह स्त्री भी रतिपै राजीहोतीहै और उस घासको अजमदेशीय महरग्याह कहतेहैं और कहते हैं कि इसकी आदतहै कि यह सांपकी पूछको अपने मुखमें रखलेताहै तब वह दीन सांप अपना शेष धड़ उसके ऊपर पटकता है और पटकते २ मरजाताहै॥ कहते हैं कि जब कछुआ इस दुष्टको खाता है तब अपनी बगल में से कोई बस्तु मुलायमसी खालेता है तो इसके बिषसे निर्भय होजाता है॥ हकीमदुलनियास ने अपनी उस किताब में जिस में औषधियों के गुण लिखे हैं लिखा है कि जहां कछुआ होगा वहां जाड़ेका नुक़सान न होगा और जिसकी आंखों में ढरका जाताहो वह कछुआ की आंखों का ताबीज़ बनावे तो फायदा होगा आदमी का जो अंगदर्द करताहो वही अंग कछुआका लेकर उसअंगपेबांधे तत्काल दर्द जातारहैगा परन्तु इतनाहै कि जिस पांवमें मनुष्यके पीड़ाहो वही पांव कछुआका भीहो॥ बगल के बार और गुप्तकेश अर्थात् अधोकेश बनवाके उसपर कछुआ का रक्तमले तो किसी भांतिबाल नहीं जमेंगे यह स्त्रियोंके लिये तो बहुतही अच्छा होताहै॥ इसके पेटका पानी शह्द में मिलाके आंखों में लगावे तो नेत्रोंका ढरका बन्द होजाताहै और पीना उसका खुन्नाक़को मिटाताहै औरनाक में टपकानेसे मिर्गीदूर होतीहै जो कछुआकी पीठिका ढकनाबनाके

क़िसी देगपेढकें औरआग नीचेसे जलावें तो उबाल कभी न आवेगा और इसके अण्डे की ज़रदी तीन मिस्क़ाल (एक मिस्क़ाल ४॥ साढ़ेचार माशेकाहोताहै) गायके दूध में मिलायके पीवे तोसआल अर्थात् खांसी वालेको फायदा करता है ॥ स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर १५६

(समारीस) यह एक प्रकार की प्रसिद्ध मछली है शेखुलरईसने लिखाहै कि इसकाशीश जो जिन्दा अर्थात् ऊष्मवत् होताहै और इसके मांसमें रेशा बहुत होतेहैं और मुख और कानकेघावको बहुत गुण करता है और मसाके दाने दूरहोजाते हैं और सब प्रकार के दाद मिटजाते हैं ॥ समक यह भी मछलीही की जातिहै और इस जातिकीमछली बहुत होतीहैं कोई तो इतनेसेबड़ी और कोई छोटी होतीहै और बड़ाईमें भी ऐसी लम्बी होती है कि इसके आदि अन्त का पतानहीं मिलता है ॥ किसी २ व्योपारी से यह कहावत सुनी है कि हमारे जहाज़ को एक मछलीने आगेको न बढ़नेदिया और चार महीना तक इसी आसरेमें रहे कि जब यह आगेको बढ़जाय तब हमआगे चलें ॥ इतने दिनों के उपरांत उस मछली की पूछ मालूम हुई और कोई २ ऐसी छोटी होती हैं कि उनका देखना कठिनहै ॥ जो मछली मीठे दरिया में होतीहै उसका मांस स्वादिष्ट होताहै जिन लोगोंने इस मछलीको रति करते समय देखाहै वे कहतेहैं कि यह पुरुष मछली स्त्रीसे प्रसंग करना चाहता है तो अपनी पूछको उठाताहै जिसमें लिंग प्रकट होय और स्त्रीभीअपनी पूछको उठाके भगको प्रकट करतीहै तब स्त्रीपुरुष दोनों मिलजाते हैं और जब अण्डा देनेका समय आताहै तब मैदान में आके गड़हा बनाती उसमें अण्डा धरके कूड़ासे बन्द करती है उस गड़हे में वे अण्डा ईश्वरकी मायाबल मछलीहोजाते हैं ॥ बुलनियासने लिखा है कि जिस समय ताजी मछली की बास बेहोश आदमी के दिमाग में पहुंचे तो वह बेहोश उससमय चैतन्य होजाता है सैनाके बेटा शेखुलरईस बूअली ने लिखाहै कि डरका वालेको मछलीका मांस

उपयोगीहै और शहदके साथखाना आंखोंका प्रकाश अधिक कर-ताहै और शेखके सिवा और लोगभी कहतेहैं कि वीर्यबर्द्धक भी है और उसका मिताखुन्नाक अर्थात् पीनस वालेको उपयोगी हैचाहे खाय और चाहे शक्करके साथ उसके हलकमें डालदें ॥

(शबूत)यह मछली एक गजसे कुछेक लम्बी होतीहै और एक बीताकी लम्बी होतीहै ॥ यह जानवर बसराकी नदी में रहतेहैं ॥ हाफ़िज़ ने लिखाहै कि मुझसे शिकारी लोगों ने यह बर्णन किया कि जब शबूत मछली जालमें आतीहै तो चाहती है कि निकलजायँ तब उछलती है और उछाल इसकी दशगज ऊंचेतक होती है और इतनीऊंचीहोकर फन्दा काटजालसे निकलजातीहै ॥ सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर १६०

(शफ़ीन) यह एक दरियाई जानवर है और इसीनाम से प्रसिद्धहै ॥ इसके पांच दुम होती हैं मिलीहुई दूसरे जीवों के बिपरीति जहां दुम होती है उसके बिपरीति इसकी पूछें होती हैंइसकी खाल दांतों की पीड़ा को उप योगी होती है यह औषध प्रतीत की हुई है ॥ सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १६१

(शेखयहूदी) अबूहामिद इन्दलसीने लिखाहै कि इस जानवर का चेहरा तो मनुष्यकासा और शेषअंगमेंढक की बनावटकाहोता है इसका शरीर कुछेक गोसाला से मिलताहै और खाल इसकी गाऊई रंगकीसी होतीहै इसको शेख यहूदी कहनेका यह कारण है कि यह शनिश्चरकेदिन पानी बाहिरसे निकलताहै ॥ सूरतयहहै ॥

तसबीर नम्बर १६२

(सैर) यह मछली छोटीसी होतीहै इसका ग़रग़रा मुहाके लिये अत्यन्त उपयोगीहै ॥ सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १६३

(ज़फ़दा अर्थात् मेंढक) यह जानवर पानी और सूखे दोनों में रहता है इसकी दोनों आंखें बड़ी होती हैं और इसमें सुन्ने और

देखनेकी शक्ति अधिक होती है॥ हज़रत अबदुल्ला अमर के बेटेने ईश्वर उनपै प्रसन्नहो कहाहै कि इस जानवरको मतमारो क्योंकि इसका बकना ईश्वरकी तसबीह करता है अर्थात् कहता है ईश्वर अमलहै इस जानवरकी उत्पत्ति योंलिखीहै कि पहिले एक महीना तक दरिया में आंतसा मालूम होताहै और उसमें काले २ दाने दृष्टिआते हैं और कुछदिन पीछे हांथ पैर निकलते हैं॥ हाफ़िज़ ने लिखाहै कि इस जानवर के हड्डी नहीं होती और इसकी उत्पन्न अमित होतीहै यह जीव वर्षाका अधिक लोभी है और जहां सोता नदी समुद्र कुछ नहीं होता वहांभी उत्पन्न होता है बरन एक बक़ और बक़ जंगल है शैखुलरईस ने लिखा है जिससाल दैवयोग से इस जीवकी उत्पत्ति अधिक होतीहै तो उससाल महामारी अधिक होतीहै किसी २ने लिखाहै कि यह जानवर बहुधा रातको बक़बक़ किया करताहै और जब आगदृष्टिआतीहै तो चुपहोजाताहै लिखा है कि यह जानवर मदिरामें गिरके मरजाता है और जब पानी में आताहै तो नये सिरेसे जो उठताहै हाफिज़ने लिखाहै कि जबतक इसका नीचेका होठपानीमें न रहै तबतक यह बोल नहींसक्ता और यहीकारण है कि और काटने वालोंकी आवाज़ नहीं सुनाईदेती जो इसका पेट चाककरके सांपके काटेपर लगावें तो उपयोगी होता है शैखुलरईस ने लिखाहै कि सूखेमें रहनेवाले मेंढक हररंगके होतेहैं और दरियाई मेंढक जो मनुष्य खाय तो रंग काला और आंखों में धुन्ध होजाती है और मुखमें दुर्गन्ध आती है और शीशमें पीड़ा और बुद्धि भ्रष्टहोजाती है और उसके खानेसे वीर्य्य बिना प्रयोजन अधिक बहाकरता है और इसका मांस चबाने से दांत गिरजाते हैं इस मेंढकको शेर खाताहै हकीम बलानियासने अपनी उस किताब में जिसमें औषधियों के गुण लिखेहैं लिखाहै कि जो उबलती हुई देगपर इस जानवर को रखदेवें तो सम्पूर्ण उबाल बंदहोजाय और जिसमनुष्य को चौथेदिन तप आतीहो उसके गलेमें मेंढक को बांधें तो उसको फायदाहोताहै अजायबुलमख़लूक़ात का ग्रन्थकर्त्ता

इसके अद्भुत गुण नीचे लिखता है कि उसने सुना कि मोसल के हाकिम ने अपने बाग में एक मकान बनवाया और उस मकान के पास एक हौज़था उसमें मेढक बहुतथे और रातके समय तो इनका कर्कों करना कामही है निदान इनके बोलने से उसको बुरालगताथा उस हाकिम ने अपनेसाथियोंसे इनके मिटानेको कहा परन्तु वे क्यों माने उन्होंने बहुत से यत्नकरे परन्तु कोई उपाय न चला इतनेमें एकमनुष्य ने आय के कहा कि एक थाल लेकर इस हौज़के किनारे२ चारोंओर घुमावें बस इसथालके घुमातेही उनका बोलना बन्दहोगया इसजानवर के गुणके विषय में बुलनियास ने लिखा है कि इसकी जीभ को आटेमें मिलाके रोटीबनाऐसे आदमी को खवावें जिसपै चोरी करनेका भी गुमान हो तो वह तत्काल कहदेगा और सोतीहुई स्त्री की छातीपर रखदें तो जो कुछ उसने जागते में कर्म्म किया हो सम्पूर्ण कहदेगी जो इसकी जीभ को गन्ने के छिलकों में रखके जलावें और उसराख को जिस ठौर लगावें तो वहां फिर बाल न निकलेंगे और इसरक्त में भी यही गुणहै बुलनियास लिखताहै कि जो मनुष्य इसका रक्त अपने चेहरेपर मलेगा उसके चेहरे का रंग काला होजायगा और इसकी चरबी दांतोंपर लगाने से दांत गिरजाते हैं और जो मनुष्य इसका रक्त अपनेदेही के दोनों तरफ़ लगावे तो उसको जाड़ा न लगेगा और इसकादिल और पित्ता दोनों हालाहल विषहैं॥ सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६४

अलक़ (अर्थात् जोक) यह जानवर कालेरंग का एक अँगुली की बराबरपानीमें पैदाहोताहै बहुधा वैद्यलोग इसका सेवन रोगोंमें करतेहैं जबचाहतेहैं कि किसी अंगदुःखितकारक्तनिकालें तो उसको उसठौर लगाते हैं और जब चाहते हैं कि उसे वहां से छुड़ालें तो थोड़ासा नमक का पानी उस पै छिड़क देते हैं तत्काल उस ठौर को छोड़के अलग होजाता है और कभी २ ऐसा होता है कि जो जोंक अतिछोटीहोतीहै तो जोलोगदरियामेंपानीपीतेहैं उनके हल-

क में बढ़जाती है यह रीतिहै कि शीशागर लोग जो शीशा बना-
ते हैं तो शीशाको भट्टीमें डाल के धुआंदेतेहैं जिसमें शीशाकड़े हो-
जायँ जो उससमय कोई जोंक उस भट्टी में गिरजाय तो तत्काल
सब शीशा टूटजायँ और इसीप्रकार जोकोई जोंक तनूरमें गिरजाय
तो तनूर की सबरोटी छूटके आगमें गिरपरें जब यहजानवर किसी
के हलक में चिपकजाय तो उसकी औषधी यही है कि लोमड़ी के
बाल जराके उसका धुआं उसके हलक में पहुंचावें तत्काल जोंक
छूटजायगी जो इसजानवर की धूनी मकानमेंकरै तो मक्खीमच्छ-
रादि मिटिजायँगे जोंकको शीशामें बन्दकरदें और जबवह मरजाय
तब उसको पीसिकै उसके मैदा की जहां किसीठौर के बार उखाड़
के उसठौरलगावें तो वहां कभी बार न जमैंगे ॥ सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६५

(अता)यह (जानवर सदफी)अर्थात् सीपीवाला है और बहुधा
हिन्दुस्तान में बँधे पानी में मिलताहै (इसको हिन्दुस्तानमें घोंघी
कहते हैं) और निजकरके वहां होताहै जहां सिवार होता है और
नीलनाम नदीमें भी होताहै यह एक अद्भुतजीव होताहै और सीपी
की भांति इसका घर बना होता है और अति नाजुकहै और इसके
आंखें और सिर और पूंछ हैं जब यह जानवर अपने घर में जाता
है तो आदमी समझता है कि मानो सीपी है और जब घरसे
बाहर निकलता है तब दृष्टि आता है और अपने घर को अपने
साथ खींचताहै इसमें सुगन्ध होतीहै जो इसकी धूनीदेवें तो मिर्गी
वालेको उपयोगी है और इसको जला के इसका मंजन बनाके
दांतोंमें लगावें तो दांतोंको चमकाताहै और जो जलीठौरपै इसको
लगावें तो भी उपयोगी है ॥ सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६६

फ़रसलबह्री अर्थात् दरियाई घोड़ा ॥

कहतेहैं कि यहजानवर थलचारी घोड़ाकेसमान होताहै इसका
स्वरूप शोभायमान और पूंछ लम्बी होतीहै और इसके खुर फटे

होतेहैं और खरगोशसे भी अधिक शीघ्र दौड़ताहै नाहिंगने कहाहै कि यहघोड़ा दरियानीलमें मिलताहै और यहनेहमंग अर्थात् नाक कोघातताहै और स्वरूपइसका यह है ॥

तसवीर नम्बर १३०

यह जानवर दरियासेनिकर घलुवाली घोड़ियोंसे रतिकरताहै इसके वीर्य्यसे जो घोड़ी अथवा घोड़ाहोताहै वह अत्यन्त शोभाय-मानहोताहै यह कहावतहै कि शेखअबुउलक़ासिमग़ारक़ान प्रसिद्ध जो खुरासान के मशायखमें से हैं वहदरियाके किनारे उतरे उनके साथ एकघोड़ी अच्छीसी थी इतनेमें दरियासे एकबड़ाघोड़ा जिस के शरीरमें सफ़ेद दिरहम के समान दाग थे निकला उसके प्रसंग से उस घोड़ी ने एकबच्चा जना वह अत्यन्त शोभायमान था इस पै शेख को लालचहुआ सो बच्चालेने के कारण फिर मराजिअत के समय वहांआये और घोड़ी और बच्चाकोभी साथलाये तो दरियाई घोड़ा निकला और थोड़ीदेर उस बच्चा को सूंघ के आप दरिया में चला उसके साथ वह बच्चा भी दरिया में चलागया फिर उन्होंने यह यत्नकिया कि घोड़ी तो हरसाल लाते परन्तु बच्चा नहीं लाते थे और उसीभांति घोड़ियां गर्भिणी होती थीं फिर तो उन्हों ने हर-साल यह नियत करलिया और इसी कारण उनको अबुउलक़ासि-मग़ारक़ान कहते हैं साद के बेटा उमरने लिखा है कि दरियाई घोड़े मिश्रके दरियानील में प्रकटहोते हैं और उस देशवाले उसदरिया के चढ़ाव से समझ जातेहैं कि अब वह घोड़ा आनपहुंचा इसघोड़ा के गुण लिखे हैं कि जो किसी के पेट में पीड़ाहो और इसघोड़ा के दांत उसके बांधदें तो तत्काल दर्द बन्द होजाय इसीप्रकार मिश्र के कुछलोग अन्न जल खराब खाते हैं और उनके पेट में दर्द होता है तो दांत इसीघोड़ा का बांध चट अच्छे होजाते हैं इसकीहड्डीको जलाय चर्बीमें मरहमबनाय गेंगटाके काटेपै लगानाउपयोगीहै॥ और उसके अंडकोश को पकाके खाना बिच्छू सांप आदिकों विषको अत्यन्त उपयोगी है ॥ जो इसकी खाल को किसी करिया में मांढ़

देखें तो उससे कोई आफ़त न आवेगी और इसकीखाल सूजन पर भी बांधना उपयोगी है॥

(फ़ातूस) यह एक बड़ी मछली है जो जहाज़को तोड़डालती है बहुधा जहाज़वाले रजस्वला के रक्त के कपड़े जहाज़ पर चपकाते हैं इस टटका से वह मछली जहाज़ की ओर मुख नहींकरती है॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६८

(क़स्ता) यह मछली इतनीबड़ी है कि इसकीहड्डीका पुलबनता है और उसपर होकर सबलोग जाते हैं इसकी चरबी कोढ़ बरस रोग में लगाना उपयोगी है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६९

(क़न्दस) यह एक थलचारी जीव होताहै जो ऐशो शहर की बड़ी २ नदियों में रहाकरताहै॥ इस जानवर के घरमें दोदरवाज़े होतेहैं एकतो सूखेकीतरफ और दूसरा पानीकीतरफ और उसका मकान कईदरजेका होताहै उसमें एकदरजा तो अपनेलिये बनाता है जो अति स्वच्छहोता है और दूसरा दरजा अपनी स्त्री के लिये नीचे की तरफ़ बनाताहै और घरके उत्तर की तरफ़ अपने बच्चों के लिये एकमकान बनाताहै और उसके नीचे अपने नौकरों के लिये मकान होताहै॥ जिससमय कोई शत्रु आजाय तो चट पानी की ओर अथवा सूखेकीओर जैसा समयहो निकलजाताहै यह मछली और बेरकी लकड़ी खाता है और इसके नौकर इसके लिये बेरकी लकड़ी लाते हैं॥ सौदागर लोग इसका और इसके सेवकों की खालको भलीभांति पहिँचानतेहैं क्योंकि जो जानवर इसके सेवक होतेहैं उनके कन्धेपर बालनहींहोतेहैं किन्तु छिलेहोते हैं किसहेतु से कि वे लकड़ी खींचते हैं और इसी पहिँचान से सौदागर लोग पहिँचान लेते हैं॥ सेवकोंकी खाल बहुत अच्छीहोतीहैं और इसके अण्डकोष को जुन्दवेदस्तर कहते हैं और यह रीह और मिर्गी विसिपान, अर्दंगी, लकवा और चित्तभ्रमादि रोगोंके लिये उप-

योगी होतीहै और इसके खाने की यह रीति है कि एक रत्तीभर जुन्दवेदस्तर को जल्लावमें घोरके देतेहैं॥ शैखुलरईसने लिखा है कि जुन्दवेदस्तर बहुतसे रोगों के लिये उपयोगी है जैसे सब प्रकार के तो घावों को और राशा अर्थात् कपकपी, फालिज और निसिया-नादि रोगोंकी और इसका गुण यह भी लिखा है कि बच्चाकोबच्चा दानसे बाहर लाताहै और हवामके काटे को भी अत्यन्त गुणकर-ताहै॥ सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर १००

(क़नफ़ज़ुलमाय) साही पानी में रहनेवाली॥ इस जीव का अद्भुत स्वरूप होता है इसका ऊपरका धड़ अर्थात् शिर और कन्धा और दोनोंहाथ और पेट तो साहीकासा होताहै और नीचेका धड़ मछलीकासा और मांस उसका अत्यन्त स्वादिष्ट होता है॥ इसमें बड़े बड़े गुण निज करके मूत्र बहने के लिये और पथली के लिये तो अतिही गुण कारीहै॥ इसकी खाल बहरापन को मिटाती है॥ जो इसकी खालसे तबला मढ़ावें और बजावें तो उसकी आवाज़ से सम्पूर्ण काटनेवाले जीव भागजायँगे॥ कहते हैं कि यह साही डीलडौल में गायकी बराबर होतीहै और रंग काला और इसके शरीर में बालनहीं होते और करमाकी ओर होती है मजूसी लोग इसको खातेहैं॥ स्वरूप इसका यह है॥

तसबीर नम्बर १०१

(क़ौक़ी) यह एक प्रकारकी मछली होती है इसके शीश पर एक सींग होताहै उससे अपने को बचातीहै॥ कहतेहैं कि जब यह मछली भूखी होती है और कोई छोटा शिकार इसकोनहीं मिलता तो उससमय किसी बड़ी मछली के आगे जातीहै जब वह इसको लील जातीहै तो अपने सींग से उसका पेटफाड़ के उसको खातीहै और जो कोई जीव इसपै टूटताहै तो यहमछली अपने शीशके सींग से उसे रोकती है और इसी सींगसे जहाज़ में छेद करके जहाज़ वालोंको खा लेतीहै॥ इसीसे मल्लाह लोग इसकी खालका कपड़ा

पहिरतेहैं क्योंकि इसका सींग इसकी खाल में नहीं बेधता है॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६२

कलबमाई अर्थात् दरियाई कुत्ता॥

यह छोटसा जीव प्रसिद्धहै इसकेपैर हाथोंकीअपेक्षा लम्बेहोते हैं और यहजीव अपनेकोमाटीमें ऐसा मिलाताहै जिसमें नाक जाने कि यहमाटीका ढीलाहै जब नाक उसकोइसधोखेमें खा लेताहै तो उसकेपेटमें जाके उसके दिल और कलेजा को खाता है और फिर पेट फाड़ के बाहर निकल आता है कोई २ कहते हैं कि जुन्दबेद-स्तर इसी जानवर के अण्डकोश हैं इस जात की आपस में बड़ी प्रीति है जो एकभी जाल में फँसता है तो झुण्डका झुण्ड आय के इकट्ठा होजाता है॥ जो कदाचित् स्त्रीजालमें फँसती है तो उसका पुरुष दूसरी स्त्रीकेसाथ रतिनहीं करता है और जो पुरुष फँसजाता है तो उसकी स्त्री दूसरे पुरुष से प्रसंग नहीं करती है॥ कहते हैं कि जब पुरुष जाल में फँसा और उसको यह प्रतीति होगई कि अबमेरा छूटना असम्भावि है तो अपने अण्डकोश अपने दांतों से काट के अहेरिया के आगे फेंकदेता है परन्तु स्त्री खाल के कारण कोई यत्न नहीं छूटनेकीकरसक्ती कि किसहेतुसे कि उसकीखाल अति उत्तम है और पुरुष के अंडकोश जुन्दबेदस्तर होनेके कारण बहुत प्यारे हैं जब एकबार अंडकोश निकालेगये और दूसरीबार फिर वही कुत्ता आके जाल में फँसा तो वह कुत्ता अपने पावँ उठाके दि-खाता है कि मेरे अंडकोश नहीं हैं तब अहेरिया उसको छोड़देतेहैं और यहजीव मछली और गेंगटा खाता है॥ इसके गुण ये हैं कि इसके दिमाग़का खाना मेत्रोंकी धुन्धको दूरकरता है॥ शेखुलरईस ने कहा है कि जो कोई इसका पित्ता एकमोठ के दानेभरखाय तो एक अठवारेमें मरजाता है इसके अंडकोश सांप और बिच्छूके विष केलिये और रीह और फ़ालिसबिधान रोगोंको उपयोगीहै और पर-खप किसकुआ॥ इसकामोछ्त किसी दूसरी पोस्त में मिलाके बेचैं

और उसका कपड़ा बनाके नकरस रोगवाले को पहरावें तो उपयोगी है ॥ सूरत यह है ॥

तसबीर नम्बर १०३

(कोसच) यह एकप्रकार की मछली बसराके आसपास होती है ॥ मनुष्य के दांतोंके समान इसके भी दांतहोते हैं और जीवों के टूक टूक करडालती है ॥ जो इस मछलीको रात में मारें तो इसके चरबी बहुत निकलती है और जो दिनमें मारें तो कुछनहीं निकलती है और सूरत यह है ॥

तसबीर नम्बर १०४

नज़र पांचवीं पृथ्वी के गोलाकार के विषय में ॥

पृथ्वी एक स्वरूप लम्बा चौड़ा है उसका स्वभाव सर्द खुश्क अर्थात् शीत और रूखाहै और नीचेकी ओर झुकी है इसका स्वरूप गोलहै और पानीके ऊपर स्थितहै और विद्वानों को इसका निश्चय होनेका यहकारणहै कि एक ग्रहण जो संसारमें परता है पूर्व और पश्चिम के शहरों में एकही समय पै नहीं दृष्टि आया किन्तु भिन्न भिन्न समय पर प्रकट हुआहै जो उसका उदयास्त सम्पूर्ण पूर्व और पश्चिम देशों में एकही बार होता तो किसीभांति अन्तर न पड़ता पृथ्वी शीतहै और कारण इसका यहहै कि जो यह बारिद अर्थात् शीत न होती तोयह न तो ठोसहोती और न चिपकाहट इसमें होती और जो यह बात न होती तो इसकी पीठपर जीवोंका ठहरना और खानोंमें धातु आदिका उत्पन्नहोना असम्भावित था निदान विद्वानोंके निकट पृथ्वी के तीनि परतहैं और वह केन्द्रके निकट हैं सो वह केवल पृथ्वीहै और वह तह माटी है और एक ऐसी तह है कि कोई२ अंग तो उसका खुलाहै और किसी२ को समुद्र घेरे है और वही ऊपरके मण्डलों का केन्द्रहै और ईश्वरकी इच्छासे संसार के मध्यमें स्थितहै और बायु और जल उसको चारों ओरसे घेरे हैं मनुष्य जिस ओर पृथ्वी पर खड़ाहो तो उसका शीश तो आसमान की ओर और पृथ्वी पांवके नीचे रहेगी और मनुष्य आधे आसमान

को देखता है और जब दूसरे ठौरको जाय तब उसको दूसराभाग दृष्टि आने लगताहै महासागरने पृथ्वी की चारों ओरसे घेरलिया है और खुलीहुई पृथ्वी बहुत कमहै जो समुद्रसे दृष्टि आतीहै और उसका दृष्टान्तयहहै कि जैसे दरियामें एकअण्डापराहो और केवल उसकी चोटीखुलीहो इसमें पृथ्वीका दृष्टान्त नतो अण्डाकी लम्बाई है और न गोलाई वरन पृथ्वी उसीके सदृशहै जो अण्डा दरिया में पड़ाहो और उसकीचोटी कुछेकखुलीहो पृथ्वीके भीतरबड़े २ कन्दरा बहुतसा जंगल बड़े२ खोहा और आखात अर्थात् नहरें हैं और ये सब पानीभाफ और तरीसे भरेपरेहैं और इन सब रतूबत अर्थात् नीलेपन में चिकनाईहै जिसकी चरबी से खानोंके सारबँध जाते हैं और येपनीर और भाफ सदैवइस्तहाला अर्थात् एकदशासे दूसरी में पलटा करतेहैं और बदलते रहतेहैं और कभी ईश्वर की दयासे प्रकटहोतेहैं और कभी नाशमान होजातेहैं और प्रत्यक्ष तो पृथ्वीपर पहाड़,जंगल,उँचाई, निचाई,बालू,हरेरी, नद्यादि बहुत हैं जिनमेंसे कोई२तो सदैव बहाकरतीहैं और कोई कभी२ बन्दहोजातीहैं और बायु,मेघ,बर्षा ये किसीसमय अलग नहींहोते बरन सदैव वर्त्तमान रहतेहैं परन्तु हां ठौर२ जैसे जाड़ेकीऋतु में एराक़ (नामदेश) और फारसादिमें बर्षा होती है और हिन्दुस्तानमें गर्मियोंमें बर्षा होतीहै तो इससे यह सिद्धि हुआ कि मेघकी बर्षा पृथ्वीपर कभी बन्द नहीं होती किन्तु किसी न किसीखण्डमें पृथ्वीके पूर्वपश्चिमउत्तर दक्षिण में बर्षा बनीही रहती है संसारके समाचार तो गर्मी,सर्दी,दिन,रात बसन्तादि ऋतुओंके समान भिन्न २ हैं और संसारमें बहुत से शहर हैं जिनकी चाल ढाल और वहांके निवासियोंके स्वभाव एक दूसरे से अलग हैं और धातु,जीव,बनस्पति तो सदैव कमती बढ़ती में हैं कभी सजीव और कभी नाश है पृथ्वी पै कोई ऐसा ठौर नहीं जहां ये सम्पूर्णबस्तु न हों परन्तु हां स्वरूप,स्वभाव,प्रकृति,जाति,बर्णोंमें तो अवश्य भेद होता है सो उसका ब्योरा तो एक ईश्वर के सिवा कोई जाननाही नहीं सो श्रीमुख आपु भाषता है कि कोईपसा और दाना

चाहे अंधकारही में हो और कोई सूखी गीली वस्तु ऐसी नहीं है जिसको ईश्वर न जानता हो॥

फ़सल वैद्य औ विद्वानोंकी मतिभेदके विषय में॥

पृथ्वीके स्वरूप और चालके विषयमें बड़ा भेद है परन्तु जिसको बहुतसे मानते हैं वह यह है कि पृथ्वी गेंदके समान गोल और आसमानके भीतर बनीहै जैसे अंडाके भीतर जर्दी होती पृथ्वीकी चाल चारों ओर बराबर है अर्थात् ऊपर, नीचे, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिममें हुकम मुतकल्लन के बेटा हुशाम का निश्चय है कि पृथ्वी की निचाई एक स्वरूप है और उसकी प्रभुता से ऊंचा होता है परन्तु पृथ्वी से नीचे जाने से रोका है इसीकारण वह सहारे के आधीन नहीं है क्योंकि उसको नीचेजानेकी इच्छा नहीं है वरन ऊंची होने की अभिलाष है और सहारे से प्रयोजन है कि लम्भ और खम्भके आधीन नहीं कि जिसपै वह ठहरै वरन ऊंची होने की अभिलाष रखती है अबूउलहज़ील ने लिखा है कि ईश्वरने अपनी बुद्धिमानीसे पृथ्वी को बिना खम्भा और बिना किसी लगाव के स्थित किया है और दीमक्रातीस का निश्चय है कि पृथ्वी वायुपर स्थित है और उसके नीचे वायु भरीहुई है वह कोई राह निकलनेकी नहींपातीहै इसलिये घबड़ाके जहांकी तहां थँभ गई और यही सम्मति हुकमुतकल्लिम के बेटे हुशामकीहै किसी२ विद्वान्‌का मतहै कि पृथ्वी आसमानके बीच एक नियत सीमापर स्थितहै और आसमान उसको चारोंओरसे घेरेहुयेहै इसलिये यही कारणहै कि बराबरवह केवल एकहीओरको आसमानको झुकतीहै क्योंकि उसकेसबअंगोंकी शक्ति बराबर है जैसे चुम्बक लोहेको अपनी ओर खींचता है उसीप्रकार आसमान अपनी आकर्षण शक्ति से पृथ्वी को चारों ओर से खींचे और कसेहुयेहै कोई२ विद्वान् कहतेहैं कि पृथ्वी बीचमेंस्थितहै और इसकेखड़ेहोनेकाकारण आसमानका शीघ्रचक्रहै और वहआसमान पृथ्वीको चारों ओरसे कसे हुयेहै जिसमें वह अपनी कोली अर्थात् बीच पैही थँभीरहै जैसे माटीऔर पत्थर को किसी शीशा में रखके

जो हिलाओ तो हिलने की शक्ति से माटी और पत्थर दोनों सीधे होजायँगे ॥ महम्मद ख्वारज़िमी ने लिखाहै कि पृथ्वी आसमान के भीतर नीचेमें है और पृथ्वी गोलाकार गेंदके समान है और इसमें पहाड़ और टीले और गढ़हा दन्दाने हैं सो यह बात सिवाय गोल के नहीं होसक्ती और जो पहाड़ादि मिटा दिये जायँ तो कदाचित् गोल होने का अनुमान सत्य ठहरै जैसे गोलाकार का व्यास एक अथवा दो गज़का है उससमय कोई वस्तु अर्जनादिके दाना समान ऊगै अथवा मिटजाय तो सब प्रकार गोल होने से बाहिर नहीं होगी और जो ये पहाड़ न होते तो निस्संदेह जो जल चारों ओर से घेरे है इसको ख़राब कर देता और ऐसा ख़राब करता कि इस के चिह्न भी न बचते तो इसदशामें जो ईश्वरकी चतुराई जीवधारी बनस्पति औरधातु आदिके बनानेमें है वह सब मिथ्या होजाती वह ईश्वर जिसकी मायाकाभेद उसके सिवाय और कोई नहीं जानता है पवित्र है ॥ मम्बाका बेटा वोहव जिस पै ईश्वर प्रसन्न हो कहताहै कि पृथ्वी चारों ओर को डगमगाती थी और नौका समान चल बिचल होती थी तब ईश्वर ने उसके ठहरने के लिये अत्यन्त दीर्घ औरबलवान् फ़रिश्ता उत्पन्न किया और आज्ञा दी कि इसके नीचे आके अपने कन्धों पर धर ले तब उस फ़रिश्ता ने ईश्वर की आज्ञानुसार एक हाथ तो पश्चिम और एक हाथ पूर्व को निकाल के पृथ्वी की रक्षा की परन्तु उस फ़रिश्ताके पैरोंके नीचे कोई वस्तु नहींथी जिसपै वह ठहरता तब ईश्वर ने एक चौकोणपत्थर याक़ूत का उत्पन्न किया और उस पत्थरमें सातहज़ार छेदकिये तिन छेदों में से प्रत्येक छेदमें एक समुद्र उत्पन्न किया और उसका गुणईश्वर के सिवा कोई नहीं जानता और उस याक़ूत के पत्थरकी आज्ञादी कि उस फ़रिश्तेके दोनों पैरोंके नीचे जाय तब वह पत्थर ईश्वर की आज्ञानुसार अपनी नियत ठौर पर गया परन्तु उस पत्थर के भी ठहरने की ठौर न थी तब ईश्वर ने एक गौ ऐसी उत्पन्न की कि जिसके चालीस हज़ार तो आंखें और चालीस हज़ार कान और

चालीस हज़ार नाक और चालीस हज़ार मुख और चालीसहज़ार जवान और चालीसहज़ारहाथ पैरहैं और उस गौ के अगले और पिछलेपावोंके बीचमें पांच पांचसो वर्षकीराहका अन्तरहै तब ईश्वर स्वप्रकाशीने उस गौको आज्ञा दी कि उस पत्थर के नीचे जाय तब उसगौने ईश्वरकीआज्ञानुसार उसपत्थरको अपनेशीशपै उठालिया और नाम उसगौका कसूवानहै परन्तु उसगौ के पैरोंतर भी कोई वस्तु न थी जिसपै वह ठहरती तब ईश्वरने एक मीनऐसी उत्पन्नकी कि जिसकी बड़ाई और प्रकाश नेत्र और दीर्घता के कारण किसी की दृष्टिगोचर में नहीं आसकीथी और स्वरूप इतना बड़ा था कि सम्पूर्ण समुद्र जो उसके एक नथुने में छोड़ेजायँ तो ऐसा दृष्टिआवे जैसे जंगलमें एक राईका दानागिर पड़े उसको ईश्वरने आज्ञादी कि उस गौकेनीचे जाके ठहरे और उसका नाम हूतबहुमूतहै तिस उपरांत मछलीके नीचे पानी और पानीके नीचे वायु को नियत किया और तिसके नीचे ज़ुलमान अर्थात् अंधकार नियत किया तिसको सृष्टिमेंसे न तो किसीने जाना और न जानेगा कि उस अंधकारमें क्याहै उसे केवल ईश्वरही जानता है ॥

ब्याख्यान पृथ्वी की लम्बाई चौड़ाई मुटाई बस्ती और उजाड़के विषय में ॥

अबूउलरैहां लिखताहै कि पृथ्वीके ब्यासकी लम्बाई दो लाख एकसौ तिर्सठ फ़र्सख़ और एक तिहाई ऊपर है (एक फ़र्सख़तीन मीलका होताहै) और घेरा पृथ्वीका छह हज़ार आठसौ फ़र्सख़ है इसी रीतिसे जो पृथ्वी पानीसे खुलीहुईहै वह चौदह हज़ार सात सौ चालीस फ़र्सख़ लम्बी है और चार हज़ार दोसौ बयालीस और ¼ एक बटाहुआ पांच फ़र्सख़है और महन्दसीन गणितकी रीति से निश्चय करताहै कि जो कोई मनुष्य पृथ्वी में गड़हा खोदे तो अवश्य उसके अन्तमें जाके दूसरा छेद निकलैगा॥ जैसे नोसह की धरतीमें छेदकरें तो अवश्य उस छेदका अन्त चीनकी धरतीमें होगा और महन्दसीन के विद्वान् इसी समाधान पर निश्चय करते हैं॥ जबसे महम्मदी धर्म्महुआ तबसे मामूलख़लीफ़ा के समयमें पृथ्वी की

माप ध्रुवकी उंचाई के अनुसार हुईथी ॥ विद्वानोंकी मति अनुसार आसमानका प्रत्येक खण्ड ५६ । कुण्डव सही एकबटा तीन मील है और बतलीमूस ने चाहाथा कि सम्पूर्ण पृथ्वी कितनी है जिससेविदित हो कि बस्तीगत कितनी है और ऊजड़ कितनी है तो आनूदयास्तमें माना और उससे एक दिन रात से प्रयोजन, तिस उपरान्त उसके चौबीस भाग किये और प्रत्येक भाग का नाम दण्ड रक्खा और एक दण्डके चौबीस भाग किये तब तीनसौ साठ टुकड़े हुये आसमान के तीनसौसाठ खण्ड अथवा अंशों के बराबर तिस उपरान्त उसने चाहा कि यह भी मालूम होजाय कि आसमान का प्रत्येक अंश पृथ्वी के के मीलकी बरावर है तो उसको सूर्य्यग्रहण से मालूम किया कि एक शहर से दूसरा शहर मील के हिसाब से कितनी दूरी परहै और इन दोनों शहरों के बीच में समय के हिसाब से कितनी दूरी है अर्थात् कितनी देर में एक शहर से दूसरे में जायगा अथवा कितनी देरमें यह दूरी समाप्त होगी ॥ जैसे एक शहर से दूसरे तक पहुंचने में एक दिन लगा तो १२ बारह दण्ड हुये जो केवल राह में बीतेंगी परन्तु इतना है कि उसने राह भी चली हो और दण्डको सम दण्ड भी जानताहो ऐसा न हो कि वहसायत मऊज अर्थात् वह दण्ड जिसका नियम नहीं कमती बढ़ती भी हुआ करती है जानता हो ॥ समदण्डपन्द्रह अंश से कमती बढ़तीका नहीं होता और मऊज उसके बिपरीत जो वह कभी जाड़े में दशसमदण्ड का दिनमान जानसकेकि जबप्रथम मकर राशिमें सूर्य्य होताहै जो दोसौ दशअंशसे प्रयोजन और यह दिनकी अत्यंत न्यूनताहै और रात्रो चौदहसमदण्डकी यहभी दोसौ दश अंश से प्रयोजन है परन्तु दण्ड माऊजा वहहैं कि उन्हींडेढ़सौ को १२॥ साढ़ेबारह अंशपै रक्खे और जो विपरीत हो अर्थात् दिन चौदह दण्डका कर्क राशिके सूर्य्यके समान हो और रात्री दशदण्ड अर्थात्डेढ़सौ अंशकीहो तो रात दिन दोनों समहों तब उन दोसौदश अंशको बारहसे भाग देतेहैं और लाभ प्रत्येक भागको दण्ड मऊ-

जा कहते हैं॥ इसी प्रकार बतलीमूस ने पृथ्वी के मीलोंको दरजों पर बांटा तो मालूम हुआ कि आसमान को प्रत्येक अंश धरती के ७५ पचहत्तर मीलके बराबर है तब फिर १५ पन्द्रह से यहाँ के अंशों को गुणा किया जो तीनसौसाठ हैं तो गुणनफल सत्ताईसहज़ार २७००० मील पृथ्वीहुई बतली मूसके निकट पृथ्वी गोलाकार वायु में लटकी हुई है और आसमान का चक्र जो पृथ्वी से प्रयोजन है सत्ताईसहज़ार मील है तिस उपरान्त उसकी बसगित और उजाड़का अनुमान किया तो मालूम हुआ वह बसे भये टापू हैं जो पश्चिम में स्थित हैं और वह टापू खालदातका चीनकी सीमातक है तो जब इस टापूमें सूर्य्यउदयहोताहै तोचीनमेंसूर्य्यास्तहोता है और जब यहां अस्तहोता है तो चीनमें उदय का समय होता है यह पृथ्वी का गोलार्द्धहै और यह तेरह हज़ार मील है और वह लम्बाई सम्पूर्ण बसगितकीहै तब बसीभई धरती का हिसाब किया तो मालूम हुआ कि बसीधरती दक्षिणकेकिनारेसे उत्तरके किनारेतक अर्थात् जहां से दिन रात बराबर है वहां से लेकर जहां गर्मी में दिन बीस घड़ी का और रात चौदह घड़ीकी होती है और जाड़े की ऋतु में इसके विपरीत उसकी रात बीस घड़ी की और दिन चौदह घड़ी का होताहै तो हिन्दुस्तान और हबशके देशमें रात दिनकी बराबरी दक्षिणके किनारेसे है और जिसठौर दिन साढ़े बीस घड़ी का होता है वह उत्तर की अंतसीमा है और इनठौरों के बीचमें साठ भाग हैं तो सम्पूर्ण चारहज़ार पांचसौ मील हुआ और वह पृथ्वी का छठा भाग हुआ॥

व्याख्यान पृथ्वी के चार भागोंके विषय में॥

अबूउलरैहां ख्वारजिमीने लिखाहै कि सतहमुअद्दलुनहार अर्थात् मध्यरेखा जो पृथ्वीके दो भाग करती है वह मध्यरेखापर है इनको में से एकतो उत्तरीय और दूसरा दक्षिणीयहै तो जब को इसको पृथ्वीकेपूरे गोलाकारपरबांटें जोदोनों मध्यरेखाओं पर होकर आताहै तबपृथ्वीके बीचसे दोभागहोजातेहैं तो इसप्रकार पृथ्वीकेचारभाग

होजाते हैं उनमेंसे दो तो दक्षिणीय और दो उत्तरीय जो प्रकटहैं अ-
र्थात् यहां पानी नहीं है और इसको चतुर्थांश अर्थात् बसगित क-
हते हैं और यह चतुर्थांश उससंग्रह में संयुक्तहै जो पहाड़,नदी,टापू
धातु,शहर और गांवादिके समान पहचाने गये हैं और क्योंकि यह
भाग पृथ्वीका उत्तरीय ध्रुवके नीचे स्थित है और उसमें शील और
बर्फ का अधिकत्व है इसीकारण इसमें बसगित नहीं है अबूउलरै-
हांने लिखाहै कि मुग्रदलुनहार अर्थात् मध्यरेखा पृथ्वीको दोभाग
करती है उसमेंसे दोभाग अर्द्धदक्षिणीय और दो अर्द्धभाग उत्तरीय
उसमेंसेउत्तरीयदोभाग येराक़ सेलेकर टापूशाम मिस्र,रोम,फ़रंजिया
रोमियांसोस और सादातके टापू तक हैं कोई २ इन्हीं टापुओंमें से
खाल दातके टापू कहते हैं यह पृथ्वीका पश्चिमोत्तरीय चतुर्थांश है
और येराक़से यहबाज़तक और कोहिस्तानखुरासान और तिब्बत
से चीनतक और चीन से अक़बांम तक यह चतुर्थांश पूर्वोत्तरीय है
और इसी भांति दक्षिणी गोलार्द्ध के भी दो भागहैं पूरब दक्षिणमें
हवशी जंग और नोवहहै और पश्चिमी चतुर्थांश में कोईनहीं गया
है वह सरके भर पानी में डूबा है एक कहावत है कि बतलीमूस
यूनानका बादशाहथा उसने चाहाथा कि बसीभई धरतीके समाचार
जानें इस हेतु से लोगों को उस ओर भेजा उन्हों नेजाकर वहांके
विद्वानों से शास्त्रार्थ किया कि इस बिषय में तिस उपरान्त वहां के
समाचार जान प्रथम लोगों ने आकर यह समाचारदिये कि वहां
बिलकुल ख़राब है और कुछ आबादी नहीं है इसी कारण उसचतु-
र्थांशको ख़राब कहतेहैं और उस चतुर्थांशको डूबाहुआभी कहतेहैं ॥

व्याख्यान अक़ालीम अर्थात् खण्डों के बिषय में ॥

बिदितहो कि बसे हुये पृथ्वी के चारों टुकड़ोंके सातभाग किये
हैं और प्रत्येक भागको एक अक़लीम अर्थात् खण्डको देश बनाया
है मानों पूरबसे पश्चिम को एक लम्बा फ़रश बिछाया है और
उसकी चौड़ाई दक्षिणसे उत्तर तकहै और लम्बाई और चौड़ाई में
भिन्न २ स्थित हैं और सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ५०७

सबसे बड़ी यक़लीम अर्थात् खण्ड प्रथम है इसकी लम्बाई पूरबसे पश्चिम तक तीनहज़ार फ़र्सख़ है (एकफ़र्सख़ तीनमील का होताहै) और चौड़ाई दक्षिण से उत्तर तक डेढ़सौ फ़र्सख़ है और सातवांखण्ड सबसे छोटाहै क्योंकि इसकी लम्बाई पूरबसे पश्चिम को डेढ़हज़ार फ़र्सख़ है और चौड़ाई इसकी दक्षिण से उत्तर तक सत्तर हज़ार फ़र्सख़है और शेष यक़लीम अर्थात् खण्ड जो प्रथम और सप्तमके बीचमेंहैं वे लम्बाई और चौड़ाईमें एक दूसरेसे भिन्न हैं और ये बिभागमान भये नहीं हैं बरन ये थोड़ीसी रेखा सिद्धकी भईहैं जिनको महाप्रतापी बादशाहों ने नियत कियाहै और आदि समयमें पृथ्वी की लम्बाई चौड़ाई जानने के हेतु पृथ्वीका पर्यटन कियाहै और वे बादशाह ये हैं फरेदूं१,बन्ती२, सिकन्दररूमी३, और उर्दशेर वावक फ़ारसी४ परन्तु शेष पृथ्वीकावृत्तान्त इन्होंनेभी नहीं जाना और उनके पृथ्वी पर्यटन के अवरोधक बड़े २ पर्व्वत कठिनराह और भयानकनदी समुद्र उनकी लहरें और सरदी गर्मी और अतिअँधियारा थे और उत्तरकी तरफ़ बनातुल नाश अर्थात् सप्तऋषियोंकेनीचे अत्यन्तशीतरहा करताहै क्योंकि वहां छःमहीने तक लगातार सूर्य्य दृष्टि नहींआता इसकारण वहां अन्धकाररहा करता है बायु अधिक और शीत अतिकराल होनेके कारण पानी जमारहताहै और शीत और अँधियारेके मारे जीव और बनस्पतिका नाशहोजाताहै और इसठौरके बिपरीति दक्षिणमें सुहेलके नीचे छः महीनेतक गरमी की ऋतु रहतीहै वहां अति ऊष्माके कारण बायु अग्निसमान चलतीहै जो जीव और बनस्पति को भस्मकर देती है और छः महीना तक लगातार दिनही बना रहता है बीच में कोई रात्री नहीं होती इस दशा में वहां मनुष्य पशू और बनस्पति का रहना असम्भावि है परन्तु पश्चिम में तो महासागर मनुष्यों की राह में बाधक होता है क्योंकि उसमें लहरें अति कराल उठती हैं अति अँधियारा होता है और पूरब की ओर जाने में बड़े २ पर्व्वत

कठिन उल्लंघनीयहैं जिस कारण लोग उस ओरको नहीं जासक्ते इससमाचारानुसार जो विचारकरदेखो तो भलीभाँति प्रकटहै कि सम्पूर्ण सृष्टि चारों ओर से सातों अक़ालीम अर्थात् खण्डों में बन्द हैं और इनलोगोंको शेष पृथ्वी का कुछ भी हाल नहीं मालूम है॥

व्याख्यान भूचाल के विषयमें॥

विद्वानों का निश्चय है कि जब भाफ पृथ्वीके नीचे इकट्ठे होते-हैं और उनमें सरदी किसीप्रकार नहीं पहुंच सक्ती जिसमें वे भाफ सरदी से पानी के समान होजायँ निदान जब वे भाफ बहुत से इकट्ठे हुये यहां तक कि उनका मिटना अति कठिन होता है और पृथ्वीकी कठिनताके कारण राह नहीं पाते जिसमेंवह भाफ धीर-जसे निकल जाय इसकारण जब भाफ ऊपर निकलनेका अनुमान करती और राह नहीं पाती तो उसीमें बन्द रहती है तब उस भाफ की अधिकत्व के कारण पृथ्वी कांपने लगती है और वह भाफ भी अधिक होने के कारण घबड़ाती है जैसे जूड़ी और तप वाले को अतिही कपकपी आती है तो हरारत ग़रीज़ी अर्थात् वह उस ऊष्मता के कारण जो जीव धारियों के शरीर को गर्म्म रखती है और सड़ने नहीं देती उस सड़े पानी के कणों में ज्वालासा भड़क उठताहै और उनभाफोंकेकणोंको जलाकेगलाताहै और उनकोभाफ और धुआं बनाताहै तब वह भाफ और धुआं धरतीकेबाहरनिकलते हैं और जब तक वे बाहर नहीं निकलते तबतक पृथ्वी वैसीही कांपा करती है और उनके निकलजाने के उपरान्त धरतीका थरथराना बन्द होजाताहै और कभी २ ऐसा होताहै कि इस भाफ और धुआं के बलसे पृथ्वी फट जाती है और उसी फांकमें होके वह भाफ निकलती है और कभी ऐसाहोता है कि जब वह भाफ निकलती है तब वह पृथ्वी नीचेको धस जाती है परन्तु यह दशा उस समय होती है कि जब वहां पृथ्वी नीचे पोली होतीहै और जब वहधरती धसी तो जोकुछ वहां शहर अथवा गांवहो तो वहभी नीचे को धस जाताहै आगे सत्य जाननेवाला ईश्वर है॥

व्याख्यान बहिया के विषयमें ॥

विद्वान्‌लोग कहते हैं कि जब पानी और माटी एकमें मिलते हैं तो एकप्रकार का चिपकने वाला पिंड बन जाताहै तिस उपरान्त बहुत दिन तक उस चिपकने वाले पदार्थ पै सूर्य्यकी किरणें पहुंचा करतीहैं इसकारण वहमाटी पत्थर होजातीहै जैसे देखने में आता है कि जब आग माटी पै बराबर रहती है तो वह माटी पत्थर के सदृश होजाती है जैसे ईंट आगका अधिक ताव लगने से पत्थर के समान कड़ी होजाती है और जितनी अधिक आंच लगजायगी उतनीही माटी अधिक कड़ी और ठोस होती जाती है और फांक होजानेके समय धस भी सक्ती है इसलिये जो धरती ऊपर को निकल आती है वह पत्थर होजाती है और यहबात बायुके कारण दृष्टि आती है कि बायु माटीके ढेर को एक ठौर से दूसरी ठौर उठाके फेंक देती है और उस माटी से ढेर और टीले दृष्टि आते हैं और फिर वह टीले और माटी के ढेर पत्थर होजाते हैं ॥ महाशय महवती का निश्चय है कि छ[illegible]हज़ार वर्ष उपरान्त तारों की उंचाई और ग्रहों के स्थान बदलते हैं जब तारों की उंचाई अथवा ठौर उत्तर से दक्षिणको बदलते हैं तब उससमय रातदिन गरमी सरदी बदलजाती है और पृथ्वीके जो चारभागहैं सो भी बदल जातेहैं और बसगितउजाड़होतीहै और उजाड़ बसतीहै और सूखे मेंसमुद्र और समुद्रमेंसूखाहोताहै और पहाड़मेंबहिया औरबहिया में पहाड़ होजाताहै और पहाड़ोंकी दशा यह होती है कि वे नरम होजातेहैं और सूखापन अधिकहोताहै और बिजलीगिरनेसेपहाड़ टूटजाते हैंजब उनके बड़े२पत्थर होजाते हैं तब उनको पानीउठाके जंगलमें पहुंचाताहै और जब कभी पानीका अधिकवेग होताहै तब उनकोढरकाके समुद्र में डाल देताहै सोई पत्थर इकट्ठे होके कुछ काल में समुद्र के बीच पहाड़ होजाते हैं जैसे कि बायु के वेग से सूखे में बालू के पहाड़बन जातेहैं और यही कारण है कि पत्थरोंके भीतर बालू मिलती है और यही कारण है कि पत्थरों के भीतर

सीपी और हड्डी मिलतीहैं और पत्थरोंमेंपरतहोतेहैं सो सब कारण बहिया का है किस हेतु से कि बहिया एक ठौर से दूसरी ठौर को जाती है तो अपने साथ पहिली ठौर की माटी लेजाती है और उसे समुद्र में गिराती है तो उसका प्रत्येक परत थोड़े दिन बीतने के उपरान्त पत्थर होता है और सत्य ईश्वर जानता है॥ कभी समुद्र सूख जाता है और सूखा ठौर समुद्रहोजाता है इसका यह कारण है कि जब समुद्र के घटावबढ़ाव से पानी वेग से गिरता है और समुद्र के फूलने से पानी बाहर निकल कर किनारों के पास की धरती को छिपा देताहै सदैव थोड़े २ दिन उपरान्त ऐसाही हुआ करताहै और उस बाढ़के पानीके साथ में पहाड़ पत्थर बालू खींचता है निदान वह बहियाका पानी उसको उठाके समुद्र भीतर छोड़ता है और वह माटी पत्थर समुद्रके गहराव को पाटते हैं और सदैव उस पै इसीप्रकार अधिकही होता जाताहै अंतको वह पृथ्वी की बराबर होकर टापूके सदृश प्रकट होताहै तिस उपरान्त उस धरतीपर हरेरी दृष्टि आती है जब वहां जंगली जीव और पक्षी अपना २ बासा बनाते हैं तब मनुष्य भी अहेरादि के मिसि उस ओर को जा निकलते हैं इसीप्रकार धीरे २ क्रम २ बस्ती होजाती और खेती होजातीहै॥ जो ईश्वर सदा एकरस अजर अमरहै वह पवित्र है और सिवाय उसके सम्पूर्ण सृष्टि बदला करती है और वही ईश्वर मनुष्य को सत् राह पै लगाता है॥

व्याख्यान पहाड़ों की लाभके विषयमें॥

पहाड़ों से बड़े २ लाभहैं और आप ईश्वर श्रीमुख कहताहै कि जो पहाड़ न होते तो पृथ्वी हिलाकरती॥ किसी२ ने लिखा है जो पहाड़ न होते तो पृथ्वी बराबरहोनेके कारण उसपै पानी आजाता और समुद्र सम्पूर्ण पृथ्वी को ढक लेता तो उस दशा में ईश्वर की बुद्धिमानी जीव बनस्पति और धातुआदि की रचना विषय मिथ्या होजाती इसलिये ईश्वरने इस दूषण के मिटानेके लिये पहाड़ों की रचना करी कोई कहते हैं कि पहाड़ोंकी रचनासे नहरें आदिक बहती

हैं और उन्हींसे जीव और बनस्पति सजीव रहतेहैं इसकाकारण यह है कि इन नदियोंके द्वारा समुद्र पहाड़ों से और पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण सेसम्बन्ध करताहै और पहाड़ बायुको रोकतेहैं जिसमें नदियां और ओरको न बहें बरन पहाड़ोंहीके बीचरहें और वहां नदियोंके रहनेसे जाड़ाहो जिससे मेघ और बर्फ उत्पन्नहो और जो पृथ्वीपै पहाड़ न खड़ेहोते और उन पहाड़ों में पोल न होती तो पानी काहे में इकट्ठाहोता और गर्म्मियों में कहांसे मिलता हां यह होता कि पानी पृथ्वी पै बहजाता धरतीपै सूखाहोता जिससे गर्म्मियोंमें जीव और बनस्पति मिटिजाते इसलिये ईश्वरने बुझीहुई भाफके रोकनेकेलिये पहाड़ोंको बनाया और उसपानीसे पृथ्वीपै बहियाभी न आवे और बायुको रोके रहें जिसमें इस भाफको फैलाने न पावे निदान जाड़े की सरदी आनेतक वह पानी पहाड़ोंकीरक्षामें रहताहै और जब जाड़ा आताहै उस भाफको जमाताहै और फिर निचोर के पानी बनाता है और पहाड़ोंमें हवा और गढ़े और गुफा अधिकहैं इसलिये जो बरफ़ और मेघ पहाड़ोंकी चोटीपरबर्षताहै वह उन्हीं गढ़ों और कन्दरों में भरताहै तब पहाड़ों के झरनोंसे पानी झरताहै फिर वेही सोता हो-जातेहैं और इन्हीं सोतों से पृथ्वी पै पानी पहुंचता है जिससे जीव जीतेहैं और जो कुछ सृष्टिके खर्चसेबचताहै वह बहकरसमुद्रमेंजाता है और ये सोते सूख जाते हैं तब फिर जाड़े आजाते हैं तब फिर सोते बहने लगतेहैं निदान जबतक सृष्टिहै और रहैगी उसवक़्तक यहीदशा रहैगी अब हम पहड़ोंके अद्भुत पदार्थका बर्णनकरते हैं॥

(पहाड़ऊलस्तान) यह पहाड़ रोमके देशमें स्थितहैइस पहाड़में एक राहहै उसमेंहोकेजो मनुष्य अखरोट और रोटी और पनीरखाता हुआ एकसिरेसे दूसरेसिरेतक निकलजाय तो उसकोकुत्तेके काटने काविषनहीं व्यापैगा और जो कोईमनुष्य वहां गयाहोउसकेपैरोंके बीचमें होकर वहमनुष्य जिसको कुत्तेने काटाहो निकलजायतोतत्-काल अच्छा होजाय और यहबात रोमनिवासियों में बहुतप्रसिद्धहै॥

(पहाड़आबीकबीस) यह पहाड़का बाशरीफ़(काबा मुसल्मानों

का धर्म्मस्थान) केनिकटहै जो कोई मनुष्य इस पहाड़की चोटी पै चढ़के कल्लाभूनकेखाय तो उसे यावत् जीवत शीशकीपीड़ा न होगी बहुतसेलोग इसबातपरआरूढ़हैं परन्तु प्रकटऐसामालूमहोताहै कि इसबातको मक्काकेकल्लाबेचनेवालों ने अपनी ओरसे प्रसिद्धकियाहै॥

(अजायबसलमी) ये दोनों पहाड़ बनीतय नामक ठौरपै हैं कहतेहैं कि यहां पूर्वोक्त जातके लोग ठहरते हैं क्योंकि यहां मीठे पानी के सोतेहैं और अंगूरोंकेवृक्ष बहुतहैं और यहठौर अतिरमणीकहै इसी कारण उन लोगोंने इस ठौरको बासाबनायाहै॥

(पहाड़अरवन्द) यह हरापहाड़ हमारानमें है बहुधा हमदानीने वर्णनकियाहै और एक यहकहावतहै कि कुछलोग हज़रत इमाम-आलम महम्मद जाफ़रसादिक़ अलेहुस्सलामके पासगये उन्होंने पूछा कि कहांसे आतेहो तो उत्तर दिया कि कोहिस्तान से फिर उन्होंने पूछा कि कौन शहरसे तब बताया कि हमदांसे तब हज़रत ने फिर पूछा कि उस पहाड़को पहिँचानतेहो जिसको अरवन्द कहते हैं उन्होंने उत्तरदिया कि हां जानतहैं तबफिर हज़रतनेपूछाकि इस पहाड़की चोटीपर बिहश्ती सोताहै हमदानी उस सोता को देखते हैं जो पहाड़की चोटीपर वर्षमें एक बार निकलताहै और यहपानी सङ्ग खारासे निकलता है अतिही मीठा और ठण्ढा है और हलका ऐसाहै कि जो मनुष्य रातदिन में एक सेर जल भी पीजावे तो भी कुछ भारी न लगे और बहुधा उसके आसपासके रोगीलोग स्नान करनेसे अच्छे होतेहैं और जितने रोगी आतेहैं उतनाही इससोता से पानी भी निकलता है॥

(पहाड़असीरा) यह पहाड़ मादराय अलनहरदेशमें शामके निकटहै इस्तख़री कहता है कि इस पहाड़में नुक़्रा फ़ीरोज़ा, लोहा जस्ता, शीशा और सोनादिक की खानें हैं इस पहाड़ पै ऐसे काले पत्थरहैं जो कोयलाके समान जलेभयेहैं और कोई२ जलकर राख होजातेहैं उनकी राख कपड़ों के साफ़करने में अच्छी होतीहै और वे इसका व्योपार करतेहैं॥

(पहाड़अलतर) यह पहाड़ क़जपीन से तीन फर्सख़ परहै (फर्सख़ तीनमील का होताहै) अति ऊंचाहै इसकी बरफ कभी कमनहीं होती न जाड़ेमें और न गर्मीमें और इसके ऊपर एक मसजिद है जहां आज तक लोग बहुधा ईश्वर आराधन के लिये जाते हैं इस पहाड़की बर्फसे एक कपड़ा सफ़ेद रंगका बनताहै जो उसके अंगमें एक छोटीसी कीलभी छुआदें तो उतना पानी निकलताहै जो भला मालूम होताहै जो एक बड़े चौपाये के पीनेके लिये होसक्ताहै और कोई२ कहते हैं कि यह जीव नहीं है ॥

(पहाड़इन्दलुस) तोहहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थ कर्त्ता लिखता है कि इसपहाड़ में दो सोते हैं उन दो में से एकसे तो गर्म औरदूसरे से सरदपानी निकलताहै और दोनों सोतोंसे एक बीताका अन्तरहै सो गर्म सोता में जो ऐसा गर्म पानीहै कि उसमें बिना अग्नि मांस पकजाताहै और दूसरेसोतामें इतना शीतपानीहै कि उसके पीतेही मनुष्य बीमार होजाता है ॥

(पहाड़बख़बा) इसकी चोटी पै एकमूर्त्ति खरगाव संगी अर्थात् गोरखरपत्थर की है उसके बीच एकपानी का सोता है और मूर्त्ति के पीठपै एक छेद है उसमेंसे उबल के पानी पहाड़ पे आता है और वहांसे पृथ्वीपै आता है ॥

(पहाड़ बरानिस) यह पहाड़ इन्दलस की धरती पै है और इस पहाड़में लाल और पीलेगंधककी और पाराकी खान है और यहीं से सम्पूर्ण देशमें जाताहै और यहां ज़ंजफ़रकीभी खानहै और इस पहाड़के सिवाय दुनिया भरमें खान नहीं है ॥

(पहाड़ तहमोद) महाशय तोहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थ कर्त्ता लिखताहै कि इसपहाड़पै जानेकी राह अतिही तंगहै और वहांएक पानी का सोता है और बायु ऐसे वेग से चलती है कि वहां मनुष्य का ठहरना कठिन है॥

(पहाड़ वेसतून) यह पहाड़ हलवान और हमदा के बीच में है और अतिही ऊंचाहै और ऊपरसे नीचे तक एकसाहै इसका पत्थर

बहुत कड़ा है और इसकी चौड़ाईमें तीन दिनकी राह है और इसके समाचार अजमके इतिहासोंमें ऐसे लिखे हैं कि यह कसरा अपरबीज़के समयमें शीरींकेवास्ते महलबनाया गयाथा सो अभीतक बर्त्तमान है इसका वृत्तांत योंहै कि शीरींके लिये दूधका भोजनथा और बकरियोंका रेवर दूररहा करताथा इसलिये कभी२ दूध नहीं पहुंचताथा तब यहमति निश्चयहुई कि चरागाह से यहांतक एक नहर बनाई जावे उसीके द्वारा दूध पहुंचाकरै तब इस काम के लियेएक महंदश चाबुकदस्तको बुलाया उससे शीरींने कहा कि इस काम को करना चाहिये और कहा कि इस राह के बनाने पै तुझको दान भी दियाजायगा और उस संगतरास का नाम फ़रहादथा इसमनुष्य ने शीरींको देख जानशीरींसे हाथ उठाया अर्थात् इस प्यारीको देख प्यारी जान से हाथ उठाया और बिरहाग्निके जोरमेंपहाड़ को खोदके दूधकी नहर बहाई जब इस कामको करचुका तो शीरींने बादशाहोंके समान बहुतसे रत्नादिदानदिये फ़रहादने वह सम्पूर्ण धन लेकर शीरीं पै निछावर कर दिया और आप जंगलों में फिरता था अंतको इसकी प्रीति का चवाउ सम्पूर्ण देशमें फैला और धीरे२ यह समाचार बादशाहके कान तक पहुंचा जिसका नाम कसरा अपरबीज़ हुर्मुज़ का बेटा नौशेरवां का पोता था बादशाह यह समाचार सुनतेही शोच बश हो बुद्धिमान् मंत्रियों से इस चवाउ के मिटाने के लिये यत्नपूछा और कहा कि इसके बधकरनेमें तो महापाप है और जो इससे कुछ न बोलैं तो लोकमें अपमानहोताहै इसपै एक बुद्धिमान् मंत्रीने प्रार्थनाकरी कि इसको कोहबेस्तूनके खोदने में लगाय दीजिये तो इसी कामके करनेमें इसकी उमर व्यतीत होजायगीजो कदाचित् न मरा तो वृद्धापनमें यह जवानीकी बिरहाग्नि ठण्ढी होजायगी यह जो बिरहाग्नि अब प्रज्ज्वलितहै सो न रहैगी यहमति बादशाह ने मानी और उसको सन्मुख लाने की आज्ञा दी लोग उसको बादशाहकी आज्ञानुसार लेआये तब प्रथम तो बादशाह ने उसका बड़ा आदर भाव किया फिर उसको बहुतसा धन देनेलगा

परन्तु वह सम्पूर्ण सम्पदा उसकी दृष्टिमें तुच्छही आई तबबादशाह ने कहा कि हमारी राह में एक पहाड़ बेस्तून नामक है सो हमारी राह रोके है जो तुम इस पहाड़ में से हमारे निकलने के योग्य राह बनादो तो हम तुम्हारा बड़ा गुण मानेंगे और यह हमको प्रतीतिहै कि वह राह तुम्हारे सिवाय दूसरे से नहीं बन सकती इसको सुन फ़रहादने कहा कि अच्छा परन्तु एक बातहै कि आप बचनबन्द हैं कि इस कामके पलटे हम तुझको शीरींको देडालेंगे यह सुनतेही बादशाह अतिही क्रोधितहुआ और चाहाकि इसके वधकरनेकी आज्ञा दे परन्तु बुद्धिने समझाया कि जो इसको बराबर माटीभी होतो तो भी नहीं दूर होसकी और यह इतना बड़ा पहाड़ इसके जीतेजी तो किसीभांति न कटसकेगा यह शोचके कहा कि अच्छा यहबात मैंने मानी अर्थात् तुझे अपनी बेटी शीरीं नामक देदूंगा तब फ़रहाद ने पहाड़ खोदने का आरम्भ किया और एक राह ऐसी चौड़ी बनाई जिसमें होके बीस सवार बराबर चैन से निकल जायँ और इतना ऊंचा किया कि बादशाही महलोंसेभीऊंचा करदिया उसका यही काम था कि दिनको तो पहाड़ काटता और रात को उन टुकड़ों को उठाके दूर डालता और उन पत्थरोंके टुकड़ोंकी अति भली मनबहलाऊ मूर्तें बनाता था और यह उसकी रीति थी जो मनुष्य उन मूर्तोंको लेना चाहते थे उनसे यही कहता था कि जो पत्थरों के टुकड़े राहमें पड़े हैं उनको उठाके रास्तासे दूर करदो तब उस मूर्ति से हाथ लगाओ निदान बहुत से मनुष्य दिन प्रति आते थे और उसके कहने अनुसार कामकर मूर्ति लेजाते थे बहुधा पत्थर के मीनार और ऊंटोंकी अमारी फ़रहादकी बनाई हुई ग्रंथ कर्त्ताने देखी भी हैं निदान इसीप्रकार काम होता रहा जब वह समय निकट आया कि फ़रहाद अपने कामको पूराकरे तब लोगोंने यह समाचार अपरबीज़ बादशाह से कहा यह समाचार सुनके बादशाह अति दुःखीहुआ और अपने सभासदों से सम्मति पूछी तब पूर्वोक्त लोगों ने कहा कि कोई ऐसी यत्नशोचिये जिसमें बादशाहके मनका खेदमिटै

निदान यह मति ठहरी कि कोई मनुष्य फ़रहादके पास बेस्तून प-हाड़ पैजाके अतिमनमलीन खेदयुत बाणीसे फ़रहादको शीरींकेमरने केसमाचारदेय अन्तको ऐसाही हुआ कि इस झूठी खबर को सुनतेही फ़रहाद ने अपने शीश पै कुल्हाड़ा मारलिया और शोक का पत्थर अपनी छाती पै धर बैकुंठ को पधारा इस मनुष्य ने बेस्तून नामक पहाड़में एकमहलबनाया और बीचमें शीरीं और उसकी दासियों की मूर्ति बनाई थी और एक ओर को बादशाह अपरबीज़की मूर्ति बनाई थी कि वह घोड़े पै सवार है और शीरींकी मूर्ति बनानेमें तो इतनी बात नईथी कि महलके चारोंओर दीवारोंपै शीरींकी मूर्ति बनाईथीं और ऐसा मालूम होता है कि यह मूर्ति चलनेचाहती है और मुखसे बोलनेही चाहतीहैं ॥

तसवीर नम्बर १०६

कोई बादशाह इस महलमें आये हैं जिन्हों ने शीरीं और बाद-शाह अपरबीज़की सूरतको केसरसे रंगा है ॥

(कोहमना) यह पहाड़ मनाके निकटहै इसको लोग इसकारण शुभ समझते हैं कि इस पै ईश्वरने हज़रत इसमाईल के लिये एक दुम्बा भेजाथा सो लोगोंने उसके सींगोंको प्रसादमान कावाके द्वार पै लटकाया था ॥

(पहाड़सूरअतहल) यह पहाड़ मक्काके निकट है इस पहाड़ में एक गुफा है जब हज़रत महम्मद मक्कासे चले तो अबूबकर सद्दीक़ सहित ईश्वरकी आज्ञासे उसमें छिपेथे और बहुधा लोग इस गुफा के दर्शनोंको जाते हैं ॥

(पहाड़जशनअरम) यह पहाड़ अजासीज़ के निकट है इसमें चरागाह हरेहैं और पहाड़की चोटीपै आदनामक जातकेमकान बने भये हैं और यहां बहुधा पत्थरकी मूर्तिबनी भई हैं परन्तु बहुतदिन बीतनेके कारण इनका कुछ हाल मालूम नहीं है ॥

(पहाड़जूदी) यह पहाड़ बहुत ऊंचा है और इब्नउमर के टापू में पूर्व्व पश्चिम स्थित है यहां हज़रतनूह की नौका लगरहुई

अर्थात् ठहरी थी जैसा कि लिखा है कि वस्तुत अल्लाउलरूदी जब हज़रतनूह नौकासे बाहर आये तो यहां एक मसजिद बनवाई जो अब तक वर्तमान है और मसजिद पर बनीअब्बास के समय तक नाव के तख़्ता वर्त्तमान थे॥

(पहाड़जोशन) यहपहाड़ हलब मेंहै औरइसमें रांगाकी खान है इस पहाड़ से बड़ालाभ होताथा परन्तु हज़रत इमामहुसेन की शहादत अर्थात् मरने के उपरान्त उनकी स्त्रियां इस ओर को आई और उनकी स्त्री गर्भिणीथी उन्होंने इसपहाड़ के रहनेवालों से पानी मांगा उन्होंने पानी के पलटे गालीदी तब उसने शाप दिया उसके प्रभाव से वह खान लोप होगई और अब तक वहां कोई यह बात कियाचाहै तो ठीक नहीं॥

(पहाड़हिरस वहवीरस) ये दो पहाड़आरमीनिया में हैं मनुष्य की सामर्थ्यनहीं जो इन पै चढ़सके क्योंकि ये ऊंचेबहुतहैं लिखाहै कि आरमीनियाकेबादशाहोंकाश्मशान इसीठौरहै और उनकाकोश भी इसीठौरहै औरबुलनियासने यहां गंजपरेसानामक एक माया गृहरचाहै उसकोकोई नहींजानसकता॥ कहावतहै कि आरमीनिया मेंरदबासनाम नदीकेकिनारेपर हज़ारशहरआबादहैं ईश्वरनेहज़रतमूसाको जन्मदेके यहांभेजा परन्तु यहांकेनिवासी उनकीशिक्षानुगामी न हुये तब ईश्वर ने इन्हीं दोनों पहाड़ों को उखाड़ कर आरमीनिया में देमारा तिसके नीचे सम्पूर्ण बासीदब मरे॥

(पहाड़हर्रा) यह पहाड़ टकरसे तीनमीलपै है और इसमें एक गुफाहै जिसमें हज़रतमहम्मदसल्लिल्लाअलेहोसल्लम धर्माध्यक्षहोने केलिये प्रथम जायाकरतेथे और यहभी कहावतहै कि जब असहाव कबारकेसाथ इसपहाड़परचढ़े तभी पहाड़ हिला उससमय हज़रत ने पहाड़को आज्ञादी कि हेपहाड़ ठहरजा तेरेऊपर पैग़म्बर और शहीदकेसिवाय और तीसरा कोई नहींहै तबपहाड़ थँभगया॥

(पहाड़हयात) यह पहाड़ तुर्किस्तानमें है और राजशान जात के प्राचीन हैं कहते हैं कि इस पहाड़ पर सर्प बहुत हैं॥

(पहाड़दामग़ान) यहां एक सोता है उसमें जब कोई मैली वस्तु गिरपरती है तो ऐसे वेग से बायु चलती है कि मनुष्यों को डर मालूमहोता है

(पहाड़दमवन्द) यहपहाड़ शहररीके निकट ऐसा ऊंचा है कि मानो आसमानको छूलेगा महलल के बेटे मशारने कहा है कि इस पहाड़ पर बारहोंमहींना बर्फ रहती है और वह कहता है कि मैं इस पहाड़ पर गयाहूं बड़ा श्रम करनापड़ा और चित्तमें किसीभांति नहीं आया कि यहां किसी दूसरे मनुष्यका भी आना हुआहोगा वहांपर एक सोता गंधक का पत्थरके टुकड़ाके समानहै और सूर्य्य उदयहोता-है तो पत्थरके टुकड़ों से आग निकलतीहै और इतनी फैलतीहै कि जो कुछ पहाड़के नीचे होताहै वह जलजाताहै और बहुधा भांति२ की आंधी चलती है और उस आंधीमें अनेक प्रकारके शब्द सुनाई देतेहैं कभी घोड़ा और कभी गदहा और कभी मनुष्योंकी बोली के शब्द उस आंधी से प्रकट होते हैं परन्तु वे शब्द समझ में नहीं आतेहैं और गन्धके सोतासे ऐसा धुआं उठताहै कि सम्पूर्ण पहाड़ बन्द होजाताहै और अपूर्व बातोंमें से एक यहभी है कि इसपहाड़ के रहने वाले जब चींटियों को खाने पीने का सामान इकट्ठा करते हुये देखतेहैं तो उसको दुर्भिक्ष काचिह्न जानतेहैं और जब मेघबर्षने से येलोग बहुत नाके आतेहैं तो अग्निमें बकरियों का दूधजलातेहैं इस टोटकासे मेघ वर्षना वन्दहोजाता है तोहफतुलग़रायब का ग्रन्थ कर्ता कहता है कि इस शकुन को बहुधा सत्य पाया और यह भी कहताहै कि जिस साल इसकी चोटी बर्फसे खुल जातीहै तो उससे जानतेहैं कि इसबर्षमें इस देशमें बड़े झगड़े और रक्तारोहिन होगी इस पहाड़ के निकट सुर्मा की खान और जस्ता और फिटकरी की भी खानेंहैं इब्राहीमशराब का बेटा लिखता है कि जब मेरे पिताने सुना कि इस पहाड़ पर एक छेद में लाल गुगुल की खान है तो लोहे का खोंचा बनाके उस छेदमें डाला परन्तु वह खोंचा गुगुर के पास तक पहुंचा भी नहीं था कि उस गुगुर ने उस खोंचाको गला-

दियाबाद पहाड़ के निवासी कहतेहैं कि एक मनुष्य खुरासानी यहां आया उसने मन्त्र पढ़के खोंचा को उस सूराख में डालडाल घुघुर निकाला था और उस मन्त्र के प्रभाव से वह लोहा बचाहा अलाइब्नजर्री ने लिखाहै कि मुझे तवरस्तानियोंने खबरदी किवह पहाड़ अतिही ऊंचाहै इसकी चोटी १०० सौ फ़र्सख अर्थात् तीन सौ मीलसे दृष्टिआती है और उसपर मेघके समान एकऐसीचीज़है जो गर्मी और जाड़ों में कभी दूर नहींहोती और पहाड़की छिपाये रहतीहै और इसकीचोटी से एकसोता बहताहै जिसकापानी गंधक के समान पीलाहै कोई २ पृथ्वी पर्यटन करनेवाले जो इसपर गये हैं वे कहतेहैं कि पांचदिन रात्री में इसकी चोटीपर पहुँचते हैं और जो इसकी चोटीको मापा तो १०० सौजरीबथी यद्यपि दूरसे गाव दुम दृष्टिआती है और एकप्रकार की बालू इसपहाड़ पर होती है उसमें चलनेवालों के पावँ धस जाते हैं और इस पहाड़ के ऊपर किसी पशुआदि के पैरों के चिह्न नहींपाये गये और सम्पूर्ण पक्षी उसपहाड़ की चोटीतक नहीं पहुंचसके और शीतकाल इस पहाड़ पर अतिकराल होताहै और बहुधा वायु बड़ेवेग से चलाकरती है और इसपहाड़ पर सत्तर ताक़चा अर्थात् बाड़हैं जिनमेंसे गंधक का धुआँ निकलताहै और प्रत्येक गड़हाके पास पीलागंधक पत्थर के समान जमा दृष्टि आताहै और सूर्यका सा प्रकाश होताहै बहुधा लोग उनटुकड़ों को उठा भी लातेहैं और कहते हैं कि इसके आस पासके पहाड़ इसके सामने टुकड़ा से दृष्टिआतेहैं उस पहाड़परसे खरज़ नामक बड़ी नदीहै सो नहरके समान दृष्टिआती इसपहाड़ और उस नदीके बीचमें बीस फ़र्सख अर्थात् साठमीलकीदूरीहै ॥

(पहाड़सखूह) यह पहाड़ दक्षिण अर्थात् शामसे एक कोस की दूरीपरहै कोई२ कहताहै कि ईश्वरने जो आदुनिया अलार ...ज्ञात ...लिखित किया यह यही पहाड़है निदान यह पहाड़ ऊंचा है और इसपै ...बहुत अच्छी मसजिदहै और उसके चारों ओर ... है जिसके चारों ओर ...लीहैं और आबशार पर पहारजारी

हैं और उस मसजिदमें अच्छे२ झरोखे बनेहैं जिनसे उसकी सैरभली भांतिसे होसक्तीहै इसी पहाड़के नीचे एक नदी बहतीहै जिसमें लोग उस नदीसे एक नहर पहाड़के ऊपर लेगये हैं और वह नहर उस पहाड़ पर चारोंओर बहतीहै नहीं मालूम कौन मायारचीहै कि नीचे सेपानी ऊपरको लेगयेहैं औरउसी मसजिद में एक छोटासा पत्थर का मकानहै तिस्में एक पत्थर संदूक़की बराबर रक्खाहै उसपत्थर में अनेक२के रंगहैं और एक गज़के अनुमान बीचमें वहपत्थर फटाहै परन्तु दो टूक नहींहै ऐसा मालूम होताहै कि जैसे कोई अनार को तोड़े परन्तु अलग नकरै दमिश्क़निवासी इसपहाड़केविषयमें बहुत कुछ कहतेहैं परन्तु सत्य तो ईश्वरही जानता है ॥

(पहाड़रज़वी) ग़राम अलरसवाने लिखा है कि यह पहाड़ मदीनासे सात मंज़िलपर है इस पहाड़से सुगंध आती है और बहुधा सोता और हरेरी है और जंगलभी बहुत है दूरसे हरेरंग का दृष्टि आता है इस पहाड़ पै वृक्षोंकी पंक्ति और पानी की नहरें बहुत हैं कैसानियोंकी वाक्य है कि इस पहाड़पर हनफ़ियाके बेटा महम्मद रहते हैं और अभी जीते हैं और बाघ और चीते उनकी रखवारी करते हैं और उनके पास दो सोते हैं उनमें से एकतो पानीका और दूसरा शहदका और वह ईश्वरकी ओरसे इस अपराधके पलटे कैदहैं कि वे मरवांके बेटा अबदुलमलक और माविया के बेटा ये ज़ीद के पास गये थे और जब हज़रत इमाम मेहदी उत्पन्न होके संसार को नीति और न्यायसे संतुष्ट करैंगे तब वह भी इस बन्द से छूटेंगे और सयद जमीरी का भी यहमत है और इसी पहाड़से पत्थरकाटके शहरोंको लेजाते हैं ॥

(पहाड़ रक़ीम) क़ुरानमें लिखा है कि अमहसबत इनअसहाबुल कहफ़वलरक़ीम अर्थात् कोई २ कहते हैं कि रक़ीम उस गावँ का नाम है जिसमें असहाबकहफ़ रहते थे और कहते हैं कि यह पहाड़ रूमदेशमें उमूदिया और अनंकिया के बीच में स्थित है [illegible] के बेटा अबाद की कहावत कहते हैं कि उसने कहा था कि

अबूबकर तबीब ने प्रसन्न हो ईश्वर उसपै मुझे रूम के बादशाह के पास इस प्रयोजनसे भेजा था किमैं उसको महम्मदी धर्म्मकी ओर लाऊं और नहीं तो उससे जिहाद करूं अर्थात् लडूं (जिहाद उसे कहते हैं कि जो महम्मदी धर्म्मको न मानताहो उसको बधकरनेके हेतु लड़ना उस्में चाहे वह माराजाय चाहे आपही मररहै) अन्तको जब रूमकेदेशमें पहुंचा तो येलाल पहाड़ प्रकटहुआ जिसको लोग कोह असहावकहफ़ और रक़ीम का पहाड़ बताते थे निदान थोड़ी देरमें हमपहुंचे और वहांजाय लोगोंसे असहावकहफ़का हालपूछा और उनसे कहा किहम उनको देखना चाहतेहैं और उनको बहुत सा दानदेकें उनके साथ गुफा में होकर एकमकान में गये तो वहां तेरह मनुष्योंको सोता हुआ इसप्रकार पाया कि सबके सब मुंहसे पांवतक ऊंचीचादर ओढ़ेहुये लेटे थे परन्तु यह न मालूमहुआ कि वेचादरें ऊनकी थीं कि सोफकी हां इतनाही जाना कि दीवाज नाम कपड़ासे मोटीचादरें थीं और वे लोग बहुधा आधी टांग तक मोजा और तिसपर जूता पहरे हुयेथे जिनका अबरा अति नरम और रेशमसा मालूम होताथा मैंने सबके मुखसे चादर हटाकेदेखा तो ऐसे मालूमहुये जैसे स्वरूपवान् जीवोंके मुखहोते हैं कोई २ तो बूढ़े श्वेत बालोंके थे और कोई युवाकाले बालों के और उनका पहराव मुसल्मानों के ढंगपैथा जब मैंने सबसे पीछेवाले का मुख खोलके देखा तब उसकेमुखपै तलवारका घावदृष्टिआया वह घाव ऐसामालूमहुआ किमानों अभी किसीने इसको घायल कियाहै जब मैंने उनके समाचार पूछे तब उन्होंने कहा कि एक इक्का दिन होताहै तो लोग आसपास के इकट्ठेहोके इनलोथोंको उठाके उनके हाथमुंह धुलातेहैं और नख और शिरके बाल काटतेहैं और फिर नवीनवस्त्र पहराके यथा पूर्वकलेटायदेतेहैं हमारेधर्म्मकी पुस्तकोंमें यों लिखाहै कि हज़रत ईसामसिहम के बैठाके ४०० चारसौ वर्ष पहिले पैग़म्बर ... समयमें पैग़म्बर हुयेथे बस इसकेसिवाय और कुछ नहीं मालूमहै ... ईश्वर उसपर प्रसन्नहो कहाहै

कि बलहाव कहुकस्तात मसुभाहै॥ अपने मासकरसकेन १ सूबा औरनाम २ मरकूसन ३, तमूनेसि ४, हाम्वांस ५, कामथेतैलनाद ६ और उनके कुलेका नाम क़तमीर और उनकेसम्बन्धके बादशाहकाना सब कोष्ठानुसार्थ॥
(पहाड़ज़ानक) तोहफतुलगरायब का ग्रन्थकार लिखता है कि यह पहाड़ तुर्किस्तानमेंहै और वहां एक संख्या मनुष्योंकी जाति की रहतीहै और न तो इनलोगों के पास दूधका पशुहै और न ये लोगखेती करतेहैं॥ इस पहाड़में चांदी और सोनेका ढेरहै॥ बहुधा कभी २ ककड़ियोंके कल्ले के समान कोई वस्तु प्रकट होतीहै उसमें से कोई बड़ी और कोई छोटी॥ जो कोई छोटा कल्ला उठालावे तो वह तो कुशलक्षेमरहताहै और जो कोई बड़ा कल्ला उठावे तो जबतक उसको उसीठौर न धरआवे तबतक उसके घरके एकहीएक मरते जातेहैं परन्तु पथिकचाहे जैसा उठालावे उसकीकुछहानिनहींहोती॥
(पहाड़ज़ावां) यह पहाड़ शहर फ़ूमके पास पछांह की धरती मेंहै यह पहाड़ इतना ऊंचा है कि तीन दिनकी राह से दिखाई देताहै॥ आफ़्रीका के निवासी कठोरचित्त मनुष्य की उपमा दिया करतेहैं कि अमुक पुरुष ज़ावां पहाड़के समान कठोरचित्तहै॥ इस पहाड़पै बड़ी बसगितहै और वर्षा बहुत होतीहै और मेवा का अधिकाईहै बहुधा ऐसाहोताहै कि पहाड़के नीचे तो वर्षाहोतीहै और पहाड़ के ऊपर बूंद नहीं पड़ती॥ निदान नीचेवाले तो वर्षा के मारे नाक आजातेहैं और ऊपर वाले पानीको झींकतेहैं॥
(पहाड़साबा) इस पहाड़ को ग्रन्थकर्त्ता ने देखा है अत्यन्त ऊंचाहै और महलकी सी इसपै चित्रकारी हैं और इस महल की छतपर पत्थर खोके कुओंके सदृश बरेहैं सो इन तीनमेंसे दो में पानी टपकता है और चौथा सूखा है उसे कहतेहैं कि इसको किसीने [illegible] ने [illegible] लिया है इसीकारण [illegible] गया है और इन [illegible] के नीचे एक होज़है जहां वह टपका पानी इकट्ठा होताहै [illegible]॥
(पहाड़सीलां) यह [illegible] में है [illegible] के पासहै इसको सम्पूर्ण पृथ्वी के पहाड़ों से ऊंचा बताते हैं और

हज़रतरसूलअल्लाह ने कहाहै कि जो मनुष्य कहैगा—उसके कर्म्म खाते में सीलांपहाड़की बर्फ़ और पत्तियों की संख्या नुसार भलाई लिखीजांयगी इसपर लोगोंने पूर्वोक्त हज़रतसेपूछा कि सीलांपहाड़ के समाचार क्याहैं तब उन्होंने उत्तर दिया कि इस पहाड़पर बिहश्तका सोता है और किसी पैगम्बर की क़बुर भी है अबूहामिद इन्दलसी कहताहै कि इस पहाड़ पर एक सोता है जिसका पानी सरदीके मारे जमाहै और इसी पहाड़के बीचमें एक सोता गरम है जिसमें स्नान करनेसे बहुधा रोगी अच्छे होतेहैं इस पहाड़के नीचे एक वृक्ष अति घना और हराहै परन्तु किसी जीवकी सामर्थ्य नहीं है जो उसको खाय जो कोई उसवृक्षकी हरेरीको खाय वह तत्काल मरजाय और यहभी कहताहै कि अपनी आंखोंसे देखाहै कि घोड़ा और बड़कन्ना और बकरी आदिक उस वृक्षके पास जातेही पुकार मचातेहैं यहां तक कुंजश कभी इसवृक्षसे दूर रहतेहैं इस पहाड़ के निकट एक गांवहै यहांके काज़ी अर्थात् न्यायकरता अबी अलफ़रह अबदुलरहीम न उल आरद बेलीनामक थे उनसे मैंने प्रश्न किया कि इस वृक्षसे पशुओं के डरनेका क्या कारणहै तब उसने उत्तर दिया कि इसके तिरस्कार करने का कारण नहीं बरन चीनियों ने इसपहाड़से दूसरे पहाड़तक एक पुल चीनसे तिब्बततक ऐसाबांधा है कि जो कोई उसपर उतरे उसका बोल ठस होकर वहमरजाताहै और तिब्बतवालों ने इस पहाड़का नाम बिष कापर्व्वत रक्खाहै॥

कोह अब अर्थात् फिटकरी का पहाड़॥

यहपहाड़ यमनदेशमें है इसपहाड़की चोटीसे एकप्रकारके रंगका पानी बहताहै जो चारो तरफ से बहके पृथ्वीमें पहुंचकर जमजाता है और अब में मानी अर्थात् यमन की फिटकरी उसका नाम है॥

(पहाड़ग्राम) अहमद हमदानीका बेटा इसहाक़ कहताहै कि यह बड़ा पर्वत सनाके निकट एक दिनकी राह परहै इस पहाड़ पर चलना अति कठिनहै और एक राहके सिवाय दूसरी राहनहीं है और इस पहाड़के ऊपर बड़े बड़े मैदान हैं जिसमें गांव बसे हैं

और खेती होतीहै और अंगूर और छोहारादिका जंगलहै वहां का रास्ता केवल राजद्वारही पर होकरहै और उसकी ताली बादशाह के पास रहती है जिस किसी को उतरना हो अथवा जाना हो वह बादशाहकी आज्ञा आधीन रहताहै और इसपहाड़पै पानीबहताहै जहांसे सफ़ादादि दूसरे देशों में पानीजाताहै ॥

(पहाड़शर्फ़ुलबग़ल) यह पहाड़ शामके रास्तामेंहै इस पहाड़में दो बड़े२ मकानहैं जहां बड़े२ मूर्त्ति स्थान हैं जिनमें अद्भुत चित्र बिचित्र मूर्तिहैं जो उसके देखनेको जाताहै वहांसे आनेको उसका मन नहीं चाहताहै ॥

(पहाड़शर्का) शर्का एक गांवका नामहै खुरासानियों से सुनाहै कि इस पहाड़ में एक ऐसा कन्दरा है जिस्में सब प्रकार का रोगी अच्छा होताहै और यहभी कहते हैं कि उसी ठोर एक और पहाड़ है जो कोई वहां जाय उसका बोल और चाल बन्द होजाय और दो गजकी दूरी रहजातीहै तो बायुका ऐसा झकोरा आताहै कि मनुष्य गिर जाताहै ॥

(पहाड़शकरां) तोहफतुलग़रायबका ग्रन्थकार कहताहै कि यह पहाड़ शकरांकी धरती परहै परन्तु यहनहीं मालूम कि यह शकरां की धरतीहै कि इन्दलसकी यह पहाड़ अत्यन्त ऊँचाहै और उस पै चिराग़ दानके सदृश एक मकान बनायाहै जहां प्रति सम्बत् तीन रात्री प्रकाशहोताहै परन्तु मनुष्यकीसामर्थ्यनहीं जो वहांचढ़जाय क्योंकि बायुकेझकोरेसेचढ़नेहारा नीचेगिरपरताहै और वहचिराग दिनको नहीं दृष्टिआता परन्तु मोरकेसदृश उस दीपककीठौर दृष्टि आतीहै परन्तु यथार्त्थ किसीकी समझ में नहीं आताहै ॥

(पहाड़शेलीर) यह पहाड़ इन्दलसकी धरतीपरहै इस पहाड़पै जाड़े और गर्मी दोनों ऋतुओं में कभी बरफ कम नहीं होती यह पहाड़ बहुधा इन्दलसके शहरों से दृष्टि आताहै और इस पै शीत काल अति कराल होता है और बहुधा यहां सेब अंगूर अखरोट और पिस्तादि मेवा होतेहैं ॥

(पहाड़शूर) तोहफतुल गरायब के ग्रन्थ कारका लेखहै कि यह पहाड़ कर्मा के देशमें है इसपहाड़के पत्थर को जो उठाकर तोड़ो तो उसके भीतर मनुष्य का स्वरूप बैठा सोता अथवा खड़ा दृष्टि आताहै और जो उस पत्थर को पीसके पानी में छोड़ो और जब वह बुरादा पानीकी पैंदी में जागले तो भी आदिमी का स्वरूप दृष्टि आताहै॥

(पहाड़सफ़ादमरवा) यह पहाड़ मक्का मुअज़िमा की धरती में स्थितहै कहतेहैं कि सफ़ा और मरवा एक स्त्री और पुरुषका नामहै जिन्होंने कावा में बिभचार किया था ईश्वर ने उसके पलटे उसे पाखाण करडाला और संसारमें उनकानाम इस लियेहै कि दूसरों को आंखेहों और हदीस (शास्त्र) में लिखा है सफासे वहदाव्वतुल अर्जबाहिर निकलैगा जो प्रलयकाचिह्नहै इब्नअब्बास ईश्वर उन पै प्रसन्नहो अपने आसा अर्थात् दण्डकोसफा पहाड़परमारकेकहते थे कि हेदाव्वतुल अर्ज़ तू मेरेमारेके शब्दको भली भांति सुनताहै॥

(पहाड़सलकीया) यह पहाड़उन पहाड़ोंमेंसे है जिनका वृत्तान्त अबूअला अलहसनने कसलीयाके इतिहासमें लिखाहै यह पहाड़ समुद्रकी ओरहै और इसपहाड़की परिक्रमा तीनदिनमें होसक्ती है इस पहाड़पै अनेक प्रकारके मेवाके वृक्षहैं इस पहाड़ की चोटी पर गूगुरकी खानहै जिस्मेंसे बहुधा अग्निका धुआं उठाकरता है जिस से कभी२ किसी ओर आगलग जाती है और उसका जला हुआ लोहेके मैलके सदृश होजाताहै फिर उस धरती पै नतो कोई बस्तु ऊगतीहै और न कोई पशू उसपै जाते हैं और यह ठौर अभी तक प्रकटहै कि जिसको लोग अजनास के नामसे प्रसिद्ध करते हैं इस पहाड़पर मेघ और बरफ़ सदैव बर्षा गिरा करती है किसी ऋतु में बन्द नहीं होताहै बहुधा प्राचीन कालके बिद्वान् इसपहाड़पर वहां के अद्भुत पदार्थ अग्निका दावा देखनेको सलकियाके टापूमें आया कियेहैं इसपहाड़पै सोनेकी भी खानहै रोमनिवासी इस पहाड़को सोनेका पहाड़ बताते हैं॥

(पहाड़ज़ुलऐन) यहपहाड़ मक्काकी राहमें है इसके दो भाग हैं उनमेंसे एकको तो बनी मालिक कहतेहैं और यह वेलोगहैं जिनके बन्शमें मुसल मामहैं और दूसरे भागका नाम बनीशैसान्है और इसके रहनेवाले क़रजिन्नीहैं बनी मालिककी धरतीपर बहुधा लोग उतरते हैं और अपने पशुओंको उसपै चरनेको छोड़ते हैं और उसके विपरीति बनशैसां की धरतीपै न तो कोई उतरता है और न कोई अपने पशू उस पै चरने को छोड़ता है और जो कोई भूलसे ऐसा करता है तो उसकी जान और माल पै आफ़त आतीहै और वहां के लोगोंमें इन दो भागोंका हाल बहुत प्रसिद्धि है ॥

(पहाड़ ताक) यह पहाड़ तबरिस्तानमें है अबूउलरेहां ख़्वारज़िमीने आसारुलबाक़िया नाम किताबमें लिखा है कि यह पहाड़ गर्म है और वहां एक खोहा है सो हज़रत सुलेमान की है जो कोई उसमें कोई भ्रष्ट बस्तुडालदेय तो पानी बहुत बर्षताहै और जबतक वह भ्रष्टतावहांसे मिटाई नजाय तबतक मेघबर्षना बन्दनहींहोता ॥

(पहाड़ ताहिरा) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रंथकार का लेख है कि यह पहाड़ मिश्र की धरती में है उस पर एक कंनेसा है उसमें एक हौज़ है जब पहाड़से मीठा पानी बहता है तो इस हौज़ में गिरता है इस पानी का नाम ताहिरा अर्थात् पवित्र है और जब हौज़ भर जाता है तो चारों ओरको बह निकलता है जो कोई इस हौज़ में रजस्वला अथवा प्रसूतास्नान करै तो जब तक उस हौज़के पानीको न निकाल डाले तब तक पानी का आना बन्द होजाता है ॥

(पहाड़ तबरस्तान) तोहफ़तुलग़रायबके ग्रंथकारने अपनी किताबमें लिखाहै कि इस पहाड़पै एक प्रकारकी घास होतीहै जिसको जोज़मायल कहते हैं इसमें यह गुणहै कि जो कोई उसको हसतेहुये खाय तो हसी बहुत आवैगी और जो कोई रोतेहुये खाय तो रोना अधिक होगा इसी प्रकार उसका खाने वाला जिस दशामें होगा उसकी वह दशा अवश्यही होती जायगी ॥

(पहाड़तूरज़ीना) यह पहाड़ बैतुलमक़दसकी धरती पर है यह

पहाड़ अभिमत फलदातार अर्थात् संसारकी अभिलाष पूरी करने वालाहै मनुष्य इसके दर्शन करतेहैं और कहते हैं इस पहाड़पै एक कन्दरा है जिसमें सत्तर पैगम्बर भूख के मारे बैकुण्ठ बासी हुये हैं इस पहाड़के निकट एक मसजिद है जहांसे ईसामसी आसमानको गये थे और इस पहाड़ और मसजिद के बीच में वादी जिहनम है और उसमसजिदमें उमर बिन अळखताके नमाज पढ़नेकी ठौरहै॥

(पहाड़तूरसैना) यह पहाड़शाम और दादीक़रीके बीचमेंहै और कोई २ कहता है कि इलाके निकट है हज़रत मूसा जब इस पहाड़ पर आये थे तो पहाड़पै मेघ आता था उसमेघ के भीतर जाके हज़रत ईश्वरसे बार्त्ता करतेथे और यह वही पहाड़है जिसके विषयमें ईश्वर सच्चिदानन्दने कहा है और यह पहाड़ सळहा के रहने की ठौर है और जो पहाड़ कि मदीनके निकट है उसका पत्थर जब कोई तोड़ताहै तो उसके भीतरसे अलयक़केवृक्षकी सूरत प्रकट होतीहै (अलयक़ एकप्रकारकी घास होतीहै जो वृक्षोंपै बेलकी तरह फैलती है)

(पहाड़ तूरहारूंन) यह पहाड़ बैतुल मुक़दस में है और इसका नाम जिवलतूरहारूंन इसकारणहै कि जबहज़रत मूसाने गोसाला प्रस्तूनको बध किया तब हज़रत मूसाने चाहा कि ईश्वर की स्तुति कीजाय उससमय हज़रत हारूंन ने कहा कि मुझे भी अपने साथ लैलीजिये क्योंकि मुझे यहडर है कि कदाचित् आपके जानेके उपरांत कोई कष्ट मनुष्यों को आपनपड़े और उस समय आप मेरे ऊपर क्रोधकरें तब हज़रतमूसा ने उनकोसाथ लैलिया॥ अभी राहहीमें थे कि दो मनुष्य क़बुर खोदनेवाले मिले उनसे हज़रत मूसा ने पूछा कि यह क़बर किसकी खोदते हो तब उन्होंने उत्तर दिया कि उस पुरुषके लिये जो तद्रूप इसपुरुष के स्वरूप समान संसार में हो और यह सैनहारूंनकी ओर करी तिस उपरांत उन्हीं दोनों ने हज़रतहारूंनसे कहाकि आप इसक़बरके भीतरआपके नापको देखो कमती बढ़ती तो नहीं है तब हज़रत हारूंन अपने कपड़े हज़रत मूसाको देके क़बरमें उतरे बस वहीं उनके प्राणांत हुये और क़बर

बन्दहोगई तब हज़रत मूसा विलाप करनेलगे और अति शोचबस बनी इसराईल अर्थात् मनुष्योंकी ओर फिरे यहां मनुष्योंने हज़रत मूसा से हारूनके खूनका दावाकिया जब हज़रत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थनाकी कि हे ईश्वर मेरे बचावके लिये कोई यत्नकर तबईश्वरने एक ताबूत (ताबूतएकसन्दूक है जिसमें अंगरेज़ यहूदी और अरबदीशीय मृतकक्कोधर पृथ्वी में गाड़तेहैं) अति उज्ज्वल इसपहाड़ पै मनुष्योंको दिखाके दृष्टों से अलक्ष करदिया यही कारण है कि पहाड़ का नाम तूरहारून अर्थात् हारून का पर्वत पड़ा ॥

(पहाड़ तैर) यह पहाड़ मिश्रदेश में रोदनीलनामक नदी के तटपर है और इसका कारण यह है कि इस पहाड़ पै प्रतिसम्बत् एक पक्षी आया करता है और इसपै मुअतकफ होता है और इस पहाड़ में एक खिरकी है उसीके द्वारा प्रत्येक पक्षी नीलनाम नदी में पैरके अपनीराह लेताहै ॥ अन्तको एकपक्षी उसखिड़की में फरफराके मरजाताहै और वहांसे सम्पूर्ण पक्षी उड़ जातेहैं ॥ अबूबकर मूसली की कहावतहै कि मुझसे वहांके प्रधानोंने कहाहै कि जिस साल दुर्भिक्ष पड़ने को होता है तो सम्पूर्ण पक्षी उसी खिरकी में फँसके मरजातेहैं और जो वहसाल मध्यमहोताहै तो केवल एकही पक्षी फँसके मरजाता है और जिससालमें अच्छा सम्बत होता है तो सम्पूर्ण पक्षी आनन्द से निकल जाते हैं ॥

(पहाड़ अरज़) यह पहाड़ सम्पूर्ण संसारमें अद्भुतहै और इसके नाम देशविभागकरके भिन्न२ हैं मक्का और मदीनामें इसको अरज़ कहतेहैं और शामदेश में फ़लस्तीन और इसके पीछे हुक्म नाम पहाड़ है और दमिश्क में इसकेपीछे शवलनीर नाम पर्वत है और हलब, हमज़ और हमामें इसकेपीछे लवना नाम पहाड़है ॥ अलजाकिया और मसीसामें इसको लगामकहतेहैं ॥ यहपहाड़ मलातिया और फाळीकला में होके दरिया जरज़तक पहुँचा है वहांपर इसकानाम क़िवक़ है ॥ इब्नुलफसा की बाक्यहै कि इस पहाड़पर सत्तरप्रकार की भाषा बोली जाती हैं जो प्रत्येक की भाषा दूसरी

भाषा बोलनेहारे की समझ में बिना उल्थाकियेहुये नहींआती ॥

(पहाड़ अरवान्) यह पहाड़ तायफ़ में है इस पै क़बायलहज़ल रहतेहैं और इसपहाड़ के सिवाय हज्जाज की धरतीभर में पानी कहीं नहीं मिलता और वायु भी इसी पहाड़ के कारण जायफ में अच्छी होती है ॥

(पहाड़ अमायतुलबहरीन) यहपहाड़ प्रसिद्ध है इब्नज़िआदुल-कलानी का लेख है कि इसके इसनाम का कारण यह है कि इस पहाड़पर कोई नहींजाता और जो जाताहै तो अन्धाहोजाताहै इस पहाड़ में बहुधा खोह कन्दरादि हैं इसपहाड़पर मान्साहारीजीव और बान के वृक्ष बहुत हैं सकरी कहता है कि क़ज़ालकलाबी ने एकमनुष्य को मारडाला उसके पलटे मारेजानेके डरसे इसपहाड़ पर दशवर्षतक छिपारहा वहां इससे एकबाघ से यहांतक मेलहो-गया कि वह बाघ जो अहेरकरता उसमें से इसे भी देताथा अन्त को बादशाह ने उसका अपराध क्षमा किया तो उस समय उसने चाहा कि अपने लड़के बालों के पास जायँ परन्तु बाघ नहींआने देता था अन्तको कत्ताल ने मारडर के बाघको मारडाला ॥

(पहाड़ अवीर व कसीर) ये दोनों बड़े २ पहाड़ बसरा और अमाके बीचमें हैं जब यहां जहाज़ आताहै तो उससे टकराने का बड़ा डर होता है ॥

(पहाड़ करगानह) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार का वाक्य है कि फ़गनहदेश जहां एक प्रकार की घास स्त्री पुरुष की सूरत की उगती है उसमें एक ओर तो पुरुष का स्वरूप दृष्टि आता है और दूसरी ओर स्त्री का स्वरूप ॥ वैद्यों के निकट इस घासका खाना वीर्य वर्धकहै यहांतक खातेही कामका ऐसा उद्वेग होता-है कि मनुष्य उसके वेग को रोक नहीं सकता और इस बनस्पति का नाम वेरोज भी है जो बहुधा खुरासानदेश में उत्पन्न होती है ॥

(पहाड़ फ़ीलवान) अबूउलरैहांख्वारज़िमी का वाक्य है कि महरजान के निकट ये पहाड़ है जिसको फ़ीलवान कहतेहैं और

उसमें एक गड़हाहै कि पानी पहाड़की चोटीसे आकर उसमें इकट्ठा होता है और जब ठण्ढी बायु चलतीहै तो वह पानी जमके पत्थर के समान होजाता है ॥

(पहाड़कास्पून) यह पहाड़ दमिश्कदेश में,है और इस पहाड़ पर एक खोहा है जो मग़ारय हाबील नाम प्रसिद्ध है और बहुतसे कन्दरों के सिवाय एक पत्थर वह है जिसपै क़ाबील ने हाबील को पटकके माराथा और इसीपहाड़पै एककन्दरा ऊजनामकहै विद्वान् कहते हैं कि इस पहाड़ पै एक कन्दरा है कि जहां मारे भूख के चालीस पैग़म्बर मर गये ॥

(क़ाफ़नामपहाड़) यह पहाड़ सम्पूर्ण दुनियां को घेरे है और मफ़सरीन का यह भी निश्चय है कि यह पहाड़ हरे ज़मुर्रदका है जिसकी छाईंपड़ने से आसमान हरा दृष्टि आताहै और इसपहाड़ की दूसरी ओर बहुधा मनुष्य बसतेहैं परन्तु उनका कोईहाल नहीं जानता है ॥ कोई२ मुफ़स्सरीन यह भी कहता है कि कोई पहाड़ नहीं है परन्तु इनसब पहाड़ोंकी एक२रग कोहक़ाफ़ में मिली भई है जब ईश्वर किसी पै क्रोध करता है तो उसपहाड़ के मौकिल को आज्ञा देता है और वह मौकिल इस पहाड़को फिराता है जिसकी चोटसे वहांकी धरती फटजातीहै तो वह जातिउसमें समाजातीहै ॥

(कोहक़ीक़) यह पहाड़ मलांदेश में है और एक श्रेणी इसकी रोम तक गईहै ॥ इस पहाड़में एक राहहै जिसके द्वारा शकर नाम ज़ात खिरज़ईरांमें पहुंचतीथी और वहां पहुंचके बायजानसे मूसल औरहमदानी तक लूटतीथी जब नौशेरवां बादशाह खिरज़देशका मालिकहुआ तब उसने खिरज़ की बेटीसे बिवाह करके बड़ेयत्न से उसराहको बन्दकिया और ऐसापुष्ट बन्दकिया कि अब कोईउपाय उनलुटेरोंकी नहींचलती और सात फरसख़तक यह दीवार बनीहै और उसमें ऐसे २ चौकोन पत्थर भारीलगे हैं कि उनको पचास आदिमीभी नहीं उठासकते और इससात फरसखकी दूरीपर सात शहर बसाये और सात दरवाजे लोहेके उसदीवार में लगाये और

प्रत्येक द्वारपर एक२ सौ आदमियों का पहरा नियत किया तिस उपरान्त नौशेरवां ने अपने तख़्तपर बैठ ईश्वर का धन्यवाद किया किस हेतु से कि ऐसी दीवार उसके हाथ से बनी और तुर्कों का अन्या अजमी मिटा॥

(पहाड़क़दक़द) यह पहाड़ मक्काकी धरतीमें है और यह पहाड़ उन्हीं पहाड़ोंमें से है जिनकी चोटीपर कोई नहीं पहुंचसकता और इस पहाड़में बहुधा फिळज़्ज़तकी खान है॥

(पहाड़क़सरां) क़सरां एक शहर है सन्ददेश में इस पहाड़पे शहद ओसकीभांति गिरता है परन्तु जो प्रकटरहा वह तो मनुष्य इकट्ठा करते हैं और जो दृष्टिमें न आया वह शहदकी मक्खी इकट्ठा करती हैं॥ और जो जाड़ेके वास्ते रखती हैं॥

(पहाड़बुहदा) यह पहाड़ बड़ाऊंचा है और यहां के रहनेवाले बिनीमरा हैं और कहते हैं कि जब नसतनाम शायर (कवि) यहां आया तो उसने एक द्वारपर खड़ेहोकर पानीमांगा तब एकस्त्री ने निकल के दूध अथवा पानी पिआया और कहा कि मेरी प्रशंसा नज़्म अर्थात् पद्य करदे इसपै उस कवि ने उसकानाम पूछा तो उसनेकहा कि मेरानाम बन्द है तब उस शायर(कवि) ने कुछबातें (चौपाई) अरबीभाषा में बना के सुनाईं और वे प्रसिद्धहुईं तिस उपरान्त इस शायरने अपना बिवाह उसके साथकिया॥

(पहाड़काफ़ूर) यह पहाड़ हिन्दुस्तान की धरतीमें है समुद्रके किनारे यहां बहुधा शहर आबाद हैं उन शहरों में से एक शहर क़ामरू है जहां काऊद कामरूनी प्रसिद्ध है और शहर क़मारी है जहां क़ाऊद क़ुमारी प्रसिद्ध है और इसी पहाड़ के नीचे काफ़ूरके वृक्ष ऊगते हैं यत्न यह है कि इस वृक्षको कुछ ठौरोंपर तराशदेवें तो अर्ककी तरहपर काफ़ूर बहेगा उसको लेलेवे परन्तु इसके उपरान्त वह वृक्ष सूखजायगा॥

(पहाड़कहल) यह पहाड़ शहर बस्तके पास इन्दलसकी धरती पर है इस पहाड़से एक प्रकार का सुर्मा प्रथम तारीख से निकलने

लगता है सो वह आधे महीने तक तो प्रति दिन अधिकही होता जाताहै और आधे महीनासे महीनाके अन्ततक कमहोताजाताहै ॥

(पहाड़करगस) यहपहाड़ री और क़सम और क़ाशानकी धरती पर है इस पहाड़के चारोंओर जंगल है और इस पहाड़पै गिद्धरहते हैं इसीसे इसका नाम कोहकरगस् अर्थात् गिद्धोंका पहाड़ कहते हैं और इसकी राह बहुत कठिन है और बहुधा जहां तहां पानी ऐसा पड़ताहै कि जिसमें डर है इस पहाड़पर कोई बस्तीनहीं है क्योंकि बस्तीसे दूर परता है ॥

(पहाड़ करमा) करमाकेविया बातमें और भी बहुतसे पहाड़हैं और सम्पूर्ण पत्थरोंमें यह गुण है कि लकड़ी के समान जलाये जाते हैं मानो वहांकी लकड़ियां येही पत्थर हैं ॥

(पहाड़गुलिस्तान) यह पहाड़ तूसके निकट खुरासानकी धरती पर है गुलिस्तान नाम तूसका एकगांवहै कोई २ खुरासानी फ़क़ीहा कहते हैं कि इस पहाड़पर एक इमारत महलके सदृश है जब कोई वहां जाता है और दहलीज के आगे बढ़ता है तो एक प्रकाश ऐसा दृष्टि आता और वहां एक सोता है जिससे पानी निकल के पत्थर समान जमा जाता है और इसमहलमें एकऐसा सूराख है जिस्में से ऐसे वेग से बायु निकलती है कि जिसके थपेड़ा से उसके भीतर जाना कठिन है ॥

(पहाड़ कोकवान) यह पहाड़ सफ़ाके निकटहै और इसकेनाम का यह कारण है कि इसपहाड़पै दोमहल हैं और दोनोकीनींव चमकदार जवाहिरोंकी है और रातको उनका प्रकाश दोतारों केसमान होता है कहते हैं कि इसकी नीब किसी जिन्नने दी थी परन्तु वहांकोई पहुंच नहीं सक्ता है ॥

(पहाड़ अरख़ांन) यह पहाड़ तबरिस्तानमें है इसकी एक ओर से पानी बहता है उसकी प्रत्येक बूंद समन अथवा मसदस की भांति का पत्थर होजाता लोग उनको उठालाते हैं और उनकी गोटें बनाते हैं ॥

(पहाड़लवना) यहपहाड़ शामदेशमें है इसपहाड़पै सबप्रकार के मेवा और खेतियां होतीहैं और यहां अबदालुलोग ओबी खोदखोद के रहते हैं इसकारणसे कि इसपहाड़पर क़ुअवहलाल हासिलहोती है और इसपहाड़के नीचे एकअद्भुत सेवहै जो उड़नेके समय सुगन्ध नहींदेता परन्तु जो बरफके दरियामें डुबाओ तोउसमें गन्धिहोतीहै॥

(पहाड़ मदबहारा) यह पहाड़ सफाके निकटहै ॥ इस्तखरीकी वाक्य है कि इसपहाड़की उँचाई बीस फ़र्सख़की है और यहां बहुधा क़बुर और आवादी और सोते बहतेहैं और इसपहाड़ पै जानेकी केवल एक राहहै ॥

. कोहमेक़नातीस अर्थात् चुम्बक पत्थरका पहाड़ ॥

महलबी कहताहै कि यह पहाड़ दरिया कुलज़ुम के पहाड़ों से मिलताहै ॥ इसपहाड़पै चुम्बक मिलताहै अब यहां पानी आगया है सो मारेडरके नावमें लोहेकी कीलनहीं लगाते ॥

(पहाड़ मक़तमर) यह पहाड़ मिस्रकी धरतीमेंहै और फैलता हुआ हब्श देशमेंहोके दरिया नीलतक पहुंचासो यहां इसकानाम औरहै॥ इसपहाड़ पर बहुधा मसजिद और गुफ़ाबनी भईहैं ॥इस पहाड़ पर किसी प्रकारकी खेतीनहीं होती ॥ क्योंकि इस पहाड़ पर एक छोटे सोताके सिवाय और कहींपानी नहीं है जो अबतक ईसाइयोंकी पूजनकी ठौरके पासहै और वहांके पण्डाका नाम पीर सय्यदहै ॥ मक़ूअमरुलनाससे प्रश्नकिया कि जो इसपहाड़को बेचो तो मैं सत्तरहज़ार अशरफीकोदेताहूं अमरुल नासने आश्चर्यकरके यह समाचार अमरुल खताव के पासलिखा इसके प्रति उत्तर में हज़रत ने लिखा कि उससे पूछो कि वह किस लिये इतने हज़ार अशरफी देताहै उसपै खेती भी तो नहींहोती और न पानीकाकोई सोताहै जब उमरने उससे पूछा तब उत्तर दिया कि इसकारण इतनी अशरफी देताहूं कि मैंने किताबोंमें देखाहै कि यहपहाड़बिहश्त (बैकुण्ठहै) जब उस उत्तरको उमरुल नासने हज़रतके पास फिर लिखभेजा तब हज़रतने उसका उत्तर लिखा कि हां सत्य है

यह पहाड़ मोमिनों (सधर्म्मी) के लिये बिहश्तहै और जो लोग वहां पहिले गड़ेहैं वे मोमिन(सधर्म्म) थे किसी२ बैद्य और बिद्वानों की एक मतिहै कि यह पहाड़ ज़मुर्रदकाहै और मक़्सका मोललेना केवल इसलियेथा कि वहअपनी इसपै मक़बराअर्थात् क़बरबनावे॥

(पहाड़मोरखान) यह पहाड़ फारसमें है और यहां एक गुफा है जिसकी छतसे पानी टपकताहै और यह भी कहतेहैं कि इस पहाड़ पर एक तिलिस्म अर्थात् मायाहै कि जो मनुष्य एकसे हज़ारतक उस ओर जावे उनके पीनेको पूराहो॥

कोहनार अर्थात् अग्निका पहाड़॥

इस प्रकारके पहाड़ बहुत हैं परन्तु उनमें से एक पहाड़ तुर्किस्तानमें है जिस्में एक गुफाहै जो मकानके समान बनीहै जो कोई जीव उसमें जाय तो तत्काल मरजाता है और उनमेंसे एकपहाड़ गुलिस्तान नामहै जिसमें एक ठौर ऐसीहै कि जो कोई पक्षी उसके सन्मुख उड़ेतो गिरके तत्काल मरजाय यही कारणहै कि इसपहाड़ के चारोंओर पक्षी मरेभये दृष्टि आतेहैं दमाबन्द के निकटएकपहाड़ है जहां रातदिन अग्निका ज्वाला प्रज्वलित रहताहै और शेषबर्णन इसका पहिले होचुकाहै॥

(पहाड़नहावन्द) इषुलफ़क़िहा कहताहै कि इस पहाड़ पै दो स्वरूप मायासे रचेहैं उनमेंसे एकका स्वरूप तो मछलीका है और दूसरेका बैलका और ये दोनों सूर्तें बरफ की बनी भईहैं जो जाड़े गर्मी किसी ऋतुमें नहीं लगतीहैं लोग कहतेहैं कि ये दोनों स्वरूप मायाबी इसलिये बनायेहैं जिस्में सोतेका पानी कमन हो और इस सोतेकापानी दोतरफको जाताहै अर्थात् निहाबन्द और दीनूरमें॥

(पहाड़ हुर्मुज़) तोहफतुल ग़रायबका ग्रन्थकार लिखता है कि जो पहाड़ तबरिस्तानमें है उसका नाम हुर्मुज़है इस पहाड़से पानी गिरताहै और अद्भुत बात यहहै कि जब कोई मनुष्य फरियाद करै पानीका गिरना बन्द होजाताहै और जब फिरवही मनुष्य दूसरी बार पुकारै तो पानी गिरने लगता है॥

(पहाड़हिन्दका) पूर्बोक्त ग्रन्थकार कहता है कि हिन्दुस्तान के देशमें एक पहाड़है जिस्पै दो सूरतें बाघकी बनी भईहैं उनके मुख से पानी बहता है उन दोनों के मुखपर दो गांव बसे थे जो दोनों एक दूसरेके बिपरीत थे और आपसकी लड़ाईमें एक बाघके मुखमें चोट लगगई थी सो टूटगया तिस उपरान्त बहुतेरा पत्थरका जोड़ लगातेरहे परन्तु जोड़ नलगा इसकारण उसके मुखसे पानीगिरना बन्द होगया जिसके कारण एक ओरकी बस्ती उजड़ गई और बहुतसे लोग कहते हैं कि लड़ाई के कारण उसका मुख नहीं टूटा बरन उसका मुख इस कारण टेढ़ाथा कि जिस्में पानी बहुतसा गिरै परन्तु उसके बिपरीति होगया कि जितना था उतना भी न रहा॥

(पहाड़वासित) यह पहाड़ मदीनाके पास इन्दलसकी धरतीपर है इसकी गुफामें एक फांकहै और एक तीर लोहे का गड़ा हुआ है लोग उसपै आंखें मलतेहैं परन्तु उसको उखाड़ नहीं सक्ते और जब कोई उसको उखाड़ना चाहताहै तो वह उसी फांक में छिपजाता है और फिर यथापूर्व्वक हो जाता है बहुधा लोगोंने बड़े २ यत्नकिये कि तीरको निकालें परन्तु कुछ बस न चला॥

(पहाड़बदकान) यह पहाड़बड़ाहै और इसपै बहुधा मीठेपानीके सोताहैं और यहां पर हरमके वृक्षहैं जो कहीं नहीं होते यह केवल ईश्वरकी माया जहांचाहे वहां हो इस वृक्षके पत्ते चादरके सदृश होते हैं और इसकी खजूर के वृक्षकीजड़के सदृश होतीहै और इसपहाड़ पै आबादीभी है और यहांके निवासी बनीऊस कहातेहैं॥

(पहाड़वशल)थामाकी धरतीमें यह बड़ा पहाड़है सम्पूर्ण पृथ्वी के पहाड़ोंमेंसे इस पहाड़के बायु जलअच्छेहैं॥

(पहाड़यसूम)यहपहाड़ मक्काकेनिकट बलाद हदीलमेंहै इसपैकोई मनुष्यनहींजासका इसपै बन्दरबहुतहैं सरातकेपहाड़ोंपर जो लोग ईखकी खेतीकरते हैं उसकोभी ये बन्दरआकर उजाड़करते हैं तौनू किसानोंका कुछ बसनहींचलता वेलोग इनको मिटानानहींजानते क्योंकि इनका निवास बहुतदूरहै और वहां कोई जानहींसक्ता॥

(पहाड़मलपश्म) यह पहाड़ कज़वीन शहरके निकट है इसकी आबादीमें से एक गांव दमल नामहै अजायबुल मख़लूक़ातका ग्रंथ कार लिखताहै कि एकमनुष्य ने जो इस पहाड़पर गया था मुझसे कहा कि इसपहाड़ पै आदमियोंकी मूर्तें पत्थरकी बहुतसीहैं जिनको ईश्वर ने अपने क्रोध से पत्थर करडालाहै उनमूर्तोंमें से एकचरवाहे कीमूर्त्ति है जो अपनी लकड़ी टेकेहुये बकरियों को चरारहा है और एकचरवाहा अपनी गौकादूध दुहताहै॥

व्याख्यान नहरोंके उत्पन्न होनेके विषय में॥

जब मेघ और बर्फ़ पहाड़ों पर गिरताहै और वह उसकीउंचाई से नीचेकी तरफ़ बहता है तब प्रत्येक कन्दरा से निकल के जंगल में कोसों फैलजाता है और बहुधा गड़होंमें पानीभरा रहता है जिसको अरबीमें उशाल कहते हैं और जब इनपहाड़ोंमें पानी निकलने की राह तंग हुई तो वहां फैला करके नदीकी सूरत होजाती है और वहपानी जहां तहां इन्हीं गड़होंमें ठहर जाताहै और वे सदैव पहाड़ के नीचेकी ओर बहाकरते हैं कभी बन्दनहीं होते क्योंकि बर्फ़ और मेघ से सदैव इनको सहायता मिलती है परन्तु हां जब दुर्भिक्ष में इनको वह सहायता नहींमिलती तो वह पानीका बहनाभीबन्दहोजाता है हकीम बतलीमूसने जिसने किताब बुरसमाउलआलमनाम भूगोलदर्पण लिखाहै लिखताहै कि इसपृथ्वीके टुकड़ेमें दोसौचालीस नहरें लम्बीचौड़ीहैं इनमेंसे कोईनहरें तो ऐसीहैं जिनकीलंबाई पचास फ़रसख़से लेकर हज़ार फ़रसख़ तक और कोईनदी ऐसी हैं जो पूरब से पश्चिम बहती हैं और कोई २ दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिणको बहती हैं ये सब नदियां पहाड़ों से निकल अंतको समुद्र में जामिलती हैं अथवा किसी रेतली धरती व पहाड़ के नीचेही बन्द होजाती हैं और इनके किनारोंपर बड़े २ शहर और गांवबसे हैं और इननदियों का पानी संसारी लोग अपने खेत और बाग़ोंके सींचनेमें ख़र्च करते हैं और शेष जल खारी समुद्र में जागिरता है वहां यह पानी नन्हे २ कणहो वायुमें मिलजाता है और उसकी भाफवायु में

जमके मेघ बनजातेहैं और फिर बर्षतेहैं और वही पहाड़ पर मेह और बर्फ़होते हैं निदान यही दशा सदासे चलीआतीहै॥ अब तो प्रथम थोड़ासा हाल किसी २ नदी और उसके गुण और उसके अद्भुत जीवोंका बर्णन करताहूं॥

(आसलनामनदी) यह बड़ी नदी खिरज़ के देशमें दजलाके पासहै और रूस और बलगेरियामें होके खिरज़ के समुद्रमें जा मिलीहै॥ कहतेहैं कि इस नदीके कुछ ऊपर सत्तर शाखाहैं परंतु अपनी स्वाभाविक गहराईमें रहकर सब इसी नदीमें मिलजातीहैं इसमें अद्भुत बात यहहै कि इसका पानी यद्यपि समुद्रमें मिलजाताहै तदपि दो दिनकी राहतक अपना रंग अलगही रखताहै और जाड़ेकी ऋतुमें इसका पानी अपने मिठास और अच्छाईके कारण जमजाता है॥ इसनदीमें इतने अद्भुत जीवहैं जिनका बर्णन नहीं होसक्ता अहमबिनफ़ुज़लांक जिसको ईश्वरने बलगेरिया के बादशाह के पास रसूलकी रीति से भेजाथा उसका बर्णनहै कि मैंने पहिले सुनाथा कि बलगेरिया के बादशाहके पास अतिदीर्घ बलवान् मनुष्यहै मैंने उसके देखनेकेलियेकहा तब पूर्वोक्त बादशाहने कहा कि वह हमारे देशका नहींहै परन्तु उसका यह हालहै कि एक दिन आसलनाम नदी बढ़ी तो लोगोंने आयके कहा कि नदी के किनारे एक मनुष्य अतिदीर्घ तनु और बलवान् दृष्टि आता है यह ख़बरसुन हम भी उसके देखनेको सवारहुये वहां एकायकएक ऐसा लम्बा मनुष्य दृष्टिआया जो बारहगज़ लम्बाथा और शीश उसका एक बड़ी देगकी बराबर और नाक उसकी एक बीताकी आंखें बड़ी २ और प्रत्येक अंगुली एकएकबीताकी थी॥ हम उसके आगेखड़े होके बातें करनेलगे परन्तु वह हमारी कुछ न सुनताथा तब मैं उसको अपने साथ लाया और हमारे उसकेदेशके बीच तीन महीनेकी राहकी दूरीथी॥ मैंने लोगोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि यह याजूज माजूजके साथियोंमेंसेहै और इसजातिके लोग हमसे तीन महीनेकी राहपरहैं॥ बीचमें एक दरिया रोकहै और इसजाति

के लोगनंगे रहतेहैं और मछली खातेहैं ईश्वर की माया कि नित्त दरियासे मछलियां निकलती हैं ये लोग उनको अपने और अपने लड़के बालों के भोजन योग्य लेजाते हैं और जो अधिक लालच करें तो उससे खानेवाले के पेट में पीड़ा होती है निदान बलगेरिया के बादशाह ने कहा कि वह मनुष्य हमारे कुछ दिनरहा अन्तको उस के कण्ठ में ऐसा रोगहुआ कि वह मरगया और उसकी हड्डियां अत्यन्त भयानक होगईं॥

(आज़ुरबेहाननामनदी) अबूउलकासिम ने लिखाहै कि यहवह नदी है जिसका पानी बहकर पत्थर होजाता है और तोहफतुल-गरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि आज़ुरबेहान एकनदीहै जिस का पानी कड़ेपत्थर की तरह टुकड़े२ होजाताहै॥

(आसरानदी) अजरी कहताहै कि यहनदी आसरा ऐसेदेश में है कि जिसकानाम कुवत ऐसरबही है और दरियाशाम से निकल के तरतूस के आसपास गिरती है॥ इसकी लम्बाई दोसौदशमील लिखीहै और इसनदी में अपूर्व बिनकांटा की मछली होतीहै जिस का नाम बरखनाहै वह सिवाय इसनदीके और कहींनहींपैदाहोती॥

(ईलानदी) यहनदी बसरा में है इसकी चौड़ाई चारकोस की है इसके किनारों पर बहुधा बड़े२ मकान और वृक्ष और फुलवाईहैं निजकर नींबूआदि मेवा अधिक है॥ कहतेहैं कि बिहश्त की नदी दुनिया में चार हैं एक तो बसरा की ईला नदी दूसरी नदी शाव जो फ़ारस में है तीसरीनदी गोता जो दमिश्क़में है और चौथीनदी सईद जो समरक़न्द देश में बहती है इनचारों में एक से एक को बढ़कर कहना चाहिये प्रत्येक अपनी २ भलाईमें अद्वैत हैं॥

(असफ़ारनदी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार कहता है कि असफ़ारदेश में एक ऐसीनदी है कि जो एकवर्ष बहकर आठवर्षतक बन्दहोजातीहै और नवींवर्ष फिर बहतीहै॥

(आनानदी) यह इन्दलसदेश में है यह फ़वह नाम ठौर से नि-कली है तिस उपरान्त पृथ्वी में ऐसी छिपती है कि इसका पता

नहींलगता फिर रिआहनाम क़िलाके निकट जिसको आनाकहते हैं प्रगट होतीहै॥ और इसीप्रकार फिर लोप होजाती है निदान इसीप्रकार प्रगटत तुरत तीलूसतक इसकापता लगताहै और फिर महासागर में जाके गिरती है और यहनदी सौमील की लम्बीहै॥

(जैहूंननदी) इस्तख़री कहताहै कि इसनदी की गहराई उसके बहाव से मालूमहोजाती है यहनदी बदुख़शांकी सीमा से निकली है बहुधा हशपहाड़ के निकट और भी नदी मिलजातीहैं तब यहां महानद होजाताहै और वहां से सनाया की नदियोंमें मिलतीभई बदुख़शां में मिलती है जो तुर्किस्तान से निकली है और पहाड़ोंमें होके ख़्वारज़िम में गिरती है और कहीं के बासियों को इसनदीसे लाभनहीं होता परन्तु ख़्वारज़िम के निवासियों को क्योंकि यहां इसका पानी ठहरता है और ख़्वारज़िम की सीमा में छहदिन की राहतक इसकापानी फैलताहै और जाड़ों में जैहूंन का पानी बन्द होजाताहै और जो जाड़े अधिकहुये तो इसकापानी पत्थरहोजाता है और ऐसा कड़ाहोजाताहै कि गाड़ी और छकड़ा इसके ऊपरसे निकलजाते हैं॥ परन्तु जमेंहुयेपानीकीमुटाई पांचबीताकी होतीहै और उसकेनीचे फिर पानीभरारहताहै ख़्वारज़िमकेनिवासीबहुधा उसमें गढ़ासा खोदके पानी निकालते हैं और गदहोंपर लादकर शहरोंमें लेजातेहैं जब यहनदी जमजाती है तो यह तनकभी फरख में नहींआता कि यहनदीहै कि ख़्वा उसपै रेतभी उड़ाकरताहै यह दशा दो महीनेतक रहतीहै जब सर्दी कम होनेलगती है तो बरफ़ गलनेलगती है बहुधालोग इस्पै चलने में धोखाखाते हैं क्योंकि वह बरफ़ टूटजाती है और बेदीन अपनीसवारीसहित बूड़जाते हैं इसी कारण इसनदी का नाम वहां क़त्ताल अर्थात् घातिनी प्रसिद्ध है॥

(हसनमहदीनदी) तोहफतुलग़रायब का ग्रन्थकर्ता लिखता है कि यहनदी बसरा और अहवाज़ के बीचमें है किसी २ समय यह नदी मीनार के समान ऊंची होती है उससमय इसमें ढोल और तासोंकी सी आवाज आती है॥

(ख़रीजनदी) यहनदी तुर्किस्तान में है और यहां सांप बहुतहोते हैं उन दुष्टों का कुछ ऐसा प्रभाव है कि जो कोई देखै वह अचेत हो जाता है ॥

(दजलानदी) यहनदी बग़दादमेंहै जो पहाड़हसननाम प्रसिद्ध है उसके निकटहै इराहसनका नाम हसनज़्वालक़रींन है इसनदी का पानी और पहाड़ोंकी नदियोंसे मिलकर बहताहै और वहांसे यहनदी बुक़रबियापहाड़ के पास होके मौसाफ़ारकीन में निकल हस्सारकनफ़ा में पहुँचतीहै वहांसे इब्नउमरके टापूमें होके मूसल नाम नदीमें मिलतीहै और वहांसे तकरीब मिलकर बग़दादमें जा गिरतीहै फिर वहांसे बासित और बसरा और आबादहोकर फ़ारस के समुद्रमें गिरतीहै और जब बासितसे अलगहोतीहै तो सातनदी होजाती हैं उनके नाम ये हैं ॥ सासीनदी१ अराक़नदी२ वकला नदी३ हरक़वीनदी४ हमामियांनदी५ जाफ़रनदी६ और ७नदीमैसा॥ तिस उपरान्त ये सातोंनदियां फ़रातनाम नदी में मिलती हैं और मतारागांवकेपास इसकाफाट बड़ालम्बाचौड़ा होजाताहै यहगांव बसरा और दजलाके बीचमें एकदिनकी राहपरहै ॥ दजलाकापानी मीठा स्वादिष्ट और हलकाहै गर्मीकी ऋतु में इसका पानी बासित और बसरामें ख़र्च कियाजाताहै हज़रतअब्बास की कहावत है कि ईश्वर स्वप्रकाशी ने हज़रतदानयालको यह आकाशवाणीदीथी कि अपने बन्दोंकेलिये दो नदियां बहाताहूं और इनदोनोंको नदियोंसे अलगकरताहूं जब ईश्वरने पृथ्वीको आज्ञादी कि हज़रतदानियाल की आज्ञाकारी हो तब हज़रतदानयाल ने लकड़ी लेकर पृथ्वीपर रेखाखींची रेखाखींचतेही पानीनिकलनेलगा और जहांकहीं धरती रांड़स्त्री अथवा यतीम अर्थात् अनाथलड़केकी होतीथी वहां पानी अधिक निकलताथा जिसमें उनको माल अधिकहो ॥ क़ाज़ीअली बिनऐसूखीने लिखाहै कि फ़रातसे दजलाकीनहर दूनीहै और इस के पश्चिम में रबियाफ़रात बहती है इसनदीकी धरती पानीमें से दृष्टि आती है ॥

(ज़हबनदी) यहनदी शाम देश में हैं ॥ हलब देश के निवासी कहतेहैं कि यहनदी दादीबतनामें है लिखाहै कि इसनदीका पानी तनक भी वृथानहीं जाता क्योंकि प्रथम तो इतना प्यारा है कि तोलके बिकताहै और जब कम होजाताहै तब नाप के बिकता है और औव्वल दरजे तो कपास के वास्ते उपयोगी है और दोयम दरजा वृक्षोंकेलिये इसनदी का पानी दोफ़रसख तक एकरेतले में आकर लौनहोजाताहै सोई बहुधा शामके आसपास ख़रचहोताहै॥

(ज़रीक़नदी) यहनदी सदैव बहा करतीहै और बहुधा बागादि को भरदेती है जब मुसलमानों और फ़ारसियों में युद्धहुआ और ये ज़िदजुर्दमारागया उस समय इस नदी ने मुसल्मानी सेना की बड़ी सहायताकरी अर्थात् जब फारसियों की सेना भागी तो यह नदी रोकथी बहुधा लोग उनकीसेना के इसनदी में डूबकेमरगये और कुछेक मुसल्मानों की बन्द में आगये ॥

(रासनदी) आज़ुरबायजान में इसनदी का बड़ाफाट है इसके दोनों किनारों पै ककरीली और पथरीली धरती है नदीकीपेंदी में पत्थरों की खान है उस ओर को नाव नहींजासक्ती बहुधा पत्थर यहां ऐसेहैं कि जो टूटनहींसक्ते जो मनुष्य इसनदी में होकर नंगे पावँ निकलजायँ तो उसके पावों में यह गुणहोजाताहै कि जोस्त्री प्रसूतकी पीड़ामेंहो और बालक न निकलताहो और वह मनुष्य उस स्त्री की पीठिपर अपने तलवे रखदे तत्काल बालक होजाय कहतेहैं कि यद्यपि यहनदी पथरीलीहै तद्यपि किसीको नहींडुबाती बहुधा जीव इसमें डूबके निकलजातेहैं ॥ एक अद्भुततर यह है कि देसमबिन इब्राहीम आजुरबायजानका हाकिम कहता है कि एक बार मैं अपनी सेनासहित इसकेपुल पै पहुंचा उससमय मैंने देखा कि एक स्त्री अपने कन्धे के ऊपर लड़काडालेहुये जाती है दैवयोग हमारी बारबरदारी के ऊंटका धक्का उस स्त्री को लगा सो वह तो उसपुलपर गिरपड़ी और उसका लड़का नदी के भीतर गिरपड़ा और डूबकले के उभरआया और उसनदी के झकोरों और पत्थरों

से कुछ उसलड़के चोट नहीं लगी और यह एक अद्भुत बात देखी कि नदी की लहरों ने उस लड़के को सूखे में डालदिया ॥ जब वह बच्चा किनारे लगा तो वहां एक उक़ाब पक्षी रहताथा उसने झपटके उस बालक अजानको उठाय जंगलकी राहली उस समय मैंनें आपने साथियोंसहित उस उक़ाबके पीछे घोड़े दौड़ाये इतनेमें उस उक़ाबने बायुसेउतरके उसलड़केको धरतीपै धरके उसकेकपड़े फाड़नेका अनुमानकिया इतने में हमारे सिपाहियोंने हल्लाकिया तो उक़ाब बच्चाकोछोड़के उड़गया उससमय मैंने उसकीक्षेमपर ईश्वर का धन्यबादकिया और वहबालक उसकी माताको सौंपदिया ॥

(ज़ाबनदी) यह नदी प्रसिद्ध है,यह बिदित हो कि बड़ी नदी अर्थात् नदको तो दुरयानह कहतेहैं और छोटी नदीको जो सदैव बहा करै अरबीभाषामें जू कहतेहैं ॥ निदान यह दुरयानह अर्थात् नद आरदील और मूसलके बीचमें है ॥ यह नदी आज़ुरबायजान से निकल अराक़के पास दजलामें गिरतीहै अरबदेशीय इसनदीका नाम आबम जनूनबताते हैं और कारण यहहै कि इसका पानीबड़े बेगसे जाताहै ॥ ग्रन्थ कर्त्ताका लेखहै कि गर्मियोंमें मैंने इसका पानी कईबार पानकिया अति सरद और मीठाहै इसके उद्गमस्थान के निकट पहाड़ में बहुधा बस्तीहै और वहां के निवासी इसके पानी की भलाईके कारण एक फसलके बीचमें दो काटते हैं ॥

(ज़िन्दारोद नदी) यह नदी अस्फहानमेंहै और मिठासमें बहुत प्रसिद्ध है इसका उद्गमस्थान का शान नामठौरहै ॥ और सम्पूर्ण अस्फ़हानमें इसका पानी जाता है वहां से निकलके रेतले में दृष्टि नहीं आती फिर करामामें प्रकट होतीहै और वहां से नीचे उतरके हिन्दके सागर में गिरती है ॥

(ज़कवीरनदी) यह नदी मरीदके निकट आज़ुरबायजान की धरतीमेंहै जब तक इसकी गहराई न मालूम होजाय तबतक कोई मनुष्य इसके भीतर पैर नहीं रखसक्ता मरीदके पास पहुंच कर इस नदीका चिह्न भी नहीं रहता वहां से चार फ़रसख़ तो छिपी

और फिर प्रकट बहती है और इसकी ख़बर शरीफ़ महम्मबिन-ज़ुलफ़िक़ारउलवी ने दीहै ॥

(सबतनदी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार कहताहै कियह नदी इन्दलसकी धरतीमें बहती है ॥ इसनदी में कोई सवार बिना नावनहीं उतरसक्ता परन्तु हां शनिश्चर के दिन इसका बढ़नाबन्द होजाताहै और सूर्य्यास्त होतेही यथापूर्बक बेगहोजाता है ॥ इस नदीके किनारेपर एकसोनेकी मूर्त्तिहै उसकी छातीपै यह लिखा है कि इसनदीकेपारमतजा नहींतो फिर इसपारलौटनाकठिनहोगा ॥

(सरोरोदनदी) यह नदी अज़ुरबायजानमें है अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकर्त्ता ने लिखाहै कि मुझसे किसी २ फ़क़ीहा अर्थात् क़ुरानादिके जानने वालेने कहा कि इस नदी में एकपत्थर पच्चीस गज़लम्बा आधगज़ चौड़ा और दोगज़ का मोटाहै ॥ इस पत्थर के भीतर चींटी बहुतहैं जब नदीबढ़तीहै तो इसपत्थर के सम्पूर्ण छेद बराबर होजाते हैं परन्तु मुंह उसका पानी के ऊपरही रहता है इसीकारण उनचींटियोंको कुछकष्ट नहींहोताहै जब यहसमय आता है तो लोग इसपत्थरके तमाशा देखने को आते हैं और आश्चर्य्य करते हैं और बहुधा लोग उनचींटियोंके खानेकोभी लाते हैं ॥

(संजानदी) अदवीका लेखहै कि यह नदी बहुतबड़ी है और हसारमंतूर और कैसूमसे बहतीहै जो मिस्रदेशमेंहै इसनदीमेंहोके कोई नहींनिकलसक्ता क्योंकि धरती उसकी रेतलीहै इसनदीपैएक अद्भुत ताक़के बनावका पुलहै और उसीके नीचेसे नदी बहती है ॥ इस ताक़ के बनानेमें ऐसे पत्थर लगायेगये हैं जिन प्रत्येककी दश गज़की लम्बाई लिखीहै और पांचगज़की उंचाईहै इसपुलके समाचार यों लिखे हैं कि वहांके लोगोंकेपास एक तखतीहै उसमें कुछ ऐसी माया कीहै जब कभी वहपुल कहींसेटूटजाताहै तो उसतखती को पानीमें डालदेते हैं तो वहांसे पानीहटजाताहै जब वेलोग उस को बनालेते हैं तो उसतख़तीको उठालेते हैं वहां यथापूर्व्वक पानी फिर होजाता है ॥

(सैहूननदी) यह नदी माबरायउन्नहर के नामसे प्रसिद्धहै और ख़जंदीरकी धरतीमें जो समरकन्दसे पछी तरफ़है बहती है इसका पानी जमके पत्थरकेसदृश कड़ाहोजाताहै यहांतक कि क़ाफ़िलेके क़ाफ़िले अर्थात् यूथकेयूथ इसपैसे उतरजाते हैं॥

(शाहरोद और इस्फंदरोद नदी) यह नदियां आज़रबायजान के पहाड़ोंसे निकली हैं जिनमेंसे शाहरोदनदी तो बड़े वेगसे जाती है इसके बहनेमें बड़ाशब्दाघात होता है और इसकी अपेक्षा इस्फन्दरोदनदीके बहनेमें शब्द नहींहोता नरमधरतीमें साधारणरीति से बहतीहै बहुतसे कहते हैंकि यद्यपि शाहरोदमेंवेग और बहनेमें शब्दहोताहै तद्यपि उसमें किसीप्रकारकी भयनहीं और इस्फन्दरोद यद्यपि साधारणचलतीहै तद्यपि भयदायक अर्थात् प्राणघातिनीहै निदान येदोनोंनदियां यहांसेनिकलके गीलानमेंगिरजातीहैं इसका पानीगीलानीलोगपीते हैं और खेतसींचते हैं यहनदी वहांसेनिकल के खिरज़ के समुद्र में गिरती है॥

(शलफ़नदी) यहनदी आफ्रिक़ामेंहै॥ फ़क़ीहाबुलेमानमुलतानी ने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकारसे वर्णनकी कि बसन्त ऋतुमें इस नदी में एक मछली शबूक़नाम प्रकट होती है इस मछली की लम्बाई एकगज़ और मांसस्वादिष्टहोताहै परन्तु कांटे बहुतहोतेहैं इस मछलीका अहेर केवल दो महीना होताहै॥

(सरात नदी) यह नदी बगदादमें बहतीहै इसको सासान के बादशाहोंने ख़ुदवायाहै इससे बहुधा गावोंके बाग और खेत सींचे जातेहैं बहुधा इसके किनारोंके गांवोंमें खेतीहोतीहै और इसीनदी के पानीसे वे खेत सींचेजातेहैं॥

(सक़लाब नदी) तोहफ़तुलग़रायब में लिखाहै कि यह नदी सक़लाबकी धरतीमें बहतीहै यह प्रत्येक अठवारेमें एकबार बहतीहै॥

(तबरिया नदी) तोहफ़तुलग़रायब में लिखा है कि यह नदी तबरियाकी धरतीमें बहतीहै इसका आधा पानी गरम औरआधा ठण्ढाहै जब तक नदीमें है तब तक तो दोनों एक में नहीं मिलते

और जहां किसी बरतनमें धरो तहां दोनों प्रकारका पानी ठण्ढा होजाताहै ॥

(आसी नदी) यह नदी शामदेशमें हमस और हमाद के निकटहै और बहीराक़ुदुस इस नदीका उद्गमस्थान है जब यह नदी बढ़तीहै तो इसका पानी बहरुलताकियामें गिरताहै ॥ इसनदीको आसी अर्थात् दोषी कहनेका यह कारणहै कि और तो सम्पूर्ण नदियां उत्तरसे दक्षिणको बहतीहैं और यह उनके बिप्रीति दक्षिण से उत्तरको बहतीहै इस नदीमें एक प्रकारकी मछली मिलतीहैजो टीड़ीसे कुछेकही बड़ीहोतीहै ॥

(ईसा नदी) यह नदी फ़रातसे निकल बगदाद और मदीना में बहतीहै ॥ इसमें मधु मक्खियों के बहुत छत्तेहैं ॥ इसके किनारे पर बहुधा गांवहैं जिनके खेत इसीके पानीसे सींचेजातेहैं ॥ अगले दिनोंमें तो इसमें जहां तहां पुलबनेथे परन्तु अब तो एकके सिवाय और किसी का चिन्हभी प्रकट नहीं ॥ इसके दोनों किनारोंपै बहुधा बागहरे खड़ेहैं इसके आसपासके बायुजल ऐसे अच्छेहैं कि मानों बैकुण्ठकी बानगीहै ॥

(क़ूरह नदी) यह नदी फ़ातूल और बुगदादके बीचमें है जब यह नदी बढ़ती है तो बगदाद में पानी आजाता है सो शहरको खराब करता है ॥ इस नहर के खुदवाने का यह समाचार है कि जबनौशेरवां बादशाह ने फ़ातूलकी नहर खुदाई और उसमें पानी बहातोनीचे में रहने वालोंकी बड़ी हानिहुई और उन्होंने यह भी कहा कि पानी नहीं मिलता निदान उन दुखियों ने नौशेरवां से सवारीके समय मिलके अपनेदुःख के समाचार कहे कि हम बादशाह के अन्याय से दुःखी हैं ॥ यहसुन नौशेरवां घोड़ासे उतर पृथ्वी पर बैठगया लोगों ने फ़रशबिछादिया कि इसपर बिराजिये परन्तु उसने निरादरकिया औरकहा कि बड़ेखेदकी बातहै कि दुःखी आगे खड़ा हो और हम फ़रशपै बैठेंगे बहुधा इसनीति रत बादशाह की यहरीति थी कि न्यायकरने के समय पृथ्वी पै बिना बिछौने बैठता

था निदान ब्योरेवार समाचार पूंछे तब उनदोनों ने प्रार्थनाकी कि आपने फ़ातूननाम नहरखुदवाई उससे हमलोग खराबहुये हमारा अन्न औरजल दोनों बन्दहुये यहसुन नौशेरवां ने कहा कि अच्छा हम इसनहरको बन्दकरादेंगे जिसमें आपलोगोंका नुक़सान न हो इसपैप्रजाने उत्तरदिया कि हमइतनाकष्ट आपकोनहींदेसक्ते किन्तु यह प्रार्थनाहै कि इसकीठौर दूसरीनहर खुदवाईजाय तब नौशेरवां ने उनकी प्रार्थनानुसार कूरहनाम नहर खुदवाई और इसनहरसे उनको बहुत लाभ हुआ परन्तु वर्त्तमानकाल में बड़ीहानि होतीहै क्योंकि जब पानी बढ़ताहै तो शहर में पहुंचकर बहुधा बस्ती को ख़राबकिया करताहै ॥

(फ़रातनदी) यह नदी आरमिनियां और कालीक़ासे निकलती है और यहनदी पहाड़ों में होके रूमदेश में आई है वहां से मला-तिया, समात, क़िलयनजमर और दूसरी ठौर होतीहुई आनह में पहुंची है ॥ यहां पहुंच के उसकी शाखें नदीसमान होजातीहैं इस दरियासे बहुधा खेत और बाग सींचेजातेहैं अन्तको यहनदीदजला में जामिली है कोई२ शाखा तो बासित में मिली हैं और कोई२ शाखा उसके ऊपरही मिलगई हैं और कोई २ शाखा बसरा में आयमिलीहै उसठौर फरात और दजला एकएकसे मिल महानद होकर बहीहैं और फारस के समुद्र में गिरतीहैं इसनदीकी बड़ाई में बहुधा कहावत है कि वैकुण्ठ से ये चार नदी निकली हैं नील, फरात, सैहून, और जैहून ॥ जनाब अमीरुलमोमिनीन हज़रत मुशकिलकुशाअलैहुस्सलाम ने इस फ़रातनदी के विषय में कोफ़ा के निवासियोंसे कहाहै कि हे कोफ़ानिवासियो यह जो फरातनदी तुमलोगों में बहती है इसमें दोनालियां वैकुंठसे मिलीहैं सो इस में वहांका पानी आताहै और अब्दुलमलिक बिनउमरकी कहावत है कि फ़रातनदी वैकुंठमेंसे बहीहै नहीं अवश्य इसका पानी ख़राब और हानिकर्त्ता होता और अबहै कि जो रोगी इसका पानी पीता है सो आरोग्य होताहै ईश्वर ने इसनदी पै फरिश्ते नियत किये हैं

जो इस नदीमें बुराईकी वस्तुहैं उनको वे लोग दूरकिया करते हैं इमाम जाफ़रसादिक़ ने बर्णन कियाहै कि जो फ़रातका पानीपीके ईश्वरकी प्रशंसा करे तो अवश्य आरोग्यता होगी और इमामजाफ़रअलेहुस्सलाम ने भी कहाहै कि फ़रात के पानी का बड़ाप्रताप है जो लोग इसके गुणको जानते तो कभी इसके किनारेसे दूर न होते और इसमें स्नान करके शरीर निरोग्यकरते॥ सद्यरहमतुल्अलेह ने लिखाहै कि हज़रत मुशकिलकुशाके ख़िलाफ़त के समय में फ़रात नदी कुछ चढ़ीथी उसमेंसे एक बड़ा अनार निकला सो हज़रतको मिला जब उसको तोड़ा तो उसके दाने बहुत बड़े २ और बहुत थे यहां तक कि मुसल्मानों में बांटेगये॥ बहुधा बिद्वानों के निकट यह बात बहुत पुष्टहै कि वह अनार बैकुण्ठका था॥

(करनदी) यहनदी आरमिनियां और अरानके बीचमें है और एजाजके देशसे निकल मदीना तफ़लीस, हुबरा और शमकूर होके बरवातक पहुंचती है और फिर रसनाम नदीमें जो उससे छोटी है मिलतीहै और वहां से दरिया ख़िरजसे मिल सोरमा नामगांवको जो बरवासे तीन फ़रसख़ परहै जातीहै॥ इसपे बहुतसे एक मतिहैं कि यहनदी क्षेमकीभरीहै जो कोई पशु अथवा मनुष्य इसमें गिरता है वह कुशलपूर्बक निकल आता है ॥ किसी २ फ़क़ीहा अर्थात् क़ुरानादि ग्रन्थ जाननेहारे ने अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार से बर्णन किया कि हमने करनाम नदीसे डूबनेहुये मनुष्यको बाहिर निकाला तो उसमें कुछ्क़प्राण बाक़ीथे जब उसने सूखेकीबायुखाई तो आंखखोलके पूछने लगा कि यह कौन ठौरहै हमने उत्तरदिया कि वक़हवां॥ उसने कहा कि मैं कज़ाफ़ीमें डूबाथा जो यहांसेपांच दिन राहकी दूरपर है अन्तको उसने भूखकेकारण भोजन मांगे तो लोग उसके वास्ते भोजन लाये इतने में एक संजिस दीवारकेनीचे वह बैठाथा वह गिरपरी जिसके नीचे वह दीन दब मरा॥

(गंगानदी) यह नदी हिन्दुस्तान में अति बड़ीहै हिन्दके निवासियोंके निकट यह नदी अति पवित्र है जब हिन्दुओं के बड़े और

घरके मरतेहैं तब उनकी हड्डियां इसमें डालतेहैं उनका यह निश्चय है कि यह कर्म्म करनेसे मृतक बैकुण्ठको जाताहै इस नदीसे और सोमनाथसे दो फ़रसख़ अर्थात् ६ मीलकी दूरीहै और इस नदीके पानी अर्थात् गंगाजल से अपने देवालयको धोतेहैं॥

(मलक नदी) यह नदी बग़दादमें बहुत पुरानी है प्रथम नदीको दाऊदके बेटा सुलेमानने खुदवायाथा और कोई २ कहते हैं कि सिकन्दरने खुदवायाथा॥ कहते हैं कि यह नदी बर्षके दिनों की संख्यानुसार ३६० तीनसौ साठ गांवों पर है और इसीलिये ऐसी नदी बनवाई कि जो कदाचित् दुर्भिक्ष हो तो एक गांव की आमदनी एक दिनको होजाय और ऐसा ही प्रबन्ध हज़रतयूसुफ़-सद्दीक़ ने मिश्र में किया था॥

(महरान नदी) यह नदी सनदमेंहै इसकी चौड़ाई दजला की बराबर है पूर्वसे दक्षिणका कोण लेतीहुई आती है और पछांह की ओर बहकर फ़ारसके समुद्रमें गिरतीहै इस्तखरीने लिखाहै कियह नदी उस पहाड़से निकली है जहांसे कोई २ शाखाजैहून नदी की निकलीहैं यह नदी मुलतानकी सीमापर प्रकट हुईहै और मंसूरा पहुंच कर दरिया मदीनतुलदबील में गिरती है मदीनतुलदबील नदी अति रमणीक और उसका पानी दजला से उतरके मीठा है कहते हैं कि इस नदी में घड़ियाल बहुतहैं और लम्बाई चौड़ाई में दरिया नीलके नाकसे कुछेक कमहोते हैं जब यह नदी बढ़ती है तो इसका पानी चारोंओर फैलजाता है और उसपानी के सूखनेके उपरान्त वहां लोग खेती करते हैं॥

(कमरां नदी) तोहफतुलगरायब के ग्रन्थकर्त्ता ने लिखा है कि कमरांकी धरतीमें एक बहुत बड़ी नदीहै जिसपै पत्थरका पुलबना है और यह पुल पत्थर का एकही टुकड़ा काटाहुआ है एक अद्भुतबात यहहै कि एकसे हज़ारतक जितने आदमी इसपर से उतरनेलगते हैं उन सबको बान्ति होनेलगती है जब तक उतर न जायँ तबतक बान्ति बन्द नहीं होती है॥

(नील नदी) कहते हैं कि इस नदीसे बढ़कर दुनियां में कोई नदी नहीं है यह नदी एक महीना की राह तक तो मुसल्मानों के देशमें बहती है और दो महीनाकी राहतक तो वह देशमें बहती है और चार महीनाकी राहतक जंगल में बहती है और वहांसे बलादकिस्म खारिजखतउस्तवा से प्रकट होती है इसके सिवाय और कोई नदी ऐसी नहींहै जो दक्षिणसे उत्तर तक आतीहो और इसी प्रकार यह भी जानना चाहिये कि कोई नदी और ऐसी भी नहीं जो ठीक गर्म्मियोंमें बढ़े॥ क़साईने कहाहै कि इसके अद्भुत पदार्थों मेंसे एक यह है कि इसके किनारे वालों को वर्षाकी कभी ज़रूरत नहींहोती अवर्षणके दिनोंमें भी इस नदीके चारोंओर जल रहता है और गर्मियों में इसके बढ़नेका यह कारण है कि उस ऋतु में ईश्वरकी आज्ञासे उत्तरकी वायु चलाकरती है उसके कारण समुद्र इसकी ओर को अपनी लहरें फेंकता है तिससे यह नदी बढ़ती है और वह खारी पानी इसमें आके मीठा होजाता है जब नीलनदी अपने दो किनारों को खेती करनेके समय पानीसे भरचुकती है तो ईश्वर की आज्ञा से दक्षिण की वायु चलती है तो फिर वह वायु इस नदीके पानीको समुद्र में करदेती है॥ वहांके निवासियोंने एक यंत्र बनायाहै जिसके द्वारा नीलनदीके पानीकी बाढ़का माप करलेते हैं उसीके अनुसार खेती करतेहैं यह यंत्र एक लम्ब है जो नील के किनारे एकहोजमें पड़ारहताहै और उसमें एक पोला नल लगाहै जिसमेंसे नदीकापानी उसहौजमें आया करताहै और उस यंत्र में अधिक न्यून जाननेके हेतु रेखा बनी हैं जिस रेखातक पानीपहुंचा उसीके हिसाबसे नदीका घटाव बढ़ाव जानलेतेहैं जो चौदहज़िरा तक पानी पहुंचा तो जानलेतेहैं कि अबकीसालपानी मध्यमहै सो खेती भी मध्यमही होगी और जो सोलह ज़िरातक पानी पहुंचा तो खेतीकी अधिकता मानते हैं और जो अट्ठारह ज़िरापर पानी पहुंचा तो मालूम हुआ कि बहुतही अच्छा सम्बत होगा विदित हो कि ज़िरा एक प्रकारकी माप २४ अंगुलकी होतीहै॥ कसाई

कहता है कि प्रथम इस यंत्रको हज़रत यूसुफ़ने बनवायाथा अब-दुलरहमन अबदुल्ला के बेटा अबदुलहुक्म के पोताने लिखा है कि जब मुसल्मानों ने मिश्रको जीता तब मिश्रदेश निवासी अमरबिन-उलनासके सन्मुख जाय प्रार्थना करने लगे कि हमारे देश में यह रीतिहै कि जब क़वती के महीनोंमें से नोवहका महीना आताहै तब उसकी बारहवीं रात्रीको किसी की कुमारी कन्याको उसके रक्षक से मांगलेते हैं और उसको बस्त्राभूषण से नखशिख अलंकृत कर नीलनदीमें बोरदेतेहैं तो उससमय नीलनदी लहरें लेतीहै और जो यह रीति न कीजाय तो नीलनदी बहती नहीं इसपै आसके बेटा उमरने उत्तर दिया कि मुसल्मानोंकी अमलदारीमें यह बातनहीं होसक्ती बरन मुसल्मानोंका यह धर्म्म है कि पुरानी चालोंकोमिटा दें यह आज्ञासुन मिश्र निवासी चुपके होरहे यहांतक कि उसके उपरान्त माहनोवह और माहअर्वीव और मनेगीतीनमहीनाबीतगये और नीलनदीमें बाढ़ न आई अन्तको प्रजाने देशछोड़नेका अनुमान किया यहबातउमरने सुनी तब उमरने उमरबिनुलख़ताब के नाम एक बिनयपत्र लिखा वहां से उत्तर आया कि जो तुमने लिखा कि मुसल्मानोंको पुरानीचालोंसे कुछ प्रयोजननहीं सो यहीठीकहै अब हम एकरुक़्क़ानीलनदीकेनाम लिखतेहैं सो तुम नीलनदीमेंडालदेना ईश्वरनेचाहा तो नीलनदीबढ़ैगी॥ उसमें यहलिखाथा कि ईश्वरके धन्यवादउपरान्त नीलनदीको बिदितहो कि जो तू अपनी इच्छासे बहतीहै तो अबतू कभी न बहना और जो तू ईश्वरकी आज्ञानुसार बहती है तो ईश्वर से प्रार्थना कर जिसमें तुझे बहावें निदान उमरबिनुलनास ने पहुंचतेही उस पत्रीको नीलनदी में छोड़दिया और वही दिन मिश्र निवासियों ने अपने चलने का दिन नियत कियाथा फिर उसीदिन ईश्वरकी आज्ञासे नीलनदीको बढ़ते देखा और १६ सोलह ज़िरातक बाढ़ पहुंची इस नदीमें सात खाड़ीहैं॥ खाड़ीस्कन्दरिया१ खाड़ीदिमियात२ खाड़ीमनफ़३ खाड़ीमिही४ खाड़ी अलफ़यूम५ खाड़ी शरीदूस६ ये खाड़ी सदैव बहा करती

हैं इन्हीं खाड़ियोंसे सम्पूर्ण मिश्रदेश जलसे सम्पन्न रहताहै जब नीलनदी की बाढ़ पूर्वोक्त यंत्रतक पहुंचती है तो इन खाड़ियों को तोड़देतीहै और पानी बहनेलगताहै यहां तक कि सम्पूर्ण देशमें जलही जल होजाताहै जब वह पानी घटने लगताहै तो बीजबोने का आरम्भ होताहै और बर्षा २ के पशुओं के द्वारा खेत जोतने लगतेहैं ठीक निकलनेकी ठौर नीलकी ज़ंजमेंहै वहांसे निकलहबशा और नोवह होतीहुई दो पहाड़ोंके बीचमें से निकली है इन पहाड़ों के बीचमें बहुधा गांवबसेहैं और गर्मियोंकी ऋतु में इस नदीके बढ़ने का यह हेतु लिखाहै कि इसी ऋतु में ज़ंगवार देशमें बर्षा अधिक होतीहै और बहुधा वहांके शहरोंमें बहियाका जोर होताहै निदान अनेक राहोंसे जब वह पानी नीलनदीमें गिरताहै जो उस समय की बाढ़ सोलह ज़िरातक पहुंचे तो उस समय लोग सब नहरों के द्वार खोलदेतेहैं तो उनमें पानी बहने लगताहै और जब पानी देश में यथोचित पहुंच जाताहै तो फिर वह पानी सिमिट के नीलनदी में चलाजाताहै उस समय मिश्रकी धरती पानीसे अत्यन्त सम्पन्न दृष्टि आतीहै॥ इस नदीकी अद्भुत सृष्टिमें से रादानाम एक प्रकार की मछली होतीहै जिसका बर्णन हम ऊपर करआयेहैं जिसकेछूनेसे मनुष्यके अंगमें कँपकँपी आतीहै सो इसदेशमें एक प्रकार का साग होताहै जो उसकोहाथसे मलकर रादाकोछुये तोफिर कँपकँपी न आवे और नीलके अद्भुत सृष्टिसे एकजीव नहनंग अर्थात् नाक है जब कोई मनुष्य हाथमुहँधोनेकेलिये नीलकेकिनारेजाताहै तो यह चांडालजीव पानीके नीचे२ निकटआजाताहै वहां उसदीनको लीलजाताहै॥ इस नदीको तिरस्कार करनेके बिषय में एककबिने लिखाहै कि नाक के डरके मारे नीलनदीके पानीको कभी आंखसे न देखै इसका प्रयोजन यहहै कि उसके किनारेपै जाके न देखै किन्तु घरमें जो बर्त्तनों में है उसे देखै॥ इस नदी में एक ठौर है जहां मछलियां आपही आप इकट्ठी होती हैं उसदिन जो वहांजाय जितनीजी चाहै अपने हाथसे पकड़लावे परन्तु यहदशा वर्षभर में एक नियत दिनको होती है॥

(हीरमन्दनदी) यहनदी सजस्तानदेशमें है कहते हैं कि यहएक बड़ा आश्चर्य्य है कि इसनदीमें एकहज़ारनदी और मिली हैं और एकहज़ार नहरें इसमें से काटीगई हैं परन्तु न तो उन नदियों के मिलनेसे कुछबढ़ीही और न उन नहरोंके बाहर निकलजानेसे कमतीही हुई दोनों दशामें एकरस रहतीहै॥

व्याख्यान कूआं और सोतों के विषयमें॥

विद्वानों के निकट पृथ्वीमें नन्हे२छेद बहुत हैं उनमें केवल वायु और जल होते हैं जब वायुमें ठण्ढअधिकहुई तो वह पानीहोजाता है और बहुधा ऐसा होता है कि जो किसी दूसरीओरसे प्रथम के इकट्ठेहुये पानीमें अधिकताहुई और इसतरफ़से उसे सहायता मिली और अगलेछेदोंमें समा न सकी उसदशा में जो पृथ्वी नर्महुई तब तो पृथ्वीआपहीआप फटजातीहै और पानी बाहिरकीओर निकल परताहै और जो वहां पृथ्वी कड़ीनई तो वहां कूआंकेसमानखोदने की आवश्यकता होतीहै॥ अबूउलरैहांख्वारज़िमीने अपनीकिताब आसारबाक़ियामें लिखाहै कि यमनमें ऐसीठौरहै जहां लोग कूआं खोदतेहैं बीचमें एक ऐसापत्थर अवरोधक पातेहैं कि उसके नीचेसे पानीनिकलसक्ताहै तो वे लोग उसपत्थरमें लोहेकेयंत्रोंसे छेद करते हैं और लोहेकी चोटके शब्दसे पहचानते हैं कि इस पत्थरके नीचे पानीहै या नहीं तब पहिले तो उसमें परीक्षा लेनेकेलिये छोटासा छेदकरतेहैं जो वह परीक्षाठीकहुई तबतो खोदके बनालिया और जो देखाकि इसमें पानीनहीं केवल पोलाहीहै तो चूनाकी गचसे बंदकर दिया क्योंकि ऐसेठौरोंपर बहुधा सोताहोकर बड़ी बहियाहोजाती है और जो उसमें बहने की शक्ति नहीं है तो उसकी यत्न करते हैं अर्थात् उसकोखोद के ठीककरलेते हैं पृथ्वी के नीचेके सोता और पहाड़ीगड़होंमें जिनमें लोन फिटकरी गुगुर अथवा बारूद होतीहै उनमें यहभेद है कि जाड़े के दिनों में पृथ्वी के नीचे पानी गरम होजाता है और गर्मी में शरद सो उसका कारण यह है कि गर्मी और शरदी दोनों एक दूसरे के विपरीति हैं एकही समय में एक

ठौर इकट्ठी नहींहोती इसलिये जाड़ों में जो पृथ्वीके ऊपर शरदी होती है तो गर्मी पृथ्वीके नीचे जारहतीहै तो जहांकहीं गन्धक की खानहोतीहै उसकी गर्मीसे पृथ्वीकी तरी सूखजाती है और पानी भी उसीसे गर्महुआ करताहै जो कदाचित् ऐसानहीं है और पानी को शरद वायुलगी तो अधिक शरदी के कारण पानी गाढ़ाहोजाता है तो वही पारा अथवा क़ैर अथवा नुफ्त होजाताहै और ये उसके बिभाग वायु और माटीके गुण बिभाग के कारण होजाते हैं इस-लिये अबकुछ अद्भुत कुआं और सोतोंकावर्णन वर्णमाला के अक्षरों के क्रमानुसार कियाजाता है॥

(सोताआज़ुरवायजान) तोहफ़तुलगरायबमें लिखाहै कि आज़ु-रवायजानमें एकऐसासोताहै जिसकापानी निकलकर पत्थरसमान कड़ाहोजाताहै लोग मिट्टीकेसमान उसकेबर्त्तन बनाकेपानीभरते हैं तो इस रीति से पत्थर के बर्त्तन बहुत जल्द तैयारहोजाते हैं॥

(सोताउर्दीबिहशत) उर्दीबिहशत नाम एक गावँ क़जवीन से तीनफ़रसख़ की दूरीपरहै वहां एकसोताहै जिसकापानी जो कोई पीवे तो बड़ा कराल जुलाबहोजाय बसन्तऋतु में बहुधा क़जवीन आदि शहरों के लोग जुलाव लेने के हेतु यहां इकट्ठे होते हैं और एकगिलास पानीपीके पेटका मल साफकरते हैं उसमें एक अपूर्व बात यहहै कि जो इसपानी को क़जवीनादि शहरों में लेजायँ तो उसमें वह गुण नहींरहताहै॥ अजायबुलमख़लूक़ात का ग्रन्थकार लिखताहै कि मैंने बहुधा क़जवीन के निवासियों से सुना है कि क़जवीन और इस सोता के बीच में एक नदी है जब आदमी उस सोता के पानी को लेकर उस नदी के पुलपर से जाते हैं तभी उसकागुण जातारहताहै॥

(सोतारावन्द) यहसोता सैस्तानकी धरतीमेंहै इसमें अपूर्व बात यहहै कि इसमें नरकुल पैदाहोता है सो जितना नरकुल पानी के भीतर रहता है उतना तो पत्थर का होताहै और जितना पानी के बाहिर रहताहै वह नरकुल रहताहै॥

है जहांसे सोता निकलाहै उसकापानी अतिही मीठा और स्वादिष्ट है और उसका रंग श्वेत है पीनेवाले को कुछ हानि नहीं करता है परन्तु जो उसको और ठौर लेजाओ तो जमके पत्थर होजाताहै ॥

(सोतादादाव) इससोता में एकघास ऐसीहोती है कि जो कोई वहां पानीपीने को जाय उससे लिपट जाती है और उसको लौटने नहींदेती और जितनाहीं अधिक छुड़ानाचाहै उतनाहीं अधिक और लिपटती जाती है परन्तु हां जो वह बिकल न होय थोड़ीदेर चुप साधे तो आपही आप छूटजाती है ॥

(दाराक़नामसोते) अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से शैख़-उमरइसलमी ने वर्णनकिया कि ये कई एक सोते एकही पहाड़ से निकले हैं कभी २ ऐसाहोताहै कि उसपहाड़ में अग्नि प्रज्वलित होतीहै और लूकों के रंग लाल पीले हरे और सफ़ेदहोते हैं और वह पानी दोहौजों में इकट्ठाहोता है उनमें से एक में तो पुरुषों के वास्ते और दूसरे में स्त्रियों के लिये इनसोतों में कफ़वाला मनुष्य जो स्नानकरै तो अच्छा है परन्तु जो कोई क्रम २ से धसे तब तो उसको अच्छाहोताहै और जो एकसंगकूदपड़े तो वह जलजाताहै॥

(सोतारासुलनाऊर) इसके निकट एकगावँ जरा नाम मूसल के पूरबओर है वहीं एकसोता फ़हारे के सदृश है उसका पानी अत्यु-त्तम उसमें कोकाबेली फूलती है इसगावँ के अन्नादि बहुधा उत्तर की ओर बिकने को आते हैं ॥

(सोताज़राबन्द) यह सोता आरमिनियांमें वहीराके निकट है यहसोता अतिलाभदायकहै जो पशुअथवा घायलमनुष्यइसमेंहोके निकले तो तत्काल अच्छा होजाताहै किसीप्रकारके घाव का दुःख नहींरहता बहुधालोगइसप्रतीतिकिये इस सोतामें दूरदूरसे आतेहैं॥

(सोताज़ार) यह सोता वहरमिनियां के निकट है वहरमिनियां और वैतलमुक़द्दस के बीच में तीन दिन की राह की दूरी है ज़ार हज़रतलूत की बेटी का नाम था उसकी मृत्यु यहांहींहुई इसलिये उसीके नामसे यहसोता प्रसिद्धहुआ ॥

(सोतासलवां) यहसोता बैतुलमुक़द्दस में है बहुधा लोग इसके किनारे उतरते हैं इब्नुलवशार ने लिखा है कि सलवां नाम एक मुहल्ला बैतुलमुक़द्दस में है यहां बाग़ बहुतहैं जो हज़रत उसमानने ईश्वर उसपै प्रसन्न हो कृष्णार्पण किये थे जो इस सोता का पानी किसी दुःखी अथवा शोचबश को पियावें तो तत्काल आनन्द और प्रसन्नचित्त होजाय॥

(सोतासमीरम) शीराज़ और अस्फ़हान के बीचमें एक बड़ागावँ है जहां सोतोंका अधिकत्व प्रसिद्ध है इसमें अपूर्व बात यह है कि जहां खेतों में टीड़ी गिरती है वहां इस सोता का पानी इस रीति से लाते हैं कि बर्त्तन को न तो पृथ्वीपर रक्खें और न पीठिफेर के देखें और उस बर्त्तनको टीड़ियोंके पास ऊंचेपर टांगदें तो तत्काल एक प्रकार के जीव सोदाई नाम हज़ारों आय के सब टीड़ियों को खाजाते हैं और यहबात कुछ झूंठनहींहै बरन अजायबुल्मख़्लूक़ात का ग्रन्थकार कहताहै कि मैंने अपने हाथसे पानी लेकर क़जवीन देशमें टीड़ियोंको दूरकिया है॥

(सोतास्याहसंग) तोहफ़तुलगरायब का लेखहै कि जरजान में एक संगस्याह नामक एक गावँ है और वहां एक टीला के ऊपर सोताहै जिसका पानी मनुष्यों के ख़र्च में आता है और जिस राह से उससोता को जातेहैं उसराह में कीड़े बहुतहैं सो जो कदाचित् किसीकीड़ापर पावँपरगया तो उस सोताका पानी कड़ुआहोजाता है एक अद्भुत बात वहांकी यहसुननेमें आईहै कि उसके आसपास की स्त्रियां जब उस सोताकापानी लाना चाहतीहैं तो तीस अथवा चालीस स्त्री इकट्ठीहोके एक मनुष्य को आगे भेजतीहैं जिसमें वहं मनुष्य झाड़ूसे बहार के कीड़ा राहके साफ़करदे और वे स्त्री पंक्ति बांधके आगेपीछे चलतीहैं और पानीभरके फिर उसीरीतिसे लौट-तीहैं और जो धोखेसे भी पावँ किसी स्त्री का किसी कीड़ापर पर जाय तो सम्पूर्ण स्त्रियों का पानी कड़ुआ होजाय फिर वह पानी फेंक के दोबारा लाना पड़ताहै॥

(सोताशीरगीरां) शीरगीरां नाम एकगावँका है दो राहे के पास मरागां के आगे दो सोते हैं जिनमें से पानी निकल के उबलता है और इनदोनों सोतों के बीचमें एकगजका बीचहै॥ इनदोनों सोतों में से एककापानी तो अतिशरद और दूसरे का गर्म्म है और यह समाचार हुस्नमरागी के मुखसे सुना॥

(सोतासक़लवा) सक़लवा नाम पश्चिम के समुद्र में अतिबड़ा एकटापू है यहां गन्धकी सोते बहुत हैं जिनसे अग्नि भड़काकरती है और रातको और भी अधिक होती है यहांतक कि दूरदूर तक उसके उजाले राहचलेजातेहैं जो कोई उस आग को वहांसलेजाय तो तत्काल बुझिजाय॥

(सोतासवारज) यह सोता हज्जाज़ और यमन के बीच एक बिकट जंगल में है जहां किसीको पानीकी इच्छा नहींहै इब्राहीम बिनइसहाक़की कहावतहै कि एकबार यमनदेशीय हज़रतरसाल तमाव के दर्शनों को चले तो दैवयोग से राह भूलगये और तीन दिनतक बिना अन्नजल फिराकिये अन्तको मारेप्यास के प्राणोंकी आशाटूटी तो साथियों में से एकको दोबैतें (चौपाई) उमरायअल-कतीस की बनाईभई सवारज सोता के छिपेरहने के विषयमें याद थीं सो पढ़नेलगा इतने में अकस्मात एक शत्रु सवार दृष्टि आया उसने इनलोगों से पूछा कि ये शेरें किसकी बनाईभई हैं उन्होंने उत्तर दिया कि उमरायअलकतीस की उसने यह सुन के साक्षी दी और सोताका पताबताया निदान उसपते से एक सोता रमणीक पाया वहां सबोंने जलपानकिया और बहुतसा अपनेसाथ लैलिया वहांसे हज़रत के पास पहुंच सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णनकर कहने लगे कि उमराय अलक़तीसकी दोशेरोंने हमसबों के प्राणबचाये इस पै हज़रतने कहा कि उमरायअलकतीस संसारमें तो बहुतप्रसिद्धहुआ तो क्या मरने पै उसका नामहीं मिटिजायगा अन्तसमय जब वह ईश्वर के सन्मुख आवेगा तो अग्निसे जलताहुआ एकतख्ता शेरों का उसके साथहोगा और उनशेरों का अर्थयहहै कि यद्यपि पानी

इस सोता में अतिस्वच्छ और स्वादिष्ट है परन्तु राह उसपै जाने की ऐसी भ्रमित और कण्टक है कि वहां पहुंचना अति कठिन है॥

(सोतातवरिया) तवरिया की धरती में एकगावँ है वहां सात सोते लगातार हैं ये सोते सातवर्ष तक तो बहते हैं और सातवर्ष तक सूखेरहते हैं सदा यहीरीति रहती है॥

(सोताअब्दुल्लाबाद) हमदां और कजवीन के बीच एकअब्दुल्लाबाद गावँ है वहां एकगड़हा है वहींसोताहै जिसकेपानी निकलने में बड़ी गर्मीहोतीहै एक मरद के क़दकी बराबर ऊंचा उठताहै जो पानी के ऊपर मुर्गा का अण्डारखदेयँ तो वहअण्डा भी न टूटे और पानी की गर्मीसे पकजाता है और उस सोता के पास एक हौज़ है उसमें उसकापानी आके इकट्ठा होताहै वहां सकल पंथ के मनुष्य जातेहैं और उससोता में स्नानकरके आरोग्य होते हैं॥

(सोताउकाब) यह पहाड़ हिन्दुस्तान में है तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार लिखता है कि जब उकाब वृद्धहोजाता है तब उसके बच्चे उसको उठाकर उस सोतापर बैठारदेते हैं और उसको स्नान कराके धूपमें बैठारदेतेहैं इसकर्म्मसे उस वृद्ध उकाब के पुराने पंख गिरजातेहैं और नयेसिरे से पंख निकलते हैं और नयेसिरे से युवा अवस्था होतीहै पर और बाल नये निकलते हैं॥

(सोताग़रनातिया) ग़रनातिया एक शहर है इन्दलस देशमेंहै अबूहामिद इन्दलसी ने लिखाहै कि ग़रनातिया में एक कनेसा है जहां जैतून के वृक्षलगे हैं सो इसके दर्शनोंको इन्दलसके निवासी आया करते हैं और बर्षमें जो दिन इसके दर्शनोंके लिये नियत हैं उसदिन उससोतामें पानी बहुत होजाताहै और जैतून में फूलफल प्रकट होते हैं और उसीदिन जैतून बढ़कर काला होजाताहै उस दिन जो कोई इस सोता से पानी अथवा जैतून लेजाय तो सब प्रकार के रोगसे आरोग्य होजाय ग्रन्थकार से फ़क़ीह अब्दुलसईद बिन अब्दुल रहमन इन्दलसीने वर्णन किया कि यह सोता अकूरा मेंहै और अहमद बिनउमरूल अजरीने कहा कि यह सोता लोर-

कामेंहै और अबूहामिद कहता है कि यह सोताग़रनातामें है परन्तु यह सम्पूर्ण ठौर इन्दलसहीमें है ॥

(सोताग़रना) ग़ नाके पास एक ऐसा सोताहै कि जो उसमें कोई उच्छिष्टबस्तु छोड़ें तो तत्काल और का औरही रंगदृष्टि आने लगै मेघ बरफ़ पत्थर और बायुके झकोरा आनेलगें और जबतक वह उच्छिष्ट उसमें से दूर न कीजावे तबतक यथापूर्बक न होगा इसी बातमें बातहै कि बादशाह सुबुक्तगीं ने ग़रनाको जीतने का अनुमान किया तो जब यह बादशाहग़रनाको चलनेलगता तो तभी यहां वालेलोग उस सोतामें कोई भ्रष्ट बस्तु छोड़देयँ जिसके कारण बायु मेघ गर्जन, बिजली आदि उत्पात होने लगें और बादशाही सेना इसभयको सन्मुख न होनेके कारण फिर लौटजाता अन्तको बादशाह पै इसका कारण बिदित होगया तो बादशाह ने ऊपरही ऊपर कुछ सेना दे आदमी भेजि उस सोता की रक्षाकरी तिस उपरांत आप दलसाज ग़रना पै चढ़ा इस रीतिसे उसने इसदेशको आधीन किया ॥

(सोताग़राव) यह सोता रूमदेशमेंहै बहुतेरे कहते हैं कि इस सोता में एक बार स्नान करनेसे बर्ष पर्य्यन्त शरीर में रोग नहीं होता सम्पूर्ण बर्ष आनन्द पूर्बक बीतता है ॥

(सोताफ़रावर) खुरासानमें एक गांव फ़रावर नामहै बहुतों का वाक्य है कि इस सोतामें स्नान करने से सब प्रकार के रोग जाते रहते हैं ॥

(सोताक़ोतूर) यह क़िला आज़ुरबायजान में है शरीफ़महम्मद बिनज़ुलफ़िक़ारउलबीने अजायबुल्मख़लूक़ातके ग्रन्थकर्त्ता से वर्णन किया कि इसक़िलेके निकट कुछ सोते हैं जिनका पानी अतिहीगर्म है जो लोग किसी असाध्यरोग में फसेहों उनको इनसोतोंमें स्नान कराना उपयोगी है ॥

(सोताकंका) यह सोता आज़ुरबायजान में है महम्मदबिनज़ुलफ़िक़ार ने अजायबुल्मख़लूक़ात के ग्रन्थकार से कहा कि इस बड़े

सोतामें नानाप्रकारके गुणहैं अर्थात् गर्मीमें तो सरद और सरदी में गर्मपानी रहता है॥

(सोतामुशक़क़) मुशक़क़ नाम हिज्जाज़ में एक जंगलहै इब्न-इसहाक़ की वाक्यहै कि मुशक़क़ और हिज्जाज़में एक छोटासोता है जिससे इतनापानी निकलताहै कि जिसमें एक अथवा दो बड़ी हद तीन सवार पानी पीसक्ते हैं हज़रतमहम्मदमुस्तफ़ासलल्लिल्ला अलेहोसल्लम ने तबूककी लड़ाई में कहा कि जबतक हम सबलोग न पहुंचें तबतक कोई इस सोता का पानी न पीवे परन्तु कुछ दुष्ट लोगोंने आज्ञाको भंगकर वहांजाय सबपानीपीलिया जब हज़रत रसूलअल्लाह वहां पहुंचे तो पानी न पाया तब हज़रतने कहा कि देखो हमने पानी पीने को नहीं कहाथा न तिस उपरान्त प्रबोध किया और अपना पवित्र हाथ उस सोता के पानी पर रखकर ईश्वर से प्रार्थना की तो पृथ्वी फटगई और एकशब्द बादल की गर्जन के सदृश उसकुआंमेंहुआ और पानी बहनेलगा तब सम्पूर्ण सेना ने पशुओं सहित आनन्द से जल पानकिया तिस उपरान्त हज़रत ने कहा कि जो तुम जीवो अथवा तुममें से कोई जीवे तो इसजंगलकाहाल सुनेगा और हज़रतकी सिद्धाई का यह हालथा कि आंखों के आगे और फिर पीठ का सब हाल बराबरथा फिर जैसा हज़रत ने भाषा वैसाहीहुआ॥

(सोतामनकूर) अबूउलरेहांख़्वारज़िमी ने अपनीकृत किताब आसारबाक़ियामें लिखाहै कि कैमालदेशमें एकपहाड़ मनकूरनाम है उसपहाड़पै एक सोताहै जिसमें एकबीतापानीहै जो उसमेंएक सेना पानीपीवे तोभी एकअंगुलभर पानी कमतीहोना संदिग्ध है और उससोताके पास एक पत्थरहै तिसपै किसीमनुष्यका स्वरूप अंकृत है॥ और हाथोंकी हथेली और दोनों संघाके चिह्न तो ऐसे प्रकटहैं कि मानो कोईमनुष्य दण्डवत् कररहाहै और एक गदहा के सुमोंके भी चिह्न बने हैं जब अरबकेलोग यहां आते हैं तो इन चिह्नों को दण्डवत् करते हैं॥

(सोतामीनाहुशाम) मीनाहुशाम नाम तवरिया में एक गांव है सालवी ने एक वार्त्ता वर्णन की है कि इसगांव में एक सोताहै जो सातवर्ष तक बह फिर सातवर्ष तक बन्दहोजाता है॥

(सोतानार) अक़हर और अनताकियाके बीच में एक सोताहै एक देखन हारेने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से बर्णन किया कि जो कोई इस सोतामें नरकुल को डाले तो तत्काल पानी सूख जाताहै अलाउद्दीन बादशाह जब इस सोता पर आया तो लोगों से यहांका वृतान्त पूछा तब उसने आश्चर्य करके जो इसकी परीक्षा करी तो ठीकपाया॥

(सोतानातूळ) नातूल नाम मिश्र देशमें एक गांवहै और वहां एक गड़हाहै वहांसे पानी निकलता है और जो पानीकी छींटैंउड़ के चारोंओर परती हैं उससे चूहे उत्पन्न होते हैं बहुत से इसबात को अपनी आंखोंकी देखी बर्णन करतेहैं कि यहां माटीमें अद्भुतगुण है कि उस सोतासे जो एक ओरको जो छींटैं परतीहैं वह तो तत्काल चूहे बनजातेहैं और दूसरी ओर माटीकीमाटी रहती है॥

(सोतानिहावन्द) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि दमावन्दके निकट पहाड़ों में पहाड़ी नदीसे एक सोता निकला है जिस किसीको पानी सींचनेकी आवश्यकता होतीहै तो वह वहां जाके कहताहै कि मुझे पानीकी आवश्यकताहै तिस उपरांत अपनी खेतीकी ओर को जाता है और पानी उसके पीछे २ दौड़ताहै जब उसका खेत सींचजाताहै तब पुकारके कहता है कि बस २ अबमेरी अभिलाष पूरीहुई उस समय वह पानी आपही आप बन्दहोजाताहै अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे हमदा के वृद्ध पुरुषने जो सचाईमें एक उपमाथा कहा कि भूतकाल में बादशाह सैफ़ुद्दीन अल्तमशबलाद और जवालका हाकिमथा और यह प्रदेश भी उसीके आधीनरहा करताथा सो एक बार अपनी सेना सहित इस ओरको निकला उसीके साथमें बर्णन करने वाला भी था उस समय इस पहाड़ के पास आ पहुंचे इतनेमें एक दिहाती

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें अनोखीअपूर्व वस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पीछे घोड़ा किया ॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर उसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े बेगसे पानी बहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबमेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोंकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखों से देखा है ॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके बेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका बेगदेख घबराके फिर बन्द करादिया क्योंकि इसके बेगसे बूड़ाआने काबड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी नदियां निकली हैं और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी इससे बचताहै वह जाबूरमें गिरकर दजलामें जा गिरताहै ॥

(सोताहम) तोहफ़तुलग़रायबके ग्रन्थकारने लिखाहै कि जब जवना होकर जरजानकी ओर चलो तो एक पहाड़ दिखाई देताहै और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा होता है और उस ताल में एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह रातके समय ऐसा मालूम होताहै कि मानों वह वृक्ष तालमें घूमताहै और कभी चार२ महीनातक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका हाल

नहीं मालूम कि कहां से वह वृक्ष प्रकट होताहै और कहां छिपजाता है बहुधा जब वर्षा अधिक होती है तब यह वृक्ष बहुतजल्द प्रकट होताहै बहुधा लोगोंने इस वृक्षकाहाल जाननेके लिये इसवृक्ष को रस्सोंसे पुष्टकरके पहाड़ोंमें बांधा परन्तु तिसपरभी जब इसकेछिपने का समय आया तो प्रातःकाल को जो देखा तो रस्से तो टूटेपरे हैं और वृक्ष नहीं है अन्तको इस आश्चर्यित बात के समाचार राफ़ा बिन हज़ीना के कानतक पहुंचे जो उस समय जरजान और खुरासानका हाकिमथा उसने कुछलोग उस वृक्ष के छिपने और प्रकट होनेके समाचार जाननेके हेतु नियत किये और इस रक्षाकेलिये चार मनुष्य नियत किये कि निशिबासर इसको देखा करें परन्तु हरीच्छासे जब उसके छिपनेका समय निकट आया तो पहरुओंको कहीं जानेकी आवश्यकता आयलगी निदान उस ओर उनकाजाना था कि इस ओर वृक्ष अलक्ष होगया जब यह समाचार बादशाह को पहुंचा तब उसकीसेनामें एक डूबाकोफ़ाकारहने वाला था उसको बादशाहने आज्ञादी कि वहां जाके ढूंढ़कमार अभिलाष के मोतीको निकाले अर्थात् उस वृक्षका पतालगावे कि यह वृक्ष कहां गया उस गोताख़ोरने बहुतेरी बुड्डीलगाई पेंदीकी माटी ला दिखाई परन्तु उस वृक्षकी थाह न पाई इस सोताका नाम चश्मा हम भी कहतेहैं और यह सोता नहरकी ओरहै और इन दोनों नदियोंके बीचमें एक दिनकी राहकी दूरीहै ॥

(सोतादशलिया) दशलिया नाम एक गांव मदीनाके आधीन आज़ुरबायजानके निकट है यहां एक सोताहै उसका पानी जोपीवे तत्काल उसको जुलाब होजाय और ऐसा कराल जुलाब हो कि जो वह किसी चीज़के दानेखाके पानी पीवे तो वे भी उसके पेटसे तत्काल गिरेंगे ॥

(सोतायासीजमन) अरज़नरूम और अखलातके बीचमें एक गांव यासीजमन नामहै वहां एक सोताहै जहां से बड़ेबेग से पानी बहताहै और उसपानीकाबेग ऐसाहै कि दूरसे उसकेपानीकाशब्द

सुनाई देताहै और जो कोईजीव उसके निकटजाय तो तत्कालगिर जाय इसी कारण पशू और जीवोंकी हड्डियां इसके चारोंओर दृष्टि आती हैं और इसीकारण पहरुआ नियतहैं जो लोगोंको उस ओर जानेसे रोकते हैं ॥

(सोताईल) क़जबीन के गांवोंमें से एक गांवका नाम ईल है यहां एक पहाड़है उसके दर्रासे एक सोता निकलाहै जिसका पानी अति गरम निकल उसीके निकट एक हौज़में इकट्ठा होताहै इसके पानी में यह गुणहै कि इसमें कुष्ठी लँगड़े लखजून और नक़रस रोगवालों और खाजवालों को इसके पानीमें स्नान कराते हैं और पान कराते हैं तो वे आरोग्य होतेहैं इसका नाम चंचमाईलकर्म्मा है ईश्वरकी दयासे सोतोंका वृत्तान्त तो समाप्तहुआ अब कुओं का हाल भी वर्णमालाके अक्षरानुक्रमणि अनुसार ईश्वरही के भरोसें वर्णन करताहूं ॥

कुओंका व्याख्यान ॥

(कुआं अनवद) इस कुआं के बिषय में कालीना लोगों ने लिखाहै कि जो कोई इस कुआंका पानी पिये वह अहमक़ अर्थात् दुर्बुद्धि होजाय जो कोई मनुष्य उसदेश में कुछ बर्जित अथवा अति अनुचित कामकरे तो वहां के निवासी उसको इस उपमासे धिक्कार-तेहैं कि हम भैयातेरी बराबरी नहीं करते क्योंकि तैंने अनवदनाम कुआंका पानी पियाहै ॥

(कुआंअरीस) यह कुआं मदीनामेंहै एक बार इसकुआंमें हज़-रत उसमान तृतीय खलीफ़ाके हाथसे हज़रत रिसालतमाव अर्थात् हज़रत महम्मदकी दीभई अंगूठी गिरपरी तो उसको बहुतेरा ढूंढा परन्तु अंगूठी न मिली तब लोगोंने कहा कि इनके हाथ से इस कुआंमें अंगूठी गिरगई सो न मिलनेका यह कारणहै कि जोशेखों का उचित धर्म्महै उसके बिपरीत अपनी जीविका करते थे ॥

(कुआंबाबुल) आमशने लिखाहै कि मजाहिद नाम एकमनुष्य था उसकी यह प्रकृति पड़गई थी कि जिस अद्भुत वस्तुका नाम

सुनता तो जब तक उसको देख न लेय तब तक उसको चैन नहीं परता था निदान इसी प्रकृति अनुसार मजाहिद बाबुल को गया वहां हज्जाजसे मिला उसने इसका मनोरथ पूछा इसने अपनी अभिलाष प्रकट करी कि मुझे हारूत और मारूतके देखनेकी लालसा है तब हज्जाजने पिसर जालूतसे कहा उसने किसी यहूदीको आज्ञा दी कि इस पुरुषको हारूत और मारूतके पासलेजा अन्तको उसने मजाहिदको लेके कुआंके किनारे जाय खड़ाकिया और कुआंकेमुंह से पत्थरकी शिला टारके कहा कि अब कुआंकेभीतर जाके उनको देख आवो परन्तु इस बीचमें ईश्वरका नाम मुखसे न कहना निदान यहूदी और मजाहिद दोनों कुआं में उतरे और जाते जाते हारूत और मारूत दोनों दृष्टिपरे तो क्या देखतेहैं कि मानों दो पहाड़ मनुष्याकृत लटके हैं और येड़ीसे जांघोंतक लोहेकी ज़ंजीर में जकड़े हुये हैं मजाहिदने यह तमाशा देख ईश्वर स्वप्रकाशीका स्मरण किया कि बस नाम सुनतेही हारूत और मारूतने चाहा कि बलकरके ज़ंजीरों को तोड़डालें यह दशा देख यहूदी और मजाहिद दोनोंभागे जब उनकी घबड़ाहट मिटी तो यहूदीने मजाहिदसेकहा कि क्योंतुम हमारी शिक्षाको भूलगये देखा कि इसनामके लेतेही उनको कितनी घबड़ाहट हुई और हमारे और तुम्हारे प्राणजाने में कुछ सन्देहथा अन्तको दोनों आदमी वहांसे बाहिर निकले ॥ तसवीर यह है ॥

तसवीर नम्बर १७७

(कुआंबदर) यह कुआं मकर और मदीनाके बीचमें उसठौर है जहां हज़रत महम्मदने क़ुरेशके काफ़िरोंसे लड़ाईकीथी औरमशरकोंको मार उस कुआं में गिरादियाथा तब हज़रत ने उसकुआंकी जगत पर आयके कहा कि हे मशरको तुमको अब निश्चय हुआ उस बस्तुका जिसके बिषयमें तुम्हारे ईश्वरने तुमसे वादा कियाथा तब सहावाने पूछा कि हे हज़रत क्या ये लोग हमारी बातसुनते होंगे इसका हज़रतने उत्तर दिया कि उनमें तुमसे अधिक सुननेकी

शक्कि है एकबार्त्ता यहभी है लिखीहै कि सहावा में से कोई महाशय उसओर को गया तो देखा कि एकसंग उसकुआं से निकलके एक मनुष्य भागा तो एकमनुष्य कोड़ालियेहुये उसकुआंसेनिकला और प्रथमपुरुषको मारताहुआ फिर कुआंमें लेगया ॥

(कुआंवरहूत) यहकुआं हज़रमूतकेपासहै यह वहकुआंहै जिसके बिषयमें हज़रतमहम्मदमुस्तफा ने कहाहै कि इसकुआंमें शत्रु और काफ़िरोंके प्राण भरे हैं और यहकुआं एक जंगलमें है हज़रतअमी-रुल्मोमिनीन की कहावतहै कि महाशत्रुओंकाजंगल ईश्वरकेनिकट वरहूत नाम कुआं है और इसजंगलमें एककुआं कालेपानीकाहै उस में अतिदुर्गंध है इसमें काफ़िरों (नास्तीकों) के निवास की ठौरहै असमाई कहताहै कि मुझसे हज़रमोती नाम एक मनुष्यनेकहा कि जबइसकुआंमेंसे अतिदुर्गंधआतीहै तो पहिचानहै कि कोईकाफ़िरों का सरदार मरनेवाला है यहभी कहावतहै कि कोईमनुष्य रातको इस जंगल में आया उसने रातभर (यादोमा) शब्दकहते हुये सुना और वहशब्द इसकुआं में से निकलताथा उसने यहबात किसीवि-द्वान् से कही उस विद्वान् ने उत्तरदिया कि हां सत्य है उसमें जो काफ़िरों के प्राणवायु रहते हैं उनपर जो गण नियत है उसकानाम दोमाहै एक और मनुष्यकोकहावतहै कि मैं एकदिनवरहूतकेजंगल में जानिकला तो उस समय उसके साथ एक गर्भिणी स्त्री भी थी वहां भानूदय के समय अकस्मात् एक ऐसा कठिन भयानक शब्द उसीजंगलमेंउत्पन्नहुआ कि जिसशब्दके दलकासे उसस्त्रीकागर्भ पतन होगया ॥

(कुआंवजाता) यह कुआं मदीनामें है हदीसने लिखाहै एकबार हज़रतरसूलअल्लाह इसकुआंपर आये डोलसे पानी निकालके वज़ू अर्थात् हाथमुंह धोये और जो शेषजलबचा वह उसीकुआं में गिरा दिया और जो मुख से लार टपकी सोभी उसीकुआं में छोड़ा तिस उपरान्त उसका पानी पिया इसकुआं के प्रभावके बिषयमें लिखा है कि जो कोई बीमारहोता तो हज़रत उसको उस कुआं के जलमें

स्नानकरने की आज्ञादेते थे और उनके आशीर्वादसे उसको आरोग्यता होती थी और इसविषय में हज़रत अबूबकरसद्दीक़ ने कहा हैं कि हम बीमारोंको तीनदिनवज़ात कुआंकेपानी में स्नान कराते हैं वह आरोग्य होजाते हैं ॥

(कुआंबूक़ैर) अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे इन्दलस के कुछ फ़क़ीहोने अर्थात् कुरानादि ग्रन्थ जानने हारों ने कहा कि इसकुआं में से ऐसवेग से बायु निकलती है कि जो बस्त्रादि वस्तु इसमें छोड़ो तो बाहर निकलआती है भीतर नहीं रहती है॥

(कुआंवेज़न) यहकुआं दरबन्दके निकटहै यह वहीकुआंहै जिस में अफरासिआव ने वेज़नबिन गोदरज़ को क़ैदकियाथा और उस के मुखपर बड़ाभारी पत्थर रखदियाथा अन्तको रात्रीसमय रुस्तम वहांके पहरुओंको मारके वेज़नको बन्दिसेछुड़ाके ईरान को लेगया था यह इतिहास बहुत प्रसिद्ध है ॥

(कुआंक़ैसूर) यहकुआं हिन्दुस्तान के एकटापू में है जहां कपूर होताहै और वहांका कैसूरी कपूर प्रसिद्ध है इसकुआं में एकप्रकार की मछलीहै जब उसको बाहरनिकालो तो संगखारा होजाती है॥

(कुआंखन्दक़) मराग़ानाम देश में एक खन्दक़नाम गावँ है इस कुआंसे कबूतर बहुत निकला करतेहैं इसकारण लोग इसकुआं के मुख पै जालफैला के कबूतरों को पकरा करते हैं इसकुयें की गहराई की थाह आजतक किसीको नहींमिली मराग़ा के कुछ सुजनों के द्वारा अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकारको मालूमहुआ कि उन लोगोंने उसकुआंकी थाहलेने को किसी२मनुष्यको नीचेउताराथा वहां गोताखोर पांचसौगज़तक नीचेचलेगये वहांसे लौटके उन्होंने कहा कि वहां कोई कबूतर नहींहै हां बीचमें बायु बड़ेबेगसे चलती है और तिस उपरान्त कुछ प्रकाश सा दृष्टिआता है जहां बहुधा पशु मुरदा दृष्टिआते हैं ॥

(कुआंदमाबन्द) दमाबन्दके पहाड़ों में यहकुआंअतिही गहराहै

दिनके समयमें यहांसे धुआं निकला करताहै और रात को आग प्रज्वलित रहती है इस कुआं का यह प्रभाव है कि जो वस्तु इस कुआंमें छोड़ीजाय वह घरीभर तो भीतररहती है और फिर बाहर निकल आती है॥

(कुआंदरवां) इसका नाम चाहकमली भीहै इब्नअब्बास प्रसन्न हो ईश्वर उसपर कहताहै कि एक बार हज़रत रिसाल तमाव पर जादू कियागया और आप कठिन बीमारपरे उसीबीमारीने हज़रत को कुछ नींदसी आई तो क्या देखता कि एकफरिस्ता तो शिरहाने खड़ाहै और दूसरा पांयतकी ओर खड़ाहै तब पांयतवालेने पूछाकि अब कौनसी दशाहुई तब उसने उत्तरदिया कि अब जादू भरपूर है तब फिर उसने पूछा कि किसने जादूकिया तो उसनेकहा कि लवी दविन आसिम यहूदी ने यह काम कियाहै तब उसने पूछा कि कहां यह काम कियागया है तब उसने फिर उत्तरदिया कि चाहकमली में पत्थरके नीचे निदान जब हज़रतजागे तो यह सब वार्त्ता याद रही तब हज़रत अमीरुल मोमिनीन औरसहावानुस कुआंपर आये तो सब पानी उसका निकाल डाला तो एक पत्थर दृष्टिआया जब उसे उठाया तो एकबाल उसके नीचे था जिसमें ग्यारहगिरहें लगी थीं तो इनलोगोंने उसको जलादिया तो तत्-कालहज़रत आरोग्य होगये तब ईश्वर ने उसके बिषय में ग्यारह आयतें कुरानमें भेजीं॥

(कुआंज़मज़म) यह कुआं शुभ प्रसिद्धहै इस कुआंकी गहराई ऊपरसे पेंदीतक चालीस गज़है और इसकुआंसे सरकोह तक जहां कि यह कुआं खोदा गयाहै ग्यारहगज़है ज़मज़मपर एक क़वाहरम के बीच में वावतवाफके पास काबाके दरवाज़े के बराबर है हदीस (शास्त्र) में लिखाहै कि जबवह हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाहज़रत इस्माईल और उसकी माता हाज़िरा को कावामें अनाथ छोड़के चलने लगे तब हाज़िराने कहा कि यहांमुझे और मेरे बेटेको किस के भरोसे पै छोड़जातेहो इसपै हज़रत इब्राहीमने उत्तर दिया कि

ईश्वरके तब हाजिराने हरीइच्छाकहकर इस्माईलको अपनेपासबैठार लिया और जितनापानीपासथा जबतकरहा तबतकहज़रतइस्माईल को प्याया और जब पानी न रहा और हज़रत इस्माईल अधिक तृषितहुये तो माताकी दया न रहागया अन्तको हज़रतइस्माईल को एकठौर आड़में बैठालके आप पानीकीटोहमें सफ़ाकीओरचली॥ और वहां जाकर बहुतकुछ ढूंढ़ा पर पानी न पाया और न कोई मनुष्य दिखाईदिया फिर वहवहांसे मरवेकीओर आई वहांभी पानी ही ढूंढ़रही थीं कि अकस्मात् किसी दुःखदायी पशुका शब्दसुनाई दिया उससमय बच्चेकी प्रीति से उसआवाज़ से डरकर तुरन्त ही हज़रत इस्माईल की ओरआईं यहां आकर क्या देखतीहैं कि उनके निकट जलकासोता चलताहै तो झटपट हाजिरा ने थोड़ीसी मिट्टी लेकरपानी के गिर्द मुण्डेरबांधदी कि इधर उधरबह न जाय कहतेहैं कि यह चश्मा हज़रत इस्माईलकी गर्दनके नीचेसे जारीहुआ यदि हाजिरा मिट्टीसे चारोंओरकी राह बन्द नकरतीं तो यहकुआं जमज़मनामी सोते की तरहपर बह निकलता—हज़रत पैग़म्बर साहब का वचनहै कि अब्दुलमुत्तलिब किसीमकान में सोते थे अकस्मात् उन्हेंस्वप्नमें आज्ञाहुई कि कुआं ज़मज़म खोदो उन्होंनेकहा कि ज़मज़म क्या वस्तुहै उत्तर मिला कि तुम ऐसे कामको मत बिगाड़ो क्योंकि उसकुवेंसे हज्जाजके काफ़ले तृप्तहोंगे और वहकुआं विष्टा और लहू आदिसेपटापड़ा हुआहै जहांपरकव्वा अपनीचोंचसे खोदरहाहै तो अब्दुल मुतलिब जागकर अपने हरव नामी पुत्र सहित चले क्या देखते हैं कि एक कव्वा अपनी चोंच से पृथ्वी खोदरहा है अब्दुल मुत्तलिब ने उसीस्थान पर खोदना शुरूकिया तो कुआं प्रकटहुआ और पानी दिखाईदिया सो क़रीश ने उनसेदावाकिया और अब्दुल मुत्तलिब से कहा कि यहकुआं हमारे पिता इस्माईल और हमारी माता हाजिराका है और हमारा हक़ इसपर अच्छीतरह से सूचित है सो इसविवाद के निर्णयके लिये एकप्रश्न कहनेवाले से आज्ञाकी और उसकीओरचले राहमें जो पानी साथथा वह ख़र्च होगया और

प्यास ने ज़ोरकिया यहांतक कि सबकी ज़बान न निकलपड़ी उस समय अब्दुलमुत्तलिब के मोज़े के नीचे से सोता प्रकट हुआ और उसने उनलोगों की प्यासबुझाई तो लोगोंने मानलिया कि वास्तव में ईश्वर ने उस कुयें को आप के हिस्से के लिये पैदा किया है हम लोगोंका कुछ हक़नहीं पहुंचता और वास्तव में तुझे जिसकी ओर से इसजङ्गल में पानीमिला उसीने कुआं ज़मज़म भी तेरेही हिस्से में प्रकट कियाहै और वहलोग हारमानकर चलेगये और अब्दुल मुत्तलिब ने कुआं ज़मज़म खोदना शुरूकिया और उसकुयें में से सोने की ढालें और कलईकी तलवारें जो उनके दादा ने गाड़ी थीं उनको मिलीं और यहशस्त्र उससमय गाड़ेगये थे जब आप मक्के से चलेथे सो उन्होंने इनवस्तुओं से अब्दुलमुत्तलिब ने दरवाज़ा काबे का और हज्ज का जलस्थान बनाया इसका पानी तृषित और क्षुधित को तृप्त करताहै॥

(कुआं साबक़) यह कोरे अरजां में है यहां के बासी कहाकरते हैं कि इस कुयें की गहराई की परीक्षा लीगई है पर उसकी पेंदी तक न पहुंचसके और क़स्बे के रहनेवालों के प्रयोजन के अनुसार पानीजारी रहता है॥

(कुआंअरवा) यहअफ़ीकमदीनियांमें है और ज़बीरकेपुत्र अरवा से सम्बन्ध रखता है इब्न इलज़बीर ने कहाहै कि जोकोईमदीना आदिसे निकलकरअफ़ीक़ज़वादे की ओर जाता है अरवा के पानी को साथ लाताहैबहुत मनुष्य इसके जलको पवित्र समझकर लेजा-याकरतेहैं किसीयात्रीने कहा कि हमने एकमनुष्यकोदेखा कि उसने यहांसे शीशेमें जल भरलिया और हारूंरशीदकी सेवामें सौग़ातकी रीतिपरलेगया इसकुवेंके जलमें यह गुणहै कि गर्मीमें ठंढा और सर्दीमें गरम और अंधेरी रातमें चिराग़की सूरतहोजाताहै कुआं फरस यह पवित्रकुआं मदीनेमेंहै हज़रतपैग़म्बरसाहब इसकुयेंकी बहुतप्रशंसा किया करते थे और इस कुयेंको उत्तम जानते थे इसमें हज़रत ने अपने मुंहकी लार छोड़ीथी कहतेहैं कि हज़रत ने इस कुयेंके लिये

कहाहै कि यह कुआं स्वर्ग के सोतोंमेंसेहै और इब्नअमरने हज़रत से एक कथा वर्णनकी है कि एक बर वे इस कुयें की जगतपर बैठे थे कहा कि मैंने एक रात्रिको स्वप्नमें देखाथा कि मैं एक सोतेपर जो स्वर्गके सोतोंमेंसे है बैठाहूं वहसोता यहीकुआंहै—कुआंक़िरया अब्दुलरहमान—यह फ़ारसमेंहै इसकी चौड़ान मनुष्य के डील के बराबर है और लम्बाई बरसभर की राह और बिलकुल सूखा है वर्षभरमें एक ऐसा समय आताहै कि इस सोतेसे पानी उबलताहै और इस अधिकतासे निकलताहै कि उस समय लोग इस कुयेंसे खेती आदिकोसींचते हैं—कुआं कल्बहलबके देशोंमें से एक मौज़े परहै जिस किसीको बावले कुत्तेने काटाहो जो वह इस कुयें का पानी पिये तो अच्छा होजावे और हलबके कई रहनेवालोंने कहा है जो चालीस दिन बीतने के पीछे पियेगा कभी आरोग्य न होगा लोग वर्णन करतेहैं कि तीन मनुष्यों को बौरहे कुत्तने काटाथा दो मनुष्य तो चालीस दिन बीतने के पहले इस कुयेंके जलसे आराम पागये और तीसरा मनुष्य जिसको चालीस दिन व्यतीत होगये थेमरगया—कुआं मतरिया—मतरिया एक मौज़ा मिस्र देशमें है और उस गांवमें एक स्थानहै जहांबलसांकावृक्षहै इस कुयेंमें पानी पीतेहैं कहतेहैं कि मरियमके पुत्र मसीहने इस कुयेंमें स्नान किया है और जिस देशमें बलसां का वृक्षउगताहै उसके चारों ओर चार दीवारी बनाई गईहैं इस कुयेंका जल अति मिष्ठहै और कुछ उसमें चिकनापन भी है एकबेर काबुलके बादशाहने अपने पितामुमलिक आदिलसेआज्ञामांगी कि बलसांकेवृक्षको और ज़मीनमेंबोयेंउसने आज्ञा देदी और रुपया बहुत ख़र्च किया पर कुछ लाभ न हुआ फिर आज्ञा मांगी कि कुयें मतरियेसे जल लाकर उस वृक्षकोसींचें जब उसनेआज्ञादी और उसकेजलसेसींचा तो बलसांकावृक्षउत्पन्न हुआ और प्रकटहोकि मिस्र देशकेसिवा और कहीं बलसांका वृक्ष नहींहै परन्तु जब इस पानीसे सींचे तो और जगहभीपैदाहो कुयें नैशापुरके—इन कुओंमें फ़ीरोज़ेकीखानेंबहुतहैं परन्तुअबउनमेंबिच्छु-

ओं की अधिकता बहुतहोगईहै इसडरसे किसीकी हिम्मत नहींपड़ती कि कोई उधर मुख करे (कुआंहिन्दवान) हिन्दवान एक मौज़ा है फ़ारस देश में दो पहाड़ों के मध्य जहां से धुआं निकलता है और पानी उसका इतना उबलता है कि किसी को उस तक पहुंचने की मजाल नहीं है जो पंछीभी उसपरसे उड़े तो तुरन्तही जल कर गिर पड़े (कुआं यूसफ़सदीक़) यह वह कुआं है जहां हज़रतयूसुफ़ को उनके भाइयोंने गिराया था कहते हैं कि यह कुआं अखनताबलस और तुरियासे चार कोसकी दूरीपर दमिश्कके एक बड़े पत्थरपर है-कइयोंके विचारमें हज़रत याक़ूब का मकानताबलस था जो फलतैन की धरती पर है और जिसकुयें में कि हज़रत यूसुफ़ गिराये गयेथे वह फलसतीन और ताबलस के बीच में है और उसस्थान का नाम संजल है और यह कुआं आम राह पर है ईश्वर की कृपा से पहाड़ों नहरों सोतों और कुओं का वर्णन पूरा हुआ॥

वर्त्तमान सम्पूर्ण सृष्टि का वर्णन॥

इसके कई प्रकार हैं जो माता पिता से उत्पन्न होते हैं सो हम कहते हैं कि सम्पूर्ण उत्पन्न हुये शरीर बढ़ने वाले होते हैं और जो बढ़नेवाले प्रकार नहीं हैं वह खानेकी चीज़ें हैं और जो बढ़नेवालेहैं उनके दो प्रकार हैं एक तो चलने फिरने की शक्ति रखतेहैं वह जीव-धारी हैं और जो नहीं वह स्थावर वृक्षादि हैं और न बढ़नेवालोंकी और बुद्धिमानों का विचार उनकी उत्पत्ति भाफ़ और गर्दसे है और भाफें वह वस्तु हैं जो दरिया कुवां और नदियोंकी सफाईसे उठ कर ऊपर को चढ़ती हैं कि जब सूर्य्य की गरमी उनमें अपना प्रभाव करती है और वह पानी और गर्द धरतीमें दूसरा रूप धारण करता है और वही इकट्ठा होकर मट्टीके भागों में मिल कर गाढ़ा होजाता है और जो गर्मी पृथ्वीकी गहराई में प्राप्त हुई है उसे पकाता है सो वही मूल वस्तु खान स्थावर और जीवधारियों के लिये होता है जिसका क्रम ईश्वर चाहे तो निकटही वर्णन करता हूं और यह खानें स्थावर और जीवधारियों से कइयों के साथ मिली हुई हैं

पहले यह सृष्टि मिट्टी थी फिर इसको जीव का संयोग हुआ ॥

पहले खानोंकी वस्तुओं का वर्णन ॥

वह जस (गच) है जो मट्टी के अनुमान है वा मलह (नमक) है जो जलके अनुमान है जस एकप्रकारकी रेत है जो बर्षामे भीगकर बँध जाती है और मलह एक प्रकारका जल है जो खारी भागों मे मिलकर मट्टोके भागोंमें मिलजाता है और नमककी तरह पर बँध जाता है और खान का अंत जो स्थावर के निकट है उसको (कमात कुंभी एकजड़है कि पृथ्वीकी दुर्गंधसे रबीके वक्त रेतवाली जमीनों और पहाड़ोंकी गुफ़ाओं में बहुत जमती है गोल और लाल और पेडू और पत्तों बिना उसका कच्चा पक्का दोनों खाते हैं परन्तु उसमें विशेष करके कोई स्वाद और गंधनहीं) कहते हैं और वास्तवमें यह प्रकार सृष्टि से वर्तमान होता है कि मिट्टी में खानकी तरह और गीली जगह पर रबीमें और यह बिजली के शब्द और वर्षा से बढ़तीहै जिस तरह वृक्ष इत्यादि हरे भरे होते हैं जोकि इसमें पत्ते और फल नहीं और मट्टी से उत्पन्न होता है जिस तरह कि सब खान की चीज़ें इस लिये वह कमात खान की चीजों के सदृश हुआ परन्तु धरतीपर उगता है इसलिये उसका प्रारम्भ खानोंमें है और अन्त जीवधारियों इसलिये कि प्रारम्भ और अंत वृक्षादि ों का कि मिट्टीके निकट है उसको ख़िज़रायउद्दमन और उत्तमात वृक्ष रजो जीव धारियों के निकट है छुहारे का दरख़्त है और ख़िज़राय उद्दमन वह एक भाफ़ है जो पृथ्वीसे निकलती है और वर्षासे हरी होकर घास की तरह लहलहाती है तो जब उसे सूर्य्य की गर्मी पहुंचे सूखजाती है और फिर ओस और प्रभात की पवन से हरी होती है और कमात और ख़िज़रायउद्दमन नहीं उगता है परन्तु रबी की ऋतु में होता है और एक इनमें से खान का स्थावर है और दूसरी स्थावर की खानहै और जो जीवधारियों के सदृश है वह छुहारे का वृक्ष है क्योंकि छुहारे के वृक्ष का स्वभाव कुछ स्थावरसे सम्बन्ध नहींरखता चाहे वह स्थावरहै क्योंकि उनवृक्षों

में नर व मादा हैं और जो छुहारेके दरख़्त का शिर काटडालें तो सूखजावे और फिर न बढ़े जिसतरह पशुकी गर्दन मारनेसे उसका नाश होजाताहै इसीनिश्चयसे छुहारेका वृक्ष स्थावर जीवधारीहै-रहपशुत्रारम्भ उसका स्थावर के सदृशहोताहै क्योंकि तुच्छसेतुच्छ वहपशुहै जिसकी केवल एकइन्द्री हो और जिस जीवधारीका नाम हलज़ूनहै वह एक कीड़ाहै जो पत्थरके खोल में दरियाकिनारे होता है और वहकीड़ा उसमेंसे अपनाआधाअंग निकालताहै और दहने बायें लम्बा चौड़ा होताहै और अपना भोजन ढूंढ़ताहै तो जबहवा की तरी या नरमीपाताहै तो अपनेको और फैलाताहै और जो कठोर पृथ्वी पाताहै तो अपनेको उसीमें छिपालेताहै कि ऐसा न हो कि कोई दुःखपहुंचे और इसजीवमें सुनने देखने चखने और सूंघनेकी इन्द्री नहीं परन्तु स्पर्शन इन्द्री रखताहै और इसीप्रकार बहुतकीड़े होते हैं जो मट्टी से पैदा होते हैं सो इनप्रकारों के जीवधारियों को स्थावरजीवधारी कहते हैं कि वृक्षादिकोंकेसदृश उगाकरते हैं और जिस पशु का पद मनुष्य के निकट है उनमें से घोड़ा है क्योंकि घोड़ेमें समझकी तेज़ी और अदब अर्थात् बड़ेका लिहाज़ और उत्तमोत्तम शील होती है बहुधा ऐसा होताहै कि बादशाह के सामने या जबतक बादशाह सवार न हो ले लीद नहीं करता है लड़ाई में मनुष्यकासाथ देताहै घावखानेसे मुंहनहींमोड़ताहै जो उसकानाम रक्खो समझजाताहै और आज्ञामानताहै रोकनेसे रुकजाताहै और पशुओंके बराबर वह मनुष्यहैं जो नाना प्रकारके संसार के भोजन के सिवाय और कुछ इच्छा नहीं रखते और कुत्ते और मेंढ़क की तरह मैथुन करते और अपनी आवश्यकतासे अधिक चींटोकीतरह संग्रह करते और संसार की सूखी रोटीपर इस तरह गिरते जैसे कुत्ते मुरदारचीज़पर गिरतेहैं तो ऐसेमनुष्य चाहे मनुष्य रूप रखते हैं परन्तु उनके कर्म्म पशुओंके हैं और जिस मनुष्यको पदवी फ़रिश्तोंकीसी लिखी है वह उन मनुष्योंकी पदवी है जो भूलकी नींद से जगे और उनकेमनके नेत्रखुलेहैं कि प्रकट प्रकाशके सिवाय मनको

उजियालाभी देखें और उस बिश्वम्भर परमेश्वरके दियेहुये पदार्थों से अपने मनको प्रसन्न करें और अपने मनकी स्वच्छतासे प्राणोंके समूहको देखें और इस असार संसार के पदार्थों की इच्छा छोड़ें सो यह लोग फ़रिश्तों के प्रकारों से हैं ॥

पहलीनज़र खानकी बस्तुओं का बर्णन ॥

यहधातें पृथ्वीकीभाफ़ और गर्दसे पैदाहोतीहैंजो ज़मीनमें बन्द हैं कि जब हरएक नानाप्रकार की भाफ़के दोषों की सदृश मिले हों इनके स्वभाव और पृथक्२ हैं तो यहधातें यातो सख़्तहैं या नरम और जो सख़्त हैं वह हथोड़ेसे निहाईपर कूटी और बढ़ाई जाती हैं वहसातहैं १ सोन २ चांदी ३ तांबा ४ सीसा ५ लोहा६ कलई ७ हारसेनी (यहधातुचीनकीहैं) यह पारे और गन्धकसे पैदाहोती हैं और जो नरमहैं जैसे पारा और सख़्त और कई तरधातु नमकदार हैं जैसे फिटकरी और नौसादर और इसके बिरुद्ध चिकनी हैं जैसे हरताल और गन्धक और ऊपर लिखेहुये सातों प्रकार भी पारे और गन्धक के मिलनेसे उत्पन्नहोतेहैं परन्तु स्वभाव और तोलमें बिरुद्धहै पारा बायु मट्टी और जलके भागोंमें उत्पन्न होता है जब इनतीनों को बलवान् उष्णता पकाती है उस समय तेल के सदृश होजातेहैं और कठोर और साफधातें उसजलसे उत्पन्नहोतीहैं और सख़्तपत्थरों के बीचमें होतीहैं और मुद्दत में गाढ़ी और साफहोती और गरमी से पकतीहैं और मैलीधातें पानी और मिट्टीके मिलने से पैदाहोती हैं जब कि उनमें मुद्दतोंतक धूपका प्रभाव पहुंचता रहे जो धातें तरीकीतरफ़ झुकीहोतीहैं वहपानीसे पैदाहोतीहैं जब पानी मट्टीके भागोंसे मिलकर सूखजाताहै और चिकनी धातुतरी से प्रकट होतीहैं जो धरतीके अन्दर छिपीरहतीहैं जब उनको गरमी पहुंचती है उससमय गलती और पतली होजातीहैं और उसीमट्टी में मिल जातेहैं और खानोंकीगरमी हमेशा उनकोपकाती और गाढ़ाकरतीहै ईश्वर चाहैतो इनकावर्णन निकटहीबिस्तारपूर्वक कियाजावेगाकहते हैंकि सोना रेतीलेपहाड़ों और नरम पत्थरों के सिवाय दूसरी जगह

पैदानहींहोवा और तांबा लोहाआदि तर या गीलीज़मीन के बिशेष और किसीस्थान में प्रकट नहींहोता और खारी धरती में होता है और फिटकरी ऐसी ज़मीनमें होती है जिसकी मट्टीका स्वाद बकठाहो और सपेदा वहां पैदाहोता है जहां की मट्टीमें गच मिलीहो इसी प्रकार हर एक जवाहिर एक २ धरतीमें मुख्य है जो जहांसे पैदाहो उसको उसी ज़मीनका स्वभाव समझना चाहिये और इन सबके तीन प्रकारहैं फलज़ात अर्थात् गलनेवाली धातें १ अहजार अर्थात् पत्थर आदि जो पिघल न सकें २ अजसामुद्दोहनियां अर्थात् चिकनी चीज़ें ईश्वर चाहै तो हर एकका बिस्तार निकटही बर्णन किया जावेगा ॥

पहला प्रकार पिघलने वाली खानकी चीज़ोंकाबर्णन ॥

यह सातहोतीहैं कहतेहैं कि इनकी उत्पत्ति पारे और गंधक के मिलनेसे होती है पृथ्वीपर जो पारा और गन्धक दोनों साफ़ और सख्त और आपुसमेंमिलेहों और गन्धक तरीकोपीजाय और ज़मीन पानी की तरीको और गन्धक में रँगनेवाली शक्ति हो और दोनों अनुमानसेहों और खानकी गर्मी दोनोंको बराबर पकाले और उस खानको सर्दी या गर्मीसे कोई रोग न हो जबतक कि दोनोंको पका न ले तो उससमय यह गन्धक और पारा बँधकर सोना होजाता है परन्तु बहुतसमय में और जो गन्धक और पारा दोनोंसाफ़हों और अच्छीतरह से पकजावें और गन्धक सपेदहो तो वह चांदी होजावे और जो इसकेपकनेके पहले सर्दीकेकारण वह चीज़ेंमिलगईं तो वह हारसेनी है और जो पारा साफ़हो और गन्धक साफ न हो और जलने की ताक़त ज़ियादह हुई और दोष भी पूर्ण हुआ तो उससे तांबा पैदाहोता है और जो गन्धक पारे से मिलजावे और दोष भी पूरा न हो तो क़लईपैदाहो और जो गन्धक और पारा दोनोंबुरेहों और पारेमेंमिट्टीमिलीहो और जलनेकीशक्तिअधिकहुईहो तो लोहा उत्पन्नहोगा. और जो दोनों बुरे और सख्त नहों तो जस्तापैदाहोगा निदान यह खान के जवाहिर वस्तुओं के विपरीत मिलने से भी

बिपरीतहोतेहैं परन्तु इनसबकामूल पारे और गन्धकसे है कि पारे औरगन्धकके अन्योन्य स्वभावसे रूपान्तर होजाताहै और यहबातें कारीगरोंको अभ्याससे मालूमहुईहैं अब यहांकुछ वर्णन उन धातों का लिखाजाताहै—सोना यह गर्म और नर्महै जो कि इसके पानी के खण्ड मट्टीके खण्डों से बहुत मिले रहते हैं आग से नहीं जलता क्योंकि अग्नि उसके खण्डोंको अलगनहींकरसक्ती और मट्टीमेंनहीं गलता और समय के बीतनेपर भी उसपर जंग नहीं लगता और बहुत नर्म पीला और बुर्राक़ मीठा सुगन्धित संगीन और प्रकाश युत होताहै और उसमें पीलाई अग्निके खण्डोंकी है और नर्मी चिकनाई के खण्डोंसे और बुर्राक़ी पानी की सफाई के खण्डों से और संगीनी मट्टीके खण्डोंके कारणमें है और ईश्वरके दियेहुये बड़े पदार्थोंमें से है क्योंकि इसीके कारण संसारी कार्योंका प्रबंधदिया गयाहै और सम्पूर्ण सृष्टि इसी की आवश्यकता रखती है प्रकट है कि हर मनुष्य खाने पहनने और मकान वग़ैरह की आवश्यकता रखताहै और कभी ऐसा होताहै कि मनुष्यकेपास कोईवस्तु होती है और वह मनुष्य दूसरी वस्तु की इच्छा रखताहै जैसे किसी के पास कपड़ाहै औरवह गेहूंकी आवश्यकता रखता है और गेहूं वाला अपनी बेपरवाई से कपड़ेमें बदला नहीं करता तो इस दशामें अवश्य हुआ कि कोई ऐसी चीज़ पैदा कीजावे कि जिसको दोनोंकी इच्छा हो सो ईश्वरने अशर्फ़ी आदि उत्पन्न कीं जो हर एककेलिये बरा-बरहैं और सब लोग उससे बदलाकरतेहैं इसीलिये इसको ईश्वरने गाड़ने और ख़ज़ाना करने से निषेध किया है जैसे लिखा है कि जो लोग चांदी और सोनेको संग्रह करते हैं और उसको ईश्वर निमित्त व्ययनहीं करते तो ऐहमारे रसूल उनलोगोंको आज्ञादो कि तुम्हारे लिये परलोकमें बड़ा दुःख तय्यारहै और ईश्वरने इस बचनसे कोप के संग्रह करने वालों को भयदिया है क्योंकि सोने और चांदी के उत्पन्न करनेसे तो प्रयोजन यह था कि लोगोंकी आवश्यकता दूर हो तो जोमनुष्य गाड़ताहै मानो वह ईश्वर की आज्ञाको झूठाकरता

है और जानना चाहिये कि सोने की प्रतिष्ठा कुछ उसकी कमी के सबबसे नहीं है क्योंकि सोना सदा जिन खानोंसे निकालाजाता है वहां किसी प्रकार की हानि नहींहोती जितना चाहे निकाले बराबर निकलता रहेगा सिवाय तांबे और लोहे के कि यह दोनों नष्ट हो-जाते हैं और सोनेसे कमनिकलते हैं परन्तु सुवर्णकी प्रतिष्ठा उसके गौरवसे है कि यह संसारी कार्यों के प्रबन्ध के लिये नियत है अर-स्तातालीसने सुवर्ण के स्वभाव में लिखा है कि मन का बल कारक और मिर्गी को दूर करने वालाहै यदि इसका गंडा बनादें फफोले कोगुणकरे यदि इसकी सलाई बनाकर सुर्मालगावें आखोंमें ज्योति अधिक होतीहै और ज्योति का बलकारकहै जो कोई कानकी लोल को सोनेकी सूईसे छेदकरे तो वह छेद बन्द न होगा जिसमनुष्यको सोना गर्म करके दागदें बहुत जल्द अच्छा होजायेगा और कोई घाव की दशा उत्पन्न नकरेगा शेख रईस ने लिखा है कि सोने को मुंहमें रखना मुखकी दुर्गंधिको दूर करताहै और मानसी पीड़ाऔर उन्माद रोगको गुणकारी है(चांदी) यहभी सोनेके निकट है यदिइ-सको पकने के पहले शर्दी पहुंचे तो निश्चय है कि सोना बनजाय चांदी आगमें जलकर भस्महोजातीहै और मट्टीसे सड़जाती है परंतु बहुत समयमें अरस्तूने लिखा है कि चांदीमें मैलहोता है और सोने में नहीं होता यदिचांदीको पारे या रांगेकी गन्ध पहुंचे तो टूटजाती है और गन्धक की गन्ध से काली पड़ जाती है इसके स्वभाव में लिखा है कि इसके खाने से चिपकने वाली तरी दूर होती है और मुखकी दुर्गंधि नाशहोती है और खुजली मूत्रके कठिनतासे उतरने और उन्माद रोगोंको गुणदायक है यदि पारेके साथ मिलाके मलें तो बवासीर को दूर करे (तांबा) यह चांदी के निकट है सिवाय सुर्खी और खुश्की के और अन्तर नहीं इसकी सुर्खी गन्धककी गर्मी के कारण है और खुश्की मैल की अधिकता और मोटापन माद्दे से है तो जो कोई इसको नर्म और सपेद करना चाहे तो उसकी इच्छा पूर्ण होगी अर्थात् चांदी होजाता है अरस्तू के विचार में सुर्ख रंग

का तांबा उत्तम होता है और जो स्याही लिये है वह बुरा है यदि इसको खटाई में छोड़दें तो जंगार बन जाता है जो कोई तांबे के बरतन में खाया पियाकरे उसके नानाप्रकार के रोगहोंगे जिनकी औषधि न होसके जैसे पीलपांव और वह बुरा फोड़ा जो पीठ में नेवलेकी तरह पर होताहै और हृदय की पीड़ा और तिल्ली और प्राकृतिक उपद्रव यदि उसके बर्त्तनमें खटाई या शराब या मिठाई रखकर खायें और एकरात दिन उसकेबर्तनमें किसीप्रकार भोजन रखकर खावें तो वह मनुष्य मरजावेगा (लोहा) यह भी ऊपर लिखीहुई धातोंकी तरहपर पैदाहोतीहै परन्तु इसमें समता नहीं है क्योंकि इसका माद्दा अर्थात् मूल गंधक और पारेका मैलहै इसका रङ्ग गन्धक की गर्मी से काला होता है परन्तु इसके गुण बहुत हैं यद्यपि यह सबधातोंसे मोलमें कमहै पर ईश्वरका वचनहै कि इस कीसख्ती गांसीमें है और उसके लाभ सब हथियारोंमें हैं कहते हैं कि कोई ऐसी कारीगरी नहीं है कि जिसमें किसी प्रकार से यह लोहानहो लोहा तीन प्रकारका है साबूरकां १ अनीस २ ज़कर३ अरस्तू ने इसका स्वभाव इसरीति से लिखा है कि इसके बुरादे का गण्डा बनाना जो मनुष्य कि स्वप्न में बर्राता हो उसके लिये गुणकरे अरस्तू के सिवा और मनुष्यों ने कहाहै जो मनुष्य थोड़ा लोहा अपनेपास रक्खेगा उसका मन दृढ़ और निर्भय रहेगा उस कादुःस्वप्न देखना दूरहो लोगों के मनों में उसका भय हो इसके सुरमें से आंखों का मैल दूर होजाता है पलक के गिरने को गुण दायक है और नेत्रोंकी पीड़ाकोलाभदे रतौंधी और शिरकीबीमारी भी दूरहोती है इसकारङ्ग बवासीर को गुणदायकहै और इस का बुझायाहुआ पानी तिल्ली और मन्दाग्निको लाभकरे यदिलोहे कीमेख गर्मकरके तलवारको सैकलकरें तो उसमें कभीजङ्ग न लगे गा (क़लई) अरस्तूने लिखाहै कि यहचांदीका बदलाहै परन्तुइसके मूलमें तीन खराबियां हैं दुर्गन्धि १ नर्मी २ मैल ३सो तीन खराबियोंमें धरती के भीतर रहताहै जैसा कि किसीलड़के को मांके पेट

में कोई ख़राबी पड़जातीहै तो उसलड़के में उपद्रव और जोड़ों की क्षीणता आदि होजाती है कहतेहैं जो मनुष्य उसकी हसलीबनाकर दरख़्त की जड़ में पहनादेवे तो उसवृक्ष के फूल और फल न झड़ेंगे और जो उसकी तख़्ती बनाकर छाती पर रक्खें तो स्वप्न प्रमेहरोग (अर्थात् जिसको स्वप्नमें बीर्य निकले) दूर होजायेगा यदि क़लईका टुकड़ा डेगचीमें छोड़देवें तो भोजन कच्चा रहेगा यह धातु सूर्यकी गर्मीसे भी गलती है परन्तु केवल अग्नि की गर्मी से जलतीहै यदि उसको नमक और तेलमिलाकररगड़ें और जोस्याही उससे निकलै तलवार आदि जिसप्रकार के लोहेमें लगावें ज़ंग न लगेगा (शीशा) यहरांगेसे बुराहोता है कारणयहहै कि इसमें मैल अधिक होताहै इसमें यहगुण है कि सोनेको गलाता है और हीरे को तोड़ता है यूंतो हीरे को निहाई हथौड़े से भी लाख यत्न करे न टूटे गा वरन हथौड़े या निहाई में घुसजावेगा और जो शीशे पर रखकर थोड़ीसी चोटदें तुरन्त दोटूक होजाय शेख़रईस लिखता है कि इसकी तख़्तीबनाकर बांधना कंठमाला औरगदूद और जोड़ोंके घाव को गुणकरें और कामदेव की अधिकताके ठहरानेवाला और स्वप्न प्रमेहको दूरकरताहै (अलहारसेनी) यहभी उन्हीधातुओंकी सदृश पैदा होता है उसकी खान चीनमें है रंगउसका स्याही और सुर्ख़ीलियेहै वहुधा इसकोगांसबनाते हैं वह बहुतदुखःदायीहोतीहै इसके कांटेसे बड़ी २ मछलियां शिकार होसक्ती हैं क्योंकि इसके कांटे में यह प्रभाव है कि जिसवस्तुमें अटकावें फिर बड़ीकठिनता से अलगहोताहै उसकाशीशा बनाकर और क़लईकरके अंधियारे घरमेंरखकर उसपर दृष्टिकरना अर्द्धाङ्गरोगको अति गुण दायक है इसके मोचने तीनबेर जहां के बाल उखाड़ें और वहांपर तेलमलदें फिर कभी बाल न निकलेंगे॥

दूसरा प्रकार पत्थरोंका वर्णन॥

यह पत्थर वर्षा और पृथ्वीके तरीके प्रभाव से उत्पन्न होते हैं सूर्यकी गर्मी ऐसे पत्थरों में अधिकतर प्रभाव रखती है इसके इ

प्रकारहैं (प्रथम)यहकि जिस समय वर्षा का जल या तरीकानों या गढ़ोमें इकट्ठा हो जातीहै और उनमें कोईखण्ड मिट्टी का मिलजाता है तो जब कानकी गर्मी उसमें पहुंचतीहै और वह जल बहुतसमय तक उस स्थानपर ठहरता है तो वह जल पत्थर की तरह बहुत सफ़ाईसंगीनी और मोटाईकीतरफ़ झुकजाताहै और उससेकठोर२ ऐसे पत्थर बनजातेहैं जिनमें आग और पानी अपना प्रभाव नहीं कर सक्ता जैसे याकूत आदि और उनके रंगोंका फ़र्क़ खानकीगर्मी के सबबसे होताहै और थोड़ीसी गर्मी और सर्दी में फ़र्क़ होजाताहै कई मनुष्योंका बचनहै कि रंगके अन्तरका कारण यह है कि ग्रहों के अनुसार रंग होजाताहै जैसे कि काला रंग शनिश्चर के प्रभाव से और हरा बृहस्पति और लाल मंगलसे और पीला सूर्यसे और नीला शुक्रसे और जंगाली बुधसे और सपेद चन्द्रमासे (दूसरा प्रकार) यूं है कि पृथ्वी और जलके मिलनेसे पैदाहों और जो कि धरतीमें एकप्रकारकी लसहोतीहै और सूर्यकी गरमीने उसमें एक समयतक प्रभावपहुंचाया जैसा कि आग कच्चीईटमें प्रभावकरजाती है अर्थात् उसको पकादेतीहै इसीप्रकार यह पत्थर अन्य२ प्रकार के होतेहैं और अन्य२ होनेकाभी दृष्टान्त ईटसे देना पूराहोगा जैसे सेवरी–पक्की–ठर्रा होतीहै क्योंकि उसका होना आंच पहुंचने पर है इसी तरह पर इन पत्थरों का आपस में विरुद्ध होना स्थान के स्वभावपर समझागयाहै जैसे खारीपृथ्वीसे नमक और गेरू और फिटकरी उत्पन्न होते हैं यदि पृथ्वीमीठे स्वादकीहो वहांपरकेवल फिटकरी हर प्रकार की लाल पीली और सपेद पैदा होतीहै यदि कंकरीली या पथरीलीधरतीहै तो वहां केवलपत्थर पैदाहोगा कई स्थान ऐसेदेखेगयेहैं जहां केवल उस स्थानके गुण से पानी पत्थर होजाताहै कईस्थानऐसेहैं कि उनके उचानसे पानीकीबूंदोंकीफुहार हुआ करतीहै यदि उन बूंदोंको इससे पहले कि धरतीपर न पहुंचे हाथमें लेलेवें तो पानीका पानी बनारहेगा यदिवह धरतीपर गिरा तो पत्थर होजाताहै (कहानी) लिखतेहैं कि बाज़े जगहमें ईश्वर

ने पशु और स्थावरको पत्थर बना दियाहै तो सम्भव है कि ऐसा हो और इसकावर्णन इसतरहपर है कि ईश्वरने उस धरतियोंमें ऐसीही शक्ति रक्खीहै तो जबवहांके मनुष्योंपर क्रोधी हुआ तो वहां की धरती से कुछ इस प्रकारकी बाफें उठीं जिनके प्रभावसे वहांके जीवधारी पत्थर होगये शेख़ुलरईसने लिखाहैकि मैं जाज़ूममें था एक गोल पत्थर दिखाई दिया जिसके किनारे साबित थे और बीच उसका कुछ गहरा जैसा कि रोटी का गिर्दा होता है और उसकी पीठपर रेखाओं के चिह्न प्रकट थे जैसा तन्नूरी रोटियों पर होती हैं सो इन चिह्नों के द्वारा यह दृढ़ विचार हुआ कि यह निस्संदेह गिर्दा.रोटीका होगा जो यहांके प्रभाव से पत्थर होगया—प्रगट है कि कानोंके जौहर असंख्य हैं उनमें से कुछको मनुष्य पहचानते हैं तो कई प्रकारों का वर्णन इस पुस्तकमें किया जाता है—बाज़े जवाहर ऐसे हैं जिनका प्रभाव बहुत अद्भुत है कई ऐसे कठोरहोते हैं कि न आगसे जलें न उनको लोहेसे कुछ हानिहो जैसे याक़ूत के प्रकार और कई ऐसे नरम हैं कि पानीसे घुलजाते हैं जैसे नमक और फिटकरी आदि बाज़े वृक्षके सदृश होतेहैं जैसे मूंगा कई पशुओं से प्राप्त होते हैं जैसे मोती बाज़े बायु से उत्पन्न होते हैं अर्थात् ओले जो बादल और बिजली के साथ प्रकट होते हैं बाज़े पानी या मिट्टी से बढ़ते हैं कई मनुष्योंकी कारीगरीसे होते हैं जैसे सोने चांदीका मैल और ज़ंगार—बाज़े ऐसे दोपत्थर होते हैं कि परस्पर प्रीति रखते हैं जैसे सोना और हीरा हीरे का यह प्रभाव है जो सोने के पास लेजावें तो तुरन्त एक दूसरेसे चिपकजावें यहभी कहते हैं कि हीरा सोनेकी खानके सिवा और स्थानपर नहीं पायाजाता कई ऐसे होते हैं जिनमें अधिकतर आकर्षण शक्तिहोती है जैसे लोहा चुम्बक पत्थर और यह दोनों आपसमें बहुत चिमटते हैं यहां तक कि जब लोहेको चुम्बक पत्थरकी गन्धमिली तुरन्तही उसको खींचता है जिसतरह से कि प्रीतम अपने प्यारेको गोदमें खींचताहै बाज़े ऐसे दोपत्थर होते हैं जिनकी परस्पर शत्रुताहै जैसे कुरंड कि वहसब पत्थरोंको काटता

है और सुधारता है जैसा कि हीरा जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरोंको छेदता है परन्तु शीशेसे आप टुकड़े होताहै बाज़े ऐसेहैं जिनको साफ़ करनेकी शक्ति है जैसे नौसादर जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरों को मैल आदिसे शुद्धकरताहै संक्षेप यहहै कि अब इस स्थानपर थोड़ा थोड़ा सा हाल हरएक प्रकार के पत्थरों का लिखा जाता है(असमद) सुरमे का पत्थर है अरस्तूने लिखा है कि यह प्रसिद्ध पत्थर है इसकी बहुत खानेंहैं इसके उत्तम प्रकारोंमें अस्फहानी हैं और इस पत्थरमें रांगे का भी संयोग होता है इसके सुरमें का यह स्वभाव है कि नेत्र को हरप्रकार का गुण होजाताहै और ढरकेको गुणदायक और पलकों को और नेत्रकी पीड़ाको नष्ट करता मुख्य करके बुड्ढोंकी आंखको बहुत गुण कारी है अब्दुल्ला के पुत्र जाबिर ने लिखा है कि पैगम्बर साहब का बचन है कि असमदको सदा काममें लाओ कि असमद के सुरमा लगाने से पलकें बहुत उगती हैं और मज़बूत होती हैं और ज्योति अधिक होती है यदि कुछ कस्तूरी भी उसके साथ अधिक करलेवें तो बहुतही लाभदेगा यदि असमदको चरबी के साथ मिला कर जलीहुई जगह पर लगावें तो बहुतही गुण देता है (अरमियों) यह पत्थर रूममें पैदाहोताहै इसके पांचकोने होतेहैं यदि इसके हज़ार टुकड़े करें तौभी हरएक टुकड़ा पांच कोने काहोगा जो मनुष्य इसका सुरमा लगावे उसकी आंख हर उपद्रवसे रक्षित रहेगी जो कोई इस पत्थर को अपने पास रक्खें तो अधिष्ठाताओं की दृष्टिमें प्रिय होगा इसकी पहचान यहहै कि इसमें सपेदरंग नीलाई लीहुई रेखा होती हैं॥

(अस्फ़ेदाज़) यह क़लई की राख है और इसी को सफ़ेदा का) शग़री भी कहते हैं यदि इसको औषधि में मिलाकर लगावें आंखों की पीड़ाको गुणकरे यदि इसको अच्छी तरह पर जलावें तो जस्त होजाता है इसको सांपके काटेहुये पर लगाना बहुत गुण करे जलानेके समय इसकी गन्धसे हटना चाहिये कि बहुत दुःखदायी है बलीनासने खवासकी किताब अर्थात् स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै

यदि इस्फ़ेदाजको चचेंड़ेके जलमें जो ककड़ी के प्रकार से होता है घोलें और मकान में छिड़कें उस मकान से मच्छड़ दूर होजावेंगे अरस्तूने लिखा है इस्फ़ेदाज़ शीशे को सिरके में मिलाकर आंख में आंजना आंखोंकी सफ़ेदीको गुणदायकहै सड़ेहुयेमांसको दूरकरता और नवीन मांस निकालता है और उसके मरहममेंयहभी गुणहै कि दाहको लाभदे और अच्छेहुये घावके दाग़को अपने मूलरूपमें लाता है (आफ़रबख़्श) अरस्तूके विचारमें यह पत्थर हरतालकी खानोंमेंमिलता है उसका गुणहै कि जो उसकी भस्म एकमिस्काल अर्थात् साढ़े चार मासे भरके बराबर लेकर पचास मिस्काल सुर्ख़ तांबे में छोड़दें तुरन्त सपेद करदेगा यदि इसको चूनेमें मिला कर लगावें बालोंको गिरादेगा यह पत्थर हरतालसे अधिकतर तेज़ है इसको घिसकर सूजनमें लगाना गुणकारी है ॥

(अक़लैमियायज़र) अरस्तूने लिखा है जो सोनेका बुरादा किसी पत्थरके बुरादेमें मिलजाय तो औषधियोंकी शक्तिसे उसको अग्नि पर रखकर सोना अलग करते हैं उस समय सोना नीचे बैठजाता है और वह बुरादा पत्थर का ऊपर आजाता है परन्तु कालेरंगका और शीशेके सदृश चमकता हुआ उसको अक़लीमियायज़र कहते हैं आंखोंकी पीड़ा और उसकी सफ़ेदीको दूरकरताहै और आंखकी तरीको भी गुणकारक है और लोगोंके विचारमें मोतियाबिंद प्रारम्भको भी गुणदायक है और आंख के नासूरको भी लाभदे और मैल साफ़ करता और बदगोश्तको दूरकरता और दाह बिना घाव को सुखाताहै (अक़लीमियाय नुक़रा) अरस्तू ने लिखाहै कि जब अक़लीमियायज़र की रीतिपर इसकोभी अग्निपर रक्खें उसीतरह से उसका स्वरूप निकलता है जिसको अक़लीमियायनुक़रा कहते हैं कि इसको तेलों में मिलाकर घाव वग़ैरह पर लगाना गुणदायक है अरस्तूके सिवा और हक़ीमों के बिचारमें नेत्र पीड़ा को गुण करे और इसका मरहम घावके भरनेमें जल्दी गुण करता है (बाहत) यह सपेद पत्थर बहुत ख़ूबीसे चमकता है जब मनुष्यकी दृष्टि इस

पर पड़े अपने आप हँसीआतीहै यहां तक हँसताहै कि जाननिकल जातीहै कहते हैं कि इस पत्थरमें चुम्बक पत्थरका सा प्रभाव मनुष्य के लियेहै एक कहानी है किसी हब्शके शहरोंमें इसकी एकदीवार है जो मनुष्य उधरजाताहै और उसकोदेखताहै वह हँसतेर उसीमें जामिलताहै यहभीकहतेहैं कि उसीशहरमें इसीपत्थरकाएकखम्भा है वहभी अपने साम्हनेवालेको खींचलेताहै और जिसकी दृष्टि उस परजापड़े हँसी प्रबलहोजातीहै कहतेहैं कि एकपक्षी फरफीर नामी गौरय्यासेकुछ छोटा कालेरंगका लालआँखें और लालहंसली और लालपांव कियेहोताहै जब वहपक्षी उसखम्भेपर आबैठताहै तबवह पत्थर झूठा पड़ जाताहै (बसद) अर्थात् मूंगेकीजड़ इस पत्थर का वृक्षदरियामें उगताहै जिस तरह कि पृथ्वीपर दरख़्त उगाकरते हैं इनका रंग सपेद सुर्ख़ पीला और काला होता है लहू टपकने को गुण करे और इसका सुरमा नेत्रको वलदे और आंखके पानी बहनेको दूर करता है और मनका बल कारकहै और मूत्र के बन्द होजाने में गुणकरे मिर्गी वालेको लाभदे उचितहै कि मिर्गीवालेके गलेमें यन्त्र बनाकर डालें (बिल्लूर) अरस्तूने इसको शीशेके प्रकार में लिखाहै परन्तु यह शीशे से बहुत सख़्त होताहै और इसकी उत्पत्ति खानसे होतीहै बिल्लूर एक उत्तम प्रकार का शीशाहै बहुत साफ़ और सख़्त और याक़ूत के रंगकासा है बादशाहों के पास उसके बरतन होतेहैं क्योंकि उनमें बहुत गुण होते हैं यदि बिल्लूर को सूर्य्यके सामनेकरें और काला कपड़ा या रुई उसके पीछे लगावें तुरन्त आग निकल आवेगी तो जो चीज़ चाहो उससे जलालो बिल्लूरके छः प्रकारहैं एक ऐसा प्रकारहै जिसकी सफ़ाई कुछकम होतीहै और देखने में नमककी तरह पर मालूम होताहै जब इस पत्थर को बुझाये हुये लोहेमें रगड़ें तुरन्त आग निकलेगी बहुधा बादशाही गुलाम इसको आग निकालनेके वास्ते अपनेपास रखते हैं अरस्तूके सिवाय और बुद्धिमानों ने लिखाहै कि काले रंग का बिल्लूर दांतोंकी पीड़ा वालेके पास रहना बहुत गुणदे (बोरक)

(अर्थात्‌कचलोन) यह धरतीके भागों का खारीपन है और नमक की तरहपर निकला करताहै परन्तु नमकसे अधिक प्रबलहै और उसकेप्रकार बहुत होतेहैं जैसे तनकून और उसको कारीगरीकरके चूनेकीतरहपर बनातेहैं जिसको तिन्कार कहतेहैं इसेहिन्दुस्तानसे लातेहैं और यह मुख्यकर उसीस्थानमें होताहै जहां मुर्दोंको जलाते हैं और यहप्रकार बहुत प्रिय होता है इसे बौरक़ जराबिन्दी सुर्ख़ी मायल बौरक़ खुबाज़ैन बौरक़ किरमानी और बौरक़ मगरबी कहते हैं कि यह प्रकार पश्चिम के वृक्ष से प्राप्त होताहै इसका गुण यह लिखाहैकि जो हम्माममें थोड़ीदेर बैठकर झाईपर इसको लगावें तो तुरन्तही उक्तदाग़ दूरहोजायंगे यदि किसीकेकण्ठमें जोंकलटक गईहोतो बौरक़को सिरकेमें मिलाकरकुल्लीकरें तुरन्त जोंक निकल जायेगी यदि बौरक़को सिरकेमेंघोलकर उसकेअन्दर मुर्ग़ का अण्डा रक्खेंतो उसकी छालदूरहोगी अरस्तूके बिचारमें बौरक़बहुतप्रकार का होताहै जिनमें कई बहती नदीमें पैदाहोतेहैं और बाज़े पत्थरों की खानमें होतेहैं बाज़े उनमें से सपेद सुर्ख़ और ख़ाकी रंग होते हैं सिवाय इनके और बहुतसे रंगका होताहै सो जब उसको किसी बरतनमें रखकर उसपर सिर्काछोड़ें तो बिना आगके उबाल खाता है और बौरक़ सब खानकी चीजों को नर्म करदेताहै और गलाता है अरस्तूके सिवाय और लोगों का बिचारहै कि बौरक़ से खुजली कोढ़ और वह रोग जिसमें सपेद और काले दाग़ शरीर में प्रकट होते हैं गुण पहुंचाता है और फोड़ों को पकादेता है और कान के भारीपन को लाभदे और जलंधर वालेको अंजीरके साथ खाना बहुतही उचित है और आंखकी पुरानी सपेदी को दूर करसक्ता है और नेत्रपीड़ा को गुणकरे यदि मरहम बनाकर लगावें घावों को भरताहै (बेहादक़) अरस्तू ने लिखा है कि उसका रंग सुर्ख़ होता है और पूर्वके शहरों में उसकी खानहै जब इसको खानसे बाहर निकालतेहैं काले रंगका होजाताहै और जब इसे कारीगर लोग साफ़ करतेहैं तो इसका रूप दूना होजाताहै जो मनुष्य [illegible]

की बीस जो भरकी अँगूठी बनाकर अपने पासरक्खे वह भय देने वाले स्वप्नों से बचा रहेगा जो कोई बेहादक़ को सूर्य्य के सामने रखके दृष्टिलड़ावे तो नेत्रके ज्योतिकीवृद्धिहो और यह पत्थर घास फूसको कुहरबा की तरह अपनी ओर खींचता है यहां तक कि जो कोई मनुष्य अपने बालों में लगाकर सोरहे तो जितनी घासफूस उसके शिर के पास होगी वहसब उसके बालों में लिपट जायेगी (तदीर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर पश्चिम में नदीके किनारे पैदा होताहै और सपेद रंगका होताहै और सिवाय यहां के और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि जो मनुष्य इसको सूंघे तुरन्त ही उसका लहू सूखकर मरजाय-- (तन्कार) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर नमकके प्रकारसे होताहै और उसमें कचलोनका स्वाद मिलताहै नदी किनारे खानोंमें पाया जाताहै सोनेके गलाने और नर्म करने में सहायक है और कीड़े खाये हुये दांतों को लाभ करकेकीड़ोंको मारकरदांतोंकी पीड़ाशान्तकरताहै औरदांतों को बहुत साफ़ रखताहै दांतों के हरप्रकारकी पीड़ाकोगुण करताहै (तूतिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थरहै इसकारंग सपेदपीला और सब्ज होताहै और कुछ सुर्खी लिये होता है इसकी खानें सिन्ध और हिन्दकी नदियों में होतीहैं इसकी हरप्रकार आंखोंकी तरीको गुण दायक है बगलकी बदबू को नाश करती है अरस्तू के सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि तूतिया एक प्रकार का तेलहै कि तांबा साफ़ करनेके समय पत्थर और रेतके द्वारा निकलता है जो कि उस सोने में मिली होती है आंखों की पीड़ाको भी नष्ट करता है (जालिबुन्नूम) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बहुतसुर्ख और रंग का साफ़ होताहै जो इसको दिनमें देखे तो ऐसा मालूम होताहै कि धुवांऐसा निकलरहाहै और रातको ऐसा प्रकाश होता कि उसके ओर पासकी चीजें दिखाई देतीहैं और यदिइस पत्थर को सात माशे भी जिस मनुष्यके शरीरमें पहना दें वहतुरन्तही सोजावेगा यदि सोतेहुये मनुष्यके शिरहाने रखदें जबतक उसे अलग न करें

कभी न जगेगा यदि चकत्तोंपर मर्दनकरे गुणकरे (जज़ा) यह कई प्रकारका होताहै इसको यमन या चीनके शहरसे लातेहैं यमनका पत्थर बहुत उत्तम होताहै और इसका रंग बहुतकाला और सपेद होताहै चीनके रहनेवाले उससे ग्लानि रखतेहैं उनमेंसे एक जाति मुख्य करके ऐसीहै जो इसको खानोंसे निकाल कर चीन शहर के सिवाय और शहरों में लेजाकर बेचते हैं और जीविका प्राप्तकरते हैं और यमन के बादशाह इसको न तो अपने ख़ज़ाने में रखते न गर्दनमें लटकाते हैं यदि भूलकर भी कोई मनुष्य इस पत्थर को उठाकर अपने पास रक्खे तो बहुत दुःखी हो और भय देने वाले स्वप्न देखे उसकी इच्छा सिद्ध न हो जो लड़कोंको पहनादें तो उस की राल बहुतबहे और वह बहुत रोवेगा और भयमानहोगा यदि उसको घिसकर पिये तो नींद उड़ जायेगी और भयमान दुश्शील और कठोर होगा याक़ूतको इसीसे साफ़ करतेहैं तो उस में बड़ी बर्राक़ी और प्रकाश आजाताहै अरस्तू के बिचार में इस पत्थरको प्रतिसमय दृष्टिके सामने रखना बहुत शोकवान् और दुःखी करता है यदि इसको किसी अज्ञान जाति के बीचमें रखदें तो अवश्य करके उनमें वैरहोगा और जब तक यह लड़ाई उठाने वाला पत्थर बीच में रहेगा शत्रुता बनी रहेगी यदि गर्भवती स्त्री इसका यन्त्र बनावे प्रसूतिकी पीड़ासे आरामपावे और पासरखने से भी शीघ्र प्रसूत होताहै (हामी) यहपत्थर बहुत सुर्खकाले नुक़्ते रखताहै इसको हिन्दकेशहरोंसे लातेहैं जो मनुष्य इसको पावे और उसके काले बिन्दुओं की सफ़ाई करडाले तो वह लाल होजावेगा जो उस समय गलेहुये तांबेपर छोड़ें वहभी सुर्खरंग स्वर्णवत् होगा यदि इसको नाकमें टपकावें अर्द्धाङ्ग रोगको गुण करे--हज़रत बलैनास ने अपने गुणों की पुस्तक में लिखाहै कि जब ऊंट बहुत चिल्लावे उसके गले में इसको बांध दे वह तुरन्तही चुप होजावेगा और साहब फलाहानेलिखाहै कि जिसपत्थरमें स्वाभाविक छिद्रहो दुरुस्त करे जो इसको किसी वृक्षमें लटकादें तो उसमें फल बहुत

होगा और कोई ख़राबी उस फ़स्लपर न आवेगी (बेज़ पत्थर) अर-स्तूने लिखाहै कि जो मनुष्य इसपत्थरको छीले जो छीलन उसकी पीली निकले तो उसका अद्भुत प्रभावहै कि जिसमनुष्यके पासहो चाहे वह सच कहे या झूठ सब लोग अंगीकार करेंगे यदि छीलन लालहो तो उसके रखने वाला जो क्रिया करे सिद्धहो यदि छीलन नीले रंगकीहै तो जिस बातके लिये वह किसीके लिये पापकी क्षमा ईश्वरसे चाहे अंगीकारहो यदि छीलन आसमानी रंगहै तो उसके पास रखने से वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न रहेगा यदि छीलन का रंग सब्ज़है तो उसको बागमें लटकाना बहुत गुणकारीहै कि तुरन्त बोयेहुये बीजको हरा करता है यदि कोई मनुष्य हलाहल बिष पान करगयाहो वा सांप बिच्छूने काटाहो तो उसे उचितहै कि इस पत्थरका यन्त्र बनावे या उसको घोकर पीजावे तुरन्तही बिष उतर जावेगा (अहमर पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर सुर्खहै इसको भी छीलतेहैं यदि छीलन उसकी सफ़ेद रंगकीहोतो जो मनुष्य उसको अपने पासरक्खे जो कार्यकरै सिद्धहो औरउसका रंग कालाहै तो उसके रखनेवालेका जिस बस्तुको मन चाहेगा तुरन्त प्राप्तहोगी पीले रंगका डंडपर बांधना सृष्टिकी दृष्टिमेंप्रिय करताहै यदि मट्टीकी रंगतका हो तो उसका स्वभाव यहहै कि हर एक कार्य सफलहो यदि सब्ज़रंगहो तो जिसके पासहो उस पर हथियार काम न करेगा (खिज़् पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि पत्थर सब्जहोतो चाहिये कि उसको भी छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद निकले अपने पासरक्खे और जो वृक्षबोदे अथवाखेतीका कामकरे उसकी जड़में इस पत्थरको घाससे ढांकदे इस क्रिया से वह उत्तम प्रकार हराभराहोताहै यदि काली रंगतकी हो तो हरओरसे उसके लिये भलाइयों का समूह तय्यारहोगा और पीले रंगमें यह गुणहै कि जो मनुष्य उसको अपने पास रक्खेउसको जो ओषधिदीजायेगी गुणकरेगी यदि सुर्खरंग है तो बहुतसे पारितोषिक धनवानोंसे उसे मिलेंगे और लोगों में प्रिय होगा तो कोई ऐसा रोग न होगा जो

उसको औषधिसे आराम न पावे (अरमनीपत्थर) इसपत्थरमेंकुछ
लाजवर्दपन होताहै बहुधा ऐसाहोता कि मुसव्विरलोग लाजवर्दके
बदले इसको काममेंलातेहैं इसकेगुणोंमें लिखाहै कि सौदा अर्थात्
जलेहुये दोषको निकालदेताहै और इसका नक्शधोनेसे नाशनहीं
होता (आसमांजूनी पत्थर) अरस्तूने कहा है कि जब इस पत्थरको
छीलें जो उसकी छीलन सपेद रंग निकले तो जो कोई उसकोपास
रक्खे वहकभी दुर्बुद्धिनहोगा नउसके पास शोक और दुःख आवेगा
यदि उसकाकालारंग प्रकटहो तोजोकोईउसको अपनेसाथरक्खेगा
उसका काम जारी न होगा यदि पीलेरंगका हो तो हरएक कामको
सुधारनेवाला होगा यदि उसको किसी नदी या कुयेंमें छोड़ें तो उ-
सका जल कम होजायेगा किन्तु पानी निकलना बन्द होगा यदि
छीलनकी रंगत सुर्ख़ हो तो उसका रखनेवाला हर एकसे भलाई
पावेगा यदि सब्ज़ रंगहो तो उसका रखने वाला जहां कुछ बोदे
वहांके वृक्ष आदि उत्तमतासे प्रकटहों यदि पीलेरंग का है तो उसका
काम सदा जारी रहेगा (असफनजपत्थर) शेख़रईसने कहा कि यह
पत्थर खोखला है नमदे की तरह पर कहते हैं कि एक जीवधारी
पानी में रहता है और जिस चीज़को पाताहै लिपट जाताहै इसके
पेटमें एक पत्थर होताहै कि वह अति प्रियहै उसका गुणयह है कि
पथरी को टुकड़े २ करताहै (असवदपत्थर) अरस्तू लिखता है कि
यह काला पत्थर है जब इसको छीलें तो जो उसकी छीलन सफ़ेद
हो तो सांप और बिच्छूको बहुत गुण करे और जिसकेपास पीलेरंग
काहो तो वह दीन नहीं होताहै या जिसमकान में हो वहां के स्त्री
पुरुषरोगोंसे शान्तिपाते हैं और कभी बीमार नहींहोते हैं कालेरङ्ग
का गुणयहहै कि जिसके पासहो उसके सम्पूर्ण कार्यसिद्धहों और
बुद्धि में वृद्धि प्रकटहो यदि सब्ज़रंग है तो उसको डंकमारने वाले
जानवर कभीदुःख न पहुंचावेंगे (असफ़रपत्थर) अरस्तू ने लिखाहै
कि जो पत्थर पीलाहै और उसको छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद
हो तो उसका पास रखनेवाला जो काम जिससे मांगे वह हासिल

हो यदि सब्जरंग निकले तो जिसकार्य के वास्ते वहयत्न करेगा वह शीघ्रही सिद्धहोगा यदि सुर्ख़हो तो उसका भी यहीस्वभाव है यदि कालेरंग का हो तो प्यारा उसका उसके आधीन होजावेगा और जबतक वह पत्थर साथ रहेगा उसका प्याराकभी उससे अलग न होगा (अगवर पत्थर) अरस्तू ने कहाहै कि जो पत्थर खाकी रंग हो और उसकी छीलन सफ़ेदहो तो जिसमनुष्य के नामसे उसको आगेकर अपनी आंखों में सुरमा लगावे वह मनुष्य उस पर कृपा करेगा यदि छीलन काली निकले तो जो मनुष्य उसको नेत्रों में लगावे उसका लोग मान करेंगे यदि स्त्रियां उसको सुरमा बनाकर लगावें तो अपने पतियों की दृष्टिमें प्रिय होंगी और पीला रंग हो तो जिसके पास होगा वह शाबाशी पावेगा यदि सुर्ख रंगहै तो जिसके पास हो उसकी जीविका उत्तम होजावे यदि सब्ज रंग हो तो जिसके पास हो तो वह जिस जातिमें उठे बैठेगा बड़ा रहैगा और उसको मनुष्य बुद्धिमान् समझेंगे चाहे वह बुद्धिमान् न हो (अल्बाहपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि अस्कंदर रूमी ने अफ़रीका खंडकी खानमें इस पत्थर को पाया इसके गुणमें लिखा है कि यदि इसको लेकर किसीमनुष्य और पशुके बांधदें तो तुरन्त ही उसको कामदेव की अधिकता होगी तो सिकन्दरने आज्ञादीकि इस पत्थर को हमारी सेनामें न ले जावें कि स्त्रियां दुःख से बचें और बाज़े इस प्रकारके बड़े पत्थर को जो तोड़ा तो उसके अन्दर से एक हौज़कासा रूप दिखाई दिया कि जहां ऊंट खड़ा होकर पानी पीसके निदान जो मनुष्य इसपत्थरके कणको अपनी जिह्वा के नीचे रक्खे उसकी प्यास बुझजाय मिसर की धरती पर एक पत्थर होताहै जो पुरुष उसको अपनी कमरमें रक्खे भोगकीशक्ति अधिक हो और जबतक वह पास रहै कभी वह शक्ति कम न हो (बहर पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह उत्तम पत्थर नदी किनारे होताहै और पृथ्वीके उत्तम भाग और उसकी ख़ाकसे उत्पन्न होता है रंग उसका काला और [illegible]की तरह सख़्तहोताहै परन्तु इतना

हलका होताहै कि डूबता नहीं उसका गुण इस तरह लिखाहै कि जो मनुष्य इस पत्थर को अपने पास रक्खे नदीमें डूबने से निर्भय रहे यदि इस पत्थर को शिकारी जानवरों के स्थानमें रखदें फिर वहांसेउठाकर *हुबारीपक्षियोंके स्थानमेंरखदें फिर वहां से उठाकर मनुष्य की कमरपर बांधें तो स्वप्नमें प्रमेह दूरहोजावेगा और अ-तीसार को भी गुणकरे (हबशपत्थर) यह पत्थरहब्श के शहरोंमें पाया जाता है उसका स्वभाव यह है कि रतौंधी और आंखों की सूजन और नेत्रपीड़ा को गुणकरे और घावके चिह्नको दूर करके शरीरके वर्णके अनुसार कर देताहै (हसातपत्थर) अरस्तूनेलिखाहै कि इसपत्थरमें नरमी बहुतहोतीहै और पश्चिमकी नदीसेनिकलता है उसका स्वरूप चर्खके नकलकेसदृश होताहै जोमनुष्य इसपत्थर को दशजौकेबराबर खावे तुरन्तही उसकीपथरीटूटजावे (हीतापत्थर) इसको फ़ारसी भाषामें मारमोहरा कहतेहैं इसकीसूरत रीठेकीतरह पर होतीहै और बहुधासर्पोंके शिरपर प्रकट होताहै इसके गुण इस तरहपर लिखेहैं कि जिसे सांपने काटाहो वह मनुष्य इस पत्थरको पानी या दूधमें घिसकरघावपररक्खे तुरन्तही चिपकजावेगा और सारे ज़हर को चूस जायेगा शेख़रईस ने लिखा है कि यह पत्थर सर्पके विष को दूर करता है जालीनूस ने कहाहै कि मैंने इसका यह गुण सच्चे आदमीसे सुनाहै इसकेसिवा और लोग वर्णनकरते हैं कि इसपत्थरही में विषहोता और यह कोई कालेरंग का और कोई खाकी रंग का है जिस पत्थर में रेखा होती हैं वह भूल की औषधि है बाक़ी सब प्रकार इसके पथरी के लिये गुणदायक हैं ॥

(ख़िताब पत्थर) अर्थात् अबाबील का पत्थर यह दो पत्थर हैं जोउसकेघोसलेमें पायेजाते हैं सुर्ख़ और सफ़ेद तो जो मनुष्य स्वप्न मेंभयमानहो उसको लालपत्थर का पास रखना अति गुणदायक होगाऔर मिर्गीवालेको सफ़ेदरंगकालाभदै और कमज़बापको भी लाभ दे(सुज्जाज़ पत्थर) इसपत्थर को पालूमुर्गों के पोटेमें पातेहैं जो

*हुबारी [illegible] होताहै रंगउसका पीला और [illegible]

इसको मिर्गीवाले के बांधे तो तुरन्तही आरोग्य हो और बीर्य की
वृद्धिकेलिये अद्वितीय है कुदृष्टिके लिये तुरन्तही गुणदे जो लड़के
स्वप्नमें डरतेहैं जो उनकोंधरहानेपर उसकोरक्खें भय जातारहेगा
(रहीपत्थर) इसको फ़ारसीमें संगआसिया कहते हैं जो इसकानीचे
का टुकड़ा गर्भवतीस्त्रीके बांधे कभी गर्भपात न हो और जो प्रसूति
की पीड़ाके समय बांधे तो प्रसव में सुगमता हो जो उसको गरम
करके सिरका छिड़कें और फिर जिसमनुष्य के लहू जारी हो वह
उसपर बैठजाय तुरन्त लहू बन्दहोजावे और गर्मीकेशोथको गलाने
वालाभी है(सामूर पत्थर) यह उस प्रकार का पत्थरहै जो हरएक
पत्थरको छीलताहै लिखाहै कि जब दाऊदकेपुत्र सुलेमानने मक्केकी
नेव डालनीचाही शैतानको पत्थर के काटनेका हुकमदिया लोगोंने
उससमय पत्थरोंके कटनेका शब्दसुना और उसके शब्दसे घबरा-
कर चिल्लाये सो सुलेमान ने उल्मायनबीइसराईल को जिन्नोंसमेत
जमा किया और कहा कि तुममें से किसीको ऐसा उपाय स्मरणहै
कि शब्दहोने के बिना पत्थर चीराजावे उन्होंने कहा कि हमनहीं
जानते और यह भी कहा कि हां येजिनहै जिसका सहरनामहै और
वह आपके सामने विद्यमान नहीं है वह निस्सन्देह ऐसी विद्या
जानताहै यह सुनकर सुलेमान ने उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी
और उसने आकर विनयकी कि ऐसे पत्थर के काटने के वास्तेएक
प्रकारका पत्थर है जिसको मैं जानता हूं परन्तु जहां वह होताहै
वह नहींजानता हां एकउपाय मुझे यादहै तो कहा कि एकउक़ाब
पक्षी का घोंसला और उसका अण्डा ढूंढ़कर लाओ तो जिनों ने
तुरन्त सब संग्रह करदिया और एकप्याला सख़्त शीशे का बहुत
साफ़ मँगवाकर उक़ाब का घोंसला उसमें रख दिया और आप
अलग होरहे जो जब उक़ाब अपने घोंसलेके पासआया और घों-
सलेको शीशेके प्यालेमेंदेखा तो उसने चुंगलमारा पर कुछ असर
न हुआ इससमय वह किसी ओर गया दूसरे दिन आया उसकी
चोंचमें एकपत्थर था सो उसने उसपत्थरको शीशेपर रक्खा जिस

के रखतेही वहशीशा टेटूक होगया और किसीप्रकार का शब्द न हुआ सो हज़रत सुलेमानने उक़ाबपक्षीसे पूछा कि यहपत्थरकहांसे लाया उसनेविनयकी कि इसको पश्चिमके पर्वतसे लायाहूं जिसका नाम सामोरीहै तो हज़रत सुलेमान ने जिन्नोंकीसेना उधर भेजकर आवश्यकता के अनुसार पत्थर उठवा मँगवाये और पत्थर का कटना बिनाशब्दके शुरूहोगया(समपत्थर) यहपत्थर जज़े (अर्थात् सुलेमानी मोहर जो सफ़ेद और कालीहोतीहै) उसके सदृश होताहै और बादशाही कोषोंके सिवाय और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि किसी मनुष्य के पास विषहो और वह मनुष्य उस पत्थर के निकट हो तो वह पत्थर हिलता है अलीकेपुत्र वज़ीरनिज़ामुल्मुल्कने सैर मलूकनामी पुस्तकमें लिखाहै कि अब्दुलमुल्कके पुत्र सुलेमानने एक दिन कहा कि मेराराज्य दाऊदके पुत्र सुलेमां के राज्यसे कम नहीं परन्तु यही न कि सुलेमां को ईश्वरने जिन्न मनुष्य वायु और पक्षियोंका भी राजा बनाया था परन्तु मेरे पास जितने माल और हथियार हैं किसी बादशाह की भाग्य में नहीं उस समय सभा के विद्यमान लोगों में से एक मनुष्य ने विनय की कि एक ऐसी वस्तुहै जिसकी आवश्यकता सब बादशाहरखते हैं और वह चीज़ हज़रतके पास नहीं है तो अब्दुलमलिकके पुत्र सुलेमांने उस चीज़को पूछा उसने विनयकी कि वज़ीर बेटावज़ीर का जैसा कि तू ख़लीफ़ा बेटा ख़लीफ़ा काहै तो सुलेमांने कहा कि तू ऐसे वज़ीर को जानताहै उसने कहा हां बरमकके पुत्र जाफ़रने वज़ारत की पदवी को कुलकी थातीसे पाया और अर्दशेर के समय से उसके घराने में यह पदवी चली आतीहै बहुतसी उसके बड़ों की बनाईहुई वज़ारत की किताबें उसकेपासहैं सिवाय उसके और कोई तेरा मंत्री होनेके योग्य नहीं है सो सुलेमां ने बलख़के अधिपतिके नाम आज्ञा लिखी कि जाफ़र को दमिश्ककी ओर प्रतिष्ठापूर्वक भेजो चाहे लाख अशर्फ़ीं भी राह ख़र्च पड़ें तो जिस समय जाफ़र दमिश्कमें आया और सुलेमांके सामने पहुंचकर उसने परवा

चूमे तो सुलेमांने उसके स्वरूप को बहुत अच्छा पाया और अति आदर से अपने पास बैठनेकी आज्ञादी परन्तु थोड़ी देरमें सुलेमां ने मुंह खट्टा करके आज्ञादी कि मेरे पास से दूरहो और द्वारपालों ने ज़ाफ़र को आज्ञानुसार वहां से बाहर निकाल दिया लोगों को आश्चर्य हुआ कि इसका कारण विदित न हुआ निदान बादशाह ने एकान्तमें सभा होनेकी आज्ञादी उस समय एक मन्त्रीने विनय की कि हे महाराज ज़ाफ़र को खुरासां से बुलवाना और इतनी प्रतिष्ठाके साथ सभासद बनाना और घड़ी भरमें आंखों से दूर करना इसका क्या कारणहै सुलेमांने कहा यदि वह दूरसेआया न होता तो परमेश्वरकी सौगन्दहै कि उसको मारडालता क्योंकिजब वह मेरे साम्हने आया तो हलाहल विष अपने साथ रखताथा तो क्या अच्छी बात कि पहिले भेंट मेरे वास्ते वह हलाहल विष थी सो उस मंत्री ने कहा यदि आज्ञा दीजिये तो ज़ाफ़र को भी यह हाल बताऊं आज्ञा हुई कि बहुत अच्छा सो वह मनुष्य ज़ाफ़र के पास आया और वह सारा वृतान्त मुखपर लाया ज़ाफ़र ने कहा वास्तव में मेरेपास विषथा और इस अंगूठीके नगीनेके नीचे अभी मौजूद है इसकाकारण यहहै कि हमारे बाप दादोंपर बहुधा बादशाहोंने कोप किया और बहुतसे दुख कष्ट प्राणों पर उठाये तो मुझे यह भय रहा करता है कि ऐसा न हो कि जो हमारे बड़ों के साथ बर्त्ताव हुआहै वही हमारे साथभी हो इसलिये हरसमय यह विप विद्यमान रहता है कि जब ईश्वर न करे ऐसे दुःख में फसूं तो तुरन्त इस अंगूठीको चूसकर संसार छोड़दूं इस वृत्तांत को सुनकर वह मंत्री तुरन्त लौटा और सम्पूर्ण वृतान्त सुलेमांको सुनाया सुलेमां इस अयथार्थी का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुये और फिर उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और आदर पूर्वक अपने निकट स्थान दिया और आज्ञादी कि थोड़े तौक़ीयात लिखिये (तौक़ी उस बादशाही पत्रको कहते हैं कि कोपकी अवस्थामें लिखेजावें) जो जब एक समय बीता और ज़ाफ़र [illegible] से विनय

क्योंकि आपको किस तरह से मालूम हुआ कि मेरे पास विषहै सुलेमां ने कहा कि मेरे पास दो मोहरे यमन के मोहरे के सदृश हैं उनका गुण है कि अगर कोई विष लेकर किसी तरह पर सामने आवे तो वह मोहरे हिलेंगे तो जब तुम दरबारमें आये वह मोहरेहिले इस चिह्नसे हमने तुमको विषलियेहुये समझा और जबतेरे उठ जानेसे मोहरे शांतहुये तो मुझेअधिक निश्चय होगया कि निस्संदेह तेरे पास ज़हर था और सुलेमां ने दोनो मोहरे ज़ाफ़र को दिखाये (अयातीं पत्थर) अरस्तू ने कहा कि यह पत्थर सदा सुर्ख़ है इसका रंग याक़ूत के सदृश होता है और जब इसको तोड़ें तो भीतर से भी याक़ूतके रंगका होता है परन्तु यह बहुत साफ़ नहींहोता जब पानी में छोड़ें हरताल की तरह पीला होजाता है यदि इसको तीनबेर गलावें तो शिंगरफ की तरह लाल होजावे यदि एक भाग इसका चारभाग चांदी में छोड़ें तो सुर्ख़ सोना तय्यार हो (सर्फ़पत्थर) यह लाल रंग का पत्थर कुछ स्याही लिये होता है और फ़िरमां की धरती में पाया जाताहै इसको हजरलहमार भी कहते हैं जिसे शराबका नशा ज़ियादह हो या शिरपीड़ाहो कजलीकरके इसको पियें तुरन्तही आरोग्य होजायेगा बहुत इसको पीसकर शिंगरफ के साथ लिखते हैं लाल रोशनाई तय्यार होजाती है पर कुछ स्याही लिये (सनोबर पत्थर) अरस्तूने इस पत्थर को कमल वायु के लिये बहुत उत्तम लिखा है और इस पत्थरको अबाबीलके घोंसले में पाते हैं अरस्तूके सिवाय और मनुष्योंने लिखा है कि इस पत्थर के पानेके वास्ते यह उपायहै कि अबाबीलके बच्चोंको पकड़लें और उनके शरीरको केसरसे रंगदें और उनके घोंसलों में छोड़दें तो वह मालूम करती है कि मेरे बच्चोंको कामला होगया तो वह अपने बच्चों के इलाज के वास्ते यह पत्थर लाकर अपने घोंसलेमें रखतीहै—आगे ईश्वर जाने (चाजी पत्थर) शेख़ रईसके विचारमें यह पत्थर हाथी दांतके सदृश होता है जिस जगहसे लहू बहताहो जो इसकोघिस कर उस जगह पर इसका लेप करें तो तुरन्त बन्द होजावेगा इसे

पारसी भाषा में शकर संग कहते हैं और शीराज़ी भाषा में संग ज़ख्मबोलते हैं(असली पत्थर) शेखरईस का लेख है कि यह पत्थर हकाक के प्रकार से है अर्थात् जिस पर मोहर खोदी जातीहै जब इसकोघिसें तो इसकी तरी बहुत मीठी होती है जब इसको किसी बहुतमोटे आदमीके शरीर पर रक्खें पतला होजावेगा और नेत्रके घाव को गुण करे मुख्य करके मुर्ग़ के अंडे की सपेदी के साथ और नेत्रकी आरोग्यता के लिये लाभ दे (उक़ाबपत्थर) यहपत्थर छुहारे की गुठली के सदृश होताहै जब इसको हिलावें तो अन्दर से आवाज़ खटखटाहट की पाईजाती है यदि उसको तोड़ डालेंतो उसके अन्दरसे कुछ भी नहीं निकलता बहुधा उक़ाब पक्षीके घोंसले में मिलताहै और वह हिन्दुस्तान की धरतीमें होता है जब कोई उक़ाबके घोंसले की ओर मुख करताहै तो उक़ाब उन्हीं प्रकारके टुकरों को लोगोंकी ओर फेंकना आरम्भ करताहै कि लोग उसको लेकर अपनारस्तापकड़ें मानों उक़ाबको इसबातकानिश्चय होगयाहै कि जोलोग उसकेघोंसले कीओर ध्यानकरतेहैं वहकेवल उन्हीं पत्थरोंको ढूंढ़ने आतेहैं इस पत्थरकेगुणमेंलिखाहै कि गर्भवती स्त्रियों के बांधना प्रसूति की पीड़ा में गुणकरे जोकोई मनुष्य इस पत्थरके टुकड़ेको जिह्वाके नीचे रक्खे शत्रुपर प्रबल होगा और जिस मनुष्यसे जो मांगे वह देगाऔर बहुधा इस पत्थरके टुकड़ेको करगस के घोंसलेमेंभी पातेहैं (क़मरपत्थर) इसको बज़ाकुलक़मर और ज़ब्दुलबहरभी कहते हैं शेख रईस ने लिखा है कि यह पत्थर पश्चिमकी धरतीपर महीने के आरम्भ में पाया जाताहै यह पत्थर बहुत हल्का होताहै इसकागुण यहहै कि इसको पासरखने से मिर्गी नाशहोतीहै जो वृक्षपर लटकावे बहुत फलेगा शेखके सिवाय और लोगोंनेकहाहै कि यहपत्थर सफ़ेदरंगका बहुत साफ़होताहै और उसके अन्दरभी सफ़ेदी पाईजातीहै और वह सफ़ेदी महीनेकेबढ़ने पर बढ़तीहै और घटने पर घटती जातीहै हिन्दुस्तान के चारोंओर एकप्रकार का ऐसापत्थरहोताहै कि चंद्रग्रहणकेसमय उससे पानी

टपकताहै उसकोभी हजरुलक़मर कहते हैं (फ़ारपत्थर) पश्चिम की धरती में चूहे के सदृश एक पत्थर होता है बहुधा लोग उसको अपने मकान में रखते हैं तो तुरन्त सब चूहे उस घरके उसकेपास इकट्ठे होते हैं और मनुष्य के पास आने से भी भागते नहीं उसी समय मनुष्योंके हाथसे मारेजातेहैं निदान उसधरतीमें यहपत्थर का टुकड़ा बहुत काम आता है क्योंकि वहां बिल्लियां नहीं हैं (क़ैर पत्थर) अरस्तू के विचार में इस पत्थर को पश्चिमीय धरती पर पातेहैं उस स्थान के निकट जिसको सिकन्दर ने बनाया था इस पत्थर का काला रंग होता है और बहुत सख़्त जो इस पत्थर के टुकड़ेका एक खंड जो एक हज़ार खंड की (अर्थात् वह तेल जो दरज़ोंके बन्द होने के लिये जहाज़में लगाते हैं वाज़ोंने उसे राल लिखाहै) पर डालें तो तुरन्तही उबाल खायेगा जिस तरह कोई चीज़ आगपर पके यदि ऐसी नदीके किनारे जो बहुत सख़्त और तेज बहतीहो डालदें तो वह नदीवहांसे हटकर दूसरीओर जावेगी (असलीपत्थर) यह पत्थर मिसर की धरतीपर पाये जाते हैं जब मनुष्य अपने हाथमें लेताहै उसे मूर्च्छा आजातीहै और जो वस्तु उसकेमेदे (अर्थात् पकाशयमें होतीहै क़ै होजातीहै यदि इसपत्थर को अपने पाससे अलग न करदेवे तो मृत्यु का भयहै अलकलब जो पत्थर कुत्ते को मारें और कुत्ता उस पत्थर के टुकड़े को दांतों से उठा ले उसी को कलब पत्थर कहते हैं यदि उस पत्थर को मद्यमें घिस कर किसी को पिलावें वह मनुष्य लड़ाई पर तय्यार होजावे या अगर एक समूह उस मद्य को पीलें तो उन सब में परस्पर युद्ध और बैर होजावे (लबनीपत्थर) जिस समय इस पत्थर को जल में छोड़ें तो वह पानी दूध होजाता है परन्तु उसका रंग मटियाला और मीठे स्वाद का होता है सूजन को गुणकारक है और सुरमा इसका आंख से कीचड़ निकलने को दूर करनेवाला और रोकनेवाला है और आंख के घाव को गुणदायक है (मलर पत्थर) इस पत्थर को तुर्कसे लाते हैं वह कई तरहका होताहै और इसके कई रंग होते

हैं यदि पानी बरसानेवाले कुछ देर इस पत्थर को जलमें रखदें तुरन्त बादल आजावे और फुहार बरसनेलगे बहुधा ऐसा होता है कि पानी जोरसे बरसताहै और ओलेभी पड़ते हैं एकमनुष्य वर्णन करता है कि एक वज़ीर ने इस पत्थरके टुकड़े का गुण देखनाचाहा तो एक तुर्कके रहनेवाले मनुष्यको आज्ञादी कि हमारेसाम्हने इस पत्थर का गुणदिखा तो उस मनुष्यने एक तसले में पानी भराकर उस प्रकारका पत्थर का टुकड़ा उसमें डाल दिया थोड़ी भी देर न हुईथी कि बादल आया और जल बर्षने लगा (नाक़ा पत्थर) यह पत्थर उस स्थानपर मिलता है जहां ऊंट चरा करता है यदि इस पत्थरको किसी पशुपर बांधें तो जो चीज़ उस पशुपर सवारहोकर कोई पिये उसका स्वाद मालूम न होगा यदि इस पत्थर को किसी दीवाने आशिक़ अर्थात् प्यारकरनेवाले के दण्ड पर बांधदें तो तुरन्त उसकीप्रीति दूरहोगी और अपने होशमें आजावेगा (हिन्दीपत्थर) अरस्तू के विचार में यह पत्थर सूराखदार होता है और सूराख इसके पीले और सपेद होते हैं जलन्धर रोगी के उदरपर रखने से उसके पेट का पीला पानी बिल्कुल चूस लेता है और तमाशा यह कि जो उस पत्थर को तोलाजावे तो जितना पीला पानी रोगी के उदर से चूसलिया है उसका भार इस पत्थर में अधिक होजाता है जहां बाल न निकलें इसको काम में लावें तुरन्त प्रकट होजावेंगे (त्वोलदफिलूइन्सां) यह पत्थर मनुष्य के उदरमेंसे उत्पन्न होता है अरस्तूने लिखा है कि यदि इसका सुरमा बनाकर लगावें आंख की सपेदी नाशहो (त्वोलदफिलमाइलराकद) अर्थात् यह पत्थर जो बँधेहुये पानी जैसे कि तालाब आदि में पैदा होता है अरस्तू के विचार में इस पत्थर को घिस कर नाक में टपकाना मिर्गीवाले और दीवाने को गुणकारी है (यहूदीपत्थर) [illegible] रईस ने लिखा है कि इसपत्थरको [illegible] कहते हैं [illegible] से कुछ बड़ा होता है और उसपर बहुत रेखा होती हैं बहुधा यह पत्थर गोल और चौड़ा [illegible] [illegible] का होता है गुरदे की सख्ती और पथरी को गुण

करे और मूत्ररोध और मन्दाग्नि को अति लाभदायक है इस शर्त पर कि आधामिस्काल अर्थात् पौने दो माशे गर्म पानीके साथ पियें परन्तु चोर्व्यको काटताहै इसके सिवाय और लोगोंने कहा है इस पत्थर को मरबांत नदी के किनारे पाते हैं और यह पत्थर हरदिन अपनी खानिमें हिलता रहताहै परन्तु शनिश्चरको स्थिर रहता है इसीलिये इसका नाम संग यहूदी है इसका गुण यह है यदि इसको जलमें घोसकर पियें पथरी तुरन्त टुकड़े २ होजावेगी यदि इस पत्थरके कई टुकड़े किसी जगह पर थोड़े दिनों के वास्ते रखदें तो चालीस दिनके पीछे संख्या में अधिक होजावेंगे (यकूम अलहमापत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ऐसा हल्का होता है कि पानीपर तैरा करताहै और रातको बिल्कुल पानी से ऊपर निकलताहै और नामको थोड़ा सा जलमें रहताहै और जब सूर्य्य निकलताहै तो सबपानीमें होजाताहै थोड़ासा बाहर निकलारहता है और इस पत्थर में यह गुणहै कि जो मनुष्य अपने साथ रक्खे उसके सवारीका घोड़ा कभी आवाज़ न देगा जब कभी सिकन्दर रूमी रातके धावेकी इच्छा करता था इस पत्थर को सब साथियों के पास बंधवा देता था (ज़िहुलसाबिक़) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर और उक्त पत्थर दोनों एकही जगह पर हुआ करतेहैं परन्तु यह उसके विपरीतहै ज्यों२ सूर्य निकलताहै त्यों२ यह पत्थरभी निकलना शुरूहोता है और जब आकाश बादल से घिराहो उस दिन यह पत्थरबिल्कुल जलके अन्दर छिप जाता है और इसका गुण यहहै कि जिस घोड़े आदि के बांधें वह सारादिन और रात चला करेगा (सरलियूंपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर सोने और चांदीकी खानोंमें होताहै रंग उसका कभी पीला कभी लाल कभी सब्ज़ कभी काला होताहै और जिसमें चारोंरंग होंगे वहसब से उत्तम होगा पीले रंगका तो सोने चांदीमें मिलताहै और काला चांदीमें इन प्रकारोंमें एक उत्तम पत्थर होता है जिसमें चांदी और सोना और तांबा मिलाहो और वह पत्थर इन्हीं धातुओं की भांति

से उत्पन्न होता है यदि इस पत्थर को सात जौ के बराबर घिस कर दो रंगे मुर्गे के पित्ते के पानी में घोलकर पियें और टेढ़ी हुई हड्डियों की जगह पर उसका मर्दन करें हड्डी अपनी जगह पहुंच-कर सीधी होजावेगी यदि इस पत्थर को सात जौ के अनुमान लेकर पीसें और पारेकी भस्म में मिलाकर तांबे पर डालें तो वह तांबा चांदी होजावेगा(हिरस) अरस्तू ने इस पत्थर को पीला रंगका सपेदी और सब्जी मिलाहुआ हलका और नरम लिखा है बहुधा यह पत्थर पश्चिम की धरती में होता है इस के गुण में लिखा है कि सब डंक मारने वाले जानवरों के विष को दूरकरता है(हूसाय)यह लोहे के मैलसे है अरस्तू ने लिखा है कि गर्म क-रने और कूटने के समय लोहे से यह पत्थर सा अलग होता है इसको खुब्सुलहदीद कहते हैं इस के अद्भुत गुण हैं कि बवासीर और नानाप्रकार के घावों के अच्छा करने में आज़माया हुआ है और मन्दाग्नि और विलम्ब में भोजन के पचने को गुणकरै और पक्काशय को बलदेता है और बवासीर को बहुत गुणकारक है (खुब्सुलतैन) अर्थात् गुल की मैल अरस्तू ने लिखा है कि जब कोई बरतन बनाकर आग पर रखते हैं तो हर बरतन से तरी शहदकी तरह पर टपकती है और वही पत्थर सी होजाती है गुण उसका यहहै कि रंगरेज़ लोग उसको सिरकेमें पीसकर कपड़ों को काला रंगते हैं और यह पत्थर चारपायों के घावों के वास्ते चाहे वह कहीं घावहो बहुत गुणदायक है (खुलियेइबलीस) यह पत्थर मिसर की धरती में मिलता है जिस मनुष्यके पास हो उसके गिर्द कभी चोर न आवेंगे और उसकी प्रतिष्ठा हर एककी दृष्टिमें होगी (दुरदरयायजोशिन्दा) अरस्तू ने लिखा है कि उक़्यानूस दरिया जो कि संसार को घेरेहै और उस दरिया को मसलूक दरिया घेरे है और मसलूक उस दरिया को कहते हैं जहां गोतेखोर मोती नि-कालने के लिये गोता लगाते हैं और यह दरिया बसन्त ऋतु में जोश मारता है और इस में तीक्ष्णपवन के झोकों से बहुत उपद्रव

होताहै सो इसवायु के उठतेही मसलूक दरियाकी सीपें दरिया से ऊपर आजातीहैं और हवा के झोकोंसे इस दरियाके पानीकी छींटें मसलूक दरियामें गिरतीहैं जिसको सीप मनुष्य के बीज के सदृश अपने उदर में धारण करती है और दरिया में जाड़ रहती है और वह वीर्य्य मांस और जल से मिलकर बड़ा होता है जितनी बड़ी बूंद सीप के मुंहमें जातीहै उतनाही बड़ा मोती बँधता है जब कि सीपके मुंहमें बूंद गिरती है सीप दरियाकी गहराई से निकल कर पानीपर आजातीहै परन्तु सूर्यके उदय और अस्तहोने और दक्षिणीय पवन के चलने के समय परन्तु जब दोपहर हो तो जल के अन्दर चली जातीहै क्योंकि जब सूर्य्यकी गर्मी अधिक होतीहै तो मोती ख़राब होजाताहै तो जब सुबहको सीप निकली है तो अपने मुखको दक्षिण की हवाके सामने खुला करतीहै कि उस बायु से उसका मोती साफ़ और सुघराहो इसलिये दक्षिण की पवन और सूर्य्यकी गर्मीसे जमताहै जिस तरह स्त्री के उदर में बच्चा बढ़ता है और जो उस सीप के पेटमें पहिलेका खारी पानी बाक़ी होताहै तो मोती पीली रंगतका या ऐसा कालाहोताहै जिसको अलग नहींकर सके और जो नहीं होताहै तो मोती बहुत साफ़ होताहै और इसी तौर पर जो दोनों उक्त समयों के बिरुद्ध अर्थात् प्रभात और संध्याके सीप दरियाकी गहराई से बाहरको निकले तौभी उसका मोती बदरंग होजाताहै और जो बहुधा मोतियों में कीड़े या मोती बीचसेखोखले दिखाईदेतेहैं इसकाकारण यहहै कि जबबहुधा सीप दरिया की गहराई में जाती है तो उसकी पेंदी में मज़बूत बैठती है और फिर वहांसे उभरती नहींहै यहांतक कि उसमेंसे घासकी तरह जड़ें निकलीहैं और सीपका जीव जाता रहता है यदि ग़ोतेख़ोर उस दशामें बहुत समयके पीछे उसको बाहरलावें तो ज़रूर उसका मोती ख़राब और ऐबदार होताहै जैसा कि मेवाका हालहै कि जो पकनेके पीछे वृक्षसे तोड़ा न जाय तो कुछ दिनोंकेपीछे वहउसी वृक्ष में सड़ जाता है अरस्त के सिवाय और बुद्धिमानों का बचनहै कि

उक़यानूस दरियामें एकजगह पारे की तरहपर पानीहै और जिस बूंदसे कि मोतीपैदाहोताहै वह उसीपानीकीबूंदें हैं जो हवाकेझोंकों से सीपके पेटमें जातेहैं और मोतीबन जातेहैं तो जब मोती सीपके पेटमें पूर्ण होजाताहै दूसरीजगह सीप जातीहै और वहां पहुंचकर थोड़ेदिन रहतीहै फिर वहांसे वहरैन (वह नद रूमऔर शाममेंहैं) की तरफ़ झुकती है और उसके वहरैनमें आनेका मुख्य समय होता है कि लोग मालूम करलेतेहैं कि अब सीपों का समूह आपहुंचा सो उस समय ग़ोतेख़ोर गोता लगाते हैं और सीप को निकालते हैं तो जो लोग नियमित समयपर ग़ोता लगाते हैं वह मोती बहुत साफ़ और सुंदर पाते हैं और जो कम या ज़ियादह वक़्में ग़ोता लगाते हैं तो मोती ख़राब होजाता है अरस्तूने मोतीके स्वभावमें लिखा है कि खफ़क़ान अर्थात् उन्माद रोग को बहुतही जल्दी गुण करता है और हृदयके रुधिरको साफ़करता है और इस सबबसे बहुधा हकीम मोती को सुरमे की ओषधियों में मिलाते हैं कि आंखों के पट्टे बल पहुंचे यदि बरसके रोगीको मोतीके पानीसेमलें जो ईश्वर चाहे आ-राम होजायेगा (धनज) पारसीमें इसको दहाना कहते हैं अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सब्ज़ है हुरमुमने लिखा है कि यहपत्थर तांबेकी खानि में पाया जाता है और इसका वर्णन इस तरह है कि जबहवाकी गर्मी और ज़मीनकी भाफ़ तांबेको उसकी कानमें पकाते हैं तो उससे भाफ़ निकला करती है और इस भाफ़ का निकलना उस गन्धक के गुणसे है जो कि पृथ्वी में होती है सो वह भाफ़ ऊंचे होकर एक दूसरे पर जमा होजाती है और जब वायुका स्वभाव ब-दल जाता है तो वह भाफ़ जमाहोकर धनज बनजाता है यह पत्थर कई प्रकार का होता है बाज़ा बहुत सब्ज़ होता है और कोई मोर-पंखके सदृश और बहुधा सबरंग एकही धनजमें प्रकट होते हैं जिस तरह कि ज़बरजद जो एकप्रकार का पत्थर सब्ज़रंग ज़र्दी लिये है और उसका सुवर्ण से सम्बन्ध है उसीतरह पर धनज का सम्बन्ध तांबेसे है और यह कानकी भाफ़से अपने आप पैदा होता है और

यह पत्थर हवाकी सफ़ाईसे साफ़ होता है और हवाके मैले होनेसे मैला होताहै इसके स्वभावमें लिखाहै यदि बिच्छू के डंकके घाव पर मलें तो गुणदायक होगा यदिकोई यह पत्थर घिसाहुआ पिये तो फिर कोई बिष अपना अवगुण न करेगा यदि सिरके में घिस कर दादपर लगावें तो गुणकरे और सब घावोंको उपयोगी है यह आंखकी ओषधियोंमें भी काम आताहै आंखकी सपेदीको दूरकर-ताहै और यन्त्र बनाने से बीर्य्य अधिक होताहै (दीमाती) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बहुत कालेरंगका होताहै बहुधा नदीमें पाया जाताहै इसे जलाकर पारेके साथ खरल करें तो पाराबँधजाता है यदि इसको अबरक पर लगाकर आग दिखलावें तो अबरकपानी की तरहपर होजाताहै(रुख़ाम) यह मशहूर पत्थरहै अरस्तूने लिखा है कि जो यह मनचाहे कि स्त्री गर्भवती न होतो इस पत्थरको घिस कर एक टंक उसको पिलावें कभी गर्भ धारण न करेगी बलीनासने अपने स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै कि रुख़ामके अन्दर कीड़ेहोते हैं जो उनकीड़ोंमेंसे दो तीन लेकर किसीकपड़े में लपेटकर स्त्रीकीभुजा पर बांधदेवें तो कभी गर्भधारण न करेगी (ज़फ़्ती) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ज़फ़्त (अर्थात् वह काली गोंद जो चीड़केवृक्षसे मिल-ताहै)केसदृश कालाहोताहै और तोड़नेपर शीशेकीतरहपर टूटजाताहै बहुधा पश्चिम की धरतीमें से निकलता है इसका स्वभाव लिखा हैकि जो पीसकर तेलके साथ नाकमें टपकावें कोढ़ और पीले पानी का निकलना बन्द करताहै और ज़ख्मों को साफ़ करताहै (रेवस) अरस्तू ने कहा है कि इस पत्थर को अख़ज़र नद के निकट पाते हैं इसका गुण अद्भुत है कि यदि मनुष्य इसको अपनी उंगली में पहने तो शोक और दुःख उसका नाश होजाय (ज़ाजात) अर्थात् फिटकरी इसके सम्पूर्णप्रकारों की उत्पत्ति मट्टी और पानीके भागों से होतीहै जब मट्टी के भाग पानीसे मिलते हैं तो चिकनाई पैदा होती है सो गलने के लायक़ होजाती है और इसी कारण नमक गन्धक और पत्थर के कण उसमें पाये जाते हैं तो जो कि उसमें

मट्टी और पानी के भाग उजले हुयेहैं इसीलिये उसमें नमकपाया जाता है और जोकि गर्मी से पककर चिकनाई को प्रकट करती है गन्धक भी है और जोकि सूर्यकी गर्मीसे पानी और मट्टी आपसमें मिलगये इस सबबसे पत्थरसी है रहा रंगका लाना प्रकार का होना तो यह खानिके स्वभावके अनुसारहै कई लोगों के विचार से इसके सर्व्व प्रकारों की उत्पत्ति मरेहुये पारे और सब्ज़ रंग की गन्धकसे है और फिटकरीका रंग सुर्ख़,सब्ज़,पीला, सब्ज़पीलाऔर सफ़ेद होताहै सुर्ख़को सूरी कहतेहैं और यह सर्व प्रकारों में उत्तम होतीहै और कैरसकी ओरसे लातेहैं सब्ज़को कलक़तार कहते हैं इसका स्वाद मीठाहै और पीली एक प्रकार की रोशनाई है जब इसको तोड़िये उसके अन्दरसे गोंद ऐसा निकलताहै और यह भी बहुतअच्छीहोतीहै और रँगरेज़ों और जूताबनानेवालोंकी फिटकरी वहहै जिसमें तोड़ने से आंखें ऐसीदिखाई देतीहैं और सबसे उत्तम सफ़ेद फिटकरी होतीहै जिसे जरजान और तबरिस्तान से लातेहैं इसकागुण यों लिखाहै कि शिरके घाव और खुजली और नासूर और नकसीर को गुणकारक है और जो मुंह दांत और नाक में अकलेकी बीमारी होतीहै उसको भी गुणकरे जब फिटकरीकी धूनी देवें उसकीगन्ध से चूहे और मक्खियां भागतीहैं अब उसके हर-एक रंग और प्रकारों के गुण लिखे जाते हैं (ज़ब्दुलबहर) शेख़-रईस ने लिखाहै कि ज़ब्दुलबहर कईप्रकार का होताहै फ़ारसी में इसको कफदरिया(समुन्दरफेन)कहतेहैं बाज़ उनमेंसे फितरकीतरह पर होताहै जो बालों के गिरजाने में नूरेका गुण रखताहै झांई को भी उपयोगी है और बाज़ी अस्फंज के सूरतकी मोटीहोती है और उसकी गन्ध मछलीकी गन्धसी आतीहै यहदरिया के किनारे ब-हुतमिलती है और दांतोंको खूबसाफ़ करती है और एकप्रकार का नाम दुर्दीहै कि पांवकी रगकीपीड़ा और तिल्ली और जलन्धर को गुणदायकहै शेख़ के सिवाय और मनुष्योंने कहाहै कि सिरकेमें मि-लाकर बालखोरेपर लगाना बहुतहीलाभदे इसमें अद्भुत गुणयहहै

कि बाल निकालतीहै और गिराती भी है और त्वचा के रोग जैसे झांई छीप आदि सबको गुणकरे परन्तु ऐसे स्थान पर नाम और रौगनन अर्थात् गुलाबतेलसे काममें लानी चाहिये और जलन्धर मूत्ररोधको लाभकरे बाज़ोंकेविचारमें इसका स्त्रीकीरानमें लटकाना प्रसूतिकीपीड़ा में सुगमता करताहै यदि साढ़ेतीनमाशे के अनुमान दस रतिल अर्थात् पांचमन खारीपानीमें छोड़ें और उबालें तौवह पानी तुरन्तही मीठा होजायेगा (ज़िजांज) अर्थात् कांच अरस्तूने लिखाहै कि यह कईप्रकारकाहोताहै बाज़े इनमेंसे रेतहोते हैं कि जिनके नीचे आगजलाकर उसमें मुग़नीसिया पत्थर डालतेहैं और उसको इकट्ठा करके एक टुकड़ा बनातेहैं और एक प्रकार यहहैकि संगरेज़ा और संग क़लीको आटाकरके और उसको गलाकर ऐसे सांचेमें छोड़ते हैं जो कि आग पर खूब गरम होरहाहो फिर आग पर से उतार कर हवामें रखतेहैं और धुयेंसे बचातेहैं क्योंकि उसको उस समय धुवांलगजाय तो तुरन्त टूटजावे और कोई उससे अर्थ सिद्ध न हो और जो रंग कांचमें छोड़ें पकड़ लेताहै क्योंकि उसमें नरमी बहुत होतीहै कहते हैं कि यह पत्थर कुल पत्थरोंमें अहमक़ होताहै जिस तरहसे बाज़े मनुष्य अहमक़ होतेहैं क्योंकि हरमनुष्य का रंग पकड़ लेताहै शेख़रईसने लिखाहै कि यदि कांचको पारके साथमलें तो दांतों में चमक लाताहै और बालोंको उगाता है आंख में लगानेसे आंखकी ज्योतिकी वृद्धिहोतीहै और सफ़ेदी उसकीदूर होतीहै बलीनासने अपने स्वभावके पुस्तकोंमें लिखाहै यदि कांचको घिसकर ऐसे बरतन में छोड़ें जिसके अंदर कुछ शराब और पानी मिलाहुआहो तो पानी शराबसे अलगहोजाताहै और इसकी परीक्षा बहुत सुगमहै (जरबेख) अर्थात् हरताल अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर प्रसिद्धहै इसके रंगके बहुत प्रकारहैं लाल पीला और ख़ाकी प्रसिद्ध हैं सुर्ख़ और पीलारंग देखनेमें सोना मालूम होताहै यदि चूनेके साथ काममेंलावें बालोंके दूरकरने में बहुत तेज़है और छाहलह बिषहै जो मनुष्य हरतालको आगपर रखकर सफ़ेद करे

ओर तांबेके पतरमले तांबा सफ़ेद होजाताहै और तांबेकी गन्धभी जाती रहतीहै जो हरतालको आगमें जलावें और दांतोंमें मलें तो गुणकरे और दांतोंके सम्पूर्ण रोगदूर होजाते हैं अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि सब प्रकार के घावोंको अच्छा करती है और जो थोड़े ज़ैतके तेलमें मिलाकर शिरमें डालें तो सब शिर के जुयें मरजाते हैं और गुलाब तेलके साथ बवासीर को बहुत लाभ करे यदि मनुष्य अपने शरीर पर मर्दन करे कि बाल दूरहों तोयह डर है कि झांईके दाग दिखाई न दें तो चाहिये कि इस औषध के सेवन के उपरांत चावल और गोखरू पीसकर सम्पूर्ण शरीर में उबटनकरे कि उसकी तेज़ी दूरहोजावे पीले हरतालकी गन्ध से मक्खियोंकी मौतहै और जो इसको किसी प्रकारके रसमें छोड़कर मक्खियों के साम्हने रखदें तो भी मक्खियों के वास्ते हलाहल है (ज़मुर्रद) इसे जबरजदभी कहतेहैं अरस्तू लिखताहै कि ज़मुर्रदएक प्रकारकापत्थरहै जो सोनेकी खानिमें पैदाहोताहै इसकारंगसब्ज़ा और साफ़होताहै और जो ज़मुर्रद कि बहुतसब्ज़होताहै और जिस का ज़ौहर बहुत साफ़होताहै वह ज़मुर्रद काले रंगसे बहुत उत्तम होताहै इसकेस्वभावमें लिखाहै कि जो इसकोपानीमेंघिसकरपियें तो विषके कीड़ोंके विषसे छुट्टीपावें और जबकि विषने अपनाप्रभाव न कियाहो और मांस इधर उधर गिरा न हो तो तीनजौ के अनुमान घिसकर पीना गुणकारी होगा ज़मुर्रदकी ओर दृष्टि दौड़ाना नेत्रकी ज्योति को अधिक करताहै जो मनुष्य ज़मुर्रद को हाथ या गर्दनमें रक्खे मिर्गीकी बीमारी से छुट्टीपायेगा किन्तु जो इसरोगके उत्पन्न होनेके पहिले यह क्रियाकरें तो बहुत उत्तमहै और इसकेपास रखने से भूतप्रेत भागते हैं इसी दृष्टिसे बादशाहों ने अपने हाथमें इसका रखना गुणकारी समझा है इब्नमासूया ने लिखाहै कि लहू निकलने और अतीसारकेवास्ते लाभकारकहै यदि सर्पकी दृष्टि ज़मुर्रदपर पड़ जाय तो उसकोतुरन्त ढलकेकी बीमारीहो और अंधाहोजाय (ज़ंजार इसे फ़ारसी मेंज़ंगार कहतेहैं अरस्तूके विचारसे इस पत्थरको तां

और पीतलकी खानिसे निकालतेहैं यहपत्थर बहुधा सिरकेके साथ नेत्र रोगमें सेवन किया जाताहै नाखूना (अर्थात् वह सपेदीलिये मांस नाखून के सदृशहो और नेत्र को अन्धाकरे) और सफ़ेदी और खारिश और ढलका और कमज़ोरी और नेत्र के रोगों को गुण करे और घाव के बदगोश्तको नाशकरे अरस्तूके सिवाय और लोग कहतेहैं कि ज़ंग दो प्रकारका एक खानिका दूसरा बनाया हुआहोताहै परन्तु खानि का बहुत उत्तम होताहै और खानिवाले को तांबे की खानिसे निकालता है और मोम रोगनके साथ ख़ारिश कोढ़ और झाईकेवास्ते लाभकरे यदि उसकाअरक़ नाकमें बनाकरटपकावें तो बदबूदूरकरदे यहउचितहै कि पहिलेसे मुंहमें पानीभरलें कि उसके गर्द न पहुंचे और २ औषधियों के साथ आंखकी सफ़ेदी दूर करने में शीघ्रही गुणकरे और बवासीर की बीमारी को भी गुणदायक है (ज़ंजफर) इसे फ़ारसी में शिंगरफ कहते हैं अरस्तू ने लिखा है यदि पारेको शीशेमें रखकर जोश दें और देग का मुंह बहुत मज़बूत और कपरमिट्टी करदें तो उसीसे शिंगरफ पैदाहोता है और उसकी सफ़ेदी ज़र्दीसे बदल जातीहै यहांतक कि सुर्ख़ होजाताहै जो ईश्वर चाहे कहीं जोशदेने के समय देगका मुखटूटजावे और उसका धुआं मनुष्य के शरीरमें लगजाय तो ऐसाकठिन रोगहोगा कि वह उससे मरजाय अरस्तू के सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि शिंगरफ दो प्रकारका एक खानी और दूसरा बनायाहुआ होताहै सो खानिका तो गन्धक गिरने से पारे की खानिमें पैदा होताहै और बना हुआ वहीहै जो अरस्तू ने अपने ऊपर लिखीहुई क्रिया में लिखाहै उसका गुण यों है कि बुरेमांस और जलेहुयेजोड़ और कीड़े खायेहुये दांतों और २ विषों के लिये बहुत गुणदायक है (सैज) अरस्तूने लिखा है कि पत्थर हिन्दुस्तान से आता है बहुत कालेरंग का और बुरीक़ अर्थात् चमकदार होता है और नरमी इतनी होतीहै कि और पत्थरों से जल्दीटूटजाताहै जब मनुष्यके नेत्रकीज्योति कमहोजावे तो इसपत्थरकी ओरदृष्टि करना बहुत गुणकारीहै और इसीप्रकार ढलकाचाले

को भी गुणदायक है आंखोंसे पानी उतरने का पूर्वरूप यह है कि मनुष्यको अपने आप अपनी दृष्टि के साम्हने मक्खियां या कीड़े उड़ते हुये मालूमहों तो जब यह तमाशा दिखाई देनेलगे तो अवश्यहै कि मनुष्य हमेशा सैजको आंखोंके साम्हने न रक्खे जो ईश्वर चाहे तो यह रोग दूरहोजायेगा यदि सैजका यन्त्र बनावे तोउसको दृष्टि कभी प्रभाव न करेगी और उसको घिसकर आंखों में सुरमा लगाना भी लाभदायक है यदि शिर में यन्त्र बनाकर लटकावे तो शिर पीड़ा दूरहोगी (सिलशीश) अरस्तूने कहाहै कि यह पत्थर हलका और खालीहोताहै जब उसमें हाथ लगावे तो ऐसा मालूम होताहै कि मानों इससे वायु निकलतीहैं और जब पवन अति प्रचण्डता पूर्बक नदी की लहरों पर जाती है तो यह पत्थर उस हवा और पानीके कफसे पैदाहोता जो मनुष्य इस पत्थरको तीनरत्तीके भी बराबर अपने साथ रक्खे तो शत्रुसे बचारहेगा (संबादज) अर्थात् कुरण्ड अरस्तूके निश्चय में इसकी उत्पत्ति द्वीपान्तरोंमें है और यह पत्थर सख़्त रेतकी तरह पर होताहै और उनमें छोटेबड़े भी होतेहैं लिखाहै कि जो सम्वादज को जलाकर सुरमा बनाकर लगायें तो पुराने घाव भरआवें और उसका मंजन दातों को साफ़ करता है (सताज़ंज) इसे हजरुद्दम और दरख़्तमिसमैल भी कहते हैं यह भी दो प्रकार का खानी और बना हुआ होता है जब मिक़नातीस पत्थर को जलाते हैं तो वह बनाहुआ होजाता है परन्तु लोहा खींचनेकी ताक़त नाश नहीं होती हां एकबात होतीहै कि बाज़े नर होते हैं और बाज़े मादा जो नेत्रके लिये बहुत गुणकारीहै किन्तु नेत्रकी हरएक बीमारी को गुणकरे मुख्यकरके आंख की स्फ़ेदी और पलकों की सख़्ती और मांस की अधिकता को जो शराब में मिलाकर सेवन करें तो अधिक मूत्र के आने और स्त्री के ऋतु के रुधिर के बहुत जाने को तत्काल गुण दायक है (शब) अर्थात् फिटकरी बहुत प्रकार की होती है इसको ज़ाजविल्लोर भी कहतेहैं देसीकोरेदस कहता है कि सब प्रकारों में उत्तमप मानी है

जो सफ़ेदरंगकी पीलाई लिये और खट्टीहोतीहै कहतेहैं कि शबय-मानी पहाड़से टपकतीहै और वह पहाड़ यमनमेंहै और वह पसीने की तरह टपकतीहै जब जारी होकर पृथ्वी पर गिरतीहै फिटकरी होजाती है लहू चलने को बन्द करतीहै यदि सिरकेकी तल छटके साथ उसको पिये तो कठिन२ घावोंको भरे यदि सिरके और शहद में मिलाकर कुल्ली करे तो हिलते हुये दांतों को दृढ़ करतीहै और प्रचण्ड ज्वरोंका नाश करतीहै मुख्य करके लड़कों के वास्ते बहुत उत्तमहै अरस्तूके विचारमें यह पत्थर सपेदरंग सुर्खी लियेहै कहते हैं कि रंगरेज़ लोग पहिले कपड़े को इसके रसमें भिगोते हैं और कारण इसका यहहै कि इस क्रियाके उपरान्त जिस रंगपर कपड़े तय्यार करें उसकारंग मज़बूत और पक्का होजाता है शेख़रईस का विचारहै कि फिटकरीज़फ़्त (अर्थात् वह कालीगोंद बहुतचिपकाने वाली जो सनोवरकेवृक्षसे पाईजातीहै)के साथ जहांकहींरक्खें वहां की मक्खी और मच्छड़ दूर होजायँगे और जूं भी मारडालती है और मुख और बगलकी गन्धको भी दूर करतीहै और इसकापानी नमक के साथ आगसे जलेहुये को लाभकरे इसके जोशां दे अर्थात् काढ़े का रस दांतों की पीड़ाको ठहराता है और यदि रांगे के खोल में फिटकरी को रखके नाभि पर बांधे तो कुलंज अर्थात् पहलू की पीड़ा कभी न होगी (सदफ़) अर्थात् सीप प्रसिद्धहै कि कई इनमें मीठे समुद्र में होती हैं और बाज़ी खारी समुद्र में पहली दूसरी से उत्तमहोतीहै उसका गुणयहहै कि कांटेआदिको जोड़मेंसे निकालती है यदि इसकोपीसकर लेपकरें तोपांवके रगकीपीड़ादूरहो और जो सिरके में पीसकर नाक में टपकावें तो नकसीर का लहू बन्द हो और पीनेसे मेदे अर्थात् कोष्ठकी बीमारियां दूरहों इसका रुधिकर दीवाने कुत्तेके घावपर गुणदायक है और जलीहुई सीप का मञ्जन दांतों को साफ़करे यदि आंखों में बाल बहुत उगें तो उनको उखाड़ कर इसका सेवनकरें वहां बाल न उगेंगे आग से जलेहुये के लिये अभिप्रायकहै घावको सुखाती है जो सीपके टकडेको साफ़ कपड़े में

रखकर लड़के के गले में लटकावें तो वह लड़का दांत निकलने के समय दुःख न पावे (तारदुलनोम) अरस्तू के निश्चयमें यहपत्थर सफ़ेद रंग स्याही लिये होताहै और क़लई के बराबर उसका भार होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होताहै कहतेहैं कि जो इस पत्थर के दशदाने या कुछकम लेकर किसी मनुष्य के गर्दन में यंत्र की रीतिपर बांधें तो दिनरात आंखोंमें नींद न आवे और कुछ इस जागने से दुःख न हो जैसा कि एक दिन के जागने से मनुष्य को दुःख हुआ करतेहैं और जब इस पत्थर के यंत्रको अलगकरें तो भी कई दिन उसका इतना प्रभाव रहेगा कि कुछ दिनों तक थोड़ी २ नींद आवेगी कोढ़ीकी नाकमें इसकी आठजौ के बराबर बूंदैंटपकाना रोग नष्ट करताहै (तालीक़ून) यहतांबेका प्रकारहै कि ओषधियों से इसको बनातेहैं इसका फ़ारसीभाषा में हफ़्तजोश नामहै कहतेहैं जो तालीक़ून से तीर की गांसी बनावें और जिस पशु को उससे घायलकरें तो तुरन्त मरजायेगा अरस्तू के विचार में यह हफ़्तजोश बिल्कुल तांबेका प्रकार है और ओषधियां इसमें इसवास्ते मिलाते हैं कि उसमें विषकीशक्ति अधिक होजावे यदि इसके कांटे बनाकर नदी में छोड़ें तो सम्भव नहीं कि कोई मछली उससे छूट जावे हां कांटा मुंहमें पहुंचना चाहिये फिर छूटना कठिनहै चाहै मछलीकैसी ही बड़ीहो क्योंकि कांटा मांसमें जाके फिर निकलता नहीं है और जिसमनुष्य को लक़वेकी बीमारी हो उसे उचितहै कि एक मकान में जावे जहां नाम को भी प्रकाश न हो और तालीक़ून का शीशा अपने सामने रक्खे इसउपाय से यहरोग शान्तहोगा यदि ताली-क़ूनको आगमें ताव देकर जिस दरिया के किनारे पानी में बुझादें उसघाटपर कोई पशु पानीके वास्ते दृष्टि न करेगा यदि तालीक़ून को शहदमें मिलाकर धूपमेंरखदें मक्खी तक उसकेगिर्द न जायेगी जोमनुष्य तालीक़ूनका मोचना बनाकर उसके द्वारा बालोंको चुने कभीवहां फिर बाल न निकलेंगे (तलक़) अर्थात् अबरक़ अरस्तू के विचार में लाल और सफ़ेद दो प्रकारकी होतीहै सफ़ेद मोटी और

साफ़ होती है और सुर्ख़ हलकी होती है इस पत्थर को उत्तमोत्तम लिखाहै कहतेहैं कि जो उसको तांबे और क़लई और लोहे परछोड़ें जो ईश्वर चाहे तो चांदी बनजावेगी सिकन्दर ने लिखाहै कि जब मुझे यह मालूमहुआ कि सोनाबुरीक़ रंग चाहताहै तो हमने सोनें को अबरक़ से रंगा और वह बहुत उत्तमहोगया यह अबरक़ बहुधा जादू आदिमें काम आती है अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखा है कि इसकानाम कौक़बुलअरज़ है अबरक़ का उत्तम प्रकार यह है कि बहुत पतली उत्तमहो और आग से न जले और साफ़ करने में भी उत्तमहो लहूको रोके जिस मनुष्य को अबरक़ का कजली करना अंगीकारहो उचितहै कि किसीकपड़े में बांधे और उसमें थोड़ेपत्थर के टुकड़े भी छोड़देवे और पानीमें रखदे कि कल्क होकर वहबारीक़ होजावे उस समय गोंद के रस में उसका सेवन करे (तूसूतोस) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर चांदी और तांबेकी खानमेंपैदाहोताहै इसका रंगसब्ज होताहै इसकी प्रकृति धनज और तूतिया के सदृश होतीहै क्योंकि तूतिया चांदीकी खान और धनज तांबेकी खान के सिवाय और जगह नहींहोता है इसका गुण यह है कि जो इसका पानी आंख में छोड़ें तो पुरानी सफ़ेदीको दूरकरे जो आंख में सफ़ेदी न होगी तो हानिहोगी (अक़ीक़) अरस्तू के विचारसे इसके बहुत प्रकारहैं उत्तम वहीहै जो यमन से आताहै कभी२ रूसकी नदी के किनारे पर भी हाथआताहै अक़ीक़ लाल साफ़ और अच्छा होताहै जो इसकी अँगूठी पहिनकर क्रोधी शत्रु के सामने जावे तुरन्त उस पर प्रबल होगा लहू के बहने को बहुत गुण दायक है मुख्य स्त्रियों के लिये जिनका लहू हमेशा जारी रहता है जो इसका मञ्जन बनावें तो दांतों के रंग को दूरकरता है और मुख की दुर्गन्धि भी दूर होती है और दांतों की जड़ों के लहू बहने को दूर करता है हज़रत पैग़म्बर साहब ने कहाहै कि जो मनुष्य अक़ीक़ की अँगूठी अपने हाथमें रक्खेगा वह सर्वदाप्रसन्न रहेगा और मालिक के पुत्र अनसने एकवचन लिखाहै कि पैग़म्बर ने कहा कि अक़ीककी अँगूठी

पहनो क्योंकि उसका गुणयहहै कि चिन्ता दूर करताहै कहतेहैं कि अक़ीक़ की भस्म आंख और मनको बलकारक और उन्माद रोगके दूर करने वालीहै (अम्बरी) अरस्तू ने कहाहै कि यह पत्थरखाकी रंग सबज़ीलिये होताहै परन्तु सबज़ी प्रकट नहींहोती और उसमें काले पीले और सफ़ेद नुक़ते होतेहैं इसमें अम्बरकीसी सुगन्ध पाई जाती है इसकी बादशाहों की दृष्टि में बड़ी प्रतिष्ठा है बहुधा इसके प्यालेआदि बनाकर रखते हैं तो पहिले पहिल जिसने इसपत्थर को केवल सूंघने के वास्ते निकाला वह शैतानथा इस दृष्टि से जो मनुष्य इसके बर्त्तन में खानेपीने का सेवनकरे उस मनुष्यको सौदा अर्थात् जलेहुये दोषोंकेरोगउत्पन्न होंगे और फिर कठिन चिकित्साओं केलिये दीनहोजावेगा यहबात बहुधा बादशाहोंपर होचुकी है इसलिये इसके प्यालोंके सेवनकी मनाहीहै (अतास) अरस्तू ने इसकी प्रशंसा में लिखा है कि जो इसको आग में डालदें तो आग ठण्डी होजावेगी और जो इसको जिह्वाके नीचेरखकर मद्यपानका प्रारंभ करें कभी नशा न आवेगा और मूर्च्छा भी न आवेगी क्योंकि गर्मी भाफ़की ब्रह्माण्ड तक न पहुंचेगी (फाद ज़हर) अर्थात् संगजहर यहनाम हर पत्थरका होसक्ताहै परन्तु जो वह पत्थर ऐसा हो कि प्राणों के बलको रक्षाकरे और विषकी हानिको दूरकरे कहतेहैं कि विष दो प्रकारका होताहै गर्म और सर्द गर्मविष रुधिरको जलादेता है और जीवकी तरीका नाश करनेवालाहै जो जीवन की कारण है और शरीरमें फैल जाताहै जैसा कि नलमें केसरका रंग फैलता है और शीतल विष वहहै कि जो उत्तम तरी और लहू को बांधे जैसा कि पनीर कि जोमाया दूधमें छोड़ें तो दूध तुरन्त बँधजाताहै और फादज़हर का प्रभाव खटाई के सदृशहै जैसा कि केसर के रंग को खटाई काटदेतीहै उसी तरह यह विष के प्रभाव को नष्ट करता है अरस्तू के विचार में फादज़हर कई प्रकार का है बाज़ा पीला और कोई खाकीरंग और इसकी खान चीन हिन्दुस्तान और खुरासान में होतीहै जो तीन रत्ती के अनुमान घिसकर पिये तुरन्त विष से

छुटीपावे बिच्छू या दूसरे विषैले जानवरों के घावपर इसका सेवन करें लाभहोगा यदि काटने के साथही इसका लेपलगावें तो बहुत जल्दी आराम होगा (फरसलूम) अरस्तू ने लिखाहै कि इसपत्थर की ज़ुल्मात में सिकन्दर ने पाया था और उसके कोष में वर्तमान था रंग इसका काला और यह भारी होताहै आगमें गिरनेसे गुम होजाता है जो इसको पारे में डालकर आगपर रक्खें तो पारे को बांधदेताहै और दोनों एक होजाते हैं और नरम चांदी होजाती है यदि मनुष्य इसका यंत्र बनावे तो उसको बड़ा स्मरण होगा और ईश्वरकी स्मृति कभी न भूलेगी जो भोगकरे तो शुभपुत्र उत्पन्नहो और दृष्टिके लिये तो मानो ढालहै यदि इसको गायके दूधमें घिस कर बरस (अर्थात् जिसरोग में त्वचापर सफ़ेद और काली चित्तियां पड़जाती हैं) के दाग़पर लगावें आराम होगा ईश्वरकी आज्ञा से (फरसिया) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको बड़े २ पहाड़ों के नीचे पातेहैं यह पत्थर रात्रिकेसमय जलीहुई ज्योतिके सदृश चमकताहुआ दिखाई देताहै सो इसको अजमोद के पानीसे धोवें तोसम्पूर्ण पशुओंके लिये हलाहल विष होजावेगा (फरफूस)अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर अग्निकीभांति होताहै इसके प्रभावमेंलिखा कि जो इसको घिसकर किसी घाव पर रक्खे तुरन्त भर जावेगा (फीरोज़ज) अरस्तूका लेख है कि यह पत्थर सब्ज़ रंग नीलाई लियेहै देखनेमें बड़े बहारका है इसकी खान खुरासान में होतीहै वायुकी सफाई से इसका रंग पीला होताहै जो इसको सुरमे में मिलाकर सेवन करें गुणदायक है बहुधा बादशाह इसकी अँगूठी नहीं पहनते हैं कि इसके पहनने से भय कम होजाता है मुहम्मद सादिक़के पुत्र इमाम ज़ाफरका बचन है कि इसकी अँगूठी जिसके हाथमें हो वह कभी फ़क़ीर और दरिद्री न होगा(फैलकूस)अरस्तू ने कहाहै कि यह कई रंगका होताहै इसमें एक दिनमें कई रंग प्रकट होतेहैं कभी सुर्ख़ कभी पीला कभी सब्ज़ निदान हर समय एक नया रंग लाताहै रातको शीशेकी तरह चमकता है जब सिक-

और नाकके लहू और दांतोंकी जड़ोंको सूजनके लिये लाभ दायक है और आंखोंके साफ करनेमें बहुत गुण करती है (क़ुक़न्द) यह भी जलीहुई फिटकरीके प्रकारों मेंसेहै यह बहुतही मांसको सुखातीहै और नाकके नासूर और नकसीर को गुण करतीहै और कान और पेटके कीड़ोंके लिये मानों हलाहल बिषहै यदि इसको जलमें छोड़दें और मकान में छिड़काव करें तो उसकी गन्ध से खटमल मच्छड़दूरहोजायेंगे यदि इसमें कुछ गन्धक और कालादानाभी मिलावें तो यह और प्रबल होगी चूहे भी इसकी गन्धसे दुःखीहोते और मरजाते हैं यदि नाई लोग अपने उस्तुरे को इस पत्थर पर तेज़करें तो बालोंकी सफाईमें बहुतही तेज़ी दिखाताहै यदि मनुष्य के नथुनों में यह पत्थर मलें जबतक जैतूनका तेल न लगावें नींद न आवेगी (क़ली) यह वह पत्थरहै जिससे शनान हाथ आता है इसकी भस्म सफाई करने वालीहै और नमकसे अधिक बलकारक है झाईं और खाज और निकम्मेमांसको लाभकरे तो लहसुन और नमकमें मिलाकर बिच्छूके डंकपर लगावें पीड़ा ठहर जावेगी (क़ैसूर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हलका और खोखलाहोताहै यहां तक कि पानी पर तैरा करताहै इसकीखानें बहुधा सक़लबा और आरमीना में हैं इसको हजरुलदफातिर भी कहते हैं क्योंकि यह पत्थर यह स्वभाव रखताहै कि लिखेको मिटादेताहै और गुण उसका यहहै कि दांतोंको साफ करता है और इसका और ओषधियोंके साथ सुरमा लगाना नेत्रकेलिये गुणदायकहै और मासरजुया कहता है कि चांदी को भस्म भी करताहै और शरीरके रोमों की सफाई भी करता है और घावको बहुत जल्दी भरताहै (क़ैरातीर) अरस्तूने कहाहै कि यह गोल होताहै और पत्थरके टुकड़ेकी तरह दरियासे निकलताहै और बन्दूककी गोलीकी तरह होता है इसका गुण यहहै कि इसका पीना पथरीको टुकड़े २ करके बाहर निकाल देता है (कसदामी) अरस्तू का बचन है कि यह पत्थर दरिया किनारे पाया जाताहै और सब्ज़रंग स्याहीलियेहै और बहुत

कठोर और हलका होताहै इसको सोहनसे खण्ड २ करते हैं जो इसको पीसकर कलई परडालें और अग्निमें रक्खें तो नरमी और उसकी दुर्गन्धि जाती रहती है और अग्नि पर स्थिर होजाती है जैसे चांदी (करसिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तान की धरती में पाया जाताहै काले रंगका होता है बहुधा मछलियां इस पर इकट्ठी होती हैं और बहुत हल्का और सख़्त होताहै और दवातकी स्याही की तरह काला होताहै इसमें सोहन भी नहींचल सक्ता पर सातबेरकी आंच देनेसे गलजाताहै उस समय सफ़ेदरंग प्रकट करताहै यदि गलेहुये में थोड़ा सा नौसादर मिलादें तो एक खण्ड उसका सातखण्ड पारेको पत्थर की तरह बांधदेगा (कुर-सियान) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तानकी धरती में पाया जाताहै और सब्ज़रंग चमकता हुआ साफ़ और संगीनक़लई की भांति होताहै जब इस पत्थर को आंच देतेहैं सफ़ेद होजाता है फिर लाल शिंगरफ़कीभांति बनजाताहै सो जब उसकोकजलीकरके उसी अनुमान से मुर्दासिया उसमें मिलावें और बिल्लूर को भी आगपर गर्मीदेके इसबनीहुई कुरसिया मेंसे दश जो बराबर लेकर पौने चारतोले बिल्लूर परडालें तो तुरन्त वहबिल्लूर याक़ूतहोजावेगा जो इसपत्थरको तीनरत्ती भी मनुष्यकेगलेमें लटकावें ज्वरकीगर्म्मी से बचारहेगा (करक) अरस्तूने लिखाहै कि सफ़ेदरंगका होता है और इसकी छीलन हाथीके दांतोंके सदृशहै सिन्धनदी के किनारे पर मिला करता है इसका सुरमा आंख की खाज को गुणदायक है हिन्दुस्तान के निवासी उसकी अँगूठी बनाते हैं और दृष्टि और जादू और भूतप्रेत के आवेशके दूरकरने के लिये बहुत आज़-मायाहुआ है पिछले बुद्धिमानलोग इसपत्थर को अपनेपास रक्खा करतेथे कि भूतप्रेत उनके पास न आवें (किरमानी) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर कालेरंग का और कईप्रकार के रंगकाहै शेरों के जंगल में होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होता है जो इस को फिटकरी और दूधमें पीसकर कोढ़वाले की नाक में टपकावें

गुणकरेगा (कुहरबा) पीली सपेदी लिये है और बहुधा लाल भी होताहै इसकास्वभावयहहै कि तिनको और सूखीलकड़ीको अपनी ओर खींचताहै और यह पत्थर रूमके अखरोटके वृक्ष का गोंद है जो कोई इसका यन्त्र बनावे सूजन और उन्माद रोग को गुणकरे और बमन के रोगको भी गुणदायकहै और लहूके बहने गर्भपात की रक्षा के लिये और कमलवायु को गुणकरे कुहरबासन्दरूस अर्थात् चन्दरस के स्वरूप से बहुत मिलताहै पर इतना अन्तर है कि सन्दरूस सपेदीलिये होताहै (लाजवर्द) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बहुत प्रसिद्धहै इसकी अंगूठी जिसकेपासहो वह ईश्वर की सृष्टि की दृष्टिमें निश्चय योग्यहोगा जो इसका सुरमा नेत्रों में लगावै लाभकरे शेख़रईस ने लिखाहै कि लाजवर्द मस्सों को दूर करताहै औरों का बचनहै कि निद्रानाशरोग को दूरकरता है और उन्मादरोग के लिये तत्काल गुणकरे (लाक़ितुलजहब) अर्थात् यह पत्थर सोनेको अपनीओर खींचताहै अरस्तूनेलिखाहै कि पश्चिमी धरती के बाज़े पहाड़ोंमें होताहै और इसपत्थरमें सोनामिलाहुआ होताहै और इतना सोनेसे उसका स्वरूप मिलताहै कि देखने में सुवर्ण मालूम होता है इसका गुण यह है कि जो सोनेका बुरादा मिट्टी में मिलगयाहो तो इसपत्थर को उसमिट्टीपरमलें तो जितना सोनाहोगा वह इसपत्थर में लिपट जायेगा और ख़ालीमिट्टी रह जायेगी (लाक़ितुलरसास) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बदरंग और दुर्गन्धियुक्त होताहै और कुछ सपेदी सी मिलीहुई होती है और जोकि क़लई संगीन है तौभी उसको अपनी ओर खींचलाता है जो उसको अग्नि में जलाकर कोयले की भांतिकरलें और फिर पारे में डालकर अग्निपर रक्खें तो पारा बँधजाता है जैसे चांदी (लाक़ितुश्शोरा) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बालको खींचता है और कुछ अन्दरसे पोलाहोताहै और पत्थरसे भारमें कमहोता है मनुष्य के शरीर में लगानेसे नूरेकीतरह बाल उड़जाते हैं यदि बाल पृथ्वीपर बिखरेहों तो इसपत्थरकेद्वारा एक२करकेउनको चुन

सक्तेहैं जो बालोंको उड़ाकर उस जगह इसपत्थरको मलदें फिरकभी बाल न निकलेंगे जो उसकी सुगंध गलेहुये सोनेमें पहुंचे तो सब सोना ख़राब होजायगा और शीशेकेसदृश वह सोनाटूटजाया करेगा और फिर किसी उपाय से वह सोना अपने मुख्य दशापर न आयेगा (लाक़ितुरसूफ़) अरस्तूने लिखाहै कि इसकारंगसब्ज़ है और इसमें बहुधा सब्ज़ और पीलेरंग की रेखाहोती हैं और बहुतहलकाहै और कुछसपेदी लिये है और गोल और छोटा बड़ा होता है जिस समय पशम उसके बराबरकरें तुरन्त लिपट जाती है इसका सुरमा पुरानी आंखकी सपेदी को दूर करता है जो इसको गलाकर इसमें ज़ब्द-तलबहर मिलावें तो पारेको दृढ़ बांधता है (लाक़ितुज़्ज़फ़र) अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सपेद ख़ाकी रंग बराबर नरम बिंदुओं बिना होता है और यह पत्थर नाख़ुनको अपनी ओर खींचता है जो नाख़ुन पृथ्वी पर गिरे हों उनको चुनकर उठा लेता है जो हीरे पर रक्खें तो हीरा टुकड़े २ होजावेगा यदि इस पत्थर पर स्त्री के ऋतु का रुधिर डालें तो पत्थर रेत की तरह होजावेगा जो इसको पानी में छोड़कर पियें तो पीने वाले का मांस और हड्डियां अलग होजावें और मूत्राशय और कलेजा टुकड़े २ होजाय (लाक़ितुल्ग़ज़्म) अ-रस्तू का लेख है कि यह पत्थर पीला और कठोर बलख़के देशों से आता है और हड्डियों का खींचने वाला है (लाक़ितुल्फ़ज़्ज़ा) अरस्तू ने कहा है कि यह पत्थर सपेद रंग का होता है यदि इसको चांदी से पांच गज़के दूरी पर रक्खें तौ भी चांदी को अपनी ओर खींच लेगा यदि चांदीकी मेख़ किसी चीज़में जड़ी होगी उखड़कर इसके पास आजावेगी (लाक़ितुलक़तन) अरस्तूका बचन है कि यह पत्थर नदीके किनारे होता है सपेद रंगका और रूईको खींचताहै इसका गुण यह है कि जो इसको रेतमें कजली करके तांबेपर छोड़ें तांबे को चांदी बनावेगा जो किसी मनुष्यके निकट हो तो आंख का ढक्का बन्द करदेगा (लाक़ितुल्मिस) अरस्तू का बचन है कि यह पत्थर तांबेको खींचता है और पीतलको भी खींचता है इसके रंग में कुछ

गर्द मिली हुई होती है जो छः रत्ती के अनुमान उसको लेकर दश दिरम* चांदी कजली करके गलावे और इससे पहले कि वह गल कर बंधजावे उसको डालदे तो वह चांदी पीली सोने की तरह हो जावेगी और दूसरी बार भी यही क्रिया करे तो बहुत समय तक उसकी ज़रदी दूर न होगी जो इस पत्थरको एक जौके बराबर मीठे पानीमें घिसें और मिरगी वालेकी नाकमें टपकावें तो तुरन्त रोग जातारहेगा (लजाऐतूस) यह पत्थर काली रंगतका है इसमें खीरे की गंधआती है बहुत खुश्क होता है और गहरे घावोंको भरताह और मिरगीवालेको गुणदायकहै और दुःखदाई छोटे२ जानवरोंको भगाताहै (लवनकरदीस) शेखरईस लिखताहै कि यह पत्थर मिसर का है धोबीलोग इसके द्वारा कपड़े साफ़ करते हैं और यह पत्थर बहुत साफ़ और पानी में छोड़नेसे जल्दी घिसजाताहै रुधिरके बहने को गुणकरता है (अल्मासहीरा) अरस्तू का लेख है कि इसकारंग नौसादरके सदृश होता है और सब पत्थरोंको टुकड़े २ करता है और जो इसको हज़ार टुकड़ेकरें तो हर टुकड़ा इसका तिकोना टूटेगा जितना टुकड़ा इसका बड़ा होगा उतनीही इसमें स्वभाव शक्ति अधिक होगी कारीगर लोग इसकी नोकका बरमाबनाकर कठोर२ पत्थरोंको उसके द्वारा छिद्र करते हैं अरस्तूने लिखाहै कि सिकंदर इस पत्थर के स्वभाव में बड़ा आश्चर्य करता था और इस आश्चर्य का यह कारण था कि एक ऐसा मनुष्य सिकन्दर के सामने आया जिसको पथरी का रोग था और इसी कारण उसका मूत्र बन्द था सिकन्दर ने तुरन्त हीरालेकर थोड़ी मस्तगी उसके शिरमें लगाकर उसकेलिंगके छिद्रमें प्रवेशकिया तो तुरन्त हीरेने पथरी को टुकड़े २ करदिया अरस्तूने लिखाहै कि जहां हीराहोताहै कोई मनुष्य वहां नहींजासक्ता और उसकी खान हिन्दुस्तान के एक जंगलमेंहै और वह इतनीगहरीहै कि नेत्रकीगति वहांतक नहीं और उसमें अज़दहे बहुत हैं जब सिकन्दर उस जंगल में पहुंचा और चाहा कि हीराले

*दिरम साढ़ेतीन माशे का होता है—

कोई मनुष्य वहां जानेको राज़ी न हुआ तब सिकन्दरने बुद्धिमानों से सम्मति की तब उन्होंने सिकन्दर से कहा कि इसगार में मांस के लोथड़ेडाले जायँ और पक्षी इसमें छोड़े जावें कि हीरे उन मांस के टुकड़ों में लिपट जावे और वह पक्षी वहां जाकर उन मांस खण्डोंको बाहर निकालें सो सिकन्दरने ऐसाही किया और लोगों की आज्ञादी कि जो मांस पक्षियों के पंजों और चोंचसे इधर उधर गिरे उसको चुनकर लावें और हीरेमें अद्भुत स्वभाव यह है कि जो हथौड़े से निहाई पर रखकर तोड़ें कभी न टूटेगा किन्तु उसका खण्ड हथौड़े या निहाई में घुस जावेगा और जब सीसे से तोड़ें तुरन्त टूट जावेगा यदि हीरेको नरबकरेके रुधिर में डालकर आग दिखलावें पिघल जायेगा और वह पेचिश और पक्काशयके उपद्रव को गुणकारी होगा बहुधा उसकी खानें सरन्द्वीप के पहाड़ में हैं और वह जंगल बहुत गहरा और काले नागों से भराहै और जो हीरा वहांपर हाथ आताहै वह मसूर या चनेकी बराबर होताहै या आधे बाक़ला के बराबर होताहै यद्यपि इससे बड़े हीरे वहां होतेहैं परन्तु पक्षियों के द्वारा बड़े वज़न का हीरा वहां मिल नहीं सक्ता लोग मांसके लोथड़े फेंककर वह पक्षी जो मरेहुये पशु खातेहैं उन के द्वाराउठवातेहैं और उसेवह टुकड़ा २ चुनलिया करतेहैं निदान इसमें कुछ विरुद्ध नहींहै कि हीरा दांतों का तोड़ देताहै यदि उस को मुखमें रक्खें हलाहल विषका प्रभाव दिखलावेगा (मानतस) अरस्तू ने लिखाहै कि हिन्दुस्तानी पत्थरहै उस पर लोहेकी चोट कुछ असर नहीं करती जिस मकानमें हो वहां जादू जिन्न और प्रेत का प्रवेश न होगा जो मनुष्य यंत्र बनाकर रक्खे जिन्नोंके उत्पात से बचा रहेगा जब सिकन्दर शाहको इस पत्थर का गुण मालूम हुआ तो उसने अपनी सम्पूर्ण सेनाको आज्ञादी कि इसको अपने साथ रक्खें सो इस आज्ञाके पालनसे बहुत स्थान पर जादू और जिन्नों के भयसे रक्षा रही (मारवन) अरस्तूका वचनहै जो सुरमे के पत्थरको भूनकर इस पत्थरकेसाथ पीसें और वह सुरमा आंखों

में लगावें तो नेत्रोंकी पीड़ा और उसकी सफ़ेदी को लाभदायक है (महानी) अरस्तूनेकहाहै कि इसकारंग सफ़ेद और पीलाहोताहै और खुरासानकी धरतीमें पायाजाताहै सकता अर्थात् वह रोग कि जिसमें मनुष्य हिलजुल नहींसक्ता गुण करे और इसकीभस्म बवासीरको दूरकरतीहै जिसकेपास इसकी अंगूठीहो वह हरभय से निर्भय रहेगा (मराद) यह अद्भुत प्रकारका पत्थरहै और दक्षिण के शहरोंमेंपायाजाताहै यदि खानिसे निकालनेकेसमय सूर्य्यउत्तरकी ओरहोतो उसकास्वभाव गरम और खुश्कहोताहै और इसका सुर्ख़ रंग होताहै और जो सूर्य्य दक्षिण में होतो उसका गुण ठंढा और तरहोताहै और रंगसब्ज़होताहै इसको यूनानी भाषामें सर्वतालीस कहतेहैं अर्थात् उड़नेवालापत्थर'॥ कारणयहहै कि यहपत्थर बायुमें उत्पन्न होताहै जब उत्तम भाफ़ पृथ्वीसे उठतीहैं और वहभाफ़ें बायु में घूमतीहैं तो यह पत्थर पैदाहोताहै और जब सूर्य्य उदयहोताहै तो यह पत्थर हवामें फिरा करताहै उससमय इसकारंग सब्ज़ और काला होताहै जैसा कि नीलका रंग और सूर्य्य के अस्त होने पर ठहर जाताहै सो उस समय इस पत्थरके टुकड़े पृथ्वी पर गिरतेहैं और लोग उसको पाते हैं दिनको यह पत्थर इसी तरह बायु पर जाताहै और रात्रिको पृथ्वी पर गिरता है कहतेहैं कि यह पत्थर जिसके पासहो सम्पूर्ण प्रकार के भूत प्रेत उसके आधीन हों और जो चाहे उनसे सीखले (मरजां) अर्थात् मूंगा अरस्तूका लेखहै कि इसका रंग लाल होताहै और नदीमें घासकी तरह उगताहै बहुधा इसकी भस्म उत्तम होती है जो इसको कजली करके सेवन करें पारेको बांधदे और रंग इसका सोने की तरह करदे यह आंखकी औषध है अरस्तूके सिवाय और लोगोंका बचनहै कि मूंगा मरशीना में एकस्थानसे उत्पन्नहोताहै और यहस्थान अफरीक़ाकेओर पासहै ब्योपारी इकट्ठे होकर वहांके निवासियोंको मज़दूरीमें नौकर रखते हैं और उन्हींसे निकलवाते हैं वहांका बादशाह उन ब्योपारियों से महसूल नहीं लेताहै तो जो लोग मूंगेके निकालने में प्रवृत्त होतेहैं

वह एक सख़्त लकड़ी एकगज़की लम्बी लेकर उसको सूली की तरह पर बनातेहैं और उसमें भारी पत्थर बांधतेहैं और किश्तीमें बैठकर नदीमें जाते हैं कहतेहैं कि दरियाके किनारेसे डेढ़ मीलपर मूंगे की उत्पत्तिका स्थानहै वहां जाकर उस लकड़ी को जलमें छोड़तेहैं कि वह पेंदीतक पहुंच जावै उस समय किश्तीको दायेंबायें फेरते हैं कि उस लकड़ी में मूंगेकी डालें अटकजायँ फिर जोरसे उस लकड़ीको अपनी ओर खींचतेहैं तो उसमें मूंगा भी उलझकर निकल आता है परन्तु उससमय इस मूंगेकारंग कालाहोताहै जब उसको छीलतेहैं तो उसके अन्दरसे लालरंगका मूंगा निकलताहै बाज़ेलोग कहते हैं कि यहपत्थर अंदलसनद की गहराई में मिलताहै ग़ोतेख़ोर उधर को जातेहैं और उसको निकालतेहैं इसकेगुण बुसदपत्थरके बर्णन में लिख चुके अब कुछ बर्णन की आवश्यकता नहींहै क्योंकि बुसद मूंगे को कहते हैं (मुरदारसंज) इसको फ़ारसीमें मुरदारसंग कहतेहैं अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर क़लईकी मिट्टीहै इसकामरहमतर घावोंकोसुखाताहै और पुरानेज़खमोंको अच्छाकरताहै और बगल गन्धको दूरकरने वालाहै शखरईस लिखताहै कि मुरदारसंग बगल और शरीरकी दुर्गन्धिको दूर करताहै और झाईंके काले चिह्नोंको फफोले के चिन्होंसमेत नाश करताहै मूत्रको बन्द करताहै नेत्रों में प्रकाश करताहै और दूसरा गुण उसका यह है कि जो सिरके में छोड़ें सिरका मीठाहोगा जो आरोग्य शरीरमें मर्दनकरें शरीरकाला होजावे बगल में लगाने से दुर्गन्धि दूर होतीहै परन्तु इसमें हानि यहहै कि बगलके बिकारको मनकी ओर प्रेरणा करताहै तो उसके लिये यहउपायहै कि पहिले उसको गुलाब तेलमें मिलाले (मरक़-शीशा) (सोनामाखी) अरस्तू ने इसको कईप्रकार का लिखा है बाज़ीजहबा सुर्खरंगकी और बाज़ी फ़ज़िया सपेद और बाज़ी नजा-सिया काली होतीहै और सबप्रकारों में गन्धकमिली होतीहै जब जलावें आटे की तरह होजाती है और गन्धक दूर होती है बहुधा कीमिया के बनाने में काम आतीहै जो इसको गलेहुये खोटे सोनेमें

छोड़ें तो तुरन्त शुद्धसुबर्णबनावेगी और जो उसको गलाकर तांबे या शीशेपरछोड़ें सपेद और खुश्ककरदेगी और उत्तमचांदीके सदृशकर देगी और इनके प्रकार यहहैं—सुनहरी, रुपहरी, पीतल के रंगकी तांबेके रंगकी, इसका हरप्रकार उसीधातु के सदृश होताहै जिससे पैदा होतीहै फ़ारसी में इसको संगरोशनाई कहतेहैं और नेत्रों की ज्योतिके बढ़ानेमें सेवन की जातीहै और कुष्ठ और सपेदकाले दागों के रोग और निमिश (त्वचाकारोग कुष्ठ आदि) के लिये बहुतगुण करे इसके मर्दनसे बाल दूरहोतेहैं और घुंघरवाले होजाते हैं जिस लड़केके गलेमें लटकावें वह बड़प्पन पायेगा (मिसन) एकप्रकार का पत्थर है जिस पर छुरी तलवार आदि तेज़ करते हैं अरस्तू ने लिखाहै कि मिसन सब्ज़ रंगका होताहै और उसपर तेललगाकर औज़ार तेज़करतेहैं मुख्यकरके आंखकी सपेदीको गुणदायकहै और इसके सदृश एकपत्थर सुम्बादजहोताहै जिसे हिन्दुस्तानमें दरिया के किनारे पातेहैं और यह दांतों के लिये भी गुण दायक है शेख़-रईस ने लिखाहै कि मिसनके बुरादेको कन्याके कुचोंमें लगाना वा लड़कोंके अंडकोशमें लेपकरना बहुत गुणदायकहै इसमें बड़ेहोनेका भय जातारहताहै (मुसहिलुल हिदायत) अरस्तूके विचार से यह पत्थर भी सिन्धमें होताहै जो इसकोहिलावें तो ऐसा मालूम होता है कि शायद इसके अन्दर और भी पत्थरका टुकड़ाहै इसकीखानि हिन्दुस्तान में उसपहाड़ में है जो बहरैन के अन्तर्गत मदीना कुमार है एक अद्भुत गुण यह है कि जो करगस (एक प्रकारका पक्षी जो मुरदारचीज़ें खातीहै) की प्रसूतिसे प्रकटहुईहै कहतेहैं कि करगस की मादा प्रसूति के समय मरने के निकट पहुंचतीहै तो उस समय वहबिचारा पक्षी पहाड़कीराहलेताहै और वहांसेइसपत्थरको लेकर अपनी मादाके नीचे रखताहै तुरन्तही बच्चा होताहै हिन्दुस्तान के निवासियोंने इसका गुण करगस से पाया है प्रसूति की पीड़ा के समय जो यह पत्थर हो तो जननेका दुःख न होगा (मिक़्नातीस) फ़ारसीमें इसे संगआहनरुबा कहते हैं यह पत्थर लोहेको अपनी

ओर खींचता है इसमें उत्तम प्रकार काले रंगका सुरखीलिये होता है इसकी खान हिन्दके समुद्रके किनारे परहै बहुधा किश्तियां जो उधर जातीहैं उस मिक़नातीस के बराबर तो किश्तियों की कीलें आदि जो लोहेकी चीज़ें होतीहैं निकलकर पहाड़से चिपक जाती हैं और तख़्ते तबाह होजाते हैं सो इसी भय से उन किश्तियों में लोहेकी कीलों का लगाना निषेध है और यहनवीन अद्भुत बात है कि जो मिक़नातीस को लहसुन या प्याजकी गन्धदें तो उसकायह सारा गुण जाता रहता है और फिर जब सिरके या बकरे के ताज़े लहू में रक्खें उस समय उसका फिर वही स्वभाव होजाता है यदि कोई लोहे का खण्ड जलकेसाथ पी गयाहो और वह मिक़नातीस को दूधमें घिसकर पिये तो तुरन्त वह टुकड़ा कै में निकलेगा यदि कोईमनुष्य विषसे बुझेहुये हथियारका घावखाये और वह मिक़नातीसको दूधमें घिसकरपिये तो तुरन्त बिषका अवगुणजातारहेगा ईश्वर ने इस पत्थर को ऐसा बल दिया है कि इसमें और लोहे में प्रिया प्रीतमसी प्रीति मालूमहोती है अरस्तूके सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि इसका पास रखना जोड़ों की पीड़ा के लिये गुणकारकहै और प्रसूति में भी अति सुगमताकरे यदि इसपर ज़ैतून का तेलमलें तो फिर लोहा इससेभागेगा और जब नर बकरेके ताज़े लहूमेंगोतादें अपने मुख्यदशाकास्वभाव दिखलायेगा यदि किसीके पैरमें पांवकी नसकी पीड़ाहो तो हाथ में रखना गुणकारी है और गठियाकी बीमारीभी दूरहोतीहै (मलह) अर्थात् नमक यह उसजल से पैदा होताहै जो मट्टी के जले हुये भागों से मिला हो परन्तु न कठोर क्योंकि जो कठोरता से मिलाहोताहै तोकड़ुवा होताहै और यही कारणहै कि बाज़े नमक कड़ुवे होतेहैं लिखाहै कि नमकवर्षा के उपरान्त ख़रीफ़की फसलमें पैदाहोताहै क्योंकि महीन और अच्छा मूल गर्मीकी ऋतुमें गल जाता है और कठोर मूल रहजाताहै उस समय सूर्य्यके स्वभाव से नमक बँधा करताहै नमक दो प्रकारपर होताहै पानीका और पहाड़ का नमकका गुण यहहै कि सब सड़ी

हुई चीज़ोंके दूरकरताहै और उसको जलाकर मंजन बनानादांतों को साफ़ करताहै पैग़म्बर साहब ने कहा कि ऐ अली प्रारम्भखाने का नमक परकरो और उसीपर अन्त करो क्योंकि इसके सेवन में सत्तर रोगों से आरोग्यता होता है नमक का सेवन समरीतिपर अच्छाहोता है अधिक मांस को दूर करता है और दाद खाज को दूर करे और अलसी के साथ मरहम बनाना और बिच्छू के घाव-पर लगाना गुणदायक है जो सिरके और शहदमें मिलाकरलगावें तो खनखजूरे और भिड़के घाव को लाभ करे और कफ़की खाज और पांवके नसकी पीड़ाको भी लाभकरे जोनमक कि सपेद और महीन होता है उसको हिन्दी में इन्दरानी कहते हैं रंगमें बिल्लूर की तौरपर होता है उसको खाना समझ को तेज़ और दांतों की जड़ोंको मज़बूत करता है अरस्तू के विचार में नमक कई तरह का होता है बाज़ा तो पत्थर के सदृश और कोई नमक की तरह कोई खारी और यह नमक खारी समुन्दरफेन के प्रकार में से है और दरिया के किनारेकेस्थलों में पैदा होकर मिलता है ईश्वर ने कोई वस्तु बुद्धिमानी के सिवाय पैदा नहीं की इसप्रकार को बहुधा वृक्ष और नाली और पत्थरोंमेंसे पातेहैं और जिस वस्तुमें मिलावें उसको दुरुस्त करताहै यहांतक कि सोनेका रंग साफ करताहै और उसकी ज़र्दीको अधिक करता है बहुधा पत्थरों का मैलसाफ़ करता है (नत-रून) अरस्तू ने लिखा है कि यद्यपि यह पत्थर कचलोन के प्रकारों से है परंतु उसका स्वभाव उससे विरुद्ध है वस्तुओं को साफ़ और टेढ़ेको सीधा करताहै और रंग रूपको साफ करता है इसको स्त्रियों की योनिमें पहुंचाना बहुत गुणकारी है कि मिया की कारीगरी में इसके गुण बहुत हैं अरस्तू के सिवाय औरोंका बचन है कि नतरून अरमनी का नमक है बहुत कठिन क़ूलंज की बीमारी को गुण करे और आंखकी सपेदीको नष्ट करता है जो इसको ख़मीर में मिलावें रोटीको ख़ुशरंग करता है जो देगमें छोड़दें मांस बहुत जल्दी गल जाता है (नोली) अरस्तूने लिखा है कि इसनाम के अर्थ विषके दूर

करनेवाला है और सम्पूर्ण विषों के वास्ते गुण कारक है परन्तु क-लेजे और मनको हानि कारक है और रगोंके अंदर रुधिर को उपद्रव कारक करता है आवश्यकता पर विषके दूर करने के लिये इसको सेवन करते हैं कभी ऐसा होता है कि प्राणोंके मार्गोंको रोकता है इसकारण मनुष्य मूर्च्छागत होता है सो चाहिये कि इसका सेवन विषके अवगुण करने के पहले करे तो उसका प्रभाव विषही परहो और जो पीछे सेवन किया तो यही मनुष्यके मारने वाला है (नूरा) यह जलेहुये पत्थरके प्रकारों से है लहूके चलने को बन्द करता है और आगसे जलेहुये पर तुरन्त गुण करता है और हम्माममें बालों के दूर करनेके लिये इसका सेवन बहुत उत्तम है परन्तु सेवनके उ-परांत बिनफ़शे और गुलाब का सेवन भी उत्तम है यह बात जिन्नों से मालूम हुई है क्योंकि जब दाऊदके पुत्र सुलेमानने बिलक़ीस से बिवाह किया तो इनके रूपमें कोई अवगुण न था परन्तु पिंडलीमें दाढ़ीके बालोंकी तरह अधिकता थी तो सुलेमांने जिन्नोंसे पूछा कि बालोंके दूरकरने में कोई उपाय मालूम है तो जिन्नोंने नूरा तय्यार किया यहभी लिखा है कि नूरेको जहां छिड़क दें मक्खियोंकी अ-धिकता न होगी (नौसादर) इसका उत्पन्नहोना नमकको तरह लिखा है परन्तु इतना अन्तर है कि इसमें मट्टीके भाग कम हैं और अग्निके भाग अधिक होते हैं इसी कारण जबइसे आगपर रखतेहैं तो यह बिल्कुल उड़जाता है किसी ने लिखा है कि पानी और धुयें के भागोंसे बहुत क्षीणतासे पैदा होता है बहुधा ऐसा होता है कि उसको हम्मामके धुयेंसे पाते हैं अरस्तूने लिखा है कि इसकी खानें बहुत होती हैं और इसके नाना प्रकार के रंग हैं बाज़ा नौसादर खाकीरंग कोई बिल्लूरके सदृश सपेद होताहै आंखकी सपेदीकेलिये अति गुणकारी है जो उसको दूसरी औषधियों के साथ पका कर सेवनकरें तो कफ़की पीनसको गुणदायक है शेख़ रईस लिखता है कि जो नौसादर को जलमें कजली करके छिड़कें कीड़े मकोड़े दूर होजाते हैं (हादी) अरस्तू लिखता है कि यह पत्थर उत्तर और

दक्षिण की सीमाओं में होता है और इसका रंग तिल्ली के सदृश है जो मनुष्य अपने पास रक्खे कुत्ते उसपर नभोंकेंगे जो उसको ग़ला कर उसमें गन्धक मिलावें तो पारेको बांधसक्ता है और फिर पारे में यह शक्ति न होगी कि आगपर उड़ जाय (याक़ूत) याक़ूत अति कठोर खुश्क और साफ़ चमकता हुआ नाना प्रकारके रंग अर्थात् सुर्ख पीला सब्ज़ नीलेरंग का होता है इसकी उत्पत्ति मीठे पानीसे होती है जो कि खानके बीच पत्थरोंमें समयतक रहताहै तो गाढ़ा होकर साफ और रंगीन होजाताहै और खानकी गरमी इससमय में पकाकर सख़्त पत्थर बनाती हैं आगसे नहीं गलता और कुछ चिकनापनभी रखता है और उसकी तरी हरसमय बढ़ा करती है और उसमें सोहन भी असर नहीं करता परन्तु उसमें हीरा और सम्बादज (कुरंड)असर करता है इसकी खान उत्तरके देशोंमें विष-वत्‌रेखा के निकट बताते हैं और छोटा होनेसे बहुत प्रिय होता है अरस्तूने लिखा है कि मुख्य करके याक़ूत चार प्रकार का होताहै लाल,पीला,और सब्ज़ सुर्ख हरएक प्रकारमें अति उत्तम और शुद्ध है और जब आंच दिखलावें बहुत सुर्ख और उत्तम होता है और जो उसमें कठोर २ बिन्दु होते हैं तो अग्नि में रखने से वह बिन्दु बिल्कुल पत्थर में फैलजाते हैं और जो काले बिन्दु होतेहैं तो आंच पातेही उनका रंग और भी चमक दमक लाता है (पीलायाक़ूत) लालसे आग पर अधिक ठहर सक्ता है और सब्ज़ याक़ूत अग्नि पर नहीं ठहर सक्ता सिवाय इनके और प्रकारके रंगभी हैं परन्तु वहऐसे उत्तमनहीं सो जो मनुष्य ऊपर वर्णन कीहुई इन तीनों प्र-कारोंमें अपने पास रक्खे संसारमें प्रतिष्ठित और आदरीक होगा और उसपर जीविका के कार्य सुगम होंगे अरस्तू के सिवाय औरों ने लिखा है कि याक़ूत पानीके बंधजानेसे रोकताहै (यशब अर्थात् यशम) यह सपेद रंगका पत्थर प्रसिद्ध है पक्वाशयके रोगोंको दूर करता है जो मनुष्य अपने निकट रक्खे उसपर कोई प्रबल नहोगा न युद्धमें न वाद बिवाद में और इसीदृष्टि से बादशाह लोग इस

पत्थरको अपनें कमरबन्दमें रक्खाकरतेहैं और एकस्वभाव इसका यहभी है कि मुहँमेंरखना प्यासको दूरकरताहै (यक़तान) अरस्तू ने लिखाहै कि यह पत्थर सदैव हिलता रहताहै और ठहरतानहीं जबतक कि मनुष्य उसपर हाथ न लगावे उन्मादरोग और कांपनी और जोड़ों की सुस्ती के लिये लाभदायक है यदि इसका यन्त्र बनावें तो समझ तेज़होगी स्मरण बढ़जावे बड़े २ बुद्धिमानों ने इस पत्थर के गुण सबलोगों से छिपारक्खे हैं॥

अपनी बुद्धिसे प्रकटकीहुई वस्तुओं का वर्णन॥

कहते हैं कि जो तरीपृथ्वी के नीचे छिपी है सर्दी में गरम होती है और गरमी में ठण्डी इस कारण कि गरमी और सरदी परस्पर के बिरोध के कारण एक जगह नहीं ठहरसक्ती तो जब शीतऋतुआई और ठण्ढीहवाहुई गर्म्मी मिटजाती है और गुफ़ाओं और पहाड़ों में स्थित होती है तो उनस्थानों में जो चीजें चिकनी होती हैं जब वहां सरदी और हवा पहुंचती है वह चिकनाई फैलती और फैलकर सख़्त होजाती है तो जब उस पर समय बीतता है तो वहतरी और चिकनाई सरदीके सबब बँधकर गंधक या पारे या गोंद या नमक के सदृश होजाती है और यह नाना-प्रकार के परस्पर बिरुद्ध पदार्थ वायु और पृथ्वी के बिपरीतहोने से होते हैं कि पहले पहिल यहशक्तियां अर्थात् गरमी सरदी तरी और खुश्की यह सबमिलके पारे के रूप होतीहैं इसतरह पर कि जो तरी मट्टी के भागो में छिपी होती है और जो भाफें वहगुप्त हैं जब उसमें खान और गरमी की गरमी पहुंची तो वह क्षीणऔर हलकीहोकर ऊपरको झुकतीहैं तो दरारों और छिद्रों और गुफाओं में स्थितहोती हैं और उनकीभाफें कुछ समय पर्य्यन्त ठहरी रहती हैं जब शीत की सरदी का वेगहुआ तो कठोर और बँधजाती हैं और उनही ग़ारों और गढ़ों में पृथ्वीसे मिली रहती हैं और एक समयतक वहांपर रहतीहैं और इससमयमें खानकीगरमी उनको पकाया करतीहै और शुद्धकरतीहै तो वह तरी पानी की या मिट्टी

की जो उससे मिलीहुई है और उस संगीनी और मुटाई समेत जो पाईगई है उसकोगरमीकी दृढ़ता पारासंगीन बनाती है और मट्टी के भाग जो नीचेकी ओर रहजाते हैं वह जलीहुई गन्धक होजाती है सो जब पारा और गन्धक आपस में मिले तो खानों के नाना-प्रकार के रंग बरंगे जवाँहर मिलते हैं जिनका वर्णन होचुका है (ज़ीबक) इसे फ़ारसी में सीमाब कहते हैं और हिन्दी में पारा यह जलके भागोंसे उत्पन्न होता है कि जो गन्धकदार मट्टी के उत्तम भागोंसे मिलकर कठोर होजातेहैं इसतरह से कि मट्टी और पानी में अन्तर नहींमालूम होता न उसका अलग करना सम्भवित है उसपर केवल एक मट्टीकापरदा ढंकारहताहै तो जब दोनों परस्पर एकहुये और परदा उसपर ढँकगया तो बहुधा ऐसा होता है कि उसबूंद के पास और बूंद जमतीहै और उसढकने को तोड़डालती है और यह बून्द भी उसमें मिलजाती है उस समय फिर मट्टी के ढकनेसे ढकजाती है पारे की सफाई पानी की सफाई से होती है और गंधकदार मट्टी के होने के कारण अरस्तू कहता है कि पारा चांदी के प्रकारसे है परन्तु इसपर खान के अन्दर आफतेंआतीहैं और आफतें वहीहैं जो रांगेके वर्णनमें लिखीगईं जो मनुष्य मारे हुये पारे को अपने शरीर में लगावे जूं मारडालेगा जो उसकी भस्मको आंटे में मिलाकर दें चूहे मरजायेंगे इसीतरह जो पारेकी भस्म आगपर छोड़ें तो जो उसके निकटहोगा उसे नानाप्रकारके रोग जैसे मुखगन्ध, अर्द्धांग, नेत्रकीज्योतिकी क्षीणता, रतौंधी, और पीलारंग, कांपनी और ब्रह्माण्ड की खुश्कीआदि होंगे पारेकेधुवें से सांप बिच्छूआदि भागते हैं या मरजाते हैं शेखरईस ने लिखा है कि पारे की खानसे बहुधा सोना और चांदी निकालते हैं पारे का कुश्ता भी जूं दूरकरता है और खाज और बुरेघावोंको गुणकारीहै और इसकाधुवां ज्वर अर्द्धांग और कांपनी पैदाकरताहै और आंखों को अन्धा करताहै और यहीकारण है कि कीमियागर लोगों की आंखोंसे ढलका जारी रहताहै और बहरेभी होजातेहैं और उनके

के ऊपरआताहै दोप्रकारका होताहै सपेद और काला कभी ऐसाभी होजाता है कि कालेनफ्त को कद्दू के रसमें डालकर पकाते हैं तो सपेद होजाता जो उसको लक़वा फ़ालिज (अर्द्धांग) और जोड़ो की पीड़ापरलगावें तो गुणदायक होगा और आंखकीसपेदी और नज़लेके पानीकोभी गुणदायकहै जो गरमपानीमें आधामिस्काल पिये तो पेचिश दूरहोगी और मरेहुये बच्चेतक उदर से निकालता है और जो बच्चे की झिल्ली गर्भाशय में रहगई हो तो उसको भी बाहर निकाल देता है और कीड़ों और फफ़ोले के दानों के लिये उपयोगी है और डंक के घावोंको भी लाभदेके बहुधा थोड़ेघिसने से बग़ैर आग के भी जल उठताहै साहब अख़तियारात ने लिखाहै कि सुद्देको खोलता है और दोनों चूतड़ों की पीड़ा के लिये लाभ करे पुरानीखांसी को दूरकरता है और कालेरंग का नफ्त पीड़ाके दूरकरने और मूत्राशय की सरदीकेलिये गुणकारी है और इसका बदला क़तरान है (मोमियाई) यह भी काली गोंद याक़ीर की तरह है परन्तु यह अतिप्रिय है इसकीखानें फारसकी धरती और मवस्सल में पाई जाती हैं टूटीहुई हड्डियों को पूरा गुण करती है और फालिज़ और लकवे को गुणकारी है और आधाशीशी और शिरपीड़ा और मिरगी के लिये भी अति उत्तमहै—यदि मरज़ंजोश अर्थात् दूने के अरक़ के साथ नाक में टपकावें या तीन रत्ती के अनुमान पियें जिह्वा का भारीपन और खुनाक और उन्माद को गुणदायकहै तेलकेसाथ डंकके घावपर लगाना गुणदायकहै साहब अख़्तियारातबदीही का निश्चय है कि बैसूक़ोरे दोस ने कहाहै कि मोमियाई अतिगुणदायक वस्तु है इसका स्वभाव तीसरे दरजे में गर्म्महै और बहुत उत्तम और गलानेवाली है शेख़रईस के विचार में दूसरेदरजे के अन्त में गर्म्म और पहलेमें खुश्क और प्राणों के बलदेनेवाली है कफकेशोथों को गुणदायक और बिगड़े रुधिर को लाभदे एकक़ैरात अर्थात् चारजौकेबराबर सिकंजबीनकेसाथ पीना कंठकीपीड़ा और हौलदिलको लाभदायकहै और आठजौकेअनुमान

मुखसे दुर्गन्ध आतीहै और पारा उड़नेवाला होता है और इसके धुवेंसे दुखदेनेवाले जीव भागते हैं शेख़ के सिवाय और लोगों का बचन है कि पारे का कान में टपकाना बुद्धि के निर्ब्बल होने का कारण है और क्या आश्चर्य कि सकता (यह वह रोग है जिसमें मनुष्य हिलजुलनहींसक्ता और मुर्दासा मालूमहोताहै) और मिर्गी का रोग होजाय जो अकस्मात् किसी के कान में पारा गिरपड़े तो उसके बाहर निकालने की क्रिया इसरीति पर है कि एकपावँ से खड़ाहोकर कूदे और अपने शिरको उस कान की ओर झुकावे जिधर पारा गिरा हो और अख़्तियारात बदीही के निर्म्मापक ने लिखाहै कि पारे के निकालने की यहरीति है कि रांगे की सलाई उसकान में डाले पारा उसमें चिपक कर निकलआवेगा जो कोई कच्चापारा खाजावे तो तुरन्त रांगा घिसकरपीजाय पारे का दुख न होगा कै, या दस्त के साथ निकल जायेगा (गन्धक) यह पानी हवा और मट्टी के भागों से उत्पन्न होती है जब वह तीनों अपने स्वभावानुकूल कठोरता से परस्पर मिलते हैं तो तेल की तरह पर होजातेहैं और फिर सरदी के सबब जमजाते हैं अरस्तू ने लिखा है कि गंधकके रंग बहुत प्रकार के हैं कोई सुर्ख़ कोई सपेद कोई ज़र्द लाल गन्धक की खान सूर्य्यास्त के स्थान पर है वहां पर मनुष्य का चिन्हभी नहीं है उक़यानूस समुद्र के किनारेसे कई फरसख़ (तीनमील) पर उसकी खानहै और लाल गंधक अपनी खान में रात्रि के समय अग्नि के सदृश प्रकाशमान रहती है और जब खानसे बाहर निकालें यह स्वभाव उसका जाता रहता है इसका धुवाँ सकते मिरगी और आधाशीशी रोगोंको गुणकरे और कीमिया में सोना बनानेके लिये काम आताहै और सपेद गंधक सपेदबस्तुओंको काला करती है कभी गंधककी खान बहते पानीकी नदियों में छिपी होतीहै इसकारण उन नदियों का जल दुर्गंधि युक्त होता है तोजोमनुष्य वायुके समान रहनेकी ऋतुमें ऐसे सोते पर नहाये तो हरघाव सूजन और खाज आदि को जो सौदा और दग्ध दोष

की प्रबलतासे हों आराम होजाता है और उदरकी पवन के लिये भी लाभकरे शेख़रईस लिखताहै कि गंधक बरसरोगकी औषधियों में से है परन्तु जब तक आंच न खाईहो जो गंधकको बुनके गोंदमें मिलाकर बदरंग नाख़ूनपर लगायें तो उन चिन्हों को नाश करता है सिरकेमें मिलाकर झाईं पर मर्दन करना गुण दायक है बिच्छू के विषको भी दूरकरतीहै और खाने और लगानेसे सम्पूर्ण प्रकार के घाव खाज और दाद गुण करे और नतरून के साथ पांव की रगकीपीड़ाकेलिये और इसकाअरक़ ऋतुके रुधिरको जारीकरताहै और इसकी धूनी ज़ुकाम नज़लेको गुणकारकहै जो इसका बुरादा शरीर पर मलें पसीने का निकलना बंद करेगी यदि गर्भवती स्त्री की योनिमें धुआंकरें तुरन्त गर्भपात होगा अरस्तू के सिवाय और साहिबोंका लेख है कि पीली गंधकको डंकमारनेवाले जानवरों के घावपर लगाना लाभ करे इसका धुआं बालों को सपेद करता है और इसकी गंधसे सांप बिच्छू भागते हैं मुख्यकर चरबीके तेल के साथ और जो तुरंज अर्थात् जम्भीरी नींबूके वृक्षके नीचेधुआंदें तो सब नीबू गिर पड़ेंगे (क़ीरया) बाज़े पहाड़ोंमें जोशखाता है और कई दरियाओंमें परन्तु उस चश्मे का पानी गरम २ जोशखाता है तो जब पानीका उतार हुआ तोनरम होताहै और जब गरमपानी से अलग हुआ ठंढा होकर सूख जाता है उस समय उसको लेकर पृथ्वीपररखतेहैं और फिरदेगमें छोड़तेहैं और कुछ रेतभी मिलाकर छोड़ते हैं और चुमटेसे हिलाते जाते हैं तो जब उसका उचित रूप दिखाई दिया तो उसके टुकड़े अलग २ पृथ्वी पर डालते हैं उस समय वह सख़्ती पकड़ते हैं शेख़रईसने लिखा है कि जो क़ीर को पियें तो जो लोहू पेटके अंदर सूख गया हो उसको पिघलाता है नाख़ून की सपेदी के लिये गुणकारक है कंठमाला पर लगाना बहुत लाभकरे और दाद को दूरकरे और जोड़ों की पीड़ापर लेप करना गुणदायक है और रांघन और खांसी और ख़ुनाक अर्थात् पीनसकी बीमारियों में इसका शरबतपीना गुणकरे (नफ्त) पानी

बिच्छूके घावके वास्ते फायदाकरे इसकापीनाटूटेहुये जोड़ोंकेवास्ते बहुत गुणदायकहै जो चाररत्तीके बराबर जोशदेकर जलंधर रोगी के उदरपर मर्दन करें गुणकरेगी और मूत्ररोध के वास्ते हरदिन किरफ्स अर्थात् बिलायती अजमोद के पानी में पीना गुणदायक है कोढ़ और सपेद कालेदाग जो शरीर पर प्रगट हों पीलपांव इनरोगोंके प्रारम्भ में सातदिन तक अफ्तीमूं* के साथ पकाकर चारजौके बराबर पीना गुणदायक है शीत कोपकाशय की पीड़ा और मंदाग्निकेलियेभी हरदिनमद्यमेंपीना गुणदायकहै औरबिच्छू और सर्पके विषऔर बिषखायेहुये को लाभकरता है परन्तु पहाड़ी पोदीना और अनीसून (रंदनी) के जोशदिये हुये पानी में मिलाकर यह गुण होगा यदि जोड़ोंमें कांपनी हो तो हरदिन सातर फारसी में इसका जोशांदा पीना गुण करे और गर्भाशय के बंदहोने और संपूर्ण स्त्रियोंकेरोगोंको जो शरदीसेहों तेजपातके पानीकेसाथपीना गुण दायक है और चौथिया तप की बीमारी में हरदिन पहले बीस दिरम बाद आवर्दको जोशदें फिर उसीके जोशांदे में मोमियाई को पियें गुणकरेगी इसके इतने गुण संक्षेपमें कहे गये और मोमियाई के बहुत प्रकार और भी हैं कि पहाड़ों और दरियाओंसे मिलती है और उसको फक़रूल यहूद कहते हैं और मनुष्य की भी बनी हुई मोमियाई होती है इसके गुणभी इस मोमियाई के निकट हैं अब यहां पर साहब अख़तियारात बदीईका वचन पूर्ण हुआ (अम्बर) इसकी खानमें अन्तर है बाज़ोंके विचारसे यह नरम मेंह है जो कई स्थानोंके पत्थरों पर दरियाके अंदर जमता है जैसा कि तुरंजबीन भी नरममेंह और उसीके सदृश है जो मुरुप्र करके ख़ुरासान के कांटेदार वृक्षों पर जमती है कोई कहते हैं कि यह दरियाई गाय की विष्टा है और यहभी कहते हैं कि जो चीज़ें दरिया में उगती हैं और जल जंतुओं के खानेमें आती हैं यहीहैं और कइयों का वाक्य हैं कि मछली के उदरसे पाया जाता है कि वह इसको खाकर मर

* इस को हिन्दीमें अमरबेल या आकाशबेल कहते हैं।

जाती है शेख़रईस कहता है कि अंबर चश्मे से मिलता है निदान बहुतोंके वचन इस विषय में लिखे हैं अख़तियारात बदीही का निर्मापक लिखता है कि निश्चय करनेसे यह बात सिद्धहुई है किंयह एक प्रकार का मोम है और इस प्रकार में उत्तम अशहब होता है जिसको स्पन्द कहते हैं दूसरा नीलेरंग का जिसको फितक़ी और तीसरे पीले रंगका जिसको खश खाशी कहतेहैं और उसके दरिया में पैदा होनेमें कुछ बिरुद्धता नहीं है निदान यह दरिया में उत्पन्न होता है और दरिया इसको किनारे पर पहुंचाता है कहते हैं कि जंग दरिया किसी ऋतु में इस अंबर की इतना अपने किनारे पर फेंकता है कि एक टीलासा मालूम होता है बहुधा जो देखागयातो हरटुकड़ा अंबरका शिरकी खोपड़ीके सदृश होता है जिसका वज़न हज़ार मिसकालके अनुमान होता है और बहुधा मछली के पेट से भी निकालते हैं कहते हैं कि जब मछली इसको खाती है तुरन्त मरजाती है और पानी पर उभर आती है उस समय लोग उसका पेटफाड़ कर निकालते हैं ब्योपारी उसको खूब पहचानते हैं अंबर जितना सपेद और हलकाहो उत्तम होगा उसका स्वभाव दूसरे दर्ज़ेमें गरम और पहले दरजेमें ख़ुश्क है बुड्ढोंके लिये अति गुणकारी है ब्रह्माण्ड और इन्द्रियों को लाभ देता है और मनका बल कारक और प्राणों को बलदेता है और आज़ायरईसा अर्थात् कलेजा, मन, और भेजे और शिरपीड़ा और पक्वाशय को गुणदायक है और जो बिकार कि आंतों आदि में होते हैं उनका दूर करनेवाला है कदाचित् ठंढेदोषों से आधाशीशी और शिर पीड़ाहो तो धुवाँदेना गुणकारी होगा और जो तरी और उपद्रव कारक बिकारोंसे जोड़ोंकी पीड़ाहो उसपर इसका लेपकरना गुणदायक होगा जो गरम तेल जैसे कि दूना या बाबूना के तेल में कजली करके नाक में टपकावें जो बुड्ढों को कफ़ के मोटेहोने के सबब ब्रह्माण्ड में रोगहो उसको गलाताहै यदि उसका लख़लख़ा (कईसुगन्धदार चीज़ेंमिलाकर सूंघीजाती हैं) बनावें तो फ़ालिज़

और लक़वेको गुणदायक है और तेल में कजलीकरके मर्दनकरना फीहाकीपीड़ाके वास्ते गुणकारी है कहतेहैं जो थोड़ा शराबमें पियें तुरन्त बीर्य्यपात होगा और एकदांग अर्थात् छः रत्ती के अनुमान से अधिकतर पीना हानिकारक है और इसकेबिकारका शोधन-करनेवाला कपूरका सूंघना है इससफे और पिछलेसफेमें थोड़ीबातें मुख्यपुस्तकमें न थीं उल्थकने अपने निश्चयकरने और अभ्याससे अधिककी हैं अब स्थावर और जंगम का वर्णन किया जाता है॥

(नज़र दूसरी स्थावर पदार्थों के वर्णन में)

स्थावर पशु और खानोंमें मध्य पदवी पर हैं इसका वर्णन इस रीति पर है कि स्थावर जंगमसे बड़ा है क्योंकि स्थावरपदार्थ बढ़तेहैं और जंगम नहीं स्थावरोंका जीवधारियोंसे साझाहै परंतु थोड़ेकामों में और ईश्वरनेहर एकबस्तुको आवश्यकताके अनुकूल उत्पन्नकियाहै और जब वह बस्तु आवश्यकतासे अधिक होती है तो वही अधिकता उसपर भार होती है निदान जंगम पदार्थों को हिलने जुलने की कुछ आवश्यकता नहीं परंतु उससे बिपरीत जीवधारी हिलने जु-लनेकी आवश्यकता रखताहै ईश्वरकी अद्भुत मायाहै कि जो दाना किसी चीज़का तरज़मीनसे मिलताहै सूर्यकी गर्मीसे दोटूक होजाता है और यही उसी शक्तिकी क्रिया है जो ईश्वरने उसमें उत्पन्नकीहै मट्टीके भाग मट्टीसे और पानी के पानी से स्थित होते हैं सो वही भाग बाज़े २ के ऊपर इकट्ठे होते हैं और वह दाना स्थावर का बीज होकर फल फूलसे भरपूरहोता है प्रकटहो कि स्थावर दोप्रकार केहैं एक वृक्ष दूसराबेल वृक्ष वह स्थावर है जिसकी साक़ अर्थात् पेड़हो और बेल वह है जिसके पेड़न हो सो वृक्ष बड़े जीवधारियों के सदृश हैं और बेल छोटे जीवधारियों के सदृश और जो ईश्वरने इन स्थावरोंको शक्तिदी है वह दोप्रकार कीहै एक ख़ादिमा दूसरी मख़्दूमा ख़ादिमाके चारप्रकार हैं(प्रथम)जाज़बा अर्थात् वहशक्ति है जो पानीको वृक्षके मूल में खींचती है और वहांसे वृक्ष के ऊपर पहुंचाती है (द्वितीय) मास का अर्थात् रक्षा करने की शक्ति

जो जलकी तरीको रक्षा रखती है कि उस वृक्ष में गुण करे यह चाहे जीवधारियों में बहुत प्रकटहै जैसे जब मनुष्य जल पीताहै शक्ति वह शिर अपना नीचे को झुकाले परन्तु वह जल बाहर न निकलेगा क्योंकि वह रक्षा करने वाली शक्ति उसको रोके हुयेहै और इसके बिपरीत कि जिस घड़ेमें जल भरकर औंधा कीजिये जोकि उसमें रक्षा करनेका बल नहींहै तुरन्त गिरजावेगा (तृतीय) पचनेकी शक्ति और यह तरीको शोधन करतीहै कि वहतरी वृक्षका भाग होजाय (चतुर्थ) दूर करनेकी शक्ति जो तरीको दूर करती है अर्थात् जो तरीशुद्ध नहीं है वा वृक्षके भाग होनेके योग्य नहीं है उसको दूरकरतीहै और यहशक्ति सबजीव धारियोंमें भी प्रकटहै कि मलमूत्र हुआ करताहै और मखदूमा शक्ति भी चार प्रकारकी है (प्रथम) ग़ाज़िया यह वह शक्तिहै जो गलेहुयेके स्थाना पन्नहोतीहै (द्वितीय) बढ़ानेकी शक्ति जो मुख्य शरीरमें वृद्धि लातीहै भोजनके पहुंचानेसे जैसा कि जीवधारियोंमें अधिक प्रकटहै कि बढ़ानेवाली शक्ति भोजन से दहने तरफ़ पहुंचाती है फिर बाईं ओर की अच्छी तरह बढ़े (तृतीय) मोल्दह अर्थात् शुद्ध मूलके पैदा करने वाली शक्तिऔर उससे फलके लानेकी शक्ति स्थावरोंको प्राप्त है और यह शक्ति तरीकीहै जिस प्रकार से पशुओं में मूल वीर्य्य है (चतुर्थ) मसव्विरह है यह वह शक्ति है जिसके द्वारा रूप व रङ्ग तय्यार होताहै और यह अद्भुत शक्तिहै जैसे कि वहपत्ते फूल बूटे कलियां और रंगा रंगके फलहैं और भोजनकी शक्तिके भी अद्भुत गुणहैं कि बहुधा ऐसा होताहै कि सम्पूर्ण भोजनको गिरी में ख़र्च करतीहै और शरीर के लिये कुछ नहीं छोड़ती जिस तरहसे अख़रोट बादाम फन्दक (विलायतीप्रसिद्धफलबेरके बराबरहै) और पिस्ते में और उसफलके वास्ते मानो पुख़्ता सन्दूकदेतीहै कि उसगिरीको एक समयतक रक्षितरखसके और इसमें कोईखराबी न आसके सो वह उसगिरीके जमाकरनेमें लगीरहतीहै और गिरीकोनहींछोड़ती हां कुछ बीज के मिलने को छोड़ती है जैसा कि सेव अमरूद और

बिहीमें देखा जाताहै कि खानेवाला छुरीसे सपेदी निकाल कर खा सक्ताहै तो यह सबबल जो ईश्वरने उत्पन्नकिये जिसतरह से ईश्वर की आज्ञाहै जिसके अर्थ नीचेलिखे हैं कि ईश्वर निकालने वालाहै दाने और गुठलीका पैदाकरनेवालाहै जीतेकोमुरदेसे और मुरदेको जीतेसे इसस्थान मुरदेके अर्थ अण्डा और जीतेसे मुर्ग़ प्रयोजन है कि एक दूसरे से निकलते हैं निदानस्थावर दो प्रकार के हैं एक वृक्ष दूसरेबेल ईश्वर चाहै तो दोनोंप्रकारोंका वर्णन निकटही किया जाताहै॥

(पहलाप्रकारवृक्षोंकावर्णन)

शजर उस वृक्षको कहतेहैं जोखड़ारहै और यह बड़े वृक्षमानों बड़े जीवधारी हैं और जो पृथ्वी पर फैलीहुई होतीहैं वह बेलें हैं और यह छोटे २ जीवधारियों की तरह परहैं और बड़े २ वृक्षजैसे साल,चिनार,(विलायती वृक्ष) सरू आदिमें फल नहीं होता इस का कारण यहीहै कि उनका मूल केवल दरख़्तों में खर्च होता है और फलदार दरख़्त इनसे छोटे होतेहैं और इनका मूल केवल वृक्षमेंही नहीं किन्तु उनके फूलने फलनेमें भी खर्चहोताहै स्थावरों में भी जीवधारियों के सदृश नरमादा का हाल पाया जाता है कि जो वृक्षोंमें नरहैं उनका थाला मादासे बड़ा होताहै और इस बात का प्रमाण कि हमने वृक्षों और जीवधारियों एकसा बताया है भोजन के कारण सेहै जिस तरह कि जीवधारियों के शरीर में घुसनेवाली होतीहै और उनको बल पराक्रम और सन्तानके होने की शक्ति पहुँचातीहै इसी तरह वृक्षोंको पानीका पहुँचानाहै अर्थात् जब वृक्षोंकी जड़में पानी छोड़तेहैं उसका सारांश हरएक रग और रेशे और अन्दरके स्थानोंपर पहुंचताहै और हर पत्ते और फलमें अपने बढ़ने का प्रभाव दिखलाताहै ईश्वर की माया देखिये जिस तरह से जीवधारियों को बाज़ और पर और चमड़ा आदि कृपा किया वृक्षोंको हरे २ पत्तोंके पहिनाव कृपा किये और जिस तरह पर जीवधारी अपने सींग और हाथ पैरोंसे अपना बचाव करते हैं

वृक्षभी पत्तोंके इकट्ठे होने के कारण गरमी सरदी से बचे रहते हैं और बुराई भलाई इन्हीं पत्तोंके होनेपररक्खीहै जो अधिक होजायँ तो फलकी छाल कठोर और उसकी गिरी हलकी हो जो फलों के ऊपर उनकी छाया दूरहो तो सूर्यकी गरमीसे झुलसजायँ जैसाकि बहुधा अनारो में देखा जाताहै कि उनका एक किनारा कभी २ काला दिखाई देताहै और जब फलका समय आताहै तो पतझाड़ होतीहै क्योंकि उस समयजल शक्ति वृक्ष में प्रभाव नहीं करती है और इन वृक्षोंसे ईश्वर की दीहुई शक्तियहहै जिसका वर्णन ईश्वर नेही अपने मुखसे कियाहै कि हम कैसे कारीगरहैं कि एकही जल से सब वृक्षों का पालन होताहै और फिर स्वाद में अन्तर है यह बुद्धिमानों के बिचारमें बड़ी कारीगरी की बातहै निदानइस स्थान पर आवश्यक वृत्तान्त वर्णन करते हैं और वृक्षोंका वर्णन लिखतेहैं (आस) इसको फ़ारसीमें मूरद कहतेहैं साहब इन्फ़लाहा लिखताहै कि जब इस वृक्षको लगाना चाहैं तो पहले उसके थालेमें जोबोवें कि इससे वृक्ष दृढ़ होताहै शेखरईश के बिचारमें इसके पत्ते को तूतियाके साथ झाईंपर मलना गुण करे और रतीला के घावपर मलना लाभदे (रतीला एक प्रकार की विषैली मकड़ी होतीहै) और इसका फल पीसकर पीना बिच्छूके विषकोदूर करताहै इसके पत्तोंको पीसकर बालों में लगाना बलकरे इसकेफलको उबालकर कुल्लीकरना दांतकेकीड़ोंकानाशकरताहै॥

तसबीरनम्बर १६८

(आबनूस) यहवृक्ष एकपहाड़के टुकड़ेकी तरह काला और बड़ा होताहै औरइसकीचोटीपरसब्ज़पत्तेहोते हैं इसकीलकड़ीबहुतकठोर किन्तुपत्थरके बराबरहोतीहै शेखरईशका वचनहै कि इसके जलाने मेसुगन्ध पैदा होती है जो इसको पानीमें घिसकर आंखमें लगावें सपेदी दूरहो और धुंधभी नष्टहो और इसका मर्द्दन आग से जले हुये और उदरके अफ़रापर गुण दायक है स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर १०६

(अतरज) अर्थात् तुरंजका वृक्ष (जम्मीरीनींबू) गरमधरती पर उगताहै साहब अन्फलाहा के विचारमें जो कद्दूके वृक्षकी मट्टी इसकी जड़ में डालें तो इसमें बहुत फलहोगा और फल बहुत दृढ़ होताहै जो इसके पौधेको कद्दूके पत्तों से छिपादेवें तो मज़बूत हों और पालेसे भी बचा रहे साहब फलाहा लिखताहै कि जो मनुष्य यहचाहे कि अतरज का वृक्ष मज़बूत ताक़तदार और पायदार रहे तो कद्दूके वृक्षके नीचेकी मिट्टी लहूमें भिगोकर उसकी जड़मेंछोड़ देंजो यह चाहे कि इसका फल समयतक स्थिररहे तो उसपर चूना लगावे यदि तुरंजका लाल रंग करना चाहे तो उसके वृक्षकोशह-तूत या अनार के दरख्तको पैबन्द देवें जो तुरंजको जौमें गाड़कर रक्खें तो मुद्दत तक हराभरा रहे इसके पत्तोंको चबाना मुखमें सु-गन्ध पैदा करताहै और लहसुन प्याज की दुर्गन्ध का दूर करने वालाहै बलैनासने इसके गुणमें लिखाहै कि इसके पत्तोंको बादाम के तेलमें जोश देकर जिसको खिलावें वह प्यारकरनेलगे इब्नुल-फ़िक़ियाने लिखाहैकि फारसके देशोंके बुद्धिमानोंने इसका संघना गुणकारी समझा है इसकी सपेदी और खटाई भोजनकी चीज़ों में खर्च होतीहै और दानेसे तेलनिकलताहै इसकीछाल मुखकीदुर्गन्धि को गुण करतीहै और अर्द्धाङ्गको भी गुणकरे इसकी छालको पीस कर पीनासर्पके विषकोउपयोगी औरइसकीराखका मरहमबनाकर लगाना झाईं और दादको गुणदायकहै शेखरईश ने लिखा है कि इसकी छाल जिन कपड़ोंकी तहमें रक्खें उसमें कीड़ा न लगेगा और इसके छालकी गन्ध उपद्रवकारक वायु और महामारी के है जे और स्त्रियोंकी मलीनता को दूर करतीहै कहते हैं कि जो खट्टे तुरंज का रस रोशनाई में मिलावें तो उस का लिखा हुआ खत बहुत जल्दी उड़जाता है इस का बीज घिसकर बिच्छू के विषपर लगाना गुणकारी लिखाहै जो कपड़ेकी पोटलीमें रखकरजिस स्त्री

की बाईं भुजा पर बांधें वह कभी गर्भवती न होगी जबतक वहयंत्र बँधारहे स्वरूप यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८०

(अजास) अर्थात् आलूबुख़ारा साहबुलफलाहाका वचनहै कि जो आलूके वृक्षको आलूके पानीसेसींचे तो उसकाफल अति स्वादिष्ट होताहै जो इसके वृक्षमें गायकापित्ता छोड़ें तो उसके फलोंमें कीड़े न होंगे इसका फल प्यास और पित्त की गरमी को गुण करे जो यह चाहे कि आलू को मुद्दत तक रक्खें तो चाहिये कि किसी बरतनमें रखकर ऊपरसे इसीका पानीभर दें और फिर कपरमिट्टी करदें आलू ताज़ेरहेंगे इसकेपत्तोंको शराबमें उबालकर कुल्लीकरना दांतोंके जड़ोंकी पीड़ा दूरकरता है सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८१

(आज़ाद दरख़्त) तबरिस्तान में होता है जिसको ताहक भी कहते हैं उसका मेवा बेर के सदृश होता है कहते हैं कि विषैला है इसके पत्ते खाना पशुओं के लिये मारडालने वाला बिषहै इसका रस बालों में मलना बालोंको लम्बा करता है और जूं मरजाती हैं शहद में मिलाकर पीना बिषको गुणकारी और पहलू की पीड़ाका नाश करनेवाला है शेख़रईस ने लिखाहै कि जो इसका फलखाय उसको दुःख और शोक बहुत हो क्या आश्चर्य्य कि वह मनुष्य मरजाय सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८२

(अमग़ीलां) कांटोंदार जंगली दरख़्तहै इसको दरख़्त सम्मग भी कहते हैं शेख़रईस के विचार में इस जड़ से टकोर करना या धूनीलेना शरीरको सुगन्धित करताहै और नूरेकी गन्धको दूरकरताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८३

(बान) प्रसिद्धहै इसके फलका दाना चने से बड़ा सपेदीलिये होता है इसकी गिरी को जरब कहते हैं शेख़रईस ने लिखाहै कि इसकी गिरी झाईं आदि चिन्हों को दूर करती है और उबाल कर

कुल्ली करना दांतों के जड़की पीड़ा को दूर करताहै बहुधा मनुष्यों का वचनहै कि बहरापन भी दूर होताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १८४

(बतम) अर्थात् बुन इस प्रसिद्ध पहाड़ी वृक्ष का फल और बीज बहरेपन और दादु को गुणकरे कइयों के विचार में कामदेव अधिक कर्त्ता भी है शेख़रईस का वचनहै कि इसका लेप फालिज और लक़वेको गुण कारक और भूखको कम करता है इसका गोंद और फल शराबमें मिलाकर रतीलाके घावको गुणकारीहै (रतीला एकविषैली मकड़ी होतीहै) वृक्ष का स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर १८५

(बलसां) मिसर के एकमुख्य मौजेऐनुशशम्स में पाया जाता है इसकी गन्ध और पत्ते तितलीकी तरह होतेहैं परन्तु कुछ सपेदी लिये शेख़रईस के विचार में इसका दाना और लकड़ी शिर और फेफड़ेकी पीड़ा और रांधन और मिरगी के लिये गुणदायकहै और बहुधा कहतेहैं कि इसकी धूनी बांझ स्त्री को लाभकरे और बिषैले जानवर मुख्यकरके सांपकेघावको गुणकरे जब शोरी सितारा जो कन्या राशि के पीछे की ओर उदय होताहै और उसको उबूर भी कहतेहैं उसके जगह लोहे से गोदकर उसका रस रुईके पहलों में रखतेहैं हरबर्ष कईरतिल (आधसेर) प्राप्तहोसक्ताहै परन्तु इसका पकाना और तेलबनाना एकअंगरेज़का कामहै सिवाय उसके और कोईनहीं जानताहै और हज़ारोंबर्षसे सैकड़ोंवर्षों से यहकाम चला आताहै बीजोंसे अधिकतेल और लकड़ीसे दाना अधिकबलवान्है इसकातेल संसारभरके तेलोंसे उत्तमहै और इसकीलकड़ियोंमें वह लकड़ी उत्तमहै जो गेहुआंरंग और बराबरहो शेख़रईसका निश्चय है कि यह तेल आंख के परदेको प्रकाशवान् करताहै और बच्चेको पेटसे निकालता और झिल्ली जो पेटमें बच्चेपर लिपटीहोतीहै उसको भी निकालता मूत्रको जारी करता और टूटीहड्डी को दुरुस्त कर देताहै इसका मर्दन लँगड़ों को आरोग्य करता और उपद्रव करने

वालेघाव और अर्द्धाङ्गको गुणदायक है और जब इसतेलको पकाते हैं तो मोम रोगन की तरह गाढ़ा होजाता है उस बलसां नामी वृक्षकी सूरत यहहै॥ तसवीर नम्बर १८६

(बलूत) कहतेहैं कि इस पहाड़ी वृक्ष का फल एक बर्ष बलूत और दूसरे बर्ष माजू हुआ करताहै जो यहसचहै तो वहीबात हुई कि जैसे चारपायों में खरगोश और उड़नेवालों में कश्तार अर्थात् हुयडार और ज़ग़न अर्थात् चील जो एकवर्ष नर और दूसरेबर्ष मादा रहतेहैं लिखाहै कि इसके पत्तोंको सांप पर निचोड़ें तो सांप हिल न सके शेख़रईसके बिचारमें इसके पत्तोंको पीसकर घावमें लगाना भरताहै इसकाफल कीड़े मकोड़ोंकेविष और लहूकेनिकलनेको बन्द करताहै बहुधालोगकहतेहैं कि जो इसकीराख जंगलीचूहोंके समूह में डालदें तो वह आपसमें युद्ध करने लगेंगे सूरत उसकीयहहै॥

तसवीर नम्बर १८७

(तफाह) अर्थात् सेबसाहबुलफलाहा लिखताहै कि इस वृक्ष के पहलू में जंगली प्याज का बोना गुणकरे फिर कीड़े इसके फल और दरख़्तको न पहुंचेंगे जो इसके थाल्हों में मनुष्य या सुअर की बिष्टाछोड़ें तो फल अति दृढ़ और सुर्ख़ रंगका होगा और सुर्ख़ रंग करने के वास्ते इसके गिर्दागिर्द लालफूलों का लगाना भी अच्छा है और जो शराबकी तलछट और बकरीकी मेंगनियां इसकी जड़ में भरदें तो उसका फल कभी न गिरेगा शेख़रईस का वचनहै कि इसका रसपीना पट्ठोंकीपीड़ाको गुणकरे और पांवकी रगकीपीड़ा वाले के पांव पर मलना और सम्पूर्ण प्रकार के बिषों को लाभ दे मुख्य इसके कच्चों फलों का रस बिषको बहुतही गुणकरे यदि सेव को मुद्दततक अंजीरके पत्तोंमें रखछोड़ें न सड़ेगा इसकी सुगन्धका सूंघना ब्रह्माण्ड को बल दे और आंखों में तरावट देनेवाला और मुंह मीठा करता है॥

तसवीर नम्बर १८८

(तनूब) यहबड़ा वृक्ष रूमके पहाड़ोंकी जड़ोंमें होताहै इसीसे

क़तरान (एकप्रकार का तेल)मिलताहै शेख़रईस लिखता है कि इसको ताज़ा २ घाव पर लगाना उत्तम है घावको बिगड़ने नहीं देता इसकी लकड़ी सिरके में घिसकर दांतोंकी पीड़ाको गुण करे इसकाबीज छातीके नफ़्सको गुण करताहै नफ़्स कफ की तरहपर एक बस्तु है जो हृदयमें जमा होती है इसका गोंद खांसी गुण करे इसी वृक्षसे गोंद निकलताहै जो नाख़ूनकी सपेदीके गुणकरने का प्रभाव रखताहै और पैरों की बिवांई पर इसका मलना गुण करे और बालखोरे पर मरहम बनाकर लगाने से बाल निकलते हैं और इसका धुआं पलकों को मज़बूत और नेत्र की ज्योति को बलवान् करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १८६

(तूत) इसे खरतूत भी कहतेहैं और इसे लोग प्यारा रखतेहैं कि रेशम के कीड़े इसी में पलतेहैं मीठे तूतको अरबवाले फरसाद कहतेहैं और खट्टेको नवाती साहबुलफलाहा का बचनहै कि इसके पहलूमें जंगली प्याजबोना तूतके वृक्षको बलकरे और फल में रस बहुतहोताहै खट्टेतूतका पत्ता बिवाँई और गलेकीपीड़ा और पीनस को गुणकरे और इसका रस रतीला के दुखको गुणकरे शेख़रईस कहतेहैं कि खट्टेतूतकीकुल्लीकरना दांतोंकीपीड़ाको दूरकरताहै और कालातूत बिच्छूके घावपर रखना पीड़ा ठहराता है इसकी छाल शहदमें मिलाकर उबटनाकरना मैल साफ करताहै और फफोलों को दूर करता है जो काले तूतसे हाथ काले होजायँ तो सपेद तूत के मलकर धोनेसे मुख्य रूप आजावेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६०

(तैन) अर्थात् अंजीर साहबुलफलाहा लिखता हैकि इसके वृक्ष लगाने के पहले उचित है कि पहले इसके पौधे को नमक में रक्खें और फिर गोबर थाल्हे में डालकर दरख़्त जमादें तो इसका फल बहुत स्वादिष्ट होगा इसके दरख़्त के नीचे अंडेको गाड़ देना उत्तमहै फल बहुत होते हैं जो इसकी जड़ में केकड़ेको नीले नमक

के साथ गाड़ें तो इसकाफल कभी न गिरेगा और मीठाहोगाइसकी लकड़ी का रतीला नामी मकड़ी के काटेहुये पर लेपकरना गुणकरे और अंड वृद्धि के रोगमें धूनीलेना बहुत उत्तम है इसके कोंपलकी धूनी सम्पूर्णप्रकारके कीड़ों मकोड़ोंके विषमें लाभकरे और दांतोंकी पीड़ापर लेपउत्तम है और ताज़ेपत्ते कच्ची अंजीर मिलाकर दीवाने कुत्ते के घावपर लगाना गुणकरे जो रुई में रखकर नेवले के काटे हुये घावपर रक्खे गुणकरेगा इसकी छालका रस शरीरकी दुर्गंधि दूरकरता है और दसम (कई जातिकी स्त्रियां अपने हाथों आदिपर नीला गोदना गुदाती हैं) कि नवीन चिह्नोंको दूरकरताहै हरेपत्ते अंजीरके दूधमें निचोड़नेसे दूध जम जाता है इब्नअब्बास ने कहा कि यह वह मेवा है कि जिसके लिये ईश्वरने क़ुरानमें सौगन्ध याद कीहै इन शब्दोंसे कि यह मेवा स्वर्गके फलोंके सदृश है एकसमय कोई मनुष्य हज़रत मुहम्मद साहबके साम्हने अंजीरलाया आपने कहा कि जो इसका अंजीर के बदले स्वर्गी फल रक्खा जाता तो बहुतही उचितथा बवासीर और नकरस (वहरोग जो पावँकी उंगलियों में होता है) के वास्ते गुण करे शेख़ ने लिखा है कि कच्ची अंजीर का लेप मस्सों और झाईं आदि पर लगाना गुणकरे और हररोज़ अभ्यास करके अंजीर खाना बदनके रंगको बदरंग करता है और ऐसी स्थिर मोटाई लाता है जो जल्दी दूर होजावे और जूयेंभी पैदा होते हैं सूखी या तर जैसी अंजीर खाये मिर्गी दूर होजाय इसका दूधलगाना फोड़ेको पकादेताहै और उपद्रव कारक मांसको दूर करता है जो इसका दूध गायके दूधमें मिलावें तो वह सब दहीकी तरह जमजाता है जो इसका दूध शहद में मिलाकर आंखमें लगावें तो आंखकी अँधेरीकोगुणकरे और इसका रसपीना भूख दूरकरता है और मूत्ररोध का रोग पैदा करता है और बिच्छू के डंक को भी लाभकरे ज़करिया के पुत्र मुहम्मद का बचन है कि अंज़ीरके धुयेंसे मच्छड़ भागते हैं चित्र उसका यह है ॥

तसवीर नम्बर १६१

(जमनेर) यह भी अंजीर के सदृश होता है और पत्ता तूत के सदृश बर्षमें तीन वेर फलता है इसका फल और फलदार दरख़्तों की तरह डालियोंपर नहीं होता किन्तु जड़ में फलता है जो इसका रस लेकर कईबार दसम और कंठमाला पर लगावें गुण करे और पीनाभी डंक मारनेवाले जानवरोंके लिये गुणदायकहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर १६२

(ज़ौज़) अर्थात् अखरोट यह वृक्ष ठंढे देशोंमें होताहै साहबुल-फलाहाने लिखा है कि जो यह चाहे कि इसके फल की छाल हाथ से बेपरिश्रम दूरहोजाय तो पहले अख़रोटको पांचदिनतक लड़के के मूत्रमें भिगोकर फिर बो दे और उसपर राख छिड़कदे जब उस बीजसे वृक्ष उगेगा और अखरोट लगेगा छिलका हाथसे जल्दी अलग होजाया करेगा और जो अखरोट का छिलका दूर करके उसकी गिरीको बो दे तो उसके वृक्षके फलकीछाल काग़ज़की तरह पर महीन होगी जो बोनेके समय थोड़ा सा गुलाब उसकी जड़ में छोड़दें तो बहुत फल लावेगा इसका पैवंद किसी वृक्ष से नहींहोता परन्तु पिस्ते के वृक्ष से देते हैं और उस पैवंद से अद्भुत स्वभाव का फल निकलता है कि जो उसका छिलका दूरकरके ऐसी देग में जोश दें जिसमें ज़ंग लगाहो तुरन्त साफ होजावे जो अखरोटको वर्षभर तक रक्खें तो न सड़ेगा और जिसको बावले कुत्तेनेकाटाहो उसको खिलाना गुणदायक है मार पीट की चोट में हरे अखरोट का लेप पीड़ाको थमाता है इसकी जड़के सेवनसे शिर पीड़ा पैदा होती है जो मनुष्य इसको सदा खाता है उसको दस्त कीड़ोंके साथ आतेहैं और उसको जलाकर ख़िज़ाब करना सपेद बालोंको काला करदेता है और जो उसकी राख घावपर छिड़कें सूखजावे और तत्कालके फफोलेको भी गुणकरे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १६३

(ख़ुसरोदार) शेख़रईस के विचार में वीर्यके अधिक करनेवाला

और फालिज (अर्द्धांग) को गुण करे और मुखकी दुर्गंधि को दूर करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६४

(खरदा) अर्थात् बेद अंजीर इसका दाना सूखकर कलीमें ही चिटक जाता है इसका दाना फालिज और पहलूकी पीड़ा को गुण करे और इसके तेलमें मुर्ग़की गर्दन डुबोना मुर्ग़को चुप करदेता है और फिर कभीवह बांग नहीं देता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६७

(ख़िलाफ) इसको फ़ारसीमें बेद कहतेहैं इसकी लकड़ी बहुत हलकी और इसके पत्ते जीम (फ़ारसी हरफ़ जो गोल होताहै) के सदृश होते हैं सेवन करनेपर मनका बलकारकहै और जिसमनुष्य को लू लगी हो उसके बिछोनेपर इसके पत्ते बिछाके उसमनुष्यको लिटावें आराम होजावेगा इसकेपत्ते में यहगुणहै कि लहूकाबहना बन्दकरताहै कली इसकी सुगन्धित और ब्रह्माण्डको बलकरती है और इसका अरक़ शिर पीड़ा में गुण दायकहै और अंजीरकी राख सिरके में मिलाकर फोड़े फुंसीपर लगाना लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६६

(ख़ोख़) फ़ारसी में इसको शफ़्तालू कहते हैं कहते हैं कि जो चाहें कि इसकरंग बहुतसुर्ख़हो तो यह तदबीरकरें कि जो शफ़्तालू वृक्षमें अपनेआप फटगयाहो उसको लेकर शिंगरफ में लपेटें और थोड़ो चरबी उसपर लगाकर बो दें तो उसका फल बहुतसुर्ख़होगा जो उसकी गुठली पर कोई चीज़ खींच दें या कोई इबारत लिखदें और उसको बोदें तो उसके सब फलों में वह इबारत लिखी होगी जो उसके पौधेको उखाड़कर उसकी जड़ें बहुत काटडालें और फिर बोदें तो उसके फलों में गुठली न होगी इसके पत्तोंका लेप नूरेकी दुर्गन्धि को दूर करताहै और नाभि पर लेप करने से पेट के कीड़े मरजाते हैं उसका फल बीर्य अधिक करता है जिस कपड़े में जुयें बहुतहों उसकोइसके रसमें डुबोदें सबजुयें मरजायेंगे सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर १६७

(दारशीशाआं) यह कांटेदार दरख़्तहै जिस दरिया में घड़ियाल बहुतहों जो वहां इसवृक्षकी लकड़ी को छोड़दें तो घड़ियाल आदि उसके इर्द गिर्द इकट्ठे हों शेख़रईस ने लिखा है कि इसकी बत्ती नाकके अन्दर करना दुर्गन्धि दूरकरताहै इसकी कुल्लीकरना दांतों की पीड़ा को गुणदायक है और मूत्ररोध को उपयोगी जो इसकी धूनी स्त्रीको देवें तो बच्चेको बाहर निकाले सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६८

(दरदार) अरब इसको शजरतुल अलबक़ अर्थात् मच्छड़ों का वृक्ष और हिन्दीमें गूलर कहतेहैं यह बड़ा वृक्षहै इसका मेवा अनार की तरह होताहै जिसमें एक ऐसे प्रकार की तरी बँधीहुई है कि जब उसको तोड़ते हैं तो उसमें मच्छड़ और भुनगा उड़ते हुये दिखाई देते हैं अजायबुलमख़्लूक़ात के निर्मापक ने लिखा है कि मैंने ख़ुद इस वृक्षका फल अपने हाथ से तोड़ा उसके अन्दर दाने रैहांकी तरह सपेद से थे और यह सपेदी वही कीड़े थे जिनकी गिनती न होसकी कई उन में से जीते हिलते और कई ऐसे थे कि अभी उनके पर न जमे थे इसकी कोंपल बहुधा सागकी तरह पर पकाते हैं और इस पत्तेको सिरके में मिलाकर बरस (कोढ़) पर लगाना गुणकारी है और उपद्रव कारक घाव और टूटी हड्डीपर लगाना बहुत लाभदे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर१६६

(दळब) अर्थात् चिनार यह वृक्ष हर एक स्थावरसे लंबा और बड़ा होता है और पुराना होकर बीच से खाली होजाता है इसके पत्तोंकी शकल मनुष्यके पंजेकी सी होती है शेख़रईस लिखताहै कि इसके पत्तोंको उबालकर मरहम की तरह आंख में लगाना नज़ले को गुणकरे और सिरकेमें कुल्लीकरना दांतोंकी पीड़ा को गुणकारी और जलेहुये जोड़पर भी लगाना लाभकरे इसके फलको जौज़ुल-सर्द कहते हैं जो इसकी चरबीमें मिलाकर मरहम बनायें और

कीड़े मकोड़ों के डंकपर लगावें तो बहुत गुण करे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २००

(दहमस्त) यह बहुत बड़ा वृक्ष है इसका मेवा सुर्ख रंग और पत्ता आसवृक्षके सदृश होता है यह वृक्ष पहाड़ों में पाया जाता है इसका बीज बंदकसा होता और उसपर काली छाल होती है साहबुलफ़लाहा का बचन है कि जो इस वृक्षकी किसी शाखा किसी धरती पर गिरावें वहां का राजा किसी न किसी दुःख में ज़रूर फँसेगा और वहांकी प्रजामें कोई दोष न आवे इसका पत्ता फालिज लक़वे और क़ूलंजको गुणकारी है जो इसके पत्तेको जौमें कुछ दिनों रक्खें तो फिर उस जौ को पीसकर झाईं पर लगावें तो गुणदायक होगा उसकेबीजोंका उबटनालगाना मक्खियोंसे बचाताहै इसको शराबमें पीना बिच्छू के डंकको दूरकरता है इसके हरे दानों का मरहम विषैले जानवरोंके घावके दूरकरने में उत्तम है और इसका तेल भी शिर पीड़ा और कान की सनसनाहट में प्रभाव रखता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०१

(रमां) अर्थात् अनार गरम धरतीके सिवाय और जगह नहीं होता साहबुलफलाहा लिखता है कि इस वृक्षके पास बोनेके समय आसका दरख़्त ज़रूर चाहिये इसके सबब से अनार उत्तम होता है जो दरख़्तके लगाने के समय थोड़ा सा शहद भी थाल्हेमें छोड़ें तो फल बहुत मीठा हो और सिरका छोड़ने से खट्टा जो यह चाहे कि बिना इच्छा इसका फल डालसे अलग न हो तो अनारकी डालपर (मुतरक्कशासहरी) नामी पत्थरलटकाना चाहिये या कि शीशेकी कील उसकी जड़मेंठोंकदें जोयह चाहें कि इसकेदानेमेंगुठली न हो तो उसकीछोटी२ डालियोंकोछीलकर उसका गूदासाफकरदें और फिर उनशाखाओंको आपसमेंमिलाके घाससेबांधदें और फिर बोदें तो उसके अनारमें गुठली न होगी जो यह चाहें कि सुर्खअनार हो तो हम्मामकी राख पानी में घोलकर जड़में छोड़ना चाहिये खट्टे

अनारको मीठा करना इसउपाय से सम्भवित है कि उसके जड़की इधर उधरकी मट्टी अलग करके सुअरके नाख़्न और मनुष्यके मूत्र से भरदें फिर मिट्टी बराबर करदें ईश्वर चाहें तो खटाई दूर होगी और अनारकी फुनगियों की संख्यामें यह अद्भुत बातहै जो उसकी फुनगियां ताक़ अर्थात् बिषमहों तो अनारके दाने भी बिषम होंगे और जुफ़्त अर्थात् समहोने पर सम शेख़रईसने लिखाहै कि इसके फल और डालियां दुःखदाई जानवरों के भगाने में तुरन्त प्रभाव दिखावें अनार के फूल सुर्ख़ या सपेद जो हों दांतों के हिलने को मज़बूत करते हैं और रुधिर के निकलने को बन्द इब्नअब्बास ने अपने मुखसे कहाहै कि अनार बहिश्त के पानीके बूंदोंसे पैदाहुआ है और हज़रत इब्नअब्बास ने कहा कि अनार का हरएक दाना मन को प्रकाशवान् करता है और शैतान के दुर्बिचारों से निर्भय करताहै जिसदिन खाये उसदिन से चालीस दिन तक यह प्रभाव स्थिर रहता है साहबुलफ़लाहा अनार के हरा रखने के उपाय में लिखतेहैं कि अनारको हाथ से तोड़कर दोनों किनारों को गरम २ काली गोंद में डुबोदें फिर ठण्ढे मकान में लटकादें ईश्वर चाहे तो मुद्दततक अच्छा बनारहेगा और जो वृक्षपर लगा रहना चाहे तो घाससे मज़बूत बांधकर उसके ऊपर चूना लगावें उसकी छालको अन्नकेढेरमें रखना कीड़ोंसे बचाताहै उसकी सूरत नीचेहै॥

तसवीर नम्बर २०२

(ज़ैतून) ज़ैतून इस गुणकारी वृक्ष के लिये इब्नअब्बास का वचनहै कि इस वृक्षका प्रकार उसके फल समेत ईश्वर ने क़ुरानमें यादकियाहै कि बलाभ दायकहै और यमांकेपुत्र हज़ीफ़ै ने पैग़म्बर साहब से कहावत कहीहै कि हज़रत कहतेथे कि जब आदम बीमार हुये और ईश्वर से शिकायत की तब जबरईल उसी वृक्ष को लेकर उतरे और हज़रत आदम से कहा कि इसको लगाइये और इसका मेवाहो उसको धोकर उसका अरक़ पीजिये यह रोगनाशक बारि है और हर रोगकी ओषधि है परन्तु मौतसे लाचारीहै इसके अद्भुत

गुण यहहैं कि मुद्दततक पानीकी आवश्यकता न रहे इसकीलकड़ी
में धुआं बिल्कुल नहींहोता इसकातेल भी अति गुणकारीहै यहवृक्ष
अपनी गुठलीसे नहीं उगताहै और जो उगताहै तो गुण नहींकरता
साहबुलफलाहा का लेखहै कि इसवृक्ष के नीचे बहुधा कंकड़ पत्थर
इकट्ठे होते हैं और जब गर्द इनपर पहुंचती है तो इसका फल और
ज़ियादह अच्छा होताहै और फल भी स्वादिष्ठ होताहै जो यहचाहे
कि इसका फल हवा से न गिरे तो बाकले को इसकी जड़ में बोदें
बलैनास ने लिखाहै कि जिसको बिच्छूकाटे इसकी जड़ों का गण्डा
बनावे पीड़ादूरहो शेख़ इसकीपत्ती के स्वभावमें लिखताहै कि इसके
हरे पत्तोंको पानीमें उबालकर घरमें छिड़कदें तो मक्खियां उसघर
से भागजायँगी और इसका मलना बदनकी खुश्कीको दूरकरताहै
और इसके पत्तेका गुण तूतिया की भांतिहै और सिरके में पकाकर
कुल्ली करना दांतोंकी पीड़ा को गुणदायकहै जो शहद में पकाकर
लगावें तो कीड़ेखाये दांतों को लाभकरे और इसका गोंद बवासीर
और हरघावको भी गुणदायक है इसके रसमें रोटी पकाकर चूहों
को देना संखिये का स्वभाव रखता है शेख़रईस का वचन है कि
इसकागोंद रतौंधी और आंखकी सपेदी दाद खाज और कीड़ेखाये
दांतोंको गुणदायक है और जो कोई उसकोपीले तो विषको खींचले
ज़ैतूनका मेवा उत्तम होताहै हज़रत पैग़म्बर साहबका बचनहै कि
उत्तमोत्तम खानेकी रोटी सिरका और ज़ैतहै इसकेतेलमें रोटीखाना
अच्छाहै पित्तेको साफ़ करताहै और कफको दूरकरताहै और रगों
का बल दायक और सुस्तीको दूरकरने वालाहै और बदन के पट्ठों
को मज़बूत करता है इसका खानेवाला शीलवान् शुद्ध रूप और
चिन्ता रहित रहताहै शेख़रईस के विचारमें जंगली ज़ैतून से कुल्ली
करना शिर और दांतोंकी पीड़ा और लहू टपकने को गुणदायकहै
इसको पीसकर सुरमा लगाना आंख की अन्धेरी को दूर करताहै
और २ लोगोंका वचनहै कि इसकालेप पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा
कोगुणकरे और आंखोंमें लगानेसे प्रकाश होताहै और यहजंगली

ज़ैतून खाज दाद और शिरकीपीड़ा और दांतोंकीपीड़ा और फेफड़े के रोगको जो ईश्वर चाहेतो गुणकरे सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २०३

(सरू) यह तुलाहुआ एकसा वृक्षहै जिसकी सिधाईसे प्यारों के डीलका दृष्टान्त देतेहैं गरमी और सरदी में हरा होताहै इसमें चमत्कार सरदीसे होताहै इसकी धूनीसे मच्छड़भागतेहैं जो इसके बुरादे को मैदे में छोड़ देवें तो समय तक मैदा ख़राब न होगा जो इसकी पत्तीको शराबमेंछोड़ें तो जिसका मूत्रबन्द होगयाहो उसके वास्ते लाभकरे और इसके पत्तोंको गुलाबकी डालीके साथ सिरके में उबालकर कुल्ली करना मुंहसाफ करताहै इसके हरे पत्तेको कूट कर घावपर लगाना गुणदायक है इसकी राख जलेहुये जोड़ पर छिड़कना लाभ करे शेख़रईस का वचन है कि इसकी कुल्ली करना दांतोंकी पीड़ाकी गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०४

(सफ़रजल) बिहीका दरख़्त प्रसिद्धहै आबीके पुत्र यहयाका वचनहै कि उसके पिता ने हज़रत पैग़म्बर साहब के हाथ में बिही देखी और उसकी और हज़रत ने बिहीको दिखाकर कहा कि लो इसको यहमनको शुद्ध करतीहै और यह भी कहावतहै कि हज़रत ने बिहीतोड़कर अबीतालिब के पुत्र जाफ़रकोदेकर कहा कि इसके खाने से आदमीका रंगसाफ और सन्तान वाला होताहै शेख़रईस ने लिखाहै कि प्यास का दूर करने वाला और पकाशय का बल कारकहै जो शराबके साथ गज़ककरें ख़ुमार नहो और दूसरेलोगों का वचनहै यदि स्त्री बिही और अनार सर्बदाखावे उसकी सन्तान समझदार साहसी नेकहो और यह भी सदा के सेवन में स्वभावहै कि दूधछातीमें बँधजाताहै जहां अंगूरहों जो वहां उसको रक्खें तो ख़राब होजावे साहबुलफलाहा उसके मुद्दत तक दुरुस्त रहने का उपाय यों लिखतेहैं कि इसको ऐसे घर में रक्खें कि जहां सिवाय इसके दूसरे प्रकारका मेवा न हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर२०५

(सुमाक़) यह पहाड़ी दरख़्त फैलाहुआ होताहै शेख़रईस का वचनहै कि इसका मेवा पकाशय का बलदायक और पित्त के नाश करने वालाहै और घाव और सूजनको दूर करताहै जो इसके मेवे का हुकना करें तो बवासीर के वास्ते गुणकरे और गोंद दांतों की पीड़ाको नष्टकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०६

(समरा) यह जंगली दरख़्तहै जिसका वर्णन बहुधा अरबकी काव्य में पायाजाता है इसके वृक्षसे लहू टपकताहै लोग कहतेहैं कि इसवृक्ष के फलको मासिक धर्म हुआहै बाकी कोईगुण मालूम नहीं है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०७

(सन्दरूस) यहप्रसिद्ध वृक्ष रूममेंहै इसका गोंद कुहरबाकी तरह पर होता है घास भी खींचता है परन्तु वैसी शकल नहीं है उसकी लकड़ीमें तेल होताहै उसका गुणयहहै कि लहूको बन्दकरे कुश्ती क़रनेवाले लोग बहुधा इसके तेलका सेवनकरतेहैं कि शरीर हलकाहो शेख़रईस का वचनहै कि बवासीरको सुखाताहै कि जब उसकी धूनी लेवें और दांतों की पीड़ा और उन्माद रोगको अच्छा करताहै और वीर्य बढ़ाने वाला भी है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०८

(शबाब) इस दरख़्तका पत्ता छोटी२ मछलियोंकीतरह उंगली के बराबर होता है और फल बन्दक़ की भांति काले रंग का और उसमें तीन २ दाने होतेहैं उसको माहूदाना और हब्बुलसलातीन अर्थात् जमालगोटा कहतेहैं शेख़रईस का वचनहै कि पांवकेउंग-लियोंकी पीड़ा और जोड़ोंकी पीड़ा रांघन और जलन्धरमें इसका मुसिल (विरेचन) देना गुणकारीहै इसके पत्तोंको मुर्ग़ के मांस में पकाकर खाना कुलंजको गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०९

(शाहबलूत) यह वृक्ष शाम की धरतीमें है इसका मेवा मीठा

सूरत में आधे जौ के बराबर होता है और स्वाद में फन्दक़ की तरह होता है शेख़ रईस के बिचार में इसका फल बिष दूरकरने वाला है और जिसकेशरीरसे लहूजारीहो उसेगुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१०

(संदल) यह प्रसिद्ध वृक्ष हिन्दुस्तान में सपेद और सुर्खदोरंग काहोताहै सपेद चंदन का बहुत कुछ गुणहै मुख्य करके गुलाब में पीसकर शिरकी पीड़ामें लगाना और उन्माद रोगको जो ज्वरसे हो जो सुर्खको भी शिरपीड़ामें लगावें लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २११

(सनोबर) यह वृक्ष पहले पहल रूम की धरती पर था इसकी लकड़ी से तेल निकलता है और चिराग़ की तरह पर जलती है और इसी से क़तरान (वह तेल बदबूदार जो गधों की खाजपर मलते हैं परन्तु कोई चीड़का तेलभी कहते हैं) मिलता है इसतरह से कि इसका छिलका आगपर रक्खें उससे रस निकलेगा वही क़तरान है शेख़ रईस ने लिखा है कि इसकी लकड़ी की धूनी देना या उसकी राखछिड़कना डंक मारनेवाले जानवरों को दूर करता है मुख्य करके शराब के साथ और उसका यहभी बचन है यदि किसीसभाके आसपास इसकी राखछिड़कदें वहां डंक मारने वाले जानवर न पहुंचेंगे यदि क़लक़ीद और क़लक़दीस (गन्धकके प्रकारमें वर्णनहै) को उसमेंबढ़ावें उत्तमतरहोगा इसकीछाल गरम पानीसे जलेहुये पर गुण दायकहै शेख़रईस लिखताहै कि इसकी छालको सिरकेमें उबालकर कुल्लीकरना दांतोंकी पीड़ाकोदूरकरता है और उसकेपत्ते घावको भरतेहैं जो नाभिके नीचे या अंडकोषमें पीड़ाहोतो उसकी कलियोंका मलहम बनाकर लगाना लाभदायक है इसका मीठादाना पट्ठोंको उपयोगी है और बिच्छूके विषकेदूर करने को उत्तमहै जो अंजीर या अखरोटके साथखावेंतो वीर्य अधिक करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५२

(हरू) यह फलदार वृक्ष बलूतकी सदृश बड़ाहिन्दके पहाड़ों में बढ़ताहै इसके पत्तेसुर्खीलिये हैं जोउसको पकावें और साफ करके पियें तो खांसी दूरहोजायेगी और मुखकी पीड़ाकोभी लाभ दायक है इसका गोंदमक्केको लेजाते हैं यह लादन (सुगन्धदार ओषधि) के अनुसार होताहै बहुधा स्त्रियां इसकी सुगन्धको पसन्द करतीहैं॥

तसवीर नम्बर २५३

(तरफा) अर्थात् गज़का दरख़्त शेख़रईस का वचन है कि इसकी डाली सिरके में पीसकर लगाना तिल्लीकी पीड़ा को गुणकरे इसके पत्तों का काढ़ा दांतों की पीड़ामें कुल्ली करना बहुत लाभ करे जो शिरके बालोंमें मलें जूं दूरहोजायँ बाजे आज़माने वालोंका वचनहै कि इसकी धूनी लेनेसे नयेघाव सूखजातेहैं इसका मेवानेत्रकेरोगों में गुणदायक है और रतीला के घावपर गुणकरता है शेख़रईस के विचारमें जो इसके फलको जलाकरउसकी राखकोघावपर लगावें घाव तुरन्त सूखजावे सूरत यह है—

तसवीर नम्बर २५४

(अरअर) यह भी सरूके सदृश होता है इसको पहाड़ी सरू कहतेहैं इसकी धूनीसे बिषैले जानवर भागतेहैं इसका मेवा राारूर की तरहपर होताहै इसकी लकड़ीको अबहल कहतेहैं शेख़ रईसका लेखहै कि इसकी लकड़ीको तेल और सिरके में उबाल कर बहिरे आदमीके कानमें छोड़ना कानका भारीपन दूरकरदे यदिस्त्री इसको योनि में रक्खे तो तुरन्त उसका गर्भ गिरपड़े और इसका शाफा और धूनी भी गर्भपात को आज़माई हुई है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५५

(अशर) यहवृक्ष यमनमें होताहै फ़ारसीमें इसको कशीर कहते हैं बहुधा मूर्खता के कारण अरब के लोग इसका शकुन इस तरह पर लिया करते हैं कि जब उनको सफरका इरादा होताहै और किसी मित्रसे चोरीका सन्देह होताहै तो इस वृक्षकी एकडाली को

दूसरी डालीसे लपेटकर चले जातेहैं और लौटकर उस लिपटीहुई डालीको जो उस सूरतसे डालीदर डाली पाया तो समझे कि मित्र ने हमारे धनमें चोरी नहीं की नहीं तो विपरीत होने पर दृढ़ शङ्का करलेतेहैं कि अवश्य मालमें चोरी हुईहै कहतेहैं कि यहवृक्ष बिषैला होताहै कई इसके प्रकार ऐसे भी होतेहैं कि जो कोई उसकी छाया में जाबैठे तो मृत्यु आजावे इसकी भस्म दाद और शिर गंज पर मलना गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१६

(अफ़स) फ़ारसीमें इसको माज़ू कहतेहैं पहाड़पर होताहै कहते हैं कि इस वृक्षमें एकवर्ष माज़ू फलताहै और एकवर्ष बलूत जाख़ज़ का लेखहै कि मैंने माज़ू और बलूत को एक ही शाखा में लटका पाया सो जो यह बात ठीकहै तो इस वृक्षके लिये हमयह कहसक्ते हैं कि जिसतरह पशुओं में खरगोश होताहै कि यहभीएकबर्ष नर होताहै और एकवर्ष मादा इसी तरह उसका भी हालहै और जिस दरख़्तमें माज़ू और बलूत दोनों इकट्ठेहों तो उसका दृष्टान्त खो से अर्थात् वृहन्नल की तरह परहै शैख़ रईस के बिचार में खाज और अधिक मांसको दूर करताहै इसका ख़िज़ाब भी लगाते हैं जो इस का गूदा सिरके में पीसकर लगावें लहू का बहना बन्द करता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१७

(उन्नाब) यह प्रसिद्धवृक्षहै जरजांकीधरती परहोताहै इसकेपत्तों का मरहम लगाना नेत्र पीड़ा को गुण करे कहतेहैं कि यह वृक्ष लहू चूसता है यहांतक कि जो कोई हाथ इसके दरख़्तपर रखदे तो कुछ देरमें उस हाथका लहू कुछ चूस लेता है इसका मेवा लहूका बहना बन्द करताहै जो यहचाहे कि दरख़्तको इसजगहसे उखाड़ कर दूसरे शहरमें ले जायँ तो हररोज़ वह पशु जिस पर लादके लेजायँ बदला करें क्योंकि जो एक ही चौपाया रहेगा तो उसकी तरी सूख जावेगी और वह मरजायेगा जालीनूसका लेखहै इसका

स्वभाव रुधिर को चूसना नहीं है किन्तु यह रुधिर को गाढ़ा कर देताहै जो उसकी लकड़ीसे मलें तो रंगकी सफाई होतीहै इसका उबटन लगाना रंग ज़ियादह करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१८

(ऊद) यह हिन्द के दरियाओं में प्रकट होताहै इसकी जड़ को उखाड़कर पृथ्वीकेनीचे गाड़तेहैं जबवह सड़जातीहै तो उसकीछाल उतरके ऊद साफ निकल आताहै शेख़रईसका परीक्षाकी हुईहै कि इसको दांतोंसे कुचलना और चबाना दुर्गन्धिको दूर करताहै और मुख सुगन्धित करताहै ब्रह्माण्ड को गुण कारक और इन्द्रियों का बल कारक और मनके प्रसन्न करने वालाहै इसको शक्कर मिलाकर आगपर छोड़नेमे सुगन्धित धुआं उठताहै इसका मद्यमें यहस्वभाव है कि रीहके दर्दको गुण करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१९

(ग़बीरा) प्रसिद्ध वृक्षहै जो इसकी लकड़ी को समयतक जलमें छोड़देवें तो भी न सड़ेगी बहुधा हम्माम के दरवाज़ों पर इसकी लकड़ी गाड़ते हैं इसकी शाखा जहां पर रखदें मक्खियोंका समूह होजाताहै इसकी सुगन्धि से स्त्रियों को बहुतकाम उपजता है और इतनी अधीर होजातीहैं कि सन्तोष नहीं होता लज्जा जातीरहती है शेख़रईस का बचनहै जो शराब पीने में इसकी गज़क खावें तो शराबका नशा जल्दी न चढ़ेगा और मूत्रकी अधिकता और अती-सारको भी गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२०

(गरब)इसको फ़ारसीमें सफ़ेदार कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि इसकी लकड़ी जलाकर सिरके में मिलाकर उबटना लगाना फुन्सियों में गुणकरे इसकी छाल ख़िज़ाबमें एक उत्तमखण्डहै इस-की हरी२पत्तियां पीसकर घावपर लगाना अच्छाहै इसके सिवाय और शख़्स भी लिखतेहैं जो किसीके कण्ठमें जोंक चिमट गई हो तो उसको चाहिये कि इसकापत्ता कुचल कर रसनिकाले और पिये तो तुरन्तजोंकअलगहोगी इसकाफूल धुंधके रोगको गुणकारक है ॥

इसकीगोंदसे कचलोनबनताहै और आंखोंके धुंधकोगुणकारक है

तसबीर नम्बर २२१

(फ़ादानिया) अर्थात् ऊद सलीबका वृक्ष यहदरख्त रूमऔर हिन्दमें होताहै शेखरईसने लिखाहै कि जो इसकी लकड़ीकोबदन के काले दागोंपर लेपकरें तो अवश्य गुण करेगाइसको यन्त्रबना कर गले में लटकावें तो पांवकीरंग और मिरगीकी बीमारियोंको गुणकरे जो इसका मेवा पन्द्रह दाने शराबकेसाथ गज़ककरें तो दीवाना पन और मिरगी को गुण करताहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २२२

(फ़िस्तक) अर्थात् पिस्ता इसका वृक्ष बादाम औरअंगूर की मिट्टी से पैदा होताहै इसकी लकड़ी में चिकनाईभी होतीहै शेख़-रईसका लेखहै कि इसका डंक मारनेवाले जानवरों के विष पर लेपकरना गुणदायक है और इनके सिवायऔर आज़मानेवालों ने लिखाहै कि बलकारक और२ कामदेवके अधिक करनेवालाहै और पित्तकी खांसी को भी लाभकरे इसके तेल के सेवन से आंख की ज़र्दी दूर होजातीहै और इसकी धूनीसे कपड़े की जूंयेंमरजाती हैं सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २२३

(फ़िलफ़िल) अर्थात् कालीमिरचयह वृक्ष मलेबादकी धरती पर होताहै बड़ा भारीहै इसके थालेके गिर्द गिर्द पानी भरा रह-ताहै जब हवा चलतीहै उसके वेगसे मिरचें झड़ती हैं और पानी पर तैरती फिरतीहैं इसीसे मिरचका छिलका उखड़ा और चिटका हुआ होताहै यह वृक्ष किसीकी थातीमें नहींहै अपने आप गरमी सरदी में फलदार फला रहताहै मिरचें बाली की तरह गुच्छे२ होतेहैं जब सूर्यकी तेजीकावक्त आताहै पत्तियां चारोंतरफसे गुच्छों पर छाया करतीहैं और कुछ इसरीति से झुकीहुई होतीहैं कि सूर्य की गरमी उनपर असर नहींकरती और जबसूर्यकीगरमी कम हो-जातीहै तो पत्तियां उन गुच्छों से हटजातीहैं कि उनकी हवालगे

इसका वृक्ष अनारकी तरहपर होताहै इसके पत्तोंके बीच दुशाख़ा होताहै जिसकी हरएकडाली उंगलियों के बराबर होतीहै उसपर मिरचका गुच्छा होताहै जाली नुसने लिखीहै कि जो पहले पहल दरख़्त से फल निकलता है वह मिरच है फिर उसका दाना एक होताहै जिसकानाम दारफिलफिल अर्थात् पीपल कहते हैं और यहदाना डंकमारनेवाले जानवरों के विषकेलिये बहुत गुणकारीहै और वीर्यके अधिक करनेवाला भीहै शेखरईस लिखताहै जो कच-लोनके साथ मिरच का लेपकरें तो झांईकादाग़ दूरहोजावेगा और काली गोंदमें मिलाकर लगानाकंठमालाको गुणकरेबहुधायह भी कहतेहैं कि मूत्ररोध और आंखकी धुन्धके दूरकरनेवाला है जो स्त्री भोगके उपरान्त मिरचके चूर्णको महीन कपड़े में पोटली बांधकर भगमें रक्खे तो फिर गर्भ न रहेगा सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २२४

(फन्दक़) जो इस प्रसिद्ध लकड़ी से बिच्छूके चारोंतरफ़ एक घेराखींचदें तो बिच्छू उस घेरेसे बाहर न जासकेगा बुक़रा तह-कीमका लेखहै कि यह मेरा ब्रह्माण्डका बलकर्त्ताहै और शेखरईस के निकट जो इसकातेल सलाईमें लेकर आंखमें लगायें तो आंखकी सब्ज़ी दूरहोगी और इसको तितलीकी पत्ती और अंजीरकी लकड़ी के साथ पीसकर लगायें तो डंकमारनेवाले जानवरोंके लिये अति गुणकारकहै जो कोई इसकी लकड़ी को पासरक्खे वह बिच्छू के दुःखसे बचारहेगा इसके रसको बालखोरे पर लगाना गुणका-रकहै बालनिकल आते हैं जो कूटछानकर शहद के साथपिये तो खांसीको नाशकरे इसकी गज़क करने से मस्तीजाती रहतीहै और समझ और बुद्धिबढ़तीहै जो इसको जलाकर राखबनावें और ज़ैत में मिलाकर करंजी आंखवाले लड़कों के सुरमेंकी तरहपर लगावें तो तुरंत लाभहो सूरतयह है॥

तसबीर नम्बर २२५

(फ़ीलज़हर्ज) इस वृक्षके कोई मेवेसे रसौत बनातेहैं यहदरख़्त

बिल्कुल मिरचके वृक्षके सदृश होताहै शेखरईश का बचन है कि इसकी लकड़ीका ख़िज़ाब बनाना और बालमें सेवन करना बालों को मज़बूत करताहै जो इसकी जड़ सिरकेमें उबालकर पियें तिल्ली की पीड़ाको दूरकरतीहै इसके जिस फलसे रसौत बनाते हैं जो उसको पीसकर झाईंपर उबटनाकरें अत्यन्त गुणकारीहै और बालोंको सुर्ख़ रंगकरताहै जिसके दांतोंकी जड़ों से लहू निकलता हो जो इसका सेवनकरे तुरन्त बन्द होजावे और आंखोंकी पीड़ा और सपेदीको दूरकरदेताहै और आंखकी खाज और बवासीर केलिये गुणदायकहै जिसको बावला कुत्ताकाटे जो इसका लेपकरे तोलाभ करे सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर २२६

(करनफल लौंग) यह दरख़्त हिन्दूस्तान के कईदीपोंमें होता है इसका फल चमेली के रंगका होताहै हां इतनाअंतर होताहै कि इसका स्वादतेज़ होताहै यहांके जज़ीरे वाले लौंगको यूं नहींतोड़ते हैं परजब पकजावे और यह बात इसदृष्टिसे करतेहैं कि उसदीप के सिवाय दूसरीजगहवाले उसको बोनसकें और यह दरख़्तजमनसके शेखरईस का निश्चयहै कि इसका सेवन मुखको सुगंधित करता और नेत्रों की ज्योति बढ़ाताहै और बहुतों ने लिखा है कि मूर्च्छाको दूरकरताहै और मनका बल कारक है सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २२७

(क़सब) अर्थात् नरकुल इस प्रसिद्ध वृक्ष के कई प्रकार होते हैं बाज़ा नरकुल शकरी होता है परजो मिसर की धरतीमें उत्पन्न होता है वह सब से उत्तम है खांसी और हृदय पीड़ा को गुणकरे शेखरईस कहता है कि इसका गोंद नेत्र की ज्योति को अधिक कर्ताहै और इसकी छाल और जड़का लगाना बालखोरेकीबीमारीमें गुणदायक है जो इसकाफूल कानमें पड़जाय तो मनुष्य बहरहोजावे और फिरवह कानसे बाहर नहीं निकलसक्ताहै और नरकुलका लेपबिच्छूके घावपर गुणकारीहै इसका कोई प्रकारचिरा-

यताहैं यहनिहरबिंदके देशमें होता है और जोनरकुलनिहरबंदनः-
मी पहाड़के पीछे नहीं होता उसमें चिरायते की तरह गुण नही
होताहै वरनसब नरकुलकी तरह है शेखरईस का बचनहै कि वृथा
रुधिरको नष्टकर्त्ता और खांसीको गुणदायक है जो इसका धुआं
कंठमें पहुंचावें खांसी को गुणकरे और किरक्सके बीज अर्थात्
बिलायती अज़मोद और शहदके साथ जलंधर को गुणदायक है
कोई नरकुलनेजाहिन्दुस्तानमें होताहैइसीकानेजाबनातेहैंकहते हैं
वह अपनेआप जल उठताहै अर्थात् जब पवन प्रचंडहुई और एक
दूसरेसे भिड़गये तो तुरन्त आग लगउठती है उसकी राखसे तब
शीर हाथआताहै यह बंशलोचन उन्माद आंखकी सूजन को गुण
दायक और मनका बलकारक और ज्वर को लाभदायक है कोई
इनमेंसे प्रसिद्ध नरकुलहैं जिससे एकबेर सांपको मारेंतो फिर वह
नहीं हिलसक्ता और जो दुबारा मारें तो फिर सांपअच्छा होजावे
जो इसके जड़ और पत्ते जहां कांटा गड़कर रहगया हो वहां पर
लगावेंतो वह कांटा तुरन्त निकल आवे और ऋतुके रुधिर औ
मूत्रको जारीकरता है जो भोजनमें नमक जियादह होगया हो तो
नरकुल को पीसकर देग में डालदें नमक उसका कम होजायेगा
इसकी जड़में खींचनेकी शक्तिहै जो इसको कूटें और जिस जोड़ में
लोहा घुसगया हो वहां पर लगावें निकल आवेगा सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २२८

(काफ़ूर) यहबड़ा वृक्षहै एकबड़े समूहको इसकी छायामेंआ-
राम मिलताहै शेरबबर इसवृक्षसे प्रीतिरखताहै इसलिये मनुष्य
वहां पहुंच नहीं सक्ता इसकी लकड़ी सपेद हलकी और नरमहो-
तीहै उसके अंदर कपूर जमाहोताहै और इसका गोंदभी कपूरहो-
ताहै और वृक्षकी जड़से निकलता है मुहम्मद ज़करियानेलिखाहै
कि कपूर इसवृक्षका गूदाहोताहै तो उस वृक्षमें छिद्रकरके कपूर
निकालतेहैं शेखरईस कहताहै कि कपूर का सर्बदासेवनवालों को
बहुत जल्दी सपेद कर्त्ताहै और गर्मीकी शिरपीड़ाको गुणदायक है

इसका खाना ब्रह्माण्डकाबलकारक और बीर्यके नष्टकरनेवालाहै॥

तसवीर नम्बर २९६

(करम) अर्थात् अंगूर इसको फ़ारसी भाषा में रज़कहते हैं साहबुलफलाहा कहताहै किजब इसके वृक्षको लगावें पहले वर्ष बहुत गुच्छे निकलेंगे जो यहचाहे कि यह दरख़्त बहुत गुणदायक और उसकी जड़ मज़बूत और जल्दी बड़ी होजावे तो उसकेदरख़्त को ख़ना न लेनाचाहिये और दे (अर्थात् जो माघके निकट है) कि पहली तारीखमें जमाना चाहिये और उसके थालेमें गोबरडालना चाहिये और बलूत और अरगवां भीछोड़देवें और कुछ बाकलाभी जोयहसबशर्तेंकीजावेंतोमनकी कामना पूर्णहोजोउसकेपौधेको बीच मेंचीरें और उसमेंसक्रमूनियाएकघासकादूधयूनानी प्रसिद्धऔषधि रखदें तो उसकाफल मुसिलहोगा अर्थात् जो उसका फलखावेगा उसको दृढ़ अतीसार होगा यह भी लिखाहै कि सपेद सुर्ख काले अंगूर के पौधोंकोचीरकर एकदूसरेमें चिपकाकर लगावें तो तीनों पौधे एकदरख़्त होजावेंगे और मेवा उनका सुर्ख सपेद कालातीन रंग का प्रकट होगा जो सपेद अंगूर के नीचे की धरती खोदकर उसमें नमकछोड़ें तो उस अंगूर का रंग कालाहोगा जो यह चाहे कि अंगूर के दरख़्त में कीड़े न लगें तो एकलोहे के हथियार से जिसमें मुर्ग़ या पालू मुर्ग़ का लहूलगाहो उसमें चीरकर गोबरकी धूनी उसवृक्ष को दें सरदी से रक्षित रहेगा जो पानी कि अंगूरके वृक्षसे टपकता है उसको दम्मुलअकरम कहते हैं अर्थात्अंगूर के आंसू जो उसको इकट्ठा करके मद्यपीनेवाले को पिलावें तो उसकी आदत नशा पीने की छूटजायेगी शेख़रईस ने लिखा है कि इसके सेवन से खाज और दाद दूरहोती है और जिसमनुष्य को गरमी से शिरपीड़ाहो इसकेपत्ते को पीसकर लेपकरे तुरन्त दूरहोजावेगा और उसकेपत्ते चबाने से गलीहुई दांतों की जड़ें अच्छी होजातीहैं इसकाफल कईप्रकार का होताहै सब से उत्तम बैलकी आंखसा है जिसकादाना अखरोटकी तरह काला और बड़ा होताहै और एक

प्रकार कुवारीलड़की के मेंहदी लगीहुई उंगलियों की तरह बहुत लाल और लम्बेदाना का अंगूरहोता है बहुधा उसके गुच्छे एक२ गज़तक के होतेहैं और एकप्रकार डुबाली अर्थात् चरखीके सदृश होताहै कालेरंग का इसके गुच्छे मनुष्य के शिर की तरह गोल २ लटके होते हैं शेखरईस लिखताहै कि जो उसकोपानीके धोनेबिना तुरन्त तोड़कर खाये तो उदर में गुड़गुड़ाहट और अफरा होता है और शेख़ के सिवाय और लोगों ने लिखा है कि यह वीर्य अधिक करताहै और इसका सेवन शरीर को पुष्ट करताहै अंगूर को जला कर राख उसकी सर्पके विषमें गुणदायीहै और इसकोराख सिर के में बवासीर पर लगाना उत्तम औषधि है इसकी मद्य की उत्पत्ति जमशेद बादशाह के समय में बताते हैं वर्णन है कि वह बादशाह शिकार खेलताहुआ किसी पर्वत के नीचे पहुंचा वहां अंगूरकेवृक्ष में गुच्छेलटके हुये पाये आश्चर्य पूर्वक कहा कि हमने इसपर्वतमें बिषका वृक्षसुनाथा प्रायः वही वृक्षहै सो उनगुच्छोंको रक्षापूर्बक रखना चाहिये और किसी मारडालनेके योग्य मनुष्य को खिला कर इसकी परीक्षा लेनी चाहिये सो उनकी आज्ञानुकूल लोगों ने अंगूर के गुच्छों को धोकर उसका रस बर्त्तन में इकट्ठा करलिया यहांतक कि अपने देश में पहुंचा और वहां पहुंचकर एक अपराधी को वह रस पिलाया अपराधी कि उसमें बिष के गुण का हाल सुनचुका था देख कर अति शोकवान हुआ और बड़ी कठोरता से निराश होकर उसे पिया सब ने निश्चय किया कि यह बिषही है थोड़ीदेर के पीछेनशे में गरमी की मूर्च्छा आगई प्रसन्नता जो हुई तो नाचनेलगा लोगों ने समझा कि यहमौत का सामान है थोड़ासा और रसपियादिया बहुतपीने से उसबेचारे को नींद आगई उसे सोता देखकर लोगोंने बिचारकिया किन्तु निश्चय होगया कि बिषने असर किया और यह मरगया जब वह जागा तो उसने और भी मांगकर पिया और जो प्रसन्नता उसे प्राप्त हुई थी वह लोगों से वर्णन की जब यह वृत्तान्त बादशाह ने सुना और

उसका खेलकूद भी देखा तो आप भी थोड़ासा रसपिया और उस
के स्वादसे आनन्दवान हुआ निदान आज्ञा दी कि बादशाही बाग़
में इसके दरख़्त लगाये जावें कई बुद्धिमानों ने कहाहै कि मद्य का
पीना औषधिकी रीतिपर उचितहै सो इसी आज्ञापर कहते हैं कि
मद्य कामदेवके जगानेवाली और रतौंधी और नानाप्रकारके विषों
के दूर करने वाली बल कारक और वीर्य्यके बढ़ाने वालीहै और
इसका पीना मनको उपद्रव कारक दोषों से साफ़ करता है मुख्य
करके जोड़ोंकी पीड़ाको अतिगुण दायकहै परन्तु औषधिकी रीति
पर सेवनकी जावे नहीं तो अधिकता में बहुत हानिहै भूलकांपनी
और बुद्धिकी न्यूनता होतीहै मुहगंदा होजाताहै कामदेव का बेग
कम होजाताहै आंखों से ज्योति जाती रहतीहै बहुधा सक्ता और
मिर्गी और फ़ालिज़ में पड़कर मर जाता है इसका सिरका हदीस
अर्थात् पैग़म्बर साहबके बचनानुकूल उत्तमोत्तम वस्तुहै जिसजोड़
से लहू बहे उसपर इसके सिरके का लगाना लहू बन्द करता है
और दाद खाज और आगसे जले हुयेको भी गुण दायकहै इसकी
कुल्ली करना दांतोंके हिलनेको मज़बूत करताहै जो किसीके कण्ठमें
जोंक रहगई हो सिरका पीनेसे तुरन्त अलग होजायेगी और बल
करनेवाला और कामदेव के बढ़ाने वाला भी है जलन्धर को नष्ट
करताहै और कटेहुये जोड़को लाभ करे और सूखे अंगूरों के लिये
उब्बीके पुत्र हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ाने कहावत कहीहै कि सिरका
सब प्रकारके खानेसे उत्तमहै कि पट्ठोंका दृढ़करने वाला और क्रोध
को दूर करने वालाहै और ईश्वर को प्रसन्न करताहै और मुखकी
दुर्गन्धिको दूरकरताहै कफ़का नाशकरे रंगरूप साफ़हो बुद्धिमानों
का बचनहै कि अंगूर पक्वाशयका बलकारक है बीजों समेत दस्तों
को रोकता और बिना बीजोंके दस्त लाताहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(कमसरी) अर्थात् अमरूद साहबुल फ़लाहा कहताहै कि जो
इसकेमेवेको चाहैं कि दरख़्तसे पृथ्वी पर न गिरे तो नमककी थैली

में छोड़कर अमरूदों पर बांधे जबतक वह थैला बँधीरहेगी वह फल न गिरेगा इसका फल ब्रह्माण्ड का बल करताहै और पक्काशय के बल करने में अति गुण रखता है शेख़रईस का वचन है कि प्यास बुझाता है और पित दूर करता है परन्तु कूलंज (पहलूकीपीड़ा) पैदा करता है साहबुलफ़लाहा कहता है कि अमरूद को ज़फ्त (सनोबरकीकालीगोंद) में भिगोकर रखना मुद्दतों तक उत्तम रखताहै परन्तु अमरूद के मुख पर गोंद लगाकर मट्टीके बर्त्तन में रक्खें और उस बर्त्तन के मुखपर भी गोंद लगादें तो मुद्दतों तक अमरूद न बिगड़ेगा सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २३१

(लाइया) यहदरख़्त ज़हरदार समझा जाताहै पहाड़ों के किनारे में होताहै इसके पत्तों को कूट छानकर पीना अतीसार को करता है इसकी कली में बड़ी सुगन्ध होतीहै शहदकी मक्खी इसको बड़ी रुचि से खाती हैं परन्तु इसका शहद हानि कर होताहै जो उसकी लकड़ी किसी हौज़ या तालाब आदि में छोड़दें तो उस तालाबकी सारी मछलियां मुरदे की तरह पर पानीमें तैरनेलगेंगी उससमय सुगमता पूर्वक शिकार होसक्ती हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३२

(लुबान) यह दरख़्त कांटेदार होता है दोगज़ के सिवाय ऊंचा नहीं होताहै बहुधा पहाड़ों में उगता है और उमा के दरख़्त की तरह होताहै इसका पत्ता आसके पत्तेकी तरह होता है इसकीगोंद को कुन्दर कहते हैं इसके लेने की यहरीति है कि इसके नीचे कई गढ़े शराब के बर्त्तन की तरह खोदते हैं उसी में यह बहकर कुन्दर इकट्ठा होजाता है जो मनुष्य इसको सर्बदा दांतोंसे कुचलकर चूसा करे समझ बढ़ती है स्मरण अधिक होता है भूलीहुईबात यादआजाती है इसके सिवाय घावके भरने को गुणदायक है यदि किसी को दाद की बीमारी हो तो कुन्दर को बत्तखकी चरबीमें मिलाकर

लेपकरे अवश्य नाशहोगी और नकसीर केलहूके बहनेको बन्दकरदेती है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २३३

(लौज़) यह वृक्ष प्रसिद्ध है बादाम को कहते हैं इसके बोने की रीति साहबुलफलाहा क्या उत्तम लिखता है कि पहले बादाम को शहद मेंभिगोना चाहिये कि उसकाफलमीठा हो जो यह चाहे कि बादाम का छिलका ऐसा मुलायम रहे कि हाथ से बे परिश्रम दूर होजावे तो वही उपाय जो अख़रोटके वास्ते बतादियागयाहै करना चाहिये इसके सिवाय यह भी एक उपाय है कि बादाम को लड़के या कुवांरी लड़की के मूत्र में बराबर पांचदिन तक भिगोकर बो दे इसका भी स्वभाव वही है अर्थात् बादाम को कागज़ी छिलकेका बनादेता है मीठा बादाम खांसी को गुण करे और इसका खाना पुष्ठता भी लाताहै परन्तु मुख्य अंजीर के साथ हमेशा खायाजावे और बावले कुत्ते के ज़हर को भी लाभ करे शेखरईश के विचार में भी मीठा बादाम पुष्ठता लाता है और आंखों को बलदायक और कूलंज को नाश करता है और कडुये बादामकी जड़ पकाकर दाद और कूलंज पर मलना गुणदायक है जो शहद में मिलाकर उबटना करें तो छोटी २ फुन्सियां जो बहुधा शरीर में प्रकट होती हैं दूर होजायें गी जो मनुष्य निहार मुंह बादाम के सातदाने खायाकरे और शराब पीनेके पहले भी पांचदाने खालिया करे तो बहुत बेहोशीन होगी और खाजको लाभ दायक है आगे ईश्वर जाने स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर२३४

(लीमूं) (नींबू) यह वृक्ष गर्म्म देशोंमें पैदाहोताहै इसका गुण और खटाई तुरंज की तरह पर होती है सांपके दूर करने में अति उत्तम है अब्दुल्ला के पुत्र अबूज़फ़र को कहावतहै कि वह जहांरहते थे उसी मकान की दीवार के नीचे एक बाग भी हराभरा तय्यार था संयोग से उसबाग में एक अज़दहा कालीमुश्क के सदृश लंबा

चौड़ा प्रकट हुआ यद्यपि उसके दूरकरने में बहुत से उपाय किये और बहुत सेइस फन के जानने वालेचतुर और मंत्र जानने वाले बुलवाये परन्तु कोई उस अज़दहे पर प्रबल न हुआ एकदिन एक हथचालांक मंत्रजानने वाला आया उससे विनय की और सर्प्प दिखाया देखतेही उसके वह मनुष्य कांपउठा अज़दहेने लपककर उसको मारडाला जो यह ख़बर मशहूर हुई तो सबने हिम्मतहारी जब कोई उपाय दिखाई न दिया तो अबूज़ाफ़र ने बाग़ का रहना छोड़दिया एकदिन एक मनुष्य उनके पासआया और अज़दहे की रहने की जगह पूछी उन्होंने सब पिछला हाल कहसुनाया योगी ने कहा कि वह तो हमारा भाई था हम उसीका बदला लेने को आये हैं कुछ श्रमकरके बतादीजिये फिर हम समझ लेंगे निदान उसके कहने के अनुसार अबूज़ाफ़र उसके साथ होलिया बाग़ में लेजाकर दिखलाया और आप छतपरजाबैठा उस जादूगरनेकोई तेल निकालकर पहले अपने शरीरमें लगाया फिर अज़दहेकीओर झपटा और दूसरे प्रकारका तेल निकालकर धुवांकरनाशुरूकिया सो वह बिषैला सांप प्रकटहुआ और इस मनुष्यको देखकरभागा इसने बढ़कर पकड़ही लिया तो उस सर्प्पने उलटकर उसके हाथ पर फन मारा और उस बेचारे को मारडाला यह हाल देख कर अबूज़ाफ़र की आशा और भी टूटगई और हरओरसे निराश होकर घरबैठा एकदिन दूसरा मनुष्य आया और जिसतरह पहलेमनुष्य ने आकर पूछाथा उसने भी वही वचनकहे अबूज़ाफ़रने उत्तरदिया कि अब मेरा यहसाहस नहीं कि तेरे भी लहू का दाग दामन पर लगाऊं उसने उत्तरदिया कि वह दोनों बेचारे मेरेभाई थे भाइयों की प्रीतिसे लाचारहूं जब उसने बहुत हुज्जतकी तो अबूज़ाफ़र ने उसको भी बाग़में पहुंचादिया इसनेभी वहां पहुंच कर उसी पूर्व्व रीतिसे तेल लगाकर धुवांकरना शुरूकिया और उधरसे सर्प्पप्र-कटहुआ और साथही पिछले पांव भागनेलगा जादूगरने दौड़कर उसका शिर पकड़लिया और तुरन्त अपने पिटारे में रखलिया

परन्तु उस पकड़ धकड़ में सांपने भी उसकी उँगली में दांत मारा उसने तुरन्त उँगलीको काटडाला और कोईतेल निकालकर आग पर गरमकिया और घावपर लगादिया अबूज़ाफ़र उसको अपने साथले अपने घर को चला मार्ग्ग में कोई मनुष्य नींबू लिये हुये चलाआता था जादूगरने नींबू देखकर उनसे पूछा कि यह फल क्या तुम्हारे शहर में मिलसक्ता है जो मिलसके तो मँगवादो उन्होंने नींबू मँगवादिये उसने कुछ तो टुकड़े करके योहींखाये कुछ निचोड़कर उनका रसपिया और कहा कि ईश्वरने मुझको नींबुओं के कारण आरोग्य करदिया जो हमारे भाई भी इसमेवेको पाते तो कभी जानसे न जाते यह नींबू हमारे अमांदेश में उत्तम ज़हरमोहरा है फिर अज़दहे का शिर और दुम काटी और उबालकर उस का तेल निकाला और साथलेकर अपनी राह चलागया उसवृक्ष की सूरत यहहै ॥

तसवीरनम्बर २६५

(मुशम्मिश) अर्थात् ज़रद आलू (खुबानी) यह एक वृक्षहै कि इसका मेवा और मेवों के विपरीत छाल और गूदे समेत खाते हैं हज़रत मुरतज़ा के मुख से यह कहावत सुनीगई है कि हज़रतपैगम्बर साहब ने वर्णनकिया कि जब ईश्वरने एकपैगम्बरको उतारा उसकी जाति उनके नवीन होनेका निश्चय न करनेलगी और न कोई चेला हुआ निदान वर्षभर के उपरान्त उसजाति के बड़े ईदका दिनआया वहलोग पीले कपड़े पहन २ के वहां इकट्ठे हुये और उन पैगम्बर ने भी सिरेसे उपदेश करना आरम्भ किया उस समय उन्होंने उत्तर दिया कि जो तुम वास्तव नें ईश्वरके भेजेहुये हो तो हमारे कपड़ों के सदृश कोई फल इसी समय इस सूखी लकड़ी में उत्पन्न करो निदान पैगम्बर ने ईश्वरसे विनयकी और उसीसमय उस सूखीलकड़ी में हरेपत्ते प्रकट हुये और उसमें ज़र्द आलूका फललगा सो जिस मनुष्यने उसफल को सच्चेमनसेखाया उस फलका बीजतक मीठा निकला और जिसने मनमें बुरीइच्छा

रक्खी उसके फलका स्वाद कडुवा निकला उसकागुण बुद्धिमानों के विचारमें कि पत्ता उसका दांतों की पीड़ा को नष्टकरताहै और जिसके दांत खट्टे होगये हों इसके सेवन से तेज़होसक्ते हैं शेख़ुल-रईशका वचनहै किसूखी ख़ुबानीसे ज्वर दूर होताहै औरहरेकेखाने से ज्वर उत्पन्न होताहै क्यों कि उसमें दुर्गन्ध होतीहै एक दिन एक बुद्धिमानकाश्तकार की ओर गया कि वह खुबानीका वृक्षबोताथा हकीमने उससे कहा कि क्या करताहै उसनेकहा कि मैं वह काम करताहूंकि जिससे हम और तुम दोनों लाभ उठावें अर्थात् हम इसकामेवा खायेंगे और स्वाद उठायेंगे और जब इसको खाकेमां-देपड़ेंगे तो तुम हमारी चिकित्सा से लाभ उठाओगे इसके बीजों का तेलबवासीर को बहुत गुणकरे और इसका कडुआबीज बातके दूरकरनेमेंबहुत गुण रखताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २३६

(मौज़) अर्थात् केल यहवृक्ष गरम ज़मीन पर बहुतसे द्वीपों में हुआ करताहै इसके पत्ते चौखुंटे खजूर के पत्तों के सदृश होते हैं इस वृक्षकी लम्बाई मनुष्यके डील के बराबर होतीहै इसकी जड़ों से फूटकर और भी नन्ही २ शाखा सदा निकलतीहै यहवृक्ष एक बेर फलताहै और फिर जड़वाली छोटी २ शाखाओं को पालते हैं और वह भी एकबेर फललाया करतीहैं इसके मेवेका स्वाद अंगूर की तरह होताहै शेख़रईस के विचारमें इसके सेवनसे मूत्ररोधदूर होजाताहै औबीर्यका बलकारकभी है परन्तुजोअधिकता से सेवन कियाजावे तो सुद्दे पड़जातेहैं इसके सिवाय और लोगोंका लेखहै कि इसका फल नरमी लाताहै और कंठ और हृदयकी दाहको दूर करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २३७

(नारंज) साहबुलफलाहा इसवृक्ष के लिये यों लिखताहै कि जो इस दरख़्त के पास नरगिस के दरख़्त लगायेजांय तो उसके फलों का स्वाद बहुत मीठा होगा इसके चूसने से मुख सुगन्धित

होताहै और मनका बलकारकहै इसका और तुरंजका गुण एकसा है जो इसके बीजको सूखने पर जलादेवें तो उसके धुयेंसे चीटियां भागजातीहैं सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २३८

(नारजील नारियल) हज्जाज के रहनेवालों का वचनहै कि यहवृक्ष छुहारे के वृक्ष के सदृश होताहै हां फल इसका नारियल होताहै इसके फलपर जटायें होतीहैं जिसकी रस्सियां बनाई जाती हैं उससे जहाज़ोंको लंगर करतेहैं उसरस्सीमें यहगुण देखा कि मुद्दतोंतक पानीमें पड़ारहेपर सड़ता नहींहै इसकीगिरी बहुत मीठी होतीहै इसके सेवन से वीर्य अधिक होताहै बलीनास का निश्चय है कि जो इसकी जटाको बत्तीकी जगह चिराग़में जलावें और उस चिराग़ को लोगों में रक्खें उन लोगों को जल्दी नींद आजाये गी शेखरईस का लेखहै कि नारियलकी गिरी वीर्य अधिक करनेवाली है और विशेष करके इसका तेल पुराने बवासीर के रोग में अति लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २३९

(बनक़) इसको फ़ारसी में कुनार और हिन्दी में बेर कहतेहैं साहबुलफलाहा के विचार में इसका बीज गुलाब में भिगोकर बोना बहुतउत्तमहै क्योंकि इसकेफल और पत्तोंसे गुलाबकी सुगंध उत्पन्न होआतीहै जो इसका मेवा शहद और दूधमें भिगोवें और फिरसुखाकर बोवें तो इसका फल अति स्वादिष्ट और मीठाहोगा जो इसके पत्तोंको पीसकर बालोंमें लगावें तो बाल बहुत मज़बूत होजावेंगे और इसमें बालोंका बढ़ाना भी गुणहै जो इसके गोंद से बालोंको धोवें तो लालहो जावेंगे इसके फलका स्वाद खट मीठा होता है इसका सूखा फल रुधिर के बहने और जो मन्दाग्नि के कारण अतीसार हो उसको बन्द करताहै परन्तु ऐसी दशामें फल में गुठली कूटकर खाँय ॥

तसबीर नम्बर २४०

(नख़ल) अर्थात् छुहारेका दरख़्त इस वृक्षको शुभ लिखाहै और यह भी लेखहै कि मुसल मानोंके शहरोंके सिवाय और जगह नहीं होता यद्यपि हिन्दुस्तान हब्श और गरम शहरहैं परन्तु यहां नहीं होता है हज़रत पैग़म्बर साहब कीआज्ञाहै कि बड़ा समझो अपने चाचाको जो छोहाराहै निदान हज़रतने इस वृक्ष को चाचा कहाहै इसका कारण कि ईश्वरने इस शुभ वृक्षको हज़रत आदम की बचीहुई मिट्टी से पैदा कियाहै और कई कारणों से यह वृक्ष मनुष्यकी सूरतका होताहै पहिले यह कि कहीं सेटेढ़ा और गांठ-दार नहींहै दूसरे यह कि यह नर मादा भीहै तीसरे यह कि जो इसके शिरको काटडालें तो सूखजावे और यह वृक्ष और दरख़्तोंके बिपरीत गर्भ धारण करता है कि इसके पहिलेफल में मनुष्य के बीर्य्य कीसी गंध पैदा होतीहै और छाल बीर्य्य रूप होती है इसके सिरपर फुनगी होती हैजोवह किसी उपद्रव से नष्ट होजाय तो वह वृक्ष सूख जावेगा यहभी वही सूरतहै जैसेमनुष्यका शिर और यह भी है किजो कोई उसको काटे तो फिर मनुष्य के जोड़केशदृश फिर दूसरी बार वह डाली न होगी और जिस तरह मनुष्य के बाल होतेहैं उस दरख़्तमें भीरोंगटेहैं साहबुल फलाहा का बचन है कि जो छुहारे का दरख़्त न फलताहो तो उचित है कि यह टोटका किया जाय कि एक मनुष्य बसूला लेकर और एक और दूसरे मनुष्यको साथ लेकर उस वृक्षके पास जावे और उसके नीचे खड़े होकर कहे कि जो कि यह वृक्ष फलता नहीं है इसको काटना चाहताहूं यह सुनकर दूसरा मनुष्य उत्तरदे कि अभी ऐसा काम न करो यह दरख़्त बहुत अच्छाहै इस वर्ष अवश्य फलेगा उस समय वह मनुष्य उत्तरदे कि यह वृक्ष अब कभी न फलेगा और यह कहकर दो तीन बसूले लगावे तब दूसरा हाथ पकड़ के कहे कि अब जाने दीजिये इस समय क्षमा कीजिये जो आगे न फले तो फिरमुख़्तारहो जो ईश्वर चाहे इस उपायसे तो वह वृक्ष

अवश्य फुले फलेगा और इसी ढबसे और भी दरख़्तों पर यह टोटका किया जावे तो क्या आश्चर्य कि धमकी से फलने लगें साहबुलफलाहा का लेखहै कि जो इस दरतख़्तके नर व मादाको परस्पर पासमें जमावें तो वह बहुतही फलतेहैं और यह बात उनकी परस्पर प्रीतिको सिद्ध करतीहै बहुधा जो नर व मादा को अलग करके लगायाहै तो वह फिर फल नहीं लाये हां जब तक आपसमें नहीं मिले इसमईने कई यमानें के रहनेवालोंसे कहावत सुनीहै कि उन लोगोंने वर्णन किया कि हमारे बासके स्थान के निकट एक छुहारे का बागथा और वह अच्छी तरहसे फलाकरता था अकस्मात् एक वर्षमें बिल्कुल न फला बागके मालिकोंने इस पेशेके जाननेवालोंको बुलाकर बाग़ दिखाया उनमेंसेएक उस्ताद ने इस वृक्षपर चढ़कर इधर उधर दृष्टि की परन्तु कोई कारण न पाया घबराया कि फ़िर क्या कारणहै परन्तु फिर जो ध्यानकरके देखा तो एक नर दरख़्तको देखा कि वहइससे बहुत दूरथा उसने पुकारकर कहा कि यह दरख़्त जो मादाहै उसनर दरख़्तसे प्रीति रखताहै जो यह दोनों आपस में इकट्ठे होजांय तो अवश्य फल लायेनिदानकहने सुनने से जो कुछध्यान आया तो दोनोंको आपुस में मिला दिया और उस बुद्धिमान का कहना सच पाया फलने रंग दिखाया कहतेहैं कि इस वृक्षसे और सरू से वैर है यहां तक कि जो कोई मनुष्य सरू के बागों से सैर करके छुहारे के बागकी ओर जाताहै और कोई सरू दरख़्तकी लकड़ीआदि हाथ में लेकर वहां जानेकी इच्छा करताहै तो छुहारे के बागवान कभी उसको जाने नही देते इस वृक्ष के अद्भुत वृत्तान्तों से यह भी एक वर्णनहै कि जो इस दरख़्त के बराबर दीवार बनायें तो उस का रुख़ दीवारही की तरफ रहेगा कहतेहैं कि जिस वृक्षपर केकड़ा लटकावें मेवा बहुत फूले फलेगा अथवा सीसे वा बलूतके वृक्ष की कील बनाकर भी जड़में गाड़ें तो उसकाफलकभी न गिरेगा और वृक्षपर स्थिर रहेगा इसकी लकड़ी को लाखों मन जलावें

परन्तु जैसे मनुष्यकी हड्डियोंका कोयला नही होता उसका भी कोयला नहीं होसक्ता जो इसकीशाखा कोकड़ीकीतौरपरमकान में लगावें तो वह शाखा टुकड़े २ होजावेगी कदाचित् शाखाकी बीच मेंसे चीरके उलटा मिलाके अर्थात् एक शिगाफ की पीठको दूसरे शिगाफकी पीठ मिलाके छत आदिमें डालें तो फिर बहुत मज़बूत रहेगी और कभी न टूटेगी जो इसके पत्तोंको लहसुनखानेके पीछे चबालेवे तो मुखकी दुर्गन्ध दूर होजावेगी इसका मेवा बहुत मीठा और स्वादिष्ट होताहै अबूहरीरे का बचनहै कि हज़रत पैगम्बर साहबने कहा कि अज्ञ वह स्वर्ग से उतरा है यह हर बिषकी औषधिहै अजवह एक छुहारेका प्रकार है जो सदा नहीं फलता परंतु चालीस वर्षके उपरान्त फलताहै और यही कारणहै कि शहर के रहने वालोंने इसका बागोंमें बोना बन्द कर दियाहै शेखरईश का निश्चयहै कि कच्चे छुहारे का अधिक सेवन करना जूड़ी बुखार और शिर पीड़ा उत्पन्न करताहै परन्तु कच्चा छुहारा जला हुआ नमक से मिलाके मञ्जन करना दांतोंकी जड़ोंको दृढ़करताहै और पक्के छुहारे के लिये खसीमके पुत्र रबीका बचनहै कि जिस स्त्रीके प्रसूतिका रुधिर बहुत आता हो तो इसके खाने से तुरन्त बन्दहो जावेगा और मरदों को खानेसे बीर्य अधिक होताहै और प्रकृति को नरम करताहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २४१

(वरद) अर्थात् गुलाब यह प्रसिद्ध वृक्षहै साहबुल फलाहा का बचनहै कि जो यह चाहे कि इसका फल जल्दी छिलकेसे निकले तो गरम पानीसे सींचना चाहिये जो यह चाहे कि गुलाबकी सुगन्ध अधिक हो तो वृक्षके लगाने के समय इसकी डालियों के बीच में लहसुन रखदे इसकी लकड़ीसेसर्प भागतेहैं जोसर्प किसी को काटे और वह इस दरख्त के पास जाय तो गुण करे इसका फूल सारे फूलोंमें खुश रंग और खुशबूदार होताहै इसका ज़ीरा सोनेकी तरह होताहै इसकी ओसको आंखमेंलगाना नेत्र पीड़ाको

दूर करता और ज्योति बढ़ाता है शेखरईश का बचन है कि जिस मनुष्यके पसीने में बास आतीहो जो वह इसको हम्माममें लगावे तो खुशबूदार हो बहुधा स्त्रियां इसका सेवन करतीहैं एक समूहका निश्चय है कि गुलाबके फूलकेलगानेसे मस्से दूरहोतेहैं यदि किसी जोड़में कांटा गड़गया हो इसका लेपकरें कांटा बाहर निकलआवे गा जाल नामी एक जानवर बिष्टा में उत्पन्न होता है वह इसकी सुगन्धसे मर जाताहै इसी तरह जो जीव दुर्गन्ध से उत्पन्नहोता है इसकी सुगन्धसे मर जाताहै तर फूल शिर पीड़ाको गुणकरे परंतु जुकाममें हानि कारक है जो इसके फूलोंपर शयन करें तो वीर्य्य नाश करे इसका अरक़ नेत्रोंकी पीड़ाको गुणकारीहै और मोतिया बिन्दको भी और जो मूर्च्छित मनुष्य के मुख पर इसका आसव (अरक़) छोड़ें या पिलादें तो जागउठेइसकीकलियां लहूके चलने कोगुणकरें जो बिल्लीकी नाकमेंमलें तो वह बीमारहो और क्या आश्चर्य है कि मरजाय सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर २४२

(यासमी) अर्थात् चमेली प्रसिद्ध है इसका फूल सफ़ेद ज़र्द और सुर्ख होताहै इसकी सुगन्धसे शिर पीड़ा उत्पन्न होतीहै परन्तु कफकी शिर पीड़ाको नाश करता है इसके लेपसे छीप दूर होती है शेखके सिवाय और लोगोंका निश्चयहै कि इसके बहुत सूंघने से कमल वायु उत्पन्न होतीहै पर लक़वा और फालिज़ और रांघनको गुणदायकहै यदि इसकातेल पित्तकी प्रकृतिवाले सूंघें तो नकसीर पैदाहो इसका मर्दन लिंगपर करना मूत्रजारीकरताहैसूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर २४३

दूसराप्रकार बेलोंके वर्णनमें

बेल उसेकहतेहैं जो लंबादरख्तनहो और साग़ और घासकीतरह हो यह ईश्वरकी मायाहै कि हरवर्षमुरदेको जीता करतीहै और वह उसपर पानी बरसाताहै और गलेहुये स्थावर सिरेसे हरेभरेहोते हैं औरउसमेंलालपीलेआदि नानाप्रकारके फूलउगतेहैंकिहरबुद्धिमान

ज्ञानवान समझेकि इसी तरहईश्वर मुरदों कोभी जिलायेगा और उनकी गलीहुई हड्डियोंको सिरेसे जीवरूपीवस्त्रपहनायेगा इसीकी ओर क़ुरानमें सैनहैइस आयत से कि तुमईश्वर की कृपा के चिन्ह कि जिसतरह ईश्वर मुरदी ज़मीनको जिलाताहै उसी तरह मुरदों को भी जीता करेगा क्योंकि वह हरवस्तु पर अधिकारीहै और एक ईश्वरकी यहमायाहै कि उसने हरदानेमें एकशक्तिदीहै कि जबवह दाना पृथ्वी में बोयाजाता है तो अपने बलसे पृथ्वीकी शुद्धतरीको अपनीओर खींचताहै और उसीसे बढ़ताहै जैसेकि अग्निकीज्योति की बत्ती के वास्ते चिराग़ में तेलको अपनी ओर खींचतीहै सो वह ईश्वरकी आज्ञानुसार इसीतरह पलकर फलदार होताहै और यह छोटेवृक्ष इसतरह परहैं जैसे कीड़े मकोड़े बड़े जीवधारियोंमें होतेहैं तो जिस तरह से सरदी की अधिकता में कीड़े मकोड़े मरजाते हैं उसीतरह सरदीमें यह भी नाश होजातेहैं इन वृक्षोंके इतनेप्रकार हैं कि मनुष्यकी बुद्धि दीनहै और क्योंकर कुण्ठित नहो कि ईश्वर ने इनको नाना प्रकार के रंग कृपा कियेहैं किसी का रंग लाल है जैसे सोसन का फूल और कोई शक़ाय कुलनैमां (एकप्रकारलाल फूलकी जो बहुत सुर्ख़ होतीहै)के सदृश और उसकापेट उसके दाने सेभराहै और किसीकारंग अग्निवर्णहै जैसेज़ाज़रयोनपहाड़ी और इसको फ़ारसीमें खुज़स्ता कहतेहैं और यह गुलाबसे बहुतहलका होताहै कहतेहैं कि कच्छू और नेवले आदिको जब सांप या अज़-दहा काटता है तो जंगली सातरखाना उनका इलाज है और जो इसको पकाकर खायें तो अतीसार होजाय जो शहद में मिलाकर चाटें तो सूजन को गुण दायकहै जो इसको पकाकर इसका ग़रम पानी पियें कीड़ेपेटके मरजायेंगे और बड़ीभूखलानेवालाभीहै और बातघ्न है और आंखोंकी अन्धेरी और रतौंधी जो तरीसे उत्पन्न हो उसकोनष्टकरे सो अब जो इनबेलोंसे प्रसिद्धहैं वह लिखीजातीहैं॥

(तरख़ून) इसको शीराज़ी भाषा में तरख़ूनी कहतेहैं जो इस कोचबालें तो जिह्वा का स्वाद जाता रहताहै इसी लिये बहुत से

लोग इसे पहिले चबाके कडुई और बेस्वाद औषधियां पीतेहैं और उसकी करुवाहट नहीं मालूमहोती शेख़रईसका वचनहै कि इसके खानेसे कण्ठकी पीड़ा उत्पन्नहो वीर्यघटजाय प्यासपैदाहो इसकी जड़को आकर करहा कहतेहैं जो इसकोसिरकेमें पकाकर कुल्ली करें तो दांतोंके हिलनेको गुणकरे जो जूड़ीबुखारके आनेके पहिलेइसको शरीरपर मलें ईश्वरचाहे तो गुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४४

(अबरान) इसको फ़ारसीमें काफ़ूर शबरम कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि जोजुक़ाम सरदी सेहुआ हो उसको गुण करे इसका रस नेत्रकी ज्योतिको तेज़ करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४५

(अदस मसूर) इसको यूनानी भाषामें माक़ूस कहतेहैं साहबुलफलाहा कहताहै कि जो मसूरको जल्दी उगानाचाहैं वो गोबर मिलाकर बोवें शेख़रईसका वचनहै कि इसको जौ के आटेकेसाथ पीसकर पांवकीनसकी पीड़ापर लगाना गुणकरे इसके बहुतखाने से कोढ़ और आंखमें अन्धेरी पैदा होतीहै इसकेसिवाय और लोग कहतेहैं कि सिरकेमें पकाकर पावँकी बिवाई पर लगाना गुणकारकहै इसकी कुल्ली करना ख़ुनाक अर्थात् पीनसको गुणदायकहै परन्तु इसकेखानेवाला रात्रिकोभयानक स्वप्नदेखताहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २४६

(उज़लम) यह एक प्रकारकी घासहै जिसके निचोड़े हुये रस का तेल बनातेहैं जो झाईं और छीप को दूर करताहै और इसकी घांस बालखोरे और सड़ेहुये घावको गुणदायकहै और कांटाबाहर निकालतीहै शक्कर के साथ लड़कोंकी खांसी दूरकरतीहै और इसी तरह इसका रस भी लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४७

(उन्नबुस्सालिब) अर्थात् मकोय यह कई प्रकार की होती है फ़ारसी में इसको रोबाहबरदक और सम अंगूर कहते हैं को

महाविषहै कोई मलहममें काम आतीहै और बाज़ी नींदलानेवाली अफ़ीमकी तरह होतीहै इसका पत्ता सब्ज़ और मेवा पीलाहोताहै जो नींद वाले प्रकार में से बारह दानेखाये उन्माद और हिचकी कारोगहो और शरीरका रंग बदरंग होजाय और कश्चिन्दाको भी चारदिरम अर्थात् एक तोलादो मासे खाना दीवाना करतीहै जो इसकी जड़की छालको साढ़ेचारमासे शराबमेंपियें बहुत नींदआवे और उसके हर प्रकारका रस नेत्र पीड़ा में लगाना गुण दायकहै सूरत यहहै॥ तसबीर नम्बर २४८

(फजल) इसको फ़ारसी में तुरब और हिन्दीमें मूली कहतेहैं साहबुलफलाहा का वचनहै जितनी मूली लम्बी और भारी चाहे उसीके मुवाफ़िक़ एक लकड़ी पृथ्वी में बिल्कुल गाड़ के निकालले मानोवहखाली ज़मीन सांचे की तरह होगई सोउसगढ़े में मूलीके बीज को सूखी घास समेत डालदे और उसके नीचे कुछ गोबर भी डालना चाहिये तो उसी लकड़ी के बराबर मूलीहोगी और यह भी कहाहै कि जो मूलीके बीजको शहदमें मिलाकर बोवें तो मीठी हो इसके खानेसे बुरी डकार आतीहै इसका यहकारणहै कि जब मूली मेदेमें गई मेदे के फोगको खींचकर उभारतीहै यह दुर्गंध उनफोगों की होतीहै न कि मूलीकी परन्तु यह वचन इब्नुलफरह का है जो लहसुन के खाने के पीछे इसको खावें तो दुर्गन्धि दूर होजावे जिन स्त्रियोंके बच्चेहुयेहों जो वह मूलीका सेवनकरें दूध बहुत पैदा होगा जो मर्द इसकोखाये तो बीर्यमें बल अधिकहो परन्तु आवाज़ बैठ जातीहै और इसके सदा खानेसे मेदा बहुत साफ़ रहताहै जो मूलीको पीसकर बिच्छूपर रखदें तुरन्तमरजाय जिसने मूलीखाईहो और उसको बिच्छू काटे तो विष अपना स्वभाव न करेगा और जो इसको शेलम अर्थात् मनमने के साथ पीसकर बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें परन्तु जूयें शिर में पड़जायेंगे और बदन में सुस्ती पैदा होगी और शिर और आंख और दांत को अवगुण करे शहदमें पीसकर मर्दनकरना छीके निशान दूरकरतीहै जो इसका

रस शराबमेंडालें ख़राब होजाय और बिच्छूके बिषको गुणदायक है जो गरमीसे शिरपीड़ाहो तो इसके पानीसे शिरधोये तुरन्त दूर हो और बालखोरे पर मलना अति गुणदायकहै जो सांपवालों के पिटारे में मूली और नौसादर मल दें उसके सारे सांप मर जावें इसका रस कामला में पांचदिन पीना ज़र्दी खो देताहै इसकारस मलना गिरेहुये बालोंको जमाता है और आंख में लगाना ज्योति अधिककरता है और मूलीको सुखाकर भी आंखमेंलगाना निगाह तेज़ करताहै जिस घर में इसकी राख छोड़ देवें बिच्छू न आवेंगे इसको सूखा पीसकर छीप पर लगाना उसको दूरकरे इसकेबीज खाने से बीर्य अधिकहो और ऐंठनको गुण दायकहै इब्न मासूया का वचनहै कि मूलीके पत्ते नेत्रकी ज्योति अधिक करतेहैं और यह सर्पके बिषको लाभदायक और इससेदूधबहुतहोताहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २४६

(फरफ़ख़) इसको बक़लतुलहुमका अर्थात् खुलफा और लुनिया इसकारण कहतेहैं कि जहां कहीं तरीहोतीहै वहां यहउगता है जो इसके पत्तों को बिछाकर उसपर सोवें स्वप्नमें बीर्यपात न होगा और शरीर के घावपर लगाना गुणदायक है और वीर्य को अधिक भी करता है जो इसको शहद और कचलोन में पीसकर नाभिके गिर्द और लिंगकेछिद्र और पेडूपरमलें लिंग तेज़हो शेख़रईसका वचनहै कि जो इससे मस्सोंको काटें तो फिर पैदा न हों और नेत्रपीड़ा और दांतोंकी पीड़ाको भीगुणदायकहै जो छुहारे के दरख़्तोंपर कोई आफ़तपहुंचे इसकेपत्तोंको रससमेत उसपरमलना उस आफ़त को दूर करता है जो मनुष्य इसके बीज को सिरके में कूट पीसकरपिये देरतक प्यास न लगे बहुधा बिदेशी इसकासेवन पानी न मिलने के समय करतेहैं और गरम तप को भी लाभ करे परन्तु इसका बहुत खाना बीर्यको नष्टकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५०

(फंजंकश्त) यह ऐसीबड़ीघासहै कि दरख़्तकेबराबर है तराइयों

में उगतीहै इसकापत्ता जैतूनकीतरहहोता है और इसमें फूल और मेवा होताहै परन्तु मेवेका सेवन नहीं करते हैं शेख़रईस का वचन है कि यहघास शरीरका रंग अच्छाकरतीहै इसका मरहम सुस्ती और शिरपीड़ाको लाभकरे और सुखनींद लाताहै और दूध बहुत पैदा करताहै परन्तु वीर्य कमहोजाताहै जो इसको बिछाकरसोयें स्वप्नमें वीर्यपात न हो और लिंग खड़ा न हो इसके धुयें से स्त्रीको काम अधिकहोताहै इसका पत्ता सर्पको दूरकरताहै मरहम बावले कुत्ते के घाव को गुणदायक है इसके पत्तोंका धुवां मच्छड़ आदि इसी प्रकार के डंक मारनेवाले कीड़ोंको दूरकरताहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २५१

(फोतनज पोदीना) इस सुगन्धित घासका पत्ता छोटाहोता है और यह दोप्रकार की होतीहै नहरी और पहाड़ी नहरी वहहै जो दरिया किनारे जमे इसकी गंधसे मूर्च्छा दूरहोतीहै रात्रि को स्वप्नमें वीर्यपात को दूरकरे इसका मरहम दुखदाई कीड़े मकोड़ों को गुणकारक है और इसके पत्तोंका धुवांभी लाभकरे इसके पत्तों के दांतोंसे चबाना शराबकी बूको दूरकरताहै और बीर्य्य का नष्ट करनेवाला है क्योंकि गुरदेको अवगुणकारक है और पहाड़ी वह जो पहाड़ोंपर उगे उसका उबटन करना शरीरका रंग सुर्ख और सपेद करताहै मुख्य करके जो शराबमें पकाकर हम्माममें मलै खाजकोगुणकरे और कोढ़हिचकी बदनके फटने और जलंधरवाले और कमलवायुरोग वाले को लाभकरे और बिच्छूकेबिषकीउत्तम औषधि है॥

तसवीर नम्बर २५२

(क़ातिलुलज़ैब) जो इसको कूटकर कच्चे मांस पर छिड़ककर भेड़ियेको खिलावें तो वह तुरन्त मरजाय सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर२५३

(क़ातिलुल्काब) इसके खानेसे कुत्ता तुरन्त मरजाय कहते हैं कियहघास हिन्दुस्तानमेंहोतीहै जिसकोकुचलाकहतेहैंसूरतयहहै॥

तसवीरनम्बर २७४

(क़ताद) यहएक प्रकारका कांटेदार दरख़्तहै जिसमें गोंदबहुत होताहै इसको शीराज़के निवासी एरकम कहतेहैं इसके कांटों को जलाकर इसकी लकड़ी गाव सुतरको खिलातेहैं इसके कांटे सख़्त और लंबेहोतेहैं यहांतक कि अरबके रहनेवाले कठोर कार्यों पर दृष्टांत देतेहैं कि उस कामसे कामक़ताद नामी दरख़्तका कांटा है इसका गोंद खांसी और फेफड़ेके घावको गुणदायक है सूरत को साफ़ करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २७५

(क़सा) फारसी में इसको खयारज़ह और ख़यारज़ार कहते हैं सकाहबुल फ़लाहा का बचन है कि जो यह चाहे कि इसका फल मनुष्य वा पशु वा मुर्ग की तरह का हो तो जिस रूप का चाहे उसका सांचा तय्यार करके उसमें क़साको डालदें और उसका मोहरा बंद करदें परन्तु दृढ़ताके साथ कि उसमें गर्दहवा या भाफ़ न जावे और यह भी बिचार रहे कि क़सा अपने उगने की जगहसे अलग न होने पावे तो जब वह बढ़ेगा उसी सांचेके रूपका होजायेगा और यह भी लिखाहै कि जोस्त्री ऋतुवतीहो और इसकी बेलोंमें जावे तो उनके पत्ते सूख जावेंगे और दरख़्त बेजान होजावेंगे और उसका मेवा कड़ुआ होजावेगा इसीतरह जो उसके बीजको तेलकी गंध पहुंचे यहांतक कि जिसबरतन में तेल हो या कपड़में लगाहो और उसपर उसके बीजपड़जावें तो फलों का स्वाद कड़ुवा होजायेगा यदि ख़यारज़ह को लंबा करना चाहे तो एक बरतनमें पानीभरकर खुलाहुआ चारअंगुलके अन्तरसे उसकेपासरखदें जब ख़यारज़ह उसकेपास पहुंचे थोड़ाहटावे इसी तरह वह बहुत लंबीहोजावेगीजो इसके दानेको उलटा बोयें पत्ता और मेवा बहुतहों जो इसके बीज को शहद और दूधमें भिगोकर बोदेंफलमीठा होगा शेख़रईस का बचनहै कि इसका मेवा खाना बावले कुत्ते के लिये गुणदायक है और प्यास दूर करताहै और

इसका सूंघना गरमीकीअधिकताको दूर करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५६

(क़ुरतुम) अर्थात् कड़ इसका फूल कुसुमहै शेख़रईसका बचन है कि इसका बीजहृदय और शरीरके रंगका शुद्ध करने वाला और कूलंजका गुणदायक है जो अंजीर या सिरके में सेवन करें कामदेवको अधिक करे और झाईं और दादको नष्ट करताहै और इब्न मासूयासे साहब अतियारात ने कहावत लिखीहै कि उनके बिचारमें कड़कोगिरी दस्तलातीहै इस तरह पर कि इसका बीज पानी में उबालकर और ज़ैत में मिलाकर साफ़करके दसदिरम (दिरम साढ़ेतीन माशेकाहोताहै) लाल शक्करअधिककरें और दस दिरमसे बीसदिरमतक पियें सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५७

(क़तन) अर्थात् रूईयह प्रसिद्धहै इसके पत्तोंका रसलड़कों को अतीसारमें पिलातेहैं इसकी राख दांतकी जड़ों और इसके गलने को गुणकारकहै और आजमाई हुईहै जो इसका फलसख़्तहोताहै तो उसका बनाहुआ कपड़ा बदनको सख़्त करताहै और जो नरम होताहै तो उसकी पोशाक बदन को नरम करती है रूईदारकपड़े बूढ़ों और ठंढी प्रकृतिवालों को गुणकारकहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५८

(क़नाबरी) इसको फ़ारसीमें बरग़त और शीराजीमें शोराकह-तेहैं इसकालेप झाईंको नष्टकरताहै और मस्तीको अतिगुणकरेजो छातियोंके घावपर इसके पत्तोंका लेपकरें तो गुणदायक है और हृदय और वहस्थान जहां पेटमें दूसरी बेरभोजन पके इनके बँध जानेकोखोले बवासीरपर लगाना अतिगुणदायकहै राज़ीके बिचार में मेदे और कलेजेको गुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५९

(कनब) (भंग) यह वृक्ष कोई जंगली और कोई बागका होताहै हुसेन का वचन है कि जंगली एक गज़के बराबर जंगलमें

होताहै इसका पत्ता सपेदी लिये और फलमिरचकी तरहपर होताहै जिसका तेलनिकालतेहैं जो गरम सूजन को गुणकरे इसकी जड़का रस कानकी पीड़ाको गुणकरे और बागके भंग बीजकोशहदांज कहतेहैं और इसके पत्ते को भंग जो उपद्रवकारक आलस्य करनेवाली होतीहै इसको थोड़ासा पीना निर्बुद्धि और बिचार को भ्रष्ट करताहै इसकी गरमी बड़ीहै बहुधा पीनस और दीवानापन पैदा करतीहैं और चोटकी पीड़ाको गुणदायकहै और लहूको बंद करतीहैं और पांवके अंगुलियों की पीड़ाको लाभकरे शेख़रईस के बिचारमें इसका रस नेत्रपीड़ाको गुणकरे परन्तु शिरपीड़ा और आंखोंकी अंधेरी उत्पन्न करताहै और इसका सेवनबीर्यको सुखाता है इनके सिवा औरोंका बचनहै कि इसकारस बात को गुणदायक और इसका तेल आंखोंकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूर करता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६०

(कबनैत) इसको फारसीमें करंबरूमी कहतेहैं साहबुलफलाहा का बचनहै कि जो इसको खारी ज़मीनपर लगावें बड़ाहो और इसका अच्छा स्वाद और कीड़े न लगें इसको बीचमें लगाने से अंगूरके दरख्तका बलकम होजाताहै और फिर उसअंगूरकी शराब में नशानहीं रहता है इसके पत्तोंको शाखा समेत पीसकर दुःखी लोगोंके मस्तकपर लगाना चिन्तादूर करताहै इसकाफल खाना या इसका बिस्तर बनाकर उसपर सोना बुरे और भयानक स्वप्न दिखलाताहै इसी कारण जिसने इसका फल खायाहो उसके स्वप्न का फल नहीं कहते जो इसको अफादिया (अर्थात् कई कई खुशबूदार ओषधियोंकी मिलीहुई दवा साथ ऐसी स्त्रीपिये कि जिसका ऋतुका रुधिरबंदहोगयाहो तो रुधिर उसका जारी होजाय और पुरानी खांसी को गुणकरे जो लड़के इसके खाने की आदत करें जल्दीबड़ेहों औरबुरी आवाज़ अच्छी आवाज़ होजाय और कुरूप से सुन्दर रूपहो शेख़रईसका बचनहै कि यह बहुधा पीड़ाको लाभ

करे और गरमीऔर कांपनी को गुणकरे और निद्रालातीहै परन्तु आंखोंको अंधाकरतीहै इसके बीजकी धूनीसेबागके कीड़े मरजातेहैं जो स्त्री भोग के उपरान्त इसका शाफा भग में रक्खे तो गर्भरह-जाय इसके बीजको पत्तों समेत सिरकेमें पीसकर बावलेकुत्तेके घाव पर लगाना गुणकरे इसका बीज प्यासकोगुणदायक और बीर्यको बढ़ाता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २६१

(क़ैसूम) इसकी सुगंध बहुत उत्तम होतीहै फ़ारसीमें इसकोबोय मारा कहतेहैं क्योंकि इसकी गंधसे सांप भागते हैं इसके बीज़ को जिस गांवके गिर्द बोदें वहां सांप नहोंगे और जो हों वह मरजायँ शेख़रईस का बचन है कि बाल निकलने के लिये गुणदायक है जो इसको किसी तेलमें पकाकर जिसकी दाढ़ी पर बाल न जमते हों लगावें तुरन्त बाल निकलआवें और मासिक रुधिर जारी करताहै और मुरदे बच्चे को पेटसे बाहर निकालता है और मूत्रको खोलताहै इसका तेल मलना जूड़ी बुख़ारमें गुणकरे जो शराबमें मिलाकरपियें विष दूर करे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २६२

(गावज़बां) अरबी में लसानुस्सौर कहते हैं कफ और घावको गुणकरे शेख़रईस का निश्चय है कि चिन्ता दूर करता है और मन का बल कारक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २६३

(कतां) अर्थात् अलसी इसके कपड़े बनातेहैं कहते हैं कि इसके कपड़ेसे बदन नरम रहता है मुख्यकरके गरमी में गरम प्रकृतिको इसका धुआं जुकाम को लाभ करे इसका बीज बहुत प्रकार की पीड़ाओं को गुण करे कचलोन और अंजीर के साथ कुत्ते के विष को फ़ायदा करे और मोम के साथ नाख़ून के रोग में अच्छा है और शहद औरकाली मिरचमें मिलाकर खाना बीर्य का बलदायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २६४

(करास) अर्थात् गन्दना जंगली और बोय हुआ होता है सा-हबुलफ़लाहा कहताहै कि इसका बीज बोकर तीन दिनके पीछे पानी देते हैं और इसकी जड़ मज़बूत होने के वास्ते बकरियोंकी मेंगनियां डालते हैं जो गन्दनाको पीस कर बिच्छूके घाव पर लगावें तुरन्त पीड़ा दूरहो और भिड़के विष को भी गुण करे उसका सदा सेवन आंखकी अंधेरी पैदा करताहै शेख़रईस का बचनहै कि शामीगंदना लगाना मस्सोंको दूर करता है और नकसीरके रुधिर को दूर करे परन्तु इसका खाना शिर पीड़ा पैदा करता है और दुस्स्वप्न दिख-लाता है और दांतोंमें पीड़ा पैदा करता है और नेत्रको हानि कारक है और बन्तीगन्दना बवासीर को गुण करे पर जो इसके छालकी धूनी ले वें और पियें और यह कामदेव का बढ़ाने वालाभी है और मनुष्यों का बचन है कि गन्दनाको चबाकर जहां घावसे लहू जारी हो लगाना फ़ायदाकरे जिस स्त्री के ऋतु का रुधिर बन्द होगया हो जो वह इसका दस दिरम रस बीस दिरम शहद के साथ पिये मासिक रुधिर जारीहो कहते हैं कि आवाज़पड़ने को लाभ करताहै और इसीकारण गवइये लोग इसका सेवन कियाकरतेहैं क्योंकि आवाज़ का पड़ना ब्रह्माण्ड की तरी से होता है और यह तरी को सुखाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६५

(करसना) अर्थात् मटर दैसकोरिदस का बचन है कि यहघास महीन २ पत्ते होते हैं और इसका बीज छिलके में होता है और इसका दाना मसूर के सदृश परन्तु यह चौड़ा नहीं होता बरन पहलूदार और स्याहीलिये हां छीलनेपर मसूर की तरह होता है यहदाना बैलों के मोटा करने में अद्वितीय है इसका स्वाद उड़द और मसूर के बीच में होता है रामजर्द और काशग़र की विलायत में भी बहुत बोयाजाता है शेख़रईसका बचनहै कि झांई और छीप पर लगाना गुणकरे रंग रोशन करता है और दुबलापना दूर

करता है जो शराब में पीसकर सांप या ब्रत रखनेवाले मनुष्य या कुत्तेके घावपर लगावें गुणदे॥

तसवीर नम्बर २६६

(किरफ़्सअजमोद) यहघासप्रसिद्धहै जंगली और बागकीहोती है इसकीगंध मुखकोसुगन्धितकरतीहै इसीलिये जोमनुष्य अमीरों और बादशाहों की आधीनताकरता है वह इसका सेवन करता है स्त्रीपुरुषके कामदेवको उभारतीहै और इसका कांपनेवाले जोड़पर लगाना फ़ायदा रखताहै शेख़रईस के विचार में जंगली अजमोद बालखोरे और मस्सोंको गुणकरे और बागकी मुखकी दुर्गंध और दाद खाज को लाभकरे जो अजमोद खायेहुये मनुष्यको बिच्छू काटखाय निश्चयहै कि वह मनुष्य मरजाय सो जहां कहीं बिच्छू बहुतहों उसको न खानाचाहिये इसकारस आंखमें लगाना अँधेरी को दूरकरताहै इसकीजड़ आंखमेंलगाना दांतोंकीपीड़ा दूरकरता है इसका बीजजलंधर और बंद मूत्रको गुणकरे और बच्चेकी झिल्ली को पेटसेबाहर निकालताहै जिनमनुष्योंके समूहमें इसकाधुआंकरें वहनिद्रा में मग्न होजावें मन्दाग्निकी हिचकी को लाभकरे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर२६७

(करदिया) शेख़रईस का वचन है कि यह घास उन्माद और बात को गुणदायक कीड़ों के खींचनेवाली और मूत्ररोध और पेचिश को गुणकारक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६८

(करबजा) अर्थात् धनियां बलीनासका वचन है कि जोइसको जड़ समेत पृथ्वी से उखाड़कर प्रसूति की पीड़ा के समय स्त्री की रान में लटकावे तुरन्त बच्चा पैदाहोय शेख़रईस का वचन है कि हरे धनिये का खाना नींद बहुतलाता है और आंख में अँधेरीपैदा करता है इसका रस दूध में पीसकर लगाना कठोर पीड़ाओं को गुणकरे इसका बहुत खाना समझ और स्मरणको खराबकरताहै इसका बीज भिड़ केडंकपर लगाना गुणदायकहै और ती नहथेली

भर इसका चूर्ण खाना भी लाभकरे बलीनासका वचन है कि इसके दानेके धुयेंसे बिच्छू और सर्प भागतेहैं इसका खाना लहसुन और प्याज की दुर्गंध को नष्ट करता है सूरत यहहै॥

तसवीरनम्बर २६६

(कलबासा) यह प्रसिद्ध घास है जो इसको बिछौने पर रखदें तो खटमल हिलनहीं सक्ते और कुछ देनेका बल उनमें नहीं रहता सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७०

(कमून) इसको फ़ारसी में ज़ीरा कहते हैं कबूतर इसकी इच्छा करताहै जहां छिटकादें कबूतर जमाहोंगे और जिसखानेमें डालदें कबूतर उसको न छोड़ेंगे इसकी सुगन्ध से चींटियां भागती हैं शेख़रईस का वचनहै कि इसके अरक से मुहँधोनासफाई लाता है इसका बहुत खाना मुखका रंग पीला करताहै और ज़ीरेकोसिरके में पीसकर सूंघना नकसीर दूर करता है और जो बत्ती बनाकर नाक में रक्खें तौभी नकसीर को गुण करे इसका रस आंख की ज्योति बढ़ाताहै जो ज़ीरा और नमक बराबरलेकर पानीमेंपीसकर टिकिया की तरहपर बनाकर सुखाकर मैदे के ढेरमें रखदें तो वह मैदा मुद्दत तक ख़राब न होगा सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर२७१

(कौज़गंदुम) इसको फ़ारसी में ज़ौज गन्दुम कहते हैं इसका गुण यह है कि जो इसका एक दाना लेकर दसरतिल शहद और तीसरतिल पानी में मिलाकर पकावें और देगका मुंह कपरमिट्टी करदें उत्तमोत्तम मद्य एक घड़ी में तय्यार होजावे और वीर्य के बढ़नेके वास्ते गुण करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २७२

(कुमात) यह वह घासहै जो ज़मीन के नीचे चांदके प्रभाव से पैदा होतीहै यह बीजसे नहीं जमती और न इसकी जड़ होती है किन्तु रत्नोंके सदृश शक्तियों के समूह से उत्पन्न होती है कि जिस

तरह कि रब पृथ्वी से उत्पन्न होते हैं नबीकी हदीसमें लिखाहै कि कुमात तुरंजबीन गोंद के सदृश हैं इसलिये कि पृथ्वी इसको बे परिश्रम उगाती अरब कहतेहैं कि जो ज़मीन के नीचे कुमात का ज़ीरा हो और गरमीकी बर्षाका जल उसको पहुंचे वह सबजी सांप होजातेहैं इसका एक प्रकार ज़ैतूनकी छायामें होताहै जिसको कुतरक कहतेहैं वह महा बिषहै इसी तरह जो कुमात दरख़्तकी छाया में जमे वह भी बिषहै शेख़रईसने कहाहै कि इसकेखानेसे फालिज और लक़वा पैदा होताहै और कुमात आंखों को प्रकाशवान् करता है जैसा कि हज़रत मुहम्मद साहब की कहावत है कि बुद्धिमान हकीम इसके गुणको खूब जानताहै और शेख़के सिवाय औरों का यह निश्चयहै कि इसका सेवन मूत्ररोध और फालिज पैदा करता है बाज़े कुमात ऐसेहैं कि जिनके खातेही मनुष्य तुरन्त मरजाता है और यह बिषैले जीवधारियोंके निकट पैदाहोताहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २०३

(लबलाब) इसको जबलुल मसाकीं और इश्क़ा और तमूसभी कहते हैं और शीराज़ी भाषा में हरशा और हिन्दी में चांदरपल बोलते हैं इसका वृत्तांत यहहै कि जो वृक्ष इसके पास होता है उस पर यह लिपट जातीहै और महीन सूतकी तरह लम्बी होती जाती इसकी पत्ती लम्बी होतीहै पुरानी शिर पीड़ाको गुणदायक है और सिरके में पीस कर इसका लेप सिफ़्ज़की पीड़ा (सिफ़्ज़ उदर में एक जोड़ होता है) परकरना गुणकरे इसका अरक़ पित्तका निकालने वाला है शेख़रईस के बिचारमें इसका रस बालोंको नूरेकी तरह पर गिरा देता है और जूं के दूरकरने में अति गुणदायक है सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर २०४

(लसानुलहमल) यह घास बकरीकी ज़बानकी भांति होती है शीराज़ी में इसको बारतंग कहते हैं और यह दोप्रकारकी होतीहै बड़ी और छोटी शेख़रईसने कहा है कि कंठमालावालेकी गरदन

में लटकाना गुणकरे जो इसको जड़को उबालकर कुल्ली करें दांतों की पीड़ा को गुणकरे जो इसको मसूर की तरह पर पकाकर खावें मिरगीको गुणकरे और चौथियाके तपभी दूरहों सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०५

(लसानुलअसाफ़ीर) यह उस वृक्षका फल है जिसको फ़ारसी में सरू कहते हैं और शीराज़ी भाषा में इसका नाम तुख़्मगबाहर है और फ़ारसी भाषामें कुंजश्क इसके पत्तेघाव को भरते हैं शेख़र-ईस के विचारमें उन्माद रोगको लाभदायक और वीर्य का पौष्टिक और लिंगका बलदाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०६

(लसफ) इसे फ़ारसी में कबर कहते हैं यह ख़राब ज़मीन पर उगती है साहबुलफलाहा का बचन है कि जब किसान इसकी ज़मीनको दुरुस्त करताहै तो यह घास नाश होजाती हैइसके मेवे को नमकसे पालते हैं तो ख़ूब पक्का होता है इसकी जड़में खीरेकी तरह दूसरा मेवा होता है और वह बहुत तेज़ होता है इसकोशीरे के क़बाबमें डालते हैं कि उसमें उबाल न आवे इसके जड़की छाल रांघनफालिजऔर फफोलेको गुण कारक है कभी ऐसाभी होता है कि इसकी जड़का हरा छिलका दांतोंकी पीड़ामें गुणकारक होता है इसके पत्ते बवासीरको लाभदायक हैं और वीर्य के पौष्टिक भी हैं और यह एक प्रकार का ज़हरमोहरा है मुख्यकर जिसके कान में कोई दुखदाई जीव घुसगया हो जो उस समय इसका रसकान में टपकावें वह जानवर मरजायेगा और झाईं परभीलगाना लाभ-दायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०७

(लफाख़) फ़ारसीमें शाह तरज कहतेहैं इसकी एकप्रकार सपेद पत्तीकी होती है कहते हैं कि वह नरहै इसका बहुत सूंघना सकते की बीमारी पैदा करता है जो एक सप्ताह पर्यंत इसका मर्दन उस कुष्टपर कि सपेद काले दाग शरीर पर पैदा होते हैं करें गुण करे

इसका सूंघना शिर पीड़ा पैदा करता है और नींद लाता है परन्तु इंद्रियां मट्टी होजाती हैं और जो इसका बीज करम्बके साथ मिला कर आग में रक्खें न जलेगा जो स्त्री इसका बत्ती बनाकर शहद में मिलाकर योनिमें रक्खे लहूका बहना बन्दहोगा और पीड़ा कोभी उपयोगी है जंगली लफाख़ जिसको यबरूज कहते हैं और उसकी मनुष्यकी सूरत होती है और उसका नर वृक्ष मनुष्यके सदृश होता है और मादा की सूरत स्त्री सी होती है जो उसकी जड़ मनुष्य की कठोर सूजनपर लगावें गुणकरे और कंठमालाके रोगऔर रतीला और जोड़ों की पीड़ापर इसका मरहम लगाना बहुत गुणकरे इसकी जड़शराबमें पीना मूर्च्छा करता है इसके खानेसे नींद बहुत आती है शेख़रईस का बचन है कि जो इसको शराब में पीस कर तीन गिलास पियें ऐसी मूर्च्छा आवे कि चाहें जिस जोड़ को काटें उसको ख़बर न होगी और जो छः घड़ी तक हाथीदांत को उसके साथ पकावें नरम होजाता है ऐसा कि जो चीज़चाहें हाथसे बनालें सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०८

(लोबिया) शेख़रईस का बचन है कि इसका खाने वाला बुरे स्वप्न देखता है औरों का वाक्य है कि बदन का रंग पैदा करता है और मुरदे बच्चे को उसकी आंवल समेत बाहर निकालता है और ऋतु और जच्चाके लहूको जारी करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०९

(लौक़) फ़ारसी में इसको फीलगोश कहते हैं इसका पत्ता बुरे घावको गुणकारकहै और पुराने स्वरभंगको लाभदायक है इसकी जड़ शहदमें पीस कर झाईं छीप और निमिश (वह रोग है जिस से शरीरकी खालपर छीप और नुक़ते पड़जाते हैं) को नाशकरता है और शराब में पीस कर फटे बदन पर लगाना कि सरदी में हो-जाताहै गुणदायक है और कामदेवका अधिककर्त्ताभी है जोइसकी जड़ पीसकर बदनपरमलें तो सांप उसमनुष्यसेभागेंगे सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(नीलोफ़र) यह बहुधा जंगलोंके तालाबों में उगता है इसकी कलियां जल पर प्रकट रहती हैं और रात्रि को गुप्त और दिन को प्रतीत रहती हैं बलेनास का बचन है कि जो इसको छायामें सुखा कर आगपर डालें न जलेगा शेख़रईसका बचन है कि नीलोफ़रके सेवन से नींद बहुत आती है और गरमी की शिर पीड़ाको फ़ायदा करे वीर्य कमकरे और वीर्यको गाढ़ा करता है स्वप्नमें वीर्यपात को बंद करदेता है इसका बीज पानीमें पीस कर लगाना छीपको नष्ट करता है और गोंदके साथ बालखोरे पर लगाना बाल निकालता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८१

(माश) (उड़द) शीराज़ी में इसको सूमास कहते हैं शेख़रईस के निश्चयमें इसका खाना वीर्यका हानि कारकहै और लोगोंने लिखा है कि जोड़ोंके दर्द में इसका लेप करना फ़ायदा करे परन्तु इसका सेवन दांतों पर करना दांतोंको निर्बल करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २८२

(माज़रयून) यह घास प्रसिद्ध है बाज़ी बड़ी और बाज़ी छोटी होती है बड़ीके पत्ते ज़ैतूनके सदृश होतेहैं और बाज़ी जो काली रंगत की है वह हलाहल विष है परन्तु झाईं छीप और निमिशके वास्ते हरएकप्रकारका माज़रयून गुणदायक है जो करम्ब को मिलाकर सेवन करें बहुतही गुणकरे शराब के साथ पीना दुखदाई जीवों के दुःखसे निर्भय करता है जो आटेमें पकाकर कुत्ते या मेढ़क को खिलावें तुरंत मरजाय मुख्य करके मनुष्यको तो दो दिरम मारडालने वाला विष है शेख़रईस का बचन है कि पानी में मछली को मार डालता है और उसका लेप बदन के दानों को गुण दायक है और घावके कीड़ों को बाहर निकालता है और इसको दो दिरम पीना जलंधरको गुण करे क्योंकि खानेके साथही दस्त आते हैं और इसी से रोग दूर होता है परंतु इससे इलाज करना भयमान होता है

क़ाज़ी अबूअली अलसयोखी ने कहा है कि एक मनुष्य जलंधर की बीमारमें पड़ा सम्पूर्ण हकीम उसके इलाजसे दीनहुये तो जबरोगी ने जीने से हाथ धोये तो बेपरवाई करने लगा और जो उसके मन में आता वह खाता और जो बस्तु उत्तम देखता उसको मोल लेकर खालेता एक दिन उसने भूनीहुई टिड्डियां लेकर खाईं जिसके खातेही थोड़ी देरके पीछे दस्त आनेलगे यहां तक कि तीन दिन के अंदर तीन सौ से अधिक दस्त आये अन्त को आराम होगया उस समय कई हकीमों ने इस हालको मालूम करके उस टिड्डियों वाले को ढूंढ़ा और उसके साथ उसके स्थान को गये और उस मौज़े के चारोंतरफ़ माज़रयून दिखाईदी सो हकीमसमझगये तो जबटिड्डियों ने माज़रयून खाया तो माज़रयून का मुख्यबल और वह गरमी उसकी पेटमें निर्बल होगई और समभाव पर आकर रोगी को आरोग्य किया ईश्वर का धन्यबाद है कि जब हकीम दीनहुये तो ईश्वर ने उस रोगीकी चिकित्सा ऐसी टिड्डीसे पैदा करदी सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २८३

(माहूदाना) इसे हबुलमलूक भी कहतेहैं इसका पत्ता छोटी एक अंगुलीके बराबर छोटी मछलीके सदृश होताहै इसका फल तीन २ दानेकी बाली होतीहै और हरफलमें तीनदाने काले होतेहैं जलंधर गठिया और रांघन और कूलंज और नकरसको गुण करे जो इस के पत्तोंको मुरग़के मांसकेसाथ छःसात दानों समेत शोरवा पकावें कफ निकालेगा परन्तु उस पर ठंढा पानी पीना ज़रूर चाहिये सूरत यहहै—

तसवीर नम्बर २८४

(माहीज़हज) इसका अर्थ मछलीका बिषहै एकप्रकार की घास होती है जिसके पत्ते तरखून के सदृश होतेहैं और इसकादरख़्त शबरमके वृक्षकी भांति होताहै और उसकी शाखा पतली और सीधी होतीहै और रंग ज़र्दीलिये होताहै जो इसको मछलियों के तालाब में छोड़दें तो उसकी मछलियां मस्त होकर ऊपर निकलआवें और

जोड़ों की पीड़ा रांघन और पीठ की और नक़रस (अर्थात् पांवके अँगुलियोंकी पीड़ा को फ़ायदा करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८५

(मरज़ंजोश) एक सुगंधित घास होतीहै शेख़ रईसका बचनहै कि शिरपीड़ा को गुण करे जो इसको पकाकर रस पियें जलंधर दूरहो और बन्द पेशाब को जारी करताहै और सिरकेमें पीसकर बिच्छूके बिषको गुण करे इसका बीज एक दिरम पानीमें पीस कर पीना भिड़की पीड़ा को ठहराता है इसका तेल फालिज के लिये उत्तम है सूखा मरज़ जो शहदमें मिलाकर चोटकी निलाहट पर लगाना गुण करे मुख्य करके कि आंख के नीचेहो सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(नारदैन) रूमी सुम्बुल (बालछड़) है इसके पत्ते कुसुमके पत्तोंके सदृश होतेहैं और डाल बराबर और पीली होतीहै इसमें फूल और मेवा नहीं होता आंखों की पलकें उगाताहै इसका पीना मूत्र और मासिक रुधिर को जारी करताहै और असहक़ के वास्ते फेफड़ेको हानि करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८७

(नानख्वाह)अर्थात् अजवायन इसको शीराज़ी भाषामें ज़ैतान कहते हैं साहबुलफलाहा कहताहै कि आठ महीने हरी और चार महीने सूखी रहती है जो इसको सदा सेवन करे लहू बहुत पैदा हो जो जाड़के मौसममें नर बकरे इसको खावे बीर्य अधिक हो और बकरियां बहुत बच्चे गाभिनहों और दूध और पशम बहुत हो और जो अजवायन को छुहारे के वृक्षके नीचे बोदें तो छुहारेके दरख़्त को फलदार करे और हर दुखदाई जीवोंके घावको गुण दायकहै बलीनासकाबचनहै कि जोकोईसदाअजवायन देखाकरे उसकेमुखकारंग पीलाहो बहुधाछीप और सपेदकाले दागोंकी ओषधियोंमेंसंयुक्तकी जातीहै जहांसे लहूटपकताहो शहदमिलाकरलगावें बन्दहोजावे जो

इसको उबालकर इसकारस बिच्छूकेघावपरलगावें पीड़ा दूरहोजावे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८८

(नरजिस) अर्थात् नरगिस हज़रत मुहम्मद साहबने कहा कि हर मनुष्यके मनमें बरस या कोढ़ या उन्मादकी एक शाखा होतीहै सो उस शाखाको सिवाय सूंघने नरगिसके और कोई चीज़ दूरनहीं करती चाहे वह बर्ष भरमें एक बेर भी नरगिस सूंघे जालीनूस का बचनहै कि जिसके पास केवल दोरोटियांहों उसको चाहिये कि एक खाय और एकके बदले नरगिसमोललले क्योंकि रोटीकेवलशरीकाभोजनहै और नरगिसप्राणका भोजनहै साहबुलफलाहाका बचनहै कि जो इसके कच्चे फलको तोड़ें और दो कांटे उसमें चुभो दें और फिर उसको सुखा कर बोदें तो उससे दुगने नरगिस होंगे कहतेहैं कि भोगके समय जिसकी दृष्टि नरगिसपर पड़जाय बीर्य्य बंध जाय जो फिर न खुले जो प्याज़ी नरगिस के दो टुकड़े में किसी कपड़े में मेढ़ककी आंख समेतबांधकर किसी सोतीहुई स्त्रीकी छातीपर रखदें तो वह स्त्री अपने मनकाभेद कहदेगी और इसका घावपर लगाना घावको भरता है जो शिरमें मलें गंजका रोग अच्छाहोजाय शेख़रईस का बचनहै कि जो कांटा किसी किसी चीज़का जोड़में गड़जाय प्याज़ी नरगिसके लेपकरनेसे कांटा बाहर निकालदेतीहै और शहद और भी जल्दी गुणदायकहै इसका फूल शिर पीड़ा और छींक और झाईंको गुणकारक है जो चार दिरम शहदमें मिलाकर पियें मुरदे बच्चेको पेटसे बाहर निकालता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८६

(नसरीं) फ़ारसीमें इसको नस्तरन और हिन्दीमें सेवती बोलतेहैं यह दो प्रकार एक जंगली और दूसरी बाग़की होतीहै शेख़रईसने लिखाहै कि बाग़की सेवती कीड़ों को मारती है और कानकी झंझनाहट को दूर करतीहै और जंगली सेवती का लेप माथेपर करना शिरकी पीड़ाको दूर करताहै और पीनेसे हिचकी और क़ै दूरहोती है साहब अख़तियारात का बचनहै कि जो झाईंपर लेप करें लाभ

करे इसको सुखाकर आधा मिस्काल रोज़ खाना युवावस्था को बाक़ी रखताहै और बुढ़ापा नहीं आनेपाता॥

तसवीर नम्बर २६०

(नाअनाअ) अर्थात् पोदीना शेख़रईस कहतेहैं कि मेदेका बल कारक और हिचकी ठहराने वाला और वीर्य्यका बलकारकहै और पेटकेकीड़े मारताहै जो भोगके पहिले स्त्री इसको खाले तो गर्भवती नहो माथेपर लगाना शिरपीड़ा दूर करताहै इसका रस सिरके के साथ लहू के चलने को बन्द करताहै और कामदेवको प्रेरणा करता मतलीको लाभ दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६१

(हलियून) इस घासमें बीज और गिलाफ नहींहोता और कई प्रकारकी होतीहै बाज़ी जंगली पहाड़ोंपर कई नरम धरतीपर पैदा होतीहै शेख़रईसका बचनहै कि इसके पत्तोंको उबालकर पीनाकमर की पीड़ा रांघन और कूलंजरीहीको गुणकरे इसकी जड़पकाकर खाना पेशाबको जारी और प्रसूत करताहै और वीर्य्य के बढ़ाने में अति प्रभाव रखताहै कुत्तोंके लिये हलाहल बिषहै इसकीजड़ मद्य में पकाकर रतीला के घावपर लगाना लाभ करे और इसकाबीज दांतोंको पीड़ाके वास्ते गुण कारकहै जो स्त्री इसको शाफ़ा बनाकर भगमेंरक्खे ऋतुकारुधिर जारीहो परन्तु मेदेकेलिये हानिकारकहै अजायबुलमख़लूक़ातके निर्मापकने लिखाहै कि मेरे एकमित्र ने मुझ से यहहाल कहा कि कई अरबलके पहाड़ोंमें हलियून बहुत होताहै वहांका आमिल हर बर्ष उसकी शराब बनाकर अरबल के शाहको सौगात भेजाकरता था एकबेर लोग इस शराब को लिये जाते थे अकस्मात् लूटहुई और बदमाशोंने वहसब बरतन अपने अधिकार में किये जबउनकामुहँ खोला शहद समझकर बहुत पीगये तुरन्त दस्त जारीहुये यहांतक कि निर्बल होकर उसीजगह गिरपड़े मुसा-फिरों ने यहहाल देखकर शहर अरबलमें खबरकी तो वहां से बाद-शाह मुजफ्फ़रुद्दीन ने कई लोगों को भेजा उन्होंने चारपाइयोंपर

लादकर उनको राज्य सभामें विद्यमान किया मार्ग में लोग इन चोरोंपर हँसतेथे कि हलियूनकेबेहोश जातेहैं निदान चिकित्सालय भेजेगये कईलोग आरोग्य हुये बाक़ी मरगये बादशाह ने उनशेषों को छोड़दिया कि इतना दुःखउनको बहुत हुआ ॥

तसवीर नम्बर २६२

(हिन्दबाफ़ारसी) इसको कासनी कहतेहैं कोई जंगली और कोई बाग़ की होती है बाग़की बहुत महीन और पत्ता चौड़ा औरकरुवा होताहै मुहम्मद साहबने श्रीमुखसे कहा कि इसके हरएक पत्ते में स्वर्ग के पानी की एकर बूंदहै शेख़रईस का बचनहैकि इसकामरहम नक़रस को गुणकरे इसकी पत्ती और जड़का मरहम सांप बिच्छू भिड़ बिल्ली और कुत्ते के काटेहुये घावको गुण कारक है और चौथिया के ज्वरको भी लाभकरे कहतेहैं कि जिसके दांतपीड़ा करतेहों वह मनुष्य उस महीनेमें जिसकी पहिलीरात्रि इतवारकी हो और उसी रात्रिको चन्द्रदर्शनहो तो एकपत्ता उसका लेकर वह मनुष्यचन्द्रमा के सामने खड़ेहोकरशपथकरे कि इसमहीने में कभी घोड़े का मांस हिन्दबाद के सामने न खाऊंगा सोदांतों की पीड़ा नष्टहोगी और इसटोटके के कारण फिरपीड़ा न होगीसूरतयह है ॥

तसवीर नम्बर२६३

(दरस) इसका बीज तिलकी सदृश होताहै और बोयाजाताहै जब इसकी बाली सूखकर फटती है दरस बाहर निकलआता है कहतेहैं कि एक बर्षका बोयाहुआ दसबर्ष तक फलताहै जो इसको मलें झाईं और निमिस (वहरोग जिससे बदनपर छीप और बिन्दु पड़जातेहैं) को गुणकरे इसका एक दिरमपीना पथरी और हृदय पीड़ा और पथरीकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूरकरताहै इसहाक़ के बिचार में फेफड़े के लिये हानिकारकहै और इसका दुरुस्तकरने वाला शहदहै जालीनूस ने लिखाहै कि बावले कुत्तेके घावको गुण करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६४

(यक़तैन) अर्थात् कद्दू साहबुलफ़लाहा कहताहै कि जो इस को बड़ा करनाचाहे तो इसके बीजको पृथ्वीमें उलटाबोना चाहिये जो इसको शहद और दूधमें भिगोकर बोवें इसकाफल मीठा होगा हज़रत पैग़म्बर साहबका वचनहै कि जिस वस्तुको पकाओ उसमें कद्दूबहुतछोड़ो क्योंकि मनकीचिन्ता और शोककोदूरकरताहै इसका गुण यहहै कि इसके दरख़्त पर मक्खी नहीं बैठती इस कारण कि जब ईश्वरने हज़रत यूनस को मछलीके पेटसे निकाला कद्दू के वृक्षकी उनपर छायाकी कि हज़रत यूनसके शरीरपरमक्खी न बैठे और उनके शरीरकी खाल जल्दी मज़बूतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६५

(ईश्वर की कृपा से स्थावर अर्थात् वृक्ष और बेलों का वर्णन पूर्ण हुआ)॥

तीसरीनज़र जीवधारियोंके वर्णनमें और वह कईप्रकारपरहैं॥

प्रथम प्रकार मनुष्यके वर्णन में॥

यह सम्पूर्ण सृष्टि तीनप्रकारकी है परन्तु चौपाये तीसरेप्रकार परहै पहला दरजा कानका है दूसरा दरजा स्थावरका है क्योंकि वृक्ष कानें और चारपायों के दरजेमें समहै इनमें हिलने झुलनेका बल नहींहै परन्तु बढ़ना जीवधारियों की भांति परहै तीसरे दरजे पर पशुहैं जिनमें बढ़ने और चलने फिरनेका बल कृपाकियागयाहै और इस शक्तिको ईश्वर ने हरएक में इकट्ठा कियाहै यहां तक कि मक्खी औ मच्छड़ में भी है परन्तु ईश्वर की आज्ञानुकूल वह सर्व प्रकार के हिलनेकी शक्ति मरने के समय झूठी पड़जातीहै जो कि जीवोंके लिये ऐसे उपद्रवहैं कि वह उनसे मरजावें इसलिये उनको एक ऐसा बल दियाहै कि जिसके ज़ोर से अपने दुःखदायी शत्रु को पहिचान सक्ते हैं और अपने शरीर को बचाते हैं यदि यह मालूम करनेका बल न होता और मनुष्य भूखको मालूम न करसक्ता तो भूखसे मरजाता या जब सोता अपनेअङ्गको आगकेजलनेसे मालूम

न करता तो भी नष्टहोजाता सो इसी आवश्यकता पर यह शक्ति कृपा कीगईहै– रही हिलनेकी शक्ति तो जब मनुष्य को भोजन की आवश्यकता होती और उसको चलनेका बल स्थावरों के सदृश न होता तो भोजनको ओर न पहुंचसक्ता इसलिये ईश्वर ने चलने की शक्तिदी कि जिधर चाहे चलाजावे जो यहशक्ति न हो तो खाने पीने से निकम्मा होकर उसवृक्ष के सदृश जो पानी न पाकर कुम्हिला जाताहै यह भी मरजाता जब पशु एक दूसरेके शत्रुहुये तो उनको हथियार दिये गये कइयों को सींग और दांत कृपा हुये कि अपने शत्रुको दूरकरसकें जैसे कि हाथी शेर गाय आदि और कई ऐसेहैं कि भागकर अपना जीव बचासकें उनको भागनेकी शक्ति दी गई जैसे हिरन ख़र्गोश और पक्षी आदिक और कई ऐसे हैं जो अपने हथियार से अपने शरीरको बचासकें जैसे सई और कछुआ आदि और कईऐसेहैं जो अपनेको अच्छीतरहसे दृढ़ता पूर्वक क़िलेमेंरखते हैं जैसे चूहा और सर्प इत्यादि ईश्वर ने हर जीवधारी को उसकी आवश्यकता के अनकूल अलग २ जोड़ोंसे प्रकटकिया इसीकारण हरएक अपनेरङ्ग और रूपसे प्रकाशमान हुआ ख़िताब के पुत्र हज़रत उमर मुहम्मद साहब से कहावत कहतेहैं कि ईश्वर ने पृथ्वीमें एकहज़ार जाति उत्पन्नकी जिसमें छःसौ दरियामें चारसौ पृथ्वीमें हैं और कई बुद्धिमानों का वचनहै कि मनुष्य तमाशा देखना चाहै तो उसे उचितहै कि रात्रिको किसी जङ्गलमें रोशनी करे और उस ओर दृष्टि करे जिधर आगजले उधर देखे कितनी तरह के स्वरूप दिखाई देतेहैं जो कभी किसी के विचारमें न हों अबकुछ इसजगह पर कई जीवधारियों का उनके अद्भुत वृत्तान्त और स्वभाव समेत वर्णन करतेहैं ॥

प्रथम प्रकार मनुष्य के वर्णन में ॥

इससमूहकी ओर कई भांतिसे दृष्टि करनीचाहिये पहिले बड़ाई है प्रकटहो कि मनुष्य सम्पूर्ण जीवधारियोंमें श्रेष्ठहै ईश्वरने इसको नानाभांति के स्वभाव और स्वरूप से उत्पन्नकिया और इसके

जोहर को जीव और शरीर से बांटा और इसकोगुप्त और प्रकटकी बुद्धि और समझ कृपाकी और बोलनेकी शक्ति भेजे में दी और विचार औरबर्णन स्मरण आदि दिये और उस पर बुद्धिको नियत कियासोबोलने की शक्ति तो राजा बुद्धिमंत्री और उसकेसाथीसेना और इन्द्रियां इन सबको प्रकट करनेवाली शरीर राजधानी और जोड़ नौकर चाकर और प्राण मुसाफ़िर हैं यह मुसाफ़िर अपने सफ़रमें हरबातको मालूम करके उसकाहाल मालूमकरनेवाली शक्ति से कहताहै और मालूमकरनेकी शक्ति इन्द्रिय और प्राणोंके बीचमें है और वही सब ख़बरें बोलनेवाली शक्ति के सामने कहता है उस समय बुद्धि उचितबातको विचारतीहै इसीकारण मनुष्यको विचार-बान् कहतेहैं और जो कि भोजन के कारण बड़ा होताहै बनस्पति है और हिलनेजुलनेके कारण पशु और सबकामूल मालूम करनेसे देवताहै सो मनुष्य इनतीनों बातोंका समूहहै यदि मनुष्य पशुओं के काम करनेलगा तो वह पशुहै यदि मैथुनपर उतारूहुआ बकरा है यदि भोजन की अधिक चाहना करने लगा बैलहै जो लोभी है कुत्ता है जो मन में कपट रखता है ऊंट है जो अहंकारी हुआ तो चीता कहेंगे जो मक्कारहै लोमड़ी के सदृश है जो इनसब अवगुणों से भरपूर है शैतान का चेला कहाजावेगा तो जो मनुष्य अपनी हिम्मत देवगुणों के प्राप्तकरने में ख़र्चकरे तो बहुत अच्छी बात है फिर उसका मन नीचे की तरफ़ न झुकेगा और इसीतरह ईश्वर ने क़ुरान में सैनकी है कि जिस मनुष्य का मन चाहे अपने चित्त की शुद्धता से बड़ा होजावे॥

मनुष्य के मूल का बर्णन॥

जब मनुष्यको कोई बड़ा काम होताहै कहताहै कि मैंने किया या मैंने कहा इसदशा में वह मनुष्य अपने शरीर को तो जानताहै परन्तु अपने प्रकट और गुप्त जोड़ों को भूला हुआहै और इसदशा में उसका जीव सब समझने के लायक़ चीज़ों को जानता है और हरप्रकार के कामोंको भूलाहै परन्तु प्राणोंके मूलके मालूम करनेमें

किसीमनुष्यको इच्छा न करनी चाहिये क्योंकि वहमनुष्यकी समझ सेबाहरहै और इसीवास्ते ईश्वरने कहाहै कि यहजीव अपनेगर्दनमें दुःख की रस्सी डाले हुयेहै और मरने के पीछे पुण्य और पाप की आशा रखताहै और यहभी ईश्वरका वर्णनहै कि जो मनुष्य ईश्वर की राह में मरे हैं उनको मुरदा न समझो वरन वह जीते हैं और ईश्वरसे भोजन पातेहैं और जो उनको परमेश्वर की कृपा से चीज़ें मिलीहैं उससे वह प्रसन्न हैं वा नरक और दुःखमें हैं जैसा ईश्वर ने कहाहै कि नरककी आग फरऊनकी नास्तिकजातिके सामने सुबह और शाम दिखाई जातीहै और प्रलयके दिन फरिश्तों को आज्ञा होगी उनको बड़ा दुःखदो मालूम हो कि यह जीव शरीरमें राजाके सदृश होताहै और उसकी राजधानी मनहै जोड़ नौकर बुद्धि उप-देश करनेवाली मंत्रिनी और सभ्यकी तरह परहै और भूख उसके नौकरोंके भोजनको ढूंढ़तीहै और नेत्र एक दुष्क्रिय नीच मनुष्य के सदृश हैं कि अगर कोई उसको लाख उपदेश करे परन्तु उसका उपदेश इसे मारडालने वाला बिष मालूम हो और सदा बुद्धिसे जो उपदेश करनेवाली मंत्रिनी है हर बातमें झगड़ा करताहै और ब्रह्माण्डमें मालूम करनेकी ताक़त खबर पहुंचाने वालेकी तरह पर है जो हमेशा इन्द्रियों की खबर किया करती है और स्मरण की शक्ति जिसका निवासस्थान ब्रह्माण्ड के अन्त में है कोषाधिप है जिह्वा उल्थक और पांचों इन्द्रियां दूत जो हरओर नियत हैं जैसे नेत्ररूप रंगकी ओर और कान शब्दपर इसतरह हर एक अपने२ कामकाहाल विचारको सुनाता है और विचार उसको कोषाधिप के अधिकार में देताहै कि प्राण जिन ख़बरों की आवश्यकता देखे अपने देशके प्रबन्ध के लिये उसके उपायमें लगे और वह ईश्वर शुद्ध है जिसने प्रकट और गुप्तवस्तु मनुष्य को कृपा कीं यह जीव सदाकेलियेहै परन्तु एकदशासे दूसरीदशामेंजाताहै जैसा कि कभी बापकीपीठमें है और कभी माताके उदर में हज़रतअली ने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि ऐ लोगो ईश्वरने तुमको सदाके वास्ते उत्पन्न

किया है अर्थात् सदा रहोगे परन्तु एक घर से दूसरे घर को बदलना अवश्यहै अर्थात् पिता की पीठ से माताके उदरमें और वहांसेसंसारमें और यहांसेअन्तरिक्षमें और अन्तरिक्षसे नरक या स्वर्गको फिर यहकहा कि पृथ्वीसे हमने तुमको उत्पन्नकिया और उसमें तुमको लेजायेंगे और उसीसे फिर तुमको निकालेंगे शेख़र-ईसने शरीर और प्राणोंके संयोग और इनकेबियोगमें अरबीभाषा में काव्यकही और वह इसजगहपर वैसेही लिखीजातीहै और जो कि उसका अक्षरार्थ वृथाहै इसकारण नहीं लिखा परन्तु उनसब कासंक्षेपयहहै कि जीव ऊँचोपदवीसे उतरकर नीचपदवीमें आया कि उसकी प्रतिष्ठा होगी यहां आकर शरीर की क़ैद में फँसा अब चाहताहै कि मैं इस स्थानको छोडूं और शरीर नहीं चाहताहै कि उससे अलग हों और जबवहजीव जानेकी इच्छा करता है तो वह प्रीतिके कारण बियोगकी पीड़ासे रोता है परन्तु जब लाचारी का समय आवेगा तो किसीकावश न चलेगा और कोईरोक न सकेगा और सब संसारी स्वादवृथा रहजायेंगे और कोई सृष्टिका आनन्द साथ न जायेगा और किसीका परिश्रम काम न आयेगा कहते हैं कि इनप्राणोंका इस शरीर और उसके सम्बन्धियों में क़ैद होना ऐसाहै जैसे कोई बुद्धिमान् किसीशहरमें किसीपुंश्चलीस्त्रीकी प्रीति में फँसा हो और वह व्यभिचारिणी बहुधा उस बिचारे बुद्धिमान् मनुष्य को खाने पीने और पहिरने के विषयमें दुःखपहुँचाये और बुद्धिमान् उसकी प्रीति के कारण उसकी सेवा का परिश्रम अपने ऊपर स्वीकार करे और अपने देशके मित्र बांधव और प्रीति को भूलजावे और उसकीप्रसन्नता के सिवाय और कोई कार्य न करे और उसकेबियोगके दुःख न सहसके बरन यहसमझेकिजो इसकी सेवा न करूंगा और यह मुझसे अप्रसन्न होजावेगी तो मैं मर जाऊंगा सो इसीतरह संसारकी दशाहै कि हरमनुष्य इसकीप्रीति में फँसाहैछिपा न रहे कि प्राणजीव के जौहर हैं और कभी यह खानेपीनेपहिनने और मैथुन की इच्छानहीं रखते हैं परन्तु शरीर

सदाउसओर ध्यान रखताहै प्राणजबतक शरीरकेसाथरहताहैसदा शोकयुक्तरहताहै और इस शरीरकेशोधन में सख़्तीउठाता है और बड़े २ कठिन कामों में संसार के माल और असबाब के पाने के वास्ते यत्न करताहै और जब शरीरसे अलगहोताहै आनन्दपाता है जैसा कि हमने ऊपर वर्णन कियाहै कि एक बुद्धिमान् पुंश्चली स्त्रीकी प्रीतिमेंफँसा था अब उसको उसकी प्रीतिके छोड़नेकेबिना आनन्द नहीं मिलसक्ता ॥

मनुष्य के स्वभाव के विषय में ॥

प्राणों के लिये स्वभाव एक दृढ़रूप है जिससे सुगमता पूर्वक बिचार बिना कामहोते हैं और स्वभाव की प्रशंसा में इसलिये दृढ़ बन्धि लगाईगई कि जिसकिसी से किसीप्रकार का दातव्य किसी कारण से हुआहो तो कभी न कहेंगे कि उसकी स्वाभाविक उदारता है जबतक उसकीप्रकृति में दृढ़ता पूर्वक न हो और सुगमता पूर्वक कामों के होने का निबन्ध इस सबब से लगाया गयाहै कि जो कोई दुःख पहुंचने से द्रव्यदानकरे या क्रोध के समय किसी विचार से चुपहोरहेतो नहींकहसक्ते कि इसमेंस्वाभाविकउदारता है या प्राकृतिक शान्ति है तो जो उसका रूप ऐसाहो कि उससे श्रेष्ठकार्य धर्म्मशास्त्र वा बुद्धिके अनुसार हो उसको उत्तमस्वभाव कहेंगे हरतरहसे स्वभाव चाहे बुराहो या अच्छा कभी तो प्राकृतिक है अर्थात् जन्म का होताहै और कभी अभ्यास कियाहुआ कि वह अपने में अच्छीबातोंकी आदत डाले जो कोई अच्छे स्वभाववाले न हों तो अपनेवास्ते परिश्रमउठाकर उसकोप्राप्तकरे अच्छेस्वभाव का गुण लोक परलोक में बड़ाहै हज़रत पैग़म्बर साहबकी कहावत है कि हज़रत ने कहा कि सब वस्तुओंसे भारी जो हिसाब के जोड़ में रक्खेजायँगे उत्तम स्वभाववाले होंगे समरा के पुत्र अब्दुल्ला ने कहाहै कि एकबेर हम ख़ुदा के पैग़म्बर के पासगये हज़रत ने कहा कि मैंने कलरात्रिको यह स्वप्नदेखाहै कि एकपुरुष हमारेचेलों से अपने घुटनों के बल पड़ाहुआहै और उसके और ईश्वर के बीच

में एक परदा है सो उसके श्रेष्ठस्वभाव ने आकर ईश्वर के पास उसको पहुंचादिया इससे प्रयोजन यहहै कि जो कोई मनुष्य अपने में बहुतसे अच्छे कामों को इकट्ठाकरे वह मनुष्य इसके योग्यहै कि राजा के साम्हने प्रतिष्ठित हो और सृष्टिकेलोग उसकोमानें कदाचित् जो इसके बिपरीत बुरे काम जमाकरे तो वह पतित होकर शैतानहो तो जैसा गुणवान् मनुष्य से संयोगकरना उचितहै उसी प्रकार मूर्खसे बियोगरखना उचित है सो इसीकारण मैंने स्वभाव का वर्णन किया कि हरमनुष्य इसका लाभ उठावें॥

मनुष्य के बीर्यसे उत्पन्न होने का वर्णन॥

सबसे उत्तमवस्तुमनुष्यमें पापोंकात्यागहै अर्थात् अपनेकोस्मृति शास्त्र के निषेध कर्मों अर्थात् आहार बिहारकी विपरीतता से रक्षित रखना आचारवान् मनुष्योंके लिये क़ुरानमें दुबारा शाबाशी हुईहै उसमेंसे यह आयत प्रकाशितहै कि वहलोगस्वर्गमें जानेकेयोग्यहैं जो अपने लज्जा के स्थानों को दुष्कर्मों से बचाते हैं कहानी है कि शीरीं के पुत्र मुहम्मद बहुत सुन्दर मनुष्य बजाज़ी का पेशा करते थे एकदिन किसी बादशाहज़ादी की दृष्टि जो इनपरपड़ी प्यार करनेलगी कपड़े के मोललेने के बहाने से बुलाया जब महल में पहुंचे उसने भोगकीइच्छाप्रकटकी मुहम्मदने उत्तरदिया मैं हाज़िर हूं परन्तु मुझको दिशालगीहुई है तो दिशाजाकर वहां की बिष्ठा को अपने मुंह और सबशरीर में मलकर शाहज़ादी के साम्हने आये वह इनको इसदशा में देखकर हटगई और कहा कि यह मनुष्य दुर्बुद्धि है इसको मेरेमहल से निकालदो सो उन्होंने इस उपाय से छुट्टीपाई और इसके बदले ईश्वरने उनको विद्याशौचऔर स्वप्न के फलकहनेकी रीति कृपाकी और उनकी दशाहज़रत यूसुफ पैग़म्बर के सदृशहोगई (उनस्वभावों में उदारता है) अर्थात् जो अपनेपास है उसको अपने दीनसाथियोंमें ख़र्चकरना ऐसीदातव्य मुख्य उदारता है हज़रत पैग़म्बर साहबकी कहानीहै कि हज़रत ने कई मनुष्यबनी उन्नज़ीर के क़ैदकिये थे एक मनुष्य को अलग

करके बाक़ीलोगों को गर्दनमारने की आज्ञादी उस समय हज़रत अलीने कहाकि ईश्वर एक है और अपराध एकसा तो इसमनुष्य का छूटना किसरीतिपर उचितठहरा हज़रतने कहा कि जबरईल मेरेपास ईश्वरकी आज्ञालाये कि इसमनुष्य को इसकी उदारतासे ईश्वरने क्षमा किया है और यहभी प्रसिद्ध है कि ईश्वर ने हज़रत मूसाको आज्ञाभेजी कि सामरीको न मारियो क्योंकि वह उदारहै अभी तालिब के पुत्रजाफर और उसके पुत्र अब्दुल्ला की कहानी है कि उनको इमामहसन और इमामहुसेन ने माल के ख़र्चकरने से मनाकिया अब्दुल्ला ने उत्तरदिया कि ईश्वर ने मुझपर कृपाकी है और मैंने अपना स्वभाव उसके लोगोंपर कृपाकरने का अंगी-कारकिया है तो डरता हूं कि जो अपना स्वभाव छोड़दूं कहीं ईश्वर अपना अनुग्रह मुझसे छोड़दे इनको उदारता कीयह कहावत है कि अबीअम्मार का पुत्र अब्दुलरहमान किसीलौंड़ीसे प्रीतिरखने लगा और उसकी प्रीति प्रसिद्ध हुई यहांतक कि ताऊसमजाहद और अताने उसकेपासजाकर बुराभलाकहा परन्तु उसने यहपद्य पढ़ा और प्रीतिसे हाथ न उठाया जिसका अर्थयह है कि तुमलोग मेरी निन्दा करते हो परन्तु मुझे प्रीति के आगे इन दुर्वचनों की परवाह नहींप्रकट हो कि अब्दुलरहमान निर्द्धनता के कारण उस लौंड़ी को न पासक्ता था तो जब अब्दुल्ला हज को जानेलगे उस समय उन्होंने यह ख़बर पाई और वह उस लौंड़ी को चालीस हज़ार दिरम (कोई सिक्का है साढ़ेतीन मासे वज़नका) को मोल लेकर हजको चले गये जब वहांसे लौट आये उस लौंड़ी को भूषणों से अलंकृत किया जब अब्दुलरहमान उनकी भेंटको आये प्रीतिका समाचार पूछने के उपरांत लौंड़ी को उनके सुपुर्द किया और कहा यह तेरीहै और मैंने केवल तुम्हारे लिये इस लौंड़ी को मोल लियाहै अब यह तुमको फले और तुमइसे लेजाओ और मुझे ईश्वर की सौगन्ध है कि मैंने इससे मैथुन नहीं किया फिर एक हज़ारदिरम नक़द भी उसके मकानपर भिजवा दिये अब्दुलरह-

मान अति हर्षसे रोकर कहने लगा कि ईश्वरने आप लोगों को ऐसी बड़ाई से प्रतिष्ठित कियाहै कि कोई दूसरा मनुष्य नहीं हो सक्ता (कहानी) इब्न दारानामें कोई मनुष्य हातिम के पुत्रकेपास जाकर कहने लगा कि मैं तेरी स्तुति करताहूं यह सुनकर अदीने कहा कि ज़रा ठहरजा हम अपना माल तुमको देंगे उस समय उसके अनुसार मेरी प्रशंसा कीजियो क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी प्रशंसा का बदला न दिया जावे सो हज़ार बकरियां और हज़ार दिरम तीन गुलाम तीन लौंड़ियांदीं और दाराने प्रशंसामें यह पद्य पढ़ा जिसका संक्षेप यहहै कि तेरा पिता उदार था और तू उससेभीअधिकउदारहै सो तुम्हारेसदृशउदार कोईमनुष्य नहीं है यह सुनकर अदीने कहा अब अधिक क्षमाकीजिये क्योंकि मेरा माल इससे अधिक प्रशंसा के योग्य नहींहै (कहानी) हातिम एक वन्धुओं में जिसमें एक क़ैदी उसको पहिंचानता था गया उसने हातिमसे रक्षाचाही हातिमने उस समूह से विनय किया कि इस क़ैदीको क़रज़पर बेंचतेहो उन्होंने कहाकिनहीं परन्तु नक़द कीमत पर बेंचेंगे हातिम उस समय उसको छुड़ाकर उसकी जगह आप क़ैद होकर बैठा और जब अपने मकानसे रुपया मंगाकर देदिया तब अपने घर आया घरमें जो आया तो लड़कों को एक कुतिया को मारते और दुखदेते पाया उनको मना किया और कहाऐबेटो यह कुतिया ऐसा स्वभाव रखतीहै कि जिसकी हम प्रशंसा करते हैं कि अँधेरी रात में जब हमारा रखवाला सोताहोताहै अतिथि के आनेको बतातीहै (कहानी) किसी समय महलबकापुत्र यज़ीद हजाज़के बन्दीग्रहमें था हजाज़ उस क़ैदीसे रोज़ दशहज़ारदिरम जुर्माना लिया करताथा एकदिनफ़रजदक़ नामीकविने उसबेचारे क़ैदीकी प्रशंसामें पद्य आकर सुनाये यज़ीदने कहा कि तुम मेरी प्रशंसा करतेहो हम इस दशा में क़ैदहैंफ़रजदक़ने उत्तर दियामुझे आपके सिवाय कोई उदार दिखाई नहीं देता सो यज़ीद ने अपने गुलामसे कहा कि दशहज़ार दिरमआज इसकोदेदे आजमैंहजाज़

की सख़्ती उठालूंगा इसीकारण हसानके पुत्र हशामका बचन था कि महलबके बेटे यज़ीदकी उदारताकी नाव क़ैदमेंभीजारीरहती है (कहानी) जिन दिनोंमें कि जायदैकापुत्र मुइनएराक़का अधिपति था और बसरे में रहता था एक कवि आकर चाहता था कि दरबारमेंपहुंचेंपरन्तु लाचारहुआक्योंकि मुइनबागमें दरियाकिनारे सैरकरताथा सो उसकबिने एक अरबी भाषाकापद्य उसकीप्रशंसा में लकड़ीपर लिखकर नहरमें डालदिया और वह लकड़ी बहते२ हाकिम को दिखाईदी और उसको मंगाकर देखाकि इसका रचने वाला कौनहै वह इसयोग्यहै कि उसको दशतोड़े पारितोषिकदिये जायँ और उसदिन उसतख़्तेको सिरहाने पररखकर सोगयासुबह को जागकर उसपद्यको देखा और कबिको बुलाकर एक हज़ार दिरम और दिलवाये तीसरे रोज़ फिर बुलवाया लोगोंने कहाकि वह चलागया मुइन ने कहाकिवह इसयोग्य मालूम होताहै कि अपना सब असबाब उसकोदूं और वह काव्ययहथी जिसका यह अर्थहै कि तूऐसादाताहै कि तेरेसिवायऔर कोईहमारी ख़बरलेने वाला नहींहै और न कोई हमारी इच्छा पूर्ण करनेवालाहै मुइनने वर्णन किया कि एकबेर मन्सूर बिल्लाने क्रोधितहोकर मुझे चिंतामें डाला यहांतक कि मैं लाचार होकर एक गुदड़ी पहिन के ऊंटपर सवार होकर जंगलको निकल भागा और रखवालोंकी दृष्टिसे छिपगया उससमय एक हब्शीने जो तलवार लियेहुयेथा मेरेऊंट के पास आकर महार पकड़ली और ऊंटको बिठाया मैंने उससे कहाकि तुझे इसझगड़ेसे क्यालाभहै उसने कहा कि तुझेमन्सूर बिल्लाने बुलायाहै मैंने उत्तरदिया कि मैं क्याहूं कि मुझे मन्सूर बिल्ला यादकरें उसने उत्तरदिया कि तू ज़ायदा का पुत्र मुइनहै मैंने कहा कि ईश्वर से डर मैं कहां और मुइन कहां किसी ईश्वरके जनपर वृथा झूठमत लगा उसने कहा यह बहाना छोड़ हम तुझे अच्छी तरहसे जानतेहैं उस समय मैंनेकहा जो वास्तवमें ऐसा है तो यह मोतीमुझसेलेजिसकामोल ख़लीफ़ाकेपारितोषिकसे जो मेरे पकड़ने

के बदले तुझेदेगा दूनाहोगा और मुझे मारडालना छोड़ उसने कहाकि मैंनेतेरी उदारता की बड़ी प्रशंसा सुनीहै सोयह बताओ कि कभी आपने अपना सारामाल किसीकोदियाहै मैंने उत्तरदिया नहीं उसने कहा आधामाल दियाहै मैंनेकहा नहीं उसने कहा कि चौथाई मालदियाहै मैंने कहा नहीं उसनेकहा पांचवां हिस्सादियाहै मैंनेकहानहीं उसने कहा दसवांभाग कभीदान किया है उस समय मैंनेकहा शायद ऐसा होगयाहोगा तब उसने कहा कि मैंने सदा ऐसा कामकियाहै और मैं वह मनुष्य हूं जिसे ईश्वर ने बीस दीनार (अर्थात् सिक्का अढ़ाईरुपयेका) रोज़ीकियेहैं और इसमोतीका मोल एक हज़ार दीनारहै इसे तुझको देताहूं कि तुझेमालूमहो कि संसारमें मुझसे अधिकदान करनेवालेहैं सो उसने वह मोती मुझे लौटाकर महारछोड़दी मैंनेकहा कि यह अपनामोती लेले क्योंकि मुझे इसकीपरवाहनहींहै उसनेकहा कि तू यहचाहताहैकि मुझे इस स्थानपर झूठ बोलनेवाला ठहरावे अब कभी इसको न लूंगा यह कहकर चलागया जब मैंने डरसेछुट्टीपाई और चैनसे आकर रहने लगा उसको लोगोंसे लोभदेकरबहुत ढुंढ़वाया परन्तु पता न लगा (उसमेंसे सन्तोषहै) अर्थात् जो कुछ मिले उसी को बहुत समझ कर अधिक लोभ न करना नबीकी हदीस में लिखाहै कि सन्तोष का कोषकभी नाश न होगा दाऊदताई की कहानीहै कि उन्होंने अपने पिताकी थाती में बीस दीनार पाये और उनको दशबरषके रोटी कपड़े में थोड़ा २ ख़र्चकिया (उनमें से बीरताहै) अर्थात् उचित रीति की बहादुरी जिससे छलनेवाली वासनाको दूरकरते हैं और यहवीरतानामर्दी और बेफ़ायदाजानदेनेके बीचमेंहै (कहानी) आस के पुत्र उमरूने मुवाविये से कहा कि कभी मैं तुझको वीर पाताहूं और कभी कायर सो तू वीरता और कायरताको मुझेबता उन्होंने उत्तर दिया कि समय पर वीरहूं और उसके विरुद्ध कायर और भयमानहूं (कहानी) हज़रतअली ईश्वर उनपर कृपारक्खे हरदिन सुबह निकलकर युद्धकी दोनों पंक्तियों में खड़े होकर कहते थे कि

ऐमुआबिया कबतक ईश्वरको मनुष्योंका नाहक ख़ूनकरेगा तू आप मेरे साम्हने आकर लड़ कि जो प्रबलहो उसका अधिकार रहै परन्तु मुआविया भयके कारण साम्हने न आताथा (कहानी) दोनों पंक्तियों के युद्ध में इब्दुलअराबी वर्त्तमान था उसने कहा कि जब रबीये के पुत्र हज़रत अब्बास सबतरह से हथियार बन्द होकर तलवार हाथ में लिये मैदान में युद्ध निमित्त आये अकस्मात् शाम के रहने वालों की ओर से अद्दहम के पुत्र अरार ने पुकारा कि ऐ अब्बास मुझसे साम्हना कर अब्बास ने कहा कि ऐ अरार नीचे उतर मालूमहुआ कि जीनेसे निराश हुआहै सो दोनों साम्हनेहुये घोड़ेकी बागें छोड़कर खड्ग युद्ध करनेलगे परन्तु किसीका वार-काम न करताथा क्योंकि दोनों के शरीरों में जिरह थी यहांतक कि अब्बास ने अरार की ज़िरह में हाथ डालकर ज़िरहको फाड़डाला फिर जो तलवारमारी लगगई और पहलूसे छाती घायलहुई अरार शिर नीचाकरके गिरा लोगोंने प्रशंसा का शोर मचाया तोअब्बास उन लोगोंपर झपटे और यथाशक्ति युद्धकिया हज़रत अलीने लोगों से पूछा कि हमारी ओर से कौन हमारे शत्रुसे लड़ता है लोगों ने बिनयकीकि अब्बास रबीये का पुत्र हज़रत ने अब्बास से कहा कि हमने तुम्हें नहीं मनाकिया था क्यों लड़तेहो अब्बासने उत्तर दिया कि क्योंकर होसक्ताहै कि शत्रु लड़ाई मांगे और हम जवाब न दें हज़-रतअलीने कहा कि शत्रुके जवाबदेनेसे अपने गुरूकी आज्ञामाननी उत्तम है उधर मुआविये को बड़ा रंजहुआ कि अरार सा वीर कब पैदा होसक्ता है इसलिये अब्बास के मारने वाले के वास्ते एक सौ औक़िये (अरबीसिक्केकाप्रकार) सोने और चांदी के देनेकीप्रतिज्ञाकी उससमय दोमनुष्योंने मैदानमें आनकर हज़रत अब्बासकोपुकारा हज़रत ने हज़रत अलीसे वृत्तांतकहा जनाब अमीर अब्बासके घोड़े पर सवार हुये और उन्हीं के हथियार हाथमें लेकरसाम्हना किया शत्रुओंने कुछ भी न जाना और मारेगये फिर हज़रतने अब्बासको आज्ञा की कि जब कोई तुम्हें बुलावे हमको ख़बरकीजिये जब यह

ख़बर माविया को पहुंची बहुत दुखीहोके कहनेलगा कि ईश्वर के साम्हने लड़ाई एक बुरीचीज़है जो मनुष्य लड़नेजायेगा वह परास्त होगा (उनमें से सहन शीलहै) अर्थात् अपने हर्ष विषाद न मानना अब्ज़बेरके पुत्र अरवा के पांव में एक रोग हुआ लोगों ने अनुमतिदी कि इस पांवको कटवाडालो नहीं तो साराशरीर सड़ जायेगा सो सथियेने आकर पांवकाटा और यह ईश्वर स्मरण में प्रवृत्तथे कुछ भी न बोले और उसीसमय उनका एकपुत्र कोठे पर से गिरके मरगया उन्होंने कुछ परवाह नकी लोगों ने इन दोनों दुःखोंका उनसे गिल्लाकिया उन्होंने अति सहनशीलता से कहा कि ईश्वरकी आज्ञापर प्रसन्न रहना उचित है जो एक जोड़ काटागया दूसरा मौजूदहै जो एक लड़का मरगया दूसरा जीताहै(उनमेंसे धीर्य और शांतिहै) अर्थात् आवश्यकता में जल्दी न करना और क्रोध दूरकरना ईश्वरका वचनहै कि वह अच्छे लोगहैं जो क्रोधको खातेहैं और लोगोंका अपराध क्षमाकरते हैं हज़रत पैगम्बर साहबने कहाहै कि जब क़यामत (प्रलय) के दिन सम्पूर्ण सृष्टिइकट्ठी होगी ढिंढोराहोगा कि अच्छेलोग कहांहैं सो वे अलगहोकर बहिश्त (स्वर्ग) को जावेंगे उससमय फरिश्ते (देवता) उनसे पूछेंगे कि तुम लोगोंने कौनअच्छाकाम कियाहै वह उत्तरदेंगे कि हमपर जब कोई अन्यायकरता थातो हमने उसे सहलिया औजो हमसे बुराई करता था उसे हम क्षमा करते थे सो फरिश्ते उनको बहिश्त में पहुंचावेंगे (कहानी) हज़रत ईसा यहूदियोंके समूहकी ओरगये उन्होंने हज़रत को कुछ बुराकहा हज़रतने उसके बदले अच्छा बचन कहा लोगों ने आपसे पूछा कि क्योंहज़रत यहूदों नेआपको बुराकहा और आंपने भलाकहा क्या कारणहै हज़रतने कहा जिसकेपास जो पूंजीहै वह उसीको ख़र्च करसक्ताहै (कहानी) किसीने इब्नअब्बास को गालीदी आपनेकहा कि यहकोई आवश्यकता रखताहोगा उसका अर्थ पूर्णकरना चाहिये यह सुनकर उसने शिर झुकालिया और लज्जित हुआ (कहानी)हज़रत इमाम ज़ैनुआबदीनने किसी मनुष्य

को देखा जो आपको बुराई से यादकर रहाथा तो उसके गुलामों ने चाहा कि उसको दुःखदें आपने मनाकिया और आप उसकी तरफ़ ध्यानकरके कहा कि मेरीबुराइयां इससे अधिकहैं जितनी तू वर्णन करताहै जो तुझे निश्चयकरना स्वीकारहो तो वर्णनकरूं वह मनुष्य इन उत्तमबचनोंसे लज्जित होकर चुप हुआ हज़रत ने अपनी क़बा (पोशाक) उसेउढ़ाकर गुलामको आज्ञादी कि एकहज़ारदिरमइसको दे सो वह मनुष्य यह कहताहुआचला कि बेशक यहशख्स पैग़म्बर की सन्तानमें से है और यह भी लोग कहावत कहतेहैं कि किसीने हज़रत जैनुलआबदीनको बुराकहा आपनेकहा कि ऐभाई मेरी इस से ज़ियादाबुराइयां हैं सो मुझे कुछ डरनहीं प्रायः तेरे उपदेशही से उन्हेंछोडूं(कहानी) एकमनुष्यने शोबेको गालीदी शोबेने उत्तरदिया जैसाकि तूनेकहा जोमैं वैसा नहींहूं तो ईश्वरतुझे क्षमाकरे(कहानी) एक मनुष्य ने उक़्लैदस सेकहा कि जबतक तेराशिर धड़ से अलगनहो मुझे आरामनहीं है उक़्लैदस ने उत्तरदिया कि जबतकतेरा यहक्रोध तेरे मनसे बाहर न हो तबतक मुझेभी चैननहीं (कहानी) अखन्नफ़ने जिसकी आज्ञा को लोग मानते हैं कहा कि मैंने धीर्य को आसिमुन्नफ़री सेसीखा है कि एकदिनमैंने उनको देखा किअपने घरमें तलवार लटकाये बैठाहुआ समूहमें हदीस वर्णन कररहा था अकस्मात् कुछलोग एक मनुष्य की मुश्कें बांधेहुये और एक मर्द की लाश को साम्हने लाकर बिनय करनेलगे कि यहतेरा लड़काहै जो मारागया और यह तेरा भतीजा है जो हाथजोड़े खड़ाहैसो क़ैसने अपने भतीजे की ओर देखकर कहा कि ऐबेटे तू ईश्वरका पापी हुआ यह कहकर अपने दूसरे पुत्रसे कहा कि इसके हाथ खोलदे और अपने भाई की लाशको गाड़दे और अपनी माता के पास एकसौ ऊंट पहुंचादे कि यह उसके पुत्रके मरने का बदला है (उसमेंसे उपकार है) अर्थात् उस मनुष्य के साथ भलाई करना जिसने बुराई की हो (कहानी) हज़रतअली हरसुबह को युद्धस्थल की दोनों पंक्तियों में आते और खड़े रहते और यह शब्द कहते थे

कि ऐ मुआविया ईश्वर के भक्तों को कबतक मारेगा तू आपही हमारे सामनेआ कि निर्बल और प्रबल का हाल खुलजाय और राज्य एक ओरहोजाय सो आसके पुत्र उमरूने कहा कि हज़रतने न्यायकिया है इस वचन से मुआविये ने उमरू से कहा कि ईश्वर जानता है जबतक तू सामने न होगा मैं राजी न हूंगा सो दूसरे प्रभात को उमरू हज़रत के सामने आया और धावा किया हज़रत ने उसकी वार रोककर तलवार का वार करना चाहा उमरू ने भय से अपने को घोड़े से गिरादिया और नंगाहोगया हज़रत ने अपने नेत्रोंको बंदकिया और घोड़े की बागफेर के उसके पास से हट आये एकदिन मुआविया बैठा था कि अकस्मात् उमरू को देखकर हँसा उमरू ने कारण पूछा मुआविये ने कहा कि मुझे उसदिन की बातयाद आई जो तू ने युद्ध के समय हज़रत के सामने नग्न होकर अपनी जानबचाई परन्तु यहतो तूबता कि तुझको क्योंकर निश्चयहुआ कि मैं इस उपाय से बचजाऊंगा उसने सौगन्दखाके कहा कि मैं पहलेसे जानताथा कि वह हज़रत बड़े दयावानलज्जावानहैं इसउपायसे ज़रूर बचजाऊंगा और अन्त कोवही हुआ (उनमेंसेक्षमाहै) किसीको वहदण्ड जिसकेवहयोग्यहो न देना हज़रत नबीने कहाहै कि किसी को अपराधकोछोड़ना बड़ापुण्य है और क्षमा करनेवाला लोक पर्लोक में बड़ाई पाताहै सो क्षमाउत्तम है कि ईश्वर प्यारा समझता है और पैगम्बर साहब का बाक्यहै कि जब ईश्वरके जन क़यामत के मैदान में खड़ेहोंगे ढिंढोरा पीटने वाला शोर करेगा किवह मनुष्य अलग हों जिनका बदला ईश्वर पर है कि वह बहिश्त में प्रवेश कियेजांय उस समय लोग पूछेंगे कि ऐसेलोग कौन हैं उत्तर मिलेगा कि जिन लोगोंने मनुष्यों के अपराधों को क्षमा कियाहै सो कईहज़ार मनुष्य इसी बड़ाई के कारण बेहिसाब और किताब बहिश्त में चले जावेंगे (कहानी) कहते हैं कि एक चोर यासर के पुत्र अम्मार के ख़ीमेंमें घुसा और चोरी की लोगोंने अम्मार से कहा कि इस चोरी करने पर इसके

हाथ काटने चाहिये आपने उत्तर दिया कि हमक्षमा करतेहैंशायद ईश्वर हमको भी क्षमाकरे (और उसमें से हाथ का खुलारहना) है अर्थात् बित्त शाठ्य न करना कि जब बड़ा काम साम्हने आवे अपना साहस प्रकटकरे और घबराये नहीं किन्तु बुद्धिके अनुसार कार्य करे (कहानी) कहते हैं कि हज़रत इमामहसन मुआविये के पुत्र यज़ीद की ख़बर लेने कोगये जब उसके दरवाज़े पर पहुंचे यज़ीदने दुष्टतासे अपना साहस दिखाने को अबीज़बीब हज़ली कविकी काव्यपढ़ी जिसका यह अर्थ है कि संसारी छल के कारण जब मैं बुरे लोगों को देखताहूं तो मेरा पुरुषार्थ और साहस बढ़ जाता है हज़रत ने उसके उत्तर में उसी कबि की काव्य पढ़ी जिसका आशय यह है कि जब हम जानलेते हैं कि मृत्यु हमारी आ पहुंची उस समय हम आरोग्यता के यन्त्र खोल डालते हैं अर्थात् हम अपनी मृत्यु को अपने से अलग नहीं समझते और जब हम अपने जीवन से भर पूर हैं और शिर हथेली में है तो तेरे पुरुषार्थ और साहस का हमको कुछ डरनहीं (गंभीरता) अर्थात् उसबात को गुप्तरखना जिससे किसी को दुखपहुंचे हज़रत पैगम्बरसाहब ने कहाहै कि जो कोई अपने भाइयोंकी बुराई जानले तो उसे गुप्त रक्खे कि स्वर्गपाये (कहानी) कहतेहैं कि जब याक़ूबके मरनेके थोड़े दिनरहे अपने लड़कोंको उपदेशकिया कि लोगोंकी बुराइयां छिपा रखना और यहभी कहा कि ऐबेटो हमने जन्मभरमें जिसबस्तु में बहुतभलाई देखी उसको बर्णनकिया और जो बुरीबात देखी उस को छिपारक्खा और किसीपर क्रोधनहींकिया ईश्वरकी प्रसन्नता के लिये (कहानी) किसीबादशाहने अपने शत्रुको युद्धस्थलमें क़ैद कर पाया उसका एक दूसरा भाई था बादशाह ने चाहा कि वह भी आजावे तो उत्तम है तो उस क़ैदी को आज्ञादी कि अपनेभाई को इस विषय का पत्रलिखा कि बादशाह की सेवा में पहुंच कर मेरी बड़ीप्रतिष्ठाहुई है तुमभी चलेआओ लाचार उसबेचारे बंधुएने इस विषयका खतलिखा परन्तु उस पत्रकेअन्तमें इन्शाअल्लाताला

अर्थात् जो ईश्वरचाहे लिखदिया और इस शब्दके (न) वर्णपरह्लित का चिन्ह लगा दिया जब पत्र उसके भाई के पास पहुंचा और उसकी दृष्टि उस ह्लित शब्दपर पड़ी तो बहुतही आश्चर्य में हुआ कि यह कुछ भेदहै निदान समझा कि इसके अर्थ यहहैंकि वास्तव में सरदार सलाहकरतेहैं तेरेलिये कि तुझे मारडालें (उसमेंसे सच्चाईहै) अर्थात् मनसे जिह्वाका अनुकूल होना कहतेहैं कि अबूबकर सदीक़ने कहाहै कि हज़रत रसूलने पहलेवर्ष कहा कि सत्यता को मित्र रक्खो क्योंकि सच्चाई और भलाई दोनों स्वर्गमें जावेंगी (कहानी) कहतेहैं कि हज़रत जनीद अपने उपासनाके मन्दिर में खड़ेथे अकस्मात् एक मनुष्य भागताहुआ आया और उसने इनसे कहा कि ऐ शेख मैं तेरी और ईश्वर की रक्षामें आयाहूं तो शेखने कहा अन्दर आ वह उस उपासना मन्दिर के अन्दर जा छिपा थोड़ी देरमें एक मनुष्य नंगी तलवार लिये शेखके पास आकर उस भागेहुये मनुष्यको पूछने लगा शेखने उत्तर दिया कि उपासना मन्दिरमें हैं उसने उत्तर दिया कि तू यह चाहताहैकि मैं इसमंदिर में उसकोढूंढू और वह इतनीदेरमें दूर निकलजाय जब वह यह कहके चलागया उस समय वह बेचारा जनीदके पास आकर कहनेलगा कि अच्छा मेरा पता बतादिया था जो वह उपासना मन्दिरमें आजाता तो मुझे मार डालता जनीदने कहाकि मेरी सच्चाईसे ईश्वर प्रसन्न हुआ क्योंकर वह मनुष्य तुझको पाता किन्तु मेरी सच्चाई तेरी मुक्तिका कारण हुई (उसमेंसे प्रतिज्ञाका पालनहै) अर्थात् मुखसे कहेहुये वाक्यका पूरा करना ईश्वरका बचनहै कि प्रतिज्ञा का पालन करो क्योंकि प्रलयमें इसकी पूछहोगी और हज़रतरसूल का बचनहै कि धर्म्म लानेवाले अपने बचनपर दृढ़रहतेहैं (कहानी) कहतेहैं कि मुबारकके पुत्र अब्दुल्ला एक वर्ष हजकरतेथे औरदूसरे वर्ष धर्म्म युद्धमें संयुक्त होतेथे उनका बचनहै कि एकबेर हम धर्म्म युद्धको गयेथे वहांपर एक नास्तिक ने मुझसे लड़ाई मांगीमैं उस के साम्हने आया उसके साम्हने जातेही निमाजका समय आगया

मैंने उस नास्तिकसे निमाज पढ़नेकी आज्ञा मांगी उस नास्तिक ने कहा मैंने आज्ञादी पढ़लो और वह आप जाकर दूर खड़ा हुआ तो जबमैं निमाज़ पढ़चुका नास्तिकने अपनी उपासना के वास्ते समय मांगा और मैंने भी उसे बिदा दी उस समय वह सूर्य्य को दण्डवत्करनेलगा उस समय मैंने तलवार लेकरचाहा कि उसको मारडालूं अकस्मात् किसी का शब्द सुनाई दिया कि वह कहता है कि ऐसे समय मतमारो इसके सुनतेही मैंने इरादा अपना तोड़ दिया जब वह नास्तिक अपना उपासना करचुका मुझसे पूछने लगा कि तूने क्या इच्छा कीथी और क्यों हटरहा मैंने उत्तरदिया कि तेरे मारडालने की इच्छाथी परन्तु ईश्वरकी आज्ञासे हटा यह सुनकर उसने कहाकि उस ईश्वरने मुझे इस लाभके दीनमें आने की आज्ञादी है यह कहकर मुसल्मान होगया (उसमेंसेनम्रताई) अर्थात् किसीका दुख देकर मनका नरम होना हज़रतरसूल का बाक्यहै कि जो मनुष्य किसीपर दया न करे उसपर ईश्वरभी कृपा न करेगा हदीसमें लिखा है कि हज़रत रसूल एक ऐसे लड़के के पासगये जिसकी कमर पर पानी की भरीहुई मशक थी और वह उसके बोझसे रोताथा सो हज़रतने रोनेका कारण पूछा लड़के ने उत्तर दिया कि इस मशक का बोझ बहुतभारी है सोहज़रतने वह मशक अपने कांधेपर लेकर उसके साथ उसके घर पहुंचादी वह जातिका यहूदीथा उसके पिताने पुत्रसे पूछा कि यहदूसरा मनुष्य दरवाज़े पर कौनहै उसने सबहाल वर्णन किया यहूदी ने बाहर निकल कर आपको देखा और पहिचाना और कहा कि यह दया और कृपा मुख्य पैग़म्बरों की है यह कहकर मुसल्मान न हुआ (कहानी) अदहम के पुत्र इबराहीम ने काबे में किसी शेख़के मुख सेसुनाकि बनीइसराईलमेंसे किसी मनुष्यनेअपनीमाताकीप्रतिष्ठा केलिये एक बछड़ा बलिदान किया उसका हाथसूखगया तो किसी समय उसकी दृष्टिमें एक पंछीका बच्चादिखाईपड़ाजो अपनेघोंसले घोंसलेसे गिरपड़ाथा और तड़परहाथा उसमनुष्यने उसकोउठाकर

उसके घोंसले में रखदिया इसदशा के कारण ईश्वरने उसका हाथ का सिरेसे मुख्य रूप करदिया —(उसमें से वाचालताहै)अर्थात् ऐसीरीतिसे वार्त्ता कीजावे जिसको लोग सुनकर प्रसन्न होजावें (कहानी) अमियाके पुत्र ज़यादने किसी मनुष्यको बुलाया और वह भागगया उससमय उसका भाई क़ैदहुआ उससेकहा कि जो अपने भाईको प्रकटकरे तो तुझेछुट्टीमिले नहींतो तेरीगरदन मारी जायेगी उसनेउसकाउत्तरदिया कि अमीरुलमोमनीनकी पुस्तक तेरे सामनेलाऊं तो छुट्टीपाऊंगा इसनेकहा हां इसनेबिनयकी कि ईश्वर की पुस्तक लाताहूं और उसपरमूसा और इबराहीमकी दो गवाही भी देताहूं कि उस पुस्तकमें ईश्वरका वचनहै अर्थात् ईश्वर कहताहै कि क्या यह आज्ञाबताई नहींगई कि जो मूसा और इबराहीम की पुस्तकोंमें है कि कोई मनुष्य बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ न उठायेगा कि अपराधके दण्डमें एक दूसरेका बदला नहीं पासक्ता सो इसीतरह मेरा क्या अपराधहै ज़्यादने उसको छोड़ दिया—
(कहानी) हजाजने किसीसेकहा कि तू जो कहताहै किअलीपैग़म्बर के पुत्रहसुनैन बेटे अली के पैग़म्बर की सन्तान में से हैं तो इसका प्रमाण दे नहीं तो तेरी गर्दन मारीजायेगी उस मनुष्यने उत्तरदिया कि इसका प्रमाण कुरान से सिद्धकरूं तो छुट्टीमिलेगी उसने कहा हां उस मनुष्य ने इस आयत को पढ़ा तो ऐहजकरनेवाले जिस तरह से हज़रतईसा बिन बापके पैदा हुये और वह फिर इबराहीम की सन्तान में समझे गये इसी तरह हसनैन भी अपनी माताके कारण रसूलख़ुदा की सन्तान समझेगये और रसूलख़ुदा का वचन है कि ईश्वर बड़े कामों को मित्र रखता है और छोटे कामको मित्र नहीं रखता सो यह कौनसा कठिन प्रश्न है जो तू मुझसे पूछता है हजाजने उसको छोड़दिया (कहानी) एक दिन हमजा की बेटी अमारतमन्सूर की सभा में वर्त्तमान थी तो किसी मनुष्य ने खड़े होकर कहा कि ऐ बादशाह मैं दुखी हूं हमज़ा की पुत्री अमारत ने मेरा द्रव्य ज़ोरसे छीनलिया है मन्सूरने अमारत

से कहा कि तू अपने शत्रु के पास खड़ीहो सो अमारतने कहा कि मेरे बादशाह मैंने वहमाल उसको देदिया जो इसकाहै तो इसे फलै और जो मेराहै तो मैंने इसको दान किया मैं नहीं चाहतीहूं कि मैं अपनी पदवी को जो तेरे सामने है मालके बदले बेचडालूं और उसके सामने खड़ीहूं (उसमें से उपकार है) अर्थात् जिनलोगों को पहचाने और जो नातेदार हों उनके कामों में भलाई की दृष्टि से ध्यानदेना (कहानी) किसी समय मेंहदी बादशाहने किसीभागेहुये अपराधी के पतालगाने के लिये एक हज़ार रुपया नियत किया और वहज़ायदे के पुत्र मुइन का मित्र था तो वह अपराधी गुप्त होगया अन्त को एक बेर किसी मनुष्यने उसको देखलिया और दामन पकड़ के बादशाहके पास लेचला संयोग से एकओर ज़ायदे के पुत्र मुइन की सवारी आतीथी उस अपराधीने कहा कि ऐमुइन मैं तेरी रक्षा में आयाहूं सो मुइन ने उसके पकड़नेवालेसे कहा कि इसको छोड़दे उसने कहा कि भाई यह बादशाह का अपराधी है परन्तु मुइनने न माना उसको सवार कराकर अपने घर लेगया वह बिचारा रोतापीटता मेंहदी की डेवढ़ी पर जाकर सारा हाल कहनेलगा इससे मेंहदी अति कुपित हुआ आज्ञादी कि इसे क़ैद करो और मुइन को लाओ जब मुइन डेवढ़ी पर पहुंचा उसका सलाम न लिया और कहा कि तूने मेरीआज्ञा भंगकी यहसुनकर मुइनने विनयकी कि महाराज इस आधीनने आपकी आज्ञानुसार एकदिन पन्द्रहहज़ार वीरोंसे युद्धकिया और समयतक दुःखउठाता रहा आशा रखताहूं कि एक मनुष्य का अपराध मेरे कारण क्षमाकियाजाये उससमय खलीफाने शिरझुकाकर कहा कि अच्छा उसका अपराध क्षमा कियागया उससमय मुइनने खिलअतकीभी इच्छाकी और खलीफाने पांचहज़ार दिरम उस अपराधी को दिलवाये उसने लाकर उसेदिये (उसमें से प्रतिष्ठा है) अर्थात् अपने को तुच्छ समझना और दूसरे की अपने से बड़ाई करना पैगम्बर साहबने कहाहै कि प्रतिष्ठा मनुष्य को शिर ऊंचाकरती है चाहिये

कि परस्पर प्रतिष्ठाकरो कि ईश्वर भी तुम्हारा शिर ऊंचाकरे इब्न कसीर जो विख्यात विद्वान् थे उनका वचन प्रतिष्ठा की बड़ाई पर साक्षीहै कि उसने अपने बचनमें मानकरनेकी बहुतप्रशंसालिखीहै इसीसे ईश्वरने उस विद्वान्को लोक परलोकमें बड़ाई और नामवरी दी ईश्वरकी कृपासे उत्तम स्वभावोंका वर्णन पूराहुआ यद्यपिकृपणता के वर्णन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह बुरा स्वभाव है और बहुत लोग इसबला में पड़ेहुये हैं परन्तु इसस्थान पर कई लोगों का बर्णन जो कृपणता में प्रसिद्धहैं कियाजाता है (कृपणता अर्थात् कंजूसी) अर्थात् ऐसी वस्तु को इकट्ठा करना जिसकी कोई दूसरा आवश्यकता रखता हो हज़रत पैगम्बर साहब ने कहा कि कंजूसी एक आगका दरख़्त है जिसकी डालें संसार की ओर झुक आईहैं तो जो मनुष्य उसकी डालों पर हाथ न बढ़ायेगा वह आग का फल पायेगा (कहानी) कहते हैं कि पैगम्बरसाहब काबेकीपरिक्रमा करते थे अकस्मात् एक मनुष्य को देखा कि काबे के दरवाज़े में लटका कहरहा था कि इसी शुद्ध मन्दिर की सौगन्द तू मेरा अपराध क्षमाकरदे सो पैगम्बर साहबने कहा कि तेरा अपराध किस प्रकार का है वर्णन कर उसने उत्तर दिया कि मैं अपना पाप वर्णन नहीं करसक्ता हज़रतने कहा तेरा पाप बड़ाहै या पहाड़ उसनेकहा मेरा पाप बड़ाहै फिर हज़रतने कहा समुद्रसे कमहै उसने कहा नहीं किन्तु अधिक तब हज़रतने कहा आकाशसे भी अधिक उसने कहा हां तब हज़रतने कहा तेरा पाप बड़ाहै या ईश्वर उसनेकहा ईश्वर बड़ा और सबसे ऊपरहै तब हज़रतने कहा अपनेपापका वर्णन कर उसने विनय की कि हज़रत मैं धनवान् अमीर हूं परन्तु जो कोई मुझसे कुछ मांगता है तो मुझे यह मालूम होता है कि मुझे मांगने वाला मानो जलती हुई अग्निसे दुःख पहुंचाताहै सो हज़रतनेकहा कि मेरेसामने से हटजा ऐसा नहो कि तेरीआग मुझतक पहुँचे मुझे उस ईश्वरकीशपथहै कि जिसने मुझे पैगम्बरबनायाहै मैं सचकहता हूं कि जो तू दो हज़ार बर्ष भी मुक़ाम इब्राहीम और रुकनकाबे के

बीचमें रोवे पीटे और निमाज़पढ़े तौभी जब तू मरेगा आगमिलेगी तू नहीं जानता है कि कृपणता नास्तिकपनहै और नास्तिक नरक-गामी होगा (कहानी) एक अरबदेशका रहनेवाला इब्न अल्ज़बेर के पास आया और कहा कि मेरा ऊंट बीमार होगया है आप कोई दूसरा ऊंट दीजिये इब्नअल्ज़बेर ने उत्तरदिया कि तू अपने ऊंट की नालबंदी कराले और उसकी गर्दन में रस्सी डालकर प्रभात और संध्या फिराया कर यह सुनकर अराबीने कहा कि हम ऊंट लेने के वास्ते आये थे न कि उपाय पूछने इसने अपने नौकरों से कहा कि इसे मेरे दरबारसे निकालदो (कहानी) किसीगँवारने इब्नअल्ज़बेर केपास आकर कहा कि मुझे कुछदे कि मैं तुम्हारे शत्रुसेजाकर लड़ूं उसने उत्तर दिया कि अच्छा पहले जाकर लड़ो जो अच्छी लड़ाई लड़ोगे कोई चीज़ दूंगा अराबी ने कहा मालूम हुआ कि आप मेरे प्राणोंके बैरी हुये हैं (कहानी) अबुलअसवददूली अपने लड़कों से कहाकरता था कि कभी निर्धनों को नदो क्योंकि कभी यह लोग प्रसन्न न होंगे जबतक कि तुम भी उनके सदृश निर्धन और दीन न होजावोगे इसलिये जो माल अपने पास मौजूदहै उसके वास्ते कृपणता उत्तमहै (कहानी) एकअराबी इनहीं वर्णन कियेहुये मनुष्य के पास गया उससमय उसके पास हरेछुहारों का पात्र रक्खाहुआ था और वह खारहा था सो अराबीने कहा सलाम सो अबुलअस-वदने कहा कि यहबात तो हर एक कहताहै तो अराबीने कहा हम डेरेमें आवें उन्होंने उत्तरदिया कि डेरेके बाहरकी ओर बहुत ज़मीन है अराबीने कहा धूपसे मेरेपावँजलेजाते हैं उसने कहा पानी छिड़-कलो अराबीने कहा हमको भी छुहारा दीजियेगा उसने उत्तरदिया कि जो तेरी भाग्य में है उसीपर सन्तोष कर अराबीने कहा तुझ से बढ़कर कोई कंजूस देखने में नहींआया इतनेमें एक छुहारा अबुल-असवदके हाथसे छूटकर धरती पर गिरपड़ा अराबी ने उठालिया और अपनी चादरसे उसको झाड़कर साफकिया सो अबुलअसवद ने कहा कि तू बड़ामलीनहै कि तूने मेरा छुहारा उठालिया अराबी

ने कहा मुझे खेदहुआ कि तेरा छुहारा शैतानखावे क्योंकि गिरीहुई चीज़ शैतान खाता है उसने उत्तर दिया कि ईश्वरकी सौगन्द हम इसछुहारे को अपने हाथसे जबरईल और मैकाईल फरिश्तोंकोभी न देते (कहानी) क़बीलाबनीमरदां से एक शेख़ अपनीसभामें बैठाथा कि एक अराबी उसके पास आया उससमय उनके पास लोगों का जमाव था उसने कहा कि कालसे लाचार होकर तेरेपास आयाहूं नहीं तो मेरामाल और असबाब गज़नीमें है शेख़ने उत्तरदिया कि मुझे यहकाल स्वीकार है किन्तु मैं बहुत प्रसन्नहूं जो आकाश और पृथ्वी के मध्यमें एक लोहेका तख़्ता पड़जावे और एकपानीकी बूंद न बरषे और किन्तु तेरे हाथपावँ भी कटजायँ कि तू अपने पावँ से चलकर ज़मीन की घासभी न खासके सो अराबी ने शेख़की ओर क्रोधकी दृष्टिसे कहा कि और तो क्याकहूं कि तुझसे कंजूसशेख़पर ईश्वर कुपति हो--(कहानी) मवस्सल में एक अध्यापक था जो हर दिन अपने पुराने पात्र में बाज़ार से भोजन मँगवाया करताथा एकदिन गुलाम के हाथसे वहपात्र टूटगया मारेभय के वह गुलाम नयापात्र मोललेकर भोजन लाया जब अध्यापककी दृष्टिपड़ी कहा कि चाहे तूने हमारेबासन के बदले नयाबर्त्तन मोललिया परंतु वह हमारा बर्तन पुराना और चिकना होगयाथा इस नयेबर्त्तन में हमारे खाने का घी सूख जाया करेगा इसका इतना खेदहै जिसका वर्णन नहीं करसक्ताहूं—(कहानी) किसी हंसमुखने एककृपणसे कहा कि क्योंजी अपने भोजन में मुझे क्यों संयुक्त नहीं करतेहो उसने उत्तर दिया इसकारण कि तुम बहुत खातेहो यहां तक कि ग्रास के ग्रास निगलजाते हो और चबातेतक नहींहो हंसमुखने कहा कि आपमुझे भोजन में शामिल कीजिये प्रतिज्ञा करता हूं कि अब हर ग्रास के पीछे दो पद्य निमाज़ की पढ़ाकरूंगा ॥

सम्पूर्ण प्रकार के प्राणों के विषय में ॥

बुद्धिमानों के विचार में प्राण नानाप्रकार केहैं कई तो प्रकाश युत जिनको उन प्राणोंसे की कि शरीर प्राप्तनहीं हुआ खबरहोती

हैं और उनसे लाभउठाते हैं और कईप्राण कालेहोते हैं जो शरीर के आनन्द में फँसेरहते हैं इस जगहपर कई बुद्धिमानोंका वचन है कि प्राण एक ऐसीवस्तु है जिसके कई प्रकार हैं और हर प्रकारमें कई और होते हैं जो एक दूसरे के बिपरीत नहींहोते परन्तु गिनने पर और इसके हरप्रकार आकाशी प्राणकेसन्तानकी जगहहोते हैं और तिलिस्म अर्थात् मंत्र के जाननेवाले इनप्राणोंको तबाअताम कहते हैं लिखाहै कि वही प्राण उसप्राणकी उत्पत्ति कारकहोतीहै कभी कानसे लगकर बातकरने और कभी विचार और कभी स्वप्न और तपस्या के परिश्रम में अब हम इसस्थानपर बहुत बड़े प्राणों को वर्णन करते हैं (कईप्राणनबियोंकेहैं) जब ईश्वरने इस उत्तमतर समूह को सृष्टि का उपदेशक बनाना चाहा उनके प्राणोंमें नाना-प्रकार के उत्तम स्वभाव इकट्ठे किये और उनसे सर्वप्रकारकी बुरी बातों को दूरकिया बहुत सी करामातें प्रकट कीं जिनको देख कर संसारी लोग उनके आधीन हुये (और कई प्राणवलियों अर्थात् ईश्वर निकटवर्त्ती लोगों के हैं) कि जब उनके प्राण नबियोंके प्राणों के आधीन हुये इनसे बहुधा अद्भुत कार्य प्रकटहुये जिसतरहसे कि आबिदों(पूजनकरनेवालों) और जाहिदों (ईश्वरसेप्रीतिकरनेवालों) के वर्णनमें लिखागया कि उनके आशीर्वाद से रोगोंसे आरोग्यता और काल आदिका दूरहोना प्रकट हुआ (कईप्राणोंमें बड़ाईहै)जो प्रकट और वृत्तान्तों को बताते हैं हज़रत पैग़म्बरसाहबने कहा कि ऐसे धर्म्मियों की बुद्धिमानी से डरो जो ईश्वर के प्रकाशमें विचार पहुंचाताहै (कहानी) अबूसाद जर्राटनेकहा कि एकफ़क़ीरको काबेमें देखा जो केवल एक लँगोटा बांधे था जिसको देखकर मुझे ग्लानि हुई उस फ़क़ीर ने अपनी बुद्धिमानी से मेरी ग्लानिको मालूम कर-लिया और कहा कि ईश्वर तुम्हारेमनके विचारोंको जानताहै सो तुमको डरना चाहिये इस वचनसे मुझको लज्जाहुई ईश्वरसे क्षमा मांगी इसका हाल भी उसको मालूम हुआ तो उसने कहा ईश्वर ऐसाहै कि जो मनुष्यों के क्षमा मांगने का अंगीकार करता है और

पापों को दग्ध करताहै—(और कई प्राग शकुन देखनेवालों के हैं जिसको क़याफ़ा कहते हैं) क़याफ़ा दोप्रकारकाहै एक क़याफ़ाबशर दूसरा क़याफ़ा असर क़याफ़ा बशर उसविद्या को कहतेहैं जोमनुष्यके शरीर के जोड़ोंकी सूरतसे वृत्तांत मालूमकरलें और यहमुख्य करके अरब की जातिमेंहै जिसको नबूमदलज कहते हैं और उनके छोटे बच्चेतक का यहहाल है कि जो उसको बीस औरतों में छोड़ दें जिनमें उसकी मांहो तुरंत मालूम करले (कहानी) एक सौदागर कहता है कि मैंने अपने पिता की थाती से एक बूढ़ा हब्शी पाया एकबेर सफ़रका संयोगहुआ मैं ऊंटपर सवार था और वह गुलाम उसकी मुहारलिये चला जाता था संयोग से एक मनुष्य नबीमदलज जाति का हमसे मिला और एकबेरदृष्टिकरके अकस्मात्‌कहनेलगा कि गुलाम से नौकर कितना एक रूपका है यहबात मेरेमन में जमगई जब मैं अपने घर फिरकर आया मैंने अपनी माता से वह हाल वर्णन किया उसने उत्तर दिया कि सच्चाहाल यहहै कि द्रव्य और धन के होनेपर भी तेरेपितासे सन्तान न हुई तब मैं ने इस गुलाम से सम्भोग किया और उसके गर्भ से तू उत्पन्न हुआ और जो मैं जानती कि तुझको प्रलय में भी यह हाल मालूम न होगा तो मैं कभी तुझसे वर्णन न करती (क़याफ़ा असर) वह है जिससे मनुष्यके पांव और पशुओंके सुमों और जोड़ोंके चिह्नोंसे लोग मालूम करजावें उसके जानने वाले लोग बहुधा रेतीली ज़मीनपर होते हैं सो जब कोई इनमेंसे भागजाता है या कोईचोर इनके माल की चोरी करके चलाजाता है तो यहलोग उसकेपांवके निशानों से उसका पता लगालेते हैं और सब से बड़ा आश्चर्य्य यहहै कि वह लोग स्त्री पुरुष युवा बालक बूढ़े और सहवासी विदेशीके चरण चिह्नभी पहिचान लेतेहैं (बाज़ेप्राण काहनोंकेहैं) जिनके बलसे भूतोंसे भेंटकर सक्ते हैं और उन्हीं से सृष्टि का हाल मालूम करसक्ते हैं (कहानी) मुन्सरुलहमी उलहमीरी के पुत्र रबी बादशाह ने एक भयानक स्वप्नदेखा उसका फल पूछने के वास्ते

सतीह काहिन को बुलाया और उससे कहा कि मैंने स्वप्न में ऐसा देखा कि अँधरे से एक अँगुली प्रकट हुई और पृथ्वीपर गिरकर उस पृथ्वी के बादशाह के शिरको खागई—सतीह ने उत्तर दिया कि कोई बादशाह सेनासमेत तुम्हारी धरतीपर आयेगा औरउस धरती का जो हिरस और अमीन के मध्य में है बादशाह होगा बादशाह ने कहा कि जो सच है तो कबतक आयेगा मेरे सामने या मेरे पीछे और वह कौन है उसकी बादशाहत सदा रहेगी या जातीरहेगी और फिर कौन बादशाह होगा सतीह ने उत्तर दिया कि तेरे मरने के साठवर्ष पीछे यह बात होगी फिर उस बादशाह की सेनाभी थोड़ी मारीजावेगी और थोड़ी भागजावेगी बादशाहने कहाकि उसकी सेना को कौनमारडालेगा उसनेकहा वरनज़ींहरन अदन के देशसे आकर उन सबको मारडालेगा बादशाह ने पूछा कि उसकी बादशाही सदारहेगी या नहीं सतीह ने कहा कि एक शुद्ध पैगम्बर के हाथ से उसका राज्य नष्टहोगा बादशाहने. कहा वह पैगम्बर कौनहोगा सतीह ने कहा वह पैगम्बर फहर के पुत्र गालिब तत्पुत्र मालिक तत्पुत्र नसर की सन्तान में होंगे और उनका राज्य समयके अंतपर्य्यंत रहेगा बादशाहने कहा कि भला समय का अन्त भी है सतीह ने कहा हां उस दिन कि जब पहले और अंत के लोग सब इकट्ठे होंगे और भलों को भलाई औरबुरों को बुराईका बदला मिले सो जोकुछ मैंनेकहा इसमें कुछ भी अंतर न पड़ेगा (कईप्राणी अनुमानसे भविष्यकी बात बताते हैं) और वह लोग एक वृत्तांत को दूसरे वृत्तांतपर प्रमाण देते हैं किसी सम्बन्ध वा रूप के कारण जो बहुत गुप्त हो (कहानी) कहते हैं कि जब सिकन्दर रूमी किसी शहर में पहुंचा वहां के देवालय में एक स्त्री को देखा जो कपड़ा बुनरही थी उस स्त्रीने कहा कि ऐ बादशाह तुझको एक और बहुतभारी देश मिलनेवाला है इतने में उसशहर का अधिपति उस देवमन्दिर में आया उसस्त्री ने उससे कहा कि तेरा देश सिकन्दर के क़ब्ज़े में आगया हाकिम ने स्त्री से इसका

प्रमाण पूछा उसने उत्तर दिया कि जब सिकन्दर आयाथा में अपने कपड़ेको बहुतलम्बा चौड़ा कररही थी इसशकुनके समझनें से मैंने वैसाकहा और अब आप जो आये तो उस कपड़े को मेरी टुकड़े २ करने की इच्छाथी इसलिये मालूम हुआ कि आपसे राज्य अलगहुआ चाहताहै (कहानी) जब अबीतालिब केपुत्र अली सिंहा-सनपर स्थानापन्नहुये तो पहले २ जो शिष्यहुआ अब्दुल्ला का पुत्र तिलहा था जब हज़रत ने उनके हाथ को पकड़ा तिलहा की एक अँगुली को देखा कि सूखीहुई थी हज़रत ने इसशकुन से मालूम किया कि यह स्थित हमको न फलेगी अन्त को यही दशा हुई कि मरने वक हज़रत को उसकी सफाई न हुई (कहानी) एक दिन सफोहख़लीफा शीशा देखकर कहने लगे कि ईश्वर मैं यह नहीं कहता कि जैसा अब्दुलमुलक के पुत्र सुलेमां ने शीशा देखकरकहा था कि मैं जवान बादशाह हूं बरन मेरी यह इच्छा है कि मेरीआयु बढ़ा कि तेरी सेवाकरूं अभी यह वचन पूरा न हुआथा कि आपनें सुना कि कोई मनुष्य दूसरे से कहरहा है कि मेरे और तेरे बीच में मौत को दो महीने पांचदिन की देरी है आपने यह सुनकर ईश्वर का स्मरण करके सत्यजाना सो थोड़ेदिनतक ज्वर की बाधा उठाकर दोमहीने पांचदिन के पीछे ईश्वर के पासपहुंचा (कहानी) हुसेनका पुत्र ताहिर हामाके पुत्र ईसासे बड़ाई करने को बाहर निकला और अपनी आसतीन में थोड़े रुपये निछावर करने को रखलिये परन्तु उनको निछावर करना भूलगया जब कपड़े बदन से अलग किये वह रुपये छिटक गये तो उस समय विद्यमान लोगोंमेंसे किसी कवि ने कहा जिसका अर्थ यहहै कि तू हामांके पुत्र ईसा को परास्त करेगा सो वैसाही हुआ कि ताहिर ने ईसा को मारडाला और वहां बग़दाद में आकर अमीन कोभी मारडाला (मनुष्य के जोड़ों के बिस्तार में)मनुष्य के शरीर में इतनी अद्भुत चीज़ें हैं कि जिनके मालूम करने से बुद्धि क्षीण है इसका प्रमाण ईश्वर के वर्णन से प्रकट है कि जो अपनी अद्भुत जड़ को पहिँचानें

और उसकी कारीगरी की मज़बूती और उसके थोड़े प्रमाण और परस्पर बिरुद्ध वस्तुओं जैसे आग पानी और हवा मिट्टी के मिलने पर ध्यान करे तो वह मनुष्य मालूम करेगा कि इस समूह का उत्पन्न करने वाला कैसा अपूर्व बुद्धिमान् और अधिकारी है उस समय उसका धन्यबाद करना उसपर अवश्य होगा अब यहां बर्णन करना उचित है कि यह शरीर के जोड़ कई तरह के हैं जो दोषों के मिलने से पैदाहोते हैं और इनके दो प्रकार हैं एकाकी संयुक्त (पहला प्रकार हड्डियों के विषय में) यह एक कठोर शरीर है और शरीर के मन्दिर में मानों खम्भा है और इनसे कई रगें निकलती हैं जो एक जोड़ को दूसरे जोड़ से परस्पर मिलादेती हैं जब कि शरीर की दृढ़ता केवल मांस आदि नरम खंडों से न हो सकी तब ईश्वर ने यह हड्डियां उत्पन्नकीं इनमें कई हड्डियां तो शरीर की नेवके वास्ते हैं जैसे पीठकीहड्डी क्योंकि शरीरकी स्थिरता इसीकी नेवपर है जिसतरह किश्तीकी नेव एक लकड़ीपर होती है फिर और छोटी २ लकड़ियां उस लकड़ी पर पेवन्द की तरह पर लगाते हैं और कईढाल की रूपपर हैं जिसतरह खोपड़ी की हड्डी जो भेजे की रक्षा करती है कई ऐसी हड्डियां हैं जिनसे आपस में हड्डियों की दूरी मिलीरहती है बाजी हड्डियां ऐसी हैं जिनसे उसके मिलेजोड़ आवश्यकता रखते हैं जैसे जिह्वा और गले का नल कई हड्डियां शरीर की रक्षाके लिये हैं वहसख़्त हैं कईहड्डियां खोखली इस कारण से हैं कि उनका भोजन उनके अन्दर रहता है अर्थात् उनका गूदा और उससे उनमें तरी रहती है और इसी कारण वह तरी अलग नहीं होजाती तो यहहड्डियां जो कइयों से जुड़ी हैं दो प्रकार पर हैं एक इत्तिसाली जिससे हिलसक्ते हैं दूसरी इन्फिसाली जिससे नहीं हिलसक्ते इनकेलहाम और मुफस्सिल दो प्रकार हैं मुफस्सिल उसको कहते हैं जिसमें प्रकटकी प्रेरणाहो जैसे हाथ पांव का हिलना और लहाम उसको कहते हैं जिसमें प्रकट की प्रेरणा न हो जैसे खोपड़ी तो जिसमें प्रकट की प्रेरणा

होती है उनके तीन प्रकार हैं (प्रथम प्रकार) वह हड्डियां हैं जिन-में एक हड्डी के शिरे में नोक होती है और दूसरे में उसके अनु-सार गढ़ा होताहै कि वह दोनों चूलकीतरह जम बैठें और उसके द्वारा हिलने जुलने में सुगमताहो (दूसराप्रकार) वह दो हड्डियां हैं जिनकी हर हड्डी के शिरेपर नोक होती है और उनका मिलना और मज़बूती पट्टों के द्वाराहोती है (तीसराप्रकार) वह हड्डियां कि परस्पर एक दूसरेमें थोड़ी २ प्रवेशकी हुई और चिपकी बिना चूल केहीं जैसे पीठकी हड्डी हैं और जो हड्डियां प्रकट में नहीं हिलतीं उनकेभी तीनप्रकारहैं (पहलाप्रकार) कोशाना अर्थात् कंघी कहते हैं. और वह दांतों के अनुसार है और दोआरे की तरह एक दूसरे में मिलीहैं (दूसराप्रकार) वह है जिसकी स्थिरता सीधी रेखापर हो जैसे शिर और कानकी हड्डियां (तीसराप्रकार) वह है कि इन दोनों हड्डियोंमें से एकदूसरे में मिलीहों जिसतरह दांतोंकी दरज़ों की बनावटहैं और यह सबहड्डियां दोसौअड़तालीस हैं उनहड्डियों के सिवाय जो समसानियात हैं और समसानियात उन छोटी २ हड्डियोंको कहतेहैं जो जोड़ोंकी बीचकी जगहमें भरीहोती हैं और जो हड्डियां (ȷ) की रूपकी हैं वहकण्ठके नलकीहड्डीकी बनावट में खर्चहुई हैं ईश्वर की बुद्धिने एक २ प्रकार की हड्डी अलग पैदा कीहै कि किसी उत्पात के पहुँचने पर एक दूसरे की स्थानापन्न होसके और जो ऐसा न होता तो आवश्यकतापर कठिनताहोती॥

दूसराप्रकार—चवनी हड्डियोंके वर्णन में॥

यह जोड़मांस और हड्डीकेबीचनरमी और सख़्तीमें दरमियानी दर्जा रखता है और हड्डियों के किनारे पर पैदा होता है जहां कहीं मांसको नरम हड्डीकी आवश्यकता होती है वहां इसीकेसाथ मांस की बनावट होतीहै यहनरमहड्डियां हड्डियोंमें इसलियेउत्पन्न हुईहैं कि इसमें हिलने के कारण छिद्र न होजायँ और ऐसे जो दो जोड़ों के बीच में चवनी हड्डी होती है जो जोड़ों के बीच में बढ़े हों

क्योंकि यहखण्ड हिलनेवालेहैं और हिलने में रगड़न ज़रूर होती है तो जो वहचीज़ सूखी होती तो टूट जाती और जो तर होती तो बहजाती इसीलिये ऐसी बस्तुकी इच्छाहुई जिसमें यह दोनोंगुण हों सोऐसी चीज़ सिवाय चबनी हड्डियोंके और कोईनहींहै (तीसरा प्रकारपट्ठाहै) यहजोड़ नरम और मोटा भेजे और हराम मगज़से पैदाहोताहै इसका गुणसब जोड़ों को हिलाना और मांस को दृढ़ करना और बल देनाहै और जब ब्रह्माण्ड सबपट्ठोंको उठा न सका तो ईश्वर ने पट्ठों को ब्रह्माण्ड से हराम मगज़की ओर जारीकिया और हराम मगज़ से सम्पूर्ण शरीर पर शाखा जारी कीं कि वह सम्पूर्ण शरीर के जोड़ोंपर पहुंचे तो जो पट्ठे भेजेसे निकलतेहैं वह शिरके सब जोड़ोंको हिलातेहैं और वहांसे चलकर अन्दरके जोड़ों पर पहुंचतेहैं और सब बाक़ीजोड़ हराम मगज़के पट्ठोंसे पुष्टहोते हैं यद्यपि हराम मगज़ भी अन्दर के जोड़ों के निकटहैं परन्तु उससे नरम २ पट्ठे ऐसे उत्पन्न नहीं होते जो अन्दर के जोड़ों को हिलावें आगे ईश्वर जाने(चौथा प्रकार रुबात) यह खण्ड बिल्कुल पट्ठेके रंगकाहै परन्तु इससे सूखा अधिकहै और कई कइयों पर पूर्ण होते और सख़्तहोता और परस्पर जोड़ोंको मिलाताहै और उससेबड़ा लाभ हिलनेमें पहुंचताहै और जबतक कि जोड़ोंका इच्छा किया हुआ हिलना पूरा नहींहोता तो पट्ठे में यह शक्ति नहीं होती कि हड्डियों से मिल जावें क्योंकि हड्डियां कठोर हैं और पट्ठे नरम सो ईश्वरने हड्डीसे एक ऐसीबस्तुउगाई जोपट्ठेके रूपसीहै परन्तु पट्ठेसे सख़्त और हड्डीसे नरमहै और वह रुबातहै और वहरुबातको पट्ठे केसाथ इकट्ठाकियाहै और एकखंडकी तरहपर दोनोंको मिलायाहै और इसीके कारण पट्ठेऔर हड्डियां परस्परइकट्ठी होतीहैं (पांचवां प्रकार मांस)यहखण्ड गरम और तरहै इसकेसम्पूर्णलाभोंमेंसे एक यहहै कि पट्ठे और कूदने और स्थिर रहनेवाली रगोंकी सहायता करताहै क्योंकि यहठण्ढी और सूखी हैं तो जो मांस की गरमी न होती तो बाहरसे हवा पहुंचकर इनको बिगाड़ देती और जो कि

कूदने और स्थिर रहनेवालीरगें पट्ठे और भोजनको सहारेहैं और अपने में भोजन के पचने की आवश्यकता रखते हैं ईश्वर ने मांस से जो इनको घेरेहै इनकी सहायता पहुंचाई कि उत्तमरीतिसेशरीर का कार्यचले दूसरा लाभयहहै कि हड्डियों को जोड़ों के रूपका बनाता है जो मांसनहोता तो खाली हड्डियां वृथा थीं सो मांस का दृष्टान्त मट्टीकासाहै कि उससे भी चित्र बनताहै (छठांप्रकार चरबी) यह खण्ड गरम श्रेष्ठ और हवाई है इसकोमांसकेटुकड़ों और पट्ठोंके चौगिर्द पैदाकियाहै कि यहदोनों हिलने जुलने के हथियार हैं सो यह दोनों काम काज करनेपर गरमीकी आवश्यकता रखने लगे और हालयहहै कि कामकाज पूरा नहीं होताहै परन्तु गरम और तरहैं और जो कि पट्ठे ठण्ढे और ख़ुश्कहैं तो चरबी मिलादी किउनको गरम करकेभोजनकेपचने नरमकरने और पकानेमेंसहा-यताकरे और यहचरबी मांससे रगोंकी तरहपर नहींछिपी क्योंकि मांस से उस वस्तु के पचाने का प्रयोजन है जो रगों के अंदर है और चरबी से यह प्रयोजन है कि पट्ठों को केवल गरम करे और उस के अन्दर हिलने की तेजी से न जासके तो जो किसी गाढ़े खण्डसे मिलीहोती तो उसका हिलना जातारहता और जैसे कि हमने मांस और हड्डियों के दृष्टान्त में वर्णन किया है कि मांस मट्टी के सदृशहै तो इसी तरह चरबी का दृष्टान्तहै कि उस मूलकी अस्तरकारी करतीहै और सपेदकरतीहै और वहभोजन जो जोड़ों के लिये होताहै उसको जोड़ोंसे अलग करतीहै और चरबी जोड़ों की रक्षा भी करती है जिसतरह कपड़ा शरीरकी रक्षा सरदी और गरमीसे करता है॥

सातवांप्रकार—फुदकनेवाली रगोंके विषयमें॥

यह कई रगें प्राणोंकी पात्रहैं और मनसे उगी हैं और जीव से उत्पन्न हुईहैं और इसजीवका मूलश्रेष्ठ रुधिरहै जो प्राणों के भोजन से होताहै जैसा कि जैतका तेल दीपकके प्रकाशका कारण है और इनरगों के पैदाहोने से यहबुद्धि है कि इनसे प्राणोंकीरक्षा होती है

और जीव इनमें रहताहै और जब यह फुदकने वाली रगें मन से निकलतीहैं दो टुकड़े होजातीहैं एकटुकड़ा फेफड़े की ओर जाताहै और वहांपरहवाके खींचनेका कामकरताहै और यह फुदकनेवाली रगों का टुकड़ा केवल एक दरजा होताहै क्योंकि यह बहुत नरम और बहुत आधीन और बहुत ठहरनेवाला है और हवाकीखिचा-वट में बँधता और खुलना इसीके आधीनहै और दूसराटुकड़ा दो तरफ़ बँटताहै एकऊपरको जाताहै और वह छोटाहै क्योंकि इसके लेने वाले मनके ऊपर के जोड़हैं और वह मनके नीचे के जोड़ों से छोटे हैं और दूसरा प्रकार मनके नीचेकीओर जाताहै और इससे बहुत सी नसें चारोंओर जारी होतीहैं ॥

आठवांप्रकार स्थिररगों का वर्णन ॥

यहकईरेखा फुदकनेवाली रगोंकीतरहहैं कुछअन्तरनहीं सिवाय इसके कि एकसमूहहै और इनके बीचमें गाढ़ा रुधिररहताहै परन्तु फुदकनेवाली रगोंमें उत्तम रुधिररहताहै और यह रगें कलेजे की नीचेकीओरसेनिकलतीहैं इनसेलाभयहहै कि कलेजेकीओर भोजन कोखींचतीहैं और कुछरगें कलेजेकेऊपरसे निकलती हैं इनकाकाम भोजन पहुंचाना सम्पूर्णजोड़ोंकोहै इनकानामजोफ है और इनरगों का शरीर बहुत पतला फुदकनेवाली रगोंसेहै और यह इसकारण है कि नसोंमें लहू गाढ़ा है तो जो इनका चमड़ा हलका न होता तो लहू इनसे सुगमता पूर्वक न टपकता (नवांप्रकार सरब है) अर्थात् एक चरबी की चादर जो पक्वाशय को ढांकेहुये है अर्थात् पक्वाशयका पहिनाव है और खोखले खण्डोंके भी अर्थ हैं कि उन खोखले शरीरकेभागोंको गरमीपहुंचाये जब मेदा भोजनसे भरा हो (दशवांप्रकार गश्म है) यह एकभागहै इसकामूल झिल्ली की छाल से है जैसे कपड़ेकीबुनावट और यह उन जोड़ोंपर फैली हुईहै जो हिलते नहीं और यह इसतरह उनपर ढँकीहै जैसे छाल दरख़्तपर होतीहै और उनजोड़ोंकी उनके उपद्रव और रूपकी रक्षा करतीहै और उन जोड़ों को रोगोंसे बचातीहै (ग्यारहवां प्रकार त्वचाहै)

यह झिल्ली और रुबातसे मिलीहै और इसमें शरीर की गरमी के पचाने और निकालनेकेलिये बाल उगेहुये हैं और त्वचामें सख्ती और नरमी दोनों मिलीहुई हैं कि अपनी हानि और लाभकी रक्षा तय्याररहै और यह अपनेलाभको खींचती और अवगुणकोभगाती और फोगों को जैसे कि मैल पसीना आदि छिद्रों से दूर करती है (बारहवांप्रकार हड्डियोंकी मींगीहै) जो हड्डियोंके स्वभावकेअनुसार है और हड्डियोंके बीचमें पैदाकीगईहै कि हड्डियों को सहाराहो जो कि उसका भोजनलहूसे उचितथा इसलिये उसकाभोजन रुधिर से नियत हुआ परन्तु रूपान्तर होकर कि अस्थियों के योग्य उत्तम भोजन बनकर होजावे सो जब हड्डियोंकी मींगीकीतरी और लहू की गरमी मिलजातीहै तो उसमें सरदी और खुश्की पैदा होजाती है उससमय यहमींगी अस्थिभोजन होजातीहै आगे ईश्वरजाने॥

द्वितीय प्रकार मिलेहुये जोड़ोंके विषय में॥

इनकेदोप्रकारहैं एकअन्तरी दूसरावाह्यसो वाह्यकेबहुतसेप्रकार हैं उनमेंसे (प्रथम प्रकार) शिरहै जोकि शिरमें सुनने और देखने का प्यारहै और यह ऊंचेहोने के चाहने वालेहैं क्योंकि देखना उंचाईसे संबंध रखताहै कि दूरकी चीज़ें साफ दिखाई दें इसलिये ईश्वरकी मायाने इसतरह समझा कि शरीरमें सबसे ऊंचेशिरब-नायाजावे और शिरजोगोल पैदाहुआ है इसकारण से है कि गोल चीज़ बहुधा कई और घूम सक्ती है और दूसरा कारण यहहै कि गोल शकल सबरूपोंमें उत्तम होतीहै और गोलहोनेपर लंबीभी है इसकारण कि ब्रह्मांडकेपट्ठे के खड़ेहोनेकेवास्ते अलंकृतहुई है और फिर गोल और कुछलंबा पैदाकियागया और खोपड़ीके अंदरभेजेको रखदिया कि उपद्रवोंसे भेजेकीरक्षाकरे कि जैसे अंडेकीरक्षा उसका छिलकाकरताहै नहींतोजल्दी कोई उपद्रव अवगुणकरता जो थोड़ा भी चोटपहुंचती और यही भेजा सम्पूर्ण शरीरके हिलने जुलनेका प्रारम्भ स्थलहै और शिरको बहुत हड्डियोंसे मिलाहुआ बनाया है इसलिये कि जो कोई हड्डीकिसी चोट से चूरहोतो दूसरी पूरीहड्डी

उसके स्थानापन्न होसके और इसखोपड़ीमें आरेकेदांतों की तरह दन्दानेहैं कईउन दन्दानोंमेंसे कइयों में मिले हैं और बाजे माथेके पास स्थिर पायेजाते हैं और उसको अकलीली कहतेहैं इसदृष्टिसे कि वह जगह टोपीपहिननेकीहै और दूसरेतरफ के दन्दानोंसे पीठ कीहड्डीफंसीहुईहै और वह(२) केरूपपरहै और वहखंभाजोझिल्लीके दाहनीओरहै उसकानामयह मुस्तक़ीमहै सूरत उसकीयहहै —
(नेत्रकावर्णन)नेत्रऐसीवस्तुहै जिसकी आवश्यकता संसारभररखता है सोईश्वर ने बहुत सफाईबारीकी और नरमीसेनेत्रकोउत्पन्नकिया और इसकी रक्षा भी अवश्य समझी इसलिये उसकाघेरा हड्डी से बनाया कि जिसके चारोंओर सख़्त हड्डियां लगाईं और आंखको पलकों से छिपाया और उसकी ज्योति को बालों की सहायता से उपद्रवों से बचाया और दोपलकें इसवास्ते नियत कीं जो एक में कुछ उत्पातहो तो दूसरी उसकी जगह रहकर रक्षा का कामदेवे कि देखने वाला एकहीबेर अन्धा न होजावे और इसका स्थान शिरपर नियतकिया क्योंकि इसमें देखने की शक्ति है और भेजेही से आंखोंमें उतरतीहै और इसआंखको नरम और उत्तमपैदाकिया और बारीक इतना बनाया कि दूरकीचीज़ के देखनेमें कष्ट न पड़े और जोकि शरीर में ज्योति का स्थान दोछिद्रोंके बदले कि जिस से निशाना देखते हैं वर्तमान है तो जितना निशाना देखने का स्थान ऊंचा हो प्रकाश अधिक पहुंचेगा सो ईश्वर ने उसीढंग से उसको उपजाया कि सबज़ोड़ों को देखती रहे आंख के सातदरजे हैं और इसतरह से बने हैं कि एकखोखला पट्ठा खोपड़ी के नीचे ब्रह्मांड से उठकर आंखके घेरे में पहुंचकर पूर्णहोताहै और आंख में दो परदे हैं एकमोटा दूसरा पतला तो जिससमय वहखोखला पट्ठा आंख की हड्डीके पास पहुंचताहै उस समय झिल्ली का पट्ठा उससे अलग होजाता है और झिल्ली शरीर की हड्डियों के वास्ते फ़र्श के बदलेहै परन्तु सब आंख पर नहींहै उसको दरजा मशीमा (बच्चेदानी) का कहते हैं क्योंकि वह बहुत गर्भाशय से मिलता

है और वह खोखला पट्ठा अपने रूप को प्रकट करताहै कि गशा हो और उन गशाओंकी सहायता करे और उसका नाम शबकीहै फिर उसके बीचमें एकखंड कांच के रंगका स्थिर होताहै जिसका नामज़ुजाजिया है और उसके अन्दर एक और खण्ड गोल लटका होताहै और यह अपनी सफ़ाईमें बरफ़से मिलताहै तो इसकानाम रतूबत जलीदियाहै और ज़ुजाजिया खंडजलीदियाको घेरेहोता है और आधा ऊंचे मकड़ीके जालकी तरहहै जो बहुतसाफ़ औरचमकताहुआहै उसकानाम अन्कबूतिया खंडहै और उसके ऊपर एक और खंड लचकदारहै सपेदरंगतका जिसका नाम बैज़ियाहै फिर उसके ऊपर एक नाना प्रकारके रंगकादरजा पुतलियोंमें होता है जो बहुत कालाहै और जलीदियाके सामने है और एक नक्शहै और खुलामालूम होताहै और वह कभी मुख्यदशा अर्थात् अंधेरे में खुला और प्रकाशमें तंगहोताहै और बहुत अंधेरेमेंभी खुलाहोजाताहै और यह छिद्रही आंखकी स्याहीहै जिसकी झिल्लीआंखके तीसरे खंडपर होतीहै जो उसको घेरेहै--ईश्वरकी क्याबुद्धिमानीहै कि उसने ऐसे खंडोंसे नेत्र उपजाये जो अपना काम अच्छी तरह देतेहैं- (कानका वर्णन) सुननेकी शक्तिको कुछ लाभ नहीं देता परन्तु वायुके परस्पर वेगसे कि जबवह भेजेमेंपहुंचतीहै सो ईश्वर ने श्रवण स्थानको सख्त हड्डियोंसे बनाया जो बहुत पेचदार हैं और दोपट्ठोंपर पूर्णहोती हैं और वह पट्ठे भेजेसे उठतेहैं और जो यह हड्डी खुली हुई होती तो उसमें निस्संदेह वायुसे सर्दी पैठकर सुननेकी शक्तिको बाहर करदेती और थोड़ी हवाभी सर्दकर देती क्योंकि उस आशय का स्वभावभी शीतलहै इसी कारण सुनने की शक्ति भेजेमें गुप्तहुई और ईश्वरनेकानको खुला पैदाकिया कि उसमें हवा पहुंचकर घूमे और श्रवण शक्तिको बाहरके शब्दोंकी ख़बरदे जो कानतंगहोता तो श्रवण शक्तिको सर्दी और प्रचंडवायु बिजली और कठोर शब्द बहुत हानि पहुंचाते सो इसीलिये ईश्वर ने इसकीशकल पेचदार बनाई कि एकहीबेरहवा न पहुंचे बरन् ठह-

रती हुई धीरे २ पहुंचे सौउस पवनका वेग उनपेचों में जो श्रवण शक्तिके मार्गमें हैं ठहरजाताहै जब ठहर जाता है तो उस समय श्रवण शक्ति को ख़बर होती है— (नाक का वर्णन) ईश्वरने जो इस जोड़को बनाया तो लाभ यह है कि मुख की सुन्दरता का अलंकार और सजावट इसीपरहै और इसको हवा के सुड़कने का हथियार बनाया और खींचनेके स्थानोंको खुलाबनाया कि मनुष्य को हवा खींचने की आवश्यकता हरसमय रहती है और रक्षा की दृष्टि से दो छिद्र बनाये कि जो एकमें कोई उत्पात हो तो दूसरा अपने कामपर तय्याररहे और इसको अपनी परिपूर्णबुद्धिमानी से बांसुरी की तरह बनाया कि बेगों को सहे और उसको नरम पैदा किया कि खोलने और बन्द करने में हवा ले जैसा कि लुहारों की धौंकनी में देखाजाता है सो इनछिद्रों के दो प्रकार हैं एकउनमेंसे मुंह के खुलनेकीओर पूर्णहोता है और दूसरा ऊंचाहोकर उसहड्डी कीओर जाताहै जो मुखके खुलनेपर स्पर्शस्थान है सो एकछिद्र से सूंघते हैं और दूसरेसे श्वासलेते हैं और इनछिद्रों की हड्डियां जो टेढ़ी बनाईगई हैं यह कारण है कि उनदोनों छिद्रों में हरचीज़ की गन्ध पहुंचे और यह भी गुण है कि इनकी राहसे भेजेके मलदूरहों और जो इनछिद्रों को सीधा न किया किन्तु टेढ़ा बनाया तो यह कारण है कि जो यह सीधे होते तो हवासीधी शीघ्रहीभेजेमें पहुँच जाती तो भेजेमें उपद्रव करती इसीलिये टेढ़ाबनाया कि हवा बल खाती हुई ऊपर को जावे तो इसीमें इसकीथोड़ीठंढक कमहोजाती है फिर मध्यस्वभाव में प्राप्तहोकर ब्रह्मांडमें पहुंचती है और उनके दोनोंछिद्र कंठ के अन्ततक पूरेहुये हैं इस कारण कि श्वास लेने में सुगमताहो जोऐसा न होता तो कभीघड़ीभरभीमुंहबन्द न रहसक्ता और जो श्वास लेना वहीं से अवश्यहोता तो जिह्वा भोजन को न मालूमकरती और जिह्वाहिलभी न सक्ती और भोजन न चबसक्ता न निगला जासक्ता बहुत खींचकेआया जायाकरता (ओष्ठकावर्णन) मुहँ के सामने दो ओठ पैदा किये हैं कि उनसे दांतों का मांसछिपा

रहे और खानेवाले को खाने के समय सहायता करें किन्तु ग्रास लेने और चबाने और चूसने के हथियारहों और बातकरनाऔर जो कुछ मुखमें लेजानाहो इन्हीं के द्वारा होसक्ताहै और यह दोनोंहोंठ उसमांस से उत्पन्न हैं जो त्वचाकी प्रकृति से मिला है और दोनों कपोलोंके पट्ठे ऊपरकीओर से दोनोंहोंठसेमिलेहैं और ठोढ़ीकेपट्ठे नीचेकी तरफ़से मिलेहैं और जबड़ोंकेपट्ठे दोनों तरफ़ दाहने और बायेंहाथसे मिलेहैं और इसीलिये ईश्वरने दोनोंहोठों को मांससे उत्पन्नकिया कि उनकाहिलना और बन्दहोना मनुष्यको सुगमहो और इनका स्वभाव बहुतनरम और थोड़ा कठोर है इसीलिये कि जो पट्ठे इनके पास हों उनके आधीन रहें (मुख का वर्णन) मनुष्य भोजन करने की आवश्यकता रखता है इसलिये उस परमेश्वर ने भोजन के पैठने की जगहको मुखबनाया और ऐसी रीति रक्खीहै कि एकबेर खुले और एकबेर बन्दहोजाय नाक के छिद्रों के बिरुद्ध कि यहदोनों खुलेपैदाकियेहैं कि हमेशा खुलेरहकर हवा खींचाकरें और परमेश्वर ने मुखको सीधाबीच से खाली फेफड़े के पट्ठे कीतरह ऐसीसूरत से उत्पन्नकिया कि बहुत सीधा न हो बरन इसरीति से रूप प्रकटकिया है कि उसको भोजन के इकट्ठा होने का घर बनाया है जो वह भोजन आटा होजाने की आवश्यकता रखताहो तो दांत उसको चबाकर आटाबनावें और दोनों ओठोंको खुलने और बँधने की शक्ति दी और इसी दृष्टि से दोनों ओठों के द्वारा मुहँके बन्दहोने की ज़रूरतहुई कि मुखकी तरी जो शब्द के कारण बाहर से मुखमें जातीहै जैसा कि सम्पूर्ण जोड़ों में क्योंकि मुहँ की तरी ग्रास के निगलने और बात करने के समय जिह्वा के हिलने में सहायतादेती है और मुखकीतरी से यह भी गुण है कि-हवाको फेफड़ेके पट्ठे में पहुंचातीहै जो कि मनुष्य का जीवन श्वास पर है इसलिये ईश्वर ने दोमार्ग्गबनाये एक नाकका छिद्र दूसरा मुखकाछिद्र कि जो एकमें कोई उपद्रव होकर बन्दहोजावे दूसरा कामदे और मनुष्य का जीवन कठिन न हो और जिह्वा सुस्तऔर

नरममांस से मिलीहै और अपनीओर दोनों ऊपर नीचेके तालुओं को खींचती और इनदोनों से एकप्रकार की लार लेतीहै और उस लार को उसभोजन में जो उसे बाहर से मिलता है ख़र्च करती है कि उससे तरह२ का स्वाद जैसे खटाई मिठाई नमकीनआदिपहिचाने और इससे लाभ बातकरने के समय भी है और भोजन को मुखमें हिलाती है ईश्वर की बुद्धिने क्या अच्छीरीति रक्खी है कि जिह्वा हरओर घूमसक्ती है और इसके मूलको बड़ाबनाया कि साबितरहै और जिह्वाकी नोकको ऐसाबनाया कि वह हिलसके और हरओर जावे और मसूढ़ों से मैल आदि की सफ़ाई करे और दांत अतिउत्तम हड्डियों के सार से बनाये हैं जो सब हड्डियों के बिरुद्ध हैं और उस हड्डियों के सार को इस तरह समझना चाहिये जैसा कि लोहे के प्रकारों में तेज़ाब दियाहुआ लोहा आगे के दांत चौड़े और तेज़टुकड़े करनेवाले बनाये और दांतोंकेडंकमें नोकें निकालीं कि चीज़ोंको तोड़ें और पीसनेवाले दांतों का सिरा चौड़ा बनाया और सख़्तकिया कि भोजनको पीसें जो इनकासिरा बराबर और चिकनाहोता तो खाईहुई चीज़ कभी न पिस्ती और जो इनकेसिरे चौड़े न होते तो मुखमें डाली चीज़ न ठहरती और ऊपर के दांत गिन्ती में बहुतबनाये नीचेवालों से क्योंकि ऊपर के दांत लटके हैं और इससबबसे अपनी स्थिरताके लिये ऐसीबस्तुकी आवश्यकता रखतेहैं जो उनसे अधिकहो और नीचे के दांत अपने स्थानपर हैं तो इनका थोड़ासा होना बहुतहै अर्थात् गिनती में इसकारण कम हैं कि यह लटके नहीं (मसूढ़ोंकावर्णन) अर्थात् वह स्थान जिस पर दांतस्थितहैं और यहदोहैं एकऊपरदूसरानीचे जब ईश्वरनेचाहा कि मुख भोजनकरने,बातकहने,बायुकेलेनेमें हिलतारहै तो नीचले मसूढ़ोंका हिलनाभी अवश्यहुआ क्योंकि नीचेके मसूढ़ोंका हिलना ऊपरकेमसूढ़ोंसे बहुत लाभदायक और सुगम है और इस सुगमता का प्रमाण यहहै कि वहछोटेहोनेके कारण जल्दीहिलसक्ताहै और लाभदायक होने का यहप्रमाणहै कि ऊपरका मसूढ़ाशिर के पास

है और इन्द्रियोंके स्थानके पासहै तो जो ऊपरका मसूढ़ा हिलता तो ब्रह्माण्डऔरइन्द्रियांभी बराबरहिलतीं और इसकारणसे सदा कुछ न कुछउपद्रवहुआकरता जैसा कि बुद्धिमानोंके निकट प्रकटहै सोईश्वरने ऊपरकेमसूढ़ेकोस्थिरपैदाकिया और नीचेवालेको हिलने वालाऔर एकहड्डी सदाकेपास पैदाकी सदा वहस्थानहै जो भौंह कान के बीचमेंहै और उसमें छिद्रबनाये और उसको नीचेके मसूढ़े के हरछिद्रसे आधीनकिया कि खोलने और मूंदनेमें सुगमताहो॥

आठवांअध्याय—बालों का वर्णन॥

बुद्धिमानों का बचन है कि जो फोगभोजन से बाक़ी रहजाता है जब उसमें गरमी प्रभावकरतीहै उसको टुकड़े करके त्वचासे बाहर निकालतीहै तो कुछ उसमें से पतला है थोड़ासा हिलने जुलनेमें गलजाताहै और जो गाढ़ाहै वह बालों के छिद्रों के मार्गसे बाहर आताहै तो उसीसे बाल उगतेहैं सो उनमेंसे बहुधा बाल सौंदर्य अलंकार और रक्षाकेलिये पैदाहोतेहैं जैसे कि शिरकेबाल कि शिर की सरदी और गरमी के दूरहोने के वस्त्रआदि के बदले और सुंद-रता और अलंकार के लिये हैं और रक्षा के लिये भौंहके बाल हैं कि आंखमें गिरनेवाली चीज़की रोककरें और आंखतक न पहुंचने दें मानों नेत्र के वास्ते एक क़िला हैं और सुन्दरता के वर्णन की कुछ आवश्यकतानहीं आपही प्रकटहै और भवोंके बाल कि आंखों को घेरेहुये हैं जालीकीतरह पर हैं कि मनुष्य गर्द और गुबार के वक़्त उनके द्वारा बराबर दृष्टि दौड़ासक्ता है और उनके द्वारा कोई हानि या दुःख आंखों को नहीं पहुंचसक्ता मानों भवें मट्टीघट्टे की राह बन्दकियेहुये हैं बाज़ेबाल ऐसे हैं कि मुखकी सुन्दरताकेलिये उत्पन्नहुयेहैं जैसे दाढ़ी और मूछ सो यह दोनों मनुष्य के सौंदर्य और रूपके कारणहैं यहांतक कि जो दाढ़ी और मूछ पैदा न होती तो पुरुष के मुखमें सुन्दरता भी न होती और बाज़े बाल ऐसे हैं जिनसे कोई सुन्दरता नहीं और गरमस्थानों में निकलते हैं जैसे बग़ल और स्त्री पुरुष का लिंगस्थल यहबाल उस घास के सदृश

हैं जो ओसपड़ेहुये स्थानोंपर उगतीहैं और यहप्रकार फोगकेबदले है अन्य सम्पूर्ण जीवधारियों के विरुद्ध कि उनके सम्पूर्ण शरीर के केश सुन्दरता और वस्त्रके स्थानपरहैं ॥

दूसरा प्रकार--वाचकता की उत्पत्ति का वर्णन ॥

ईश्वरकीबुद्धिने शिरको इन्द्रियोंकास्थानबनाया और जोकि कई इन्द्रियां देखने और सुनने की आवश्यकता रखती हैं कि ऊंचेस्थान परहों इसलिये शिरको सम्पूर्ण शरीर से ऊंचा बनाया और ऊंचा स्थानगरदनहै और उसको जोड़ोंकेद्वारा हिलनेफिरनेवालाबनाया कि छओं तरफ़ घूमसके और एक गोल जोड़ को भी बनाया कि सब इन्द्रियोंको लाभ पहुंचावे और एक तरफ़ रहता है परन्तु सर्व ओर मालूमहोताहै औरफेफड़ेके नरखरेको उससेमिलाया और गरदन की सात हड्डियांहैं जो हड्डियां गरदनको उठाती हैं तो यह उचित हुआ कि वह छोटीहों और जो कि नीचेकी हड्डियों के निकलने की जगह हराम मगज़ है इसलिये ईश्वरने इस नीचे की हड्डीको उन ऊपरकी हड्डियोंके पीछे पैदाकिया और उसहड्डीकेनीचेसे आधेछिद्र हैं और यह छिद्र कुछ मध्यमें नहीं हैं किन्तु चारोंतरफ़ हैं इसदृष्टि से कि हराम मगज़ और झिल्ली और हड्डीकोघेरेहैं और भोजनकी इच्छारखते हैं इसलिये हरहड्डीमें एकजोड़को उसछिद्रसेप्रवेशकिया और छिद्रके उत्पत्ति का स्थान पट्ठे और फुदकने वाली और स्थिर रगेंहैं कि हरछिद्रमें प्रवेशकरजांय जोछिद्रपट्ठों और रगोंमें हैं और ईश्वर ने उन छिद्रों की संख्या उतनीही रक्खी जितनी छेदवाले हड्डियोंकी संख्या हैं कि थोड़े होनेपर वह रगें अपने काममें कोता-ही न करें क्योंकि उसकी कोताही विघ्नकारक होगी और अधिक भी नहों क्योंकि अधिकता व्यर्थ है और ईश्वरने अपनी पूर्ण बुद्धि-मानीसे गर्दन को खाली जगह में नलको भोजन और शराब के जानेकेलिये और फेफड़े के नलको फेफड़े में वायुके प्रवेश के वास्ते और एक परदा कंठका बनाया कि वह फेफड़े को भोजन और श-राबके जानेके समयछिपावे कि श्वासआने जानेके स्थान में न पड़-

जावे और फिर श्वास लेनेके समय स्थिर होजावे और उस परदे को चबनी हड्डीकी तरह पर बनाया कि अपने पर स्थिर हो और सीधी खड़ीरहे और जब भोजन नलसे उतरने लगे उससमय वह गिरपड़े और इस परदेका गुण यह है कि हवाकी सरदी को काट डाले कि जब उसतक पहुंचे और उसको गरम करे और उसपरदे को सीधा मनके लियेभी बनाया और एक गुण यहहै कि इसपरदे में एक गर्दसी रहती है जो भेजेसे नज़लेको उतरने नहीं देती और फेफड़ेपर उस नज़लेको गिरने नहीं देती नहींतो उसके उतरनेसे खांसी और सिलका रोग होजाया करता और इस परदेकी शकल नेज़े की तरह लम्बीहै औरनल जिसमें से होकर शब्द निकलता है उसमें तीन चबनी हड्डियां हैं और नाना प्रकार से हैं हर एक इन तीनों हड्डियोंमें से अपने रूप और अनुमानके अनुसार हैं ॥

तीसरा प्रकार छाती है जो कि छाती मनकी रक्षा करतीहै इस लिये ईश्वरने उसको कठोर बनाया और ग्यारह हड्डियों से बनावटकी जो दन्दानेदार और परकी तरह पर हैं और उसकी पसलियां उसके पास हैं जो श्वास लेने के जोड़ों को घेरे हैं और मन मनुष्यकी परिपूर्णतासे रक्षा करनेवाला है और उसके ऊपर सात हड्डियां दन्दाने और बड़े परोंकी तरह उत्पन्न की और वह सातों चौड़ी हैं कि मनकी रक्षाकरें अर्थात् मनको घेरलें और नरम और चिकनी हैं कि जो हवा उनतक पहुंचती है श्वासके जोड़ों के खुलने और बन्द होनेमें अच्छी तरह पहुंचजाय और मुख्य सीने को इस बातकी आवश्यकताहुई कि उसका अन्दर का हिस्सा खाली नहीं और चिपटभी नजाय कि उसमें फेफड़ा और दिल स्थिर रहे और उसमें सिकुड़ना खुलना होसकें क्योंकि यह सिकुड़ना और खुलना मरने तक अलग नहीं होता और यह छोटी हड्डियां हड्डियों से उत्पन्न कीगई हैं कि दिलकी ढाल बाहरके उपद्रवों के लिये हों और वहप्राण और मुख्यउष्णताके गलनेको रोकती हैं (स्तनोंकावर्णन) स्तन बहुतसी फुदकनेवाली और स्थिर नसोंसे मिले हैं और इसमें

बहुत प्रकारकी रगें हैं जो बहुत पतली हैं और उन पर बहुत रेशे लिपटेहुये हैं और स्तनों में सपेद मांस भरा है जैसा कि गदूद और इस सपेद मांसका यह स्वभाव है कि स्तनोंकी रगोंमें लहू पहुंचकर दूध बनजाता है और ईश्वरने गर्भाशय और स्तनों के मध्य परस्पर मिलीहुई नसें पैदाकीं कि उन्हीं नसोंसे ऊपर को वह लहू चढ़ता है जिसको बच्चा गर्भाशय में खाता है क्योंकि बच्चे को यह शक्ति नहीं कि गाढ़ा भोजन खासके और दूध हर भोजन से पतला है और स्त्री का गर्भाशय लहूके होनेके कारण मानों एक हौज़के सदृश है सो ईश्वर की ऐसी बुद्धि हुई जब बच्चा बजाता है तो वह रुधिर ऊपरको चढ़ता है और थोड़ा २ होकर दूध का स्वभाव पाता है सो इस रीतिपर स्तनों में दूधका भोजन बच्चेके वास्ते तय्यार होरहता है जैसा कि मेहमान (अतिथि) के आने के पहले घरवाला खानेकी तय्यारी करता है सो यह वही रुधिर है जो स्त्री के ऋतुके समय बाहर निकलता था और ईश्वरकी अद्भुत बुद्धिमानी यह है कि जिसफोगको प्रकृति बाहर दूरकरती थी उसीको ईश्वर ने बच्चे का भोजन माता के उदर में ठहराया फिर उसी रुधिर को स्तनोंमें दूध बनादिया (चौथाप्रकार)हाथमें जोकि ईश्वर की बुद्धि ने चाहा कि कर्मेन्द्रियों से बाह्य वस्तु मालूमकीजावें सोकोईउनमें से उपयोगी और कोई हानि देने वाली फिर उचित हुआ कि उन कर्मेंद्रियों में कोई ऐसा हथियार नियत किया जाय जिसके द्वारा मनुष्य लाभको ग्रहण और हानिको त्यागकरे इसलिये परमेश्वरने हाथ तीन बड़े भागोंसे उत्पन्नकिया प्रथम–बाज़ू–द्वितीय कोहनी तृतीय हथेली पहले बाज़ूको एक सख़्त हड्डी से बनाया जो कंधे के निकट है और उसका एकजोड़ है कि वह हर ओर हिल सके और वह ऐसा है कि ईश्वरने बाज़ूकी हड्डीके सिरेको गोल बनाया और कंधेके सिरेपर मिलाया और यह बराबर इस कारण है कि इसका कामभी बराबर रहै फिर इसको रग और पट्ठोंसे मज़बूतकिया और एक हड्डीको दूसरी हड्डीके साथ मज़बूती से मिलाया क्योंकि हाथ

से नानाप्रकारके कार्य होते हैं और ईश्वरने दोनों कन्धोंको अलग२ बनाया इस तरह पर कि एक दूसरे से न चिपके और दोनों हाथ दहने और बायेंकी तरफ़ खुलेहों और यहदोनों हाथ आपुसमें आगे और पीछे से मिलजाते हैं इसलिये सर्व ओर सुगमता पूर्वक हाथों का पहुंचना सम्भवित है और ईश्वरने कोहनीसे नीचे कलाई तक दो हड्डियां उपजाईं जोलम्बाईमें मिली हैं और दो हड्डियांऊपर की तरफ़ जो अंगूठेसे मिली हैं उनका नाम ओक़ है और ज़ब्दआला भी कहते हैं और जो उंगलियां नीचेकी अनामिका से मिली हैं उनको अगलज़ कहतेहैं और बद असफलभीनामहै और ज़ब्दआला का यह गुणहै कि उसके सबब से कुलबाज़ू हिलता है अर्थात् सीधा टेढ़ाहो और ज़ब्द असफलकी सहायतासे पौंचा खुलता और बन्द होता है इनका बीच बाज़ूसे इनके काम करनेके लिये महीन है और दोनों तरफ़ इनके मोटे बनाये क्योंकि बहुधा नसोंकी इनको आवश्यकता है बहुत ज़रूरत तो यह है कि जोड़ों के हिलने के बेग के समय उन दोनोंओर को झुकते हैं ज़ब्दआला पेचदार है और गुण उसका यहहै गिरह गिरह से टेढ़ी होजावै और ज़ब्द असफल सीधा है कि खुलने और मूंदने की बहुत दुरुस्ती रक्खे ईश्वरने हथेलीको उन चार हड्डियोंसे बनाया जो एक दूसरी से दूर है क्योंकि उसमें चार उंगलियां मिली हैं और उसकी हड्डियां कठोर और बहुत प्रबल बनाईं क्योंकि कन्धों और पट्ठोंकी बनावट इसी से है सो यह सीधी रेखाकी रीतिपर है मानों सब हाथका काम इसी पर है और ईश्वरने उंगलियोंको बनाया कि उंगलियां एक ओर और अंगूठा दूसरीओर कि परस्पर पट्ठोंकोमिलादे औरअंगूठेको प्रबल औरमोटा बनाया और बलमें एकसा और सब उंगलियों को उनके बल और सुन्दरताके अनुसार कोई छोटी कोई लम्बी कोई मोटी कोई पतली कि जब मुट्ठी बांधोतो हरएक उङ्गलीका सिरा बराबर आजाय इसलिये कि मुट्ठी बँधसके इस दशा पर कि बीच से खाली और बाहर से बन्द रहे इसीलिये उंगलियों की जड़ मोटीबनाई और वह मुट्ठी

सन्दूक़ की तौर पर होजाती है और अंगूठा सन्दूक़ के तालेकी तरह प्रकटरहता है ईश्वरने उंगलियोंको थोड़ीहड्डियोंसे बनाया जिनका नाम सलामियात हैं और यहहड्डियां अंदरसे खालीहैं और किसी प्रकारका मांस नहीं है इसलिये कि काम करने के समय आपुस में जमाहोकर एक दूसरेकी सहायकहों और उनके काम भी धीरेनहों और एक हड्डीसे भी उनको नहीं बनाया कि मुट्ठी बंदकरने के समय दुःखहो और हर उंगलीमें तीन हड्डियोंसे अधिक उत्पन्न नहींकिया क्योंकि बहुत जोड़ होते तौभी मुट्ठी न बँधसक्ती जो दो हड्डियां हर उंगलीमेंहोतीं चाहोवह बहुतदृढ़होतीं परंतुउनसेकाम अच्छे न होते और ईश्वरने हथेली को चौड़ी २ हड्डियों से उत्पन्न किया और उँगलियां महीन रक्खीं कि उठानेवाले से उठाई हुई चीज़ के साथ अच्छीरहे और इनहड्डियों को गोल इस कारण बनाया कि कोई उपद्रव इनपरनहो और खाली और सख़्तइसलियेबनाया कि काम पर मज़बूत रहें और ईश्वरने हथेलीको गहरा और उसकीपीठको चपटा बनाया कि जिसवस्तुके पकड़ने की इच्छा करे तुरन्त पकड़ सके और हथेली के अन्दर मांस उत्पन्न किया गया है कि किसी चीज़ के पकड़ने के समय ख़ूब मिलजाय (कंधेकावर्णन) ईश्वरने इसके शिरको दो लाभों से उत्पन्न किया एक यह कि उस से बाज़ू लटकारहे जो छातीसे चिपकाहोता तो उसके चारोंओर खुलेनहोते और इस तरह से हिलझुल न सक्ते और दूसरागुण यह है किजो जोड़ छाती को घेरेहैं उनको यह घेरे और कन्धेमें भी छोटीहड्डियां हैं मानों यह बाज़ू हृदय के लिये पंखोंकी तरह पर हैं और बहुतसे लाभ इसमें हैं जैसे चोटों को दूरकरना आदि और कन्धे की हड्डी बाहर की ओर से महीन होतीहै और भीतर की ओर मोटी और कंधे का मिलाप तरक़वा से है तरक़वा एक हड्डी का नामहै और उसका गुण यह है कि बाज़ूको ऊपर नीचे की तरफ़ निकलने से रोके और उसकी पीठपर एक बढ़ीहुई हड्डी तिकोनी है और बाहर को झुकीहै और कोना उसका अन्दर की ओर झुका है और यह

कोना हड्डीका जो कन्धे में है पिंजरेकी तरह पर है और यह उस कंधेकी बढ़ीहुईहड्डीके सिवायहै और यह चोड़ीहै और इसमें चबनी हड्डियां भी चौड़ी मिलीहैं इसीकारण यह नरम भी है—(नाख़ून का वर्णन) ईश्वरने मनुष्यके नख इसतरह बनायेहैं जैसे उड़नेवाले पक्षियों के चंगुल और चौपायों के सुम होते हैं और उनसे उँगलियों की मजबूती भी है क्योंकि जो नख न होते तो किसी वस्तु के पकड़ने के समय दुःख उठातीं और छोटे २ और रेजे २ चीज़ों का उठाना भी बहुत कठिन होताहै इसलिये यह नख अपने तौर पर एक हथियार खुजाने घायल करने बाल उखेड़ने और २ ऐसे कामों के लियेहैं और ईश्वरने इन्हें सख्त नरमी मिले हुये बनाया सख्तीसे यहलाभ है कि कठोर उपद्रवों से बचारहे और नरमी में यहगुणहै कि टूटनजाय और जोइनकों उँगलियोंकी पीठपर फैला हुआबनाया और मांसको चारोंतरफ़जगहदी तो इससेप्रयोजनयह है कि जल्दी किसीकष्टमें न फँसे और ईश्वरने इसकोसदा उगने की शक्ति दीहै कि काम काजके मुवाफ़िक घिसाकरे (उदर का वर्णन) अर्थात् पेट एक झिल्लीहै गोल हृदयसे अंडकोष पर्यंत कि यहअंदर के खंडों को छिपावे मानों यह एक गढ़ाहै ईश्वरने इसको उत्पत्तिमें दोबिचारकिये एक यहकिउसके साम्हने इन्द्रियां हैं सोउनकीपुष्टि और ब्रह्माण्ड के बिरुद्ध रक्षाकरता है और दूसरायह है कि जब पेटभोजन आदिसे भराहो फैलने के सबब तनजाता है और जब खालीहो मुख्यरूपपर आजाता है और यह आंतों और पक्काशयकी भी रक्षाकरता है ईश्वरनेपेटकोनरमओरनाजुक औरतंगपैदाकिया परन्तु तौभी उसको कुछकठोरता से बलवान् बनाया है इसीवास्ते कि खुला न हो और आंतोंकोभीनरम और तंग नहींबनाया किन्तु सुगमता से बराबरकिया है सो भोजनके पहुंचने के समय पचाने वाली शक्तिकी सहायता करता है (पृष्टि) ईश्वरने पीठको कई ऐसी हड्डियों से जो दन्दानेदार हैं दृढ़ बनाया कि बड़े २ खंडों की रक्षा करे और उनकी ढालरहे जैसे श्वासलेने मन और भोजन के खंड

और पीठकी हड्डियों को मज़बूत बनाया इसका दृष्टान्त इसतरह परहै कि जबकिश्ती को बनाना चाहते हैं तो पहले एकलकड़ीका तख़्ता बांधते हैं फिर छोटे२तख़्तेउसमेंजमाते हैं इसीप्रकार इस२ रीतिसेपसलियों और शिर और दोनोंहाथ और दोनोंपैर हड्डियां जमी हैं और उसी पीठकी नीचली हड्डी से शरीर अपने खड़ेरहने और स्थिरतापर बलवान्होता है और इसमें मोहरेदार हड्डियां हैं कि अच्छीतरह सीधी और टेढ़ी होसकें कदाचित् एकहीअस्थिखण्डहोता तो झुकना कठिनहोता जो कि पीठ मुख्यशरीर को स्थिरता के कारण है तो ईश्वरकी बुद्धि ने बिचारा कि इसकीरक्षा कीजावै इसलियेहरहड्डीबाहर से कांटेदार और दोनों ओर पैरकी तरह दहने और बायें हाथ से कृपाकी और उनकांटों को चबनी हड्डियों के जौहर से छिपाया और इनपर रबात और पट्ठे चौड़े२ भीमढ़ेहुये हैं और इनकांटोंको सनासनभी कहते हैं क्योंकियहउन उपद्रवों की ढालहै जो बाहर से पीठकी हड्डियोंपर चोटपड़ती है और पीठउस दुःखसे छुट्टीपाती है और उनचबनी हड्डियों के छिपाने से यहप्रयोजन है कि कइयोंको कइयों से मिलावे इसतरह परकि मानो एकटुकड़ा है और उसपर दोपरदेहोने से यहलाभ है कि नीचेकी हड्डियों को चारों ओर से दृढ़तापूर्वक जमाकिये रहे और जो पीठकी हड्डियां बहुतपैदाहुई हैं उससे यहप्रयोजन है कि जो किसी हड्डीपर कोई दुःखपहुंचे तो और हड्डियां पीठकी रक्षा करें और जोकि मनुष्य को आगेझुकने की आवश्यकता अधिक है तो इसीकारण परमेश्वर ने पट्ठों और झिल्लियों को बाहरकी ओर से मढ़ा और बगलोंकी ओर खालीरक्खा कि हिलने झुकने में सुगमता और रक्षारहे सो पीठएकगोल खण्डहै कि वह सब दुःखों को उठावे और ऊपरवाले हड्डियों के मोहरे नीचे की ओर झुके हैं और नीचे वाले ऊपरको गयेहैं और यह सब मोहरे आशरे (दश हड्डियोंका जोड़) के बीचमें इकट्ठे हुयेहैं और वास्ता (पीठलंबीहड्डी) सब मोहरोंके बीचमेंहै और जोकि पीठको टेढ़ाहोनेकी आवश्यकता

है तो जिस ओर वास्त झुकताहै उसी ओर सबमोहरे झुकतेहैं जैसे कमठेके पकड़ की जगहहैं और ईश्वर ने पीठकी हड्डी को ठोसन उत्पन्नकिया किन्तु उसमें दन्दानेकी हड्डियां बनाईं कि जिस तरफ़ चाहे कामकाज करनेके लिये पीठ भी झुके और किसी प्रकार की हानि किसी अंगपर न पहुंचे (पहलूकाबर्णन) यह पहलू पसलियों से मिलाहै और उन पसलियों के अंदर मांस कठोर और पतला उनकीरक्षाके लियेहै और उनकोश्वास और भोजनकेआशयोंसेघेरे है और इसीकारण एक हड्डीसे नहीं उत्पन्न किया कि संगीन नहो और इसलिये भी कि जब आशय भोजनसे भरजावें खुलें और हर एक पसलीकी हड्डी झुकी हुई कमानकी तरहपरहै और उनके पास चबनी हड्डियांहैं कि टूटनेसे बचें ॥

(आठवांप्रकार–पांवकाबर्णन) जोकि पांवसे चलना फिरना बैठना उठना सोना झुकना चिपकनाआदि प्रयोजन है इसलिये परमेश्वर ने चरणको इस रूपका उत्पन्न किया कि इनसबके अनुकूल होसके और पांवमें हाथोंकी तरह उंगलियां निर्माण कीं और हथेली भी कि चरणों के काम भी कुछ २ हाथों के सदृश हों और परमेश्वर ने हड्डियों को हड्डियों और रगोंपर स्थिर किया और पिण्डली की हड्डियोंकी बनावट रान परहै कि पांव मज़बूत रहे हर दशामें चाहे चले या खड़ाहो या बैठे या तकियाकरे हिले ठहरे और बहुत से गुण पांवकेहैं और पांवमें कलाई और तली पैदाकी और यह पांव इस कारण लम्बाहै कि ठहरने और मज़बूत होनेका गुण प्रकटहो कि जब ठहरे तो ठहरनेका हथियार जमरहे और ईश्वरने पांवकी उंगलियों को हाथ के बिरुद्ध दूसरे रूपपर उत्पन्न किया कि सब उंगलियां एक सतर में हैं क्योंकि उन सब उंगलियों में जो नाना प्रकारके स्थानों और बस्तुओंपर पड़तीहैं जैसे कुबकी हुई जगह या टेढ़ी आदि और गहराव या पांव की तली पृथ्वी पर रखना और ऊंचे सीढ़ीपर चढ़ना और एड़ी को तिकोनी सख़्त चिपकी हुई हड्डीसे रचा तो उसकी सख़्तीइस कारणहै कि वह शरीरकोसहारेहै

परन्तु उसमें खींचने की शक्ति और उसका पांवके पीछे होना इस कारण है कि शरीर पीछे न गिर पड़े और ईश्वर ने एड़ीको बहुत कठोर चर्मसे छिपाया जो सब जगह के चमड़ोंसे सख़्त होताहै कि सख़्ती सहारले क्योंकि इसपर बड़ी रगड़रहतीहै और एड़ीकेआगे एक हड्डी किश्तीकी सूरतपर है कि पांवके कुब्रमें ठहराव हो और पृथ्वीसे चारों ओर मिले क्योंकि तलीका पेटा पृथ्वीसे मिला नहीं है और टखनेको पिंडली और एड़ीके मध्यमें रचा कि पांवके खुलने और बन्दरहने में सहायता दे (अन्दरकेजोड़ोंकावर्णन) ब्रह्माण्ड अर्थात् भेजा यह सख़्ती नरमी और चरबीमें मध्यहै और दोझि-ल्लियोंके बीचमें है और यह मानो मनुष्यके प्राणका सरोवरहै प्राण ब्रह्माण्डसे दरियाके पानीकीतरह निकलता और पट्ठोंमें जारीहोता है यहां तक कि शरीर को घेरलेता है और जो कि भेजे का जौहर बहुत नरम यहां तक कि बहनेपर झुकताहै इसलिये ईश्वरने बुद्धि की कि झिल्लीके परदेमें रहै सो इस परदेको बहुततंगीसे बनाया कि भेजा उसमेंसमाजावे और वह भेजेको बन्दकरले और उसकीरक्षा क़िलेकी तरहपर करै फिर खोपड़ी और भेजेसे एक मोटी झिल्ली जो खोपड़ीसे मिलीहुईहै रची और वह झिल्ली भेजेकेलिये अस्तर की तरहपर है कि जब ब्रह्माण्ड फैलनेकेवक़्तखुले और इसखोपड़ी से भेजेका बीच जामिले उससमय झिल्लीसे चोटखाय और वहचोट खोपड़ी तक न पहुंचे इसलिये वह झिल्ली ब्रह्माण्डकी सर्व वस्तुओं की रक्षकहै और जो ब्रह्माण्डमें नरमी और चुस्तीका काम बहुतहै इसलिये परमेश्वरने ब्रह्माण्डके वास्ते हड्डियोंसेसख़्तकिला निर्माण कियाजिसकानामखोपड़ीहै और उसगढ़ीकोभेजेसेदृढ़किया कि दूर हीसे उद्नलोंको ब्रह्माण्डसे हटावे और अपनी कठोरतासे भेजेको हानि न पहुंचावे क्योंकि खोपड़ी एकसख़्तहड्डीहै और भेजाहलका है जो वह झिल्ली मोटी भेजेओर खोपड़ीमें न होती तोदोनों मिल जाते और खोपड़ी की अवश्य भेजे को चोट पहुंचती और सदैव काल भेजेको एक न एक दुःख पहुंचा करता जो उस विश्वम्भरने

कई रुबात ऐसे प्रकट किये जो भेजेके पेटसे खोपड़ी के ऊपर तक प्रवेशित हैं कि वह उन खण्डों को उठावें जो भेजे के पेटोंकोउठाते हैं और उन खण्डों को न गिरनेदें जो नरमीके कारण उसके नीचे हैं इसलिये इस रीति से भेजा सर्व्वदा हर उपद्रव से रक्षितरहा भेजेकी लम्बाईमें तीन पेटहैं और यह तीनों अपनी२हद्दमें चौड़ान रखते हैं और वह भेजे के पेट का चौड़ान दो खण्ड रखता है तो इनखण्डों मेंसे पहला खण्ड दो बड़ेखण्डों से छोटाहै और यहखण्ड नाक से हवा यानी बाफके खींचने और छींकलेने में सहायता क-रताहै और दूसरा पेटभी बड़ाहै कि यह बड़ेजोड़ोंको खालीस्थानों को भरताहै और हराममग़ज़ की यहीं से उत्पत्ति है और इसी से प्राणउगते और स्मरण शक्तिका भी यही स्थानहै तीसरा पेट एक छिद्रकी तरहपरहै जो पहले पेटसे लगाहुआहै और लम्बाहै इससे विचारकी शक्तिको बहुत सहायता मिलतीहै (फेफड़ेका वर्णन)इसे फ़ारसी में शश कहतेहैं यह पहलूसे हृदय पर्यन्तहै और नरमखाली मानो एक फेनसा जमगयाहै और इसकारण ईश्वर ने इस जोड़को इसगुणसे रचा कि दिलको आरामदे क्योंकि दिलको बहुत खुलने मूंदनेको आवश्यकता रहतीहै और इसको सुस्तमांस बनाया कि यह सुस्ती ऊपर लिखीहुई बातोंको सहायता देतीहै इसका यह कामहै कि जो वायु मुखमें जावे उसको खींचे और दिलतक पहुं-चाये और फिर गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनी ओर शोषे और गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनीओर शोषे और बाहर को दूरकरे और फेफड़ा आवाज़ कभी हथियारहै और एक नल खुला जोबनी हड्डियों से बनाहै उत्पन्नहै इससे सर्वदा श्वास आते जातेहैं कि एकदशामें खुलता और दूसरी दशामें तंगहोताहै और इसके तीनकोने चबनी हड्डियों से बनाये और बाक़ी झिल्ली लगाई कि शब्द में सहायता करे और उसमें बाहर की ओर एक हड्डी है कि बाहर के उपद्रवोंको सहे (दिलकावर्णन) यह जोड़ सनोवर वृक्षकी तरह परहै जो सारपदार्थोंकी रक्षाकरताहै और इसके पेट

में लहू और जीवहै इसका मांस बलवान् है कि किसी में न मिले और दिलकेऊपर के भाग मोटेहैं क्योंकि फुदकनेवाली नाड़ियों के उत्पत्तिके स्थानहैं औरदिलकानीचेकाहिस्सागोलहैतुरंजके शिरकी तरह किवह हृदयकी अस्थियोंको अपने तरफ़ोंसे दूरकरे और उस पर एक हलकासा गिलाफहै जो उसकी रक्षाकरताहै उसकानाम शियाफहै और यही प्राणोंका सोताहै इसीलिये यह खण्ड शरीर के बीचमें शोभायमान हुआहै और इसकाघर गढ़ीकी तरह जो दो आशयोंके बीच कि आसपास हैं वर्त्तमानहै इसकी रक्षाका स्थान फेफड़े के ऊपरहै और वह छाती पहलू और पीठकी हड्डियों से बनाया गयाहै और उसकेबीच एक खुलीहुई जगहहै जिससे दिल फेफड़े आदिको बहुत लाभहै कि दिल और फेफड़े के खुलने मुंदने में सुगमता होतीहै और उस क़िलेसे दिल और फेफड़ेकी रक्षा भी होतीहै क्योंकि यहगढ़ी सबको गर्मी और सर्दीके उपद्रवोंसे बचा- तीहै और मुख्य उष्णता भी इसीके कारण रक्षित और बाक़ी रहती है और जोकि लहू दिलकेबल और आनन्दका कारण है इसलिये ईश्वरने उसको पतला और गरम बनाया कि मन और मुख्य उ- ष्णताको उपयोगी हो और दिलमें एक खाली जगहहै कि कलेजे से लहू आताहै और उसमें ठहरजाताहै कि वह उस रुधिरको रस बनादेऔरकलेजेके साम्हनेरहे कि उससेलहू उनरंगोंमें जो उसकी ओर मुखकियेहैं सुगमता से पहुंचे जोकि शरीर आवश्यकता रख- ताहै कि उसकेपास दिलसे जीव और मुख्यउष्णता पहुंचे इसलिये दिलमें बाईंओर एकपेट पैदाकिया कि उससे सर्वदा प्राणउठते हैं और यहपेटदाहनेसेंबहुत ठंढा और बड़ाहै और इससेप्राणोंकोबहुत लाभ पहुंचताहै और दोनोंपेटकेबीचमें एकआशयहै वहां लहूदाहने से बाईं ओर जारी रहताहै और प्राण बायें से दाहने जाते हैं और फुदकनेवाली नाड़ियोंको बायेंतरफ़ पैदाकिया कि प्राण को सम्पूर्ण शरीर पर जारीकरे और हर एक मुन्फ़ज़ (जारीरहनेकेआशय) से लाभ यहहै कि दो बातें उससे हों एक तो यहहै कि चाहे जितने

हथियार कम हों उनको सहायता करे और दूसरे यह कि प्राण और लहू इसीसे इकट्ठे हों और दोनोंके मिलाप से प्रबल हों और प्राण श्वास होजाते हैं और लहू प्राणमें बढ़जाताहै और हर एक इनमेंसे दूसरेमें इनकी गरमी और प्राण के मिलने के वास्ते बाक़ी रहताहै और जोकि दिल मालूम करनेकी इच्छा रखताहै इसलिये परमेश्वरने एक महीन टुकड़ा पैदाकिया जो दिलकी झिल्लीके पास है और यह टुकड़ा भेजेसे उगाहै और इसमें दोगुणहैं एक यह कि इन्द्रियों के कामोंको मालूम करताहै और पठेको उसके तरफ़ पैदा किया कि दिलसे सबबातें प्रकटकरें सो दूर करने वालेशक्ति उसके दूरकरनेके लिये जोशमें आती है और दूसरागुणयहहै कि दिलतो प्राणोंको भोजन देनेवालाहै और यहवहशक्तिहै जो श्वासके कार्य के साथ चलती है जैसे क्रोध भय प्रसन्नता आदि और यह काम शरीरके बाहरसे होतेहैं ईश्वरने जो दिलको बीचमें बाईं तरफ़झुका हुआ पैदाकिया यह कारणहै कि कलेजे का घर खुलाहो और एक तरफ़में दो गरमचीज़े जमा न हों बरन मध्य स्वभाव पर रहें और इसीवास्ते कलेजेको दाहिनीतरफ़ औरदिलबाईंतरफ़ अलंकृतकिया और यद्यपि और तिल्लीमें बहुतसी दरारे हैं परन्तु वह अपने आप गरम नहीं है (कलेजेकावर्णन) यह जोड़े दिलसे नरम जोड़ मांस से बनाहै और तरीबहुत रखताहै और प्राणोंके ठहरनेकी जगह है और भोजनदेनेवाले लहूको जो रगोंकीराह सम्पूर्ण जोड़ोंमें जारी रहताहै घेरेहैऔर यह ऊपरकी पसलियोंके दाहनी नीचेकी ओरहै और इसकारूप गहराईकी ओरझुकाहै और एककोनाउसकापक्का-शयसे मिलाहै और उसपर परदाहै और वह उनरुबातोंसे घिराहै जोउसके ऊपरकीझिल्लीके पासहैं और उसकीतहसे एकचीज़उगती है जिसकी सूरत रगकी तरह परहै परन्तु वह बस्तु लहूको घेरेहुये नहींहै और कई तरह पर बटतीहै और फिर उसका हरप्रकार बट-ताहै तो उसके कईभाग पक्वाशय की गहराई और कईबार उंगल की आंतों और सायम नामी आंतों और फिर सब आंतोंमें पहुंचते

हैं यहां तक कि सीधी आंतों तक पहुंचते हैं और इन शक्तियों में भोजन कलेजेमें आता इसतरह पर कि कई शक्तियां सुखातीं परंतु तंगीसे खुलेकी तरफ़ निकल जातीहैं यहां तक कि नसोंमें इकट्ठी होतीं और यह नसें कलेजे में बहुत महीन हिस्सों में बटी हैं जब भोजन उनमें पहुंच जाताहै तो उनमें रुधिर हो जाताहै सो और नसोंके द्वारा सम्पूर्ण शरीरमें फैलजाताहै और ईश्वरने कलेजे का घड़ बँधे लहूकी तरह पैदाकिया कि जब भोजन अधपका हो लहू बँध जावे (पित्तेकावर्णन) इसका आशय कलेजेकी गहराईके ऊपर की ओरहै और इसमें दोछिद्रहैं एक बड़ी आंतों और मेदके मलके पास है सो पित्ताकलेजे की गहराई से पित्त को अपने छिद्र से खींचता और दूसरे छिद्र से आंतोंपर गिराताहै इसकाआकर्षण बुरे दोषों से रुधिर के शुद्धकरने के लियेहै और आंतोंपरगिराना मुख्य फोगों की सफ़ाई के वास्ते है और आवश्यकता के अनुकूल रक्षा भी करता है और जोकि पक्वाशय और आंतेंउस फोगसे जो उनमें बाक़ी रहजाता सफ़ाई की आवश्यकता रखती हैं और तंगीके सबब निकल नहींसक्ता इसलिये उसमें आवश्यकता पर पित्तगिरताहै तो उसको कफ़के दोपसे जो उसमें सदारहजाता है खालीकरता और धोताहै और जब मेदा भोजनसे खालीहोताहै और बहुत भूखहोतीहै उससमय पक्वाशयमें गिरताहै और भोजन का कामदेताहै कि मेदेकीउष्णताकी अधिकहानि न होजावे और मेदेकेबहुत भरने के समय नहीं गिरता क्योंकि उससमय गिरे तो भोजन में मिलकर उसको उपद्रव कारक करदे और परमेश्वर ने उसके दूसरीओर आंतोंमें एकछिद्र पैदाकिया कि उसमेंगिरे और उसको फोगोंसे खालीकरे और उसको चिपकनेवाली चीज़ों और मैलआदिसे शुद्धकरे (तिल्ली) यह लम्बा मांस है और सौदावीलहू को उठाये है और बाईंओर है और उसपर एक झिल्ली लिपटी है और उससे दोपरदे निकले हैं एकपरदा तो कलेजे के पासहै और दूसरा मेदेकेमुखपर और यहपरदा उसके दोनोंछिद्रोंमेंसे सौदावी

दोषको कलेजे के द्वारा सुखाती है कि कलेजा कालेरक्त को न खींचे किन्तु शुद्धरुधिर खींचे जो जलेहुयेदोषोंसे साफ़हो और दूसरेछिद्र से पक्काशय के मुखपर क्षुधाकी इच्छा के पैदाकरने के लिये आकर्षणको और जबतक कि भोजन न पहुंचे जलेहुये दोषको दूरकरता है और मेदे का मुहँ जलेदोष को उसकी खटाई के कारण मालूम करताहै और जोकि तिल्ली पित्तके सामने है इसलिये उसकेस्वभाव और काम भी सामने हैं और पित्ता दाहने हैं और तिल्लीबायें और पित्ते का एक छिद्र कलेजे की गहराई में ऊपर की ओर है और एकछिद्र नीचे है इसलिये कि जलाहुआ दोष पित्त और सम्पूर्ण दोषोंसे गाढ़ाहै तो वह नीचे की ओर झुकताहै और जिसतरह कि पित्त आंतोंको फोगसे साफ़करता है इसीतरह जलाहुआदोष वहां पक्काशयपर गिरताहै और उसको भोजनकी इच्छादिलाताहै क्या ईश्वर की बुद्धिहै कि रुधिर की शुद्धिका उपाय पित्त और जलेदोष से ठहराया सो इनदोनों से दोलाभ हैं एकसे क्षुधाकीइच्छा और दूसरेसे फोगों का दूरकरना (पक्काशयका वर्णन) यहआशय गर्दन की लम्बाई की तरह पर है और इसमें तीन दरजे हैं और इसमें महीनलेफ अर्थात् रेशे जिनकारूप पट्टेकी तरह से है मिले हैं एक लेफ़ तो लम्बाहै और दूसरा चौड़ा सो लम्बेलेफ़से भोजनखींचता है और चौड़े से दूरकरताहै परन्तु पहले भोजन की रक्षाकरता है कि उसमें उष्णता प्रभाव करे और पकावे और कलेजे को प्राण के आधीन बनाया कि उसपर पेट बहुत भरने से हानि न हो और उसकी शकल गोलबनाई कि उसमें भोजन बहुत समावे और उपद्रवों से दूररहे और उसकी गहराईको लम्बाई से बहुत खुला बनाया और जो कि मनुष्य का खड़ा डीलहै और जो कुछ भोजन करता है मेदेमें जाता है इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने चाहा कि मेदेमें गहराई बहुतहो और वहां मेदा हमेशा खुला न रहे क्योंकि उसकी सूरत लम्बी हुई इसलिये जो कुछ उसकी गहराई में है बाहर न आसकेगा और उसके छिद्रको आंतसे पैदाकिया इसका॰

रखा कि कभी खुले और बंद होजावे क्योंकि वह नीचे है और वह भोजनकी इच्छा रखताहै सो वह चाहताहै कि भोजन इतने समय तक रहे कि पचजावे तो जो खुलाहोता तो निस्सन्देह नष्ट होजाती तो इसीवास्ते उसछिद्रको उसस्वरूपसे पैदाकिया कि जब भोजन मेदेमें पहुँचे उसको बांधे रहे कि जबतक पच न जावे और अपने कामसे मासिका (अर्थात् वह शक्ति जो भोजनको पक्काशयमें रक्षा करती है) की रक्षा करताहै और आंतों के छिद्रको खोलताहै और उसके मुखसे दूरकरनेवाली शक्ति उसके फोगको दूरकरनेकेवास्ते आंतोंमें लेतीहै और सरब (अर्थात् चरबी की चादर जो मेदे और आंतों में लिपटी है) अपने जौहर से मेदे के गरम करने के लिये है क्योंकि यह जौहर अपने आप गरम नहीं है और ईश्वर ने मेदे के मुखपर सरब को इसवास्ते अधिक किया कि विशेष करके इसी ओर शीतहै और मेदे के मुखपर पट्टा बहुत है और मेदे की गहराई में मांस बहुतहै कि उसकी गरमीसे भोजनपकजावे (आंतोंकावर्णन) यह आंतें मेदे के जौहर से बनीहैं और अन्दर खोलमें खुलीहैं और इसके लम्बान चौड़ान में रेशेहैं और रेशोंमें भोजन पचने के उपरान्त जाता है और यह आंतें मुड़नेवाली और लिपटी हैं और मरूर नामी आंतोंमें कईपेंचहैं और उसमें कलेजेसे कई नसें बहुत महीन हैं और इसकारण ईश्वर ने आंतोंको मेदेके जौहर से पैदा किया कि जो कुछ मेदेसे बाक़ीरहा हो पचजाय अर्थात् जो भोजन पक्काशय से न पचसके वह इसमें आकर पचे और इसी दृष्टि से ईश्वर ने उसके खोल को खुलानहीं किया कि जोकुछ उसमें जावे एकसमय तक जमरहे और जो रस उसमें से प्राप्तहो उसकीनसों को कुछ चूसने के लिये मिले परन्तु लम्बाई इनकी इसलिये है कि हर नसमें शुरू से आख़िर तक रस पहुंचजाय कि फोगमें कुछभी भारीपन न रहे परन्तु उसके रेशे इसलिये हैं कि रस को खींचें और चौड़े रेशे रसके दूरकरने के लिये हैं और बवारबनामी रेशे उसके बंदकरने के लियेहैं यह आंतें गिन्ती में छः हैं इनमें से तीन

आंतेंबहुतमहीनऊपरकी ओरहैं और बाक़ीतीनजोमोटींहैं वहनीचेको झुकीहैं सो पहली तीन पतली आंतें पक्वाशय के मुख के निकट हैं उन्हींका नाम बारहउंगुल की आंतहैं क्योंकि नापनेमें बारहउंगल की हैं फिर दूसरीआंतहैं जिसको सायम नामी आंत कहते अर्थात् ब्रतीक्योंकि यहबहुधा खालीरहतीहै कि रत्तीसारी आंतहैं जिसका नाम वक्रीक़है अर्थात् यहआंत उन दोनोंसे महीनहै और यहआंत बहुत्व बल खाये हैं और दो नीचे की आंतें रहीं उसके प्रारम्भ को आवर कहतेहैं यह सबसे अधिक खुलीहै और इसमें किसीकीजारी होनेकी जगह नहींहै किन्तुयह आपही थैलीकी तरहहै कभी अंदर और कभी बाहर हुआ करतीहै उसी जारीहोने की जगह से फिर दूसरी आंत जालून नामी है उसका प्रारम्भ दाहनी ओरसे है और यह उदरकी चौड़ाईमें कूलोंकी बाईं ओर तक पहुंचतीहै और तीसरी वह आंतहै जिसे मुस्तक़ीम आंत कहते हैं अर्थात् सीधीहै कोई.पेंचनहीं और इस आंतका खोल खुला हुआहै कि मूत्राशयमें मूत्र इकट्ठा होताहै और इसके किनारे पर एक पट्ठाहै जो फोग को जबतक कि मनुष्यइच्छा न करे निकलने नहींदेता (गुरदेकावर्णन) यह खण्ड कठोर मांससे बनाहै और अपने खींचनेकी शक्तिसे रुधिर को पानी से साफ़ करता है और उसका जल इसतरह मूत्राशय में भेजता है कि वह फिर लौट नहीं सक्ता गुरदे दो हैं और दोनों पीठके मोहरेके पहलूमें कलेजे के पास दाहनी ओरहैं दाहनी तरफ़ का गुरदा कुछ ऊंचाहै और इन दोनों गुरदोंकी दो गरदनें हैं एक बड़ी रगोंके पासहै जो कलेजेसे निकलीहै और दूसरी मज़बूत तौर से मूत्राशय के निकट हुई है और भोजन सिवाय पानी के साथके नहीं पचता और उसका रस भी सिवाय पानीके नहींजाता तो जो-कुछ पानी ख़र्च होता है उससे बचकर निकल जानेकी इच्छा रखताहै सो इन गुरदों के द्वारा वह पानी खींचकर मूत्राशय की ओर दूर होताहै क्योंकि जब बहुत पानी होताहै तो मूत्राशयमें खिचावट पैदा करताहै और दूसरे बहुत मूत्र सख़्तबन्द होजाते हैं और

जो कि पानीका फोग बहुतहै इसवास्ते ईश्वरने दो गुरदों को पैदा किया क्योंकि जो एक होता अवश्यही बड़ाहोता और एकही ओर होतो पीठकी हड्डियों में कोई हानि करता सो ईश्वर की बुद्धिने अवश्य समझा कि दोबनाये जांघ और हरएक दोनों ओरको झुका रहे कि संगीनी सम भावसे रहे (मूत्राशय अर्थात् फुकनेकावर्णन) यहआशय पट्ठोंसेबनाहै इसके दो दरजे हैं जिसमें मूत्रआताहै और उसमें जमारहता है और बाहर निकलने को जबतक इच्छा न करे रोकताहैमूत्राशयपट्ठे से बनाहै कि अच्छीतरहमूत्रको जबतकमालूम करसके और जबउसमें पेशाब बहुतभर जाताहै फटनेलगताहै इस के मुंहपर तीनरेशेहैं एक लम्बा कि मूत्रइकट्ठाकरे और एकही बेर उसको दूरकरे क्योंकि पानीकाफोगबहुतहै औरमूत्राशयके स्वभाव में अपनेआप निकलने की हाजत नहींहोती क्योंकि जो ऐसा होता तो अपने आप उसमें से मूत्रनिकल पड़ता बरन अपने अधिकार की शक्ति से उसके निकलने का समय नियत करदिया गया है और मूत्राशय में एकपट्ठा है जो मूत्राशय को आवश्यकताके समय खोलता और बन्दकरता है (उत्पन्नकरने के आशयोंका वर्णन)यह हथियार स्त्री पुरुषदोनों में बराबर है इसकेसिवायकि घूमनेवाली शक्तिने पुरुषों का लिंगउष्णता की अधिकता से बाहर को प्रकट करदिया और स्त्रियोंकालिंग अन्दरकी ओर उष्णता कम होने के कारण है तो जो ज़मीन के जानवरों की तरह पेट फाड़कर देखो तो मालूमहोजाय तो सूचितहोजाय कि स्त्रियोंके स्वभावनेउसअंग को अन्दरकी ओर खींचलिया है सो वह अंदर बाहर नहींनिकल सका परजो उसपर छिलकाहोता है वहपुरुष के लिंगकी चोट से फटजाता है परन्तु बाहरनहीं निकलसका तो जबलिंगको स्त्री की भगमें प्रवेशकरते हैं तो वह सफ़ननामी स्थान में जाता है और यह एकप्रकारकी थैलीहै जिसमें गर्भाशय के पास दोनों अंडकोष होतेहैं और गर्भाशय की गर्दन लिंगकीतरहपरहै जिसतरह से कि मरदोंके अंडकोष बाहर हैं इसके विरुद्धस्त्रियोंकेअन्दर हैं औरइसी

कारण स्त्री के अंडकोष अन्दर गर्भाशय के पहलूमें हैं कि अन्दरका मुंहखुलाहो निदान पैदाहोने के हथियार बहुत हैं उनमें से रगें हैं जिनपर मांसगदूद के प्रकारसेमिला है जिसकी ओर पीठकेरसके फोगगिरते हैं सो उनफोगों को खाताहै कि वहवीर्य होजावें इसी वास्तेइसका वीर्य आशयनाम रखते हैं और इनमेंसे एकऐसीशक्ति है जो इसकामदेव के इकट्ठाहोनेकी शक्तिदेती है और इनकीउत्पत्ति भीगदूदी मांससे है मरदों के अंडकोषसफ़ाक़ीनमेंबनाये हैं जिनकी सूरतभी थैलीकी तरहपर है और उसकोसफ़नकहते हैं और स्त्रियों के गर्भाशयकेपहलूमेंहैं और स्त्रियोंकेअंडकोष पुरुषोंसेछोटे हैं परन्तु पुरुषोंके अंडकोषोंसेचौड़ेअधिकहैं और इन्हींदोनोंअंडकोषोंसे वीर्य्य निकलताहै स्त्रियोंका वीर्य्य इनसे निकल कर गर्भाशयके खोल में गिरताहै और पुरुषोंका काम इन्हीं अंडकोषोंसे निकलकर लिंगके छिद्रसे होकर गिरताहै इनमें से एकहथियार पैदाकरनेका लिंगहै यह पट्ठेका अंग और अन्दर से खालीहै और इसमें फुदकने वाली नसें बहुतहैं और बहुतरगेंहैंऔर इसमें अंडकोषकी ओर दो छिद्रहैं जिनसे वीर्य्य लिंगेन्द्री के मुखमें आताहै और वह लिंग का मुख पुरुषोंके लिये स्त्रीके गर्भाशयके बदलेहै और जब ईश्वरने चाहाकि लिंगमें किसी समय खड़ाहोना और तन्नाहो और कभी वह सुस्त होकर सो जायाकरे और उसका खड़ाहोना और तन्ना उत्पत्ति के समय में हुआ करे कि गर्भाशय के मुख तक पहुंच कर वीर्य्य को गिराया करे और दूसरे समयमें सोजावे तो इसी वास्ते परमेश्वर ने कठोर मांस से बनाया जिसका अन्दर खाली है कि जब बायु उसके अन्दर भरी हो तो उसके पट्ठे सख़्त और मजबूत हों और जब बायु से खाली होजांय तो सुस्त होजावें और ईश्वर ने लिंगको हड्डीसे नहीं उत्पन्नकिया नहीं तो सर्बदाकाल खड़ारहता और सुस्ती न आती किन्तु समभाव पर उसकी उत्पत्तिहुई पट्ठे तो इसलियेहैं कि खिचावट करें और रुवात इसवास्ते हैं कि भोग के समय लम्बा होजाय और इसीवास्ते दोनों स्त्री पुरुषोंके लिंगों पर

हड्डीहै और बहुत कठोरहै कि अपने कामको अच्छीतरहकरे और जब लिंग खड़ाहो तो लिंग को उसके हद्द से आगे न जानेदे और सिवाय सीधेहोने के और किसीओर न झुकनेदे और ईश्वरनेउसको गुदासे ऊंचेबनाया कि उससे दूररहे और लिथड़ न जावे और न नाभिसेऊपर बनाया क्योंकि उस स्थानसे ऊपर हड्डी नहींहै और हड्डीउसकी सख़्तीकेवास्ते अवश्यथी और लिंगको शरीर के दूसरे स्थनोंपर न बनाया क्योंकि जोड़ जिसजोड़की आवश्यकतारखता है वहउसीके साम्हने अच्छाहोताहै अर्थात् स्त्रीकी योनिकेसाम्हने यह भी हुआ और विषम जोड़ोंको ईश्वरने बीचमें पैदाकिया जैसा कि नाक और मुंह और दिल और मेदा वग़ैरह उत्पत्ति करनेवाले जोड़ोंमेंसे गर्भाशय भीहै और यहपट्ठोंके जौहरसेबनाहै कि आनंद देने के योग्यहो और वहखिँच और खुलसके और जब पेटसेबच्चा बाहर निकले तंगहोकर बँधजावे और मूत्राशय और सीधी आंतों के साम्हने गर्भाशय बनाया गयाहै क्योंकि यहस्थान नरम जोड़ों मेंहै कि इससे बच्चा मिले औरबढ़े पैदाहो और बच्चे शरीरके वास्ते अवश्यहैं कि इसके रहनेकी जगह बहुतनरमहो और उसमेंगरमी भी हो और अन्दर और बाहर के जोड़ोंमें सदातरीरहै और ईश्वर ने गर्भाशयके वास्ते दाहनेबांये दोपेट पैदा किये तो दाहने पेटमें गरमी और तरीकोअधिककिया और उसकेबलको अधिकबलवान बनाया और यहशक्ति रुधिर और प्रणके कारणहै जो दोनों दिल से उसमेंजातेहैं सो इस पेटकी ताकतसे लड़का पैदा होता है और दूसरे पेटसे लड़की उत्पन्न होतीहै और गर्भाशय में दो जो ज़ायदे (बढ़ाहुआमांस) निकलेहैं और उनगर्भाशय के अंढकोषकेपास हैं और दोनोंके नामकरनरहमहैं अर्थात् यहदोनों मानो गर्भाशयकी शाखाहैं कि गर्भाशय उसशाखाओंसे बीर्यकोखींचे जो स्त्रियोंकेअन्दर के अण्डकोषसे निकलतीहैं गर्भाशयकी एकगर्दनहै जो योनिकेबाहर तकलंबीहै और वहपुरुषोंके लिंगकेछिद्रके बदलेहै औरकुंवारीलड़के बच्चे दानीका मुहँ सिमटा रहताहै फिर बीर्यकेलेनेको खुलजाता है

और बहुतसे इसमें पट्ठे और बहुतचरबीहै और मानोमहीन रगोंसे उन पट्ठोंके बीच बुना गयाहै जो नौ संगम के समय टुकड़े होते हैं और स्त्री के गर्भ धारण के समय गर्भाशय का मुख सूज जाता है और जब प्रसूत के दिन आते हैं या पेटमें बच्चेपर कोई दुःख पहुंचता है तो वहां गर्भाशय इतना चौड़ा होजाता है कि बच्चा निकल जावे और गर्भाशय अपनी ओर को पुरुष का वीर्य्य अपनी गर्दन द्वारा खींचता है और अपने वीर्य्य को उन्हीं दो शाखाओं से अपनी ओर खींचता है ईश्वर ने गर्भाशय में रुबात एकसां बनाये हैं जो पीठकी हड्डियोंसे घिरेहुये जोड़ोंसे पैवन्द दिये हैं इनका बांधना इस लाभ से है कि गर्भाशय अपने स्थानपर स्थिर रहै और उसका मूत्र और तरफसे जारी किया कि गर्भाशय का खिंचना संभवित हो जब तक कि बच्चा पेटके अन्दररहै और जो इसी मार्गसे मूत्र आता तो बच्चे का ठहरना कठिन होजाता और गर्भाशय उस समय मिलता है कि जब बच्चा पेटसे खाली होताहै इतना जानने वाले लोगोंने विस्तार किया है आगे ईश्वर जाने ॥

कुवा मैन अर्थात् सम्पूर्ण प्रकार की शक्तियों का वर्णन ॥

कुवा एक फरिश्ते का प्रकार है ईश्वर ने इन फरिश्तों को शरीर के बनावट और जोड़ों की शक्तियों की स्थिरता और २ लाभों के लिये उत्पन्न कियाहै इसका दृष्टान्त इस तरह परहै कि मानो एक शहर बसाहुआहै और उसमेंलोग रहते हैं और उसके बाज़ार खुलेहैं और लोग इधर उधर आते जातेहैं और हर पेशेवाले अपने काममें लगेहुये पाये जातेहैं शरीर का हाल सोने या बेहिलने के समय मालूम होताहै जैसा कि रात्रिके समय शहरकी दूकानेंबंद होजाती हैं पेशेवाले सोजातेहैं कहतेहैंकि बदन नक्शदार मकानात की तरहपर है सो शक्तियां शरीरमें चित्रकारी की तरहपरहैं और जीव दीपककी तरह जो घरके हरकोनेमें उसकाप्रकाश फैलारहता है और उसके प्रकाश से सब घरकी चीज़ें दिखलाई देती हैं और

अन्दर और बाहरकी शक्तियां और सुन्दरता और अलंकार आदि तो जब प्राण अलगहुये यह सबबातें झूठी पड़जाती हैं मानोदिया ठंढा होगया और मकान में अंधेरा होगया सो कुछ दिखाई नहीं देता और यह शक्तियां चारहैं पहली शक्तियां प्रकट हैं और उसका नाम इन्द्रियांहैं और यह पांचहैं पहली स्पर्शइन्द्री यह शक्ति मनुष्य और पशुमेंहै कि किसी दुःखदाई वस्तुकेछूनेसे भागताहै ऐसा नहीं कि कोई ऐसा जीवधारी हो जिसमें स्पर्श इन्द्री न हो तो जो एक सूई शरीरमें चुभ जातीहै तो तुरन्त मालूम होजाता है परन्तुइसके विरुद्ध बनस्पतिहैं कि चाहो जितने टुकड़े २ करो बेखबर हैं सोजो जीवधारी में यह शक्ति न होती तो अपने दुःख सेनबच सक्ता फिर वह आवश्यकता रखता कि जब भोजनदूरहो क्योंकर मालूम करे सो ईश्वर ने दूसरीघ्राण शक्ति उत्पन्न की जिसके द्वारा गन्धपाई जाती है परन्तु फिर नहीं जानता कि किधरसे गन्ध आती है तो उसको भोजन की प्राप्तिमें कोई लाभ नहींदेती इसलिये ईश्वर ने अवलोकन शक्ति उत्पन्नकी कि यहदूर और पासकी चीज़ोंको देखे और उसकी तरकों को मालूमकरे परन्तु फिरभी कुछ कसर रही क्योंकि नेत्रसे मालूम नहीं होताहैकि जो कुछ परदेमें है इसलिये ईश्वरने श्रवण शक्ति कृपाकी और जब तक कि स्वाद की इन्द्रीन होती तो यह लाभदायक न होते क्योंकि जब जीवधारीको भोजन मिलता तो वह स्वाद न होनेसे न पहिचान सक्ता कि मेरे अनुकूलहै या प्रतिकूल (इन सबका विस्तार प्रथम स्पर्श) यहशक्ति सम्पूर्ण देहमेंहै तो जोवस्तु शरीरमें मिले उसको तुरन्त मालूम कर जातीहै जैसे उष्ण शीतल शुष्क कठोर हलकी संगीन आदि वस्तु द्वितीय घ्राणेन्द्रियकीशक्ति इसशक्तिकास्थान ब्रह्माण्डमेंहै और यह शक्ति सुगन्धको जो हवासे ऊपर पहुंचतीहै मालूम करतेहैं तृतीय देखनेकी शक्ति यह शक्ति आंखके पट्ठे के खोलमें बनीहै और यह वस्तुओंका रूप सूर्यकेप्रकाश और रंगोंसे मालूम करतीहै कि जब सूर्य का प्रकाश शुद्ध अंगोंमें पैठता और रंग पैदा करताहै सो वह

सूर्यकाप्रकाश जीवधारी नेत्रकी के पास होताहै और उसमें पैठता है चतुर्थ श्रवण शक्ति यह शक्ति कानमें है और यह शक्ति जो पवन का शब्द हो उसको मालूम करतीहै और उस वायुका हाल ऐसा है जैसा कि पानीमें लहर होतीहै बास्तवमें वायु पानीसे सख़्त है और हलकी और जल्दी पैठतीहै तो जिस समय कोईचीज़ किसी पर गिरी तो उससे वायुदूरकरने और लहर मारनेको उत्पन्नहोती है जैसे कोई चीज़ पानीमें गिरती है तो उसमें ज़ोर होताहै और वहदूरतक पहुंचतीहै जितनी जगह पातीहै और उससेलहर कम पड़जातीहै यहांतक कि जाती रहतीहै निदान जो कुछ मनुष्य को बात करने से अर्थहो उसका मालूम करना सुनने के आधीन है (स्वादकीशक्ति) यह शक्ति जिह्वा के चर्म में है सो यह उस मीठी तरी के द्वारा जो जिह्वा के नीचे है स्वाद आदि का हाल मालूम करतीहै यहतरी उस अंगसे मिली होतीहै जिसमें स्वादकी शक्तिहै और उसके हाल को मालूम करतीहै जो उस अंगके खण्डोंसे मिले होतेहैं और स्वादकी शक्तिको उत्पन्न करती है कि जिससे स्वाद का मालूमकरना बिदित होताहै ॥

अन्दर के कुवा का वर्णन ॥

इनके कईप्रकारहैं आकर्षण शक्ति इसके चारप्रकारहैं खींचनेकी शक्ति १ मासका अर्थात् वह शक्ति जो पक्वाशयमें पहुंचेहुये भोजन की रक्षाकरतीहै २ पचने शक्ति ३ दूरकरनेकी शक्ति खींचनेकी वह शक्तिहै कि उपयोगी भोजनको खींचतीहै और वह सम्पूर्ण शरीरमें वर्त्तमानहै परन्तु जो आकर्षण शक्ति मेदेमें है वह बहुत बलवान् है यहांतक कि जो मनुष्यउलटाहो कि उसकाशिर पृथ्वीपरपहुंचे और दोनोंपांव हवापर लटकेहों उससमयभी होसक्ताहै कि भोजन पक्वाशयमेंपचे और बाहर न गिरे और हरजोड़को अपनी२ आवश्यकता के अनुकूल आकर्षणशक्तिहै क्योंकि बहुधा एकजोड़का भोजनदूसरे के विपरीत है (दूसरीमासका) यह वह शक्ति है जो आकर्षित बस्तु की रक्षा करती है कि उसमें पचने की शक्ति अपना अधिकार

करे (तीसरी पचने की शक्ति) और यह इस तरहपर है कि भोजन पर जोड़को लिपटाती है कि भोजन हरओर फिरे और उसमें रस नहीं छोड़ती और स्वभाव की रक्षा करती है और फिर वहभोजन शरीरके खण्डका अंश होजाताहै और फिर फोगबनजाताहै (चौथी दूरकरने की शक्ति) यह शक्ति भोजन के फोग को जो पचचुकता है दूर करती है (गाज़िया) इसके चारप्रकारहैं गाज़िया १ नामि-या २ मूलिदा ३ मुसविरह ४ (गाज़िया) यह वह शक्ति है कि भोजन को खाने वालेकी सूरत बनातीहै कि जो कुछ पचगया हो उसका बदला मौजूदहो (क़ुव्वतनामिया) वहहै कि शरीर के अंगों को हर जोड़पर आवश्यकताके अनुकूल बराबर बांटती है और इस में और गाज़िया शक्तिमें केवल इतना अंतर है कि क़ुव्वत गाज़िया भोजन को हर जोड़पर बिना विचार और अवकाश के उतारती है नामिया नहींउतारती परन्तु जहांपचनेके कारण आवश्यकता होती है आवश्यकताके अनुकूल पहुंचतीहै (कुव्वतमूलिदा) वह है जिससे पैदाकरनेकीवस्तु उत्पन्नहोतीहै जैसे जीवधारियोंमेंबीर्य औरअनाज में दाना और छुहारेमें गुठली (क़ुव्वतमुसव्विरा) वहहै कि जिससे सख़्ती नरमी रंगरूप सूरत सकल हरचीज़ की दुरुस्त होजातीहै॥

कई अद्भुत शक्तियों का वर्णन॥

यहबल भोजनकेसमय भोजनको अद्भुतरंगसेप्रकटकरतीहैं जैसे पक्काशयमें आशजौकी तरहभोजन होजाताहै फिर उसको वहशक्ति उसको कलेजेमेंखींचती है फिर वह रुधिर होती और फिर कलेजा उसको शरीरभरपर आंतोंसे बांटताहै उस समय हर जोड़में उसका भाग पहुंचता है फिरवह लहू और मांस बहुत पकनेके पीछेहोताहै जैसेकिगेहूं आटा और कैसीरकारीगरी से रोटी पकती हैं इसीतरह अन्दर के कारीगरयहीबलहैं कि प्रकटके कारीगरोंकी तरह अन्दर [illegible]तेहैं अबहम लिखतेहैं कि जबआकर्षणशक्ति केवलखींचतीहै [illegible] यहअवश्यहुआ कि कोईशक्ति सिवाय इसके और भीहो कि वह भोजन कोहड्डियों और मांसमेंपकनेके वास्ते ठहराये रक्खे क्योंकि

भोजनअपनेआप इसयोग्यनहीं तो अवश्य हुआ कि क़ुव्वत यास्का मीहो कि भोजनकेअनुमानकीरक्षाकरे और पचनेकी शक्तिसे यहगुण है कि भोजनसे रक्तका स्वरूप उत्पन्नकरे और दूर करने वाले बल से यह लाभ है कि जो आवश्यकता से अधिकहै उसके फोगों को निकालदे सिवायइनके और चारशक्तियां इनकेआधीनहैं एक शक्ति वह है कि भोजनके रसको हड्डियों से जो उसकेवास्ते प्राप्त किया हो चिपकातीहै दूसरा बल वहहै कि अनुमान की रक्षा करता और गोलबनाता जो कदाचित् नाकपर इतनामांस आजावे जितना कि रानपरहै तो वहअंग उसका बड़ाहोकर बुरा मालूम होजाय और मनुष्यका स्वरूप बदलजाय इसलिये उचितहुआ कि आवश्यकता के अनूकूल हरएक जोड़पर रसबटे और तीसरी शक्तिवहहैकि कुछ उत्तमभोजनहो उसको लिंगकेलिये ख़र्चकरे कि उसकावीर्य मनुष्य के उत्पन्न होनेकेलिये बने क्योंकि हरमनुष्य एकदिन ज़रूरमरेगा तो उसके बीजका रहना और तरहसे समझा नहींजाता हां संतान से होसक्ताहै चौथीरूप पैदाकरनेवाली शक्तिहै जो नानाप्रकार के स्वभाओं से उतरती है जोड़ोंकी तरह यह इस वास्ते है कि जोड़ों के नानाप्रकार के रूप अर्थात् लम्बे चौड़े गोलहों या पेटअन्दरसे खालीहो और ठोसका अन्दर ठोसहो और महीन कठोर सख़्तहो इस क़ुव्वतकाम मसव्विरह है इसदृष्टि से कि झिल्लियों के अँधेरे में नाना प्रकार के स्वरूप बनाया करती है और इन सब से अद्भुत पलकें हैं जो आंखोंके ऊपर और नीचेहैं और नेत्रकी श्यामता और माथा नाक होंठ इननक्शों से एकदूसरे के पास प्रकटहोतीहै और जो कि उनका बनानेवाला बिल्कुल उनचीज़ों में दिखाई नहींदेता न अन्दर न बाहर और न इस बनावटको माता जानती न पिता तो ईश्वर का धन्यबाद है कि उसने अपने मित्रोंकीआंखको ज्योतियुत बनायाकि उन्होंने इन वस्तुओं से उस परमात्मा को देखा और अपने शत्रुओं के मनोंको अन्धा बनाया ॥

तृतीयप्रकार ज्ञान को शक्तियों का वर्णन॥

यहशक्तियां मनुष्यके अन्तरमें उपजीहुईहैं और यहपांचहैं (प्रथम इन्द्रियों से मालूम करने की शक्ति-द्वितीयध्यान-तृतीय बिचार-(चतुर्थस्मरण-पंचमचिन्तना-इन्द्रियों से मालूमकरनेकी शक्ति का स्थान भेजेमेंहै और यह शक्तिऐसीहै कि सूरतोंको देखनेपर मालूम करलेतीहै और यहशक्ति देखनेकी शक्ति केसिवायहै क्योंकि हमवर्षा की बूंदको सीधी रेखा की तरह देखते हैं और बिन्दु जो मुख्यकर इससीधी रेखापर दायराहै परन्तु यहदेखना इसदेखनेकी शक्तिके सिवायहै इसकारण कि देखनेकी शक्ति नहींदेखती परन्तु जो उसके साम्हने हो और जो कि बिन्दु और बूंद के सिवाय दूसरा स्वरूप देखने की शक्ति में नहीं पाया जाता सो जो सीधी रेखा और घेरा दिखाई देताहै तो उसदेखनेका बल देखनेकी शक्तिके सिवायहै सो कईसूरतें कि इसशक्ति पर उतरीहैं कभी बाहरसे इन्द्रियों के द्वारा आतीहैं और कभी बाहरसे इसलिये बहुधा ऐसाहोताहै कि विचार करनेकी शक्ति घेरेके बीच बिन्दुबनातीहै (दूसरीध्यानकीशक्ति) वह मालूम करनेवालीके नीचे भेजेके पीछेहै तो जो सूरतें मालूमकरने वाली शक्तिने विदितकी हैं उसके ध्यान में यत्नकरती है (तीसरी) विचार है और यह चिन्तना शक्ति के पीछे भेजे में हैं जो मालूम करनेवाली शक्ति के विदितकी हुई वस्तुओंको मालूम करतीहै जैसे देवदत्त की मित्रता और यज्ञदत्त की शत्रुता और यह वही शक्ति है जो बकरियों में है कि सन्तान को प्रियरखतीहैं और भेड़िये से भागतीहैं (चौथेस्मरणशक्ति) यह भेजे के अन्तमें है और जो बात उसकी समझ में आवे उसकी रक्षा करती है सो विचार मानो स्मरण काकोषाधिपहै (पांचवेंचिन्तना) यहशक्ति भेजेके बीचमेंहै और यह शक्ति विद्यमान पदार्थोंके रूपमें अपनेको ख़र्च करती है और जो स्मरण रखनेवाले को बिस्तार और उपाय संयुक्त अर्थ प्राप्त हुयेहैं ध्यान रखतीहै तो जो वह बुद्धिके आधीनहै और उसका नाम चिन्तनाहै (अन्यप्रकार) इच्छा शक्तियांहैं यह वहशक्तियां

कि अपने लाभकी अभिलाषा में स्वभावको उठाती हैं उनमें से एक खानेकी इच्छाहै क्योंकि खाना सब शक्तियोंका मूलहै और सवाने शक्तिसेसबको बलपहुंचताहै यदि मनुष्य में खानेकी इच्छा न होती तो सबशक्तियोंको बल न पहुंचता और जैसा कि मनुष्यमें अन्दर और बाहरकीशक्तियां प्राप्तहुईं जो ऐसाहीमनुष्यकी प्रकृति में इच्छान होवी तो सब व्यर्थ थीं और हर एक शक्ति कुंठित हो जाती जैसाकि बहुधा रोगियोंको देखा जाताहै कि उत्तमरससंयुक्त भोजन उनके सामनेहै परन्तु इच्छाशक्ति उनमें नहींहै इसलिये इच्छाशक्ति उनकीरुचि नहींकरती सो इसीबिचारसे उनकीशक्तियां सब कुंठित और व्यर्थ रहती हैं सो ईश्वर ने भोजन की इच्छा प्रकटकी कि सम्पूर्ण शक्तियां विद्यमानरहें उनमेंसे एककामदेवकी इच्छाहैकि मनुष्यको भोगकी प्रेरणा सन्तानके होनेके लिये करती है अन्य क्रोधकी शक्ति यह वह बलहै जो जीवधारियों को प्रबल करता जो यह न होता तो जीवधारी अपनेशत्रुओंको परास्तनकरते और सदा दीनरहते और अपनी जान और माल और भोजन को शत्रुओं से न बचासके परन्तु मनुष्य को अन्य पशुओं से इसकी अधिकआवश्यकता रखताहै क्योंकि इनकेशत्रुद्रव्य जीवन अन्तःपुर आदिके लिये बहुतहैं सो मनुष्यको दूर करनेकीशक्ति अवश्यहोनी चाहिये (कर्म करनेकी शक्ति) इससे जोड़कोव्यसन आधीनी की ओर प्रेरणा करतेहैं जैसेकोई मनुष्य तारकोबुनताहै तो उसके अनुसारअपनेजोड़को प्रेरणाकरताहै जो यहशक्ति न होती तो सम्पूर्ण शरीर मनुष्यका शलहुये हाथकीतरह व्यर्थ रहता और कुछ खोल मूंदभी न सक्ता जो पशुको मांगने और भागने का बल न होता-तो व्यर्थथा न अपने प्रयोजन की बस्तुकी ओर जासक्ता और न भयके-स्थानों से भागसक्ता सो इसी दृष्टि से ईश्वर ने अभिलाषा और भागना दो शक्तियां कृपाकीं॥

बुद्धि की शक्तियों का वर्णन॥

औरवहचारहैं उसमें (प्रथम)वहशक्तिहै कि उसीके कारणमनुष्य

पशुओंसे प्रतिष्ठितहैं और यह वहशक्तिहै जिससे मनुष्य विद्या की प्राप्तिकरताहै इसकानाम अज़ीज़ियाहै और बुद्धिमान इसको हयूलानीकहतेहैं यहशक्तिमनुष्यकेमूलसेमिलीहैइसलिये किमुख्यमनुष्यकेशरीरमें विद्यमानहै और पशुओंमें नहीं(दूसरी)वहशक्तिहै कि विवेकवान् लड़कोंको उपजातीहै जैसा कि विवेकी लड़केकोमालूम होताहै कि दो एकसेअधिक हैं और एकआदमी दो मकान में नहीं रहसक्ता और एक वस्तु एक समय में विद्यमान और अविद्यमान नहीं होती बुद्धिमानों ने इसका नाम अक़्लबिलमलका रक्खा है (तीसरीवहशक्तिहै) कि उससे कई अर्थ प्राप्तहोते हैं जो अभ्यास द्वारा समझमें आयेहों और इसकानाम अक़्लमुस्तफाद है (चौथी) वहशक्तिहै जिसके कारण हरएक प्रभावकामूल पहिचाना जाताहै सो यह शक्ति जल्दी करनेवाली इच्छा कि जब वह अपना प्रभाव बुरीबातोंकी तरफ़ करतीहै दूरकरतीहै इसकानाम अक़्लबिल्फ़ेल है तो जब मनुष्यको यहधारणा बुद्धि प्राप्त हो उसे बुद्धिमान कहते हैं क्योंकि किसीकाममें देरकदेना या उससेदूररहना समयानुसार मालूम होजायेगा और अग्रशोची से हरविषयमें आगेबढ़ेगा और बुद्धिमान दोप्रकार के होतेहैं कि एकके स्वभाव में बुद्धिहोतीहै और दूसरा सीखनेसे पाताहै हज़रतअली पैग़म्बर ने श्रीमुख से कहाहै कि हमनेबुद्धिको दोरीतिपरदेखा एकस्वाभाविक दूसरीअभ्यासिक अभ्यासिक बुद्धि कुछ लाभदायक नहींहोती और जबतक स्वाभाविक नहो जैसा कि अन्धेकेआगे प्रकाश से कुछलाभ नहीं पहुंचता तो पूर्वोक्त इमाम साहब के वचन का उल्था है और मुख्य हदीस जिसका उल्था यहहै वास्तवमें क्या अच्छादृष्टान्त उन्होंनेदिया॥

बुद्धिमान निर्बुद्धि के अन्तर का वर्णन॥

बुद्धि एक ज्योतिहै जो मनुष्य पर प्रकाशमान है इस बुद्धिरूपी ज्योतिके प्रकाशकाप्रारम्भसातवेंबर्ष फिर जितना मनुष्यबढ़ताजावे बुद्धिभी बढ़तीहै चालीसबर्षतक जोकि मनुष्य २ के बीचमें बहुतकुछ प्रकटहै तो इस विषयमें इन्कारनहींकरसक्ते परन्तु बुद्धि और समझ

में अन्तरहै कईबुद्धिमानहैं कि अपनी बुद्धि और समझके बलसे जो बात सैनसेकहीजाय तुरन्त समझजांय और बाज़ेबुद्धिहीन ऐसेहैं कि हज़ार सख़्तीसे कहाजाय नहींसमझतेहैं बाज़े बुद्धिमानधर्मिष्ठ कि जो उनकेमनमेंफुरताहै वह धर्मकीओर होताहै और बाज़ेऐसेहैंकि जो कुछभ्रष्टबुद्धि और नासमझी मन्सूबा करते हैं बहुधा अर्थ भ्रष्ट होता है यहसबबातें मनुष्य की बुद्धिसे मालूमहुई हैं हज़रत रसूल और इब्नइसलामके प्रश्नोत्तरमें जिनकावर्णन हदीसमेंबहुतविस्तार से है और इसी हदीस (अर्थात् रसूलपैग़म्बरकी रचना) के अन्तमें अरश अर्थात् आकाश के गुणों के वर्णन में यों लिखा है जिसका उल्थायहहै कि फरिश्तोंने ईश्वरसेकहा कि तूने कोईचीज़ अरश से बड़ींउत्पन्नकी ईश्वरनेवर्णनकिया कि हमनेअरशसेबड़ा बुद्धिको उपजायाफरिश्तोंने कहा हे परमेश्वर बुद्धिकी और अधिक प्रशंसाकर किहम उसेख़ूब समझें ईश्वर ने कहा कि बुद्धिकी प्रशंसा तुममालूम नकरसकोगे कि क्या तुम रेत के किनकों की संख्या करसके हो फरिश्तोंने विनयकी कि नहीं फिर ईश्वरने कहा कि तुम जो संसार की रेतके कणभी जानते तो भी बुद्धिकी स्तुति अच्छीतरह तुम्हारे समझ में न आती सो मनुष्यों में से कई ऐसे हैं जिनको रेत के एककण के बराबर बुद्धि मैंने कृपाकी और किसी को दोकण और किसी को तीन कण और किसी को चार और बाज़ों को इससे अधिक कृपा की है इसके प्रमाण पर अद्भुत कहानियां लिखी हैं

(कहानी) एक हकीम किसी रोगी के देखने को गया और नाड़ी और मुख देखने के उपरान्त कहा कि तूने फल खायाहोगा उसने कहा हां उस समय हकीम ने कहा कि अब न खाना पथ्य करना चाहिये दूसरेदिन जब फिर रोगी के पासगया तो नाड़ी के देखने के उपरान्त कहा कि तूने आज मुरग़ का सालन खाया है उसने मानलिया उसके खानेकी भी मनाही की लोगों को आश्चर्यहुआ और हकीम की बुद्धिमानी का निश्चयहुआ हकीमसाहब का एक पुत्र था उसने अपनेपितासे कहा कि आपने क्योंकर यहदोनोंबातें

मालूमकीं हकीम ने कहा ऐ बेटे यहबातें कुछ विद्याके द्वारा मालूम नहींहोतीं किन्तु बुद्धिसे प्रकट होतीहैं जब मैं पहलेदिन उसके घर पहुंचा तो बहुत मेवों के छिलके पड़ेहुये मैंने देखे तो मुझे निश्चय हुआ कि इसरोगीने भी अवश्य खायेहोंगे और उसके मुखसे निर्बलता के चिह्न प्रकट थे और उसकीनाड़ीमें तरी थी इतनीबातों के देखनेपरभी मैंनेकहा था कि शायद तुमने मेवाखायाहै और दूसरे दिन मुरग़ के पंख और पर उसके दरवाज़े पर पड़े थे और उसकी नाड़ीमें भारीपन था तो बुद्धि ने साक्षीदी कि इसने मुरग़ का मांस अवश्य खायाहोगा इसदृष्टि से मैंने उससे यही कहा ईश्वरकी कृपा से दोनों बातें रोगीसे सच्चीपाईं सो लड़केने भी यह हाल सुन कर मनमें कहा इसी रीतिसे हमभी कहाकरेंगे सो एक बीमार के देखने को गया और उसकी नाड़ी और मुख देखकर बोला शायद तूने गधे का मांस खाया है रोगीने हंस के उत्तर दिया कि साहब कोई गधे का मांसखाता है हकीम बेवक़ूफ़ लज्जित होकर घरपर आये यह खबर उसके पिताको पहुंची उसनेभी पुत्र से कहा हे पुत्र तूने क्योंकर मालूम किया कि रोगीने गधे का मांसखाया है उसने उत्तरदिया कि उसके घरमें गधेके ऊपरकी काठी दिखाईदी मैंने जाना किगधा मारागयाहै और काठी खालीरक्खी है क्योंकि जो गधा जीता होता तो काठी उसकी पीठपर होती हकीम ने कहा कि जो तुम्हारी बुद्धिशुद्धहोती तो निस्संदेह जो कुछ तुमने कहाठीकहोता इसपर क्या उत्तम अली पैगम्बर का वचनहै कि जब मनुष्य को स्वाभाविक बुद्धि न होतो सुनीहुई बुद्धिकुछलाभ नहींदेती (कहानी) इमामअबूहनीफ़ा कोफ़ी शिष्यों को अपनी सभा में पढ़ाते थे अकस्मात् दूरसे एकमनुष्य प्रकटहुआ जो विद्वानोंकारूप बनाये और लंबीदाढ़ी कियेथा जबअबूहनीफ़ाकी दृष्टि उसपर पड़ीलोगोंसेकहा अपनीबातचीतमें चैतन्यरहोकि ऐसा न हो कि यहमनुष्य विद्वान् कोई भूल पकड़े सो वह मर्द आनकर बैठा उस समय अबूहनीफ़ा निमाज का वर्णन करतेथे यहांतक कि उन्होंने सुबह की निमाज़

के विषयमें कहा कि इसकासमय दूसरी सुबहके आनेकेसमय आता है और सुबहकी निमाज़कासमय सूर्योदयतक रहताहै सो उसपुरुष नेकहा कि जो सूर्य सुबहके पहले उदय तो उसकेलिये क्याआज्ञाहै तो अबूहनीफा ने लोगों से कहा कि अब कुछ तुम इस मनुष्य का विचार न करो क्योंकि मेरा विचार अशुद्ध निकला (कहानी) शाम के अधिपति के पास एक बाजथा अकस्मात् वह उड़ा शामके अधिपति ने आज्ञादी कि शहरके दरवाज़े बन्दकरो कि बाहर निकलने न पावे वही हाकिम एकदिन एकपनचक्कीके पाससे गया वहां परदेखा कि एक गधेको जोतेहुये घुमारहे हैं और एक घंटा उसके गलेमें लटकताहै सो शामके अधिपतिने चक्कीवालेसे कहा कि इस गधेकी गर्दन में घंटा किसलिये लटकायाहै चक्कीवाले ने उत्तर दिया कि जब मैं किसी और काम में होताहूं या मुझको औंघाई आजातीहै तो जबतक घंटेका शब्द आताहै मैं जानताहूं कि गधा घूमरहाहै और जब इसका शब्द नहींआताहै तो मैं मालूम करता हूं कि गधा खड़ाहोगयाहै मैं उसकेपास जाके लकड़ीसे हांक देताहूं हाकिम ने कहा कि जो यहगधा रुकरहे और अपना शिरहिलादे तो क्याकरोगे उसने उत्तरदिया कि जिसदिन मेरागधा ऐसा बुद्धिमान होजायेगा उसदिन मैं आप से कोई और उपाय पूंछ लूंगा (कहानी) लिखाहै कि वज़ीर जातुस्सादातका घोड़ाएकदिन सवारी करते में बिगरा आपने आज्ञादी कि इसका जौकादाना बन्दकरदो कि यहरीति सीखे जब वह कईउपवासों के उपरांत निर्बलहोगया लोगोंने उसकी क्षमामांगी आपने उत्तरदिया कि अच्छा उसको दानादियाजाय परन्तु उसको यह विदित न होनेपाये कि हाकिम ने मेरा अपराध क्षमाकिया (कहानी) जब अबुलहज़ील की स्त्री के प्रसूतिकादिन निकट पहुंचा अबुलहज़ील किसीदाईके पास जाकर बोला कि मेरे घरवली मेरी स्त्रीके सन्तान होनेवालीहै परन्तु जो तू लड़का जनादेगी तो तुझे एक अशरफी पारितोषिक दूंगा (कहानी) लिखा है किखलीफ़ा मामूंके राज्यमें एकबेरबुगदाद के दजले में पान

बढ़आया सो मामूंने नैमाकेपुत्र मन्सूरसेकहा कि इसका उपायकरो उसनेविनयकी कि सक्कोंको आज्ञादीजावे कि मश्कें उसमें से भरर केज़मीनपर छिड़कें खलीफा यह सुनकर हँसा (कहानी) अक्सम के पुत्र क़ाज़ी हज़रत यहय्याकेपास एकबापबेटे हाज़िरहुये बापने कहा कि अयक़ाज़ी मेरा लड़का शराब पीनेवाला है और निमाज़ नहीं पढ़ताहै और कुरानतक उसको यादनहीं इसको पत्थरोंसे मारडाला लड़केनेकहा कि मेरा बाप झूठकहता है बापने क़ाज़ीसे कहा किई-श्वर आपको जीतारक्खे कहीं होसक्ताहै कि निमाज़ बे पढ़े क़ुरानके हो क़ाज़ी ने कहा सच है सो पिताने क़ाज़ी से कहा कि लड़के से किसी जगहपरसे क़ुरान पढ़वाइये सो क़ाज़ीने आज्ञादी लड़के ने एक अशुद्धआयत पढ़दी सो पिताने कहा यहआयत शायद इसने कलयादकीहै दूसरी आयत पढ़वाइये क़ाज़ीने उत्तरदिया कि दूर हो कि ईश्वरने तुमऐसे दोनों बाप बेटोंकेलिये पत्थरोंसे मारडालने की आज्ञादीहै क्योंकि तू आप भी क़ुरान नहीं जानताहै नहीं तो अपने पुत्रकी पढ़ीहुई आयत को क़ुरानकी आयत न मानता॥

मनुष्य के स्वभाव का वर्णन॥

मनुष्य के स्वभाव बहुत से हैं उनमें से नुत्क़ है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन की बात को जिह्वा पर लासक्ता है उसमें से हर्ष है जो हँसी दिलाता है और एक रोनेकी शक्तिहै जो शोक के समय रोना लातीहै एक शक्ति बालोंकी है सो शिर के बाल अलं-कार के कारणहैं जो शिरपर बालनहोते तो बुरीसूरत मालूमहोती और स्पर्श शक्तिका गुण व्यर्थजाता और पशुओं के बाल शरीर के वस्त्र और पहिनाव के बदले हैं और जो कि मनुष्य की पोशाक बाहरसेहै इसलिये उसके शिरपरबाल पैदाहोतेहैं कि भेजेकीरक्षा भी हो और मनुष्यकी सुन्दरता भी हो और जो बाल सपेद हो-जातेहैं यह बात सिवाय मनुष्यके और किसी जीवधारी में नहींहै और यह बात बुढ़ापे में होती है क्योंकि उस समय उष्णता कम होजातीहै और दोष शरीरमें पकजाते हैं और शरीरमें सड़ीहुईतरी

होती है और उससे एक प्रकारकी सड़ी भाफ निकलती है जिसके कारण केश श्वेतहोजाते हैं और जब मनुष्य किसी पीड़ित अंग को हथेलीसे मलताहै तो वहपीड़ा कमहोजातीहै हिकमत की किताबों में लिखाहै कि जो मनुष्य किसीके पीड़ित नेत्रको देखे उसकी आंख भी बीमार होजाती है इसीतरह जो किसी का जूठा पानी पिये उसकारोग उसपर प्रभाव करेगा जैसे कोढ़ खाज और सरसाम अर्थात् भेजेकी सरदी गरमी आदि कोढ़ी मनुष्य नंगेपांव जिधरसे निकलजावे उधर घास कभी न जमेगी न कम न बहुत और दूसरे जीवधारियों के विरुद्ध जो मनुष्यके अंडकोष काटडालें तो उसका शरीर क्षीणहोजाताहै और उसका पसीना दुर्गंधित होजाताहै और उसकी मति बुरी होजाती है भोजन की इच्छा अधिक रहती है हड्डियां लंबीहोजाती हैंउंगलियां टेढ़ीहोजातीहैं और मैथुनकीइच्छा प्रबल होजाती है और बहुधा स्वप्न में उसका वीर्य्यपात हुआ करताहै आयुबड़ी होतीहै और तरीकी अधिकता से बालकम होजातेहैं और पांवकी पिंडली बलकी कमी और बदनकी संगीनीके कारण टेढ़ी होजातीहै और तरीके बहुत होनेसे फेफड़ेका मुंह तंग होजाताहै और इसीकारण उसका शब्द महीन चीखताहुआ होजाताहै और जिस पशुमें दुर्गंधहो तो वह खस्सीकरनेसे सुगंधित होजाता है परन्तु जहां मनुष्य के अंडकोष काटडाले जायँ दुर्गंध अधिक होगी और अधिक आश्चर्य्य यहहै कि जब मनुष्य के अंडे निकाल डालेजायँ तो थोड़ीसी बात में प्रसन्न और थोड़ीसी में अप्रसन्न होजाताहै और वह किसी तरहका भेद नहीं छिपासक्ता आवाज़ बदल जातीहै यहां तक कि आवाज़ करने पर पहिचान लियाजाताहै और उसको शतरंज आदि खेलकी इच्छा होजातीहै-और अंधे मनुष्यको भोगकी इच्छा अधिक होतीहै जिसतरह कि खस्सी आदमी को अंडदोष संयुक्त मनुष्यसे देखनेकी शक्ति अधिक होतीहै सो इसका कारण यहहै कि जब नेत्रकी ज्योति दूरहुई तो मैथुनकी शक्ति अधिकहुई और जब अंडनिकालेगये नेत्रको ज्योति

अधिक होतीहै क्योंकि इधरका बल उधर चलाजाताहै लिखाहै कि क़तावहसेपूछा कि अंधोंकेलिये क्या कहते हो कि इनकी बुद्धि और स्मरण आंखोंवालेसे अधिक होतीहै कहा किइनकी देखनेकी शक्ति मनमें प्रकटहुई है इसीवास्ते अंधों के मनों में बहुत विचार उठा करते हैं इसपर इब्नअब्बासका बचनहै जिसका अर्थ यहहै किजो ईश्वर मेरी आंखोंकी ज्योति को दूरकरदेगा तोमेरे मन और बुद्धिमें उन्की ज्योति भी आजावेगी और उसके कारण मेरी जिह्वा उपदेशमें तलवारके बराबर होजावेगी जिस स्त्री को मासिक धर्म्म हो तो जो वह आगे पीछेसे नंगी होकर आकाश के साम्हने खड़ीहो तो बादल जाता रहेगा और बुद्धिमानोंने यह भी लिखा है कि जिस पृथ्वीपर ऋतुके रुधिर के कपड़े पड़े होंगे उस पृथ्वीपर आकाश से पाला न पड़ेगा जो ऐसी स्त्री नंगीहोकर जंगल में खड़ी होगी तो दुःखदायी जानवर उसके गिर्द इकट्ठे न होंगे और जो ऐसी स्त्री किसी नहर में नहावेगी तो उसका पानी कड़ुवा होजायेगा जो साफ़ शीशेपरदृष्टि करे तो उसकी सफ़ाई कम होजावेगी जो पुरुष ऐसी स्त्री से भोग करे उसका आनन्द सुन्दरता सब कमहोजावेंगे जिसको मिरगीने ज़ोर कियाहो ऐसी स्त्री उसके शरीरपर हाथ मलदे अच्छा होजावे यदि मासिक धर्म्मवाली स्त्री सर्पके शरीरपर हाथ लगावे तो वह सर्प मरजायेगा और जो ऐसी स्त्री बकरियां चराने जावे तो उसके गल्लेपर कभी भेड़िया हमला नकरेगा कदाचित् भेड़िया आवे तो उसके पेटमें पीड़ा होगी यदिमासिक रुधिर के लत्तेको किश्ती पर लटकावें तो विपरीत पवनोंसे रक्षा रहेगी और जिसको चौथे दिन ज्वर आताहो वह स्त्री के प्रसूति के कपड़े पहने तुरन्त अच्छा होजावे (मनुष्य के अंगों का गुण वर्णन) बुद्धिमान् कहते हैं कि जो स्त्रीका पूरा बाल खारी पानीमें गिरे और उस समय सूर्यग्रहणहो तोजब सूर्य्य साफ़होकर चमकेगा तो वह बाल साफ़होजायेगा यदि मनुष्य केशोंकी धूनी लेवें तो भूल दूर होजावे यदि इसकी राख लेय पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा पर लगावें दूरहो जो मनुष्य के कच्छेको

किसी धरतीमें गाड़े वहां पर कबूतर बहुत इकट्ठे होंगे जहां आदमी के कल्ले पड़ेहोंगे वहांसे चीते भाग जावेंगे जिसे सर्पने काटाहो वह मनुष्य का भेजा खावे या घाव पर रक्खे तो तुरन्त विष दूरहोगा आदमीके वह आंसू जो प्रसन्नता में निकलतेहैं कोई पिये तो उसका शोक दूरहोगा और इसीसे मिरगी भी दूरहोती है जो चिन्तित मनुष्य का आंसू पीवें वह बहुत रोवें और मनुष्यकी थूक मुख्य बिच्छू के लिये विषहैं जालीनूसने लिखाहै कि एक मनुष्य बिच्छू का मंत्र जानता था तो पहले वह मनुष्य मंत्र पढ़ताथा फिर उसपर अपनी मुंहकी थूक फेंकता था और पकड़ लेता था परन्तु वह निहार मुंह बिच्छू पकड़ा करता था अन्तको जालीनूसने उस मनुष्य को बुला करं पहले भोजन खिलाया फिर बिच्छू मंगाकर साम्हने किया उस समय उसने कितनाही मंत्र पढ़ २ कर थूक डाला परन्तु वह बिच्छू नमरा सो जालीनूस समझगया कि यह प्रभाव जादूकानहीं है किन्तु यह थूक का गुण है लिखा है कि जो मिक़नातीस अर्थात् चुंबक पत्थर पर लगावें उसका स्वभाव लोहे का खींचना जाता रहेगा जिस लड़के का दूधका दांत टूटे परन्तु उखड़कर ज़मीन पर नगिराहो और किसी स्त्री के यन्त्रकी तरह लटकावें वह सदैव काल बांझ रहेगी मुरदे आदमी के दांत दांतों की पीड़ा के समय पास रखना उपयोगी है इसीतरह मुरदेकी हड्डियां चौथिया तप वाले को गुण दायक हैं और मनुष्य की हड्डियों की राख खाना मिरगी दूर करती है जालीनूसने लिखा है कि एक मनुष्य मिर्गी की चिकित्सा में बहुत प्रसिद्धथा निदान बहुत निश्चय करनेपर मालूम हुआ कि मुरदे के हड्डियों की राख खिलाता था जो मनुष्य की आंवल काटी जाती है उसका एक टुकड़ा ज़बरजद के नगीने के नीचे रखकर अंगूठीबनावें तो जोमनुष्य उसअँगूठीको पहनेगा कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा उसको नहोगी लड़केके लिंगकीसुपारी सुखाकर थोड़ी कस्तूरी मिलाकर खिलावें तो कुष्टके प्रारम्भ में बहुत उपयोगी है कभी बीमारी नबढ़ेगी जो लड़केके लिंगको किसी लकड़ी में लटका

कर खेतमें लटकावें वहां टिड्डी नआवेंगी जो लड़केके लिंग को कुत्ते या बिल्ली खावें दीवाने होजावें जो उसको सुखा कर सुरमा लगावें आंखोंके रोग दूरहों जो मनुष्यके नख काटकर उसकी राख जिसको खिलावें वह मित्र होजावे परन्तु शर्त्त यह है कि वह मनुष्य इस टोटके को नजाने मनुष्यके रुधिरको पानीमें मिलाकर पेट की पीड़ा पर मलना पीड़ा दूरकरता है जिस मनुष्य की नासिका से रक्त निकलताहो जो उसीरुधिरसे उसमनुष्यका नाम कपड़े परलिख कर उस कपड़ेको उसके नेत्रों के साम्हने रखदें रुधिर बन्द होजावेगा दीवाने कुत्ते के घाव पर ऋतु का रुधिर लगाना उपयोगी है और छीप और कोढ़ को भी गुणदायक है और जिस आंख में पीड़ाहो तो नेत्रके गिर्द ऋतु के रुधिर का लेपकरें पीड़ा दूर होजाय और जो कुंवारी लड़की के ऋतुका रुधिर लगावें सपेदी आंख की नष्टहोगी यदि स्त्री अपने ऋतुका रुधिर अपनी छातियों पर मलले तो छातियां छोटी और सख़्तरहेगी जो बवासीर का रुधिर कुत्ते को पिलावें तो दीवाना होजाय और पुरुषके वीर्यको कोढ़ या छीप या दाद पर मलें दूर हो जो वीर्य को गवीराके तेलके साथ मिला कर किसी स्त्री को खिलावें तो वह प्रीति करनेलगे जो पसीना मनुष्य को हम्माममें निकलता है उसको लेकर फोड़े पै लगावे जल्दीपके यदि मिर्गीवाले का पसीना स्त्री अपनी छातियों पर मले दूध इकट्ठा हुआ जारी होगा जो मनुष्यके मूत्रको उबालकर पांव की उंगलियों की पीड़ापर लगावें गुणकरे असमर्थ लड़केका मूत्र तांबेके पात्र में शहद डालकर लगाना आंखकी सपेदीको उपयोगी है और कमल वांयुके रोगीको पीना गुणदायक है परन्तु शर्त्त यह है कि रोगीको मालूम न हो बीस बरसकी आयुवालेका मूत्र कुष्टीको पिलाना लाभ करे यदि ऐसे मूत्र को खाज और दाद पर लगावें गुणदायक है लिखा है कि पूर्व समयमें एक मनुष्यको तिल्लीका रोगहुआ उसने स्वप्नमें देखा कि किसी बड़े ने उपदेश किया कि अपने मूत्र के तीन चुल्लू तीन दिन तक पिये सो उसने ऐसाही किया और उसे आराम

हुआ और यह हाल सुनकर औरोंने भी परीक्षा की तो यह क्रिया सिद्ध निकली बुद्धिमानों ने लिखा है कि लड़कों की विष्टा आंख में लगाना सपेदीको नष्टकरता है यदि सुखाकर और राख बनाकर नासूरपर लगावें तो उसका उपद्रव कारक मांस निकाल कर बराबर करदेता है जिसको रतीला नामीमकड़ी ने काटाहो उसे मनुष्य कीविष्टा खिलावें और गरम तन्दूरमें बिठलावें कि उसके पसीना निकलेगा और आरामपायेगा जो मनुष्यकीबिष्टा और भिड़दोनों जलाकर तीन दिवस पर्यंत खाजपर मलें परन्तु हम्माम के अन्दर जो ईश्वर चाहे रोग शांत होगा जो नेत्र में लगावें आंख की लाली और खाज दूरहोगी जो कीड़े मनुष्यकी विष्टामें से निकलते हैं जो उनको इकट्ठा करके पीसे और सलाई से आंख में देवे तो आंख की सपेदी दूरहोगी (अन्य प्रकार पालू चारपायोंका वर्णन) यह प्रकार सम्पूर्ण पशुओं में सुन्दरता और लाभमें उत्तम होती है जो कि मनुष्य क्षीण शरीर और क्षीण वर्ण और क्षीण गति है और बहुधा अपने शत्रु और अपनी जातिके बिरुद्ध जीव धारियों को रखता है सो परमेश्वरने बुद्धिमानीसे पशुओंकाप्रकार मनुष्यकेलियेउपजाया कि मनुष्य उनसे अपनेमनकाकार्यलें और इसप्रकारके पशु मनुष्य के लिये पंख और बाज़ुओंकी जगहपर हैं ईश्वर का बचनहै कि घोड़े खच्चर और गधेइसलिये हैं कि तुम उनपर सवार हो और तुम्हारी सुन्दरताहो जैसे घोड़ा कि उसकीबुद्धि मनुष्य से अधिकतर है और कानछोटे दुमलम्बी और समझकाशुद्धगधेसेहै और पूंछकेलम्बेहोने से कीड़ोंका दूरकरताहै जब पशुओंसे तीक्ष्णमतिकी अभिलाषहुई तो अवश्यहुआ कि उनके सुममज़बूतहों इनसे दौड़नेमें दुःखकमहो और अपने प्रबलशत्रु के दूरकरनेके लिये कठोर शस्त्रहों और यह बात ठहरीहुईहै कि जिस पशुकेसुमहों उसके सींग नहींहोते और जिसके सींग हों उसके सुम नहीं परन्तु नख होतेहैं जिनको खुर कहतेहैं और यह इसलिये होतेहैं कि वह उससे अपने शत्रुकोदूर करे क्योंकि इनदोनोंकीउत्पत्ति एकहीमूल वस्तुसे है उस ईश्वरकी

स्तुतिकरताहूं जिसने हरचीज़को वहवस्तुदी जो उसको दरकारथी अब यहांपर कई पशुओंका वर्णन होता है (फरस) अर्थात् घोड़ा यह सम्पूर्ण पशुओं से उत्तम होताहै यहांतक कि मनुष्यके रूपके पीछेयही अच्छाहै और सम्पूर्ण पशुओंसे सख़्ती और दौड़ने औरर गुणों में उत्तम विशेष करके इसपशुमें शोभा और अंगोंका शुभ होना और रंगकीसफ़ाई और चलनेकीतेज़ी और सवारका आज्ञा पालन गुणहै इन घोड़ोंके प्रकारों में एक चौगानीहोता है जिसकी पीठपर गेंदखेलतेहैं अर्थात् उसकेसवारको इसबातकीआवश्यकता नहींहोती कि उसकी बागमुड़ावे किन्तु आपही घोड़ेकीदृष्टि गेंदकी ओररहतीहै जिधर गेंददेखताहै मुखकरताहै बाज़ाघोड़ा ऐसाहोता है कि अपने मालिकको पहिंचानताहै दूसरे की मजाळनहीं कि उस पर सवारहो बाज़ाघोड़ा ऐसाहोताहै कि हिरण के शिरपर पहुंचता है कि उसका सवार हिरणपर तलवार का वारकरे सायबकल्बीका पुत्र मुहम्मद कहताहै कि अच्छेर घोड़े सुलेमान को दिखाये गये यह सब हज़ार घोड़ेथे जो उनके पिताकी थातीसे मिलेथे सो जब यहघोड़े हज़रतको दिखायेगये इतनेमें आपकी निमाज़ का समय जातारहा और सूर्यअस्तहुआ उससमय हज़रतने उन सबघोड़ोंको मरवाडाला केवल थोड़ेघोड़े जो दिखानेसे रहगये थे बचरहे मुद्दत केपीछे हज़रतके ससुरोंका समूह सामने आया और विनय करने लगा कि अयहज़रत हमारा निवासस्थान बहुतदूरहै कुछ राह खर्च चाहिये कि पहुंचजावें हज़रत ने उनबचेहुये घोड़ों में से एक घोड़ा देकर कहा कि इस घोड़ेमें यह स्वभाव है कि जब तुम मंजिल पर पहुंचोगे और भोजन के पकाने का विचार करोगे तो जितनी देर में कि तुम आग सुलगाओगे उतनी देर में यह घोड़ा तुमसबों के वास्ते भोजन कहीं से लादिया करेगा सो ऐसाही हुआ उस दिन से उस घोड़े का नाम तोशासवार रक्खागया कहते हैं कि अरब के घोड़े उसीकी नसल में से हैं (घोड़ेकेजोड़ों के गुणोंका वर्णन) जो घोड़ेकेदांत किसी लड़केके बांधे उसको दांत निकलने में दुःख

न होगा और जो ऐसेमनुष्य के शिरकेनीचे रक्खें जो स्वप्नमें दांत पीसताहो तो यहआदत उसकी दूरहोजावे इसका मांस हरप्रकार की बातको दूर करताहै जो दारचीनी के साथ खायें बलकी वृद्धिहो जो पुरानेघोड़े के लिंगको नमक के साथ घिसकर गरम पानी में भिगोवें और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ापर मर्द्दनकरें गुणकरे और जो इसकी पूछका बाललेकर मकानके दरवाज़ेपर तानदें उसमकान में मच्छड़ न आवेंगे जो सुमको जलावें और उसका धुवां स्त्रीकी भगमेंदें पेटसे मुरदा बच्चा और उसका मलआदि निकल जायेगा यदिदुष्ट घोड़ेके सुमको घरमें गाड़ें चूहे उस मकान में न रहेंगे जब पक्षियों के बच्चे अण्डेसे बाहरहों जो उनको घोड़ेके सुममें पानी पिलाया जाय तो शाहीन आदि शिकारी पक्षियोंसे उनको दुःख न पहुंचेगा जो घोड़े का पसीना लड़के के बगल लिंगस्थल में मलदें बाल न निकलेंगे जो बवासीर में मलें गुणकरे इसमें गांसी भी भिगोनेसे बिषैलीहोजातीहै और उसकेघावकी चिकित्सा असंभवित है इसकी बिष्टाका धुवां भगके नीचेदेना प्रसूतिसे सुगमता करताहै घावका जारी लहू भी इसके रखने से बन्द होताहै यदि बिष्टाका रस नाकमें टपकावें नकसीरको लाभदायकहै और कानमें टपकानेसे कर्ण पीड़ा जाती रहतीहै यदि घोड़ेकी लीद और मनुष्य की बिष्टा एकदिरमलेकर और मद्यएक दिरम लेकर फफोलोंके कालेघावपर मरहम की तरह लगावें तुरन्त दूर होजाय जो इसमें शहद नमक और नौसादर भी बढ़ावें तो गुदने का निशान मिट जावे सूरत घोड़ेकी यहहै॥ तसबीर नम्बर २५६

(बगल) अर्थात् खच्चर यह जानवर घोड़े और गधे के मैथुन से उत्पन्न होताहै फ़ारसी में इसको अस्तर कहते हैं जो गधानर हो तो उसकी सूरत घोड़ेसे बहुत मिलतीहै जो घोड़ा मादाहो तो गधे से बहुत मिलताहै अधिक आश्चर्य यहहै कि इस जानवरका हर एक जोड़ घोड़े और गधे दोनोंसे मिलताहै इसीतरह कुच और शब्द परन्तु न तो घोड़े कासा समझदार होता है और न गधे कासा

बे समझ खच्चर की मादा की आयु बहुत बड़ी होतीहै परन्तु निस्संदेह नहीं जनती है बाजे लोग कहते हैं कि उसके पेट में बच्चा नहीं रहता है कइयों का वाक्य है कि पेट में बच्चा रहताहै परन्तु बाहर नहीं निकलता क्योंकि उसके निकलने का मार्ग तंगहोता है इसलिये अपनी माताको मारडालता है इसी कारण जो संयोगसे मादा जुफ्तीखातीहै तो तुरन्त उसको दौड़ाते हैं कि वीर्यनिकलजाय क्योंकि जो गर्भवती होगी तो जनने के समय अपने बच्चे के कारण मरजायेगी (खच्चर के अंगोंके स्वभाव का वर्णन) जो कानकी लौकामांस स्त्री खाये तो बांझहोजाय और यही गुण उसके कानके मैलकाहै जो मनुष्य इसके हड्डियोंकी मींगीखाय तो बेहोश होजाय जैसेसोगयाहै जो यही हड्डियोंकी मींगी गर्भवती स्त्रीखाय उसका बच्चा कुरूप और निर्बुद्धिहो उसके दिलका खाना भी स्त्री को बांझ करताहै और जो इसके सुमको पांचदिरम आस वृक्षकातेल मिलाकर गंजे शिरमें लगावें बाल निकल आवें और बालखोरे को भी गुणकरे जिस मकान में उसके सुम या विष्ठा या बालका धुंआकरें वहांसे चूहे भागजावें जो उसके लिंगकोसुखाकर रेशम में बांधकर चारपायोंके बांधें कभी चलनेसे न थकें जो उसका लहू स्त्री बत्ती में लगाकर भगमेंरक्खें बांझ होजायँ जो इसकामूत्र गर्भवती पिये मुरदा बच्चा गिरजाय जो स्त्री को प्रसूति की पीड़ा हो और मूत्र पिये तुरन्त बच्चा उत्पन्नहो जो इसके ज़ंबूर को जो पीछेकी ओर होताहै सुखाकर बवासीरमें धुवांदें आराम होजाय जो इसके माथेका चमड़ा किसी जगहपर जलादें वहां कोई कार्य सिद्ध न हो जो इसके चर्म में पहाड़ी पोदीना बांधकर गर्भवती की भुजामें बांधे गर्भ न गिरेगा सूरत यहहै॥

तसवीर नंबर २१०

(हुमार) अर्थात् गधा काले जोड़ों वाला बहुत ठंढे स्वभाव का निर्बुद्धिहोताहै कहते हैं कि जो इसका शब्द सुने कुत्ते की पीठ में पीड़ा होतीहै जो कोई बिच्छू के विषसे अधीर्यहो चाहियें कि गधे

पर सवारहो और दुमकी ओर मुखकरे कि जब वह तेज़ दौड़े विष मनुष्य से गधेमें चढ़जाता है कहते हैं कि जो बीसमिस्काल भारी पत्थर का टुकड़ा उसकी पूंछमें लटकावें तो कभी न चिल्लावे बलैनास लिखताहै कि एक बेवकूफ़ी उसकी यहहै कि शेरको देखकर उसकी ओर दौड़ता है इसबिचार से कि उसकी तेज़ी से शिकार का इरादाउसका सुस्त होजावे जैसा कि बकरी भेड़िये के सामने जातीहै (इसके स्वभाव) जो इसकीहड्डियोंकीमींगीको ज़ैतूनके तेल मेंजोशदेकर शिरमेंमलें शिरकेबाललंबेहों जो उसकाभेजाखावें विस्मरणका वेगहो जो गर्भवतीस्त्रीखाय तो बच्चा अहमक पैदाहो जो उसकेदांत ऐसेमनुष्यके शिरहानेपर रक्खें जिसकोनींद न आतीहो तो तुरन्तसोजाय इसके कलेजे को सुखाकर और पीसकर जिसको चौथिया तपआतीहो उसकायंत्रबनावें तुरंत आराम होजावे जो इस की तिल्लीसुखाकर स्त्रीकीछातीपर मलें दुग्धकी अधिकताहो जो इस का सुंमजलमें घिसकर मिरगीवालेको पिलादें उपयोगीहै जो तेल मिलाकर कंठमालापरमलें गुणकारकहै बलैनास कहताहै कि इसके सुमको घिसकर पुराने कोढ़ पर लगावें आराम होजावे जो सुमका धुवां गर्भवतीस्त्री लेवे शीघ्र बच्चा पैदाहो जो उसकोजलाकर और अखरोटके तेल में मिलाकर नासूरपर मर्दनकरें लाभकरे जो पुरुष उसके दुमके तीनबाल स्त्री से मैथुन करने के समय अपनी पिंडली में बांधे जल्दी वीर्य्य पतितहो जो इसका मांसखावे बिषके उपद्रवों से बचा रहे और कोढ़वाले को उपयोगी है जो इसके मांस और चरबी को जैतून के तेल में पकाकर लगावे जोड़ों की पीड़ा को दूर करे जो इसकी चरबीको घावपर लगावे गुणकरे और उसके चिह्नों को नाशकरदे जो उसके माथे की त्वचा को जलाकर पानीमेंमिला कर किसी समूह को पिलावें तो उन में परस्पर बिरुद्ध होगा और जो उसके अगले दहिने खुरकी अँगूठी बनाकर मिर्गीवाले के गले में लटकावें गुण करै इसका रुधिर बवासीर को गुणकरे इसका दूध लड़के के रोनेको उपयोगी है और इसके दूधको गरम करके

कुल्ली करें दांतों की पीड़ा दूरहो इसका पीना बिषेली चीज़ों और आंतों और पेट और फेफड़े के घाव और लड़कों की खांसी को उपयोगी है जिस मनुष्य को कोड़े से माराहो या उसको सुस्ती ने सतायाहो या बदगोश्त होगयाहो या हड्डी फटगईहो जो उसको ताज़ा गधेका चमड़ा उढ़ाके सुलावें तो जागनेपर उसकी पीड़ादूर होसक्ती है और इसके माथे का चमड़ा मिरगी वाले को गंडे की तरह पर पिन्हावें गुणकरे और जो उसके पूछ के बाल शराब में डालकर किसी को पिलावें वह लड़नेलगें जालिज़का निश्चय है जो गधेकी लीदका रस गरम २ पीवें पथरीकी बीमारी दूरहो और कोड़ेखाये दांतों को भी गुणकरे और नकसीर वालेकी नाक में डालना भी लाभदायक है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २७८

(हुमारुल वहशी) अर्थात् गोरखर (जंगली गधा) यह जानवर और चौपायों से कठोर होता है और स्वरूपमें सब एकसे होते हैं यहां तक कि पहिचाने नहींजासक्ते इस समूह की मादा बच्चादेने के समय ऐसे स्थानपर चलीजाती है जहां कोई नहीं पहुंच सक्ता और अपने बच्चे कोभी जंगलसे जबतक कि उसका सुमसख़्त न हो ले और दौड़नेकी शक्तिनहो नहींलाती है क्योंकि जो नर इनके नर बच्चे देखते हैं तो अंड निकाल डालते हैं और दूसरे इन जानवरों का यह भी स्वभाव है कि अलग २ नहींचलते चाहे हज़ारों हों मिले रहेंगे इसी दृष्टि से इनका शिकार सुगम होता है अर्थात् शिकारी ऐसी तंग जगहपर घात लगाकर बैठते हैं जहांसे यह निकलते हैं और जब वह निकलते तब शिकार करते हैं तोजो और लौट जावें तो बचेरहते हैं नहीं तो उनका स्वभाव है कि वह यही चाहते हैं कि जहां पहला गधागया है वहीं हमभी जायँ एक प्रकार उनमें से अजदरिया होते हैं अजदर नाम एकघोड़े का जो आरदशेर किसरा के पासथा अकस्मात् वह जंगली होकर जंगल कोचलागया और गोरखरों में जामिला तो जो उससेनसलबढ़ीवह

अजदरियाकहलाई यहप्रकारउत्तमहोती है (स्वभाव) जो इसकी हड्डियोंकीमींगी को पारे और तेल में घिसकर मलें गुणकरे और अधिकउसको उपयोगीहै जो बिछौनेपर मूत्रकरताहै जोइसके पित्ते को जिसको बारीसेतप आताहोअपने शरीरपरमले आरामपावेशेख रईसका निश्चयहै कि इसकामांस गुलाबतेलकेसाथमलना पांवकी उंगलियोंकी पीड़ाकोगुणकरे और उसकीचरबीछीपपरमलनालाभ करे और जो पेटकीपेचिशमें इसकालिंग चीरकर और उसमेंनमक और केसरमिलाकर खायेंगुणकरे और जोमहीनेकी पहलीतारीख़ को उसके सुमकी अँगूठी बनाकर उन्माद और मिरगीवाले रोगी के गलेमें लटकावें तो यहरोगजातेरहैं और जो सुमजलाकरसुरमा बनावें आंखकी अंधेरी और रतौंधी को उपयोगी है और इसकी लीदतन्दूर मेंडालेंतोरोटियांतन्दूरसेछुटकरआगमेंगिरपड़ेंऔर जब उसको सुखाकर अंडेकी सपेदी के साथमिलावें और नाकमेंलगावें तो लहूका निकलना बन्दहोजावे सूरत उसकीयह है॥

तसबीर नम्बर २५६

(उलनोम) नोमउन पशुओं को कहते हैं जिनको चरातेहैं और यह जानवर बहुतहैं और इनकागुणभी बड़ाहोता है और मनुष्यों के समूहसे इनकोप्रीतिहै औरइसप्रकारके जानवरों में बुरास्वभाव नहींहोता और न और जंगली जानवरों की तरह भागते हैं और उनकेदांत औरपंजे और सुमजंगलीजानवरों के हथियारोंकी तरह नहीं होते इसलिये ईश्वरने इससमूह को ऐसेगुणों के साथ उत्पन्न किया कि उनसेलाभ उठासकें सो ईश्वरनेकहा है कि नहींदेखाउन लोगों ने कि हमने उनकेवास्ते उनवस्तुओं को उत्पन्नकियाजिनको हमने अपने हाथसे पैदाकिया था चारपाये और उनजानवरों को तुम्हारेआधीनकिया कि कइयोंपरतुमसवारहोते हो और कइयोंको खातेहो और न सवारी के जानवरोंकी तरहइनके सुमहोते हैं किन्तु सुमकेबदले खुरहोते हैं और शिरपर इनकेसींगहोतेहैं कि जो काम सुमसे होसक्ता है यहअपनेसींगसेलें सोसींग और सुमएकजानवरमें

नहींहोते परन्तु गैंड़ेमें होते हैं और एकसींगशिरपरहोताहै क्योंकि और जगहहोतातोदुश्मनको दूरनकरसक्ता और बैलकोसींगदियेतो यहबात प्रकटहुई कि पशुओंका तीनप्रकार के हथियार कृपा किये सींग या सुमया दांत जबएकनष्टहोताहै तो दूसराउसकेस्थानापन्न होजाताहै और जोकि चारा इनका घास है इसलिये इनका मुख चौड़ा बनाया और दांत तेज़ और जबड़ा सख़्त दिया कि जो कुछ दाना छाल बीज मुखमें आवे उसको चबावें और जो कि इनपशु-ओं को बलकी अधिक आवश्यकता हुई ईश्वरने इनका पेट चौड़ा बनाया कि बहुत सा भोजन समावे और एक आश्चर्य्य यह है कि जो जानवर जल्दी में बे चबाहुआ चारा खालेते हैं तो पीछे उसको पेट से फिर मुख में खींचलाते हैं और फिर खूब चबा के निगलजाते हैं कि पाचकाग्नि को उसके पकाने में कठिनता न हो इसी को जुगाली कहते हैं ऊंट के दांत में कैसाबल है कि रात दिन चलतेहैं और घिसते नहीं और अग्नि ऐसीहै कि सूखी घास को लहू और मांसबनाती है (अबल) ऊंट पशुओंमें अद्भुतथा परन्तु उसकाअद्भुतहोना मनुष्यकी दृष्टिसे गिरगया इसकाकारण यह कि यहबहुत देखनेमेंआताहै हां जिसने न देखाहो और न सुनाहोउससे कह सक्तेहैं कि ऊंट एकबड़ा जानवर और बहुतआज्ञा पालनकरने-वाला होताहै और बोझ उसपर लादतेहैं और उस बोझके लदने परभी उठता बैठताहै और जो एक चूहाभी उसकी महारखींचे तो जिधर चाहे लेजाय और ऊंटकी पीठपर घर ऐसा बनातेहैं और उसपर बहुत से लोग सवार होते और खाने पीनेकी चीज़ेंलादतेहैं उसको कजावा कहतेहैं उसपर सवार होकर कारीगरलोग अपनी कारीगरीका काम करतेहैं और उसमें ऐसे बैठे रहतेहैं जैसे किश्ती में तथाचआयत साक्षीहै जिसका यह अर्थहै कि वह लोग ऊंटको नहीं देखतेहैं कि उसकी उत्पत्तिकिसतरह कीगईहै जोइस जानवर को दशदिनतक पानीनमिले तो सन्तोष करसक्ताहै और तीनदिन तक बिना खानेके भी रहसक्ताहै और ईश्वरने इसकी गर्दन लंबी

कीहै कि हाथपैर के बराबर हो और जब खड़ेहोकर चरनेलगे तो उसको दुःख न हो और उसके होंठ बदनके खुजलाने को जहां पर वह चाहेपहुँचजायँ कहते हैं कि यहजानवरमनमें शत्रुतारखनेवाला होताहै जो शुतरबान उसको मारे तो चाहे कितना समय बीता हो वह उसका बदला लेवेगा और यह जानवर शबात के महीनें (रूमीमहीना जिसको गुणकहते हैं) कामीहोकर बहुत खानेलगता है और उनदिनों इसको बहुत मारका भी बिचार नहीं होता इन दिनोंमें तीनऊंटका बोझ एक ऊंट उठासक्ताहै उस समय उचित है कि पहाड़ी पोदीनेका रस उसके दोनों नथुनों में डालें कि उसकी मस्ती दूरहो और जब ऊंट जंगलमें बीमारहोताहै तो बलूतके पत्ते और फल खानेसे आराम पाताहै और जो सांपकाटताहै तो केंकड़ा खानेसे अच्छाहोजाताहै बलैनास कहताहै कि केंकड़ा सर्प के बिष के दूरकरनेकेलिये बहुत उत्तमहोताहै कहतेहैं कि ऊंटके पित्ता नहीं होता और जो ऊँटके बिलबिलानेके समय गलेमें आजाता है उस को नहीं मालूम क्या कहते हैं (गुण) जो इसकी हड्डियोंकी मींगी को गंदनाके साथ गर्भवती स्त्रीके उदरपर मलें तुरन्त बच्चा पैदाहो कहतेहैं कि ऊंटके पित्तानहींहोता परन्तु उसके स्थानपर एक और चीज़ छिलके की तरह होतीहै और उसछिलकेमें लस होती है जो उसलसको आंखोंमेंलगावें रतौंधीको गुणकरे और गलेकादर्ददूरहो जो तीन रत्ती लसको मुश्क समेत मिर्गीवाले की नाक में टपकावें बहुत गुणकरे जो कोई सदा ऊंटका कलेजाखाय आंख का ढलका बन्दहो जो तीनबेरा खाय आंख की अँधेरी दूर होजाय जहां पर इसकी चरबी रक्खें वहां सांप न रहेंगे और जो इसके कन्धे को जलाकर पानीके साथ बवासीर परमलें गुण करे और केवल धुवां भी उपयोगीहै बलैनासने लिखाहै कि ऊंटके कानमें एक किनारा पत्थरकी तरह होताहै जब उसको बाहर निकालें बिल्कुल पत्थर होजाताहै तो जबउसको सिरकेकेसाथ पीसतेहैं तो सफेद होजाता है यह बिषके दूर होनेके लिये गुणकारक है इसकी हड्डियों को

घिसकर मिर्गीवाले के शिरपर मलें गुणकारी होगा जो मूत्ररोध में इसके बालको बाईं रानमें लटकावें उपयोगीहै या लड़केकी बाईं रानपर जो लड़का बिछौने पर मूत्र करता हो बांधें तौभी दूर हो और जो इसके बालको धरतीमें गाड़ें और उसपर कोई लड़का मूत्र करे तो उस मट्टी को नाकमें डालें लहू का निकलना बन्द होजाय इसका दूध विषके दूर करनेमें बहुत उपयोगीहै जो किसीके दांतों में कीड़ेपर गयेहों और उन कीड़ों से उसके दांतपीड़ा करतेहैं। तो इसकेदूधकीकुल्लीकरे गुणकरे जोइसकामूत्र धूपमेंरक्खें यहांतक कि सूर्य्यकी गर्मीसे वह सूखजावे और वह बँधजावे उससमय सलाई आदिके द्वारा नासूरमें भरदें तो गुणकरे जो इसके मूत्रको शिरपर मलें तो बफा को दूर करेगा और जो कोई उसका मूत्र पी ले तो कलेजेकी पीड़ा और मुखका पीलापन दूरहो और कानमें टपकाने से कानपीड़ा में लाभ होताहै शेख़रईसने लिखाहै कि जिस मनुष्य को नकसीरकी बीमारीहो और उसकी नाकमेंसे बहुत रुधिरआता होतो वह ऊंटकी मेंगनी अपने शिरपर लेप की तरह पर लगावे जो ईश्वर चाहे तो रोगदूर होजायेगा और इसका लेप घाव के चिह्नको भी दूर करताहै सूरत ऊंटकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर२६०

(बक़र) अर्थात् बैल इससे बड़े २ लाभ होतेहैं और बड़ाज़ोरावर होताहै और मनुष्यका आज्ञाकारी है जो कि बैल मनुष्य की रक्षाकरने वालों में है इसलिये परमेश्वर ने उसके लिये हथियार दुखदाई जानवरों की तरह पैदा नहींकिये मनुष्य इस जानवर की बहुत आवश्यकता रखताहै तो जो इसके पास हथियार होते तो क्योंकर मनुष्यउसपरअधिकारपाता परन्तु कभीनकभी अपनेसींगों से अपना कामकर जाताहै ईश्वरने बैलके ऊपर वालेदांत नहींपैदा क़िये यह जानवर नीचेके दांतोंसे चारह खाताहै जो इस जानवर को खस्सी न करें तो कमलाभ देताहै इसकारण कि जल्दीबूढ़ाहोजाताहै और जबइसको कामदेवकीअधिकताहोतीहै तो तलवारकी

चोटसे भी नहीं हटता जो तेलसे इसके नाकके नथुनोंमें गरमतेल लगावें मिर्गीआनेलगे और जो उसकेशिरको गरमतेललगावें शब्द न करे जो उसकेनखपर कोईउपद्रव हो और गरमतेल लगावे तो गुणकारीहो बैल कीचाल अच्छी होतीहै जिसकी गतिसे स्त्रियोंका दृष्टान्तदेते हैं जब यह बीमारहो हाथीदांत इसके सींगपर लगायें गुणकरे (गुण) जो इसके सींगों की राख चौथिये के ज्वरवाले को खिलावें आरामहो जो कोई उसे शराबमें पिये कामदेव अधिकहो और नाक में डालने से लहू का बहना बन्दहो इसके दोनों सींगों की धूनी से टिड्डियां भागती हैं या मरजाती हैं जो दोनों सींगोंकी राख सिरके में मिलाकर कोढ़ में लगावें और धूपमेंबैठें गुणदायक है इसकी हड्डियों की मींगी को ताजे तेलमें कजली करके कान में डालना पीड़ा ठहराता है इसका पित्ता चरचटे और मूलीकेबीजमें मिलाकर पानी में उबालें और छीप पर मलें और थोड़ीदेर ठहरे रहें रोग दूरहोगा जो इसको ग़बीरा (एकबड़ावृक्ष जो उन्नावके वृक्ष सा खिलाहुआ ठण्ढेदेशों में होता है) के पत्तोंमें मिलावें और उसको स्त्री भग में बत्ती रक्खे गर्भ धारणकरे उसके पित्ते में एक पथरी मसूर के बराबर होती है जो उस दाने को शाहदाने और खुरफे के पानी में मिलाकर मिर्गीवाले की नाक में टपकावें गुण करे और जो उसके पित्तेको वृक्षमेंलगावें उसवृक्ष में कीड़े न होंगे तो काले गाय बैलकीजिह्वा सुखाकर नींबूके रसमें मिलावें और दसदिरमजिसपरछिड़कें उसकेशत्रु सदैवपरास्तरहें जो चूहेकीमेंगनी उसकेपित्तेसे मिलाकर कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ावाला शाफ़ेकी तरहपर सेवनकरे तो आरामपावे और जो इसकेपित्तेको सुखाकर उसीकेबराबर पीलीगन्धक और गऊकादूधलेकरधुवांदें तो जोमरा भी बच्चाहो तुरन्त प्रसूतिहो यदि सांडके पित्तेको शहदमेंमिलाकर तालूपरमलें बँधीआवाज़को खोलदे जो कालेबैलका पित्ता आंखमें लगावें ज्योति अधिकहो जो आश्चर्य्य दिखानेवाला तमाशाकरना चाहे तो एक मटका गर्दनतक ज़मीनमेंगाड़ें और उसकेअंदरचरबी

बैलकीमलें तो सब घरके मच्छड़ उस घड़ेमें जाकर इकट्ठे होजायँ यदि बैलके मुरदे को कंठमालावाले की गर्दनमें लटकावें रोग दूर होगा बैलकामांस अति हानिकरहै और बुरी बीमारियां लाता है जैसे झाईं और सरतान अर्थात् पीठकाफोड़ा और खाज दाद कोढ़ और बहम और पीलपांव आदि और जो बछड़ेकालिंग घिसकरपिये तो वीर्यको बल अधिक हो कदाचित् बछड़े के लिंगको सुखाकर महीन पीसकर आधेभुने अंडेपर छिड़ककरपियें वीर्य अधिकहो जो बैलके नख जलावें और उसकी राखको दांतोंपर मलें बहुत चमक आजावे यह निश्चय बलैनासका है और जो इसके सुमको शहद सिरके और तेलमें मिलाकर मर्दनकरें तो मुखकी झाईं नष्टहो और जो उसकीराख शैतरज अर्थात् चीतकेसाथपकावें और कंठमालाके रोगपर मरहमलगावें कण्ठमाला गलजावेगी और इसकीपूंछ को जिसजगहजलावें उसजगहके रहनेवालोंमेंविरुद्ध प्रकटहोगा यदि कालीगायकादूध जौके आटेमेंमिलावें और नासूर या बवासीर पर उसका लेपकरें तो पीड़ा ठहर जावेगी पैगम्बर साहब ने कहा है कि गाय का दूध बहुधा पियाकरो वह हरवृक्ष को चरती है और इसके दूधमें इसीसबब से अधिक गुण आजाता है गोदुग्ध जरंदी और बवासीर में गुणकारक है और लहू इसका सूजन के गलनेमें उपयोगी है और दुखदाई जानवर के घावपर मलना अति लाभ कारी है बलैनास कहताहै कि इसका मूत्र मनुष्य के मूत्र में मिला कर चौथिया तपवाले के चारों हाथ पावँ की उँगलियों में लगावें तुरन्त दूरहो शायद ऐसाहो कि तीनबेर यहक्रिया करनी पड़े और गायके गोबर में अंगूरी सिरकामिलावें और कठोर फफोलोंपरमलें नरमकरदें और पकावे जब मकान में गोबर और माज़ूकाधुंवाकरें तो सब दुःखदाई जानवर भागजावें गाय का गोबर और गेहूं का तेल और सिरकेको आगपर उबालें जब आधारहजाय फिर सूखा गोबर मिलावें जिस जगह घाव में गांसी रहगई हो वहां लगावें तीनदिन में लोहेको बाहर निकालेगी जो सूखेगोबर धुवां योनिमें

दें तो उसगर्भवती के तुरन्त बच्चा पैदाहोजाय जो उसके गोबर को बलूत की लकड़ी के साथ जलाकर उसकीराख को गायके लहू में मिलावें और जिसके शिरपर बाल न हों उसके शिरपर एकमहीने तक बराबर मलें बाल निकलआवेंगे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६१

(बक़रुलवहश) अर्थात् बारहसिंगा यहजानवर हरसाल पुराने सींगको गिराकर नये निकालता है जब पुराने सींग गिराने का समय आताहै एकान्तस्थल में जाताहै और जबतक नयेसींगनहीं निकलते छिपारहता है कि कोई उसको मथडा न देखे और दोवर्ष का होनेपर यह तौर शुरूहोता है इसकेसींग अन्दरसे ठोसहोतेहैं परन्तु और सम्पूर्ण पशुओं के नहीं होते यह पशु बहुधा बजाने के शब्दपर कानलगाता है और प्रसन्न होता है बीमारी में सांपों को खाकर आराम पाता है और सांप को पूछ की तरफ़ से खाता है और उसके शिरको छोड़देता है और खाने के पीछे पानी पीता है किन्तु गेंगटे को खाताहै कि विष शरीरभर में न पैठे जब सर्प उस को देखताहै अपनीबांबीमें छिपताहै तो यहजानवर बांबीके किनारे जाकरश्वासके जोरसे उसको निकालकर खाताहै कहतेहैं कि कई सवार कुत्तों समेत इसके पीछे दौड़े यह जानवर भागा अकस्मात् मार्ग में सर्पदेखा पहले उसको मार कर खाया फिर दौड़ने लगा अर्थात् सांप की खुशी में अपने प्राणोंकाभी भय न किया (गुण) इसकी हड्डियों की मींगी अर्द्धांग को गुणकरे जिसके पास इसका सींगहो उसकेपास दुःखदायी जानवर न आवें इसीतरह जिस घर में हो वहांपर दुःखदायी जानवर न जावें उसके धुयें से सर्प भाग जाते हैं और उसकी राख दांतों की पीड़ा को लाभकरे जो इसकी राखको तेल में मिलाकर चारपायों के फटेहुये हाथ पावँ में लगावें लाभकरे जो उसके सींग को गर्भवती स्त्री के बांधे तुरन्त सुगमता से बच्चा उपजे इसके आंसू बिष के दूरहोने के लिये उपयोगी हैं इसका मांस उदर की पीड़ा को गुणकरे कहते हैं कि इसकेदिल

में एक हड्डी होती है जो इसके दिलका लहू शिर पीड़ा में लगावें गुणकरे और जो इसका दिल गाय के गले में लटकावें दूध बहुत हो इसका रुधिर बिष के दूर करनेवाला और कुलंज को उपयोगी है मूत्ररोध पर इसका हुकना करना गुणकरे इसके चर्म को घरमें जलाना सांपों को दूर करता है जो इसके बालों को जलावें चूहे भागजावें और जो इसके नख भुजापर बांधेसम्पूर्ण दुःखदाई जानवरों से बचें इसका सुम जलाना सांपों को दूर करता है और यही गुण इसकी बिष्टा के धुयें में भी है॥

तसबीर नम्बर २६२

(जामूश) इसको फारसी में गांवमेश और हिन्दी में भैंसाकहते हैं यह बड़े शरीर का पशुहोता है यह कभी नहीं सोता किसी समय पर आंख बन्द करलेता है कहते हैं कि उसके भेजे में ऊष्मा सदैव काल घूमती रहती है और इसी कारण नहीं सोता औरसब दुखदाई जानवरों को अपनी तरफ से दूर करता है और नाकाजो पानी का जानवर है उसका शत्रु है जो कि नाका इतने बड़े शरीर का जानवरहै तो भी उसको मारता है इसीकारण इस जानवर को मिसरके रोदनीलके किनारोंपर छोंड़देतेहैं कि घड़ियालोंका शिकार करे शेरसे नहीं डरता बरन उसके सामने जाताहै इसके सींग बहुत नोकदार नहींहोते बरन बैलोंकेतेज़ और नोकदार होते हैं यह अद्भुत बातहै कि शेरको परास्त करताहै और जोकि शेर बड़ाई के हथियार रखताहै पराजय होजाताहै और क्या ईश्वरकी माया है कि मच्छड़से भागताहै और पानी में जाकर बचता है कहते हैं कि जो इसको अंजीर के वृक्षमें बांधें बहुतदीन और निर्बलहोजावेगुण यह जानवर अपनी मातासे जुफ़्ती नहींकरता और जो इसके भेजे के जीतेकीड़ोंको किसीपर लटकावें उसको नींद न आवे इसकेमांस खानेसे जूं पड़जातीहैं और जो इसकी चरबी छीप और कोढ़ और खाजपर मलें दूरहो सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २६३

(जराफ़ा) अर्थात् शुतरगावपलंग इसका शिर ऊंट से मिलता है और बैलकी तरह सींग और चीतेकी सी त्वचा और बैलकी तरह सुम गरदन बहुतलम्बी होतीहै और दोनोंहाथ दोनों पैरोंसे लम्बे और दुम हिरणकी तरह होतीहै कहतेहैं कि इसकी नसल हब्शकी ऊंटनी और जंगली बैलसेहोतीहै कफ्तार जिसको हिन्दीमें हुण्डार कहतेहैं वह ऊंटनी से जुफ़्ती करताहै तो उसका बच्चा जो ऊंट हो और जंगली गाय से जुफ़्ती खावे उससे जो बच्चा पैदा हो उसको जराफ़ा कहतेहैं तैमासप हकीमकहताहै कि बिषवत् रेखाके निकट उत्तर की ओर गरमी की मौसम में तरह २ के जानवर दरिया किनारे इकट्ठे होतेहैं कामदेव के अधिकवेगसे उनको अपनी जाति का विचार जाता रहताहै वहांपर जुफ़्तीखानेसे ज़राफ़ा पैदाहोता है और समा और गुबारभी वहीं उपजताहै समा वहहै जो भेड़िये का बच्चा हुंडार से हो और गुबार जो हुंडार का बच्चा भेड़ियेसेहो और २ जानवरों से नानाप्रकार की नसलें प्रकटहोती हैं यमन के अधिपतिने एकबेर खलीफ़ाकीभेंटको ज़राफ़ाभेजाथा परन्तु जाड़ेमें उसकीरक्षा न हुई और वह मरगया यह जानवर अद्भुत था इसके गुण कुछमालूमनहीं इसकारण वर्णन न किये सूरत उसकीयहहै॥

तसबीर नम्बर २६४

(ज़ान) अर्थात् भेड़ इसमें बड़ीबरकतहै कि वर्षमें एक या दोबेर बच्चाजन्ती है और सदा काटीजाती और फिर भी इसकी अधिकता रहतीहै परन्तु दूसरेजानवर छः२ सात२ बच्चेजन्ते हैं और उनका निशान कहीं २ एक दो दिखाई देताहै यह जानवर अद्भुत होताहै यहांतक कि मनुष्य की प्रशंसा में कहतेहैं कि अमुकमनुष्य भेड़की तरह पर है भेड़ जब हाथी ऊंट और भैंसको देखतीहै उनके शरीर के बड़ेहोनेपर भयनहींखाती परन्तु भेड़ियेको देखतेही उसके प्राण कांपतेहैं यद्यपि इसजानवर से कुछही भेड़िये के जोड़ बड़े होते हैं परन्तु यह भय उसका स्वाभाविक है जो ईश्वरकी ओरसे है सुना

है कि जब बकरियों के गल्लेको भेड़िये बुग़दादके दरियाके किनारे पर देखते हैं पानी में गोता लगाते हैं जब इनको भेड़ियों का डर दूरहोताहै तो निकलतेहैं अद्भुत यहहै कि बहुधा रात्रिको कईबकरियोंके बच्चे होतेहैं और सुबहको जब उनको उनकी माताओंसमेत चरनेकी जगहपरलेजाकर शामकोलौटालाते हैं हरएकबच्चाअपनीमा को पहिंचानलेताहै परन्तु मनुष्यमें कईमहीनेकेपीछे यहशक्तिहोतीहै हिन्दुस्तान में एक प्रकार की भेड़ी होती है जिसके छः चकतियां चरबीकी होतीहैं छातीपर एकचकती दोनों कन्धोंपर दो और दोनों रानोंपर दो और दुमपर एकचकती होतीहैं (गुण) जो इसके सींग वृक्षके नीचेरक्खें ऋतु के पहले फलदारहो और फल मीठाहो और जो इसके पत्तेको शहदमें मिलाकर आंखोंमें लगावें ढलका दूर हो और सपेदीको भी नष्टकरे बहरेके कानमें टपकाना भी लाभदायक है और इसका मांस सदाखाना फुंसी और फफोला पैदाकरनेवाला है और निद्राका भी बेगहोताहै मिर्गीवाले को बहुतही हानिकर है और जो इसकी हड्डियां गज की लकड़ी में जलाकर गुलाब तेल में मिलाकर टूटीहड्डीकेजोड़परमलें हड्डीजुड़जायगी और मांसभी भर आयेगा और जो उसकीऊनकीशख आसकेदरख़्तकेपत्तेमेंमिलाकर उपद्रव कारक घावोंपरलगावें लाभकरे बलैनासनेलिखाहै कि जो इसकीऊनकी बत्ती स्त्रीभगमेंरक्खें कभी गर्भवती न हो जो शहदको उसकीऊनसे ढाकें चींटियां न आवेंगी सूरतउसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २५१

(मअज़) इसको फ़ारसी में बुज़ और हिन्दी में बकरी कहतेहैं यह जानवर अहमक़ होताहै अर्थात् मनुष्य के निर्बुद्धि होने पर कहते हैं कि अमुकबकरीहै यहजानवर भेंड़सेदूध और मोटाई और चमड़ेकी सख़्तीमें उत्तमहै और इसके चकती नहींहोती और इसके बदले इसकेअन्दर चरबीहै ईश्वरने बुद्धिमानीदेखी कि भेड़काचमड़ा पतला उपजाया क्योंकि उसपर ऊनबहुतहै कि उसको गरमरक्खे और बकरीका चमड़ा बहुत मोटाहोताहै कहतेहैं कि जब बकरीका

बच्चा शेर के बच्चे को देखताहै थोड़ा २ उसकी ओर चलताहै और उसकी गन्धकेपातेही मूर्च्छित होकर मुरद्देकी तरह होजाताहै और जब वह शेरका बच्चा वहांसे दूरहोजाता है यह होशमें आजाताहै एक प्रकारकी मकड़ी जिसको रतीला कहते हैं जब मनुष्यके शरीर पर उसकी ऊस गिरतीहै तो बड़ी पीड़ा उत्पन्न होतीहै बहुधा लोग मरजातेहैं इस मकड़ीको बकरीका बच्चा बहुत खाताहै और उसको हानिके बदले लाभ होताहै अर्थात् मोटा होताहै बलैनास कहता है कि जो सपेद बकरी के सींग को घिसकर कपड़े में लपेटकर जिसके सिरहाने पर रक्खें जबतक उसको अलग न करें वह मनुष्य न जागेगा जो इसके पित्ते को गाय के पित्ते में मिलाकर बत्ती बनाकर कान में रक्खें बहरे को लाभ करे जो पलकों के बाल जिसको प्रवाल कहते हैं उनको निकालकर नरबकरेका पित्ता उस जगह पर लगावें फिर बाल न जमेंगे इसका पित्ता कान की पीड़ा में पानी में मिलाकर टपकाना गुणकारक है और नेत्र की ज्योति की न्यूनता रतौंधीको गुणकरे नरबकरेकी दाढ़ीका बाँधना चौथिया तप वाले को गुणकारक है इसका कलेजा खाना स्त्री के कामदेवको क्षीण करताहै यहां तक कि मनुष्यकी इच्छा न रहे जो इसको तिल्लीकी बीमारीमें खावे गुणकरे जो तिल्लीका रोगी इसकी तिल्लीको अपने हाथ से अपने मकान में लटकावे तो जब वह तिल्ली सूख जावेगी इसके तिल्लीकी बीमारी जातीरहेगी यदि गज़दरख़्त की डालीमें लटकावें तो उसका प्रभाव प्रबल होगा इसका सदा मांस खाना चिन्ता और बिस्मरण लाता और जला हुआ दोष बढ़ाताहै जो सूईको नरबकरे के लहूसे भिगोकर कानछेदें वहछेद बन्द न होगा जो लकड़ीकी चोट लगीहो बकरेकी ताज़ीखालवहां पर बांधदे तो पीड़ा जाती रहे इसके खुरको सिकंजबीनमें घिसकर खाना तिल्लीकोगुणदायक है और वीर्य बढ़ाताहै जोइसकानखजला कर सिरकेमें मिलाकर बालखोरे परलगावें तुरन्तबालनिकल आवें इसका दूध नज़लेको गुणकरे और घावका निशान मिटाताहै और

रंग साफ करताहै और मुख्यकरके स्त्रियोंको शक्कर डालकर इसका दूध पीना लाभकरे चिंतादूर करे कामदेव बढ़ावे परन्तु आंखों में अँधेरी आतीहै और दांतोंको भी हानि होतीहै इसकेपनीरका पानी गांसीको घावसेबाहर निकालताहै जो इसका मूत्रउबालकर बराबर शहद मिलाकर लगावे जलेहुये जोड़को लाभ करे यदि हम्माम में तीनबेर खाजमें लेपकरें उपयोगीहै जो लड़का बहुतरोताहो इसकी कई मेंगनियांलेकर उसके सिरहाने रक्खें चुप होजायेगा शेख़रईस का बचन है कि इसकी मेंगनियां कंठमाला को गुणदायक हैं जो स्त्री इसकी मेंगनियों को जलेहुये बालोंमें मिलाकर योनि में रक्खें ऋतुका रुधिरबंदहो और जलेहुयेजोड़को गुणकरताहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(ज़िब्बी) अर्थात् हिरण यहजानवरबुद्धिमान् और बड़ाभागने वाला होताहै अरब वाले सुबह को इसका देखना अच्छा शकुन जानतेहैं इसकीबुद्धिका यह वर्णनहै कि जब अपने रहनेके स्थानमें आना चाहताहै तो अपनेपीछे देखताहै और हरओर दृष्टि दौड़ाता है क्योंकि अपना और अपने बच्चोंका भयखाता है तो जो यहबात जाने कि किसीने उसको देखलिया तो घरमें नहींजाता अद्भुतयह कि इराइन्दरायन का फल कि उसके पानीको अपने मुखके दोनों तरफ़ के किनारों से निकालकर खाताहै और उसके खानेसे स्वाद पाताहै इसीतरह खारी और कड़ुवे दरियाका पानी पीताहै उनकी कड़ुवाहट की परवाह नहीं करता जिन हिरणोंके मुश्क होताहै वह भी इसी तरह के होते हैं परन्तु उनके हाथी की तरह के दो दांत बालिश्त भरके बाहर निकलेहुये होतेहैं इनके चरनेकी जगह चीन तिब्बत और ज़रजोर के शहरों में होती है और बहां पर सुम्बुल अर्थात् बालछड़ और दोनों बहमन(खुशबोदारपहाड़ीघास)और २ सुगन्ध देनेवाली घासचरतेहैं उत्तममुश्क वहहै कि अपनेआप नाभि से बाहर गिरे कि जब रुधिर ऊष्मा से जोशखाकर नाभिकी ओर दूरकरे तो जब लहू नाभिमें पकताहै हिरणको बड़ी खुजली मालूम

होतीहै सो तेज़पत्थरों पर नाभिको रगड़ता है और मुश्क निकल कर पत्थरमें चिपकता है जैसे लोगोंकेघाव और फोड़ोंसे पीबजारी होतीहै लोग उनस्थानों में जातेहैं और उसरुधिरको पत्थरोंसेपाते हैं (गुण) जो उसके सींग का धूआं करें दुखदाई जानवर दूर हों जो उसकी जिह्वा सुखाकर स्त्री को खिलावें उसका बहुत बकवाद दूरहो और इसकीनाभि में रुधिर पैदाहोताहै वह कस्तूरीहै तोजो उसे शिकारकरे और लहूपका न हो बुरीकस्तूरी है जो इसका पित्ता टपकावें कर्णपीड़ा दूरहो और इसकेबाल मूत्रके कठिनतासे उतरने को गुणदायकहै इसकाचर्म भेजेके लिये बलदायक है और उन्माद रोग का उपयोगी और बिष के लिये मानो ज़हर मोहरा है परन्तु मुखको पीला करताहै और इसका खाना ना समझीका पैदा करने वाला है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(ऐल) यह पहाड़ी बकरी है इसकी दशा बारासिंगेकी तरह होती है हरसाल सींग गिराती और जमाती और सांप खाती है और जब शिकारी पहाड़ पर इसकी ओर जाताहै और वह देखलेता है पहाड़ से नीचे कूद पड़ती है चाहे कितनाही ऊंचा हो हज़ार दो हज़ार गज़तक और सींगके बल गिरतीहै और चोटसे बचा रहता है कहते हैं कि इसके सींगोंमें दो छिद्र होते हैं जिनसे दम लेती है जो वह छिद्र बन्द होजावें श्वास रुक कर मरजाय इसके आयु के वर्ष सींग की गिरहों के अनुसार होते हैं क्योंकि एक २ गिरह हर वर्ष अधिक होती है जो सांप इसको काटे तो गेंगटा खाती है और चाहे कितनीही गरमीहो पानी से बचती है ठीक गरमीके दिनों में कि जब भेड़िया तीन रात दिन तक इसके पीछे दौड़ता है तो यह अपने बच्चेको छोड़कर दरियामें चलाजाता है मछलीसे बहुतप्रीति रखताहै हर समय दरिया किनारे जातीहै और मछलीको देखती है और मछली भी उसके देखनेको पानीपर आती है शिकारीलोग इसीकारण इसकी खाल पहिनकर दरियाकिनारे जातेहैं कि मछ-

तसवीर नम्बर२६८

(अलसबाअ) अर्थात् जंगली दुःखदेनेवाले जानवरइसप्रकार का चौपाया शैतानका नमूना होताहै क्योंकि इसप्रकार के स्वभाव अहंकार क्रोध उपद्रव दिलेरी और मारनेपर साहस करतेहैं पालू चारपायों के प्रकार से इनके कर्म और शील बिरुद्ध हैं मनुष्य का ध्यान इसप्रकार के पालनपर न हुआ जैसा कि और पालूजानवरों परहै इनके शरीरमें भोजनकी प्राप्तिकेलिये हथियार भी कृपाकिये जैसे दांत और चुंगल और भयानक स्वरूप और मुंहका खुलाहोना और गर्दनका मोटा होना हृदयकी चौड़ाई पतली कमर और बदन की फुरती सब इनको दियेगये जो ऐसा न होता तो अपने भोजन की प्राप्तिमें दीनहोते और यद्यपि यह समूह एक गर्भ में छः सात बच्चे देताहै और बर्ष में दो बेरतक जन्ते हैं परन्तु कमी के सिवाय कि वह भी पृथ्वीके ओरोंके किनारोंमें पायेजातेहैं अधिकता नहींहै यह भी ईश्वरकी बुद्धिहै जो ऐसा न होता तो सारासंसार इनसेभर जाता और यह बड़ा उपद्रव करते जैसे आयतसे प्रकटहै जिसकेयह अर्थ हैं कि क्या ईश्वर की बुद्धि है कि उसने लाभ देनेवाली बहुत वस्तुओंको बहुत उपजाया और हानिकर बस्तुओंको कम हरतरह से वह बिश्वम्भर सर्बोपरि है अब हम उनको लिखते हैं कि जो जंगली दुखदाई पशुहैं ॥ तसबीर नम्बर २६९

(इब्नआवे) अर्थात् सियार बड़ा उपद्रवी पीलेरंग के मेवोंका शत्रुहै कइयोंकोखाता और कइयोंको ख़राब करताहै जब पालूमुर्ग़ की दृष्टिइसपरपड़तीहै चाहेऊंचेकोटेपरभी हो तुरंतइसकेपासआताहै और अपनेको सियारकी ख़ूराक बनाताहै जैसा कि हम ऊपरलिख आयेहैं कि गधा शेरबब्बर के पास चलाजाताहै और बड़ा आश्चर्य यहहै कि जो पालू मुर्ग़ लोमड़ी या बिल्ली या कुत्ते की गन्ध पावे अपनेको उनके सामने से अलग करताहै और चुपका खड़ा रहता है और जब सियार को देखताहै तो उसके पास चलाजाताहै यहां तक कि जो सो मुर्ग़ भीहों वहसब उसकेपास चलेजातेहैं और एक

लियां निकलआवें (गुण) जो इसके सींगका बुरादा एकमिस्काल शक्कर समेत पानी में घोलकर मिर्गी वालेको पिलादें गुण करे जो घिसकर झाईं और कोढ़ पर लगावें लाभकरे जो गन्धक के साथ छिड़कें मकानसे सर्प भागजावें यदि गर्भवती स्त्रीके लटकायें सुगमतासे प्रसूतिहो शेख़रईसका वचनहै जो शहरी और पहाड़ी बकरी दोनोंके सींग जलाकर मञ्जनकी तरह मलें दांत मज़बूत हों और पीड़ा भी दूर हो पहाड़ी बकरी का पित्ता आंखों में लगावें रतौंधी दूरहो शेख़रईसका वचनहै कि सम्पूर्ण दुखदाई जानवरों के वास्ते पहाड़ी बकरीका पित्तापीना मानो ज़हरमोहरा है जो उसकाकलेजा भूनकर आंखमेंसुरमालगावें आंखकेपर्देको गुणकरता और अन्धेरी को उपयोगी हो इसका मांस खाना चौथिया तप पैदाकरताहै जो इसकीचरबी बिच्छू और भिड़केघावपरमलदें गुणकरे और बिच्छू इसकेपित्तेकी गन्धसे मरजाताहै जो सांपकाकाटाहुआ इसके लिङ्ग कोसुखाकरखाये लाभहो और बीर्यकोभीबढ़ाताहै और इसीकेसूखे लिंगको मूत्ररोध के वास्ते भी गुणदायक लिखाहै जो इसको पानी में धोकर पानीपीवें पहलूकी पीड़ा दूरहो और जो इसके लिंगको सुखावें और पानीमेंधोके पानीपीवें लिंगको बहुतकठोर और प्रबल करताहै और इसका चमड़ा दस्तरख़्वान अर्थात् जिस कपड़े पर मुसल्मान भोजनभरे पात्र रखकर भोजन करतेहैं उसके गिर्द मूस सांप और मच्छड़ आदि न आवेंगे इसकी पूंछ और सींग की राख तेलमिलाकर तलवेमेंमलें चलनेमें थकान नहो किन्तु अधिक प्रसन्नता हो इसके बाल जलाने से चूहे आदि भागते हैं इसकी पूंछका बाल हलाहल बिषहै जो कोई उसको पानीमें पिये तुरन्त मरजाय शेख़रईस कहता है कि जो पहाड़ी नर मादा बकरे की विष्टा उस जगहपर जहांसे लहूजारीहो लगावें तुरन्तबन्दहो और जो इसकी मेंगनी पानीमेंगिरे और बकरी उसकोपीवे तो तुरन्त मरजाय परन्तु जो भेड़पीलेवे तो उसको हानि नहीं होती सूरत यहहै ॥

सियार उनको मारडालता है जब सियार चाहता है कि पानी के मुर्ग़ को शिकारकरे मुट्ठाघासका पानी में छोड़ता है जब मुर्ग़ उस पर आ बैठते हैं उससमय पीछेसे पहुंचकर उनका शिकार करताहै (गुण) उसकीजिह्वा जिस घरमेंहो परस्पर विरुद्ध हो जो इसका पित्ता आधेदिरम गरमपानी के साथतीनदिन पिये तिल्लीकी पीड़ा दूरहो और इसका मांस एक मिस्क़ाल के अनुमान खाना उन्माद और मिरगी के प्रारम्भ को गुणकरे और इसकी हड्डियों की मींगी पापड़ियालोन के साथ मलना कोढ़को नष्टकरताहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७०

(इब्नअरस) अर्थात् नेवला यहजानवर लम्बा और दुबला होताहै चूहे का शत्रुहै चूहे के बिल में जाकर शिकार करताहै और भूषण और रत्नोंका बहुत प्यारकरताहै नाकेबकाशत्रुहै उसकापेट फाड़ डालता है कहते हैं कि नाका सदा मुंह खोले रहताहै नेवला उसके मुखके मार्गसे उदरमें जाकर उसकी अँतड़ियों को चबाकर खाताहै जब नाका मरजाताहै उसकेउदरसे बाहर निकलताहै और सर्पका भी शत्रुहै और जब सर्पसे लड़ने जाताहै तो पहले तितली जो एक प्रकारकी घासहै खा लेताहै इसकारण सर्पका विष उसे दुखदाई नहींहोता और जब भुजंग इसघासकी गन्धपाताहै निर्बल होजाताहै और नेवला उसपर प्रबल होताहै कहतेहैं कि एक चूहा नेवलेके सामनेसे भागा और वृक्षपर चढ़गया नेवलेने भी उसका पीछाकिया कि चूहा दरख़्तकी फुनँगपर पहुंचा और जब बेचारेको कोई जगह बचावकी न मिली एकपत्तेपर लटककर और दांतों में दबाकर रहगया अन्तको जब नेवला उसपत्ते पर न पहुंचसका और दीन हुआ तो चिल्लाया उस समय उसका नर आ पहुंचा तब उस नेवलेने उसपत्तेको जिसपर चूहाथा काट डाला और वह चूहा पत्ते समेत गिर पड़ा सो नीचे से दूसरे नेवले ने उसका शिकार किया (गुण) इसकाभेजा आंख में लगाना अन्धेरी दूर करताहै शेख़र-ईस कहताहै कि इसका मांसबांधना जोड़ोंकी पीड़ाको उपयोगी है

और शराबके साथपीना मिर्गीके रोगोंको गुणकरे जो इसकीचरबी दांतों में मली जाय सब दांत गिरजायँ और जो किसी लकड़ी में उसकोमलें यहांतक कि वहचरबी उस लकड़ीमें घुसजाय फिरउस लकड़ी से धीरे२ दातून करे सब दांत सुगमता से गिरजायेंगे जो लड़कोंके मसूढ़ोंमें इसकी चरबीमलें तो दांत बहुतजल्दी बेपरिश्रम बराबर और खुले निकलेंगे और जो उसकी पीठकीहड्डी मैथुन के समय स्त्री अपनेपास रक्खे कभी गर्भवती न हो इसके अण्डों में भी यही गुणहै जो दोनोंचीज़ें रक्खे तो और उत्तमहै अधिकलाभ होगा इसका रुधिर कण्ठमालाको गलाने वालाहै और इसकीबिष्टा घाव के लहूके जारीहोनेको बन्दकरतीहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर२७१

(अरनब) अर्थात् खरगोश इसके बच्चे बहुत होतेहैं कहते हैं कि खरगोश एकबर्ष नर और एकबर्ष मादा रहताहै और इसको स्त्रियों के सदृश मासिकधर्म भी होताहै इसके दोनोंहाथ पैरसेछोटे होतेहैं और ऊपरसे नीचेआने में बड़ा दुःख पाताहै परन्तु ऊपर जाने में नहीं सोनेपर इसकेनेत्र खुलेरहते हैं जब मांदाहोताहै हरा नरकुल खाकर आराम पाताहै बुद्धिमान् यहांतकहै कि नरम ज़मीनपर भी बहुत हलका होजाता है कि पांवके चिह्न दिखाई न दें और शत्रु पीछा करनेसे बचे (गुण) इसके शिरकीहड्डी जलीहुई का मञ्जन दांतों को चमकाता है इसका भेजा खाना स्त्री को बांझ करता है कदाचित् गर्भ रहेगा तो दूसरी बेर गर्भ न रहाकरैगा जो इसका मांस बच्चोंकेमसूढ़ोंमेंलगावें बहुत सुगमतासे दांतनिकलें कहतेहैं कि जो ससेकेदांतपीड़ित दांतोंपरबांधें आरामहो इसशर्त्तपर कि जिस ओरका जौनसादांतहो उसीओरका वहीदांत ससेकाभी हो इसका पित्ता पीना निद्राका वेग लाताहै यहां तक कि सिरका पीने बिना नहीं जागता इसकी तिल्ली मिश्री के साथ खानी खांसी को दूर करतीहै बलैनासने लिखाहै कि इसका रुधिर पीना स्त्री को बांझ करताहै और इसके मर्द्दनसे झाईं छीप दूरहोतीहै और इसकेमांस

कि कोई न कोई मनुष्य इसरस्सीके खोलनेकेवास्ते अवश्य आवेगा सो शेर अपनी आंखें बन्दकिये चुपका उस वृक्ष के नीचे लेटरहा और आंखोंको इस लिये बन्दकिया कि रात्रिको ज्योति की तरह चमकेंगी तो लोग पहिंचान जायेंगे सो वही हुआ कि जो मनुष्य उस रस्सीके खोलने के वास्ते आताथा उसको मार डालताथा सो कई मनुष्योंके मरजानेके उपरान्त मालूम हुआ (गुण) जो इसका भेजा सज़ैतूनके तेलमेंमिलाकर कांपनेवाले या फड़कतेहुये जोड़पर मलेउपयोगीहै जो इसकेदांत लड़केकेगलेमेंलटकावें किसीदुःखऔर पीड़ा बिना दांत निकलें जो कोई इसके दांत अपने पास रक्खे दांतोंकी पीड़ासेनिर्भयहो और जो इसकापित्तापिये साहसहो और मिर्गी और पीलपांवकी बिमारीदूरहो इसका आंखमेंलगाना लहूके बहनेको बन्द करताहै जो कंठमालापर मलें गुणकारीहै औरचरबी इसकी बवासीर गरम सूजन और झाईं और फोड़ोंको लाभदायक है जो अपने मुखपर मलें निर्भय होजायँ और कोई जंगली पशु उसके पास न आवे जो उसके दोनों आंखोंकेबीचकी चरबी गुलाब तेलके साथ मुखपर मलें जो कोई उसकोदेखे भयपाये इसकामांस अर्द्धांग और झोले वालेको गुण दायकहै और इसके मर्दनसे सर-तान जो एक बीमारीहोतीहै दूरहोजातीहै जो हींगमें मिलाकरकोढ़ पर लगावें रोग नष्ट हो इसका अंडवीर्य्य कम करता है जो पुरुष उसको गुलाबमें घिसकर पिये तो उससे कोई स्त्री गर्भवती न हो इसका पंजा जिस मनुष्यके पासहो उसके पास कोईदुःखदाई पशु न आवे और इसका पंजा जिस पानीमें गिरे और उसका पानी जो चारपाया पीवे ऐसा क्षीण हो कि कभी उसमें पुष्टता न आवे इसकी खालपर बैठनेसे बवासीर वालेको गुणहै इसी तरह जो चौथिया तपवाला दिनमें दोबेर इसपर शयन करे आरामपावेऔर कूलंजको भी गुणकारीहै जो इसके चमड़े से ढोल या नक्कारा मढ़ें उसका शब्द जिस घोड़े के कानमें पहुंचे बीमारहो जो कोई इसके माथेका चमड़ा पगड़ीया टोपीके नीचे माथेकेपास छिपावे तोलोग

के रसमें जिस मनुष्यको हड़फूटन और पहलू की पीड़ा और नक-रस अर्थात् पांव की उगँलियों की पीड़ाहो बैठे गुणदायक होगा जो इसको सिरकेके साथ पियें कुल विषोंकेलिये ज़हरमोहरा है जो इसकी हड्डियां जलाकर मोममें मिलाकर गलेहुये मांसपर लगावें घावभरे और आरामहो जो इसकापनीरमा या पानी में मिलाकर कुलंज की पीड़ावाले को गुणदायक है बलैनास की मतिहै कि हर पशुका पनीरमा या कूलंजको गुणकरे परन्तु ससे का पनीरमाया बहुत प्रबलहै इसका पांव दाहने बायेंके विबकसे जोड़ोंकीपीड़ापर बांधना गुण दायकहै जो स्त्री इसकी योनि पकाकर खावे मैथुन करतेही गर्भ धारण करे अरबके लोगोंका वचनहै कि इसके शता-लेग (अर्थातूएंडी) की हड्डीको बांधना जादूसे बचाता है इसका धुवां फेफड़ेकी पीड़ा को गुणदायक है जिस स्त्रीका मासिक रुधिर बन्द न होताहो वह कईबाल इसकी बत्ती बनाकर भग में रक्खे रुधिर तुरन्त बन्दहोजाय और इसकी विष्टा रखने से गर्भवती हो स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०२

(असद) अर्थात् शेर यह सम्पूर्णजंगलीजानवरोंमें बल साहस में बड़ा और सबको भय दिलानेवाला है इसे ईश्वरने शिर और गर्दनकी बड़ाई मुंह गोल मुखके कोनोंको कोनेमें दांत और चुंगल की तेज़ी सीना चौड़ा हाथ पांव छोटे कमर पतली ऊंची आवाज़ कृपाकी कि किसीसे न डरे और कोई पशु इससे बराबरी न कर सके कहतेहैं कि दूसरेका माराहुआ शिकार नहींखाता हां अपना किया हुआ शिकार दिल और कलेजे खानेके पीछे दूसरोंके खाने को छोड़ताहै रात्रिके समय डफके शब्दसे प्रसन्न होता है अंधेरी रातों में आगकी रोशनी जिधर देखे उस ओर जावे उससमय बहुत नम्न होनेसे उसकी तुन्दी दूर हो जाती है कहते हैं कि जो

१ वह कि किसी पशुके बच्चेको दूध पिलाकर तुरन्त मार डालतेहैं तो उसके मेदेसे जमकर निकलताहै उसका नाम पनीरमायाहै ॥

कोई उसके साथ बहुत नम्रता से साम्हने आये उसका शत्रु नहीं होता चाहे कितनाही भूखाहो और जब शिकार खाता है नमककी इच्छा करताहै और जब बीमार होताहै तो लंगूरका मांस खाकर आराम पाता है परन्तु जब उसे ज्वर आताहै तो बहुत कम आराम पाताहै और जब इसके शरीरमें तीरकी गांसी रहजाती है तो साद जो एक प्रकार की घास होतीहै उसके खाने से निकल जातीहै और यह स्वभाव केवल शेरकाहै जो कोई घाव पहुंचे मक्खियां इतनी इकट्ठी होतीहैं कि इसके मरजानेतक दूरनहींहोतीं और मोर और सपेद घरके पालू मुर्ग से भागता है और शेरके शोरसे सम्पूर्ण पशु भागते हैं परन्तु गधेको कि चलने की शक्ति नहीं रहती नहीं जाता जब यह जानवर भूखा होताहैतो चुपरहता है जबतक कि शिकार न पावे कि शब्दसे कोई पशु भाग न जावे गर्भके समय बच्चा इसका माकी पेटमें नखसे गर्भाशय को घायल करता है तो जब मादा इससे मरने के निकट पहुंचती है तो नर शेर उसके खानेके लिये सूस मार लाताहै कि मादा उसकी खानेसे आराम पावे और बच्चाजनै इसकी मादा प्रसूतिके समय ज़मीन तर और खारी ढूंढ़तीहै कि चूंटीसे उसके बच्चेको दुःख न पहुंचे और जब बच्चेके पास जातीहै तो अपने पंजोंकेचिन्ह मिटाती है कि कोई उसका पता न पाये जब शेर शिकारके वास्ते निकलता है तो उसकाबच्चाभी साथदौड़ताहै और जबकोईशब्द सुनताहै तो भागताहै सो शेरउसकोअपने पेटकेनीचेकरकेउसकेकानोंमें बिजली की तरह गूंजताहै कि उसके मनसे हर एक शब्द का भय जाता रहे कहतेहैं कि पशुओंमेंशेरके बराबर और कोई मुख दुर्गंधिवाला नहीं होता इसकी आंख अंधेरेमें ज्योतिकी तरह प्रकाशमानहोती है जैसे चीते बिल्ली और सांपकी आंखें कहतेहैं कि शेर भरी हुई मशकसे भागताहै और ऋतुमंती स्त्रीसेनहीं बोलता मल्लाहोंसेसुना है कि एक शेरने एक लंगर में आकर देखा कि किश्ती की रस्सी एक वृक्ष से बंधी है और वह रात्रि का समय था तो यह समझा

उससे भय पावें और बादशाहों की दृष्टिमें प्याराहो और जो इस का चेहरा दूसरे जंगली जानवरोंकी खालमें लिपटावें उसकारोवां आपसेआप झड़जाय और जो इसके बाल जलाकर उसकी राख सोम रोगन में मिलाकर फफोलेपर लगावें तुरन्त अच्छा होजाय जो इसकी बिष्ठाको मद्यमें मिलाकर किसी शराबीको पिलावें फिर उसको शराबकी इच्छा न होगी बरन मद्यका शत्रु होजायेगा ॥

तसवीर नम्बर २७३

(बबर) यह पशु शेरसेभी अधिक बलवान होताहै शेर और चीतेका शत्रुहै जब यहजानवरचीतेके शिकारकरनेका उद्योगकरता है तो शेर इसको सहायता देताहै कुत्ते के मांस के खाने से इसका रोगशान्त होताहै बुढ़ापेमें चाहे यह भूखाभी हो परन्तु भेड़िये के बिरुद्ध मनुष्य को नहीं छेड़ता इसकी मादा प्रसूति के समय में सँभालके वृक्षके नीचे जाकर बच्चे जन्ती है और तीन दिनमें एक बेर बच्चेको दूधपिलातीहै और सूसमारकर खाना बच्चोंको सिखाती है (गुण) इसको त्वचा बड़ी दलदार होतीहै जिसके फफोला हो तो जो इसकीखालका बिछौनाबनावे गुणकारीहो जो इसकापित्ता पानीमें मिलाकर सरसामवाले रोगीके सिरमेंलगावें गुणकरे और स्त्री बत्तीबनाकर भगमेंरक्खे बांझहोजाय यहांतक कि जो गर्भ हो गिरादे और इसकीपांवकीहड्डीको संदेशापहुंचानेवालेमनुष्यकेपैरमें बाँधे जो वह साठकोशभीचले दुःख न पावे जो इसकीखालका धुआं चौथिया तपवाले के दामनकी नीचे दिया जावे उपयोगी है और इसके धुयेंकी गन्धसे चीटियां पैदा होतीहैं और इसकी बिष्ठा के धुयेंसे सम्पूर्ण बिषैले जानवर भागजातेहैं ॥

तसवीर नम्बर२७४

(सालिब) अर्थात् लोमड़ी यद्यपि यह देखनेमें छोटीहै परन्तु छल छिद्रसे बड़े२जानवरोंकी बराबरी करतीहै यहजानवर अपने घरमें बाहर निकलनेके दो छिद्र रखताहै कि जोकोई शत्रु घुसआवे तो वह दूसरे दरवाज़े से निकल कर वहदरवाज़ा बंद करदे हरवर्ष

इसकेरोंगटे गिरजाते हैं इसकारण बालखोरेकी बीमारी को दाउ-स्सालिब कहतेहैं तो जब वहमको खातीहै बालजम आते हैं इसीसे मकोय को उन्नबुस्सालिब कहते हैं य अपने मकानके पास जंलगी प्याज़डाल देतीहै और निश्चिन्तहोकरआरामकरतीहै और भेड़िये से नहींडरती क्योंकि जो भेड़िया जंगली प्याज़परपांवरखै तुरन्त मरजाय जबयह भूखीहो और इसेकुछखानेको न मिले तो जंगलमें मुरदेकीतरह पेटफुलाकर रहजातीहै कि कईदिनोंकी मरीहुई लाश समझीजातीहै यहांतक कि पक्षी उसकेशरीरपरआकरइकट्ठे होतेहैं उससमय उनकाशिकार करती है और यह जानवर शिकारी को अपनेहाथसेघायल करतीहै जो वहजानवर इससे सबलहोताहै तो उसकोदेखतेही मुरदा बनजातीहै साहीके शिकारमें बड़ी मक्कारी करतीहै अर्थात् जहां साहीने इसेदेखा तुरन्त अपने सिरको पेट में डालकरअपने कांटोंको लंबाकरतीहै उससमयलोमड़ी उसपर मूत्र करतीहै और उसके मूत्रसे उसको बहुतदुःखहोताहै लाचार अपने मुहको उठाकर मुख खोलतीहै सो तुरन्त लोमड़ी उसके पेटको पकड़ कर खाजातीहै बीमारी की दशामें जंगली प्याज़ के खानेसे आराम पातीहै जब इसके बदनमें जुयें पड़तीहैं तो एककपड़ा अपने मुखमें पकड़के पानीमें खड़ी होती है और थोड़ा २ पानीकी गह-राई की ओर जाती है और जुंये सब ओरसे उसके शिर की ओर इकट्ठी होजातीहैं फिर थोड़ा २ अपने सिरको भी पानी में डुबोती है यहांतक कि वहसब जुयें उसकपड़ेपर आजातीहैं उससमय उस कपड़ेको फेककर और गोता लगाकर निकल आतीहै और उनके दुःखसे छुटतीहै एकमनुष्य कहताथा कि मैंने मार्गमें देखा कि एक लोमड़ी दम चुराये हुये ऐसीपड़ीथी कि मैं मुरदा समझा जब कुत्ते उसकी ओर दौड़े और वह समझी कि कुत्तोंको मेरा मकर मालूम होगया तुरन्त उठकर भागी और वृक्षों में छिपगई गुण जिसबुर्ज यामकानमें कबूतर बहुत रहतेहों और उसका शिर वहां लटकावें तो सब कबूतर उड़जायँ लड़कों की पसली की पीड़ा उसके दांत

बांधनेसे दूरहोतीहै और चौंकना और सोनेमें डरना भी दूरहोताहै, और किसीके दाहनी ओरके दांतमें पीड़ाहो इसका दाहना दांत बांधनेसे दूरहो जावेगा इसी प्रकार बायें से बांयां दांत गुण रखता है जो इसकापित्ता सुरमें में मिलाकर लगावें ढलका बन्दहोजावेगा इसका मांस पकाकर कईदिन खाना कोढ़ और अर्द्धांग और लकवे को उपयोगीहै जो इसकी छरबी पावँकीहड्डी की पीड़ापर मलें तुरन्त पीड़ा दूर हो जो उसकी चरबी अनार की लकड़ी में लगाकर घरमें रखदें सब खटमल उसपर इकट्ठेहों और इसकागुरदा कंठमाले पर लगावें लाभकरे इसका अंड लड़कों की गर्दनपर बांधना दांतरुग-मता से निकालता है और जो इसकालिंग शिरपीड़ाकी बीमारीमें पासरक्खें गुणकारी है इसकीखाल औरों की खालसे उत्तमहोती है शेखरईस ने कहाहै कि इसकी खाल शीतकफ और पित्त के स्वभाव वालों को गुणकारी है लहू इसका लड़कों के शिरपर लगाना गंजे वालोंको गुणकारीहै बाल जमआवें जिसकेपास इसकालहू हो उस पर किसीकाछलऔर छिद्र न चलेगा सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर २०५

(हरीश) एक प्रकार का जानवर बकरी के बच्चेकी तरह पर है इसको दौड़नेकी शक्ति बहुतहोतीहै इसके शिरपर एकसींगहोताहै यह जानवर दोनोंपैर से दौड़ताहै और कोई इसकी बराबर दौड़ नहींसक्ता क्योंकि बहुतही दौड़नेवाला है लिखाहै कि यह जानवर मुल्क सजीन और बलगारमें होताहै—(गुण) जिसकागलापड़गया हो या कंठमाला का रोगहो तो उसकालहू गरमपानी में मिला-कर कुल्लीकरें तुरन्त आरामपावें इसका मांस क़ंतूरयोन (एकरूमी औषधि का नामहै) पकांकर खाना क़ूलंजको गुणदायक है इसकी चरबी इसीके पावँकी हड्डीकी रांखमें मिलाकर पीड़ित नाड़ियोंपर मलना गुणकारी है ॥

तसवीर नम्बर २०६

खंजीर अर्थात् सुव्वर बहुत कठोर और कुरूपहोताहै हाथीकी

तरह इसके भी दो दांत होतेहैं भैंसकीतरह शिर और बैलकीतरह सुमहोते हैं कामदेव के उपजने के समय शिर नीचे करके आवाज़ बोलताहै इनकायुद्ध कि जब मादापर लड़ते हैं कठोर होताहै नर-सुव्वर वृक्षोंपर अपने शरीरको रगड़ते हैं कि उनकी खाल कठोर होजावे और इसीकारण फिर इसपर किसी पशुकादांत असरनहीं करता और यह जानवर पृथ्वी को अपने दांत से खोदता है और बहुतही जननेवाला है एकबेर में बीसबच्चे तक होतेहैं और सर्पको नहींखाता और न सर्पका विष इसपर प्रभाव करताहै और लोमड़ी से अधिक छलीहोता है बहुधा सवारके साम्हनेसे भागताहै यहां तक कि जब सवार इनका पीछाकरते थकजाताहै उससमय सवार और उसके घोड़े को अपने दांत की चोट से मारडालता है जब कोई इसपशु को मोटाकरना चाहे तो चाहिये कि इसको तीनदिन भूखा रक्खे फिर बहुत भोजन खिलावे इस उपाय से दोदिन में मोटाहोजावेगा निसारालोग रूम की धरती पर ऐसाही करते हैं जबयह रोगी होताहै केकड़ेके खानेसे आराम पाताहै इसके अद्भुत गुणहैं कि जो सुव्वरको गधेकी पीठ पर बांधें कि वह हिल न सके तो जब गधा पेशाब करे तुरन्त सुव्वर मरजायेगा जोकुत्तेको अपने दांतोंसे काटे तो उसके सम्पूर्ण केश गिरजायँ और जबउसकाशब्द हाथी सुनता है तुरंत मरजाता है (गुण) इसके दांत साथ रखना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै और कुदृष्टिका प्रभाव नहीं होताइ-सका पित्ता सुखाकर बवासीर पर लगाना गुण दायक है इसका मांस हर प्रकारके मांससे अशुद्धहै जो कईदिनरक्खें कीड़े पड़जावें परन्तु उनकीड़ोंका खाना जंगली जानवरों के विषको गुण कारकहै इसकी चरबी घायल जोड़ पर लगाना उपयोगी है जो इसकीविष्टा कबूतर के अंडेमें मिलाकर कंठमाला में लगावें गुणकारक है और फोड़ोंको भी पकाती है और इसकी ताजी चरबी बवासीर को गुण दायकहै जो हड्डी टूटगई होतो इसकी हड्डी उसपर बांधदें तुरंतदु-रुस्त होजावे और जोड़ बहुत दृढ़ हो यह स्वभाव और पशुओंकी

हड्डीमें नहीं है जो उसको अलसीके कपड़े में लपेटकर चौथियातप वाले के लटकावें आराम हो जो उसको जलाकर थैली में बांधकर उस मार्गमें डालदें जहांसे पानी धानों के खेत में जाताहो तो अन्न बहुत होगा और सुव्वरसे कुछ हानि न होगी जोइसकी हड्डीजला कर नासूर पर लगावें गुण कारक है इसकी खाल जहां पर रक्खें मच्छर न होंगे इसका सुम जलाकर शक्करमें मिलाकर उबाल कर जो बिछौनेपर मूत्र करताहो पिये तो यहरोग दूरहोजावे जो इसके पांवकी पीठकी हड्डी को इतना जलावें तो सपेद होजातीहै उसकी राखको कूलंजवालेको पीना गुणदायक है शेखरईशने कहा है कि इसका कोढ़पर मलना लाभकारीहै जोइसका मूत्रअंगूरी शराब में पियें पथरी टुकडे २ करदे इसकीबिष्ठा सेवकेवृक्षमें लगाना मेवेको सुर्खरंग करतीहै और बहुत फलदार करतीहै जोस्त्री इसके मूत्रकी बत्तीले श्वासरोगदूरहो औरवच्चेकी झिल्ली दूरहोजाय और फोड़े को पचावे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २०७

(दब) अर्थात् रीछ बड़े शरीर वाला मोटा और एकांतस्थल की इच्छारखनेवाला होताहै सर्दीमेंअकेला रहताहै और बहारतकबा-हर नहीं निकलता और वहां पर अपने पांव चाट २ कर भूख दूर करताहै बहारकी मौसममें बाहर निकलताहै और पुष्ट होताहै बैल काशत्रुहै जब बैल चाहताहै कि अपनेसींगसे उसको घायलकरें तो यहउसकीपीठपरआकर अपने दोनों हाथों से उसके सींगपकड़कर काटता और उसको घायलकरताहै और उसकीमादा प्रसूतिकेसमय कालापत्थरजिसपर बिजलीगिरीहोढूंढ़तीहै कि उसपरबैठे औरसुग-मतासेप्रसूतहो और जबऐसापत्थर नहींपातीहै तो उससेतारेकेसा-म्हने खड़ी होती है जिसका नाम बनातुल नाश सग़र है तब इसे सुगमता होती है और इसी कारण उस सितारेको दब्बुल असग़र भी कहतेहैं तहमासप हकीम का वचनहै कि इसकी मादा एक मत्स का लोथड़ा जन्ती हैजिससे कोई रूप प्रकट नहीं होता सो वहमादा

चाट २ कर उसके जोड़ निकालती हैं और अपने बच्चोंको छोड़कर कफ्तार अर्थात् हुण्डारके बच्चोंको दूध पिलाती है इसीकारण अरब कहते हैं कि अमुक मनुष्य रीछकी मादा से भी अधिक अहमक है इसपर कोई जंगली जानवर प्रबल नहीं होता परन्तु शेर एक मनुष्य कहानी कहता था कि शेरने इसके पकड़नेका इरादा किया वहवृक्ष पर चढ़गया मुझे वृक्ष पर देखकर शेर नीचे खड़ाहोगया ऊपर एक डालपर रीछ बैठा था मैं बहुत आश्चर्य करता था कि इन दोनों बलाओंसे क्योंकर छुट्टी पाऊंगा अकस्मात् रीछने अँगुलियोंकी सैन से मनाकिया कि कोई बात नकरना कि शेर मुझे जाने संयोगसे मेरे पास एक छुरीथी मैंने उससे उसडालको जिसपर रीछ था धीरे २ काटना शुरूकिया और रीछ मेरी ओर देखाकिया तो रीछ डालसमेत पृथ्वीपर गिरा और शेरसे लड़ाई हुई निदान शेर प्रबल हुआ रीछ को टुकड़े २ करदिया और खा पीकर अपनी राहली और मैं आनंद पूर्वक अपनी राह आया (गुण) इसके दांत स्त्री के दूध में घिस कर लड़कोंको पिलावें उसके दांत सुगमतासे निकलेंगे जोइसकी आंख अलसीके कपड़ेमें बांधकर चौथिया तपवालेको बांधें गुणकरे इसका पित्ता काली मिरच में मिलाकर गंजपर मलना उपयोगी है यदि कुछ इसका पित्ता कीड़े खाये हुये दांतोंपर लेपकरें गुणकरे आंखमें लगाना अंधेरी दूर करताहै शेखुलरईस कहताहै कि जोकोई जोड़ मिर्गी वाला अपने पास रक्खे आराम पावे जो इसकी चरबी को काले कव्वेकी चरबीके साथ बालों में लगावें जल्दी सपेद न होंगे जो इसकी चरबी पांवकी बिवाई में भरदें आराम होजाय और कोढ़ पर मलना उपयोगी है चरायतेके साथ पीसकर जिस जोड़पर लगावें कभी बाल नजमेंगे जो आंखोंमें इसका रुधिर लगावें प्रबाल दूरहों जो इसका चमड़ा दुश्शील मनुष्यपर बांधें शीलवान होताहै सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २०८

(दिलक़) अर्थात् जंगली बिल्ली जिसका काली बिल्लीसे बहुत

रूप मिलताहै और जोकि इसको मनुष्योंसे प्रीतिनहीं इससे पाल नहीं होसक्ती कबूतरकी शत्रु है जब कबूतरोंके समूहमें आवे जो सौ कबूतर भी हों सबको मारडाले अज़दहेकी भी शत्रु है कहते हैं कि अज़दहा इसके शब्दसे मरजाता है और यहभी वाक्यहै कि मिसर में अज़दहे की अधिकता है जो वहां यह जानवर नहोता तो कोई न रह सक्ता (गुण) इसकी दाहनी आंख तप वाले पर बांधना गुण कारी है जो उसी आंख को अलसी के कपड़ेमें बांध के चौथिया तप वाले के बांधें उपयोगी है जो इसकी बाईं आंख बांधें फिर ज्वर न आवे इसका लहू नाककी तरफ से भेजे पर खींचना मिर्गी को लाभ दायक है इसके बालोंके धुंयें से कबूतर भागते हैं और सांप बिच्छू भी भागते हैं इसकी खालका बिछौना बनाना बवासीर दूर करता है इसके अंडके धुयेंसे घरके चूहे भागजावेंगे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७६

(ज़ैब) अर्थात् भेड़िया यह जानवर बहुत मलीन और खूनी दुश्मन और दुःखदाई और मक्कार होता है और जिस तरफ़ कूदता है बहुत कम चूकता है और यह आपुसमें विश्वास नहीं करते जब इकट्ठे होते हैं एक दूसरे से अलग नहीं होते क्योंकि यह समूह अपने आपभी निर्भय नहीं हैं जोकिसीके घाव पहुंचे या बीमारहोजाय तो और भेड़ियेउसको निर्बलसमझकर इकट्ठेहोकर खाजातेहैं जैसा एककबि ने कहाहै कि बीरपुरुषको उचितहै कि अपनेभाईकी सहायताकरे न भेड़िये के सदृश कि जैसा अपने साथी को घायल देखकर खालेताहै और उसको दुःखदेतेहैं और यहसमूह जब अपने समूह के भयसे सोताहै तो गिर्दागिर्द एकदूसरे के होकर एकआंख बन्दकरके सोताहै और दूसरीआंखसे देखाकरताहै सौरहिलालीके पुत्र हमीदका वचनहै अर्थात् जो मनुष्य एक आंख बन्द और एक आंखखोलकरसोताहै तो वहमानोभयसे जागतारहताहै इसकीमादा नरसे बहुत उत्पात करनेवाली होतीहै क्योंकि उसको अपनेबच्चों कीचिन्ताहै जब भेड़िया दूसरे जीवधारी के सामने दीनहोजाता है

इसकीदाहनीआंख जिसकेपासहो वहरातको न डरेगा और इसकी बाईंआंख नींद दूरकरतीहै इसकेदांत जिसके पासहों उसपर कोई भेड़ियाप्रबल न होगा जो घोड़ेपर लटकावें तेज़चलनेवालाहो जो इसकी राखसे दांतोंमें मञ्जन करें पीड़ा दूरहो और इसका पित्ता मक्खनकेसाथ मिर्गीवालेको पिलावें गुणकरे और स्त्री इसकी भगमें बत्ती रखनेसे गर्भवतीहोती है और आंख में लगाने से ढलकादूर होताहै इसकारुधिर अखरोटके तेलमेंमिलाकर कानमेंडालना बहरे को लाभदायकहै यदि स्त्रीपिये बांझहोजाय इसका अण्डा भूनकर खाना कामदेव अधिककरताहै जोकोई उसको अपनेपासरक्खे वह बहुतसी स्त्रियोंको भोगसक्ताहै इसके पांवकीहड्डी अपने पांवमेंबांधे चलनेसे न थकेगा जो मनुष्य दाहनेपांवकी हड्डी अपनेपास रक्खे तो पुरुषोंसे बैरमें प्रबलरहेगा और बायेंपांवके पासरखनेसे स्त्रियों के बैरमें बलवान्होगा इसकेचमड़ेका बिछौना बनाना कूलंजकोदूर करताहै इसकीदुम जिसगांवमेंगाड़ें वहांमक्खियां न आवेंगी कहते हैं कि जो स्त्री भेड़ियेपर मूत्रकरे बांझहोजाय यदि कूलंजकीबीमारी वाला इसकी बिष्टानिचोड़कर पिये पीड़ा शान्तहो बलैनास कहता है जो कूलंजवाले की रान में इसकी बिष्टा बांधे तो भी लाभ करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ८८०

(सनाद) यहहैवानहाथीकी सूरतकाहोताहै परन्तु उससेडील डौल में छोटा और बैलसे बड़ा जब इसकी मादा जननेको होतीहै उसकाबच्चा शिर बाहर निकालकर चारा खाताहै और जहां बच्चा ज़मीन परगिरा तो तुरन्त इस भयसे भाग जाताहै कि उसकी मां उसको चाट२ कर मारडालेगी क्योंकि इसकी मां की जिह्वामें कांटे होतेहैं अबूरैहानख़्वारज़मी का वचनहै कि हिन्दुस्तानकी धरतीपर एकपशु होताहै जो मांकी पेटसे शिर निकालकर चराखाताहै और फिर अन्दर चलाजाताहै और जब सबलहोजाताहै तब उदरसेबाहर निकलताहै और जानकेडरसे अपनी मां से बहुत दौड़ताहै क्योंकि

तो चिल्लाकर अपने साथियों को इकट्ठा करलेता है कि वह आकर सहायतादें जब यहजानवर बीमारहोताहै तो अपने समूहसेअलग होजाताहै इसभयसे कि जो इसकेसाथी इसकी बीमारीको मालूम करेंगे तो खालेंगे और तलवार और तीरसे भय नहीं करता परन्तु लाठी और पत्थरके सामने नहींआता और जोकोई उसपर तीर या तलवार लगाये तुरन्त उसके आगे आकर उस पर धावा करता है बीमारी में एकप्रकारकी घासखाताहै जिसको जोदा कहतेहैं और इसके खानेसे आराम पाताहै जब बकरियोंकेपास पहुंचताहै दूरसे शब्दकरताहै किशिकारीकुत्ते उधरआवें और आपदूसरीओरसे जाता है और बकरियोंको उठालेजाताहै और बहुधा बकरी की दुम पकड़ के दुममारताहै और उसकीदुममें यहप्रभावहै कि बकरी अपनेआप इसकेसाथ चलीजातीहै और यहकाम सूर्यनिकलने के पहलेकिया करताहै क्योंकि जानताहै कि रातभर कुत्ते रखवारी किया करतेहैं और सुबहको सोजातेहैं कहतेहैं कि जो भेड़ियामनुष्य के बाईंओर सेआवे तो उसको सानह कहतेहैं मनुष्य उसपर जीतपाताहै कदाचित् दाहिनीओर से आवेउसको बारहकहतेहैं तो मनुष्य हारजाता है इसबातकी बहुधा शिकारके समय परीक्षाहोचुकीहै और सानह और बारज चिड़ियोंमें भी होताहै कहतेहैं कि भेड़ियेके पीछे घोड़ा नहींदौड़ताहै और जो भेड़िया घोड़ोंकोकाटताहै तो उसको दौड़ने का बल अधिकहोताहै जो बकरीकोकाटे तो उसकामांस उत्तम होजाताहै कहतेहैं कि शेर और बबरकेबिरुद्ध जो बुढ़ापे में मनुष्य को दुःखनहींदेते भेड़िया बुढ़ापेमें भी मनुष्य पर चोटकरताहै बलैनास ने गुणोंकीपुस्तक में लिखाहै कि जब पहलेभेड़ियेकी दृष्टिमनुष्यपर पड़तीहै तो मनुष्य सुस्त और वह बलवानहोताहै यदिउसे मनुष्य पहलेदेखले तो मनुष्यप्रबल और वहनिर्बल होजाय (गुण) इसका शिर कबूतर के खाने में रक्खें बिल्लीवहां न जावेगी जो इसकाशिर बकरियोंके रहनेकेस्थान में गाड़ें सबबकरियां बीमारहोकर मरजायँ जो इसकाशिर जलाकर उसकीराख लगावें दांतोंकी पीड़ा दूरहो

मां उसको प्रीतिके कारण चाटतीहै और कांटेदार जिह्वा के कारण वेह मरजाताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८१

(संजाब) चूहेकी सूरतपर होताहै परन्तु उससेबड़ाहै इसकेबाल बहुतनरम होते और इसकेखालकी पोस्तीं बनातेहैं जिसको अमीर लोग गरमीमें पहिनतेहैं क्योंकि बहुतठंढी होतीहै इसकामांस दीवानेको गुणदायकहै और जलेहुये दोषोंके रोगोंको भी लाभदायक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८२

(सनूर) अर्थात् बिल्ली यहपशु बहुतहै और मनुष्य से प्रीति रखता और बहुधा लड़ा करता ईश्वरने चूहेके दूरकरनेकेलिये इसे उत्पन्नकिया जब हज़रतनूह ने शेरकेमाथे पर अपना हाथमला तो शेरकेदोनों नाककेछिद्रों से बिल्लीका जोड़ा उत्पन्नहुआ इसीकारण बिल्लीकाशिर शेरकीतरह पर होताहै यहजानवर शुद्धरहताहै और प्रति समय बिल्ली अपने लार से अपने मुंहको साफ करती है और बिष्टाकर ने पर अपने को शुद्ध करती और उसको पृथ्वी में छिपादेतीहै कामके उपजनेकेसमय नरको बहुतदुःखहोताहै क्योंकि मादाउसके लिंगको दांतसेकाटतीहै परन्तु जब सरदीमें वहकामदेव से बहुत बिकल होताहै तब लाचारहोकर मादाकेवास्ते चिल्लाताहै और वह उसका शब्द सुनकर आतीहै मादाकेप्रसूत के समय भूख बहुतमालूम होतीहै जो उससमयकुछ न पावे तो अपनेबच्चोंकोखाती है और अपनीबिष्टाको लोगोंकीदृष्टिसे छिपातीहै बाज़े कहतेहैं कि यहबात इसलियेहै कि चूहोंको उसकी गन्ध न मिले और भाग न जावें और बिष्टाके छिपानेके उपरान्त उसेसूंघलेतीहै जब गन्धनहीं आती तब निश्चिन्तहोजातीहै और जब चूहेकोछत में देखतीहै तो अपने हाथ पैर हिलातीहै कि चूहा उसकेभयसे नीचे गिरपड़े और जब चूहेकोपकड़तीहै तो पहलेउसको थोड़ासा दबाकर छोड़देती है और जब वह चलताहै उसपर कूदकर मुहमारतीहै निदान बड़ीदेर

में उससे खेलखेलकर उसको मारडालतीहै और उसकेदुःखमें उसे आनन्दहोताहै ईश्वरनेहाथी के दिलमेंयहभय पैदाकियाहै कि बिल्ली से भागताहै (उसकेजोड़ोंकेगुण) जिसकेपास कालीबिल्ली के दांत हों रात्रिकोभय न पाये जो इसकापित्ता आंखमें लगाये रात्रिको भी अच्छी तरह दिनकी तरह देखे जो इसकापित्ता आधादिरम तेलमें मिलाकर लकवेवालेकी नाकमें डालें गुण दायकहै यदि गोंद और नमकमें घिसकर पुरानेघाव पर लगायें लाभकरे यदि कालीबिल्ली की तिल्ली का मासिकधर्म वाली स्त्री के लिये जिसको सदैव काला लहू जारी रहताहो यंत्रबनावें तुरन्त लहू बन्दहोजाय इसकामांस पकाकर पांवकीहड्डोकी पीड़ापरबांधना गुणदायकहै जो कालीबिल्ली का मांस खाय उसपर जादू न चले कोढ़ी को इसके लहू का पीना लाभदायक है और इसकी बिष्टा गुलाब तेल में मिलाकर लगावें ज्वर नाशहो जो इसकी बिष्टा पानी में घोलकर पांवकी हड्डियोंकी पीड़ापर मलें गुणदायक हैं और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८३

(सनोबरुल अलबर) अर्थात् जंगली बिल्ली यहकुछ पालूबिल्ली से बड़ी होतीहै यह मकार अपने साथियों की रक्षामें प्रयत्न करती है यहांतक कि दिनमें एकदूसरे को बचातीहै और रात्रिको सब एक जगह रहतीहैं और सबका एक रखवाला होताहै जो वह रखवाला सोजाताहै तोसब मिलकर उसको मार डालतीहैं जो इसका भेजा जरजीर के पानीमें गरम २ पियें पार्श्व शूलको उप योगीहै और मूत्रको खोलताहै जो इसकी बिष्टाका धुआँलें वीर्य पेटसे गिरपड़े सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८४

(शेरांस) यह जानवर काबल और जाबल के जंगल में होताहै इसकी नाकमें बारह छिद्रहोते हैं इसकी श्वासमें बाँसुरीका शब्द पाया जाताहै कहतेहैं कि इसकी नाकके शब्दसे बांसुरी का बाजा निकला है इसके श्वासलेने के समय सम्पूर्ण पशु क्या पालू

क्या जंगली इसका शब्द सुनकर इसके पास इकट्ठे होतेहैं और अति सुंदर स्वरसे मूर्च्छागत होजाते हैं उससमय यह जानवर अपनी इच्छाके अनुकूल शिकार करताहै जो उसको शिकार की इच्छा न हुई तो भयानक शब्द करताहै जिसके डरसे सम्पूर्णपशु भागजातेहैं सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८५

(शादावार) यहपशु रूमके शहरों की ओरमें होताहै इसके शिरपर एकसींग होताहै जिसके बयालीस दरजे होतेहैं और वह सब बीचमेंसे खाली होतेहैं जबवायु उनमें भरतीहै तो उनमेंसे सु-न्दर शब्दनिकलतेहैं जिसके सुननेसे सम्पूर्ण पशु इकट्ठे होजातेहैं कहतेहैं कि इसका सींग भेंटकी तरहपर एकबादशाहके पास लोग लेगये जबवायु उसमेंभरी तो ऐसा रोचक शब्द उसमेंसे निकला कि निकटथा कि बादशाह समेत सम्पूर्णसमाज मूर्च्छितहोती और जब उससींग को उलटाकर दिया तो ऐसा बुराशब्द निकला कि निकटथा कि सबरोने लगें सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(ज़बह) अर्थात् कफ़्तार जिसेहिंदी में हुंडार कहतेहैं यह जानवर कुरूप और थोड़ा होताहै अर्थात् इसकी उत्पत्ति कमहोती है कबरों को खोदकर मुरदे निकाल लेजाताहै अरब वालोंका वचनहै कि हुंडार साहसी पुरुषोंके भी मांस खानेमेंभी नहीं हटता ज़बीर के पुत्र अब्दुल्लाने काव्यकहीहै जिसकेअर्थ यहहैं कि हुण्डार को प्रसन्नताहो कि मरने के पीछे वहमेरा मांस खायेगा क्योंकि मेराकोई सहायक नहींहै और शन्फरी की कविता के यह अर्थहैं कि सबलोग मेरी क़बरके पास आनेको बहुतबुरा समझतेहैं सो अम आमर को प्रसन्नताहो कि वह निर्भय होकर मेरा मांसखाय अम आमर एक प्रकार हुंडारकीहै कहतेहैं कि यह जानवर एकवर्षनर और एकवर्ष मादा रहताहै इसजानवर और कुत्तेसे विरोध है जो इसकी छाया कुत्तेपर पड़जाय चलनसके उससमय हुंडार उसको

करे जो इसजनवरकी योनिको ज्वरवाले पर बाँधें दूरहोजाय बलैनूास कहताहै कि इसकी भग और नाभिकी खालका बांधना भी ज्वरको उपयोगीहै और जो कोई स्त्रीदेखे उसपुरुषको मित्ररक्खे जोस्त्री बांधे पुरुष उसकी अभिलाष करे जिसपृथ्वीपर उसकी खाल डालदी जावे वहां सरदी और टिड्डोकी आफ़तनहो जो इसकी खालकी चलनी बनावें और उसमें छानकर गेहूंबोयें सब आफ़तों से बचे शेखरईसका बचनहै कि जिसको कुत्तेने काटाहो वह इस जानवर की खालका प्याला बनाकर उसमें पानीपीवे तुरन्त आरामपाये इसका चमड़ा ससेकी गर्दन में बांधें कुत्ते उससे भागें जो इसकी गुदाकेबाल उखाड़कर जलाकरहिजड़ेके शरीरमें मलें उसकी आदत दूरहो इसकी विष्टा आसके तेलमें मिलाकर शिरमें लगायें बाल निकलें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८७

(उनाक) सियाह गोशको कहतेहैं यह कुत्तेसे बड़ा है सुन्दर लाल ऊंटकासा रंगकान काले किये होताहै इसका शिकार चीतेके शिकार की तरह होताहै जबराह चलताहै तो अपने नख चिन्ह मिटाता है और कुलंग अर्थात् कोंचका शिकार करता है जो वह दौड़ताहै तो यह उसका पग पकड़ लेताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८८

(अतरह) एकपशु जंगलमें होताहै इसकी नाक महीन होती है यहजानवर ऊंटके पीछेसे उसको पकड़कर मारडालताहै कहते हैं कि यह जानवर शैतान की तरह होताहै लोग उसको देखते हैं परन्तु ऊंटनहीं देखताहै इसीकारण वह इसका शिकार होजाता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८९

(फला) शेख़रईस कहताहै कि यह जानवर शेरनी से छोटा और मटियाले रंगका होताहै और उत्तम हलका मुंहखुला किये है जब किसी जानवर को देखताहै उसकी ओर दौड़ताहै यह जानवर

मार डालताहै जब बीमार होताहै कुत्ते का मांस खाकर आराम पाताहै और भेड़िये और हुंडारमें मित्रताहै परस्पर भोग करतेहैं जबहुंडार भेड़िये की मादासे जुफ्ती खाताहै तो उसकाबच्चा समा के नामसे प्रसिद्ध होताहै इसका स्वरूप माता पिताके स्वरूप के बीचमें मिलाहुआ होताहै और जब भेड़िया हुंडार की मादासे जुफ्ती खाताहै तो उसके बच्चेको अय्यार कहते हैं कहतेहैं कि यह जानवर सांप की तरह अपनी मृत्यु से नहीं मरता इनकी मौत किसीकारण से होती है कहते हैं कि यह जानवर जब मर जाता है तो भेड़िया इसके बच्चोंको पालताहै अरब में एक जाति ज़ब-ऊन नामी होती है कहते हैं कि जिस समूहमें इस जाति का एक मनुष्य होता है वह समूह हज़ार मनुष्य का हो तो हुण्डार सि-वाय उस मनुष्य के किसीका उद्योग न करेगा हुंडारका शोरबा सम्पूर्ण शीतकी बीमारियों को गुण दायकहै--(गुण) इसका शिर कबूतरों की छतरीपर रक्खें वहां बहुत कबूतर इकट्ठेहोंगे इसकी जिह्वा जिसके पासहो वहबड़ा बाचाल और शत्रुपर सबलरहे और उसकी जिह्वा बातकरनेमें तड़ाक पड़ाकहो इसके दांतका पास रखना समझ बढ़ाताहै और इसका कलेजा जलाकर सुरमा बनाना रतौंधी को लाभ दायकहै इसका पित्ता ढलके को उपयोगी है बलैनासने लिखाहै कि इसका पित्ता गोरय्या चिड़ियाके लहूसे मिलाकर आंखोंपर मलना ढलका बंदकरताहै जो इसकाभेजा मनुष्य बांधे निद्राका बेगहो जो इसके दिलका लड़के के लिये यंत्र बनावें तेज़समझहो इसकी चरबी भौंहपर मलना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै मुख्य करके स्त्रियोंमें इसका चुंगल जिस वृक्ष पर लटकायें कोई जानवर उसदरख़्तको खराब न करेगा हुरमुसहकीम का बचनहै कि जोकोई इसका लिंग सुखाकर दोरत्ती के अनुमान खाय कामदेव की बहुतही प्रबलताहो यहांतक कि बीस स्त्रियां रमावे जो उसको किसी व्यभिचारिणी स्त्रीको उसकी खबर बिना खिलादें उसका कामदेव बिल्कुलजातारहेऔरफिरपुरुषकी इच्छान

जब किसीको काटे बड़ीपीड़ा पैदा होतीहै जिसकी औषधि कठिन है (गुण) इसके मांसके शोरबेमें कूलंज और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा वालेको बैठना उपयोगीहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(फ़हद) अर्थात् चीता यहबड़ा क्रोधी दौड़नेवाला और महीन कंठवाला होताहै कोई कहतेहैं कि यहपशु शेर और चीतेसे उत्पन्न होताहै जैसा कि खच्चर घोड़े और गधेसे पैदा होताहै और सब जंगली जानवर चीतेकी गंधसे प्रसन्न होते हैं यह जानवर अपने शिकार को शेरकी भेंटकरताहै जबशेरका खाकर पेटभर जाताहै तब उसका जूठाबचा आपखाताहै जाहिज़ कहताहै कि जब यह मोटांहो तो यह जानताहै कि हरएक जंगली जानवर उसके मारने की चिन्तामेंहैं सो अपने को उससमयतक छिपालेताहै कि जबतक सबचीते मोटेहों फिर अपने समूह में रहताहै और सम्पूर्ण जंगली जानवरोंसे अलग रहताहै कि वायुसे उसकीगंध जंगलीजानवरोंमें न पहुंचे बीमारीमें कुत्तेकामांसखाकर आरामपाताहै अच्छीआवाज़ को प्रिय जानताहै और कानलगाकर सुनताहै जब इसजानवरसे और रीछसे जुफ़्तीहोतीहै तो एकअद्भुत पशुउत्पन्नहोता है जिसका नाम कोसालहै (गुण) जिसघाव से लहूजारी हो इसकापित्ता शहद और नमकमें मिलाकर लगावें बन्दहोजाय इसकामांस बहुत खाना समझ तेज़ और बलवान् करता है जिसजोड़में पीड़ाहो वहां इसके लहूका लेपकरना लाभकरे जो इसका लहू पियें अहमक़ होजायँ जो इसके नख मकानमें रक्खें चूहे भागजायँ सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २६१

(हाथी) यह सम्पूर्ण पशुओं से मस्तभारी और मोटा होता है और सूंडको धरतीपर झुकाये रहताहै बाज़े के दांत तीनसौमनके होतेहैं और हाथी इन सबबातों के होनेपर हंसौढ़ और बुद्धिमान् होताहै ईश्वर की इस जानवर की उत्पत्ति में अद्भुत कारीगरी है इसकी गर्दनछोटी और सूंड़ लम्बीपैदा की जो मनुष्य के हाथों के

कहावत है कि किसी फ़ीलवान ने हाथी के पैरवृक्ष में बांधे और आपदूरजाकर सोरहाफ़ीलवान के शिरमें बालबहुत लम्बेथे हाथी ने अपने फ़ीलवान को सोयापाकर एकडालतोड़ी और उसकोसूंड़ में पकड़ कर फ़ीलवान के बालों में लपेटकर अपने साम्हने खींच लिया और पांवके नीचे दबाकर मारडाला (गुण) बलैनासनेलिखा है कि जो इसके कानका मैलपिये एकसप्ताहपर्यन्त निद्रा न आवेगी और जोइसकापित्तातीनदिनतक कोढ़परलगावेंआरामहोजाय जो इसकीचर्बी का धुवांकिसीके शरीरपर पहुंचे कोढ़पैदा होइसकी हड्डी मिर्गीवालेकी गर्दन में बांधनागुणकारकहै जो इसके दांतका धुवांवृक्ष में पहुंचायें उसकाफल खट्टा न होगा और उसकेकीड़े दूर होजायेंगे जो इसकेदांतों का बुरादा शहद के साथझाईं पर मलें झाईं शीघ्रनाश हो जो इसके दांत दरख़्त परलटकायें उस वर्ष न फलेगा जोघरमें धूनीदेंमच्छड़ मरजायेंगे जो इसके दांतकाबुरादा उपद्रवकारक घावपरछिड़कें वहघाव अच्छाहोजाय और जलेहुये जोड़को भी गुणदायक है इसकाचमड़ा हरबुरी बीमारी में बांधना गुणदायक है कहते हैं जिसके जोड़ सूखे हों और खालमें झुर्रियां पड़गई हों उसको इसकी खालपर सोनालाभकरे इसकीखाल का धुवां बवासीरखोता है इसकामूत्र जिसघर में छिड़कंचूहे न आवेंगे इसकीबिष्टा का धुवांहरतपवालेको गुणकरे जो कूलंजवाला इसकी बिष्टापिये लाभकरे और फिरउसको यहदुःख न हो जो इसमें सर्प की केंचुल मिलाकर सुरमा बनावें तो प्रबाल ढलका और आंख के बदगोश्त के लिये उपयोगी है जिसकेपास इसकीबिष्ठा हो उसपर को बुरी नज़र न लगेगीयदिस्त्री इसकीबिष्टाअपनी योनि में रक्खे गर्भवती न होगी बहुधा हिन्दुस्तान की व्यभिचारिणी स्त्रियांऐसा करती हैं कि युवावस्था को चमत्कार वर्त्तमानरहै नहीं तो कईबार के लड़काहोनेऔरदूधपिलानेसे वहसुन्दरतानहीं रहतीसूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर२६२

(क़रद) अर्थात्लंगूर एकबदरूपपशुहोताहै और सदाशिरनीचे

बदलेहै जिसकेद्वारा चारा और पानी अपनेमुखमें पहुंचाताहै और वह सारे शरीर में पहुंचसक्ती है और कान बड़े २ ढाल की तरह होते हैं जिससे मक्खी और मच्छड़ दूरकरताहै क्योंकि इसकामुंह सदा खुलारहताहै जो मक्खी या मच्छड़को उसके कान या मुख में जावे तो तुरन्त मरजाय इसीकारण सदा उसकेकान हिलाकरते हैं उसके दोबड़ेदांत होतेहैं जिसकाभार दोसोमनतक है इसकेजोड़ नहींहैं परन्तु कन्धा रान और टखना रखताहै इसजानवरमें पचास वर्षके उपरान्त कामदेव उपजताहै और सातवर्ष के उपरान्त बच्चा उत्पन्न होताहै क्योंकि इतने समय में इसकेबच्चे के सबजोड़ मज़-बूत होतेहैं और यह जानवर सर्पका शत्रुहोताहै सर्प को देखतेही पैरकेनीचे कुचलताहै और सांप भी इसकेबच्चे को काटकर मारडा-लताहै इसकी बीमारी सांपके खानेसे दूरहोतीहै जब यह जानवर परिश्रमकरनेसे थकजावे तो इसके दोनोंकन्धे तेल और गरमपानी से मलें फिर सबल होजाय जो अपने पहलू के बल गिरे उठना कठिनहै सो और हाथी इकट्ठेहोकर सहायतादेकर उठातेहैं जबकोई वृक्ष उखाड़ना चाहताहै उसकी जड़ में सूंड़लपेटकर जड़से उखाड़ लेताहै जंगीहाथी एक चलनेवाली गढ़ीकीतरह होता है जिसपर बहुत से मनुष्य सवार होते हैं और इसकी सूंड़ में एक लोहे का हथियार नोकदार पहिनाते हैं जिसको अरबवाले क़रविल कहते हैं और उसीकी चोट से घोड़े और ऊंटको दोटूक करता है इसके गिर्द पांचसो पैदल आदमी रक्षा को रहते हैं और उसकी पीठपर बीरलोग सवार होते हैं उससमय पांचहज़ार सवार को जीतसक्ते हैं इसकी आयु बहुधा चारसो वर्ष तक होती है ज़नादी कहता है कि सुल्तान मन्सूर के समय में एकहाथी देखनेमें आया जिसको लोग कहतेथे कि इसने बहुतसी लड़ाइयांजीतीं और हाथी अराक़ की धरती में जल्दी मरजाता है मुख्य करके नर मादासे जल्दी मरता है फीलवान इसके शिरपर बैठता है और अंकुश मारता है जिसकी सैन से हरएक काम होता है और बड़ा किनारखता है

रखताहै और जल्दीसमझनेवाला और महीनकारीगरियां सीखता है औड़ेकपड़ोंको जिसके दोनों ओर जुलाहे काहाथनहींपहुंचता तो वहकपड़ा जुलाहाइसीकी सहायतासे बुनताहै मलिक नौबने दोलंगूर भेंटकी तरहपर ख़लीफ़ाके वकील को भेजे जो एक दरज़ी और दूसरा सुनारथा यमनके लोगोंने उनको यहांतक सिखाया कि जब बनियां औरकस्साब कहींजावें यहपशुदूकानकी रक्षाकरें और सौदा बेंचें मादाबारह बच्चेतक जन्तीहै और इसकोमनुष्यकी तरह अपनी मादासेबड़ी लज्जा आतीहै सफ़ाय यमनके रहने वालोंमेंसे एकका वर्णनहै कि एकदिनमैं किसीपहाड़पर गया वहांएक लंगूरको देखा कि अपनी मादाके घुटनेपर शिररक्खे सोरहाहै संयोगसे एकदूसरा लंगूर आया उस मादाने अपने पतिका शिर हलकेसे हटाके उस लंगूरसे कोनेमें जाकर भोगकिया जब यह जगा और उसको ढूंढ़ा जब उसको पाया तो सूंघनेसे समझा और चिल्लाया उसके चीखने के साथही बहुतसे लंगूरइकट्ठे होगये और वृत्तान्तके मालूमकरने के उपरान्त उस मादाको एक गढ़ेमें बैठाकर पत्थर फेंककर मारडाला (गुण) जो इसके किसी जोड़को मनुष्य अपने पासरक्खे जो मनुष्य उसको देखे उसका मित्र होजायेगा और जो इसके दांतको घिसकर आंखमें लगाये सपेदी दूरहो इसका मांस पकाकरखाना कुष्ठको गुणदायक है यह गुण शेरसे मालूम हुआहै क्योंकि जब शेरको कुष्ठ होताहै तो इसका मांस खाने से अच्छा होजाता है इसका लहू मनुष्य पीवे गूंगाहो और लोगोंकी दृष्टिमें अप्रतिष्ठापावे और जो इसकी खालकी चलनीमें कोई बीजछानकर बोये तो उस की खेती टिड्डी आदिके उपद्रवोंसे बची रहेगी स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर २६३

(करगदन) अर्थात् गैंड़ा यह जानवर डीलडौल में हाथी की तरह पर होताहै और सूरतमें बैलसे मिलताहै परन्तु इतना अन्तर है कि बैलसे बड़ा होताहै और इसके सुम भी होते हैं और क्रोधी होताहै यह जानवर जिसपर दौड़ताहै नहींचूकता और सम्पूर्ण

पशु इससे डरतेहैं हिन्दुस्तान में होताहै इसके शिरपर एक सींग होताहै जो बहुत कठोर और मोटा और नोकउसकी बहुततेज़ और जड़ उसकी मोटी और नोकका मुंह पीठकी ओर और झुका हुआ मुखकी ओरहै आश्चर्य है कि इसके सुम औरसींग दोनों हैं क्यों-कि सुमवाले जानवरके सींगनहीं होता और यह जानवर कमहोता है और आयु सातसौ वर्षकीहै पचासवर्षके उपरान्त उसकाकामदेव प्रबल होता है और तीन वर्षके उपरान्त बच्चापैदा होताहै हिन्दके लोग कहतेहैं जिसधरतीपर गैंड़ाहो वहां और पशु नहींरहते जब हाथीकोदेखताहै तो उसकेपीछेसे आकर उसके पेटमें सींगमारता है और अपनेदोनों पांवपर खड़ाहोजाताहै और हाथीको उठालेताहै परन्तु जबवह चाहताहै कि हाथीको अपने सींगसे अलगकरें नहीं होसक्ता निदान दोनोंगिरके मरजातेहैं कहतेहैं कि इस जानवरपर कोई हथियार नहीं लगता और कोई पशु इसका साम्हना नहीं करसक्ता और इसको फ़ाख़तासे प्रीति है जिस वृक्षपर फ़ाख़्ता का घोंसलाहो उसके नीचे खड़ाहोकर उसकाशब्द सुनता और प्रसन्न होताहै (गुण) कहतेहैं कि किसीगैंड़े के सींगमें एक गिरह होतीहै और उस गिरह में सवार का चित्र होताहै ऐसा सींग हिन्दुस्तान के किसी राजा के पास होताहै इसकागुण यहहै कि कूलंजवाले के हाथमेंलेतेही आराम होजाताहै जो उसको घिसकर पीवें मिर्गीदूर हो जोड़ों की ऐंठन फड़कने की बीमारी जल्दी नाशहो इब्नुलखैर अस्तराबादी कहताहै कि एकदिन एक मनुष्यों का समूह ग़ज़नी को जाता था उसमें इसकापिता था अकस्मात् ख़बरआई कि राह में डकैतलोग लूटमार करतेहैं यह सुनकर हरएक घबड़ाया हमारे समूह में से एक मनुष्य ने कहा कि मतडरो मैं उनको दूर करता हूं इसशर्त्तपर कि मुझे उनकेपास पहुंचादो सो एकमनुष्य ने उसको चोरोंकी जगहपर पहुंचादिया जब डकैत पहाड़की गुफ़ा से बाहर निकले उसने कोईचीज़ अपनेपाससे निकाली और पृथ्वीपर रगड़ कर वहां की मट्टी उनकीओर उड़ादी मट्टी के उड़ातेही ऐसी प्रचंड

वायुचली कि सबचोर गिर२ पड़े और किसी से खड़ा न रहागया सो सर्वसमूह वहां से निकलकर आनन्द से चलागया और किसी को उनमें दुःख न पहुंचा जबहम ग़ज़नीपहुंचे शेख़अलीइब्न सेनाके मिलने को उसमनुष्य के साथगये और बातचीत में उस उपायका वर्णनकिया शेख़ ने उत्तरदिया कि यह मनुष्य मेरे मित्रों में से है और इसके पास गैंड़े का सींगहै जिससे ऐसी अद्भुतबातें होती हैं इसने मुझे कई सौगातेंदी हैं उसमेंसे एकगांठ गैंड़के सींगकी और एकछुरी जिसकादस्ता उसी सींग का है उसका गुण यहहै कि वह छुरी जो ऐसे खाने या शराबके पासरक्खीहो जिसमें विषमिलाहो तो विषके बलको तोड़ती है जो मनुष्य इसकी दाहनी आंखका यन्त्र बनावे सर्वपीड़ाओंको दूरकरे देव परी और सर्प कोई उसकेसामने न आवे यदि बाईंआंखहो ज्वर दूरकरे जो इसकीखाल का जोशन बनावें कोई हथियार न लगे सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६४

(कलब) अर्थात् कुत्ता यह पशु बड़ा परिश्रमीदुःख सहनेवाला और मनुष्य का मित्र परमहितैषी होता है और सर्व्वदा भूखा और जगा हुआ रहता है और थोड़े से उपकार में बड़ी सेवा करता है और मुख्य इसी से चोरों और चौकीदारों की रक्षा है जाहिज़का बचन है कि यह ऐसा बुद्धिमान् होताहै कि जो इसको हिरणके समूहपर छोड़दें तो मादाको छोड़ कर नरको पकड़ता है क्योंकि चाहे मादासे नर अधिक दौड़ता है परन्तु यह आश रखता है कि यह भयखाकर जल्दी पेशाब करेगा उससमय उसको ठहर-नेकी आवश्यकता होगी और मैं पकड़लूंगा परन्तु मादा को कि मूत्र करने के समय ठहरनेकी कुछ आवश्यकता नहीं होती नहींप-कड़ता और अधिक आश्चर्य यहहै कि बरफके दिनों में जब पृथ्वी बरफसे छिप जातीहै तो शिकारी को बुद्धि होनेपर भी शिकार की पहिंचान नहीं रहतीहै तो यह शिकारीको शिकारकी जगह बताता है परन्तु यह बात मुख्य करके शिकारी कुत्ते में है यह जानवर

बरफसे दुःख पाताहै और यही कारण है कि बादल को देखकर चिल्लाताहै अरबवाले दृष्टान्त कहते हैं कि कुत्तेके चिल्लाने से बादल की कोई हानि नहीं पहुंचती रात्रिको जब किसी मनुष्यको देखता है तोभौंकताहै और जब वह मनुष्य बैठ नहीं जाताहै तबतक यह भीचुप नहीं होता और जब वह बैठ जाताहै तो यह चुप होरहता है इस बिचारसे कि अब मैं इस मनुष्यपर प्रबल हुआ और उसको हरादिया इस जानवर को गर्मीके दिनोंमें उन्माद रोग होताहै इसका स्वभाव गरम और खुश्क है ज्यों २ गरमी अधिक होतीहै उसका रोग बढ़ता जाताहै इसकी लार हलाहल विषहै जिसका उपाय नहीं इसके उन्माद रोगका लक्षण यहहै कि सदा जिह्वा निकाले रहै नेत्र लालहों गर्दन टेढ़ीकिये रहै शिरको नीचे डालेरहै और पूंछको रानोंमें दबायेरहै और मस्त की तरहहर एकपर लपके जिधर दृष्टिकरे उस ओर दौड़े चाहे वह दीवारहो या दरख़्त यहां तक कि उसके साथी इससे भागतेहैं जो किसी को काटे असाध्य हवै वहभी कुत्तेकीतरह भूकनेलगे और जबपानीमेंअपनी सूरतदेखे कुत्तेकी सूरत मालूमहो और कभी पानी न पिये यहांतककि बहुत प्याससे मरजाय बलैनास कहताहै कि एक दीवाने कुत्ते ने घोड़ेको काटा उसका सवारभी दीवाना होगया कुत्तेकी बीमारी गेहूं की बालियां खानेसे दूर होतीहै गधेकी आवाज़से इसके शिर पीड़ा उत्पन्न होतीहै जो किसीने मेहँदी लगाई हो उस समय सपेद या पीलेरंग का कुत्ताचिल्लावे कभी अच्छारंग न होगा कुत्ते की प्रकृति उष्णता और खुश्कताकेकारण चिपनेवालीहोतीहै सो उसकीखुश्की लिंगके छिद्रमें इकट्ठी होकर गांठकी तरहपर होजाती है और जो कोईपत्थर किसीकुत्तेपर मारे और कुत्ताउसको पकड़कर फेंकदे जो उसपत्थरको कोईशराबमें छोड़करपिये लड़ाईकरनेलगे जो कबूतरों की छतुरीमें रखदें सब कबूतर चलेजायँ अस्फ़हान में एकमनुष्य ने एक आदमीको मारडाला और कुयेंमें डालकर उसकामुख बन्दकर दिया उस मरेहुये मनुष्य के पास एक कुत्तारहा करता था उसने

देखलिया वह जब आता उसकुयेंकी मिट्टी उड़ाता और जबमारने वालेको देखता भौंकता लोगोंने कुयेंकामुंह खोलकर लाशनिकाली और मारने वालेको भी उसी निशानसे पकड़कर दण्डदिया अन्तको उसने अंगीकार किया और मारडाला गया कहतेहैं कि एकमनुष्य के पास कुत्ता था संयोगसे उसने चाहा कि दरियामें जायँकुत्तेने उसका पांव पकड़ा और उसको दरियाकी ओर जानेसे मनाकिया उस पुरुषने क्रोधित होकर तलवारसे उसे मारकर दरियामें फेंक दिया एक घड़ियाल पानीके नीचे घातमें था वह कुत्तेकी लाशखींच लेगया उस समय वह मनुष्य समझा कि इसीवास्ते इसने मना-किया था और बहुत पछिताया (गुण) जिस मकान की दीवार के नीचे कालेकुत्ते की आंख गाड़ें वह मकान उजाड़ होजाय जो किसी के पासहो उसपर कुत्ते न भूंकेंगे यदि इसके दांत दुखदाई कुत्तों के बांधें कभी न काटेंगे जो लड़केके गण्डा बनावें दांत सुगमता से निकलें और कमल वायु वालेके गुणकरे और स्वप्नमें बर्रानेको भी उपयोगी है यदि दीवाने कुत्ते के दांत अपने पास रक्खें फिर कोई दीवाना कुत्ता उसको न काटेगा जो इसकी जिह्वा किसीके मोजेमें सियें उसपर कुत्ता न भूंकेगा बहुधा चोर यह काम करतेहैं जो इसका पित्ता सुरमेकी तरह पर लगायें आंख की अँधेरी को गुण कारकहै इसका कलेजा खाना भी गुण करताहै मुरदे कुत्ते की चरबी कण्ठ-मालाको गलातीहै विशेष करके जब दाना कण्ठ या मुखमेंहो ब्लै-नास कहताहै जो कुत्तेका काटा हुआ मनुष्य पानी न पीवे कुत्ते का दाहना पैर पकाकर उसको खिलावें तो वह पानी की इच्छा करे इसकालिंग सुखाकर रानपर बांधना कामदेवकी अतिशक्ति करता है काले कुत्तेके बाल मिर्गीवालेके बांधना गुणकारी है कुत्तेका मूत्र मलना मस्सों को दूर करताहै इसके चिचड़े खाना कूलंज वालेको लाभकरे जो इसके दूधको शराब या शहदके साथखावें मुरदा बच्चा गिराये इसकी बिष्टा पीनसके रोगीको गुणदायकहै और इसकीबत्ती रखना गर्भ गिरादे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६५

(निमर) अर्थात् तेंदुआ यह जानवर बलवान् क्रोधी बड़ाग़ुस्सेवालासुन्दर और मनुष्यका शत्रुहोताहै इसकाजंगलीपन किसीतरह पर दूरनहींहोता और यह अन्य पशुओंकाशत्रु होताहै और किसीसे नहींडरताहै यहांतक कि जो एक लश्कर इसपर धावाकरे तो भी न भागे यह जानवर (शेरकेबिरुद्ध कि वहपेटभरेपरनहींबोलता) चाहे भूखाहो चाहे पेटभरा हर जीव धारीपर लपकता है इसकी पीठका मोहरा बड़ा कमज़ोर होताहै जो हल्कीसी चोट कमरपर पहुंचे टूट जावे इसके जागने पर इसके खरखरे से पशुभाग जाते हैं और जानतेहैं कि यह शिकारकी इच्छा रखताहै कहतेहैं कि इसकेमुखमें सुगन्ध होतीहै परन्तु शेरके मुखमें नहीं कहतेहैं कि जो किसी के इसका घाव होगयाहो तो उसपर चूहे मट्टी डालतेहैं कि घाव सड़कर घायल मरजाय और इसीकारण ऐसे घायल की रक्षा अच्छी तरह पर करतेहैं और चूहों के डरसे बिल्लियों को पास रखते हैं यह जानवर बीमारी में चूहेखाकर आराम पाता है इससे और सर्पसे मित्रताहै जब यह बच्चादेताहै तो भुजंग इसके बच्चे के गिर्द कुण्डल बांधकर रखवाली करता है (गुण) कहते हैं कि इसके सम्पूर्ण अंग हलाहल विष हैं जहां इसका शिर गाड़े वहां चूहे बहुत इकट्ठे हों इसके पित्तेका सुरमा आंखोंका प्रकाश अधिक करता है जो इसका मांस पाँच दिरम बलसांके तेलके साथ खाय सर्पका विष प्रभाव नकरे इसकी चरबी लगाना पुराने घावोंको साफ़करता है इसकी हड्डी लड़कोंके लिये यंत्र बनाना खांसी दूरकरे जो बवासीरका रोगी इसको खालका बिछौना बनावे गुणकारी हो इसकी खाल जिसके पासहो भयानक मालूमहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(यामूर) एक जंगली जानवरहै इसके दो सींग होते हैं इसका स्वरूप बारासिंगे से मिलताहै बहुधा नदियों के किनारेपर रहताहै और झाड़ियों में घुसकर खेलकरताहै इसके सींग जब झाड़ियों में

फँसजातेहैं छूटनहींसक्तेहैं तो दीनहोकर चिल्लाताहै उससमय लोग पहुंच कर पकड़ लेतेहैं (गुण) इसका मांस शराबमें पकाकर लड़कों को खिलाना समझ अच्छी करताहै इसकी खालका बिछौना बवासीरको गुणदायक है जो इसके पांवकी हड्डी पैर में बांधे चलने से न थकै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २६०

छठाप्रकार पक्षियों का वर्णन॥

ईश्वरने इसप्रकार को हलका और छोटेजोड़ोंका बनायाहै जब निर्बलताके कारण सामनानहीं करसक्ता तो परोंसेभागनेकी शक्ति कृपाकी और यहभी समझनाचाहिये कि यह उड़जाना हलकाहोने के कारणहै नहीं तो भारीहोकर क्योंकर परमारसक्ता वरन जो बायु पर बहुतठहरतेहैं वह बहुतहीछोटेहैं ईश्वरकीअद्भुतमायाहै कि चाहै हवा पक्षियोंसे हलकीहै परन्तु पक्षी उसपर ठहराररहताहै और नीचे नहींगिरता मानो वायु उसकीकिश्तीकेबदलेहै तथाच ईश्वरकावचन है कि पक्षियोंकी ओर नहींदेखतेहो कि क्यों वह आकाश के नीचेहैं सो सिवाय परमेश्वर के उनको कौन वायु पर ठहरासक्ता है और उनमें बहुतसेजोड़ हलकेपन के सबबनहींहैं जैसे कान दांत फुकना अर्थात् मूत्राशयआदि और इनकेबदले छोटेजोड़पैदाकिये जैसा कि मेदे के बदले पोटा और दांत के बदले चोंच और कान की जगह थोड़ा छिद्र और बालोंकी जगहपर और इसीतरह हर भारी जोड़ की जगह हलके पैदा किये और कई जोड़ोंको इनमें से गिराहुआ कर दिया जिसकी गर्दन लंबी होगी उसके पांवभी लंबेहोंगे जिस की गर्दन छोटीहै उसके पांवभी छोटेहैं जो इनकी पूंछ काट डालें तो उड़नेकीशक्ति कमहोजातीहै जाहिज़काबचनहै कि जोपक्षी तेज उड़नेवालाहो वह बहुत हलकाहै जैसे कबूतर और चमगादरऔर गौरय्या जो इनके पांव न हों तो उड़ न सकें जैसा कि जो मनुष्य के पांव न हों तो चल नहीं सक्ता जिस पक्षी के कान बाहर नहीं होते वह अंडदेताहे जिसकेकान बाहर होते हैं वहबच्चा देताहै और

अपनेबच्चेको दूध भी पिलाताहै कई पक्षी कई रंगके होतेहैं जैसे मोर और बाज़े बहुत उत्तमकबूतर और कई गानेवाले जैसे बुलबुलऔर फाख़्ता अब यहांपर पक्षियोंके नाम उनके गुणों समेत लिखेजातेहैं (अबूबराक़श) एक पक्षी सुन्दर खुश रंग होताहै जिसकी गर्दन लंबी और पांवभी लंबे चोंच लाल और लंबी और यह हर समय रंग बदलता है कभी लाल कभी पीला कभी सब्ज़ और कभी श्याम एक कवि कहताहै कि मैं बराक़श पक्षी के सदृशहूं कि हर समय रंग बदलता हूं इस पक्षीके रंगोंपर रूममें कपड़ा बुनते हैं जिसका नाम बोकलमूंहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २६८

(अबूहरवन) इस पक्षीका सुन्दर स्वरहै कि इसका सामना कोई बोलनेवाला नहीं कर सक्ता रातभर सुबहतक चहकताहै और बहुतसी चिड़ियां उसका शब्द सुननेको इकट्ठी होतीहैं प्रीति करने वाले लोग अधिकतर अभिलाषा करके वहांपर ठहर जातेहैं सूरत उसकी यहहै ॥

तसबीर नम्बर २६६

(अवज़)अर्थात् बतख़ यह जानवर अन्य देश गामी होताहै जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै तुरन्त दरियामें चला जाताहै और दृढ़ होताहै इसका स्वभाव यहहै कि इसका नर अंडेकी रखवाली नहीं करता और इसके अंडे नौ या ग्यारह होतेहैं जबमादा अंडोंकी रक्षा करती है तो नर खड़ाहोकर चौकीदारी करताहै और बच्चा उन्नीसवें दिन निकलताहै या एक महीनेके पीछे कहते हैं कि इनके पेटमें एक पत्थर होताहै जो उसको घिसकर गूंगेको पिलावें गुणकरे इसका भेजा सौंफके साथ काढ़ा करके बवासीरवाले और उदर पीड़ावाले को पीना गुणकारीहै इसकी जिह्वा मूत्रके बूंद २ आनेके रोगको उपयोगीहै और इसका पित्ता बिनफ़्से के तेल के साथ नाकमें डालें आधासीसी को लाभकरे इसकी चरबी बिवाँई को लाभकरे शेख़रईस कहताहै कि इसका मांस खाना स्वरूपको प्रकाशमान और वीर्यको अधिक करताहै इसकी चरबी रंगरूप

उत्तम करतीहै इसका लहू नमक और खारी पानी के साथ पीना फुकनेकी पीड़ाको गुणदायकहै तो इसका बायां पंख चौथियातप-वालेकेदाहिनी ओर बांधें रोग नष्टहो इसकीहड्डी जलाकर सम्पूर्ण जोड़ोंके बीच मर्दन करना गुणकारीहै इसके अंडेका खाना काम-देव अधिक करताहै इसके अंडेकी सपेदी सुखाकर पानी के साथ पीनेसे सूखी खांसी दूर होतीहै स्वरूप यहहै ॥

[तसबीर नम्बर ६००

(बाज़) यह जानवर सब पक्षियों से अहंकारी कोप युक्त तुर-क़िस्तानमें होताहै कहते हैं कि यह नर नहीं होता इसकानर चील या अन्य पक्षीहै इसीलिये इसकीशकल और सूरतमेंअन्तरहै उत्तम बाज़ वहहै कि उसमें सपेदी अधिकहो और मोटा और साहसी और अच्छे स्वभाव का हो परन्तु काले रंगका सपेदी लिये आर-मीनियां और हरज़के सिवाय दूसरी जगह नहीं होताहै हारूंर-सीदके अख़बार में लिखाहैकि एक दिन सपेद रंगके बाज़को छोड़ा वह हवापर जाकर छिपगया लोगोंको उसकी आशा जातीरहीकि अकस्मात् वह आकाश से एकमछली या सांपको लियेहुये आया और बादशाहकी आज्ञानुसार बुद्धिमानोंसे पूछागया कि यह क्या बातहै मक़ातिल नामी एक मनुष्यने उत्तर दिया कि आपके दादा अबुद्दीन अब्बासकी कहावतहै कि बायु एकप्रकारके जीवधारियों से बसी हुईहै और वहांपर एक जानवर सांपकीतरह परदारहोता-है उसका सपेद बाज़ शत्रुहै ख़लीफ़ाने थाल मँगवाकर उस जान-वर को बाज़से अलग किया और वैसाही पाया सो मक़ातिल को बहुतसा पारितोषिक दिया यह जानवर घोंसला अपना ऊंचे वृक्ष पर बनाताहै जिसकी डालें गुंजान होती हैं और अपने घोंसले में छत बनाताहैकि गर्द और मेहसे बचारहै बीमारीकी दशामेंगोरख्या खाकर आरामपाताहै परझाड़नेके समय चूहेको खाताहैकि जल्दी पर निकल आवें और एक घास मरारह नाम से होती है उसको अपने घोंसले में अवश्य रखताहै कि शत्रु उसके गिर्द न आवें

(गुण) इसके पित्ते का सुरमा लगाना मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में उपयोगीहै और इसकी पहिंचान यहहै कि रोगके पूर्व्वमें दृष्टिके सामने मच्छड़ या धुवां उड़ता दिखाई देताहै जो इसीको एक बूंद भी लक़वे वाले की नाकमें टपकावें लाभकरे सपेद बाज़का पित्ता आंखोंकी सपेदी और अँधेरी और पानीके उतरनेको लाभकरे शेख़-रईसका वाक्यहै कि सम्पूर्ण पक्षियोंका पिताआंखकी अँधेरीको दूर करताहै इसका नख जिस वृक्षपर लटकावें चिड़ियोंकी हानिसे बचे इसकी हड्डियोंकी राख जलेहुये जोड़पर छिड़कना गुण दायक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०१

(बाशक़) अर्थात् बाशा यह सब शिकारी जानवरोंसे छोटा है और यह गौरय्याकाशत्रुहै और जो पक्षी कि गौरय्याके बराबरहो और फ़ाख़्ताकाभी शिकारकरताहै जो इसकाभेजा एक दिरम बाद-रंजवोयाके साथपियें उन्माद रोगको गुणकरे सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०२

(बबग़ा) अर्थात् तोता यह बहुत सुन्दर उत्तम रंग का लाल पीला और सब्ज़ और सपेद होता है परन्तु बहुधा सब्ज़ होताहै चोंच मोटी होतीहै और जिह्वा चौड़ी जो बात सुने उसे दूसरीबेर तुरन्त ठीककहै उसके अर्थ जाने इसके सिखानेका हाल यहहै कि इसे पिंजड़ेमें शीशा रखकर उसके पीछेसे कोई बातकरे वहअपनी सूरतको कहनेवाली समझकर उसीके बचनसे उत्तर देताहै इसकी अद्भुत बातोंमेंसे यहहै कि पानी नहीं पीता किन्तु जलपानसे मर-जाताहै (गुण) इसकी जिह्वा खाना बाचाल करता है जो कोई इसका पित्ता खाय उसकी जिह्वा भारी होजायइसका लहूसुखा-कर जिन दो मनुष्योंके बीचमें छिड़कें परस्पर बिरुद्धहोजाय इसकी झिल्लीका हींगके पानीमें पीसकर सुरमा लगाना ढलका और धुंध को भी लाभदायकहै सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०३

(बुल् बुल) इसको फ़ारसीमें हज़ारदास्ता कहते हैं यह एक

छोटासा पक्षी और तेज़ उड़नेवाला और बाचाल होता है बाग़ में घोंसला बनाता है और बाहर की मोसममें प्रसन्न होता है फूलसे प्यार रखताहै जब किसीको फूल तोड़ते देखता है असंतुष्ट होकर चिल्लाताहै जो कि इसकास्वभाव गर्म्म है इसलिये पानी में बहुत नहाताहै और बहुत पिया करताहै आंधीके समय घोंसले से नहीं निकलता इसमें अद्भुत स्वभावयहहै कि घरमें या पिंजड़ेमें सिवाय वर्गजुफ़्ती नहींकरता जो इसकामांस केकड़ेकी आंखकेसाथ पहाड़ी बकरी के चमड़े में सीकर भुजापर बांधे जो जादू अपना प्रभाव न करे सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३० ४

(बूम)यहप्रसिद्ध जानवरहै दिनमें बाहर नहीं निकलता क्योंकि दिनको उसे दिखाई नहींदेता सदा अकेला उजाड़ों में रहता है इसको मनुष्य अशकुन जानते हैं यहांतक कि इसका दृष्टान्त देते हैं इसके शब्दसे सर्पभागते हैं इसको कोवेसे बिरोधहै रात्रिको इसके सामने कोई चिड़िया नहीं उड़सक्ती क्योंकि औरोंको रात्रि के समय दिखाईनहींदेता जैसाकि इसको दिवसमें अंधेराहै यहीकारणहै कि जब उल्लूको और सबजानवर दिनको देखलेतेहैं तो उसकेगिर्दइकट्ठे होकर उसको सतातेहैं (गुण) इसका भेजा आंखमें लगाना आंखकी अंधेरीकोगुणदायकहै जो तेलमेंमिलाकर नाकमेंटपकायें आधासीसी दूरहो कहते हैं कि यह एकआंखसे सोताहै अर्थात् इसकी एकआंख बंद और एक आंख खुली रहतीहै पहिंचान इसकी यहहै कि दोनों को पानी में डालें जो पानी में सीधी रहे वह सोती है और जो टेढ़ी होजाय वह जागती है तो जो सीधी आंख को किसी के सिरहाने रखदे तो वह न जागेगा और उलटीआंखको अंगूठीके नगीनेके नीचे जमाकर कोई पहिने तो उसको नींद न आयेगी जो इसकी आंखें कस्तूरी में मिलाकर जिस को सुंघावें वह उसका मित्र होजायगा इसका दिल भूनकरखाना लकवे और फालिज़ को गुणदायक है इसका शिर बलूतकी लकड़ीमें चिपकाकर पथरीवाले रोगी को बांधे

तो तुरन्त पथरी निकलजाय जो इसका पित्ता झाऊ की लकड़ी में लगाकर जिसका मूत्र बिछोनेपर निकलजाता हो बांधें गुणदायक है इसका कलेजा हलाहल विष है और कूलंज पैदा करता है जिसकी औषधि नहीं इसका मांस बमनका रोग उत्पन्नकरता है जो सुखाकर जिस समूहके भोजनमें दें उनमें परस्पर शत्रुताहो इसका ताज़ालहू लक़वे वालेके मुखपर लगाना गुणदायक है इसका मेदा सुखाकर जिसको खिलावें कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा दृढ़ उत्पन्न हो सूरत यह है ॥ तसवीर नम्बर ३०५

(तदर्ज) अर्थात् चकोर इसको फ़ारसीमें तदर्व कहतेहैं यहपक्षी रोचक शब्द बोलता और बागका मित्र है जब उत्तरीय वायु हो तो मोटा होता और दक्षिणी पवनमें क्षीण होता है अंडा देने के समय मट्टीका घेरा बनाता है उसमें अंडादेताहै कि उपद्रवोंसे बचारहे जब उसका बच्चा निकलता है उसीसमय दानाखाताहै कहतेहैं कि यह पक्षी भूकम्पहोनेसे पहलेइकट्ठे होकर चिल्लाते हैं सूरतउसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३०६

(तानूत) फ़ारसीमें इसको कबतूकहते हैं यह अद्भुतपक्षी होता-है अर्थात् वृक्षों की छालके रेशों से घोंसला बनाता है और उसको वृक्षसे लटकाता है और बच्चोंको उसमें रखता है (गुण) जो उस को शीशेके टुकड़ेसे मारें और उसका रुधिर पीलेवें तो किसी चीज़ के नशे यामद में व्यर्थ लड़ाई से छुट्टी पावें इसका पित्ता शकर के साथलड़कोंकाखिलाना मनुष्योंकीदृष्टिमें प्रियकरताहै महीनेकेप्रा-रम्भमें जब चन्द्रमा निकले तो इसकी हड्डी लड़केके बांधे तो चाहे कितनाही बुराहो परन्तु सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०७

(ख़ासतुल अफ़ई) जिसको अभईभी कहते हैं यह पक्षी वायुके पक्षियों में से है जब यह अंडा देता है सांप आनकर खाजाता है और अपना अंडा उसके स्थानपर रखदेता है जब उक्त पक्षीआता है तो अपना अंडा समझकर उसकी रक्षा करता है और बच्चे के

निकलनेके समय अपने स्वरूपके विरुद्ध देखकर उससे भागताहै सदा सांप ऐसाही इस पक्षीके साथ किया करता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०८

(हुबारी) इसको फ़ारसी में चिरज़ कहते हैं यह पक्षी सुन्दर है परन्तु बेवक़ूफ़ जब दूसरे पक्षी का अंडा देखता है अपने अंडे को छोड़कर उसको सेता है जो इसकीविष्ठा और पक्षियोंपरगिरे उनके पर आपस में जुड़ जाते हैं और उड़ नहीं सक्ते हैं तथा अरबवालों का बचन है कि हुबारी पक्षी का हथियार उसकी बीठ है तो जब इस पक्षी का किसी शिकारी चिड़ियासे साम्हना होता है तो यह समय पाकर अपनी विष्ठा उसके परों पर डाल देता है तो सब पर उसके बेकाम होजातेहैं और यह भागजाताहै और अपने साथियों को इकट्ठा करके चरग़ पक्षी जो इसको शिकारकरता है उसकेपरों को नोचकर उसको मारडालता है और यही उपाय जिस पक्षीसे विरोध होता है उसके साथ करता है (गुण) जो इसके पेटको सुखा कर इन्दरानी नोन और बराबर जलीहुई रोटी के साथ आंखों में लगावें आंख की सपेदी नष्ट हो इसकी सूखी चरबी बालछड़ और किरतके साथ खाना अतीसारको गुणदायक है शेख़रईस कहता है कि हुबारी के अंडेका खिज़ाब उत्तम है और इसकी सपेद डोरे पर परीक्षा करनीचाहिये सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३०६

(हदात) अर्थात् चील बहुत निर्बल है बहुत से पक्षी इसपर प्रबल रहते हैं कहते हैं कि एकबर्ष नर और एकबर्ष मादा रहती है कव्वा इसका शत्रुहै यहां तक कि अपना अंडा इसके अंडेको खाकर उसकी जगहपर रखदेता है और चील उसको अपना अंडासमझ कर सेती है जब बच्चा निकलता है तो वह कव्वा होता है सो नर को बड़ा आश्चर्य होताहै और अपने साथियोंको इकट्ठा करके बच्चे को दिखलाता है और मादा को संदेह से इतना मारता है कि वह मरजाती है और यह जानवर बीमारीमें अपने पर खाकर आराम

पाता है जो लाल रंगकी चीज़ देखता है तो मांसके विचार से उस पर झपट्टा मारता है साहबुलफलाहा कहता है कि कभी उक़ाब चील और कभी चील उक़ाब होजाता है (गुण) जो इसका पित्ता सुखाकर सर्पके चलनेके मार्गपर डालदें जो सर्प उसपरसे जावेगा मरजायेगा जिसको बिच्छू काटे उसीओरकी आंखमें उसका पित्ता सुरमेंकी तरह लगावे गुण करे इसका भेजा गंदना और शहद के साथ उबाल कर अतीसार और बवासीरमें पीना लाभ करे इसका लहू पीना हलाहल विषोंका दूर करनेवाला है इसकी हड्डी जला कर घावपर लगाना दुरुस्त करनेवाला है और इसका लेप कठोर फोड़ोंको पकादेता है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३१०

(हमामा) अर्थात् कबूतर बड़ा बुद्धिमान् और दूर देशांसे अपने पहले मकानमें आसक्ता है और अपने शहरके चिन्होंको खूब पहिं-चानता है जो उसको किसी दूरजगहसे छोड़ें तो वह पहिले आकाश में छिपजाता है फिर ऊंचेसे अपने मार्ग के चिन्ह याद करता जाता है यहां तक कि अपने मुख्य स्थानमें आजाताहै बहुधा इतना ऊंचा उड़ता है कि बादल उसकेनीचे होजाता है जिससे बहुत जल्दी अपने मुख्य स्थानपर आने से लाचार होजाता है या कोई उसका जोड़ शिकारी पक्षी के कारण घायल होजाय या उसको कोई पकड़कर रक्खे इनकार्य्योंसे निस्संदेह अपने मुख्य स्थानपर आनेसे लाचार होजाता है और इनमें मनुष्यों की तरह परस्पर प्रीति है जिसतरह चुम्बन मिलन आदि मुसन्ना का पुत्र ज़बीर कहता है कि यह पक्षी स्त्री पुरुषों की तरह बर्त्ताव करता है और मैंने कबूतर केनर और मादाके बीचमें देखा कि इसकी मादा दूसरे नरकी ओर ध्यान नहीं करती जिसतरह कि पतिव्रता स्त्रियां और बाज़ी मादा व्यभिचारिणी स्त्री की तरह दूसरे नरसे भी जुफ़्ती खाती हैं और कोईमादा नरकी आधीनी नहींकरतीं और कितनाही नरबुलाताहै वह उसका कहना नहींमानतीहै और एक नरकी दो मादाभीहोती हैं और नरदोनोंसे

बराबर प्रीतिकरता है इसकी मादा परस्पर मादासे जुफ्ती खाकर चार अंडे देती है परन्तु उन अंडों से बच्चे नहीं निकलते अद्भुत बात यहहै कि जब मादा बच्चे देनेको होती है तो नरको खबर होजाती है और तिनके इकट्ठे करके आरामके बराबर अपने और अंडोंके घोंसले बनाताहै नर और मादा दोनोंपरस्पर अंडेकी रक्षाकरते हैं और अंडोंकेपास चाहे आगभीलगे अकेला नहीं छोड़ते और वहांपर एक नियमितसमय तक स्थितरहते हैं मादाबहुत रक्षाकरती है जब वह उठतीहै नर उसकेस्थानापन्न होताहै कि अंडेकी गर्मीदूर नहो और जब बच्चा निकलता है तो नर और मादा आपुसमेंउसको भराते हैं पहिले अपने बच्चेकेकंठमें वायु फूंकतेहैं कि भोजनकामार्ग खुलाहोफिर अपने मुखकी लार पहुंचाते हैं जब मालूम होजाता है कि भोजनका मार्ग खुलगया उस समय दीवारोंकी खारीलोनी भरातेहैं कि पोटा उसका मज़बूत हो जो कोई यहचाहे कि कबूतरका बच्चा रंगबरङ्ग पैदा हो तो चाहिये कि कपड़े का कबूतर बनाकर उसको जैसे रङ्ग चाहे रँगदे और जहांपर कबूतर पानी पीतेहों वहां रखदें कि कबूतरकीदृष्टि उस अनुकर्णी कबूतर पर पड़े तो जब बच्चे पैदाहोंगे तो वही रङ्ग उनका होगा कबूतर बीमारी के समय टिड्डी को खाकर आराम पाताहै और जंगली कबूतर बीमारीमें नरकुलकी पत्तीखाने से आरोग्य होताहै इस समूहमें अद्भुत यहहै कि इसका बच्चा जवानीके पहिले कनसर अर्थात् करगस जो मुरदा खाने वाला जानवरहीताहै और उकाबको पहिचानताहै तात्पर्य यह कि नसरसे न डरे और उक़ाबसे भागजाय और शाहीन को देखना मार डालने वाला समझे जिस तरहसे कि बकरी हाथी ऊंट और भैंस से नहीं डरती और भेड़ियेसे भय पातीहै जाहज़ कहिता है कबूतर हरएक जानवर से उत्तम होताहै परन्तु जब वह अपने शत्रुओंकोदेखे भयमान होताहै जैसा कि गधा शेरको देखकर चुप होताहै या बकरी भेड़िये से और चूहा बिल्लीसे डरताहै (गुण) इसका पित्ता रतौंधी और धुंधलेको उपयोगीहै और ऐंठहुये जोड़पर मलना उत्तमहोता-

है जो कबूतर का अण्डा घावपर रक्खें भरे और चोट और पुराने घावको दूरकरताहै और आंखमें लगाना रतोंधीनाश करताहै इस-के मांसका सदाखाना समझ बहुत करता है इसकी हड्डी की राख उपद्रव कारक घावको दुरुस्त करे यदि स्त्री इसकी बीटकी बत्ती भगमें रक्खे प्रसूति सुगमतासे हो जो निर्जीव मांसपर छिड़कें उस के घाव दूर करदे कदाचित् गरमी अर्थात् आतशकपर मलें लाभ करे यदिलाल कबूतरकी बीटको हुकनेमें मिलावें कूलंजको उपयोगी है और मूत्ररोध को लाभकरे जो इसके पांव अस्तरक (एकप्रका-रकागोंद कुमीदवाहै) और हबुल नील (अर्थात् मिरचाई किनीलो-फर केबीजहैं) बराबर घिसकर अख़रोट के तेलमें मिला कर सपेद कालेदाग़ वाले कोढ़पर मलें उसका रङ्ग दूरहोगा सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३११

(ख़ताफ़) अर्थात् अबाबील इसको फ़ारसी में बिलवाया कहते हैं इसके बहुत प्रकारहैं यहजानवर ठंढे देशोंसे गरमदेशोंमें जाता है और मुख्य करके बसन्त ऋतु को प्रिय जानताहै और बहार के प्रारम्भ में घोंसला बनाता और अण्डे देताहै कि वायुगर्म होनेतक इसका बच्चा बलवान होजाय इसके घोंसले हरदेश में होतेहैं और जिसदेशके घोंसलेको उद्योग करे वहां जापहुंचे घोंसला बनाने के समय परोंको मिट्टी में मिलाकर काम में लाता है बहुधा दीवारों और छतों की दरारों में बनाता है और ऐसा उपाय करता है कि दोनोंओर से उसका घोंसला छत में मिला और मज़बूत हो यह विचित्रताहै कि थोड़ा सा घोंसला बनाकर छोड़ देता है कि सूख जावे और फिरबाक़ी बनाताहै इस विचार से कि एकहीबेर बनाने से गिर न पड़े और इसके घोंसला बनाने के समय बहुत अबीलें सहायक होती हैं और जब घोंसलाबन चुकता है तो उसे बराबर करनेके वास्ते अपनी चोंचमें पानी लाकर घोंसले को चिकनाता है और घोंसलेमें मक्खी मच्छड़ और सांपके दूरहोने के लिये तिवली की पत्ती रखताहै प्रसिद्धहै जो अबाबीलका घोंसला पानीमें घोल-

कर और छानकर प्रसूतिकी पीड़ाके समय स्त्रीको पिलावें बच्चा पैदा होनेके समय सुगमताहो (गुण)इसके भेजेका गूदा तेलमें मिलाकर शिरमें लगाना जूं दूरकरताहै इसकीआंख पोटलीमें बांधकर जिस के बिछौने पर रखदें उसको निद्रा न आवेगी इसका दिल सुखाकर शराबके साथ खाना वीर्य्य बढ़ाताहै इसका मांस खाना आंख को मज़बूत और तेज़करताहै यदि स्त्रीकोखिलावें उसकी भोगकीइच्छा इतनी दूरहो कि कभी पुरुषकी इच्छा न करे इसकीबीटके मरहम से फोड़ेपकजातेहैं और उनकामैलभी दूरहोजाताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३१२

(ख़फ़ाश) अर्थात् चमगादर यह प्रसिद्ध जानवर सूर्य्य की किरणों में अन्धा रहताहै परन्तु अँधेरे या संध्याको ज्योति युतहो ताहै इसके पर नहीं होते परन्तु बाज़ुओंसे जो चौड़े खालकी तरह होतेहैं उड़ताहै इनकी उत्पत्ति चूहेकी तरह पर होतीहै कहतेहैं कि बनी इसराईल ने हज़रत ईसासे एक करामात चाही कि आपएक ऐसा पक्षी बनाइये जो और पक्षियों के विपरीत बाह्यकर्ण और दांत रखता हो और अपने बच्चोंको दूध पिलाये सो आपने मट्टीसे यह जानवर बनाके उसपर हवाफूंकी और ईश्वर की आज्ञा से यह जानवर प्राणयुक्त होगया और उड़ने लगा और यह सब उसमें विद्यमानहैं इसीका वर्णन ईश्वरने कियाहै कि हज़रत ईसाको हमने यह भी करामातदी कि उन्होंने एक मट्टीका जानवर बनाकरहवा फूंकी और वह मेरी आज्ञा से पक्षी होगया निदान यह जानवर मक्खी और मच्छड़आदिका शिकार करताहै बहुधा उड़नेके समय अपने बच्चे को मुखमें रखताहै और दूध पिलाताहै अनारको खाता है और उसका छिलका खाली करके छोड़देताहै जब इसके बदले चिनारके पत्तेदेवें तो भागता है कहतेहैं कि जो किसी गांवमें इस चिड़िया को दरख़्तपर लटकावें उस जगह टिड्डी न आयेंगी (गुण) इसका शिर कबूतरोंकी छतुरी पर रखनेसे कबूतरोंको उसछतुरीसे हुतलागू करताहै जो इसकाशिर मनुष्यके सिरहाने रक्खें उसको

नींद न आयेगी शेख़रईस का विचारहै कि जो ढठके के प्रारम्भ में इसका भेजा सुरमा बनाकर लगावें गुणकरे और इसकी राख भी लाभकरे जो मनुष्ययन्त्र बनावे वीर्य्य अधिकहो इसकालहू आंखों में लगाना रतौंधी को लाभकरे जो बगलके बाल दूर करके इसका रुधिर लगावें फिर बाल न जमेंगे इसकी विष्टाका सुरमा लगाना आंखकी सपेदीको नष्ट करताहै जो च्यूंटीके छिद्रमें रखदें च्यूंटियां भाग जायंगी जो इसकीविष्टा चूने और हरतालमें मिलाकर लिंग-स्थल पर लगायें मुद्दततक बाल न निकलेंगे और कईबेर इसक्रिया के करनेसे कभी बाल न निकलेंगे स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१३

(दुंग़ाज़) अर्थात् तीतर यह जानवर प्रसिद्ध शुभ है इसकी पीठ ऊंचीहोती और यह बहुत जानने वालाहै और इसके शब्द से ऐसामालूम होताहै यहांअरबीआयतहै जिसकेअर्थ यहहैं कि ईश्वर के धन्यवाद से पदार्थ सर्वदा स्थिर रहते हैं और बसन्त ऋतु के आनेकी खबर देताहै उत्तर की वायुसे प्रसन्नहोता और दक्षिण की पवनसे अप्रसन्न होताहै जाहिज़ कहता है कि यह वह जानवर है कि घरोंमें मादासे जुफ़ती नहीं करता परन्तु बाग़में खाता है और समझदारभी होताहै अबूतालिबुलत्योहीकी कहावत है कि किसीने तीतर पर बाज़को छोड़ा सो तीतर अपने घोंसलेमें गया और अपने दोनोंपैरोंमेंदोकांटलेकर अपनेको पीठकेबलउलटाकरदिया निदान इस उपायसे बाज़ उसकाशिकार न करसका शेख़रईसकहताहै कि इसका मांस भेजेका बल कारक और समझको बढ़ाताहै और वीर्य्य भी अधिक करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१४

(देक) अर्थात् मुर्ग़ा यह कामदेवकी अधिकता और गर्भ में हर एक पक्षीसे अधिक है सुबह होने की खबर देनेवाला है विचित्रता यहहै कि रात की घड़ियां और समयका अनुमान जानता है जैसे जब रात्रि पन्द्रह सायत (ढाईघड़ी)की होतीहै अपनी आवाज़ को

पन्द्रह पर बांटताहै और जब रात नौसायत की होतीहै तो नौ पर बांटताहै पैग़म्बर साहबने कहाहै कि ईश्वर ने आकाश के नीचे ये मुर्ग़ा पैदाकिया जिसके दो बाज़ूहैं जो दोनोंफैलावे पूर्व्वसे पश्चिम तक जापहुंचे रात्रिके अन्तसे अपनेपर खोलकर उत्तमशब्दसे नाम जपताहै और उससमय ज़मीनके मुर्ग़ेभी उसकेजपनेका उत्तरदेते हैं कहतेहैं कि बांग देनेवाला मुर्ग़ा जिसकी दाढ़ी और ताज कंगरेदार हो लज्जायुत उदारहोता और अपनीमादाकी प्रीति बहुत करताहै कहतेहैं कि जो मुर्ग़े की आवाज़ से जागे उसको नींद का भारीपन मालूमनहोगा सपेदमुर्ग़ेसे शैरभागताहै और जङ्गीमुर्ग़ाउत्तमहोताहै उसका चिह्न यह है कि उसकी चोंच सुर्ख़ और भारी गर्दन और छोटीआंखें छाती चौड़ी और तेज़ चुंगल ऊंची आवाज़ होतीहैं और यहमुर्ग़ा जब घरोगू मुर्ग़ीको देखताहै तो अपनीचोंच में दाना लेकर उसके सामने डालता है कहतेहैं किवह यह बात कामकी प्रबलता और युवावस्था में करताहै बुढ़ापेमें नहीं और घरोगू मुर्ग़ी को शत्रुसे बचाताहै और आपरक्षा करने वाला होताहै कहतेहैं कि नरमुर्ग़ा अपनी आयु भरमें एक अंडा देताहै जिसको बैजतुल असर कहतेहैं और वह बहुत छोटा होताहै कहतेहैं कि जब पुरुष सपेद मुर्ग़ेको मारताहै उसके धनद्रव्यमें हानि पहुंचतीहै जिसघरमें सपेद मुर्ग़ा हो वहां शैतान नहीं आताहै (गुण) मुर्ग़े सपेद की दाढ़ी को पीस कर जिस लड़के को बिछौना पर पेशाब होताहो पिलावें गुणकरे और इसका धुआं बावलेको गुणकरे इसका पित्ता आंखमें लगाना रतौंधी और आंखकी सपेदी को उपयोगी है बलैनासका बचन है कि इसका पित्ता बहुत सुबह भोजन में मिलाकर खाना स्मरणबढ़ाताहै इसका पित्ता चांदीके बरतन में खरल करके सुरमा बनावें आंखकी सपेदी नाशहो इसका बाज़ू बांधना रोज़के तप आनेको लाभकारक हैं जो सवार अपनी कमर में बांधे सवारी पर चलने से न थकेगा इसका लहू लगाना आंखकी सपेदी को दूरकरता है जो इस जानवर के लड़नेके समयका बहाहुआ रुधिर किसीजाति

को भोजन में खिलावें तो उनमें परस्पर विरोध होजाय जो इसको शहदमें जोशदेकर लिंगपर मलें बलबीर्य कारक है इसका मांस सुखाकर माजू और समाक जिसकोहिंदोमें तित्रक बातमा तोरकहतेहैं सब बराबर मिलाकर चनेके बराबर खाना अतीसार वालेको उपयोगीहैं कहतेहैं कि इसके पेटमें पथरी बाज़ी गेहुआं रंग और बाज़ीबिल्लौरके तौरपर होतीहै उसका यंत्रबनाना बावले को गुणदायक है और बीर्यभी बिशेष होताहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ३१५

(दजाज) अर्थात् मुर्ग़ी कभी किसी समय मुर्ग़ी भी बांग देतीहै और नरसे लड़ती है कभीऐसाहोताहै किनरसे जुफ़्ती खानेकेबिना मट्टीमें लोटने व दक्षिणी पवन के प्रभाव से अंडादेतीहै इस अंडेसे बच्चा नहीं निकलता है और खानेमें भी बेस्वाद होताहै और जब मादर के पेटमें इसतरह के अंडे बहुत से इकट्ठे होजायँ और अंडा देनेके पहले एकबेरभी नरसे जुफ़्तीखाले तोपेटके अंडे दुरुस्त होजातेहैं जो अंडे सेनेके समय बादल गरजा और उसने सुना तोवह सब अंडे बिगड़ जातेहैं और दक्षिणकी पवनमें भी यह प्रभाव है जो नर मुर्ग़ेकी कम जोरीमें अंडाहो वह खाली होताहै उससे बच्चा नहीं होता क्योंकि बच्चा अंडे की सपेदी से पैदाहोताहै और जर्दी उसका भोजन होताहै और ऐसे मुर्ग़के अंडे में जर्दी नहीं होती है और जब इसकी मादा मोटी होतीहै अंडा नहीं देती जिसतरह कि बहुत मोटी स्त्रियां गर्भवती नहीं होतीं (गुण) सपेद मुर्ग़की दश प्याज़ और एक हथेली भर तिलके साथ पकाकर उसका शोरवा मांस समेत खाय बीर्य अधिक होयदि इसके और चकोर के मांस को सदाखाय बवासीर और नकरसकी बीमारी पैदाहो और इसकी चरबी के उबटनसे मुंहकी सुर्खझाईं जाती रहती है और पैरोंकी बिवाई भी दूरहोतीहै ढलके के लिये आंखमें इसका पित्ता लगाना गुणदायकहै बलैनास कहताहै कि इसकापोटा खाना बिछौने परमूत्र करने वालेको लाभकरे तीनअंडे लेकरसिरके में तीनदिन तकरक्खें

फिर धूपमें रखकर सुखावें फिर छीपपर लेपकरें तो लाभ दायक है इसका आधा भूना अंडा बीर्यको अधिक करताहै जो इसका अंडा जाड़ेमें घासके अंदर और गर्मीमें भूसेके अंदररक्खें देरतक ख़राब न हो इसके अंडेकातेल नकरसकीपीड़ापर लगाना पीड़ा दूर करताहै इसकी बीट सिरके या शराबमें पीना कूलंज दूर करती है और पथरी की बीमारी मेंभी लाभदायकहै बलैनासका बचनहै कि काले मुर्गकीबीट जिस मकान के दरवाज़ेपर चिपकादें वहां बिरोध उत्पन्न हो सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३१६

(रखम) अर्थात् करगस यह अपने अंडादेनेको पहाड़ों के किनारे और कंदरा ढूंढ़ताहै कि कोई हानि न पहुंचे जब अंडा देनेका समय आताहै हिन्दुस्तान की धरतीमें जाकर एक पत्थर (अबूताकून) नामी लाकर उसपर बैठता है और अण्डादेता है यह एक पत्थरगोल खोखला होताहै और हिलाने में उसके पेटसे सूखे नारियलकी तरह खड़खड़ाहटका शब्द आताहै यह पक्षी सदालश्कर के पीछेउड़ता है क्योंकि इसका भोजन मुरदार है और हाजी लोगोंके पीछेभी उड़ता चलाजाता है कि जो चार पायें उनके मरजायें तो खाले और बकरीके बच्चा देनेके समय भी बाट देखता है कि बच्चा मुरदा पैदाहो तो खालूं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को गुणदायकहै और आंखोंमें लगाना आंखकी सपेदी और पीड़ाको नष्टकरताहै यदि चौथिया तप वाले को पिलावें लाभकरे यदि पारेके तेलमें मिलाकर मुखपर उबटनकरें तो जिस अधिष्ठाता के सामने जावें प्रतिष्ठा पूर्वक आवें बलैनास लिखता है कि उसके दाहने बाज़ूकी लंबीहड्डी को जलाकर जिसको खिलावें वह उससे प्यारकरे और बायेंकी हड्डीशत्रुता के लिये इसीतरहपर खिलाना लाभकरे और स्त्री इसकी बीटबत्ती बनाकर भगमें रक्खें पेटगिर जाय सूरतयह है ॥ तसबीर नम्बर ३१७

(ज़ाग़) कव्वा यह प्रसिद्ध पक्षी कालेरंग का हज़ारबर्षकी आयु

का होताहै और उल्लूका शत्रु परन्तु हाराहुआ जाहिज़ कहता है कि सम्पूर्णपक्षी अपने बच्चे को उसके बड़े होनेपर नहीं पहिंचानते परन्तु कव्वा पहिंचानता है जो इसके पर जलाकर जहां चाहें लगावें बालनिकल आयेंगे यदि दो मनुष्योंकेबीचमें कव्वे और उल्लू की आंख का धुआंकरें तो दोनों में शत्रुता होजाय जो इसकादिल सुखाकर पीसकर रखछोड़ें और जब गर्मीमें सफ़र करें और पानी में घोलकर पीलें प्यास न होगी क्योंकि कव्वा गरमी में पानी नहीं पीता कई कहते हैं कि इसका दिलपास रखना प्यासबुझाता है जो इसका और मुर्ग़ेका पित्ता शहदमें मिलाकर आंखमें लगावें सपेदीदूरकरे और बालोंमें ख़िज़ाबकरनेसे कालाकरदे इसकामांस और पोटा सुखाकर शहदके साथ तीनदिन छीपवाले को खिलावें गुण दायकहै जिसकी आंखों के सामने मक्खी उड़तीहुई मालूमहो वह रोगभी दूरहो यह नजलेके रोगका प्रारम्भ है बलैनासकहताहै कि इसकी चरबी गुलाब तेलमें बदन पर मलकर राजा के पास जाने से कार्य की सिद्धि करता है जो इसको सुखाकर नासूर पर लगावें उत्तम होगा इसका अंडा बवासीर परमलें लाभदायकहै जो शराबमें पीवें तो मद्यपीनेकी आदत जाती रहे इसकी बीट तिल्लीपर लगाना गुणदायकहै जो खांसीवालेके कंठमें छिड़कें खांसी जाती रहे सूरत उसकी यह है॥

तसबीर नम्बर ३१८

(ज़रज़ोर) इसको फ़ारसीमें सार कहते हैं यह अच्छीहवापसंद करताहै हिन्दुस्तानसे अराक़को जाताहै बहुधा यह पक्षी दरियामें नष्टहोताहै और मरजाने के पीछे सूखकर और बहकर किनारेआता है उसको वहांके लोग लकड़ी की जगह पर जलाते हैं बुक़रात का बचनहै कि इसके बच्चों को लेकर केसर में रंगकर उनके घोंसलोंमें छोड़देते हैं जब उनकी मां उनको देखती है बीमार समझती है तो इलाजकेवास्ते एक पीला पत्थर लातीहै सो वह लोगघोंसलेसे वह पत्थर उठालातेहैं और पानीमेंघिसकर कमलबायुवालों को पिलाते

हैं और आराम पाते हैं इसका मांस नेत्रकी ज्योति अधिक करताहै जो इसके मांसको सुखला कर गले के दर्दमें निहार खावें गुण करे और इसकी राख घावपर छिड़कना लाभकरे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३१६

(ज़मफ़ख़) इसको फ़ारसीमें जमक कहतेहैं इसका पित्ता आंख में लगाना रतौंधी को नाश करताहै और अंधेरी के दूरकरने में आज़माया हुआहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२०

(समानी) इसको फारसी में समाना कहतेहैं यह वह पक्षी है जिसको ईश्वरने बनी इसराईल के वास्ते कृपाकियाथा सलवी इसी का नामहै यहपक्षी सदाचुप रहताहै परन्तु रात २ भर बहार में चिल्लाता है और सांप को खाता है और उसका विष इसके कुछ अवगुण नहीं करता सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२१

(सन्क़र) यह शिकारी मुर्ग़ा शाहीन से मिलता हुआ होता है परन्तु इसके पांवमोटे होतेहैं और पिंडली इसकी लड़कोंकी तरह पर होती है बहुधा तुरक़िस्तान के शहरों में होता है ठंढे देशों में आराम पाताहै कहतेहैं कि जब इसकोशिकारपरछोड़तेहैं तो पहिले शिकारपर जाकर दौरा करताहै और ऐसेचक्कर लगाताहै जो हज़ार पक्षीहों तो निकलने न पावें निदान वहपक्षी आसक्त होकर शिकारियों के हाथमें आतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३२२

(शाहीन) यह प्रसिद्ध पक्षी है कबूतरों का शत्रुहै जब कबूतर इसको देखता है इससे उड़ने की अधिक शक्ति रखनेपरभी क्षीण होजाताहै और परनहीं मारसक्ता जैसे गधा शेरके साम्हने भेड़िये के आगे बकरी और चूहा बिल्लीकेआगे और कछुआ इसको देखकर छिपजाता है और यह उसकी पीठपर चोंचसे चोटकरता है परन्तु कुछ असर नहींहोता फिर शाहीन उसको उठाकर हवापर लेजाता है और कठोर पत्थरपर फेंकताहै वह उसकी चोटसे मरजाताहै तो

यह खालेता है जब बीमार होताहै तो ज़रारीह जोएक प्रकार का उड़नेवाला कीटहै उसके खानेसे आराम पाताहैसूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२३

(शफ़ीन) फ़ारसीमें इसको तीरक कहतेहैं यह जानवर खाकी रंगका कबूतरके बराबर होताहै जाहिज़ कहताहै कि इसकी विचित्रता यहहै कि जब इसकीमादा मरजातीहै तोदूसरी मादासेजुफ़्ती नहींकरता और जो नर मरजाय तो मादा भी दूसरेसे भोग नकरे इसकीचरबी कानमें डालना बहरेपनको गुणकारक है और सुरमा लगाना रतौंधी को लाभकरे जो इसकीबीट गुलाबतेल में मिलाकर स्त्री भगमें बत्तीलें गर्भाशयकी पीड़ा शांतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२४

(शक़राक) इसको फ़ारसी में कासकीना कहतेहैं यह सब्ज़रंग या ज़र्द या सुर्ख़ चोंचवाला होताहै यह छुहारेकेवृक्षका शत्रुहोताहै जब इसकापेट छुहारों के खानेसे भरजाता है तो बाक़ीफलों को गिरादेता है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२५

(साफ़र) यहपक्षी कभी आराम नहींकरता रातसे सुबहतक चिल्लायाकरता है कहते हैं कि इसको यहडर होता है कि आकाश मेरे शिरपर न गिरपड़े सो इसी चिन्ता में सारीरात शिर झुकाये रहताहै और जबतक सुबह हो नहींलेटती चिल्लाना नहींछोड़ता इस साफ़र का स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर ३२६

(सक़र) अर्थात् चर्ख़ यह शिकारी पक्षी विचित्रता से शिकार खेलताहै जब दोचर्ख़ हिरण या जंगली गाय पर छोड़ें एक उसके शिरपर आताहै और उसकीआंखों को अन्धाकरदेता है उस समय वह शिकार खड़ा होजाता है और दूसरा भी पहुंचकर उसकी आंखोंपर चोंचें मारता है उस समय आखेटक पहुंचकर शिकार करताहै यद्यपि यहपक्षी भेड़ियेसे छोटाहै परन्तु उसकाभी शिकार करताहै उसमें यह साहस ईश्वर की ओरसेहै॥

तसवीर नम्बर ३२७

(तायरुलबहर) यह दरियाईपक्षी सदा दरियामें उड़ताहै दरिया वाले कहतेहैं कि यह कभी घोंसला नहींबनाता परन्तु जब अण्डा देताहैं तब बनाताहै और घोंसला समुद्रफेन का बनाता है इसके सिवाय सदा उड़ाकरता है और वायु पर जुफ़्ती भी खाता है यह अपने अंडोंको सेतानहीं है किन्तु उसमें अपने आप बच्चा पड़ताहै और जब बच्चा ताक़तदार होताहै उससमय अंडे को तोड़के वहभी अपनेमाता पिता के सदृश उड़ने लगता सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३२८

(ताऊस) अर्थात् मोर यहपक्षी स्वरूप और सुन्दरतामेंसम्पूर्ण पक्षियोंसे उत्तम होताहै और अति विचित्ररंगों से रंजित बनाया गयाहै इसके परोंपर आश्चर्य्य आताहै कि हरपर में सुनहरी घेरा बनाहोताहै जो नीला सब्ज़ीलियेहै क्योंकि जो सोनेको सुर्खीजर्दी या सपेदी पर रक्खें इतना सुंदर न होगा जैसा कि नीलेरंग और सब्जीपर अच्छा मालूमहोताहै मोरकी आयु पच्चीसवर्ष की होती है और इसीसमयमें सबरंग उसमें उत्पन्नहोतेहैं इसकेपर पतझाड़ में झड़तेहैं और बहार में नयेरंग निकलते हैं शेखरईस कहता है कि मोर का पालना दुःखदाई जानवरों से बचाता है (गुण) इसकी हड्डीका गूदा तितली और शहद में खाना कूलंज की पीड़ा और पक्काशय की पीड़ावाले को उपयोगी है जो कोई इसका ताजा लहू पिये बावलाहोजाय इसकापित्ता सिकंजबीन के साथ गरमपानीमें पीना अतीसारके रोगीको दूरकरताहै और जिह्वाका भारीपन भी नष्ट होता है इसका मांस चरबी समेत खाना जातुलजन अर्थात् पृष्ठिपीड़ा को गुणदायक है और इसकामांस वीर्य अधिककर्त्ता है और घुटनें की पीड़ा को लाभकरे इसकी चरबी पीड़ा में लगाना शांतिकरता है इसकीहड्डी जिसकेपासहो उसपर दुर्दृष्टिका प्रभाव न हो इसका चुंगल प्रसूति की पीड़ा में स्त्रीकी रानपर बांधना या योनिमें धूनीदेना बहुत गुणदायक है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२९

(तैहूज)अर्थात् तैहू इसकामांस पुष्टकर्त्ताहै और वीर्य के अधिक करने वाला भी है सूरत उसकीयह है॥

तसवीर नम्बर ३३०

(अस्फ़ूर) अर्थात् गोरय्या यहपक्षी दोप्रकारका होताहै एक जो दानाचुनता दूसरा मांस खाता है और यह टिड्डियों का शिकार करतेहैं यह पक्षी अपनी घोंसला बस्ती में बहुधा छत्तों में बनाता क्योंकि शिकारी पक्षियोंसे भयमान रहताहै जो शहर उजाड़होतो यहपक्षी कभी वहां न रहेगा इससे और सर्पसे शत्रुताहै जब सांप इसके बच्चोंके खानेको इसके घोंसलेमें जाना चाहताहै तो यह चिल्लाताहै और इसके साथी शब्दसुनकर इकट्ठेहोतेहैं और चिल्लातेहैं बहुधा सर्प को अवकाशपाकर घायल करतेहैं यदि घावहोगया तो सर्पकीमृत्यु है क्योंकि सर्प के घावपर मक्खी और च्यूंटी इकट्ठी होजातीहैं और सर्पमरजाताहै और यहपक्षी गधेका भी शत्रुहोती है क्योंकि गधेकेशब्दसे इसकेअंडे खराबहोतेहैं सो यहपक्षी अपनी चोंचसे गधेको घायल करता है उसपर मक्खी और मच्छड़ एकत्र होतेहैं और यहपक्षी बीमारी में गधेका मांस खाकर आरामपाता है इसके बराबर दूसरे किसी जीवधारी में मैथुनशक्ति नहींहै इसी कारण इसकी आयु थोड़ीहोती है इसकामांस बलवीर्य बढ़ानेवाला और बातघ्नहै क्योंकि गर्महै इसका अण्डाखाना मैथुनकीइच्छा का प्रेरकहै इसकाअण्डा पृथ्वीमें गाड़कर फिर निकालकर नासूर पर लगानागुणदायकहै इसकीबीट आंखमेंलगाना रतौंधी दूरकरे जो मद्यमेंडालकर किसीकोपिलावें मूर्च्छितहोकरगिरपड़े सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३३१

(उक़ाब) यह शिकारी पक्षीहै धरतीके छोटे २ पक्षियों का शिकार करताहै जैसे खरगोश और लोमड़ी और जिसका शिकार करता है केवल उसका कलेजा खा लेता है क्योंकि उसका कलेजा उसके रोगको गुणदायक है किसी समय इसपक्षी की चोंच लम्बी हो-

जाती है इससे शिकार से हार मानकर मरजाताहै साहबुलफ़ऊाहा कहताहै कि चील उक़ाब और उक़ाब चील होजाता है जाहिज़ का बचनहै कि उक़ाबके चुंगलमें इतना बलहै कि भेड़ियेको फाड़डालता है और सदैव काल सेनाओं के साथ रहताहै कि निर्जीव मांसमिले शिकारियों का वाक्यहै कि उक़ाब अपने शिकारको डराता नहीं है किन्तु आपही किसी ऊंची जगह पर जा बैठताहै जब देखताहै कि कोई शिकार लियेउड़ा आताहै उसके सामने कूदताहै और शिकार उसका छीन लेताहै और जब शिकारी जानवर उक़ाबको देखताहै उसका तो उद्योग नहीं करता किन्तु अपने छुटनेका उपाय करता-है और अपने शिकारको उक़ाब के वास्ते छोड़ देता है कहते हैं कि जब उक़ाब बूढ़ा होता है उसके बच्चे उसको पालते हैं जब उसकी आंखें बुढ़ापे से अन्धी होजाती हैं या कमज़ोर होती हैं तोआकाश की ओर यहांतक उड़ता है कि सूर्य्य की गर्मी से उसके पर जल जाते हैं उस समय नीचे गिर पड़ता है जो पृथ्वी पर गिरा तो मरगया और जो दरियामें गिरा तो कई बार गोते लगाता है और जब दरिया से निकलताहै तो ईश्वर की इच्छासे युवा होजाता है बुढ़ापे के चिन्ह नहीं रहते और पर भी निकल आते हैं इसकी आयु बड़ी होतीहै और बहुत दिनों तक जवान रहता है और ऐसा तेज़ पर होताहै कि जो सुबह इराक़में है तो शामको यमनमें पहुँचताहै उक़ाबके बच्चेको भी बहुत स्वाभाविक अभ्यास होताहै बहुधा इसके घोंसले पहाड़ की चोटियों पर होते हैं और वह पहाड़ ऐसे तिरछे होतेहैं कि जो उनके बच्चे तनक भी घोंसलेमें हिलें तुरन्त पहाड़से नीचे आगिरें सो इसके बच्चे इसी परीक्षा के ज्ञानसे नहीं हिलते जबतक कि सब पर न निकल आवें और उड़नेकी शक्ति भलीभांति न आवे इसीकारण अरबके निवासियोंका बचनहै कि अमुकमनुष्य उक़ाबके बच्चेसे भी अधिक अभ्यासित है कदाचित् कोई पालूपक्षी अर्थात् मुर्ग़ चकोर और कबूतर आदि के बच्चे जंगली पक्षियों के घोंसले में रखदे तो तुरन्त हिलने में गिरपड़ते हैं विचित्रता यह

कि उक़ाब का बच्चा जबतक कि उसके पर निकल कर ठीक और बराबर न होजावें नहीं हिलता और जानता है कि हिलनेमें गिर पड़ूंगा(गुण) कहतेहैं कि इसका भेजा हरी मूलीके रसमें गर्महम्माम के अन्दर बैठकर पीना जातुल जनब अर्थात् पीठकी पीड़ाको गुण-दायकहै और नेत्रकी ज्योति भी अधिक करताहै और जिन स्त्रियों की छातियोंमें दूध जमगयाहो मर्दन करें दूधजारी होजाय इसका लहू सुखाकर पीले हड़के साथ पीसकर सुरमा बनाकर लगाना धुंधले को उपयोगी है इसकी चरबी तिलोंके तेलमें पिघलाकर पांव की हड्डीकी पीड़ा पर लगाना उपयोगी है और बन्दर२की पीड़ा को गुण.दायक है इसकी हड्डीकी मींगी शहद और एलवे के साथ नासूरके लियेलाभकारीहै दो तीन बेरमें अच्छा करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६२

(अक़अक़) एकप्रकारकाकव्वा फ़ारसी में इसको शमीर दुबा-अका और कुन्दश कहतेहैं यहबड़ा चोर होताहै चांदी सोनेके गहने और जवाहिरकी कोईचीज़ या सुन्दर वस्तुको देखता है तो उठा-लेजाताहै और दूसरी जगह फेंक देताहै और छत आदि के नीचे छायामें घोंसला बनाताहै और चिनारके पत्तोंको अपने घोंसले के गिर्द रखताहै कि चमगादर उसके अण्डे बच्चों का इरादा न करे क्योंकि बहुधा यह अपने अण्डे बच्चोंकोअकेला छोड़कर चलाजाताहै इसका भेजा पिघलाकर लक़वे और फ़ालिज़ वालेकी नाकमें टप-कावें तो तुरन्त छींक आवे और रोग नाशहो इसका लहू छाया में सुखाकर गुलाबमेंपीना बाचालता उत्पन्न करताहै और जहां कांटा या तीर गड़के टूटजाय वहांइसकी चरबी मलदें तो सुगमता पूर्वक निकल आवे इसकी हड्डीकी मींगी लड़कों को खिलावें बाचालता उत्तमहो इसके परकी राख च्यूंटीके बिलमें छोड़नेसे च्यूंटियां भाग जातीहैं इसकेअण्डेकी ज़र्दीका हम्मामसे निकलकर सुरमालगाना रतौंधीको गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३३

(उनक़ा) अर्थात् सीमुर्ग़ इसका सम्पूर्ण पक्षियों से शरीर बड़ा होताहै कि हाथी और भैंस को उठालेजाताहै कहते हैं कि पूर्व समयमें यह मनुष्यों में रहताथा जब इसकी दुष्टता यहांतक पहुंची कि एकदिन एक दुलहिनको जो भूषणों से अलंकृत थी उठालेगया सो एक पैग़म्बरके चेलेने शापदिया तो ईश्वरने उसे मध्यरेखाकेनीचे समुद्रकेकिसी टापूमें डालदिया कि मनुष्यकी ओर न पहुंचसके उस द्वीपमें हाथीगैंड़े और भैंस आदि बहुतसे पशुहैं परन्तु उनक़ा उनका शिकार नहीं करता क्योंकि यह सब उसके आधीन हैं जब इनमें से कोई बाग़ी होता है तो उससमय उसका शिकार करताहै.नहीं तो बड़ी मछली या अज़दहे को शिकार करता है और अपना जूठा अपने आधीनी अन्य पशुओं को खिलाता है और आपऊंचे बैठकर उनके खाने का तमाशा देखता है उसके उड़ने के समय परों की खड़खड़ाहट से ऐसा मालूम होताहै कि मानों बहाव आताहै कहते हैं कि इसकी उमर अठारह सौ वर्षकी होतीहै जब पांचसौ वर्षकी आयु होतीहै तब जुफ़्ती करताहै अण्डादेनेके समय इसकी मादाको बड़ा कष्ट होताहै उस समय इसका नर दरिया का पानीचोंच में लाकर हुकना करताहै और इस उपाय से अण्डा सुगमता पूर्वक निकलता है सो नर अण्डेकी रखवाली करताहै और मादानिकल कर शिकार में जाती है और एकसौ पच्चीस वर्ष में उस अण्डे से बच्चा निकलता है जब वह बच्चा जवान होता है तो जो वह मादा हुआ तो उसके मां बाप लकड़ियां इकट्ठी करके परस्पर अपनी २ चोंच को रगड़तेहैं और उस रगड़ने से आग निकलतीहै और वह लकड़ियां जलने लगती हैं उससमय मादा उस आग में जल कर राख होजाती है और वह नर अपने मादा बच्चे से जुफ़्ती खाता है कदाचित् बच्चा नर हो तो उसका बाप यूंही जल जाता है और वही नर बच्चा उसके स्थानापन्न होकर अपनी मां से जुफ़्ती खाता है इसके सिवाय बहुतसी कहानियां सीमुर्ग़ की हैं परन्तु

उनका विश्वास न होने से वर्णन नहीं कीगई सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ६३४

ग़राब अर्थात् एक प्रकारका कव्वा यहबड़ा सफ़र करनेवाला है और सुबहको सब पक्षियोंसे पहिले उड़ता है यह पक्षी अख़रोट को बहुत पसन्द करताहै किन्तु उसका संचय करताहै और अपनी चोंचसे अखरोट में छेद करताहै और मनुष्यों की आंख फोड़नेका इरादा करता है और भूखे होनेपर मारने सेभी भागता नहीं है और बड़े २ जानवरों से नहीं डरता यहां तक कि ऊंट और बैल की पीठ पर बैठता है और कछुवे की पीठमें चोंचसे छिद्र करता है और उसका मांस खाताहै और जब ऊंटकी पीठमें घाव होकर उसमें बदगोश्त होजाताहै तोलोग उसको जंगलमें छोड़ आतेहैं क्योंकि कव्वा उसके बदगोश्त को खालेताहै इसके नरके मरनेपर मादा दूसरा नरनहीं करती और मादाके मरनेपर नर दूसरी मादा नहीं करता जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै सपेदरंग बिनापर के होताहै इसीसे मां डरतीहै और उसको छोड़ देती है सो ईश्वर मक्खियों को उसके कंठमें पहुंचाताहै जिसको खाकर बच्चाकाला होताहै और पर और बाज़ू निकालता है मकहूलका बचनहै कि हज़रत दाऊदका आशीर्व्वादथा कि ईश्वर उनचिड़ियोंको जो शिकार नहीं करतीहैं घोंसलेमेंही भोजन पहुंचाताहै तो जब वहकाला और बड़ाहोजाताहै उसकी मां आनकर पालतीहै और मक्खी और मच्छड़ उससे दूरकरतीहै खलफ़अहमर का बचनहै कि मैंने कव्वे के बच्चेको देखा कि कोई और सूरत बहुतबुरी उससे न देखी शिर बहुतबड़ा बदन छोटा चोंच लंबी पंखछोटे २ बेपरके जबयह बीमार होताहै मनुष्यकी विष्टाखाकर आरामपाताहै बाज़ाकव्वा तोतेसेभी बढ़कर बातें साफ़ २ करताहै (गुण) इसकी दोनों आंख और उल्लूकी आंख सुखाकर जिसजाति के बीचमें जलावें सबमें बिरोध होजाय बलैनासका बचनहै कि इसके दिलको मनुष्य सुखाकर पानीमें पीसकर गरमी की ऋतुमें पिये बहुत तपनमें भी प्यास

मालूमनहो जो इसका पित्ता शराबमें डालकरपियें पहले प्यालेमें उन्मत्त होजायँ जो जंगली कव्वेकाशिर पकाकर बहुत दिनोंकी शिरपीड़ावाले को खिलावें गुणदायकहै जो इसका रुधिर शराबके साथ पीवें फिर कभी शराबकी इच्छानहो किन्तु उसकाबड़ा शत्रु होजाय इसकी बीट रेशमी रंगीन कपड़ेमें बांधकर खांसीकी बीमारी में हाथमें बांधें आराम पावें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३५

(गज़ीबक़) यह जानवर दरियाई परिन्दों से हैं और बोलने वालेहोतेहैं यह वे पक्षीहैं जो दरियाकिनारे रहते हैं और जब वायु ख़राब होजातीहै तो वहांसे शहरोंमें आतेहैं उससमय अपने समूह में कोतवाल और चौकीदार नियत करते हैं कि सबकीरक्षा अच्छी तरहसेहो उड़नेके समय बहुत ऊंचे होजातेहैं कि कोई शिकारीपक्षी इनसे न बोलसके जब बादल आकाशपरहो या रात्रिको बहुत अंधेराहो या पृथ्वीपर भोजन के लिये नीचे उतरें तो चुपरहें और कुछभी न चिल्लावें कि शत्रुको मालूमनहो जबसोनेकी इच्छा करते हैं अपने शिरको पंखके नीचे छिपातेहैं इस दृष्टिसे कि शिरकेलिये बहुतसी आफ़तें हैं और यहजोड़ सर्वोत्तमहै जो इसमें कोई उपद्रव हो सम्पूर्ण शरीरमें हानिहो जबयह जानवर सोते हैं तो एकपांव धरतीपर रखतेहैं और एक उठाये रखतेहैं क्योंकि यहभय लगा रहताहै कि जोदोनोंपैर पृथ्वीपररक्खेंगे तो बेगसेनिद्राआजायेगी इनका रखवाला और कोतवाल कभी नहीं सोता और अपना शिर पंखके नीचेनहीं रखता किन्तुहर ओर दृष्टिलगाये रहताहै और जब शत्रु दिखाई देताहै तुरन्त चिल्लाकर अपने समूह को ख़बर देताहै (गुण) इसकी बीटमें बत्ती भिगोकर नाकमें रखना हरघाव को जो नाकके अंदरहो गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३६

(गव्वाज़) इसको फ़ारसीमें माहीख्वार कहतेहैं बुसरे के शहरोंमें दरिया किनारे होताहै इसके शिकार का यहहालहै कि पानी

में बड़ी देरतक गोता लगाताहै और मछली को पकड़ के बाहर निकालताहै विचित्रता यहहै कि शिर झुकाये पानीमें रहताहै और जलके वेगसे नहीं हिलता कोई कहतेहैं कि हमने माहीख़्वारपक्षी को डुब्बी लगाकर मछली लाते देखाहै और कव्वेने इसकापीछा किया और उसपर प्रवल होकर मछली लेगया सो यहपक्षी दूसरी बार डुब्बी खाकर मछली लाया और कव्वेके साम्हने गया जब कव्वा मछली खानेलगा यह उसकी टांग पकड़के दरियामें लेगया और कव्वेको पानीमें मारके आप आनंदसे निकल आया इसका लहू आदमी के जलेहुये बालोंमें मिलाकर जिसको खिलायें प्रीति करने लगे और इसकी हड्डीमें भी यहीगुण है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३७

(फ़ाख़्ता) प्रसिद्धहै इसेलोग शुभजानते हैं इसके शब्दसे सर्प भागतेहैं एककहानी है कि किसी धरतीपर सर्प बहुत हुये और उन्होंने उपद्रव मचाया लोगोंने विचारा कि फ़ाख़्ता मँगानी चाहिये और इस विचारसे सांपोंसे छूटे फ़ाख़्ता और कबूतर के लहू और ज़फ़्तनामीगोंद और कतराननामी तैलको जलाकर धुंआँकरें जिस की नाकमें गंध पहुंचे निद्रानाश का रोग होजाय सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३८

(क़ौह) अर्थात् चकोर यह सुन्दर विचित्र चित्रित होता है पहाड़ोंमें रहताहै जब शिकारी इसके पकड़ने की इच्छा करताहै यह बेचारा अपनाशिर बरफके अंदर छिपाताहै इसविचारसे कि जिस तरहमैं शिकारीको नहीं देखताहूं वैसाही शिकारीभी मुझको न देखताहोगा सो शिकारी सुगमता पूर्वक सबको पकड़ लेताहै इस पक्षीके नर बड़े लज्जा युक्त होतेहैं जो दो नर एकमादा पर लपकें बड़ी लड़ाईहो जबतक कि एक प्रबल और दूसरा भाग न जाय उससमय मादा प्रबल चकोरके आधीन होतीहै विचित्रता यहहै कि जब यहपक्षी बोलताहै और उसका शब्द मादाके कानमें पहुंचता है तुरन्त उसके पेटमें अंडा पैदा होजाताहै जैसा कि छुहारे का

दरख्तभी नरमादा होताहै और जब नरकी हवा मादाके दरख्ततक पहुंचतीहै तब फलदार होताहै और यहपक्षी पंद्रह अंडे देताहै और दोजगह रखकर एकजगह नर सेता है और दूसरी जगह मादा सेतीहै यहजानवर बस्तीमें जुफ़्ती नहींखाता और सुन्दर स्वरोंको प्यार करताहै बहुधा अच्छे शब्दसे यहांतक बिह्वल होताहै कि गिर जाताहै फिर शिकारी लोग उसको पकड़ लेतेहैं इसका शिर आंखमें लगाना ढलकाको लाभ कारक है हरमहीने की पहली तारीखमें इसकापित्ता नाकमें छोड़ना समझ बढ़ाताहै इसका पित्ता खजल एकप्रकारका चकोरहोताहै उसकी बीट और अनबेधे मोती सब बराबर लेकर पीसकर सुरमा लगावें आंख की सपेदी जाती रहे इसका कलेजा भूनकर लड़कोंको खिलाना मिर्गी के रोगको दूर करताहै और इसका रुधिर नेत्रोंमें लगाना घाव और रतौंधी को लाभदायक है इसका मांसखाना पुष्ट करताहै और जलंधरकी बीमारी जाती रहतीहै और कामदेव के बढ़ानेवाला भी है और इसका अंडा सिरकेमें मिलाकर जंगली प्याजके साथ कच्चा खाना विषको गुणकारक है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३९

(क़बरा) अर्थात् हुदहुद सुन्दर स्वरोंको प्रिय रखताहै इसके शिरपर मोरकी तरह एकचोटी होतीहै और बड़ा चैतन्य होताहै जहां उतरताहै दाहें बायें देखा करताहै और बहुत कठिनतासे शिकार होताहै इसका घोंसला अति विचित्रतासे बना होताहै अंगूरकी तीनलकड़ियोंसे घोंसला बनाताहै और घास उत्तम और सुंदर लाताहै और उनलकड़ियों के बीचमें रखताहै और उसमें बच्चा देताहै और घाससे छिपाताहै कि शिकारी पक्षी न देखपाये इसका मांस भूनकर खाना लकवेको गुणदायक है स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४०

(क़ता) अर्थात् कतू जिसको लवा कहते हैं इसपक्षी का नाम इसके शब्दपर रक्खा गया है क्योंकि यहक़ता २ कहा करता है

अरब कहताहै कि अमुककता अर्थात् सचकहनेवालाहै और अधिक तरयहभी बचनहै कि अमुककता अर्थात् सीधा मार्ग जानता है और यह जानवर जंगलमें अंडेदेके पृथ्वीमें गाड़ताहै और आपगुप्त होजाताहै और कई दिनके पीछे आकर वहां अंडासेताहै इसपक्षी की चाल उत्तम होतीहै यहांतक कि इसकीगतिसे सुन्दरस्त्री पुरुषों की चालका दृष्टान्त देतेहैं इसका घोंसला पृथ्वीपर बहुत छोटा घासकेअन्दर होताहै पैग़म्बरसाहब ने दृष्टान्तकहाहै कि जो मनुष्य ईश्वरकेवास्ते मसजिद बनावे चाहेवह क़तापक्षी के घोंसलेकी तरह छोटीहो तो ईश्वर उसकेवास्ते बिहिश्तमें घरबनावेगा (गुण) इसका रुधिर शरीरमें मलना बालखोरेको गुणदायकहै यदि लिङ्गपरमलें बीर्य अधिककरे इसकामांस जलन्धर को लाभकरे और प्रकृति के उपद्रव और कलेजेके पकड़नेको सुधारे और इसकोजलाकर तेलमें मिलाकर जिसजगह बाल जमानाचाहें लगावें जल्दी निकलआवें इसके पेटके जोड़ उनस्थानोंपर पीसकर लगाना जहां कि हड्डियां इधरउधर होगईहों तो उन अस्थियोंको अपने मुख्यस्थानमें लाता है यदि नेत्रमेंलगावें घावको गुणदायक और रतौंधीको उपयोगीहै सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर ३४१

(कुमरी) टोटरू प्रसिद्ध पक्षीहै बहुधा लोग इसको पालते हैं कहतेहैं कि इसकीमादा नरके मरनेपर दूसरे नरकेपास नहींजाती और सर्वदा अपनेमरेहुये नरको यादकरतीहै यदि कुमरीका अण्डा फ़ाख़्ताके नीचेरखदें या फ़ाख़्ताकाअण्डा कुमरीकेनीचेरखदें हरदशा में उसअण्डेसे कुमरीहीका बच्चा निकलेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४२

(कोक़नसअरज़) यहजानवर हिन्दमें अद्भुतहोताहै तोहफ़तुलगरायबका निर्मापक लिखताहै कि जब यह जानवर जुफ़्ती की इच्छाकरताहै तो पहले नर और मादा लकड़ीइकट्ठीकरके उसपर बैठकर जुफ़्तीकरतेहैं और फिर परस्पर चोंचरगड़के अग्निनिकालते हैं और उसआगमें जलजातेहैं और जब मेहबर्षताहै उसीमट्टीमें

से दो जानवर उत्पन्नहोतेहैं और उनके पर निकलतेहैं अन्तको बढ़े होकर कोक़नस होजाते हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४३

(करकी) अर्थात् कुलंग हिन्दीमें कौंचकहते हैं इनमें बड़ीसम्मति होतीहै शायद कोई किसीका शत्रुहो और इनमें एक सर्दार होताहै जिसके सब आधीन होते हैं और बारी २ एक २ उनका रखवाला होकरइनकेगिर्दफिराकरताहै और रक्षाकरताहै और शत्रुकोदेखकर ऊंचे शब्दसे अपने साथियों को इत्तिला देताहै रात्रिको ऐसी जगह जातेहैं जो बस्ती से दूर होतीहै और अच्छी तरह पांव धरती में जमाकर नहीं सोते कि निद्रा का वेग न हो जाहिज़ कहता है कि कुलंग दोनों पांव पृथ्वी पर रखकर नहीं खड़ा होताहै इस भय से कि जो दोनों पावँ धरती पर रक्खूंगा तो ऐसा न हो कि बोझके कारण पृथ्वी के नीचे धँसजाऊं (गुण) इस की आंखको घिसकर सुरमा करना निद्रादूर करता है यदि इसका पित्ता मर-जनूजोश अर्थात् मरवाके साथ कजली करके जिसतरफ़ लक़वा हो उस ओरके नाकके छिद्रमें डालें और दूसरी ओर अखरोटका तेलडालें और सातदिनतक अँधेरे मकान में बैठावें तो लक़वादूर होजाय इसका मांस चरबी समेत पकाकर बहरे के कान में डालें अच्छा होजाय और भेजा सिरके और जंगली प्याज़केसाथ हम्माम में खाना तिल्ली के रोगी को गुण दायक है इसका मेदा सुखाकर चनोंके पानीके साथखावे तो अंडकोषकी पीड़ा और फुकने को गुण-दायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४४

(करवान) यह एक पक्षी है जिसको फ़ारसीमें चोबीनिया कहते हैं इसका मांस चरबी समेत पकाकर खाना बहुतही वीर्य करता है यहां तक कि मनुष्य बेचैन होजाय सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३४५

(लक़लक़) इसका भी स्वरूप लवासे मिलताहै इसका भोजन

केवल सर्प है इसके दोघोंसले होते हैं एकठंढेदेशमें दूसरा गर्मदेशमें इसको रबीकी फ़सल पसन्द है और अपना घोंसला ऊंचे बनाता है और मज़बूत इतना होता है कि ख़राब करने से ख़राब नहीं होता इसकी बुद्धिमानी में शेख़रईसका बचन है कि महामारी पर यहपक्षी वहांका रहना छोड़देताहै इससे सम्पूर्ण कांटेदार कीड़े मकोड़े आदि भागते हैं इसका अंडा ख़िज़ाबके वास्ते उत्तम है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ६४६

(मालिकुलहज़ीं) अर्थात्बगला इसकी गर्दन और पांवलम्बे होते हैं जाहिज़ कहता है कि यह जानवर नहरों के किनारे होता है और जो किसी कारण नहर का पानी कमहोजाता है तो अति चिन्तित होता है और फिर जल इस भयसे नहीं पीता कि जो मैं पीलूंगा तो पानी कम होजायेगा और लोग प्यासे रहैंगे यहां तक कि आपही प्याससे मरजाता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६४७

(मका) इसको फ़ारसीमें शबानगरीब कहते हैं जंगलमें रहता है और विचित्र घोंसला बनाता है इसकी सर्प से शत्रुता होती है क्योंकि वह उसके बच्चोंको खालेता है सालिम के पुत्र हुशामका वचन है कि एक सर्प उसके बच्चोंको खाताथा मका चिल्लाता था सर्प ने बच्चे छोड़कर इसकी ओर मुखखोला इसने उसके मुखमें एक कांटा उसी जगहसे तोड़कर डालदिया सांप उसी समय मर गया सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ६४८

(नसर) अर्थात् करगस यहपक्षी भोजनका लोभी होताहै जब मुरदार पाताहै इतना खाताहै कि उड़नहीं सक्ता कहतेहैं कि हज़ार बर्षकी आयुपाता है बहुधा इसके घोंसले ऐसी जगह होते हैं जहां किसी जीवधारीकी पहुंच नहोसके कहते हैं कि जब इसकी मादा अंडे सेतीहै तो दलब अर्थात् चिनारके पत्ते लाकर घोंसलेमें रखती है कि चमगादड़से उसके अंडेको दुःखनपहुंचे जब बच्चा पैदा होनेका

समय आताहै इसकानर हिन्दुस्तानमें जाकरएकप्रकारका दरियाई पत्थर लाकर मादाके नीचे रखताहै कि सुगमतासे प्रसूतहो बीमारी में मनुष्यका मांस खाकर आराम पाताहै जबइसकी ज्योतिमें कुछ उपद्रव होता है तो मनुष्यके पित्तेको आंखोंमें मलकर आरामपाता है और इसको गुलाबकी सुगंध हानि करतीहै किन्तु सम्पूर्ण प्रकार कीसुगन्धनहींसहसक्ताहै क्योंकि निर्जीव जीवधारियोंकेखानेवाला है दुर्गन्धिकी रुचि रखता है लश्करोंके साथ मुरदार जीवोंके लोभ से रहताहै और हज्ज करने वालेके साथभी रहताहै क्योंकि बहुधा हज्ज करनेवाले बेकाम चारपायों को जंगलमें छोड़ देते हैं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को अच्छा करता है जो सातबेर सु-रमेकी तरहपर लगावें कीचड़ आंखकी दूर करे और पानी उतरने को बंदकरे इसके मांसको नमक बरश (रूमीदवा) ज़ीरा और शहद के साथ खाना बिषको दूरकरे और चरबी इसकी बहरे के कानमें डालना गुणदायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३४३

(लगामा) अर्थात् शुतरमुर्ग़ यह कई पशुओं के संसर्गसे उत्पन्न होताहै इसकी गर्दन और पांव ऊंटसे मिलते हैं और चोंच और पंख पक्षीकेसे होते हैं इसके पक्वाशय में इतनी गर्मी होती है कि कंकड़ पत्थर जो पेटमें हो पच जाता है और इसमें सूंघने और सुनने की शक्तिबहुत तीक्ष्ण होतीहै और पचनेकी शक्तिकी तो यह दशाहै कि जो सेरभरका पत्थरभी आगमें लालकरके उसके आगे डालदें तो यह खाले और उसके मुंह और पेटको कुछहानि न पहुंचे और वह पचजाय और कोई जानवर दौड़नेमें इसके आगे नहीं जासक्ता जब गर्मीमें छुहारा लालहोता है तो इसकी पिंडलीभी सुर्ख़होती है जब अंडा देताहै और गिन्तीमें बीस होजातेहैं तो उनके तीनभाग करता है एक भाग सूर्यके साम्हने रखताहै दूसरा पृथ्वीमें गाड़ताहै एक अपने नीचे रखता है जब अपने नीचेके अंडोंके बच्चे निकलते हैं तो जो अंडे सूर्यमें रक्खेहैं उनको तोड़कर बच्चोंको खिलाताहै कि उन

को बलही और मट्ठीवाले तोड़कर मैदानमेंरखताहै कि मक्खीआदि उनपर इकट्ठीहों सो उन मक्खियोंकोभी बच्चोंको खिलाताहै अरब के निवासियोंके निकट यह अहमकहै क्योंकि बहुधा दूसरेका अंडा देखकर उसको सेताहै और अपना भूल जाता है और दूसरी निर्बुद्धि यहहै कि भोजनके विचारसे दोभाग अपने अंडोंको नष्टकरता है इसका पित्ता आंख में लगाना आंख की अंधेरीको दूर करता है और इसका मांस बात और श्लेष्माके रोगोंके दूर करने वाला है और इसकी चरबी सूजनोंको गलाती है जो इसके अंडेका छिलका मांसमेंछोड़दें बहुतजल्दीपकजाताहै चाहे आंचकमभीहो सूरतयहहै

तसवीर नम्बर ३५०

(हुदहुद) यह प्रसिद्ध पक्षी है पैगम्बर साहबका बचन है कि हुदहुदको मतमारो क्योंकि उसने सुलेमानको सबान शहरमें मार्ग बतायाथा और मैं इसबातको प्रिय जानताहूं कि वह ईश्वरका भजन करता है जिसका साथीकोई नहीं है लिखा है कि हुदहुदने एकबेर हज़रत सुलेमानसे विनयकी कि आपमेरा न्यवता अंगीकार कीजिये हज़रतने कहाकि मैं अकेला आऊं या सेनासमेत हुदहुद ने विनय की आप सेनासमेत अमुकद्वीपमें सुशोभित हूजिये हज़रत नियमित दिवसको उसद्वीपमें गये हुदहुदने क्या कामकिया कि एकटिड्डी को पकड़कर गर्दन उसकी काट डाली और दरिया में डालदिया और हज़रत सुलेमान से विनय की कि आप सेना संयुक्त इसको खाइये यह दरिया नहीं है यह टिड्डी के मांस का शोरबा है इस बातसे आप और आपका लश्कर एक बर्ष तक हंसतेरहे हुदहुद के बच्चोंमें दुर्गंध आतीहै कइयोंका वचन है कि यहपक्षी अपने घोंसले को मनुष्यकी विष्ठासे भरा रखता है इसी कारण यह दुर्गंध उनके शरीरसे आती है जब यह बूढ़ा होता है इसके बच्चे इसके पंख और पर उखेड़ डालतेहैं और उसको अपने परोंके नीचे रखतेहैं यहनये सिरे से जवान होजाता है इसको बीमारी में जंगली बिच्छू खाना गुणकारी है जो इसके बच्चेको सरतान (पीठका फोड़ा, जोगैंगटे के

रूपका होताहै) पर बाँधैंतो यह फोड़ा जल्दी गलजावे (गुण)इसका ताजा शिरपर बांधना शिर पीड़ाको दूरकरता है बलैनासका निश्चयहै कि इसका शिर सुखाकर तेलके साथ मुखपर उबटन करना सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियरखता है इसका शिरहाने रखना निद्रा नाश करता है और पास रखना भूली हुई बातको याद दिलाता है यदि कुष्टीकी गर्दनमें बांधें गुणकरें इसकी जिह्वा निकट रखना शत्रु पर प्रबल करता है इसके दिलका यंत्र बनाना मैथुनकी इच्छा अधिक करता है यदि भूनकर एकरोटीके साथ दोमनुष्य खावें उन दोनोंमें प्रीति हो और इसका पित्ता अर्द्धांग रोगी को मलें गुणकरें इसका दाहना पंख शिरहाने के नीचे रखना निद्राका बेग करता है और बाँयां रखना नींद दूरकरताहै जो इसको कबूतरों के खानेमें जलावें सब कबूतर भागजावें इसके मांस को सुखा कर आटे में मिलाकर रोटी पकावें और जिसको खिलावें वह मित्रहोजाय जो इसकीहड्डी को घरमें धुआँकरें सम्पूर्ण दुःखदायी कीड़ेमकोड़े मरजावें जो इसके नख जलाकर उसकी राख जिस स्त्री को खिलावें और उससे मैथुन कियाजाय तुरन्त गर्भवतीहो यदि हुदहुदको इस्माईलनामी मनुष्य के दरवाज़ेपर मारें और उसके रुधिरको शक्कर और उबटनके साथ मिलाकर मलें सम्पूर्ण मनुष्य उसके मित्र होजायँ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ४५१

(वतवात) इसको फ़ारसीमें बालवाया और हिन्दीमें अबाबील कहते हैं बलैनासका बचन है कि जोकोई अबाबील पानीमें डूबकर मरजाय जोमनुष्य वह पानीपीवे एकमहीनेतक नींदनआवेजो किसी मनुष्य के बाल किसी अबाबील की गर्दनमें बांधकर उसको उड़ावें तो उस मनुष्यको नींद नआवेगी जबतक अबाबीलको मार नडालें या कि वह आप नमरजाय या उसकीगर्दनसे बाल खोल न लिये जायँ उसके शिरको शिरहाने के बीचमें रखना निद्राका बेगलाता है जो इसकाभेजा शहदकेसाथ आंखोंमेंलगावें ढलका बन्दकरदे जो उसको गुलाब तेल में पकाकर रांचन पर मलें पीड़ा ठहर जायगी

औरदो तीनबेर मलने से फिर पीड़ा न होगी उसकी सूरतयह है॥

तसवीर नम्बर ६५२

(पराग़ा) अर्थात् पटबीजना यह पक्षी बहुत छोटा होताहै जब दिनको उड़ता है पक्षीके स्वरूपका दिखाई देता है और रात्रि को आगकी लपटके सदृश मालूम होता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ६५३

(यमामा) यह जोटीदार कबूतर है जो घरोंमें होता है और बहुत अंडे देता है और मनुष्योंके सदृश इस समूह में भी मादा से प्यार आदि होताहै वह अंडोपर बैठती है और नर बच्चों को पालता है इसमें विचित्रता यह है कि जब बच्चा अंडे में पूर्ण होजाता है उस समय उस अंडेको पहले अपनी चोंचसे तोड़ता है जिसमें नर होता है क्योंकि नर मादा से पहले अंडे में तय्यार होता है वह परमेश्वर शुद्ध है जिसने कबूतरके मनमें डालदिया कि वह अंडे को बच्चे के पूरे होजानेके समय तोड़ता है और आगे पीछे नहीं तोड़ता जब यह बीमार होताहै तो नरकुल की पत्ती खाकर आराम पाता है और इसके जोड़ोंका गुण कबूतर के बर्णन में होचुका॥

छोटे २ कीड़े मकोड़ों का बर्णन

यह प्रकार जीवधारियों का ऐसा नहीं है कि मनुष्य उसे गिन सके कई बुद्धिमानोंने लिखा है कि जो कोई चाहे कि इनको मालूम करे तो रातको जंगल में आगजलावे उस समय देखे कि कितने प्रकार इन विचित्र जीवधारियों के इकट्ठे हैं जिनके स्वरूप अन्य२ हैं और जिनको न कभी देखाहो और बिचार नहीं होता कि ईश्वर ने ऐसी चीज़े भी पैदा कीहैं और वह जीवधारी पृथक् २ स्थानोंके रहने से अन्य २ होतेहैं जैसे पहाड़ दरिया बाग़ रेतीली जगह कूड़े के स्थान आदि हर जगह इनकी उत्पत्ति अन्य २ रीतिपर है और इनकी उत्पत्ति बिगड़ेहुये मल और दुर्गंध से होतीहै कि वायु उन दुर्गंधों से साफरहे इस बात का निश्चय है कि ईश्वरने कीड़े मकोड़ों को बिगड़ेहुये मल और सड़ीहुई दुर्गंधियों से उत्पन्नकिया

कि हवा में कोई उत्पात नहो और महामारी का कारण नहो जिससे जीवधारियों और वृक्षोंमें उत्पात होताहै यद्यपि इसउत्पत्ति में उनके काटने की भी हानि है परन्तु बहुत से लाभ भी हैं और यह बात समझने के लायक़ है कि मक्खी और कीड़े कस्साब और हलवाई की दूकानोंमें होतेहैं और बज़ाज और लुहारोंकी दूकानों में नहीं होते इससे सिद्धहोगया कि ईश्वरने कीड़े मकोड़ोंको उसी दुर्गंध से उत्पन्नकिया ईश्वरने छोटे कीड़ोंको बड़ोंका भोजनबनाया जो ऐसा न होता तो सम्पूर्ण पृथ्वी इस बलासे भरजाती सो निश्चयकरके जानना चाहिये कि ईश्वर के राज्यमें ऐसी बात नहीं है जिसमें ईश्वर की बुद्धिमानी मिली न हो इसप्रकार में यह आश्चर्य है कि जो इनमें विष किसी जीवधारी की हानि का कारण है तो ईश्वरने इन्हीं के मांस में उसके दूर होनेका गुणभी रक्खा हकीमोंने सर्प के मांस में जो विषकी बराबरी में है सो तिर्य्यक की औषधियों में इसका मांस गिना तिर्याक ज़हर की औषधियों का नाम है और इस बातकी परीक्षा भी होचुकी है कि जिसको बिच्छू ने काटाहो जो वह बिच्छू को मारकर उसकी बीटकी तरी घावपर लगावे तुरन्त पीड़ा दूरहोगी कई प्रकार इसके सर्दीमें मरजाते हैं जैसे मच्छड़ पिस्सू और कोईपृथ्वीके नीचे जाघुसते और कुछनहीं खाते हैं जैसे सांप और बिच्छू कोई इनमें से इस मौसमके वास्ते संग्रह रखते हैं जैसे च्यूंटी क्योंकि च्यूंटी बेखाये नहीं रहसक्ती है अब हम उनका वर्णन करते हैं जो इसप्रकार से संबन्धित हैं (अरज़ा) अर्थात् दीमक सपेदरंग छोटासा होताहै इसको फारसी में चोबख़्वार कहते हैं और च्यूंटी आदि शत्रुओं के भयसे अपने शरीरपर दहलीज़ की तरह बनाता है जब यह कीड़ा एक वर्ष का होताहै तब इसके दोपर लंबे निकलते हैं और उनसे उड़सक्ता है और यह वह कीड़ा है जिसने जिन्नोंको हज़रत सुलेमान की मृत्यु बताई अर्थात् हज़रत सुलेमान की लकड़ी को खालिया जब इस कीड़े का घर ख़राब होजाता है तो उसके साथी उसके मकान की

दुरुस्ती केलिये इकट्ठे होतेहैं और उसके छिद्रोंको थोड़ीदेरमें दुरुस्तकरदेते हैं कहते हैं कि इस जीवधारी की प्रकृति ठंढी और.तर है और इसका शरीर खोखला रहता है और जहां इसके परोंकी जगह होती उसमें दोछिद्रहोतेहैं और उसीसे वायु खींचताहै और वह हवा सरदी के सबबसे पानी होकर उसके शरीर से गिरती है और मट्टीके भाग जैसे गर्द आदि सदा उसपर गिरके जमजाते हैं सो वही उसके शरीरपर मैल होजाता है और वह उस मैल से अपने शरीरपर घरकीतरह बनालेता है उसके दोनों होंठ तेज़होते हैं जिनके कारण लकड़ी ईंट पत्थर को काटाकरता है इसकीशत्रु च्यूंटी होतीहै कि अपने घरतक उसको घसीट लेजाती है परन्तु जब च्यूंटी इसके पीछेसे आती है तो इसपर प्रबल होतीहै और जब इसके साम्हने से आती है तो निर्बल होजाती है जब इसके पर निकलते हैं तो चिड़ियों का भोग होताहै साहबुलमन्तक़ कहताहै कि पहले पहल इसने लोगोंके बहुत से मकान नष्टकिये थे उससमय ईश्वर ने च्यूंटीको उसपर बलवान् बनाया कहते हैं कि यह हरताल और गायके गोबर से भी दूर होताहै॥

(अफई) छोटीपूछ का काला नाग यह सबसांपोंमें बुराहोताहै जब यह अंधा होजाताहै तो फिर पलक नहीं मारसक्ता और गर्मी के कारण चार महीने पृथ्वीमें छिपा रहता है फिर धरतीसे वैसाही अंधा बाहर आताहै तो सौंफके वृक्षमें आंख रगड़कर फिर आंखें अच्छी करलेता है जो इसकी दुम काटडाली जाय तो तीन दिनके पीछे फिर सुधर आती है जो इसको मारडाले तीनदिनतक हिला करता है और जंगली गाय इसकी काल है जहां वह सर्प को देखती है खालेती है यह काला सर्प मनुष्यों का महा बिरोधी है जाहिज़ कहता है कि भुजंग गरमी के दिनोंमें पिछलेपहर रातको जब गर्मी कम होजाती है प्रकट होताहै और बहुधा मार्गोंमें कुंडल बांधकर अपना शरीर पृथ्वी में गड़ीकर बैठता है और गर्दन ऊंची करता है मुख्य उसका यह प्रयोजन होता है कि मनुष्य या चार-

पाया जो उसपर पैररखकर निकले तुरन्त उसको काटखाये इसका विष तुरन्तही प्रभाव करता है कहते हैं किसी भुजंग ने ऊंटनी के होंठ में काटा उसका बच्चा दूध पीरहा था बच्चा पहले मरगया और ऊंटनी फिर मरी लोगोंने आश्चर्य किया कि इतना जल्दी प्रभाव दूधमें पहुंचगया कि मां से पहले बच्चामरा जब सर्पबीमार होता है तो ज़ैतून के वृक्ष के पत्ते खाकर आराम पाता है ॥

गुण इसका पित्ता हलाहल विष है जो कोई पिये असाध्य है इसका रुधिर नेत्रकी ज्योति को बढ़ाता और रतौंधी को नष्टकरता है यदि आंख में लगावें आंख की अंधेरी और ढळके को उपयोगी है जो बग़ल के बाल उखाड़कर वहां पर इसका रुधिर लगालें तो फिर बाल न निकलेंगे बुक़रात हकीम इसके मांस के लिये लिखता है कि जो कोई खालेवे कठिन रोगसे निर्भयहो और पट्ठों को बलवान् करता है और बूढ़ा नहीं होने देता है और जलंधर रोग को गुण दायक है बलैनास कहता है कि इसका मांस पका-कर खाना कोढ़ और आंखकी अंधेरी को गुण दायकहै और मैथुन की इच्छा अधिक करता है इसके मांस की चरबी जिस जगह के बाल उखाड़कर मर्दन करें फिर बाल न निकलेंगे इसका मांस सांप और काले सांप के काटने में बहुतही लाभदायक है (कहानी) कोई मनुष्य वृक्ष के नीचे सोरहा था काला सर्प जो उधर से निक-ला उसके हाथ में काटा उसने जागकर जाना कि सर्प ने काटाहै सो उसपर मूर्च्छा और प्यास का बेगहुआ उसके निकट एकहौज़ था उसने उसमें से जल पिया तुरन्त पीड़ा दूरहोकर आरामपाया इससे उसको आश्चर्य हुआ एक लकड़ी हाथ में ली और पानी में ढूंढ़नेलगा अकस्मात् दो सर्प दिखाई दिये कि दोनों परस्पर लड़ कर मरेपड़े हैं और उनका मांस सड़गया है सो वह समझा कि यह गुण उनके मांस का है शेखरईस कहता है कि इसकी खाल जलाकर उसकी राख मलना बालखोरे को गुण दायक है और यह भी कहता है कि काले सर्प को दो टुकड़े करके उसके

काटेहुये स्थान पर रक्खें पीड़ा ठहरे कहतेहैं कि जो कोई नीलेसूत के डोरे बनाकर काले सर्पकी गर्दनमें बांधे इस दिनसे कि सांपको दुःखपहुंचे फिर उस डोरेको खोलकर जिस मनुष्यके गलेमें पीड़ाहो उसके बांधदें तुरन्त पीड़ा जातीरहै स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६५४

(बरग़ोस) अर्थात् काला पिस्सू बहुत होताहै जब मनुष्य की दृष्टि उस पर जाती है इधर उधर कूदता है कि मनुष्य की दृष्टि गुप्त होजाय जाहिज़ कहता है कि इसकी सूरत हाथी कीसीहोती है और अण्डा देता है और उससे बच्चा निकलता है सफ़ियान सूरीकी कहावतहै कि मच्छड़ की उमर पाँच दिनकी होतीहै और यय्यंमा यहय्याइब्न खालिदसे कहतेहैं कि जब पिस्सू के पर निकल आतेहैं तो दीपकका पतंगा होजाताहै कहते हैं कि पिस्सू कपड़ोंकी जूंको खाताहै और सुर्ख कनेरकी गंधसे मर जाता है महबूब बसीराबी एक कबि बुगदामें था जब उसने बहुत दुःख उठाया तो कुछ पद्य लिखे जिनका सारांश यहहै कि बुगदाद शहरमें पिस्सूओं की बहुतही अधिकताहै और मुझपर संसारके कामोंकी चिंताका बेगहै रात्रिके दोभाग होजातेहैं आधीरात तो मैं चिन्ता और दुःखशोकमें बिताता हूं और दूसरा हिस्सा आधीरात में पिस्सुओं के कारण सोना नहीं मिलता मानो इस खींचा खींच में मेरी सम्पूर्ण रात्रि गुजरती है (बावज़) अर्थात् मच्छड़ हाथीके रूपका होताहै बहुत छोटा ईश्वरने कुलजोड़ हाथीके मच्छड़में उत्पन्न किये और दो पंख हाथीसे भी अधिक इसमें उपजाये क्या ईश्वरकी मायाहै कि मच्छड़ को वह जोड़ कृपाकिये जो बड़े जीवधारियों को दिये यह मच्छड़ इतना छोटाहै कि जब किसी चीज़में गिर जाताहै तो मनुष्य बिवेक नहीं करसक्ता जब यह दशा उसके सम्पूर्ण शरीरकी है तब उसके शिर और भेजेका क्याअनुमान होसके परन्तु ईश्वरने उसकेब्रह्माण्ड में पाँचों शक्तियां कृपाकी और मालूम करनेवाली भी शक्तिदी कि वह जीव धारीकी ओर जाताहै दीवारकी ओर नहीं जाता उसको

ध्यानकीशक्तिभी दी कि जब उसको किसीजोड़से दूरकरें फिर उसी जोड़पर लपके इससे मालूमहुआ कि वह अपने भोजन के स्थान को पहिचानताहै और विचारका प्रमाणयहहै कि मनुष्यकेहाथहिलतेही भागताहै और चैतन्य रहनेका प्रमाण यहहै कि जब अपनी सूंडको काटनेके वास्ते गड़ोता है और लहू चूसनेमें प्रवृत्त होताहै तो अचैतन्य नहीं होता और बहुत जल्दी भागजाता है इस विचारसे कि जब उस मनुष्यको पीड़ाहोगी तो उसके मारडालनेका उपायकरेगा इसकी सूंड बालसे बहुत महीन होतीहै और इतनी महीन होने पर भी खाली होती है और तेज़ इतनी कि हाथी और बैलके चमड़े तक में सूंड चुभोकर रक्तपानकरताहै और हाथी और बैल इससेपानीमें भागते हैं सो यह जीवधारी छोटा होनेपरभी ईश्वरकी ऐसी२बुद्धिमानीसे भराहुआ है सो उसमनुष्यकी मूर्खता पर रोना चाहिये जो कि कहता है कि परमेश्वरने मच्छड़ और मक्खीका वर्णन कुरान में किया है तो ईश्वरने इस बचनके रद्दकरनेमें यह आज्ञा दी है कि मैं मक्खी और मच्छड़के उपजानेमें लज्जा नहींमानता वास्तवमें कोई ईश्वरकी बुद्धिमानीको नहीं जानसक्ता कहते हैं कि जो बबूलके गोंद की तीन गोलियां बनाकर और हरगोलीमें एक २ मच्छड़ लपेटकर चौथिया तपवाला हर वारी के दिन एक २ निगल जायं तो तुरन्त ज्वर दूरहोजाय (साबान) अर्थात् अज़दहा यह जीव बड़ा भयानक रूप होता है शेखरईस कहताहै कि छोटेसे छोटा अज़दहा पांचगज़ का होता है और बड़ा तीस गज़का और इससे भी अधिक इसकी दो आंखें बड़ी होतीहैं और उसके दाढ़के नीचे एकगांठ होतीहै और दांत असंख्य होते हैं कई लोगोंका बचन है कि यह अज़दहा हिन्द और नोबेकी धरतीमें बहुत होता है इसका मुखपीला या कालेरंग का होता है और मुंह चौड़ा भवें बहुत लंबी यहां तक कि उसकी आंखें छिपजाती हैं और गर्दन मोटी शेखरईस कहता है कि मैंने एक अज़दहा देखा जिसकी गर्दनमें बहुत मोटे २ बालथे इनकेनर मादाओंसे बहुत बुरे होते हैं जिस जीवको पाते हैं निगल जाते हैं

और यह वृक्ष की जड़ या पत्थर में लिपटकर जोर करते हैं कि जिसको निगलाहै उसकीहड्डियां आदि टूटजायँ इसके अन्दर ऐसी गर्मी होती है कि जो चीज़खावे तुरन्तपचे बहुधा धरतीका पानी में रहने लगता है और फिर वह दरियाई अज़दहा कहलाता है और बहुधा दरिया के रहनेसे धरती का होजाता है और बहुधा बड़े २ पहाड़ोंपर चढ़जाताहै कि विषकी गर्मीके वेगसे ठंढी हवा में आराम पावे (गुण) इसका दिल खाना बहादुर करता है और इसकीखाल प्रेमीजनपर बांधनी प्रीतिके दूर करने वालीहै और इसकी खालका पास भी रखना सम्पूर्ण जीवोंको भगाता है और जहां इसकाशिर गाड़ें वहां केलोगोंकी दशा अच्छीहो और शुभकार्य हों आगे ईश्वर जाने स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ३७७

(जराद) अर्थात् टिड्डी यहजीव दोप्रकार का होता है एक प्रकारको फारसकहतेहैं और यह वायुमेंउड़ताहै और दूसरे प्रकार को राजल कहते हैं जो कूदतीहै और वसन्त ऋतुमें चरा करतीहै और नरम और श्रेष्ठ ज़मीनकी इच्छारखती है और वहींपर ठहरती है और अपनी दुमसे ज़मीन खोदकर अंडे रखकर छिपाती है और उड़जाती है कि गर्मी और शर्दी और दूसरे प्रकार का दुःख न पहुंचे पर तौभी कुछशर्दी और कुछ कई जानवरोंके कारण नाशहो-जातेहैं जब रबीकी फसल आतीहै टिड्डी उनबाकी अंडों को धरती से निकालकर तोड़ डालतीहै और उसमेंसे बच्चे छोटे २ सोने के टुकड़े की तरह निकलतेहैं और खेती आदिको खाकर पुष्टहोते हैं और उड़जातेहैं तोवह वहांसे और किसी दूसरी ओर मुखकरती है और वहांभी यही हालकरतीहै और अंडे रखती है साहबुलफलोहा कहतेहैं कि जब इससमूहको देखें कि किसगांवकी ओर ध्यानकियां वहांके रहने वालोंको उचितहै कि अपनेको छिपारक्खें और कोई बाहर न निकले जो टिड्डियां वहां किसीको नं देखेंगी वहां से चली जावेंगी जो एक को भी इन जीवों में पकड़ के जलावें जब उसकी

गंध उनकी नाकमेंपहुंचेगी तुरन्त सब मरजायेंगी या भाग जायेंगी (गुण) लंबे पांवकी टिड्डी को चौथिया तपवाले की गर्दन में बांधना उपयोगीहैं और बवासीरमें धूनीलेनागुणकरै और जिसका मूत्रबंद होगयाहो उसको गुणदायकहै और इसकी राख नासूरको अच्छा करती हैं शेख़रईस कहताहै कि इस कीट का लेप करना मस्सों को दूरकरताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४६

(हरबा) इसको फ़ारसीमेंआफ़ताब परस्त और हिन्दीमें गिर-गिट कहतेहैं यहजीव जंगली छिपकलीसे बड़ा होताहै इसका मुख सूर्यकी ओर रहताहै और उसीओर फिरा करता है जबतक कि अस्त न हो इसका असलीरंग खाकीहोताहै फिर सूर्यकी गर्मी से कभीपीला और कभी सब्ज़होजाताहै जैसे एक आयतका मतलबहै किगिरगिट सूर्यकीगर्मीके कारणकभी पीला और कभी सब्ज और कभीसुर्खीलियेहोजाताहै और यहअपनामुख सूर्यके साम्हने रखता है जिस २ ओर सूर्य फिरता है उस २ तरफ यहभी फिरता है और इसीकारण इसकानाम आफ़ताब परस्त अर्थात् सूर्य पूजक रक्खा गया निदान इसका रंग बदला करता है जब किसीको देखताहै कि उसका उद्योग करता है तो तुरन्त अपने शरीरको विस्तीर्ण करता है कि भयखाय और कुछ उसको इससे हानि नहीं होती कहते हैं कि जो उसकोधरतीमेंगाड़के उसकीखाल गांव या खेतमेंकिसीऊंची जगहपर लटकावें वहांपर शर्दी या टिड्डीकीआफ़त न आवेगी और जो इसको तीन दिनतक आगके नीचेगाड़े फिर मिर्गीवाले के गले में बाँधे तुरन्त आरामपावे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३४७

(हरक़ूस) यह जानवर छोटा होता है परंतु पिस्सूसे कुछ बड़ा जब इसके पर निकलते हैं तो मानो इसकी मौत का संदेशा आता है इसकाकाटना पिस्सूसे अधिक दुखदायीहै कहते हैं कि यहजान-वर बहुधा स्त्रियोंको काटताहै जिस तरह कि च्यूंटी पुरुषों के लिंग

को काटती है एक गँवारकी स्त्रीकीयोनिमें जब हरक़ूसनेकाटा उस समय उसने अपनेपतिकोपुकारा और कहा कि ऐमेरेपति ध्यानकर हरक़ूस ने मेरे ऐसे स्थान पर काटा कि संसार का आनन्द मुझसे जाता रहा सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५८

(हलज़ून) हिन्दीमें शंख कहते हैं यह वह कीड़ा है जोपत्थर के भीतर उपजाता है और दरिया और नहरोंके किनारे मिलता है यह कीड़ा पत्थरके पेटमें सीपीकी तरहपर निकलताहै और अपने हाथों को उठाता है और दहिने बायें जाताहै और भोजन ढूंढ़ताहै तो जो तरी और नर्मी देखता है अपनेको विस्तीर्ण करता है जो कठोरता देखताहै अपने को समेटताहै और उसके पेटमें चला जाताहै और हरदुखदायीसे डरताहै जोकोई देखनेवाला उसकोदेखै तो समझता है कि एक सीपी पड़ीहुई है शेख़रईस का बचनहै कि इसको माथे पर मलें ढलका बन्दहोजाय सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५९

(हिया) अर्थात् सर्प यह सबजीवधारी और दुखदायी जानवरों में बहुत बुरा और बहुत कठोर होताहै और कम खानेवाला और बड़ी उमरवाला होताहै कहतेहैं कि जीवधारियों में इससे बढ़कर कोई बुरानहीं और न कोई ऐसा विषैलाहै कि जिसका विष आक-र्षण करनेवाला बहुतहो और सांपके सिवाय मट्टी खानेवाला कोई जीवधारी नहीं और यह ऐसादुखदायी है कि जिसका मारनाकाबे के स्थान में उचित है हज़रत पैग़म्बर साहब की आज्ञा है कि जो कोई सर्पको मारे भलाइयां पावे अब्बासके पुत्र अब्दुल्लाका वाक्य है कि मेरी समझ में सर्पका मारना नास्तिक के मारनेसेभी उत्तम है और जोकि सांपको भागने का हथियार कृपा नहीं हुआ इसलिये ईश्वरने उसको एक ऐसा हथियार दियाहै जिससे उसके शत्रुभागते हैं जैसे कोई सुने कि अमुकस्थानपर सांपहैं कभी उधर न जायेगा नहीं तो जो सर्पके दांत न होते तो लोग उसकी रस्सीबनाते और

लड़के खिलौना बनाते कहतेहैं कि जो मनुष्यकाबाल सीधा पानीमें गिरे और दरिया और सूर्य्यके बीच कोई चीज़ न हो तो वही बाल सांप होजाताहै और इसके प्रकार बहुतसेहैं और मनुष्यका शत्रुभी है और इसीसे भागताभीहैतो कोई तो ऐसेहैं कि वह उससमयतक नहींकाटते जबतक किसीका पांव उनपर न पड़े और कोई ऐसेहोतेहैं कि वह नहींकाटतेजबतक कि उनकेअण्डे और बच्चेकोकुचल नडालें औरकई ऐसेहैं कि मनुष्यको दुःख नहींदेते कि जबतक उनको दुःख न पहुंचे कई उनमेंसे कालेहोतेहैं जो शत्रुतारखतेहैं और समय ढूंढ़ा करतेहैं बाज़े इनमेंसे सांपकी तरह पर होतेहैं परन्तु सांप नहीं और इनकी श्वासामें काले सर्पोंसे कठोरता होतीहै और यह दुःख नहीं पहुंचाते और न इनमें विष होता है बहुधा और सांप इनको मार-डालते हैं कई इनमें से ऐसे होते हैं जिनको मलक कहते हैं इनकी लम्बाई एक बालिश्त या कुछ अधिक होतीहै और इनके शिर पर सपेद रेखा होती है जहां पर यह निकल जावें वहां की तर और सूखी चीज़ जल जाती है जो इन परसे कोई पक्षी उड़े तो गिर पड़े और जो पक्षीइनके निकटहोताहै भागजाताहै जो जीव इनका शब्द सुनले मरजाय और कभी यह जीव अपने शरीर को मोटाकरता है और उससे लहूबहताहै तो जो कोईजीव उसमेंसे खालेताहै मरजाता है अबुलफरहअबीदउल्लाका वचनहै कि इनके तीनप्रकार हैं पहिला प्रकार कि बहुत कठोर और उनकाविष तुरन्त मारडालताहै दूसरा प्रकार कि उनका विष उपाय से दूर होसक्ता है तीसरा प्रकार कि उनकी इलाज सुगमहै इसकी विचित्रता यहहै कि जब इसको अपना माराजाना मालूम होजाता है अपने शिरकोशरीर में छिपा लेता है और शरीरका क़िला बनाता है इस विचारसेकि शिरपरचोट न पड़े क्योंकि इसकी जान शिरमें होतीहै सर्पकीहज़ार वर्षकीआयु होतीहै और हरवर्ष केंचुल छोड़ता है और हरबेर एकबिन्दु पीठ पर प्रकट करताहै वही बिन्दु उसकी आयुकी गिन्तीहै जो थोड़ा बिलकेअंदर और थोड़ा बाहर हो और कोई खींचता जाय तो कभी न खिंचेगा

चाहे बैलोंकी जोड़ीसे खींचे किन्तु कटजायेगा इसके तीनअंडे पस-लियोंकी हड्डियोंकेअनुसार होते हैं उनअंडोंपर च्यूंटी और मच्छड़ आदि इकट्ठे होतेहैं और बहुधा अंडों को खराब करडालते हैं और जब बिच्छू सर्पकोकाटताहै तो सांप नमकपर सोकर आरामपाता है जो नमक न पावे मरजाय बाज़े लोग कहतेहैं कि एक ऐसासर्प होताहै कि जो उसको लकड़ी से मारे तो वह आदमी तुरन्त मर-जाय और हवाज़ की पृथ्वी में एक सर्प होताहै लाल महीन जब मनुष्य को देखताहै उसपर कूदताहै और काटखाता है तो मनुष्य तुरन्त मरजाता है अबूजाफ़र कहते हैं कि हमारे देश में एक ऐसा सांप होताहै जो छोटे २ पक्षियों को एक विचित्ररीति से शिकार करताहै और वह उपाय यह है कि गर्मीके मौसम में जब दोपहर को धूप तेज़होतीहै और मार्ग चलनेवालों से राह खाली होजाती है तो यह दुष्ट अपना सम्पूर्ण शरीर मट्टी में छिपाता है और शिर बाहर निकाले रहताहै यह मालूमहोताहै कि किसी वृक्ष की जड़ निकलीहुई है तो जब कोईपक्षी गर्मीके ज़ोरसे उसको सूखीलकड़ी जानकर उसपर आबैठता है यह उसको शिकार करताहै (गुण) जो इसके दांत कि जीतेहुये उखाड़े गये हों चौथिया तपवाले को बांधना उपयोगीहै शेखुलरईस का वाक्य है किइसका मांस बल अधिक करताहै और इन्द्रियोंको दृढ़करता है और युवावस्था को बहुत समयतक रखताहै और कोढ़ और बालखोरे को लाभदायक है जो इसका मांस जलंधर का रोगीखावे आराम पावे बुक़रातका बचनहै कि इसकामांस खाना कठोररोगों से बचाताहै जो इसकी चरबीको नमकके साथ बवासीर पर लगावें गुणकरे इसकी केंचुली जो जीने के समय गिरीहो सिरकेमें पकाकर कुल्लीकरना दांतों की पीड़ा दूरकरता है जो इसकी खाल को तांबे के बरतन में जलाकर लगावें हरप्रकार की नेत्रपीड़ा को लाभकरे और सब्ज़ आंख को काला करताहै लोगों में प्रसिद्धहै कि जो एक खपड़ा उसका खावें वर्षभर आंखमें पीड़ा न हो और जो दो खालें दोवर्षतक आनंद रहें

यदि गर्भवती स्त्री प्रसूति की पीड़ा में बांधे सुगमता से सन्तानहो इसका शरीर जलाकर उसकी राख का सुरमा लगाना सिल की बीमारी को गुणदायकहै और नजलेको भी दूरकरे जालीनूस कहता है कि इसकाशोरवा आंखमेंबल करताहै जो इसका अंडा ओखलीमें पीसकर सपेद कालेदागोंके कोढ़में लगावें गुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(खरातीन) यह एककीड़ा लम्बा सुर्ख़ रंगतर ज़मीनमें होताहै इसको भूनकर कमळ वायु वालेको खिलावें आरामहो जो इसको सुखाकर पानीमें भिगोवें और गर्भवती स्त्री को पिलावें सुगमतासे प्रसूतिहो इसकी राखगुल रौगन अर्थात् गुलाब तेलमें मिलाकर लगाना बाल जमादेताहै जो शहदके साथ बालूमें लगावें गलेकी पीड़ाको गुणदायकहै जो उसको लेकर किसीस्त्री की चोटीमें बांधदें इसशर्त्तपर कि उसे मालूम न हो तो उसस्त्रीका स्वप्नमें वीर्य निकल जायेगा और रातभर शैतान उससे भोग करेगा और जो इसको अक़रक़रा और फरीफयूनके साथ जैतके तेळमें तलकर लिंगपर मलें मैथुनकी शक्ति अधिकहो सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६१

(ख़नफसा) यहछोटा कीड़ा काले रंगका गोबरमें उपजताहै इसको हिंदीमें गोबरदरह कहते हैं और इसमें दुर्गंध होतीहै इसको तेलमें तलकर बवासीर पर मलना गुणदायक है जो इसको दो टूक करके उसकी तरीमें सलाई डुबोकर आंखमें लगावें आंखोंकी पीड़ाको लाभकरे और जोकिसी तेलमें तलकर कानमेंडालें कानका भारीपन दूरहो जो इसको ऊंटचारेमें खाय तो यह जानवर उसकी विष्ठामें जीता निकल आताहै जो हिरणके दोनों तरफ़से यहकीड़ा निकलजाय तो हिरण मरजाय इसकीड़ेमें एकप्रकार जालनामी होताहै जो विष्ठाकी गोली बनाकर अपने छिद्रमें लेजाताहै जो इस को कीचड़में डालदें तो नहीं हिलता मानो मुरदा होजाताहै जो गोबरपर डालें तो हिलता रहताहै(कहानी) किसी मनुष्यने इस

पशुको देखा और कहा कि ईश्वरने इसकी उत्पत्तिसे क्याप्रयोजन रक्खाहै कि उसका स्वरूप अच्छाहै या उसकी गंध अच्छीहै सो ईश्वरने उसकेघाव पैदाकिया जिसके इलाजसे अच्छे २ हकीम लाचारहुये सो उसने इलाजकरना बंदकिया एकदिन उसके कानमें वैद्यका शब्द सुनाई दिया उसको बुलवाया लोगोंने आश्चर्यकिया कि इतने बड़े हकीम इसरोग के इलाजसे हारगये इस गलियों के फिरनेवालेसे क्याहोगा सोउसवैद्यने उसकोदेखकरकहा कि गोबर दरेको लाओ उसकी राख इस घाव पर छिड़को सो इसी ओषधि से वह अच्छा होगया और उस रोगी को पहिली बात याद आई और ईश्वरकी बुद्धिमानीको माना सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३६२

(दूदअतफ़र) अर्थात् रेशमका कीड़ा यह छोटा कीड़ा होता है जब चरचुकता है अपने मकानमें जो दरख़्तों और कांटोंमें होता है आकर रहता है और अपनी लारसे महीन २ जाल काढ़ता है और अपने शरीरका उसको पहिनाव बनाता है कि गर्मी और शर्दी और मेह और गर्दसे बचे और एक नियमित समय तक सोताहै प्रकट रहै कि इस कीड़े का घर में रखना अति विचित्र है इसके पालने की यह रीति है कि बहारके प्रारम्भमें कि जब शहतूतके दरख़्त में पत्ते निकलते हैं इसकीड़ेके बीजको बहुतसा इकट्ठाकरे और कपड़े में लपेट कर स्त्री इसको अपनी छातियों के नीचे रक्खे कि शरीर की गर्मी उस बीजको पहुंचे एक सप्ताहतक ऐसाहीकरे सोउस बीजको किसी चीज़पर छिटकादें और तूतके पत्तोंको मिक़राज़से महीन २ काटकर डालदें सो वह बीज हिलकर उन पत्तोंको खालेंगे फिर एक सप्ताह तक खाना छोड़ देंगे तीन दिनके पीछे फिर सात दिन तक वह पत्तेखायेंगे फिर तीनदिन तक खाना बन्दकरदेंगे इसतरह तीन बेर होताहै चौथीबेर बहुतसाचारादें और इसबेर वह बहुतसा चारा खाते हैं उससमय उनके शरीरपर ऐसी चीज़ प्रकटहोती है जैसेकि मकड़ीका ज़ाला और जो उससमय मेह बरसे तो उनसबको मेहमें

रखदें कि खोल उनका नरमहोजाय सो वहकीड़े उनको छेद करके निकल आते हैं और कभी इनके दोपरभी निकलते हैं परन्तु परोंके कारण वह कीड़े उड़जाते हैं और रेशम नहीं मिलता और जोवर्षा न हो तो उनसबको धूपमेंरखदें कि सब मरजायँ फिर उनकोउठालें रेशम मिलेगा और जितनाबीजको रखनाचाहैं धूपमें न रक्खें और पानीसे भिगोदें कि खोल नरम हो और कीड़े उसमें छिद्रकरें और निकलें और अंडेदेवें और उन अंडोंकी रक्षा आनेवाले वर्ष के लिये करें परन्तु उनको मट्टी के बरतन या शीशे में रक्खें रेशम के कपड़े पहिनना खुजलीको गुणकरें और इसमें जूंनहींपड़ती हैं इसी वास्ते मुसल्मानोंके शरह कहनेवाले इसका पहिनना खुजली और जूंवाले के वास्ते उचित जानते हैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६३

(देकुलजिन) यह छोटासा कीड़ा बहुधा बागोंमें होताहै बलैनास कहताहै कि इसको पुरानी शराब में डालें कि मरजाय फिर निकालकर मट्टीके बरतनमें रक्खें और शिरबन्द करके गाड़दें उस घरमें फिर दीमक न होगी और उसकी आफत से मकान की लकड़ियां बचीरहेंगी सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६४

(मगस) अर्थात् मक्खी यह दुर्गंधसे उत्पन्न होतीहै कोई कहते हैं कि चारपायों की बिष्ठा से उपजतीहै ईश्वर ने इसके पलक नहीं बनाये क्योंकि इसकी आंख छोटी हैं और पलकका गुण यहहै कि आंखकी स्याहीको गर्द आदिसे बचाये रक्खे सो इसीकारण मक्खी सदा अपने दोनों हाथसे आंखोंको साफ़किया करतीहै और उसके एक शूंड़ भी होतीहै कि जबलहू चूसना चाहतीहै तब बाहरनिकालतीहै जब उसकापेटभरजाताहै तो मुंह के अन्दर करलेतीहै बाज़ी मक्खी ऐसीहै कि भिन भिनातीहै और इससे एक शब्द निकलताहै जिसतरह कि नरसुलसे आवाज़ निकलती है और चलनहीं सक्ती क्योंकि उसके जोड़ नहीं होते परन्तु च्यूंटी और जूंकि इनके पांव

इतने कठोर होते हैं कि जो यह किसी बराबर जमीन के घाव पर गिरते हैं नहीं हटते और सदा मच्छड़ का शिकार करती हैं और इसकारण दिनमें मच्छड़ नहीं निकलता और रातको निकलता है जब कि मक्खी नहीं होतीं जाहिज़कहता है जो मक्खी मच्छड़ को न खातीं तो हर एक मकान के कोने में मच्छड़ों की अधिकता हो जाती जब किसी जीवधारीके कोई घाव होताहै तुरन्त मक्खीउस पर बैठतीहै और वह बैठना उसकी मृत्युका कारण होता है परन्तु जो घाव ऐसी जगह परहो जहां उस जीवधारीका मुंह पहुंचताहै तो उसको चाटकर अच्छा करताहै और मक्खी का बैठना घावपर इसकारण मृत्युका कारणहै कि मक्खी जहां बैठती है वहां परबीट करतीहै और उसकी बीटसेकीड़े पैदाहोते हैं कहते हैं कि जो मक्खी सपेदी पर बीटकरे वहचीज़ तुरन्त काली होजाय जो कालेपर हगे वहसपेद होजाय क्योंकि मक्खीकी विष्टा दोरंगको होतीहै कालेको सपेद और सपेदको काला करतीहै जैसे कि गौरय्या पक्षीकी विष्टा भी उससे विरुद्ध रंगपैदा करती है (गुण) जो इसका शिर काटकर जहां पर भिड़ने काटाहो मलदें पीड़ा दूरहो कहते हैं कि जोमक्खीके शिरको पकड़के एक सिरा शिरके बालका उसके पैरसे बांधें और दूसरा सिरा उसबालका आंखकी पीड़ा वाले के बांधें बहुत गुणकरे इसीतरह जो मक्खी को कपड़ेमें बांधकर आंख की पीड़ा के वास्ते बांधें लाभकरे जो इसको जलाकर शहदमें मिलाकर लगावें गंजेके बाल निकलआवें जोइसको सुखाकर सुरमेमें मिलाकर लगावें आंख में फायदाकरे और आंखकी ज्योति बढ़ावे पलकें उगावे जो स्त्री यह सुरमा लगावे सुन्दर मालूम हो जो इसको भून कर खावें पथरी को उपयोगी है जो इसको दूधमें कजली करके बिच्छूके काटेहुये घाव पर लगावें पीड़ा शांतहो पैग़म्बर साहब का वचनहै कि जब मक्खी तुम्हारे खाने या पानी पीने में गिरे तो उसको निकाल कर खाना आदि खालो क्योंकि उसके एक परमें बीमारी और दूसरे परमेंदवा है इसप्रकारकी कई जाति होतीहैं एकप्रकारकी गधेकी मक्खी और

एकको कुत्तेकी मक्खी और एक को शेरकी मक्खी बोलते हैं क्योंकि यह मक्खियां मुख्यकरके इन्हीं पशुओंपर बैठती हैं और जब इन के घाव पड़जाता है तो यह मक्खी उनसे अलग नहीं होतीं यहां तक कि वह पशु मरजाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६५

(ज़रहर्ज) यहकीड़े छोटे २ लाल काले रंगों से चित्रित होते हैं इनको फ़ारसी में कोजख़ार कहते हैं यह जीव बिषेला होता है जो कोई इसको पानीमें पीजाय उसके फुकनेमें घाव पड़जाय और मूत्र बंद और आंख अंधीहोजाय और लिंग और पेड़ूपर सूजन आजाय इन सब दुःखोंके सिवाय उसकी बुद्धिमें भी भ्रमपैदाहो शेख़रईस कहताहै कि जिसपानीमें यह गिरताहै उसका स्वाद गोंद और गंधक के सदृश होजाता है यह पशु सुगंध से मरजाताहै और ऐसा लाल कीड़ा चौथिया तपवालेको बांधना रोग शांत करता है और जोयह जानवर क़बरिस्तानमें होता है उसके लगानेसे झाईं दूर होती हैं और मट्टीमें रहता है जो उसको तेलमें कई घड़ी डालदें कि रेज़ा २ होजाय तो उस तेलको उन हथियारोंपर मलें जिनसे अंगूर छानते हैं तो उस वृक्षमें कीड़ा नलगेगा और न कोई जानवर उसके फल को खराब करेगा शेख़रईस का बचन है कि इसका सिरके के साथ मलना लंगड़े और फालिजवाले और छीपके रोगी और काले सपेद दागवाले कुष्टीको बहुत जल्दी गुणकरनेवाला है जो उसको इस्पंद के साथ महीन पीसें और बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें जो सरत्तानके फोड़ेपर लगावें गलादेता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६६

(रतीला) इसको फ़ारसीमें दीलमक कहतेहैं शेख़रईसका बचन है कि दीलमक मकड़ी की तरह पर होता है जिसको अरबवाले फहदभी कहते हैं इनमेंसे बहुत बुरामिसरीहै शिर और पेट इसका बड़ा होता है जिसको काटे बड़ी पीड़ाहोतीहै और नींद नहींआती है और रंगपीला होजाता है और बहुधा ऐसा होता है कि जिसको

काटे उसका लिंगखड़ा होजाताहै और बिना इच्छा वीर्य निकलता है और दीलमक काटेहुये को बहुत जोरकी शिरपीड़ा पैदा होती है और उसीसे मरजाता है हकीमोंने इसकी चिकित्सा यह नियतकी है कि जो मनुष्यकी विष्टा निचोड़कर पिये और उस काटे हुये जोड़ को तन्दूरमें लटकाये उससे पसीना टपके तो निश्चयहै कि आराम होजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(जंबूर) भिड़ शहदकी मक्खीकेसदृश होताहै सर्दीमें अपने घर से नहीं निकलता और सम वायु में बाहर निकलता है और मक्खी को शिकार करता है जो कोई उसके छत्तेको छेड़े सब भिड़ें इकट्ठी होकर उसे डंक मारती हैं जब यह जानवर तेल में गिरता है मुरदे की सूरत होजाताहै जो फिर उसको तेलमें से निकालकर सिरके में डालदें हिलने लगता है क़ज़्वीनी कहता है कि यहबात न जानीगई कि भिड़ किससे घर बनाती है हां इतना मालूम होता है कि वह कागज़की तरह होता है और यह जानवर सर्दीमें गरम जगह चला जाता है और वहां मुरदेकी तरह पड़ा रहता है और सर्दीके वास्ते कोई खानेकेलिये भोजन इकट्ठा नहींकरता परन्तु चींटी इकट्ठाकरती हैं और यह मक्खी सर्दीकी अधिकता और न खानेसे सूखीलकड़ी की तरह सूखजाता है जब बहारआती है उससमय ईश्वर उससूखी हुई लकड़ीमें जीव दौड़ाताहै कि नये सिरसे जीकर बाहर निकलता है और अपने छत्तेको बनाताहै और अंडे देकर पालताहै और जैसे उसके घर बनानेका हाल समझ में नहीं आता उसीतरह मकड़ी का घर बनानाभी बुद्धिमें नहीं आता तो सिवाय ईश्वरकी बुद्धिमानी के क्या कहाजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६८

(सामअबरस) यह एक प्रकार का कीड़ा है छोटा लंबी पूछ करके उमरका बेटा यहंय्या कहताहै कि इसका मारना सौगुलामके छुड़ानेके बराबर है और यह पुण्य इसकारण है कि यह बहुत बुरा

होता है यह सांपका बिष पीताहै और लोगोंके बरतनोंमें डालता है तो मनुष्यको उसविषसे बड़ा दुःख पहुंचता है यह जानवर उस घरमें नहींजाता जहां केसर होता है जो इसको चौथिया तपवाले को बांधें गुणदायक है यह जानवर जहां नमक को पाता है उसमें लोटजाता है तो जो कोई उस नमक को खाता है काले और सपेद दागोंके कुष्टमें पड़जाताहै जो इसको मारकर सांपकी बांबीमें डाल दें सब सांप वहांसे निकलभागेंगे जोउसके दोखंड करके ऐसी जगह पर बांधें जहां कांटा या गांसी गड़गईहो तो वह निकल जाय यदि मस्सोंपर इसका लेप करें दूर होजाय जो इसको सुखा कर तेलके साथ गंजमें लगावें बाल निकल आयें इसका मांस बिच्छूके घाव पर लगाना उपयोगी है॥

तसवीर नम्बर ३६६

(सलहफात) अर्थात् कछुआ यह जानवर धरती और पानी दोनोंका होताहै इसको फ़ारसीमें कशफ कहतेहैं जब खेती या बाग़ में पाला पड़ने का भय होता है लोग इसको लेकर उलटा लटका देते हैं फिर पालेकी हानिनहीं पहुंचती जो बड़े कछुवे खुश्की वाले को लेवें और उसके पेटकी सबचीज़ोंको बाहर निकालें और उसमें मिर्गीवाले लड़केको बिठादें आराम पावे अरस्तातालीस ने अपनी किताबुल हैवानमें लिखाहै कि मैंने पहाड़ी कछुवोंको देखा कि उन के दोनों हाथ कुत्तेकी तरह परथे और दोनोंहाथ हाथीकी तरह और शिर सांपकासा जोइनमेंसे एकभी दरियाकी ओर जाताथा तो और कछुवेभी उसकेसाथ जातेथे और जो एकपानी पीताथा तो और उस की ओर देखते थे सो देखनेहीसे उसकीप्यास दूरहोजातीथी इससे मुझे बड़ा आश्चर्यहुआ और जोहम उनको न देखते निश्चय न करते जो इसकी खालको जंगली जानवरकी खालके साथ बराबर रक्खें वह खाल फटजावे अब खुश्की वाले कछुवे का हम वर्णन करते हैं जो कोई जोड़ मनुष्य का पीड़ा करे और उसके सदृश कोई जोड़ कछुवे का लेकर उसपर बांधें पीड़ा दूरहोजाय परन्तु दाहनादाहने

पर और बायां बायें पर इसका पित्ता मिर्गीवाले की नाक में टप-
काना गुणदायक है यदि गलेको उससे भिगोवें गलेकी पीड़ा दूर
होजाय जो इसके लहू का धुवां देवें मिर्गीवाले को लाभकरे और
डंकदार जानवरके घावको फायदाकरे जो इसकी खाल को देगका
सार्पोशबनावें तो उबाल न आयेगा चाहेकितनी बहुत आगदे इसका
पित्तापांवकी हड्डीकी पीड़ा पर बांधना पीड़ा दूर करता है इसका
अंडा खाना लड़कों की खांसी को गुणदायक है और मिर्गी और
पांवकी हड्डीकी पीड़ा और कूलंजको बहुतउपयोगीहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ३००

(सरर) पतंगाहै जिसको अरबनब्त वरदान कहते हैं शेख़रईस
कहंता है कि यह जानवर सम्पूर्ण बवासीर और दुखदायी जान-
वरोंकेघावोंको लाभकारकहै जो इसकोजलाकरपीसकर औरउसमें
सुरमेंका पत्थर मिलाकर आंखमें लगावें आंखकी ज्योतिअधिक
करे जो गायके पित्तेके साथ सुरमा लगावें नाखना दूरहोजाय॥

तसबीर नम्बर ३०१

(ज़ाजा) एक प्रकारका पशुहै जिसके शरीरकी लंबाई की
प्रशंसानहीं करसक्ते जिसने नहींदेखा वह निश्चय न करेगा कहते
हैं कि मक्केकी ज़मीनमें होताहै और कोस भरके गिर्दमें अपनाघर
बनाताहै इसका स्वभाव यहहै कि जोपशुकी दृष्टि इसपर पड़े वह
तुरन्त मरजाय या इसकी दृष्टि किसी जानवरपर पड़जाय तो वह
जानवर तुरन्त मरजाय जोकि इस पृथ्वीके पशुओंने इसकी परीक्षा
कीहै इसलिये जब इसके साम्हनेसे जाते हैं और अपनी आंखेंबंद
करलेतेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर ३०२

(ज़ब) जिसको सूसमार और हिंदीमें गोहकहतेहैं यहपशुबुद्धि-
मान् होताहै कि और अपनाघर सिवाय सख़्त ज़मीनके और कहीं
नहीं बनाता कि चारपायोंके सुमसे दुःख न पहुंचे और ऊंचे स्थान
पर रहताहै किसीलन पहुंचे और किसी पहाड़या बड़े वृक्ष या बड़े

पत्थर के निकट घर बनाताहै कि उसके निशान से अपने घरको पहिंचानले क्योंकि इसजीवमें भूलबहुतहोतीहै बहुधा ऐसाहोताहै कि भूलके कारण दूसरे जीवके मकानमें चला जाताहै और उसका शिकार होजाताहै इसका अंडा कबूतरके अंडेके बराबर होताहै और अंडा रखने के लिये पृथ्वीपर घोंसला शुतरमुर्गकी तरह बनाता है और एकवेरमें अस्सी अंडे देताहै और ज़मीनमें गाड़कर चालीस दिन छोड़ देताहै चालीस दिनके पीछे देखताहै कि सब बच्चे अंडोंसे निकलकर दौड़ रहेहैं उससमय उनमेंसे जितने चाहताहै खालेता है और बाक़ी भागजाते हैं जाहिज़ का बचन है कि जब सूसमार अपने बच्चोंको खाना चाहताहै अपने मकान में तंगजगहपर खड़ा होताहै और सब राहें अपने दोनों हाथ से बंद करलेता है और फिर खानेलगता है कि कोई भाग न जाय और पेटभरने के पीछे कुछ बच्चे बचते हैं नहीं तो सब खाजाताहै एक कविका बचन है जिसके यह अर्थ हैं कि गोहके बच्चों की तरह मैंने भी सब तेरे बच्चों को खालिया और कुछ थोड़ों को छोड़दिया जब बिच्छू इसको डंक मारताहै एकप्रकार की घास जिसको अज़नुलफार कहते हैं खाकर आराम पाताहै बहार की मौसममें उत्तम वायु से आनंद पाता है इसकी रीति है कि जब मनुष्यको देखता है तो उसके पैरोंके बीच में आकर काटखाता हैजहां सूजन बहुत होजाती है अरबवालों का वाक्य है कि गोहके मार्ग से मतजाओ क्योंकि वह तेरे पांव काटखायेगी और तू राहसे न चलसकेगा (गुण) यदि सूसमार को शराब में मिलाकर बवासीर पर मलें दूर होजाय जो कोई इसका दिलखाय उन्माद रोग दूरहो जो कोई इसका कलेजा खाले कलेजेका दर्द दूरहो जो इसका लहू चनेके आटेमें मिलाकर उबटनकरे छीपको नष्टकरे और जो कचलोन के साथमलें झाईंको लाभ करे जिसका बदन चोटसे फटगयाहो या घाव होगयाहो उसको इसके मांसका शोरवाखाना लाभकरे और आंखकी ज्योति और वीर्यको बढ़ाताहै और जोकोई खावे मुद्दततक प्यासा न हो

इसके पीठकी हड्डी जिसके पासहो उसको भोगकी शक्ति अधिक हो इसका अंडकोष पास रखना नौकरोंकी दृष्टिमें प्रतिष्ठित करता है जिस घोड़ेकी हड्डी के गर्दन में इसके पांव की हड्डी को बांधे कोई घोड़ा उससे तेज़ न भागेगा जो इसकी खाल तलवार के कब्जेमें बांधे साहस प्राप्तहो जो इसकी खालमें शहद रक्खें और वह शहदकोई चाटे मैथुन की इच्छा अधिकहो और लिंगमें खड़ेहोनेकी शक्ति आये इसकी बिष्टा सपेद कालेदागके कोढ़ और झाईंपर लगाना गुणदायकहै जो इसका सुरमा बनावें आंखकी सपेदी और पानीके गिरने को लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ६७३

(तरबान) यहछोटासा जानवर बिल्लीके बराबर दुर्गंधि युत होताहै इसकी दुर्गंधिके बराबर संसारमें कोई चीज़ नहीं जो इस की गंध ऊंटोंकी नाकमें जावे फैलजायँ और यह जानवर जिस कपड़ेपर अपशब्दकरे चाहे उसे पचासबार धुलावें गंधदूर न हो जबदो मनुष्योंके बीचमें कोई अपशब्द करताहै तोअरबके निवासी यह दृष्टांत कहतेहैं कि इनदोनों के बीच तरबान की गंध आती है यह जानवर सूसमारका शत्रुहै सदा उसको ढूंढ़ा करताहै और सूसमार अपने बिलको बहुत कठोर और मज़बूत बनाताहै क्योंकि तरबान बहुतही ढूंढ़ताहै जाहिज़ का बचनहै कि जबतरबान सूसमारको खाना चाहताहै तो उसके छिद्रमें जाताहै और अपने वास्ते कोई तंगजगह ढूंढ़ताहै जिसमें अपनेको छिपा लेताहै और एक अपशब्द करताहै तो सम्पूर्ण स्थानमें उसकी गंधफैल जातीहै तो उसगंधसे सूसमार अपने बच्चों समेत निर्बल और दुःखी होजाताहै और दूसरे अपशब्दमें मूर्च्छित और तीसरेमें वह सब मरजाते हैं उससमय तरबान उनसबको ख़ालेताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ६७४

(अजाया) यह जानवर गिरगिटकी जातिसेहै और बहुतही इसकी सूरत उससे मिलतीहै यह जानवर धीरेसे चलताहै और

बहुत चौकन्ना होता है कहते हैं कि जो इसको कपड़े में लपेटकर चौथिया तपवाले के बांधें तप जातीरहे इस जानवरका एक प्रकार किरानदेशमें होताहै लालरंग मानो सुर्ख़ याकूत मालूमहोताहै उस की दोनों आंखोंमें एकदरख़्तसा मालूमहोताहै इसका स्वभाव यहहै कि जो यहभोजनके वस्त्र परजावे और उसके किसी खाने में विष मिलाहुआहो तो उसकी आंखोंसे आंसू जारीहोंगे इसीकारण इस जानवरको भेंटकी रीतिपर बादशाहों के पास लेजातेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३७५

(अक़रब) अर्थात् बिच्छू यह सम्पूर्ण कीड़े मकोड़ोंमें बड़ा दुष्ट है जिसचीज़ को पाताहै उसपर डंक मारताहै इसके आठ पांवहोते- हैं और आंखें इसकी पेटमें होतीहैं और इसका बच्चा पीठसे निक- लताहै और जबपैदा होताहै तो मां उसकी मरजाती है और जब किसीको डंकमारताहै तुरन्त वहांसे भागजाताहै पहिलीरात अपने घरसे निकलताहै जिस जीव या निर्जीवको पाताहै डंकमारता है जाहिज़ लिखताहै कि सबीहके पुत्र खाक़ानने मुझसे कहा कि मैंने अपने घरमें एकशब्द पानीकी ठिलियाके पाससुना तो मैंने उठकर जो देखा तो बिच्छू ठिलियापर डंकमारताहै तो मैंने उसको मार- डाला फिर क्या देखा कि जिसजगह बिच्छू ने डंकमाराथा वहां छिद्र होगयाहै और पानी जारीहै बिच्छू सर्पको देखतेही डंकमारता है उससमय सर्प उसको ढूंढ़ताहै जो पाजाताहै तो खालेता है और अच्छा होजाताहै जो नहीं पाता तो मरजाता है मानो सर्पके लिये इसके विषकी औषधि इसीका मांसहै बाज़े हकीमोंने एक मनुष्यको सुना कि वह कहता था कि अमुक मनुष्य बिच्छूकी तरहपर है कि हानिके सिवायलाभ नहीं करता सो एक बुद्धिमान् वैद्यने उत्तरदिया कि तू निर्बुद्धिहै क्योंकि बिच्छूभी लाभदायक है जबइसका पेटफाड़कर इसके डंकके घावपर रक्खें तो बिषदूरहोजाताहै जो बिच्छूको मिट्टी केबरतनमें रखकर सरपोशसे बंदकरके तन्दूरमेंरक्खें और जब वह जलकर मट्टीहोजायउससमय वह राख तीन रत्तीके अनुमान पथरी

वालेकाखिलावेंपथरीकोखंड२होवे यदि बिच्छू उसमनुष्यकोजिसको बहुतदिनसे तपआतीहो काटे तपनष्टहोजाय जो इसीतरह फालिज वालेको काटे फालिज दूरहो यदि बिच्छू को जलावें और घरमेंधूनी दें वहां कोई बिच्छू न रहेगा किन्तु सब मरजायेंगे यदिबड़े बिच्छू को पकड़कर सुखाकर सपेद कालेदाग के कोढ़पर लगावें दूर हों इसकी राखतेलमें मिलाकर जिसजगह लगावें बाल फिर वहां न निकलेंगे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०६

(अन्क़बूत) अर्थात् मकड़ी इसको फारसी में देवपा कहते हैं यह जीव कई प्रकार का होता है इसमें विचित्र लम्बी टाँगवाला होताहै यह जीव शिकार से दीन होता है इसी वास्ते यह अपना घर जालकी तरह अपने मुख की लार से बनाता है जब चाहता है कि जाला तय्यार करे तो ऐसे दो स्थान के बीचमें तय्यार करता है कि जिनमें एक गज़भर की जगह खाली हो या कम जहांतक कि वह अपना जाल दोनों किनारों पर पहुंचासके और अपनाकाम शुरू करता है और अपने मुखकी लारका जो सूतकी तरह परहै अपनी ओर छोड़ताहै कि उससे मिलजावे और दूसरी ओरको दौड़ता है और इसी तरह पर इधर से उधर दौड़ २ कर बनाताहै और दोनोंके मिलनेका विचार रखताहै और अपनी बुनावटको बराबर२ अधिक और दृढ़करताजाताहै और गिरह मज़बूत लगाताहै और आपउसके किसीकोनेमें ठहरताहै और उसजाले में शिकारकी राह देखा करताहै तो जबउसजालमें मक्खी या मच्छड़ गिरता है तुरन्त उसको पकड़ताहै इनमें एक प्रकार छोटेपांवकीहै जिसका नामफ़हदहै यह जब शिकार करना चाहतीहै तो घरके कोने में अपने मुखकी लारसे ज़ाल बनाती है और उस जालमें शिकार पकड़तीहै यह बहुधा अपनी तारको छतोंपरसे शुरू करतीहै और आप उसके द्वारा उतर आतीहै और अपनी श्वासको उस तागेसे लटकाती है जब मक्खी उसके पाससे जातीहै तो वह तुरन्त उधर

जाकर शिकार कर लेतीहै और मज़बूत पकड़ के अपने मकान में लातीहै इसका तीसरा प्रकार लेसनामी है जिसकी छः आंखें होती हैं जब मक्खी को देखती है अपनाको धरतीमें चिपकातीहै और सब जोड़ ठहरातीहै फिर मक्खी पर कूदती है बहुधा यह चूकती नहीं चौथा प्रकार रतीला होताहै यह सर्व प्रकारों में बुरी होती है जो आदमी परसे जावे आदमी मरजावे और यह दुःख उसकीलार से पहुंचताहै न डंकसे इसका वर्णन पूर्व होचुका है इसको अक़रबुस्सा बान भी कहतेहैं अर्थात् अज़देहका बिच्छू क्योंकि यह अज़देहकी शत्रुहै इनमेंसे पांचवीं प्रकार ऐसी है जो पत्थर या पृथ्वीपर जाला लगातीहै उसमें जोकोई मक्खीआदिआजातीहै तोशिकारकरलेती हैछठीप्रकार अपनाजाला सबसे बारीक बनातीहै और जहां जाल लगातीहै वहांसे चली जातीहै तो जब इसके जालमें मक्खी गिरती है तो घबरा जातीहै फिर मरजातीहै और यह मकड़ी दूरसे देखा करतीहै तोजो भूखी होतीहै तो मक्खीकी तरीको चाटतीहै नहीं तो ख़जानेकी तरह इकट्ठा करतीहै बहुधा सूर्य्यास्त के समय बहुतसी मक्खियां उसके जालोंमें गिर पड़तीहैं कोई कहतेहैं कि मकड़ी की मादा जाला बनाने का काम जानती है और नर नहींजानता और कइयोंके निकटदोनों मिलतेहैं और बाज़े कहतेहैं कि नर और मादा शागिर्द और उस्तादकी तरह परहैं यदि मकड़ीको काले कपड़े में लपेटकर तप वालेके बांधे दूरहोजाय बलैनासका बचनहै कि इसको घिसकर शराबमें पीना कफके ज्वर वालेको उपयोगीहै इसके जाले को जिस जगह लहू जारीहो लगावें तुरन्त बन्द होजाय जो इसका धुआँ.मकानमें करें उस घरसे खटमल जातेरहतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५००

(फ़ारह) चूहा यह बड़ा छली होताहै यह जानवर पांचपापियों मेंहै जिसका मारना हल और हाममें उचितहै जिस तरह सर्प का हज़रत रसूलने इसके मारडालने पर आज्ञाकीहै क्योंकि यह बड़ा उपद्रवी होताहै बहुधा जलती हुई चिराग़ की बत्ती लेजाता है और

घरको मैमाल और असबाबके जला देताहै और मनुष्यके उत्तम २ वस्त्र किताब और अन्न और खाने पीनेकी चीजों को खराब करता और बिथराताहै और उनमें बीट करताहै और बहुधा कुयें में गिर कर मरजाताहै और मनुष्यों को उसके साफ़करनेमें दुःख होताहै जब मनुष्य को चीता या बावला कुत्ता काटताहै तब यह जानवर उस मनुष्यको बहुत ढूंढ़ताहै और हर प्रकारके छलसे अपना कार्य करताहै यदि चीतेका घावहै तो उसपर मट्टी डालताहै यदि बावले श्वानका घावहै तो उसपर मूत्र करताहै और इससे मनुष्यकी मृत्यु होतीहै कई लोगोंका बचनहै कि इस पशुको स्मरणनहींहै क्योंकि जबबिल्लीदेखताहै अपनेबिलमें जाछिपताहै और तुरन्त फिरनिकल ताहै और इतनायादनहीं रखता कि बिल्ली छिद्रके दरवाज़ेपर खड़ी है और बाजे कहते हैं कि इसके स्मरण शक्ति होने को क्योंकर कहसक्ते हैं क्योंकि यह अपने भोजन के विचारसे संग्रह करता है और बहुधा आनन्द के पदार्थों में उपाय करता है इस जीव के विचित्र उपाय होते हैं उनमेंसे एक यह है कि जब कोई तेल शीशे में डालता है तो जब वह तेल ऊपर तक होताहै तो उसको पीता है और जो उसका मुंह छोटा होता है या तेल ऊपर तक नहींहोता तो उसमें अपनी पूछ डालता है और उसको तेलमें डुबोकर निकालता है और चाटता है यहां तक कि सबतेल पीलेता है कोई चूहा जब अंडा लेजानेको होता है तो अपने पेट के नीचे रखता है और अपने चारों हाथ पांवसे उसको पकड़ताहै और दूसराचूहा उसकी दुमको पकड़कर खींचता है कि वह अपने घर चलाजाय बाज़े चूहे जब चाहते हैं कि अख़रोट लेवें एकचूहा वह अख़रोट उठाकर दूसरे चूहेपर रखता है और वह अपनी दुमको उस अख़रोट पर लिपटा कर अपने सूराख़तक लेजाता है यह जानवर बिच्छूका शत्रु है जो इसको और बिच्छूको एकशीशेमें रक्खें इनदोनोंमें बड़ी लड़ाईहोगी क्योंकि बिच्छू चूहेको डंकमारेगा और चूहा चाहेगा कि इसकीदुम को किसीतरह काटलूं तो जो चूहेकी प्रकड़में उसकीदुम आजावेगी

तो प्रबलहोगा और जो बिच्छू उसको बहुत डंक मारेगा तो चूहा न जीतैगा जोकोई दो जंगली चूहोंकीदुममें इसतरहपर रस्सीबांधे कि कि एक इसकिनारे और एक उस किनारे पर तो दोनोंके बीचमें लड़ाई शुरूहोगी कि किसी पालू या जंगली जीवधारीमें न देखीगई होगी जब रस्सी खुलजायेगी तो एकदूसरेसे भागजायेंगे एकजाति इनकी आफ़रीनी नामी होती है यह प्रकार रुपये और असरफ़ी से प्रीति करती है जहां पाये चुरालेजाय किसी ने वर्णन किया है कि उसके घरमें एकचूहा था कि उससे मैंने बड़ादुःखपायाथा सो मैंने उसको चूहेदानमें पकड़ा और उसके मारडालनेके विचारमें था कि उसका नर आया और अपनी मादाको क़ैदमें पाकर अपने बिलमें चलागया और वहांसे एक अशर्फ़ी लाकर चूहेदान के पास रखदी और आप राह देखतारहा कि शायद यह मनुष्य उसको छुड़ावेजब मैंने नछोड़ा तो कईबार उसी तरहकी अशर्फ़ी लाया जब उसनेदेखा कि अभी यह मनुष्य मेरी मादाको नहीं छोड़ता उस बेर एकटुकड़ा कपड़ेका लाया निदान मैंने समझा कि अब उसके पास अशर्फ़ियां नहीं रहीं तोउतनीही लेकर मैंने उसको छोड़दिया सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३०८

एकप्रकार इनमेंसे (हिल्द) नामी है ईश्वर ने इनको अंधा पैदा किया यहजाति जंगलों के सिवाय और कहीं नहींहोती परन्तु उनको सुननेकी शक्ति बहुत कृपाहुई है यहां तक कि दूरकी आहटपाकर अपने बिलमें भागजाता है और घास की जड़ें खाता है कहते हैं कि इसकी मादा जब जननेको होतीहै मर जातीहै जोकोई उसके शिकारकी इच्छाकरे उसके बिलमें थोड़ी प्याज़ डालदे जिसकी गन्धसे वहबाहर आवेगा और शिकार करलेवे सूरतउसकीयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०९

एक प्रकार इनमें से (क़ारतुलमसक) होती है इसकी उत्पत्ति तिब्बतमें है इसचूहे की नाभिमें मुशक होता है जैसा कि हिरनमें तो शिकारी उसका शिकार करते हैं कि और उसकी नाभिको

बांधतेहैं कि लहू जमजाय और वह कस्तूरी हिरनसे दशगुनी तेज़ होती है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८०

एकप्रकार इनमें (ज़ातुन्ताक़)है यह प्रसिद्ध चूहाहै इसकाआधा ऊपरका शरीर सपेद होताहै और नीचेकाकाला और इस चूहेको ऐसी स्त्री से उपमा देते हैं जो दो बस्त्र दुरंगेपहिने हो और कमर अपनी बांधे हो और ऊपर के कपड़ेको लटकाये हो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८१

और एक प्रकारका उनमें से (क़ारतुलवेश)है बाज़े कहतेहैं कि यह जानवर छोटासा चूहेके सदृश होताहै परन्तु चूहानहींहै बहुधा घासमें रहताहै और उसीको खाताहै यह घासहलाहल विषहै और हिन्दुस्तान की पृथ्वीमें है और उनमें एक प्रकार (यरबूअ) होतीहै यह जंगली चूहाहै इसके दोबिलहोतेहैं एकको कासआकहतेहैं और दूसरेको नाफ़क़ा कहतेहैं और यहअपने मकानमें बहुतसे मकान बनाताहै इसके बिलकीबनावट ऐसीहोतीहै कि नीचे ऊपर दहनेबाँयें जमीनको खोदता है और अपनी जगहको छिपाता है तो जो शत्रु से सूसमार या नेवला इसकाउद्योगकरें तो उसपर प्रबल नहोसकें क्योंकि जब उसको कुछ भी खटका मालूम होता है तो दूसरेमार्ग सेनिकल जाता है इसके मकान में बहुत से दरवाज़े होते हैं और जंगली मूषकोंकाराजा होताहै जब जंगली मूस अपने२बिलसे निकलनाचाहतेहैं तो उनका राजापहिले निकलताहै औरचारों ओरदृष्टि करके जब शत्रुको नहीं देखताहै तो शब्द करताहै और उसके शब्द पर और चूहे निकलतेहैं और जो कोईशत्रु दिखाई देताहै तो तुरन्त छिद्रमें जाछिपताहै और अपने आधीनोंको भी मनाकरताहै नहीं तो सब बाहर निकलतेहैं और उनकाराजा किसीऊंचे टेकड़े पर जाकर बैठताहै और सबकी रक्षा करताहै और आधीनोंसे भोजन मांगता है तोजो कुछ इनके हाथमेवा आदि लगताहै अपने राजा के वास्ते लातेहैं और जब वह राज़ा किसी शत्रु को देखता है सबको चैतन्य

मैंने इकट्ठा करके सबकोगिना तो उनमें उत्तम प्रकारथे (फ़िसाफ़िस) अर्थात् खटमल शेखरईसका बचन है कि यहजीव बुरी गंध वाला लकड़ीमें होता है जो इसको सिरकेमें पीसकर पियें जोंक जोकण्ठमें चिमट गईहो उसको बाहर निकालताहै जो इसको हाथसे मलकर सूंघे उदरकी पीड़ाको अति लाभ करे जो इसको घिस कर लिंगके छिद्रमें रखदें तो बन्द पेशाब जारी होजाय जो कोई सात खटमल चौथिया तपके आनेके पहले बाक़लेके साथ निगल जाय गुण करे जो इनको अकेला खाय तो दुःखदायी पशुओंसे बचा रहे (क़मल) अर्थात् जूं यह मनुष्यके पसीने और मैलसे उत्पन्न होती है क्योंकि पसीना मनुष्यके केश या बालों की गर्मीसे सड़ जाता है और यह उससे उपजती है और उसमें अंडेदेती है और उनको ऐसा मज़बूत चिपका देतीहै जो दूरनहीं होसके और यह जूं कालेबालों में काली सपेदमें सपेदी सुर्खमें सुर्ख और सपेद काले बालोंमें कुछसपेद और कुछ काली पैदाहोतीहै यदि गर्भवती स्त्री के बच्चेका नर और मादा मालूम करना हो तो उस स्त्री का दूध हथेली में लेकर उसमें इस जानवरको छोड़ें जो वह दूधसे निकल जाय तो गर्भवती के पेटमें बेटी है और इसके विपरीत बेटाहोगा क्योंकि बेटी का दूध पतला होता है और बेटेका गाढ़ा सो जूं पतले दूधसे निकलजाती है और गाढ़ेसेनहीं (क़ुनफ़ुज़) इसे फ़ारसीमें ख़ारपुश्त और हिन्दी में सई कहते हैं इसकी पीठ पर कांटे होते हैं जिनके बीच अपने सम्पूर्ण शरीरको छिपा लेता है और यह जानवर अपने घरमें दो दरवाज़े रखता है एक उत्तरी पवनके साम्हने दूसरा दक्षिणके हवा के साम्हने. यह सर्पका शत्रुहोताहै जोसांपकी गर्दन इसके मुख में आजाती है तो सुगमतासे खाजाताहै और जो सांपकीदुम इसकेमुखमें आई तो दुमको मज़बूत पकड़के अपने सम्पूर्ण शरीर को अपने कांटों में छिपा लेता है और उसकी ओर पीठ कर देता है जब सांप उसपर फंनमार कर मरजाता है उससमय खालेता है अंगूरके वृक्ष पर भी चढ़जाता है और उसके गुच्छोंको तोड़कर ज़मीनमें गिरा देता है

फिर वृक्षसे उतरकर उन गुच्छों पर लोटता है और उनको अपने कांटोंमें छेदकर बच्चोंके वास्ते घरलेजाता है और एक प्रकार इनमें से बड़ीहोती है वह इस सईसे इस तरह पर है कि जिस तरह भैंस गायसे कहते हैं कि इसतरहकी सई अपनी पीठसे कांटा उखाड़कर शत्रुको मारतीहै और वह कांटा तीरकी तरहपर जाकर उसको मार डालता है और नहीं चूकता (गुण) इसकी बाईं आँख तेल में तल कर कानमें डालना भारीपन दूरकरता है जिस जोड़ के बाल नोच कर इसका पित्ता मलदे कभी वहां बाल न उगेंगे यदि गंधकमिला कर छीपपर लगावें गुण करे इसकी तिल्ली भूनकर तिल्ली की पीड़ा वालेको खिलावें लाभकरे इसकी गुरदा सुखाकर काले चनेकेपानी के साथ कि जिसे उबाल कर छान लिया हो मूत्ररोध के रोगी को पिलावें पेशाब बंद खुलजाय इसका रुधिर बावले कुत्तेके काटे हुये पर लगाना लाभकरे शेखरईस का बचनहै कि इसके मांसमें नमक मिलाकर खाना कोढ़ और पीलपांवको लाभकरे और अधिक उस लड़केको गुणदायकहै जो स्वप्नमें मूत्र करताहो और दुःखदायी पशु कोढ़ ऐंठन सिल और बातकी बीमारी को भी उपयोगी है इसकी खाल जलाकर ज़फ्तके तेलमें मिलाकर बाल खोरेपर मलना गुण करताहै एकप्रकार इनमेंसे दलूक होतीहै जो इसका अंडकोष पका कर शहदके साथपियें वीर्य बहुतही उत्पन्न करता है इसके दाहनी ओरके नखका धुआँ देना चौथिया तपदूर करता है जो इसजानवर को जलाकर उसकी राख नासूरपर लगावें लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८४

(नबह) एक छोटा सा कीड़ा होताहै जब ऊंटपर बैठताहै उसका बदन सूज जाता है और बहुधा ऊंट मरजाताहै सूरत यहहै॥ र

तसवीर नम्बर ३८५

(नहल) इसे हिन्दीमें शहदकी मक्खी कहते हैं यह जीव अति विचित्र रूप और सुन्दर होताहै इसकी कमर पतली होती है औ आधे शरीरसे चौकोण छीला हुआ होता है और इसका शिर चौड़

और गोल परमेश्वरने इसके शरीरपर चार पर पैदा किये इस जाति में एकराजा भी होता है और उसकी सेवा इस प्रकार की सम्पूर्ण मक्खियां करतीहैं और यह राज्य उसको अपने बाप दादाकी थाती से मिलता है उसको अरबी में यासूब और हिन्दी में रानी मक्खी कहते हैं इनका राजा घरसे बाहर नहीं निकलता क्योंकि जो बाहर निकले तो सम्पूर्ण मक्खियां उसके साथ बाहर निकलें सोसब किया हुआ उनका वृथा जाय जो उनका राजा मरजाय तो सम्पूर्ण मक्खियां शहद बनना छोड़दें और हरएक इसी दुःखसे मरजाय इनका राजा बड़ा होता है दो मक्खीके बराबर और वह मक्खियोंको काम बताता है और हरएक को कार्यपर नियत करता है किसीको घर बनाने और किसीको शहद बनानेमें लगाता और जिसको यह काम करनहींआता उसको अपनेअधिकारसे बाहर करदेताहै और जहां कि शहद बनाया जाता है वहां इनका पहरा खड़ा रहता है कि वह ऐसी मक्खियोंको वहां न जानेदे जो मैलपर बैठती हैं और यह अपने घरों को छः कोनेका बनाती हैं और वह बराबर ऐसेहोते हैं कि बुद्धि उसमें कुंठित है और छःकोने का इसलिये बनाया कि ऐसा स्वरूप किसी तिकोनी चौकोनी पचकोनी और गोल में नहीं तो देखना चाहिये कि ईश्वरने उनको किस्तरहकी बुद्धि कृपा की कि ऐसे बराबर घर बनातीहैं कि जिनके पहलू और किनारे एक दूसरे सेनीचे और ऊंचे नहींहोते यदिकोई बड़ा कारीगरभी मिस्तर और परकारसे बनाना चाहे तो ऐसा बराबर नकरसकेगा यह मक्खियां पतझाड़ और बहार में कार्य करती हैं और हाथ और मुंहके द्वारा दरख़्तोंके पत्ते और कड़ियों की तरी चिकनाई लेकर घरके बनानेमें ख़र्च करती हैं इसकें दोनोंहोंठ ऐसे तेज होते हैं कि दरख़्तों के मेवों से उनकी तरी जिसकी पहिचानमें बुद्धिमान आश्चर्य करते हैं जमा करतीहैं और ईश्वरने इनके उदरमें एक ऐसी शक्ति कृपा की है जो उसतरीके समूह को शहद बनादेतीहै कि वह और उसके बच्चे उस से पलें और जो कुछ बच्चों के भोजनसे बचताहै उसको किसी जगह

इकट्ठा करती हैं और उसके मुँहको महीन मोमके परदेसे बंदकरती हैं कि शहद मट्टी घट्टेसे बचारहे और सर्दीके वास्ते इकट्ठा रहे और अपने मकानके कईखानोंमें अंडेदेती हैं और उनको पालती हैं और कई खानोंका सोने और आराम करनेके वास्ते रखतीहैं जिनदिनों में शहदका कामनहीं करती जैसे कि सर्दी गर्मी और बरसातमें तो उससमय उस संग्रहमें से खर्चकरतीहैं परन्तु अतिसमभाव के साथ यहांतक कि सर्दीकी मौसम जाकर बसन्त ऋतु आती है और यह फिर अपने कार्य को आरम्भ करती हैं यह बात इसको ईश्वर की कृपाकी हुई है तथाच ईश्वर का बचन है कि तेरे ईश्वर ने शहद की मक्खी की ओर आज्ञा भेजी कि तू अपना मकान पहाड़ों दरख़्तों और मकानोंमें बना फिर सब फलोंको खा और ईश्वरकी राहमेंअति दीनतासे चल और मक्खियोंके पेटसे एकचीज़ पीनेकी निकलतीहै जिसके कईरंग हैं अर्थात् शहद उसमें लोगोंकेरोग की शान्ति है दूसरी आयतके यह अर्थहैं कि वह परमेश्वरशुद्धहै जिसने मक्खि-योंके भोजनके फोगमें यह प्रभाव दिया कि शरीर की आरोग्यता उससे सम्बंधितहुई और उसकेमैल अर्थात् मोमकेद्वारा अंधेरी रात कीरोशनी सम्बन्धितहुई इसकी एकविचित्रता यहहै कि जब इसके छत्तेके नीचे शहद निकालने के वास्ते धुआँ करते हैं तो यह बात मक्खियां मालूम करके जहां तक होसक्ता है खालेती हैं कहते हैं कि सपेद शहद जवान मक्खी का होता है और पीला अधेड़ म-क्खियोंका और सुर्ख़ बुड्ढियोंका और ईश्वरकी आज्ञानुसार शहद में बड़े गुण हैं तो जिसका स्वभाव गर्महो वह शहदको सिकंजबीन आदिके साथपिये कि उसकी गर्मी कमहो और ठँढे स्वभावको खा-लिस शहद खाना लाभ करता है और इसका स्वभाव यह है कि जो चीज़ देरतक रखछोड़नेसे ख़राब होजातीहै जोशहदमें उसको रक्खें तोखराब नहोगी जो कस्तूरीमें मिलाकर आंखमें लगावें पानी बहना बन्दहोजाय जों शरीरमें मलें जुयेंसब मरजायँ इसकाखाना बावले कुत्तेके घावको गुणदायक है एक प्रकार का शहद हलाहल

विसहोता है यहांतक कि उसकी गंधसे मनुष्य मूर्च्छित होजाता है और मोम इन मक्खियों के मकान की दीवारें हैं काला मोम उनके घोंसलेका मैलहै कांटेआदिको घावसे निकालताहै जोमोमको कोई साथरक्खे कभी उसे स्वप्नमें वीर्यपातनहो परन्तु चिन्ता और शोक का पैदाकरनेवाला है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८८

(निमल) अर्थात् च्यूंटी यह जीव भोजनके इकट्ठाकरने में बड़ा लोभी होता है यहां तक कि अपने शरीरसे अधिक बोझ उठाता है और ऐसे समयमें यह जानवर एक दूसरेकी सहायता करता है और इतना खाना इकट्ठा करता है जो जीतारहे वरसोंको पूरा हो और इसकी एक बर्षसे अधिक आयु नहींहोती नस्साबा बकरी कहता है कि च्यूंटियां दो प्रकार की होती हैं एकको आज्बर कहते हैं और दूसरेको अक़बानआज़र आज़र कालेरंगकी और अक़बान लालरंग की होती है और च्यूंटीमें यह विचित्रताहै कि पृथ्वीके नीचे मकान बनाकर उसमें कोठड़ी और दरवाज़े और मकान आदि भी बनाती है और उसमें शीत काल के लिये संग्रह करती है कई मकान ऐसे बनाती है कि उसमेंपानी न पहुंचसके पैगम्बरसाहबकी कहावतहै कि च्यूंटियोंको नमारो क्योंकि एक दिन हज़रत सुलेमान निमाज़ पढ़नेकेलिये बाहर निकले एक च्यूंटीको देखा किदोनों पैरोंसे खड़ी हुई हाथोंको उठाये ईश्वरकेलियेयहविनय कररहीहै कि हेपरमेश्वर मैंभी तेरी सृष्टिसेहूं मुझे तेरी कृपासे बेपरवाही नहीं है मुझको अपने अपराधी लोगोंके साथ दंडनदें और बर्षाकोभेज कि वृक्षफल समेतहों और खेती पैदाहो कि मेरे भोजन का कारण प्रकटहो सो सुलेमानने उस च्यूंटी की विनती को सुनकर अपनेसभ्योंसे कहा फिर चलो अब वर्षाकेलिये निमाज़ पढ़नेकी आवश्यकतानहीं क्योंकि इसकी विनयअंगीकारहुई इसकी विचित्रतामेंसे यहबात भी है कि चाहे इसका इतना छोटा शरीरहै परन्तुइसको वह घ्राणशक्ति कृपाहुई है कि किसी ज़ीवधारीको यहबलनहीं तो जहां मनुष्य के

हाथसे कोईचीज़ गिरे उसकी गंधपर च्यूंटियां बहुत जल्दी इकट्ठा होती हैं जो आप न उठासके तो औरोंको जल्दी खबरकरकेलेआती हैं और जो च्यूंटी उसके साम्हनेसे जाती हैं उसके मुख को सूंघती हैं कि उस गंधके द्वारा उस चीज़का पतापावे और हर एक समूह को खबर देताहै कि वह समूह उस बस्तुपर इकट्ठा होजाताहै और परिश्रम करता है जो उनको यहमालूम होजाय कि कोई उसके उठाने में आलस्य करता है तो सब च्यूंटियां उसके मार डालने पर मौजूद होजाती हैं और जब कुछदाना अपने घरमें इकट्ठा करलेती हैं और बिलमें तरीहोती है तो डरती हैं कि वहदाना नउगपड़े तो इसविचारसे हरएक दानेको दोखंड करके रखती हैं और धनियें के चार टुकड़े करती हैं क्योंकि धनियाँ दोटूकड़े करके बोया जाता है और जौ और बाक़लेकोछीलकर क्योंकि उसमें उगनेकीशक्ति छिल के उतारनेसे जाती रहती है क्या ईश्वरकी माया इनबातों से सिद्ध है किसी समय उससंग्रहको खराब और सड़जानेके भयसे धूपदेती हैं और बादलको देखकर धूपसे उठाकर उसे संचितस्थानमें रखती हैं और जोकोई दाना पानीसे भीगजाता है तो जबधूप निकलतीहै उसको सुखालेती हैं इनको विचित्रतासे यहभी है कि जबतक कि कोई बस्तु वृक्ष मनुष्य या अन्य जीव जीता है नहीं छेड़तीं परन्तु जब उसमें हानि पहुंचतीहै तोवहां इकट्ठी होकर उसके मारडालने का कारण होती हैं यहांतक कि जोकिसी अज़दहे यासांपके घाव पड़जाय तो उसके शरीर में इकट्ठी होजाती हैं चाहे वह कितना भयानकहो परन्तु जबतक वहजीताहै उससे अलगनहीं होतीं जो च्यूंटियोंको जलाकर धुआँकरें तो सब घरकी च्यूंटियां मरजावेंगी या भागजायेंगी जबइनके पर निकलते हैं तो मरनेका समयनिकट आता है चिड़ियां खालेती हैं अबुलकहिया कहता है जब च्यूंटी में उड़नेकी शक्ति आती है तोउसकी मृत्यु निकट आजाती है जोइसके अंडे कोई आधा दिरम खायतो उसके उदरसे बिना इच्छा बात सरे जो इसके अंडों को पीसकर जहां पर मलें वहां बाल न उगेंगे जो

इसके अंडेको किसी समूहमें डालदें बिखरजावेंगे (वरल) अर्थात् गोई यह गोहसे छोटा और बिल्ली से बड़ा और कुत्ते से लम्बी पछ किये छोटे शिरका जल्दी भागनेवाला जीव होताहै और सांप और सूसमारका शत्रुभी होताहै और सर्पका शिर अलग करके खाताहै कोई इस जानवरसे बढ़कर सांपको नहीं मारसक्ता और यह जानवर अपना घरनहीं बनाता वरन जिस सांपकी बांबी में चाहा घुस गया तो वह आपही अपनी जान बचाकर भागजाताहै (गुण) इसकेमांस और चरबीको तबक़ातुलनिसा कहते हैं अर्थात् इसकेमांस खानेसे मुख्य करके स्त्रियां पुष्ट होती हैं यदि घाव पर रक्खें गांसी आदि घावसे बाहर निकल आती है इसकी चरबी शक्कर और जौ के आटेमें मिलाकर बकरीके मांस में पकाकर उसका शोरबा पियें बहुत मोटेहों और जो इसको जलाकर इसकी राख तेलमें मिलाकर फुकनेपर लगायें उसकी पीड़ा दूरहो जो इसकी विष्टा को लगावें मुखकी झाईं और मस्सों को दूरकरे और इसका सुरमा आंख की सपेदीको नाश करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८०

अन्य २ स्वरूपों के जीवधारियों का वर्णन

इन जीवोंके स्वरूप नियमित पशुओं के विरुद्ध हैं और उनमें से कइयोंका वर्णन तीन प्रकारोंमें करते हैं (पहली प्रकार) यह अति विचित्र सृष्टि ईश्वरने द्वीपों और पृथ्वीकी ओरोंमें उत्पन्न की है (दूसरी प्रकार) यह वह हैं जो दो प्रकारके पशुओंके मैथुनसे उपजे हैं (तीसरीप्रकार) यह वह हैं जिनकी शकल और सूरत चित्र विचित्र है (प्रथमप्रकार) यह वह हैं जिनको ईश्वरने पृथ्वी की ओरों और द्वीपोंमें उत्पन्न किया है उनमें से याजूज और माजूज हैं यह जाति अधिकतासे है कि सिवाय ईश्वरके इनको कोईनहीं गिनसक्ताइनके ऊपरका आधा धड़ मनुष्योंके सदृश होताहै और इनके दांत जंगली दुःखदायी पशुओंकेसदृश होते हैं और नखकेबंदले चुंगल और उन की दुम पर बाल होते हैं और कोई इनमें से नहीं मरता जबतक

कि एक हज़ार सन्तान अपनी पीढ़ीसे नहीं देखलेता सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८८

उसमेंसे एकजाति (मन्सक)नाम होतेहैं और यह जाति पूर्बकी धरतीमे याजूज माजूजके निकट रहती हैं और यहलोग मनुष्यकी सूरत के होते हैं परन्तु इनके हाथीकी तौरपर कानहोते हैं सोनेके समय एक को चादर के तौरपर बिछाते हैं और दूसरे को ओढ़ते हैं सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८९

(उसमेंसे) एक जाति है जोसद्दसिकन्दरी के निकट पहाड़ों में रहते हैं इनके डील छोटे और हरएककी लम्बाई पांच बालिश्तकी उन्हींके हाथसे होती है और उनके मुंहचौड़े और बदनकाला और उसपर सपेद और पीले नुक़ते होतेहैं मनुष्योंसे भागकर वृक्षों पर चढ़ जातेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९०

(उसमेंसे) एकजातिहै कि ज़ंगियान द्वीपमें मनुष्यके स्वरूपकी होती है और उनके पर होतेहैं कि उनसे उड़तेहैं और पर उनके सपेद काले पीले रंगके होतेहैं और उनकी बातोंको सिवाय उनके और कोई नहीं समझसक्ता और मनुष्यों की तरहसे खाते पीते हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९१

(उसमेंसे) एक नंगीजाति रामी द्वीपमें रहतीहै इनकी लम्बाई चार बालिश्तकी उन्हीं के हाथों से होतीहै और बाल लाल और उनका बचन ढोलके शब्दकी तरह होताहै जिसको सिवाय उन के और कोई समझ नहीं सक्ता और खाना पीना उनका मनुष्यों के सदृश होताहै स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९२

(उसमेंसे) एकजाति कई ज़ंगियों के द्वीपों में रहती है जिनका डीलडौल एक गज़का होताहै बहुत से उनमें एक आंखके होते हैं अज़ानीक़एक़जानवरोंका प्रकारहै हरवर्ष यहजानवर इनके देश में आते हैं और इनसे बड़ी लड़ाई होती है सो वह जानवर इनको

चोंच सेमार एक लोचन करदेतेहैं सूरत और सकलउनकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६३

(उसमेंसे) एक जाति बोजनी जंगके द्वीपोंमें होतीहै इनके शिर कुत्तेकी तौर पर और बाक़ी बदन मनुष्य के सदृश होताहै और जंगली मेवे और पुष्टजीवोंको खातेहैं और दुबलेजीवोंको फलखिला कर मोटा करतेहैं फिर बड़ी रुचिसे खातेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६४

(उनमें से) जज़ीरे रंग के कई द्वीपों में एक जाति होती है मनुष्य के स्वरूप कीसी और इनका सुन्दर रूप होता पर पांवमें हड्डी नहीं होती चलनेमें पैर घसिटतेहैं यदि किसी चलने वालेको पातेहैं तो उसको अपने पासबिठलाते हैं और जब वह बैठजाताहै तो कूदकर उसकी गर्दन पर सवारहोते हैं और दोनों अपने पांव उसकी गर्दनमें तस्मेकी तरह लपेटते हैं कदाचित् वह मनुष्य उसे अलग करनाचाहताहै तो वह अपने नखसे उसके मुखको घायल करते हैं और उसको इच्छानुसार इधर उधर घोड़ेकी तौरपर जिस ओर चाहतेहैं दौड़ाते हैं॥

तसवीर नम्बर ३६५

(उनमेंसे) एकजात कईद्वीपों में होती है जिनके पर और सूंड़ होतेहैं और महीन २ बाल और कभी दो पैरसे चलतेहैं और कभी हवा पर उड़ते हैं परन्तु मनुष्यसे भागते हैं कई लोग कहते हैं कि यह मनुष्य के प्रकार से हैं और कई जिन्नों की जाति से बताते हैं आगे ईश्वर जाने चित्र यह है॥

तसवीर नम्बर ३६६

(उनमेंसे) एकजाति लंबेक़द सब्ज़ आंख किये कम उड़नेवाले होतेहैं इनके सिर घोड़ोंकी तरह और शेषसम्पूर्ण शरीर मनुष्य का सा सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६७

उनमें से एक जाति है जिनके दोमुख होतेहैं और शरीरमनुष्य की सदृश और इनके लम्बे २ बाल होतेहैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३९८

(उसमेंसे) एकजातिहै जिनके दोशिर और बहुतसेपैरहोते हैं और उनका शब्द पक्षियों की तरह दुमलम्बी और शरीर मनुष्यकासा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३९९

(उसमेंसे) एक जातिहै जिसके शिरमनुष्यकी तरह और शरीर सर्पका और सर्पही की तरह पृथ्वीपर चलतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४००

(उसमेंसे) एक जाति चीनकेदरियाके कईद्वीपोंमें होतीहै उनके मुंह और आंखें हृदय पर होतीहैं लिखाहै कि इस जातिसे एकमनुष्य वहांके बादशाह के पास अपनी जातिकी ओर से भेजा हुआ आया था और लोगोंने अपनी आंखों देखाथा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०१

(उसमेंसे) कईद्वीपोंमें एकजाति नसनासनामक होतीहै मनुष्य के रूपकी परन्तु हर एकके आधाशिर और एकहाथ और एक पैर होताहै और यहजातिएकहीपैरसे बहुततेज़ीसेदौड़तीहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०२

(उसमेंसे) एकजाति ऐसीहै जिनकामुख मनुष्यकी सूरतपर और पीठकछुवेकी तरह और शिरपर लंबे २ सींगहोते हैं सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०३

(दूसरा प्रकार) उनजीवों का वर्णन जो दोअन्य २ पशुओं के भोगसे उत्पन्नहों जैसेखच्चर पर दृष्टिकरो तो उसके जोड़घोड़ और गधेके बीचमें पायेजातेहैं तो जो जुफ्तीकेसमय गधानरहो तो उसका बच्चा घोड़ेकी शकल होगा और जोघोड़ानरहो तो इसके विरुद्ध और कोई प्रकार इनमेंसे ज़राफा लिखाहै कि नरहुंडार और जंगली ऊंटनीके मैथुनसे एकपशु विचित्र रूपसे उत्पन्न होताहै तो जबवह जंगली गायसे जुफ्ती करता है तो ज़राफ़ा उत्पन्न होता है सूरत ज़राफ़ेकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०४

और कई पशु जंगली घोड़े और गधेसे उपजते हैं इसपुस्तक

का निर्मापक लिखताहै कि मैंने अपनी आंखसे इसपशुको देखाहै इसजानवरकी सूरत अच्छी होतीहै किसरा अरदशेर के पास एक घोड़ाथा जिसको अजदर कहतेथे एकदिन वह भागकर जंगलमें चलागया और वहां एक जंगली गधीसे जुफ़्तीकी उससे संतान बहुत सुंदर उपजी उसको अजदरी कहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०५

(बाज़े) जानवर वहहैं कि ऊंट और ताज़ी घोड़ेसे उत्पन्न होते-हैं अरबवाले उनको बुख़्ती कहतेहैं और यह ऊंटोंके प्रकारमें उत्तम और श्रेष्ठ होतेहैं सूरत उनकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०६

(बाज़े) पशु मनुष्य और रीछके मैथुनसे उत्पन्न होतेहैं अजा-यबुल्मख़लूक़ात का निर्मापक कहताहै कि मुझसे एकमनुष्यने इस प्रकारके पशुकाहाल यूं बयानकियाहै कि चाहे यहजानवर मनुष्य की सूरतपर होताहै और मनुष्यकी तरह बातभी करता है परन्तु रीछकी तरह शरीर पर बालोंकी अधिकता होतीहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ४०७

(कई) पशु भेड़िये और हुंडारसे उत्पन्न होतेहैं जो हुंडार नर हो तो उसके बच्चेको वस्मा कहते हैं और जो भेड़िया नरहुआ तो उसके बच्चेको अयार बोलतेहैं सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०८

(कई) पशु भेड़िये और कुत्तेकी जुफ़्तीसे पैदा होतेहैं जिस भेड़ियेको अरबवाले देसमकहतेहैं यह भेड़िया कुतियों के साथ सलूकाकीधरतीपर जो यमनमें है जुफ़्ती खातेहैं और वहां इसप्रकार की एकजाति होतीहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०९

(एक) प्रकारके पक्षी पालू और पहाड़ी कबूतरकी संगतिसे उपजतेहैं जिनकोराई कहते हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१०

(तीसराप्रकारविचित्रपशुवोंकावर्णन) वैद्योंका वचनहै कि जब

स्वभाव सीधा होताहै तो सूरतभी सीधी पैदाहोतीहै और ज्योति-षियों की निश्चयहै कि ग्रहके अनुसार स्वरूप होताहै और मीभा के पुत्र वहबने लिखाहै कि ऊक़का पुत्र ऊज सम्पूर्ण मनुष्यों में सुन्दर और स्वरूपवान्था जिसकी डीलकी लंबाई और शरीर की पुष्टता वर्णनसे बाहरहै ईश्वरने उसकी आयु इतनी दी कि नूहके समयसे उमरानके पुत्र मूसातक जीताथा और इसमनुष्यने हज़रत नूहसे तूफ़ानके समय विनयकीथी कि मुझकोभी अपनी किश्ती में जगह दीजिये परन्तु उन्होंने इन्कार किया उससमय यह मनुष्य निराशरहा परन्तु कहतेहैं कि तूफ़ान अर्थात् प्रलयके बहाव का जल उसकी कमर तकरहा यहमनुष्य बड़ा अन्यायी और अहं-कारीथा खुश्की और तरीमें सबको दुःखदिया करताथा जबबनी-इसराईल तेकी धरतीमें इकट्ठे हुयेथे तो यहमनुष्य उनके लश्कर को जोचारकोसके गिर्दमें पड़ाथा जानगया और एक पत्थर इस अनुमानका कि सम्पूर्ण सेना को टुकड़े २ करडाले अपने शिरपर उठाकर लेचला कि उनके शिरपर गिरावे और एकहीवेर सबमर-जायँ उससमय ईश्वरकी आज्ञासे एक चिड़ियाने उसपत्थरके ऊपर बैठकर उसमें छिद्रकरदिया सो वह पत्थर हसलेकी तरह औजके गलेमें पड़गया और दोनों हाथभी उसके फँसगये तब परमेश्वर ने हज़रत मूसाको बताया कि तेराशत्रु क़ैदमें है अब उसको दंडदो उससमय मूसाने पहुंचकर उसको छड़ी मारकर मारडाला लिखा है कि उसके दोनों पांवकी पिंडलियां नीलदरियापर पुलकी तरह बहुत समयतक रक्खीरहीं आगे ईश्वरजाने सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४११

(उसमेंसे) फज़लानरसूलके पुत्र अहमदने लिखा है कि मैंने बलग़ार के बादशाह से पूछा कि मैंने सुना है कि आपके पास कोई मनुष्य अतिविचित्र और बड़ेडीलका है बादशाहने उत्तर दिया कि वह मनुष्य हमारे देशका नहींथा किंतु एकवेर दरिया में बहाव आयाथा वह मनुष्य उसमें बह आयाथा तो जबलोग उसको पकड़

कर हमारे सामने लाय देखा कि वह बारह गज़का लम्बाथा और शिरबड़ी देग़के बराबर और नाकउस की हमारे हाथ से अधिक थी और आंखें बड़ी २ और उसकी हर उंगली हमारे हाथकी बराबर थी उससे हमने बहुत बातेंकीं परन्तु वह न बोला और न हमारी बात समझा फिर उसको उसके स्थानपर लेगये और वहएकसमय तक जीता रहा फिर मर गया यह मालूम न हुआ कि वह किस जाति सेथा और कहांसे आया था सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर ४१२

(उसमेंसे) मवस्सल के फ़क़ीरोंकी कहानीहै कि मवस्सलके कई पहाड़ों में मनुष्य रहतेहैं एकवेर उस जातिके लड़केको हमने देखा कि उसका डील नौग़ज़का था और उमर उसकी पन्द्रह वर्षसे कम थी और उसमें इतना बलथा कि हममेंसे बलयुक्त पुरुषको उठाकर अपनी पीठपर लादलेता था सूरत यह है

तसबीर नम्बर४१३

(उसमेंसे) शाफ़ईने कहाहै कि आज हमने यमनके शहरोंमें ऐसा मनुष्य देखा जो कमरसे नीचे स्त्रीके सदृशथा और ऊपरका शरीर उसका दुशाख़ा अलग था दो शिर दो मुंह चार हाथ और दोनों मुखसे खातापीता था और परस्पर लड़ता था और फिर सुलह कर लेता था दो वर्ष के उपरान्त जबहम फिर उस स्थान पर गये उस मनुष्यको देखा कि एक शरीर उसका बाकी है लोगोंसे हमने पूछा मालूम हुआ कि शरीर उसका ऊपर वाला मरगया था उसको कटवाडाला विचित्रता यहथी कि वह अपने शरीरसे पूर्ववत् अच्छी तरह चलता फिरता था सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ४१४

(उसमेंसे) अबूसाद सराने लिखाहै कि अक्तमके पुत्र क़ाज़ी यहयाके पास एकदिन मेरे जानेका संयोग हुआ अकस्मात् मैंनेदेखा कि उसके पहलूमें एक पिंजड़ा रक्खाहै और उसमें एकजानवर कछुवे की शकलका मनुष्यका मुखकिये बन्द है और उसकी छाती और पीठ पर दो निशान चिन्हों की तरंह परहैं तो मैंने क़ाज़ी से पूछा

क़ाज़ीने कहा कि तुम आप उससे पूछोसो मैंने उस पक्षी से पूछा कि तू कौनहै उसने खड़े होकर अति वाचालता पूर्वक कुछ पद्यपढ़े जिनके अर्थ खूब समझमें न आये तो जब वह पढ़ चुका तो तुरन्त चिल्लाने लगा और अपनेको पिंजड़े में गिरादिया तो मैंने कहा कि ऐक़ाज़ी यह पक्षी प्रेमी मालूम होताहै क़ाज़ी ने उत्तर दिया कि जो तुझे मालूमहो परन्तु मैं इसके भेदको नहीं जानता और उन पद्यों के अर्थ जानताहूं किन्तु खलीफाके पास एक किताब मोहर कीहुई है उसमें इसका हाल पूरा लिखाहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१७

(उनमेंसे) संजाबके हाकिम अबूरैहान ख्वारज़मी ने मन्सूरुस्सा मानीके पुत्र नूहको एक लोमड़ी भेजी थी जिस के दो पर थे जब मनुष्य उसके निकट जाता था तो दोनों अपने पर बिछादेती थी और जब मनुष्य अलग होजाताथा तो दोनों परोंको अपने पहलूमें चिपका लेतीथी सो अबूरैहान ख्वारज़मीने कहाकियह कुछविचित्रता नहींहै क्योंकि क्यानीके बादशाहों के पास गतसमयमें इससेउत्तम उड़ने वाली लोमड़ियां थीं जो आज्ञा पर उड़तीथीं और फिर चली आतीथीं स्वरूप यहहै ॥

तसबीर नम्बर ४१६

(उसमेंसे) एक यह भी कहावत है कि खुरासान की पृथ्वी के अन्तर्गत मौज़े गुलाबसाभान में एक स्त्री ऐसा बच्चा जनी जिस के दो शिरथे जैसा किइस समयमें अण्डोंसे बहुधा दो शिर या चार पैर के बच्चे पैदाहुआ करतेहैं बुद्धि मानोंका बचनहै कि यह बात अति विचित्रहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसबीर नम्बर ४१०

(उनमेंसे) एक कहानी अबूरैहान ख्वारज़मी ने लिखाहै कि कई बाद शाहोंने मन्सूरके पुत्र नूको एक घोड़ा सौगातकी तरहपर भेजा था जिसके शिर पर एक सींग था और यह उस रीतिके विपरीत है जैसा बुद्धि मानों ने लिखा है कि सींग और सुम दोनों सिवाय

गैंड़ेके एक जानवर में नहीं होते परन्तु ईश्वर की कारीगरी और उसकी पैदा कीहुई अद्भुत वस्तु इतनीहैं कि कोई उसको नहीं गिन सक्ता स्वरूप उसका यहहै ॥

तसबीर नम्बर ४१८

इति ॥

इस पुस्तक को पंडित रामबिहारी व पंडित रामसेवक व पंडित बंदीदीन व पण्डित कृष्णबिहारी ने शुद्धकिया ॥

—•—❋——

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
रामायण गीतावली मूल	रासलीला	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण	हनूनाटक	अद्वैतप्रकाश
कांडकांडभी मिलसक्तीहैं	चौरासीवार्त्तिक	युगलसम्वाद
रामचन्द्रिका सटीक	शिवबिवाह व वंशावली	सुन्दरबिलास
अद्भुत रामायण	सुदामाचरित्र	सत्यनामबिहारवृन्दावन
रामायण रामबिलास	दुर्योधन नवकांड	समरबिहारवृन्दावन
अध्यात्मरामायण सटीक	बिजयमुक्तावली	
रामायण अध्यात्मविचार	शंकरदिग्विजय	**काव्य**
विनयपत्रिका मूल	**भाषापुराण**	नानार्थनवसंग्रहावली
विनयपत्रिका सटीक	देवीभागवत भाषा	कृष्णप्रिया
विजयदोहावली	लिंगपुराण	छन्दोर्णवपिंगल
ब्रजबिलास	सुखसागर	रसराज
ब्रजबिलास सारावली	गरुड़पुराण	कविकुलकल्पतरु
गर्गसंहिता	ब्रह्मोत्तरखण्ड	सतसई बिहारीलाल
अवतारकथाऽमृत	विष्णुपुराण	सभाबिलास
सीतावनबास	भविष्यपुराण	तुलसीशब्दार्थप्रकाश
श्रीरामब्याहोत्सव	स्कन्दपुराण	प्रेमरत्न
कृष्णबाललीला	श्रीवाराहपुराण	चित्रचन्द्रिका
नाममाहात्म्य	शिवपुराण भाषा	पीयूषलहरी
मिथिलामाहात्म्य	शंकरचरितसुधा	गंगालहरी
...कर्णमाहात्म्य	**वेदान्त**	यमुनालहरी
...लिंजरमाहात्म्य	योगवाशिष्ठ भाषा	जगद्विनोद
...श्रितमाहात्म्य	सांख्यतत्त्वकौमुदी	भारतीभूषण
...वजयचन्द्रिका	श्रीभगवद्गीतापंचरत्न	रसचन्द्रोदय व रसवृष्टि
...मकलेवा	श्रीमद्भगवद्गीता भाषा	अनुरागबर्द्धिनी
...वतारसिद्धि	टीका सहित	नवीनसंग्रह
...ष्णसागर	तथा मूलउर्दूटीकासहित	मनमोहनी
...श्यामसागर	रामगीता	सुन्दरीतिलक
...मसागर	कैवल्यकल्पद्रुम	कुण्डलियांगिरिधरदास
...क्तमाल	बीजककबीरदास	भुवनेशभूषण
...निश्चरकी कथा	पारसभाग	शृंगारलतिका
...लिचरित्र	ब्रह्मप्रकाश	भुवनेशबिलास
...था श्रीगंगाजी की	ज्ञानतरंग	शिवसिंहसरोज

नामकिताब

राग

रागप्रकाश
रागसंग्रह
मनमोहन
युगलविलास
लावनी बनारसी
शृंगारबत्तीसी
भजनमाला
श्रीकृष्णगीतावली
नवरत्नभाष्य
वीणाप्रकाश
वंशीलीला
प्रेमामृतसार
सांगीतप्रहलाद
बारहमासा बलदेवप्रसाद
बारहमासा अलाबख्श
बारहमासी कृष्णचन्द्र
सूरसागर

क़िस्से

बैतालपच्चीसी
सिंहासनबत्तीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
सौदागरलीला
बकावलीसुमन
क़िस्साचहारदरवेश
क़िस्साहातमताई
अपूर्वकथा
क़िस्सागुलसनोवर
सहस्ररजनीचरित्र
राबिंसन्क्रूसोकाइतिहास
पद्मावत भाषा

नामकिताब

मसनवीमीरहसन
मनोहरकहानी
दास्तानअमीरहमज़ा
क़िस्सा औरत और मर्द
मोतीबिनौलेकाझगड़ा
सोनेलोहेका झगड़ा
सोनेरुपेकाझगड़ा
मनमौजचरित्र

वैद्यक

निघण्टभाषा
अमरविनोद
वैद्यजीवन
औषधसंग्रहकल्पवल्ली
अमृतसागर बड़ा
तथा छोटा
वैद्यमनोत्सव
इलाजुलगुरबा
वैद्यप्रिया
कवितरंग
दिललगनवैद्यक
रसमंजूषा

ज्योतिषभाषा

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
रमलसार
रमलनवरत्न
इन्द्रजाल
ज्ञानस्वरोदय
पत्रा सं० १९४३
ज्योतिस्तारावली
अन्य उत्तम पुस्तकें
ज्ञानमाला

नामकिताब

गोपीचन्दभरथरी
भरथरीचरित्र
भरथरीगीत
गुरुसुमिरण
काशीभजनावली
दानलीला व नागलीला
दोहावली, रत्नावली
हनुमान्बाहुकतुलसीकृत
अयोध्याविंशतिका
जनकपच्चीसीहनुमानाष्टक सहित
वनयात्रा
कल्पभाष्य व कल्पसूत्र
विनयप्रकाश
हरिहरसगुणनिर्गुण पदा०
हरिनामरत्नावली
शिवसहस्रनामउर्दूटी०स-
महारामायण
प्रश्नोत्तरी
जलझूलन
हीररांझा
लोधेश्वरमाहात्म्य उर्दू व नागरी
रसायनप्रकाश
व्याजकीपुस्तक
विश्वविनय
बिसातिनलीला
शिक्षापत्र
वचनामृत
गुरुउपकारकथा व भजन
विनयप्रकाश
और भी अन्य उत्तम पुस्तकें हैं॥